لا إله إلا الله محمد رسول الله

जिल्द-2

हदीस नं. 2223-4627

مشكاة المصابيح

मिश्कातुल मसाबिह

वलियुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने
अब्दुल्लाह अल ख़तीब तबरेज़ी (वफ़ात 740 ही.)

तहकिम व तखरिज

हाफिज जुबैर अली ज़ई(वफ़ात 10 Nov. 2013)

उर्दू तर्जुमा

अबू अनस मुहम्मद सरवर गौहर

हिंदी तर्जुमा(Transliteration)

मुहम्मद शोएब इब्ने डॉ. अब्दुल करीम

नज़र ए शानी

अलाउद्दीन अन्सारी फलाही

*अगर आप pdf मैं ये देख रहे है तो पेज नंबर पे क्लिक(CLICK) करने पर वो पेज खुल जाएगा इंशाअल्लाह

किताबुल दावात

किताबुल मनासिक

किताबुल बुयुअ

किताबुल मीरास

किताबुल निकाह

किताबुल इत्की

किताबुल किसास

किताबुल हुदूद

किताबुल अमारत वल कदा

किताबुल जिहाद

शिकार और हलाल जानवरों का बयान

किताबुल अत-इत्मत

किताबुल लिबास

किताबुल अत तिब्बी वर्रुका

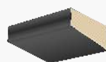
किताबुल रुअया

*अगर आप pdf मैं ये देख रहे है तो पेज नंबर पे क्लिक(CLICK) करने पर वो पेज खुल जाएगा इंशाअल्लाह

मुकद्दमा हिंदी तर्जुमा

الحمد لله رب العالمين و الصلوة والسلم على رسول الأمين أما بعض

तमाम तारीफे अल्लाह ही के लिए है, हम इसी की तारीफ़ करते हैं, इसी से मदद तलब करते हैं, इसी से मगफिरत चाहते हैं, और हम अपने नफ्स की शरारतों और अपने आमाल की बुराइयों से अल्लाह तआला की पनाह चाहते हैं, जिस शख्स को अल्लाह तआला हिदायत अता फरमादे इसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिस को दो गुमराह कर दे इसे कोई हिदायत नहीं दे सकता, और में गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, एसी गवाही जो निजात के लिए वसीला और बुलंद दरजात के लिए ज़ामिन हो, और में गवाही देता हूँ के मुहम्मद ﷺ इस के बंदे और इस के रसूल है, अल्लाह तआला फैसल भाई पर रहम करे जिन्होंने मुझे मिशाकतुल मसाबिह के हिंदी तर्जुमे के इस मुक़द्दस काम पे चलाया, इस के आगे के पढ़ने वाले आगे पढ़े मैं कुछ पढ़ने वालों के लिए कुछ बाते कहना चाहता हूँ,

1. अल्हम्दुलिल्लाह, मिश्कातुल मसाबिह का तर्जुमा आज 7 नवम्बर 2022 के रोज़ तक मुकम्मल हो चूका है|
2. आज 29 जनवरी 2023 को पिछले संस्करण का सुधरा हुआ संस्करण अपलोड किया जा रहा है
3. वैसे ये तर्जुमा तो देवनागरी लिपि मैं है लेकिन इन को जहाँ तक हो सके आसान उर्दू और हिंदी के मिले जुले अलफ़ाज़ से किया गया है, और तर्जुमा करते वक़्त पूरी कोशीश की गई है के वो अलफ़ाज़ का इस्तेमाल किया जाए जो आम बोलचाल में इस्तेमाल हो रहे हों|
4. फिर भी इंसान होने के नाते मुझ से जो गलती हुई है उस के लिए मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ और अल्लाह की मगफिरत चाहता हूँ, कोई इंसान गलती से पाक नहीं हो सकता गलती से पाक सिर्फ अल्लाह की ज़ात है| और आगे मेरी कोशिश होगी के में इस मजीद गलतियों में सुधार ला सकूं| और इस की जो भी गलती की निशानदेही की जाएगी उसे सुधार के pdf को http://archive.org पे अपलोड कर दिया जाएगा इन्शालाह उस की लिंक ये है 
5. इस किताब में जो अरबी मतन है उसकी तहकिम शैख़ अल्बानी ﷺ की है और जो हिंदी मतन मैं तहकिम है वो शैख़ जुबैर अली ज़ई ﷺ की है|
6. इस तर्जुमे मैं जो तखरिज और तहकिम का हिंदी तर्जुमा का काम अभी बाकी है, और इंशाअल्लाह जैसे है वो मुकम्मल होगा वैसे ही उसका pdf book भी online कर दी जाएगी|

अल्लाह तआला से दुआ है के वो मेरी इस कोशिश को मेरे लिए और मेरे वालिद मरहूम डॉ. अब्दुलकरीम और मुहतरम फैसल भाई के लिए तोषे आखिरत बनाए और पढ़ने वालो के लिए इल्म व तहकीक की दलील और रोशन मीनार बनाए, ताकि सहीह अहादीस पर अमल हो और ज़ईफ़ रिवायत से बचा जाए आमीन|

मुहम्मद शोएब इब्ने अब्दुल करीम इब्ने दोस्त मुहम्मद

7 नवम्बर 2022

गुजारिश

मैं ने मिश्कातुल मसाबीह के इस हिन्दी तर्जुमे को पढा है और बहुत सारी जगहों पर तसहीह भी की है । खास तौर पर उसके बाब और फसल के तर्जुमें को बेहतर से बेहतर बनाने की कोशिश की है । इस में कोइ बड़ी गलती नहीं है । इस को छापना और फैलाना बहुत अज़ीम काम है ।

इस किताब की तयारी में असल मेहनत मोहतरम मोहम्मद शुऐब साहब ने की है । उन के अलावह इरफान अली और दुसरे भाइयौं ने उन का साथ दिया है । हम सब की मेहनत के बावजुद इस में गलतीयौं का इमकान है । कारेइने किराम से दरखास्त है कि इसको हिदायत और सवाब की नियत से पढें और दूसरों तक पहुंचाएं । कोइ भी गलती मिलने पर हमें इत्तेला करें ताकि दूसरी बार छापने से पहले इसलाह कर सकें । अल्लाह से दुआ है कि इस किताब की तैयारी, छापने, पढने, अमल करने और फैलाने वाले सारे लोगों को जज़ाए खैर दे, दुनिया और आखिरत दोनों की कामयाबी अता फरमाए । आमीन ।

आप का दीनी भाइ

अलाउद्दीन अन्सारी फलाही

नेपाली जुबान में कुरआन का मुतर्जिम

हरीनगर- 7, सुन्सरी नेपाल

पी एच डी स्कालर, इस्लामिक स्टडीज (तफसीर)

एम ए, इस्लामिक स्टडीज (तफसीर)

सुल्तान शरीफ अली इस्लामिक युनिवरसीटी ब्रुनाइ दारुस्सलाम

बी ए आनर्स, इस्लामिक स्टडीज (अकीदा व कमपेरेटिभ रिलिजियन) इन्टरनेश्नल इस्लामिक युनिवर्सीटी इस्लामाबाद, पाकिस्तान

आलिमियत फजीलत, जामेअतुल फलाह बिलेरया गंज आजमगढ, यू पी इन्डिया

मुकद्दमा तखरिज व तहकिम मिश्कातुल मसाबिह

الحمد لله رب العالمين و الصلوة والسلم على رسول الأمين أما بعض

आठवीं सदी हीजरी में अल्लामा वलियुद्दीन अबू अब्दुल्लाह अल ख़तीब अल उमरी अल तबरेज़ी राहिमुल्लाह (वफात करीब 740 ही.) ने मशहूर सिका मुहद्दिस अब मुहम्मद हुसैन बिन मसूद बिन मुहम्मद अल फराअ अल बगवी राहिमुल्लाह (वफात 516 ही.) की किताब **मसाबिह अल सुन्नाह** को हदिसे इज़ाफो के साथ **मिश्कात उल मसाबिह** के नाम से मुरत्तब किया और इसे बर्रे सगीर पाक व हिन्द बलके आलमे इस्लाम में खूब पज़ेराई मिली, नेज़ बहुत से मदारिस में ये किताब दाखले निसाब भी है|

तबरेज़ी मज़कुर के बारे में उन के दोस्त अल्लामा शरफुद्दीन हुसैन बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल तय्बी राहिमुल्लाह (वफात 743 ही.) ने फ़रमाया: “दिनी भाई यकीं में हिस्सेदार यानी काबिल इ एतमाद साथी. औलिया में बाकी रह जाने वाले...”(**अल काशिफ अन हकाइक अल सुनन** जास 18)

तय्बी मजकुर ने **“अल काशिफ अन हकाइक अल सुनन”** के नाम से मिश्कातुल मसाबिह की मशहूर और अज़ीम शरह लिखी जो बारह (12) जिल्दों में मअल फहारिस मतबूअ है|

इस लिखनेवाले ने अल्लाह तआला के फज़ल व करम से मिश्कातुल मसाबिह पर “इज़ाअअल मसाबिह” के नाम से जो बड़े और अहम काम किए है वो निचे लिखे है:

1. तर्जुमा
2. तखरिज व तहकीक
3. सेहत व जईफ के लिहाज़ से हर रिवायत पर हुक्म
4. फिकहल हदीस के उनवान से मसाइल व फवाइद के इस्तंबात

इस की पहली जिल्द (हदीस अता 280) जो किताबुल इमान और किताबुल इल्म पर मुश्तमिल है, मुक्कम्मल हुई, और मेरे मुहतरम दोस्त मौलाना मुहम्मद सरूर आसिम हाफ़िज़ उल्लाह के अज़ीम क़ुतुब खाने (मक्तबा ए इस्लामिया फैसलाबाद लाहोर) से आला मीअयार पर मतबूअ है|

बाकी हिस्सा अभी ज़ैरे तकमील है और इस पर मक्दुर भर काम जारी है| जब दूसरी जिल्द मुकम्मल होगी तो इसे भी शै कर दिया जाए गा इंशाअल्लाह|

मिश्कात की मकबूलियत और अवाम की ज़रूरत के पेशे नज़र फिलहाल मक्तबा इ इस्लामिया की शाए करदा मिश्कात को ही तहकीक व तखरिज के साथ तीन जिल्दो में शाए किया जा रहा है|

मेरे नज़दीक सहीहैन(सहीह बुखारी और मुस्लिम) की तमाम मर्फुअ मुसनद मुत्तसिल रिवायत बिलकुल सहीह है और इन में से बाज़ रिवायत हसन लिज़ाती भी है, यानी हुज्जत है, नेज़ सहीहैन में मज़कूरा शर्त के मुताबिक़एक भी जईफ रिवायत नहीं, लिहाज़ा सहीहैन की अहादीस की सिर्फ तखरिज पर इक्तेफा किया गया है और उन के अलावा तमाम रिवायात की तखरिज व तहकीक कर दी गई है और ज़ईफ़ रिवायात की वजह ज़ईफ़ भी बयान करदी है, ताके जो ज़िन्दा रहे दलील देख कर जिए और जो मरे तो दलील देख कर मरे|

इस किताब की तर्किम(अहादीस की नंबरिंग) दारुल कुतुब अल इल्मिया बैरुत,लेबनान के दो जिल्दो में मतबूअ नुस्खे और मक्तबा इ इस्लामिया की शाएशुदा मिश्कातूल मसाबिह के ऐन मुताबिक़ है|

एक अहम् तरीन बात ये है के हदीस नंबर से लेकर नंबर 5972 तक ये तमाम नंबर मशहूर मुहद्दिस शैख़ मुहम्मद नासिरुद्दीन अल्बानी राहिमुल्लाह की तहकीक व तालिक वाल्ली मिश्कातुल मसाबिह के भी मुकम्मल मुवाफिक है और 5973 से आखिर तक मामूली फर्क है|

तंबीह: साहबे मिश्कात कई मकामत पर हदीस को जिस किताब के हवाले से ज़िक्र करते है, मसलन कॉल: रवाह मुस्लिम या रवाह अल बुखारी तो बाज़ मकामात पर असल किताब को देखने के बाद मालुम होता है के ये अलफ़ाज़ मिन्नोअन (बिलकुल समान) वो किताब में नहीं है, बलके इन्हें बतौर मफ्हुमया बतौर ए मुख्तलिफ रिवायत बयान किया गया है| लिहाज़ाहदीस का हवाला असल ज़िक्र की गई किताब से मिला लेना चाहिए, या फिर मिश्कात के ज़रिए से हवाला लिखते वक्त मिश्कात का ही ज़िक्र किया जाए, यानी वल लफ्ज़ की सराहत कर दी जाए, ताकि किसी किस्म का भ्रम बाकी न रहे|

अल्लाह तआला से दुआ है के वो मेरी इस कोशिश को मेरे लिए और मुहतरम मुहम्मद सरवर आसिम हाफिज़ाउल्लाह के लिए तोषे आखिरत बनाए और पढ़ने वालो के लिए इल्म व तहकीक की दलील और रोशन मीनार बनाए, ताकि सहीह अहादीस पर अमल हो और ज़ईफ़ रिवायत से बचा जाए आमीन|

हाफ़िज़ जुबैर अली ज़इ

26 जून 2011 इसवी

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

इमाम तबरेज़ी ﷺ का मुकद्दमा

तमाम तारीफे अल्लाह ही के लिए है, हम इसी की तारीफ़ करते हैं, इसी से मदद तलब करते हैं, इसी से मगफिरत चाहते हैं, और हम अपने नफ्स की शरारतों और अपने आमाल की बुराइयों से अल्लाह तआला की पनाह चाहते हैं, जिस शख्स को अल्लाह तआला हिदायत अता फरमादे इसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिस को दो गुमराह कर दे इसे कोई हिदायत नहीं दे सकता, और में गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, एसी गवाही जो निजात के लिए वसीला और बुलंद दरजात के लिए ज़ामिन हो, और में गवाही देता हूँ के मुहम्मद ﷺ इस के बंदे और इस के रसूल है, जिस ने उन्हें इस हालात में मबउस फ़रमाया के ईमान की राहों के निशान मिट चुके थे, इस के अनवार बुझ चुके थे, इस के अरकान कमज़ोर हो चुके थे और इस की जगहें मझहुल हो चुकी थी, तो आप ﷺ ने इस के निशानात, जो के मिट चुके थे, को बुलंद और उजागर किया, और आप ने कलमा ए तौहीद की ताईद में ऐसे इलिय्यिल शख्स को जो के (जहन्नम के) किनारे पर पहुँच चूका था, बचाया और आप ने राहे हिदायत के तलबगार पर इस रोशन राह को वाज़ेह किया, और आप ने सआदत के खज़ानो को इन पर वाज़ेह किया जो इन के मिल्कीयत का इरादा रखते है|

अम्मा बाद! नबी ए अकरम ﷺ की सीरत के साथ तमसिक तब ही टिकाऊ और लंबे वक्त तक चल सकता है जब आप से जारी होने वाले अहकामात (हुक्म) की इत्तेबा की जाए, और अल्लाह तआला की रस्सी (कुरान ए करीम) के साथ तमसिक आप ﷺ की सुन्नत के बयान के साथ ही मुकम्मल हो सकता हैं, और "किताब अल मसाबिह" जिसे मुह्यी अल सुनना और कातेअ बिदात इमाम अबू मुहम्मद हुसैन बिन मसउद अल फराअ अल बगवी, अल्लाह तआला इन के दरजात बुलंद फरमाए, ने लिखी, इस मौज़ू पर एक निहायत जामेअ किताब थी, और मुतफ़र्रिक अहादीस को एक जगह इकट्ठा करने के हवाले से इन्तहाई मुरत्तब किताब थी और जब मुसन्निफ़ ﷺ ने इख्तेसार का उस्लूब इख्तियार करते हुए सनदों को ख़त्म कर दिया तो बाज़ नाकेदीन (आलोचक) ने इस पर कलाम किया अगर छे इस का विश्वास के साथ नक़ल करना (और सनदों को ख़त्म करना) इन के ज़िक्र करने की तरह ही है, लेकिन जो इसनादें बयान बलाग हैं वो इस्नाद ख़त्म करने में नहीं, पस मैंने इस्तिखारा के ज़रिए तौफीके इलाही तलब करते हुए जिस चीज़ की तरफ इन्होंने तवज्जो नहीं की इस की निशानदेही कर दी और हर हदीस को बिला तक्दिम व ताखीर मुनासिब जगह पर लिख दिया, जैसा की मुत्तकिन व सिका और रसिखे इल्म आइम्मा ने इसे रिवायत किया, जैसे अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माइल बुखारी, अबुल हुसैन मुस्लिम बिन हज्जाज कुशैरी, अबू अब्दुल्लाह मालिक बिन अनस अस्बई,अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इदरिस शाफीअ, अबू अब्दुल्लाह अहमद बिन मुहम्मद बिन हंबल शैबानी, अबू इसा मुहम्मद बिन इसा तिरमिज़ी, अबू दावुद सुलेमान बिन अशअष सिजिस्तानी, अबू अब्दुल रहमान अहमद बिन शुएब नसई, अबू अब्दुल्लाह

मुहम्मद बिन यज़ीद बिन माजा क़ज्विनी,अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अब्दुल रहमान दारमी, अबूल हसनअली बिन उमर दारकुतनी, अबू बक्र अहमद बिन ,हुसैन बय्हकी, अबुल हुसैन राजीन बिन मुआविया अब्दरी رحمه الله और इन के अलावा भी कुछ इन्ही के मिस्ल है जिन्होंने रिवायत किया है जबके वो क़लील है| और जब मैंने हदीस को इन आइम्मा की तरफ मंसूब कर दिया तो गोया मैंने इस हदीस को नबी ﷺ तक पहुंचा दिया, क्यूंकि वो (आइम्मा) इस (इस्नाद) से गरीग हो चुके और उन्होंने हमें भी नियाज़ कर दिया, और मैंने कुतब (जैसे किताबुल इल्म वगैरा) और अबवाब को वैसे ही रखा जैसे उन्होंने (इमाम बगवी رحمه الله) ने तरतीब दिया था, और इस बारे में मैंने इन की इत्तेबा की, मैंने हर बाब को गालब तौर पर तीन फसलों में तकसीम किया| पहली फस्ल उन अहादीस पर मुश्तमिल हैं जिन्हें इमाम बुखारी और मुस्लिम दौनों ने रिवायत किया है या उन में से एक ने, और आर इस हदीस के इन के सिवा किसी और ने भी रिवायत किया है तो मैंने रिवायत में इन दोनों के आला दर्जे पर फैज़ होने की वजह से इन दोनों की रिवायत पर इक्तेफा किया हैं|

दूसरी फस्ल उन अहादीस पर मुश्तमिल हैं जिन को इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम के अलावा पहले ज़िक्र किए गए आइम्मा में से किसी ने रिवायत किया है, और तीसरी फस्ल उन अहादीस पर मुश्तमिल है जो मानी बाब पर मुश्तमिल हो और मनासब मुल्हकात में से हो, लेकिन यहाँ भी (रावी और रिवायत नक़ल करने वाले इमाम के ज़िक्र की) शर्त का ख़याल रखा गया है, अगर वो सलफ (सहबा किराम) और खल्फ (ताबेइन) से मन्कुल व मरवी हो|

फिर अगर आप किसी बाब में कोई हदीस न पाए तो वो इस लिए है, की मैंने तकरार की वजह से इसे नक़ल नहीं किया, और अगर आप हदीस का कुछ हिस्सा मतरुक पाए तो वो इस का इक्तेसार या इस के साथ मिला हुआ इस का इत्माम इस की अहमियत की वजह से होगा, और अगर आप को दोनों फसलो में कोई इख्तिलाफ नज़र आए के पहली फस्ल में सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम के अलावा कोई हदीस है और फस्ल दुम में सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की कोई हदीस है, तो आप जान ले के मैंने अल जामेअ बैन अल सहीहैन ली हुमैदी और जामेअ अल उसूल दानों किताबो की पूरी छानबीन के बाद मैंने शेखैन और इन दोनों के मतन पर ऐतमाद किया है|

और अगर आप हदीस के मतन में इख्तिलाफ देखें तो वो हदीस के मुख्तलिफ तरिक की वजह से हैं, मुमकिन है के मुझे इस रिवायत का पता न चला हो जिसे अल शैख़ इमाम बगवी رحمه الله ने (मसाबिह में) नक़ल किया हो, और आप ये बहुत कम पाएंगे के में कहूँ: मैंने ये रिवायत कुतुबे असल में नहीं पाई, या मैंने इस से मुखतलिफ़ इस में पाई है, पस जब आप को ऐसी बात का पता चले तो आप मेरी समझ की कमी की वजह इस तासीर को मेरी तरफ मंसूब करे जनाब शैख़, अल्लाह तआला दारेनमें इन की कदर व मंज़िलात बढ़ाए, की तरफ नहीं, इस (तकसीर को जनाब अल शैख़ की तरफ मंसूब करने) से अल्लाह तआला की पनाह, जिस शख्स को, अल्लाह तआला इस पर रहम फरमाए, इस बारे में पता चले तो वो इस के मुतल्लिक हमें आगाह करे और दुरुस्त तारिक की तरफ हमारी रहनुमाई फरमाए, मैंने वुसअत व ताकत के मुताबिक़ (तर्क हदीस और इख्तिलाफ अलफ़ाज़ की) तहकीक व तफतीस में कोई कमी नहीं छोड़ी, और मैंने जिसे पाया वो इख्तिलाफ नक़ल कर दिया, और अल शैख़ رحمه الله ने जहाँ हदीस के गरीब या जईफ होने की तरफ इशारा किया है, मैंने ग़ालिब तौर पर वहां इस की वजह बयान कर दी हैं, और

जहाँ उन्होंने जो के अलसौल (मसलन मुन्कते, मौकूफ, मुरसल) यही हैं, इशारा नहीं किया तो, किसी मसलिहत के पेशे नज़र चंद मकामत के सिवा, मैंने भी इन की इत्तेबा में उसे वैसे ही छोड़ दिया, और बसा अवकात आप कुछ ऐसे मकामात पाएंगे जो के मह्मुल और वो इस लिए है के मुझे इस के रावी का पता नहीं चला, तो मैंने वहाँ कुछ नहीं लिखा इसे वैसे छोड़ दिया, पास अगर आप को पता चले तो आप इसे वहां लिख दे, अल्लाह तआला आप को बेहतर बदला अता फरमाए| मैंने किताब का नाम **"मिश्कतुल मस्सबिह"** रखा है, मैंने अल्लाह तआला से तौफिक और मदद करें, हिदायत दें और हमारी हिफाज़त फरमाए(गलती और लग्ज़िशसे बचाओ) अपने मकसद की तेसर तलब करता हो, और दरख्वास्त करता हूँ, वो हयात और बाद अलममात मुझे और तमाम मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को फाइदा पहुंचाए| मेरे लिए अल्लाह ही काफी है और वो बतारिन कारज़ाश है|

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا الْأَعْمَال بِالنِّيَّاتِ وَإِنَّمَا لكل امْرِئ مَا نَوَى فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ فَهِجْرَتُهُ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى دُنْيَا يُصِيبُهَا أَوِ امْرَأَةٍ يَتَزَوَّجُهَا فَهجرَته إِلَى مَا هَاجر إِلَيْهِ»

1. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तमाम आमाल का दारोमदार नियतो पर है, हर शख़्स को वही कुछ मिलेगा जो उस ने नियत की, पस जिस शख़्स की हिजरत अल्लाह और उस के रसूल की खातिर हुई तो उसकी हिजरत अल्लाह और उस के रसूल ﷺ की खातिर है, और जिस की हिजरत हुसूले दुनिया या किसी औरत से शादी करने की खातिर हुई तो उसकी हिजरत इस की खातिर है, जिस की खातिर उस ने हिजरत की"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1 ، 54 ، 2529 ، 3898 ، 5070 ، 6689 ، 6953) و مسلم (1907 ، الامارة : 155)، (4927) [و النسائی ، الایمان و النذور : النیة فی المیمن ح 3825 ، السلفیة 2 / 135 ، و اللفظ له الا عنده '' لدنیا '' بدل '' الی دنیا '' وجاء فی بعض نسخ النسائی '' الی دنیا '']

दुआओं का बयान • كتاب الدَّعْوَات

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٢٢٣ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ مُسْتَجَابَةٌ فَتَعَجَّلَ كُلُّ نَبِيٍّ دَعْوَتَهُ وَإِنِّي اخْتَبَأْتُ دَعْوَتِي شَفَاعَةً لِأُمَّتِي إِلَى يومِ القِيامةِ فَهِيَ نَائِلَةٌ إِنْ شَاءَ اللَّهُ مَنْ مَاتَ مِنْ أُمَّتِي لَا يُشْرِكُ بِاللَّهِ شَيْئًا» . رَوَاهُ مُسلم وللبخاري أقصر مِنْهُ

2223. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' हर नबी की (अपनी उम्मत के बारे) में एक दुआ कबूल होती है , पस हर नबी ने दुआ करने में जल्दी की जबकि मेंने अपने दुआ को अपनी उम्मत की शफाअत के लिए रोज़ ए कियामत के लिए छिपा रखा है, और वह (शफ़ाअत) इंशाअल्लाह हर इस शख़्स को पहुंचेगी जो इस हाल में फौत हुआ होगा के उस ने अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराया होगा|", मुस्लिम, और बुखारी की रिवायत उस से मुख़्तसर है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (338 / 199)، (491) و البخارى (6304)

٢٢٢٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اللَّهُمَّ إِنِّي اتَّخَذْتُ عِنْدَكَ عَهْدًا لَنْ تُخْلِفَنِيهِ فَإِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ فَأَيُّ الْمُؤْمِنِينَ آذَيْتُهُ شَتَمْتُهُ لَعَنْتُهُ جَلَدْتُهُ فاجْعَلْهَا لَهُ صَلَاةً وَزَكَاةً وَقُرْبَةً تُقَرِّبُهُ بِهَا إِلَيْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ»

2224. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' अल्लाह मेंने तुझ से एक अहद लिया है बेशक जिसका तो खिलाफ नहीं करेगा, मैं भी एक इंसान हूँ, मेंने जिस किसी मोमिन को अज़ीयत पहुंचाई हो, मेंने इसे बुरा-भला कहा हो, लान-तान की हो, इसे मारा हो, तो इस अज़ीयत को उस के लिए बाईसे रहमत, तहारत और बाईस कुरबत बना दे, और रोज़ ए कियामत इस कुरबत की वजह से तो उसे अपना मुकर्रब बना ले"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (6361) و مسلم (90 / 2601)، (6619)

٢٢٢٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا دَعَا أَحَدُكُمْ فَلَا يقُلْ: اللهُمَّ اغفِرْ لي إِنْ شِئتَ ارْحمْني إِنْ شِئْتَ ارْزُقْنِي إِنْ شِئْتَ وَلِيَعْزِمْ مَسْأَلَتَهُ إِنَّه يفعلُ مَا يَشَاء وَلَا مكره لَهُ ". رَوَاهُ البُخَارِيّ

2225. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' जब तुम में से कोई दुआ करे तो यूँ न कहे, ऐ अल्लाह, अगर तू चाहे तो मुझे बख्श दे, अगर तू चाहे तो मुझ पर रहम फरमा, अगर तू चाहे तो

मुझे रीज़्क अता फरमा, बल्कि इसे चाहिए के वह पुरे अज़्म के साथ दुआ करे, क्योंकि वह जो चाहे करता है इसे कोई मजबूर करने वाला नहीं”| (बुखारी)

رواه البخارى (7477)

٢٢٢٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا دَعَا أَحَدُكُمْ فَلَا يَقُلِ: [ص:٦٩ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي إِنْ شِئْتَ وَلَكِنْ لِيَعْزِمْ وَلْيُعَظِّمِ الرَّغْبَةَ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَتَعَاظَمُهُ شيءٌ أعطاهُ ". رَوَاهُ مُسلم

2226. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब तुम में से कोई दुआ करे तो यूँ न कहे, ऐ अल्लाह, अगर तू चाहे तो मुझे बख्श दे बल्कि इसे पुख्ता अज़्म के साथ और बड़ी रगबत के साथ दुआ करनी चाहिए क्योंकि किसी भी चिज़ का अता करना अल्लाह के लिए कोई गिराह नहीं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (8 / 2679)، (6812)

٢٢٢٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُسْتَجَابُ لِلْعَبْدِ مَا لَمْ يَدْعُ بِإِثْمٍ أَوْ قَطِيعَةِ رَحِمٍ مَا لَمْ يَسْتَعْجِلْ» . قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا الِاسْتِعْجَالُ؟ قَالَ: " يَقُولُ: قَدْ دَعَوْتُ وَقَدْ دَعَوْتُ فَلَمْ أَرَ يُسْتَجَابُ لِي فَيَسْتَحْسِرُ عِنْدَ ذَلِكَ وَيَدَعُ الدُّعاءَ ". رَوَاهُ مُسلم

2227. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ बंदा जब तक किसी गुनाह या कतअ रहमी के बारे में दुआ न करे उसकी दुआ कबूल होती है, बशर्तेकी वह जल्द बाज़ी न करे”, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल, जल्द बाज़ी से क्या मुराद है? आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ वह कहता है में तो बहोत दुआए कर चूका, लेकिन मेरी दुआ कबुल ही नहीं होती इस सूरते हाल में वह मायूस हो जाता है और दुआ करना छोड़ देता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (92 / 2735)، (6936) [و انظر صحيح بخارى (6340)]

٢٢٢٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " دعوةُ الْمُسْلِمِ لِأَخِيهِ بِظَهْرِ الْغَيْبِ مُسْتَجَابَةٌ عِنْدَ رَأْسِهِ مَلَكٌ مُوَكَّلٌ كُلَّمَا دَعَا لِأَخِيهِ بِخَيْرٍ قَالَ الْمَلَكُ الْمُوَكَّلُ بِهِ: آمِينَ وَلَكَ بِمِثْلٍ ". رَوَاهُ مُسلم

2228. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ मुसलमान शख़्स की अपने मुसलमान भाई के लिए वह दुआ कबूल होती है जो उसकी गैर मौजूदगी में की जाती है, और दुआ करने वाले के

पास एक फ़रिश्ता मामूर होता है, जब वह अपने भाई के लिए दुआएं खैर करता है तो वह मामूर फ़रिश्ता आमीन कहता है और कहता है, इसी मिसल तुम्हारे लिए भी हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (88 / 2733)، (6929)

٢٢٢٩ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَدْعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ وَلَا تدْعُوا على أَوْلَادكُم لَا تُوَافِقُوا مِنَ اللَّهِ سَاعَةً يُسْأَلُ فِيهَا عَطَاءً فَيَسْتَجِيبَ لَكُمْ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَذَكَرَ حَدِيثَ ابْنِ عَبَّاسٍ: «اتَّقِ دَعْوَةَ الْمَظْلُومِ» فِي كِتَابِ الزَّكَاة .

2229. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ अपने औलाद और अपने अमवाल के लिए बद्दुआ न करो कहीं ऐसा न हो की तुम किसी ऐसी घड़ी में अल्लाह से दुआ कर बेठो, जिस में दुआ कबूल हो जाती है”| # और इब्ने अब्बास (र अ) से मरवी हदीस: “मज़लूम की बद्दुआ से बचो ‘‘ किताब अल ज़कात में ज़िक्र की गई है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (74 / 3009)، (7515) O حديث ابن عباس تقدم (1772)

दुआओं का बयान • كتاب الدَّعْوَات

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٢٢٣٠ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: [ص:٦٩ «الدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ» ثُمَّ قَرَأَ: (وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لكم)»» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه

2230. नौमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ दुआ ही इबादत है, फिर आप ने यह आयत पढ़ी : ’’तुम्हारे रब ने फ़रमाया: मुझ से दुआए करो, मैं तुम्हारी दुआए कबूल करूँगा‘‘| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (4 / 267 ح 18542 ، 4 / 276 ح 18623) و ابوداؤد (1479) و الترمذی (2969 و قال : حسن صحيح) و النسائی (فی الکبری :11464) و ابن ماجه (3828) [و صححه ابن حبان (الموارد : 2396) و الحاکم (1 / 490491) و وافقه الذهبی]

٢٢٣١ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2231. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' दुआ इबादत का मगज़ है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3371 و قال : غريب) * ابن لهيعة مدلس و عنعن

٢٢٣٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَ شَيْءٌ أَكْرَمَ عَلَى اللَّهِ مِنَ الدُّعَاءِ»

2232. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' अल्लाह के यहाँ दुआ से बेहतर कोई चीज़ नहीं''| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3370) و ابن ماجه (3829) * قتاده مدلس و عنعن

٢٢٣٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَلْمَانَ الْفَارِسِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَرُدُّ الْقَضَاءَ إِلَّا الدُّعَاءُ وَلَا يَزِيدُ فِي الْعُمْرِ إِلَّا الْبر» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2233. सलमान फारसी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' सिर्फ दुआ ही कज़ा को टाल सकती है और सिर्फ नेकी व इताअत ही उमर दराज़ कर सकती है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (2139 و قال : هذا حديث حسن غريب) * سليمان التيمى عنعن و فى السند علة أخرى و للحديث شاهد ضعيف عند ابن ماجه (90 ، 4022)

٢٢٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الدُّعَاءَ يَنْفَعُ مِمَّا نَزَلَ وَمِمَّا لَمْ يَنْزِلْ فَعَلَيْكُمْ عِبَادَ اللَّهِ بِالدُّعَاءِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

2234. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' दुआ उन मसाइब (तकलीफ) के लिए नफ़ामंद है जो नाज़िल हो चुके और इन के लिए भी जो अभी नाज़िल नहीं हुए, अल्लाह के बन्दों दुआए किया करो”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (3515 ، 3548 و قال : هذا حديث غريب) * عبدالرحمن بن ابى بكر المليكى ضعيف و للحديث شواهد ضعيفة عند ابن ماجه (3551) و غيره

٢٢٣٥ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ أَحْمَدُ عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ. وَقَالَ التِّرْمِذِيّ هَذَا حَدِيث غَرِيب

2235. और इमाम अहमद ने मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه احمد (5 / 234 ح 22394) * رواه إسماعيل بن عياش عن غير الشاميين و شهر بن حوشب لم يدرک معاذاً رضی الله عنه فالسند منقطع

٢٢٣٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ أَحَدٍ يَدْعُو بِدُعَاءٍ إِلَّا آتَاهُ اللَّهُ مَا سَأَلَ أَوْ كَفَّ عَنْهُ مِنَ السُّوءِ مِثْلَهُ مَا لَمْ يَدْعُ بِإِثْمٍ أَوْ قَطِيعَةِ رحم» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2236. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब कोई शख़्स दुआ करता है जिस में गुनाह या कतअ रहमी न हो तो अल्लाह तआला इस शख़्स को उसकी मतलूब चीज़ ही अता फरमा देता है या फिर उसकी मिस्ल तकलीफ उस से दूर कर देता है”| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (3381 ، 3573 و قال : حسن غریب صحیح) و للحدیث شواھد

٢٢٣٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ [ص:٦٩ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ أَنْ يُسْأَلَ وَأَفْضَلُ الْعِبَادَةِ انْتِظَارُ الْفَرَجِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَقَالَ هَذَا حَدِيث غَرِيب

2237. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ अल्लाह से उस का फ़ज़्ल तलब किया करो, क्योंकि अल्लाह पसंद करता है की उस से सवाल किया जाए और कशाईश खुशहाली का इंतज़ार अफज़ल इबादत है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواه الترمذی (3571) * حکیم بن جبیر : ضعیف رمی بالتشیع و رجل : مجھول

٢٢٣٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ لَمْ يَسْأَلِ اللَّهَ يغضبْ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2238. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो शख़्स अल्लाह से सवाल नहीं करता तो वह उस पर नाराज़ होता है”| (ज़ईफ़)

رواه الترمذی (3373) [و ابن ماجه : 3827] * ابوصالح الخوزی لین الحدیث

٢٢٣٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ فُتِحَ لَهُ مِنْكُمْ

بَابُ الدُّعَاءِ فُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ الرَّحْمَةِ وَمَا سُئِلَ اللَّهُ شَيْئًا يَعْنِي أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ أَنْ يُسْأَلَ الْعَافِيَةَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2239. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ तुम में से जिस शख़्स के लिए दुआ का दरवाज़ा खोल दिया गया, तो उस के लिए रहमत के दरवाज़े खोल दिए गए और अल्लाह को यह बहोत पसंद है के उस से आफियत का सवाल किया जाए”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه الترمذی (3548) [و تقدم : 2234]

٢٢٤٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَسْتَجِيبَ اللَّهُ لَهُ عِنْدَ الشَّدَائِدِ فَلْيُكْثِرِ الدُّعَاءَ فِي الرَّخَاءِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

2240. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जिस शख़्स को पसंद हो के मुश्किलात मसाइब (तकलीफ) के वक़्त अल्लाह तआला उसकी दुआ कबूल फरमाए तो फिर इसे चाहिए के वह खुशहाली में कसरत से दुआए करे”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3382)

٢٢٤١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ادْعُوا اللَّهَ وَأَنْتُمْ مُوقِنُونَ بِالْإِجَابَةِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَجِيبُ دُعَاءً مِنْ قَلْبٍ غَافِلٍ لَاهٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حديثٌ غَرِيب

2241. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ दुआ की क़बूलियत के यकीन के साथ अल्लाह से दुआ करो और जान लो अल्लाह क़ल्ब गाफ़िल से की गई दुआ कबूल नहीं फरमाता”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3479) * صالح المری : ضعيف ، و له شاهد ضعيف عند احمد (2 / 177)

٢٢٤٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مَالِكِ بْنِ يَسَارٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا سَأَلْتُمُ اللَّهَ فَاسْأَلُوهُ بِبُطُونِ أَكُفِّكُمْ وَلَا تَسْأَلُوهُ بِظُهُورِهَا»

2242. मालिक बिन यस्सार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब तुम अल्लाह से दुआ करे तो उस से सीधे हाथों से दुआ करो और उस से उल्टे हाथों से दुआ ना करो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1486)

٢٢٤٣ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: «سَلُوا اللَّهَ بِبُطُونِ أَكُفِّكُمْ وَلَا تَسْأَلُوهُ بِظُهُورِهَا فَإِذَا فَرَغْتُمْ فامسحوا بهَا وُجُوهكُم» . رَوَاهُ دَاوُد

2243. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत में है फ़रमाया: "ए अल्लाह! से सीधे हाथों से दुआ किया करो उल्टे (हाथों) से दुआ न किया करो और जब तुम (दुआ से) फारिग़ हो जाए तो उन हाथो को अपने चेहरे पर फेरा लिया करो"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1485) * فيه مجهول و علة أخرى و للحديث شواهد ضعيفة انظر الحديث الآتى (2245)

٢٢٤٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سَلْمَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ رَبَّكُمْ حَيِيٌّ [ص:٦٩] كَرِيمٌ يَسْتَحْيِي مِنْ عَبْدِهِ إِذَا رَفَعَ يَدَيْهِ إِلَيْهِ أَنْ يَرُدَّهُمَا صِفْرًا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعوات الْكَبِير

2244. सलमान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' तुम्हारा रब बड़ा हयादार सखिदाता है< जब बंदा उस के सामने दस्ते सवाल दराज़ करता है तो उसे खाली लौटाते हुए इसे हया आती है"| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (3556 و قال : حسن غريب) و ابوداؤد (1488) و البيهقى فى الدعوات الكبير (1 / 137 ح 180181) [و ابن ماجه : 3865] * جعفر بن ميمون ضعفه الجمهور و تابعه سليمان التيمى و هو مدلس (و زعم الحافظ ابن حجر خلافه و قوله مرجوح) و التيمى عنعن

٢٢٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا رَفَعَ يَدَيْهِ فِي الدُّعَاءِ لَمْ يَحُطَّهُمَا حَتَّى يمسح بهما وَجهه. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2245. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ दुआ के लिए हाथ उठाया करते थे, तो आप ﷺ उन्हें चेहरे पर फेर कर नीचे गिराया करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3385 و قال : غريب) * فيه حماد بن عيسى : ضعيف (و انظر حديث : 2243) و ثبت مسح الوجه فى الدعاء بالراحتين عن ابن عمر و ابن الزبير رضى الله عنهما ، رواه البخارى فى الادب المفرد (609) و سنده حسن لذاته و اخطا من ضعفه

٢٢٤٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَحِبُّ الْجَوَامِعَ مِنَ الدُّعَاءِ وَيَدَعُ مَا سِوَى ذَلِكَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2246. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जामेअ दुआए करना पसंद करते थे और उन के अलावा बाकी दुआए छोड़ दिया करते थे| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (1482) [و صححه ابن حبان (الموارد : 2412) و الحاكم (1 / 539) و وافقه الذهبى]

٢٢٤٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِن أَسْرَعَ الدُّعَاءِ إِجَابَةً دَعْوَةُ غَائِبٍ لِغَائِبٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

2247. अब्दुल्लाह बिन अम्र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ किसी शख़्स के लिए उसकी अदम मौजूदगी में की गई दुआ बहोत जल्द कबूल होती है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1980 و قال : غريب و الافريقی يضعف فی الحديث) و ابوداؤد (1535) * الافريقی ضعيف

٢٢٤٨ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ اسْتَأْذَنْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْعُمْرَةِ فَأَذِنَ لِي وَقَالَ: «أَشْرِكْنَا يَا أُخَيُّ فِي دُعَائِكَ وَلَا تَنْسَنَا» . فَقَالَ كَلِمَةً مَا يَسُرُّنِي أَنَّ لِيَ بِهَا الدُّنْيَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَانْتَهَتْ رِوَايَتُهُ عِنْدَ قَوْلِهِ «لَا تنسنا»

2248. उमर बिन ख़िताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मेंने उमरा के लिए नबी ﷺ से इजाज़त तलब की तो आप ﷺ ने मुझे इजाज़त अता की और फ़रमाया: “प्यारे भाई हमें अपने दुआ में याद रखना और हमें भूल न जाना”, आप ﷺ ने ऐसी बात फरमाई जिसके बदले में पूरी दुनिया का हुसूल मेरे लिए बाईस ख़ुशी नहीं”| अबू दावुद, तिरमिज़ी, और इमाम तिरमिज़ी की रिवायत (ولا تنسنا) के अल्फाज़ पर ख़तम हो जाती है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1498) و الترمذی (3562 و قال : حسن صحيح) * فيه عاصم بن عبدالله : ضعيف ، ضعفه جمهور المحدثين و تحقيقهم هو الراجح

٢٢٤٩ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " ثَلَاثَةٌ لَا تُرَدُّ دَعْوَتُهُمْ: الصَّائِمُ حِينَ يُفْطِرُ وَالْإِمَامُ الْعَادِلُ وَدَعْوَةُ الْمَظْلُومِ يَرْفَعُهَا اللَّهُ فَوْقَ الْغَمَامِ وَتُفْتَحُ لَهَا أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَيَقُولُ الرَّبُّ: وَعِزَّتِي لَأَنْصُرَنَّكِ وَلَوْ بعد حِين ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2249. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ तीन आदमियों की दुआ ज़रूर कबूल होती है, रोज़ा दार जब वह इफ्तार के वक़्त दुआ करता है, आदिल बादशाह और दुआएं मज़लूम अल्लाह इस दुआ को बादलो के ऊपर उठा लेता है, उस के लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और रब फरमाता है, मेरी इज्ज़त की क़सम में ज़रूर तुम्हारी मदद करूँगा ख्वाह कुछ देर से हो”| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3598 و قال : هذا حديث حسن) [و ابن ماجه (1752) و صححه ابن خزيمه (1901) و ابن حبان (الموارد : 24072408)]

٢٢٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " ثَلَاثُ دَعَوَاتٍ مُسْتَجَابَاتٍ لَا شَكَّ فِيهِنَّ: دَعْوَةُ الْوَالِدِ وَدَعْوَةُ الْمُسَافِرِ وَدَعْوَةُ الْمَظْلُومِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

2250. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' तीन दुआए ऐसी है जिन की क़बूलियत में कोई शक नहीं, वालिद की दुआ, मुसाफ़िर की दुआ और मज़लूम की दुआ"| (सहीह,हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1905) و ابوداؤد (1536) و ابن ماجه (3862) [و صححه ابن حبان (الموارد : 2406)]



दुआओं का बयान • كتاب الدَّعْوَات

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٢٢٥١ - (حسن) عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لِيَسْأَلْ أَحَدُكُمْ رَبَّهُ حَاجَتَهُ كُلَّهَا حَتَّى يَسْأَلَهُ شِسْعَ نَعله إِذا انْقَطع»

2251. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' तुम में से हर शख़्स को अपने तमाम ज़रूरते अपने रब से मांगनी चाहिए, हत्ता कि जब उस के जूते का तस्मिया टूट जाए तो उस के बारे में भी इसी से सवाल करना चाहिए"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (8 / 604 و قال : غريب)

٢٢٥٢ - (حسن) زَادَ فِي رِوَايَةٍ عَنْ ثَابِتٍ الْبُنَانِيِّ مُرْسَلًا «حَتَّى يَسْأَلَهُ الْمِلْحَ وَحَتَّى يَسْأَلَهُ شِسْعَهُ إِذَا انْقَطَعَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2252. और साबित बुनाई से मरवी मुरसल रिवायत में इतना इज़ाफा है, "हत्ता की वह नमक भी उस से मांगे और हत्ता कि जब उस का तस्मिया टूट जाए तो वह भी उस से मांगे"| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (9 / 3604) و انظر الحديث السابق (2251)

٢٢٥٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فِي الدُّعَاءِ حَتَّى يُرى بياضُ إبطَيْهِ

2253. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ दोरान दुआ अपने हाथ इस क़दर बुलंद फरमाते के आप ﷺ की बगलों की सफेदी नज़र आने लगती| (सहीह,मुस्लिम)

صحيح ، رواه البيهقى فى الدعوات الكبير (1 / 138 ح 182) [و مسلم (895)، (2074) و احمد (3 / 259)]

٢٢٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سهل بن سَعْدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: كَانَ يَجْعَل أصبعيه حذاء مَنْكِبَيْهِ وَيَدْعُو

2254. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं आप ﷺ अपने हाथो की उंगलियां कंधों के बराबर किया करते थे और दुआ फरमाते थे| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه البيهقی فی الدعوات الکبیر (1 / 140 ح 185) [و صححه الحاکم (1 / 535 ح 536 ح 1964) و وافقه الذھبی و اصله عند ابی داود (1105) بلفظ آخر و سنده حسن]

٢٢٥٥ - (ضَعِيف) وَعَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا دَعَا فَرفع يَدَيْهِ مَسَحَ وَجْهَهُ بِيَدَيْهِ»»   رَوَى الْبَيْهَقِيُّ الْأَحَادِيثَ الثَّلَاثَة فِي «الدَّعْوَات الْكَبِير»

2255. साइब बिन यज़ीद अपने वालिद से रिवायत करते हैं की जब नबी ﷺ दुआ किया करते थे, तो आप हाथ उठाते और फिर अपने हाथ चेहरे पर फेरा लेते थे| इमाम बयहकी ने तीनो अहादीस '' अल दअवात अल कुबरा '' में रिवायत की| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیھقی فی الدعوات الکبیر (1 / 139140 ح 181) [من حدیث ابی داود و ھذا فی سننه (1492)] * فیه حفص بن ھاشم : مجھول

٢٢٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: الْمَسْأَلَةُ أَنْ تَرْفَعَ يَدَيْكَ حَذْوَ مَنْكِبَيْكَ أَوْ نَحْوِهِمَا وَالِاسْتِغْفَارُ أَنْ تُشِيرَ بِأُصْبُعٍ وَاحِدَةٍ وَالِابْتِهَالُ أَنْ تَمُدَّ يَدَيْكَ جَمِيعًا [ص:٦٩»»   »»   وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: والابتهالُ هَكَذَا وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَجَعَلَ ظُهُورَهُمَا مِمَّا يَلِي وَجْهَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُ

2256. इकरिमा रहिमहुल्लाह इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से बयान करते हैं, दुआ (का अदब) यह है कि तुम अपने हाथ कांधो या तकरीबन कंधो के बराबर उठाओ तलब मगफिरत (का अदब) यह है कि तुम एक ऊँगली (अंगुश्ते शहादत) के साथ इरशाद करो और तजरीअ आजिज़ी यह है हम अपने दोनों हाथ दराज़ कर दो और एक रिवायत में है फ़रमाया तजरीअ आजिज़ी इस तरह है और उन्होंने अपने हाथ इस क़दर बुलंद किए और हाथो की पुश्त को अपने चेहरे की तरफ किया| (हसन)

حسن ، رواہ ابوداؤد (14891490)

٢٢٥٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ يَقُولُ: إِنَّ رَفْعَكُمْ أَيْدِيَكُمْ بِدْعَةٌ مَا زَادَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى هَذَا يَعْنِي إِلَى الصَّدْر رَوَاهُ أَحْمد

2257. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के वह फ़रमाया करते थे तुम्हारा दुआ के लिए हाथ उठाना

बिदअत है, रसूलुल्लाह ﷺ इस यानी)सीने से ऊपर हाथ नहीं उठाते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 61 ح 5264) * فيه بشر بن حرب الندبى : ضعيف ضعفه الجمهور

٢٢٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا ذَكَرَ أَحَدًا فَدَعَا لَهُ بَدَأَ بِنَفْسِهِ رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ صَحِيح

2258. उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ किसी को याद फरमाते, तो उस के लिए दुआ फरमाते और पहले अपने लिए करते तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (3385) [و ابوداؤد (3984) و اصله عند مسلم فى صحيحه (2380) مطولا]

٢٢٥٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَدْعُو بِدَعْوَةٍ لَيْسَ فِيهَا إِثْمٌ وَلَا قَطِيعَةُ رَحِمٍ إِلَّا أَعْطَاهُ اللَّهُ بِهَا إِحْدَى ثَلَاثٍ: إِمَّا أَنْ يُعَجِّلَ لَهُ دَعْوَتَهُ وَإِمَّا أَنْ يَدَّخِرَهَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ وَإِمَّا أَنْ يَصْرِفَ عنهُ من السُّوءِ مثلَها " قَالُوا: إِذنْ نُكثرُ قَالَ: «الله أَكثر» . رَوَاهُ أَحْمد

2259. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: '' जब कोई मुसलमान कोई ऐसी दुआ करता है जिस में गुनाह और कतअ रहमी न हो तो अल्लाह इस वजह से तीन चीजों में से कोई एक इसे अता फरमा देता है, या तो उसकी दुआ फ़ौरन कबूल फरमा लेता है, या इसे उस के लिए आखिरत में ज़खीरा कर लेता है, या फिर उसकी मिस्ल तकलीफ उस से दूर फरमा देता है< सहाबा ने अर्ज़ किया, तो हम ज़्यादा दुआए करेंगे, आप ﷺ ने फ़रमाया: '' अल्लाह दुआएं कबूल करने में बहोत ज़्यादा है”| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (3 / 18 ح 11150) [و عبد بن حميد (937) و البخارى فى الادب المفرد (710) و صححه الحاكم (1 / 463) و وافقه الذهبى]

٢٢٦٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ " خَمْسُ دَعَوَاتٍ يُسْتَجَابُ لَهُنَّ: دَعْوَةُ الْمَظْلُومِ حَتَّى يَنْتَصِرَ وَدَعْوَةُ الْحَاجِّ حَتَّى يَصْدُرَ وَدَعْوَةُ الْمُجَاهِدِ حَتَّى يَقْعُدَ وَدَعْوَةُ الْمَرِيضِ حَتَّى يَبْرَأَ وَدَعْوَةُ الْأَخِ لِأَخِيهِ بِظَهْرِ الْغَيْبِ ". ثُمَّ قَالَ: «وَأَسْرَعُ هَذِهِ الدَّعْوَات إِجَابَة دَعْوَة الْأَخ لِأَخِيهِ بِظَهْرِ الْغَيْبِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعَوَاتِ الْكَبِيرِ

2260. इब्ने अब्बास नबी ﷺ से रिवायत करते हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: '' पांच दुआए है जो कबूल की जाती है, मज़लूम की दुआ हत्ता के वह इन्तेकाम ले ले, हाजी की दुआ हत्ता कि वह वापस आ जाए, मुजाहिद की दुआ हत्ता कि वह (जिहाद से) फारिग़ हो जाए, मरीज़ की दुआ हत्ता कि वह सेहत याब हो जाए और भाई की दुआ जो वह

अपने (मुसलमान) भाई के लिए उसकी अदम मौजूदगी में करता है”| फिर फ़रमाया: “उन दुआओं में भाई की गाइबाना दुआ बहोत जल्द कबूल होती है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه البيهقی فی الدعوات الكبير (لم اجده و راوه فی شعب الايمان : 1125 ، نسخة محققة : 1087) * فيه عبدالرحمن بن زيد (كذا) و لعله عبدالرحيم بن زيد العمی كذاب ، رواه عن ابيه عن سعيد بن جبير عن ابن عباس به و فيه يونس بن افلح لم اجد من و ثقه و زيد العمی ضعيف مشهور

بَابُ ذِكْرِ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ وَالتَّقَرُّبِ إِلَيْهِ • अल्लाह अज्ज़वजल के ज़िक्र और इसके करीब होने का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٢٢٦١ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَأَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَقْعُدُ قَوْمٌ يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا حَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَنَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةُ وَذَكَرَهُمُ اللَّهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2261. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु और अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब कुछ लोग बैठ कर अल्लाह का ज़िक्र करते हैं, तो फ़रिश्ते उन्हें घेर लेते है, रहमत उन्हें ढांप लेती है, इन पर सकिनत नाज़िल होती है, और अल्लाह अपने वहां फरिश्तो के पास उस का तज़किरह फरमाता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (39 / 2700)، (6855)

٢٢٦٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسِيرُ فِي طَرِيقِ مَكَّةَ فَمَرَّ عَلَى جَبَلٍ يُقَالُ لَهُ: جُمْدَانُ فَقَالَ: «سِيرُوا هَذَا جُمْدَانُ سَبَقَ الْمُفَرِّدُونَ» . قَالُوا: وَمَا الْمُفَرِّدُونَ؟ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «الذَّاكِرُونَ الله كثيرا وَالذَّاكِرَات» . رَوَاهُ مُسلم

2262. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मक्का की शाहराह पर सफ़र कर थे आप जुम्दान नामी पहाड़ के पास से गुज़रे तो फ़रमाया: “चलते जाओ यह जमदान है “ फिर फ़रमाया: “मफ़्रुदान सबकत ले गए”, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मफ़्रुदान कौन लोग है? आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ अल्लाह का कसरत से ज़िक्र करने वाले मर्द और औरते”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (4 / 1676)، (6808)

٢٢٦٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَثَلُ الَّذِي يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِي لَا يَذْكُرُ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّت»

2263. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' वह शख़्स जो अपने रब का ज़िक्र करता है वह जिंदा की तरह है और वह शख़्स जो ज़िक्र नहीं करता मुर्दा की तरह है"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (6407) و مسلم (211 / 779)، (1823)

٢٢٦٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِي فَإِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي وَإِنْ ذَكَرَنِي فِي مَلَأٍ ذَكَرْتُهُ فِي مَلَأٍ خير مِنْهُم

2264. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' अल्लाह तआला फरमाता है, मैं अपने बंदे के गुमान के साथ हूँ, जब वह मुझे याद करता है, तो मैं उस के साथ होता हूँ, अगर वह मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं भी इसे अपने दिल में याद करता हूँ, और अगर वह मुझे किसी जमाअत में याद करता है तो में उसे उस से बेहतर (फरिश्तों की) जमाअत में याद करता हूँ"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (7405) و مسلم (2 / 2675)، (6805)

٢٢٦٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا وأزيد وَمن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فجزاء سَيِّئَة مِثْلُهَا أَوْ أَغْفِرُ وَمَنْ تَقَرَّبَ مِنِّي شِبْرًا تَقَرَّبْتُ مِنْهُ ذِرَاعًا وَمن تَقَرَّبَ مِنِّي ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ مِنْهُ بَاعًا وَمَنْ أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً وَمَنْ لَقِيَنِي بِقُرَابِ الْأَرْضِ خَطِيئَةً لَا يُشْرِكُ بِي شَيْئًا لَقِيتُهُ بِمِثْلِهَا مَغْفِرَةً ". رَوَاهُ مُسلم

2265. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' अल्लाह तआला फरमाता है, जो शख़्स एक नेकी लेकर आएगा, तो उस के लिए दस गुना सवाब है, और मैं उसे बढ़ा दूंगा और जो शख़्स बुराई लेकर आएगा तो बुराई का बदला उसकी मिस्ल ही , या फिर मैं बख्श दूंगा, जो शख़्स बालिश्त बराबर मेरे करीब आता है तो में एक हाथ (तकरीबन एक मीटर) उस के करीब हो जाता हूँ, और जो शख़्स एक हाथ मेरे करीब होता है तो में दो हाथ उस के करीब हो जाता हूँ, जो शख़्स चलता हुआ मेरे पास आता है, तो में दोड़ता हुआ उस के पास आता हूँ, जो शख़्स ज़मीन भर कर गुनाह लेकर मेरे पास आएगा तो मैं इसी क़दर मगफिरत लेकर उस से मुलाकात करूँगा, बशर्तेकी वह मेरे साथ किसी को शरीक न ठहराता हो"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (22 / 2687)، (6833)

٢٢٦٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى قَالَ: مَنْ عَادَى لِي وَلِيًّا فَقَدْ آذَنْتُهُ بِالْحَرْبِ وَمَا تَقَرَّبَ إِلَيَّ عَبْدِي بِشَيْءٍ أَحَبَّ إِلَيَّ مِمَّا افْتَرَضْتُ عَلَيْهِ وَمَا يَزَالُ عَبْدِي يَتَقَرَّبُ إِلَيَّ بِالنَّوَافِلِ حَتَّى أُحِبَّهُ فَإِذَا أَحْبَبْتُهُ كُنْتُ سَمْعَهُ الَّذِي يَسْمَعُ بِهِ وَبَصَرَهُ الَّذِي يُبْصِرُ بِهِ وَيَدَهُ الَّتِي يَبْطِشُ بِهَا وَرِجْلَهُ الَّتِي يَمْشِي بِهَا وَإِنْ سَأَلَنِي لَأُعْطِيَنَّهُ وَلَئِنِ اسْتَعَاذَنِي لَأُعِيذَنَّهُ وَمَا تَرَدَّدْتُ عَنْ شَيْءٍ أَنَا فَاعِلُهُ تَرَدُّدِي عَنْ نَفْسِ الْمُؤْمِنِ يَكْرَهُ الْمَوْتَ وَأَنَا أَكْرَهُ مُسَاءَتَهُ وَلَا بُدَّ لَهُ مِنْهُ ". رَوَاهُ البُخَارِيّ

2266. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ अल्लाह तआला ने फ़रमाया: ’’ जो शख़्स मेरे किसी पसंदीदा शख़्स से दुश्मनी रखे तो मेरा उस से एलान जंग है, और मेरा बंदा जिन जिन इबादत के ज़रिए मेरा कुर्ब हासिल करता है उनमें से वह इबादत मुझे बहोत महबूब है जो मेंने उस पर फ़र्ज़ की है, मेरा बंदा नवाफिल के ज़रिए मेरा कुर्ब हासिल करता रहता है, हत्ता कि में उस से मुहब्बत करने लगता हूँ, जब में उस से मुहब्बत करता हूँ, तो मैं उस का कान बन जाता हूँ जिस से वह सुनता है, उसकी आँख बन जाता हूँ जिस से वह देखता है, उस का हाथ बन जाता हूँ जिस से वह पकड़ता है, उस का पाँव बन जाता हूँ जिस से वह चलता है और अगर वह मुझ से कोई चीज़ मांगता है तो में उसे अता कर देता हूँ अगर वह मुझ से पनाह तलब करता है तो में उसे पनाह दे देता हूँ मेंने जो काम करना होता है उस के करने में मुझे कभी इतना तरदुद नहीं होता, जितना किसी मोमिन की जान कब्ज़ करते वक़्त तरदुद होता है के मौत को नागवार जानता है और मैं उसकी तकलीफ को नागवार जानता हूँ, हालाँकि वह मौत तो उसे ज़रूर आनि है”| (बुखारी)

رواه البخارى (6502)

٢٢٦٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ لِلَّهِ مَلَائِكَةً يَطُوفُونَ فِي الطُّرُقِ يَلْتَمِسُونَ أَهْلَ الذِّكْرِ فَإِذَا وَجَدُوا قَوْمًا يَذْكُرُونَ اللَّهَ تَنَادَوْا: هَلُمُّوا إِلَى حَاجَتِكُمْ " قَالَ: «فَيَحُفُّونَهُمْ بِأَجْنِحَتِهِمْ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا» قَالَ: " فَيَسْأَلُهُمْ رَبُّهُمْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِهِمْ: مَا يَقُولُ عِبَادِي؟ " قَالَ: " يَقُولُونَ: يُسَبِّحُونَكَ وَيُكَبِّرُونَكَ وَيَحْمَدُونَكَ وَيُمَجِّدُونَكَ " قَالَ: " فَيَقُولُ: هَلْ رَأَوْنِي؟ " قَالَ: " فَيَقُولُونَ: لَا وَاللَّهِ مَا رَأَوْكَ " قَالَ فَيَقُولُ: كَيْفَ لَوْ رَأَوْنِي؟ قَالَ: " فَيَقُولُونَ: لَوْ رَأَوْكَ كَانُوا أَشَدَّ لَكَ عِبَادَةً وَأَشَدَّ لَكَ تَمْجِيدًا وَأَكْثَرَ لَكَ تَسْبِيحًا " قَالَ: " فَيَقُولُ: فَمَا يَسْأَلُونَ؟ قَالُوا: يسألونكَ الجنَّةَ " قَالَ: " يَقُول: وَهل رأوها؟ [ص: ٧٠ " قَالَ: " فَيَقُولُونَ: لَا وَاللَّهِ يَا رَبِّ مَا رَأَوْهَا " قَالَ: " فَيَقُولُ: فَكَيْفَ لَوْ رَأَوْهَا؟ " قَالَ: " يقولونَ: لَو أَنَّهم رأوها كَانُوا أَشد حِرْصًا وَأَشَدَّ لَهَا طَلَبًا وَأَعْظَمَ فِيهَا رَغْبَةً قَالَ: فممَّ يتعوذون؟ " قَالَ: " يَقُولُونَ: مِنَ النَّارِ " قَالَ: " يَقُولُ: فَهَلْ رَأَوْهَا؟ " قَالَ: يَقُولُونَ: «لَا وَاللَّهِ يَا رَبِّ مَا رَأَوْهَا» قَالَ: " يَقُولُ: فَكَيْفَ لَوْ رَأَوْهَا؟ " قَالَ: «يَقُولُونَ لَوْ رَأَوْهَا كَانُوا أَشَدَّ مِنْهَا فِرَارًا وَأَشَدَّ لَهَا مَخَافَةً» قَالَ: " فَيَقُولُ: فَأُشْهِدُكُمْ أَنِّي قَدْ غَفَرْتُ لَهُمْ " قَالَ: " يَقُولُ مَلَكٌ مِنَ الْمَلَائِكَةِ: فِيهِمْ فُلَانٌ لَيْسَ مِنْهُمْ إِنَّمَا جَاءَ لِحَاجَةٍ قَالَ: هُمُ الْجُلَسَاءُ لَا يَشْقَى جَلِيسُهُمْ ". رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ»» وَفِي رِوَايَةِ مُسْلِمٍ قَالَ: " إِنَّ لِلَّهِ مَلَائِكَةً سَيَّارَةً فُضْلًا يَبْتَغُونَ مَجَالِسَ الذِّكْرِ فَإِذَا وَجَدُوا مَجْلِسًا فِيهِ ذِكْرٌ قَعَدُوا معَهُم وحفَّ بعضُهم بَعْضًا بأجنحتِهم حَتَّى يملأوا مَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ السَّمَاءِ الدُّنْيَا فَإِذَا تَفَرَّقُوا عَرَجُوا وَصَعِدُوا إِلَى السَّمَاءِ قَالَ: فَيَسْأَلُهُمُ اللَّهُ وَهُوَ أَعْلَمُ: مِنْ أَيْنَ جِئْتُمْ؟ فَيَقُولُونَ: جِئْنَا مِنْ عِنْدِ عِبَادِكَ فِي الْأَرْضِ يُسَبِّحُونَكَ وَيُكَبِّرُونَكَ وَيُهَلِّلُونَكَ وَيُمَجِّدُونَكَ وَيَحْمَدُونَكَ وَيَسْأَلُونَكَ قَالَ: وَمَاذَا يَسْأَلُونِي؟ قَالُوا: يَسْأَلُونَكَ جَنَّتَكَ قَالَ: وَهَلْ رَأَوْا جَنَّتِي؟ قَالُوا: لَا أَيْ رَبِّ قَالَ: وَكَيْفَ لَوْ رَأَوْا جَنَّتِي؟ قَالُوا: وَيَسْتَجِيرُونَكَ قَالَ: وَمِمَّ يَسْتَجِيرُونِي؟ قَالُوا: مِنْ نَارِكَ قَالَ: وَهَلْ رَأَوْا نَارِي؟ قَالُوا: لَا. قَالَ: فَكَيْفَ لَوْ رَأَوْا نَارِي؟ قَالُوا: [ص: ٧٠ يَسْتَغْفِرُونَكَ " قَالَ: " فَيَقُولُ: قَدْ غَفَرْتُ لَهُمْ فَأَعْطَيْتُهُمْ مَا سَأَلُوا وَأَجَرْتُهُمْ مِمَّا اسْتَجَارُوا " قَالَ: " يَقُولُونَ: رَبِّ فِيهِمْ فُلَانٌ عَبْدٌ خَطَّاءٌ

وَإِنَّمَا مَرَّ فَجَلَسَ مَعَهُمْ " قَالَ: «فَيَقُولُ وَلَهُ غَفَرْتُ هم الْقَوْم لَا يشقى بهم جليسهم»

2267. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ए अल्लाह! के कुछ फ़रिश्ते है जो अहले ज़िक्र को तलाश करते हुए रास्तो में चक्कर लगाते रहते है, जब वह कुछ लोगों को अल्लाह का ज़िक्र करते हुए पा लेते है तो वह एक दूसरे को आवाज़ देते है, अपने मकसद (अहले ज़िक्र) की तरफ आओ”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो अपने परो के ज़रिए उन्हें घेर लेते है और आसमानी दुनिया तक पहुँच जाते हैं”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उनका रब उन से पूछता है हालाँकि वह उन्हें बेहतर जानता है, मेरे बंदे क्या चाहते है?” फ़रमाया: “वो अर्ज़ करते हैं, वह तेरी तस्बीह, तकबीर और तेरी हम्द सना बयान करते हैं”, फ़रमाया : "वो फरमाता है, क्या उन्होंने मुझे देखा है? वह अर्ज़ करते हैं, नहीं, अल्लाह की क़सम! उन्होंने तुझे नहीं देखा”,फ़रमाया: “ए अल्लाह! तआला फरमाता है, अगर वह मुझे देख लें तो फिर उनकी कैफियत केसी हो?” फ़रमाया: “वो अर्ज़ करते हैं, अगर वह तुझे देख लें तो वह तेरी खूब इबादत करे, खूब शान व अज़मत बयान करे, और तेरी बहोत ज़्यादा तस्बीह बयान करे”, फ़रमाया वह पूछता है :’’वो (मुझे से) क्या मांग रहे हैं वह अर्ज़ करते हैं, वह तुझ से जन्नत मांग रहे हैं”, फ़रमाया: “वो पूछता है, क्या उन्होंने इसे देखा है? तो वह अर्ज़ करते हैं, नहीं, अल्लाह की क़सम! ए रब उन्होंने इसे नहीं देखा”, फ़रमाया: “वो पूछता है अगर वह इसे देख लें तो फिर केसी कैफियत हो?‘‘ फ़रमाया: “वो अर्ज़ करते हैं, अगर वह इसे देख लें तो वह उसकी बहोत ज़्यादा ख्वाहिश चाहत और रगबत रखे”, फ़रमाया: “ए अल्लाह! तआला पूछता है, वह किसी चीज़ से पनाह तलब करते हैं,‘‘ फ़रमाया: “वो अर्ज़ करते हैं, जहन्नम से”, फ़रमाया: “वो पूछता है क्या उन्होंने इसे देखा है? ‘‘फ़रमाया: “वो अर्ज़ करते हैं, नहीं, अल्लाह की क़सम! ए रब उन्होंने इसे नहीं देखा”, फ़रमाया: “वो पूछता है अगर वह इसे देख लें तो फिर केसी कैफियत हो? फ़रमाया: “वो अर्ज़ करते हैं, अगर वह इसे देख लें तो वह उन से बहोत दूर भागे और उन से बहोत ज़्यादा डरेंगे”, आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ अल्लाह तआला फरमाता है, मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मेंने उन्हें बख्श दिया है‘‘, आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ एक फ़रिश्ता अर्ज़ करता है उनमें फलां शख़्स ऐसा है जो के उन यानी अहले ज़िक्र में से नहीं, वह तो किसी ज़रूरत के तहत आया था, फ़रमाया वह ऐसे बैठनेवाले हैं की उनका हम नशीं महरूम नहीं रह सकता”, और मुस्लिम की रिवायत में है: “ए अल्लाह! के कुछ फ़ाज़िल फ़रिश्ते है, जो चक्कर लगाते रहते है और वह ज़िक्र की मजालिस तलाश करते हैं, जब वह ज़िक्र की कोई मजलिस पा लेते है तो वह भी उन के साथ बैठ जाते हैं और अपने परो के ज़रिए उन्हें घेर लेते है, हत्ता कि वह उन ज़ाकरिन के और आसमानी दुनिया के बिच में खला को भर देते है, जब वह ज़ाकरिन मजलिस से उठ जाते हैं तो वह फ़रिश्ते आसमान की तरफ चढ़ जाते हैं फ़रमाया तो अल्लाह उन से पूछता है, हालाँकि वह (इन के अहवाल को) जानता है, तुम कहाँ से आए हो? वह अर्ज़ करते हैं, हम ज़मीन से तेरे उन बंदो के पास से आए है जो तेरी तस्बीह तकबीर और तहलील व तहमिद बयान करते हैं और तुझ से मांगते है, फ़रमाया वह मुझ से क्या मांगते है? वह अर्ज़ करते हैं, वह तुझ से तेरी जन्नत मांगते है, फ़रमाया, क्या उन्होंने मेरी जन्नत देखी है? वह अर्ज़ करते हैं, ए रब, नहीं? फ़रमाया अगर वह मेरी जन्नत देख लें तो फिर केसी कैफियत हो? वह अर्ज़ करते हैं, वह तुझ से पनाह तलब करते हैं, फ़रमाया, वह मुझ से किसी चीज़ से पनाह तलब कर रहे थे? वह अर्ज़ करते हैं, तेरी जहन्नम से, फ़रमाया, क्या उन्होंने मेरी जहन्नम को देखा है? वह अर्ज़ करते हैं, नहीं? फ़रमाया अगर वह मेरी जहन्नम को देख लें तो फिर केसी कैफियत हो? वह अर्ज़ करते हैं, वह तुझ से मगफिरत तलब करते हैं”, फ़रमाया: “ए अल्लाह! तआला फरमाता है, मेंने उन्हें बख्श

दिया उन्होंने जो माँगा मेंने दे दिया और उन्होंने जिस चीज़ से पनाह तलब की मेंने उन्हें उन से पनाह दे दि”, फ़रमाया: “वो फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं, रब जी! उनमें एक ऐसा गुनाहगार शख़्स है के पस वह गुज़र रहा था, और उन के साथ बेठ गया”, फ़रमाया: “ए अल्लाह! रब्बुल इज्ज़त कहते हैं मेंने इसे भी बख्श दिया, वह ऐसे लोग है की उनका हम नशीं महरूम नहीं रह सकता”| (मुस्लिम)

رواه البخارى (6408) و مسلم (25 / 2689)، (6839)

٢٢٦٨ - (صَحِيح) وَعَن حَنْظَلَة بن الرّبيع الأسيدي قَالَ: لَقِيَنِي أَبُو بكر فَقَالَ: كَيْفَ أَنْتَ يَا حَنْظَلَةُ؟ قُلْتُ: نَافَقَ حَنْظَلَةُ قَالَ: سُبْحَانَ اللَّهِ مَا تَقُولُ؟ قُلْتُ: نَكُونُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُذَكِّرُنَا بِالنَّارِ وَالْجَنَّةِ كَأَنَّا رَأْيُ عَيْنٍ فَإِذَا خَرَجْنَا مِنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَافَسْنَا الْأَزْوَاجَ وَالْأَوْلَادَ وَالضَّيْعَاتِ نَسِينَا كثيرا قَالَ أَبُو بكر: فو الله إِنَّا لَنَلْقَى مِثْلَ هَذَا فَانْطَلَقْتُ أَنَا وَأَبُو بَكْرٍ حَتَّى دَخَلْنَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: نَافَقَ حَنْظَلَةُ يَا رَسُولَ اللَّهُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَمَا ذَاكَ؟» قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ نَكُونُ عِنْدَكَ تُذَكِّرُنَا بِالنَّارِ وَالْجَنَّةِ كَأَنَّا رَأْيَ عَيْنٍ فَإِذَا خَرَجْنَا مِنْ عِنْدِكَ عَافَسْنَا الْأَزْوَاجَ وَالْأَوْلَادَ وَالضَّيْعَاتِ نَسِينَا كَثِيرًا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ تَدُومُونَ عَلَى مَا تَكُونُونَ عِنْدِي وَفِي الذِّكْرِ لَصَافَحَتْكُمُ الْمَلَائِكَةُ عَلَى فُرُشِكُمْ وَفِي طُرُقِكُمْ وَلَكِنْ يَا حَنْظَلَةُ سَاعَةٌ وَسَاعَةٌ» ثَلَاث مَرَّات. رَوَاهُ مُسلم

2268. हंजाल बिन रबीअ उसय्दी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु मुझे मिले तो उन्होंने पूछा हंजल कैसे हो मेंने अर्ज़ किया, हंजल मुनाफ़िक़ हो गया, उन्होंने ने फ़रमाया: सुबहानल्लाह! तुम क्या कह रहे हो? मेंने कहा, हम रसूलुल्लाह ﷺ के पास होते हैं वह जहन्नम और जन्नत (की तरबिह व तरगीब) के ज़रिए हमें नसीहत करते रहते है, गोया हम खुद देख रहे हैं, और जब हम रसूलुल्लाह ﷺ के पास से जाते हैं और अज़वाज औलाद और रोजी रोटी में मशगुल हो जाते हैं, तो हम बहोत कुछ भूल जाते हैं, उस पर अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अल्लाह की क़सम! हमारी भी यही सूरते हाल है, मैं और अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु चलते गए, हत्ता कि हम रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में पहुँच गए, तो मेंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हंजल मुनाफ़िक़ हो गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ क्या हुआ? ‘‘मेंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम आप की खिदमत होते हैं तो आप जन्नत दोज़ख के ज़रिए हमें नसीहत फरमाते हैं, गोया हम इसे खुद आंखो से देख रहे हैं, और जब हम आप के पास से जाते हैं, और अपने माल बच्चो और रोजी रोटी में मशगुल हो जाते हैं, तो हम बहोत कुछ भूल जाते हैं इस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! तुम्हारी जो कैफियत मेरे पास होती है और तुम ज़िक्र की जिस सूरत में होते हो अगर तुम्हारी वह कैफियत हमेशा रहे, तो फ़रिश्ते तुम्हारे बिस्तरों पर और तुम्हारे रास्तो में तुम से मुसाफा करे”, और आप ﷺ ने तीन मर्तबा फ़रमाया: “लेकिन हंजल किसी वक़्त ऐसे और किसी वक़्त ऐसे होता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (2750)، (6966)

بَابُ ذِكْرِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ وَالتَّقَرُّبِ إِلَيْهِ • अल्लाह अज़्ज़वजल के ज़िक्र और इसके करीब होने का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٢٦٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلَا أُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرِ أَعْمَالِكُمْ وَأَزْكَاهَا عِنْدَ مَلِيكِكُمْ؟ وَأَرْفَعِهَا فِي دَرَجَاتِكُمْ؟ وَخَيْرٍ لَكُمْ مِنْ إِنْفَاقِ الذهبِ والوَرِقِ؟ وخيرٍ لكم مِنْ أَنْ تَلْقَوْا عَدُوَّكُمْ فَتَضْرِبُوا أَعْنَاقَهُمْ وَيَضْرِبُوا أَعْنَاقَكُمْ؟» قَالُوا: بَلَى قَالَ: «ذِكْرُ اللَّهِ» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ إِلَّا أَنَّ مَالِكًا وقفه على أبي الدَّرْدَاء

2269. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ” क्या मैं तुम्हें तुम्हारे बेहतरीन अमल के बारे में बताऊँ जो के तुम्हारे मालिक के यहाँ अज़्र के लिहाज़ से ज़्यादा बढ़ने वाला, तुम्हारे बुलंद दरजात का बाईस का बनने वाला, तुम्हारे लिए सोने और चाँदी के खर्च करने से बेहतर, और तुम्हारे लिए दुश्मन से ऐसा जिहाद करने से बेहतर जिस में तुम एक दूसरे की गरदने उड़ाओ, सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, क्यों नहीं! ज़रूर बताइए आप ﷺ ने फ़रमाया: ” अल्लाह का ज़िक्र”| मालिक, अहमद तिरमिज़ी और इब्ने माजा अलबत्ता इमाम मालिक ने इसे अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु पर मौकूफ करार दिया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه مالك (1 / 211 ح 493 موقوف) و احمد (6 / 447 ح 28075 ، 5 / 195) و الترمذی (3377) و ابن ماجه (3790)

٢٢٧٠ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن يسر قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ؟ فَقَالَ: «طُوبَى لِمَنْ طَالَ عُمْرُهُ وَحَسُنَ عَمَلُهُ» قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ الْأَعْمَالِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: («ن تُفَارِقَ الدُّنْيَا وَلِسَانُكَ رَطْبٌ مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ» رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

2270. अब्दुल्लाह बिन बसर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आराबी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ, तो उस ने अर्ज़ किया, कौन से लोग बेहतर है? आप ﷺ ने फ़रमाया: ” इस शख़्स के लिए खुशखबरी है, जिस की उमर दराज़ हो और उस का अमल अच्छा हो”, उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! कौन सा अमल बेहतर है? आप ﷺ ने फ़रमाया: ” मरते वक़्त तेरी ज़ुबान पर अल्लाह का ज़िक्र जारी हो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (4 / 188 ح 17832) و الترمذی (2329 ، 3375 و قال : حسن)

٢٢٧١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا مَرَرْتُمْ بِرِيَاضِ الْجَنَّةِ فَارْتَعُوا» قَالُوا: وَمَا رِيَاضُ الْجنّ؟ قَالَ: «حلق الذّكر» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2271. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब तुम बाग़ाते जन्नत के पास से गुज़रा तो वहां से खा लिया करो”, सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, बाग़ाते जन्नत क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ ज़िक्र के हलके”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3510 و قال : حسن غريب) * فيه محمد بن ثابت : ضعيف و للحديث شواهد کلها ضعيفة

٢٢٧٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ [ص:٧٠ قَعَدَ مَقْعَدًا لَمْ يَذْكُرِ اللَّهَ فِيهِ كَانَتْ عَلَيْهِ مِنَ اللَّهِ تِرَةٌ وَمَنِ اضْطَجَعَ مَضْجَعًا لَا يذكر الله فِيهِ كَانَ عَلَيْهِ مِنَ اللَّهِ تِرَةٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

2272. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो शख़्स किसी जगह बैठें और वहां अल्लाह का ज़िक्र न करे, तो उस पर अल्लाह की तरफ से नुकसान होगा, और जो शख़्स किसी जगह लेटे और वहां अल्लाह का ज़िक्र न करे, तो उस पर अल्लाह की तरफ से नुकसान होगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4856)

٢٢٧٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ قَوْمٍ يَقُومُونَ مِنْ مَجْلِسٍ لَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ فِيهِ إِلَّا قَامُوا عَنْ مِثْلِ جِيفَةِ حِمَارٍ وَكَانَ عَلَيْهِمْ حَسرَةً» . رَوَاهُ أحمدُ وَأَبُو دَاوُد

2273. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो लोग किसी ऐसी मजलिस से उठे जहाँ उन्होंने अल्लाह का ज़िक्र न किया तो तो वह ऐसे उठेंगे जैसे किसी गधे की बदबूदार लाश से उठे हो और यह मजलिस रोज़ ए कियामत इन के लिए बाईस हसरत होगी”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (2 / 515 ح 10691 مختصرًا) و ابوداؤد (4855)

٢٢٧٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا جَلَسَ قَوْمٌ مَجْلِسًا لَمْ يَذْكُرُوا اللَّهَ فِيهِ وَلَمْ يُصَلُّوا عَلَى نَبِيِّهِمْ إِلَّا كَانَ عَلَيْهِمْ تِرَةً فَإِنْ شَاءَ عَذَّبَهُمْ وَإِنْ شَاءَ غَفَرَ لَهُمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

2274. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो लोग किसी मजलिस में बैठ कर अल्लाह का ज़िक्र करे न अपने नबी ﷺ पर दुरुद भेजी तो यह (मजलिस) इन के लिए बाईस हसरत व नुकसान होगी, अगर वह चाहे तो उन्हें अज़ाब दे और अगर चाहे तो उन्हें बख्श दे”| (सहीह,ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (3380 و قال : حسن) * سفيان الثوری عنعن و حديث احمد (2 / 463 ح 9965 و سنده صحيح) يغنی عنه)

٢٢٧٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَمِّ حَبِيبَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُّ كَلَامِ ابْنِ آدَمَ عَلَيْهِ لَا لَهُ إِلَّا أَمْرٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ نَهْيٌ عَنْ مُنْكَرٍ أَوْ ذِكْرُ اللَّهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

2275. उम्म हबीबा रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' अम्र बिल मारुफ़ या नहयी अन मुनकर या अल्लाह के ज़िक्र के सिवा इब्ने आदम का तमाम कलाम उस पर बोझ है, वह उस के लिए नफ़ामंद नहीं”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2412) و ابن ماجه (3974) * ام صالح بنت صالح : لا يعرف حالها

٢٢٧٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُكْثِرُوا الْكَلَامَ بِغَيْرِ ذِكْرِ اللَّهِ فَإِنَّ كَثْرَةَ الْكَلَامِ بِغَيْرِ ذِكْرِ اللَّهِ قَسْوَةٌ لِلْقَلْبِ وَإِنَّ أَبْعَدَ النَّاسِ مِنَ اللَّهِ الْقَلْبُ الْقَاسِي» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2276. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' अल्लाह के ज़िक्र के सिवा ज़्यादा बाते न किया करो, क्योंकि अल्लाह के ज़िक्र के सिवा ज़्यादा बाते करन दिल की कसादत सख्ती का बाईस है, और सख्त दिल शख़्स अल्लाह से कोसो दूर है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2411 و قال : غريب)

٢٢٧٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ (وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَب وَالْفِضَّة)»» كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ فَقَالَ بَعْضُ أَصْحَابِهِ: [ص:٧٠ نَزَلَتْ فِي الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ لَوْ عَلِمْنَا أَيُّ الْمَالِ خَيْرٌ فَنَتَّخِذَهُ؟ فَقَالَ: «أَفْضَلُهُ لِسَانٌ ذَاكِرٌ وَقَلْبٌ شَاكِرٌ وَزَوْجَةٌ مُؤْمِنَةٌ تُعِينُهُ عَلَى إِيمَانِهِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

2277. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब यह आयत (وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ) नाज़िल हुई तो हम नबी ﷺ के साथ किसी सफ़र में शरीक थे, तो आप के बाज़ सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: सोने और चाँदी के बारे मे, तो आयत नाज़िल हो गई, काश हम जान लें के कौन सा माल बेहतर है? ताकि हम इसे हासिल कर ले, आप ﷺ ने फ़रमाया: '' सबसे अफज़ल माल ज़िक्र करने वाली ज़ुबान, कल्ब शाकरा और मोमिन शरीके हयात जो उस के ईमान के बारे में उसकी मदद करे| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (5 / 278 ح 22751) و الترمذی (3094 و قال : حسن) و ابن ماجه (1856) * سالم بن ابی الجعد لم يسمع من ثوبان رضی الله عنه

بَابُ ذِكْرِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ وَالتَّقَرُّبِ إِلَيْهِ • अल्लाह अज्ज़वजल के ज़िक्र और इसके करीब होने का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٢٧٨ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: خَرَجَ مُعَاوِيَةُ عَلَى حَلْقَةٍ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ: مَا أَجْلَسَكُمْ؟ قَالُوا: جَلَسْنَا نَذْكُرُ اللَّهَ قَالَ: آللَّهِ مَا أَجْلَسَكُمْ إِلَّا ذَلِكَ؟ قَالُوا: آللَّهِ مَا أَجْلَسَنَا غَيْرُهُ قَالَ: أما إِنِّي لم أستحلفكم تُهْمَة لكم وَمَا كَانَ أَحَدٌ بِمَنْزِلَتِي مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقَلَّ عَنْهُ حَدِيثًا مِنِّي وَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ عَلَى حَلْقَةٍ مِنْ أَصْحَابِهِ فَقَالَ: «مَا أَجْلَسَكُمْ هَاهُنَا» قَالُوا: جَلَسْنَا نَذْكُرُ اللَّهَ وَنَحْمَدُهُ عَلَى مَا هَدَانَا لِلْإِسْلَامِ وَمَنَّ بِهِ علينا قَالَ: " آالله مَا أجلسكم إِلَّا ذَلِك؟ قَالُوا: آالله مَا أَجْلَسَنَا إِلَّا ذَلِكَ قَالَ: «أَمَا إِنِّي لَمْ أَسْتَحْلِفْكُمْ تُهْمَةً لَكُمْ وَلَكِنَّهُ أَتَانِي جِبْرِيلُ فَأَخْبَرَنِي أَنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ يُبَاهِي بِكُمُ الْمَلَائِكَة» . رَوَاهُ مُسلم

2278. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मुआविया रदियल्लाहु अन्हु मस्जिद के एक हलके के पास आए तो फ़रमाया तुम क्यों बैठें हो? उन्होंने कहा, हम अल्लाह का ज़िक्र करने के लिए बैठें है, उन्होंने ने फ़रमाया: क्या तुम अल्लाह की क़सम! उठाते हो कि तुम सिर्फ इसीलिए बैठें हो? उन्होंने कहा, हम अल्लाह की क़सम! उठाते है की हम सिर्फ इसीलिए बैठें है, उन्होंने ने फ़रमाया: मेंने तुम्हारे मुतल्लिक किसी बदगुमानी की वजह से तुम से क़सम नहीं उठवाई और आप में से कोई ऐसा नहीं जिसे रसूलुल्लाह ﷺ से मुझ जैसी कुरबत हो, उस के बावजूद मेंने कम हदीसे बयान की, रसूलुल्लाह ﷺ अपने सहाबा के एक हलके में तशरीफ़ लाए तो उन से फ़रमाया: “तुम यहाँ क्यों बैठें हो? उन्होंने अर्ज़ किया, हम अल्लाह का ज़िक्र करने और इस बात पर उस का शुक्र अदा करने के लिए बैठें है की उस ने इस्लाम की तरफ हमारी रहनुमाई फरमाई और उस के ज़रिए हम पर इहसान किया, आप ﷺ ने फ़रमाया: ” क्या तुम अल्लाह की क़सम! उठाते हो की तुम सिर्फ इसीलिए बैठें हो?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह की क़सम! हम सिर्फ इसीलिए बैठें है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने तुम्हारे मुतल्लिक किसी बदगुमानी की वजह से तुम से क़सम नहीं उठवाई, बल्कि जिब्राइल अलैहिस्सलाम मेरे पास तशरीफ़ लाए तो उन्होंने मुझे बताया की अल्लाह अज्ज़वजल तुम्हारी वजह से फरिश्तो पर फख्र फरमाता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (40 / 2701)، (6857)

٢٢٧٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبد الله بن بسر: أَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ شَرَائِعَ الْإِسْلَامِ قَدْ كَثُرَتْ عَلَيَّ فَأَخْبِرْنِي بِشَيْءٍ أَتَشَبَّثُ بِهِ قَالَ: " لَا يَزَالُ لِسَانُكَ رَطْبًا بِذكر اللَّهِ)»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث حسن غَرِيب

2279. अब्दुल्लाह बिन बसर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के किसी आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! शराए इस्लाम (फ़र्ज़ नफ्ली इबादत मुझ पर ग़ालिब गए आप किसी एक चीज़ के मुतल्लिक मुझे बताइए कि मैं

उस के साथ तमसिक लगाऊ इख़्तियार कर लू आप ﷺ ने फ़रमाया: '' तेरी ज़ुबान पर हर वक़्त अल्लाह का ज़िक्र जारी रहना चाहिए"| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3375) و ابن ماجه (3793)

٢٢٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُئِلَ: أَيُّ الْعِبَادِ أَفْضَلُ وَأَرْفَعُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ قَالَ: «الذَّاكِرُونَ اللَّهَ كَثِيرًا [ص: ٧٠ وَالذَّاكِرَاتُ» قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمِنَ الْغَازِي فِي سَبِيلِ اللَّهِ؟ قَالَ: «لَوْ ضَرَبَ بِسَيْفِهِ فِي الْكُفَّارِ وَالْمُشْرِكِينَ حَتَّى يَنْكَسِرَ وَيَخْتَضِبَ دَمًا فَإِنَّ الذَّاكِرَ لِلَّهِ أَفْضَلُ مِنْهُ دَرَجَة» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَقَالَ التِّرْمِذِيّ: هَذَا حَدِيث حسن غَرِيب

2280. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया गया रोज़ ए कियामत कौन लोग अल्लाह के यहाँ फ़ज़ीलत रफअत के आअला दरजे पर फाईज़ होंगे? आप ﷺ ने फ़रमाया: '' कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करने वाले मर्द और कसरत से ज़िक्र करने वाली औरते", अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले से भी अफज़ल, आप ﷺ ने फ़रमाया: '' अगरचे वह कुफ्फार मुशरिकिन से इस क़दर तलवार के साथ लड़ाई करे के वह तलवार टूट जाए और वह खून से रंगीन हो जाए तब भी अल्लाह का ज़िक्र करने वाला उस से दर्जा में अफज़ल है"| अहमद तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (3 / 75 ح 11743) و الترمذی (3376 و قال : غريب)

٢٢٨١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الشَّيْطَانُ جَاثِمٌ عَلَى قَلْبِ ابْنِ آدَمَ فَإِذَا ذَكَرَ اللَّهَ خَنَسَ وَإِذا غفَلَ وسوس» . رَوَاهُ البُخَارِيّ تَعْلِيقا

2281. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' शैतान इब्ने आदम का दिल के साथ चिमटा रहता है, जब वह अल्लाह का ज़िक्र करता है तो वह पीछे हट जाता है, और जब वह गाफ़िल होता है तो वह वसवसे डालता है "| इमाम बुखारी ने इसे मुअल्लक रिवायत किया है| (बुखारी तालिकन)

لم اجده ، رواه البخاری (لم يروه بهذا اللفظ ، انما ذکر قول ابن عباس قبل ح 4977 (تفسير سورة الناس) بلفظ آخر و اسنده الضياء المقدسی فی المختارة (10 / 367 ح 393) عن ابن عباس موقوفاً بلفظ :'' يولد الانسان و الشيطان جائم علی قلبه فاذا عقل و ذکر الله خنس و اذا غفل وسوس '' و سنده صحيح و رواه ابن جرير الطبری فی تفسيره (30 / 228) و الحاکم (2 / 541 ح 3991) و صححه و وافقه الذهبی فالموقوف صحيح و للمرفوع شاهد ضعيف فی حلية الاولياء (6 / 268) و غيره ، فيه عدی بن ابی عمارة و زياد النميری و هما ضعيفان]

٢٢٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مَالِكٍ قَالَ: بَلَغَنِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ: «ذَاكِرُ اللَّهِ فِي الْغَافِلِينَ كَالْمُقَاتِلِ خَلْفَ الْفَارِّينَ وَذَاكِرُ اللَّهِ فِي الْغَافِلِينَ كَغُصْنٍ أَخْضَرَ فِي شَجَرٍ يَابِس»

2282. इमाम मालिक रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मुझे खबर पहुंची है के रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाया करते थे: “गफ़लत के शिकार लोगों में अल्लाह का ज़िक्र करने वाला मैदान ए जिहाद से राह फरार इख़्तियार करने वालो के बाद किताल करने वाले की तरह है और गाफ़िल लोगों में अल्लाह का ज़िक्र करने वाला खुश्क दरख्त में सब्ज़ शाख की तरह है”| (मझे नहीं मिली)

لم اجده ، رواه مالک فی الموطا (لم اجده و قال المنذری فی الترغیب و الترهیب [2 / 532 ح 2526] : و لم اره فی شی من نسخ الموطا) * و لبعض الحدیث شواهد ضعیفة جدًا ، (رواه الطبرانی و ابونعیم فی حلیة الاولیاء (4 / 268 فیه الواقدی کذاب و محصن بن علی مجهول) (2) الحسن بن عرفة فی جزء ہ (45) و فیه عمران بن مسلم و عباد بن کثیر : ضعیفان جدًا

٢٢٨٣ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي رِوَايَةٍ: «مَثَلُ الشَّجَرَةِ الْخَضْرَاءِ فِي وَسَطِ الشَّجَرِ وَذَاكِرُ اللَّهِ فِي الْغَافِلِينَ مَثَلُ مِصْبَاحٍ فِي بَيْتٍ مُظْلِمٍ وَذَاكِرُ اللَّهِ فِي الْغَافِلِينَ يُرِيهِ اللَّهُ مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ وَهُوَ حَيٌّ وَذَاكِرُ اللَّهِ فِي الْغَافِلِينَ يُغْفَرُ لَهُ بِعَدَدِ كُلِّ فَصِيحٍ وَأَعْجَمٍ» . وَالْفَصِيحُ: بَنُو آدَمَ وَالْأَعْجَمُ: الْبَهَائِم. رَوَاهُ رزين

2283. और एक दूसरी रिवायत में है: “(इस की मिसाल ऐसे है) जैसे खुश्क दरख्तों में एक सर सब्ज़ दरख्त हो और गाफिलिन में अल्लाह का ज़िक्र करने वाला तारिक कमरे में चिराग की तरह है, गाफिलिन में अल्लाह का ज़िक्र करने वाले को अल्लाह उसकी जिंदगी में उस का जन्नत में मक़ाम दिखा देता है, और अल्लाह गाफिलिन में इस का ज़िक्र करने वाले के फसीह अअजिम की तादाद के बराबर गुनाह बख्श देता है”| फसीह से इंसान और अअजम से हैवान मुराद हैं| (ज़ईफ़)

ضعیف جذا ، رواه رزین (لم اجده) و رواه الحسن بن عرفة بسند ضعیف جدًا ، انظر الحدیث السابق : 2282]

٢٢٨٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: مَا عَمِلَ الْعَبْدُ عَمَلًا أَنْجَى لَهُ مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ. رَوَاهُ مَالِكٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه

2284. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, इब्ने आदम के तमाम आमाल में से अज़ाब इलाही से इसे सबसे ज़्यादा निजात दिलाने वाला अमल अल्लाह का ज़िक्र है”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه مالک (1 / 211 ح 493 موقوف و سنده ضعیف لانقطاعه) و الترمذی (3377 سنده ضعیف) و ابن ماجه (3790 و سنده ضعیف) * زیاد بن ابی زیاد : میسرة المخزومی مولی ابن عیاش لم یدرک سیدنا معاذ بن جبل رضی الله عنه فالسند منقطع

٢٢٨٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَقُولُ: أَنَا مَعَ عَبْدِي إِذَا ذَكَرَنِي وتحركت بِي شفتاه ". رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2285. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ अल्लाह तआला फरमाता है,

मैं अपने बंदे के साथ होता हूँ जब वह मेरा ज़िक्र करता है और मेरे (ज़िक्र के) साथ उस के होठ हरकत करते हैं”| (सहीह)

صحیح ، رواہ البخاری (التوحید باب 43 قبل ح 7524 معلقاً) [و احمد (2 / 540) و ابن ماجه (2792) و صححه ابن حبان (الموارد : 2316) و الحاکم (1 / 496) و وافقه الذھبی]

٢٢٨٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ: «لِكُلِّ [ص:٧٠ شَيْءٍ صِقَالَةٌ وَصِقَالَةُ الْقُلُوبِ ذِكْرُ اللَّهِ وَمَا مِنْ شَيْءٍ أَنْجَى مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ» قَالُوا: وَلَا الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ؟ قَالَ: «وَلَا أَنْ يَضْرِبَ بِسَيْفِهِ حَتَّى يَنْقَطِعَ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعَوَاتِ الْكَبِيرِ

2286. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ फ़रमाया करते थे: “हर चीज़ के लिए एक सफाई करने वाली चीज़ होती है, जबकि दिलों की सफाई करने वाली चीज़ अल्लाह का ज़िक्र है, और अल्लाह के ज़िक्र से बढ़कर अल्लाह के अज़ाब से बचाने वाली कोई चीज़ नहीं”, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह की राह में जिहाद करना भी नहीं? आप ﷺ ने फ़रमाया: ” नहीं! अगरचे वह अपने तलवार इस क़दर चलाए के वह टूट जाए”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف جدا ، رواہ البیھقی فی الدعوات الکبیر (1 / 15 ح 19) [و شعب الایمان : 522 ، نسخة محققة : 519] * فیه سعید بن سنان ابو مھدی الحنفی : متروک

अल्लाह के नामो का बयान • بَاب أَسمَاء الله تَعَالَى

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٢٨٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ لِلَّهِ تَعَالَى تِسْعَةً وَتِسْعِينَ اسْمًا مِائَةً إِلَّا وَاحِدًا مَنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «وَهُوَ وتر يحب الْوتر»

2287. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ” अल्लाह तआला के निन्यानवे, एक कम सौ नाम है, जो उन्हें याद कर ले वह जन्नत में दाखिल होगा”, और एक दूसरी रिवायत में है: “वो वित्र(यक्ता) है और वित्र को पसंद करता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواہ البخاری (6410 ، 7392) و مسلم (6 / 2677)، (6810)

بَاب أَسمَاء الله تَعَالَى • अल्लाह के नामो का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٢٨٨ - (ضَعِيف) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ لِلَّهِ تَعَالَى تِسْعَةً وَتِسْعِينَ اسْمًا مَنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَه هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ الْغَفَّارُ الْقَهَّارُ الْوَهَّابُ الرَّزَّاقُ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ الْقَابِضُ الْبَاسِطُ الْخَافِضُ الرَّافِعُ الْمُعِزُّ الْمُذِلُّ [ص:٧٠ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ الْحَكَمُ الْعَدْلُ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ الْحَلِيمُ الْعَظِيمُ الْغَفُورُ الشَّكُورُ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ الحَفيظُ المُقيتُ الْحَسِيبُ الْجَلِيلُ الْكَرِيمُ الرَّقِيبُ الْمُجِيبُ الْوَاسِعُ الْحَكِيمُ الْوَدُودُ الْمَجِيدُ الْبَاعِثُ الشَّهِيدُ الْحَقُّ الْوَكِيلُ الْقَوِيُّ الْمَتِينُ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ الْمُحْصِي الْمُبْدِئُ الْمُعِيدُ الْمُحْيِي المُميتُ الحَيُّ القَيُّومُ الواجِدُ الماجِدُ الواحِدُ الأحَدُ الصَّمَدُ الْقَادِرُ الْمُقْتَدِرُ الْمُقَدِّمُ الْمُؤَخِّرُ الْأَوَّلُ الْآخِرُ الظَّاهِرُ الْبَاطِنُ الْوَالِي الْمُتَعَالِي الْبَرُّ التَّوَّابُ الْمُنْتَقِمُ العَفُوُّ الرَّؤوفُ مَالِكُ الْمُلْكِ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ الْمُقْسِطُ الْجَامِعُ الْغَنِيُّ الْمُغْنِي الْمَانِعُ الضَّارُّ النَّافِعُ النُّورُ الْهَادِي الْبَدِيعُ الْبَاقِي الْوَارِثُ الرَّشِيدُ الصَّبُورُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ والبيهقيُّ فِي الدَّعواتِ الْكَبِير. وَقَالَ التِّرْمِذِيّ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

2288. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' अल्लाह तआला के निन्यानवेएक कम सौ नाम है जो उन्हें याद कर ले वह जन्नत में दाखिल होगा, वह अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, वह बहोत मेहरबान निहायत रहम करने वाला है, वह बादशाह है, मुनज्ज़ है, सलामती देने वाला, अमन देने वाला, निगेहबान, ग़ालिब, जब्बार व मुतकब्बर, पैदा करने वाला, अदम से वुजूद में लाने वाला, तस्वीर कशी करने वाला, बख्शने वाला, तमाम मखलूक पर ग़ालिब, अता करने वाला, रीज़्क देने वाला, फैसला करने वाला, जानने वाला, तंगी दूर करने वाला, फराखी करने वाला, ऊपर करने वाला, इज्ज़त देने वाला, ज़िल्लत देने वाला, देखने वाला, हुक्म देने वाला, अदल करने वाला, बारीक बिन खबर रखने वाला, अज़मत वाला, बख्शने वाला, कदरदान बुलंद बड़ा हिफाज़त करने वाला, निगरानी करने वाला, किफ़ायत करने वाला,, शान व बुज़ुर्गी वाला, सखिदाता हिफाज़त करने वाला, दुआए कबूल करने वाला, कशाईश वाला, हिकमत वाला, मुहब्बत रखने वाला, शान व शौकत वाला, मर्दों को दोबारा जिंदगी अता करने वाला, हाज़िर साबित कारसाज़ क़वी ताकत वाला, मददगार काबिले तारीफ़ अहाता करने वाला, पहली बार पैदा करने वाला, दोबारा पैदा करने वाला, मारने वाला, जिंदगी बख्शने वाला, काइम रहने और काइम रखने वाला, पालने वाला, बुज़ुर्गी वाला, यकता तन्हा बेनियाज़ कादि व मुकद्दर आगे करने वाला, पीछे करने वाला, अव्वल व आख़िर ज़ाहिर बातिन तमाम अशियाअ का मालिक, बुलंद तर इहसान करने वाला, तौबा कबूल करने वाला, इन्तेकाम लेने वाला, दरगुज़र करने वाला, हमदर्दी करने वाला, शहंशाह, अज़मत व इकराम वाला, इन्साफ करने वाला, रोज़ ए कियामत जमा करने वाला, गनी बेनियाज़ करने वाला, रोकने वाला, नुकसान पहुँचाने वाला, नफा देने वाला, मुज्स्सिम नूर, राह खाने वाला, बे मिसाल, पैदा करने वाला, बाकि रखने वाला, वारिस रहनुमाई करने वाला, बहोत बर्दाश्त करने वाला"| तिरमिज़ी, बयहकी की अल दाआत अल कुबरा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3507) و البیھقی فی الدعوات الکبیر (2 / 3031 ح 262) * الولید بن مسلم کان یدلس التسویة و لم یصرح بالسماع المسلسل

٢٢٨٩ - (صَحِيح) وَعَن بُرَيْدَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَمِعَ رَجُلًا يَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِأَنَّكَ أَنْتَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ الْأَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ فَقَالَ: «دَعَا اللَّهَ بِاسْمِهِ الْأَعْظَمِ الَّذِي إِذَا سُئِلَ بِهِ أَعْطَى وَإِذَا دُعِيَ بِهِ أَجَابَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

2289. बुरैदा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने एक आदमी को उन अल्फ़ाज़ के साथ दुआ करते हुए सुना, ऐ अल्लाह! में तुझ से सवाल करता हूँ कि तू अल्लाह है, तेरे सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, यकता बेनियाज़ है, जिस की न औलाद है न वालिदेन और न कोई उस का हमसर है, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: '' इस शख़्स ने अल्लाह से उस के इस्मे आज़म के तवस्सुल से दुआ की है, जब उस से इस (यानी इस्म आज़म) के साथ सवाल किया जाता है तो वह अता फरमाता है और जब उस के साथ दुआ की जाती है तो वह कबूल फरमाता है"| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (3475) و ابوداؤد (1493)

٢٢٩٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كُنْتُ جَالِسًا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَسْجِدِ وَرَجُلٌ يُصَلِّي فَقَالَ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِأَنَّ لَكَ الْحَمْدَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ الْحَنَّانُ الْمَنَّانُ بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ أَسْأَلُكَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «دَعَا اللَّهَ بِاسْمِهِ الْأَعْظَمِ الَّذِي إِذَا دُعِيَ بِهِ [ص:٧٠ أَجَابَ وَإِذَا سُئِلَ بِهِ أَعْطَى» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

2290. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ के साथ मस्जिद में बैठा हुआ था, और एक आदमी नमाज़ पढ़ रहा था, उस ने कहा, ऐ अल्लाह! में तुझ से सवाल करता हूँ, के हर किस्म की हमद तेरे ही लिए है, तेरे सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, बन्दों पर रहम करने वाला, नेअमतें अता करने वाला, ज़मीन व आसमान को अदम से वुजूद बख्शने वाला, ए इज्ज़त इकराम वाले, ए जिंदा और काइम रखने वाले, मैं तुझ से सवाल करता हूँ (ये सुन कर), नबी ﷺ ने फ़रमाया: '' इस (बन्दे ने) अल्लाह से उस के इस इस्मे आज़म के साथ दुआ की है, जब उस के साथ उस से दुआ की जाए तो वह कबूल फरमाता है, और जब उस के साथ उस से सवाल किया जाए तो वह अता करता है"| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (3544 و قال : غریب) و ابوداؤد (1495) و النسائی (3 / 52 ح 1301) و ابن ماجه (3858)

٢٢٩١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيدَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " اسْمُ اللَّهِ الْأَعْظَمُ فِي هَاتَيْنِ الْآيَتَيْنِ: (وَإِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ)»» وفاتحة (آل عمرانَ)»» : (آلم اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ)»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

2291. अस्मा बिन्ते यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: '' अल्लाह का इस्मे आज़म इन दो आयातों में है (وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ) और सुरह आले इमरान के आगाज़ की आयत

((الٓمّ اللهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ)) (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3478 و قال : حسن صحیح) و ابوداؤد (1496) و ابن ماجه (3855) و الدارمی (2 / 450 ح 2392)

٢٢٩٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَعْدَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:»» دَعْوَةُ ذِي النُّونِ إِذا دَعَا رَبَّهُ وَهُوَ فِي بَطْنِ الْحُوتِ (لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظالمينَ)»» لَمْ يَدْعُ بِهَا رَجُلٌ مُسْلِمٌ فِي شَيْءٍ إِلاَّ استجابَ لَهُ ". رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

2292. साअद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' युनुस अलैहिस्सलाम जब मछली के पेट में थे तो उन्होंने उन अल्फाज़ के साथ दुआ की थी (لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَکَ اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظّٰالِمِیْنَ) '' तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तू पाक है, बेशक मैं ही ज़ालिमो में से था", कोई मुसलमान शख़्स किसी मुआमले मैं इन अल्फाज़ के साथ दुआ करता है तो उसकी दुआ कबूल की जाती है"| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (1 / 170 ح 1462) و الترمذی (3505)

अल्लाह के नामो का बयान	بَاب أَسمَاء الله تَعَالَى •
तीसरी फस्ल	الْفَصْل الثَّالِث •

٢٢٩٣ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ بُرَيْدَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَسْجِدَ عِشَاءً فَإِذَا رَجُلٌ يَقْرَأُ وَيَرْفَعُ صَوْتَهُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتَقُولُ: هَذَا مُرَاءٍ؟ قَالَ: «بَلْ مُؤْمِنٌ مُنِيبٌ» قَالَ: وَأَبُو مُوسَى الْأَشْعَرِيُّ يَقْرَأُ وَيَرْفَعُ صَوْتَهُ فَجَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَسَمَّعُ لِقِرَاءَتِهِ ثُمَّ جَلَسَ أَبُو مُوسَى يَدْعُو فَقَالَ: [ص:٧١ اللَّهُمَّ إِنِّي أُشْهِدُكَ أَنَّكَ أَنْتَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَحَدًا صَمَدًا لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أُحُدٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَقَدْ سَأَلَ اللَّهَ بِاسْمِهِ الَّذِي إِذَا سُئِلَ بِهِ أَعْطَى وَإِذَا دُعِيَ بِهِ أَجَابَ» قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أُخْبِرُهُ بِمَا سَمِعْتُ مِنْكَ؟ قَالَ: «نَعَمْ» فَأَخْبَرْتُهُ بِقَوْلِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لِي: أَنْتَ الْيَوْمَ لِي أَخٌ صَدِيقٌ حَدَّثْتَنِي بِحَدِيثِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ رزين

2293. बुरैदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं ईशा के वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ के साथ मस्जिद में दाखिल हुआ, तो एक आदमी बुलंद आवाज़ से किराअत कर रहा था, मेंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! ﷺ क्या आप समझते है कि यह (आदमी) रियाकार है? आप ﷺ ने फ़रमाया: '' नहीं? बल्कि वह तो गफलत से ज़िक्र की तरफ रुजू करने वाला मोमिन शख़्स है, '' रावी बयान करते हैं, इस वक़्त अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बुलंद आवाज़ से किराअत कर रहे थे, तो रसूलुल्लाह ﷺ गौर से उनकी किराअत सुनने लगे, फिर अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बैठ कर दुआ करने लगे तो उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह! में तुझे गवाह बना कर कहता हूँ, के तू अल्लाह है, तेरे सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, यकता बेनियाज़ है, जिस ने किसी न को जन्म दिया न इसे जन्म दिया गया, और ना ही कोई

उस का हम सर है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ उस ने अल्लाह के इस इस्मे आज़म के साथ सवाल किया है, जब उस से इस (इस्म) के साथ सवाल किया जाता है तो वह अता करता है, और जब उस के साथ उस से दुआ की जाती है तो वह कबूल फरमाता है”, मेंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने आप से जो सुना है उस के मुतल्लिक इसे बता दू? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, ‘‘ मैंने रसूलुल्लाह ﷺ की बात इसे बता दी तो उन्होंने अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे फ़रमाया, आज से तुम मेरे भाई और दोस्त हो, तुमने मुझे रसूलुल्लाह ﷺ की बात बताई| (सहीह)

صحيح ، رواه رزين (لم اجده) [و احمد (5 / 349 ح 23340 ، 5 / 359 ح 23421) و ابوداؤد (1493 ، 1494) و ابن ماجه (3857) و الترمذی (3475 و سنده صحيح)]

بَاب ثَوَابُ التَّسْبِيحِ وَالتَّحْمِيدِ والتهليل وَالتَّكْبِير • तस्बीह, तम्हीद, तहलील और तकबीर के सवाब का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٢٢٩٤ - (صَحِيح) عَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَفْضَلُ الْكَلَامِ أَرْبَعٌ: سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ "»» وَفِي رِوَايَةٍ: " أَحَبُّ الْكَلَامِ إِلَى اللَّهِ أَرْبَعٌ: سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ لَا يَضُرُّكَ بِأَيِّهِنَّ بَدَأْتَ ". رَوَاهُ مُسلم

2294. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ चार कलमे سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُلِلهِ وَلَا اِلٰه اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ (सुबहानल्लाह अल्हम्दुलिल्लाह ला इलाहा इल्लल्लाह और (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर)बेहतरीन कलाम है”| और एक दूसरी रिवायत में: “ए अल्लाह! को चार कलमे इन्तिहाई पसंद है سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُلِلهِ وَلَا اِلٰه اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ (सुबहानल्लाह अल्हम्दुलिल्लाह ला इलाहा इल्लल्लाह और (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर) उनमें से जिसे भी पहले पढ़ो वह तुम्हारे लिए मुज़िर नहीं? ‘‘ (मुस्लिम)

رواه مسلم (12 / 2137)، (5601)

٢٢٩٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَأَنْ أَقُولَ: سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْس ". رَوَاهُ مُسلم

2295. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ سُبْحَانَ اللهِ وَالْحَمْدُلِلهِ وَلَا اِلٰه اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ” (सुबहानल्लाह अल्हम्दुलिल्लाह ला इलाहा इल्लल्लाह और (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर) पढ़ लेना मुझे पूरी काइनात (के मिल जाने) से ज़्यादा पसंद है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (32 / 2695)، (6847)

٢٢٩٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ قَالَ: سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ فِي يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ حُطَّتْ خَطَايَاهُ وَإِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ "

2296. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो शख़्स दिन में सौ मर्तबा (سُبْحَان اللهِ وَبِحَمْدِهِ) पढ़ता है तो उस के गुनाह ख्वाह समुन्दर की झाग जितने हो मुआफ़ कर दिए जाते हैं”। (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (6405) و مسلم (28 / 2691)، (6842)

٢٢٩٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ قَالَ حِينَ يُصْبِحُ وَحِينَ يُمْسِي: سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ مِائَةَ مَرَّةٍ لَمْ يَأْتِ أَحَدٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِأَفْضَلَ مِمَّا جَاءَ بِهِ إِلَّا أَحَدٌ قَالَ مِثْلَ مَا قَالَ أَوْ زَادَ عَلَيْهِ)

2297. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो शख़्स सुबह व शाम सौ मर्तबा (سُبْحَان اللهِ وَبِحَمْدِهِ) पढ़ता है तो कियामत के दिन उस से कोई शख़्स बेहतर नहीं होगा, बजुज़ उस के जिस ने इस जितनी या या उस से ज़्यादा मर्तबा पढ़ा होगा”। (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (لم اجده) و مسلم (29 / 2692)، (6843)

٢٢٩٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "كَلِمَتَانِ خَفِيفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ ثَقِيلَتَانِ فِي الْمِيزَانِ حَبِيبَتَانِ إِلَى الرَّحْمَنِ: سُبْحَانَهُ الله وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَهُ الله الْعَظِيم "

2298. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ दो कलमे (سُبْحَان اللهِ وَبِحَمْدِهِ (سُبْحَان اللهِ الْعَظِيْمِ) ज़ुबान पर हल्के मीज़ान में भारी और रहमान को महबूब है”। (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (6682) و مسلم (31 / 2694)، (6846)

٢٢٩٩ - (صَحِيح) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ: قَالَ: كُنَّا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «أَيَعْجِزُ أَحَدُكُمْ أَنْ يَكْسِبَ كُلَّ يَوْمٍ أَلْفَ حَسَنَةٍ؟» فَسَأَلَهُ سَائِلٌ مِنْ جُلَسَائِهِ: كَيْفَ يَكْسِبُ أَحَدُنَا أَلْفَ حَسَنَةٍ؟ قَالَ: «يُسَبِّحُ مِائَةَ تَسْبِيحَةٍ فَيُكْتَبُ لَهُ أَلْفُ حَسَنَةٍ أَوْ يُحَطُّ عَنهُ ألفُ خطيئةٍ» . رَوَاهُ مُسلم»» وَفِي كِتَابه: فِي جَمِيعِ الرِّوَايَاتِ عَنْ مُوسَى الْجُهَنِيِّ: «أَوْ يُحَطُّ» قَالَ أَبُو بكر البرقاني وَرَوَاهُ شُعْبَةُ وَأَبُو عَوَانَةَ وَيَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الْقطَّان عَن مُوسَى فَقَالُوا: «ويحُطُّ» بِغَيْر ألف هَكَذَا فِي كتاب الْحميدِي

2299. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर थे तो आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ क्या तुम में से कोई रोज़ाना हज़ार नेकी कमाई से आजिज़ है”, तो आप की मजलिस में

शरीक किसी ने अर्ज़ किया, हम में से कोई हज़ार नेकी कैसे कमा सकता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ सौ मर्तबा (سُبْحَانَ اللهِ) कहने से उस के लिए हज़ार नेकी लिखी जाती है, या उस के हज़ार गुनाह मिटा दिए जाते हैं”| मुस्लिम, और इन्ही की किताब में मूसा अल जुहनी की तमाम रिवायत में (اَوْيُحَطُّ) या मिटा दिए जाते हैं”| के अल्फाज़ है अबू बक्र बिरकानी ने फ़रमाया: और इस हदीस को शुअबा अबू अव्वाना और याह्या बिन सईद क़त्तान ने मूसा से रिवायत किया जो उन्होंने (وْيُحَطُّ) के अल्फाज़ रिवायत किए है यानी अलिफ़ के बगैर ’’ और मिटा दिए जाते हैं”, किताब अल हुमैदी मैं भी इसी तरह है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (37 / 2698)، (6852)

٢٣٠٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيُّ الْكَلَامِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: " مَا اصْطَفَى اللَّهُ لِمَلَائِكَتِهِ: سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ ". رَوَاهُ مُسلم

2300. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया गया कौन सा कलाम अफज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ जो अल्लाह ने अपने फरिश्तो के लिए मुन्तखब किया (سُبْحَان اللهِ وَبِحَمْدِهِ)| (मुस्लिम)

رواه مسلم (84 / 2731)، (6925)

٢٣٠١ - (صَحِيح) وَعَن جوَيْرِية أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ مِنْ عِنْدِهَا بُكْرَةً حِينَ صَلَّى الصُّبْحَ وَهِيَ فِي مَسْجِدِهَا ثُمَّ رَجَعَ بَعْدَ أَنْ أَضْحَى وَهِيَ جَالِسَةٌ قَالَ: «مَا زِلْتِ عَلَى الْحَالِ الَّتِي فَارَقْتُكِ عَلَيْهَا؟» قَالَتْ: نَعَمْ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَقَدْ قُلْتُ بَعْدَكِ أَرْبَعَ كَلِمَاتٍ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ لَوْ وُزِنَتْ بِمَا قُلْتِ مُنْذُ الْيَوْمِ لَوَزَنَتْهُنَّ: سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ عَدَدَ خَلْقِهِ وَرِضَاءَ نَفْسِهِ وَزِنَةَ عَرْشِهِ وَمِدَادَ كَلِمَاته ". رَوَاهُ مُسلم

2301. जुरियह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ नमाज़ फज्र पढ़ने के लिए सुबह के वक़्त उन के पास से तशरीफ़ ले गए जबकि वह अपने जाए नमाज़ पर थी, फिर आप चाश्त के वक़्त उन के पास तशरीफ़ लाए तो वह वही बेठी हुई थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ आप इसी हालत में रही जिस पर मेंने आप को छोड़ा था, उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ! नबी ﷺ ने फ़रमाया: ’’ मेंने आप के (पास से जाने के) बाद तीन कलमे चार मर्तबा पढ़े हैं, अगर उनका आप के दिन भर के कहे हुए कलिमात के साथ वज़न किया जाए तो वह इन पर भारी होंगे (سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ عَدَدَ خَلْقِهِ وَرِضَا نَفْسِهِ وَزِنَةَ عَرْشِهِ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ) “पाक है अल्लाह अपने हम्द के साथ अपने मखलूक की तादाद अपने नफ्स की रज़ा अपने अर्श के वज़न और अपने कलिमात की रोशनाई के बराबर”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (79 / 2726)، (6913)

٢٣٠٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: " من قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ فِي يَوْمٍ مِائَةَ مَرَّةٍ كَانَتْ لَهُ عَدْلَ عَشْرِ رِقَابٍ وَكُتِبَتْ لَهُ مِائَةُ حَسَنَةٍ وَمُحِيَتْ عَنْهُ مِائَةُ سَيِّئَةٍ وَكَانَتْ لَهُ حِرْزًا مِنَ الشَّيْطَانِ يَوْمَهُ ذَلِكَ حَتَّى يُمْسِيَ وَلَمْ يَأْتِ أَحَدٌ بِأَفْضَلَ مِمَّا جَاءَ بِهِ إِلَّا رَجُلٌ عَمِلَ أَكْثَرَ مِنْهُ "

2302. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: जो शख़्स दिन में सौ मर्तबा यह दुआ पढ़ता है, (لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ) "ए अल्लाह! के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं, इसी के लिए बादशाहत है, इसी के लिए हर किस्म की तारीफ़ है, और वह हर चीज़ पर कादिर है", तो उसे दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलता है, उस के लिए सौ नेकियाँ लिखी जाती है, उस के सौ गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं, वह पूरा दिन शाम होने तक शैतान से महफ़ूज़ रहेगा और उन से बेहतर कोई शख़्स नहीं आएगा, मगर वह जिस ने उन से ज़्यादा मर्तबा पढ़ा होगा"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (6403) و مسلم (28 / 2691)، (6842)

٢٣٠٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ فَجَعَلَ النَّاسُ يَجْهَرُونَ بِالتَّكْبِيرِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ ارْبَعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ إِنَّكُمْ لَا تَدْعُونَ أَصَمَّ وَلَا غَائِبًا إِنَّكُمْ تَدْعُونَ سَمِيعًا بَصِيرًا وَهُوَ مَعَكُمْ وَالَّذِي تَدْعُونَهُ أَقْرَبُ إِلَى أَحَدِكُمْ مِنْ عُنُقِ رَاحِلَتِهِ» قَالَ أَبُو مُوسَى: وَأَنَا خَلْفَهُ أَقُولُ: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ فِي نَفْسِي فَقَالَ: «يَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ قَيْسٍ أَلَا أَدُلُّكَ عَلَى كَنْزٍ مِنْ كُنُوزِ الْجَنَّةِ؟» فَقُلْتُ: بَلَى يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ»

2303. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सफ़र कर रहे थे, की लोग बुलंद आवाज़ से (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर पढ़ने लगे, जिस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' लोगो! अपने आप पर आसानी करो, क्योंकि तुम किसी बहरे या गायब को नहीं पुकार रहे, बल्कि तुम तो सुनने देखने वाली ज़ात को पुकार रहे हो, और वह तुम्हारे साथ है और जिस ज़ात को तुम पुकारते हो, वह तो तुम्हारी सवारी की गर्दन से भी तुम्हारे ज़्यादा करीब है"| अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं आप के पीछे अपने दिल में (لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ) पढ़ रहा था, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: '' अब्दुल्लाह बिन कैस क्या मैं तुम्हें जन्नत के खज़ाने के मुतल्लिक बताऊँ, मैंने अर्ज़ किया: क्यों नहीं! अल्लाह के रसूल, ज़रूर बताइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: (لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ) "गुनाह से बचना और नेकी करना महज़ अल्लाह की तौफिक से है"| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (6384) و مسلم (44 / 2704)، (6862)

بَاب ثَوَابُ التَّسْبِيحِ وَالتَّحْمِيدِ والتهليل وَالتَّكْبِير • तस्बीह, तम्हीद, तहलील और तकबीर के सवाब का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٣٠٤ - (صَحِيح) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَالَ سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ غُرِسَتْ لَهُ نَخْلَةٌ فِي الْجَنَّةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2304. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो शख़्स (سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهِ) पढ़ता है, तो उस के लिए जन्नत में खजूर का एक दरख्त लगा दिया जाता है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (3464 و قال : حسن صحيح غريب) * ابوالزبير مدلس و عنعن

٢٣٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الزُّبَيْرِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ صَبَاحٍ يُصْبِحُ الْعِبَادُ فِيهِ إِلَّا مُنَادٍ يُنَادِي سَبِّحُوا الْمَلِكَ القدوس» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2305. जुबैर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ हर सुबह एक एलान करने वाला (फ़रिश्ता) एलान करता है (سبحان الملك القدوس) “मंजह व मुक़द्दस बादशाह की” तस्बीह बयान करो| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3569 و قال : غريب) * فيه موسى بن عبيدة و محمد بن ثابت : ضعيفان

٢٣٠٦ - (حسن) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَفْضَلُ الذِّكْرِ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَفْضَلُ الدُّعَاءِ: الْحَمْدُ لِلَّهِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

2306. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सबसे अफज़ल ज़िक्र (لَا اِلٰهَ اِلَّا الله) और अफज़ल दुआ (اَلْحَمْدُلِلهِ) है”| (सहीह,हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (3383 و قال : حسن غريب) و ابن ماجه (3800) [و صححه ابن حبان (326 ، الاحسان :843) و الحاكم (1 / 498) و وافقه الذهبى]

٢٣٠٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْحَمْدُ رَأْسُ الشُّكْرِ مَا شَكَرَ اللَّهَ عَبْدٌ لَا يحمده»

2307. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल हम्द अल्लाह की तारीफ़ करना शुक्र की चोटी है, जो बंदा अल्लाह की हम्द बयान नहीं करता वह अल्लाह का शुक्र अदा नहीं करता”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (4395 من طريق عبدالرزاق و هذا فى مصنفه [19574]) * فيه قتادة ان عبدالله بن عمرو قال الخ و هذا منقطع

٢٣٠٨ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَوَّلُ مَنْ يُدْعَى إِلَى الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ الَّذِينَ يَحْمَدُونَ اللَّهَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ» . رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَان

2308. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ रोज़ ए कियामत सबसे पहले उन लोगों को जन्नत की तरफ बुलाया जाएगा जो खुशहाली और तंगहाली में अल्लाह की हम्द बयान करते हैं”, इमाम बयहकी ने दोनों रिवायतों शौबुल ईमान में बयान कही| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (4373 ، 44834484) و البغوى فى شرح السنة (5 / 50 ح 1270 ، و اللفظ له) * فيه نصر بن حماد ضعيف جدًا و للحديث طرق عند الحاكم (1 / 502 ح 1851) و غيره و كلها ضعيفة

٢٣٠٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " قَالَ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلَامُ: يَا رَبِّ عَلِّمْنِي شَيْئًا أَذْكُرُكَ بِهِ وَأَدْعُوكَ بِهِ فَقَالَ: يَا مُوسَى قُلْ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ فَقَالَ: يَا رَبِّ كلُّ عبادكَ يقولُ هَذَا إِنَّما أيد شَيْئًا تَخُصُّنِي بِهِ قَالَ: يَا مُوسَى لَوْ أَنَّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعَ وَعَامِرَهُنَّ غَيْرِي وَالْأَرَضِينَ السَّبْعَ وُضِعْنَ فِي كِفَّةٍ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ فِي كِفَّةٍ لَمَالَتْ بِهِنَّ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ". رَوَاهُ فِي شرح السّنة

2309. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया, परवरदिगार मुझे कोई चीज़ सिखा दे जिसके साथ में तेरा ज़िक्र किया करू या में उस के साथ तुझ से दुआ किया करू, फ़रमाया मूसा ((لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ)) पढ़ा करो, उन्होंने अर्ज़ किया, परवरदिगार तेरे सारे बंदे इसे पढ़ते है, मैं तो ऐसी चीज़ चाहता हो जो मेरे साथ खास हो, फ़रमाया मूसा अगर सातों आसमान और मेरे सिवा जहांन में बसने वाले और सातों ज़मीने एक पलड़े में रख दिया जाए और ((لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ)) दूसरे पलड़े में रख दिया जाए तो ((لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ)) इन पर भारी होगा”| (हसन)

حسن ، رواه البغوى فى شرح السنة (5 / 5455 ح 1273) [و ابن حبان (2324) و الحاكم (1 / 528 ، 1362)] * ابن لهيعة تابعه عمرو بن الحارث عند ابن حبان و الحاكم و سندهما حسن لذاته فالحديث حسن

٢٣١٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ وَأَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ

قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ صَدَّقَهُ رَبُّهُ قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا [ص:٧١ وَأَنَا أَكْبَرُ وَإِذَا قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ يَقُولُ اللَّهُ: لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا وَحْدِي لَا شَرِيكَ لِي وَإِذَا قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا لِيَ الْمُلْكُ وَلِيَ الْحَمْدُ وَإِذَا قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا الله وَلَا وحول وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِي " وَكَانَ يَقُولُ: «مَنْ قَالَهَا فِي مَرَضِهِ ثُمَّ مَاتَ لَمْ تَطْعَمْهُ النَّارُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْن مَاجَه

2310. अबू सईद और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: जो शख़्स (لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ) "ला इलाहा इल लल्लाहु वल्लाहु अकबर" कहता है तो इस का रब इस की तस्दीक फरमाता है और फरमाता है "मेरे सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, और मैं सब से बड़ा हूँ" और (जब बंदा) कहता है (لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ) "ए अल्लाह! के सिवा कोई माबूद नहीं वह यकता है, इस का कोई शरीक नहीं", तो अल्लाह फरमाता है "मेरे अकेले के सिवा कोई माबूद नहीं, मेरा कोई शरीक नहीं", और जब वह कहता है, (لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ) "ए अल्लाह! के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की बादशाहत है, और इसी के लिए हर किस्म की हम्द (तारीफ़) है", तो अल्लाह फरमाता है "मेरे सिवा कोई माबूद नहीं बादशाहत और हम्द मेरे ही लिए है", और जब वह कहता है (لَا إِلَهَ إِلَّا الله وَلَا وحول وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ) "ए अल्लाह! के सिवा कोई माबूद बरहक नहीं, गुनाह से बचना और नेकी करना महज़ अल्लाह की तौफिक से है, तो अल्लाह फरमाता है मेरे सिवा कोई माबूद नहीं गुनाह से बचना और नेकी करना महज़ मेरी ही तौफिक से है", आप ﷺ फ़रमाया करते थे जो शख़्स अपनी बीमारी में यह कलिमात पढ़े और फिर वह फौत हो जाए तो इसे आग नहीं छुएगी | (ज़ईफ़,हसन)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (3430) و ابن ماجه (2794) * ابواسحاق عنعن و رواه النسائی فی الکبریٰ (986) من حديث شعبة عن ابی اسحاق به مختصرًا موقوفاً و سنده حسن و له حکم الرفع

٢٣١١ - (ضَعِيف) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ أَنَّهُ دَخَلَ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى امْرَأَةٍ وَبَيْنَ يَدَيْهَا نَوًى أَوْ حَصًى تُسَبِّحُ بِهِ فَقَالَ: «أَلَا أُخْبِرُكِ بِمَا هُوَ أَيْسَرُ عليكِ مِنْ هَذَا أَوْ أَفْضَلُ؟ سُبْحَانَ اللَّهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ فِي السَّمَاءِ وَسُبْحَانَ اللَّهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ فِي الْأَرْضِ وَسُبْحَانَ اللَّهِ عَدَدَ مَا بَيْنَ ذَلِكَ وَسُبْحَانَ اللَّهِ عَدَدَ مَا هُوَ خَالِقٌ وَاللَّهُ أَكْبَرُ مِثْلَ ذَلِكَ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ مِثْلَ ذَلِكَ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مِثْلَ ذَلِكَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ مِثْلَ ذَلِكَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

2311. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह नबी ﷺ के साथ एक औरत के पास आए उस के सामने खजूर की गुठलियाँ या कंकरिया पड़ी हुई थी और वह इन पर तस्बीह पढ़ रही थी आप ﷺ ने फ़रमाया: '' क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ बताऊँ जो तुम्हारे लिए उस से आसानतर या अफज़ल है? (وَ سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ .... وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ مِثْلَ ذٰلِکَ) अल्लाह के लिए तस्बीह है जिन चीजों की गिनती के बराबर जो उस ने आसमान में तखलीक फरमाइ अल्लाह के लिए तस्बीह है जिन चीजों की गिनती के बराबर जो उस ने ज़मीन में पैदा फरमाइए उस के लिए तस्बीह है जिन चीजों की गिनती के बराबर जो उन के दरमियान हैं और अल्लाह के लिए तस्बीह है जिन चीजों की गिनती के बराबर जो वह पैदा करने वाला है? और अल्लाह के लिए बड़ाई है किसी मिसल अल्लाह के लिए हम्द है किसी मिसल (لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ) इसी मिसल और (لَا حَوْلَ وَلَا

(قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ) इसी मिसल"| तिरमिज़ी, अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3568) و ابوداؤد (1500) و اخطا من ضعفه

٢٣١٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ سَبَّحَ اللَّهَ مِائَةً بِالْغَدَاةِ وَمِائَةً بِالْعَشِيِّ كَانَ كَمَنْ حَجَّ مِائَةَ حَجَّةٍ وَمَنْ حَمِدَ اللَّهَ مِائَةً بِالْغَدَاةِ وَمِائَةً بِالْعَشِيِّ كَانَ كَمَنْ حَمَلَ عَلَى مِائَةِ فَرَسٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَنْ هَلَّلَ اللَّهَ مِائَةً بِالْغَدَاةِ وَمِائَةً بِالْعَشِيِّ كَانَ كَمَنْ أَعْتَقَ مِائَةَ رَقَبَةٍ مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ وَمَنْ كَبَّرَ اللَّهَ مِائَةً بِالْغَدَاةِ وَمِائَةً بِالْعَشِيِّ لَمْ يَأْتِ فِي ذَلِكَ الْيَوْمِ أَحَدٌ بِأَكْثَرِ مِمَّا أَتَى بِهِ إِلَّا مَنْ قَالَ مِثْلَ ذَلِكَ أَوْ زَادَ عَلَى مَا قَالَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

2312. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' जो शख़्स सुबह व शाम सौ सौ मर्तबा (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह कहता है तो वह इस शख़्स की तरह है जिस ने सौ हज किया जो जो शख़्स सौ मर्तबा सुबह और सौ मर्तबा शाम (اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह कहता है तो वह इस शख़्स की तरह है जिस ने अल्लाह की राह में सौ घोड़े फराहम किए हो, जो शख़्स सुबह व शाम सौ सौ मर्तबा (لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ) ला इलाह इल्लल्लाह पढ़ता है तो वह इस शख़्स की तरह है जिस ने इस्माइल अलैहिस्सलाम की औलाद से सौ गुलाम आज़ाद किए हो और जो शख़्स सुबह व शाम सौ सौ मर्तबा ((اَللهُ اَكْبَرُ)) (اللَّهُ أَكْبَرُ)) अल्लाहु अकबर कहता है तो रोज़ ए कियामत उस से बढ़कर कोई अफज़ल अमल लेकर हाज़िर नहीं होगा मगर वह शख़्स जिस ने उस के मिसल या उस से ज़्यादा (ये वज़ीफ़ा किया होगा"| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3471) * ضحاک بن حمزۃ : ضعیف ، و له متن آخر عند النسائی فی عمل الیوم و اللیلة (821) و سنده حسن و لیس فیه :''مائة حجة''

٢٣١٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «التَّسْبِيحُ نِصْفُ الْمِيزَانِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ يَمْلَؤُهُ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ لَيْسَ لَهَا حِجَابٌ دُونَ اللَّهِ حَتَّى تَخْلُصَ إِلَيْهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَلَيْسَ إِسْنَاده بِالْقَوِيّ

2313. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह कहना आधा मीज़ान है जबकि (اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह कहना उस को भर देता है. और (لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ) ला इलाह इल्लल्लाह किसी हिजाब दे या रुकावट के बगैर अल्लाह तक पहुँच जाता है"| तिरमिज़ी, और उन्होंने कहा: यह हदीस ग़रीब है और उसकी सनद क़वी नहीं| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (3518) * عبدالرحمن الافریقی ضعیف و حدیث الترمذی (3519) یغنی عنه

٢٣١٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا قَالَ عَبْدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُخْلِصًا قَطُّ إِلَّا فُتِحَتْ لَهُ أَبْوَابُ السَّمَاءِ حَتَّى يُفْضِيَ إِلَى الْعَرْشِ مَا اجْتَنَبَ الْكَبَائِرَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَقَالَ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

2314. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब कोई बंदा कबिराह गुनाहों से बचते हुए इखलास के साथ (لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ) ला इलाह इल्लल्लाह कहता है तो उस के लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, हत्ता कि वह अर्श तक पहुँच जाता है”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3590)

٢٣١٥ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَقِيتُ إِبْرَاهِيمَ لَيْلَةَ أَسَرِيَ بِي فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ أَقْرِئْ أُمَّتَكَ مِنِّي السَّلَامَ وَأَخْبِرْهُمْ أَنَّ الْجَنَّةَ طَيِّبَةُ التُّرْبَةِ عَذْبَةُ الْمَاءِ وَأَنَّهَا قِيعَانٌ وَأَنَّ غِرَاسَهَا سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ إِسْنَادًا

2315. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ शब ए मेअराज इब्राहीम अलैहिस्सलाम मेरी मुलाकात हुई तो उन्होंने ने फ़रमाया: ’’ मुहम्मद (ﷺ! मेरी तरफ से अपनी उम्मत को सलाम कहना और उन्हें बताना के जन्नत की मिट्टी बहोत अच्छी है, और उस का पानी शिरीन है लेकिन वह एक साफ़ मैदान है, और ((سُبْحَانَ اللهِ وَ الْحَمْدُلِلهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَر)) कहना उस में दरख्त लगाना है”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस सनद के लिहाज़ से हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3462) * عبدالرحمن بن اسحاق الکوفی ضعیف : ضعفه الجمهور و حدیث احمد (5 / 418 ح 23948) یغنی عنه و سنده حسن

٢٣١٦ - (حسن) وَعَنْ يُسَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا وَكَانَتْ مِنَ الْمُهَاجِرَاتِ قَالَتْ: قَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عَلَيْكُنَّ بِالتَّسْبِيحِ وَالتَّهْلِيلِ وَالتَّقْدِيسِ واعقِدْنَ بالأناملِ فإنهنَّ مسؤولات مُسْتَنْطَقَاتٌ وَلَا تَغْفُلْنَ فَتَنْسَيْنَ الرَّحْمَةَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

2316. युसयरा रदियल्लाहु अन्हा जो के मुहाजिरात में से थी बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें फ़रमाया: “(لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ) (سُبْحَانَ اللهِ)) और (سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسَ) पढ़ने का इल्तेज़ाम (एहतेमाम) करो और उन्हें उंगलियों के पोरों पर शुमार करो, क्योंकि रोज़ ए कियामत उन से पूछा जाएगा और वह कलाम करेंगे, गाफ़िल न होना वरना तुम्हें रहमत से महरूम कर दिया जाएगा”| तिरमिज़ी, अबू दावुद| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3583) و ابوداؤد (1501)

بَاب ثَوَابُ التَّسْبِيحِ وَالتَّحْمِيدِ والتهليل وَالتَّكْبِير • तस्बीह, तम्हीद, तहलील और तकबीर के सवाब का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٣١٧ - (صَحِيح) عَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: عَلِّمْنِي كَلَامًا أَقُولُهُ قَالَ: «قُلْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا وَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَى بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ» . فَقَالَ فَهَؤُلَاءِ لِرَبِّي فَمَا لِي؟ فَقَالَ: «قُلِ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَاهْدِنِي وَارْزُقْنِي وَعَافِنِي» . شَكَّ الرَّاوِي فِي «عَافِنِي» . رَوَاهُ مُسلم

2317. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आराबी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, मुझे कोई कलाम सिखाईए जिसे में पढ़ा करू, आप ﷺ ने फ़रमाया: ” कहो (لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا وَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَى بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ) ” अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही, वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं, अल्लाह बहोत बड़ा है, अल्लाह के लिए बहोत ज़्यादा हम्द है, पाक है अल्लाह जहानों का परवरदिगार, गुनाहों से बचना और नेकी करना महज़ अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाले की तौफिक ही से मुमकिन है”| इस आराबी ने अर्ज़ किया, यह कलिमात तो मेरे रब के लिए हुए, तो मेरे लिए किया है, आप ﷺ ने फ़रमाया: (اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَاهْدِنِي وَارْزُقْنِي وَعَافِنِي) कहो ऐ अल्लाह! मुझे बख्श दे मुझ पर रहम फरमा मुझे हिदायत नसीब फरमा मुझे रीज़्क अता फरमा और मुझे आफियत में रख”, रावी को ((عافنی)) के अल्फाज़ में शक है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (33 / 2696)، (6848)

٢٣١٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ عَلَى شَجَرَةٍ يَابِسَةِ الْوَرَقِ فَضَرَبَهَا بِعَصَاهُ فَتَنَاثَرَ الْوَرَقُ فَقَالَ: «إِنَّ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ تُساقطُ ذُنوبَ العَبدِ كَمَا يتَساقطُ وَرَقُ هَذِهِ الشَّجَرَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَقَالَ: هَذَا حديثٌ غَرِيب

2318. अनस से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ एक दरख्त के पास से गुज़रे जिसके पत्ते खुश्क हो चुके थे, आप ﷺ ने उस पर अपने लाठी मारी तो पत्ते गिर पड़े, आप ﷺ ने फ़रमाया: ” ((الْحَمْدَلِلهِ سُبْحَانَ اللهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ)) बंदे के गुनाह गिरा देता है, जैसे इस दरख्त के पत्ते गिर रहे हैं”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3533) * الاعمش مدلس و عنعن فالسند ضعیف و له شاھد حسن عند احمد (3 / 152) و البخاری فی الادب المفرد (634)

٢٣١٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مَكحولٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَكْثِرْ مِنْ قَوْلِ: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ كَنْزِ الْجَنَّةِ ". قَالَ مَكْحُولٌ: فَمَنْ قَالَ: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا مَنْجًى مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ كَشَفَ اللَّهُ عَنْهُ سَبْعِينَ بَابًا مِنَ الضُّرِّ أَدْنَاهَا الْفَقْرُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ لَيْسَ إِسْنَادُهُ بِمُتَّصِلٍ وَمَكْحُولٌ لَمْ يَسْمَعْ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

2319. मकहुल अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ)) कसरत से पढ़ा करो क्योंकि वह जन्नत का खज़ाना है ‘‘ मकहुल ने फ़रमाया: जो शख़्स ((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ وَلَا مَنْجَاءَ مِنَ اللهِ اِلَّا اِلَيْهِ)) पढ़ता है तो अल्लाह उस से सत्तर क़सम की तकलीफे दूर फरमा देता है, और उनमें से सबसे कम फकीरी है| तिरमिज़ी, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: इस हदीस की सनद मुतस्सिल नहीं, मकहुल ने अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से नहीं सुना| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3601) * السند منقطع و للمرفوع شواھد عند ابن حبان (الموارد : 2338) و غیرہ و ھو بھا صحیح ، و قول مکحول لم یثبت عنه ، فی السند الیه ابو خالد الاحمر مدلس و عنعن

٢٣٢٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ دَوَاءٌ مِنْ تِسْعَةٍ وَتِسْعِينَ دَاء أيسرها الْهم»

2320. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ‘‘ ((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ)) निन्यानवेबीमारियों की दवा है और उनमें से सबसे हल्कि बीमारी गम है”| (सहीह,ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیھقی فی الدعوات الکبیر (1 / 128 ح 171) [و صححه الحاکم (1 / 542)فتعقبه الذھبی ، قال :’’ بشر واہ ‘‘ یعنی ابن رافع الحارثی ضعیف جدًا ، و محمد بن عجلان مدلس و عنعن]

٢٣٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَلَا أَدُلُّكَ عَلَى كَلِمَةٍ مِنْ [ص:٧١ تَحْتِ الْعَرْشِ مِنْ كَنْزِ الْجَنَّةِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى: أَسلَمَ عَبدِي واستسلم ". رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيّ فِي الدَّعْوَات الْكَبِير

2321. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ‘‘ क्या मैं तुम्हें ऐसा कलिमा बताऊँ? जो के अर्श के नीचे जन्नत का खज़ाना है? और वह ((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ)) है, अल्लाह तआला फरमाता है, मेरे बंदे ने इताअत इख़्तियार कर ली और अपने आप को अल्लाह के सुपुर्द कर दिया”| इमाम बयहकी ने दोनों रिवायतों अल दअवात अल कुबरा में रिवायत की| (सहीह)

صحیح ، رواه البیھقی فی الدعوات الکبیر (1 / 101 ح 135) [و احمد (2 / 298 ، 363) و النسائی فی عمل الیوم و اللیلة (13 و الکبریٰ : 9841) و صححه الحاکم (1 / 21) و وافقه الذھبی و سنده حسن ، عمرو بن میمون صرح بالسماع عند احمد (2 / 298) و للحدیث طریق آخر عند احمد (2 / 520) و النسائی فی عمل الیوم و اللیلة (358) و الحاکم (1 / 517) و الحدیث قواہ الحافظ فی فتح الباری (11 / 501)]

٢٣٢٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابْن عمر أَنَّهُ قَالَ: سُبْحَانَ اللَّهِ هِيَ صَلَاةُ الْخَلَائِقِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَلِمَةُ الشُّكْرِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ كَلِمَةُ الْإِخْلَاصِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ تَمْلَأُ مَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَإِذَا قَالَ الْعَبْدُ: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: أسلم عَبدِي واستَسلَم. رَوَاهُ رزين

2322. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उन्होंने ने फ़रमाया: ((سُبْحَانَ اللهِ)) कहना मखलूक की इबादत है, ((اَلْحَمْدُلِلهِ)) कलमा शुक्र है, ((لَا اِلٰهَ اِلَّا الله)) कलिमा इखलास है, ((اَللهُ اَكْبَرُ)) ज़मीन व आसमान के खला को भर देता है, और जब बंदा ((لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ)) पढ़ता है, तो अल्लाह तआला फरमाता है, उस ने इताअत इख़्तियार की और अपने आप को मेरे सुपुर्द कर दिया| (रवाह रजिन मझे नहीं मिली)

لم اجده ، رواه رزين (لم اجده) * و رواه الحاكم (1 / 21) و احمد (2 / 298 ، 363 ، 335 ، 355 ، 403) و النسائى فى عمل اليوم (13) بمتن آخر و سنده حسن و صححه الحاكم و وافقه الذهبى و هو يغنى عن هذا الحديث

بَاب الاسْتِغْفَار وَالتَّوْبَة • इस्तिग्फार और तौबा का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٢٣٢٣ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَاللَّهِ إِنِّي لِأَسْتَغْفِرُ اللَّهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فِي الْيَوْمِ أَكْثَرَ مِنْ سبعينَ مرَّةً» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

2323. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' अल्लाह की क़सम! में दिन में सत्तर बार से ज़्यादा अल्लाह से मगफिरत तलब करता हूँ और उस के हुज़ूर तौबा करता हूँ"| (बुखारी)

رواه البخارى (6307)

٢٣٢٤ - (صَحِيح) وَعَنِ الْأَغَرِّ الْمُزَنِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّهُ لَيُغَانُ عَلَى قَلْبِي وَإِنِّي لَأَسْتَغْفِرُ اللَّهَ فِي الْيَوْم مائَة مرّة» . رَوَاهُ مُسلم

2324. अगर्र अल मुज़नी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' मेरा दिल पर परदा सा आ जाता है और मैं दिन में सौ मर्तबा अल्लाह से मगफिरत तलब करता हूँ"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (41 / 2702)، (6858)

٢٣٢٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ تُوبُوا إِلَى اللَّهِ فَإِنِّي أَتُوبُ إِلَيْهِ فِي الْيَوْمِ

مائةَ مرَّةٍ» . رَوَاهُ مُسلم

2325. अगर्र अल मुज़नी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ लोगो! अल्लाह के हुज़ूर तौबा करो क्योंकि मैं दिन में सौ मर्तबा अल्लाह के हुज़ूर तौबा करता हूँ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (42 / 2702)، (6859)

٢٣٢٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيمَا يَرْوِي عَنِ اللَّهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى أَنَّهُ قَالَ: «يَا عِبَادِي إِنِّي حَرَّمْتُ الظُّلْمَ عَلَى نَفْسِي وَجَعَلْتُهُ بَيْنَكُمْ مُحَرَّمًا فَلَا تَظَالَمُوا يَا عِبَادِي كُلُّكُمْ ضَالٌّ إِلَّا مَنْ هَدَيْتُهُ فَاسْتَهْدُونِي أَهْدِكُمْ يَا عِبَادِي كُلُّكُمْ جَائِعٌ إِلَّا مَنْ أَطْعَمْتُهُ فَاسْتَطْعِمُونِي أُطْعِمْكُمْ يَا عِبَادِي كُلُّكُمْ [ص:٧٢ عَارٍ إِلَّا مَنْ كَسَوْتُهُ فَاسْتَكْسُونِي أَكْسُكُمْ يَا عِبَادِي إِنَّكُمْ تُخْطِئُونَ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَأَنَا أَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا فَاسْتَغْفِرُونِي أَغْفِرْ لَكُمْ يَا عِبَادِي إِنَّكُمْ لَنْ تَبْلُغُوا ضَرِّي فَتَضُرُّونِي وَلَنْ تَبْلُغُوا نَفْعِي فَتَنْفَعُونِي يَا عِبَادِي لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وإنسكم وجنكم كَانُوا أَتْقَى قَلْبِ رَجُلٍ وَاحِدٍ مِنْكُمْ مَا زَادَ ذَلِكَ فِي مُلْكِي شَيْئًا يَا عِبَادِي لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ كَانُوا عَلَى أفجر قلب وَاحِد مِنْكُم مَا نقص مِنْ مُلْكِي شَيْئًا يَا عِبَادِي لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ قَامُوا فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ فَسَأَلُونِي فَأَعْطَيْتُ كُلَّ إِنْسَانٍ مَسْأَلَتَهُ مَا نَقَصَ ذَلِكَ مِمَّا عِنْدِي إِلَّا كَمَا يَنْقُصُ الْمِخْيَطُ إِذَا أُدْخِلَ الْبَحْرَ يَا عِبَادِي إِنَّمَا هِيَ أَعمالكُم أحصيها عَلَيْكُمْ ثُمَّ أُوَفِّيكُمْ إِيَّاهَا فَمَنْ وَجَدَ خَيْرًا فَلْيَحْمَدِ اللَّهَ وَمِنْ وَجَدَ غَيْرَ ذَلِكَ فَلَا يَلُومن إِلَّا نَفسه» . رَوَاهُ مُسلم

2326. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने इस हदीस में जो वह अल्लाह तबारक व तआला से रिवायत करते हैं, फ़रमाया के इस (अल्लाह तआला) ने फ़रमाया: ’’ मेरे बन्दों! मेंने ज़ुल्म करना अपने ऊपर हराम करार दिया है, और इसे तुम्हारे मबिन भी हराम किया है, तुम बाहम ज़ुल्म न करो, मेरे बन्दों! तुम सब गुमराह थे बजुज़ उस के जिसे में हिदायत अता करू, तुम मुझ से हिदायत तलब करो में तुम्हें हिदायत अता करूँगा, मेरे बन्दों! तुम सब भूके थे बजुज़ उस के जिसे में खिलाऊँ, तुम मुझ से खाना तलब करो में तुम्हें खिलाऊंगा, मेरे बन्दों! तुम सब लिबास के बगैर थे बजुज़ उस के जिसे में लिबास अता करू, तुम मुझ से लिबास तलब करो में तुम्हें लिबास अता करूँगा, मेरे बन्दों! तुम दिन-रात खताए करते हो, और सारे गुनाह में मुआफ़ करता हूँ, तुम मुझ से मगफिरत तलब करो में तुम्हें बख्श दूंगा, मेरे बन्दों! अगर तुम मुझे नुकसान पहुचाना चाहो तो तुम मुझे नुकसान नहीं पहुंचा सकते, और अगर तुम मुझे फ़ायदा पहुचाना चाहो तो तुम मुझे फ़ायदा नहीं पहुंचा सकते, मेरे बन्दों! अगर तुम सब जिन्स व इन्स इस शख़्स की तरह हो जाओ जो तुम में सबसे ज़्यादा मुत्तकी है तो उस से मेरी बादशाहत में कुछ इज़ाफा नहीं होगा, मेरे बन्दों! अगर तुम सब जिन्स व इन्स इस शख़्स की तरह हो जाओ जो तुम में सबसे ज़्यादा फाजिर व गुनाहगार है तो उस से मेरी बादशाहत में ज़र्रा कमी नहीं होगी, मेरे बन्दों! अगर तुम सब जिन्स व इन्स एक मैदान में खड़े हो कर मुझ से सवाल करो और मैं हर इंसान की मुराद पूरी कर दू तो उस से मेरे खज़ानो में सिर्फ इतनी सी कमी आएगी जैसे समुन्दर में सुई डालकर निकाल लेने से समुन्दर में कमी आती है, मेरे बन्दों! यह तुम्हारे आमाल ही है जिन्हें मेंने महफ़ूज़ व शुमार कर रखा है, फिर मैं (रोज़ ए कियामत) इन्ही के मुताबिक पूरा पूरा बदला दूंगा, जो शख़्स खैर भलाई पाए तो वह अल्लाह का शुक्र अदा करे

और जो शख़्स उस के अलावा कोई और चीज़ पाए तो फिर वह अपने आप ही को मलामत करे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (55 / 2577)، (6572)

٢٣٢٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " كَانَ فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ رَجُلٌ قَتَلَ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ إِنْسَانًا ثُمَّ خَرَجَ يَسْأَلُ فَأَتَى رَاهِبًا فَسَأَلَهُ فَقَالَ: أَلَهُ تَوْبَةٌ قَالَ: لَا فَقَتَلَهُ وَجَعَلَ يَسْأَلُ فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ ائْتِ قَرْيَةَ كَذَا وَكَذَا فَأَدْرَكَهُ الْمَوْتُ فَنَاءَ بِصَدْرِهِ نَحْوَهَا فَاخْتَصَمَتْ فِيهِ مَلَائِكَةُ الرَّحْمَةِ وَمَلَائِكَةُ الْعَذَابِ فَأَوْحَى اللَّهُ إِلَى هَذِهِ أَنْ تَقَرَّبِي وَإِلَى هَذِهِ أَنْ تَبَاعَدِي فَقَالَ قِيسُوا مَا بَيْنَهُمَا فَوُجِدَ إِلَى هَذِهِ أَقْرَبَ بِشِبْرٍ فَغُفِرَ لَهُ "

2327. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ” बनी इसराइल में एक शख़्स था, जो निन्यानवेइंसान क़त्ल कर चूका था, फिर वह मसअला दरियाफ्त करने के लिए निकला तो वह किसी रायिब के पास आया और उस से मसअला दरियाफ्त किया तो उसे कहा, क्या उस के लिए तौबा की कोई गुंजाईश है? उस ने कहा नहीं, उस ने उस को भी क़त्ल कर डाला और फिर मसअला पूछने लगा तो किसी आदमी ने इसे बताया के फलां फलां बस्ती चले जाओ (वो इस तरफ चल दिया) लेकिन इसे रास्ते ही में मौत गई, तो उस ने इस वक़्त अपना सीना आगे (बस्ती) की तरफ बढ़ाया रहमत और अज़ाब के फ़रिश्ते उस के मुतल्लिक झगड़ने लगे, तो अल्लाह ने इस (बस्ती) को हुक्म दिया के उस के करीब हो जा और इस (बस्ती को जिधर से आ रहा था) को हुक्म दिया के दौर हो जा फिर फ़रमाया इन दोनों का दरमियानी फासला नापो, पस (पैमाइश करने पर) वह एक बालिश्त बराबर इस बस्ती के करीब पाया गया (जहाँ जा रहा था) तो उसे बख्श दिया गया”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (3470) و مسلم (47 / 2766)، (7009)

٢٣٢٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ لَمْ تُذْنِبُوا لَذَهَبَ اللَّهُ بِكُمْ وَلَجَاءَ بِقَوْمٍ يُذْنِبُونَ فَيَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ فَيَغْفِرُ لَهُمْ» . رَوَاهُ مُسلم

2328. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ” उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! अगर तुम गुनाह न करे तो अल्लाह तुम्हें (इस दुनिया से) ले जाए और एक दूसरी कौम ले आए जो गुनाह करे, फिर अल्लाह से मगफिरत तलब करे तो वह उन्हें मुआफ़ कर दे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (11 / 2749)، (6965)

٢٣٢٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ يَدَهُ بِاللَّيْلِ لِيَتُوبَ مُسِيءُ النَّهَارِ وَيَبْسُطُ يَدَهُ بِالنَّهَارِ لِيَتُوبَ مُسِيءُ اللَّيْلِ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2329. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ अल्लाह रात के वक़्त अपना हाथ फैलाता है, ताकि दिन के वक़्त गुनाह करने वाला तौबा कर ले और वह दिन के वक़्त अपना हाथ फैलाता है ताकि रात के वक़्त गुनाह करने वाला तौबा कर ले, और यह सिलसिला जारी रहता है हत्ता कि सूरज मग़रिब की तरफ से तुलुअ हो जाए यानी कियामत तक”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (31 / 2759)، (6989)

٢٣٣٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا اعْتَرَفَ ثُمَّ تَابَ تَابَ الله عَلَيْهِ»

2330. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब बंदा एतराफ़ कर लेता है, फिर तौबा करता है तो अल्लाह भी रहमत के साथ उस पर रुजू फरमाता है”| (मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (4141) و مسلم (56 / 2770)، (7020)

٢٣٣١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَابَ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا تَابَ الله عَلَيْهِ» . رَوَاهُ مُسلم

2331. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने सूरज के मग़रिब की तरफ तुलुअ होने यानी कियामत काइम होने से पहले पहले तौबा कर ली तो अल्लाह उसकी तौबा कबूल फरमा लेता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (43 / 2703)، (6861)

٢٣٣٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَلَّهُ أَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ حِينَ يَتُوبُ إِلَيْهِ مِنْ أَحَدِكُمْ كانَ رَاحِلَتُهُ بِأَرْضٍ فَلَاةٍ فَانْفَلَتَتْ مِنْهُ وَعَلَيْهَا طَعَامُهُ وَشَرَابُهُ فَأَيِسَ مِنْهَا فَأَتَى شَجَرَةً فَاضْطَجَعَ فِي ظِلِّهَا قَدْ أَيِسَ مِنْ رَاحِلَتِهِ فَبَيْنَمَا هُوَ كذلكَ إِذ هُوَ بِهَا قَائِمَةً عِنْدَهُ فَأَخَذَ بِخِطَامِهَا ثُمَّ قَالَ مِنْ شِدَّةِ الْفَرَحِ: اللَّهُمَّ أَنْتَ عَبْدِي وَأَنَا رَبُّكَ أَخْطَأَ مِنْ شِدَّةِ الْفَرَحِ ". رَوَاهُ مُسلم

2332. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ अल्लाह अपने बंदे की तौबा से जब वह उस के हुज़ूर तौबा करता है, इस शख़्स से भी ज़्यादा खुश होता है जिस की सवारी किसी जंगल बियाबान में उस से दूर भाग गई हो, जब के उस के खाने पीने का सामान भी उस पर था, वह सवारी से मायूस हो कर एक दरख्त के साए तले लेट गया, क्योंकि वह अपने सवारी से तो मायूस हो चूका था, वह इसी करब मैं था के अचानक देखता है के सवारी उस के पास खड़ी है, उस ने उसकी महार थामी, फिर शिद्दत फरहत से कहा: ऐ अल्लाह! तू

मेरा बंदा है और मैं तेरा रब हूँ, और शिद्दत फरहत की वजह से वह गलत कह बैठा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (7 / 2747)، (6960)

٢٣٣٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ عَبْدًا أَذْنَبَ ذَنْبًا فَقَالَ: رَبِّ أَذْنَبْتُ فَاغْفِرْهُ فَقَالَ رَبُّهُ أَعَلِمَ عَبْدِي أَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ الذَّنْبَ وَيَأْخُذُ بِهِ؟ غَفَرْتُ لِعَبْدِي ثُمَّ مَكَثَ مَا شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ أَذْنَبَ ذَنْبًا فَقَالَ: رَبِّ أَذْنَبْتُ ذَنْبًا فَاغْفِرْهُ فَقَالَ رَبُّهُ: أَعَلِمَ عَبْدِي أَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ الذَّنْبَ وَيَأْخُذُ بِهِ؟ غَفَرْتُ لِعَبْدِي ثُمَّ مَكَثَ مَا شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ أَذْنَبَ ذَنبا قال: رب أذنبت ذنبا آخر فَاغْفِر لِي فَقَالَ: أَعَلِمَ عَبْدِي أَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ الذَّنْبَ وَيَأْخُذُ بِهِ؟ غَفَرْتُ لِعَبْدِي فَلْيَفْعَلْ مَا شَاءَ "

2333. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ बंदा गुनाह करता है तो कहता है, रब जी! में गुनाह कर बैठा हूँ तो इसे बख्श दे, तो उस का रब फरमाता है, क्या मेरा बंदा जानता है के उस का कोई रब है जो गुनाह बख्सता है और इस की वजह से मुआखिज़ा (इलज़ाम लगाना) भी कर सकता है? मेंने अपने बंदे को बख्श दिया, फिर जिस क़दर अल्लाह चाहता है के शख़्स गुनाह से बाज़ रहता है, लेकिन फिर गुनाह कर लेता है और कहता है, रब जी! में गुनाह कर बैठा हूँ, इसे मुआफ़ फरमादे, तो अल्लाह तआला फरमाता है, क्या मेरा बंदा जानता है के उस का एक रब है जो गुनाह बख्श सकता है और उस पर मुआखिज़ा (इलज़ाम लगाना) भी कर सकता है? मेंने अपने बंदे को बख्श दिया, फिर जिस क़दर अल्लाह चाहता है के बाज़ रहता है, लेकिन फिर गुनाह कर बेठता है तो कहता है, रब जी! में एक और गुनाह कर बैठा हूँ, मुझे मुआफ़ फरमादे, तो अल्लाह तआला फरमाता है, क्या मेरा बंदा जानता है के उस का एक रब है, जो गुनाह मुआफ़ कर सकता है और उस पर मुआखिज़ा (इलज़ाम लगाना) भी कर सकता है, मेंने अपने बंदे को मुआफ़ कर दिया, वह जो चाहे सो करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (7507) و مسلم (29 / 2758)، (6986)

٢٣٣٤ - (صَحِيح) وَعَنْ جُنْدُبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَدَّثَ: " أَنَّ رَجُلًا قَالَ: وَاللَّهِ لَا يَغْفِرُ اللَّهُ لِفُلَانٍ وَأَنَّ اللَّهَ تَعَالَى قَالَ: مَنْ ذَا الَّذِي يَتَأَلَّى عَلَيَّ أَنِّي لَا أَغْفِرُ لِفُلَانٍ فَإِنِّي قَدْ غَفَرْتُ لِفُلَانٍ وَأَحْبَطْتُ عَمَلَكَ ". أَوْ كَمَا قَالَ. رَوَاهُ مُسلم

2334. जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने हदीस बयान की के किसी आदमी ने कहा, अल्लाह की क़सम! अल्लाह फलां शख़्स को मुआफ़ नहीं करेगा, तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया: वह कौन है? जो मुझ पर क़सम उठाता है की मैं फलां शख़्स को मुआफ़ नहीं करूँगा, मेंने इसे तो मुआफ़ कर दिया और तेरे आमाल ज़ाए कर दिए”, या जैसे आप ﷺ ने फ़रमाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (137 / 2621)، (6681)

٢٣٣٥ - (صَحِيح) وَعَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " سَيِّدُ الِاسْتِغْفَارِ أَنْ تَقُولَ: اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوءُ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ ". قَالَ: «وَمَنْ قَالَهَا مِنَ النَّهَارِ مُوقِنًا بِهَا فَمَاتَ مِنْ يَوْمِهِ قَبْلَ أَنْ يُمْسِيَ فَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَمَنْ قَالَهَا مِنَ اللَّيْلِ وَهُوَ مُوقِنٌ بِهَا فَمَاتَ قَبْلَ أَنْ يُصْبِحَ فَهُوَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2335. शद्दाद बिन अवसी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ सय्यदुल इस्तिग्फार यूँ है के तुम कहो, (اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوءُ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِر) “ए अल्लाह! तू मेरा रब है, तेरे सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, तूने मुझे पैदा फ़रमाया, मैं तेरा बंदा हूँ, मैं अपने इस्तिताअत के मुताबिक तेरे अहद और वादे पर काइम हूँ, मेंने जो कुछ किया उस के शर से तेरी पनाह चाहता हूँ, आप के जो इनामात मुझ पर है में उनका इकरार करता हूँ, और अपने गुनाहों का भी इकरार करता हूँ, मुझे बख्श दे, क्योंकि सिर्फ तू ही गुनाह मुआफ़ कर सकता है”, और आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स उन कलिमात पर यकीन रखते हुए, दिन के वक़्त उन्हें पढ़े और वह इसी रोज़ शाम होने से पहले फौत हो जाए, तो वह शख़्स जन्नती है और जो शख़्स उन कलिमात पर यकीन रखते हुए शाम के वक़्त उन्हें पढ़े और वह सुबह होने से पहले फौत हो जाए तो वह जन्नती है”| (बुखारी)

رواه البخاری (2306)

बَاب الاسْتِغْفَار وَالتَّوْبَة • इस्तिग्फार और तौबा का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٣٣٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: يَا ابْنَ آدَمَ إِنَّكَ مَا دَعَوْتَنِي وَرَجَوْتَنِي غَفَرْتُ لَكَ عَلَى مَا كَانَ فِيكَ وَلَا أُبَالِي يَا ابنَ آدمَ إِنَّك لَوْ بَلَغَتْ ذُنُوبُكَ عَنَانَ السَّمَاءِ ثُمَّ اسْتَغْفَرْتَنِي غَفَرْتُ لَكَ وَلَا أُبَالِي يَا ابْنَ آدَمَ إِنَّكَ لَوْ لَقِيتَنِي بِقُرَابِ الْأَرْضِ خَطَايَا ثُمَّ لَقِيتَنِي لَا تُشْرِكُ بِي شَيْئًا لَأَتَيْتُكَ بِقُرَابِهَا مغْفرَة ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2336. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ अल्लाह तआला फरमाता है, इब्ने आदम जब तक तू मुझ से दुआ करता रहेगा और मुझ से (बख्शीश की) उम्मीद रखेगा तो मैं तुम्हें मुआफ़ करता रहूँगा, ख्वाह तुम्हारे गुनाह कितने ही ज़्यादा क्यों न हो! उसकी मुझे कोई परवाह नहीं, इब्ने आदम अगर तेरे गुनाह आसमान के अबरा किनारो तक पहुँच जाए, फिर तू मुझ से मगफिरत तलब करे तो मैं तुम्हें मुआफ़ करूँगा और मुझे उसकी कोई परवाह नहीं, इब्ने आदम अगर तू ज़मीन के भरने के बराबर गुनाह कर के मेरे पास आए लेकिन तूने मेरे साथ किसी को शरीक न ठहराया हो तो मैं उतनी ही मिकदार में मगफिरत लेकर तुम्हारे पास आऊंगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3540)

٢٣٣٧ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ أَحْمَدُ وَالدَّارِمِيُّ عَنْ أَبِي ذَرٍّ»» وَقَالَ التِّرْمِذِيّ: هَذَا حَدِيث حسن غَرِيب

2337. इमाम अहमद और इमाम दारमी ने इसे अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه احمد (5 / 167 ح 21804 ، 5 / 172 ح 21505 ، و سنده حسن) و الدارمی (2 / 322 ح 2791)

٢٣٣٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: مَنْ عَلِمَ أَنِّي ذُو قُدْرَةٍ عَلَى مَغْفِرَةِ الذُّنُوبِ غَفَرْتُ لَهُ وَلَا أُبَالِي مَا لم تشرك بِي شَيْئا ". رَوَاهُ فِي شرح السّنة

2338. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: '' अल्लाह तआला फरमाता है, जो शख़्स यह जानता है की मैं गुनाह मुआफ़ करने पर कादिर हूँ तो में उसे मुआफ़ कर देता हूँ और मुझे उसकी कोई परवाह नहीं, बशर्तेकी उस ने मेरे साथ किसी को शरीक न ठहराया हो"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البغوی فی شرح السنة (14 / 388 ح 4191) * فیه ابراهیم بن الحکیم بن ابان : ضعیف ، و له طریق آخر عند الحاکم (4 / 262) فیه حفص بن عمر العدنی واہٍ

٢٣٣٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ لَزِمَ الِاسْتِغْفَارَ جَعَلَ اللَّهُ لَهُ مِنْ كُلِّ ضِيقٍ مَخْرَجًا وَمِنْ كُلِّ هَمٍّ فَرَجًا وَرَزَقَهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ» . رَوَاهُ أحمدُ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

2339. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' जो शख़्स इस्तिग्फार पर काइमी इख़्तियार कर लेता है तो अल्लाह उसकी हर तंगी दूर फरमा देता है, हर गम से खलासी देता है, और इसे ऐसी जगह से रीज़्क अता फरमाता है वहां से इसे गुमान भी नहीं होता"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (1 / 248 ح 2243) و ابوداؤد (1518) و ابن ماجه (3819) * فیه الحکم بن مصعب : مجهول

٢٣٤٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ [ص:٧٢ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أَصَرَّ مَنِ اسْتَغْفَرَ وَإِنْ عَادَ فِي الْيَوْمِ سَبْعِينَ مَرَّةً» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ

2340. अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' जो शख़्स मगफिरत तलब करता है वह मस्वर गुनाह पर काइम इख़्तियार करने वालो में से नहीं, ख्वाह वह दिन में सत्तर मर्तबा वही गुनाह दोहराए"| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3559) و قال : غریب ، لیس اسناده بالقوی) و ابوداؤد (1514) * مولی لابی بکر : مجهول ولا قرائن علی توثیقه و لحدیثه شاهد غریب حسن عند الطبرانی فی الدعاء (1797) فیه ابوشیبة سعید بن عبدالرحمن الاسدی : حسن الحدیث و الحدیث به حسن

٢٣٤١ - (حسن) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُّ بَنِي آدَمَ خَطَّاءٌ وَخَيْرُ الْخَطَّائِينَ التَّوَّابُونَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

2341. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ आदम अलैहिस्सलाम की सारी औलाद खताकार है और बेहतर खताकार वह है जो तौबा करने वाले हैं”| (सहीह,ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2499 و قال : غریب) و ابن ماجه (2451) و الدارمی (2 / 303 ح 2730) [و صححه الحاکم (4 / 244) فتعقبه الذھبی قال :’’ علی (بن مسعدة) لین ‘‘] و قتادة مدلس و عنعن

٢٣٤٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنِ الْمُؤْمِنَ إِذَا أَذْنَبَ كَانَتْ نُكْتَةٌ سَوْدَاءُ فِي قَلْبِهِ فَإِنْ تَابَ وَاسْتَغْفَرَ صُقِلَ قَلْبُهُ وَإِنْ زَادَ زَادَتْ حَتَّى تَعْلُوَ قَلْبَهُ فَذَلِكُمُ الرَّانُ الَّذِي ذَكَرَ اللَّهُ تَعَالَى (كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَى قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يكسِبونَ)»» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيح

2342. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब मोमिन कोई गुनाह करता है तो उस का दिल पर एक सियाह नाकित लग जाता है, अगर वह तौबा कर ले और मगफिरत तलब कर ले तो उस का दिल साफ़ कर दिया जाता है, और अगर वह गुनाह में बढ़ता चला जाए तो वह नुक्ते भी बढ़ते चले जाते हैं, हत्ता कि वह उस का दिल पर ग़ालिब आ जाते हैं यही वह जंग है जिस का अल्लाह तआला ने ज़िक्र किया है: “हरगिज़ नहीं! बल्कि उन के आमाल की वजह से उन के दिलों पर जंग है”| अहमद तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह,ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه احمد (2 / 297 ح 7939) و الترمذی (3334) و ابن ماجه (4244) [و صححه ابن حبان (1771 ، 2448) و الحاکم علی شرط مسلم (2 / 517) و وافقه الذھبی] * محمد بن عجلان عنعن

٢٣٤٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ يَقْبَلُ تَوْبَةَ الْعَبْدِ مَا لَمْ يُغَرْغِرْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْن مَاجَه

2343. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब तक बंदे की रूह हलक तक न पहुंचे अल्लाह उसकी तौबा कुबूल फरमा लेता है”| (सहीह,हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3537 و قال : حسن غریب) و ابن ماجه (4253) [و صححه ابن حبان (2449) و الحاکم (4 / 257) و وافقه الذھبی]

٢٣٤٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ الشَّيْطَانَ قَالَ: وَعِزَّتِكَ يَا رَبِّ لَا أَبْرَحُ أُغْوِي عِبَادَكَ مَا دَامَتْ أَرْوَاحُهُمْ فِي أَجْسَادِهِمْ فَقَالَ الرَّبُّ عَزَّ وَجَلَّ: وَعِزَّتِي وَجَلَالِي وَارْتِفَاعِ مَكَانِي لَا أَزَالُ أَغْفِرُ لَهُمْ مَا

اسْتَغْفَرُونِي " رَوَاهُ أَحْمَدُ

2344. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ शैतान ने कहा रब तेरी इज्ज़त की क़सम! जब तक तेरे बंदो की रूहें उन के जिस्म में है में उन्हें गुमराह करता रहूँगा, तो रब अज्ज़वजल ने फ़रमाया: मुझे अपने इज्ज़त व जलाल और अपने बुलंद मकानी की क़सम! जब तक वह मुझ से मगफिरत तलब करते रहेंगे में उन्हें मुआफ़ करता रहूँगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (3 / 29 ح 11257 ، 41 ح 11387)[و البغوى فى شرح السنة 5 / 7677 ح 1293) و اللفظ له] * ابن لهيعة مدلس و لم يصرح بالسماع فيما حدث قبل اختلاطه فالسند ضعيف و للحديث شاهد حسن الحاكم (4 / 261 ح 7672) دون قوله :’’ وارتفاع مقامى ‘‘ و سنده حسن : و اخرج احمد (3 / 19 ، 41) من حديث عمرو بن ابى عمرو عن ابيئ سعيد به و هو منقطع فيما ارى

٢٣٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ صَفْوَانَ بْنِ عَسَّالٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى جَعَلَ بِالْمَغْرِبِ بَابًا عَرْضُهُ مَسِيرَةُ سَبْعِينَ عَامًا لِلتَّوْبَةِ لَا يُغْلَقُ مَا لم تطلع عَلَيْهِ الشَّمْسُ مِنْ قِبَلِهِ وَذَلِكَ قَوْلُ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ: (يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قبل)»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

2345. सफवान बिन अस्साल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ अल्लाह तआला ने मग़रिब की तरफ तौबा के लिए एक दरवाज़ा बनाया, जिस का अर्ज़ सत्तर साल की मुसाफ़त के बराबर है और जब तक सूरज उसकी तरफ से तुलुअ नहीं होता वह बाब अल तौबा खुला हुआ है, और हमें वह अल्लाह अज्ज़वजल का फरमान है, “जिस रोज़ तेरे रब की बाज़ निशानिया आजाएगी तो किसी नफ्स का इस वक़्त ईमान लाना फ़ायदा मंद नहीं होगा, जो पहले ईमान नहीं लाया था”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذى (3536 و قال : حسن صحيح) و ابن ماجه (4070)

٢٣٤٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُعَاوِيَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَنْقَطِعُ الْهِجْرَةُ حَتَّى يَنْقَطِعَ التَّوْبَةُ وَلَا تَنْقَطِعُ التَّوْبَةُ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ

2346. मुआविया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ हिजरत मुन्कतेअ नहीं होगी, हत्ता कि तौबा मुन्कतेअ हो जाए और तौबा मुन्कतेअ नहीं होगी हत्ता कि सूरज मग़रिब से तुलुअ हो जाए”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (4 / 99 ح 17030) و ابوداؤد (3479) و الدارمى (2 / 240 ح 2516)

٢٣٤٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ رَجُلَيْنِ كَانَا فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ مُتَحَابَّيْنِ أَحدهمَا مُجْتَهد لِلْعِبَادَةِ وَالْآخَرُ يَقُولُ: مُذْنِبٌ فَجَعَلَ يَقُولُ: أَقْصِرْ عَمَّا أَنْتَ فِيهِ فَيَقُولُ خَلِّنِي وَرَبِّي

حَتَّى وَجَدَهُ يَوْمًا عَلَى ذَنْبٍ اسْتَعْظَمَهُ فَقَالَ: أَقْصِرْ فَقَالَ: خَلِّنِي وَرَبِّي أَبُعِثْتَ عَلَيَّ رَقِيبًا؟ فَقَالَ: وَاللَّهِ لَا يَغْفِرُ اللَّهُ لَكَ أَبَدًا وَلَا يُدْخِلُكَ الْجَنَّةَ فَبَعَثَ اللَّهُ إِلَيْهِمَا مَلَكًا فَقَبَضَ أَرْوَاحَهُمَا فَاجْتَمَعَا عِنْدَهُ فَقَالَ لِلْمُذْنِبِ: ادْخُلِ الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِي وَقَالَ لِلْآخَرِ: أَتَسْتَطِيعُ أَنْ تَحْظِرَ عَلَى عَبْدِي رَحْمَتِي؟ فَقَالَ: لَا يَا رَبِّ قَالَ: اذْهَبُوا بِهِ إِلَى النَّار ". رَوَاهُ أَحْمد

2347. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ बनी इसराइल के दो आदमी एक दूसरे के दोस्त थे, उनमें से एक इन्तिहाई इबादत गुज़ार था जबकि दूसरा कहता था में गुनाहगार हूँ, यह इसे कहता अपने रवीश से बाज़ जाओ, तो वह कहता मेरा मुआमला मेरे रब पर छोड़ दो, हत्ता कि उस ने एक रोज़ इसे गुनाह करते हुए पाया, तो उस ने इसे बहोत बुरा समझते हुए कहा बाज़ जाओ, उस ने कहा मुझे मेरे रब पर छोड़ दो, क्या तुम मुझ पर निगरान बना कर भेजे गए हो? तो इस इबादत गुज़ार ने कहा अल्लाह की क़सम! अल्लाह तुम्हें कभी मुआफ़ करेगा न कभी तुम्हें जन्नत में दाखिल करेगा है, पस अल्लाह ने इन दोनों की तरफ फ़रिश्ता भेजा तो उस ने इन दोनों की रूहें कब्ज़ कर ली और वह दोनों उस के पास इकठ्ठे हो गए तो अल्लाह तआला ने गुनाहगार शख़्स से फ़रमाया मेरी रहमत के साथ जन्नत में दाखिल हो जा, और दूसरे से फ़रमाया क्या तुम ताकत रखते हो की तुम मेरी रहमत को मेरे बंदे से रोक दो, वह अर्ज़ करता है, नहीं! मेरे रब, अल्लाह तआला फरमाता है, इसे जहन्नम में ले जाओ”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 323 ح 8275 ، 2 / 362 ح 8734) [و ابوداؤد (4901)] انظر نيل المقصود (مخطوط 3 / 1033) و تفسير ابن كثير (2 / 65)

٢٣٤٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيدَ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يقْرَأ: (يَا عبَادي الَّذِي أَسْرَفُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ [ص:٧٢ الذُّنُوبَ جَمِيعًا)»» وَلَا يُبَالِي»» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ وَفِي شَرْحِ السُّنَّةِ يَقُولُ: بَدَلَ: يقْرَأ

2348. अस्मा बिन्ते यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह आयत पढ़ते हुए सुना: “मेरे वह बंदे जिन्होंने अपने जानो पर ज़ुल्म किया है, अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, क्योंकि अल्लाह तमाम गुनाह मुआफ़ कर देता है, और वह परवाह नहीं करता”| अहमद तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है, और शरह सुन्ना में يقرا के बदले يقول के अल्फाज़ है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (6 / 459 ح 28148) و الترمذی (3237) و البغوی فی شرح السنة (14 / 384 ح 4186)

٢٣٤٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابْن عَبَّاس: فِي قَوْله تَعَالَى: (إِلَّا اللمم)»» قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:»» إِنْ تَغْفِرِ اللَّهُمَّ تَغْفِرْ جَمًّا وَأَيُّ عَبْدٍ لَكَ لَا أَلَمَّا»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيب

2349. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने अल्लाह तआला का फरमान (إِلَّا اللَّمَمَ) के बारे में बयान किया के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ अल्लाह अगर तो मुआफ़ कर दे तो सभी गुनाह मुआफ़ कर दे और तेरा कौन सा

बंदा है जो सगिरह गुनाह नहीं करता”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (3284) [و صححه الحاکم (2 / 469470) علی شرط الشیخین و وافقه الذھبی]

٢٣٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى يَا عِبَادِي كُلُّكُمْ ضَالٌّ إِلَّا مَنْ هَدَيْتُ فَاسْأَلُونِي الْهُدَى أَهْدِكُمْ وَكُلُّكُمْ فُقَرَاءُ إِلَّا مَنْ أَغْنَيْتُ فَاسْأَلُونِي أُرْزَقْكُمْ وَكُلُّكُمْ مُذْنِبٌ إِلَّا مَنْ عَافَيْتُ فَمَنْ عَلِمَ مِنْكُمْ أَنِّي ذُو قُدْرَةٍ عَلَى الْمَغْفِرَةِ فَاسْتَغْفَرَنِي غَفَرْتُ لَهُ وَلَا أُبَالِي وَلَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَحَيَّكُمْ وَمَيِّتَكُمْ وَرَطْبَكُمْ وَيَابِسَكُمُ اجْتَمَعُوا عَلَى أَتْقَى قَلْبِ عَبْدٍ مِنْ عبادي مَا زَاد فِي ملكي جنَاح بعوضةولو أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَحَيَّكُمْ وَمَيِّتَكُمْ وَرَطْبَكُمْ وَيَابِسَكُمُ اجْتَمَعُوا عَلَى أَشْقَى قَلْبِ عَبْدٍ مِنْ عِبَادِي مَا نَقَصَ ذَلِكَ مِنْ مُلْكِي جَنَاحَ بَعُوضَةٍ. وَلَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ وَحَيَّكُمْ وَمَيِّتَكُمْ وَرَطْبَكُمْ وَيَابِسَكُمُ اجْتَمَعُوا فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ فَسَأَلَ كُلُّ إِنْسَانٍ مِنْكُمْ مَا بَلَغَتْ أُمْنِيَّتُهُ فَأَعْطَيْتُ كُلَّ سَائِلٍ مِنْكُمْ مَا نَقَصَ ذَلِكَ مِنْ مُلْكِي إِلَّا كَمَا لَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ مَرَّ بِالْبَحْرِ فَغَمَسَ فِيهِ إِبْرَةً ثُمَّ رَفَعَهَا ذَلِكَ بِأَنِّي جَوَادٌ مَاجِدٌ أَفْعَلُ [ص:٧٢] مَا أُرِيدُ عَطَائِي كَلَامٌ وَعَذَابِي كَلَامٌ إِنَّمَا أَمْرِي لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْتُ أَنْ أَقُولَ لَهُ (كُنْ فَيَكُونُ)»» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

2350. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ अल्लाह तआला फरमाता है, मेरे बन्दों! तुम सब गुमराह हो मगर जिसे में हिदायत अता फरमा दू, तुम मुझ से हिदायत तलब करो, तुम सब फुकरा हो मगर जिसे में गनी कर दूँ, तुम मुझ से अपना रीज़्क तलब करो, और तुम सब गुनाहगार हो मगर जिसे में बचालूँ, तुम में से जिसे इल्म हो की मैं मगफिरत करने पर कादिर हूँ और वह मुझ से मगफिरत तलब करे तो में उसे बख्श देता हूँ और मैं परवाह नहीं करता, और अगर तुम्हारा अव्वल व आखिर, तुम्हारे जिंदा और मुर्दा, तुम्हारे जवान और तुम्हारे बूढ़े सारे मेरे बंदो में से इस शख़्स जैसे हो जाए जो सबसे ज़्यादा मुत्तकी है, तो उस से मेरी बादशाहत में मच्छर के पर जितना भी इज़ाफा नहीं होगा, और अगर तुम्हारा अव्वल व आख़िर तुम्हारे जिंद और मुर्दा और तुम्हारे जवान बूढ़े सब मेरे बंदो में से इस शख़्स जैसे हो जाए जो के सबसे ज़्यादा बदनसीब गुमराह है, तो उस से मेरी बादशाहत में मच्छर के पर के बराबर भी कमी नहीं आएगी, और अगर तुम्हारा अव्वल व आख़िर तुम्हारे जिंदा व मुर्दा और तुम्हारे जवान बूढ़े सब एक मैदान में इकठ्ठे हो जाए, फिर तुम में से हर इंसान जी भर कर मांग ले और मैं तुम में से हर साइल को दे दू, तो उस से मेरी बादशाहत में इतना ही फर्क आएगा जैसे तुम में से कोई समुन्दर के पास से गुज़रे और वह उस में एक सुई डुबो कर बाहर निकाल ले, इसलिए की मैं सखिदाता हूँ, जो चाहता हूँ कर गुज़रता हूँ मेरा अता करना कलाम है और मेरा अज़ाब करना भी कलाम है, किसी चीज़ के बारे में मेरा अम्र तो पस इतना ही है की जब मैं इरादा करता हूँ तो मैं उस के बारे में यही कहता हूँ कि हो जा तो वह हो जाता है”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (5 / 154 ح 21695) و الترمذی (2495 و قال : حسن) و ابن ماجه (4257)

٢٣٥١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَرَأَ (هُوَ أَهْلُ التَّقْوَى وَأَهْلُ الْمَغْفِرَة)»» قَالَ:»» قَالَ رَبُّكُمْ أَنَا أَهْلٌ أَنْ أُتَّقَى فَمَنِ اتَّقَانِي فَأَنَا أَهْلٌ أَنْ أَغْفِرَ لَهُ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه والدارمي

2351. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ने यह आयत पढ़ी : (هُوَ أَهْلُ التَّقْوَى وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ) “वो (अल्लाह तआला) अहल तकवा और अहल मगफिरत है”, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ तुम्हारा रब फरमाता है, मैं इस लायक हूँ कि मुझ से डरा जाए, जो शख़्स मुझ से डरता है तो फिर मैं उस का अहल हूँ कि मैं उसे बख्श दू”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3328 و قال : حسن غریب) و ابن ماجه (4299) و الدارمی (2 / 303 ح 2727) * سهیل بن عبدالله القطیعی : ضعیف

٢٣٥٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابْن عمر قَالَ: إِنْ كُنَّا لَنَعُدُّ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَجْلِسِ يَقُولُ: «رَبِّ اغْفِرْ لِي وَتُبْ عَلَيَّ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الْغَفُورُ» مِائَةَ مَرَّةٍ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

2352. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ को एक मजलिस में सौ मर्तबा यह फरमाते हुए: “मेरे रब मुझे बख्श दे, मुझ पर रुजू फरमा, बेशक तू तौबा कुबूल करने वाला बख्शने वाला है”,शुमार किया करते थे| (सहीह)

صحیح ، رواه احمد (2 / 21 ح 4726) و الترمذی (3434 و قال : حسن صحیح غریب) و ابوداؤد (1516) و ابن ماجه (3814)

٢٣٥٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن بِلَال بن يسَار بن زيدٍ مَوْلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ جَدِّي أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " مَنْ قَالَ: أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيَّ الْقَيُّومَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ غُفِرَ لَهُ وَإِنْ كَانَ قَدْ فَرَّ مِنَ الزَّحْفِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ لَكِنَّهُ عِنْدَ أَبِي دَاوُدَ هِلَالُ بْنُ يَسَارٍ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

2353. नबी ﷺ के आज़ाद करदा गुलाम ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु के पोते बिलाल बिन यस्सार बयान करते हैं, मेरे वालिद यस्सार रदियल्लाहु अन्हु ने मेरे दादा ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना! “जो शख़्स यह दुआ पढ़े (استغفر الله ...... واتوب اليه) “मैं अल्लाह से मगफिरत तलब करता हूँ जिसके सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं वह जिंदा और काइम रखने वाला है और मैं उस के हुज़ूर तौबा करता हूँ” तो उसे बख्श दिया जाता है, ख्वाँ वह मैदान ए जिहाद से फरार हुआ हो”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, लेकिन अबू दावुद की रिवायत में हिलाल बिन यस्सार है, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3577) و ابوداؤد (1517)

इस्तिग्फार और तौबा का बयान • بَاب الاسْتِغْفَار وَالتَّوْبَة

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٢٣٥٤ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ لَيَرْفَعُ الدَّرَجَةَ لِلْعَبْدِ الصَّالِحِ فِي الْجَنَّةِ فَيَقُولُ: يَا رَبِّ أَنَّى لِي هَذِهِ؟ فَيَقُولُ: باستغفار ولدك لَك ". رَوَاهُ أَحْمد

2354. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ” अल्लाह अज़्ज़वजल स्वालेह बंदे का जन्नत में दर्जा बुलंद फरमाता है, तो वह अर्ज़ करता है रब जी! यह मुझे कैसे हासिल हुआ तो वह फरमाता है, तेरे बच्चे (बेटा बेटी) के तेरे लिए दुआएं मगफिरत करने की वजह से”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 509 ح 10618) [و ابن ماجه : 3660]

٢٣٥٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا الْمَيِّتُ فِي الْقَبْرِ إِلَّا كَالْغَرِيقِ الْمُتَغَوِّثِ يَنْتَظِرُ دَعْوَةً تَلْحَقُهُ مِنْ أَبٍ أَوْ أُمٍّ أَوْ أَخٍ أَوْ صَدِيقٍ فَإِذَا لَحِقَتْهُ كَانَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا وَإِنَّ اللَّهَ تَعَالَى لَيُدْخِلُ عَلَى أَهْلِ الْقُبُورِ مِنْ دُعَاءِ أَهْلِ الْأَرْضِ أَمْثَالَ الْجِبَالِ وَإِنَّ هَدِيَّةَ الْأَحْيَاءِ إِلَى الْأَمْوَاتِ الِاسْتِغْفَارُ لَهُمْ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

2355. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ” मय्यत क़ब्र में, डूबते हुए फ़रियाद करने वाले की तरह है, वह बाप या माँ या भाई या दोस्त की तरफ से पहुँचने वाली दुआ की मुन्तज़र रहती है, जब वह इसे पहुँच जाती है तो वह उस के लिए दुनिया और जो कुछ इस में है इस से बेहतर होती है और बेशक अल्लाह तआला दुनिया वालो की दुआओं से अहल क़बुर पर पहाड़ो जितनी रहमते नाज़िल फरमाता है, और जिंदो का मर्दों के लिए तोहफे उन के लिए मगफिरत तलब करना है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جدا منکر ، رواه البیھقی فی شعب الایمان (7905 ، نسخة محققة : 7526) * فیه محمد بن جابر بن ابی عیاش المصیصی ، قال الذھبی :” لا اعرفه و خبره منکر جدًا “ (میزان الاعتدال 3 / 396) و الفضل بن محمد بن عبدالله بن الحارث بن سلیمان الانطاکی مجروح متھم

٢٣٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبد الله بن يسر قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «طُوبَى لِمَنْ وَجَدَ فِي صَحِيفَتِهِ اسْتِغْفَارًا كَثِيرًا» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَرَوَى النَّسَائِيُّ فِي «عملِ يَوْم وَلَيْلَة»

2356. अब्दुल्लाह बिन बुसरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ” इस शख़्स के लिए खुशखबरी हो जो अपने नाम ए आमाल में बहोत ज़्यादा इस्तिग्फार पाए”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابن ماجه (2818) و النسائی فی عمل الیوم و اللیلة (455 و الکبریٰ : 10289)

٢٣٥٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ الَّذِينَ إِذا أَحْسَنوا استبشَروا وإِذا أساؤوا اسْتَغْفَرُوا» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعَوَاتِ الْكَبِير

2357. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ यह दुआ करते थे : (اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ الَّذِينَ إِذا أَحْسَنوا استبشَروا وإِذا أساؤوا اسْتَغْفَرُوا) "अल्लाह मुझे उन लोगों में शामिल फरमा के जब वह नेकी करते हैं, तो खुश हो जाते हैं और जब कोई गलती कर बैठते है, तो मगफिरत तलब करते हैं"| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (3802 و سنده ضعيف فيه على بن زيد بن جدعان : ضعيف) و البيهقى فى الدعوات الكبير (لم اجده و شعب الايمان : 6992) * و له طريق آخر عند البيهقى فى شعب الايمان (6996) و سنده حسن ، فيه الحسن بن المثنى ، قال الذهبى :'' من نبلاء الثقات '' (سير اعلام النبلاء13 / 526)

٢٣٥٨ - (صَحِيح) وَعَن الْحَارِث بن سُوَيْدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْعُودٍ حَدِيثَيْنِ: أحدُهما عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْآخَرُ عَنْ نَفْسِهِ قَالَ: إِنَّ الْمُؤْمِنَ يَرَى ذُنُوبَهُ كَأَنَّهُ قَاعِدٌ تَحْتَ جَبَلٍ يَخَافُ أَنْ يَقَعَ عَلَيْهِ وَإِنَّ الْفَاجِرَ يَرَى ذُنُوبَهُ كَذُبَابٍ مَرَّ عَلَى أَنْفِهِ فَقَالَ بِهِ هَكَذَا أَيْ بِيَدِهِ فَذَبَّهُ عَنْهُ ثُمَّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: " لَلَّهُ أَفْرَحُ بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ الْمُؤْمِنِ مِنْ رَجُلٍ نَزَلَ فِي أَرْضٍ دَوِيَّةٍ مَهْلَكَةٍ مَعَهُ رَاحِلَتُهُ عَلَيْهَا طَعَامُهُ وَشَرَابُهُ فَوَضَعَ رَأْسَهُ فَنَامَ نَوْمَةً فَاسْتَيْقَظَ وَقَدْ ذَهَبَتْ رَاحِلَتُهُ فَطَلَبَهَا حَتَّى إِذَا اشْتَدَّ عَلَيْهِ الْحَرُّ وَالْعَطَشُ أَوْ مَا شَاءَ اللَّهُ قَالَ: أَرْجِعُ إِلَى مَكَانِي الَّذِي كُنْتُ فِيهِ فَأَنَامُ حَتَّى أَمُوتَ فَوَضَعَ رَأْسَهُ عَلَى سَاعِدِهِ لِيَمُوتَ فَاسْتَيْقَظَ فَإِذَا رَاحِلَتُهُ [ص:٧٢ عِنْدَهُ عَلَيْهَا زَادُهُ وَشَرَابُهُ فَاللَّهُ أَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ الْعَبْدِ الْمُؤْمِنِ مِنْ هَذَا بِرَاحِلَتِهِ وَزَادِهِ ". رَوَى مُسْلِمٌ الْمَرْفُوعَ إِلَى رَسُول صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْهُ فَحَسْبُ وَرَوَى البُخَارِيّ الموقوفَ على ابنِ مَسْعُود أَيْضا

2358. हारिस बिन सुवैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने हमें दो हदीसे बयान की, उनमें से एक रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ से मर्फ़ुअ और दूसरी अपने तरफ से मौक़ूफ़, फ़रमाया: "मोमिन अपने गुनाहों को यूँ समझता है जैसे वह किसी पहाड़ के नीचे बैठा हो और वह डरता है के वह उस पर गिर पड़ेगा, जबकि फ़ाजिर शख़्स अपने गुनाहों को यूँ समझता है जैसे मख्खी उसकी नाक पर बैठ गई हो, फिर उन्होंने हाथ के इशारे से अपने आप से मख्खी उड़ा कर दिखाई, फिर उन्होंने कहा, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना, अल्लाह अपने मोमिन बंदे की तौबा से इस शख़्स से भी ज़्यादा खुश होता है, जो किसी खतरनाक बियाबान में पड़ाव डाले उस के साथ उसकी सवारी हो, जिस पर उस का खाना पीना हो, उस ने अपना सर रखा और सो गया, जब वह बेदार हुआ तो उसकी सवारी कहीं जा चुकी थी, उस ने इसे तलाश किया हत्ता कि जब गर्मी प्यास या जो अल्लाह ने चाहा उस पर शदीद हो गए, तो उस ने कहा में अपने इसी पहली जगह पर वापस जाता हूँ और सो जाता हूँ हत्ता कि में फौत हो जाऊं, उस ने अपने बाज़ू पर अपना सर रखा, ताकि वह फौत हो जाए वह बेदार हुआ तो उसकी सवारी उस के पास खड़ी थी, और उस के खाने पीने का सामान भी उस पर मौजूद था, अल्लाह मोमिन बंदे की तौबा से इस आदमी से भी ज़्यादा खुश होता है, जिसे अपने सवारी और अपना नाश्ता मिलने पर ख़ुशी होती है", इमाम मुस्लिम ने इसे रसूलुल्लाह ﷺ से फ़क़त मरफ़ुअ रिवायत किया है, जबकि इमाम बुखारी ने इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से इसे मौक़ूफ भी रिवायत किया है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (3 / 2744)، (6955) و البخارى (6308)

٢٣٥٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْعَبْدَ المؤمنَ المفتَّنَ التوَّابَ»

2359. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह गुनाह में मुब्तिला बहोत ज़्यादा तौबा करने वाले मोमिन बंदे को पसंद करता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا موضوع ، رواه [عبدالله بن] احمد (1 / 80 ح 605) [و عنه ابونعيم فى حلية الاولياء (3 / 178179)] * فيه عبدالملک بن سفيان الثقفى : مجهول (تعجيل المنفعة ص 265) و ابوعمرو البجلى : لا يحل الاحتجاج به [ايضًا ص 508] يروى الموضوعات عن الثقات ، قاله ابن حبان و فيه علل أخرى منها ابوعبدالله مسلمة الرازى : لم اجد له ترجمة

٢٣٦٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَا أُحِبُّ أَنَّ لِي الدُّنْيَا بِهَذِهِ الْآيَةِ (يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرفُوا على أَنْفُسِهِم لَا تَقْنَطوا)»» الْآيَةَ» فَقَالَ رَجُلٌ: فَمَنْ أَشْرَكَ؟ فَسَكَتَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ: «أَلا وَمن أشرَكَ» ثَلَاث مرَّاتٍ

2360. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “इस आयत “मेरे बन्दों! जिन्होंने अपने जानो पर ज़ुल्म किया अल्लाह की रहमत से मायूस न होना” के बदले पूरी दुनिया का मिल जाना भी मुझे पसंद नहीं, किसी आदमी ने अर्ज़ किया, तो जिस ने शिर्क किया जो नबी ﷺ ख़ामोश रहे फिर आप ने तीन मर्तबा फ़रमाया: “सुन लो जिस ने शिर्क किया जो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 275 ح 22720) * فيه ابو عبدالرحمن الجبلانى (صحح) : لم اجد من و ثقه ، ترجمة فى تعجيل المنفعة (ص 499) و غيره و ابن لهيعة ضعيف لاختلاطه و فى السند الوان أخرى

٢٣٦١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى لَيَغْفِرُ لِعَبْدِهِ مَا لَمْ يَقَعِ الْحِجَابُ» . قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا الْحِجَابُ؟ قَالَ: «أَنْ تَمُوتَ النَّفْسُ وَهِيَ مُشْرِكَةٌ»»» رَوَى الْأَحَادِيثَ الثَّلَاثَةَ أَحْمَدُ وَرَوَى الْبَيْهَقِيُّ الْأَخِيرَ فِي كِتَابِ الْبَعْثُ والنشور

2361. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ अल्लाह तआला हिजाब वाकेअ होने से पहले तक अपने बंदे को बख्सता रहता है”| सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हिजाब क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ कोई जान हालत ए शिर्क में फौत हो”, तीनो अहादीस इमाम अहमद ने रिवायत की और इमाम बयहकी ने आखिरी हदीस ’’ किताब अल बअस वल नुशुर ‘‘ में रिवायत की है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 174 ح 21855 ، 21856) [و صححه ابن حبان (2450) و الحاكم (4 / 257) و وافقه الذهبى] * فيه عمر بن نعيم و اسامة بن سليمان : و حديثهما لا ينزل عن درجة الحسن ، و ثقهما ابن حبان و الحاكم و غيرهما

٢٣٦٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ لَقِيَ اللَّهَ لَا يَعْدِلُ بِهِ شَيْئًا فِي الدُّنْيَا ثُمَّ كَانَ عَلَيْهِ مِثْلَ جِبَالٍ ذُنُوبٌ غَفَرَ اللَّهُ لَهُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي كتاب الْبَعْث والنشور

2362. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो शख़्स इस हाल में अल्लाह के साथ मुलाकात करे के वह दुनिया में किसी को अल्लाह के बराबर करार न देता हो, फिर उस पर पहाड़ो जितने भी गुनाह हो तो अल्लाह उस को मुआफ़ फरमादेगा”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه البیھقی فی البعث و النشور (ص 43 ح 33) * رجاله ثقات و السند متصل و ھو غریب : لم اجده الا فی البعث و النشور و الاصل الحدیث شواھد

٢٣٦٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «التَّائِبَ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَا ذَنْبَ لَهُ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ وَقَالَ تَفَرَّدَ بِهِ النَّهْرَانِيُّ وَهُوَ مَجْهُولٌ. وَفِي (شَرْحِ السُّنَّةِ)»» رَوَى عَنْهُ مَوْقُوفًا قَالَ: النَّدَمُ تَوْبَةٌ والتَّائبُ كمن لَا ذَنْبَ لَهُ

2363. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ गुनाह से तौबा करने वाला इस शख़्स की तरह है जिस ने कोई गुनाह किया ही ना हो”, इब्ने माजा बयहकी की शौबुल ईमान और फ़रमाया उस में नहरानी का तफर्रुद है और वह मजहूल है, जबकि शरह सुन्ना में अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु से मौकूफ रिवायत है, फ़रमाया नदामत से तौबा मुराद है, और तौबा करने वाला इस शख़्स की तरह है जिस ने कोई गुनाह किया ही ना हो| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابن ماجه (4250) و البیھقی فی شعب الایمان (7040) و البغوی فی شرح السنة (5 / 9192 بعد ح 1307) [و ابن ماجه (4252) و صححه الحاکم (4 / 243) و وافقه الذھبی بلفظ ’’ الندم توبة ‘‘ و ھو حدیث حسن] * السند منقطع ، ابوعبیده بن عبدالله بن مسعود لم یسمع من ابیه و رواه البغوی فی شرح السنة (5 / 91 ح 1307) مرفوعًا :’’ الندم توبة ‘‘ و ھو حدیث حسن

अल्लाह की रहमत की वुस-अत का बयान

بَاب سَعَة رَحْمَة الله

पहली फस्ल

الْفَصْل الأول

٢٣٦٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَمَّا قَضَى اللَّهُ الْخَلْقَ كَتَبَ كِتَابًا فَهُوَ عِنْدَهُ فَوْقَ عَرْشِهِ: إِنَّ رَحْمَتِي سَبَقَتْ غَضَبِي «. وَفِي رِوَايَةٍ» غَلَبَتْ غَضَبِي "

2364. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब अल्लाह ने मखलूक को पैदा फ़रमाया तो उस ने एक किताब लिखी जो उस के पास अर्श पर है के मेरी रहमत मेरे गज़ब पर सबकत ले गई ”, और एक दूसरी रिवायत में है: “मेरे गज़ब पर ग़ालिब आ गई”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3194) و مسلم (16 / 2751)، (6971)

٢٣٦٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِنَّ لِلَّهِ مائةَ رَحْمَةٍ أَنْزَلَ مِنْهَا رَحْمَةً وَاحِدَةً بَيْنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ وَالْبَهَائِمِ وَالْهَوَامِّ فَبِهَا يَتَعَاطَفُونَ وَبِهَا يَتَرَاحَمُونَ وَبِهَا تَعْطُفُ الْوَحْشُ عَلَى وَلَدِهَا وَأَخَّرَ اللَّهُ تِسْعًا وَتِسْعِينَ رَحْمَةً يَرْحَمُ بِهَا عِبَادَهُ يَوْمَ الْقِيَامَة»

2365. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ अल्लाह की सौ रहमते है उनमें से एक रहमत जिन्नो, इंसानों, हैवानो और ज़हरीले जानवरों में उतार दी, जिसके ज़रिए वह बाहम हमदर्दी और रहम करते हैं इसी वजह से वहशी जानवर अपने बच्चे पर हमदर्दी करता है, जबकि अल्लाह ने निन्यानवेरहमते अपने पास रखी है जिन के ज़रिए वह रोज़ ए कियामत अपने बंदो पर रहम फरमाएगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6000) و مسلم (19 / 2752)، (6974)

٢٣٦٦ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ عَنْ سَلْمَانَ نَحْوُهُ وَفِي آخِرِهِ قَالَ: «فَإِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ أَكْمَلَهَا بِهَذِهِ الرَّحْمَة»

2366. सहीह मुस्लिम में सलमान से मरवी रिवायत इसी तरह है, और उस के आख़िर में है फ़रमाया: “पस जब रोज़ ए कियामत होगा तो वह इस रहमत से उन निन्यानवेरहमतो को मुकम्मल सौ फरमाएगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (21 / 2753)، (6977)

٢٣٦٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ يَعْلَمُ الْمُؤْمِنُ مَا عِنْدَ اللَّهِ مِنَ الْعُقُوبَةِ مَا طَمِعَ بِجَنَّتِهِ أَحَدٌ وَلَوْ يُعْلَمُ الْكَافِرُ مَا عِنْدَ اللَّهِ مِنَ الرَّحْمَةِ مَا قَنَطَ من جنته أحد»

2367. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' अगर मोमिन को अल्लाह के अज़ाब का पता चल जाए तो कोई भी उसकी जन्नत की उम्मीद न रखे और अगर काफ़िर को अल्लाह की रहमत का पता चल जाए तो कोई उसकी जन्नत से ना उम्मीद न हो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6469) و مسلم (23 / 2755)، (6979)

٢٣٦٨ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْجَنَّةُ [ص:٧٣ أَقْرَبُ إِلَى أَحَدِكُمْ مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهِ وَالنَّارُ مِثْلُ ذَلِكَ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2368. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' जन्नत तुम्हारे जूते के तस्मे से भी ज़्यादा तुम से करीब है और जहन्नम भी इसी तरह"| (बुखारी)

رواه البخاری (6488)

٢٣٦٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: " قَالَ رَجُلٌ لَمْ يَعْمَلْ خَيْرًا قَطُّ لِأَهْلِهِ وَفِي رِوَايَةٍ أَسْرَفَ رَجُلٌ عَلَى نَفْسِهِ فَلَمَّا حَضَرَهُ الْمَوْتُ أَوْصَى بَنِيهِ إِذَا مَاتَ فَحَرِّقُوهُ ثُمَّ اذْرُوا نِصْفَهُ فِي الْبَرِّ وَنِصْفَهُ فِي الْبَحْرِ فو الله لَئِنْ قَدَرَ اللَّهُ عَلَيْهِ لَيُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا لَا يُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِنَ الْعَالَمِينَ فَلَمَّا مَاتَ فَعَلُوا مَا أَمَرَهُمْ فَأَمَرَ اللَّهُ الْبَحْرَ فَجَمَعَ مَا فِيهِ وَأَمَرَ الْبَرَّ فَجَمَعَ مَا فِيهِ ثُمَّ قَالَ لَهُ: لِمَ فَعَلْتَ هَذَا؟ قَالَ: مِنْ خَشْيَتِكَ يَا رَبِّ وَأَنْتَ أَعْلَمُ فَغَفَرَ لَهُ "

2369. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' किसी आदमी ने, जिस ने कभी कोई नेकी नहीं की थी, अपने अहल खाने से कहा, जबकि दूसरी रिवायत में है किसी आदमी ने बहोत गुनाह किए थे, पस जब उसकी मौत का वक़्त आया तो उस ने अपने बेटो को वसीयत की, जब वह फौत हो जाए तो उसे जला देना, फिर इस (राख) के आधे हिस्से को खुश्की में और उस के आधे को समुन्दर में बहा देना, अल्लाह की क़सम! अगर अल्लाह ने इस (मुझ) पर तंगी की, तो वह इसे ऐसा अज़ाब देगा के उस ने तमाम जहांन वालो में से किसी को ऐसा अज़ाब नहीं दिया होगा, पस जब वह फौत हो गया तो उन्होंने उसकी वसीयत के मुताबिक अमल किया, पस अल्लाह ने समुन्दर को हुक्म दिया तो उस ने इस हिस्से को जो के उस के अन्दर था जमा कर दिया, और खुश्की (ज़मीन) को हुक्म दिया तो उस ने भी इस हिस्से को जो उस के अन्दर था जमा कर दिया, फिर इस (अल्लाह तआला) ने इस (आदमी) से फ़रमाया, तुमने ऐसे क्यों किया? उस ने अर्ज़ किया, रब जी! तेरे डर की वजह से जबकि तू जानता है, पस उस ने इसे मुआफ़ कर दिया"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6481) و مسلم (24 / 2756)، (6980)

٢٣٧٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ قَالَ: قَدِمَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَبْيٌ فَإِذَا امْرَأَةٌ مِنَ السَّبْيِ قَدْ تَحَلَّبَ ثديُها تسْعَى إِذا وَجَدَتْ صَبِيًّا فِي السَّبْيِ أَخَذَتْهُ فَأَلْصَقَتْهُ بِبَطْنِهَا وَأَرْضَعَتْهُ فَقَالَ لَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَتُرَوْنَ هَذِهِ طَارِحَةً وَلَدَهَا فِي النَّارِ؟» فَقُلْنَا: لَا وَهِيَ تَقْدِرُ عَلَى أَنْ لَا تَطْرَحَهُ فَقَالَ: «لَلَّهُ أَرْحَمُ بِعِبَادِهِ مِنْ هَذِهِ بِوَلَدِها»

2370. उमर बिन ख़िताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ के पास कुछ कैदी आए, उन कैदियों में एक औरत थी जिस की छाती से दूध निकल रहा था, वह दोड़ती फिरती थी, जब वह कैदियों में कोई बच्चा पाती तो उसे पकड़ कर अपने पेट से लगाती और इसे दूध पिलाती, नबी ﷺ ने हमें फ़रमाया: "क्या तुम गुमान कर सकते हो यह औरत अपने बच्चे को आग में फेंक देगी ?" हमने अर्ज़ किया: नहीं? अगर वह इसे न फ़ेकने पर कादिर हो, (तो वह नहीं फेकेगी) आप ﷺ ने फ़रमाया: '' अल्लाह अपने बंदो पर इस औरत से भी ज़्यादा मेहरबान है जितना यह अपने बच्चे पर मेहरबान है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5999) و مسلم (22 / 2754)، (6978)

٢٣٧١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَنْ يُنْجِيَ أَحَدًا مِنْكُمْ عَمَلُهُ» قَالُوا: وَلَا أَنْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «وَلَا أَنَا إِلَّا أَنْ يَتَغَمَّدَنِي اللَّهُ مِنْهُ بِرَحْمَتِهِ فَسَدِّدُوا وَقَارِبُوا واغْدُوا وروحوا وشيءٌ من الدُّلْجَةِ والقَصدَ القصدَ تبلغوا»

2371. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' तुम में से किसी शख़्स के आमाल इसे निजात नहीं दिलाएंगे", सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप भी नहीं? आप ﷺ ने फ़रमाया: '' और मैं भी नहीं, मगर यह कि अल्लाह अपने रहमत से मुझे ढांप ले, दुरुस्ती के साथ अमल करते रहो, मियाने रिवाय (संयम) इख़्तियार करो, सुबह व शाम और रात के कुछ हिस्से में इबादत करो, एअतदाल का ख़याल रखो, एअतदाल का ख़याल रखो, इस तरह तुम मंजिल पा लोगे"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6463) و مسلم (51 / 2816)، (7111)

٢٣٧٢ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يُدْخِلُ أَحَدًا مِنْكُمْ عَمَلُهُ الْجَنَّةَ وَلَا يُجِيرُهُ مِنَ النَّارِ وَلَا أَنا إِلا برحمةِ الله» . رَوَاهُ مُسلم

2372. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' तुम में से किसी का अमल ना इसे जन्नत में दाखिल करा सकता है न इसे जहन्नम से बचा सकता है, और मैं भी अल्लाह की रहमत के साथ जन्नत में जाऊँगा"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (77 / 2817)، (7121)

٢٣٧٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا أَسْلَمَ الْعَبْدُ فَحَسُنَ [ص:٧٣ إِسْلَامُهُ يُكَفِّرُ اللَّهُ عَنْهُ كُلَّ سَيِّئَةٍ كَانَ زَلَفَهَا وَكَانَ بَعْدَ الْقِصَاصِ: الْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا إِلَى سَبْعِمِائَةِ ضِعْفٍ إِلَى أَضْعَافٍ كَثِيرَةٍ وَالسَّيِّئَةُ بِمِثْلِهَا إِلَّا أَنْ يَتَجَاوَزَ اللَّهُ عَنْهَا ". رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2373. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' जब बंदा मुसलमान हो जाता है और अपने इस्लाम को बेहतर बनाता है तो अल्लाह उस के पिछले तमाम गुनाह मुआफ़ कर देता है, और इस इस्लाम कबूल करने के बाद फिर बदला शुरू हो जाता है, नेकी का बदला दस गुना से सातसो गुना तक बढ़ा दिया जाता है, जबकि बुराई का बदला उस के मिसल होता है इल्ला यह कि अल्लाह उस से दरगुज़र फरमाए”| (बुखारी)

رواه البخارى (41)

٢٣٧٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ كَتَبَ الحسناتِ والسيِّئاتِ: فَمَنْ هَمَّ بِحَسَنَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا كَتَبَهَا اللَّهُ لهُ عندهُ حَسَنَة كَامِلَة فَإِن هم بعملها كَتَبَهَا اللَّهُ لَهُ عِنْدَهُ عَشْرَ حَسَنَاتٍ إِلَى سَبْعِمِائَةِ ضِعْفٍ إِلَى أَضْعَافٍ كَثِيرَةٍ وَمَنْ هَمَّ بسيئة فَلَمْ يَعْمَلْهَا كَتَبَهَا اللَّهُ عِنْدَهُ حَسَنَةً كَامِلَةً فَإِن هُوَ هم بعملها كتبهَا الله لَهُ سَيِّئَة وَاحِدَة "

2374. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' बेशक अल्लाह ने नेकियाँ और बुराइया लिखी है, जिस शख़्स ने किसी नेकी का इरादा किया लेकिन इसे किया हीं न हो अल्लाह इसे अपने पास उस के हक़ में एक मुकम्मल नेकी लिख लेता है, अगर वह उस का इरादा करे और इसे कर भी ले तो अल्लाह इसे अपने पास उस के हक़ में दस गुना से सातसो गुना और उस से भी बढ़ाकर लिख लेता है, और जो शख़्स बुराई करने का इरादा करे लेकिन इसे करे नहीं तो अल्लाह इसे अपने पास उस के हक़ में एक कामिल(सर्वोत्तम) नेकी लिख लेता है, लेकिन अगर वह इस बुराई का इरादा करे और इसे कर गुज़रे तो अल्लाह इसे उस के हक़ में एक ही बुराई लिखता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6491) و مسلم (207 / 131)، (338)

بَاب سَعَة رَحْمَة الله • अल्लाह की रहमत की वुस-अत का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٣٧٥ - عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ مَثَلَ الَّذِي يعْمل السَّيِّئَة ثُمَّ يَعْمَلُ الْحَسَنَاتِ كَمَثَلِ رَجُلٍ كَانَتْ عَلَيْهِ دِرْعٌ ضَيِّقَةٌ قَدْ خَنَقَتْهُ ثُمَّ عَمِلَ حَسَنَةً فَانْفَكَّتْ حَلْقَةٌ ثُمَّ عَمِلَ أُخْرَى فَانْفَكَّتْ أُخْرَى حَتَّى تَخْرُجَ إِلَى

الْأَرْضِ»»» رَوَاهُ فِي شَرْحِ السّنة

2375. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो शख़्स गुनाह करता है और फिर नेक अमल करता है उसकी मिसाल इस शख़्स जैसी है, जिस पर तंग जिरह हो, जिस ने उस का गला घूंट रखा हो, फिर वह कोई नेक अमल करता है तो एक कड़ी खुल गई, फिर उस ने दूसरी नेकी की तो दूसरी कड़ी खुल गई, हत्ता कि वह खुल कर ज़मीन पर आ रही”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البغوی فی شرح السنة (1 / 339 ح 4149) [و احمد (4 / 145)]

٢٣٧٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ: أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُصُّ عَلَى الْمِنْبَرِ وَهُوَ يَقُول: (ولِمنْ خافَ مقامَ رَبِّهِ جنَّتانِ)»» قُلْتُ: وَإِنْ زَنَى وَإِنْ سَرَقَ؟ يَا رَسُولَ اللَّهِ [ص:٧٣ فَقَالَ الثَّانِيَةَ: (وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جنَّتان)»» فقلتُ الثانيةَ: وإِنْ زنى وسرق؟ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ الثَّالِثَةَ: (وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ)»» فَقُلْتُ الثَّالِثَةَ: وَإِنْ زَنَى وسرق؟ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «وَإِنْ رَغِمَ أَنْفُ أبي الدَّرْدَاء» . رَوَاهُ أَحْمد

2376. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ को मिम्बर पर वाज़ व नसीहत करते हुए सुना, आप ﷺ फरमा रहे थे: “जो शख़्स अपने रब के हुज़ूर खड़ा होने से डर गया उस के लिए दो जन्नते है”, मेंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अगरचे वह ज़िना और चोरी करे, आप ﷺ ने दूसरी मर्तबा फ़रमाया: “जो शख़्स अपने रब के हुज़ूर खड़ा होने से डर गया उस के लिए दो जन्नते हैं”, मेंने दूसरी मर्तबा अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अगरचे वह ज़िना और चोरी करे, आप ﷺ ने तीसरी मर्तबा फ़रमाया: “जो शख़्स अपने रब के हुज़ूर खड़ा होने से डर गया उस के लिए दो जन्नते है”, तो मेंने भी तीसरी मर्तबा अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अगरचे वह ज़िना और चोरी करे, आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ अगरचे अबू दरदा की नाक खाक आलूद हो”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (2 / 357) [و النسائی فی الکبریٰ (11560 ، 11561 ، التفسیر)]

٢٣٧٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَامِرٍ الرَّامِ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ عِنْدَهُ يَعْنِي عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ أَقْبَلَ رَجُلٌ عَلَيْهِ كِسَاءٌ وَفِي يَدِهِ شَيْءٌ قَدِ الْتَفَّ عَلَيْهِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَرَرْتُ بِغَيْضَةِ شَجَرٍ فَسَمِعْتُ فِيهَا أَصْوَاتَ فِرَاخِ طَائِرٍ فَأَخَذْتُهُنَّ فَوَضَعْتُهُنَّ فِي كِسَائِي فَجَاءَتْ أُمُّهُنَّ فَاسْتَدَارَتْ عَلَى رَأْسِي فَكَشَفْتُ لَهَا عَنْهُنَّ فَوَقَعَتْ عَلَيْهِنَّ فَلَفَفْتُهُنَّ بِكِسَائِي فَهُنَّ أُولَاءِ مَعِي قَالَ: «ضَعْهُنَّ» فَوَضَعْتُهُنَّ وَأَبَتْ أُمُّهُنَّ إِلَّا لُزُومَهُنَّ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أتعجبون لرحم أم الْفِرَاخ فراخها؟ فو الَّذِي بَعَثَنِي بِالْحَقِّ: لَلَّهُ أَرْحَمُ بِعِبَادِهِ مِنْ أُمِّ الْفِرَاخِ بِفِرَاخِهَا ارْجِعْ بِهِنَّ حَتَّى تَضَعَهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَخَذْتَهُنَّ وَأُمُّهُنَّ مَعَهُنَّ ". فَرَجَعَ بِهِنَّ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2377. आमिर अर्रराम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, इस असना में के हम नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर थे की एक आदमी आया उस पर चादर थी और उस के हाथ में कोई चीज़ थी, जिसे उस ने लपेट रखा था, उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! में दरख्तों के झुण्ड के पास से गुज़रा तो मेंने उस में परिंदों के बच्चो की आवाज़े सुनी

तो मेंने उन्हें पकड़ लिया और उन्हें अपने चादर में रख लिया फिर उनकी माँ आई और मेरे सर पर चक्कर लगाने लगी, मेंने उन (बच्चो) से परदा हटाया तो वह भी इन पर गिरी, मेंने उन्हें अपने चादर में लपेट लिया और वह यह मेरे पास है, आप ﷺ ने फ़रमाया: '' उन्हें रखो", उस ने उन्हें रखा तो उनकी माँ भी उन के साथ ही रही तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' क्या तुम बच्चो की माँ के अपने बच्चो के साथ रहम करने पर ताज्जुब करते हो? उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे हक़ के साथ मबउस फ़रमाया है! अल्लाह अपने बंदो के साथ बच्चो की माँ के अपने बच्चो के साथ रहम करने से भी ज़्यादा रहम करने वाला है, उन्हे वहीँ जा कर रख आओ जहाँ से तुमने उन्हें उठाया था", और उनकी माँ भी उन के साथ थी, वह आदमी उन्हें वापस ले गया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3089) * فيه ابو منظور : مجهول ، و عمه : لم اعرفه ، و السند مظلم

بَاب سَعَة رَحْمَة الله • अल्लाह की रहमत की वुस-अत का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٣٧٨ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَعْضِ غَزَوَاتِهِ فَمَرَّ بِقَوْمٍ فَقَالَ: «مَنِ الْقَوْمُ؟» قَالُوا: نَحْنُ الْمُسْلِمُونَ وَامْرَأَةٌ تَحْضِبُ بِقِدْرِهَا وَمَعَهَا ابْنٌ لَهَا فَإِذَا ارْتَفَعَ وَهَجٌ تَنَحَّتْ بِهِ فَأَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أَنْتَ رَسُولُ اللَّهِ؟ قَالَ: «نَعَمْ» قَالَتْ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي أَلَيْسَ اللَّهُ أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ؟ قَالَ: «بَلَى» قَالَتْ: أَلَيْسَ اللَّهُ أَرْحَمَ بِعِبَادِهِ مِنَ الْأُم على وَلَدهَا؟ قَالَ: «بَلَى» قَالَتْ: إِنَّ [ص:٧٣ الْأُمَّ لَا تُلْقِي وَلَدَهَا فِي النَّارِ فَأَكَبَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَبْكِي ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ إِلَيْهَا فَقَالَ: " إِنَّ اللَّهَ لَا يُعَذِّبُ مِنْ عِبَادِهِ إِلَّا الْمَارِدَ الْمُتَمَرِّدَ الَّذِي يَتَمَرَّدُ عَلَى اللَّهِ وَأَبَى أَنْ يَقُولَ: لَا إِلَهَ إِلَّا الله ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

2378. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ किसी गज़वा में शरीक थे, आप ﷺ किसी कौम के पास से गुज़रे तो फ़रमाया: "कौन लोग हो?" उन्होंने अर्ज़ किया, हम मुसलमान है वहां एक औरत हंडिया के नीचे आग जला रही थी और उस के साथ उस का बेटा था, जब आग की तपिश तेज़ होती तो वह इस बच्चे को दूर कर लेती, वह नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया, आप अल्लाह के रसूल! है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ", उस ने अर्ज़ किया, मेरे वालिदेन आप पर कुरबान हो क्या अल्लाह सबसे बढ़कर रहम करने वाला नहीं? आप ﷺ ने फ़रमाया: '' क्यों नहीं", फिर उस ने अर्ज़ किया, किया अल्लाह अपने बंदो पर माँ के अपने बच्चे पर रहम करने से ज़्यादा रहम करने वाला नहीं? आप ﷺ ने फ़रमाया: '' क्यों नहीं", उस ने अर्ज़ किया, फिर माँ तो यक़ीनन अपने बच्चे को आग में नहीं दाल सकती, रसूलुल्लाह ﷺ सर झुका कर रोने लगे, फिर आप ने उसकी तरफ सर उठाकर फ़रमाया: "ए अल्लाह! अपने बंदो में से सिर्फ सरकश लोगों को अज़ाब देगा और वह सरकश भी ऐसे जो अल्लाह के खिलाफ सरकशी करते हैं और ((لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ)) कहने से इनकार कर देते है"| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه ابن ماجه (4297) * فيه اسماعيل بن يحيى الشيبانى : كذاب ، و ابراهيم بن اعين : ضعيف

٢٣٧٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ ثَوْبَانَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنَّ الْعَبْدَ لَيَلْتَمِسُ مَرْضَاةَ اللَّهِ فَلَا يَزَالُ بِذَلِكَ فَيَقُولُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ لجبريل: إِن فلَانا عَبدِي يتلمس أَنْ يُرْضِيَنِي أَلَا وَإِنَّ رَحْمَتِي عَلَيْهِ فَيَقُولُ جِبْرِيلُ: رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَى فُلَانٍ وَيَقُولُهَا حَمَلَةُ العرشِ ويقولُها مَن حَولهمْ حَتَّى يَقُولُهَا أَهْلُ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ ثُمَّ تَهْبِطُ لَهُ إِلى الأَرْض ". رَوَاهُ أَحْمد

2379. सौबान रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ बंदा अल्लाह की रज़ामंदी तलाश करता है वह इसी कोशिश में लगा रहता है तो अल्लाह अज्ज़वजल जिब्राइल से फरमाता है, मेरा फलां बंदा मुझे राज़ी करने की कोशिश करता है, सुन लो, मेरी रहमत इस पर है तो जिब्राइल फरमाते हैं, अल्लाह की रहमत फलां शख़्स पर है, फिर हामिलिन अर्श यही कहते हैं, और फिर उन के आस पास वाले यही कहते हैं, हत्ता कि सातों आसमान वाले यही एलान करते हैं, फिर उसकी वजह से वह रहमत ज़मीन पर उतरी है”| (हसन)

حسن ، رواہ احمد (5 / 279 ح 22764) [و الطبرانی فی الاوسط (2 / 139 ح 1262) و عندہ میمون بن عجلان الثقفی) ابو محمد المزنی التمیمی : لا یعرف ، کما فی المیزان و اللسان (6 / 165) و مع ذلک و ثقه الھیشمی ، و میمون بن عجلان لعله عطاء بن عجلان : احد المتروکین ، و ھو تدلیس عجیب] * و فی المسند میمون غیر منسوب و لعله میمون بن موسی المری و صرح بالسماع عند احمد فالسند حسن ، والله اعلم

٢٣٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي قَوْلِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ: (فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ وَمِنْهُمْ مُقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سابقٌ بالخيراتَ)»» قَالَ: كُلُّهُمْ فِي الْجَنَّةِ ". رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي كِتَابِ الْبَعْثِ وَالنُّشُورِ

2380. उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से अल्लाह तआला के इस फरमान: “उन में से कोई अपने जान पर ज़ुल्म करने वाला है, और कोई म्यान रौ बढ़ चढ़ के करने वाला है और कोई नेकियो में बढ़ने वाला है ‘‘ के बारे में रिवायत करते हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ वह सब जन्नती है”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ البیھقی فی البعث و النشور (ص 59 ح 63) [و الخطیب فی تاریخه (12 / 271) و الطبرانی فی الکبیر (410)] * فیه محمد بن ابی لیلی : ضعیف ، ضعفه الجمھور

सुबह व शाम और सोते वक़्त के अज्कार का बयान

بَابُ مَا يَقُولُ عِنْدَ الصَّبَاحِ وَالْمَسَاءِ وَالْمَنَامِ

पहली फस्ल

الْفَصْلُ الأول

٢٣٨١ - (صَحِيح) عَن عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَمْسَى قَالَ: «أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَخَيْرِ مَا فِيهَا وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيهَا اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَسُوءِ الْكِبَرِ وَفِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ»» وَإِذَا أَصْبَحَ قَالَ أَيْضًا: «أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلَّهِ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّار وَعَذَاب فِي الْقَبْر» . رَوَاهُ مُسلم

2381. अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जब शाम करते तो फरमाते : (أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَخَيْرِ مَا فِيهَا وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيهَا اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَسُوءِ الْكِبَرِ وَفِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ) “हमने शाम की और अल्लाह की तमाम बादशाहत ने शाम की, हर किस्म की हम्द अल्लाह के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं, उस के लिए बादशाहत है, और इसी के लिए हम्द है, और वह हर चीज़ पर कादिर है, अल्लाह में तुझ से इस रात की भलाई मांगता हो और जो इस में है उसकी भलाई मांगता हो और उस के शर से और जो इस में है उस के शर से तेरी पनाह चाहता हूँ, अल्लाह में काहली सुस्ती, बुढ़ापे, बुढ़ापे की खराबी, दुनिया के फितने और कब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ”, और जब आप सुबह करते तो भी यही कहते: “हमने और अल्लाह की बादशाहत ने सुबह की”, और एक दूसरी रिवायत में है: “रब जी, मैं तुझ से आग के अज़ाब और अज़ाब ए कब्र से तेरी पनाह चाहता हूँ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (2723 / 7576)، (6908 و 6909)

٢٣٨٢ - (صَحِيح) وَعَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ مِنَ اللَّيْلِ وَضَعَ يَدَهُ تَحْتَ خَدِّهِ ثُمَّ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ بِاسْمِكَ أَمُوتُ وَأَحْيَا» . وَإِذَا اسْتَيْقَظَ قَالَ: «الْحَمْدُ الله الَّذِي أَحْيَانًا بَعْدَمَا مَا أماتنا وَإِلَيْهِ النشور» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

2382. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ रात के वक़्त अपने बिस्तर पर तशरीफ़ लाते तो आप अपना हाथ अपने रुखसार के नीचे रखते, फिर यह दुआ पढ़ते: “ए अल्लाह! में तेरे ही नाम से मरता और जिंदा होता हूँ‘‘ और जब आप बेदार होते, तो यह दुआ पढ़ते: “हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जिस ने

हमें मारने के बाद जिंदा किया और इसी की तरफलौट कर जाना है”| (बुखारी)

رواه البخاری (6314)

٢٣٨٣ - (صَحِيح) وَمُسلم عَن الْبَرَاء

2383. और मुस्लिम ने बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु से यह हदीस बयान की है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (59 / 2711)، (6887)

٢٣٨٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا أَوَى أَحَدُكُمْ إِلَى فِرَاشِهِ فَلْيَنْفُضْ فِرَاشَهُ بِدَاخِلَةِ إِزَارِهِ فَإِنَّهُ لَا يَدْرِي مَا خَلَفَهُ عَلَيْهِ ثُمَّ يَقُولُ: بِاسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنْبِي وَبِكَ أرفعه إِن أَمْسَكت نَفسِي فارحمهما وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا [ص:٧٣ بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ ". وَفِي رِوَايَةٍ: " ثُمَّ لْيَضْطَجِعْ عَلَى شِقِّهِ الْأَيْمن ثمَّ ليقل: بِاسْمِك "»» وَفِي رِوَايَةٍ: «فَلْيَنْفُضْهُ بِصَنِفَةِ ثَوْبِهِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ وَإِن أَمْسَكت نَفسِي فَاغْفِر لَهَا»

2384. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब तुम में से कोई अपने बिस्तर पर आए तो वह पहले अपने आज़ार के किनारे से अपने बिस्तर को झाड़े, क्योंकि वह नहीं जानता के उस के बाद उस पर कौन सी चीज़ आई, फिर वह यह दुआ पढ़े, “मेरे परवरदिगार! तेरे नाम के साथ मेंने अपने पहलु को रखा और तेरे नाम के साथ ही उठूँगा, अगर तू मेरी जान कब्ज़ कर ले तो फिर उस पर रहम फरमाना और अगर तो उसे छोड़ दे तो उसकी इस तरह हिफाज़त फरमाना जैसी तो अपने स्वालेह बंदो की हिफाज़त फरमाता है”, और एक रिवायत में है: “फिर वह अपने दाएँ पहलु पर लपटे फिर दुआ पढ़े बीइस्मिक”, और एक दूसरी रिवायत में है: “अपने कपड़े के किनारे से तीन मर्तबा झाड़े और कहे अगर तो मेरी जान कब्ज़ कर ले तो इसे बख्श देना”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7393) و مسلم (64 / 2714)، (6892)

٢٣٨٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ نَامَ عَلَى شِقِّهِ الْأَيْمَنِ ثُمَّ قَالَ: «اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفَسِي إِلَيْكَ وَوَجَّهْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ لَا مَلْجَأَ وَلَا مَنْجَا مِنْكَ إِلَّا إِلَيْكَ آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ» . وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَالَهُنَّ ثُمَّ مَاتَ تَحْتَ لَيْلَتِهِ مَاتَ عَلَى الْفِطْرَةِ»»» وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِرَجُلٍ: " يَا فُلَانُ إِذَا أَوَيْتَ إِلَى فِرَاشِكَ فَتَوَضَّأْ وُضُوءَكَ لِلصَّلَاةِ ثُمَّ اضْطَجِعْ عَلَى شِقِّكَ الْأَيْمَنِ ثُمَّ قُلِ: اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفَسِي إِلَيْكَ إِلَى قَوْلِهِ: أَرْسَلْتَ " وَقَالَ: «فَإِنْ مِتَّ مِنْ لَيْلَتِكَ مِتَّ عَلَى الْفِطْرَةِ وإِن أصبحتَ أصبتَ خيرا»

2385. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ अपने बिस्तर पर आते तो आप

दाएँ करवट लेटते, फिर यह दुआ पढ़ते: “ए अल्लाह! मेंने अपने जान तेरे सुपुर्द कर दी, अपना चेहरा तेरी तरफ मुतवज्जे कर दिया, अपना मुआमला तेरे सुपुर्द कर दिया, और अपने पुश्त तेरी तरफ झुकाई और यह सब कुछ तेरा शौक रखते हुए और तुझ से डरते हुए किया, न तेरे सिवा कोई पनाह गाह है न मक़ाम ए निजात, मैं तेरी किताब पर ईमान लाया, जिसे तूने नाज़िल फ़रमाया और तेरे नबी पर ईमान लाया जिसे तूने भेजा”, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो शख़्स यह कलिमात पढ़े और फिर इसी रात फौत हो जाए, तो वह फितरत यानी इस्लाम पर फौत होगा”, और एक दूसरी रिवायत में है रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने किसी आदमी से फ़रमाया: “ए फलां जब तुम अपने बिस्तर पर लिपटना चाहो तो नमाज़ का सा वुज़ू करो, फिर अपने दाएँ पहलु पर लेटो, फिर यह दुआ पढ़ो, ऐ अल्लाह! मैंने अपनी जान तेरे सुपुर्द की ...... यानी मुकम्मल दुआ पढ़ी”, फ़रमाया: “अगर तुम इसी रात फौत हो गए तो तुम फितरत (यानी इस्लाम) पर फौत होगे और अगर सुबह की तो तुम खैर व भलाई पाओगे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7488) و مسلم (58 / 2710)، (6885)

٢٣٨٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ قَالَ: «الحمدُ للَّهِ الَّذِي أطعمنَا وَسَقَانَا وكفانا وَآوَانَا فَكَمْ مِمَّنْ لَا كَافِيَ لَهُ وَلَا مؤوي» . رَوَاهُ مُسلم

2386. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह ﷺ अपने बिस्तर पर आते तो यह दुआ पढ़ते: “हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जिस ने हमें खाना खिलाया, पिलाया, वह हमारे लिए काफी हो गया और हमें ठिकाना अता फ़रमाया, कितने ही लोग हैं जिन्हें ना कोई किफ़ायत करने वाला है न ठिकाना देने वाला है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (64 / 2715)، (6894)

٢٣٨٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَليّ: أَن فَاطِمَة أَتَت النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَشْكُو إِلَيْهِ مَا تَلْقَى فِي يَدِهَا مِنَ الرَّحَى وَبَلَغَهَا أَنَّهُ جَاءَهُ رَقِيقٌ فَلَمْ تُصَادِفْهُ فَذَكَرَتْ ذَلِكَ لِعَائِشَةَ فَلَمَّا جَاءَ [ص:٧٣ أَخْبَرَتْهُ عَائِشَةُ قَالَ: فَجَاءَنَا وَقَدْ أَخَذْنَا مَضَاجِعَنَا فَذَهَبْنَا نَقُومُ فَقَالَ: عَلَى مَكَانِكُمَا فَجَاءَ فَقَعَدَ بَيْنِي وَبَيْنَهَا حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَ قَدَمِهِ عَلَى بَطْنِي فَقَالَ: «أَلَا أَدُلُّكُمَا عَلَى خَيْرٍ مِمَّا سَأَلْتُمَا؟ إِذَا أَخَذْتُمَا مَضْجَعَكُمَا فَسَبِّحَا ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ وَاحْمَدَا ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ وَكَبِّرَا ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ فَهُوَ خير لَكمَا من خَادِمٍ»

2387. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा नबी ﷺ के पास इस तकलीफ की शिकायत लेकर गई, जो उन्हें चक्की पिसने से हुई थी और उन्हें पता चला था के आप ﷺ के पास कुछ गुलाम आए है, लेकिन उनकी आप से मुलाकात न हो सकी तो उन्होंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से अपने आने का मकसद बयान किया, जब आप तशरीफ़ लाए तो आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने आप को बताया, अली रदियल्लाहु अन्हु

बयान करते हैं, आप ऐसे वक़्त में हमारे पास तशरीफ़ लाए के हम अपने बिस्तरों पर लेट चुके थे, हम उठने लगे तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "अपने जगह पर लपटे रहो", फिर आप हमारे दरमियान बैठ गए हत्ता कि मेंने आप के पाँव की ठंडक अपने पेट पर महसूस की, आप ﷺ ने फ़रमाया: '' क्या मैं तुम्हें इस चीज़ से जिस का तुमने सवाल किया है, बेहतर चीज़ बताओ, जब तुम अपने बिस्तर पर जाओ तो तेंतीस मर्तबा (((سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह)) तेंतीस मर्तबा (((اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह)) और चोंतिस मर्तबा (((اللّٰهُ أَكْبَرُ)अल्लाहुअकबर)) पढ़ लिया करो, वह तुम्हारे लिए खादिम के मिल जाने से बेहतर है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواه البخاری (5361) و مسلم (80 / 2727)، (6915)

٢٣٨٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: جَاءَتْ فَاطِمَةُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسْأَلُهُ خَادِمًا فَقَالَ: «أَلَا أَدُلُّكِ عَلَى مَا هُوَ خَيْرٌ مِنْ خَادِمٍ؟ تُسَبِّحِينَ اللَّهَ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ وَتَحْمَدِينَ اللَّهَ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ وَتُكَبِّرِينَ اللَّهَ أَرْبَعًا وَثَلَاثِينَ عِنْدَ كُلِّ صَلَاةٍ وَعِنْدَ مَنَامِكِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2388. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह ﷺ से एक खादिम का मुतालबा करने आप के पास आई तो आप ने फ़रमाया: '' क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ बताऊँ जो के खादिम से बेहतर है! की तुम हर नमाज़ और सोते वक़्त तेंतीस मर्तबा '' (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह '' तेंतीस मर्तबा '' (اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह '' और चोंतिस मर्तबा '' (اللّٰهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर '' पढ़ लिया करे"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (81 / 2728)، (6916)

सुबह व शाम और सोते वक़्त के अज्कार का बयान

بَابُ مَا يَقُولُ عِنْدَ الصَّبَاحِ وَالْمَسَاءِ وَالْمَنَامِ

दूसरी फस्ल

الْفَصْلُ الثَّانِي

٢٣٨٩ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَصْبَحَ قَالَ: «اللَّهُمَّ بِكَ أَصْبَحْنَا وَبِكَ أَمْسَيْنَا وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ نَمُوتُ وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ» . وَإِذَا أَمْسَى قَالَ: «اللَّهُمَّ بِكَ أَمْسَيْنَا وَبِكَ أَصْبَحْنَا وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ نَمُوتُ وَإِلَيْكَ النُّشُورُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

2389. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ सुबह करते तो यह दुआ पढ़ते: "ए अल्लाह! हमने तेरी ही तौफिक से सुबह की, तेरी ही तौफिक से शाम की, तेरी ही तौफिक से जिंदा है, तेरी ही तौफिक से मरेंगे और तेरी ही तरफ लौटना है '' और जब आप शाम करते तो यह दुआ पढ़ा करते थे: "ए अल्लाह!

हमने तेरी ही तौफिक से शाम की और तेरी ही तौफिक से सुबह की, तेरी ही तौफिक से जिंदा है और तेरी ही नाम पर मरेंगे और तेरी ही तरफ उठ कर जाना है”| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (3391 و قال :حسن) و ابوداؤد (5068) و ابن ماجہ (3868)

٢٣٩٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعنهُ قَالَ: قَالَ أَبُو بَكْرٍ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ مُرْنِي بِشَيْءٍ أَقُولُهُ إِذَا أَصْبَحْتُ وَإِذَا أَمْسَيْتُ قَالَ: «قُلِ اللَّهُمَّ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَهُ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ قُلْهُ إِذَا أَصْبَحْتَ وَإِذَا أَمْسَيْتَ وَإِذَا أَخَذْتَ [ص:٧٣ مضجعك» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد والدارمي

2390. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे कोई ऐसा वज़ीफ़ा बताइए जिसे में सुबह व शाम पढ़ा करू, आप ﷺ ने फ़रमाया: “कहो, ऐ अल्लाह! गैब व हाज़िर को जानने वाले ज़मीन व आसमान को पैदा करने वाले हर चीज़ के रब और मालिक, मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं और मैं अपने नफ्स के शर, शैतान के शर और उस के शिर्क से तेरी पनाह चाहता हूँ”, जब तुम सुबह करो जब शाम करो और जब अपने बिस्तर पर आओ यह कलिमात कहा करो”| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (3392 و قال : حسن صحیح) و ابوداؤد (5067) و الدارمی (2 / 292 ح 2692) [و صححہ ابن حبان (2339) و الحاکم (1 / 513) و وافقہ الذھبی]

٢٣٩١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبَانَ بْنِ عُثْمَانَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي يَقُولَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ عَبْدٍ يَقُولُ فِي صَبَاحِ كُلِّ يَوْمٍ وَمَسَاءِ كُلِّ لَيْلَةٍ بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ فَيَضُرَّهُ شَيْءٌ» . فَكَانَ أَبَانُ قَدْ أَصَابَهُ طَرَفُ فَالَجٍ فَجَعَلَ الرَّجُلَ يَنْظُرُ إِلَيْهِ فَقَالَ لَهُ أَبَانُ: مَا تَنْظُرُ إِلَيَّ؟ أَمَا إِنَّ الْحَدِيثَ كَمَا حَدَّثْتُكَ وَلَكِنِّي لَمْ أَقُلْهُ يَوْمَئِذٍ لِيُمْضِيَ اللَّهُ عَلَيَّ قَدَرَهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْن مَاجَه وَأَبُو دَاوُد وَفِي رِوَايَته: «لَمْ تُصِبْهُ فُجَاءَةُ بَلَاءٍ حَتَّى يُصْبِحَ وَمَنْ قَالَهَا حِينَ يُصْبِحُ لَمْ تُصِبْهُ فُجَاءَةُ بَلَاءٍ حَتَّى يُمسيَ»

2391. अबान बिन उस्मान बयान करते हैं, मेंने अपने वालिद उस्मान रदियल्लाहु अन्हु को बयान करते हुए सुना, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो शख़्स हर रोज़ सुबह व शाम तीन तीन मर्तबा यह दुआ पढ़े तो उसे कोई चीज़ तकलीफ नहीं पहुंचाएगी: “ए अल्लाह! के नाम के साथ जिसके नाम के साथ ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ तकलीफ नहीं पहुंचा सकती और वह सुनने वाला जानने वाला है” अबान को लक़वा हो गया तो वह आदमी (जिस को उन्होंने हदीस सुनाई थी, ताज्जुब के साथ) उनकी तरफ देखने लगा तो अबान ने इसे कहा, तुम मेरी तरफ क्या देखते हो? रही हदीस तो वह वैसे ही है जैसे मेंने तुम्हें बयान की है, लेकिन मेंने आज इसे पढ़ा नहीं, ताकि अल्लाह अपने तकदीर मुझ पर नाफ़िज़ कर सके और एक दूसरी रिवायत में है: “इसे सुबह होने तक कोई

नागहानी आफत नहीं आएगी और जो शख़्स सुबह के वक़्त इसे पढ़े तो शाम होने तक इसे कोई नागहानी आफत नहीं आएगी"| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (3388 و قال : حسن غريب صحيح) و ابن ماجه (3869) و ابوداؤد (5088)

٢٣٩٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ إِذَا أَمْسَى: «أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِي هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهَا وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِي هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَمِنْ سُوءِ الْكِبَرِ أَوِ الْكُفْرِ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «مِنْ سُوءِ الْكِبَرِ وَالْكِبْرِ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ وَعَذَابٍ فِي الْقَبْرِ» . وَإِذَا أَصْبَحَ قَالَ ذَلِكَ أَيْضًا: «أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلَّهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَفِي رِوَايَتِهِ لم يذكر: «من سوءِ الكفرِ»

2392. अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ जब शाम करते तो यह दुआ पढ़ा करते थे: "हमने और अल्लाह के मुल्क ने शाम की, हर किस्म की हम्द अल्लाह के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं, उस के लिए बादशाहत है, इसी के लिए हम्द है और वह हर चीज़ पर कादिर है, मेरे रब! में इस रात की बेहतरी और उस के बाद आने वाली रातों की बेहतरी का सवाल करता हूँ और इस रात के शर से और उस के बाद आने वाली रातों के शर से तेरी पनाह चाहता हूँ, मेरे रब! में काहली सुस्ती, बुढ़ापे की खराबी या कुफ्र की खराबी से तेरी पनाह चाहता हूँ", एक और दूसरी रिवायत में है: "मैं बुढ़ापे और तकब्बुर की खराबी से, मेरे रब! में आग के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ", और जब आप सुबह करते तो भी ऐसे ही दुआ करते थे: "हमने और अल्लाह के मुल्क ने सुबह की"| अबू दावुद, तिरमिज़ी, और उनकी रिवायत में: "कुफ्र की खराबी से", के अल्फाज़ मजकूर नहीं| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (5071) و الترمذى (3390 و قال : حسن صحيح) [و مسلم 74 / 2723، (6907)]

٢٣٩٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ بَعْضِ بَنَاتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُعَلِّمُهَا فَيَقُولُ: " قُولِي حِينَ تُصْبِحِينَ: سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ مَا شَاءَ اللَّهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَأَنَّ اللَّهَ [ص:٧٤ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا فَإِنَّهُ مَنْ قَالَهَا حِينَ يُصْبِحُ حُفِظَ حَتَّى يُمْسِيَ وَمَنْ قَالَهَا حِينَ يُمْسِي حُفِظَ حَتَّى يصبح ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2393. नबी ﷺ की किसी लख्ते जिगर से रिवायत है के नबी ﷺ उन्हें दुआ सिखाया करते थे, आप फरमाते: "जब तुम सुबह करो तो यह दुआ पढ़ो, पाक है अल्लाह अपने हम्द के साथ, सारे काम अल्लाह की तौफिक से होते हैं, जो अल्लाह चाहे वह होता है, और जो न चाहे नहीं होता, मैं जानता हूँ कि अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है, और बेशक अल्लाह ने इल्म के ज़रिए हर चिज़ का अहाता कर रखा है", जो शख़्स सुबह के वक़्त यह कलिमात कहे तो

वह शाम तक महफ़ूज़ रहता है और जो शख़्स शाम के वक़्त यह कलिमात कहे तो वह सुबह होने तक महफ़ूज़ रहता है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5075) * سالم الفراء و عبد الحميد مولى بنى هاشم : مستوران لم يو ثقهما غير ابن حبان

٢٣٩٤ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ قَالَ حِينَ يُصْبِحُ: (فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ولهُ الحمدُ فِي السمواتِ والأرضِ وعشيًّاً وحينَ تُظهرون)»» إِلى قَوْله: (وَكَذَلِكَ تُخْرَجونَ)»» أَدْرَكَ مَا فَاتَهُ فِي يَوْمِهِ ذَلِكَ وَمَنْ قَالَهُنَّ حِينَ يُمْسِي أَدْرَكَ مَا فَاتَهُ فِي ليلتِهِ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2394. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' जो शख़्स सुबह के वक़्त यह आयात पढ़े (الروم /30] (فَسُبْحَانَ اللهِ .... وَكَذَالِکَ تُخْرَجُوْنَ [19 17 '' पस तुम अल्लाह की तस्बीह बयान करो, जब शाम हो और जिस वक़्त सुबह हो और आसमानों और ज़मीन में उसकी हम्द है, और इस की तस्बीह करो तीसरे पहर भी और जब दो पहर हो वह जानदार को बेजान से निकालता है, और बेजान को जानदार से बाहर लाता है, और ज़मीन को उस के मुर्दा और खुश्क हो जाने के बाद जिंदा कर देता है, और इसी तरह तुम भी इसी की तरफ निकाले जाओगे", तो इस रोज़ जो उन से नेक अमल छुट गया होगा वह उन कलिमात के कहने से पा लेगा और जो शख़्स यह कलिमात शाम के वक़्त कहेगा तो उन से जो अमल इस रात में रह जाएगा तो वह उन कलिमात के ज़रिए उनका तदराक कर लेगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5076) * سعيد بن بشير النجارى : مجهول ، و محمد بن عبد الرحمن بن البيلمانى : ضعيف

٢٣٩٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي عَيَّاشٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " مَنْ قَالَ إِذَا أَصْبَحَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ كَانَ لَهُ عَدْلُ رَقَبَةٍ مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ وَكُتِبَ لَهُ عَشْرُ حَسَنَاتٍ وَحَطَّ عَنْهُ عَشْرَ سَيِّئَاتٍ وَرفع عَشْرُ دَرَجَاتٍ وَكَانَ فِي حِرْزٍ مِنَ الشَّيْطَانِ حَتَّى يُمْسِيَ وَإِنْ قَالَهَا إِذَا أَمْسَى كَانَ لهُ مثلُ ذَلِك حَتَّى يُصبحَ ". قَالَ حَمَّاد بن سَلمَة: فَرَأَى رَجُلٌ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيمَا يَرَى النَّائِمُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَبَا عَيَّاشٍ يُحَدِّثُ عَنْكَ بِكَذَا وَكَذَا قَالَ: «صَدَقَ أَبُو عَيَّاشٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

2395. अबू अय्याश रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' जो शख़्स सुबह के वक़्त यह दुआ पढ़ता है "ए अल्लाह! के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं, इसी के लिए बादशाहत है, इसी के लिए हर किस्म की हम्द है और वह हर चीज़ पर कादिर है", उस के लिए औलाद ए इस्माइल से दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब है, उस के लिए दस नेकियाँ लिखी जाती है, उन से दस गुनाह मिटा दिए जाते हैं, उस के दस दरजात बुलंद कर दिए जाते हैं और पूरा दिन शाम होने तक उस के लिए शैतान से बचाव और ताहिफ्ज़ हो जाता है, और अगर वह उन्हें शाम के वक़्त पढ़े तो भी उस के लिए इतना ही अज़र है हत्ता कि वह सुबह करे", किसी आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ को ख्वाब में देखा तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह

के रसूल! अबू अय्याश आप से इस तरह हदीस बयान करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: '' अबू अय्याश ने सच कहा"| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (5077) و ابن ماجه (3867)

٢٣٩٦ - (ضَعِيف) وَعَنِ الْحَارِثِ بْنِ مُسْلِمٍ التَّمِيمِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ أَسَرَّ إِلَيْهِ فَقَالَ: «إِذَا انْصَرَفْتَ مِنْ صَلَاةِ الْمَغْرِبِ فَقُلْ قَبْلَ أَنْ تُكَلِّمَ أَحَدًا اللَّهُمَّ أَجِرْنِي مِنَ النَّارِ سَبْعَ مَرَّاتٍ فَإِنَّكَ إِذَا قُلْتَ ذَلِكَ ثُمَّ مِتَّ فِي لَيْلَتِكَ كُتِبَ لَكَ جَوَازٌ مِنْهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

2396. हारिस बिन मुस्लिम तमीमी अपने वालिद से और वह रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने आहिस्तगी से उन से फ़रमाया: "जब तुम नमाज़ ए मग़रिब से फारिग़ हो जाओ तो किसी से बात करने से पहले सात मर्तबा यह दुआ पढ़ो: "ए अल्लाह! मुझे आग से बचा ले", अगर तुमने यह दुआ पढ़ ली और इसी रात फौत हो जाओ तो तुम्हारे लिए इस (आग) से खलासी लिख दी जाएगी, और जब तुम नमाज़ सुबह पढ़ो तो इसी तरह कहो, अगर तुम इसी दिन फौत हो गई तो तुम्हारे लिए इस (आग) से खलासी लिख दी जाएगी"| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (50795080) * الحارث بن مسلم : حسن الحديث على الراجع و ما قبل فى جهالته فليس بجيد

٢٣٩٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: لَمْ يَكُنْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدَعُ هَؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ حِينَ يُمْسِي وَحِينَ يُصْبِحُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي دِينِي وَدُنْيَايَ وَأَهْلِي وَمَالِي اللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِي وَآمِنْ رَوْعَاتِي اللَّهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدِي وَمِنْ خَلْفِي وَعَنْ يَمِينِي وَعَنْ شِمَالِي وَمِنْ فَوْقِي وَأَعُوذُ بِعَظَمَتِكَ أَن أُغتالَ من تحتي» . قَالَ وَكِيع يَعْنِي الْخَسْف رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2397. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ सुबह व शाम यह कलिमात ज़रूर पढ़ा करते थे: "ए अल्लाह! मैं तुझ से दुनिया व आखिरत में आफियत की दरख्वास्त करता हूँ, ऐ अल्लाह! में तुझ से अपने दिन अपने दुनिया और अपने अहल व अयाल और माल में मुआफी और आफियत की दरख्वास्त करता हूँ, ऐ अल्लाह! मेरी परदे वाली बातों पर परदा डाल और मेरे खौफ व हरास को अमन में बदल दे, ऐ अल्लाह! तो मेरे सामने से मेरे पीछे से मेरे दाएँ से मेरे बाएँ से और मेरे ऊपर से मेरी हिफाज़त फरमा और मैं इस बात से की मैं नागहान अपने नीचे से हलाक किया जाऊं, तेरी पनाह चाहता हूँ '' (वकीअ ने कहा) यानी ज़मीन में धंसाया जाऊं| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (5074) [و ابن ماجه (3871) و النسائى (8 / 282 ح 5531 ، 5532 مختصرًا) و صححه ابن حبان (2356) و الحاكم (1 / 517518) و وافقه الذهبى]

٢٣٩٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ قَالَ حِينَ يُصْبِحُ: اللَّهُمَّ أَصْبَحْنَا نُشْهِدُكَ وَنُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَمَلَائِكَتَكَ وَجَمِيعَ خَلْقِكَ أَنَّكَ أَنْتَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ إِلَّا غَفَرَ اللَّهُ لَهُ مَا أَصَابَهُ فِي يَوْمِهِ ذَلِكَ مِنْ ذَنْبٍ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

2398. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो शख़्स सुबह के वक़्त यह दुआ पढ़ता है ’’ अल्लाह हमने सुबह की, हम तुझे, तेरे अर्श को उठाने वाले फरिश्तो, तेरे बाकी फरिश्तो और तेरी तमाम मखलूक को गवाह बना कर कहते हैं के तू अल्लाह है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू यकता है, तेरा कोई शरीक नहीं, और बेशक मुहम्मद (ﷺ तेरे बंदे और तेरे रसूल है”, तो इस रोज़ उस से जो गुनाह सरज़द होगा तो अल्लाह इसे मुआफ़ फरमादेगा और अगर वह यह कलिमात शाम के वक़्त पढ़ेगा तो इस रात उस से जो गुनाह सरज़द होगा, अल्लाह इसे मुआफ़ फरमादेगा”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (3501) و ابوداؤد (5078)

٢٣٩٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يَقُولُ إِذَا أَمْسَى وَإِذَا أَصْبَحَ ثَلَاثًا رَضِيتُ بِاللَّهِ رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا [ص:٧٤ وَبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا إِلَّا كَانَ حَقًّا عَلَى اللَّهِ أَنْ يُرْضِيَهُ يَوْمَ الْقِيَامَة» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

2399. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब कोई मुसलमान आदमी सुबह व शाम तीन मर्तबा कहता है “मैं अल्लाह के रब होने पर, इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद (ﷺ के नबी होने पर राज़ी हूँ” तो फिर अल्लाह पर हक़ है के वह रोज़ ए कियामत इस (शख्स) को राज़ी करे”| (सहीह)

صحیح ، رواہ احمد (لم اجدہ) و الترمذی (3389 و قال : حسن غریب) و لہ شاھد عند ابی داود (5072) و ابن ماجہ (3870) و غیرھما

٢٤٠٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ حُذَيْفَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَنَامَ وَضَعَ يَدَهُ تَحْتَ رَأْسِهِ ثُمَّ قَالَ: «اللَّهُمَّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَجْمَعُ عِبَادَكَ أَوْ تَبْعَثُ عِبَادَكَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2400. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ जब सोने का इरादा फरमाते, तो आप अपने सर के नीचे हाथ रख कर यह दुआ पढ़ा करते थे: “ए अल्लाह! जिस रोज़ तू अपने बंदो को जमा करे यह तो अपने बंदो को (कब्रो से) उठाए तो मुझे अपने अज़ाब से बचाना”| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (3398 و قال : حسن صحیح)

٢٤٠١ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ أَحْمد عَن الْبَرَاء

2401. और इमाम अहमद रहिमहुल्लाह ने बराअ रदियल्लाहु अन्हु से इसे रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (4 / 281 ح 18664 مختصرًا) و الحديث السابق (2400) شاهد له

٢٤٠٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن حَفصةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَرْقُدَ وَضَعَ يَدَهُ الْيُمْنَى تَحْتَ خَدِّهِ ثُمَّ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ قِنِي عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ» . ثَلَاثَ مَرَّاتٍ رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2402. हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ जब सोने का इरादा फरमाते, तो आप अपना दायां हाथ अपने रुखसार के नीचे रखते और तीन बार यह दुआ फरमाते: “ए अल्लाह! तू जिस रोज़ अपने बंदो को उठाएगा इस रोज़ मुझे अपने अज़ाब से बचाना”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (5045)

٢٤٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ عِنْدَ مَضْجَعِهِ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِوَجْهِكَ الْكَرِيمِ وَكَلِمَاتِكَ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا أَنْتَ آخِذٌ بناصيتهِ اللهُمَّ أَنْت تكشِفُ المغرمَ والمأْثم اللهُمَّ لَا يُهْزَمُ جُنْدُكَ وَلَا يُخْلَفُ وَعْدُكَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ سُبْحَانَكَ وَبِحَمْدِكَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2403. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ लेटते वक़्त यह दुआ पढ़ा करते थे: “ए अल्लाह! में तेरे इज्ज़त वाले चेहरे और तेरे कामिल(सर्वोत्तम) कलिमात के ज़रिए हर इस चीज़ के शर से जिस की पेशानी तूने थाम रखी है, पनाह चाहता हूँ, ऐ अल्लाह! तू ही क़र्ज़ और गुनाह दूर करने वाला है, अल्लाह तेरे लश्कर को शिकस्त नहीं की जा सकती, तेरा वादा खिलाफ नहीं होता किसी तवंगर शख़्स की तवंगरी तेरे वहां काम नहीं आ सकती, तू ही अपने हम्द के साथ पाक है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5052) * ابو اسحاق مدلس و عنعن

٢٤٠٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ قَالَ حِينَ يَأْوِي إِلَى فِرَاشِهِ: أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِله إِلا هوَ الحيَّ القيومَ وأتوبُ إِليهِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ غَفَرَ اللَّهُ لَهُ ذُنُوبَهُ وَإِنْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ أَوْ عَدَدَ رَمْلِ عَالَجٍ أَوْ عَدَدَ وَرَقِ الشَّجَرِ أَوْ عَدَدَ أَيَّامِ الدُّنْيَا ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

2404. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो शख़्स अपने बिस्तर पर आए और तीन मर्तबा यह दुआ पढ़े, “मैं अल्लाह से मगफिरत तलब करता हूँ, जिसके सिवा कोई माबूद बरहक़

नहीं, वह जिंदा काइम रखने वाला है और मैं इसी के हुज़ूर तौबा करता हूँ", तो अल्लाह उस के गुनाह मुआफ़ कर देता है, ख्वाँ वह समुन्दर की झाग के बराबर हो, या वादी आलज रेत के जर्रात की तादाद या दरख्तों के पत्तो, या दुनिया के अय्याम के बराबर हो"| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3397) * عطية العوفی : ضعيف مدلس

٢٤٠٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «مَا من مُسْلِمٍ يَأْخُذُ مَضْجَعَهُ بِقِرَاءَةِ سُورَةٍ مِنْ كِتَابِ اللَّهِ إِلَّا وَكَّلَ اللَّهُ بِهِ مَلَكًا فَلَا يَقْرَبُهُ شَيْءٌ يُؤْذِيهِ حَتَّى يَهُبَّ مَتَى هَبَّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2405. शद्दाद बिन अवसी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब कोई मुसलमान लेटते वक़्त कुरान मजीद की कोई सूरत तिलावत करता है, तो अल्लाह उस पर एक फ़रिश्ता मामूर फरमा देता है, तो फिर उस के बेदार होने तक कोई मुज़ी चीज़ उस के करीब नहीं जाती"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3407 ب) * فيه رجل من بنی حنظلة : لم اعرفه

٢٤٠٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَلَّتَانِ لَا يُحْصِيهِمَا رَجُلٌ مُسْلِمٌ إِلَّا دَخَلَ الْجَنَّةَ أَلَا وَهُمَا يَسِيرٌ وَمَنْ يَعْمَلُ بِهِمَا قَلِيلٌ يُسَبِّحُ اللَّهَ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ عَشْرًا وَيَحْمَدُهُ عَشْرًا ويكبّرهُ عَشراً» قَالَ: فَأَنَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعْقِدُهَا بِيَدِهِ قَالَ: «فَتِلْكَ خَمْسُونَ وَمِائَةٌ فِي اللِّسَان وَأَلْفٌ وَخَمْسُمِائَةٍ فِي الْمِيزَانِ وَإِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ يُسَبِّحُهُ وَيُكَبِّرُهُ وَيَحْمَدُهُ مِائَةً فَتِلْكَ مِائَةٌ بِاللِّسَانِ وَأَلْفٌ فِي الْمِيزَانِ فَأَيُّكُمْ يَعْمَلُ فِي الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ أَلْفَيْنِ وَخَمْسَمِائَةِ سَيِّئَةٍ؟» قَالُوا: وَكَيْفَ لَا نُحْصِيهَا؟ قَالَ: " يَأْتِي أَحَدَكُمُ الشَّيْطَانُ وَهُوَ فِي صِلَاتِهِ فَيَقُولُ: اذْكُرْ كَذَا اذْكُرْ كَذَا حَتَّى يَنْفَتِلَ فَلَعَلَّهُ أَنْ لَا يَفْعَلَ وَيَأْتِيهِ فِي مَضْجَعِهِ فَلَا يَزَالُ يُنَوِّمُهُ حَتَّى يَنَامَ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ [ص:٧٤»» وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ قَالَ: «خَصْلَتَانِ أَوْ خَلَّتَانِ لَا يُحَافِظُ عَلَيْهِمَا عَبْدٌ مُسْلِمٌ» . وَكَذَا فِي رِوَايَتِهِ بَعْدَ قَوْلِهِ: «وَأَلْفٌ وَخَمْسُمِائَةٍ فِي الْمِيزَانِ» قَالَ: «وَيُكَبِّرُ أَرْبَعًا وَثَلَاثِينَ إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ» وَيَحْمَدُ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ وَيُسَبِّحُ ثَلَاثًا وَثَلَاثِينَ ". وَفِي أَكْثَرِ نُسَخِ المصابيح عَن: عبد الله بن عمر

2406. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ दो खसलते ऐसी है की जो कोई मुसलमान उनकी हिफाज़त करता है वह जन्नत में दाखिल होगा सुन लो! वह बहोत आसान है, लेकिन उन्हें बजा लाने वाले मुख़्तसर है, हर नमाज़ के बाद दस मर्तबा (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह कहना, दस मर्तबा (اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह कहना और दस मर्तबा (اللّٰهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहना", रावी बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा के आप अपने हाथ से उनकी गिरह लगा रहे थे, फ़रमाया: "ये (पांचो नमाज़ो में) ज़ुबान पर एक सौ पचास है, जबकि मीज़ान में पन्द्रह सौ है, और जब वह लेटते वक़्त (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह, (اللّٰهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर और (اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह की सौ मर्तबा गिनती करे तो यह ज़ुबान पर सौ है जबकि तराज़ू में हज़ार, तुम में से रोज़ाना अढ़ाई हज़ार गुनाह कौन करता है?" सहाबा ने अर्ज़ किया, हम उन (दो खस्लतो) की कैसे हिफाज़त नहीं करेंगे? फ़रमाया: "तुम में से कोई नमाज़ में होता है, शैतान उस के पास

आता है तो कहता है, फलां चीज़ याद करो, फलां चीज़ याद करो, हत्ता कि वह शख़्स नमाज़ से फारिग़ हो जाता है, शायद के वह ऐसे न कर सके और वह उस के लेटने के वक़्त भी उस के पास आता है और वह इसे सुलाता रहता है, हत्ता कि वह सो जाता है”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई, और अबू दावुद की रिवायत में है फ़रमाया: “दो खसलते ऐसी है जिन की मुसलमान बंदा हिफाज़त नहीं करता”, और इसी तरह उसकी रिवायत में है: “मीज़ान में पन्द्रह सौ है ‘‘ कहने के बाद फ़रमाया जब वह अपने बिस्तर पर आए तो वह चोंतिस मर्तबा (اللّٰهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहता है? तेंतीस मर्तबा (اَلْحَمْدُلِلهِ) अल्हम्दुलिल्लाह कहता है और तेंतीस मर्तबा (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह कहता है ‘‘ और मसाबिह के अक्सर नुस्खों में अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (2410 و قال : حسن صحيح) و ابوداؤد (5065) و النسائى (3 / 74 ح 1349) و ذكره البغوى فى مصابيح السنة (2 / 192 ح 1728)

٢٤٠٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ غَنَّامٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: " من قَالَ حِينَ يُصْبِحُ: اللَّهُمَّ مَا أَصْبَحَ بِي مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ فَقَدْ أَدَّى شُكْرَ يَوْمِهِ وَمَنْ قَالَ مِثْلَ ذَلِكَ حِينَ يُمْسِي فَقَدْ أَدَّى شُكْرَ ليلته ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2407. अब्दुल्लाह बिन गन्नाम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो शख़्स सुबह के वक़्त यह दुआ करता है: “ए अल्लाह! जो नेअमत मुझे या तेरी मखलूक में से किसी को मिली है वह सिर्फ तुझ अकेले ही की तरफ से मिली है, तेरा कोई शरीक नहीं, हर किस्म की तारीफ़ और शुक्र तेरी ही लिए है”, वह शख़्स इस रोज़ का शुक्र अदा कर देता है, और जो शख़्स शाम के वक़्त हमें दुआ करता है तो वह इस शाम का शुक्र अदा कर देता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5073) * عبدالله بن عنبسة : لم يو ثقه غير ابن حبان

٢٤٠٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ: «اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَاوَاتِ وَرَبَّ الْأَرْضِ وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَى مُنْزِلَ التوراةِ والإنجيل والقرآنِ أعوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ ذِي شَرٍّ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ أَنْتَ الْأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ اقْضِ عَنِّي الدَّيْنَ وَاغْنِنِي مِنَ الْفَقْرِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَرَوَاهُ مُسلم مَعَ اخْتِلَاف يسير

2408. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की जब आप अपने बिस्तर पर तशरीफ़ लाते तो आप यह दुआ पढ़ा करते थे : (اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَاوَاتِ وَرَبَّ الْأَرْضِ وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَى مُنْزِلَ التوراةِ والإنجيل والقرآنِ أعوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ ذِي شَرٍّ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ أَنْتَ الْأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ اقْضِ عَنِّي الدَّيْنَ وَاغْنِنِي مِنَ الْفَقْرِ) “ए अल्लाह! ज़मीन व आसमान के रब! और हर चीज़ के रब! दाने और गुठली को फाड़ने वाले! तौरात, इन्जील और कुरान नाज़िल

करने वाले! में हर शर वाली चीज़ के शर से जिस की तू पेशानी पकड़े हुए हैं पनाह चाहता हूँ, तू ही अव्वल है तुझ से पहले कोई चीज़ नहीं, तू ही आख़िर है तेरे बाद कोई चीज़ नहीं, तू ही ग़ालिब है तेरे ऊपर कोई चीज़ नहीं,तू ही बातिन है और तुझ से कोई चीज़ पोशीदा नहीं, मुझ से क़र्ज़ दूर कर दे और मुझे फकीरी से गनी कर दे"| अबू दावुद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम मुस्लिम ने थोड़े से इख्तिलाफ के साथ रिवायत किया है| (सहीह,मुस्लिम)

صحيح ، رواه ابوداؤد (5051) و الترمذی (3400 و قال : حسن صحيح) و ابن ماجه (3873) و مسلم (61 / 2713)، (6889)

٢٤٠٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي الْأَزْهَر الأيماري أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ مِنَ اللَّيْلِ قَالَ: «بسمِ اللَّهِ وضعْتُ جَنْبي للَّهِ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي [ص:٧٤ وَاخْسَأْ شَيْطَانِي وَفُكَّ رِهَانِي وَاجْعَلْنِي فِي النَّدِيِّ الْأَعْلَى» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2409. अबू अज़हर अन्मारी रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं रसूलुल्लाह ﷺ जब अपने बिस्तर पर लेट जाते तो यह दुआ पढ़ते थे: "ए अल्लाह! के नाम के साथ मैंने अपना पहलू अल्लाह के लिए (बिस्तर पर) लगाया, ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह मुआफ़ कर दे, मेरे शैतान को ज़लील कर दे, मुझे तमाम हुकुक से आज़ाद कर दे और मुझे मजलिस आअला में शामिल फरमा"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (5054) [و صححه الحاكم (1 / 540) و وافقه الذهبی]

٢٤١٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ مِنَ اللَّيْلِ قَالَ: «الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي كَفَانِي وَآوَانِي وَأَطْعَمَنِي وَسَقَانِي وَالَّذِي مَنَّ عَلَيَّ فَأَفْضَلَ وَالَّذِي أَعْطَانِي فَأَجْزَلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ اللَّهُمَّ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَهُ وَإِلَهَ كُلِّ شَيْءٍ أَعُوذُ بِكَ مِنَ النَّارِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2410. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ जब अपने बिस्तर पर तशरीफ़ लाते तो यह दुआ पढ़ते: "हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे किफ़ायत किया, मुझे ठिकाना अता किया, मुझे खिलाया पिलाया, जिस ने मुझ पर अनगिनत इनाम व इहसान किया, जिस ने मुझे अता फ़रमाया तो बहोत अता फ़रमाया, हर हाल में अल्लाह का शुक्र है, अल्लाह हर चीज़ के रब और उस के मालिक, बादशाह और हर चीज़ के माबूद में जहन्नम से तेरी पनाह चाहता हूँ"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (5058)

٢٤١١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ: شَكَا خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ يَا رَسُول الله مَا أَنَام من اللَّيْلَ مِنَ الْأَرَقِ فَقَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا أَوَيْتَ إِلَى فِرَاشِكَ فَقُلْ: اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ وَمَا

أَظَلَّتْ وَرَبَّ الْأَرَضِينَ وَمَا أَقَلَّتْ وَرَبَّ الشَّيَاطِينِ وَمَا أَضَلَّتْ كُنْ لِي جَارًا مِنْ شَرِّ خَلْقِكَ كُلِّهِمْ جَمِيعًا أَنْ يَفْرُطَ عَلَيَّ أَحَدٌ مِنْهُمْ أَوْ أَنْ يَبْغِيَ عَزَّ جَارُكَ وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ هَذَا حَدِيثٌ لَيْسَ إِسْنَادُهُ بِالْقَوِيِّ والحكَمُ بن ظُهيرٍ الرَّاوِي قد ترَكَ حديثَهُ بعضُ أهل الحَدِيث

2411. बुरैदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु अन्हु ने नबी ﷺ से शिकायत करते हुए अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! में बेख्वाबी की वजह से पूरी रात नहीं सोता, नबी ﷺ ने फ़रमाया: '' जब तुम अपने बिस्तर पर आओ तो यह दुआ पढ़ो: "ए अल्लाह! सातों आसमानों और जिन चीजों पर उन्होंने साया किया है उन के रब! ज़मीनों और जिन चीजों को उन्होंने उठा रखा है इन के रब! शैतान और जिन को उन्होंने गुमराह किया है उन के रब! अपने सारी मखलूक के शर से, यह कि उनमें से कोई मुझ पर ज़्यादती करे, मुझे पनाह देने वाला हो जा, तुझ से पनाह लेने वाला ग़ालिब आता है, तेरी सना व तारीफ़ बहोत ज़्यादा हैं, और तेरे सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं"| तिरमिज़ी, और फ़रमाया इस रिवायत की इसनाद क़वी नहीं, हुक्म बिन ज़ुहरी रावी की अहादीस को बाज़ मुहद्दीसिन ने तर्क किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه الترمذی (3523) * الحکم بن ظهير : رمی بالرفض و اتهمه ابن معين

بَابُ مَا يَقُولُ عِنْدَ الصَّبَاحِ وَالْمَسَاءِ وَالْمَنَامِ • सुबह व शाम और सोते वक़्त के अज्कार का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِثُ • तीसरी फस्ल

٢٤١٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي مَالك أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِذَا أَصْبَحَ أَحَدُكُمْ فَلْيَقُلْ: أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذَا الْيَوْمِ فَتْحَهُ وَنَصْرَهُ وَنُورَهُ وَبَرَكَتَهُ وَهُدَاهُ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيهِ وَمِنْ شَرِّ مَا بَعْدَهُ ثُمَّ إِذَا أَمْسَى فَلْيَقُلْ مِثْلَ ذَلِكَ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2412. अबू मालिक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' जब तुम में से कोई सुबह करे तो यह दुआ करे: "हमने और तमाम जहानों के परवरदिगार के मुल्क ने सुबह की, ऐ अल्लाह! में तु इसे इस दीन की फतह व नुसरत, उसकी रोशनी व बरकत और उसकी हिदायत का सवाल करता हूँ और इस दिन के और उस के बाद वाले दिनों के शर से तेरी पनाह चाहता हूँ", फिर जब शाम करे तो भी इसी तरह दुआ पढ़े"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5084) * شريح بن عبيد عن ابی مالک الاشعری : مرسل ، قاله ابو حاتم الرازی (المراسيل ص 90)

٢٤١٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: قُلْتُ لِأَبِي: يَا أَبَتِ أَسْمَعُكَ تَقُولُ كُلَّ غَدَاةٍ: «اللَّهُمَّ عَافِنِي

فِي بَدَنِي اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي سَمْعِي اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَصَرِي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ» تُكَرِّرُهَا ثَلَاثًا حِينَ تُصْبِحُ وَثَلَاثًا حِين تمسي فَقَالَ: يَا بُنَيَّ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدْعُو بِهِنَّ فَأَنَا أُحِبُّ أَنْ أستن بسننه. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2413. अब्दुल रहमान बिन अबू बकरह बयान करते हैं, मेंने अपने वालिद से कहा अब्बा जान में आप को हर रोज़ यह दुआ पढ़ते हुए सुनता हूँ: "ए अल्लाह! मुझे मेरे बदन में आफियत दे, ऐ अल्लाह! मुझे मेरे कानों में आफियत दे, ऐ अल्लाह! मुझे मेरी आंखो में आफियत दे, तेरे सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं", आप सुबह व शाम तीन तीन मर्तबा उन्हें पढ़ते है, तो उन्होंने ने फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को उन कलिमात के ज़रिए दुआ करते हुए सुना है, लिहाज़ा में आप ﷺ की सुन्नत की इक्तेदा करना चाहता हूँ| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5090) * جعفر بن ميمون : ضعيف ، ضعفه الجمهور

٢٤١٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدُ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَصْبَحَ قَالَ: «أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَالْكِبْرِيَاءُ وَالْعَظَمَةُ لِلَّهِ وَالْخَلْقُ وَالْأَمْرُ وَاللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَمَا سَكَنَ فِيهِمَا لِلَّهِ اللَّهُمَّ اجْعَلْ أَوَّلَ هَذَا النَّهَارِ صَلَاحًا وَأَوْسَطَهُ نَجَاحًا وَآخِرَهُ فَلَاحًا يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ» . ذَكَرَهُ النَّوَوِيُّ فِي كِتَابِ الْأَذْكَارِ بِرِوَايَةِ ابْنِ السّني

2414. अब्दुल्लाह बिन अबी अव्फी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ सुबह करते तो यह दुआ पढ़ा करते थे: "हमने और अल्लाह के मुल्क ने सुबह की, हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है, किब्रियाई व अज़मत अल्लाह के लिए है, खल्क व अम्र, लैल व निहार और जो चीज़े उनमें है, अल्लाह के लिए है, ऐ अल्लाह! इस दिन के अव्वल हिस्से को सलाह बना दे, उस के बिच को नजाह और आख़िर को फलाह बना दे, ए सबसे ज़्यादा रहम करने वाले", इमाम नववी ने इब्ने अल सुन्नी की रिवायत से इसे किताबुल अज़कार में रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، ذكر النووى فى الاذكار (ص77 و بتحقيق الشيخ سليم الهلالى حفظه الله 1 / 211212 ح 221) و رواه ابن السنى فى عمل اليوم و الليلة (38) * فيه فايد ابو الورقاء وهو متروک متهم

٢٤١٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبْزَى قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ إِذَا [ص:٧٤ أَصْبَحَ: «أَصْبَحْنَا عَلَى فِطْرَةِ الْإِسْلَامِ وَكَلِمَةِ الْإِخْلَاصِ وَعَلَى دِينِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَى مِلَّةِ أَبِينَا إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالدَّارِمِيُّ

2415. अब्दुल रहमान बिन अब्ज़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जब सुबह करते तो यह दुआ किया करते थे: "हमने फितरते इस्लाम, कलिमा ए इखलास, अपने नबी मुहम्मद ﷺ के दीन और अपने बाप इब्राहीम जो के यक्सू थे, मुशरिकीन में से नहीं थे की मिल्लत पर सुबह की"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (3 / 406 ح 15434 و سنده حسن) و الدارمى (2 / 292 ح 2692 فى سنده تدليس)

मुख्तलिफ अवकात के वक़्त की दुआओं का बयान • بَاب الدَّعْوَات فِي الْأَوْقَاتِ

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٤١٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَأْتِيَ أَهْلَهُ قَالَ: بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا فَإِنَّهُ إِنْ يُقَدَّرْ بَيْنَهُمَا وَلَدٌ فِي ذَلِكَ لَمْ يَضُرَّهُ شَيْطَانٌ أَبَدًا "

2416. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' अगर तुम में से कोई शख़्स अपनी अहलिया से जिमाअ करने से पहले यह दुआ पढ़ ले: "ए अल्लाह! के नाम के साथ ऐ अल्लाह! हमें और जो (औलाद) तू हमें अता फरमाए इसे शैतान से बचा", तो अगर इस वक़्त उन के लिए बच्चा मुकद्दर कर दिया गया तो शैतान इसे कभी नुकसान नहीं पहुंचा सकता"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3271 ، 3283) و مسلم (116 / 1434)، (3533)

٢٤١٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ عِنْدَ الْكَرْبِ: «لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَرَبُّ الْأَرْضِ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيم»

2417. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ कर जो तकलीफ के वक़्त यह दुआ पढ़ा करते थे: "ए अल्लाह! अज़ीम व हलिम के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, और अर्श ए अज़ीम के रब के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, आसमानों के ज़मीन के और अर्श ए करीम के रब के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6345) و مسلم (83 / 2730)، (6921)

٢٤١٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ صُرَدَ قَالَ: اسْتَبَّ رَجُلَانِ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ عِنْدَهُ جُلُوسٌ وَأَحَدُهُمَا يَسُبُّ صَاحِبَهُ مُغْضَبًا قَدِ احْمَرَّ وَجْهُهُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنِّي لَأَعْلَمُ كَلِمَةً لَوْ قَالَهَا لَذَهَبَ عَنْهُ مَا يَجِدُ أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ» . فَقَالُوا لِلرَّجُلِ: لَا تَسْمَعُ مَا يَقُولُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: إِنِّي لستُ بمجنون

2418. सुलेमान बिन सूरद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, दो आदमी नबी ﷺ की मौजूदगी में गाली गलोच करने लगे जबकि हम आप के पास बैठें हुए थे, और उनमें से एक सख्त गुस्से की हालत में दूसरे को गाली दे रहा

था और उस का चेहरा सुर्ख हो चूका था, नबी ﷺ ने फ़रमाया: ’’ में एक ऐसा कलिमा जानता हो अगर वह इस कलिमा को पढ़ो ले तो उस का गुस्से ख़तम हो जाएगा, वह कलिमा यह है: “मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ”, सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम ने इस आदमी से कहा, क्या तुम नबी ﷺ की बात नहीं सुन रहे? उस ने कहा में दीवाना नहीं हूँ| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6115) و مسلم (109 / 2610)، (6646)

٢٤١٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا سَمِعْتُمْ صِيَاحَ [ص:٧٤ الدِّيَكَةِ فَسَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ فَإِنَّهَا رَأَتْ مَلَكًا وَإِذَا سَمِعْتُمْ نَهِيقَ الْحِمَارِ فَتَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ فَإِنَّهُ رَأَى شَيْطَانا»

2419. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब तुम मुर्गे की आवाज़ सुनो तो अल्लाह से उस का फ़ज़्ल तलब करो क्योंकि उस ने फ़रिश्ता देखा है, और जब तुम गधे की आवाज़ सुनो तो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह तलब करो क्योंकि उस ने शैतान देखा है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3303) و مسلم (82 / 2729)، (6920)

٢٤٢٠ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا اسْتَوَى عَلَى بَعِيرِهِ خَارِجًا إِلَى السَّفَرِ كَبَّرَ ثَلَاثًا ثُمَّ قَالَ: (سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ)»» اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ فِي سَفَرِنَا هَذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوَى وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضَى اللَّهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هَذَا وَاطْوِ لَنَا بُعْدَهُ اللَّهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ وَالْخَلِيفَةُ فِي الْأَهْلِ وَالْمَالِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ والأهلِ ". وإِذا رجعَ قالَهنَّ وزادَ فيهِنَّ: «آيِبُونَ تائِبُونَ عابِدُونَ لربِّنا حامدون» . رَوَاهُ مُسلم

2420. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ जब सफ़र पर रवाना होने के लिए अपने ऊंट पर सवार हो जाते तो आप तीन बार (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते फिर यह दुआ पढ़ते: “पाक है वह ज़ात जिस ने हमारे लिए इसे ताबे कर दिया, जबकि हम उस पर ताकत व कुदरत नहीं रखते थे, ऐ अल्लाह! हम इस सफ़र में तुझ से नेकी व तक़्वा और ऐसे अमल का सवाल करते हैं जिसे तू पसंद फरमाए, ऐ अल्लाह! यह सफ़र हम पर आसान कर दे, और उसकी दूरी (लम्बी मुसाफ़त को हमारे लिए) लपेट (कर क़रीब) दे, ऐ अल्लाह! इस सफ़ में तू ही हमारा साथी हैं और घर में नाइब है, अल्लाह में सफ़र की शिद्दत, मशक्क़त, तकलीफदेह मंजर और अहल व माल में बुरी वापसी से तेरी पनाह चाहता हूँ”, और जब आप ﷺ वापस आते तो यही दुआ पढ़ते और उस के साथ यह इज़ाफा फरमाते: “वापिस लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं, अपने रब की हम्द करने वाले हैं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (425 / 1342)، (3275)

٢٤٢١ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَرْجِسَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سَافَرَ يَتَعَوَّذُ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَالْحَوْرِ بَعْدَ الْكَوْرِ وَدَعْوَةِ الْمَظْلُومِ وَسُوءِ الْمَنْظَرِ فِي الْأَهْلِ وَالْمَالِ. رَوَاهُ مُسلم

2421. अब्दुल्लाह बिन सरजिस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ सफ़र करते तो आप सफ़र की शिद्दत मशक्क़त, बुरी वापिसी, नफा के बाद नुक्सान, मज़लूम की बद्दुआ और अहल व माल में बुरे मंजर से पनाह तलब किया करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (426 / 1343)، (3276)

٢٤٢٢ - (صَحِيح) وَعَن خَوْلَةَ بِنْتِ حَكِيمٍ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " مَنْ نَزَلَ مَنْزِلًا فَقَالَ: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ لَمْ يَضُرَّهُ شَيْءٌ حَتَّى يرحل من منزله ذَلِك ". رَوَاهُ مُسلم

2422. खवलत बिन्ते हकिम रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स किसी जगह पड़ाव डाले और यह दुआ पढ़े: “मेंने अल्लाह के कामिल(सर्वोत्तम) कलिमात के ज़रिए हर इस चीज़ के शर से जो उस ने पैदा की पनाह चाहता हूँ”, तो जब तक वह इस जगह कयाम पज़ीर रहता है कोई चीज़ इसे नुकसान नहीं पहुंचाती”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (54 / 2708)، (6878)

٢٤٢٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا لَقِيتُ مِنْ عَقْرَبٍ لَدَغَتْنِي الْبَارِحَةَ قَالَ: " أَمَا لَوْ قُلْتَ حِينَ أَمْسَيْتَ: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خلق لم تَضُرك ". رَوَاهُ مُسلم

2423. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आया तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! गुज़िश्ता रात बिच्छु के काटने से मुझे बहोत तकलीफ हुई, आप ﷺ ने फ़रमाया: ” सुन लो! अगर तुमने शाम के वक़्त यूँ कहा होता: “मैं अल्लाह के कामिल(सर्वोत्तम) कलिमात के ज़रिए इस चीज़ के शर से जो उस ने पैदा फरमाई पनाह चाहता हूँ तो वह तुम्हें नुकसान न पहुंचाता”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (55 / 2709)، (6880)

٢٤٢٤ - (صَحِيح) وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا كَانَ فِي سَفَرٍ وَأَسْحَرَ يَقُولُ: «سمع سامع يحمد الله وَحسن بلائه علينا وربنا صَاحِبْنَا وَأَفْضِلْ عَلَيْنَا عَائِذًا بِاللَّهِ مِنَ النَّارِ» . رَوَاهُ مُسلم

2424. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ जब सफ़र में होते और सहरी का वक़्त होता तो आप ﷺ फरमाते: “सुनने वाले ने सुन लिया के हमने अल्लाह की हम्द बयान की, उसकी नेअमतें हम पर अच्छी

हैं हमारे रब हमारी इआनत फरमा और हम पर मज़ीद इहसानात फरमा हम जहन्नम से अल्लाह की पनाह चाहते है"। (मुस्लिम)

رواه مسلم (68 / 2718)، (6900)

٢٤٢٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَفَلَ مِنْ غَزْوٍ أَوْ حَجٍّ أَوْ عُمْرَةٍ يُكَبِّرُ عَلَى كُلِّ شَرَفٍ مِنَ الْأَرْضِ ثَلَاثَ تَكْبِيرَاتٍ ثُمَّ يَقُولُ: «لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كلِّ شيءٍ قديرٌ آيِبونَ تَائِبُونَ عَابِدُونَ سَاجِدُونَ لِرَبِّنَا حَامِدُونَ صَدَقَ اللَّهُ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ»

2425. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ किसी गज़वा या हज या उमरा से वापस तशरीफ़ लाते तो आप हर बुलंद जगह पर तीन मर्तबा (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते, फिर फरमाते अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं, इसी के लिए बादशाहत है और इसी के लिए हम्द है और वह हर चीज़ पर कादिर है, वापस लौटने वाले, तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, सजदाह करने वाले, अपने रब की हम्द बयान करने वाले हैं, अल्लाह ने अपना वादा सच कर दिखाया, अपने बंदे की नुसरत फरमाई और इस अकेले ने लश्करो को शिकस्त दी"। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1797) و مسلم (428 / 1344)، (3278)

٢٤٢٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدُ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى قَالَ: دَعَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الْأَحْزَابِ عَلَى الْمُشْرِكِينَ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ سَرِيعَ الْحِسَابِ اللَّهُمَّ اهْزِمِ الأحزابَ اللهُمَّ اهزمهم وزلزلهم»

2426. अब्दुल्लाह बिन अबी अव्फी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने गज़वा अहज़ाब के मौके पर मुशरिकीन के खिलाफ दुआ की तो अर्ज़ किया,: "ए अल्लाह! किताब उतारने वाले, जल्द हिसाब लेने वाले, ऐ अल्लाह! लश्करो को शिकस्त दे, ऐ अल्लाह! उन्हें खूब शिकस्त दे और उन्हें हिला कर रख दे"। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2933) و مسلم (21 / 1742)، (4543)

٢٤٢٧ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن يسر قَالَ: نَزَلَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أَبِي فَقَرَّبْنَا إِلَيْهِ طَعَامًا وَوَطْبَةً فَأَكَلَ مِنْهَا ثُمَّ أُتِيَ بِتَمْرٍ فَكَانَ يَأْكُلُهُ وَيُلْقِي النَّوَى بَيْنَ أُصْبُعَيْهِ وَيَجْمَعُ السَّبَّابَةَ وَالْوُسْطَى وَفِي رِوَايَةٍ: فَجَعَلَ يُلْقِي النَّوَى عَلَى ظَهْرِ أُصْبُعَيْهِ السَّبَّابَةِ وَالْوُسْطَى ثُمَّ أُتِيَ بِشَرَابٍ فَشَرِبَهُ فَقَالَ أَبِي وَأَخَذَ بِلِجَامِ دَابَّتِهِ: [ص:٧٥ ادْعُ اللَّهَ لَنَا فَقَالَ: «اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيمَا رَزَقْتَهُمْ واغفرْ لَهُم وارحمهم» . رَوَاهُ مُسلم

2427. अब्दुल्लाह बिन बुसरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मेरे वालिद के पास तशरीफ़ लाए

तो हमने खाना और खजूर, घी और पनीर से तैयार करदा हलवा आप ﷺ की खिदमत में पेश किया तो आप ने उस से तनावुल फ़रमाया, फिर खजूरे पेश की गई तो आप उन्हें खाते और गुठलिया अपने दो उंगलियों के दरमियान फेंकते जाते, आप अन्गुंश्ते शहादत और दरमियानी ऊँगली इकट्ठी करते थे, और एक दूसरी रिवायत में है, आप गुठलिया अपने दोनों उंगलियों, अन्गुंश्ते शहादत और दरमियानी ऊँगली की पुश्त पर फेंक रहे थे, फिर पानी पेश किया गया तो आप ने इसे नोश फ़रमाया, फिर मेरे वालिद ने आप की सवारी की लगाम पकड़ते हुए अर्ज़ किया, हमारे लिए अल्लाह से दुआ फरमाइए, तो आप ﷺ ने दुआ फरमाई: “ए अल्लाह! तूने जो कुछ उन्हें अता किया है उस में बरकत फरमा, इनकी मगफिरत फरमा और इन पर रहम फरमा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (146 / 2042)، (5328)

मुख्तलिफ अवकात के वक़्त की दुआओं का बयान • بَاب الدَّعْوَات فِي الْأَوْقَاف

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٢٤٢٨ - (لم تتمّ دراسته) عَن طلحةَ بنِ عبيدِ اللَّهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا رَأَى الْهِلَالَ قَالَ: «اللَّهُمَّ أَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْأَمْنِ وَالْإِيمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْإِسْلَامِ رَبِّي وَرَبُّكَ اللَّهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

2428. तल्हा बिन उबैदुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ जब चाँद देखते तो आप यह दुआ पढ़ते थे: “ए अल्लाह! तो उसे अमन व ईमान और सलामती व इस्लाम के साथ हम पर तुलुअ फरमा (ए चाँद!) मेरा और तेरा रब अल्लाह है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3451) * سليمان بن سفيان المدينى ضعيف ، و بلال بن يحيى بن طلحة : لين و للحديث شواهد ضعيفة

٢٤٢٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ وَأَبِي هُرَيْرَةَ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَا مِنْ رَجُلٍ رَأَى مُبْتَلًى فَقَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهِ وَفَضَّلَنِي عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيلًا إِلَّا لَمْ يُصِبْهُ ذَلِكَ الْبَلَاءُ كَائِنا مَا كَانَ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2429. उमर बिन ख़िताब रदियल्लाहु अन्हु और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो शख़्स किसी मुसीबत ज़दाह शख़्स को देख कर यह दुआ पढ़ता है, “हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे इस चीज़ से आफियत दी जिस में तुझे मुब्तिला किया है, और उस ने मुझे अपने बहोत सी

मखलूक पर बहोत ज़्यादा फ़ज़ीलत दी”, तो उसे वह मुसीबत बीमारी नहीं पहुंचेगी ख्वाह वह कोई भी हो”| (ज़ईफ़,हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3431 وقال : غریب) و سندہ ضعیف ، فیه عمرو بن دینار قهر مان آل الزبیر ضعیف و روی البزار (البحر الزخار 12 / 185 ح 8538) بسند حسن و الطبرانی (الاوسط : 5320) عن ابن عمر قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم :‘‘ من رای مصابًا فقال : الحمدلله الذی عافانی مما ابتلاک به و فضلنی علی کثیر ممن خلق تفصیلا ، لم یصبه ذلک البلاء ابدًا’’ و حسنه ابن القطان الفاسی فی احکام النظر (ص 421)

٢٤٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنِ ابْنِ عُمَرَ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَعَمْرُو بْنُ دِينَارٍ الرَّاوِي لَيْسَ بِالْقَوِيّ

2430. इब्ने माजा ने अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से इसे रिवायत किया है और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| और अम्र बिन दीनार रावी क़वी नहीं| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (3892)

٢٤٣١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " مَنْ دَخَلَ السُّوقَ فَقَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ كَتَبَ اللَّهُ لَهُ أَلْفَ أَلْفَ حَسَنَةٍ وَمَحَا عَنْهُ أَلْفَ أَلْفَ سَيِّئَةٍ وَرَفَعَ لَهُ أَلْفَ أَلْفَ دَرَجَةٍ وَبَنَى لَهُ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَفِي شَرْحِ السُّنَّةِ: «مَنْ قَالَ فِي سُوقٍ جَامِعٍ يباعُ فِيهِ» بدل «من دخل السُّوق»

2431. उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो शख़्स बाज़ार में दाखिल होते वक़्त यह दुआ पढ़ता है, “ए अल्लाह! के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं, इसी के लिए बादशाहत और हम्द है, वही जिंदा करता है और मारता है, वह जिंदा है कभी मरेगा नहीं, हर किस्म की खैर भलाई इसी के हाथ में है, और वह हर चीज़ पर कादिर है”, तो अल्लाह उस के लिए दस लाख नेकियाँ लिख लेता है, उसकी दस लाख खताए मुआफ़ कर देता है, उस के दस लाख दरजात बुलंद कर देता है और उस के लिए जन्नत में एक घर बना देता है”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| और शरह सुन्ना में ’’ जो शख़्स बाज़ार में जाए ‘‘ के अल्फाज़ के बजाए ’’ जिस ने किसी बड़े तिजारती मरकज़ में यह दुआ पढ़ी”, के अल्फाज़ हैं| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذئی (3428) و ابن ماجه (2235) و البغوی فی شرح السنة (5 / 132 ح 1338) * فیه عمرو بن دینار قهر مان آل الزبیر : ضعیف و للحدیث شواهد ضعیفة و اخطا من صححه بتلک الشواهد الضعیفة

٢٤٣٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: سَمِعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلًا يَدْعُو يَقُولُ: اللهُمَّ إِني أسألكَ

تمامَ النعمةِ فقَالَ: «أيُّ شَيْءٍ تَمَامُ النِّعْمَةِ؟» قَالَ: دَعْوَةٌ أَرْجُو بِهَا خَيْرًا فقَالَ: «إِنَّ مِنْ تَمَامِ النِّعْمَةِ دُخُولَ الْجَنَّةِ وَالْفَوْزَ مِنَ النَّارِ» . وَسَمِعَ رَجُلًا يَقُولُ: يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ فَقَالَ: «قَدِ اسْتُجِيبَ لَكَ فَسَلْ» . وَسَمِعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلًا وَهُوَ يَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الصَّبْرَ فَقَالَ: «سَأَلْتَ اللَّهَ الْبَلَاءَ فَاسْأَلْهُ الْعَافِيَةَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2432. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने एक आदमी को उन अल्फाज़ के साथ दुआ करते हुए सुना: “ए अल्लाह! में तुझ से इत्माम नेअमत का सवाल करता हूँ”, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ कौन सी चीज़ इत्माम नेअमत है ‘‘ उस ने कहा दुआ जिसके ज़रिए में खैर (माल ए कसीर) की उम्मीद करता हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इतमामे नेअमत तो जन्नत में दाखिला और जहन्नम से खलासी है”, और आप ने किसी दूसरे आदमी को दुआ करते हुए सुना: “ए जलाल इकराम वाले! तो आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ तुम्हारी दुआ कबूल हो गई, अब सवाल करो”, इसी तरह नबी ﷺ ने एक आदमी को दुआ करते हुए सुना: “अल्लाह! में तुझ से सब्र का सवाल करता हूँ”, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ तुमने अल्लाह से मुसीबत मांगी है, उस से आफियत का सवाल करो”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3527)

٢٤٣٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ جَلَسَ مَجْلِسًا فَكَثُرَ فِيهِ لَغَطُهُ فَقَالَ قَبْلَ أَنْ يَقُومَ: سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ إِلَّا غُفِرَ لَهُ مَا كَانَ فِي مَجْلِسِهِ ذَلِكَ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالْبَيْهَقِيّ فِي الدَّعْوَات الْكَبِير

2433. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो शख़्स किसी मजलिस में बैठें और इस की बेमकसद और बेहूदा बाते ज़्यादा हो जाए और फिर वह उठने से पहले यह दुआ: “ए अल्लाह! तू अपने हम्द के साथ पाक है, मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, मैं तुझ से मगफिरत तलब करता हूँ और तेरे हुज़ूर तौबा करता हूँ”, पढ़ता है तो उसकी इस मजलिस में होने वाली खताए मुआफ़ कर दी जाती है”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (3433 و قال : حسن صحیح)و البیهقی فی الدعوات الکبیر (لم اجده و رواه فی شعب الایمان : 628)

٢٤٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ: أَنَّهُ أَتِيَ بِدَابَّةٍ لِيَرْكَبَهَا فَلَمَّا وضَعَ رِجْلَه فِي الركابِ قَالَ: بسمِ اللَّهِ فَلَمَّا اسْتَوَى عَلَى ظَهْرِهَا قَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ ثُمَّ قَالَ: (سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَى رَبنَا لمنُقلِبون)»» ثُمَّ قَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ ثَلَاثًا وَاللَّهُ أَكْبَرُ ثَلَاثًا سُبْحَانَكَ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ ثُمَّ ضَحِكَ فَقِيلَ: مِنْ أَيِّ شَيْءٍ ضَحِكْتَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ؟ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَنَعَ كَمَا صَنَعْتُ ثُمَّ ضَحِكَ فَقُلْتُ: مِنْ أَيِّ شَيْءٍ ضَحِكْتَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: " إِنَّ رَبَّكَ لَيَعْجَبُ مِنْ عَبْدِهِ إِذَا قَالَ: رَبِّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي يَقُولُ: يَعْلَمُ [ص:٧٥ أَنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ غَيْرِي " رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

2434. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उनकी सवारी के लिए एक जानवर लाया गया, जब उन्होंने रकाब में पाँव रखा तो कहा: “बिस्मिल्लाह (بسم الله)”, जब उसकी पुश्त पर बेथ गए तो कहा: “(اَلْحَمْدُلِلہِ) अल्हम्दुलिल्लाह”, फिर फ़रमाया: “पाक है वह ज़ात जिस ने इसे हमारे ताबेअ कर दीया जबकि हम तो उसकी कुदरत नहीं रखते थे, और बेशक हम अपने रब की तरफ पलट कर जाने वाले हैं”, फिर उन्होंने तीन मर्तबा ’’ (اَلْحَمْدُلِلہِ) अल्हम्दुलिल्लाह ‘‘ तीन मर्तबा ’’ (اَللّٰهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर ‘‘ कहा फिर कहा: “पाक है तू, मैंने ही अपने जान पर ज़ुल्म किया, पस मुझे बख्श दे, क्योंकि तेरे सिवा कोई गुनाह नहीं बख्शता ”, फिर वह मुस्कुराए, उन से पूछा गया, अमीर अल मोमिनीन! आप किस चीज़ से मुस्कुराए है? उन्होंने ने फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इस तरह करते हुए देखा जिस तरह मेंने किया, फिर आप मुस्कुराए तो मेंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप किस चीज़ से मुस्कुराए है? आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ तेरा रब अपने इस बंदे से बहोत खुश होता है जब वह कहता है, “मेरे रब मेरे गुनाह मुआफ़ कर दे”, रब तआला फरमाता है, वह जानता है के मेरे सिवा कोई और गुनाह मुआफ़ नहीं करता”| (सहीह)

صحیح ، رواہ احمد (1 / 97 ح 753) و الترمذی (3446 و قال : غریب) و ابوداؤد (2602)

٢٤٣٥ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا وَدَّعَ رَجُلًا أَخَذَ بِيَدِهِ فَلَا يَدَعُهَا حَتَّى يَكُونَ الرَّجُلُ هُوَ يَدَعُ يَدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيَقُولُ: «أَسْتَوْدِعُ اللَّهَ دِينَكَ وَأَمَانَتَكَ وَآخِرَ عَمَلِكَ» وَفِي رِوَايَةٍ «خَوَاتِيمِ عَمَلِكَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَفِي روايتهما لم يذكر: «وَآخر عَمَلك»

2435. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब नबी ﷺ किसी शख़्स को अल विदा करते तो आप उस का हाथ थामे रखते हत्ता कि वह आदमी खुद नबी ﷺ का हाथ छोड़ देता, और आप ﷺ यह दुआ पढ़ते: “मैं तुम्हारे दीन, तुम्हारी अमानत और तुम्हारे आखिरी अमल को अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ ‘‘ और एक रिवायत में है: “तेरे अमलो के खात्मे को”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, इब्ने माजा और इन दोनों अबू दावुद, इब्ने माजा की रिवायत में (وَآخِرَ عَمَلِکَ) का ज़िक्र नहीं किया गया| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (3443 و قال : حسن صحیح) و ابوداؤد (2600) و ابن ماجہ (2866)

٢٤٣٦ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ الْخَطْمِيِّ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَسْتَوْدِعَ الْجَيْشَ قَالَ: «أَسْتَوْدِعُ اللَّهَ دِينَكُمْ وأمانتكم وخواتيم أعمالكُم» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2436. अब्दुल्लाह खतमी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ लश्कर रवाना करने का इरादा फरमाते, तो यूँ दुआ फरमाते: “मैं तुम्हारे दीन तुम्हारी अमानतों और तुम्हारे आखिरी आमाल को अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ”| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ ابوداؤد (2601)

٢٤٣٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أُرِيدُ سَفَرًا فَزَوِّدْنِي فَقَالَ: «زَوَّدَكَ اللَّهُ التَّقْوَى» . قَالَ: زِدْنِي قَالَ: «وَغَفَرَ ذَنْبَكَ» قَالَ: زِدْنِي بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي قَالَ: «وَيَسَّرَ لكَ الْخَيْر حيثُما كُنْتَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

2437. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! में सफ़र का इरादा रखता हूँ आप मुझे रसद (राशन) अता फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: ” अल्लाह तुम्हें तक़्वा का रसद (राशन) अता फरमाए”, उस ने अर्ज़ किया, कुछ ज़्यादा फरमाइए आप ﷺ ने फ़रमाया: ” वह तुम्हारे गुनाह बख्श दे”, उस ने अर्ज़ किया, मेरे वालिदेन आप पर कुरबान हो ज़्यादा फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: ” तुम जहाँ भी हो अल्लाह तुम्हारे लिए खैर भलाई आसान फरमादे”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3444)

٢٤٣٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: إِنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُسَافِرَ فَأَوْصِنِي قَالَ: «عَلَيْكَ بِتَقْوَى اللَّهِ وَالتَّكْبِيرِ عَلَى كل شرف» . قَالَ: فَلَمَّا وَلَّى الرَّجُلُ قَالَ: «اللَّهُمَّ اطْوِ لَهُ الْبعد وهون عَلَيْهِ السّفر» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2438. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं की किसी आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! में सफ़र करना चाहता हो लिहाज़ा आप मुझे कोई वसीयत फरमाइए आप ﷺ ने फ़रमाया: ” अल्लाह के तक़्वा और हर ऊँची जगह पर (اللّٰهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर पढ़ने का इल्तेज़ाम करना”, जब वह आदमी वापस चला गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: ” अल्लाह उसकी दुरी व मुसाफ़त को लपेट (कर समेट) दे और सफ़र को उस के लिए आसान कर दे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3445 و قال : حسن)

٢٤٣٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سَافَرَ فَأَقْبَلَ اللَّيْلُ قَالَ: «يَا أَرْضُ رَبِّي وَرَبُّكِ اللَّهُ أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شَرِّكِ وَشَرِّ [ص:٧٥ مَا فِيكِ وَشَرِّ مَا خُلِقَ فِيكِ وَشَرِّ مَا يَدِبُّ عَلَيْكِ وَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ أَسَدٍ وَأَسْوَدَ وَمِنَ الْحَيَّةِ وَالْعَقْرَبِ وَمِنْ شَرِّ سَاكِنِ الْبَلَدِ وَمِنْ والدٍ وَمَا ولد» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2439. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ सफ़र में होते और रात हो जाती तो आप ﷺ फरमाते: “ज़मीन! मेरा और तेरा रब अल्लाह है, मैं तेरे शर से, जो कुछ तुझ में है उस के शर से, जो तुझ में पैदा किया गया है उस के शर से और जो चीज़ तेरी सतह पर चल रही है उस के शर से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ, मैं शेर, काले नाग, सांप व बिच्छु के शर से और बस्ती के बासीओ और वालद (शैतान) और ज़ुर्रियात (औलाद शैतान) के शर से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2603)

٢٤٤٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا غَزَا قَالَ: «اللَّهُمَّ أَنْتَ عَضُدِي وَنَصِيرِي بِكَ أَحُولُ وَبِكَ أَصُولُ وَبِكَ أُقَاتِلُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

2440. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ जिहाद के लिए निकलते तो यूँ दुआ फरमाते: “ए अल्लाह! तू ही मेरा बाज़ू है, तू ही मेरा मददगार है, मैं तेरी ही तौफिक से दुश्मन की चालो को रद्द करता हूँ, तेरी ही मदद से दुश्मन पर हमला करता हूँ और तेरी तौफीक नुसरत से किताल करता हूँ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3584 و قال : حسن غريب) و ابوداؤد (2632) * قتادة مدلس و لم اجد تصريح سماعه

٢٤٤١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي مُوسَى: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا خَافَ قَوْمًا قَالَ: «اللَّهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِي نُحُورِهِمْ وَنَعُوذُ بِكَ من شرورهم» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

2441. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब नबी ﷺ को किसी कौम से अंदेशा होता तो आप ﷺ यूँ दुआ फरमाते थे: “ए अल्लाह! हम उन के मुकाबले में तुझे करते हैं और उनकी शरारतों से तेरी पनाह में आते है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (4 / 414 ح 19958) و ابوداؤد (1537) * قتادة مدلس و لم اجد تصريح سماعه

٢٤٤٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا خَرَجَ مِنْ بَيْتِهِ قَالَ: «بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ نَزِلَّ أَوْ نَضِلَّ أَوْ نَظْلِمَ أَوْ نُظْلَمَ أَوْ نَجْهَلَ أَوْ يُجْهَلَ عَلَيْنَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ وَابْنِ [ص:٧٥ مَاجَهْ قَالَتْ أُمُّ سَلَمَةَ: مَا خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ بَيْتِي قَطُّ إِلَّا رَفَعَ طَرْفَهُ إِلَى السَّمَاءِ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَضِلَّ أَوْ أُضَلَّ أَوْ أَظْلِمَ أَوْ أُظْلَمَ أَوْ أَجْهَلَ أَو يجهل عَليّ»

2442. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि जब नबी ﷺ अपने घर से बाहर तशरीफ़ ले जाते तो दुआ फरमाते: “ए अल्लाह! के नाम के साथ मैंने अल्लाह पर तवक्कुल किया, ऐ अल्लाह! हम तेरी पनाह चाहते है की हम (सीधे रास्ते से) फिसल जाए या गुमराह हो जाए, या हम ज़ुल्म करे या हम पर ज़ुल्म किया जाए, या हम किसी से जहालत से पेश आए या हमारे साथ जहालत से पेश आया जाए”| अहमद तिरमिज़ी, नसई, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है! अबू दावुद और इब्ने माजा की रिवायत में है उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जब भी मेरे

घर से तशरीफ़ ले जाते तो आप ﷺ आसमान की तरफ नज़र उठाकर दुआ फरमाते: “ए अल्लाह! में तेरी पनाह चाहता हूँ, की मैं गुमराह हो जाऊँ, या गुमराह कर दिया जाऊँ, या में ज़ुल्म करू या मुझ पर ज़ुल्म किया जाए, या में जहालत से पेश आऊ या मुझ से जहालत से पेश आया जाए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (6 / 306 ح 27151) و الترمذى (3427) و النسائى (فى عمل اليوم و الليلة : 89 و السنن الكبرىٰ : 9917) و ابوداؤد (5094) و ابن ماجه (2884) * عامر الشعبى لم يسمع من ام سلمة عند ابن المدينى و قوله هو الراجح

٢٤٤٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا خَرَجَ الرَّجُلُ مِنْ بَيْتِهِ فَقَالَ: بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ يُقَالُ لَهُ حِينَئِذٍ هُدِيتَ وَكُفِيتَ وَوُقِيتَ فَيَتَنَحَّى لَهُ الشَّيْطَانُ وَيَقُولُ شَيْطَانٌ آخَرُ: كَيْفَ لَكَ بِرَجُلٍ قَدْ هُدِيَ وَكُفِيَ وَوُقِيَ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وروى التِّرْمِذِيّ إِلى قَوْله: «الشَّيْطَان»

2443. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब आदमी घर से निकलते वक़्त यह दुआ पढ़े: “ए अल्लाह! के नाम के साथ मेंने अल्लाह पर तवक्कुल किया, गुनाह से बचना और नेकी करना महज़ अल्लाह की तौफिक से है”, तो तब इसे कहा जाता है, तेरी रहनुमाई कर दी गई तुझे किफ़ायत कर दी गई और तो बचा लिया गया, शैतान उस से अलग हो जाता है, और दूसरा शैतान कहता है, तुम्हारा ऐसे आदमी पर कैसे ज़ोर चल सकता है जिस की रहनुमाई कर दी गई, इसे किफ़ायत कर दी गई और इसे बचा लिया गया”| अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने (लह अल शैतान) तक रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5095) و الترمذى (3426 و قال: حسن صحيح غريب) * ابن جريج : لم يثبت تصريح سماعه فى هذا الحديث و رواه عبدالمجيد بن عبد العزيز عنه قال :’’ حديث عن اسحاق ‘‘ [وفى الموارد (2375) وهم ، انظر الاحسان (819)]

٢٤٤٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي مَالِكٍ الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا وَلَجَ الرَّجُلُ بَيْتَهُ فَلْيَقُلْ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلِجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللَّهِ وَلَجْنَا وَعَلَى اللَّهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا ثُمَّ لْيُسَلِّمْ عَلَى أَهْلِهِ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2444. अबू मालिक अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जब आदमी अपने घर दाखिल हो तो यह दुआ पढ़े: “ए अल्लाह! में दाखिल होने की जगह और निकलने की जगह की भलाई का तुझ से सवाल करता हूँ, अल्लाह के नाम के साथ हम दाखिल हुए और अपने रब अल्लाह पर हमने तवक्कुल किया, फिर वह अपने अहल खाना को सलाम करे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5096) * شريح بن عبيد عن ابى مالک : مرسل كما تقدم (2412)

٢٤٤٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا رَفَّأَ الْإِنْسَانَ إِذَا تَزَوَّجَ قَالَ: «بَارَكَ اللَّهُ لَكَ وَبَارَكَ عَلَيْكُمَا وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِي خَيْرٍ» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

2445. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ जब शादी के मौके पर किसी शख़्स को दुआ देते तो आप ﷺ फरमाते: "ए अल्लाह! तेरे लिए बरकत करे और तुम दोनों पर बरकत करे और तुम दोनों को खैर पर इकट्ठा करे"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (2 / 381 ح 8944) و الترمذى (1091 و قال : حسن صحيح) و ابوداؤد (2130) و ابن ماجه (1905)

٢٤٤٦ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا تَزَوَّجَ أَحَدُكُمُ امْرَأَةً أَوِ اشْتَرَى خَادِمًا فَلْيَقُلْ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ وَإِذَا اشْتَرَى بَعِيرًا فليأخُذْ بِذروةِ سنامِهِ ولْيَقُلْ مِثْلَ ذَلِكَ» . [ص:٧٥ وَفِي رِوَايَةٍ فِي الْمَرْأَةِ وَالْخَادِمِ: «ثُمَّ لْيَأْخُذْ بِنَاصِيَتِهَا وَلْيَدْعُ بِالْبَرَكَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

2446. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने नबी ﷺ से रिवायत किया, आप ﷺ ने फ़रमाया: '' जब तुम में से कोई शख़्स किसी औरत से शादी करे या कोई गुलाम ख़रीदे तो वह यूँ दुआ करे: "ए अल्लाह! में तुझ से उसकी खैर भलाई और इस चीज़ की खैर भलाई का जिस पर तूने इसे पैदा किया, सवाल करता हूँ, और मैं उस के शर से और इस चीज़ के शर से जिस पर तूने इसे पैदा किया तेरी पनाह चाहता हूँ, '' और जब ऊंट ख़रीदे तो उसकी वह उन की चोटी पकड़ कर यही दुआ करे", और एक दूसरी रिवायत में औरत और खादिम के बारे में है '' फिर उसकी पेशानी के बाल पकड़ कर बरकत की दुआ करे"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2160) و ابن ماجه (1918)

٢٤٤٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «دَعَوَاتُ الْمَكْرُوبِ اللَّهُمَّ رَحْمَتَكَ أَرْجُو فَلَا تَكِلْنِي إِلَى نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ وَأَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2447. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' मगमूम शख़्स की दुआ है '' अल्लाह में तेरी रहमत का उम्मीद वार हूँ, मुझे लम्हा भर के लिए भी मेरे नफ्स के सुपुर्द न करना, मेरे तमाम हालात दुरुस्त कर दे, तेरे सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5090) * جعفر بن ميمون ضعيف : ضعفه الجمهور

٢٤٤٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: هُمُومٌ لَزِمَتْنِي وَدُيُونٌ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «أَفَلَا أُعَلِّمُكَ كَلَامًا إِذَا قُلْتَهُ أَذْهَبَ اللَّهُ هَمَّكَ وَقَضَى عَنْكَ دَيْنَكَ؟» قَالَ: قُلْتُ: بَلَى قَالَ: " قُلْ إِذَا أَصْبَحْتَ وَإِذَا أَمْسَيْتَ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ ". قَالَ: فَفعلت ذَلِك فَأذْهب الله همي وَقضى عَن ديني. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2448. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, किसी शख़्स ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! गमो और कर्जो ने मुझे घेर रखा है, आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ क्या मैं तुम्हें ऐसा कलाम बताऊँ के जब तुम वह कलाम पढ़े तो अल्लाह तुम्हारे गम दूर कर दे और तेरी तरफ से तेरा क़र्ज़ अदा कर दे ?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! क्यों नहीं! ज़रूर बताइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: सुबह व शाम यह दुआ पढ़ा करो: “ए अल्लाह! में फकर व गम से तेरी पनाह चाहता हूँ, मैं अजज़ काहली सुस्ती से तेरी पनाह चाहता हूँ, मैं बुखल व बुज़दिली से तेरी पनाह चाहता हूँ, मैं क़र्ज़ के ज़्यादा होने और लोगों के गलबा से तेरी पनाह चाहता हूँ”, वह शख़्स बयान करता है मेंने यह वज़ीफ़ा किया जो अल्लाह ने मेरा गम दूर कर दिया और मेरा क़र्ज़ अदा कर दिया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1555) * الجريرى اختلط و غسان بن عوف : لين الحديث

٢٤٤٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عليّ: أَنَّهُ جَاءَهُ مُكَاتَبٌ فَقَالَ: إِنِّي عَجَزْتُ عَنْ كتابي فَأَعِنِّي قَالَ: أَلَا أُعَلِّمُكَ كَلِمَاتٍ عَلَّمَنِيهِنَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَوْ كَانَ عَلَيْكَ مِثْلُ جَبَلٍ كَبِيرٍ دَيْنًا أَدَّاهُ اللَّهُ عَنْكَ. قُلْ: «اللَّهُمَّ اكْفِنِي بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَأَغْنِنِي بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعَوَاتِ الْكَبِيرِ»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ جَابِرٍ: «إِذَا سَمِعْتُمْ نُبَاحَ الْكِلَابِ» فِي بَابِ «تَغْطِيَةِ الْأَوَانِي» إن شَاءَ الله تَعَالَى

2449. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक मकातब उन के पास आया तो उस ने कहा में अपने आज़ादी के लिए तै शुदा रकम अदा करने से आजिज़ हूँ, लिहाज़ा आप रदियल्लाहु अन्हु मेरी मदद फरमाइए, उन्होंने ने फ़रमाया: क्या मैं तुझे चंद कलिमात न सिखाऊ जो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे सिखाए थे, अगर तुझ पर किसी बड़े पहाड़ के बराबर क़र्ज़ होगा तो अल्लाह इसे तुझ से अदा कर देगा, कहो: “ए अल्लाह! तो अपने हलाल करदा चीज़ के ज़रिए अपने हराम करदा चीज़ से मुझे काफी हो जा और अपने फ़ज़्ल के ज़रिए अपने अलावा मुझे सबसे बेनियाज़ कर दे”, हम जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस ((إِذَا سَمِعْتُمْ نُبَاحَ الْكِلَابِ)) बाब تغطية الاوانى मैं इनशाअल्लाह ज़िक्र करेंगे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (3563 و قال : حسن غريب) و البيهقى فى الدعوات الكبير (1 / 134 ح 177) [و صححه الحاكم (1 / 538) و وافقه الذهبى]0 حديث : اذا سمعتم نباح الكلاب ، ياتى (4302)

بَاب الدَّعْوَات فِي الْأَوْقَاف • मुख़्तलिफ अवकात के वक़्त की दुआओं का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٤٥٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا جَلَسَ مَجْلِسًا أَوْ صَلَّى تكلّم بِكَلِمَاتٍ فَسَأَلْتُهُ عَنِ الْكَلِمَاتِ فَقَالَ: " إِنْ تُكُلِّمَ بِخَيْرٍ كَانَ طَابَعًا عَلَيْهِنَّ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَإِنْ تُكُلِّمَ بِشَرٍّ كَانَ كَفَّارَةً لَهُ: سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ ". رَوَاهُ النَّسَائِيّ

2450. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी मजलिस में बैठते या नमाज़ पढ़ते तो आप चंद कलिमात पढ़ते, मेंने उन कलिमात के बारे में आप से पूछा तो आप ﷺ ने फ़रमाया: ” अगर तो अच्छी बाते की गई तो यह कलिमात रोज़ ए कियामत तक इन पर बतौर मुहर होंगे और अगर कोई बुरी बाते की गई तो यह कलिमात उन के लिए कफ्फारा होंगे: “ए अल्लाह! तू अपने हम्द के साथ पाक है, तेरे सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, मैं तुझ से मगफिरत तलब करता हुन्ज और तेरे हुज़ूर तौबा करता हूँ”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائی (3 / 71 ، 72 ح 1345)

٢٤٥١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن قَتَادَة: بَلَغَهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا رَأَى الْهِلَالَ قَالَ: «هِلَالُ خَيْرٍ وَرُشْدٍ هِلَالُ خَيْرٍ وَرُشْدٍ هِلَالُ خَيْرٍ وَرُشْدٍ آمَنْتُ بِالَّذِي خَلَقَكَ» ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ يَقُولُ: «الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي ذَهَبَ بِشَهْرِ كَذَا وَجَاء بِشَهْرِ كَذَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2451. क़तादाह रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, उन्हें यह खबर पहुंची है की जब रसूलुल्लाह ﷺ चाँद देखते तो तीन बार फरमाते: “खैर भलाई के चाँद! में उस ज़ात पर ईमान लाया जिस ने मुझे पैदा फ़रमाया”, फिर फरमाते: “हर किस्म की तारीफ़ उस ज़ात के लिए है जो फलां महीने को ले गया और फलां महीने ले आया”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواہ ابوداؤد (5092 وفی المراسیل : 527) من حدیث قتادۃ رحمه الله* السند مرسل و قال ابوداؤد :’’ و روی متصلاً ولا یصح‘‘

٢٤٥٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " مَنْ كَثُرَ هَمُّهُ فَلْيَقُلْ: اللَّهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَابْنُ أَمَتِكَ وَفِي قَبْضَتِكَ نَاصِيَتِي بِيَدِكَ مَاضٍ فِيَّ حُكْمُكَ عَدْلٌ فِيَّ قَضَاؤُكَ أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ أَوْ أَلْهَمْتَ عِبَادَكَ أَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهِ فِي مَكْنُونِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِيعَ قلبِي وجِلاء [ص:٧٥] هَمِّي وغَمِّي مَا قَالَهَا عَبْدٌ قَطُّ إِلَّا أَذْهَبَ اللَّهُ غمه وأبدله فرجا ". رَوَاهُ رزين

2452. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ” जो शख़्स बहोत ज़्यादा गम

का शिकार हो तो वह यह दुआ करे: “ए अल्लाह! में तेरा बंदा हूँ, तेरे बंदे और तेरी लौंडी का बेटा हूँ, मैं तेरे कब्ज़े कुदरत के तहत हूँ, मेरी पेशानी तेरे हाथ में है तेरा हुक्म मेरे बारे में नाफ़िज़ होने वाला है, तेरा मेरे मुतल्लिक फैसला अदल पर मबनी है, मैं तेरे हर इस नाम से, जो तूने अपने लिए रखा, या तूने इसे अपने किताब में नाज़िल किया, या तूने अपने मखलूक में से किसी को सिखाया, या तूने अपने बंदो को इल्हाम किया, या तूने अपने पास गैब के खज़ाने में उसे मखसूस कर लिया, तुझ से सवाल करता हूँ कि तू कुरान को मेरा दिल की बहार, मेरे फकर व गम का इलाज बना दे”, जो शख़्स यह कलिमात पढ़ता है तो अल्लाह उस के गम दूर कर देता है और हज़न गम को फरहत ख़ुशी में तब्दील कर देता है| (मझे नहीं मिली रवाह रजिन.)

لم اجده ، رواه رزین (لم اجده) [و احمد (1 / 391 ، 452) دون قوله ’’ و فی قبضتک ‘‘ و ’’او الهمت عبادک ‘‘ و ’’ فی مکنون الغیب ‘‘ و عنده ’’ فی علم الغیب ‘‘ وھو الصواب ، وسند ضعیف و صححه ابن حبان (الموارد : 2372) و رواه الحاکم (1 / 509510) و ذکر کلامًا و تعقبه الذھبی ، قلت : فی سماع عبد الرحمن بن مسعود من ابیه نظر و ذکر الحافظ ابن حجر فی المرتبة الثالثة من المدلسین و لم یصرح بالسماع]

٢٤٥٣ - (صَحِيح) وَعَن جابرٍ قَالَ: كُنَّا إِذَا صَعِدْنَا كَبَّرْنَا وَإِذَا نَزَلْنَا سبحنا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2453. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब हम ऊपर चढ़ते तो (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते और जब नीचे उतरते तो (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह कहते थे| (बुखारी)

رواه البخاری (2993)

٢٤٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا كَرَبَهُ أَمْرٌ يَقُولُ: «يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيثُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَلَيْسَ بِمَحْفُوظٍ

2454. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह ﷺ को कोई तकलीफ पहुंचे तो तो आप यह दुआ किया करते थे: “ए जिंदा काइम रहने वाले! में तेरी रहमत के ज़रिए मदद तलब करता हूँ”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है, और महफ़ूज़ नहीं| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3524 و قال : حزا حدیث غریب) * سنده ضعیف و له شاھد حسن عند النسائی فی عمل الیوم و اللیلة (570) و الکبریٰ (10405) و صححه الحاکم علیٰ شرط الشیخین (1 / 545) و وافقه الذھبی

٢٤٥٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قُلْنَا يَوْمَ الْخَنْدَقِ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلْ مِنْ شَيْءٍ نَقُولُهُ؟ فَقَدْ بَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ قَالَ: «نَعَمْ اللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِنَا وَآمِنْ رَوْعَاتِنَا» قَالَ: فَضَرَبَ اللَّهُ وُجُوهَ أَعْدَائِهِ بِالرِّيحِ وَهَزَمَ اللَّهُ بِالرِّيحِ. رَوَاهُ أَحْمد

2455. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, गज़वा ए खंदक के मौके पर हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के

रसूल! क्या कोई कलिमा है जो हम पढ़े? अब तो कलेजे मुंह को आ रहे हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, ऐ अल्लाह! हमारी परदे की चीजों पर परदा डाल दे और हमारे खौफ को अमन अता फरमा", अल्लाह ने आंधी के ज़रिए आप के दुश्मन का रुख बदल दीया अल्लाह ने आंधी के ज़रिए शिकस्त दी"| (हसन)

حسن ، رواہ احمد (3 / 3 ح 11009) * ربیح بن عبد الرحمن بن ابی سعید عن ابی سعید منقطع فیما اری و باقی السند حسن و رواہ البزار (کشف الاستار : 3119) عن ربیح عن ابیه عن جده فالسند حسن ، انظر المسند الجامع (4618) بتحقیقی

٢٤٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن بُرَيْدَة قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا دَخَلَ السُّوقَ قَالَ: «بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذِهِ السُّوقِ وَخَيْرِ مَا فِيهَا وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيهَا اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أُصِيبَ فِيهَا صَفْقَةً خَاسِرَةً» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعَوَاتِ الْكَبِيرِ

2456. बुरैदा रदी अल्लाहु अन्हु बयान करते हैंं, जब नबी ﷺ बाज़ार तशरीफ़ ले जाते तो ये दुआ पढ़ा करते थे: "अल्लाह के नाम के साथ, ऐ अल्लाह! मैं इस बाज़ार और जो इस में है उस की खैर भलाई का तुझ से सवाल करता हूँ और उस के और उस में मौजूद शर से तेरी पनाह चाहता हूँ, ऐ अल्लाह! में तेरी पनाह चाहता हूँ की मैं उस में कोई घाटे का सौदा करू"| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ البیھقی فی الدعوات الکبیر (1 / 132 ح 175176 و سقط من المطبوع بعض السند) * و رواہ ابن السنی (181)و الطبرانی فی الکبیر (2 / 21 ح 1157) و فیه محمد بن ابان بن صالح الجعفی : ضعیف کما فی مجمع الزوائد (10 / 129) و کتب الرجال ، و فی السند الآخر عند البیھقی فی الدعوات (176) ابو عمر : مجھول ، وھو فی المستدرک (1 / 539) ’’ ابو عمرو ‘‘ و اللہ اعلم بحاله ، و لعله ھو محمد بن ابان المذکور

बَاب الِاسْتِعَاذَة • पनाह मांगने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٢٤٥٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «تَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنْ جَهْدِ الْبَلَاءِ وَدَرَكِ الشَّقَاءِ وَسُوءِ القضاءِ وشَماتة الْأَعْدَاء»

2457. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' आज़माइश की शिद्दत, बदबख्ती की आमद, तकदीर की ज़हमत और दुश्मनों की ख़ुशी से अल्लाह की पनाह तलब करो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (6616) و مسلم (53 / 2707)، (6877)

٢٤٥٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ»

2458. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! में फकर व गम, आजिज़ी और सुस्ती, बुज़दिली और बुखल व कर्जे के बोझ और लोगों के गलबे से तेरी पनाह चाहता हूँ”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6369) و مسلم (50 / 2706)، (6873)

٢٤٥٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَالْمَغْرَمِ وَالْمَأْثَمِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَفِتْنَةِ النَّارِ وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْغِنَى وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْفَقْرِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ اللَّهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَايَ بِمَاءِ الثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّ قَلْبِي كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ وَبَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ [ص:٧٦ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمغْرب»

2459. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! में सुस्ती, बुढ़ापे, तावुन और गुनाह से तेरी पनाह चाहता हूँ, ऐ अल्लाह! में आग के अज़ाब, आग के फितने, कब्र के फितने, कब्र के अज़ाब, तवंगरी के फितने के शर से, फकीरी के फितने के शर से और मसीह दज्जाल के फितने के शर से तेरी पनाह चाहता हूँ, ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को बर्फ और ओलो के पानी से धो दे, मेरा दिल को ऐसे साफ़ कर दे जिस तरह सफ़ेद कपड़े को मेल से साफ़ किया जाता है, और मेरे दरमियान और मेरे गुनाहों के दरमियान ऐसी दूरी पैदा फरमादे जैसी तूने मशरिक मगरिब के दरमियान दूरी पैदा फरमाई”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6275) و مسلم (49 / 2705)، (6871)

٢٤٦٠ - (صَحِيح) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَالْهَرَمِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ اللَّهُمَّ آتِ نَفْسِي تَقْوَاهَا وَزَكِّهَا أَنْتَ خَيْرُ مَنْ زَكَّاهَا أَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلَاهَا اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عِلْمٍ لَا يَنْفَعُ وَمِنْ قَلْبٍ لَا يَخْشَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لَا تَشْبَعُ وَمِنْ دَعْوَةٍ لَا يُسْتَجَاب لَهَا» . رَوَاهُ مُسلم

2460. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! में आजिज़ी और सुस्ती बुज़दिली और बुखल बुढ़ापे और अज़ाब ए कब्र से तेरी पनाह चाहता हूँ, ऐ अल्लाह! मेरे नफ्स को उस का तक़्वा अता फरमा, उस का तज़किरा फरमा और तू बेहतरीन तज़किरा करने वाला है, तू उस का कार साज़ मददगार है, अल्लाह में ऐसे इल्म इसे जो नफ़ामंद न हो, ऐसे दिल से जो डरता न हो, ऐसे नफ्स से जो भरता न हो, और ऐसी दुआ से जो कबूल न हो तेरी पनाह चाहता हूँ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (73 / 2722)، (6906)

٢٤٦١ - (صَحِيح) وَعَن عبد بنِ عمرَ قَالَ: كَانَ مِنْ دُعَاءِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ سوسلم: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ وَفُجَاءَةِ نِقْمَتِكَ وَجَمِيعِ سَخَطِكَ» . رَوَاهُ مُسلم

2461. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! में तेरी नेअमत के ज़ाइल हो जाने, तेरी आफियत के बदल जाने, तेरे अज़ाब के नागहा आ जाने से और तेरी तमाम नाराज़ियो से तेरी पनाह चाहता हूँ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (96 / 2739)، (6944)

٢٤٦٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ وَمِنْ شَرِّ مَا لَمْ أعمَلْ» . رَوَاهُ مُسلم

2462. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! मैंने जो अमल किया उस के शर से और जो अमल नहीं किया उस के शर से तेरी पनाह चाहता हूँ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (65 / 2716)، (6895)

٢٤٦٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ وَبِكَ آمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْكَ أَنَبْتُ وَبِكَ خَاصَمْتُ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِعِزَّتِكَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَنْ تُضِلَّنِي أَنْتَ الْحَيُّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَالْجِنُّ وَالْإِنْسُ يموتون»

2463. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! मेंने तेरी इताअत इख़्तियार की, मैं तुझ पर ईमान लाया, तुझ पर तवक्कुल किया, तेरी तरफ रुजू किया, तेरी तौफिक से दुश्मनों के साथ झगड़ा किया, ऐ अल्लाह! में तेरी इज्ज़त गलबा की पनाह चाहता हूँ कि तो मुझे गुमराह कर दे, तेरे सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, तू जिंदा है जिसे मौत नहीं आएगी, जबकि जिन्न और इंसान फौत हो जाएँगे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6317) و مسلم (67 / 2717)، (6899)

بَاب الِاسْتِعَاذَة • पनाह मांगने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٤٦٤ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْأَرْبَعِ: مِنْ عِلْمٍ لَا يَنْفَعُ وَمِنْ قَلْبٍ لَا يَخْشَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لَا [ص:٧٦ تَشْبَعُ وَمِنْ دُعَاءٍ لَا يُسْمَعُ ". رَوَاهُ أحمدُ وَأَبُو دَاوُد وابنُ مَاجَه

2464. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ दुआ किया करते थे: "ए अल्लाह! में चार चीजों से तेरी पनाह चाहता हूँ, ऐसे इल्म इसे जो नफ़ामंद न हो, ऐसे दिल से जो डरता न हो, ऐसे नफ्स से जो भरता न हो और ऐसी दुआ से जो कबूल न हो"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 365 ح 7865) و ابوداؤد (1548) و ابن ماجه (250) و النسائی (8 / 263 ح 5469)

٢٤٦٥ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو. وَالنَّسَائِيّ عَنْهُمَا

2465. इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने इसे अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से और इमाम नसई रहिमहुल्लाह ने इन दोनों अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (3482 و قال : حسن صحیح غریب) و النسائی (8 / 255 ح 5444) [من طریقین]

٢٤٦٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَرَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَعَوَّذُ مِنْ خَمْسٍ: مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَسُوءِ الْعُمُرِ وَفِتْنَةِ الصَّدْرِ وَعَذَابِ القَبرِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

2466. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ पांच चीजों से पनाह तलब किया करते थे, बुज़दिली और बुखल से, उमर की खराबी से, सीना के फितने (यानी वसवसे) से और अज़ाब ए कब्र से| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1539) و النسائی (8 / 255 ح 5445) [و ابن ماجه (3844) و ابن حبان (2445)] * ابو اسحاق عنعن

٢٤٦٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْفَقْرِ وَالْقِلَّةِ وَالذِّلَّةِ وَأَعُوذُ مِنْ أَنْ أَظْلِمَ أَوْ أُظْلَمَ» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

2467. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! में फकर किल्लत और ज़िल्लत से तेरी पनाह चाहता हूँ, और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ की मैं ज़ुल्म करु या मुझ पर ज़ुल्म किया जाए”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (1544) و النسائى (8 / 261 ح 5464)

٢٤٦٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَسُوءِ الْأَخْلَاقِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

2468. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! में,इख्तिलाफ निफ़ाक़ और बुरे अख़लाक़ से तेरी पनाह चाहता हूँ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1546) و النسائى (8 / 264 ح 5473) * فيه ضبارة : مجهول

٢٤٦٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُوعِ فَإِنَّهُ بِئْسَ الضَّجِيعُ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخِيَانَةِ فَإِنَّهَا بِئْسَتِ الْبِطَانَةُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

2469. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! में भूख से तेरी पनाह चाहता हूँ क्योंकि वह बुरा साथी है, और मैं खयानत से तेरी पनाह चाहता हूँ क्योंकि वह बुरी खसलत है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1547) و النسائى (8 / 263 ح 5470) و ابن ماجه (3354) [و صححه ابن حبان : 2444] * محمد بن عجلان مدلس و عنعن

٢٤٧٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبَرَصِ وَالْجُذَامِ وَالْجُنُونِ وَمِنْ سَيِّئِ الأسقام» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

2470. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! में बरस, जज़ाम (पागलपन और कोढ़ की बीमारी), जिन्नो और बुरी बीमारियों से तेरी पनाह चाहता हूँ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1554) و النسائى (8 / 270 ح 5495) * قتادة مدلس و عنعن

٢٤٧١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن قُطْبَةَ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ [ص:٧٦ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ

مِنْ مُنْكَرَاتِ الْأَخْلَاق والأعمال والأهواء» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2471. कुत्बा बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ दुआ किया करते थे: "ए अल्लाह! में बुरे अख़लाक़, बुरे आमाल और बुरी ख्वाहिशात से तेरी पनाह चाहता हूँ"| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (3591 و قال : حسن غریب) [و صححه الحاکم علی شرط مسلم (1 / 532) و وافقه الذهبی]

٢٤٧٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ شُتَيْرِ بْنِ شَكَلِ بْنِ حُمَيْدٍ عَنْ أَبِيه قَالَ: قُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ عَلِّمْنِي تَعْوِيذًا أَتَعَوَّذُ بِهِ قَالَ: «قُلِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بك من شَرّ سَمْعِي وَمن شَرّ بَصَرِي وَشَرِّ لِسَانِي وَشَرِّ قَلْبِي وَشَرِّ مَنِيِّي» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

2472. शुतैर बिन शकल बिन हुमैद अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मेंने अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! मुझे कोई ऐसा दम सिखाईए की मैं उस के ज़रिए पनाह हासिल किया करू, आप ﷺ ने फ़रमाया: कहो: "ए अल्लाह! में अपनी कान, अपनी आँख, अपनी ज़ुबान, अपने दिल और अपनी मनी की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1551) و الترمذی (3492 و قال : حسن غریب) و النسائی (8 / 267 ح 5486) [و صححه الحاکم (1 / 533) و وافقه الذهبی]

٢٤٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي الْيُسْر أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَدْعُو: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَدْمِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ التَّرَدِّي وَمِنَ الْغَرَقِ وَالْحَرْقِ وَالْهَرَمِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ يَتَخَبَّطَنِي الشَّيْطَانُ عِنْدَ الْمَوْتِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ أَمُوتَ فِي سَبِيلِكَ مُدْبِرًا وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ أَمُوتَ لَدِيغًا»» رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَزَادَ فِي رِوَايَةٍ أُخْرَى «الْغم»

2473. अबू यसरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ दुआ किया करते थे: "ए अल्लाह! में तेरी पनाह चाहता हूँ कि कोई इमारत मुझ पर गिर पड़े, मैं किसी ऊँची जगह से गिरने, डूब जाने, जल जाने और बुढ़ापे से तेरी पनाह चाहता हूँ, और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि मौत के वक़्त शैतान मुझे गुमराह बना दे, और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ की मैं तेरी राह में पीठ फेर कर भागते हुए फौत होऊँ, और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि किसी चीज़ के डसने से मेरी मौत वाकेअ हो"| अबू दावुद, नसई, और उन्होंने दूसरी रिवायत में यह इज़ाफा नकल किया है: "और गम से"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1552) و النسائی (8 / 282 ح 5533) [و صححه الحاکم (1 / 531) و وافقه الذهبی]

٢٤٧٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ مُعَاذٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " أستعيذُ بِاللَّهِ مِنْ طَمَعٍ يَهْدِي إِلَى طَبَعٍ)»» رَوَاهُ أَحْمد وَالْبَيْهَقِيّ فِي الدَّعْوَات الْكَبِير

2474. मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ अल्लाह से ऐसी ताअम से पनाह तलब करो जो गुनाह की तरफ ले जाए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 232 ح 22371 مختصرًا) و البيهقى فى الدعوات الكبير (2 / 53 ح 286) [و الحاكم (1 / 533)] * فيه عبدالله بن عامر الاسلمى ضعيف : ضعفه الجمهور

٢٤٧٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَظَرَ إِلَى الْقَمَرِ فَقَالَ: «يَا عَائِشَةُ اسْتَعِيذِي بِاللَّهِ مِنْ شَرِّ هَذَا فَإِنَّ هَذَا هُوَ الْغَاسِقُ إِذا وَقب» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2475. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ ने चाँद की तरफ देखा तो फ़रमाया: “आइशा! उस के शर से अल्लाह की पनाह तलब करो क्योंकि हमें वह गासिक है जब बेनूर हो जाए”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (3366 و قال : حسن صحيح) [و صححه الحاكم (2 / 540541) و وافقه الذهبى]

٢٤٧٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عمرانَ بنِ حُصينٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لأبي: «يَا حُصَيْن كم تعبد الْيَوْم إِلَهًا؟» قَالَ أَبِي: سَبْعَةً: سِتًّا فِي الْأَرْضِ وواحداً فِي السَّماءِ قَالَ: «فَأَيُّهُمْ تَعُدُّ لِرَغْبَتِكَ وَرَهْبَتِكَ؟» قَالَ: الَّذِي فِي السَّمَاءِ قَالَ: «يَا حُصَيْنُ أَمَا إِنَّكَ لَوْ أَسْلَمْتَ عَلَّمْتُكَ كَلِمَتَيْنِ تَنْفَعَانِكَ» قَالَ: فَلَمَّا أَسْلَمَ حُصينٌ [ص:٧٦ قَالَ: يَا رسولَ الله علِّمني الكلمتينِ اللَّتينِ وَعَدتنِي فَقَالَ: «قل اللَّهُمَّ أَلْهِمْنِي رُشْدِي وَأَعِذْنِي مِنْ شَرِّ نَفْسِي» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2476. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने मेरे वालिद से फ़रमाया: “हुसैन आज तुम कितने माबुदो की पूजा करते हो?” मेरे वालिद ने कहा सात की, छे ज़मीन पर है और एक आसमान में है, आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ तुम अपने नफा नुकसान के लिए किसे खास करते हो?” उस ने कहा जो आसमानों में है, आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ हुसैन! सुन लो! अगर तुम इस्लाम कबूल कर लो तो मैं तुम्हें दो कलमे सिखाऊंगा जो तुम्हें फ़ायदा पहुंचाएंगे”, रावी बयान करते हैं, जब हुसैन मुसलमान हो गए तो उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे वह दो कलमे सिखाईए जिन का आप ने मुझ से वादा किया था, आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ कहो: “ए अल्लाह! मेरी भलाई मुझे इल्हाम फरमा दें, और मुझे मेरे नफ्स की खराबी से बचा ले”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3483 و قال : حسن غريب) * الحسن البصرى مدلس و عنعن

٢٤٧٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِذَا فَزِعَ أَحَدُكُمْ فِي النَّوْمِ فَلْيَقُلْ: أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهِ وَعِقَابِهِ وَشَرِّ عِبَادِهِ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يَحْضُرُونَ فَإِنَّهَا لَنْ تَضُرَّهُ «وَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو يُعَلِّمُهَا مَنْ بَلَغَ مِنْ وَلَدِهِ وَمَنْ لَمْ يَبْلُغْ مِنْهُمْ كَتَبَهَا فِي صَكٍّ ثُمَّ عَلَّقَهَا فِي عُنُقِهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيّ وَهَذَا لَفظه

2477. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' जब तुम में से कोई शख़्स नींद में घबरा जाए तो वह यूँ कहे: "मैं अल्लाह के कामिल(सर्वोत्तम) कलिमात के ज़रिए, उस के गज़ब, उस के अकाब, उस के बंदो के शर और शैतान के वस्वसो से के वह मेरे पास आए, पनाह चाहता हूँ", वह वसवसे इसे हरगिज़ नुकसान नहीं पहुँचाएंगे", अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा अपने बालिग़ बच्चो को यह कलिमात सिखाया करते थे और जो अभी बालिग़ नहीं हुए थे तो आप उन्हें कागज़ पर लिख कर उन के गले में डाल दिया करते थे| अबू दावुद, तिरमिज़ी, और यह अल्फाज़ तिरमिज़ी के है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3893 و قال : حسن غريب) * محمد ابن اسحاق بن يسار مدلس و لم اجده تصريح سماعه

٢٤٧٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ سَأَلَ اللَّهَ الْجَنَّةَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ قَالَتِ الْجَنَّةُ: اللَّهُمَّ أَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ وَمَنِ اسْتَجَارَ مِنَ النَّارِ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ قَالَتِ النَّارُ: اللَّهُمَّ أَجِرْهُ مِنَ النَّارِ " رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيّ

2478. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' जो शख़्स तीन मर्तबा अल्लाह से जन्नत का सवाल करता है तो जन्नत कहती है, ऐ अल्लाह! इसे जन्नत में दाखिल फरमा, और जो शख़्स तीन मर्तबा जहन्नम से पनाह तलब करता है तो जहन्नम अर्ज़ करती है, अल्लाह इसे जहन्नम से बचा"| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (2572) و النسائی (8 / 279 ح 5523)

पनाह मांगने का बयान • بَاب الِاسْتِعَاذَة

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٢٤٧٩ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ الْقَعْقَاعِ: أَنَّ كَعْبَ الْأَحْبَارِ قَالَ: لَوْلَا كَلِمَاتٌ أَقُولُهُنَّ لَجَعَلَتْنِي يَهُودُ حِمَارًا فَقِيلَ لَهُ: مَا هُنَّ؟ قَالَ: أَعُوذُ بِوَجْهِ اللَّهِ الْعَظِيمِ الَّذِي لَيْسَ شَيْءٌ أَعْظَمَ مِنْهُ وَبِكَلِمَاتِ اللَّهِ التامَّاتِ الَّتِي لَا يُجَاوِزُهنَّ بَرٌّ وَلَا فاجرٌ وَبِأَسْمَاءِ اللَّهِ الْحُسْنَى مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ أَعْلَمْ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَذَرَأَ وبرأ. رَوَاهُ مَالك

2479. कअकाअ बयान करते हैं, काब अह्बार ने कहा: अगर में चंद कलिमात न कहूँ तो यहूदी (जादू के ज़रिए) मुझे गधा बना दे, उन से पूछा गया, वह कलिमात कौन से है? उन्होंने कहा: मैं अल्लाह अज़ीम के चेहरे के ज़रिए पनाह हासिल करता हूँ जिस से बढ़कर कोई चीज़ नहीं, और अल्लाह के कामिल(सर्वोत्तम) कलिमात के ज़रिए (पनाह हासिल करता हूँ) जिन से कोई नेक तजावुज़ कर सकता है न कोई फ़ाजिर, और अल्लाह के अस्मा उल हुसना के ज़रिए जिन्हें में जानता हूँ और जिन्हें मैं नहीं जानता, हर चीज़ के शर से पनाह चाहता हूँ जो उस ने पैदा फरमाई और फैलाई और मुनासिब बनाई| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه مالك (2 / 951952 ح 1839)

٢٤٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مُسلم بن أبي بَكرة قَالَ: كَانَ أَبِي يَقُولُ فِي دُبُرِ الصَّلَاةِ: [ص:٧٦ اللَّهُمَّ إِن أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ فَكُنْتُ أَقُولُهُنَّ فَقَالَ: أَيْ بُنَيَّ عَمَّنْ أَخَذْتَ هَذَا؟ قُلْتُ: عَنْكَ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يقولهُنَّ فِي دُبرِ الصَّلاةِ. رَوَاهُ النَّسَائِيّ وَالتِّرْمِذِيّ إِلَّا أَنَّهُ لَمْ يُذْكَرْ فِي دُبُرِ الصَّلَاةِ»» وَرَوَى أَحْمَدُ لَفْظَ الْحَدِيثِ وَعِنْدَهُ: فِي دُبُرِ كل صَلَاة

2480. मुस्लिम बिन अबी बकरह बयान करते हैं, मेरे वालिद नमाज़ के बाद दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! में कुफ्र व फकीरी और अज़ाब ए कब्र से तेरी पनाह चाहता हूँ”, मैं भी उन्हें पढ़ा करता था ,उन्होंने कहा बेटा तुमने उन्हें किस से सिखा है? मेंने अर्ज़ किया, आप से उन्होंने ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ उन्हें नमाज़ के बाद कहा करते थे| तिरमिज़ी, नसई, अलबत्ता इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने “नमाज़ के बाद” का ज़िक्र नहीं किया, और इमाम अहमद रहिमहुल्लाह ने हदीस के अल्फाज़ रिवायत किए और उनकी रिवायत में है “हर नमाज़ के बाद”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائی (3 / 7374 ح 1348) و الترمذی (3503 و قال : غریب) و احمد (5 / 44 ح 20720 [وھو حسن])

٢٤٨١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الْكُفْرِ وَالدَّيْنِ» فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَتَعْدِلُ الْكُفْرَ بِالدَّيْنِ؟ قَالَ: «نَعَمْ» . وَفِي رِوَايَةٍ «اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ» . قَالَ رَجُلٌ: وَيُعْدَلَانِ؟ قَالَ: «نَعَمْ» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

2481. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “ए अल्लाह! में कुफ्र व क़र्ज़ से तेरी पनाह चाहता हूँ”, किसी आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या कुफ्र क़र्ज़ के बराबर है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ! ‘‘ और दूसरी रिवायत में है: “ए अल्लाह! में कुफ्र व फकीरी से तेरी पनाह चाहता हूँ”, किसी आदमी ने अर्ज़ किया, वह दोनों बराबर है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ! ‘‘ | (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائی (8 / 264265 ح 54755476 ، 8 / 267 ح 5487)

जामे दुआओं का बयान — بَاب جَامع الدُّعَاء

पहली फस्ल — الْفَصْل الأول

٢٤٨٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّهُ كَانَ يَدْعُو بِهَذَا الدُّعَاءِ: «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي خَطِيئَتِي وَجَهْلِي وَإِسْرَافِي فِي أَمْرِي وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي جَدِّي وَهَزْلِي وَخَطَئِي وَعَمْدِي وكلُّ ذلكَ عِنْدِي اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أعلنت وَمَا أَنْت بِهِ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي أَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ وَأَنت على كل شَيْء قدير»

2482. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप यह दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! मेरी खताए, मेरी जहालत, और तमाम उमूर में जो मुझ से ज़्यादती हुई जिसे तू मुझ से ज़्यादा जानता है, मुआफ़ फरमादे, ऐ अल्लाह! मेंने जो बड़े गुनाह किया और जो भूलचुक से हुआ और जो कुछ जान बुझकर किया, यह सब कुछ मुझ में है तो उसे मुआफ़ कर दे, ऐ अल्लाह! मेंने जो आगे भेजा और जो पीछे छोड़ा, मेंने जो एलानिया किया और जो छुप कर किया और जिसे तू मुझ से ज़्यादा जानता है सब मुआफ़ कर दे, तू ही आगे करने वाला और तू ही पीछे करने वाला है और तो हर चीज़ पर कादिर है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (63896399) و مسلم (70 / 2719)، (6901)

٢٤٨٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ أَصْلِحْ لِي دِينِي الَّذِي هُوَ عِصْمَةُ أَمْرِي وَأَصْلِحْ لِي دُنْيَايَ الَّتِي فِيهَا مَعَاشِي وَأَصْلِحْ لِي آخِرَتِي الَّتِي فِيهَا مَعَادِي وَاجْعَلِ الْحَيَاةَ زِيَادَةً لِي فِي كُلِّ خَيْرٍ وَاجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِي مِنْ كُلِّ شَرٍّ» . رَوَاهُ مُسلم

2483. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! मेरे दीन की इस्लाह फरमा जो के मेरे तमाम मुआमलात का मुहाफ़िज़ है, मेरी दुनिया की इस्लाह फरमा जिस में मेरी मुआश है, मेरी आखिरत की इस्लाह फरमा जहाँ मुझेलौट कर जाना है, जिंदगी को हर किस्म की खैर व भलाई में इज़ाफा का बाईस बना और मौत को हर किस्म के शर से राहत का बाईस बना”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (71 / 2720)، (6903)

٢٤٨٤ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْهُدَى وَالتُّقَى وَالْعَفَافَ وَالْغِنَى» . رَوَاهُ مُسلم

2484. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! मैं तुझ से हिदायत, तकवा और आफत और तवंगरी का सवाल करता हूं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (72 / 2721)، (6904)

٢٤٨٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «قُلْ اللَّهُمَّ اهْدِنِي [ص:٧٦ وَسَدِّدْنِي وَاذْكُرْ بِالْهُدَى هِدَايَتَكَ الطَّرِيقَ وبالسداد سداد السهْم» . رَوَاهُ مُسلم

2485. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “कहो ऐ अल्लाह! मेरी रहनुमाई फरमा, मुझे दुरुस्त रख और (ए अली (र)) रहनुमाई से राह हिदायत पर चलने का तसव्वुर और दुरुस्त होने से

तीर का सा दुरुस्त होना तसव्वुर में रख| (मुस्लिम)

رواه مسلم (78 / 2725)، (6911)

٢٤٨٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مَالِكٍ الْأَشْجَعِي عَنْ أَبِيهِ قَالَ: كَانَ الرجل إذا أسلم علمه النَّبِي صلى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الصَّلَاةَ ثُمَّ أَمَرَهُ أَنْ يَدْعُوَ بِهَؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ: «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَاهْدِنِي وَعَافِنِي وَارْزُقْنِي» . رَوَاهُ مُسلم

2486. अबू मालिक अश्जईय्य अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: एक आदमी था जब उस ने इस्लाम कबूल किया जो नबी ﷺ ने इसे नमाज़ सिखाई, फिर इसे उन कलिमात के ज़रिए दुआ करने का हुक्म फ़रमाया: "ए अल्लाह! मुझे बख्श दे, मुझ पर रहम फरमा, मुझे आफियत में रख और मुझे रीज़्क अता फरमा"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (35 / 2697)، (6849)

٢٤٨٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أنسٍ قَالَ: كَانَ أَكْثَرُ دُعَاءِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «اللَّهُمَّ آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وقنا عَذَاب النَّار»

2487. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ की अक्सर यह दुआ हुआ करती थी, "ए अल्लाह! हमें दुनिया में भलाई अता फरमा और आखिरत में भलाई अता फरमा और हमें आग के अज़ाब से बचा"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6389) و مسلم (26 / 2690)، (6840)

जामे दुआओं का बयान — بَاب جَامع الدُّعَاء

दूसरी फस्ल — الْفَصْل الثَّانِي

٢٤٨٨ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدْعُو يَقُولُ: «رَبِّ أَعِنِّي وَلَا تُعِنْ عَلَيَّ وَانْصُرْنِي وَلَا تَنْصُرْ عَلَيَّ وَامْكُرْ لِي وَلَا تَمْكُرْ عَلَيَّ وَاهْدِنِي وَيَسِّرِ الْهُدَى لِي وَانْصُرْنِي عَلَى مَنْ بَغَى عَلَيَّ ربِّ اجعَلني لكَ شَاكِرًا لَكَ ذَاكِرًا لَكَ رَاهِبًا لَكَ مِطْوَاعًا لَكَ مُخْبِتًا إِلَيْكَ أَوَّاهًا مُنِيبًا رَبِّ تَقَبَّلْ تَوْبَتِي وَاغْسِلْ حَوْبَتِي وَأَجِبْ دَعْوَتِي وَثَبِّتْ حُجَّتِي وَسَدِّدْ لِسَانِي وَاهْدِ قَلْبِي وَاسْلُلْ سَخِيمَةَ صَدْرِي» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

2488. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ दुआ किया करते थे: “ए मेरे रब! मेरी इआनत फरमा और मेरे खिलाफ (मेरे दुश्मनों की) इआनत न फरमा, मेरी नुसरत फरमा और मेरे खिलाफ नुसरत न फरमा, मेरे लिए तदबीर फरमा और मेरे खिलाफ तदबीर न फरमा, मुझे हिदायत नसीब फरमा और मेरे लिए हिदायत आसान फरमा दें, जो शख़्स मुझ पर ज़ुल्म व सरकशी करे उस के खिलाफ मेरी नुसरत फरमा, ए मेरे रब! मुझे अपना शुक्र गुज़ार, तेरा ज़िक्र करने वाला, तुझ से डरने वाला, तेरा इन्तिहाई इताअत गुज़ार, तेरी आजिज़ी इख़्तियार करने वाला और तेरी तरफ बहोत ज़्यादा तजरीअ करने वाला, रुजू करने वाला बना, ए मेरे रब! मेरी तौबा कबूल फरमा, मेरे गुनाह मुआफ़ फरमा, मेरी दुआ कबूल फरमा, मेरी हुज्जत व दलील साबित फरमा, मेरी ज़ुबान को दुरुस्त फरमा, मेरे दिल की रहनुमाई फरमा और मेरे सिने का किना दूर फरमा”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (3551 و قال : حسن صحيح) و ابوداؤد (1510) و ابن ماجه (3830) [و صححه ابن حبان (2420) و الحاکم (1 / 520) و وافقه الذهبی]

٢٤٨٩ - (صَحِيح) وَعَن أبي بكرٍ قَالَ: قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْمِنْبَرِ ثُمَّ بَكَى [ص:٧٦ فَقَالَ: «سَلُوا اللَّهَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فَإِنَّ أَحَدًا لَمْ يُعْطَ بَعْدَ الْيَقِينِ خَيْرًا مِنَ الْعَافِيَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيب إِسْنَادًا

2489. अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मिम्बर पर खड़े हुए फिर रोने लगे और फ़रमाया: “ए अल्लाह! से मुआफी और आफियत का सवाल करो, क्योंकि किसी को दौलत ईमान नसीब हो जाने के बाद आफियत से बेहतर कोई चीज़ अता नहीं की गई”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह हदीस हसन है और और उसकी सनद ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3558) و ابن ماجه (3849)

٢٤٩٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَجُلًا جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ الدُّعَاءِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: «سَلْ رَبَّكَ الْعَافِيَةَ وَالْمُعَافَاةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ» ثُمَّ أَتَاهُ فِي الْيَوْمِ الثَّانِي فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ الدُّعَاءِ أَفْضَلُ؟ فَقَالَ لَهُ مِثْلَ ذَلِكَ ثُمَّ أَتَاهُ فِي الْيَوْمِ الثَّالِثِ فَقَالَ لَهُ مِثْلَ ذَلِكَ قَالَ: «فَإِذَا أُعْطِيتَ الْعَافِيَةَ وَالْمُعَافَاةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَقَدْ أَفْلَحْتَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيب إِسْنَادًا

2490. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! कौन सी दुआ अफज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ अपने रब से दुनिया व आखिरत में आफियत मुआफात (बाहम दरगुज़र करना) मांगो फिर वह दूसरे रोज़ हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! कौन सी दुआ अफज़ल है? तो आप ﷺ ने इसी तरह फ़रमाया, फिर तीसरे रोज़ आप के पास आया तो आप ﷺ ने इसे फिर वैसे ही फ़रमाया, और फ़रमाया: “जब तुझे दुनिया व आखिरत में आफियत मुआफात मिल गई तो तू कामियाब हो गया”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन है और

उसकी सनद ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (3512) و ابن ماجه (3848) * سلمة بن وردان ضعيف : ضعفه الجمهور

٢٤٩١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبد الله يزِيد الخطمي عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ فِي دُعَائِهِ: «اللَّهُمَّ ارْزُقْنِي حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يَنْفَعُنِي حُبُّهُ عِنْدَكَ اللَّهُمَّ مَا رَزَقْتَنِي مِمَّا أُحِبُّ فَاجْعَلْهُ قُوَّةً لِي فِيمَا تُحِبُّ اللَّهُمَّ مَا زَوَيْتَ عَنِّي مِمَّا أحب فاجعله فراغا ي فِيمَا تحب» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2491. अब्दुल्लाह बिन यज़ीद खतमी रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं की आप अपने दुआ में कहा करते थे: “ए अल्लाह! मुझे अपने और इस चीज़ की मुहब्बत अता फरमा जिस की मुहब्बत मुझे तेरे वहां फ़ायदा पहुंचाए, ऐ अल्लाह! तू जो मेरी पसंदीदा चीज़ मुझे अता फरमाए तो उसे मेरे लिए ऐसी चीज़ की तकवियत मजबूती का बाईस बना जिसे तू पसंद करता है, ऐ अल्लाह! तू मेरी जिस पसंदीदा चीज़ को मुझ से रोक ले तो उस को मेरे इस काम के लिए बाईस ए फरागत बना जिसे तो पसंद करता है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (3491 و قال : حسن غريب) [و ابن المبارک فی الزهد (430) و شک فی رفعه فالسند معلول و يظهر من الزهد بان الموقوف صحيح] * سفيان بن وكيع ضعيف

٢٤٩٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَلَّمَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُومُ مِنْ مَجْلِسٍ حَتَّى يَدْعُوَ بِهَؤُلَاءِ الدَّعَوَاتِ لِأَصْحَابِهِ: «اللَّهُمَّ اقْسِمْ لَنَا مِنْ خَشْيَتِكَ مَا تَحُولُ بِهِ بَيْنَنَا وَبَيْنَ مَعَاصِيكَ وَمِنْ طَاعَتِكَ مَا تُبَلِّغُنَا بِهِ جَنَّتَكَ وَمِنَ الْيَقِينِ مَا تُهَوِّنُ بِهِ عَلَيْنَا مُصِيبَاتِ الدُّنْيَا وَمَتِّعْنَا بِأَسْمَاعِنَا وَأَبْصَارِنَا وَقُوَّتِنَا مَا أَحْيَيْتَنَا وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنَّا وَاجْعَلْ ثَأْرَنَا عَلَى مَنْ ظَلَمَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى مَنْ عَادَانَا وَلَا تَجْعَلْ مُصِيبَتَنَا فِي دِينِنَا وَلَا تَجْعَلِ الدُّنْيَا أَكْبَرَ هَمِّنَا وَلَا مَبْلَغَ عِلْمِنَا وَلَا تُسَلِّطْ عَلَيْنَا مَنْ لَا يَرْحَمُنَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

2492. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं रसूलुल्लाह ﷺ अक्सर अवकात किसी मजलिस से उठने से पहले उन कलिमात के ज़रिए अपने सहाबा के लिए दुआ किया करते थे: “ए अल्लाह! हमें अपने खशियत से ऐसा हिस्सा अता फरमा जो हमारे और तेरी मुआसी नाफ़रमानी के दरमियान हाइल हो जाए, और अपने इताअत से ऐसा हिस्सा अता फरमा जिसके ज़रिए तू हमें अपने जन्नत में पहुंचा दे, और यकीन से ऐसा हिस्सा नसीब फरमा जो दुनिया के मसाइब (तकलीफ) हम पर आसान कर दे, जब तक तू हमें जिंदा रखे, हमारे कानो, हमारी आंखो और हमारी कुव्वत से फ़ायदा उठाने की तौफीक अता फरमा और उन (ज़िक्र की गई चीजों) को बाकी रखना, जो शख़्स हम पर ज़ुल्म करे उस पर हमारा गज़ब नाज़िल फरमा, हमारे दीन (में कमी) के बारे में हम पर कोई मुसीबत नाज़िल न फरमा, दुनिया को हमारा सबसे बड़ा मकसद बना न हमारे इल्म की अच्छी कोशि हो इन्तहा बना, और ना हम पर किसी ऐसे को मुसल्लत फरमा जो हम पर रहम न करे”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (3502) [و صححه الحاكم (1 / 528) و وافقه الذهبى و سنده ضعيف] * عبيدالله بن زحر ضعيف

٢٤٩٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ انْفَعْنِي بِمَا عَلَّمْتَنِي وَعَلِّمْنِي مَا يَنْفَعُنِي وَزِدْنِي عِلْمًا الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ وَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ حَالِ أَهْلِ النَّارِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ إِسْنَادًا

2493. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ दुआ किया करते थे, ऐ अल्लाह! तूने मुझे जो इल्म अता किया उस से मुझे फ़ायदा पहुंचा, और मुझे ऐसा इल्म अता फरमा जो मुझे फ़ायदा पहुंचाए और मेरे इल्म में इज़ाफा फरमा, हर हाल में अल्लाह का शुक्र है और मैं जहन्नुमियो के हाल से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस सनदन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3599) و ابن ماجه (251 ، 3833) * فیه موسی بن عبیدة و محمد بن ثابت : ضعیفان

٢٤٩٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ الْوَحْيُ سُمِعَ عِنْدَ وَجْهِهِ دوِي كَدَوِيِّ النَّحْل فأنل عَلَيْهِ يَوْمًا فَمَكَثْنَا سَاعَةً فَسُرِّيَ عَنْهُ فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ وَرَفَعَ يَدَيْهِ وَقَالَ: «اللَّهُمَّ زِدْنَا وَلَا تَنْقُصْنَا وَأَكْرِمْنَا وَلَا تُهِنَّا وَأَعْطِنَا وَلَا تَحْرِمْنَا وَآثِرْنَا وَلَا تُؤْثِرْ عَلَيْنَا وَأَرْضِنَا وَارْضَ عَنَّا» . ثُمَّ قَالَ: «أُنْزِلَ عَلَيَّ عَشْرُ آيَاتٍ مَنْ أَقَامَهُنَّ دَخَلَ الْجَنَّةَ» ثُمَّ قَرَأَ: (قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ)»» حَتَّى خَتَمَ عَشْرَ آيَاتٍ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيّ

2494. उमर बिन ख़िताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ पर वही नाज़िल होती, तो आप के चेहरे के पास शहद की मख्खियों कि सी भुनभुनाहट सुनाई देती थी, एक रोज़ आप पर वही नाज़िल हुई तो हमने ठोड़ी देर इंतज़ार किया, आप से वह कैफियत जाती रही, तो आप ﷺ ने किबले रुख हो कर हाथ उठाए और यूँ दुआ की: “ए अल्लाह! हमें ज़्यादा कर, कम न कर, हमें इज्ज़त अता करना ज़लील न करना, हमें अता करना महरूम न रखना, हमें तरजीह देना और हमारे खिलाफ किसी को तरजीह न देना, हमें राज़ी कर और हम से राज़ी हो जा”, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ मुझ पर दस आयात नाज़िल हुई है जो उनकी हिफाज़त व ख़याल करेगा जन्नत में दाखिल होगा”, फिर आप ने (قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ) से दस आयात तिलावत फरमाई| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احدم (1 / 34 ح 223) و الترمذی (3173) * یونس بن سلیم : مجھول ، و قال النسائی فی الکبریٰ (1439) :’’ ھذا حدیث منکر و یونس بن سلیم لا نعرفه ‘‘ و صححه الحاکم (1 / 535 ، 4 / 392) فتعقبه الذھبی



जामे दुआओं का बयान • بَاب جَامع الدُّعَاء

तीसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّالِث

٢٤٩٥ - (صَحِيح) عَن عثمانَ بنِ حُنَيفٍ قَالَ: إنَّ رَجُلًا ضَرِيرَ الْبَصَرِ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ادْعُ اللَّهَ أَنْ يُعَافِيَنِي فَقَالَ: «إِنْ شِئْتَ دَعَوْتُ وَإِنْ شِئْتَ صَبَرْتَ [ص:٧٦ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ» . قَالَ: فَادْعُهُ قَالَ: فَأَمَرَهُ أَنْ يَتَوَضَّأَ فَيُحْسِنَ الْوُضُوءَ وَيَدْعُو بِهَذَا الدُّعَاءِ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ وَأَتَوَجَّهُ إِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ إِنِّي تَوَجَّهْتُ بِكَ إِلَى رَبِّي لِيَقْضِيَ لِي فِي حَاجَتِي هَذِهِ اللهُمَّ فشفّعْه فيَّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيب

2495. उस्मान बिन हनीफ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक नाबीना शख़्स नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ, तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह से दुआ करे के वह मुझे आफियत अता फरमाए, आप ﷺ ने फ़रमाया: '' अगर तुम चाहो तो मैं दुआ करता हूँ और अगर तुम चाहो तो सब्र करो तो वह तुम्हारे लिए बेहतर है", उस ने अर्ज़ किया, आप अल्लाह से दुआ फरमाइए, आप ﷺ ने इसे हुक्म फ़रमाया के खूब अच्छी तरह वुज़ू करे और उन अल्फाज़ के साथ दुआ करे: "ए अल्लाह! में तुझ से सवाल करता हूँ और तेरे नबी, नबी ए रहमत मुहम्मद ﷺ के ज़रिए तेरी तरफ मुतवज्जे होता हूँ, बेशक मेंने आप ﷺ के ज़रिए अपने रब की तरफ तवज्जो की, ताकि मेरी इस हाजत के बारे में मेरे हक़ में फैसला किया जाए, ऐ अल्लाह! मेरे बारे में आप ﷺ की शफाअत कबूल फरमा"| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (3578) * هذا الحديث يدل على التوسل بدعاء الصالحين الاحياء و لا يدل على التوسل بالاموات فافهمه فانه مهم

٢٤٩٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ مِنْ دُعَاءِ دَاوُدَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُحِبُّكَ وَالْعَمَلَ الَّذِي يُبَلِّغُنِي حُبَّكَ اللَّهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ أَحَبَّ إِلَيَّ مِنْ نَفْسِي وَمَالِي وَأَهْلِي وَمِنَ الْمَاءِ الْبَارِدِ» . قَالَ: وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا ذَكَرَ دَاوُدَ يُحَدِّثُ عَنْهُ يَقُولُ: «كَانَ أَعْبَدَ الْبَشَرِ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

2496. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' दाऊद (अ) की यह दुआ थी: "ए अल्लाह! मैं तुझ से तेरी मोहब्बत का, इस शख़्स की मोहब्बत का जो तुझ से मोहब्बत करता हो, और इस अमल का सवाल करता हूँ जो मुझे तेरी मुहब्बत तक पहुंचा दे, ऐ अल्लाह! तू अपने मुहब्बत, मुझे मेरी जान, मेरे अहल व अयाल, माल और ठंडे पानी से ज़्यादा महबूब बना दे", अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब आप ﷺ दाउद (अ) का ज़िक्र करते तो उन के मुतल्लिक बयान करते हुए फरमाते: "वो तमाम इंसानों से ज़्यादा इबादत गुज़ार थे"| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (3490)

٢٤٩٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَطَاءِ بْنِ السَّائِبِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: صَلَّى بِنَا عَمَّارُ بْنُ يَاسِرٍ صَلَاةً فَأَوْجَزَ فِيهَا فَقَالَ لَهُ بَعْضُ الْقَوْمِ: لَقَدْ خَفَّفْتَ وَأَوْجَزْتَ الصَّلَاةَ فَقَالَ أَمَا عَلَيَّ ذَلِكَ لَقَدْ دَعَوْتُ فِيهَا بِدَعَوَاتٍ سَمِعْتُهُنَّ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا قَامَ تَبِعَهُ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ هُوَ أَبِي غَيْرَ أَنَّهُ كَنَّى عَنْ نَفْسِهِ فَسَأَلَهُ عَنِ الدُّعَاءِ ثُمَّ جَاءَ فَأَخْبَرَ بِهِ الْقَوْمَ: «اللَّهُمَّ بِعِلْمِكَ الْغَيْبَ وقُدرتِكَ على الخَلقِ أَحْيني مَا عَلِمْتَ الْحَيَاةَ خَيْرًا لِي وَتَوَفَّنِي إِذَا عَلِمْتَ الْوَفَاةَ خَيْرًا لِي اللَّهُمَّ وَأَسْأَلُكَ خَشْيَتَكَ فِي الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ وَأَسْأَلُكَ كَلِمَةَ الْحَقِّ فِي الرِّضَى وَالْغَضَبِ وَأَسْأَلُكَ الْقَصْدَ فِي الْفَقْرِ وَالْغِنَى وَأَسْأَلُكَ نَعِيمًا لَا يَنْفَدُ وَأَسْأَلُكَ قُرَّةَ عَيْنٍ لَا تَنْقَطِعُ وَأَسْأَلُكَ الرِّضَى بَعْدَ الْقَضَاءِ وَأَسْأَلُكَ بَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ وَأَسْأَلُكَ لَذَّةَ [ص:٧٧ النَّظَرِ إِلَى وَجْهِكَ وَالشَّوْقِ إِلَى لِقَائِكَ فِي غَيْرِ ضَرَّاءَ مُضِرَّةٍ وَلَا فِتْنَةٍ مُضِلَّةٍ اللَّهُمَّ زَيِّنَّا بِزِينَةِ الْإِيمَانِ وَاجْعَلْنَا هُدَاةً مَهْدِيِّينَ» . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ

2497. अता इब्ने साइब अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: अम्मार बिन यासिर रदियल्लाहु अन्हुमा ने हमें नमाज़ पढ़ाइ तो उस में इख्तिसार किया जो कुछ लोगों ने उन्हें कहा, आप ने नमाज़ में तखफिफ और इख्तिसार किया है? उन्होंने ने फ़रमाया: उन से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ा, मैंने उस में कुछ दुआए की है जो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुनी थी, जब वह (जाने के लिए) खड़े हुए तो उन लोगों में से एक आदमी, वह मेरे वालिद ही थे लेकिन उन्होंने अपना नाम छुपाए रखा उन के पीछे पीछे गया और उन से दुआ के मुतल्लिक दरियाफ्त किया, फिर वापस आ कर इसे लोगों को बताया: "ए अल्लाह! अपने इल्म ए गैब और मखलूक पर अपने कुदरत के ज़रिए इस वक़्त तक जिंदा रखना जब तक मेरा जिंदा रहना तेरे इल्म के मुताबिक मेरे लिए बेहतर हो, और जब तू समझे के मेरा फौत होना मेरे लिए बेहतर है तो मुझे फौत कर देना, ऐ अल्लाह! में गैब व हाज़िर में तुझ से कलिमा ए हक़ का सवाल करता हूँ, मैं फकर व गनी में तुझ से मियाने रिवाय (संयम) का सवाल करता हूँ, मैं ख़तम न होने वाली नेअमतो का तुझ से सवाल करता हूँ, मैं मुन्कतेअ न होने वाली आंखो की ठंडक का तुझ से सवाल करता हूँ, मैं कज़ा के बाद रज़ा का तुझ से सवाल करता हूँ, मैं मौत के बाद खुशगवार जिंदगी का तुझ से सवाल करता हूँ, मैं किसी शदीद तकलीफ और गुमराहकुन फितने के बगैर तेरी मुलाकात के शौक और तेरे चेहरे को देखने की लज्ज़त का तुझ से सवाल करता हूँ, ऐ अल्लाह! ज़ीनत ए ईमान से हमें सजावट फरमा और हमें हिदायत पर साबित रहने वाले हादी बना"| (हसन)

حسن ، رواه النسائی (3 / 75 ح 1307) [و صححه ابن حبان : 509]

٢٤٩٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ فِي دُبُرِ صَلَاةِ الْفَجْرِ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَعَمَلًا مُتَقَبَّلًا وَرِزْقًا طَيِّبًا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيّ فِي الدَّعوات الْكَبِير

2498. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ फजर की नमाज़ के बाद यह दुआ किया करते थे: "ए अल्लाह! में तुझ से नफा बख्श इल्म, मकबूल अमल और हलाल रीज़्क का सवाल करता हूँ"| (सहीह)

صحیح ، رواه احمد (6 / 294 ح 27056) و ابن ماجه (925) و البیهقی فی الدعوات الکبیر (1 / 76 ح 99)

٢٤٩٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي هريرةَ قَالَ: دُعَاءٌ حَفِظْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا أَدَعُهُ: «اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي

أَعْظِمُ شُكْرَكَ وَأُكْثِرُ ذِكْرَكَ وَأَتَّبِعُ نُصْحَكَ وَأَحْفَظُ وصيتك» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2499. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से एक दुआ याद की जिसे में छोड़ता नहीं, “ए अल्लाह! मुझे ऐसा बना दे की मैं तेरा बहोत ज़्यादा शुक्र करू, तेरा बहोत ज़्यादा ज़िक्र करू, तेरी नसीहत की बहोत इत्तेबा करू और तेरे अहकाम को बहोत ज़्यादा याद करू”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (3676 و قال : صحيح)

٢٥٠٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبدِ الله بنِ عَمْرٍو قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الصِّحَّةَ وَالْعِفَّةَ والأمانةَ وحُسنَ الْخلق والرضى بِالْقدرِ»

2500. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ दुआ करते थे: “ए अल्लाह! में तुझ से सेहत, अफत, अमानत, हसन अख़लाक़ और तकदीर पर राज़ी रहने का सवाल करता हूँ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى الدعوات الكبير (1 / 169 ح 228229) * فيه عبد الرحمن بن زياد بن انعم و شيخه عبد الرحمن بن رافع : ضعيفان

٢٥٠١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أُمِّ مَعْبدٍ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «اللَّهُمَّ طَهِّرْ قَلْبِي مِنَ النِّفَاقِ وَعَمَلِي مِنَ الرِّيَاءِ وَلِسَانِي مِنَ الْكَذِبِ وَعَيْنِي مِنَ الْخِيَانَةِ فَإِنَّكَ تَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ» . رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيُّ فِي الدَّعَوَاتِ الْكَبِيرِ

2501. उम्म मअबद रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह दुआ करते हुए सुना: “ए अल्लाह! मेरा दिल को निफ़ाक़ से, मेरे अमल को रिया से, मेरी ज़ुबान को झूठ से और मेरी आंखो को खयानत से पाक कर दे, क्योंकी तू खयानत करने वाली आंखो को जानता है और जो कुछ सीने (दिल) छुपाते है तो इसे भी जानता है”| इमाम बयहकी ने दोनों रिवायतों अल दअवात अल कुबरा में रिवायत की| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى الدعوات (1 / 168 ح 227) * فيه فرج بن فضالة عب عبد الرحمن بن زياد بن انعم و هما ضعيفان

٢٥٠٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَادَ رَجُلًا مِنَ [ص:٧٧ الْمُسْلِمِينَ قَدْ خَفَتَ فَصَارَ مِثْلَ الْفَرْخِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلْ كُنْتَ تَدْعُو اللَّهَ بِشَيْءٍ أَوْ تَسْأَلُهُ إِيَّاهُ؟» . قَالَ: نَعَمْ كُنْتُ أَقُولُ: اللَّهُمَّ مَا كُنْتَ مُعَاقِبِي بِهِ فِي الْآخِرَةِ فَعَجِّلْهُ لِي فِي الدُّنْيَا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " سُبْحَانَ اللَّهِ لَا تُطِيقُهُ وَلَا تَسْتَطِيعُهُ أَفَلَا قُلْتَ: اللَّهُمَّ آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ". قَالَ: فَدَعَا الله بِهِ فشفاه الله. رَوَاهُ مُسلم

2502. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने एक मुसलमान शख़्स की इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) की वह परिंदे के बच्चे की तरह कमज़ोर हो चूका था, रसूलुल्लाह ﷺ ने (इस की यह हालत देख कर) इसे फ़रमाया: “क्या तुम अल्लाह से कोई दुआ या किसी खास चिज़ का सवाल करते हो?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! में कहा करता था, ऐ अल्लाह! तूने जो मुझे आखिरत में सज़ा देनी है वह तू मुझे दुनिया में दे ले तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह तुम (दुनिया में) ना उसकी ताकत रखते हो न तुम (आखिरत में) उसकी इस्तिताअत रखते हो, तुमने ऐसे क्यों न कहा: ऐ अल्लाह! हमें दुनिया में भलाई अता फरमा और आखिरत में भलाई अता फरमा और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा”, रावी बयान करते हैं, इस शख़्स ने उन कलिमात के ज़रिए दुआ की तो अल्लाह ने इसे शिफा अता कर दी| (मुस्लिम)

رواه مسلم 23 / 2688)، (6835)

٢٥٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَنْبَغِي لِلْمُؤْمِنِ أَنْ يُذِلَّ نَفْسَهُ» . قَالُوا: وَكَيْفَ يُذِلُّ نَفْسَهُ؟ قَالَ: «يَتَعَرَّضُ مِنَ الْبَلَاءِ لِمَا لَا يُطِيقُ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث حسن غَرِيب

2503. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ किसी मोमिन की शान नहीं के वह अपने आप को ज़लील करे”, सहाबा ने अर्ज़ किया, वह अपने आप को कैसे ज़लील करता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ ऐसे मसाइब (तकलीफ) को दुआ या आमाल के ज़रिए दावत देता है, जिन की वह ताकत नहीं रखता”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा बयहकी की शौबुल ईमान और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2254) و ابن ماجه (4016) رواه البيهقى فى شعب الايمان (10823) * على بن زيد بن جدعان ضعيف و الحسن البصری مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة

٢٥٠٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: عَلَّمَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " قُلْ: اللَّهُمَّ اجْعَلْ سَرِيرَتِي خَيْرًا مِنْ عَلَانِيَتِي وَاجْعَلْ عَلَانِيَتِي صَالِحَةً اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ صَالِحِ مَا تُؤْتِي النَّاسَ مِنَ الْأَهْلِ وَالْمَالِ وَالْوَلَدِ غَيْرِ الضَّالِّ وَلَا الْمُضِلِّ " رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

2504. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे दुआ सिखाई तो फ़रमाया कहो: “ए अल्लाह! मेरा बातिन मेरे ज़ाहिर से बेहतर कर दे और मेरे ज़ाहिर को स्वालेह बना दे, ऐ अल्लाह! तूने जो लोगों को अहल व माल और औलाद दे रखी है मुझे उस से स्वालेह अता फरमा जो ना खुद गुमराह हो न गुमराह कुन”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3586 و قال : غريب ، ليس اسناده بالقوی) * عبد الرحمن بن اسحاق الكوفى ضعيف مشهور ، ضعفه الجمهور

كتاب الْمَنَاسِك • अफआल ए हज का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٢٥٠٥ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ:: خَطَبَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ فُرِضَ عَلَيْكُمُ الْحَجُّ فَحُجُّوا» فَقَالَ رَجُلٌ: أَكُلَّ عَامٍ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ فَسَكَتَ حَتَّى قَالَهَا ثَلَاثًا فَقَالَ: " لَوْ قُلْتُ: نَعَمْ لَوَجَبَتْ وَلَمَا اسْتَطَعْتُمْ " ثُمَّ قَالَ: ذَرُونِي مَا تَرَكْتُكُمْ فَإِنَّمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ بِكَثْرَةِ سُؤَالِهِمْ وَاخْتِلَافِهِمْ عَلَى أَنْبِيَائِهِمْ فَإِذَا أَمَرْتُكُمْ بِشَيْءٍ فَأْتُوا مِنْهُ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَإِذَا نَهَيْتُكُمْ عَنْ شَيْء فدَعُوه ". رَوَاهُ مُسلم

2505. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें खुत्बा इरशाद फ़रमाया: “लोगो! तुम पर हज फ़र्ज़ कर दिया गया है लिहाज़ा तुम हज करो”, किसी आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या हर साल? आप ख़ामोश रहे हत्ता कि उस ने तीन मर्तबा कहा, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: ” अगर में हाँ कह देता तो (फिर हर साल) वाजिब हो जाता और तुम इस्तिताअत न रखते”, फिर फ़रमाया: “जब तक में तुम्हें कोई मसअला न बताऊँ तो मुझे छोड़े रखो, तुम से पहले लोग अपने अंबिया से ज़्यादा सवाल करने और उन से इख्तिलाफ करने की वजह से हलाक हुए, जब में किसी चीज़ के बारे में तुम्हें हुक्म दू तो मक्दोर भर उस पर अमल करो और जब में किसी चीज़ से तुम्हें मना करू तो उसे छोड़ दो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (471 / 1337)، (3257)

٢٥٠٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: سُئِلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيُّ الْعَمَلِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: «إِيمَانٌ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ» قِيلَ: ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: «الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ» . قِيلَ: ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: «حَجٌّ مبرورٌ»

2506. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया गया कौन सा अमल अफज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: ” अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाना”, अर्ज़ किया गया, फिर कौन सा? आप ﷺ ने फ़रमाया: ” अल्लाह की राह में जिहाद करना”, अर्ज़ किया गया, फिर कौन सा? आप ﷺ ने फ़रमाया: ” हज ए मकबूल”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (26) و مسلم (135 / 83)، (248)

٢٥٠٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «مَنْ حَجَّ فَلَمْ يَرْفُثْ وَلَمْ يَفْسُقْ رَجَعَ كَيَوْمِ وَلَدَتْهُ أمه»

2507. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ” जो शख़्स अल्लाह के लिए हज

करे फिर वह ना गुनाह का काम करे न फहश गोई करे, तो वह (गुनाहों से पाक हो कर) इस रोज़ की तरह लौटता है जिस रोज़ उसकी वालिदा ने इसे जन्म दिया था”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1521) و مسلم (438 / 1350)، (3291)

٢٥٠٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْعُمْرَةُ إِلَى الْعُمْرَةِ كَفَّارَةٌ لِمَا بَيْنَهُمَا وَالْحَجُّ الْمَبْرُورُ لَيْسَ لَهُ جَزَاءٌ إِلا الجنَّةُ»

2508. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ उमरा दूसरे उमरा तक के दरमियानी वक्फा में होने वाले गुनाहों का कफ्फारा है, और हज ए मकबूल की जज़ा जन्नत है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1773) و مسلم (437 / 1349)، (3289)

٢٥٠٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِن عمْرَة فِي رَمَضَان تعدل حجَّة»

2509. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ रमज़ान में उमरा करना (सवाब के लिहाज़ से) हज के बराबर है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1782) و مسلم (221 / 1256)، (3038)

٢٥١٠ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَقِيَ رَكْبًا بِالرَّوْحَاءِ فَقَالَ: «مَنِ الْقَوْمُ؟» قَالُوا: الْمُسْلِمُونَ. فَقَالُوا: مَنْ أَنْتَ؟ قَالَ: «رَسُولُ اللَّهِ» فَرَفَعَتْ إِلَيْهِ امْرَأَةٌ صَبِيًّا فَقَالَتْ: أَلِهَذَا حَجٌّ؟ قَالَ: «نَعَمْ وَلَكِ أَجْرٌ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2510. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं की नबी ﷺ रव्हा के मक़ाम पर एक काफले से मिले तो आप ने पूछा: “कौन हो?” उन्होंने अर्ज़ किया, मुसलमान, फिर उन्होंने पूछा आप कौन है? आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ अल्लाह का रसूल”, एक औरत ने एक बच्चा उठाकर अर्ज़ किया, क्या उस का हज है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, और तुम्हारे लिए उस का अज़र है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (409 / 1336)، (3253)

٢٥١١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: إِنَّ امْرَأَةً مِنْ خَثْعَمَ قَالَتْ: يَا رَسُول الله إِن فَرِيضَة الله عِبَادِهِ فِي الْحَجِّ أَدْرَكَتْ أَبِي شَيْخًا كَبِيرًا لَا يَثْبُتُ عَلَى الرَّاحِلَةِ أَفَأَحُجُّ عَنْهُ؟ قَالَ: «نعم» ذَلِك حجَّة الْوَدَاع

2511. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, खसअम कबिले की एक औरत ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अल्लाह का अपने बंदो पर जो हज का फ़रीज़े है, उस ने मेरे बूढ़े बाप को इस हाल में पाया के वह सवारी पर सहीह तरह बैठ नहीं सकते, तो क्या मैं उनकी तरफ से हज करू? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ", और यह हज्जतुल वदा के मौके पर हुवा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1513) و مسلم (407 / 1334)، (3251)

٢٥١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: أَتَى رَجُلٌ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنَّ أُخْتِي نَذَرَتْ أَنْ تَحُجَّ وَإِنَّهَا مَاتَتْ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ كَانَ عَلَيْهَا دَيْنٌ أَكُنْتَ قَاضِيَهُ؟» قَالَ: نَعَمْ قَالَ: «فَاقْضِ دَيْنَ اللَّهِ فَهُوَ أَحَقُّ بِالْقَضَاءِ»

2512. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, मेरी बहन ने हज करने की नज़र मानी थी, लेकिन वह फौत हो चुकी है, तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: '' अगर उस पर क़र्ज़ होता तो किया तुम उसे अदा करते ?" उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! तो आप ﷺ ने फ़रमाया: '' फिर अल्लाह का क़र्ज़ भी अदा करो, वह तो अदाइगी का ज़्यादा हक़दार है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6699) و مسلم (155 / 1148)، (2694)

٢٥١٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَخْلُوَنَّ رَجُلٌ بِامْرَأَةٍ وَلَا تُسَافِرَنَّ امْرَأَةٌ إِلَّا وَمَعَهَا مَحْرَمٌ» . فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ اكْتُتِبْتُ فِي غَزْوَةِ كَذَا وَكَذَا وَخَرَجَتِ امْرَأَتِي حَاجَّةً قَالَ: «اذهبْ فاحجُجْ مَعَ امرأتِكَ»

2513. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' कोई आदमी ना किसी औरत के साथ खलवत इख़्तियार करे ना कोई औरत महरम के बगैर सफ़र करे", एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! फलां फलां गज़वा में मेरा नाम लिख लिया गया है, जबकि मेरी अहलिया हज करने का इरादा रखती है, आप ﷺ ने फ़रमाया: '' जाओ और अपने अहलिया के साथ हज करो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3006) و مسلم (424 / 1341)، (3272)

٢٥١٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: اسْتَأْذَنْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْجِهَادِ. فَقَالَ: «جهادكن الْحَج»

2514. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मेंने नबी ﷺ से जिहाद पर जाने की इजाज़त तलब की आप ﷺ ने फ़रमाया: '' तुम्हारा जिहाद हज है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2875) و مسلم (لم اجده)

٢٥١٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُسَافِرُ امْرَأَةٌ مَسِيرَةَ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ إِلَّا وَمَعَهَا ذُو محرم»

2515. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ कोई औरत महरम के बगैर एक दिन और एक रात का सफ़र ना करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1088) و مسلم (421 / 1339)، (3268)

٢٥١٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: وَقَّتَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ: ذَا الْحُلَيْفَةِ وَلِأَهْلِ الشَّامِ: الْجُحْفَةَ وَلِأَهْلِ نَجْدٍ: قَرْنَ الْمَنَازِلِ وَلِأَهْلِ الْيَمَنِ: يَلَمْلَمَ فَهُنَّ لَهُنَّ وَلِمَنْ أَتَى عَلَيْهِنَّ مِنْ غَيْرِ أَهْلِهِنَّ لِمَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ [ص:٧٧ فَمَنْ كَانَ دُونَهُنَّ فَمُهَلُّهُ مِنْ أَهْلِهِ وَكَذَاكَ وَكَذَاكَ حَتَّى أهل مَكَّة يهلون مِنْهَا

2516. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अहले मदीना के लिए ज़ुल हलिफा, अहले शाम के लिए जुह्फा, अहले नज़द के लिए कर्न मनाज़िल और अहले यमन के लिए यलमलम को मिकात मुकर्रर किया, वह उन के लिए है, और उन के अलावा इन रास्तो से आने वालो के लिए है, जबकि वह हज और उमरा अदा करने का इरादा रखते हो और जो उन मवाकित के अन्दर की जानिब रहता है तो वह अपने घर से इहराम बांधेगा और इस तरह और इस तरह हत्ता कि मक्का वाले मक्का से इहराम बांधेंगे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1526) ومسلم (11 / 1181)، (2803)

٢٥١٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مُهَلُّ أَهْلِ الْمَدِينَةِ مِنْ ذِي الْحُلَيْفَةِ وَالطَّرِيقُ الْآخَرُ الْجُحْفَةُ وَمُهَلُّ أَهْلِ الْعِرَاقِ مِنْ ذَاتِ عِرْقٍ وَمُهَلُّ أَهْلِ نَجْدٍ قَرْنٌ وَمُهَلُّ أَهْلِ الْيَمَنِ يَلَمْلَمُ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2517. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ और अहले मदीना ज़ुल हलिफा के मक़ाम पर इहराम बांधेंगे, जबकि दूसरे रास्तो वाले जुह्फा से अहले इराक ज़ात अर्क से अहले नज़द कर्न से और अहले यमन यलमलम से इहराम बांधेंगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (18 / 183)، (2810)

٢٥١٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: اعْتَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرْبَعَ عُمَرٍ كُلُّهُنَّ فِي ذِي الْقَعْدَةِ إِلَّا الَّتِي كَانَتْ مَعَ حَجَّتِهِ: عُمْرَةً مِنَ الْحُدَيْبِيَةِ فِي ذِي الْقَعْدَةِ وَعُمْرَةً مِنَ الْعَامِ الْمُقْبِلِ فِي ذِي الْقَعْدَةِ وَعُمْرَةً مِنَ الْجِعْرَانَةِ حَيْثُ قَسَّمَ غَنَائِمَ حُنَيْنٍ فِي ذِي الْقَعْدَةِ وَعُمْرَةً مَعَ حَجَّتِهِ "

2518. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने चार उमरे किए है, वह सब जुल कअदा में किए,

सिवाय उस उमरा के जो आप ने हज के साथ किया, आप ﷺ ने एक उमरा हुदैबिया से जुल कअदा में किया, एक उमरा अगले साल जुल कअदा में किया, एक उमरा जीअरान से जहाँ आप ने हुनैन का माले गनीमत तकसीम किया, वो भी जुल कअदा में और एक उमरा अपने हज के साथ किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (4148) و مسلم (217 / 1253)، (3033)

٢٥١٩ - (صَحِيح) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: اعْتَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي ذِي الْقَعْدَةِ قَبْلَ أَنْ يَحُجَّ مَرَّتَيْنِ ". رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

2519. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हज करने से पहले जुल कअदा में दो उमरे किए| (बुखारी)

رواہ البخاری (1781)

अफआल ए हज का बयान • كتاب الْمَنَاسِك

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٢٥٢٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ اللَّهَ كَتَبَ عَلَيْكُمُ الْحَجَّ» . فَقَامَ الْأَقْرَعُ بْنُ حَابِسٍ فَقَالَ: أَفِي كُلِّ عَامٍ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ [ص:٧٧ قَالَ: " لَوْ قُلْتُهَا: نَعَمْ لَوَجَبَتْ وَلَوْ وَجَبَتْ لَمْ تَعْمَلُوا بِهَا وَلَمْ تَسْتَطِيعُوا وَالْحَجُّ مَرَّةٌ فَمَنْ زَادَ فَتَطَوُّعٌ ". رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيّ والدارمي

2520. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ″ लोगो! अल्लाह ने तुम पर हज करना फ़र्ज़ करार दिया है″, तो इकरा बिन हाबिस रदियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या हर साल? आप ﷺ ने फ़रमाया: ″ अगर में हाँ कह देता तो (हर साल हज करना) वाजिब हो जाता, और अगर वाजिब हो जाता तो तुम ना अमल करते ना तुम इस्तिताअत रखते, और हज करना एक मर्तबा फ़र्ज़ है, और जो शख़्स ज़्यादा मर्तबा करे तो वह नफ्ली है″| (सहीह)

صحیح ، رواہ احمد (1 / 255 ح 2304) و النسائی (5 / 111 ح 2621) و الدارمی (2 / 29 ح 1795)

٢٥٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ مَلَكَ زَادًا وَرَاحِلَةً تُبَلِّغُهُ إِلَى بَيْتِ اللَّهِ وَلَمْ يَحُجَّ فَلَا عَلَيْهِ أَنْ يَمُوتَ يَهُودِيًّا أَوْ نَصْرَانِيًّا وَذَلِكَ أَنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى يَقُولُ: (وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حَجُّ الْبَيْتِ

مَنِ اسْتَطَاعَ إِليهِ سَبِيلا)»» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ. وَفِي إِسْنَادِهِ مَقَالٌ وَهِلَالُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ مَجْهُولٌ والْحَارث يضعف فِي الحَدِيث

2521. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जिस शख़्स के पास बैतुल्लाह तक पहुँचने के लिए रसद (माल सामान) और सवारी हो, वह फिर भी हज न करे तो फिर उस पर कोई फर्क नहीं के वह यहूदी हो कर फौत हो या नसरानी, और यह इसलिए है के अल्लाह तबारक व तआला फरमाता है, “और जो शख़्स बैतुल्लाह तक पहुँचने की इस्तिताअत रखता हो तो उस पर बैतुल्लाह का हज करना वाजिब है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है उसकी इसनाद पर कलाम किया गया है, जबकि हिलाल बिन अब्दुल्लाह मजहूल है और हारिस को हदीस में जईफ करार दिया गया है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه الترمذی (812) * الحارث الاعور ضعيف جدًا و للحديث شواهد ضعيفة عند البيهقی (4 / 334) و غيره

٢٥٢٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:»» لَا صَرُورَةَ فِي الْإِسلامِ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2522. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ इस्लाम में ’’ सरुरा “ (गौशा नशीनी इख़्तियार करना, शादी न करना, इस्तिताअत के बावजूद हज न करना वगैरा) नहीं है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1729) * و حقق الامام احمد و ابن معين و غيرهما بان فی السند عمر بن عطاء بن وراز هو ضعيف

٢٥٢٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَرَادَ الْحَجَّ فَلْيُعَجِّلْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد والدارمي

2523. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जो शख़्स हज का इरादा रखता हो तो वह जल्दी करे”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (1732) و الدارمی (2 / 28 ح 1791)

٢٥٢٤ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَابِعُوا بَيْنَ الْحَجِّ وَالْعُمْرَةِ فَإِنَّهُمَا يَنْفِيَانِ الْفَقْرَ وَالذُّنُوبَ كَمَا يَنْفِي الْكِيرُ خَبَثَ الْحَدِيدِ وَالذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَلَيْسَ لِلْحَجَّةِ الْمَبْرُورَةِ ثَوَابٌ إِلَّا الْجَنَّةَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ

2524. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ हज और उमरा पे दर पे (एक

के बाद दूसरा) करो, क्योंकि वह फकीरी और गुनाहों को इस तरह ख़तम कर देते हैं जिस तरह भट्टी लोहे, सोने और चाँदी की मेल दूर कर देती है, और हज ए मकबूल की जज़ा सिर्फ जन्नत ही है"| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (810 و قال : حسن صحيح غريب) و النسائى (5 / 115116 ح 2632)

٢٥٢٥ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ مَاجَهْ عَنْ عُمَرَ إِلَى قَوْله: «خبث الْحَدِيد»

2525. इमाम अहमद और इब्ने माजा ने उमर रदियल्लाहु अन्हु से (خبث الْحَدِيد) तक रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (1 / 25 ح 167) و ابن ماجه (2887)

٢٥٢٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا يُوجِبُ الْحَجَّ؟ قَالَ: «الزَّادُ وَالرَّاحِلَة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

2526. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ, तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! वुजुबे हज की शर्त क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: '' रसद (माल सामान) और सवारी"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (813 و قال : حسن) و ابن ماجه (2896) * ابراهيم يزيد الخوزى ضعيف و للحديث طرق ضعيفة عن انس و عائشة و غيرهما

٢٥٢٧ - (حسن) وَعَنْهُ قَالَ: سَأَلَ رَجُلٌ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: مَا الْحَاج؟ فَقَالَ: «الشعث التَّفْل» . فَقَامَ آخَرُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ الْحَجِّ أَفْضَلُ؟ قَالَ: «الْعَجُّ وَالثَّجُّ» . فَقَامَ آخَرُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا السَّبِيلُ؟ قَالَ: «زَادٌ وَرَاحِلَةٌ» رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ. وَرَوَى ابْنُ مَاجَهْ فِي سُنَنِهِ إِلَّا أَنَّهُ لَمْ يذكر الْفَصْل الْأَخير

2527. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया: हाजी की सिफत क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: '' परान्दा बिखरे हुए बाल और मेल कुचेल", फिर दूसरा आदमी खड़ा हुआ और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! कौन सा हज अफज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: '' बुलंद आवाज़ से तकबीर कहना और कुर्बानी का खून बहाना", फिर एक और खड़ा हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, रास्ते से क्या मुराद है? आप ﷺ ने फ़रमाया: '' रसद (माल सामान) और सवारी"| शरह सुन्ना और इमाम इब्ने माजा ने इसे अपने सुनन में रिवायत किया लेकिन उन्होंने आखिरी बात (रास्ते से क्या मुराद है?) ज़िक्र नहीं की| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (7 / 14 ح 1847) و ابن ماجه (2896) * ابراهيم بن يزيد الخوزى ضعيف و انظر الحديظ السابق (2526)

٢٥٢٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي رَزِينٍ الْعُقَيْلِيِّ أَنَّهُ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَبِي شَيْخٌ كَبِيرٌ لَا يَسْتَطِيعُ الْحَجَّ وَلَا الْعُمْرَةَ وَلَا الظَّعْنَ قَالَ: «حُجَّ عَنْ أَبِيكَ وَاعْتَمِرْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

2528. अबू रजीन उकय्ली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरे वालिद बहोत बूढ़े हैं, वह हज उमरे की ना इस्तिताअत रखते है न सवारी कर सकते है, आप ﷺ ने फ़रमाया: '' अपने वालिद की तरफ से हज उमरा कर”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (930) و ابوداؤد (1810) و النسائی (5 / 111 ح 2622) [و صححه ابن خزيمة (3040) و ابن حبان (961) و ابن الجارود (500) و الحاکم (1 / 481) علی شرط الشيخين و وافقه الذهبی]

٢٥٢٩ - (صَحِيح) مَرْفُوع وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَمِعَ رَجُلًا يَقُولُ لَبَّيْكَ عَنْ شُبْرُمَةَ قَالَ: «مَنْ شُبْرُمَةُ» قَالَ: أَخٌ لِي أَوْ قَرِيبٌ لِي قَالَ: «أَحَجَجْتَ عَنْ نَفْسِكَ؟» قَالَ: لَا قَالَ: «حُجَّ عَنْ نَفْسِكَ ثُمَّ حُجَّ عَنْ شُبْرُمَةَ» . رَوَاهُ الشَّافِعِيُّ وَأَبُو دَاوُد وابنُ مَاجَه

2529. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने किसी आदमी को शुबरुमः की तरफ से तल्बिया (लब्बैक) कहते हुए सुना तो आप ﷺ ने फ़रमाया: '' शुबरुमः कौन है? ''उस ने कहा मेरा भाई हैं या मेरा कोई करीबी है, आप ﷺ ने फ़रमाया: '' क्या तुम ने खुद हज किया हुआ है? ''उस ने अर्ज़ किया, नहीं? आप ﷺ ने फ़रमाया: '' पहले अपने तरफ से हज करो, फिर शुबरुमः की तरफ से हज करना”| (हसन)

حسن ، رواه الشافعی فی الام (2 / 123) و ابوداؤد (1811) و ابن ماجه (2903)

٢٥٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: وَقَّتَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِأَهْلِ الْمَشْرِقِ الْعَقِيقَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

2530. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अहले मशरिक के लिए अकिक को मिकात करार दिया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (832) و ابوداؤد (1740) * فيه يزيد بن ابی زياد ضعيف مدلس

٢٥٣١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَّتَ لِأَهْلِ الْعِرَاقِ ذَاتَ عِرْقٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

2531. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने अहले इराक के लिए ज़ाते अर्क को मिकात

करार दिया| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (1739) و النسائی (5 / 125 ح 2657)

٢٥٣٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " مَنْ أَهَلَّ بِحَجَّةٍ أَوْ عُمْرَةٍ مِنَ الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى إِلَى الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَأَخَّرَ أَوْ وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

2532. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स मस्जिद ए अक्सा से मस्जिद ए हराम के लिए हज्ज या उमरा का इहराम बांधे तो उस के अगले पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं, या उस के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1741) و ابن ماجه (30013002) * حکیمة و ثقها ابن حبان و حده الحدیث ضعیفه البخاری (و یره وھو الراجح

كتاب الْمَنَاسِك • अफआल ए हज का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٥٣٣ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ أَهْلُ الْيَمَنِ يَحُجُّونَ فَلَا يَتَزَوَّدُونَ وَيَقُولُونَ: نَحْنُ الْمُتَوَكِّلُونَ فَإِذَا قَدِمُوا مَكَّةَ سَأَلُوا النَّاسَ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: (وتزَوَّدُوا فإنَّ خيرَ الزَّادِ التَّقوى)»» رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2533. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, अहले यमन हज करते तो वह रसद (माल सामान) साथ नहीं लेते थे और वह कहते थे हम तवक्कुल करने वाले हैं, लेकिन जब वह मक्का पहुँच जाते तो फिर लोगों से सवाल करते, तब अल्लाह तआला ने आयत नाज़िल फरमाई: “रसद (माल सामान) ले लिया करो और बेहतरीन रसद (माल सामान) तक़्वा है”| (बुखारी)

رواه البخاری (1523)

٢٥٣٤ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ عَلَى النِّسَاءِ جِهَادٌ؟ قَالَ: " نَعَمْ عَلَيْهِنَّ جِهَادٌ لَا قِتَالَ فِيهِ: الْحَجُّ وَالْعُمْرَةُ ". رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه

2534. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मेंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या औरतो पर जिहाद

फ़र्ज़ है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, इन पर जिहाद फ़र्ज़ है लेकिन उनमें किताल नहीं? और वह जिहाद हज उमराह है”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابن ماجه (2901)

٢٥٣٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ لَمْ يَمْنَعْهُ مِنَ الْحَجِّ حَاجَةٌ ظَاهِرَةٌ أَوْ سُلْطَانٌ جَائِرٌ أَوْ مَرَضٌ حَابِسٌ فَمَاتَ وَلَمْ يَحُجَّ فَلْيَمُتْ إِنْ شَاءَ يَهُودِيًّا وَإِنْ شَاءَ نَصْرَانِيًّا» . رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

2535. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जिस शख़्स को कोई ज़ाहिरी हाजत (रसद (माल सामान) और सवारी की अदम दस्तियाबी) या ज़ालिम बादशाह या (सफ़र से) रोकने वाला मर्ज़ हज से न रोके और वह फिर भी हज किए बगैर फौत हो जाए तो फिर अगर वह चाहे तो यहूदी हो कर मरे और अगर चाहे तो नसरानी हो कर”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (2 / 29 ح 1792 ، نسخة محققة : 1826) * ليث بن ابی سليم ضعيف و شريک القاضی مدلس و عنعن

٢٥٣٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: «الْحَاجُّ وَالْعُمَّارُ وَفْدُ اللَّهِ إِنْ دَعَوْهُ أجابَهمْ وإنِ استَغفروهُ غَفرَ لهمْ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

2536. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: ’’ हज और उमरा करने वाले, अल्लाह के तकर्रुब का क़सद करने वाले हैं, अगर वह उस से दुआ करे तो वह उनकी दुआ कबूल फरमाए और अगर वह उस से मगफिरत तलब करे तो वह उन्हें बख्श दे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه ابن ماجه (2892) * صالح بن عبدالله بن صالح منكر الحديث

٢٥٣٧ - (حسن) وَعَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «وَفْدُ اللَّهِ ثَلَاثَةٌ الْغَازِي وَالْحَاجُّ وَالْمُعْتَمِرُ» . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَان

2537. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “तीन किस्म के लोग मुजाहिद, हाजी और उमरा करने वाले, अल्लाह के तकर्रुब का क़सद करने वाले हैं”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه النسائی (6 / 16 ح 3123) و البيهقی فی شعب الايمان (4103) [و صححه ابن خزيمة (2511) و ابن حبان (965) و الحاكم علی شرط مسلم (1 / 441) و وافقه الذهبی]

٢٥٣٨ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا لَقِيتَ الْحَاجَّ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ وَصَافِحْهُ وَمُرْهُ أَنْ يَسْتَغْفِرَ لَكَ قَبْلَ أَنْ يَدْخُلَ بَيْتَهُ فَإِنَّهُ مَغْفُورٌ لَهُ» . رَوَاهُ أَحْمد

2538. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' जब तुम हाजी से मिलो तो उसे सलाम करो, उस से मुसाफा करो और उस से पहले के वह अपने घर में दाखिल हो, उस से दरख्वास्त करो के वह तुम्हारे लिए मगफिरत तलब करे, क्योंकि उसकी मगफिरत हो चुकी है (और ऐसे शख़्स की दुआ कबूल होती है)"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه احمد (2 / 69 ح 5371) [و ابن حبان فی المجروحین (2 / 265)] * فیه محمد بن الحارث الحارثی (ضعیف) عن محمد بن عبد الرحمن بن البیلمانی (ضعیف وقد اتهمه ابن عدی و ابن حبان) عن ابیه (ضعیف) عن ابن عمر به

٢٥٣٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ خَرَجَ حَاجًّا أَوْ مُعْتَمِرًا أَوْ غَازِيًا ثُمَّ مَاتَ فِي طَرِيقِهِ كَتَبَ اللَّهُ لَهُ أَجْرَ الْغَازِي وَالْحَاجِّ والمعتمِرِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

2539. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' जो शख़्स हज्ज या उमरा या जिहाद करने के लिए रवाना हो, फिर वह उस के रास्ते में (अमल करने से पहले) फौत हो जाए तो अल्लाह उस के लिए जिहाद करने वाले, हज करने वाले और उमरा करने वाले का अज़र अता फरमाता है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (4100 ، نسخة محققة : 3806) [و الطبرانی فی الوسط 6 / 155 ح 5317] * فیه محمد بن اسحاق مدلس و عنعن و حمید : صوابه جمیل (بن ابی میمونة) و ثقه ابن حبان وحده و الحسین بن عبد الاول مجروح ، ضعفه الجمهور

इहराम और तलबिहा का बयान • بَاب الْإِحْرَام والتلبية

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٥٤٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كُنْتُ أُطَيِّبُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِإِحْرَامِهِ قَبْلَ أَنْ يُحْرِمَ وَلِحِلِّهِ قَبْلَ أَنْ يَطُوفَ بِالْبَيْتِ بِطِيبٍ فِيهِ مِسْكٌ كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى وَبِيصِ الطِّيبِ فِي مَفَارِقِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ مُحْرِمٌ

2540. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को आप के इहराम बांधने से पहले खुशबू लगाया करती थी, और इसी तरह जब तवाफ़ (इफादा) से पहले इहराम खोल देते तो आप ﷺ को कस्तूरी की खुशबू लगाया करती थी गोया मैं रसूलुल्लाह ﷺ की मांग में जबकि आप हालत ए इहराम में थे खुशबू की चमक देख रही हूँ| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1539) و مسلم (33 / 1189)، (2826)

٢٥٤١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُهِلُّ مُلَبِّدًا يَقُولُ: «لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ» . لَا يَزِيدُ عَلَى هَؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ

2541. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को तल्बिया कहते हुए सुना, जबकि आप बाल जमाए हुए थे, आप ﷺ फरमा रहे थे: “मैं हाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह! में हाज़िर हूँ, आप का कोई शरीक नहीं, बेशक हर किस्म की तारीफ़, तमाम नेअमतें और बादशाहत तेरी ही लिए है और तेरा कोई शरीक नहीं, ‘‘ आप ﷺ उन कलिमात में कोई इज़ाफा नहीं करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5951) و مسلم (21 / 1184)، (2814)

٢٥٤٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَدْخَلَ رِجْلَهُ فِي الْغَرْزِ وَاسْتَوَتْ بِهِ نَاقَتُهُ قَائِمَةً أَهَلَّ مِنْ عِندِ مسجدِ ذِي الحليفة

2542. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ अपना पाँव रकाब में रख लेते और आप की ऊंटनी आप को लेकर सीधी खड़ी हो जाती तो आप ज़ुल हलिफा की मस्जिद के पास तल्बिया पुकारते| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2865) و مسلم (27 / 1187)، (2820)

٢٥٤٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَصْرُخُ بِالْحَجِّ صراخا. رَوَاهُ مُسلم

2543. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ (हज के लिए) रवाना हुए तो हम बुलंद आवाज़ से हज का तल्बिया पुकारते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (211 / 1247)، (3023)

٢٥٤٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ رَدِيفَ أَبِي طَلْحَةَ وَإِنَّهُمْ لَيَصْرُخُونَ بهما جَمِيعًا: الْحَج وَالْعمْرَة. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2544. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु के पीछे सवारी पर सवार था और वह (सहाबा किराम) हज और उमरा का इकट्ठा तल्बिया कह रहे थे| (बुखारी)

رواه البخاری (2986)

٢٥٤٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ فَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِعُمْرَةٍ وَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِحَجٍّ وَعُمْرَةٍ وَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِالْحَجِّ وَأَهَلَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْحَجِّ فَأَمَّا مَنْ أَهَلَّ بِعُمْرَةٍ فَحَلَّ وَأَمَّا مَنْ أَهَلَّ بِالْحَجِّ أَوْ جَمَعَ الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ فَلَمْ يَحِلُّوا حَتَّى كَانَ يَوْمُ النَّحْرِ

2545. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, हम हज्जतुल वदा के साल रसूलुल्लाह ﷺ के साथ रवाना हुए, हम में से किसी ने उमरा का तल्बिया पुकारा, किसी ने हज और उमरा का और किसी ने हज का तल्बिया पुकारा, जबकि रसूलुल्लाह ﷺ ने हज का तल्बिया पुकारा, जिस ने उमरे का तल्बिया पुकारा था उस ने इहराम खोल दिया, और जिन्होंने हज्ज या हज और उमरा दोनों का इहराम बांधा थे तो उन्होंने दस ज़ुलहिज्जा तक इहराम न खोला| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1562) و مسلم (117 / 1211)، (2917)

٢٥٤٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: تَمَتَّعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ بدأَ فأهلَّ بالعمْرةِ ثمَّ أهلَّ بالحجّ

2546. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हज्जतुल वदा के मौके पर हज के साथ उमरा मिलाया था, आप ﷺ ने पहले उमरे के लिए तल्बिया कहा और फिर हज के लिए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1961) و مسلم (174 / 1227)، (2982)

इहराम और तलबिहा का बयान • بَاب الْإِحْرَام والتلبية

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٢٥٤٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَجَرَّدَ لِإِهْلَالِهِ وَاغْتَسَلَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ والدارمي

2547. ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ को देखा के आप ने इहराम बांधने के लिए अपना लिबास उतारा और ग़ुस्ल किया (फिर इहराम बांधा)| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (830 و قال : حسن غریب) و الدارمی (2 / 31 ح 1801)

٢٥٤٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَبَّدَ رَأْسَهُ بِالْغِسْلِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2548. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने ग़ुस्ल की चीजों (खत्मी और गोंद वगैरा) से अपने सिर के बालो को जलाया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1748) * فیه محمد بن اسحاق مدلس و عنعن

٢٥٤٩ - (صَحِيح) وَعَنْ خَلَّادِ بْنِ السَّائِبِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «أَتَانِي جِبْرِيلُ فَأَمَرَنِي أَنْ آمُرَ أَصْحَابِي أَنْ يرفَعوا أصواتَهم بالإِهْلالِ أَو التَّلبيَةِ» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

2549. खल्लाद बिन साइब अपने वालिद से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' जिब्राइल अलैहिस्सलाम मेरे पास तशरीफ़ लाए तो उन्होंने मुझे फ़रमाया की मैं अपने सहाबा को बुलंद आवाज़ से तल्बिया पुकारने का हुक्म दू''| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه مالک (1 / 334 ح 751) و الترمذی (829 و قال : حسن صحیح) و ابوداؤد (1814) و النسائی (5 / 162 ح 2754) و ابن ماجه (2922) و الدارمی (2 / 34 ح 1816)

٢٥٥٠ - (صَحِيح) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَا مِنْ مُسْلِمٍ يُلَبِّي إِلَّا لَبَّى مَنْ عَنْ يَمِينِهِ وَشِمَالِهِ: مِنْ حَجَرٍ أَوْ شَجَرٍ أَوْ مَدَرٍ حَتَّى تنقطِعَ الأَرضُ منْ هَهُنا وهَهُنا ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

2550. सहल बिन साद बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' जब कोई मुसलमान तल्बिया पुकारता है तो उस के दाएँ और बाएँ ज़मीन के आखिरी किनारों तक तमाम पथ्थर, तमाम दरख्त और मिट्टी के तमाम ढेले

तल्बिया पुकारते है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (828) و ابن ماجه (2921)

٢٥٥١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْكَعُ بِذِي الْحُلَيْفَةِ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ إِذَا اسْتَوَتْ بِهِ النَّاقَةُ قَائِمَةً عِنْدَ مَسْجِدِ ذِي الْحُلَيْفَةِ أَهَلَّ بِهَؤُلَاءِ الْكَلِمَاتِ وَيَقُولُ: «لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ فِي يَدَيْكَ لَبَّيْكَ وَالرَّغْبَاءُ إِلَيْكَ وَالْعَمَل» . مُتَّفق عَلَيْهِ وَلَفظه لمُسلم

2551. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ज़ुल हलिफा के मक़ाम पर दो रकते पढ़ते, फिर ज़ुल हलिफा की मस्जिद के पास ऊंटनी आप को लेकर सीधी खड़ी हो जाती तो आप उन कलिमात के साथ तल्बिया पुकारते: “मैं हाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह! में हाज़िर हूँ, तमाम सआदते और भलाईयां तेरे हाथो में है, मैं हाज़िर हूँ, रगबत और तलबे खैर तेरी ही तरफ है और अमल तेरी ही लिए है”| बुखारी, मुस्लिम, और अल्फाज़ हदीस मुस्लिम के है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1553) و مسلم (21 / 1184)، (2814)

٢٥٥٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عِمَارَةَ بْنِ خُزَيْمَةَ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ إِذَا فَرَغَ مِنْ تَلْبِيَتِهِ سَأَلَ اللَّهَ رِضْوَانَهُ وَالْجَنَّةَ وَاسْتَعْفَاهُ بِرَحْمَتِهِ مِنَ النَّارِ. رَوَاهُ الشَّافِعِي

2552. उमारत बिन खुजैमा बिन साबित अपने वालिद से और वह नबी ﷺ से रिवायत करते हैं के जब आप तल्बिया से फारिग़ होते तो अल्लाह से उसकी रज़ामंदी और जन्नत का सवाल करते और उसकी रहमत के ज़रिए जहन्नम से बचाव की दरख्वास्त करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الشافعی فی الام (2 / 157) [و البیهقی (5 / 46)] * فیه صالح بن محمد بن زائدة : ضعیف

इहराम और तलबिहा का बयान • بَاب الْإِحْرَام والتلبية

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٢٥٥٣ - (صَحِيح) عَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا أَرَادَ الْحَجَّ أَذَّنَ فِي النَّاسِ فَاجْتَمَعُوا فَلَمَّا أَتَى الْبَيْدَاءَ أَحْرَمَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2553. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने हज करने का इरादा फ़रमाया तो लोगों में एलान किया, वह इकठ्ठे हो गए, जब आप ﷺ '' बयदाअ '' के मक़ाम पर तशरीफ़ लाए तो इहराम बांधा। (बुखारी)

صحيح ، رواه البخارى (لم اجده) [و الترمذى (817) و اصله فى صحيح مسلم (1218)] * قال الشيخ عبدالله المباركفورى فى مرعاة المفاتيح :'' هذا ليس فى صحيح البخارى ، لا بلفظه ولا بمعناه''

٢٥٥٤ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ الْمُشْرِكُونَ يَقُولُونَ: لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ فَيَقُولُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَيْلَكُمْ قَدْ قَدْ» إِلَّا شَرِيكًا هُوَ لَكَ تَمْلِكُهُ وَمَا مَلَكَ. يَقُولُونَ هَذَا وَهُمْ يَطُوفُونَ بِالْبَيْتِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2554. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मुशरिक कहा करते थे: हम हाज़िर है, तेरा कोई शरीक नहीं, तो रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते: "तुम पर अफ़सोस है", बस बस इतना ही कहो", (फिर वह मुशरिक कहते) मगर तेरा वह शरीक है जिसका तू मालिक है और (इस चिज़ का भी तो मालिक है) जिस का वह मालिक है, और वह बैतुल्लाह का तवाफ़ करते वक़्त यह कहा करते थे। (मुस्लिम)

رواه مسلم (22 / 1185)، (2815)

بَاب قصَّة حجَّة الْوَدَاع • हज्जतुल वदा का वाकेआ

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٢٥٥٥ - (صَحِيح) عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَكَثَ بِالْمَدِينَةِ تِسْعَ سِنِينَ لَمْ يَحُجَّ ثُمَّ أَذَّنَ فِي النَّاسِ بالحجِّ فِي الْعَاشِرَةِ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَاجٌّ فَقَدِمَ الْمَدِينَةَ بَشَرٌ كَثِيرٌ فَخَرَجْنَا مَعَهُ حَتَّى إِذَا أَتَيْنَا ذَا الْحُلَيْفَةِ فَوَلَدَتْ أَسْمَاءُ بِنْتُ عُمَيْسٍ مُحَمَّدَ بْنَ أَبِي بَكْرٍ فَأَرْسَلَتْ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: كَيْفَ أصنعُ؟ قَالَ: «اغتسِلي واستثفري بِثَوْبٍ وَأَحْرِمِي» فَصَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَسْجِدِ ثُمَّ رَكِبَ الْقَصْوَاءَ حَتَّى إِذَا اسْتَوَتْ بِهِ نَاقَتُهُ عَلَى الْبَيْدَاءِ أَهَلَّ بِالتَّوْحِيدِ «لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ» . قَالَ جَابِرٌ: لَسْنَا نَنْوِي إِلَّا الْحَجَّ لَسْنَا نَعْرِفُ الْعُمْرَةَ حَتَّى إِذَا أَتَيْنَا الْبَيْتَ مَعَهُ اسْتَلَمَ الرُّكْنَ فَطَافَ سَبْعًا فَرَمَلَ ثَلَاثًا وَمَشَى أَرْبَعًا ثُمَّ تَقَدَّمَ إِلَى مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ فَقَرَأَ: (وَاتَّخِذُوا مِنْ مَقَامِ إبراهيمَ مُصَلًّى)»» فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ فَجَعَلَ الْمَقَامَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْبَيْتِ وَفِي رِوَايَةٍ: أَنَّهُ قَرَأَ فِي الرَّكْعَتَيْنِ: [ص:٧٨] (قُلْ هوَ اللَّهُ أَحَدٌ و (قُلْ يَا أيُّها الكافِرونَ)»» ثُمَّ رَجَعَ إِلَى الرُّكْنِ فَاسْتَلَمَهُ ثُمَّ خَرَجَ مِنَ الْبَابِ إِلَى الصَّفَا فَلَمَّا دَنَا مِنَ الصَّفَا قَرَأَ: (إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شعائِرِ اللَّهِ)»» أَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللَّهُ بِهِ فَبَدَأَ بِالصَّفَا فَرَقِيَ عَلَيْهِ حَتَّى رَأَى الْبَيْتَ فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ فَوَحَّدَ اللَّهَ وَكَبَّرَهُ وَقَالَ: «لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ أَنْجَزَ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ» . ثُمَّ دَعَا بَيْنَ ذَلِكَ

قَالَ مِثْلَ هَذَا ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ نَزَلَ وَمَشَى إِلَى الْمَرْوَةِ حَتَّى انْصَبَّتْ قَدَمَاهُ فِي بَطْنِ الْوَادِي ثُمَّ سَعَى حَتَّى إِذَا صَعِدْنَا مَشَى حَتَّى أَتَى الْمَرْوَةَ فَفَعَلَ عَلَى الْمَرْوَةِ كَمَا فَعَلَ عَلَى الصَّفَا حَتَّى إِذَا كَانَ آخِرُ طَوَافٍ عَلَى الْمَرْوَةِ نَادَى وَهُوَ عَلَى الْمَرْوَةِ وَالنَّاسُ تَحْتَهُ فَقَالَ: «لَوْ أَنِّي اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ لَمْ أسق الهَدْيَ وجعلتُها عُمْرَةً فمنْ كانَ مِنْكُم لَيْسَ مَعَهُ هَدْيٌ فَلْيَحِلَّ وَلْيَجْعَلْهَا عُمْرَةً» . فَقَامَ سُرَاقَةُ بْنُ مَالِكِ بْنِ جُعْشُمٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلِعَامِنَا هَذَا أَمْ لِأَبَدٍ؟ فَشَبَّكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَصَابِعَهُ وَاحِدَةً فِي الْأُخْرَى وَقَالَ: «دَخَلَتِ الْعُمْرَةُ فِي الْحَجِّ مَرَّتَيْنِ لَا بَلْ لِأَبَدِ أَبَدٍ» . وَقَدِمَ عَلِيٌّ مِنَ الْيَمَنِ بِبُدْنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَهُ: «مَاذَا قُلْتَ حِينَ فَرَضْتَ الْحَجَّ؟» قَالَ: قُلْتُ: اللهُمَّ إِنِّي أُهِلُّ بِمَا أهلَّ بهِ [ص:٧٨ رسولُكَ قَالَ: «فَإِنَّ مَعِي الْهَدْيَ فَلَا تَحِلَّ» . قَالَ: فَكَانَ جَمَاعَةُ الْهَدْيِ الَّذِي قَدِمَ بِهِ عَلِيٌّ مِنَ الْيَمَنِ وَالَّذِي أَتَى بِهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِائَةً قَالَ: فَحَلَّ النَّاسُ كُلُّهُمْ وَقَصَّرُوا إِلَّا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم وَمن كَانَ مَعَه من هدي فَمَا كَانَ يَوْمُ التَّرْوِيَةِ تَوَجَّهُوا إِلَى مِنًى فَأَهَلُّوا بِالْحَجِّ وَرَكِبَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَصَلَّى بِهَا الظُّهْرَ وَالْعَصْرَ وَالْمَغْرِبَ وَالْعِشَاءَ وَالْفَجْرَ ثُمَّ مَكَثَ قَلِيلًا حَتَّى طَلَعَتِ الشَّمْسُ وَأَمَرَ بِقُبَّةٍ مِنْ شَعَرٍ تُضْرَبُ لَهُ بِنَمِرَةَ فَسَارَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَا تَشُكُّ قُرَيْشٌ إِلَّا أَنَّهُ وَاقِفٌ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ كَمَا كَانَتْ قُرَيْشٌ تَصْنَعُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَأَجَاز رَسُول الله صلى حَتَّى أَتَى عَرَفَةَ فَوَجَدَ الْقُبَّةَ قَدْ ضُرِبَتْ لَهُ بِنَمِرَةَ فَنَزَلَ بِهَا حَتَّى إِذَا زَاغَتِ الشَّمْسُ أَمَرَ بِالْقَصْوَاءِ فَرُحِلَتْ لَهُ فَأَتَى بَطْنَ الْوَادِي فَخَطَبَ النَّاسَ وَقَالَ: «إِنَّ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ حَرَامٌ عَلَيْكُمْ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا فِي شَهْرِكُمْ هَذَا فِي بَلَدِكُمْ هَذَا أَلَا كُلُّ شَيْءٍ مِنْ أَمْرِ الْجَاهِلِيَّةِ تَحْتَ قَدَمَيَّ مَوْضُوعٌ وَدِمَاءُ الْجَاهِلِيَّةِ مَوْضُوعَةٌ وَإِنَّ أَوَّلَ دَمٍ أَضَعُ مِنْ دِمَائِنَا دَمُ ابْنِ رَبِيعَةَ بْنِ الْحَارِثِ وَكَانَ مُسْتَرْضَعًا فِي بَنِي سَعْدٍ فَقَتَلَهُ هُذَيْلٌ وَرِبَا الْجَاهِلِيَّةِ مَوْضُوعٌ وَأَوَّلُ رِبًا أَضَعُ مِنْ رِبَانَا رِبَا عَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ فَإِنَّهُ مَوْضُوعٌ كُلُّهُ فَاتَّقُوا اللَّهَ فِي النِّسَاءِ فَإِنَّكُمْ أَخَذْتُمُوهُنَّ بِأَمَانِ اللَّهِ وَاسْتَحْلَلْتُمْ فُرُوجَهُنَّ بِكَلِمَةِ اللَّهِ وَلَكُمْ عَلَيْهِنَّ أَنْ لَا يُوطِئْنَ فُرُشَكُمْ أَحَدًا تَكْرَهُونَهُ فَإِنْ فَعَلْنَ ذَلِكَ فَاضْرِبُوهُنَّ ضَرْبًا غَيْرَ مُبَرِّحٍ وَلَهُنَّ عَلَيْكُمْ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَقَدْ تَرَكْتُ فِيكُمْ مَا لَنْ تَضِلُّوا بَعْدَهُ إِنِ اعْتَصَمْتُمْ بِهِ كِتَابَ اللَّهِ وَأَنْتُمْ [ص:٧٨ تُسْأَلُونَ عَنِّي فَمَا أَنْتُمْ قَائِلُونَ؟» قَالُوا: نَشْهَدُ أَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ وَأَدَّيْتَ وَنَصَحْتَ. فَقَالَ بِإِصْبَعِهِ السَّبَّابَةِ يَرْفَعُهَا إِلَى السَّمَاءِ وَيَنْكُتُهَا إِلَى النَّاسِ: «اللَّهُمَّ اشْهَدْ اللَّهُمَّ اشْهَدْ» ثَلَاثَ مَرَّاتٍ ثُمَّ أَذَّنَ بِلَالٌ ثُمَّ أَقَامَ فَصَلَّى الظُّهْرَ ثُمَّ أَقَامَ فَصَلَّى الْعَصْرَ وَلَمْ يُصَلِّ بَيْنَهُمَا شَيْئًا ثُمَّ رَكِبَ حَتَّى أَتَى الْمَوْقِفَ فَجَعَلَ بَطْنَ نَاقَتِهِ الْقَصْوَاءِ إِلَى الصَّخَرَاتِ وَجَعَلَ حَبْلَ الْمُشَاةِ بَيْنَ يَدَيْهِ وَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ فَلَمْ يَزَلْ وَاقِفًا حَتَّى غَرَبَتِ الشَّمْسُ وَذَهَبَتِ الصُّفْرَةُ قَلِيلًا حَتَّى غَابَ الْقُرْصُ وَأَرْدَفَ أُسَامَةَ وَدَفَعَ حَتَّى أَتَى الْمُزْدَلِفَةَ فَصَلَّى بِهَا الْمَغْرِبَ وَالْعَشَاءَ بِأَذَانٍ وَاحِدٍ وَإِقَامَتَيْنِ وَلَمْ يُسَبِّحْ بَيْنَهُمَا شَيْئًا ثُمَّ اضْطَجَعَ حَتَّى طَلَعَ الْفَجْرُ فَصَلَّى الْفَجْرَ حِينَ تَبَيَّنَ لَهُ الصُّبْحُ بِأَذَانٍ وَإِقَامَةٍ ثُمَّ رَكِبَ الْقَصْوَاءَ حَتَّى أَتَى الْمَشْعَرَ الْحَرَامَ فَاسْتَقْبَلَ الْقِبْلَةَ فَدَعَاهُ وَكَبَّرَهُ وَهَلَّلَهُ وَوَحَّدَهُ فَلَمْ يَزَلْ وَاقِفًا حَتَّى أَسْفَرَ جِدًّا فَدَفَعَ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ وَأَرْدَفَ الْفَضْلَ بْنَ عَبَّاسٍ حَتَّى أَتَى بَطْنَ مُحَسِّرٍ فَحَرَّكَ قَلِيلًا ثُمَّ سَلَكَ الطَّرِيقَ الْوُسْطَى الَّتِي»» تَخْرُجُ»» عَلَى الْجَمْرَةِ الْكُبْرَى حَتَّى أَتَى الْجَمْرَةَ الَّتِي عِنْدَ الشَّجَرَةِ فَرَمَاهَا بِسَبْعِ حَصَيَاتٍ يُكَبِّرُ مَعَ كُلِّ حَصَاةٍ مِنْهَا مِثْلَ حَصَى الْخَذْفِ رَمَى مِنْ بَطْنِ الْوَادِي ثُمَّ انْصَرَفَ إِلَى الْمَنْحَرِ فَنَحَرَ ثَلَاثًا وَسِتِّينَ بَدَنَةً بِيَدِهِ ثُمَّ أَعْطَى عَلِيًّا فَنَحَرَ مَا غَبَرَ وَأَشْرَكَهُ فِي [ص:٧٨ هَدْيِهِ ثُمَّ أَمَرَ مِنْ كُلِّ بَدَنَةٍ بِبَضْعَةٍ فَجُعِلَتْ فِي قِدْرٍ فَطُبِخَتْ فَأَكَلَا مِنْ لَحْمِهَا وَشَرِبَا مِنْ مَرَقِهَا ثُمَّ رَكِبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَفَاضَ إِلَى الْبَيْتِ فَصَلَّى بِمَكَّةَ الظُّهْرَ فَأَتَى عَلَى بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ يَسْقُونَ عَلَى زَمْزَمَ فَقَالَ: «انْزِعُوا بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ فَلَوْلَا أَنْ يَغْلِبَكُمُ النَّاسُ عَلَى سِقَايَتِكُمْ لَنَزَعْتُ مَعَكُمْ» . فَنَاوَلُوهُ دَلْوًا فَشَرِبَ مِنْهُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2555. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मदीने में नौ साल क़याम फ़रमाया और इस दौरान हज न किया, फिर दसवें साल आप ने लोगों में हज का एलान कराया की रसूलुल्लाह ﷺ हज का इरादा रखते है, बहोत से लोग मदीना पहुँच गए, हम आप के साथ रवाना हुए हत्ता कि हम जुल हलिफा पहुंचे तो अस्मा बीनते उमैस रदियल्लाहु अन्हा ने मुहम्मद बिन अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हुमा को जन्म दिया, उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को पैगाम भेजा की मैं अब क्या करू? आप ﷺ ने फ़रमाया: ग़ुस्ल कर, कपड़े की लंगोट बांध कर इहराम बांध ले, रसूलुल्लाह ﷺ ने, (जुल हलिफा) मस्जिद में जमाज़ पढ़ी फिर (ऊंटनी) क़ुसवा

पर सवार हुए हत्ता कि जब आप ﷺ की ऊंटनी आप लो लेकर बयदा पर सीधी खड़ी हो गई तो आप ﷺ ने तौहीदी तल्बिया पुकारा: "मैं हाज़िर हूँ, हर किस्म की हम्द, तमाम नेअमते और बादशाहत तेरी है, तेरा कोई शरीक नहीं", जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम ने सिर्फ हज की नियत की थी, हमें उमरे का पता नहीं था, हत्ता कि हम आप के साथ बैतुल्लाह में पहुंचे, तो आप ने हजरे अस्वाद को चूमा, सात चक्कर लगाए, तीन में रमल किया (ज़रा अकड़ कर दोड़े) और चार में चले, फिर आप मकामे इब्राहीम पर आए तो यह आयत पढ़ी: "मकामे इब्राहीम को जाए नमाज़ बनाओ", आप ने वहां दो रकाते पढ़ी और मकामे इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अपने और बैतुल्लाह के दरमियाँन रखा, और एक दूसरी रिवायत में है की आप ﷺ ने पहली रकात में सुरह काफिरून और दूसरी में सुरह इखलास पढ़ी, फिर आप हजरे असवद के पास आए और इसे चूम कर दरवाज़े से निकल कर सफा की तरफ तशरीफ़ ले गए, जब आप सफा के करीब पहुंचे तो यह आयत तिलावत फरमाई, 'सफा और मरवा अल्लाह की निशानियो में से है", मैं वहीं से शुरू करूँगा जहाँ से अल्लाह तआला ने शुरू किया, पस आप ﷺ ने सफा से शुरू किया और इस पर चढ़ गए हत्ता कि आप ने बैतुल्लाह देखा, आप ﷺ किबला रुख हुए तो अल्लाह की तौहीद और किब्रियाई बयान की और फ़रमाया: अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, वह यकता है, इस का कोई शरीक नहीं, इसी की बादशाहत है और इसी के लिए हर किस्म की हम्द उसी के लिए है, और वह हर चीज़ पर कादिर है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद बरहक़ नहीं, वह यकता है, इस ने अपना वादा पूरा फ़रमाया, अपने बंदे की नुसरत फरमाई, और इस अकेले ने लश्करो को शिकस्त दी, फिर आप ने इस के दौरान दुआ फरमाई, आप ने यह कलिमात तीन मर्तबा फरमाए, फिर आप नीचे उतरे और मरवा की तरफ गए हत्ता कि जब आप वादी के नीचे वाले हिस्से पर तेज़ी से उतरने लगे तो आप दोड़ ने लगे हत्ता कि जब आप चढने लगे तो आप मामूल के मुताबिक चलते गए हत्ता कि आप मरवा पर पहुँच गए और आप ने वहां भी वैसे ही किया जैसे सफा पर किया था, हत्ता कि जब आप आखिरी चक्कर में पहुंचे तो आप मरवा पर थे और सहाबा आप के नीचे थे, आप ﷺ ने वहां से आवाज़ देते हुए फ़रमाया: जिस चीज़ का मुझे अब पता चला है अगर इस का मुझे पहले चल जाता तो में क़ुरबानी का जानवर साथ लता और मैं इस (हज) को उमरे में तब्दील कर लेता, जिस शख़्स के पास क़ुरबानी का जानवर नहीं वह इहराम खोल दे, और इसे उमरे में बदल दाले, सराफ बिन मालिक बिन जअशम रदियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या यह इस साल के लिए या हमेशा के लिए है? रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने एक हाथ की उंगलिया दूसरे हाथ की उंगलियों में दाखिल की और दो मर्तबा फ़रमाया: उमरा हज में दाखिल हो गया, और यह सिर्फ हमारे इसी साल के लिए ही नहीं बलके हमेशा हमेशा के लिए है, अली रदियल्लाहु अन्हु यमन से नबी ﷺ की क़ुरबानी के लिए ऊंट लेकर तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ ने इन से पुचा: "जब तुम ने हज की नियत की थी तो क्या कहा था? उन्होंने अर्ज़ किया, मेंने कहा था: अल्लाह! में इसी चीज़ का तल्बिया पुकारता हूँ जैसा तेरे रसूल ﷺ ने तलिबिहा पुकारा है, आप ﷺ ने फ़रमाया: क्यूंकि मेरे पास क़ुरबानी का जानवर है लिहाज़ा तुम इहराम न खोलो", रावी बयान करते हैं, कुर्बानियों के जानवरों की वह जमात जो अली रदियल्लाहु अन्हु यमन से लाए थे और वह जिन्हें नबी ﷺ साथ लेकर आए थे (ये सब) एक सौ थे, रावी बयान करते हैं, नबी ﷺ और उन सहाबी जिन के पास क़ुरबानी के जानवर थे, उन के सिवा सब ने इहराम खोल दिए और बाल कुतर लिए, जब तर्विहा (आठ ज़ुल्हिज्जा) का दिन हुआ तो उन्होंने मीना का इरादा किया और इहराम बांधा, नबी ﷺ अपनी ऊंटनि पर सवार हुए, आप ने वहां (मीना में) ज़ोहर, असर, मगरिब, ईशा और फजर की नमाज़े पढ़ी, फिर थोड़ी देर कयाम फ़रमाया हत्ता के सूरज तुलुअ हो गया, आप ने नमर में बालो का

बनाया हुआ खैमा लगाने का हुक्म फ़रमाया, पस रसूलुल्लाह ﷺ रवाना हुए, कुरैश को इस बात में कोई शक नहीं था के आप कुरैश के दस्तुरे जहालियत के मुताबिक मशअरे हराम (मुज्द्ल्फा) में वक्फ़ फ़रमाएंगे ,लेकिन रसूलुल्लाह ﷺ वहां से गुजर कर मैदाने अरफात में तशरीफ़ ले गए आप ने देखा की नमर में आप के लिए खैमा लगा दिया गया है, आप वहाँ हत्ता कि सूरज ढल गया तो आप ने (अपनी ऊँटनी) कस्वा के बारे में हुक्म फ़रमाया तो इस पर पालान रख दिया गया, आप ﷺ वादी के नशीब (वादी उरन) में तशरीफ़ लाए और लोगों को खिताब करते हुए फ़रमाया: बेशक तुम्हारा खून, तुम्हारा माल तूम (एक दुसरे) पर इस तरह हराम है जिस तरह तुम्हारे आज के दिन की, इस महीने की और तुम्हारे इस शहर की हुरमत है, सुन लो! जाहिलियत की हर चीज़ मेरे पैर तले रोंदी गई है, जाहिलियत के खून (यानि कतल) भी ख़तम कर दीए गए और हमरे खून में से पहला खून जिसे में खतम कर रहा हूँ, वह रबीअ बिन हरिस के बेटे का खून है, और वह बनू सईद के काबिले में दूध पि रहा था की काबिले हज़ल ने इसे कतल कर दिया, और जाहिलियत का सूद ख़त्म कर दिया गया, और हमारे सूद में से पहला सूद जिसे में ख़तम कर रहा हूँ वह अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रदियल्लाहु अन्हु का है, वह मुकम्मल तौर पर ख़त्म है, औरतो के बारे में अल्लाह से डरते रहो, तुम ने इन्हें अल्लाह की अमान और अहद के साथ हासिल किया है, और अल्लाह के कलमे के ज़रिए उन्हें हलाल किया है, इन पर तुम्हारा हक यह है कि वह तुम्हारे बिस्तर (रीहाइश) पर कीसी ऐसे शख़्स को न आने दे जिसे तुम नापसंद करते हो, लेकिन अगर वह ऐसे करे तो फिर तुम इन्हें हलकी सी जरब मार सकते हो, और मैं तुम में एक ऐसी चीज़ छोड़े जा रहा हूँ अगर तुम ने इसे मजबूती से थामे रखा तो फिर तुम गुमराह नहीं होंगे, और वह है अल्लाह की किताब, और तुम से मेरे मुतल्लिक पूछा जाएगा तो तुम क्या कहोगे? उन्होंने अर्ज़ किया, हम गवाही देते ही की आप ने पहुंचा दिया, हक अदा कर दिया और खैर ख्वाही फरमाई, आप ﷺ शाहदत की ऊँगली को आसमान की तरफ उठाया और इसे लोगों की तरफ झुकाते हुए तीन मर्तबा फ़रमाया: ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना, ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना, फिर बिलाल रदियल्लाहु अन्हु ने आज़ान दी और फिर इकामत कही तो आप ﷺ ने जोहर पढ़ाई, फिर इकामत कही तो आप ने असर पढ़ाई, और आप ने इन दोनों (नामजो) के दरमियान कोई नमाज़ नहीं पढ़ी, फिर आप सवारी पर सवार हुए हत्ता कि वक़्फ की जगह पर तशरीफ़ ले गए, आप ने अपनी ऊँटनी कसवा का पेट चट्टानों की तरफ के जानिब किया, और जबल अल मशाक (पैदल चलने वालो की रह में वाकेअ रेतीले टीले) को अपने सामने किया, और किबला रुख मुसलसल वकुफ़ फ़रमाया हत्ता कि सूरज गुरूब होने लगा, थोरी सी ज़र्दी रह गई हत्ता कि सूरज की टिकिया गायब हो गई, आप ﷺ ने उसामा रदियल्लाहु अन्हु को पीछे बिठाया और वहां से चले हत्ता कि मुज्दल्फा तशरीफ़ ले आए. आपने वहां एक अज़ान और दो इकामत से मगरिब और ईशा की नमाज़े पढ़ी और इन दोनों के दरमियाँन कोई नफ्ल नमाज़ नहीं पढ़ी, फिर आप लेट गए हत्ता कि फजर पढ़ी, फिर कस्वा पर सवार हुए और मशअर अल-हराम तशरीफ़ लाए, किबला रुख हो कर इस (अल्लाह) से दुआ की उसकी तकबीर व तहलील और तौहीद बयान की, आप मुसलसल खड़े रहे हत्ता के खूब उजाला हो गया, आप तुलुए आफ़ताब से पहले वहां से चल दिए, आप ने फजल बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु को अपने पीछे सवार किया और आप वादी मुह्सर पहुंचे तो सवारी को थोड़ा सा तेज़ किया, फिर दरमियानी रस्ते पर हो लिये जो की अल-जमरत अल कुबरा की तरफ जा रहा था, यहाँ तक की वह जमरह पहुँचे जिसके पास दरख्त था, आप ने इसे सात कांकरिया मारी, आप हर कंकरिया के साथ (اللّٰهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते थे, इन में से हर कंकरी ऐसी थी जिसे चुटकी में लेकर चलाया जा सकता था, आप ने यह कंकरिया वादी के उतार से मारी, फिर आप क़ुरबानी गाह तशरीफ़ ले गए, आप ने तिरसठ (63)

ऊंट अपने दस्ते मुबारक से जिबह किए, फिर आप ने यह फ़रीज़ा अली रदियल्लाहु अन्हु को सोंप दिया तो बाकि ऊंट उन्होंने जिबह किए,और आप ने उन्हें भी अपनी क़ुरबानी मैं शरीक किया, फिर आप ने हुक्म फ़रमाया और हर ऊंट से एक एक टुकड़ा काट कर हंडिया में डालकर पकाया गया, आप दोनों (रसूलुल्लाह ﷺ और हज़रत अली (र)) ने इस गोश्त में से कुछ खाया और इस का शोरबा पिया, फिर रसूलुल्लाह ﷺ सवारी पर सवार हुए और तवाफ़ इफजा किया, नमाज़े जोहर मक्के में पढ़ी, फिर आप बनू अब्दुल मुत्तलिब के पास तशरीफ़ ले गए, जो ज़मज़म पिला रहे थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अब्दुल मुत्लिब की औलाद, पानी निकालो अगर यह अंदेशा होता के तुम्हारे पानी पिलाने के इस काम पे लोग तुम पर ग़ालिब आजएंगे तो में भी तुम्हारे साथ पानी खिचता, उन्होंने आप को एक डोल में पानी दिया तो आप ﷺ ने इस में से नौश फ़रमाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (147 / 1218)، (2950)

٢٥٥٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ فَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِعُمْرَةٍ وَمِنَّا مَنْ أَهَلَّ بِحَجٍّ فَلَمَّا قَدِمْنَا مَكَّةَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَهَلَّ بِعُمْرَةٍ وَلَمْ يُهْدِ فَلْيَحْلِلْ وَمَنْ أَحْرَمَ بِعُمْرَةٍ وَأَهْدَى فَلْيُهِلَّ بِالْحَجِّ مَعَ العُمرةِ ثمَّ لَا يحل حَتَّى يحل مِنْهَا» . وَفِي رِوَايَةٍ: «فَلَا يَحِلُّ حَتَّى يَحِلَّ بِنَحْرِ هَدْيِهِ وَمَنْ أَهَلَّ بِحَجٍّ فَلْيُتِمَّ حَجَّهُ» . قَالَتْ: فَحِضْتُ وَلَمْ أَطُفْ بِالْبَيْتِ وَلَا بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ فَلَمْ أَزَلْ حَائِضًا حَتَّى كَانَ يَوْمُ عَرَفَةَ وَلَمْ أُهْلِلْ إِلَّا بِعُمْرَةٍ فَأَمَرَنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ أَنْقُضَ رَأْسِي وَأَمْتَشِطَ وَأُهِلَّ بِالْحَجِّ وَأَتْرُكَ الْعُمْرَةَ فَفَعَلْتُ حَتَّى قَضَيْتُ حَجِّي بَعَثَ مَعِي عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي بَكْرٍ وَأَمَرَنِي أَنْ أَعْتَمِرَ مَكَانَ عُمْرَتِي مِنَ التَّنْعِيمِ قَالَتْ: فَطَافَ الَّذِينَ كَانُوا أَهَلُّوا بِالْعُمْرَةِ بِالْبَيْتِ وَبَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ ثُمَّ حَلُّوا ثمَّ طافوا بَعْدَ أَنْ رَجَعُوا مِنْ مِنًى وَأَمَّا الَّذِينَ جَمَعُوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ فَإِنَّمَا طَافُوا طَوَافًا وَاحِدًا

2556. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, हज्जतुल वदा के मौके पर हम नबी ﷺ के साथ रवाना हुए, हम में ऐसे थे जिन्होंने उमरा के लिए इहराम बांधा, और हम में बाज़ ने हज के लिए इहराम बांधा, जब हम मक्का पहुंचे तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: ’’ जिस शख़्स ने उमरा के लिए इहराम बांधा और वह कुर्बानी का जानवर साथ नहीं लाया तो वह इहराम खोल दे और जिस शख़्स ने उमरा के लिए इहराम बांधा और वह कुर्बानी का जानवर साथ लाया है तो वह उमरे के साथ हज के इहराम की नियत कर ले फिर वह इहराम न खोले हत्ता के वह इन दोनों से फारिग़ हो जाए”, और एक दूसरी रिवायत में है: “वो इहराम न खोले हत्ता के अपने कुर्बानी से फारिग़ हो जाए और जिस शख़्स ने हज का इहराम बांधा था तो वह अपना हज मुकम्मल करे”, वह फरमाती हैं मुझे हैज़ आ गया लिहाज़ा मेंने ना बैतुल्लाह का तवाफ़ किया न सफा मरवा की सई की और मैं अरफा के दिन (नौ ज़िल हिज्जा) तक हालत ए हैज़ में रही, मैंने तो उमरा के लिए इहराम बांधा था, लेकिन नबी ﷺ ने मुझे फ़रमाया की मैं अपने सर के बाल खोल कर कंघी करू और हज के लिए इहराम बांधू और मैं उमरा तर्क कर दूँ, मेंने ऐसे ही किया हत्ता कि मेंने अपना हज पूरा किया, फिर आप ने (मेरे भाई) अब्दुल रहमान बिन अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हु को मेरे साथ भेजा और मुझे हुक्म फ़रमाया की मैं अपने उमरे की जगह तनइम से उमरा करू, आप रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जिन लोगों ने उमरा के लिए इहराम बांधा था उन्होंने बैतुल्लाह का तवाफ़ किया और सफा मरवा की सई की, फिर उन्होंने इहराम खोल दिया, फिर उन्होंने मीना से वापस आने के

बाद एक तवाफ़ किया, रहे वह लोग जिन्होंने हज और उमरा इकट्ठा किया तो उन्होंने एक ही तवाफ़ किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1556) و مسلم (112 / 1121)، (2911)

٢٥٥٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: تَمَتَّعَ رَسُولُ اللَّهِ [ص:٧٨ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَسَاقَ مَعَهُ الْهَدْيَ مِنْ ذِي الْحُلَيْفَةِ وَبَدَأَ فَأَهَلَّ بِالْعُمْرَةِ ثُمَّ أَهَلَّ بِالْحَجِّ فَتَمَتَّعَ النَّاسُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَكَانَ مِنَ النَّاسِ مَنْ أَهْدَى وَمِنْهُمْ مَنْ لَمْ يُهْدِ فَلَمَّا قَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَكَّةَ قَالَ لِلنَّاسِ: «مَنْ كَانَ مِنْكُمْ أَهْدَى فَإِنَّهُ لَا يَحِلُّ مِنْ شَيْءٍ حَرُمَ مِنْهُ حَتَّى يَقْضِيَ حَجَّهُ وَمَنْ لَمْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَهْدَى فَلْيَطُفْ بِالْبَيْتِ وَبِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ وَلْيُقَصِّرْ وَلْيَحْلِلْ ثُمَّ لِيُهِلَّ بِالْحَجِّ وليُهد فمنْ لم يجدْ هَديا فيلصم ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةً إِذَا رَجَعَ إِلَى أَهْلِهِ» فَطَافَ حِينَ قَدِمَ مَكَّةَ وَاسْتَلَمَ الرُّكْنَ أَوَّلَ شَيْءٍ ثُمَّ خَبَّ ثَلَاثَةَ أَطْوَافٍ وَمَشَى أَرْبَعًا فَرَكَعَ حِينَ قَضَى طَوَافَهُ بِالْبَيْتِ عِنْدَ الْمَقَامِ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ فَانْصَرَفَ فَأَتَى الصَّفَا فَطَافَ بِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ سَبْعَةَ أَطْوَافٍ ثُمَّ لَمْ يَحِلَّ مِنْ شَيْءٍ حَرُمَ مِنْهُ حَتَّى قَضَى حَجَّهُ وَنَحَرَ هَدْيَهُ يَوْمَ النَّحْرِ وَأَفَاضَ فَطَافَ بِالْبَيْتِ ثُمَّ حَلَّ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ حَرُمَ مِنْهُ وَفَعَلَ مِثْلَ مَا فَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ سَاقَ الْهَدْيَ من النَّاس

2557. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हज्जतुल वदा के मौके पर हज के साथ उमरा मिलाया था, आप ज़ुल हलिफा से कुर्बानी का जानवर अपने साथ ले गए थे, आप ने पहले उमरा का इहराम बांधा, फिर हज का इहराम बांधा, तो सहाबा किराम रदियल्लाहु अन्हुम ने भी नबी ﷺ के साथ हज को उमरे के साथ मिला कर फ़ायदा हासिल किया, कुछ लोग ऐसे भी थे जो कुर्बानी के जानवर अपने साथ लेकर गए और उनमें से कुछ ऐसे भी थे जो कुर्बानी के जानवर साथ नहीं लाए थे, जब नबी मक्का पहुंचे तो आप ﷺ ने लोगों से फ़रमाया: “तुम में से जो शख़्स कुर्बानी का जानवर साथ लाया है तो उस के लिए कोई चीज़ हलाल नहीं जो उस पर हराम थी हत्ता के वह अपना हज पूरा कर ले, और जो शख़्स कुर्बानी का जानवर साथ नहीं लाया तो वह बैतुल्लाह का तवाफ़ करे, सफा मरवा की सई करे, बाल कटवा कर इहराम खोल दे, फिर (हज के मौके पर) हज के लिए इहराम बांधे, और कुर्बानी करे, तो जो शख़्स कुर्बानी का जानवर न पाए तो वह तीन रोज़े अय्याम हज में और सात रोज़े अपने घर पहुँच कर रखे”, जब आप ﷺ मक्का पहुंचे तो आप ने तवाफ़ किया और सबसे पहले हजरे असवद को चूमा, फिर आप ने तीन चक्कर दोड़ कर लगाए और चार चक्कर मामूल की चाल चल कर लगाए, जब आप तवाफ़ मुकम्मल कर चुके तो आप ने मकामे इब्राहीम के पास दो रकते पढ़ी, फिर आप ने सफा मरवा के दरमियान सई के सात चक्कर लगाए, फिर आप पर उन चीजों में से कोई भी चीज़ हलाल नहीं हुई थी जो आप पर हराम थी हत्ता के आप ने अपना हज मुकम्मल किया और कुर्बानी के दिन कुर्बानी की और बैतुल्लाह शरीफ पहुँच कर तावाफे इफादा किया, फिर आप के लिए वह तमाम चीज़े हलाल हो गई जो आप पर हराम हुई थी, और जो लोग कुर्बानी के जानवर साथ लाए थे उन्होंने भी वैसे ही किया जैसे रसूलुल्लाह ﷺ ने किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1691) و مسلم (174 / 1227)، (2982)

٢٥٥٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «هَذِهِ عُمْرَةٌ اسْتَمْتَعْنَا بِهَا فَمَنْ لَمْ يَكُنْ عِنْدَهُ الْهَدْيُ فَلْيَحِلَّ الْحِلَّ كُلَّهُ فَإِنَّ الْعُمْرَةَ قَدْ دَخَلَتْ فِي الْحَجِّ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَهَذَا الْبَابُ خَالٍ عَنِ الْفَصْلِ الثَّانِي

2558. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: '' यह उमरा है जिस से हमने फ़ायदा उठाया और जिस शख़्स के पास कुर्बानी का जानवर न हो तो उस के लिए तमाम चीज़े हलाल होगी. क्योंकि उमरा रोज़ ए कियामत तक के लिए हज में दाखिल हो चूका है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (203 / 1241)، (3014)

وهذا الباب خال عن الفصل الثاني

यह बाब दूसरी फस्ल से खाली हैं|

بَاب قصَّة حجَّة الْوَدَاع • हज्जतुल वदा का वाकेआ

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٥٥٩ - (صَحِيح) عَنْ عَطَاءٍ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ فِي نَاسٍ مَعِي قَالَ: أَهْلَلْنَا [ص:٧٨ أَصْحَابَ مُحَمَّد بِالْحَجِّ خَالِصًا وَحْدَهُ قَالَ عَطَاءٌ: قَالَ جَابِرٌ: فَقَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صُبْحَ رَابِعَةٍ مَضَتْ مِنْ ذِي الْحِجَّةِ فَأَمَرَنَا أَنْ نَحِلَّ قَالَ عَطَاءٌ: قَالَ: «حِلُّوا وَأَصِيبُوا النِّسَاءَ» . قَالَ عَطَاءٌ: وَلَمْ يَعْزِمْ عَلَيْهِمْ وَلَكِنْ أَحَلَّهُنَّ لَهُمْ فَقُلْنَا لَمَّا لَمْ يَكُنْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ عَرَفَةَ إِلَّا خَمْسٌ أَمَرَنَا أَنْ نُفْضِيَ إِلَى نِسَائِنَا فَنَأْتِيَ عرَفَةَ تَقْطُرُ مَذَاكِيرُنَا الْمَنِيَّ. قَالَ: «قَدْ عَلِمْتُمْ أَنِّي أَتْقَاكُمْ لِلَّهِ وَأَصْدَقُكُمْ وَأَبَرُّكُمْ وَلَوْلَا هَدْيِي لَحَلَلْتُ كَمَا تَحِلُّونَ وَلَوِ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ لَمْ أَسُقِ الْهَدْيَ فَحِلُّوا» فَحَلَلْنَا وَسَمِعْنَا وَأَطَعْنَا قَالَ عَطَاءٌ: قَالَ جَابِرٌ: فَقَدِمَ عَلِيٌّ مِنْ سِعَايَتِهِ فَقَالَ: بِمَ أَهْلَلْتَ؟ قَالَ بِمَا أَهَلَّ بِهِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فَأَهْدِ وَامْكُثْ حَرَامًا» قَالَ: وَأَهْدَى لَهُ عَلِيٌّ هَدْيًا فَقَالَ سُرَاقَةُ بْنُ مَالِكِ بْنِ جُعْشُمٍ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ألعامنا هَذَا أم لأبد؟ قَالَ: «لأبد» . رَوَاهُ مُسلم

2559. अता रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु को अपने साथ बहोत से लोगों में सुना. उन्होंने ने फ़रमाया: हम मुहम्मद ﷺ के सहाबा ने सिर्फ अकेले एक ही का इहराम बांधा था. अता बयान करते हैं, जाबिर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: नबी ﷺ चार ज़ुलहिज्जा को मक्का तशरीफ़ लाए तो आप ने हमें इहराम खोलने का हुक्म फ़रमाया. अता बयान करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "इहराम खोल दो और अपने बीवियों के पास जाओ", अता रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, आप ﷺ ने इस बात (औरतो के पास जाने) को इन पर वाजिब करार नहीं दिया था, बल्कि उन (औरतो) को इन के लिए मुबाह करार दिया था, हमने अर्ज़ किया: हमारे मैदाने अरफात में जाने में सिर्फ पांच दिन बाकी रह गए, तो आप ने हमें अपने बीवियों के पास जाने

(यानी जिमाअ करने) का हुक्म फ़रमाया और जब हम मैदाने अरफात पहुंचे तो (गोया के) हमारी शरम गाहे मनी गिरा रही हो, अता रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, जाबिर रदियल्लाहु अन्हु अपने हाथ से इरशाद कर रहे थे गोया में इन के हाथ के इशारे को देख रहा हूँ कि वह इसे हरकत दे रहे हैं, रावी बयान करते हैं, नबी ﷺ हम में खड़े हुए तो फ़रमाया: “तुम जानते हो की मैं तुम सबसे ज़्यादा अल्लाह से डरता हूँ, तुम सबसे ज़्यादा सच्चा और तुम सबसे ज़्यादा नेकोकार हूँ, अगर मेरे साथ मेरी कुर्बानी का जानवर न होता तो मैं भी तुम्हारी तरह इहराम खोल देता, अगर वह बात जो मुझे अब मालुम हुई है वह पहले मालुम हो जाती तो मैं कुर्बानी का जानवर साथ न लाता, तुम इहराम खोल दो”, तो हमने इहराम खोल दिया और हमने समाअ व इताअत इख़्तियार की, अता बयान करते हैं, जाबिर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अली रदियल्लाहु अन्हु सदकात की वुसुली के बाद वहां (मक्के) पहुंचे तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने किसी नियत से इहराम बांधा था ?” उन्होंने अर्ज़ किया, जिस नियत से नबी ﷺ ने इहराम बांधा था, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन से फ़रमाया: “कुर्बानी करना और हालत ए इहराम में रहो”, रावी बयान करते हैं, अली रदियल्लाहु अन्हु अपने लिए कुर्बानी का जानवर साथ लाए थे, सुराका बिन मालिक बिन जअशम रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या यह इसी साल के लिए है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “हमेशा के लिए है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (141 / 1216)، (2943)

٢٥٦٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِأَرْبَعٍ مَضَيْنَ مِنْ ذِي الْحِجَّةِ أَوْ خَمْسٍ فَدَخَلَ عَلَيَّ وَهُوَ غَضْبَانُ فَقُلْتُ: مَنْ أَغْضَبَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَدْخَلَهُ اللَّهُ النَّارَ. قَالَ: «أَو مَا شَعَرْتِ أَنِّي أَمَرْتُ النَّاسَ بِأَمْرٍ فَإِذَا هُمْ يَتَرَدَّدُونَ وَلَوْ أَنِّي اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ مَا سُقْتُ الْهَدْيَ مَعِي حَتَّى أَشْتَرِيَهُ ثمَّ أُحلُّ كَمَا حلُّوا» . رَوَاهُ مُسلم

2560. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के उन्होंने ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ चार या पांच ज़ुलहिज्जा को मक्का पहुंचे थे, आप मेरे पास तशरीफ़ लाए तो आप गुस्से की हालत में थे, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप को किस ने नाराज़ किया है? अल्लाह इसे जहन्नम में दाखिल फरमाए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम्हें मालुम नहीं के मैंने लोगों को एक काम का हुक्म दिया है जबकि वह तरदुद का शिकार हैं, जिस चिज़ का मुझे अब पता चला है अगर उस का मुझे पहले पता चल जाता तो मैं कुर्बानी का जानवर अपने साथ न लाता हत्ता के में उसे यहाँ से खरीद लेता, फिर मैं भी इहराम खोल देता जैसे उन्होंने इहराम खोला है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (130 / 1211)، (2931)

مक्का में दाखिल होने और तवाफ़ करने के आदाब का बयान
بَاب دُخُول مَكَّة وَالطّواف •

पहली फस्ल
الْفَصْل الأول •

٢٥٦١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ نَافِعٍ قَالَ: إِنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ لَا يَقْدَمُ مَكَّةَ إِلَّا بَاتَ بِذِي طُوًى حَتَّى يُصْبِحَ وَيَغْتَسِلَ وَيُصَلِّيَ فَيَدْخُلَ مَكَّةَ نَهَارًا وَإِذَا نَفَرَ مِنْهَا مَرَّ بِذِي طُوًى وَبَاتَ بِهَا حَتَّى يُصْبِحَ وَيَذْكُرُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَفْعَلُ ذَلِكَ

2561. नाफेअ बयान करते हैं, कि इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा मक्का में दाखिल होने से पहले वादी जितवा में रात बसर करते, सुबह को ग़ुस्ल करते और नमाज़ पढ़ कर दिन के वक़्त मक्का में दाखिल होते, और जब आप वहां से निकलते तो भी वादी जितवा के पास से गुज़रते, वहां रात बसर करते और बयान करते के नबी ﷺ इसी तरह किया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1573) و مسلم (227 / 1259)، (3045)

٢٥٦٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا جَاءَ إِلَى مَكَّةَ دَخَلَهَا مِنْ أَعْلَاهَا وخرجَ منْ أسفلِها

2562. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं की जब नबी ﷺ मक्का तशरीफ़ लाए तो आप उस के ऊपरी हिस्से की तरफ से दाखिल हुए और उस के निचले हिस्से की तरफ से निकले थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1577) و مسلم (224 / 1258)، (3042)

٢٥٦٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عُروةَ بنِ الزُّبيرِ قَالَ: قَدْ حَجَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَتْنِي عَائِشَةُ أَنَّ أَوَّلَ شَيْءٍ بَدَأَ بِهِ حِينَ قَدِمَ مَكَّةَ أَنَّهُ تَوَضَّأَ ثُمَّ طَافَ بِالْبَيْتِ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ عُمْرَةً ثُمَّ حجَّ أَبُو بكرٍ فكانَ أوَّلَ شيءٍ بدَأَ بِهِ الطوَّافَ بالبيتِ ثمَّ لَمْ تَكُنْ عُمْرَةً ثُمَّ عُمَرُ ثُمَّ عُثْمَانُ مثلُ ذَلِك

2563. उरवा बिन जुबैर बयान करते हैं, नबी ﷺ ने हज किया तो आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने मुझे बताया की जब आप ﷺ मक्का तशरीफ़ लाए तो आप ने सबसे पहले वुज़ू किया, फिर बैतुल्लाह का तवाफ़ किया, फिर इसे उमरा (का तवाफ़) न बनाया, फिर अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने हज किया तो उन्होंने भी सबसे पहले तवाफ़ किया, फिर उन्होंने भी इसे उमरा न बनाया, फिर उमर और फिर उस्मान रदियल्लाहु अन्हुमा ने भी इसी तरह किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1641) و مسلم (190 / 1235)، (3001)

٢٥٦٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا طَافَ فِي الْحَجِّ أَوِ الْعمرَة مَا يَقْدَمُ سَعَى ثَلَاثَةَ أَطْوَافٍ وَمَشَى [ص:٧٩ أَرْبَعَةً ثُمَّ سَجَدَ سَجْدَتَيْنِ ثُمَّ يَطُوفُ بَيْنَ الصَّفَا والمروة

2564. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ हज्ज या उमरा का तवाफ़ करते तो आप सबसे पहले तीन चक्कर दोड़ कर लगाते और चार चक्कर चल कर लगाते थे, फिर आप दो रकते पढ़ते और सफा और मरवा की सई फरमाते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1616) و مسلم (231 / 1261)، (3049)

٢٥٦٥ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: رَمَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ الْحَجَرِ ثَلَاثًا وَمَشَى أَرْبَعًا وَكَانَ يَسْعَى بِبَطْنِ الْمَسِيلِ إِذَا طَافَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ. رَوَاهُ مُسلم

2565. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हजरे असवद से हजरे असवद तक तीन चक्कर तेज़ चल कर लगाए और चार चक्कर आम रफ़्तार से चल कर लगाए और जब आप ﷺ सफा मरवा के दरमियान सई करते तो आप सैलाब के बहाव वाली जगह पर तेज़ चलते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (233 / 1262)، (3051)

٢٥٦٦ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا قَدِمَ مَكَّةَ أَتَى الْحَجَرَ فَاسْتَلَمَهُ ثُمَّ مَشَى عَلَى يَمِينِهِ فَرَمَلَ ثَلَاثًا وَمَشى أَرْبعا. رَوَاهُ مُسلم

2566. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ मक्का तशरीफ़ लाए तो आप हजरे असवद के पास आए तो उसे बोसा दिया, फिर आप अपने दाएँ जानिब पर चला तो तीन चक्कर तेज़ चल कर चार चक्कर आम रफ़्तार से चल कर लगाए| (मुस्लिम)

رواه مسلم (150 / 1218)، (2953)

٢٥٦٧ - (صَحِيح) وَعَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ عَرَبِيٍّ قَالَ: سَأَلَ رَجُلٌ ابنَ عمرَ عَنِ اسْتِلَامِ الْحَجَرِ فَقَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَلِمُهُ وَيُقَبِّلُهُ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2567. जुबैर बिन अरबी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, किसी आदमी ने अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से हजरे असवद को बोसा देने के बारे में दरियाफ्त किया तो उन्होंने ने फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इसे हाथ लगाते और बोसा देते हुए देखा है| (बुखारी)

رواه البخارى (1611)

٢٥٦٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: لَمْ أَرَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَلِمُ من الْبَيْت إِلَّا الرُّكْنَيْنِ اليمانيين

2568. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को सिर्फ दो रुक्ने यमानी हजरे असवद और रुक्ने यमानी को छूते हुए देखा है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1609) و مسلم (242 / 1267)، (3061)

٢٥٦٩ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: طَافَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ عَلَى بعير يسْتَلم الرُّكْن بمحجن

2569. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ ने हज्जतुल वदा के मौके पर ऊंट पर सवार हो कर तवाफ़ किया, आप छड़ी के साथ हजरे असवद को छुते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1607) و مسلم (253 / 1272)، (3073)

٢٥٧٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَافَ بِالْبَيْتِ عَلَى بَعِيرٍ كُلَّمَا أَتَى عَلَى الرُّكْنِ أَشَارَ إِلَيْهِ بِشَيْءٍ فِي يدِه وكبَّر. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2570. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने ऊंट पर सवार हो कर बैतुल्लाह का तवाफ़ किया जब आप हजरे असवद के पास आते तो आप अपने हाथ में मौजूद किसी चीज़ के साथ इरशाद करते और (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते| (बुखारी)

رواه البخاری (1632)

٢٥٧١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي الطُّفَيْلِ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ وَيَسْتَلِمُ الرُّكْنَ بِمِحْجَنٍ مَعَهُ ويقبِّلُ المحجن. رَوَاهُ مُسلم

2571. अबू तुफैल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को बैतुल्लाह का तवाफ़ करते और आप के पास जो छड़ी थी उस के साथ हजरे असवद को छुते हुए देखा और आप छड़ी को बोसा देते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (257 / 1275)، (3077)

٢٥٧٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا نَذْكُرُ إِلَّا الْحَجَّ فَلَمَّا كُنَّا بِسَرِفَ طَمِثْتُ فَدَخَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا أَبْكِي فَقَالَ: «لَعَلَّكِ نَفِسْتِ؟» قُلْتُ: نَعَمْ قَالَ: «فَإِنَّ ذَلِكِ شَيْءٌ كَتَبَهُ اللَّهُ عَلَى بَنَاتِ

آدَمَ فَافْعَلِي مَا يَفْعَلُ الْحَاجُّ غَيْرَ أَنْ لَا تَطُوفِي بِالْبَيْتِ حَتَّى تَطْهُرِي»

2572. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, हम नबी ﷺ के साथ सिर्फ हज के इरादे से रवाना हुए, जब आप मक़ाम ए सरीफ पर पहुंचे तो मुझे हैज़ आ गया, नबी ﷺ मेरे पास तशरीफ़ लाए तो मैं रो रही थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “शायद के तुम्हें हैज़ गया है?” मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये तो एक ऐसी चीज़ है जो अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम की बेटियों पर मुकद्दर कर दिया है, तुम जब तक हैज़ से पाक नहीं हो जाती, बैतुल्लाह के तवाफ़ के सिवा दीगर हाजियों की तरह उमूर बजा लाती रहो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (294) و مسلم (119120 / 1211)، (2918 و 2919)

٢٥٧٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: بَعَثَنِي أَبُو بَكْرٍ فِي الْحَجَّةِ الَّتِي أَمَّرَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَيْهَا قَبْلَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ يَوْمَ النَّحْرِ فِي رَهْطٍ أَمَرَهُ أَنْ يُؤَذِّنَ فِي النَّاسِ: «أَلَا لَا يَحُجُّ بَعْدَ العامِ مشرِكٌ وَلَا يطوفَنَّ بِالْبَيْتِ عُرْيَان»

2573. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने इस हज में, जिस में नबी ﷺ ने उन्हें हज्जतुल वदा से पहले अमीर ए हज बना कर भेजा था, मुझे एक जमात के साथ भेजा और हुक्म दिया के “ लोगों में ऐलान कर दिया जाए के सुन लो! इस साल के बाद कोई मुशरिक ना बैतुल्लाह का हज करे न कोई उरिया(नंगी) हालत में बैतुल्लाह का तवाफ़ करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (369) و مسلم (435 / 1347)، (3287)

بَاب دُخُول مَكَّة وَالطّواف • मक्का में दाखिल होने और तवाफ़ करने के आदाब का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٥٧٤ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ الْمُهَاجِرِ الْمَكِّيِّ قَالَ: سُئِلَ جَابِرٌ عَنِ الرَّجُلِ يَرَى الْبَيْتَ يَرْفَعُ يَدَيْهِ فَقَالَ قَدْ حَجَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ نَكُنْ نَفْعَلُهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ

2574. मुहाजिर मक्की रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से इस आदमी के बारे में दरियाफ्त किया गया जो बैतुल्लाह को देख कर हाथ उठाता है, उन्होंने ने फ़रमाया: हमने नबी ﷺ के साथ हज किया तो हम इस तरह नहीं करते थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (855) و ابوداؤد (1870) [و النسائى (5 / 212 ح 2898) و ابن خزيمة (2704)(2705)] * المهاجر المكى و ثقه ابن حبان و ابن خزيمة فهو حسن الحديثفائدة : مراد رفع اليدين فى هذا الحديث بعد انقضاء الصلوة و الطواف و عند الخروج من المسجد الحرام ، انظر صحيح ابن خزيمة (4 / 210 قبل ح 2705)

٢٥٧٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: أَقْبَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَدَخَلَ مَكَّةَ فَأَقْبَلَ إِلَى الْحَجَرِ فَاسْتَلَمَهُ ثُمَّ طَافَ بِالْبَيْتِ ثُمَّ أَتَى الصَّفَا فَعَلَاهُ حَتَّى يَنْظُرَ إِلَى الْبَيْتِ فَرَفَعَ يَدَيْهِ فَجَعَلَ يَذْكُرُ اللَّهَ مَا شَاءَ وَيَدْعُو. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2575. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ (मदीना से) रवाना हुए, जब आप मक्का में दाखिल हुए तो आप ﷺ हजरे असवद की तरफ आए इसे बोसा दिया, फिर बैतुल्लाह का तवाफ़ किया, फिर सफा पर आए तो उस के ऊपर चढ़ गए हत्ता के बैतुल्लाह नज़र आने लगा तो आप हाथ उठाकर जिस क़दर चाहा, अल्लाह का ज़िक्र और दुआए करते रहे| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (1872)

٢٥٧٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الطَّوَافُ حَوْلَ الْبَيْتِ مِثْلُ الصَّلَاةِ إِلَّا أَنَّكُمْ تَتَكَلَّمُونَ فِيهِ فَمَنْ تَكَلَّمَ فِيهِ فَلَا يَتَكَلَّمَنَّ إِلَّا بِخَيْرٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَذَكَرَ التِّرْمِذِيُّ جَمَاعَةً وَقَفُوهُ عَلَى ابْنِ عباسٍ

2576. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “बैतुल्लाह का तवाफ़ नमाज़ की तरह है, अलबत्ता तुम उस में बात वगैरा कर लेते हो, जो शख़्स इस दौरान बात करे तो वह सिर्फ खैर व भलाई की बात करे”| तिरमिज़ी, नसई, दारमी इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने मुहद्दीसिन की एक जमाअत का ज़िक्र किया है, जिन्होंने इसे इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा पर मौकूफ करार दिया है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (960) و النسائی (5 / 222 ح 2925) و الدارمی (2 / 44ح 1854)

٢٥٧٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نَزَلَ الْحَجَرُ الْأَسْوَدُ مِنَ الْجَنَّةِ وَهُوَ أَشَدُّ بَيَاضًا مِنَ اللَّبَنِ فَسَوَّدَتْهُ خَطَايَا بَنِي آدَمَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيح

2577. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हजरे असवद जन्नत से नाज़िल हुआ था तो वह दूध से भी ज़्यादा सफ़ेद था लेकिन औलादे आदम की खताओं ने इसे सियाह कर दिया”| अहमद तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (हसन)

حسن ، رواه احمد (1 / 307 ح 2796 مختصرًا) و الترمذی (877)

٢٥٧٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْحَجَرِ: «وَاللَّهِ لَيَبْعَثَنَّهُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَهُ عَيْنَانِ يُبْصِرُ بِهِمَا وَلِسَانٌ يَنْطِقُ بِهِ يَشْهَدُ عَلَى مَنِ اسْتَلَمَهُ بِحَقٍّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه والدارمي

2578. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हजरे असवद के बारे में फ़रमाया: “अल्लाह रोज़ ए कियामत इसे उठाएगा तो उसकी दो आँखे होगी जिन से वह देखेगा और ज़ुबान होगी जिस से

वह बोलेगा, और जिस ने हक़ के साथ उस को बोसा दिया होगा उस के हक़ में गवाही देगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (961 و قال : حسن) و ابن ماجه (2944) و الدارمی (2 / 42 ح 1846)

٢٥٧٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ الرُّكْنَ وَالْمَقَامَ يَاقُوتَتَانِ مِنْ يَاقُوتِ الْجَنَّةِ طَمَسَ اللَّهُ نورَهما وَلَو لم يطمِسْ نورَهما لأضاءا مَا بينَ المشرقِ والمغربِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2579. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “हजरे असवद और मकामे इब्राहीम (वो पत्थर जिस पर खड़े हो कर आप ने बैतुल्लाह की तामीर की) जन्नत के दो याकुत है, अल्लाह तआला ने उन के नूर को ख़तम कर दिया, और अगर वह उन के नूर को ख़तम न करता तो वह दोनों मशरिक व मगरिब के बिच में को रोशन कर देते”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (878 و قال : غریب) * رجاء بن صبیح ابو یحیی : ضعیف ، ضعفه الجمهور و للحدیثشاهد ضعیف

٢٥٨٠ - (صَحِيح) وَعَن عُبيدِ بنِ عُمَيرٍ: أَنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ يُزَاحِمُ عَلَى الرُّكْنَيْنِ زِحَامًا مَا رَأَيْتُ أَحَدًا مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُزَاحِمُ عَلَيْهِ قَالَ: إِنْ أَفْعَلْ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ مَسْحَهُمَا كَفَّارَةٌ لِلْخَطَايَا» وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: «مَنْ طَافَ بِهَذَا الْبَيْتِ أُسْبُوعًا فَأَحْصَاهُ كَانَ كَعِتْقِ رَقَبَةٍ» . وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: «لَا يَضَعُ قَدَمًا وَلَا يَرْفَعُ أُخْرَى إِلا حطَّ اللَّهُ عنهُ بهَا خَطِيئَة وكتبَ لهُ بهَا حَسَنَة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2580. उबैद बिन उमैर से रिवायत है के इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा हजरे असवद और रुक्ने यमानी पर बहोत ज़्यादा गलबा (रश) करते थे, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के किसी एक सहाबी को इन पर गलबा करते हुए नहीं देखा, उन्होंने ने फ़रमाया: में इसलिए ऐसे करता हूँ की मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “इन दोनों को हाथ लगाना गुनाहों का कफ्फारा है”, और मैंने आप ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स हर हफ्ते बैतुल्लाह का तवाफ़ करे और उसकी हिफाज़त करे तो वह ऐसे है जैसे उस ने गुलाम आज़ाद किया हो”, और मैंने आप ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जब वह (तवाफ़ में) एक कदम रखता है और दूसरा उठाता है तो अल्लाह तआला उस के बदले में एक गुनाह मुआफ़ कर देता है और उस के लिए एक नेकी लिख देता है”| (हसन)

حسن ،رواه الترمذی (959 و قال : حسن)

٢٥٨١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبد الله بن السَّائِب قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ مَا بَيْنَ الرُّكْنَيْنِ: (رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَاب النَّار)»» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2581. अब्दुल्लाह बिन साइब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को हजरे असवद और रुक्ने

यमानी के दरमियान यह दुआ करते हुए सुना: “हमारे परवरदिगार! हमें दुनिया में भलाई अता फरमा और आखिरत में भलाई अता फरमा और हमें आग के अज़ाब से बचा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1892)

٢٥٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن صفيةَ بنتِ شيبةَ قَالَتْ: أَخْبَرَتْنِي بِنْتُ أَبِي تُجْرَاةَ قَالَتْ: دَخَلْتُ مَعَ نِسْوَةٍ مِنْ قُرَيْشٍ دَارَ آلِ أَبِي حُسَيْنٍ نَنْظُرُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يَسْعَى بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ فَرَأَيْتُهُ يَسْعَى وَإِنَّ مِئْزَرَهُ لَيَدُورُ مِنْ شِدَّةِ السَّعْيِ وَسَمِعْتُهُ [ص:٧٩ يَقُولُ: «اسْعَوْا فَإِنَّ اللَّهَ كَتَبَ عَلَيْكُمُ السَّعْيَ» . رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ وَرَوَاهُ أَحْمد مَعَ اخْتِلَاف

2582. सफिया बिन्ते शैबा रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, अबू तुजराह की बेटी (हबीबा (रअ)) ने मुझे बताया की मैं कुरैश की बाज़ औरतो के साथ खानदाने अबू हुसैन के घर गई ताकि हम रसूलुल्लाह ﷺ को सफा मरवा के बिच में सई करते हुए देखे, मैंने आप को सई करते हुए देखा और सई की शिद्दत की वजह से आप का आज़ार बिखर रहा था, और मैंने आप ﷺ को फरमाते हुए सुना: “सई करो क्योंकि अल्लाह तआला ने सई करना तुम पर फ़र्ज़ कर दिया है”| शरह सुन्ना और इमाम अहमद ने कुछ इख्तिलाफ के साथ रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (7 / 140141 ح 1921) و احمد (6 / 421) * سنده ضعيف عبدالله بن المومل ضعيف و له طريق آخر عند الدارقطنى (2 / 255) و البيهقى (5 / 97) بلفظ : دخلنا دار ابن ابى حسين فاطلعنا من باب مقطع فرأينا رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم يشتد فى المسعى حتى اذا بلغ زقاق بنى فلاں موضعًا قد سماه من المسعى ، استقبل الناس و قال :’’ يا ايها الناس اسعوا فإن المسعى قد كتبت عليكم ‘‘ و سنده حسن

٢٥٨٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ قُدَامَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمَّارٍ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْعَى بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ عَلَى بَعِيرٍ لَا ضرب وَلَا طرد وَلَا إِلَيْك. رَوَاهُ فِي شرح السّنة

2583. कुदामा बिन अब्दुल्लाह बिन अम्मार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को सफा मरवा के दरमियान ऊंट पर सई करते हुए देखा, आप ﷺ ना किसी को मारते न हटाते और न कहते के हट जाओ, रास्ता छोड़ दो| (हसन)

حسن ياتى : 2623 ، رواه البغوى فى شرح السنة (7 / 142 ح 1922) [و الترمذى (903 و قال : حسن صحيح) و ابن ماجه (3035) و النسائى (5 / 270 ح 3063) و صححه الحاكم (1 / 466) و وافقه الذهبى]

٢٥٨٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ يَعْلَى بْنِ أَمَيَّةَ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَافَ بِالْبَيْتِ مُضْطَجعا بِبُرْدٍ أَخْضَرَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

2584. यअली बिन उमय्य रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने सब्ज़ रंग की चादर से अज्तियाब

(यानी दायाँ कांधा नंगा) कर के बैतुल्लाह का तवाफ़ किया| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (859 و قال : حسن صحيح) و ابوداؤد (1883) و ابن ماجه (2954) و الدارمی (2 / 43 ح 1850) * ابن جريج و سفيان الثوری مدلسان و عنعنا

٢٥٨٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم وأصحابَه اعتمروا من الجعْرانة فَرَمَلُوا بِالْبَيْتِ ثَلَاثًا وَجَعَلُوا أَرْدِيَتَهُمْ تَحْتَ آبَاطِهِمْ ثُمَّ قَذَفُوهَا عَلَى عَوَاتِقِهِمُ الْيُسْرَى. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2585. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ और आप के सहाबा ने जीअरान से उमरा किया तो उन्होंने तीन चक्कर तेज़ तेज़ चल कर पुरे किए और उन्होंने अपने (इहराम की) चादरों को दाहनी बगलों के नीचे से निकाल कर अपने बाएँ कंधो के ऊपर डाल रखा था| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1884)

मक्का में दाखिल होने और तवाफ़ करने के आदाब का बयान • بَاب دُخُول مَكَّة وَالطّواف

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٢٥٨٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: مَا تَرَكْنَا اسْتِلَامَ هَذَيْنِ الرُّكْنَيْنِ: الْيَمَانِي وَالْحَجَرِ فِي شِدَّةٍ وَلَا رخاء مُنْذُ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يستلمهما

2586. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने जब से रसूलुल्लाह ﷺ को हजरे असवद और रुक्ने यमानी का इस्तिलाम (छुना) करते हुए देखा है उसे हमने तंगी या आसानी किसी भी हाल में इन का इस्तिलाम करना नहीं छोड़ा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1606) و مسلم (245 / 1268)، (3064)

٢٥٨٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَفِي رِوَايَةٍ لَهُمَا: قَالَ نَافِعٌ: رَأَيْتُ ابْنَ عُمَرَ يَسْتَلِمُ الْحَجَرَ بِيَدِهِ ثُمَّ قَبَّلَ يَدَهُ وَقَالَ: مَا تَرَكْتُهُ مُنْذُ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَفْعَله

2587. सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की रिवायत में है नाफेअ बयान करते हैं, मैंने इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा को देखा के वह अपने हाथ से हजरे असवद को छुते फिर हाथ चुमते और उन्होंने ने फ़रमाया: मैंने जब से

रसूलुल्लाह ﷺ को ऐसे करते हुए देखा है उसे मैंने इसे तर्क नहीं किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1610) و مسلم (258 / 1276)، (3065)

٢٥٨٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: شَكَوْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنِّي أَشْتَكِي. فَقَالَ: «طُوفِي مِنْ وَرَاءِ النَّاسِ وَأَنْتِ رَاكِبَةٌ» فَطُفْتُ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّي إِلَى جَنْبِ الْبَيْتِ يَقْرَأُ ب (الطُّورِ وكِتَابٍ مسطور)

2588. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने अपनी बीमारी के बारे में रसूलुल्लाह ﷺ से शिकायत की तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम सवार हो कर लोगों के पीछे पीछे तवाफ़ करो”, मैंने तवाफ़ किया जबकि रसूलुल्लाह ﷺ बैतुल्लाह की एक जानिब (बैतुल्लाह की दिवार के साथ) नमाज़ पढ़ रहे थे और आप सुरह तूर की तिलावत फरमा रहे थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1619) و مسلم (258 / 1276)، (3078)

٢٥٨٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَابِسِ بْنِ رَبِيعَةَ قَالَ: رَأَيْت عمر يقبل الْحجر وَيَقُول: وَإِنِّي لَأَعْلَمُ أَنَّكَ حَجَرٌ مَا تَنْفَعُ وَلَا تَضُرُّ وَلَوْلَا أَنِّي رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يقبل مَا قبلتك

2589. आबिस बिन रबिआ बयान करते हैं, मैंने उमर रदियल्लाहु अन्हु को देखा के आप रदियल्लाहु अन्हु हजरे असवद को बोसा दे रहे हैं और फरमा रहे हैं: मैं खूब जानता हूँ कि तो एक पत्थर है, तू नफा नुकसान का मालिक नहीं, अगर मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को तुझे बोसा देते हुए न देखा होता तो मैं तुझे कभी बोसा न देता| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1597) و مسلم (251 / 1270)، (3070)

٢٥٩٠ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «وُكِّلَ بِهِ سَبْعُونَ مَلَكًا» يَعْنِي الرُّكْنَ الْيَمَانِيَ " فَمَنْ قَالَ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ قَالُوا: آمين ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

2590. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “इस रुक्ने यमानी पर सत्तर फ़रिश्ते मामूर है, जो शख़्स कहता है, अल्लाह में तुझ से दुनिया व आखिरत में आफियत की दरख्वास्त करता हूँ, हमारे परवरदिगार! हमें दुनिया में भलाई अता फरमा, हमें आखिरत में भलाई अता फरमा और हमें आग के अज़ाब से

बचा, तो वह फ़रिश्ते आमीन कहते हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (2957) * قال البوصيري :’’ هذا اسناد ضعيف ، حميد ، قال فيه ابن عدى : أحاديثه غير محفوظة ، و قال الذهبى : مجهول ‘‘ قلت : حميد هو ابن ابى سوية

٢٥٩١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " مَنْ طَافَ بِالْبَيْتِ سَبْعًا وَلَا يَتَكَلَّمُ إِلَّا بِ: سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ مُحِيَتْ عَنْهُ عَشْرُ سَيِّئَاتٍ وَكُتِبَ لَهُ عَشْرُ حَسَنَاتٍ وَرُفِعَ لَهُ عَشْرُ دَرَجَاتٍ. وَمَنْ طَافَ فَتَكَلَّمَ وَهُوَ فِي تِلْكَ الْحَالِ خَاضَ فِي الرَّحْمَةِ بِرِجْلَيْهِ كَخَائِضِ الماءِ برجليه ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

2591. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स बैतुल्लाह के सात चक्कर लगाए और इस दौरान (سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ) “ अल्लाह पाक है, हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, गुनाह से बचना और नेक अमल करना महज़ अल्लाह तआला की तौफिक के साथ है”, के सिवा कोई बात न करे तो उस के दस गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं, उस के लिए दस नेकियाँ लिखी जाती है और उस के दस दरजात बुलंद कर दिए जाते हैं, और जो शख़्स तवाफ़ करे और इस दौरान बाते करे तो वह इस हाल में ऐसे है के उस के पाऊ तो रहमत में है (लेकिन ऊपर का हिस्सा रहमत में नहीं) जैसे किसी ने अपने पाँव पानी में डुबो रखे हो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابن ماجه (2956)

वकुफ़ ए अरफात का बयान • بَاب الْوُقُوف بِعَرَفَة

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٥٩٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن محمدِ بن أبي بكرٍ الثَّقَفِيُّ أَنَّهُ سَأَلَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ وَهُمَا غَادِيَانِ مِنْ مِنًى إِلَى عَرَفَةَ: كَيْفَ كُنْتُمْ تَصْنَعُونَ فِي هَذَا الْيَوْمِ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَقَالَ: كَانَ يُهِلُّ مِنَّا الْمُهِلُّ فَلَا يُنْكِرُ عَلَيْهِ وَيُكَبِّرُ الْمُكَبِّرُ مِنَّا فَلَا يُنْكِرُ عَلَيْهِ

2592. मुहम्मद बिन अबू बक्र रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, कि उन्होंने अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से दरियाफ्त किया, जबकि वह दोनों मीना से अरफात जा रहे थे, आप रसूलुल्लाह ﷺ के साथ इस रोज़ (कैसे तकबीर व तहलील) किया करते थे? उन्होंने ने फ़रमाया: हम में से कोई तल्बिया पढ़ता तो उस पर कोई एतराज़

नहीं था और हम में से कोई (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहता तो उस पर भी कोई एतराज़ नहीं था| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1659) و مسلم (274 / 1285)، (3097)

٢٥٩٣ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «نحرتُ هَهُنَا وَمِنًى كُلُّهَا مَنْحَرٌ فَانْحَرُوا فِي رِحَالِكُمْ. وَوَقَفْتُ هَهُنَا وعرفةُ كلُّها موقفٌ. ووقفتُ هَهُنَا وجَمْعٌ كلُّها موقفٌ» . رَوَاهُ مُسلم

2593. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैंने (मीना में) इस जगह कुर्बानी जिबह की है जबकि मीना सारे का सारा कुरबान गाह है और मैंने यहाँ वुकुफ़ किया है जबकि मैदाने अरफात सारे का सारा वुकुफ़ की जगह है और मैंने यहाँ वुकुफ़ किया है जबकि मुज़दल्फा सारे का सारा वुकुफ़ की जगह है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (149 / 1218)، (2952)

٢٥٩٤ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " مَا مِنْ يَوْمٍ أَكْثَرَ مِنْ أَنْ يُعْتِقَ اللَّهُ فِيهِ عَبْدًا مِنَ النَّارِ مِنْ يَوْمِ عَرَفَةَ وَإِنَّهُ لَيَدْنُو ثُمَّ يُبَاهِي بِهِمُ الْمَلَائِكَةَ فَيَقُولُ: مَا أَرَادَ هَؤُلَاءِ ". رَوَاهُ مُسلم

2594. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह बाकी अय्याम की निस्बत, अरफा के दिन सबसे ज़्यादा अपने बंदो को जहन्नम से आज़ादी अता फरमाता है, और वह करीब होता है, फिर उनकी वजह से फरिश्तो पर फख्र करता है और फरमाता यह लोग क्या चाहते है?”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (436 / 1348)، (3288)

बَاب الْوُقُوف بِعَرَفَة • वकुफ़ ए अरफात का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٥٩٥ - (صَحِيح) عَنْ عَمْرِو بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ صَفْوَانَ عَنْ خَالٍ لَهُ يُقَالُ لَهُ يَزِيدُ بْنُ شَيْبَانَ قَالَ: كُنَّا فِي مَوْقِفٍ لَنَا بِعَرَفَةَ يُبَاعِدُهُ عَمْرٌو مِنْ مَوْقِفِ الْإِمَامِ جِدًّا فَأَتَانَا ابْنُ مِرْبَعٍ الْأَنْصَارِيُّ فَقَالَ: إِنِّي رَسُولُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَيْكُمْ يَقُولُ لَكُمْ: «قِفُوا عَلَى مَشَاعِرِكُمْ فَإِنَّكُمْ عَلَى إِرْثٍ من إِرْثِ أَبِيكُمْ إِبْرَاهِيمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

2595. अमर बिन अब्दुल्लाह बिन सफवान अपने मामू यज़ीद बिन शय्बान से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा, हम ने मैदान ए अरफात में ऐसी जगह वुकुफ़ किया तो के बकौल उन के इमाम के वुकुफ़ की जगह से बहोत दूर था, इब्ने मिरबअ अंसारी रदियल्लाहु अन्हु हमारे पास आए तो उन्होंने कहा के रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे तुम्हारी तरफ कासिद बना कर भेजा है, वह तुम्हें फरमाते हैं: “तुम अपने जगह पर ठहरे रहो, क्योंकि तुम अपने बाप इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मीरास पर हो”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (883 و قال : حسن) و ابوداؤد (1919) و النسائی (5 / 255 ح 3017) و ابن ماجه (3011)

٢٥٩٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كُلُّ عَرَفَةَ مَوْقِفٌ وَكُلُّ مِنًى مَنْحَرٌ وَكُلُّ الْمُزْدَلِفَةِ مَوْقِفٌ وَكُلُّ فِجَاجِ مَكَّةَ طَرِيقٌ وَمَنْحَرٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ

2596. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैदान ए अरफात पुरे का पूरा वुकुफ़ की जगह है पूरा मीना कुरबान गाह है, पूरा मुज़दल्फा वुकुफ़ की जगह है, और मक्का के तमाम रास्ते, रास्ते और कुरबान गाह हैं”| (यानी मक्का आने वाले के लिए किसी भी रास्ते से मक्का में दाखिल होना जाईज़ है|) | (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداو7د (1937) و الدارمی (2 / 57 ح 1886)

٢٥٩٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن خالدِ بنَ هَوْذَةَ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْطُبُ النَّاسَ يَوْمَ عَرَفَةَ عَلَى بَعِيرٍ قَائِمًا فِي الركابين. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2597. खालिद बिन हवज़त रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को अरफा के दिन ऊंट की दोनों रुकाबो में पाँव रख कर खड़े हो कर लोगों से ख़िताब करते हुए देखा| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1917)

٢٥٩٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " خَيْرُ الدُّعَاءِ دُعَاءُ يَوْمِ عَرَفَةَ وَخَيْرُ مَا قُلْتُ أَنَا وَالنَّبِيُّونَ مِنْ قَبْلِي: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْء قدير ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2598. अम्र बिन शुऐब अपने बाप से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अरफा के दिन की दुआ बेहतरीन दुआ है और मैंने और मुझ से पहले अंबिया अलैहिस्सलाम ने जो बेहतरीन दुआ की है के यह है, “अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, वह यकता है, उस का कोई शरीक नहीं, उस के लिए

बादशाहत है और उस के लिए हर किस्म की तारीफ़ है, और वह हर चीज़ पर कादिर है"| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (3585 و قال : حسن غریب) * حماد بن ابی حمید ضعیف و للحدیث شاھد ضعیف (انظر الحدیث الاتی : 2599)

٢٥٩٩ - (صَحِيح) وروى مالكٌ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ إِلَى قَوْلِهِ: «لَا شريك لَهُ»

2599. इमाम मालिक रहिमहुल्लाह ने तल्हा बिन उबैदुल्लाह से (لا شریک له) तक रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه مالک (1 / 214215 ح 501 ، 1 / 422423 ح 974) من حدیث طلحة بن عبید الله بن کریز رحمه الله فالسند مرسل

٢٦٠٠ - (ضَعِيف) لإرساله وَعَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ كَرِيزٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا رُئِيَ الشَّيْطَانُ يَوْمًا هُوَ فِيهِ أَصْغَرُ وَلَا أَدْحَرُ وَلَا أَحْقَرُ وَلَا أَغْيَظُ مِنْهُ فِي يَوْمِ عَرَفَةَ وَمَا ذَاكَ إِلَّا لِمَا يَرَى مِنْ تَنَزُّلِ الرَّحْمَةِ وَتَجَاوُزِ اللَّهِ عَنِ الذُّنُوبِ الْعِظَامِ إِلَّا مَا رُئِيَ يَوْمَ بَدْرٍ» . فَقِيلَ: مَا رُئِيَ يَوْمَ بَدْرٍ؟ قَالَ: «فَإِنَّهُ قَدْ رَأَى جِبْرِيلَ يَزَعُ الْمَلَائِكَةَ» . رَوَاهُ مَالِكٌ مُرْسَلًا وَفِي شَرْحِ السُّنَّةِ بِلَفْظِ الْمَصَابِيحِ

2600. तल्हा बिन उबैदुल्लाह बिन करिज़ रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "शैतान अरफा के दिन सबसे ज़्यादा हकीर, सबसे ज़्यादा रोंदा हुआ, सबसे ज़्यादा ज़लील और सबसे ज़्यादा गुस्से में होता है और वह ऐसी हालत में इसलिए होता है के वह नुज़ूले रहमत और कबिराह गुनाहों की मगफिरत होते हुए देख रहा होता है, अलबत्ता गज़वा ए बद्र के मौके पर भी इसे इस कैफियत में देखा गया", कहा गया बद्र के दिन उस ने क्या देखा? आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्योंकि उस ने जिब्राइल अलैहिस्सलाम को फरिश्तो की सफ बंदी करते हुए देखा था", इमाम मालिक ने मुरसल रिवायत किया है और शरह सुन्ना में मसाबिह के अल्फाज़ में मरवी है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه مالک (1 / 422 ح 973) و البغوی فی شرح السنة (7 / 158 ح 1930) من حدیث طلحة بن عبید الله بن کریز رحمه الله فالسند مرسل

٢٦٠١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا كَانَ يَوْمُ عَرَفَةَ إِنَّ اللَّهَ يَنْزِلُ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا فَيُبَاهِي بِهِمُ الْمَلَائِكَةَ فَيَقُولُ: انْظُرُوا إِلَى عِبَادِي أَتَوْنِي شُعْثًا غُبْرًا ضَاجِّينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ أُشْهِدُكُمْ أَنِّي قَدْ غَفَرْتُ لَهُمْ فَيَقُولُ الْمَلَائِكَةُ: يَا رَبِّ فُلَانٌ كَانَ يُرَهَّقُ وَفُلَانٌ وَفُلَانَةُ قَالَ: يَقُولُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ: قَدْ غَفَرْتُ لَهُمْ ". قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فَمَا مِنْ يَوْمٍ أَكْثَرَ عَتِيقًا مِنَ النَّارِ مِنْ يَوْمِ عَرَفَةَ» . رَوَاهُ فِي شرح السّنة

2601. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब अरफा का दिन होता है तो अल्लाह आसमाने दुनिया पर नुज़ूल फरमाता है और इन (अरफात में वुकुफ़ करने वालो) की वजह से फरिश्तो

पर फख्र करता है और फरमाता है मेरे बंदो को देखो किस तरह बिखरे बालो, गुबार आलूद पाँव और बुलंद आवाज़ से पुकारते हुए दूर दराज़ से आए है, मैं तुम्हें गवाह बना कर कहता हूँ कि मैंने उन्हें बख्श दिया, तो फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं, रब जी! फलां बंदा तो बुरे काम किया करता था और फलां मर्द और फलां औरत भी, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह अज्ज़वजल फरमाता है " मैंने उन्हें बख्श दिया है", रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अरफा के दिन के सिवा कोई ऐसा दिन नहीं जिस में अरफा के दिन से ज़्यादा लोगों को जहन्नम से आज़ादी मिलती हो"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوی فی شرح السنة (7 / 159 ح 1931) [و ابن خزيمة (2840 و قال : انا ابرا من عهدة مرزوق) و ابن حبان (1006)]
* ابو الزبير مدلس و عنعن و حديث مسلم (1348) يغنى عنه

بَاب الْوُقُوف بِعَرَفَة • वकुफ़ ए अरफात का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٦٠٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن عَائِشَة قَالَتْ: كَانَ قُرَيْشٌ وَمَنْ دَانَ دِينَهَا يَقِفُونَ بالمزْدَلفَةِ وَكَانُوا يُسمَّوْنَ الحُمْسَ فكانَ سَائِرَ الْعَرَبِ يَقِفُونَ بِعَرَفَةَ فَلَمَّا جَاءَ الْإِسْلَامُ أَمَرَ اللَّهُ تَعَالَى نَبِيَّهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَأْتِيَ عَرَفَاتٍ فَيَقِفُ بِهَا ثُمَّ يَفِيضُ مِنْهَا فَذَلِكَ قَوْلُهُ عَزَّ وَجَلَّ: (ثُمَّ أَفِيضُوا من حَيْثُ أَفَاضَ النَّاس)

2602. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कुरैश और उन के हम दीन लोग मुज़दल्फा में कयाम किया करते थे, और उन्हें हूम्स कहा जाता था, जबकि बाकी सब अरब अरफा में वुकुफ़ किया करते थे, जब इस्लाम आया तो अल्लाह तआला ने अपने नबी ﷺ को हुक्म फ़रमाया के वह अरफात आए और वहां वुकुफ़ करे और फिर वहां से वापस आए, इसी तरह अल्लाह अज्ज़वजल का फरमान है, "फिर तुम भी वहां से लौटो जहाँ से आम लोग लौटते है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (4520) و مسلم (151 / 1219)، (2954)

٢٦٠٣ - (ضَعِيف) وَعَن عبَّاسِ بن مِرْداسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَعَا لِأُمَّتِهِ عَشِيَّةَ عَرَفَةَ بِالْمَغْفِرَةِ فَأَجِيبَ: «إِنِّي قَدْ غَفَرْتُ لَهُمْ مَا خَلَا الْمَظَالِمَ فَإِنِّي آخُذُ لِلْمَظْلُومِ مِنْهُ» . قَالَ: «أَيْ رَبِّ إِنْ شِئْتَ أَعْطَيْتَ الْمَظْلُومَ مِنَ الْجَنَّةِ وَغَفَرْتَ لِلظَّالِمِ» فَلَمْ يُجَبْ عَشِيَّتَهُ فَلَمَّا أَصْبَحَ بِالْمُزْدَلِفَةِ أَعَادَ الدُّعَاءَ فَأُجِيبَ إِلَى مَا سَأَلَ. قَالَ: فَضَحِكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَوِ قَالَ تبسَّمَ فَقَالَ لَهُ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ: بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي إِنَّ هَذِهِ لَسَاعَةٌ مَا كُنْتَ تَضْحَكُ فِيهَا فَمَا الَّذِي أَضْحَكَكَ أَضْحَكَ اللَّهُ سِنَّكَ؟ قَالَ: «إِنَّ عَدُوَّ اللَّهِ إِبْلِيسَ لَمَّا عَلِمَ أَنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجلَّ قَدِ اسْتَجَابَ [ص:٨٠ دُعَائِي وَغَفَرَ لأمَّتي أخذَ الترابَ فَجعل يحشوه عَلَى رَأْسِهِ وَيَدْعُو بِالْوَيْلِ وَالثُّبُورِ فَأَضْحَكَنِي مَا رَأَيْتُ مِنْ جَزَعِهِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَرَوَى البيهقيُّ فِي كتاب الْبَعْث والنشور نحوَه

2603. अब्बास बिन मिर्दास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने वुकुफ़ अरफात में अपनी उम्मत की मगफिरत के लिए दुआ फरमाई क़बूलियत का जवाब आया की “ मैंने हुकुक अल इबाद के सिवा बाकी सब गुनाह मुआफ़ कर दिए, क्योंकि मैं उस से मज़लूम का हक़ लूँगा”, आप ﷺ ने अर्ज़ किया,: “रब जी! अगर आप चाहे तो मज़लूम को जन्नत अता कर दे और ज़ालिम को बख्श दें”, लेकिन इस कयाम में आप की दुआ कबूल न हुई, तो जब मुज़दल्फा में सुबह की तो आप ﷺ ने दुआ दोहराई तो आप की दुआ कबूल कर ली गई, रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हँसे या तबस्सुम फ़रमाया तो अबू बक्र और उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने अर्ज़ किया, मेरे वालिदेन आप पर कुरबान हो यह तो ऐसा वक़्त है के इस वक़्त आप हंसा नहीं करते थे, आप को किस चीज़ ने हंसाया, अल्लाह तआला आप को खुश खुर्रम रखे, आप ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह के दुश्मन इब्लीस को जब पता चला के अल्लाह अज्ज़वजल ने मेरी दुआ कबूल फरमा कर मेरी उम्मत को बख्श दिया है तो वह अपने सर में मिट्टी डालने लगा और तबाही व हलाकत को पुकारने लगा जब मैंने उसकी बे सबरी देखी तो मुझे हंसी गई”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (3013) و البيهقى فى البعث النشور (لم اجده ، و فى شعب الايمان : 346) * عبدالله بن كنانة و ابوه مجهولان و قال البخارى فى هذا الحديث :’’ لم يصح حديثه‘‘

بَابٌ الدَّفْعُ مِنْ عَرَفَةَ وَالْمُزْدَلِفَةِ • अरफात और मुजद्ल्फा से वापसी का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٢٦٠٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سُئِلَ أَسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ: كَيْفَ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسِيرُ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ حِينَ دَفَعَ؟ قَالَ: كَانَ يَسِيرُ الْعُنُق فَإِذا وجد فجوة نَص

2604. हिश्शाम बिन उरवा अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा से दरियाफ्त किया गया के हज्जतुल वदा के मौके पर वापसी के वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ किस तरह चलते थे? उन्होंने ने फ़रमाया: आप बिच रफ़्तार से चलते थे और जब कुशादा जगह जाती तो फिर तेज़ हो जाते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخارى (1666) و مسلم (283 / 1286)، (3106)

٢٦٠٥ - (صَحِيح) وَعَن ابنِ عبَّاسٍ أَنَّهُ دَفَعَ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ عَرَفَةَ فَسَمِعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَرَاءَهُ زَجْرًا شَدِيدًا وَضَرْبًا لِلْإِبِلِ فَأَشَارَ بِسَوْطِهِ إِلَيْهِمْ وَقَالَ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ عَلَيْكُمْ بِالسَّكِينَةِ فَإِنَّ الْبِرَّ لَيْسَ بِالْإِيضَاعِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2605. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के अरफा के दिन वह नबी ﷺ के साथ वापस हो रहे थे की नबी ﷺ ने अपने पीछे ऊटों को बहोत मारने और डांटने की आवाज़े सुनी तो आप ने अपने कोड़े से उनकी तरफ इरशाद किया और फ़रमाया: “लोगो! सकिनत इख़्तियार करो क्योंकि सवारियों को तेज़ दोड़ाना कोई नेकी नहीं“| (बुखारी)

رواه البخاری (1671)

٢٦٠٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ أَنَّ أَسَامَةَ بْنَ زِيدٍ كَانَ رِدْفَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ عَرَفَةَ إِلَى الْمُزْدَلِفَةِ ثُمَّ أَرْدَفَ الْفَضْلَ مِنَ الْمُزْدَلِفَةِ إِلَى مِنًى فَكِلَاهُمَا قَالَ: لَمْ يَزَلِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُلَبِّي حَتَّى رَمَى جَمْرَةَ الْعقبَة

2606. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के अरफात से मुज़दल्फा तक उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ के पीछे बैठें थे, फिर आप ने मुज़दल्फा से मीना तक फ़ज़्ल बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा को अपने पीछे बैठा लिया, इन दोनों ने बयान किया है की नबी ﷺ जमराह अक्बिह को कंकरिया मारने तक तल्बिया पुकारते रहे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1686) و مسلم (266 / 1280128)، (3087)

٢٦٠٧ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: جَمَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَغْرِبَ وَالْعِشَاءَ [ص:٨٠ بِجَمْعٍ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا بِإِقَامَةٍ وَلَمْ يُسَبِّحْ بَيْنَهُمَا وَلَا عَلَى إِثْرِ كُلِّ وَاحِدَةٍ مِنْهُمَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

2607. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ ने मगरिब व ईशा की नमाज़े मुज़दल्फा में इकट्ठी पढ़ी और हर नमाज़ के लिए इकामत कही, आप ने ना इन दोनों नमाज़ो के दरमियान कोई नफ्ल नमाज़ पढ़ी न उनमें से किसी के बाद| (बुखारी)

رواه البخاری (1673)

٢٦٠٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدُ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: مَا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى صَلَاةً إِلَّا لِمِيقَاتِهَا إِلَّا صَلَاتَيْنِ: صَلَاةَ الْمَغْرِبِ وَالْعِشَاءِ بِجَمْعٍ وَصَلَّى الْفَجْرَ يومئِذٍ قبلَ ميقاتها

2608. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को मुज़दल्फा में दो नमाज़ो नमाज़े मग़रिब और ईशा को जमा करने और इसी रोज़ नमाज़े फज्र को उस के वक़्त से पहले पढ़ने के सिवा हमेशा नमाज़ो को उन के अवकात में पढ़ते हुए देखा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1683) و مسلم (292 / 1289)، (3116)

٢٦٠٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: أَنَا مِمَّنْ قَدَّمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْلَةَ الْمزْدَلِفَة فِي ضعفة أَهله

2609. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैं भी उन लोगों में से हूँ जिन्हें नबी ﷺ ने मुज़दल्फा की रात अपने अहले खाना के जईफ लोगों के साथ पहले (मीना) रवाना कर दिया था| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1678) و مسلم (301 / 1293)، (3127)

٢٦١٠ - (صَحِيح) وَعَن الفضلِ بن عبَّاسٍ وَكَانَ رَدِيفَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ فِي عَشِيَّةِ عَرَفَةَ وَغَدَاةِ جَمْعٍ لِلنَّاسِ حِينَ دَفَعُوا: «عَلَيْكُمْ بِالسَّكِينَةِ» وَهُوَ كَافٌّ نَاقَتَهُ حَتَّى دَخَلَ مُحَسِّرًا وَهُوَ مِنْ مِنًى قَالَ: «عَلَيْكُمْ بِحَصَى الْخَذْفِ الَّذِي يُرْمَى بِهِ الْجَمْرَةَ» . وَقَالَ: لَمْ يَزَلْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُلَبِّي حَتَّى رَمَى الْجَمْرَةَ. رَوَاهُ مُسلم

2610. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा फ़ज़ल बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं, के वह नबी ﷺ के पीछे सवारी पर सवार थे की आप ﷺ ने अरफा की शाम और मुज़दल्फा की सुबह लोगों से, जबकि वह वापस आ रहे थे फ़रमाया: “आराम से आओ”, जबकि आप अपने ऊंटनी को (तेज़ चलने से) रोक रहे थे हत्ता के आप वादी मुहस्सिर में दाखिल हो गए जो के मीना के करीब है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जमरह की रमी करने के लिए छोटी छोटी कंकरिया ले लो”, रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जमराह को कंकरिया मारने तक तल्बिया पुकारते रहे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (268 / 1282)، (3089)

٢٦١١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: أَفَاضَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ جَمْعٍ وَعَلَيْهِ السَّكِينَةُ وَأَمَرَهُمْ بِالسَّكِينَةِ وَأَوْضَعَ فِي وَادِي مُحَسِّرٍ وَأَمَرَهُمْ أَنْ يَرْمُوا بِمِثْلِ حَصَى الْخَذْفِ وَقَالَ: «لَعَلِّي لَا أَرَاكُمْ بَعْدَ عَامِي هَذَا» . لَمْ أَجِدْ هَذَا الْحَدِيثَ فِي الصَّحِيحَيْنِ إِلَّا فِي جَامِعِ التِّرْمِذِيِّ مَعَ تقديمٍ وَتَأْخِير

2611. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ मुज़दल्फा से वापस तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ पुरसुकून व इत्मीनान था, और आप ने सहाबा को भी आराम से चलने का हुक्म फ़रमाया, जबकि वादी मुहस्सिर में आप तेज़ चले और उन्हें हुक्म फ़रमाया के ऊँगली पर रख कर मारी जाने वाली कंकरी के बराबर कंकरिया मारो, और फ़रमाया: “शायद इस साल के बाद में तुम्हें न देख सकू”, मैंने यह हदीस तकदिम ताखीर के साथ जामेअ तिरमिज़ी के अलावा सहीहैन में नहीं पाई| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (886 و قال : حسن صحیح) [و ابوداؤد (1944) و النسائی (5 / 258 ح 3024) و انظر ابن ماجه (3023)] * و للحدیث شواھد وھو بھا صحیح

بَابٌ الدَّفْعُ مِنْ عَرَفَةَ وَالْمُزْدَلِفَةِ • अरफात और मुजदल्फा से वापसी का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٦١٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن محمّدِ بنِ قيسٍ بن مَخْرمةَ قَالَ: خَطَبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «إِنَّ أَهْلَ الْجَاهِلِيَّةِ كَانُوا يَدْفَعُونَ مِنْ عَرَفَةَ حِينَ تَكُونُ الشَّمْسُ كَأَنَّهَا عَمَائِمُ الرِّجَالِ فِي وُجُوهِهِمْ قَبْلَ أَنْ تَغْرُبَ وَمِنَ الْمُزْدَلِفَةِ بَعْدَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ حِينَ تَكُونُ كَأَنَّهَا عَمَائِمُ الرِّجَالِ فِي وُجُوهِهِمْ. وَإِنَّا لَا نَدْفَعُ مِنْ عَرَفَةَ حَتَّى تَغْرُبَ الشَّمْسُ وَنَدْفَعُ مِنَ الْمُزْدَلِفَةِ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ هَدْيُنَا مُخَالِفٌ لِهَدْيِ عَبَدَةِ الْأَوْثَانِ وَالشِّرْكِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان وَقَالَ فِيهِ: خَطَبنَا وَسَاقه بِنَحْوِهِ

2612. मुहम्मद बिन कैस बिन मखरम बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने खुत्बा इरशाद फ़रमाया तो फ़रमाया: “अहल ए जाहिलियत अरफात से इस वक़्त लौटा करते थे जब सूरज गुरूब होने से पहले इस तरह हो जैसे आदमियों की पगढ़िया उन के चेहरो पर हो, और मुज़दल्फा से तुलुए आफ़ताब के बाद जैसे आदमियों की पगढ़िया उन के चेहरो पर हो, जबकि हम गुरूब ए आफ़ताब के बाद अरफात से लौटते है और तुलुअ ए आफ़ताब से पहले मुज़दल्फा से वापस आते है, हमारा तरीका बुतों के पुजारियों और मुशरिको के तरीके से मुख्तलिफ है”| बयहकी और फ़रमाया हमें खुत्बा इरशाद फ़रमाया और बाकी हदीस वैसे ही बयान की जईफ| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ [البیھقی فی السنن الکبری 5 / 125) و الحاکم (3 / 523) و صححہ و وافقہ الذھبی] * السند مرسل و رواہ شعبۃ عن ابن جریئج عن محمد بن قیس بن مخرمۃ عن مسور بن مخرمۃ بہ نحو المعنی و سندہ ضعیف ، ابن جریج مدلس و عنعن

٢٦١٣ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَدَّمَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْلَةَ الْمُزْدَلِفَةِ أُغَيْلِمَةَ بَنِي عَبْدِ الْمُطَّلِبِ عَلَى حُمُرَاتٍ فَجَعَلَ يَلْطَحُ أَفْخَاذَنَا وَيَقُولُ: «أُبَيْنِيَّ لَا تَرْمُوا الْجَمْرَةَ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه

2613. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें मुज़दल्फा की रात बनूअब्दुल मूत्तलीब के बच्चो के हमराह गधो पर बिठाकर पहले ही रवाना कर दिया था, और आप ﷺ प्यार से हमारी रानो पर मार रहे थे और फरमा रहे थे: “मेरे प्यारे बच्चो जब तक सूरज तुलुअ न हो जाए जमराह को कंकरिया न मारना”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ ابوداو7د (1940) و النسائی (5 / 270271 ح 3066) و ابن ماجہ (3025) * الحسن العرنی ثقۃ ارسل عن ابن عباس و البعض الحدیث شواھد ، بعضھا حسنۃ عند الطحاوی (مشکل الآثار 9 / 119 ح 3494) و غیرہ

٢٦١٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عَائِشَة قَالَتْ: أَرْسَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأُمِّ سَلَمَةَ ليلةَ النَّحْر فرمت [ص:٨٠

الجمرة قبلَ الْفَجْرِ ثُمَّ مَضَتْ فَأَفَاضَتْ وَكَانَ ذَلِكَ الْيَوْمُ الْيَوْمَ الَّذِي يَكُونَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِنْدهَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

2614. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा को कुर्बानी की रात ही भेज दिया था, उन्होंने फज्र से पहले ही जमराह को कंकरिया मार ली थी, फिर वह (मीना से) चली गई और तवाफ़ ए इफादा किया और यह वह दिन था जिस दिन रसूलुल्लाह ﷺ उन के वहां थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1942)

٢٦١٥ - وَعَن ابنِ عبَّاسٍ، قَالَ: يُلَبِّي المقيمُ أَوِ المعتَمِرُ حَتَّى يستلمَ الْحَجَرَ) . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَقَالَ: وَرُوِيَ مَوْقُوفًا على ابنِ عبَّاس.

2615. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मुकीम (मक्के का रहने वाला) या उमरा करने वाला हजरे असवद के इस्तिलाम तक तल्बिया पुकारता रहता था| अबू दावुद, और फ़रमाया और यह अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु पर मौकूफ रिवायत की गई है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1817) [و الترمذی (919) و صححه] * فیه محمد بن عبد الرحمن بن ابی لیلی ، قال البیهقی :'' رفعه خطا وکان ابن ابی لیلی هذا کثیر الوهم و خاصة اذا روی عن عطا فیخطی کثیرًا ، ضعفه اهل النقل مع کبر محله''

بَابُ الدَّفْعُ مِنْ عَرَفَةَ وَالْمُزْدَلِفَةِ • अरफात और मुजदल्फा से वापसी का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٦١٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ يَعْقُوبَ بْنِ عَاصِمِ بْنِ عُرْوَةَ أَنَّهُ سمع الشَّرِيدَ يَقُولُ: أَفَضْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَا مَسَّتْ قَدَمَاهُ الْأَرْضَ حَتَّى أَتَى جمْعاً. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2616. याकूब बिन आसिम बिन उरवा से रिवायत है के उन्होंने शरीद रदियल्लाहु अन्हु को बयान करते हुए सुना की मैं अरफात से मुज़दल्फा तक रसूलुल्लाह ﷺ के साथ वापस आया तो मुज़दल्फा पहुँचने तक आप के कदम मुबारक ज़मीन पर नहीं लगे| (यानी आप ﷺ सवारी पर आए) | (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1925 ب و تحفة الاشراف : 4842) و احمد (4 / 389 ح 19694)

٢٦١٧ - (صَحِيح) وَعَن ابنِ شهابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ أَنَّ الْحَجَّاجَ بْنَ يُوسُفَ عَامَ نَزَلَ بِابْنِ الزُّبَيْرِ سَأَلَ عَبْدَ اللَّهِ: كَيْفَ

نَصْنَعُ فِي الْمَوْقِفِ يَوْمَ عَرَفَةَ؟ فَقَالَ سَالِمٌ إِنْ كُنْتَ تُرِيدُ السُّنَّةَ فَهَجِّرْ بِالصَّلَاةِ يَوْمَ عَرَفَةَ فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ: صَدَقَ إِنَّهُمْ كَانُوا يَجْمَعُونَ بَيْنَ الظُّهْرِ وَالْعَصْرِ فِي السُّنَّةِ فَقُلْتُ لِسَالِمٍ: أَفَعَلَ ذَلِكَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَقَالَ سَالِمٌ: وَهل يتَّبعونَ فِي ذلكَ إِلا سنَّته؟ رَوَاهُ البُخَارِيّ

2617. इब्ने शिहाब बयान करते हैं, सालिम ने मुझे बताया की जिस साल हज्जाज बिन युसुफ़, इब्ने जुबैर के मद्दे मुक़ाबिल आया तो उस ने अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से मसअला दरियाफ्त किया, हम अरफा के दिन वुक़ुफ़ में (नमाज़ो का) क्या करूँ? सालिम ने कहा: अगर तुम सुन्नत की इत्तेबा करना चाहते हो तो फिर अरफा के दिन नमाज़ को जल्दी पढ़ो, अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया उस ने सच कहा है, वह ज़ुहर व असर को सुन्नत के मुताबिक़ ही जमा किया करते थे, मैंने सालिम से पूछा क्या रसूलुल्लाह ﷺ ने ऐसे किया? तो सालिम ने कहा, वह (सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम) आप ﷺ की सुन्नत ही की इत्तेबा करते हैं| (बुखारी)

رواه البخارى (1662)

بَاب رمي الْجمار • कंकरिया मारने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٢٦١٨ - (صَحِيح) عَن جَابر قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْمِي عَلَى رَاحِلَتِهِ يَوْمَ النَّحْرِ وَيَقُولُ: «لِتَأْخُذُوا مَنَاسِكَكُمْ فَإِنِّي لَا أَدْرِي لَعَلِّي لَا أَحُجُّ بعد حجتي هَذِه» . رَوَاهُ مُسلم

2518. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने क़ुर्बानी के दिन नबी ﷺ को अपनी सवारी पर बैठे हुए कंकरिया मारते देखा, आप ﷺ फरमा रहे थे: "तुम अपने हज के तरीके सिख लो, क्योंकि मैं नहीं जानता के शायद में अपने इस हज के बाद हज न कर सकू"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (310 / 1297)، (3137)

٢٦١٩ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَمَى الْجَمْرَةَ بِمِثْلِ حَصَى الْخَذْفِ. رَوَاهُ مُسلم

2619. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को चुटकी में लेकर चलाई जाने वाली कंकरी के बराबर कंकरिया मारते हुए देखा| (मुस्लिम)

رواه مسلم (313 / 1299)، (3140)

٢٦٢٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: رَمَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْجَمْرَةَ يَوْمَ النَّحْرِ ضُحًى وَأَمَّا بَعْدَ ذَلِكَ فَإِذا زَالَتِ الشَّمْسُ

2620. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने कुर्बानी के दिन चाश्त के वक़्त कंकरिया मारी जबकि उस के बाद सूरज ढल जाने के बाद मारी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (الحج باب 134 قبل ح 1746 تعلیقًا عن جابر رضی الله عنه) و مسلم (314 / 1300)، (3141)

٢٦٢١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ: أَنَّهُ انْتَهَى إِلَى الْجَمْرَةِ الْكُبْرَى فَجَعَلَ الْبَيْتَ عَنْ يَسَارِهِ وَمِنًى عَنْ يَمِينِهِ وَرَمَى بِسَبْعِ حَصَيَاتٍ يُكَبِّرُ مَعَ كُلِّ حَصَاةٍ ثُمَّ قَالَ: هَكَذَا رَمَى الَّذِي أُنْزِلَتْ عَلَيْهِ سُورَةُ الْبَقَرَةِ

2621. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह जमराह कुबरा (बड़े शैतान) के पास पहुंचे, बैतुल्लाह को अपने दाएँ जानिब और मीना को अपने बाएँ जानिब रखा और सात कंकरिया मारी, वह हर कंकरी के साथ (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते थे फिर उन्होंने ने फ़रमाया: जिस ज़ाते अकदस पर सुरह बकरह नाज़िल हुई थी उन्होंने भी इसी तरह कंकरिया मारी थी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1747) و مسلم (305309 / 1296)، (3131 و 3136)

٢٦٢٢ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الِاسْتِجْمَارُ تَوٌّ وَرَمْيُ الْجِمَارِ تَوٌّ وَالسَّعْيُ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ تَوٌّ وَالطَّوَافُ تَوٌّ وَإِذَا اسْتَجْمَرَ أَحَدُكُمْ فَلْيَسْتَجْمِرْ بِتَوٍّ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2622. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस्तेंजा के लिए ढेले इस्तेमाल करने की तादाद ताक है, कंकरिया मारना ताक है, सफा मरवा के दरमियान सई ताक है, और तवाफ़ ताक है, जब तुम में से कोई इस्तिंजा के लिए ढेले इस्तेमाल करे तो वह ताक अदद में ढेले इस्तेमाल करे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (315 / 1300)، (3143)

बَاب رمي الْجمار • कंकरिया मारने का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٦٢٣ - (صَحِيح) عَنْ قُدَامَةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمَّارٍ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَرْمِي الْجَمْرَةَ يَوْمَ النَّحْرِ عَلَى نَاقَةٍ صَهْبَاءَ لَيْسَ ضَرْبٌ وَلَا طَرْدٌ وَلَيْس قِيلُ: إِلَيْكَ إِليك. رَوَاهُ الشَّافِعِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

2623. कुदामा बिन अब्दुल्लाह बिन अम्मार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को कुर्बानी के दिन अपने सुरखी माइल सफ़ेद ऊंटनी पर बैठ कर कंकरिया मारते हुए देखा, वहां ना किसी को रोका जा रहा था न हटाया जा रहा था और ना ही यह कहा जा रहा था के हट जाओ! हट जाओ!| (हसन)

حسن ، تقدم : 2583 ، رواہ الشافعی فی الام (2 / 213) و الترمذی (903 و قال : حسن صحیح) و النسائی (5 / 270 ح 3063) و ابن ماجہ (3035) و الدارمی (2 / 62 ح 1907)

٢٦٢٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّمَا جُعِلَ رَمْيُ الْجِمَارِ وَالسَّعْيُ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ لِإِقَامَةِ ذِكْرِ اللَّهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

2624. आइशा रदियल्लाहु अन्हा नबी ﷺ से रिवायत करती हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: “कंकरिया मारना और सफा मरवा के दरमियान सई करना अल्लाह का ज़िक्र काइम करने के लिए मुकर्रर किया गया है”| तिरमिज़ी, दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (902) و الدارمی (2 / 50 ح 1860)

٢٦٢٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهَا قَالَتْ: قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَا نَبْنِي لَكَ بِنَاءً يُظِلُّكَ بِمِنًى؟ قَالَ: «لَا مِنًى مُنَاخُ مَنْ سَبَقَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه والدارمي

2625. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या हम (सहाबा की जमात) आप के साया के लिए मीना में कोई कमरे (साइबान) न बना दे? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं? मीना पहले पहुँच जाने वाले के लिए ऊंट बिठाने की जगह है”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (881 و قال : حسن صحیح) و ابن ماجہ (2006) [و ابوداؤد (2019) و الدارمی (2 / 73 ح 1943) و صححہ الحاکم (1 / 467) علی شرط مسلم و وافقہ الذھبی]

कंकरिया मारने का बयान • بَاب رمي الْجمار

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٢٦٢٦ - (صَحِيح) عَنْ نَافِعٍ قَالَ: إِنَّ ابْنَ عُمَرَ كَانَ يَقِفُ عِنْدَ الْجَمْرَتَيْنِ الْأُولَيَيْنِ وُقُوفًا طَوِيلًا يُكَبِّرُ اللَّهَ وَيُسَبِّحُهُ وَيَحْمَدُهُ وَيَدْعُو اللَّهَ وَلَا يَقِفُ عِنْدَ جمرَةِ العقبةِ. رَوَاهُ مَالك

2626. नाफेअ रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, कि अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा पहले दो जमरो के पास बहोत देर तक ठहरते, अल्लाह की किब्रियाई बयान करते, उसकी तस्बीह व तहमिद बयान करते और अल्लाह से दुआए करते लेकिन वह जमराह अक्बिह (बड़े शैतान) के पास खड़े नहीं होते थे। (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه مالک (1 / 407 ح 939)

بَاب الْهَدْي • कुर्बानी का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٢٦٢٧ - (صَحِيح) عَن ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِذِي الْحُلَيْفَةِ ثُمَّ دَعَا بِنَاقَتِهِ فَأَشْعَرَهَا فِي صَفْحَةِ سَنَامِهَا الْأَيْمَنِ وَسَلَّتَ الدَّمَ عَنْهَا وَقَلَّدَهَا نَعْلَيْنِ ثُمَّ رَكِبَ رَاحِلَتَهُ فَلَمَّا اسْتَوَتْ بِهِ على الْبَيْدَاء أهل بِالْحَجِّ. رَوَاهُ مُسلم

2627. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ ए ज़ुहर ज़ुल हलिफा के मक़ाम पर अदा की, फिर आप ने अपनी ऊंटनी मंगवाई, आप ने उसकी कोहान के दाएँ पहलु पर हल्का सा जख्म लगाया, वहां से खून बहने लगा, आप ने वह खून साफ़ कर दिया और उसकी गर्दन में दो जूते डाल दिए, फिर आप अपने सवारी पर सवार हो गए, जब वह बैदा में आप को लेकर सीधी खड़ी हो गई तो आप ने हज के लिए तल्बिया पुकारा। (मुस्लिम)

رواه مسلم (205 / 1243)، (3016)

٢٦٢٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: أَهْدَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مرّة إِلَى الْبَيْت غنما فقلدها

2628. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ ने एक मर्तबा चंद बकरिया बतौर कुर्बानी, बैतुल्लाह भिजवाई तो आप ﷺ ने उन्हें कलादह (हार वगैरा) पहनाया। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1701) و مسلم (367 / 1321)، (3203)

٢٦٢٩ - (صَحِيح) وَعَن جَابر قَالَ: ذَبَحَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ عَائِشَةَ بَقَرَةً يَوْمَ النَّحْرِ. رَوَاهُ مُسلم

2629. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने आइशा रदियल्लाहु अन्हा की तरफ से कुर्बानी के रोज़ एक गाय जिबह की। (मुस्लिम)

رواه مسلم (356 / 1319)، (3191)

٢٦٣٠ - (صَحِيح) وَعنهُ قَالَ: نَحَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ نِسَائِهِ بَقَرَةً فِي حَجَّتِهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2630. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने अपने हज के मौके पर अपने अज़्वाज ए मूतहरात की तरफ से एक गाय जिबह की| (मुस्लिम)

رواه مسلم (357 / 1319)، (3192)

٢٦٣١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: فَتَلْتُ قَلَائِدَ بُدْنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدَيَّ ثُمَّ قَلَّدَهَا وَأَشْعَرَهَا وَأَهْدَاهَا فَمَا حَرُم عَلَيْهِ كانَ أُحِلَّ لَهُ

2631. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने नबी ﷺ के कुर्बानी के ऊटों के कलादे खुद अपने हाथो से बूटे, फिर आप ने उन्हें कलादे पहनाए उनका शिआर किया और उन्हें कुर्बानी के लिए भेजा और जो चीज़ आप के लिए हलाल की गई वह आप ﷺ पर हराम नहीं हुई थी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1696) و مسلم (362 / 1321)، (3198)

٢٦٣٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهَا قَالَتْ: فَتَلْتُ قَلَائِدَهَا مِنْ عِهْنٍ كَانَ عِنْدِي ثُمَّ بَعَثَ بِهَا مَعَ أَبِي

2632. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने उन के कलादे, उन से तैयार किए जो के मेरे पास मौजूद थी, फिर आप ﷺ ने उन्हें मेरे वालिद के साथ बैतुल्लाह रवाना किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1705) و مسلم (364 / 1321)، (3200)

٢٦٣٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى رَجُلًا يَسُوقُ بَدَنَةً فَقَالَ: «ارْكَبْهَا» . فَقَالَ: إِنَّهَا بَدَنَةٌ. قَالَ: «ارْكَبْهَا» . فَقَالَ: إِنَّهَا بَدَنَةٌ. قَالَ: «ارْكَبْهَا وَيلك» فِي الثَّانِيَة أَو الثَّالِثَة

2633. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने एक आदमी को कुर्बानी का ऊंट हांकते हुए देखा तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस पर सवार हो जा”, उस ने अर्ज़ किया, यह तो कुर्बानी का ऊंट है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस पर सवार हो जा”, उस ने अर्ज़ किया, यह तो कुर्बानी का ऊंट है, आप ﷺ ने दूसरी या तीसरी मर्तबा फ़रमाया: “तुझ पर अफ़सोस हो उस पर सवार हो जा ”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1689) و مسلم (371 / 1322)، (3208)

٢٦٣٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي الزُّبَيْرِ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عبدِ اللَّه سُئِلَ عَنْ رُكُوبِ الْهَدْيِ فَقَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يَقُولُ: «ارْكَبْهَا بِالْمَعْرُوفِ إِذَا أُلْجِئْتَ إِلَيْهَا حَتَّى تَجِدَ ظَهْرًا» . رَوَاهُ مُسلم

2634. अबू जुबैर बयान करते हैं, मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु से सुना, उन से कुर्बानी के ऊंट पर सवारी के बारे में सवाल किया गया तो उन्होंने कहा, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जब तू उस पर सवारी करने पर मजबूर हो जाए तो फिर सवारी मिलने तक भले तरीके से उस पर सवारी कर”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (375 / 1324)، (3214)

٢٦٣٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سِتَّةَ عَشَرَ بَدَنَةً مَعَ رَجُلٍ وَأَمَّرَهُ فِيهَا. فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ أَصْنَعُ بِمَا أُبْدِعَ عَلَيَّ مِنْهَا؟ قَالَ: «انْحَرْهَا ثُمَّ اصْبُغْ نَعْلَيْهَا فِي دَمِهَا ثُمَّ اجْعَلْهَا عَلَى صَفْحَتِهَا وَلَا تَأْكُلْ مِنْهَا أَنْتَ وَلَا أَحَدٌ مِنْ أهل رفقتك» . رَوَاهُ مُسلم

2635. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक आदमी के साथ कुर्बानी के सोलह ऊंट भेजे और इसे इन पर अमीर मुकर्रर किया, तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अगर उनमें से कोई चलने से आजिज़ आजाए तो फिर मैं क्या करू? आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे नहर कर देना और इस के कलादे के जूते उस के खून में रंग कर उस के पहलु पर निशान लगा देना और उस में से तुम और तुम्हारे साथी न खाए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (377 / 1325)، (3216)

٢٦٣٦ - (صَحِيح) وَعَن جابرٍ قَالَ: نحَرْنا مَعَ رَسولِ اللَّهِ عَامَ الْحُدَيْبِيَةِ الْبَدَنَةَ عَنْ سَبْعَةٍ وَالْبَقَرَةَ عَنْ سَبْعَة. رَوَاهُ مُسلم

2636. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने हुदैबिया के साल रसूलुल्लाह ﷺ के साथ ऊंट और गाय को सात सात आदमियों की तरफ से बतौर क़ुरबानी नहर किया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (350 / 1317)، (3185)

٢٦٣٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن ابنِ عمَرَ: أَنَّهُ أَتَى عَلَى رَجُلٍ قَدْ أَنَاخَ بِدَنَتَهُ يَنْحَرُهَا قَالَ: ابْعَثْهَا قِيَامًا مُقَيَّدَةً سُنَّةَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

2637. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के वह एक आदमी के पास आए जो अपने कुर्बानी के ऊंट को बिठाकर नहर कर रहा था तो उन्होंने इसे फ़रमाया: “मुहम्मद ﷺ की सुन्नत के मुताबिक इसे खड़ा करो और उसकी टांग को बांधो (फिर नहर करो)| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1713) ، و مسلم (358 / 1320)، (3193)

٢٦٣٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَمَرَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ أَقُومَ عَلَى بُدْنِهِ وَأَنْ أَتَصَدَّقَ بِلَحْمِهَا وَجُلُودِهَا وَأَجِلَّتِهَا وَأَنْ لَا أُعْطِيَ الْجَزَّارَ مِنْهَا قَالَ: «نَحْنُ نُعْطِيهِ مِنْ عِنْدِنَا»

2638. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे हुक्म फ़रमाया की मैं आप ﷺ के कुर्बानी के ऊटों की निगरानी करू और उनकी लगामो, चमड़ो और पालानो को सदका कर दू और कसाब को उस में से कुछ न दू, फ़रमाया: “हम इसे अपने पास से देंगे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1717) و مسلم (348 / 1317)، (3180)

٢٦٣٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن جابرٍ قَالَ: كُنَّا لَا نَأْكُلُ مِنْ لُحُومِ بُدْنِنَا فَوْقَ ثَلَاثٍ فَرَخَّصَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «كُلُوا وَتَزَوَّدُوا» . فَأَكَلْنَا وتزودنا

2639. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम अपने कुर्बानी के ऊटों का गोश्त तीन दिन से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) नहीं खाया करते थे, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें रुखसत दी तो फ़रमाया: “खाओ और रसद (माल सामान) के तौर पर साथ भी ले जाओ”, पस हमने खाया और रसद (माल सामान) के तौर पर साथ भी लाए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1719) و مسلم (30 / 1972)، (5105)

بَاب الْهَدْيِ • कुर्बानी का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٦٤٠ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَهْدَى عَامَ الْحُدَيْبِيَةِ فِي هَدَايَا رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَمَلًا كَانَ لِأَبِي جَهْلٍ فِي رَأْسِهِ بُرَةٌ مِنْ فِضَّةٍ وَفِي رِوَايَةٍ مِنْ ذَهَبٍ يَغِيظُ بِذَلِكَ الْمُشْرِكِين. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2640. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं की नबी ﷺ ने हुदैबिया के साल कुर्बानी के जानवर भेजे, रसूलुल्लाह ﷺ के कुर्बानी के जानवरों में अबू जहल का ऊंट भी था जिस की नाक में चाँदी का और एक दूसरी रिवायत में है की सोने का एक कड़ा था| आप ﷺ उस से मुशरिकीन को गुस्से दिलाना चाहते थे| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (1749) [و احمد 1 / 261]

٢٦٤١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ نَاجِيَةَ الْخُزَاعِيِّ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ أَصْنَعُ بِمَا عَطِبَ مِنَ الْبُدْنِ؟ قَالَ: «انْحَرْهَا

ثُمَّ اغْمِسْ نَعْلَهَا فِي دَمِهَا ثُمَّ خَلِّ بَيْنَ النَّاسِ وَبَيْنَهَا فَيَأْكُلُونَهَا» . رَوَاهُ مَالك وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

2641. नाजिय खुजाई रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! कुर्बानी के ऊटों में से कोई चलने से आजिज़ आजाए तो क्या करू? आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे नहर कर देना फिर इस (के कलादे) के जूते उस के खून में डुबो देना (और उस के पहलु पर निशान लगा देना) फिर इसे लोगों के लिए छोड़ देना ताकि वह इसे खा लें”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه مالک (1 / 380 ح 873) و الترمذی (910 و قال : حسن صحيح) و ابن ماجه (3106)

٢٦٤٢ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ أَبُو دَاوُد والدارمي عَن نَاجِية الْأَسْلَمِيّ

2642. अबू दावुद और दारमी ने इसे नाजिय असलमी से रिवायत किया है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (1762) و الدارمی (2 / 65 ح 1915)

٢٦٤٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ قُرْطٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ أَعْظَمَ الْأَيَّامِ عِنْدَ اللَّهِ يَوْمُ النَّحْرِ ثُمَّ يَوْمُ الْقَرِّ» . قَالَ ثَوْرٌ: وَهُوَ الْيَوْمُ الثَّانِي. قَالَ: وَقُرِّبَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَدَنَاتٌ خَمْسٌ أَوْ سِتٌّ فطفِقْن يَزْدَلِفْنَ إِليهِ بأيتهِنَّ يبدأُ قَالَ: فَلَمَّا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا. قَالَ فَتَكَلَّمَ بِكَلِمَةٍ خَفِيَّةٍ لَمْ أَفْهَمْهَا فَقُلْتُ: مَا قَالَ؟ قَالَ: «مَنْ شَاءَ اقْتَطَعَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ»» وَذَكَرَ حَدِيثَا ابنِ عبَّاسٍ وجابرٍ فِي بَاب الْأُضْحِية

2643. अब्दुल्लाह बिन कुरती रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह के नज़दीक सबसे अज़ीम दिन कुर्बानी का दिन है, फिर (मीना में) करार पकड़ने (ग्यारह ज़िल हिज्जा) का दिन है”, सौरन रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: उस से कुर्बानी का दूसरा दिन मुराद है, रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के पास पांच या छे कुर्बानी के ऊंट पेश किए गए, वह आप ﷺ के करीब होने लगे के आप किस से इब्तिदा फरमाइएगे, रावी बयान करते हैं, जब वह पहलु के बल गिर पड़ी तो आप ने कोई हलकी सी बात की जिसे में समझ न सका, तो मैंने (अपने पास वाले शख़्स से) कहा आप ने क्या फ़रमाया है? उस ने कहा, आप ﷺ ने फ़रमाया है “ जो शख़्स चाहे उस से गोश्त काट कर ले जाए”| अबू दावुद, अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु और जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस बाब अल दहियत में ज़िक्र की गई है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (1765) 0 حديث ابن عباس تقدم (1469) و حديث جابر تقدم (1458)

कुर्बानी का बयान • بَاب الْهَدْيِ

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٢٦٤٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «مَنْ ضَحَّى مِنْكُمْ فَلَا يُصْبِحَنَّ بَعْدَ ثَالِثَةٍ وَفِي بَيْتِهِ مِنْهُ شَيْءٌ» . فَلَمَّا كَانَ الْعَامُ الْمُقْبِلُ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ نَفْعَلُ كَمَا فَعَلْنَا الْعَامَ الْمَاضِي؟ قَالَ: «كُلُوا وَأَطْعِمُوا وَادَّخِرُوا فَإِنَّ ذَلِكَ الْعَامَ كَانَ بِالنَّاسِ جَهْدٌ فَأَرَدْتُ أَنْ تُعِينُوا فِيهِمْ»

2644. सलमा बिन अकवा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तुम में से जिस ने कुर्बानी की है, तीसरे दिन के बाद (यानी चोथे रोज़) उस के घर में कुर्बानी का गोश्त नहीं होना चाहिए”, जब आइन्दा साल आया तो सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! जिस तरह हमने पिछले साल किया था क्या इस साल भी हम वैसे ही करें? आप ﷺ ने फ़रमाया: “खाओ खिलाओ और ज़खीरा भी करो, क्योंकि गुज़िश्ता साल लोग कहत साली की वजह से तकलीफ में थे इसलिए मैंने इरादा किया के तुम उनकी इआनत करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5569) و مسلم (34 / 1974)، (5109)

٢٦٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ نُبَيْشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: [ص:٨١ «إن كُنَّا نهينَا عَنْ لُحُومِهَا أَنْ تَأْكُلُوهَا فَوْقَ ثَلَاثٍ لِكَيْ تسَعْكم. جاءَ اللَّهُ بالسَّعَةِ فكُلوا وادَّخِرُوا وأْتَجِروا. أَلَا وَإِنَّ هَذِهِ الْأَيَّامَ أَيَّامُ أَكْلٍ وَشُرْبٍ وذِكْرِ اللَّهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2645. नुबैश रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: हमने तुम्हें मना किया था के कुर्बानी का गोश्त तीन दिन से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) नहीं खाना ताकि तुम्हें कशाईश और खुशहाली मिल जाए, अब अल्लाह तआला ने तुम्हें खुशहाली अता कर दी है तो खाओ ज़खीरा करो और (सदका कर के) अज़र पाओ, और सुन लो! यह अय्याम खाने पीने और अल्लाह तआला का ज़िक्र करने के है”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (2813)

सर मुंडवाने का बयान • بَاب الْحلق

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٦٤٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَلَقَ رَأْسَهُ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ وَأُنَاسٌ مِنْ أَصْحَابِهِ وَقَصَّرَ بَعْضُهُمْ

2646. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने हज्जतुल वदा के मौके पर अपना सर मुंडाया, और आप ﷺ के बाज़ सहाबा ने भी सर मुंडाया और उनमें से बाज़ ने बाल कतराए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (1726) و مسلم (322 / 1304)، (3151)

٢٦٤٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ لِي مُعَاوِيَةُ: إِنِّي قَصَّرْتُ مِنْ رَأْسِ النَّبِيِّ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم عِنْد الْمَرْوَة بمشقص

2647. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मुआविया रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे बताया की मैंने मरवा के पास तीर के भाल से नबी ﷺ के सर के बाल कतरे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (1730) و مسلم (209 / 1236)، (3021)

٢٦٤٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ: «اللَّهُمَّ ارْحَمِ الْمُحَلِّقِينَ» . قَالُوا: وَالْمُقَصِّرِينَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «اللَّهُمَّ ارْحَمِ الْمُحَلِّقِينَ» . قَالُوا: وَالْمُقَصِّرِينَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «وَالْمُقَصِّرِينَ»

2648. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने हज्जतुल वदा के मौके पर फ़रमाया: “ए अल्लाह! सर मुंडाने वालो पर रहम फरमा”, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! और बाल कतराने वालो पर भी आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह सर मुंडाने वालो पर रहम फरमा”, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! बाल कतराने वालो पर भी आप ﷺ ने फ़रमाया: “बाल कतराने वालो पर भी”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (1727) و مسلم (317 / 1301)، (3145)

٢٦٤٩ - (صَحِيح) وَعَن يحيى بن الْحصين عَن جدته أَنَّهَا سَمِعَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ دَعَا لِلْمُحَلِّقِينَ ثَلَاثًا وَلِلْمُقَصِّرِينَ مرّة وَاحِدَة. رَوَاهُ مُسلم

2649. याह्या बिन हुसैन रहिमहुल्लाह अपनी दादी से रिवायत करते हैं कि उन्होंने हज्जतुल वदा के मौके पर नबी ﷺ को सिर मुंडवाने वालो के लिए तीन बार और बाल कतराने वालो के लिए एक बार दुआ करते हुए सुना| (मुस्लिम)

رواه مسلم (321 / 1303)، (3150)

٢٦٥٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتَى مِنًى فَأَتَى الْجَمْرَةَ فَرَمَاهَا ثُمَّ أَتَى مَنْزِلَهُ بِمِنًى وَنَحَرَ نُسُكَهُ ثُمَّ دَعَا بِالْحَلَّاقِ وَنَاوَلَ الْحَالِقَ شِقَّهُ الْأَيْمَنَ ثُمَّ دَعَا أَبَا طَلْحَةَ الْأَنْصَارِيَّ فَأَعْطَاهُ إِيَّاهُ ثُمَّ نَاوَلَ الشِّقَّ الْأَيْسَرَ فَقَالَ «احْلِقْ» فَحَلَقَهُ فَأَعْطَاهُ طَلْحَةَ فَقَالَ: «اقْسِمْهُ بَيْنَ النَّاسِ»

2650. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ मीना तशरीफ़ लाए तो जमराह पर आए और इसे कंकरिया मारी, फिर मीना में अपने रिहाइश गाह पर आए और कुर्बानी की फिर आप ने हजाम को मंगवाया और आप ने अपने सर की दाएँ तरफ हजाम की तरफ की तो उस ने इसे मुंड दिया फिर आप ने अबू तल्हा अंसारी रदियल्लाहु अन्हु को बुलाया और वह बाल उन्हें दे दिए, फिर आप ने बाएँ जानिब उसकी तरफ की और फ़रमाया: “मुंडा दो”, तो उस ने इसे मुंड दिया तो आप ने वह बाल भी अबू तल्हा को दे दिए और फ़रमाया: “उन्हें लोगों में तकसीम कर दो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (171) و مسلم (323 / 1305)، (3152)

٢٦٥١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كُنْتُ أُطَيِّبُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبْلَ أَنْ يُحْرِمَ وَيَوْمَ النَّحْرِ قَبْلَ أَنْ يَطُوفَ بِالْبَيْتِ بِطِيبٍ فِيهِ مِسْكٌ

2651. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ को इहराम बांधने से पहले और कुर्बानी के दिन बैतुल्लाह का तवाफ़ करने से पहले कस्तूरी की मिलावट वाली खुशबू लगाया करती थी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1539) و مسلم (46 / 1191)، (2841)

٢٦٥٢ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَفَاضَ يَوْمَ النَّحْرِ ثُمَّ رجعَ فصلّى الظهْرَ بمنى. رَوَاهُ مُسلم

2652. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने कुर्बानी के दिन तवाफ़ ए इफादा किया, फिर वापस तशरीफ़ लाए और ज़ुहर की नमाज़ मीना में अदा की| (मुस्लिम)

رواه مسلم (335 / 1308)، (3165)

सर मुंडवाने का बयान • بَاب الْحلق

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٢٦٥٣ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَلِيٍّ وَعَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَا: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَن تحلق الْمَرْأَة رَأسهَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2653. अली रदियल्लाहु अन्हु और आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने औरतो को सर मुंडाने से मना फ़रमाया| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (915)

٢٦٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَ عَلَى النِّسَاءِ الْحَلْقُ إِنَّمَا عَلَى النِّسَاءِ التَّقْصِيرُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ»» وَهَذَا الْبَابُ خَالٍ مِنَ الْفَصْلِ الثَّالِثِ

2654. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “औरतो पर सर मुंडाना वाजिब नहीं इन पर बाल कतराना वाजिब है”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (1984 / 1985) و الدارمی (2 / 64 ح 1911)

وهذا الباب خال من الفصل الثالث

इस बाब में तीसरी फस्ल नहीं है|



بَاب فِي التَّحَلُّل ونقلهم بعض الْأَعْمَال على بعض • हज के अफआल आगे पीछे करने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٢٦٥٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَفَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ بِمِنًى لِلنَّاسِ يَسْأَلُونَهُ فَجَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: لَمْ أَشْعُرْ فَحَلَقْتُ قَبْلَ أَنْ أَذْبَحَ. فَقَالَ: «اذْبَحْ وَلَا حَرَجَ» فَجَاءَ آخَرُ فَقَالَ: لَمْ أَشْعُرْ فَنَحَرْتُ قَبْلَ أَنْ أَرْمِيَ. فَقَالَ: «ارْمِ وَلَا حَرَجَ» . فَمَا سُئِلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ شَيْءٍ قُدِّمَ وَلَا أُخِّرَ إِلَّا قَالَ: «افْعَلْ وَلَا حرج»»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: أَتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ: حَلَقْتُ قَبْلَ أَنْ أَرْمِيَ. قَالَ: «ارْمِ وَلَا حَرَجَ» وأتاهُ آخرُ فَقَالَ: أَفَضتُ إِلى البيتِ قَبْلَ أَنْ أَرْمِيَ. قَالَ: «ارْمِ وَلَا حَرَجَ»

2655. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के हज्जतुल वदा के मौके पर रसूलुल्लाह ﷺ ने लोगों की खातिर मीना में वुकुफ़ फ़रमाया, लोग आप के पास आते और मसाइल दरियाफ्त करते, एक आदमी आप के पास आया तो उस ने अर्ज़ किया, मैंने ला इल्मी में कुर्बानी से पहले सर मुंडा लिया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “कुर्बानी कर लो, कोई हरज नहीं”, फिर एक और आदमी आया तो उस ने अर्ज़ किया, मैंने कंकरिया मारने से पहल ला इल्मी में कुर्बानी कर ली है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “(अब) कंकरिया मार लो कोई हरज नहीं”, नबी ﷺ से जिस चीज़ की भी तकदिम ताखीर के बारे में सवाल किया गया तो आप ﷺ ने यही फ़रमाया: “अब कर लो, कोई हरज नहीं”| बुखारी, मुस्लिम, और मुस्लिम की रिवायत में है एक आदमी आप ﷺ के पास आया तो उस ने अर्ज़ किया, मैंने कंकरिया मारने से पहले सर मुंडा लिया है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अब कंकरिया मार लो, कोई हरज नहीं” फिर एक और आदमी आया उस ने अर्ज़ किया, मैंने कंकरिया मारने से पहले तवाफ़ ए इफादा कर लिया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अब कंकरिया मार लो कोई हरज नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (83) و مسلم (327 / 1306 ، 333 / 1306)، (3156 و 3163)

٢٦٥٦ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُسْأَلُ يَوْمَ النَّحْرِ بِمِنًى فَيَقُولُ: «لَا حرَجَ» فَسَأَلَهُ رجل فَقَالَ: رميت بعد مَا أمسَيتُ. فَقَالَ: «لَا حرَجَ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2656. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, कुर्बानी के दिन मीना में नबी ﷺ से मसाइल दरियाफ्त किए गए तो आप ﷺ यही फरमा रहे थे: “कोई हर्ज नहीं”. एक आदमी ने आप ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया तो उस ने अर्ज़ किया, मैंने गुरुबे आफ़ताब के बाद कंकरिया मारी है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “कोई हरज नहीं‘‘| (बुखारी)

رواه البخارى (1723)

بَاب فِي التَّحَلُّل ونقلهم بعض الْأَعْمَال على بعض • हज के अफआल आगे पीछे करने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٦٥٧ - (لم تتمّ دراسته) عَن عَليّ قَالَ: أَتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَفَضْتُ قَبْلَ أَنْ أَحْلِقَ فَقَالَ: «احْلِقْ أَوْ قَصِّرْ وَلَا حَرَجَ» . وَجَاءَ آخَرُ فَقَالَ: ذَبَحْتُ قَبْلَ أَنْ أَرْمِيَ. قَالَ: «ارْمِ وَلَا حرج» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2657. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी आप ﷺ के पास आया तो उस ने अर्ज़ किया,: “अल्लाह के रसूल! मैंने सर मुंडाने से पहले तवाफ़ ए इफादा कर लिया है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अब सर मुंडा लो या बाल क़तर लो, कोई हरज नहीं”, फिर एक दूसरा आदमी आया तो उस ने अर्ज़ किया, मैंने कंकरिया मारने से पहले कुर्बानी कर ली, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अब कंकरिया मार लो, कोई हरज नहीं”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (885 و قال : حسن صحیح) [و ابوداؤد (1922 ، 1935) و ابن ماجه (3010)] * سفیان الثوری مدلس و عنعن

بَاب فِي التَّحَلُّل ونقلهم بعض الْأَعْمَال على بعض • हज के अफआल आगे पीछे करने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٦٥٨ - (لم تتمّ دراسته) عَن أسامةَ بنِ شريكٍ قَالَ: خَرَجْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَاجًّا فَكَانَ النَّاسُ يَأْتُونَهُ فَمِنْ قَائِلٍ: يَا رَسُولَ اللَّهِ سَعَيْتُ قَبْلَ أَنْ أَطُوف أَوْ أَخَّرْتُ شَيْئًا أَوْ قَدَّمْتُ شَيْئًا فَكَانَ يَقُولُ: «لَا حَرَجَ إِلَّا عَلَى رَجُلٍ اقْتَرَضَ عِرْضَ مُسْلِمٍ وَهُوَ ظَالِمٌ فَذَلِكَ الَّذِي حَرِجَ وهَلِك» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2658. उसामा बिन शरीक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं हज करने के लिए रसूलुल्लाह ﷺ के साथ रवाना हुआ, लोग आप ﷺ के पास आते और मसाइल दरियाफ्त करते थे, किसी ने कहा अल्लाह के रसूल! मैंने तवाफ़ करने से पहले सई कर ली, या मैंने एक चीज़ को मोअख़्ख़र कर लिया या मैंने कोई चीज़ मुकद्दम कर ली, आप ﷺ फरमाते थे: “इस शख़्स के सिवा जिस ने किसी मुसलमान की इज्ज़त को ख़राब किया कोई हरज नहीं, ऐसा शख़्स ज़ालिम है और ऐसा शख़्स ही हरज, गुनाह और हलाकत का शिकार हुआ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2015)

बَابٌ خُطْبَةُ يَوْمِ النَّحْرِ وَرمي أَيَّام التَّشْرِيق والتوديع • कुर्बानी के दिन खुत्बा देने, अय्याम ए तशरीक में कंकरिया मारने और वदा का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٢٦٥٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: خَطَبَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ النَّحْرِ قَالَ: «إِنَّ الزَّمَانَ قَدِ اسْتَدَارَ كَهَيْئَتِهِ يَوْمَ خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ السَّنَةُ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ثَلَاثٌ مُتَوَالِيَاتٌ ذُو الْقَعْدَةِ وَذُو الْحِجَّةِ وَالْمُحَرَّمُ وَرَجَبُ مُضَرَ الَّذِي بَيْنَ جُمَادَى وَشَعْبَانَ» وَقَالَ: «أَيُّ شَهْرٍ هَذَا؟» قُلْنَا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ فَقَالَ: «أَلَيْسَ ذَا الْحِجَّةِ؟» قُلْنَا: بَلَى. قَالَ: «أَيُّ بَلَدٍ هَذَا؟» قُلْنَا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ قَالَ: «أَلَيْسَ الْبَلْدَةَ؟» قُلْنَا: بَلَى قَالَ «فَأَيُّ يَوْمٍ هَذَا؟» قُلْنَا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ. قَالَ: «أَلَيْسَ يَوْمَ النَّحْرِ؟» قُلْنَا: بَلَى. قَالَ: «فَإِنَّ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ وَأَعْرَاضَكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا فِي بَلَدِكُمْ هَذَا فِي شَهْرِكُمْ هَذَا وَسَتَلْقَوْنَ رَبَّكُمْ فَيَسْأَلُكُمْ عَنْ أَعْمَالِكُمْ أَلَا فَلَا تَرْجِعُوا بِعْدِي ضُلَّالًا يَضْرِبُ [ص:٨١ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ أَلَا هَلْ بَلَّغْتُ؟» قَالُوا: نَعَمْ. قَالَ: «اللَّهُمَّ اشْهَدْ فَلْيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ فَرُبَّ مُبَلَّغٍ أَوْعَى مِنْ سَامِعٍ»

2659. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने कुर्बानी के दिन हमें ख़िताब फ़रमाया तो फ़रमाया: “ज़माने (साल) घूम घुमा कर इसी सूरत पर गया है जैसे इस दिन था, जिस रोज़ अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान तखलीक फरमाए थे, साल बारह माह का है, उनमें से चार हुरमत वाले हैं, तीन जुल कअदा, ज़ुलहिज्जा और मुहर्रम तो मुतवातिर है, और रजब मुज़िर जो के जमादिउल सानी और शाबान के दरमियान है”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये कौन सा महीने है” हमने अर्ज़ किया: अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ने ख़ामोशी इख़्तियार कर ली हत्ता के हमने ख़याल किया आप उस का कोई और नाम रखेंगे, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या यह ज़ुलहिज्जा नहीं ?” हमने अर्ज़ किया: जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये कौन सा शहर है” हमने अर्ज़ किया: अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ख़ामोश रहे हत्ता के हमने ख़याल किया के आप उस का कोई और नाम रखेंगे, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या यह बलद (यानी मक्का) नहीं ?” हमने अर्ज़ किया: जी हाँ! ऐसे ही है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये कौन सा दिन है?“ हमने अर्ज़ किया: अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ख़ामोश रहे हत्ता के हमने गुमान किया के आप उस का कोई और नाम रखेंगे, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या यह कुर्बानी का दिन नहीं ?” हमने अर्ज़ किया: जी हाँ! ऐसे ही है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारे खून, तुम्हारे अमवाल और तुम्हारी इज्ज़त्ते तुम पर इस माह में इस शहर में और इस दीन की हुरमत की तरह तुम पर हराम है, तुम अनकरीब अपने रब से मुलाकात करने वाले हो, वह तुम्हारे आमाल के बारे में तुम से सवाल करेगा, सुन लो! तुम मेरे बाद गुमराह न हो जाना के एक दूसरे को क़त्ल करने लगो, सुन लो! क्या मैंने तुम तक दीन पहुंचा दिया? उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह गवाह रहना जो यहाँ

मौजूद है वह गैर मौजूद तक पहुंचा दें, बसा-अवक़ात जिस को बात पहुंचाई जाती है के सुनने वाले से ज़्यादा याद रखने वाला होता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1741) و مسلم (2931 / 1679)، (4383 و 4385)

٢٦٦٠ - (صَحِيح) وَعَن وَبرةَ قَالَ: سَأَلْتُ ابْنَ عُمَرَ: مَتَى أَرْمِي الْجِمَارَ؟ قَالَ: إِذَا رَمَى إِمَامُكَ فَارْمِهِ فَأَعَدْتُ عَلَيْهِ الْمَسْأَلَةَ. فَقَالَ: كُنَّا نَتَحَيَّنُ فَإِذَا زَالَتِ الشَّمْسُ رمينَا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2660. वबरत रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से दरियाफ्त किया में किस वक़्त कंकरिया मारू? उन्होंने ने फ़रमाया: जब तुम्हारा इमाम कंकरिया मारे तो तुम भी कंकरिया मारो, मैंने दोबारा उन से दरियाफ्त किया तो उन्होंने ने फ़रमाया: हम इंतज़ार करते रहते थे जब सूरज ढल जाता तो हम कंकरिया मारते थे| (बुखारी)

رواه البخارى (1746)

٢٦٦١ - (صَحِيح) وَعَن سالمٍ عَن ابنِ عمر: أَنَّهُ كَانَ يَرْمِي جَمْرَةَ الدُّنْيَا بِسَبْعِ حَصَيَاتٍ يُكبِّرُ على إِثْرِ كُلِّ حَصَاةٍ ثُمَّ يَتَقَدَّمُ حَتَّى يُسْهِلَ فَيَقُومُ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ طَوِيلًا وَيَدْعُو وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ ثُمَّ يَرْمِي الْوُسْطَى بِسَبْعِ حَصَيَاتٍ يُكَبِّرُ كُلَّمَا رَمَى بِحَصَاةٍ ثُمَّ يَأْخُذُ بِذَاتِ الشِّمَالِ فَيُسْهِلُ وَيَقُومُ مُسْتَقْبِلَ الْقِبْلَةِ ثُمَّ يَدْعُو وَيَرْفَعُ يَدَيْهِ وَيَقُومُ طَوِيلًا ثُمَّ يَرْمِي جَمْرَةَ ذَاتِ الْعَقَبَةِ مِنْ بَطْنِ الْوَادِي بِسَبْعِ حَصَيَاتٍ يُكَبِّرُ عِنْدَ كُلِّ حَصَاةٍ وَلَا يَقِفُ عِنْدَهَا ثُمَّ يَنْصَرِفُ فَيَقُولُ: هَكَذَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَفْعَله. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2661. सालिम रहिमहुल्लाह इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं, के वह जमराह दुनिया (मस्जिद खफिफ के करीब वाले जमराह को) सात कंकरिया मारते और हर कंकरी के बाद (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते थे फिर आगे बढ़ते हत्ता के नरम ज़मीन पर किबले रुख खड़े हो कर देर तक हाथ उठा कर दुआएं करते फिर बाएँ जानिब हो कर नरम ज़मीन पर किबले रुख खड़े हो कर हाथ उठा कर देर तक दुआए करते रहते फिर दरमियान वाले जमरे को सात कंकरिया मारते जब कंकरी मारते तो (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते थे फिर वादी के उतार से जमराह अक्बिह को सात कंकरिया मारते आप हर कंकरी मारते वक़्त (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते, आप उस के पास न ठहरते, फिर वापस जाते और फरमाते मैंने नबी ﷺ को इसी तरह करते हुए देखा है?| (बुखारी)

رواه البخارى (17511752)

٢٦٦٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: اسْتَأْذَنَ الْعَبَّاسُ بْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَبِيتَ بِمَكَّةَ لَيَالِيَ منى من أجلِ سِقايتِهِ فَأذن لَهُ

2662. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रदियल्लाहु अन्हु ने पानी पिलाने की वजह से, मीना की राते मक्का में गुज़ार ने के लिए रसूलुल्लाह ﷺ से इजाज़त तलब की तो आप ﷺ ने उन्हें इजाज़त दे दि| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1634) و مسلم (346 / 1315)، (3177)

٢٦٦٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَاءَ إِلَى السِّقَايَةِ فَاسْتَسْقَى. فَقَالَ الْعَبَّاسُ: يَا فَضْلُ اذْهَبْ إِلَى أُمِّكَ فَأْتِ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ [ص:٨١ بِشَرَابٍ مِنْ عِنْدِهَا فَقَالَ: «اسْقِنِي» فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهُمْ يَجْعَلُونَ أَيْدِيَهُمْ فِيهِ قَالَ: «اسْقِنِي» . فَشرب مِنْهُ ثُمَّ أَتَى زَمْزَمَ وَهُمْ يَسْقُونَ وَيَعْمَلُونَ فِيهَا. فَقَالَ: «اعْمَلُوا فَإِنَّكُمْ عَلَى عَمَلٍ صَالِحٍ» . ثُمَّ قَالَ: «لَوْلَا أَنْ تُغْلَبُوا لَنَزَلْتُ حَتَّى أَضَعَ الْحَبْلَ عَلَى هَذِهِ» . وَأَشَارَ إِلَى عَاتِقِهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2663. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ पानी पीने की जगह पर तशरीफ़ लाए तो आप ने पानी तलब किया तो अब्बास रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: फ़ज़ल! अपने वालिद के पास जाओ और उन के पास से रसूलुल्लाह ﷺ के लिए पानी लेकर आओ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे (यही से) पिलाओ”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! लोग अपने हाथ उस में डालते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे (यही से) पिलाओ”, आप ने इसी में से नोश फ़रमाया, फिर आप ज़म ज़म पर तशरीफ़ लाए तो लोग वहां पानी पिला रहे थे और खूब मेहनत कर रहे थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “काम करते रहो, क्योंकि तुम एक नेक काम में मशगुल हो”, फिर फ़रमाया: “अगर लोग तुम पर ग़ालिब न आजाए तो मैं भी अपने सवारी से उतर आता हत्ता कि मैं रस्सी उस पर रख लेता”, आप ने अपने कंधे की तरफ इरशाद फ़रमाया| (बुखारी)

رواه البخاری (1635)

٢٦٦٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَّى الظُّهْرَ وَالْعَصْرَ وَالْمَغْرِبَ وَالْعَشَاءَ ثُمَّ رَقَدَ رَقْدَةً بِالْمُحَصَّبِ ثُمَّ رَكِبَ إِلَى الْبَيْتِ فَطَافَ بِهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

2664. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने ज़ुहर, असर, मग़रिब और ईशा की नमाज़े पढ़ी फिर आप वादी मुहस्सब में थोड़ी देर सोए, फिर आप सवारी पर बैतुल्लाह तशरीफ़ लाए और उस का तवाफ़ (वदा) किया| (बुखारी)

رواه البخاری (1756)

٢٦٦٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ رُفَيْعٍ قَالَ: سأَلتُ أنسَ بنَ مالكٍ. قُلْتُ: أَخْبِرْنِي بِشَيْءٍ عَقَلْتَهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيْنَ صَلَّى الظُّهْرَ يومَ الترويةِ؟ قَالَ: بمنى. قلت: فَأَيْنَ صَلَّى الْعَصْرَ يَوْمَ النَّفْرِ؟ قَالَ:

بِالْأَبْطَحِ. ثُمَّ قَالَ افْعَلْ كَمَا يَفْعَلُ أَمَرَاؤُكَ

2665. अब्दुल अज़ीज़ बिन रुफीअ बयान करते हैं, मैंने अनस रदियल्लाहु अन्हु बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से दरियाफ्त किया, मैंने कहा अगर आप ने रसूलुल्लाह ﷺ से कोई बात याद की हो तो मुझे बताइए के आप ने तरविया (आठ ज़िल हिज्जा) के दिन ज़ुहर की नमाज़ कहाँ पढ़ी थी? उन्होंने ने फ़रमाया: मीना में, फिर पूछा: आप ﷺ ने मीना से वापस आते हुए असर की नमाज़ कहाँ पढ़ी थी? फ़रमाया वादी ए अब्तह में, फिर फ़रमाया जैसे तुम्हारे उमरा हुक्मरान करे वैसे तुम करो| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1653) و مسلم (336 / 1309)، (3166)

٢٦٦٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: نُزُولُ الْأَبْطَحِ لَيْسَ بِسُنَّةٍ إِنَّمَا نَزَلَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِأَنَّهُ كَانَ أسمح لِخُرُوجِهِ إِذا خرج

2666. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, अब्तह में कयाम करना सुन्नत नहीं? रसूलुल्लाह ﷺ ने तो वहां इसलिए कयाम फ़रमाया था के वहां से मदीना के लिए रवाना होना ज़्यादा आसान था| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1765) و مسلم (339 / 1311)، (3169)

٢٦٦٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهَا قَالَتْ: أَحْرَمْتُ مِنَ التَّنْعِيمِ بِعُمْرَةٍ فَدَخَلْتُ فَقَضَيْتُ عُمْرَتِي وَانْتَظَرَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم بالأبطحِ حَتَّى فَرَغْتُ فَأَمَرَ النَّاسَ بِالرَّحِيلِ فَخَرَجَ فَمَرَّ بِالْبَيْتِ فَطَافَ بِهِ قَبْلَ صَلَاةِ الصُّبْحِ ثُمَّ خَرَجَ إِلَى الْمَدِينَةِ. هَذَا [ص:٨١ الْحَدِيثُ مَا وَجَدْتُهُ بِرِوَايَةِ الشَّيْخَيْنِ بَلْ بِرِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ مَعَ اخْتِلَاف يسير فِي آخِره

2667. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने मक़ाम ए तनइम से उमरा के लिए इहराम बांधा मैं (मक्के में) दाखिल हुई और अपना उमरा अदा किया, जबकि रसूलुल्लाह ﷺ ने अब्तह के मक़ाम पर मेरा इंतज़ार फ़रमाया हत्ता कि मैं उमरा से फारिग़ हो गए तो आप ने लोगों को कुच का हुक्म फ़रमाया, आप वहां से निकले और बैतुल्लाह का तवाफ़ सुबह की नमाज़ से पहले किया, फिर आप ﷺ मदीना के लिए रवाना हुए| मैंने सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की रिवायत के हवाले से यह हदीस नहीं पाई बल्कि आख़िर पर थोड़े से इख्तिलाफ के साथ अबू दावुद की रिवायत में पाया| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (2005 و سنده صحیح) [و انظر صحیح البخاری (1560) و مسلم (123 / 1211)، (2922)]

٢٦٦٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ النَّاسُ يَنْصَرِفُونَ فِي كُلِّ وَجْهٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَنْفِرَنَّ أَحَدُكُمْ حَتَّى يَكُونَ آخِرُ عَهْدِهِ بِالْبَيْتِ إِلَّا أَنَّهُ خُفِّفَ عَنِ الْحَائِضِ»

2668. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, लोग (मीना से फारिग़ हो कर) किसी भी तरीक से वापस चले जाते थे, (ये सूरते हाल देख कर) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम में से कोई शख़्स मक्का से न जाए हत्ता के उस का आखिरी वक़्त बैतुल्लाह के पास हो (तवाफ़ वदा करे) अलबत्ता हैज़ वाली औरत को मुशतश्ना करार दिया"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (1755) و مسلم (379 / 1327)، (3219)

٢٦٦٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عائشةَ قَالَتْ: حَاضَتْ صَفِيَّةُ لَيْلَةَ النَّفْرِ فَقَالَتْ: مَا أُرَانِي إِلَّا حَابِسَتَكُمْ. قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عَقْرَى حَلْقَى أَطَافَتْ يَوْمَ النَّحْرِ؟» قيل: نعم. قَالَ: «فانفري»

2669. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कुच (के दिन) की रात सफिया रदियल्लाहु अन्हु को हैज़ गया, तो उन्होंने अर्ज़ किया, मेरा ख़याल है के (अरब वदा की वजह से) मैंने तुम्हें रोक दिया है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "(अरब के मुहावरे के मुताबिक) बे औलाद सर मुंडी, या हलक में बीमारी वाली (इस से बद्दुआ मुराद नहीं, बल्कि जैसे कहा जाता है, तेरे हाथ खाक आलूद हो वैसे ही यह अल्फाज़ है) क्या उस ने कुर्बानी के दिन तवाफ़ ए इफादा किया था ?" आप को बताया गया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: "फिर मदीना की तरफ कुच करो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (17711772) و مسلم 387 / 1211)، (3228)

بَابُ خُطْبَةُ يَوْمِ النَّحْرِ وَرمي أَيَّام التَّشْرِيق والتوديع

कुर्बानी के दिन खुत्बा देने, अय्याम ए तशरीक में कंकरिया मारने और वदा का बयान

الْفَصْل الثَّانِي

दूसरी फस्ल

٢٦٧٠ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَمْرِو بْنِ الْأَحْوَصِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ: «أَيُّ يَوْمٍ هَذَا؟» قَالُوا: يَوْمُ النَّحْرِ الْأَكْبَرِ. قَالَ: «فَإِنَّ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ وَأَعْرَاضَكُمْ بَيْنَكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا فِي بَلَدِكُمْ هَذَا أَلا لَا يجني جانٍ عَلَى نَفْسِهِ وَلَا يَجْنِي جَانٍ عَلَى وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ عَلَى وَالِدِهِ أَلَا وَإِنَّ الشَّيْطَانَ قد أيس أَنْ يُعْبَدَ فِي بَلَدِكُمْ هَذَا أَبَدًا وَلَكِنْ ستكونُ لهُ طاعةٌ فِيمَا تحتقرونَ مِنْ أَعْمَالِكُمْ فَسَيَرْضَى بِهِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالتِّرْمِذِيّ وَصَححهُ

2670. अमर बिन अहवस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को हज्जतुल वदा के मौके पर फरमाते हुए सुना: "आज कौन सा दिन है?" सहाबा ने अर्ज़ किया, हज अकबर का दिन है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम्हारे अमवाल और तुम्हारी इज्ज़त्ते तुम्हारे दरमियान इस शहर में, तुम्हारे इस दीन की हुरमत की तरह हराम

है, सुन लो! कोई ज़ालिम अपने जान पर ज़ुल्म न करे, सुन लो! कोई ज़ालिम अपने औलाद पर ज़ुल्म न करे न बच्चा अपने वालिद पर ज़ुल्म करे, सुन लो! शैतान इस बात से हमेशा के लिए मायूस हो चूका है के उसकी तुम्हारे इस शहर में इबादत हो, लेकिन तुम्हारे ऐसे उमूर में जिन्हें तुम मामूली समझते हो, उसकी इताअत होगी तो वह उस पर ही राज़ी हो जाएगा”| इब्ने माजा तिरमिज़ी, और उन्होंने इसे सहीह करार दिया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابن ماجه (3055) و الترمذی (2159)

٢٦٧١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن رافِعِ بنِ عمروٍ والمُزَني قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْطُبُ النَّاسَ بِمِنًى حِينَ ارْتَفَعَ الضُّحَى عَلَى بَغْلَةٍ شَهْبَاءَ وَعَلِيٌّ يُعَبِّرُ عَنْهُ وَالنَّاسُ بَين قَائِم وقاعد. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2671. राफीअ बिन अम्र मुज़नी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को मीना में चाश्त के बाद सियाह माइल सफ़ेद खच्चर पर लोगों से ख़िताब करते हुए सुना, जबकि अली रदियल्लाहु अन्हु आप की तरफ से लोगों तक बात पहुंचा रहे थे जबकि लोग कुछ खड़े थे और कुछ बैठें हुए थे| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (1956)

٢٦٧٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ وَابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخَّرَ طَوَافَ الزِّيَارَةِ يَوْمَ النَّحْرِ إِلَى اللَّيْلِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

2672. आइशा रदियल्लाहु अन्हा और इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने कुर्बानी के दिन तवाफ़ ज़ियारत को रात तक मोअख़्ख़र फ़रमाया| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (920 و قال : حسن) و ابوداؤد (2000) و ابن ماجه (3059) [و البخاری (قبل ح 1732 تعلیقًا] * ابوالزبیر مدلس و عنع و تابعه محمد بن طارق و لکنه عن طاؤس مرسل

٢٦٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَرْمُلْ فِي السَّبْعِ الَّذِي أَفَاضَ فِيهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

2673. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने तवाफ़ ए इफादा के सातों चक्करों में रमल नहीं फरमाया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2001) و ابن ماجه (3060)

٢٦٧٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا رَمَى أَحَدُكُمْ جَمْرَةَ الْعَقَبَةِ فَقَدْ حَلَّ لَهُ كُلُّ

شَيْءٍ إِلَّا النِّسَاءَ» . رَوَاهُ فِي شرح السّنة وَقَالَ: إِسْنَاده ضَعِيف

2674. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम में से कोई जमराह अक्बिह को कंकरिया मार ले तो बीवियों के (साथ जिमाअ के) सिवा उस के लिए हर चीज़ हलाल हो जाती है”| शरह सुन्ना और उन्होंने ने फ़रमाया: उसकी सनद जईफ है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه البغوى فی شرح السنة (7 / 210 بعد ح 1962 بلا سند) [و ابوداؤد (1978)] * الحجاج بن ارطاة ضعيف مدلس و انظر الحديث الآتى (2675)

٢٦٧٥ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي رِوَايَةِ أَحْمَدَ وَالنَّسَائِيِّ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: «إِذَا رَمَى الْجَمْرَةَ فَقَدْ حَلَّ لَهُ كلُّ شيءٍ إِلا النساءَ»

2675. अहमद और नसई की इब्ने अब्बास से मरवी रिवायत में है फ़रमाया: “जब वह कंकरिया मार ले तो बीवियों के अलावा हर चीज़ उस पर हलाल हो जाती है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (1 / 234 ح 2090) و النسائى (6 / 277 ح 3086) [و ابن ماجه (3041)] * الحسن العرنى ثقه ارسل عن ابن عباس رضى الله عنه (تقدم : 2613) و لبعض الحديث شاهد عند مسلم (1179)

٢٦٧٦ - وَعَنْهَا قَالَتْ : أَفَاضَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ آخِرِ يَوْمِهِ حِينَ صَلَّى الظُّهْرَ ثُمَّ رَجَعَ إِلَى مِنًى فَمَكَثَ بِهَا لَيَالِيَ أَيَّامِ التَّشْرِيقِ يَرْمِي الْجَمْرَةَ إِذَا زَالَتِ الشَّمْسُ كُلَّ جَمْرَةٍ بِسَبْعِ حَصَيَاتٍ يُكَبِّرُ مَعَ كُلِّ حَصَاةٍ وَيَقِفُ عِنْدَ الْأُولَى وَالثَّانِيَةِ فَيُطِيلُ الْقِيَامَ وَيَتَضَرَّعُ وَيَرْمِي الثَّالِثَةَ فَلَا يَقِفُ عِنْدَهَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2676. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने दिन के पिछले पहर जब आप ने नमाज़ ए ज़ुहर अदा की तो तवाफ़ ए इफादा किया, फिर आप मीना वापस तशरीफ़ ले आए, आप ने अय्याम तशरिक की राते वहां गुज़ारी, जब सूरज ढल जाता तो आप हर जमराह को सात सात कंकरिया मारते, हर कंकरी के साथ (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर कहते, पहले और दूसरे जमरे के पास खड़े होते, लम्बा कयाम फरमाते और तजरीअ व आजिज़ी के साथ दुआए करते और आप तीसरे को कंकरिया मारते और उस के पास खड़े नहीं होते थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1973)

٢٦٧٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي الْبَدَّاحِ بْنِ عَاصِمِ بْنِ عَدِيٍّ عَن أَبِيه قَالَ: رَخَّصَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم لرعاء الْإِبِل فِي البيتوتة: أَن يرملوا يَوْمَ النَّحْرِ ثُمَّ يَجْمَعُوا رَمْيَ يَوْمَيْنِ بَعْدَ يَوْمِ النَّحْرِ فَيَرْمُوهُ فِي أَحَدِهِمَا. رَوَاهُ مَالِكٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ صَحِيحٌ

2677. अबू अल बद्दाह बिन आसिम बिन अदि अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने फ़रमाया रसूलुल्लाह ﷺ ने ऊटों के चरवाहों को रात बसर करने की रुखसत दे दिया के वह यौम ए उल नहर को कंकरिया मारी फिर

यौम ए नहर के बाद वह दो दीन की रमी को जमा कर ले और एक दिन मैं ही कंकरिया मार लें| मालिक, तिरमिज़ी नसई, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस सहीह है| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواہ مالک (1 / 408 ح 946) و الترمذی (955) و النسائی (5 / 273 ح 3071)

وھذا الباب خال من الفصل الثالث

इस बाब में तीसरी फस्ल नहीं है|

इहराम वाले किन चीजों से रुके रहे • بَاب مَا يجتنبه الْمحرم

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٦٧٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ: أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا يلبس مِنَ الثِّيَابِ؟ فَقَالَ: «لَا تَلْبَسُوا الْقُمُصَ وَلَا الْعَمَائِمَ وَلَا السَّرَاوِيلَاتِ وَلَا الْبَرَانِسَ وَلَا الْخِفَافَ إِلَّا أَحَدٌ لَا يَجِدُ نَعْلَيْنِ فَيَلْبَسُ خُفَّيْنِ وليقطعهما أَسْفَلَ الْكَعْبَيْنِ وَلَا تَلْبَسُوا مِنَ الثِّيَابِ شَيْئًا مَسَّهُ زَعْفَرَانٌ وَلَا وَرْسٌ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ وَزَادَ الْبُخَارِيُّ فِي رِوَايَةٍ: «وَلَا تَنْتَقِبُ الْمَرْأَةُ الْمُحْرِمَةُ وَلَا تلبس القفازين»

2678. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के किसी आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया के इहराम वाला कौन से कपड़े पहन सकता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “कमीज़, इमामे, सलवारे, जुब्बे और मोज़े न पहनो, अलबत्ता अगर कोई शख़्स जूते न पाए तो वह मोज़े पहन ले और उन्हें टखनो के नीचे तक काट ले और ऐसा कोई कपड़ा न पहनो जिसे ज़ाफ़रान और वरस की खुशबू लगी हो”| और इमाम बुखारी ने एक दूसरी रिवायत में यह इज़ाफा नकल किया है: “इहराम वाली औरत ना नकाब पहने न दस्ताने”, (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (1542 ، 1838) و مسلم (1 / 1177)، (2791)

٢٦٧٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْطُبُ وَهُوَ يَقُولُ: «إِذَا لَمْ يَجِدِ الْمُحْرِمُ نَعْلَيْنِ لَبِسَ خُفَّيْنِ وَإِذَا لَمْ يَجِدْ إِزَارًا لَبِسَ سَرَاوِيل»

2679. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को ख़िताब करते हुए सुना, आप ﷺ फरमा रहे थे: “जब मुहर्रिम जूते न पाए तो वह मोज़े पहन ले और जब वह तहबंद न पाए तो सलवार पहन ले”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (1841) و مسلم (4 / 1178)، (2794)

٢٦٨٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ يَعْلَى بْنِ أَمَيَّةَ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بالجعرانة إِذْ [ص:٨٢ جَاءَ رَجُلٌ أَعْرَابِيٌّ عَلَيْهِ جُبَّةٌ وَهُوَ مُتَضَمِّخٌ بِالْخَلُوقِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَحْرَمْتُ بِالْعُمْرَةِ وَهَذِهِ عَلَيَّ. فَقَالَ: «أَمَا الطِّيبُ الَّذِي بِكَ فَاغْسِلْهُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ وَأَمَّا الْجُبَّةُ فَانْزِعْهَا ثُمَّ اصْنَعْ فِي عُمْرَتِكَ كَمَا تَصْنَعُ فِي حَجِّكَ»

2680. यअली बिन उमय्य रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम जीअरान में नबी ﷺ के पास थे जब एक आराबी आप के पास आया उस ने जुब्बा पहन रखा था और उस ने ज़ाफ़रान की बनी हुई खुशबू भी खूब लगा रखी थी, उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने उमरा का इहराम बांधा है और मैंने यह (जुब्बा) पहन रखा है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “रही खुशबू जो तुमने लगा रखी है उसे तीन मर्तबा धो दो, और रहा जुब्बा तो उसे उतार दो और फिर अपने उमरे में वैसे ही करो जैस तू अपने हज में करता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1536) و مسلم (68 / 1180)، (2798 و 2800)

٢٦٨١ - (صَحِيح) وَعَنْ عُثْمَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَنْكِحُ الْمُحْرِمُ وَلَا يُنكِحُ وَلَا يَخْطُبُ» . رَوَاهُ مُسلم

2681. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ मुहरिम (जिसने इहराम बांधा हो) ना अपना निकाह करे न किसी का निकाह कराए और ना ही पैगामे निकाह भेजे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (41 / 1409)، (3446)

٢٦٨٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم تَزَوَّجَ مَيْمُونَةَ وَهُوَ محرم

2682. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं कि नबी ﷺ ने हालत ए इहराम में मैमुना रदियल्लाहु अन्हा से निकाह किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1837) و مسلم (46 / 1410)، (3451)

٢٦٨٣ - (صَحِيح) وَعَنْ يَزِيدَ بْنِ الْأَصَمِّ ابْنِ أُخْتِ مَيْمُونَةَ عَنْ مَيْمُونَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم تَزَوَّجَهَا وَهُوَ حَلَالٌ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» قَالَ الشيخُ الإِمَام يحيى السّنة C: وَالْأَكْثَرُونَ عَلَى أَنَّهُ تَزَوَّجَهَا حَلَالًا وَظَهَرَ أَمْرُ تَزْوِيجِهَا وَهُوَ مُحْرِمٌ ثُمَّ بَنَى بِهَا وَهُوَ حَلَال بسرف فِي طَرِيق مَكَّة

2683. मय्मुना रदियल्लाहु अन्हा के भांजे यज़ीद बिन अल असम्म, मैमुना रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने उन से शादी की तो आप मुहरिम (जिसने इहराम बांधा हो) नहीं थे, अल शैख़ अल इमाम मुह्यी अल सुन्नी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अक्सर मुहद्दीसिन का यह मुअक्किफ है के आप ﷺ ने उन से शादी

की तो आप मुहरिम (जिसने इहराम बांधा हो) नहीं थे जबकि आप ने हालत ए इहराम में इस मुआमले को ज़ाहिर फ़रमाया, फिर आप ने मक्का के रास्ते में मक़ाम ए सरीफ पर उन से खलवत इख़्तियार की जबकि आप हालत ए इहराम में नहीं थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (48 / 1411)، (3453)

٢٦٨٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أَبِي أَيُّوبَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَغْسِلُ رَأْسَهُ وَهُوَ مُحْرِمٌ

2684. अबू अय्यूब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ हालत ए इहराम में अपना सिर धो लिया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1840) و مسلم (91 / 1205)، (2889)

٢٦٨٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: احْتَجَمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ محرم

2685. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, कि नबी ﷺ ने हालत ए इहराम में पछने (हिजामा) लगवाए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1835) و مسلم (87 / 1202)، (2885)

٢٦٨٦ - (صَحِيح) وَعَن عُثْمَان حَدَّثَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الرَّجُلِ إِذَا اشْتَكَى عَيْنَيْهِ وَهُوَ محرمٌ ضمدهما بِالصبرِ. رَوَاهُ مُسلم

2686. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु ने इस आदमी के बारे में जिस की हालत ए इहराम में आँखे दूखती हो रसूलुल्लाह ﷺ से हदीस बयान की के वह अपनी आंखो पर मसबीर का लेप कर सकता है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (89 / 1204)، (2887)

٢٦٨٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أُمِّ الْحُصَيْنِ قَالَتْ: رَأَيْتُ أَسَامَةَ وَبِلَالًا وَأَحدُهُمَا آخِذٌ بِخِطَامِ نَاقَةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالْآخَرُ رَافِعٌ ثَوْبَهُ يَسْتُرُهُ من الْحَرِّ حَتَّى رَمَى جَمْرَةَ الْعَقَبَةِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2687. उम्मुल हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने उसामा रदियल्लाहु अन्हु और बिलाल रदियल्लाहु अन्हु को देखा के उनमें से एक रसूलुल्लाह ﷺ की ऊंटनी की महार थामे हुए था जबकि दूसरा (छतरी की तरह)

अपना कपड़ा बुलंद किए आप को गर्मी से बचाने के लिए आप पर साया किए हुए था हत्ता के आप ने जमराह अक्बिह को कंकरिया मार ली| (मुस्लिम)

رواه مسلم (312 / 1298)، (3139)

٢٦٨٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ بِهِ وَهُوَ بِالْحُدَيْبِيَةِ قَبْلَ أَنْ يَدْخُلَ مَكَّةَ وَهُوَ مُحْرِمٌ وَهُوَ يُوقِدُ تَحْتَ قِدْرٍ وَالْقَمْلُ تهافت عَلَى وَجْهِهِ فَقَالَ: «أَتُؤْذِيكَ هَوَامُّكَ؟» . قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: «فَاحْلِقْ رَأْسَكَ وَأَطْعِمْ فَرَقًا بَيْنَ سِتَّةِ مَسَاكِينَ» . وَالْفَرَقُ: ثَلَاثَةُ آصُعٍ: «أَوْ صُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّام أوانسك نسيكة»

2688. काब बिन उजरत रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैं हुदैबिया के मक़ाम पर था के नबी ﷺ मेरे पास से गुज़रे, मैंने इहराम बांध रखा था और हंडिया के नीचे आग जला रहा था जबकि जुएँ मेरे चेहरे पर गिर रही थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम्हारी जुएँ तुम्हें तकलीफ देती हैं?” मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपना सर मुंडा लो और छे मसाकिन को एक फर्क (तकरीबन सात किलो) अनाज दो या तीन रोज़े रखो या एक बकरी जिबह करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1814) و مسلم (83 / 1201)، (2881)

بَاب مَا يجتنبه الْمحرم • इहराम वाले किन चीजों से रुके रहे

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٦٨٩ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْهَى النِّسَاءَ فِي إِحْرَامِهِنَّ عَنِ الْقُفَّازَيْنِ وَالنِّقَابِ وَمَا مَسَّ الْوَرْسُ وَالزَّعْفَرَانُ مِنَ الثِّيَابِ وَلْتَلْبَسْ بَعْدَ ذَلِكَ مَا أحبَّتْ من ألوانِ الثيابِ معصفر أوخز أَو حلي أَو سراويل أَو قميصٍ أَو خُفٍّ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2689. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को औरतो को हालत ए इहराम में दस्ताने पहनने, नकाब करने और वरस ज़ाफ़रान से रंग किए हुए कपड़े पहन ने से मना फरमाते हुए सुना, उस के अलावा, वह ज़र्द रंग के या या रेशम के बने हुए, जो कपड़े चाहे पहन लें, या ज़ेवर सलवार कमीज़ और मोज़े पहन सकती हैं| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1827)

٢٦٩٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ الرُّكْبَانُ يَمُرُّونَ بِنَا وَنَحْنُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُحْرِمَاتٌ فَإِذَا جَاوَزُوا بِنَا سَدَلَتْ إِحْدَانَا جِلْبَابَهَا مِنْ رَأْسِهَا عَلَى وجهها فإذا جاوزونا كشفناهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَلابْن مَاجَه مَعْنَاهُ

2690. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ इहराम बांधे हुए थे, सवार हमारे पास से गुज़रते तो हम अपने चादरे सर से चेहरे पर लटका लेती और जब वह हमारे पास से गुज़र जाता तो हम चेहरो से चादरे उठा लेती थी| अबू दावुद, और इब्ने माजा में इस मानी की रिवायत है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1833) و ابن ماجه (2935) * یزید بن ابی زیاد ضعیف

٢٦٩١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَدَّهِنُ بالزيت وَهُوَ محرمٌ غيرَ المقتّتِ يَعني غيرَ المطيَّبِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2691. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ हालत ए इहराम में अपने सर पर ऐसा तेल लगा लिया करते थे जिस में खुशबू नहीं होती थी| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (962 و قال : غریب لا نعرفه الا من حدیث فرقد السبخی۔ الخ) [و ابن ماجه (3083)] * فرقد بن یعقوب السبخی : ضعیف ضعفه الجمهور و اخطا من و ثقه

बَاب مَا يجتنبه الْمحرم • इहराम वाले किन चीजों से रुके रहे

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٦٩٢ - عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ وَجَدَ الْقُرَّ فَقَالَ: ألق عَليّ ثوبا نَافِعُ فَأَلْقَيْتُ عَلَيْهِ بُرْنُسًا فَقَالَ: تُلْقِي عَلَيَّ هَذَا وَقَدْ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَلْبَسَهُ الْمُحْرِمُ؟ . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد؟

2692. नाफेअ से रिवायत है के इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने ठंडक महसूस की तो फ़रमाया, नाफेअ! मुझ पर कोई कपड़ा डालो मैंने एक जुब्बा इन पर डाल दिया तो उन्होंने ने फ़रमाया: तुम मुझ पर यह डाल रहे हो, हालाँकि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुहर्रिम को इसे पहन ने से मना फ़रमाया है| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (1828)

٢٦٩٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَالِكٍ بن بُحَيْنَةَ قَالَ: احْتَجَمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ مُحْرِمٌ بِلَحْيِ جَمَلٍ مِنْ طريقِ مكةَ فِي وسط رَأسه

2693. अब्दुल्लाह बिन मालिक बिन बुहैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हालत ए इहराम में लह्यी जमल के मक़ाम (मक्के और मदीना के दरमियान एक मकाम) पर अपने सर के बिच में पछने (हिजामा) लगवाए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5698) و مسلم (88 / 1203)، (2886)

٢٦٩٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: احْتَجَمَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ مُحْرِمٌ عَلَى ظَهْرِ الْقَدَمِ مِنْ وَجَعٍ كَانَ بِهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

2694. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हालत ए इहराम में पाँव की पुश्त पर तकलीफ की वजह से पछने (हिजामा) लगवाए| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (1837) و النسائى (5 / 194 ح 2852) * قتادة مدلس و عنعن

٢٦٩٥ - وَعَن أبي رافعٍ قَالَ: تَزَوَّجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَيْمُونَةَ وَهُوَ حَلَالٌ وَبَنَى بِهَا وَهُوَ حَلَالٌ وَكُنْتُ أَنَا الرَّسُولَ بَيْنَهُمَا. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ

2695. अबी राफीअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मैमुना रदियल्लाहु अन्हा से शादी की तो आप हालत ए इहराम में नहीं थे, और जब आप ने उन से खलवत की तब भी आप हालत ए इहराम में नहीं थे, और मैं दोनों के दरमियान कासिद व वासित था| अहमद तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन है| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (6 / 392393 ح 27739) و الترمذى (841)

بَاب الْحرم يجْتَنب الصَّيْد • मुहरिम शिकार ना करे

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٢٦٩٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن الصعب بن جثامة أنه أهْدى رَسُول اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِمَارًا وَحْشِيًّا وَهُوَ بِالْأَبْوَاءِ أَوْ بِوَدَّانَ فَرَدَّ عَلَيْهِ فَلَمَّا رأى مَا فِي وَجْهَهُ قَالَ: «إِنَّا لَمْ نَرُدَّهُ عَلَيْكَ إِلَّا أَنَّا حُرُمٌ»

2696. सअबी बिन जस्सामा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने मक़ाम ए अबवाअ या मक़ाम विदान पर एक जंगली गधा रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में पेश किया आप ने इसे कबूल न फ़रमाया, जब आप ﷺ ने उस के

चेहरे पर उदासी के आसार देखा तो फ़रमाया: “हमने इसलिए तुम्हें वापस किया है की हम हालत ए इहराम में हैं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1825) و مسلم (50 / 1193)، (2845)

٢٦٩٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ أَنَّهُ خَرَجَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَخَلَّفَ مَعَ بَعْضِ أَصْحَابِهِ وَهُمْ مُحْرِمُونَ وَهُوَ غَيْرُ مُحْرِمٍ فَرَأَوْا حِمَارًا وَحْشِيًّا قَبْلَ أَنْ يَرَاهُ فَلَمَّا رَأَوْهُ تَرَكُوهُ حَتَّى رَآهُ أَبُو قَتَادَةَ فَرَكِبَ فَرَسًا لَهُ فَسَأَلَهُمْ أَنْ يُنَاوِلُوهُ سَوْطَهُ فَأَبَوْا فَتَنَاوَلَهُ فَحَمَلَ عَلَيْهِ فَعَقَرَهُ ثُمَّ أَكَلَ فَأَكَلُوا فَنَدِمُوا فَلَمَّا أَدْرَكُوا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَأَلُوهُ. قَالَ: «هَلْ مَعَكُمْ مِنْهُ شَيْءٌ؟» قَالُوا: مَعَنَا رِجْلُهُ فَأَخَذَهَا النَّبِيُّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم فَأَكلهَا»» وَفِي رِوَايَةٍ لَهُمَا: فَلَمَّا أَتَوْا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَمِنْكُمْ أَحَدٌ أَمَرَهُ أَنْ يَحْمِلَ عَلَيْهَا؟ أَوْ أَشَارَ إِلَيْهَا؟» قَالُوا: لَا قَالَ: «فَكُلُوا مَا بَقِيَ مِنْ لَحمهَا»

2697. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह (हुदेबिया के साल) रसूलुल्लाह ﷺ के साथ रवाना हुए तो वह अपने बाज़ साथियो के साथ पीछे रह गए, वह हालत ए इहराम में थे जबकि वह खुद हालत ए इहराम में नहीं थे, उन्होंने मेरे देखने से पहले एक जंगली गधा देखा, जब उन्होंने इसे देखा तो उन्होंने इसे छोड़ दिया हत्ता के अबू क़तादा ने इसे देख लिया, वह अपने घोड़े पर सवार हुआ और उन (अपने साथियो) से मुतालबा किया के वह इसे उस का कोड़ा पकड़ा दें लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया, उन्होंने खुद इसे लिया और उस पर हमला कर दिया और इसे ज़ख़्मी कर दिया, फिर उन्होंने और उन के साथियो ने इसे खाया, लेकिन उन्हें नदामत व परेशानी हुई, जब वह रसूलुल्लाह ﷺ के पास पहुंचे तो उन्होंने आप ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया, आप ﷺ ने फ़रमाया: क्या उस का कोई हिस्सा तुम्हारे पास है?” उन्होंने अर्ज़ किया, उस का एक पाँव हमारे पास है, नबी ﷺ ने इसे लिया और इसे खाया, और सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम की दूसरी रिवायत में है जब वह रसूलुल्लाह ﷺ के पास आए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम में से किसी ने इसे कहा था के उस पर हमला करो? या उसकी तरफ इशारा किया हो?” उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस का जो गोश्त बाकी बचा है उसे खाओ”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2854) و مسلم (5758 / 1196)، (2852 و 2853)

٢٦٩٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " خَمْسٌ لَا جُنَاحَ عَلَى من قتلَهُنّ [ص:٨٢ فِي الْحل وَالْإِحْرَامِ: الْفَأْرَةُ وَالْغُرَابُ وَالْحِدَأَةُ وَالْعَقْرَبُ وَالْكَلْبُ الْعَقُورُ "

2698. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “पांच चीज़े ऐसी है जिन्हें हरम में हालत ए इहराम में क़त्ल कर देने पर कोई गुनाह नहीं: चुहिया, कव्वा, चिल, बिच्छु और काटने वाला कुत्ता”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3315) و مسلم (72 / 1199)، (2868)

٢٦٩٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " خَمْسٌ فَوَاسِقُ يُقْتَلْنَ فِي الْحِلِّ وَالْحَرَمِ: الْحَيَّةُ وَالْغُرَابُ الْأَبْقَعُ وَالْفَأْرَةُ وَالْكَلْبُ الْعَقُورُ وَالْحُدَيَّا "

2699. आइशा रदियल्लाहु अन्हा नबी ﷺ से रिवायत करती है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “पांच किस्म के जानवर फासिक़ (नुक्सान देह) हैं, उन्हें हल व हरम हर हालत में क़त्ल किया जाएगा, सांप, कव्वा जो सिया सफ़ेद हो, चुहिया काटने वाला कुत्ता और चिल”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3314) و مسلم (67 / 1198)، (2863)

بَاب الْحرم يجْتَنب الصَّيْد • मुहरिम शिकार ना करे

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٧٠٠ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَحْمُ الصَّيْدِ لَكُمْ فِي الْإِحْرَامِ حَلَالٌ مَا لَمْ تَصِيدُوهُ أَوْ يُصَادُ لَكُمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

2700. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस शिकार का गोश्त तुम्हारे लिए हालत ए इहराम में हलाल है जिसे ना तुमने शिकार किया हो न वह तुम्हारी खातिर शिकार किया गया हो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1851) و الترمذی (846) و النسائی (5 / 187 ح 2830) * المطلب : لم یسمع من جابر رضی الله عنه کما قال ابو حاتم الرازی (المراسیل ص 210)

٢٧٠١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْجَرَادُ مِنْ صَيْدِ الْبَحْرِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ

2701. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “टिड्डी (मकड़ी) समुंदरी शिकार के ज़िमरे में है”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (1853 و سنده حسن ، 1854 و سنده ضعیف جدًا ، فیه ابو المهزم : متروک) و الترمذی (850 و قال : غریب ، و سنده ضعیف جدًا ، فیه ابو المهزم)

٢٧٠٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَقْتُلُ الْمُحْرِمُ السَّبُعَ الْعَادِيَ» .

رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

2702. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुहरिम चिड़फाड़ करने वाले दरिन्दे को मार सकता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (838 و قال : حسن) و ابوداؤد (1848) و ابن ماجه (3089) * یزید بن ابی زیاد : ضعیف

٢٧٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمَّارٍ قَالَ: سَأَلت جابرَ بنَ عبدِ اللَّهِ عَنِ الضَّبُعِ أَصَيْدٌ هِيَ؟ فَقَالَ: نَعَمْ فَقُلْتُ: أَيُؤْكَلُ؟ فَقَالَ: نَعَمْ فَقُلْتُ: سَمِعْتُهُ [ص:٨٢ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: نَعَمْ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَالشَّافِعِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حديثٌ حسنٌ صَحِيح

2703. अब्दुल रहमान बिन अबी अम्मार बयान करते हैं, मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु से बिज्जू (लकड़बग्घा) के बारे में सवाल किया क्या यह शिकार है? उन्होंने कहा: हाँ, मैंने कहा क्या यह खाया जाता है? उन्होंने कहा: हाँ, मैंने कहा आप ने इसे रसूलुल्लाह ﷺ से सुना है? उन्होंने कहा: हाँ| तिरमिज़ी, नसई, शाफ़ई और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (851) و النسائی (5 / 191 ح 2839 ، 7 / 200 ح 4328) و الشافعی فی الام (2 / 193)

٢٧٠٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الضَّبُعِ؟ قَالَ: «هُوَ صَيْدٌ وَيُجْعَلُ فِيهِ كَبْشًا إِذَا أَصَابَهُ الْمُحْرِمُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه والدارمي

2704. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने बिज्जू (लकड़बग्धा) खाने के बारे में रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो शिकार है, और जब मुहरिम उस का शिकार करे तो उस के बदले उस पर एक मेंढा है”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (3801) و ابن ماجه (3085) و الدارمی (2 / 74 ، 75 ح 1948)

٢٧٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن خُزَيمةَ بنَ جَزَيٍّ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ أَكْلِ الضَّبُعِ. قَالَ: " أَوَ يَأْكُلُ الضَّبُعَ أَحَدٌ؟ . وَسَأَلْتُهُ عَنْ أَكْلِ الذِّئْبِ. قَالَ: «أَوَ يَأْكُلُ الذِّئْبَ أَحَدٌ فِيهِ خَيْرٌ؟» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: لَيْسَ إِسْنَاده بِالْقَوِيّ

2705. खुजैमा बिन जज़िय्यी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने बिज्जू (लकड़बग्धा) खाने के बारे में रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या कोई बिज्जू (लकड़बग्धा) भी खाता है?” मैंने आप से भेड़िया खाने के बारे में सवाल किया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या कोई साहबे ईमान भेड़िया भी खाता

है?” तिरमिज़ी, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: उसकी इसनाद क़वी नहीं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1792) * فيه عبد الكريم بن ابى المخارق : ضعيف

بَاب الْحرم يجْتَنب الصَّيْد • मुहरिम शिकार ना करे

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٧٠٦ - (صَحِيح) عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عُثْمَانَ التَّيْمِيِّ قَالَ: كنَّا مَعَ طَلحةَ بنِ عُبيدِ اللَّهِ وَنَحْنُ حُرُمٌ فَأُهْدِيَ لَهُ طَيْرٌ وَطَلْحَةُ رَاقِدٌ فَمِنَّا مَنْ أَكَلَ وَمِنَّا مَنْ تَوَرَّعَ فَلَمَّا اسْتَيْقَظَ طَلْحَةُ وَافَقَ مَنْ أَكَلَهُ قَالَ: فَأَكَلْنَاهُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ مُسلم

2706. अब्दुल रहमान बिन उस्मान तय्मी बयान करते हैं, हम तल्हा बिन उबैदुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु के साथ थे और हम हालत ए इहराम में थे, उन (तल्हा (र)) को एक (भुना हुवा) परिंदा बतौर हदिया भेजा गया जबकि तल्हा सो रहे थे, हम में से कुछ ने खा लिया और कुछ ने परहेज़ किया, तो जब तल्हा रदियल्लाहु अन्हु बेदार हुए तो उन्होंने इसे खाने वालो की मुवाफिकत की और फ़रमाया: हमने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ खाया था| (मुस्लिम)

رواه مسلم (65 / 1197)، (2860)

بَاب الْإِحْصَار وفوت الْحَج • हज से मना किये जाने और हज के फौत हो जाने का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٢٧٠٧ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَدْ أُحْصِرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَلَقَ رَأْسَهُ وَجَامَعَ نِسَاءَهُ وَنَحَرَ هَدْيَهُ حَتَّى اعْتَمَرَ عَامًا قَابلا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2707. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, (सुलह हुदैबिया के साल) रसूलुल्लाह ﷺ को (उमरा करने से) रोक दिया गया तो आप ﷺ ने अपना सर मुंडाया, अपने अज़वाज ए मूतहरात से जिमाअ किया और कुर्बानी की, और फिर अगले साल उमरा किया| (बुखारी)

رواه البخارى (1809)

٢٧٠٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَالَ كَفَّارُ قُرَيْشٍ دُونَ الْبَيْتِ فَنَحَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَدَايَاهُ وَحَلَقَ وَقَصَّرَ أَصْحَابه. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2708. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ (अमरे करने के लिए) रवाना हुए तो कुरैश बैतुल्लाह पहुँचने से पहले हाइल हो गए तो नबी ﷺ ने अपने कुर्बानियां जिबह की, और आप ने अपना सर मुंडाया जबकि आप के बाज़ सहाबा ने सर के बाल कतराए| (बुखारी)

رواه البخارى (1807)

٢٧٠٩ - (صَحِيح) وَعَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَحَرَ قَبْلَ أَنْ يَحْلِقَ وَأَمَرَ أَصْحَابَهُ بِذَلِكَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

2709. मिस्वर बिन मखरम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सर मुंडाने से पहले कुर्बानी की और आप ने अपने सहाबा को भी इस का हुक्म फ़रमाया| (बुखारी)

رواه البخارى (1811)

٢٧١٠ - (صَحِيح) وَعَن ابنِ عمَرَ أَنَّهُ قَالَ: أَلَيْسَ حَسْبُكُمْ سُنَّةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ إِنْ حُبِسَ أَحَدُكُمْ عَنِ الْحَجِّ طَاف بِالْبَيْتِ وَبِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ ثُمَّ حَلَّ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّى يَحُجَّ عَامًا قَابِلًا فَيَهْدِيَ أَوْ يَصُومَ إِنْ لَمْ يَجِدْ هَديا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2710. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि उन्होंने कहा: क्या तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत काफी नहीं! अगर तुम में से किसी को हज से रोक दिया जाए तो वह बैतुल्लाह का तवाफ़ करे और सफा मरवा की सई करे, फिर हर चीज़ से हलाल हो जाए (इहराम की पाबन्दी ख़तम हो जाए) हत्ता के अगले साल हज करे और कुर्बानी करे अगर कुर्बानी मयस्सर न हो तो फिर रोज़े रखे| (बुखारी)

رواه البخارى (1810)

٢٧١١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ. قَالَتْ: دَخَلَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى ضُبَاعَةَ بِنْتِ الزُّبَيْرِ فَقَالَ لَهَا: «لَعَلَّكِ أَرَدْتِ الْحَجَّ؟» قَالَتْ: وَاللَّهِ مَا أَجِدُنِي إِلَّا وَجِعَةً. فَقَالَ لَهَا: " حُجِّي وَاشْتَرِطِي وَقُولِي: اللَّهُمَّ مَحِلِّي حَيْثُ حبستني "

2711. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ डूबाअत बिन्ते जुबैर रदियल्लाहु अन्हु के पास गए तो उन से फ़रमाया: “शायद के आप ने हज का इरादा किया है?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह की क़सम! मुझे

कुछ तकलीफ है, आप ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “हज करे और शर्त काइम कर ले, इस तरह कहे: ऐ अल्लाह! मेरे हलाल होने की जगह वही होगी जहां तू मुझे (तकलीफ की वजह से आगे जाने से) रोक लेगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5089) و مسلم (104 / 1207)، (2902)

بَاب الْإِحْصَار وفوت الْحَج • हज से मना किये जाने और हज के फौत हो जाने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٧١٢ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَ أَصْحَابَهُ أَنْ يُبَدِّلُوا الْهَدْيَ الَّذِي نَحَرُوا عَامَ الْحُدَيْبِيَةِ فِي عُمْرَةِ الْقَضَاءِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَفِيهِ قِصَّةٌ وَفِي سَنَدِهِ مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ

2712. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने सहाबा को हुक्म फ़रमाया के उन्होंने हुदैबिया के साल जो कुर्बानी की थी उस के बदले में अब उमरतुल कज़ा में कुर्बानी करे| अबू दावुद, उस में किस्सा है और उसकी सनद में मुहम्मद बिन इसहाक मुदल्लिस है| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (1864) * محمد بن اسحاق بن یسار : صرح بالسماع عند البیهقی فی دلائل النبوة (4 / 320) و للحدیث شاھد قوی عند الحاکم (1 / 485)

٢٧١٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الْحَجَّاجِ بْنِ عَمْرٍو الْأَنْصَارِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «من كُسِرَ أَوْ عَرِجَ فَقَدْ حَلَّ وَعَلَيْهِ الْحَجُّ من قَابل» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دواد وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَزَادَ أَبُو دَاوُدَ فِي رِوَايَةٍ أُخْرَى: «أَوْ مَرِضَ» . وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث حسن. وَفِي المصابيح: ضَعِيف

2713. हज्जाज बिन अम्र अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स की हड्डी टूट जाए या वह लंगड़ा हो जाए तो वह हलाल हो गया और वह अगले साल हज करे”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई, इब्ने माजा दारमी और अबू दावुद ने एक दूसरी रिवायत में इज़ाफा नकल किया है : ’ या वह बीमार हो जाए”, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन है और मसाबिह में जईफ है| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ الترمذی (940) و ابوداؤد (1862 ، 1863 ، الروایة الثانیة)و النسائی (5 / 198 ح 2863) و ابن ماجه (3077) و الدارمی (2 / 61 ح 1901) [و صححه الحاکم علی شرط البخاری 1 / 470 ، 483 و وافقه الذھبی و اعل بما لا یقدح]

٢٧١٤ - (صَحِيح) وَعَن عبدِ الرَّحمنِ بنِ يَعمُرَ الدَّيْلي قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الْحَجُّ عَرَفَةُ مَنْ

أَدْرَكَ عَرَفَةَ لَيْلَةَ جَمْعٍ قَبْلَ طُلُوعِ الْفَجْرِ فَقَدْ أَدْرَكَ الْحَجَّ أَيَّامُ مِنىً ثلاثة أَيَّامٍ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْم عَلَيْهِ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا إِثْم عَلَيْهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجهْ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ»» هَذَا الْبَابُ خَالٍ عَنِ الْفَصْلِ الثَّالِث

2714. अब्दुल रहमान बिन यअमुर अल द्य्ली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: "हज वुकुफ़ अरफात ही है, जो शख़्स मुज़दल्फा की रात तुलुअ ए फज्र से पहले अरफा में कयाम कर ले तो उस ने हज पा लिया, और मीना के अय्याम तीन है, जो शख़्स दो दिन में जल्दी कर के फारिग़ हो जाए तो उस पर कोई गुनाह नहीं और जो शख़्स ताखीर करे उस पर भी कोई गुनाह नहीं"| तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई, इब्ने माजा दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (889) و ابوداؤد (1949) و النسائى (5 / 264 ح 3047) و ابن ماجه (3015) و الدارمى (2 / 59 ح 1894)

بَاب حرم مَكَّة حرسها الله تَعَالَى • हुरमत ए मक्का, अल्लाह तआला ने इस की हिफाज़त की ज़िम्मेदारी ली है

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٢٧١٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ: «لَا هِجرة وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ وَإِذَا اسْتُنْفِرْتُمْ فَانْفِرُوا» . وَقَالَ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ: «إِنَّ هَذَا الْبَلَدَ حَرَّمَهُ اللَّهُ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فَهُوَ حَرَامٌ بِحُرْمَةِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَإِنَّهُ لَمْ يحِلَّ القتالُ فيهِ لأحدٍ قبْلي وَلم يحِلَّ لِي إِلَّا سَاعَةً مِنْ نَهَارٍ فَهُوَ حَرَامٌ بِحُرْمَةِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا يُعْضَدُ شَوْكُهُ وَلَا يُنَفَّرُ صَيْدُهُ وَلَا يَلْتَقِطُ لُقَطَتُهُ إِلَّا مَنْ عَرَّفَهَا وَلَا يُخْتَلَى خَلَاهَا» . فَقَالَ الْعَبَّاسُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِلَّا الْإِذْخِرَ فَإِنَّهُ لِقَيْنِهِمْ وَلِبُيُوتِهِمْ؟ فَقَالَ: «إِلَّا الْإِذْخِرَ»

2715. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फतह मक्का के दिन फ़रमाया: "(अब) हिजरत बाकी नहीं रही, लेकिन जिहाद और नियत बाकी है, जब तुम्हें जिहाद के लिए निकलने का हुक्म दिया जाए तो निकलो", और आप ﷺ ने फतह मक्का के दिन फ़रमाया: "अल्लाह ने इस शहर को ज़मीन व आसमान की तखलीक के रोज़ ही हराम करार दे दिया था, वह अल्लाह की हुरमत की वजह से रोज़ ए कियामत तक हराम है और मुहम्मद ﷺ से पहले उस में किताल करना हलाल नहीं किया गया, और मेरे लिए भी दिन के कुछ वक़्त के लिए हलाल किया गया, वह अल्लाह की हुरमत के बाईस रोज़ ए कियामत तक के लिए हराम है, उस का कांटा ना काटा जाए न उस का शिकार भगाया जाए, और ना ही उसकी गिरी पड़ी चीज़ उठाई जाए सिवाय इस शख़्स के जो उस का एलान करे, और ना ही उसकी घास काटी जाए", अब्बास रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया,

अल्लाह के रसूल! बजुज़ इज़खीर घास के क्योंकि वह लोहारों और उन के घरो के इस्तेमाल की चीज़ है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “बजुज़ इज़खीर घास के”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1834) و مسلم (445 / 1353)، (3302)

٢٧١٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَفِي رِوَايَة لأبي هريرةَ: «لَا يُعضدُ شجرُها وَلَا يلتَقطُ ساقطتَها إلاَّ مُنشِدٌ»

2716. और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है: “ना उस का दरख्त काटा जाए न उसकी गिरी पड़ी चीज़ उठाई जाए सिवाय इस शख़्स के जो इस चिज़ का एलान करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (112) مسلم (448 / 1355)، (3306)

٢٧١٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا يَحِلُّ لِأَحَدِكُمْ أَنْ يَحْمِلَ بمكةَ السِّلَاح» . رَوَاهُ مُسلم

2717. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मक्का में असलहा उठाकर चलना किसी के लिए भी हलाल नहीं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (449 / 1356)، (3307)

٢٧١٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ مَكَّةَ يَوْمَ الْفَتْحِ وَعَلَى رَأْسِهِ الْمِغْفَرُ فَلَمَّا نَزَعَهُ جَاءَ رَجُلٌ وَقَالَ: إِنَّ ابْنَ خَطَلٍ مُتَعَلِّقٌ بِأَسْتَارِ الْكَعْبَةِ. فَقَالَ: «اقتله»

2718. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ फतह मक्का के रोज़ मक्का में दाखिल हुए तो आप के सर पर खुद था, जब आप ने इसे उतारा तो किसी आदमी ने आ कर बताया की इब्ने खटल गिलाफे काबा के साथ चिमटा हुआ है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे क़त्ल कर दो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1846) و مسلم (450 / 1357)، (3308)

٢٧١٩ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ وَعَلَيْهِ عمامةٌ سوْداءُ بِغَيْر إِحْرَام. رَوَاهُ مُسلم

2719. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ फतह मक्का के रोज़ (मक्के में) दाखिल हुए तो

आप के सर पर सियाह इमामा था और आप हालत ए इहराम में नहीं थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (451 / 1358)، (3309)

٢٧٢٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَغْزُو جَيْشٌ الْكَعْبَةَ فَإِذَا كَانُوا بِبَيْدَاءَ مِنَ الْأَرْضِ يُخْسَفُ بِأَوَّلِهِمْ وَآخِرِهِمْ» . قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَكَيْفَ يُخْسَفُ بِأَوَّلِهِمْ وَآخِرِهِمْ وَفِيهِمْ أسواقُهم وَمن لَيْسَ مِنْهُم؟ قَالَ: «يخسف وَآخِرِهِمْ ثُمَّ يُبْعَثُونَ عَلَى نِيَّاتِهِمْ»

2720. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “एक लश्कर काबा पर हमला करने का क़सद करेगा, जब वह बैदा के मक़ाम पर होंगे तो उन के अव्वल व आख़िर तमाम फौजियो को ज़मीन में धंसा दीया जाएगा”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! उन के अव्वल व आख़िर को कैसे धंसा दीया जाएगा, जबकि उन मैं इन की रिआया भी होगी, और ऐसे लोग भी होंगे जो उनमें से नहीं होंगे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन के अव्वल व आख़िर सब को धंसा दीया जाएगा और फिर उन्हें उनकी नियतो के मुताबिक उठाया जाएगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاري (2118) و مسلم (8 / 2884)، (7244)

٢٧٢١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «يُخَرِّبُ الْكَعْبَة ذُو السويقتين من الْحَبَشَة»

2721. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बारीक़ पिंडलियों वाला एक हब्शी शख़्स काबा को बर्बाद करेगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاري (1596) و مسلم (5758 / 2909)، (7305 و 7306)

٢٧٢٢ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كَأَنِّي بِهِ أَسْوَدَ أَفْحَجَ يقْلعُها حجَراً حجَراً» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

2722. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “गोया में इस सियाह फाम शख़्स को देख रहा हूँ जो काबा का एक एक पत्थर उखाड़ फ़ेकेगा”| (बुखारी)

رواه البخاري (1595)



हुरमत ए मक्का, अल्लाह तआला ने इस की हिफाज़त की ज़िम्मेदारी ली है • بَاب حرم مَكَّة حرسها الله تَعَالَى

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٢٧٢٣ - (لم تتمّ دراسته) عَن يَعْلَى بْنِ أُمَيَّةَ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «احْتِكَارُ الطَّعَامِ فِي الْحَرَمِ إِلْحَادٌ فِيهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

2723. यअली बिन उमय्य रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हरम में ज़खीरा अन्दोज़ी करना इल्हाद है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2020) * فيه موسى بن باذان : مجهول ، و جعفر و عمارة : مستوران

٢٧٢٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِمَكَّةَ: «مَا أَطْيَبَكِ مِنْ بَلَدٍ وَأَحَبَّكِ إِلَيَّ وَلَوْلَا أَنَّ قَوْمِي أَخْرَجُونِي مِنْكِ مَا سَكَنْتُ غَيْرَكِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيب إِسْنَادًا

2724. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मक्का से फ़रमाया: “मेरे नज़दीक, तो सबसे अच्छा और सबसे पसंदीदा शहर है, अगर मेरी कौम मुझे तुझ से न निकालती तो मैं तेरे सिवा कहीं और न रहता”| तिरमिज़ी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है और उसकी इसनाद ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3926) * فيه فضيل بن سليمان : ضعيف و له شواهد عند ابی یعلی (5 / 69 ح 2662) و غيره وهو بها حسن

٢٧٢٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَدِيِّ بْنِ حَمْرَاءَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاقِفًا عَلَى الْحَزْوَرَةِ فَقَالَ: «وَاللَّهِ إِنَّكِ لَخَيْرُ أَرْضِ اللَّهِ وَأَحَبُّ اللَّهِ إِلَى اللَّهِ وَلَوْلَا أَنِّي أُخْرِجْتُ مِنْكِ مَا خرجْتُ» . رَوَاهُ الترمذيُّ وَابْن مَاجَه

2725. अब्दुल्लाह बिन अदि बिन हमराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को हजवरत के मक़ाम पर खड़े हुए देखा और आप ﷺ फरमा रहे थे: “अल्लाह की क़सम! तू अल्लाह की ज़मीन का सबसे बेहतरीन टुकड़ा और अल्लाह की सारी ज़मीन से अल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब है, अगर मुझे तुझ से निकाला न जाता तो मैं कभी न निकलता”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (3925 و قال : حسن غريب صحيح) و ابن ماجه (3108) [و صححه ابن حبان (الاحسان : 3700) و الحاكم (3 / 7) و وافقه الذهبی]



بَاب حرم مَكَّة حرسها الله تَعَالَى • हुरमत ए मक्का, अल्लाह तआला ने इस की हिफाज़त की ज़िम्मेदारी ली है

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٧٢٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أبي شُرَيْحٍ العَدوِيِّ أَنَّهُ قَالَ لِعَمْرِو بْنِ سَعِيدٍ وَهُوَ يَبْعَثُ الْبُعُوثَ إِلَى مَكَّةَ: ائْذَنْ لِي أَيُّهَا الْأَمِيرُ أُحَدِّثْكَ قَوْلًا قَامَ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ [ص:٨٣ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الغدَ مِنْ يَوْمِ الْفَتْحِ سَمِعَتْهُ أُذُنَايَ وَوَعَاهُ قَلْبِي وَأَبْصَرَتْهُ عَيْنَايَ حِينَ تَكَلَّمَ بِهِ: حَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: " إِنَّ مَكَّةَ حَرَّمَهَا اللَّهُ وَلَمْ يُحَرِّمْهَا النَّاسُ فَلَا يَحِلُّ لِامْرِئٍ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يَسْفِكَ بِهَا دَمًا وَلَا يَعْضِدَ بِهَا شَجَرَةً فَإِنْ أَحَدٌ تَرَخَّصَ بِقِتَالِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيهَا فَقُولُوا لَهُ: إِنَّ اللَّهَ قَدْ أَذِنَ لرَسُوله وَلم يَأْذَن لِرَسُولِهِ وَلَمْ يَأْذَنْ لَكُمْ وَإِنَّمَا أُذِنَ لِي فِيهَا سَاعَةَ نَهَارٍ وَقَدْ عَادَتْ حُرْمَتُهَا الْيَوْمَ كَحُرْمَتِهَا بِالْأَمْسِ وَلْيُبْلِغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ ". فَقِيلَ لِأَبِي شُرَيْحٍ: مَا قَالَ لَكَ عَمْرٌو؟ قَالَ: قَالَ: أَنَا أَعْلَمُ بِذَلِكَ مِنْكَ يَا أَبَا شُرَيْحٍ أَنَّ الْحَرَمَ لَا يُعِيذُ عَاصِيًا وَلَا فَارًّا بِدَمٍ وَلَا فَارًّا بِخَرْبَةٍ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي الْبُخَارِيِّ: الْخَرْبَةُ: الْجِنَايَة

2726. अबू शरीह अदवी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि उन्होंने अम्र बिन सईद से, जब के वह मक्का की तरफ लश्कर रवाना कर रहा था, कहा जनाब अमिर! अगर तुम मुझे इजाज़त दो तो मैं तुम्हें एक हदीस बयान करता हूँ जो रसूलुल्लाह ﷺ ने फतह मक्का के अगले रोज़ बयान फरमाई थी, जिसे मेरे कानों ने सुना, मेरा दिल ने इसे याद किया और मेरी आंखो ने इसे देखा, जब आप ने वह हदीस बयान की तो आप ﷺ ने अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया: “बेशक मक्का ऐसी जगह है जिसे अल्लाह ने हराम करार दिया है, और इसे कोई लोगों ने हराम करार नहीं दिया, जो शख़्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है उस के लिए हलाल नहीं के वह उस में खून रेज़ी करे और उस के दरख्त काटे, हाँ अगर कोई शख़्स इस मैं रसूलुल्लाह ﷺ के किताल करने से किताल की इज़ाज़त रुखसत ले तो उसे कहो: बेशक अल्लाह ने अपने रसूल को उसकी इजाज़त दी थी और तुम्हें इजाज़त नहीं की और मुझे भी एक दिन के कुछ हिस्से के लिए इजाज़त दी गई थी और उसकी हुरमत आज भी वैसे यही जैसे कल थी, और चाहिए की जो यहाँ मौजूद है के गैर मौजूद तकिया बाते पहुंचा दे”| अबू शरीह रदियल्लाहु अन्हु से पूछा गया के अम्र ने तुम्हें क्या जवाब दिया? उन्होंने कहा: उसने मुझे कहा अबू शरीह! में उसे तुम से ज़्यादा जानता हूँ बेशक हरम किसी गुनाहगार को पनाह देता है न किसी मफरुर कातिल को और ना ही किसी मफरुर चोरी को पनाह देता है”| बुखारी, मुस्लिम, और सहीह बुखारी में है की الخربة का मानी الجنايه कसूर है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاري (4295) و مسلم (446 / 1354)، (3304)

٢٧٢٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عيَّاشِ بنِ أبي ربيعةَ المَخْزُومِي قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَزَالُ هَذِهِ الْأُمَّةُ بِخَيْرٍ مَا عَظَّمُوا هَذِهِ الْحُرْمَةَ حَقَّ تَعْظِيمِهَا فَإِذَا ضَيَّعُوا ذلكَ هلَكُوا» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

2727. अब्बास बिन अबी रबिआ अल माख्ज़ुमी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये उम्मत खैर व भलाई पर काइम रहेगी जब तक यह इस हुरमत (मक्का मुकर्रमा) की उसकी ताज़ीम के मुताबिक उसकी ताज़ीम करती रहेगी, जब वह उस को ज़ाए करेगा तो हलाक हो जाएँगे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (3110) * يزيد بن ابی زياد : ضعيف ، ضعفه الجمهور

بَابُ حَرَمِ الْمَدِينَةِ حَرَسَهَا اللَّهُ تَعَالَى • हुरमत ए मदीना का बयान, अल्लाह तआला इस की हिफाज़त फरमाए

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٢٧٢٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: مَا كَتَبْنَا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَّا الْقُرْآنَ وَمَا فِي هَذِهِ الصَّحِيفَةِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «الْمَدِينَةُ حَرَامٌ مَا بَيْنَ عَيْرٍ إِلَى ثَوْرٍ فمنْ أحدَثَ فِيهَا حَدَثًا أَوْ آوَى مُحْدِثًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَدْلٌ ذمَّةُ المسلمينَ واحدةٌ يَسْعَى بِهَا أَدْنَاهُمْ فَمَنْ أَخْفَرَ مُسْلِمًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَدْلٌ وَمَنْ وَالَى قَوْمًا بِغَيْرِ إِذْنِ مَوَالِيهِ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عدل»»» وَفِي رِوَايَةٍ لَهُمَا: «مَنِ ادَّعَى إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ أَوْ تَوَلَّى غَيْرَ مَوَالِيهِ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صرف وَلَا عدل»

2728. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने रसूलुल्लाह ﷺ से सिर्फ कुरान और जो कुछ इस सहिफे में है वह लिखा है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मदीना अयर से सौरन तक हरम है, जो शख़्स उस में कोई बिदअत इजाद करे या किसी बिदअत इजाद करने वाले को पनाह दे तो उस पर अल्लाह तआला, तमाम फरिश्तो और तमाम लोगों की लानत है, ना उसकी नफ्ल इबादत कबूल होगी न फ़र्ज़, मुसलमानों की अमान एक ही है, और उस में अदना मुसलमान की अमान की भी बराबर हैसियत है, जो शख़्स किसी मुसलमान के अहद को तोड़ा तो उस पर अल्लाह, फरिश्तो और तमाम लोगों की लानत है, ना उस का नफ्ल कबूल होगा न फ़र्ज़, और जो शख़्स अपने मालिको की इजाज़त के बगैर किसी कौम से मुआयदा कर ले तो उस पर अल्लाह, फरिश्तो और तमाम लोगों की लानत है, और ना उस का नफ्ल कबूल होगा न फ़र्ज़”| और सहीहैन ही की रिवायत में है: “जो शख़्स अपने आप को बाप के सिवा किसी और की तरफ मंसूब कर ले या अपने मालिको के अलावा किसी और से मुआयदा कर ले तो उस पर अल्लाह, फरिश्तो और तमाम लोगों की लानत है, ना उस से नफ्ल कबूल होगा न फ़र्ज़”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1870) و مسلم (467 / 1370)، (3327)

٢٧٢٩ - (صَحِيح) وَعَنْ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنِّي أَحَرِّمُ مَا بَيْنَ لَابَتَيِ [ص:٨٣ الْمَدِينَةِ: أَنْ يُقْطَعَ عِضَاهُهَا أَوْ يُقْتَلَ صَيْدُهَا " وَقَالَ: «الْمَدِينَةُ خَيْرٌ لَهُمْ لَوْ كَانُوا يعلمونَ لَا يَدَعُهَا أَحَدٌ رَغْبَةً عَنْهَا إِلَّا أَبْدَلَ اللَّهُ فِيهَا مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنْهُ وَلَا يَثْبُتُ أَحَدٌ عَلَى لَأْوَائِهَا وَجَهْدِهَا إِلَّا كُنْتُ لَهُ شَفِيعًا أَو شَهِيدا يَوْم الْقِيَامَة» . رَوَاهُ مُسلم

2729. साअद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं मदीना के दोनों पथरिले मकामो के दरमियानी हिस्से को हरम करार देता हूँ, और इस इलाके का दरख्त कांट दे या उस का शिकार क़त्ल करना हराम है”, और फ़रमाया: “मदीना इन के लिए बेहतर है काश के वह जानते, अगर कोई शख़्स उस से अदम रगबत की वजह से इसे छोड़ जाएगा तो अल्लाह उस में उस के बदले में ऐसे शख़्स को आबाद करेगा जो उस से बेहतर होगा और जो शख़्स उसकी भूख और तकलीफ पर सब्र करेगा तो रोज़ ए कियामत में उसकी सिफारिश करूँगा या में उस के हक़ में गवाही दूंगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (459 / 1363)، (3318)

٢٧٣٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَصْبِرُ عَلَى لَأْوَاءِ الْمَدِينَةِ وَشِدَّتِهَا أَحَدٌ مِنْ أُمَّتِي إِلَّا كُنْتُ لَهُ شَفِيعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2730. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत में से जो शख़्स मदीना की भूख और उसकी तकलीफ पर सब्र करेगा तो रोज़ ए कियामत में उसकी सिफारिश करूँगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (484 / 1378)، (3347)

٢٧٣١ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّاسُ إِذَا رَأَوْا أَوَّلَ الثَّمَرَةِ جَاءُوا بِهِ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِذَا أَخَذَهُ قَالَ: «اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي ثَمَرِنَا وَبَارِكْ لَنَا فِي مَدِينَتِنَا وَبَارِكْ لَنَا فِي صَاعِنَا وَبَارِكْ لَنَا فِي مُدِّنَا اللَّهُمَّ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ عَبْدُكَ وَخَلِيلُكَ وَنَبِيُّكَ وَإِنِّي عَبْدُكَ وَنَبِيُّكَ وَإِنَّهُ دَعَاكَ لِمَكَّةَ وَأَنَا أدعوكَ للمدينةِ بمثلِ مَا دعَاكَ لمكةَ ومِثْلِهِ مَعَهُ» . ثُمَّ قَالَ: يَدْعُو أَصْغَرَ وَلِيدٍ لَهُ فيعطيهِ ذَلِك الثَّمر. رَوَاهُ مُسلم

2731. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब लोग पहला पहला फल देखते तो उसे नबी ﷺ की खिदमत में पेश करते, जब आप ﷺ इसे पकड़ लेते तो दुआ फरमाते: “ए अल्लाह! हमारे लिए फलों में बरकत फरमा, ऐ अल्लाह! हमारे लिए हमारे मदीना में बरकत फरमा, हमारे साअ और हमारे मुद (नापतोल के पैमाने) में बरकत फरमा, ऐ अल्लाह! बेशक इब्राहीम अलैहिस्सलाम तेरे बन्दे, तेरे खलील और तेरे नबी थे, और मैं भी तेरा बंदा और तेरा नबी हूँ, बेशक उन्होंने तुझ से मक्का के लिए दुआ फरमाई और मैं तुझ से इसी मिसल मदीना के लिए दुआ करता हूँ और उसकी मिस्ल उस के साथ मज़ीद दुआ करता हूँ”| रावी बयान करते हैं, फिर आप ﷺ अपने किसी सबसे छोटे बच्चे को बुलाते और वह फल इसे दे देते| (मुस्लिम)

رواه مسلم (473 / 1373)، (3334)

٢٧٣٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ إِبْرَاهِيمَ حَرَّمَ مَكَّةَ فَجَعَلَهَا حَرَامًا وَإِنِّي حَرَّمْتُ الْمَدِينَةَ حَرَامًا مَا بَيْنَ مَأْزِمَيْهَا أَنْ لَا يُهْرَاقَ فِيهَا دَمٌ وَلَا يُحْمَلَ فِيهَا سلاحٌ لقتالٍ وَلَا تُخبَطَ فِيهَا شجرةٌ إِلَّا لعلف» . رَوَاهُ مُسلم

2732. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मक्का को हराम करार दिया और उसकी हुरमत को साबित किया और मैं मदीना को उस के दो पहाड़ो के दरमियानी इलाके को हराम करार देता हूँ कि ना उस में खून रेज़ी की जाए न किताल के लिए उस में अस्लिहा उठाया जाए और ना ही चारे के अलावा उस के दरख्तों के पत्ते झाड़े जाए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (475 / 1374)، (3336)

٢٧٣٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ: أَنَّ سَعْدًا رَكِبَ إِلَى قَصْرِهِ بِالْعَقِيقِ فَوَجَدَ عَبْدًا يَقْطَعُ شَجَرًا أَوْ يَخْبِطُهُ فَسَلَبَهُ فَلَمَّا رَجَعَ سَعْدٌ جَاءَهُ أَهْلُ الْعَبْدِ [ص:٨٣ فَكَلَّمُوهُ أَنْ يَرُدَّ عَلَى غُلَامِهِمْ أَوْ عَلَيْهِمْ مَا أَخَذَ مِنْ غُلَامِهِمْ فَقَالَ: مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ أَرُدَّ شَيْئًا نَفَّلَنِيهِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبِي أَنْ يرد عَلَيْهِم. رَوَاهُ مُسلم

2733. आमिर बिन साद रहिमहुल्लाह से रिवायत है के साद (बिन अबी वकास (र)) मौजु अकिक में वाकेअ अपने महल की तरफ जा रहे थे की उन्होंने किसी गुलाम को दरख्त काटते हुए या उस के पत्ते झाड़ते हुए पाया तो उन्होंने उस का कपड़ा सलब कर लिया, जब साद रदियल्लाहु अन्हु वापस (मदीना) आए तो गुलाम के मालिक उन के पास आए और उन से बात की के उन्होंने गुलाम से जो कुछ लिया है के इसे उन के गुलाम को या हमें वापस लेटा दें, उस पर उन्होंने (साअद (र)) ने फ़रमाया: अल्लाह की पनाह की मैं इस चीज़ को वापस कर दू जो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे बतौर ए गनीमत दी है, और उन्होंने उन्हें वह कपड़ा वापस करने से इनकार कर दिया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (461 / 1364)، (3320)

٢٧٣٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ وُعِكَ أَبُو بَكْرٍ وَبِلَالٌ فَجِئْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ حَبِّبْ إِلَيْنَا الْمَدِينَةَ كَحُبِّنَا مَكَّةَ أَوْ أَشَدَّ وَصَحِّحْهَا وَبَارِكْ لَنَا فِي صاعها ومدها وانقل حماها فاجعلها بِالْجُحْفَةِ»

2734. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ मदीना तशरीफ़ लाए तो अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु और बिलाल रदियल्लाहु अन्हु बुखार में मुब्तिला हो गए, मैं रसूलुल्लाह ﷺ के पास आई और आप को बताया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “ए अल्लाह! जिस तरह हमें मक्का महबूब है उस तरह या इसे भी ज़्यादा मदीना हमें महबूब बना दे और इसे सेहते आफ्ज़ा बना दे, उस के सा मुद में हमारे लिए बरकत फरमा दें और उस के बुखार को मुन्तकिल फरमा और इसे जुह्फा भेज दे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1889) و مسلم (480 / 1376)، (3342)

٢٧٣٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ فِي رُؤْيَا النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَدِينَةِ: " رَأَيْتُ امْرَأَةً سَوْدَاءَ ثَائِرَةَ الرَّأْسِ خَرَجَتْ مِنَ الْمَدِينَةِ حَتَّى نَزَلَتْ مَهْيَعَةَ فَتَأَوَّلْتُهَا: أَنَّ وَبَاءَ الْمَدِينَةِ نُقِلَ إِلَى مَهْيَعَةَ وَهِيَ الْجُحْفَةُ ". رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2735. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से नबी ﷺ के मदीना के बारे में ख्वाब के मुतल्लिक रिवायत है, (आप ﷺ ने फ़रमाया): "मैंने एक सियाह फाम परान्दा बालो वाली औरत को मदीना से निकल कर " महयअम" पर कयाम करते हुए देखा, मैंने उसकी तावील की के मदीना की वबा " महयअम" मुन्तकिल कर दी गई है और " महयअम" जुहफा का ही नाम है"| (बुखारी)

رواه البخاری (7039)

٢٧٣٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سُفْيَانَ بْنِ أَبِي زُهَيْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «يُفْتَحُ الْيَمَنُ فَيَأْتِي قومٌ يبُسُّون فيَتَحمَّلونَ بأهليهم وَمن أطاعهم وَالْمَدِينَةُ خَيْرٌ لَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ وَيُفْتَحُ الشَّامُ فَيَأْتِي قَوْمٌ يَبُسُّونَ فَيَتَحَمَّلُونَ بِأَهْلِيهِمْ وَمَنْ أَطَاعَهُمْ وَالْمَدِينَةُ خَيْرٌ لَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ وَيُفْتَحُ الْعِرَاقُ فَيَأْتِي قَوْمٌ يَبُسُّونَ فَيَتَحَمَّلُونَ بِأَهْلِيهِمْ وَمَنْ أَطَاعَهُمْ وَالْمَدِينَةُ خَيْرٌ لَهُمْ لَوْ كَانُوا يعلمُونَ»

2736. सुफियान बिन अबी ज़हीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "यमन फतह हो जाएगा तो कुछ लोग अपने ऊटों को तेज़ चलाते हुए आएँगे तो वह अपने अहल व अयाल और अपने इताअत गुज़ार लोगों को सवार कर के ले जाएंगे हालाँकि मदीना इन के लिए बेहतर था काश के वह जानते, और शाम फतह हो जाएगा तो कुछ लोग ऊटों को तेज़ चलाते हुए आएँगे तो वह अपने अहले खाना और जो उनकी इताअत इख़्तियार कर लेंगे उन को सवार कर के ले जाएंगे, हालाँकि मदीना इन के लिए बेहतर था काश वह जान लेते, और इराक फतह हो जाएगा तो कुछ लोग ऊटों को तेज़ दोड़ाते हुए आएँगे और वह अपने अहल व अयाल और अपने इताअत गुज़ार लोगों को सवार कर के ले जाएंगे, जबकि मदीना इन के लिए बेहतर था काश के वह जान लेते"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1875) و مسلم (498 / 1388)، (3365)

٢٧٣٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أُمِرْتُ بِقَرْيَةٍ تَأْكُلُ الْقُرَى. يَقُولُونَ: يَثْرِبَ وَهِيَ الْمَدِينَةُ تَنْفِي النَّاسَ كَمَا يَنْفِي الْكِيرُ خَبَثَ الْحَدِيدِ "

2737. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मुझे एक ऐसी बस्ती में कयाम करने का हुक्म दिया गया जो दूसरी बस्तियों पर ग़ालिब आ जाएगी, वह इसे यसरिब कहते हैं जबकि वह मदीना है, वह लोगों को ऐसे निकाल बाहर करती हैं जैसे भट्टी लोहे की मेल कुचेल निकाल बाहर करती है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1871) و مسلم (488 / 1382)، (3353)

٢٧٣٨ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ الله سمى الْمَدِينَة طابة» . رَوَاهُ مُسلم

2738. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “बेशक अल्लाह तआला ने मदीना का नाम ताबत रखा है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (491 / 1385)، (3357)

٢٧٣٩ - (مُتَّفقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ: أَنَّ أَعْرَابِيًّا بَايَعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَأَصَابَ الْأَعْرَابِيَّ وَعَكٌ بِالْمَدِينَةِ فَأَتَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ أَقِلْنِي بَيْعَتِي فَأَبَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ جَاءَهُ فَقَالَ: أَقِلْنِي بَيْعَتِي فَأَبَى ثُمَّ جَاءَهُ فَقَالَ: أَقِلْنِي بَيْعَتِي فَأَبَى فَخَرَجَ الْأَعْرَابِيُّ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا الْمَدِينَةُ كَالْكِيرِ تَنْفِي خبثها وتنصع طيبها»

2739. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आराबी ने रसूलुल्लाह ﷺ की बैत की तो इस आराबी को मदीना में बुखार हो गया, वह नबी ﷺ के पास आया तो उस ने कहा: मुहम्मद! ﷺ मेरी बैत वापस कर दे, लेकिन रसूलुल्लाह ﷺ ने इनकार कर दिया, वह फिर आया और कहा: मेरी बैत वापस कर दे, लेकिन आप ने इनकार फ़रमाया, वह फिर आप के पास आया तो उस ने कहा मेरी बैत तोड़ दें, लेकिन आप ने इनकार फ़रमाया, वह आराबी (मदीना) से चला गया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मदीना भट्टी की तरह है के वह बुरी चीज़ को निकाल देता है जबकि अच्छी चीज़ को वह खालिस बना देता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1883) و مسلم (489 / 1383)، (3355)

٢٧٤٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَنْفِيَ الْمَدِينَةُ شِرَارَهَا كَمَا يَنْفِي الْكِيرُ خَبَثَ الْحَدِيد» . رَوَاهُ مُسلم

2740. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कियामत काइम नहीं होगी हत्ता के मदीना बुरे लोगों को निकाल बाहर करेगा जैसे भट्टी लोहे की मेल कुचेल निकाल बाहर करती है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (487 / 1381)، (3352)

٢٧٤١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عَلَى أَنْقَابِ الْمَدِينَةِ مَلَائِكَةٌ لَا يَدْخُلُهَا الطَّاعُونُ وَلَا الدَّجَّالُ»

2741. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मदीना के दाखिली रास्तो पर फ़रिश्ते पहरा देते हैं ना उस में ताऊन दाखिल होगा न दज्जाल”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1880) و مسلم (485 / 1379)، (3350)

٢٧٤٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَ مِنْ بلدٍ إِلا سَيَطَؤهُ الدَّجَّالُ إِلَّا مَكَّةَ وَالْمَدِينَةَ لَيْسَ نَقْبٌ مِنْ أَنِقَابِهَا إِلَّا عَلَيْهِ الْمَلَائِكَةُ صَافِّينَ [ص:٨٣ يَحْرُسُونَهَا فَيَنْزِلُ السَّبِخَةَ فَتَرْجُفُ الْمَدِينَةُ بِأَهْلِهَا ثَلَاثَ رَجَفَاتٍ فَيَخْرُجُ إِلَيْهِ كُلُّ كَافِرٍ وَمُنَافِقٍ»

2742. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मक्का और मदीना के अलावा दज्जाल हर शहर को ख़राब कर डालेगा, इन दोनों शहरो के तमाम दाखिली रास्तो पर फ़रिश्ते सफे बांधे उनकी हिफाज़त कर रहे हैं, वह (दज्जाल) शोर वाली ज़मीन पर उतरेगा, फिर मदीना अपने रहने वालो को तीन बार खूब झटका देगा तो हर काफिर मुनाफ़िक़ इस (दज्जाल) की तरफ निकल जाएगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1881) و مسلم (123 / 2943)، (7390)

٢٧٤٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَكِيدُ أَهْلَ الْمَدِينَةِ أَحَدٌ إِلَّا انْمَاعَ كَمَا يَنْمَاعُ الْملح فِي المَاء»

2743. साअद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अहले मदीना से धोका करेगा तो वह इस तरह पिघल जाएगा जैसे नमक पानी में घुल जाता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1877) و مسلم (494 / 1387)، (3361)

٢٧٤٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا قَدِمَ مِنْ سَفَرٍ فَنَظَرَ إِلى جُدُراتِ الْمَدِينَةِ أَوْضَعَ رَاحِلَتَهُ وَإِنْ كَانَ عَلَى دَابَّةٍ حركها من حبها. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2744. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब नबी ﷺ सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते और मदीना की दीवारों पर नज़र पड़ती तो आप मदीना से मुहब्बत की वजह से अपने ऊंटनी को, और अगर किसी और सवारी पर होते तो उसे तेज़ दोड़ाते”| (बुखारी)

رواه البخاری (1886)

٢٧٤٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَلَعَ لَهُ أَحُدٌ فَقَالَ: «هَذَا جَبَلٌ يُحِبُّنَا وَنُحِبُّهُ اللَّهُمَّ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ حَرَّمَ مَكَّةَ وَإِنِّي أحرم مَا بَين لابتيها»

2745. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ को उहद पहाड़ नज़र आया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये वह पहाड़ है जो हम से मुहब्बत करता है और हम उस से मुहब्बत करते हैं, ऐ अल्लाह! बेशक इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मक्का को हराम करार दिया, और मैं मदीना के दोनों पथरीली जगह के दरमियानी इलाके को हराम करार देता हूँ”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2889) و مسلم (4620 / 1365)، (3321)

٢٧٤٦ - (صَحِيح) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أُحُدٌ جَبَلٌ يُحِبُّنَا ونحبُّه» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2746. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उहद ऐसा पहाड़ है जो हम से मुहब्बत करता है और हम उस से मुहब्बत करते हैं”| (बुखारी)

رواه البخاری (1482)

بَابُ حَرَمِ الْمَدِينَةِ حَرَسَهَا اللَّهُ تَعَالَى — हुरमत ए मदीना का बयान, अल्लाह तआला इस की हिफाज़त फरमाए

الْفَصْلُ الثَّانِي — दूसरी फस्ल

٢٧٤٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ أَبِي عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: رَأَيْتُ سَعْدَ بْنَ أَبِي وَقَّاصٍ أَخَذَ رَجُلًا يَصِيدُ فِي حَرَمِ الْمَدِينَةِ الَّذِي حَرَّمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَلَبَهُ ثِيَابَهُ فَجَاءَهُ مَوَالِيهِ فَكَلَّمُوهُ فِيهِ فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَرَّمَ هَذَا الْحَرَمَ وَقَالَ: «مَنْ أَخَذَ أَحَدًا [ص:٨٣ يَصِيدُ فِيهِ فَلْيَسْلُبْهُ» . فَلَا أَرُدُّ عَلَيْكُمْ طُعْمَةً أَطْعَمَنِيهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَكِنْ إِنْ شِئْتُمْ دفعتُ إِليكم ثمنَه. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2747. सुलेमान बिन अबी अब्दुल्लाह बयान करते हैं, मैंने साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु को देखा के उन्होंने एक आदमी को पकड़ा जो हरम मदीना में, जिस को रसूलुल्लाह ﷺ ने हरम करार दिया है, शिकार कर रहा था, उन्होंने उस का कपड़ा सलब कर लिया, तो उस के मालिक आप के पास आए और आप से इस बारे में बात चित की तो उन्होंने फ़रमाया के रसूलुल्लाह ﷺ ने इस हरम को हराम करार दिया है और उन्होंने ने फ़रमाया: “जो शख़्स किसी को उस में शिकार करता हुआ पाए तो वह उस का कपड़ा सलब कर ले”, लिहाज़ा मैं

यह रीज़्क़ तुम्हें वापस नहीं दूँगा जो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे अता किया है, लेकिन अगर तुम चाहो तो मैं उसकी कीमत तुम्हें अदा कर देता हूँ| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2037) * سلیمان بن ابی عبدالله مجهول الحال لم یو ثقه غیر ابن حبان

٢٧٤٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ صَالِحٍ مَوْلًى لِسَعْدٍ أَنَّ سَعْدًا وَجَدَ عَبِيدًا مِنْ عَبِيدِ الْمَدِينَةِ يَقْطَعُونَ مِنْ شَجَرِ الْمَدِينَةِ فَأَخَذَ مَتَاعَهُمْ وَقَالَ يَعْنِي لِمَوَالِيهِمْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ينْهَى أَنْ يُقْطَعَ مِنْ شَجَرِ الْمَدِينَةِ شَيْءٌ وَقَالَ: «مَنْ قَطَعَ مِنْهُ شَيْئًا فَلِمَنْ أَخَذَهُ سَلَبُهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2748. साअद रदियल्लाहु अन्हु के आज़ाद करदा गुलाम स्वालेह से रिवायत है के साद रदियल्लाहु अन्हु ने मदीना के कुछ गुलामो को मदीना के दरख्त काटते हुए पाया तो उन्होंने उनका सामान ले लिया, और उन के मालिको से फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को मदीना के दरख्त से कोई चीज़ कांट इसे मना करते हुए सुना, और आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स उसकी कोई चीज़ काटे तो जो शख़्स इसे पकड़े तो उस का सामान इसी (पकड़ने वाले) को मिलेगा”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2038) * مولی سعد مجهول

٢٧٤٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الزُّبَيْرِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ صَيْدَ وَجٍّ وَعِضَاهَهُ حِرْمٌ مُحَرَّمٌ لِلَّهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَقَالَ مُحْيِي السُّنَّةِ: «وَجٌّ» ذَكَرُوا أَنَّهَا مِنْ نَاحِيَةِ الطَّائِف وَقَالَ الْخطابِيّ: «إِنَّه» بدل «إِنَّهَا»

2749. जुबैर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वज्ज (ताईफ़ या ताईफ का कुछ इलाका) का शिकार करना और उस के खारदार दरख्तों का काटना हराम है, अल्लाह के लिए हराम किया गया है”| अबू दावुद, और इमाम मुह्यी अल सुन्नी ने बयान किया “वज्ज” के बारे में उलेमा ने फ़रमाया है के वह ताईफ का एक इलाका है, और खत्ताबी रहिमहुल्लाह ने اَنَّهَا की जगह اَنَّه कहा है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2032) * عبدالله بن انسان : لین الحدیث

٢٧٥٠ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ اسْتَطَاعَ أَنْ يَمُوت بالمدية فليمت لَهَا فَإِنِّي أَشْفَعُ لِمَنْ يَمُوتُ بِهَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيح غَرِيب إِسْنَادًا

2750. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स मदीना में फौत हो

सकता हो तो इसे इसी में फौत होना चाहिए, क्योंकि जो शख़्स इसे ही में फौत होगा में उसकी शफाअत करूँगा”| अहमद तिरमिज़ी, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है और उसकी इसनाद ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 74 ح 5437) و الترمذی (3917) [و ابن ماجه (3112)]

٢٧٥١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «آخِرُ قَرْيَةٍ مِنْ قُرَى الْإِسْلَامِ خَرَابًا الْمَدِينَةُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

2751. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस्लामी बस्तियों में से मदीना ऐसी बस्ती है जो सबसे आख़िर में वीरान होगी”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3919) * جنادة بن سلم و ثقه جماعة و ضعفه جماعة و قال الساجی :’’ حدث عن هشام بن عروة حدیثا منکرًا ‘‘ و هذا الحدیث رواه جنادة عن هشام بن عروة عن ابی هریرة به

٢٧٥٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنَّ اللَّهَ أَوْحَى إِلَيَّ: أَيَّ هَؤُلَاءِ الثَّلَاثَةِ نَزَلْتَ فَهِيَ دَارُ هِجْرَتِكَ الْمَدِينَةِ أَوِ الْبَحْرَيْنِ أَوْ قِنَّسْرِينَ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2752. जरीर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक अल्लाह तआला ने मेरी तरफ वही फरमाई के आप उन तीनो, मदीना या बहरीन या किन्नसिरिन, मैं से जहाँ भी कयाम फरमाए, वह आप का दार हिजरत है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3923 و قال : غریب) * فیه غیلان : لین / ای ضعیف

بَابُ حَرَمِ الْمَدِينَةِ حَرَسَهَا اللَّهُ تَعَالَى • हुरमत ए मदीना का बयान, अल्लाह तआला इस की हिफाज़त फरमाए

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٧٥٣ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي بَكْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَدْخُلُ الْمَدِينَةَ رُعْبُ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ لَهَا يَوْمَئِذٍ سَبْعَةُ أَبْوَابٍ عَلَى كُلِّ بَابٍ مَلَكَانِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2753. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मसीह दज्जाल का रुअब मदीना में दाखिल नहीं होगा, इस रोज़ उस के सात दरवाज़े होंगे, और हर दरवाज़े पर दो फ़रिश्ते होंगे"| (बुखारी)

رواه البخاری (1879)

٢٧٥٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اللَّهُمَّ اجْعَلْ بِالْمَدِينَةِ ضِعْفَي مَا جعلت بِمَكَّة من الْبركَة»

2754. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने दुआ फरमाई: "अल्लाह तूने जितनी बरकत मक्का को दिया है उस से दुगनी मदीना को अता फरमा"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1885) و مسلم (466 / 1369)، (3326)

٢٧٥٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ رَجُلٍ مِنْ آلِ الْخَطَّابِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ زَارَنِي مُتَعَمِّدًا كَانَ فِي جِوَارِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَنْ سَكَنَ الْمَدِينَةَ وَصَبَرَ عَلَى بَلَائِهَا كُنْتُ لَهُ شَهِيدًا وَشَفِيعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَنْ مَاتَ فِي أَحَدِ الْحَرَمَيْنِ بَعَثَهُ اللَّهُ مِنَ الْآمِنِينَ يَوْمَ الْقِيَامَة»

2755. आले ख़िताब में से एक आदमी ने नबी ﷺ से रिवायत किया आप ﷺ ने फ़रमाया: "जो शख़्स जान बुझकर मेरी ज़ियारत के लिए आए तो रोज़ ए कियामत वह मेरे पड़ोस में होगा, जो शख़्स मदीना में सुकूनत इख़्तियार करे और उसकी मुश्किलात पर सब्र करे तो रोज़ ए कियामत में उस के लिए गवाह बनूँगा या सिफारिशी होऊँगा और जो हरमैन (मक्के मदीना) में किसी जगह फौत हुआ तो रोज़ ए कियामत वह अमन वालो में से होगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (4152 ، نسخة محققة : 3856) * فیه رجل من آل الخطاب : مجهول

٢٧٥٦ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ مَرْفُوعًا: «مَنْ حَجَّ فَزَارَ قَبْرِي بَعْدَ مَوْتِي كَانَ كَمَنْ زَارَنِي فِي حَيَاتِي» . رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

2756. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा मरफुअ रिवायत बयान करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जो शख़्स हज करे और मेरी मौत के बाद मेरी कब्र की ज़ियारत करे तो वह इस शख़्स की तरह है जिस ने मेरी जिंदगी में मेरी ज़ियारत की"| इमाम बयहकी ने दोनों रिवायतों शौबुल ईमान में रिवायत की है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جدا ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (4154 ، نسخة محققة : 3858) * لیث بن ابی سلیم : ضعیف و حفص بن ابی داود : ضعیف جدًا

٢٧٥٧ - (ضَعِيف) لِإرساله وَعَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ جَالِسًا وَقَبْرٌ يُحْفَرُ بِالْمَدِينَةِ فَاطَّلَعَ رَجُلٌ فِي الْقَبْرِ فَقَالَ: بِئْسَ مَضْجَعِ الْمُؤْمِنِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بئس مَا قُلْتَ» قَالَ الرَّجُلُ إِنِّي لَمْ أُرِدْ هَذَا إِنَّمَا أَرَدْتُ الْقَتْلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا مِثْلَ الْقَتْلِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ مَا عَلَى [ص:٨٤ الْأَرْضِ بُقْعَةٌ أَحَبُّ إِلَيَّ أَنْ يَكُونَ قَبْرِي بِهَا مِنْهَا» ثَلَاثَ مَرَّاتٍ. رَوَاهُ مَالِكٌ مُرْسَلًا

2757. याह्या बिन सईद से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ बैठें हुए थे जबकि मदीना में एक कब्र खोदी जा रही थी, एक आदमी ने कब्र में झाँका तो कहा, मोमिन की बहोत बुरी जगह है, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुमने बहोत बुरी बात की है”, इस आदमी ने अर्ज़ किया, मेरा यह इरादा नहीं था मैंने तो यह इरादा किया के अल्लाह की राह में शहादत (बिस्तर पर मरने से) अफज़ल है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की राह में शहादत जैसी तो कोई चीज़ ही नहीं और मुझे अपने कब्र के लिए यह खत्ता ज़मीन पूरी ज़मीन में सबसे ज़्यादा पसंदीदा है”, आप ने यह बात तीन मर्तबा फरमाई| इमाम मालिक ने इसे मुरसल रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواہ مالک (2 / 462 ح 1020) * السند ضعیف لا رساله ، رواہ مالک عن یحیی بن سعید به مرفوعًا وھو مرسل ،

٢٧٥٨ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ بِوَادِي الْعَقِيقِ يَقُولُ: أَتَانِي اللَّيْلَةَ آتٍ مِنْ رَبِّي فَقَالَ: صَلِّ فِي هَذَا الْوَادِي الْمُبَارَكِ وَقُلْ: عُمْرَةٌ فِي حَجَّةٍ ". وَفِي رِوَايَة: «قل عُمرةٌ وحِجّةٌ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

2758. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को वादी ए अकिक में फरमाते हुए सुना: “आज रात मेरे रब की तरफ से एक आने वाला मेरे पास आया तो उस ने कहा: इस मुबारक वादी में नमाज़ पढ़े और कहे उमरा हज में दाखिल हो गया”, एक दूसरी रिवायत में है: “आप ﷺ ने फ़रमाइए: उमरा और हज की एक साथ नियत की”| (बुखारी)

رواہ البخاری (1534 ، 7343)

रिज्क ए हलाल कमाने का बयान • بَاب الْكسْب وَطلب الْحَلَال

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٧٥٩ - (صَحِيح) عَن الْمِقْدَاد بْنِ مَعْدِي كَرِبَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أَكَلَ أَحَدٌ طَعَامًا قَطُّ خَيْرًا مِنْ أَنْ يَأْكُلَ مِنْ عَمَلِ يَدَيْهِ وَإِنَّ نَبِيَّ اللَّهِ دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ كَانَ يَأْكُلُ مِنْ عمل يَدَيْهِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2759. मिक्दाम बिन मअदीकरीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किसी शख़्स ने अपने हाथ की कमाई से ज़्यादा बेहतर खाना कभी नहीं खाया, और अल्लाह के नबी दाउद (अ) अपने हाथो की कमाई से खाया करते थे”| (बुखारी)

رواه البخاری (2072)

٢٧٦٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ طَيِّبٌ لَا يَقْبَلُ إِلَّا طَيِّبًا وَأَنَّ اللَّهَ أَمَرَ الْمؤْمنينَ بِمَا أمرَ بِهِ المرسَلينَ فَقَالَ: (يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوا مِنَ الطَّيِّبَاتِ واعْمَلوا صَالحا)»» وَقَالَ: (يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ)»» ثُمَّ ذَكَرَ الرَّجُلَ يُطِيلُ السَّفَرَ أَشْعَثَ أَغْبَرَ يَمُدُّ يَدَيْهِ إِلَى السَّمَاءِ: يَا رَبِّ يَا رَبِّ وَمَطْعَمُهُ حَرَامٌ وَمَشْرَبُهُ حَرَامٌ وَمَلْبَسُهُ حَرَامٌ وَغُذِّيَ بِالْحَرَامِ فَأَنَّى يُسْتَجَابُ لِذَلِكَ؟ ". رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2760. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह पाक है और वह सिर्फ पाक चीज़ ही कबूल फरमाता है, और अल्लाह तआला ने जिस चीज़ के मुतल्लिक रसूलो को हुक्म फ़रमाया, इसी चीज़ के मुतल्लिक मोमिनो को हुक्म फ़रमाया तो फ़रमाया: “रसूलो की जमाअत! पाकिज़ा चीज़े खाओ और नेक अमल करो”, और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: “ईमान वालो! हमने जो पाकिज़ा चीज़े तुम्हें अता की है उनमें से खाओ”, फिर आप ने इस आदमी का ज़िक्र फ़रमाया जो दूर दराज़ का सफ़र तेअ करता है परान्दा बाल और खाक आलूद है, आसमान की तरफ अपने हाथ फेलाए दुआ करता है, रब जी! रब जी! हालाँकि उस का खाना हराम, उस का पीना हराम, उस का लिबास हराम और इसे हराम की गिज़ा दी गई तो ऐसे शख़्स की दुआ कैसे कबूल हो?” (मुस्लिम)

رواه مسلم (65 / 1015)، (2346)

٢٧٦١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يُبَالِي الْمَرْءُ مَا أَخَذَ مِنْهُ أَمِنَ الْحَلَالِ أم من الْحَرَام» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

2761. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “लोगो पर एक ऐसा ज़माने

आएगा के आदमी इस बात की परवाह नहीं करेगा के वह हलाल तरीके से कमा रहा है या हराम तरीके से”| (बुखारी)

رواه البخاری (2059)

٢٧٦٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْحَلَالُ بَيِّنٌ وَالْحَرَامُ بَيِّنٌ وَبَيْنَهُمَا مُشْتَبِهَاتٌ لَا يَعْلَمُهُنَّ كَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ فَمَنِ اتَّقَى الشبهاب استبرأَ لدِينهِ وعِرْضِهِ ومَنْ وقَعَ فِي الشبُّهَاتِ وَقَعَ فِي الْحَرَامِ كَالرَّاعِي يَرْعَى حَوْلَ الْحِمَى يُوشِكُ أَنْ يَرْتَعَ فِيهِ أَلَا وَإِنَّ لِكُلِّ مَلِكٍ حِمًى أَلَا وَإِنَّ حِمَى اللَّهِ مَحَارِمُهُ أَلَا وَإِنَّ فِي الْجَسَدِ مُضْغَةً إِذَا صَلَحَتْ صَلَحَ الْجَسَدُ كُلُّهُ وَإِذَا فَسَدَتْ فَسَدَ الْجَسَدُ كُله أَلَا وَهِيَ الْقلب»

2762. नौमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हलाल वाज़ेह है और हराम भी वाज़ेह है, जबकि इन दोनों के दरमियान कुछ चीज़े मुश्तबाह है, बहोत से लोग उन्हें नहीं जानते, पस जो शख़्स शुबहात से बच गया तो उस ने अपने दीन और अपने इज्ज़त को बचा लिया, और जो शख़्स शुबहात में मुब्तिला हो गया तो वह हराम में मुब्तिला हो गया, जैसे वह चरवाहा जो चराहगाह के आस पास चराता है, तो करीब है के वह इस (चराहगाह) में चराएगा, सुन लो! बेशक हर बादशाह की एक चराहगाह होती है, सुन लो! बेशक अल्लाह की चराहगाह उसकी हराम करदा चीज़े है, सुन लो! जिस्म में एक लोथड़ा है, जब वह दुरुस्त हो जाता है तो सारा जिस्म दुरुस्त हो जाता है, और जब वह ख़राब हो जाता है तो सारा जिस्म ख़राब हो जाता है, याद रखो वह दील है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (52) و مسلم (107 / 1599)، (4094)

٢٧٦٣ - (صَحِيح) وَعَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ثَمَنُ الْكَلْبِ خَبِيثٌ وَمَهْرُ الْبَغِيِّ خَبِيثٌ وَكَسْبُ الْحَجَّامِ خَبِيثٌ» . رَوَاهُ مُسلم

2763. राफीअ बिन ख़दीज रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कुत्ते की कीमत, ज़ानिया की उजरत और पछने (हिजामा) लगाने वाले की कमाई खबीस है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (41 / 1568)، (4012)

٢٧٦٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ وَمَهْرِ الْبَغِيِّ وَحُلْوَانِ الْكَاهِنِ

2764. अबू मसउद अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने कुत्ते की कीमत, ज़ानिया की

उजरत और काहिन की मीठा (यानी नियाज़) से मना फ़रमाया है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2237) و مسلم (39 / 1567)، (4009)

٢٧٦٥ - (صَحِيح) وَعَن أبي حجيفة أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ ثَمَنِ الدَّمِ وَثَمَنِ الْكَلْبِ وَكَسْبِ الْبَغِيِّ وَلَعَنَ آكِلَ الرِّبَا وَمُوكِلَهُ وَالْوَاشِمَةَ وَالْمُسْتَوْشِمَةَ وَالْمُصَوِّرَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2765. अबू जुहैफा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने खून की कीमत, कुत्ते की कीमत और ज़ानिया की कमाई से मना फ़रमाया, और सूद खाने वाले, खिलाने वाले, जिस्म गुन्दने वाली और गुन्द्वाने वाली और मुस्वर पर लानत फरमाई| (बुखारी)

رواه البخاری (5962)

٢٧٦٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ عَامَ الْفَتْحِ وَهُوَ بِمَكَّةَ: «إِنَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ حَرَّمَ بَيْعَ الْخَمْرِ وَالْمَيْتَةِ وَالْخِنْزِيرِ وَالْأَصْنَامِ» . فَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ شُحُومَ الْمَيْتَةِ؟ فَإِنَّهُ تُطْلَى بِهَا السُّفُنُ وَيُدْهَنُ بِهَا الْجُلُودُ وَيَسْتَصْبِحُ بِهَا النَّاسُ؟ فَقَالَ: «لَا هُوَ حَرَامٌ» . ثُمَّ قَالَ عِنْدَ ذَلِكَ: «قَاتَلَ اللَّهُ [ص:٨٤ الْيَهُودَ إِنَّ اللَّهَ لَمَّا حَرَّمَ شُحُومَهَا أَجْمَلُوهُ ثُمَّ بَاعُوهُ فَأَكَلُوا ثَمَنَهُ»

2766. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने फतह मक्का के साल रसूलुल्लाह ﷺ को मक्का में फरमाते हुए सुना: "बेशक अल्लाह और उस के रसूल ने शराब, मुरदार, खिंजिर और बुतों की बेअ को हराम करार दिया है", अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! मुरदार की चरबी के बारे में बताइए, क्योंकि उस के ज़रिए कश्तियों को रोगन किया जाता है, खाले चिकनी की जाती है, और लोगों से चिरागो में जला कर रोशनी हासिल करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "नहीं, वह हराम है" फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह यहूद को गारत करे क्योंकि अल्लाह ने जब उसकी चरबी हराम करार दी तो उन्होंने पिघला कर बेचा और फिर उसकी कीमत खाई"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2236) و مسلم (71 / 1581)، (4048)

٢٧٦٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم قَالَ: «قَاتَلَ اللَّهُ الْيَهُودَ حُرِّمَتْ عَلَيْهِمُ الشُّحُومُ فجملوها فَبَاعُوهَا»

2767. उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह यहूद को गारत करे इन पर (मुर्दार की) चरबी हराम की गई तो उन्होंने इसे पिघला कर फरोख्त किया"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2223) و مسلم (72 / 1582)، (4050)

٢٧٦٨ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ وَالسِّنَّوْرِ. رَوَاهُ مُسلم

2768. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने कुत्ते और बिल्ली की कीमत से मना फ़रमाया है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (42 / 1569)، (4015)

٢٧٦٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: حَجَمَ أَبُو طَيْبَةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَمِرَ لَهُ بِصَاعٍ مِنْ تَمْرٍ وَأَمَرَ أَهْلَهُ أَنْ يُخَفِّفُوا عَنْهُ مِنْ خراجه

2769. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू तैबा ने रसूलुल्लाह ﷺ को पछने (हिजामा) लगाए तो आप ने इसे एक साअ (तकरीबन अढ़ाई किलो) खजूरे देने और उस के मालिको को उस के खज़ाज में तखफिफ करने का हुक्म फ़रमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2102) و مسلم (62 / 1577)، (4038)

بَاب الْكسْب وَطلب الْحَلَال • रिज्क ए हलाल कमाने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٧٧٠ - (صَحِيح) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَطْيَبَ مَا أَكَلْتُمْ مِنْ كَسْبِكُمْ وَإِنَّ أَوْلَادَكُمْ مِنْ كَسْبِكُمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ. وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ وَالدَّارِمِيِّ: «إِنَّ أَطْيَبَ مَا أَكَلَ الرَّجُلُ مِنْ كَسْبِهِ وَإِنَّ وَلَده من كَسبه»

2770. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अपने कमाई से खाना सबसे पाकिज़ा खाना है, और तुम्हारी औलाद भी तुम्हारी कमाई में से है”| अबू दावुद और दारमी की रिवायत में है: “आदमी का अपने कमाई से खाना सबसे पाकिज़ा खाना है, और बेशक उसकी औलाद भी उसकी कमाई है‘‘ (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (1358 وقال : حسن غريب) و النسائی (7 / 240241 ح 44544457) و ابن ماجه (2290) و ابوداؤد (3528) و الدارمی (2 / 247 ح 2540)

٢٧٧١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا [ص:٨٤] يكْسب عبد مَال حرَام فتيصدق مِنْهُ فَيُقْبَلُ مِنْهُ وَلَا يُنْفِقُ مِنْهُ فَيُبَارَكُ لَهُ فِيهِ وَلَا يَتْرُكُهُ خَلْفَ ظَهْرِهِ إِلَّا كَانَ زَادَهُ إِلَى النَّارِ. إِنَّ اللَّهَ لَا يَمْحُو

السَّيِّئَ بِالسَّيِّئِ وَلَكِنْ يَمْحُو السَّيِّئَ بِالْحَسَنِ إِنَّ الْخَبِيثَ لَا يَمْحُو الْخَبِيثَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَكَذَا فِي شرح السّنة

2771. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर कोई शख़्स हराम माल खाता है और फिर उस से सदका करता है तो वह उसकी तरफ से कबूल नहीं होता, और वह उस में से जो खर्च करता है तो उस में बरकत नहीं की जाती, और अगर वह इसे तर्क में छोड़ जाता है तो वह उस के लिए आग में इज़ाफे का बाईस बनता है, क्योंकि अल्लाह बुराई के ज़रिए बुराई ख़तम नहीं करता बल्कि वह नेकी के ज़रिए बुराई ख़तम करता है और खबीस, खबीस को ख़तम नहीं करता”| अहमद शरह सुन्ना मैं भी इसी तरह है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (1 / 387 ح 3672 مطولاً) و البغوی فی شرح السنة (8 / 10 ح 2030) * فيه الصباح بن محمد : ضعيف و لبعضه شاهد ضعيف عند الحاكم (1 / 334 ، 335) و صححه و وافقه الذهبی!

٢٧٧٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ لَحْمٌ نبَتَ منَ السُّحْتِ وكلُّ لحمٍ نبَتَ منَ السُّحْتِ كَانَتِ النَّارُ أَوْلَى بِهِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالدَّارِمِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

2772. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हराम से परवरिश पाने वाला गोश्त, जन्नत में दाखिल नहीं होगा और हराम से परवरिश पाने वाला हर गोश्त जहन्नम की आग ही उसकी ज़्यादा हक़दार है”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (3 / 321 ح 14494 ، 3 / 399 ح 15358 و سنده حسن) و الدارمی (2 / 318 ح 2779) و البيهقی فی شعب الايمان (5761) * و للحديث طرق كثيرة ، انظر تنقيح الرواة (1 / 154)

٢٧٧٣ - (صَحِيح) وَعَنِ الْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: حَفِظْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «دَعْ مَا يَرِيبُكَ إِلَى مَا لَا يَرِيبُكَ فَإِنَّ الصِّدْقَ طُمَأْنِينَةٌ وَإِنَّ الْكَذِبَ رِيبَةٌ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَرَوَى الدَّارِمِيُّ الْفَصْل الأول

2773. हसन बिन अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से याद किया, “जो चीज़ तुझे शक में डाल देर से छोड़ दे और शक से पाक चीज़ इख़्तियार कर, क्योंकि सच्चाई में इत्मिनान है और झूठ में शक है”| अहमद तिरमिज़ी, नसई, और इमाम दारमी ने इस हदीस का पहला हिस्सा रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (1 / 200 ح 1727 مختصرًا) و الترمذی (2518 وقال : صحيح) و النسائی (8 / 327328 ح 5714) و الدارمی (2 / 245 ح 2535) [و صححه ابن حبان (الموارد : 512) و الحاكم (2 / 13) و وافقه الذهبی]

٢٧٧٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن وابِصَةَ بن مَعْبدٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَا وَابِصَةُ جِئْتَ تَسْأَلُ عَنِ الْبِرِّ وَالْإِثْمِ؟» قُلْتُ: نَعَمْ قَالَ: فَجَمَعَ أَصَابِعَهُ فَضَرَبَ صَدْرَهُ وَقَالَ: «اسْتَفْتِ نَفْسَكَ اسْتَفْتِ قَلْبَكَ» ثَلَاثًا «الْبِرُّ مَا اطْمَأَنَّتْ إِلَيْهِ

النَّفْسُ وَاطْمَأَنَّ إِلَيْهِ الْقَلْبُ وَالْإِثْمُ مَا حَاكَ فِي النَّفْسِ وَتَرَدَّدَ فِي الصَّدْرِ وَإِنْ أَفْتَاكَ النَّاسُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ والدارمي

2774. वाबिसत बिन मअबद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वाबिसत! तुम नेकी और गुनाह की तारीफ़ पूछने आए हो?” मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने अपने उंगलिया इकट्ठी की और मेरे सिने पर हाथ मारते हुए फ़रमाया: “अपने नफ्स से पूछो, अपने दिल से पूछो”, आप ﷺ ने तीन बार फ़रमाया और फिर फ़रमाया: “नेकी वह है जिस पर नफ्स और दिल मुतमईन हो जाए, जबकि गुनाह यह है कि वह तेरे नफ्स में खटके और दिल में तरदुद पैदा करे अगरचे लोग तुझे फतवा दें”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (4 / 228 ح 18164 ، 18169) و الدارمى (2 / 245246 ح 2536) * فيه ايوب بن عبدالله بن مكرز : مستور ، و الزبير ابو عبدالسلام لم يسمع هذا الحديث من ايوب بن عبدالله بن مكرز ، و فى سماع ايوب من و ابصة نظر ، و ابو عبدالسلام مجهول الحال ، و ثقه ابن حبان وحده ، فالسند ضعيف مظلم بطوله ، و حديث مسلم (2553) يغنى عنه

٢٧٧٥ - (حسن) وَعَن عطيَّةَ السَّعدِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَبْلُغُ [ص:٨٤ الْعَبْدُ أَنْ يَكُونَ مِنَ المتَّقينَ حَتَّى يدَعَ مَا لَا بَأْسَ بِهِ حَذَرًا لِمَا بِهِ بأسٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وابنُ مَاجَه

2775. अतिया सअदी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बंदा हकीकी मुत्तकी तब बनता है के वह काबिल ए एतराज़ चीजों को छोड़ने के साथ साथ ऐसी चीज़े भी छोड़े जिन पर कोई एतराज़ नहीं|” (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (2451 وقال : حسن غريب) و ابن ماجه (4215) [و صححه الحاكم (4 / 319) و وافقه الذهبى] * ابو عقيل عبدالله بن عقيل الثقفى حسن الحديث و ثقه الجمهور و جرح الجوز جانى فيه نظر ، لم اجده فى كتابه و الراوى عنه الدولابى وهو ضعيف

٢٧٧٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْخَمْرِ عَشَرَةً: عَاصِرَهَا وَمُعْتَصِرَهَا وَشَارِبَهَا وَحَامِلَهَا وَالْمَحْمُولَةَ إِلَيْهِ وَسَاقِيَهَا وَبَائِعَهَا وَآكِلَ ثَمَنِهَا وَالْمُشْتَرِي لَهَا وَالْمُشْتَرَى لَهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

2776. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने शराब से मुतल्लिक दस किस्म के लोगों पर लानत फरमाई: उस के बनाने वाले, उस के बनवाने वाले, उस के पीने वाले, इसे उठाने वाले, जिसके पास ले जाया जाए, उस के पिलाने वाले, इसे बेचने वाले, उसकी कीमत खाने वाले, इसे खरीदने वाले और जिसके लिए खरीदी जाए| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (1295 وقال : غريب) و ابن ماجه (3381)

٢٧٧٧ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَعَنَ اللَّهُ الْخَمْرَ وَشَارِبَهَا وَسَاقِيَهَا وَبَائِعَهَا وَمُبْتَاعَهَا وَعَاصِرَهَا وَمُعْتَصِرَهَا وَحَامِلَهَا وَالْمَحْمُولَةَ إِلَيْهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

2777. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने शराब पर उस के पीने वाले, उस के पिलाने वाले, उस के बेचने वाले, उस के खरीदने वाले, उस के बनाने वाले, जिसके लिए बनाई जाए उस पर, इसे लेकर जाने वाले और जिसके लिए लेकर जाई जाए, इन सब पर लानत फ़रमाई”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3674) و ابن ماجه (3380)

٢٧٧٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن محيصة أَنَّهُ اسْتَأْذَنَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فِي أَجْرَةِ الْحَجَّامِ فَنَهَاهُ فَلَمْ يَزَلْ يَسْتَأْذِنُهُ حَتَّى قَالَ: «اعْلِفْهُ نَاضِحَكَ وَأَطْعِمْهُ رَقِيقَكَ» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

2778. मुहय्यिस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने पछने (हिजामा) लगाने वाली की उजरत के बारे में रसूलुल्लाह ﷺ से इजाज़त तलब की तो आप ने उन्हें मना फरमा दिया, वह आप से मुसलसल इजाज़त तलब करते रहे हत्ता के आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे अपने ऊंट को खिला दिया कर और इसे गुलाम को खिला दिया कर”| (सहीह)

صحيح ، رواه مالک (2 / 974 ح 1889) و ابوداؤد (3422) و ابن ماجه (2166)

٢٧٧٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم عَنْ ثَمَنِ الْكَلْبِ وكسْبِ الزَّمارةِ. رَوَاهُ فِي شرح السّنة

2779. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने कुत्ते की कीमत और गाने वाली (गुलुकार या ज़ानिया) की कमाई से मना फ़रमाया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوی فی شرح السنة (8 / 23 ح 2038) [و البيهقى 6 / 126] * هشام بن حسان مدلس و عنعن

٢٧٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا تَبِيعُوا الْقَيْنَاتِ وَلَا تَشْتَرُوهُنَّ وَلَا تُعَلِّمُوهُنَّ وَثَمَنُهُنَّ حَرَامٌ وَفِي مِثْلِ هَذَا نَزَلَتْ: (وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْتَرِي لهْوَ الحَدِيثِ)»» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَعلي بن [ص:٨٤ يزيد الرواي يُضَعَّفُ فِي الْحَدِيثِ»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ جَابِرٍ: نُهِيَ عَن أكل أهر فِي بَابِ»» مَا يَحِلُّ أَكْلُهُ " إِنْ شَاءَ الله تَعَالَى

2780. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ना गाने वालियो को बेचो न उन्हें खरीदो और ना ही उन्हें तरबियत दो और उनकी कीमत हराम है, ऐसे मसाइल के मुतल्लिक यह हुक्म नाज़िल हुआ: “बाज़ लोग ऐसे भी है जो बेहूदा बाते खरीदते है”| अहमद तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है और अली बिन यज़ीद रावी हदीस में जईफ है| # और हम जाबिर

से मरवी हदीस आप ﷺ ने बिल्ली खाने से मना फ़रमाया इंशाअल्लाह तआला बाब ما يحل اكله में ज़िक्र करेंगे. (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف [جذا] ، رواه الترمذی (1282) و ابن ماجه (2168) [علی بن یزید : ضعیف جدًا] 0 حدیث جابر یاتی (4128)

بَاب الْكسْب وَطلب الْحَلَال • रिज्क ए हलाल कमाने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٧٨١ - (ضَعِيف) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «طَلَبُ كَسْبِ الْحَلَالِ فَرِيضَةٌ بَعْدَ الْفَرِيضَةِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

2781. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "फ़राइज़ के बाद कसब हलाल की तलाश भी फ़र्ज़ है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جذا ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (8741) [و الطبرانی فی الکبیر (10 / 90 ح 9993)] * فیه عباد بن کثیر : متروک

٢٧٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سُئِلَ عَنْ أَجْرَةِ كِتَابَةِ الْمُصْحَفِ فَقَالَ: لَا بَأْسَ إِنَّمَا هُمْ مُصَوِّرُونَ وَإِنَّهُمْ إِنَّمَا يَأْكُلُونَ من عمل أَيْدِيهِم. رَوَاهُ رزين

2782. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उन से कुरआन ए करीम की किताबत की उजरत के बारे में मसअला दरियाफ्त किया गया तो उन्होंने ने फ़रमाया: कोई हरज नहीं वह तो (हुरूफ़ के) मुस्वर हैं, और वह अपने हाथो की कमाई ही खाते है| (मझे नहीं मिली रवाह रजिन.)

لم اجده ، رواه رزین (لم اجده) [و روی ابن ابی داود فی المصاحف (ص 147) عن الاعمش قال :'' حدیث عن سعید بن جبیر قال : سئل ابن عباس عن کتاب المصاحف فقال : انما ھو مصور '' و سندہ ضعیف ، و رواہ ایضًا (ص 199) و سندہ ضعیف ، الاعمش لم یسمعہ من سعید بن جبیر عن ابن عباس رضی اللہ عنہ]

٢٧٨٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ قَالَ: قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَيُّ الْكَسْبِ أَطْيَبُ؟ قَالَ: «عَمَلُ الرَّجُلِ بِيَدِهِ وَكُلُّ بَيْعٍ مَبْرُورٍ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ

2783. राफीअ बिन ख़दीज रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! कौन सा कसब

सबसे पाकिज़ा है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “आदमी का अपने हाथ से काम करना और हर अच्छी तिजारत”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ احمد (4 / 141 ح 17397 نسخۃ محققۃ) * المسعودی اختلط و للحدیث و شواھد ضعیفۃ عند الحاکم (2 / 10) و الطبرانی (الاوسط : 2161) و غیرھما

٢٧٨٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي بكرِ بنِ أبي مريمَ قَالَ: كَانَتْ لِمِقْدَامِ بْنِ مَعْدِي كَرِبَ جَارِيَةٌ تَبِيعُ اللَّبَنَ وَيَقْبِضُ الْمِقْدَامُ ثَمَنَهُ فَقِيلَ لَهُ: سُبْحَانَ اللَّهِ أَتَبِيعُ اللَّبَنَ؟ وَتَقْبِضُ الثَّمَنَ؟ فَقَالَ نَعَمْ وَمَا بَأْسٌ بِذَلِكَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَيَأْتِيَنَّ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يَنْفَعُ فِيهِ إِلَّا الدِّينَارُ وَالدِّرْهَم» . رَوَاهُ أَحْمد

2784. अबू बक्र बिन अबू मरियम बयान करते हैं, मिक्दाम बिन मअदीकरीब रदियल्लाहु अन्हु की एक लौंडी दूध बेचा करती थी और मिक्दाम रदियल्लाहु अन्हु उसकी कीमत वसूल करते थे, उन से कहा गया (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह क्या यह दूध बेचती है और तुम उसकी कीमत वसूल करते हो? उन्होंने कहा: जी हाँ उस में कोई हरज नहीं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “लोगो पर ऐसा वक़्त भी आएगा जिस में दिरहम व दीनार ही उन्हें फ़ायदा पहुंचाएगा”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ احمد (4 / 133 ح 17333) * فیہ ابوبکر بن ابی مریم ضعیف مختلط

٢٧٨٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ نَافِعٍ قَالَ: كُنْتُ أَجَهِّزُ إِلَى الشَّامِ وَإِلَى مِصْرَ فَجَهَّزْتُ إِلَى الْعِرَاقِ فَأَتَيْتُ إِلَى أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ عَائِشَةَ فَقُلْتُ لَهَا: يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ كُنْتُ أُجَهِّزُ إِلَى الشَّامِ فَجَهَّزْتُ إِلَى العراقِ فقالتْ: لَا تفعلْ مالكَ وَلِمَتْجَرِكَ؟ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِذَا سَبَّبَ اللَّهُ لِأَحَدِكُمْ رِزْقًا مِنْ وَجْهٍ فَلَا يَدَعْهُ حَتَّى يَتَغَيَّرَ لَهُ أَوْ يَتَنَكَّرَ لَهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ مَاجَه

2785. नाफेअ बयान करते हैं, मैं शाम और मस्वर की तरफ सामान ए तिजारत भेजा करता था, चुनांचे अब मैंने इराक की तरफ सामान भेजने की तय्यारी की तो में उम्मुल मुअमिनिन आइशा रदियल्लाहु अन्हा के पास आया और उन से अर्ज़ किया, उम्मुल मुअमिनिन में शाम की तरफ सामान ए तिजारत भेजा करता था, लेकिन अब मैंने इराक के लिए तय्यारी की है, उन्होंने ने फ़रमाया: ऐसे न करो तुम्हारे तिजारती मरकज़ को क्या हुआ? क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जब अल्लाह तआला किसी शख़्स की रोज़ी का कोई सबब बनाए तो वह इसे न छोड़े जब तक के (अदमे मुनाफे की वजह से) उस में तबदीली रवानुमा न हो या इसे उस में नुकसान होने लगे”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ احمد (6 / 246 ح 26620) * فیہ الزبیر بن عبید : مجھول و نافع مجھول الحال وھو غیر مولی ابن عمر و مخلد بن الضحاک و ثقہ ابن حبان وحدہ

٢٧٨٦ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ لِأَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ غُلَامٌ يُخْرِّجُ لَهُ الْخَرَاجَ فَكَانَ أَبُو بَكْرٍ يَأْكُلُ مِنْ خَرَاجِهِ فَجَاءَ يَوْمًا بشيءٍ فأكلَ مِنْهُ أَبُو بَكْرٍ فَقَالَ لَهُ الْغُلَامُ: تَدْرِي مَا هَذَا؟ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: وَمَا هُوَ؟ قَالَ: كُنْتُ تَكَهَّنْتُ لِإِنْسَانٍ فِي الْجَاهِلِيَّةِ وَمَا أُحسِنُ الكهَانةَ إِلاَّ أَنِّي خدَعتُه فلقِيَنِي فَأَعْطَانِي بِذَلِكَ فَهَذَا الَّذِي أَكَلْتَ مِنْهُ قَالَتْ: فَأَدْخَلَ أَبُو بَكْرٍ يَدَهُ فَقَاءَ كُلَّ شَيْءٍ فِي بَطْنه. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2786. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु का एक गुलाम था, वह आप को खराज दिया करता था, और अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु उस के खराज में से खाया करते थे, एक रोज़ वह कुछ लेकर आया तो अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने उस में से खाया, गुलाम ने आप से कहा: क्या आप जानते हैं की यह क्या था? तो अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: वह क्या था? उस ने कहा में जाहिलियत में एक इंसान के लिए कहानत किया करता था, हालाँकि मुझे कहानत नहीं आती थी, मैंने तो उसे सिर्फ धोका ही दिया था, वह मुझे मिला है तो उस ने मुझे यह अता किया है, जिस में से आप ने खाया है, वह बयान करती हैं, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने अपना हाथ मुहं में डाला और पेट की हर चीज़ कै कर डाली| (बुखारी)

رواه البخاری (3842)

٢٧٨٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ جَسَدٌ غُذِّيَ بالحرَامِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

2787. अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हराम से परवरिश पाने वाला जिस्म जन्नत में नहीं जाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواہ البیھقی فی شعب الایمان (5759) [و ابو یعلی 1 / 85 ح 84 و اللفظ له ، و الحاکم (4 / 127 ح 7164)] * فیه عبدالواحد بن زید البصری الزاھد ضعیف ضعیفه الجمھور و فرقد بن یعقوب السبخی ضعیف ضعیفه الجمھور و لم اقف علی السند الحسن لھذا الحدیث

٢٧٨٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ أَنَّهُ قَالَ: شَرِبَ عمر بن الْخطاب لَبَنًا وَأَعْجَبَهُ وَقَالَ لِلَّذِي سَقَاهُ: مَنْ أَيْنَ لَكَ هَذَا اللَّبَنُ؟ فَأَخْبَرَهُ أَنَّهُ وَرَدَ عَلَى مَاءٍ قَدْ سَمَّاهُ فَإِذَا نَعَمٌ مِنْ نَعَمِ الصَّدَقَةِ وَهُمْ يَسْقُونَ فَحَلَبُوا لِي مِنْ أَلْبَانِهَا فَجَعَلْتُهُ فِي سِقَائِيَ وَهُو هَذَا فَأَدْخَلَ عُمَرُ يَدَهُ فاسْتقاءَه. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

2788. ज़ैद बिन असलम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने दूध पिया और उन्हें खुशगवार महसूस हुआ, जिस शख़्स ने दूध पिलाया था उस से दरियाफ्त किया, के तूने यह दूध कहाँ से हासिल किया? उस ने बताया के वह एक तालाब पर गया जिस का उस ने नाम लिया, वहां ज़कात के ऊंट थे

जिन को वह पानी पिला रहे थे, उन्होंने मुझे भी उनका दूध दोह कर दिया, मैंने दूध को अपने मश्किज़े में डाल लिया यह वह दूध था| यह सुन कर हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अपना हाथ मुंह में डाला और दूध की कै कर दी| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیھقی فی شعب الایمان (5771 ، نسخة محققة : 5387) [من طریق مالک عن زید بن اسلم به و ھذا فی الموطا (1 / 269)] * السند منقطع ، زید لم یدرک عمر رضی اللہ عنه

٢٧٨٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابنِ عُمَرَ قَالَ: مَنِ اشْتَرَى ثَوْبًا بِعَشَرَةِ دَرَاهِمَ وَفِيهِ دِرْهَمٌ حَرَامٌ لَمْ يَقْبَلِ اللَّهُ لَهُ صَلَاةً مَا دَامَ عَلَيْهِ ثُمَّ أَدْخَلَ أُصْبَعَيْهِ فِي أُذُنَيْهِ وَقَالَ صُمَّتَا إِنْ لَمْ يَكُنِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَمِعْتُهُ يَقُولُهُ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ. وَقَالَ: إِسْنَادُهُ ضَعِيف

2789. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जो शख़्स दस दिरहम में कोई कपड़ा ख़रीदे और उनमें एक दिरहम हराम का हो तो जब तक वह कपड़ा उस पर रहता है तो अल्लाह तआला उसकी नमाज़ कबूल नहीं करता, फिर उन्होंने अपने दो उंगलिया अपने दोनों कानों में डालकर फ़रमाया: अगर मैंने यह हदीस रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए न सुनी हो तो यह दोनों (कान) बहरे हो जाए| अहमद बयहकी की शौबुल ईमान और फ़रमाया उसकी इसनाद जईफ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (2 / 98 ح 5732) و البیھقی فی شعب الایمان (6114 ، نسخة محققة : 5707 بسند مختلف و قال البیھقی :'' وھو اسناد ضعیف '' و سند ضعیف لعلل) * فیه بقیة (مدلس) عن الولید الحمصی عن عثمان بن زفر عن ھاشم (لا اعرفه انظر تعجیل المنفعة ص 428) عن ابن عمر به

بَاب المساهلة فِي الْمُعَامَلَات • मुआमले करने में नरमी करने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٢٧٩٠ - (صَحِيح) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:«» رَحِمَ اللَّهُ رَجُلًا سَمْحًا إِذَا بَاعَ وَإِذَا اشْتَرَى وَإِذَا اقْتَضَى«» رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2790. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह इस आदमी पर रहम फरमाए जो बेचते खरीदते और तकाज़ा करते वक़्त नरमी और कुशादा दिली का मुज़ाहिरा करे”| (बुखारी)

رواه البخاری (2076)

٢٧٩١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ رَجُلًا كَانَ فِيمَنْ قَبْلَكُمْ أَتَاهُ الْمَلَكُ لِيَقْبِضَ رُوحَهُ فَقيل لَهُ: هَل علمت مَنْ خَيْرٍ؟ قَالَ: مَا أَعْلَمُ. قِيلَ لَهُ انْظُرْ قَالَ: مَا أَعْلَمُ شَيْئًا غَيْرَ أَنِّي كُنْتُ أُبَايِعُ النَّاسَ فِي الدُّنْيَا وَأُجَازِيهِمْ فَأُنْظِرُ الْمُوسِرَ وَأَتَجَاوَزُ عَنِ الْمُعْسِرِ فَأَدْخَلَهُ اللَّهُ الْجَنَّةَ "

2791. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम से पहले ज़माने में एक आदमी था फ़रिश्ता उसकी रूह कब्ज़ करने के लिए उस के पास आया तो उन से पूछा गया क्या तुम ने कोई नेकी का काम किया है उस ने कहा मुझे पता नहीं? फिर इसे कहा गया देख लो उस ने कहा मुझे उस के अलाव, तो कोई और बात याद नहीं? की मैं दुनिया में लोगों के साथ बेअ किया करता था और मैं उन से अच्छे अंदाज़ से तकाज़ा किया करता था में माल दार शख़्स को मुहलत दे देता था जबकि तंगदस्त को वैसे ही मुआफ़ कर दिया करता था अल्लाह तआला ने इसे जन्नत में दाखिल फरमा दीया”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاري (3451) و مسلم (26 / 1560)، (3993)

٢٧٩٢ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ نَحْوَهُ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ وَأَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ «فَقَالَ اللَّهُ أَنَا أَحَق بذا مِنْك تجاوزوا عَن عَبدِي»

2792. और सहीह मुस्लिम की रिवायत भी इसी तरह है जो के उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु और अबू मसउद अंसारी रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है “ मैं उस का तुझ से ज़्यादा हक़दार हो (फरिश्तो!) मेरे बंदे से दरगुज़र फरमाओ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (29 / 1560)، (3996)

٢٧٩٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «إِيَّاكُمْ وَكَثْرَةَ الْحَلِفِ فِي الْبَيْعِ فَإِنَّهُ يُنَفِّقُ ثُمَّ يَمْحَقُ» . رَوَاهُ مُسلم

2793. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेअ करते वक़्त ज़्यादा किस्मे उठाने से बचो क्योंकि उस से तिजारत को फरोअ तो मिलता है लेकिन फिर वह ख़तम हो जाती है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (132 / 1607)، (4126)

٢٧٩٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الْحلف منفقعة للسلعة ممحقة للبركة»

2794. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “क़सम सोदे को

रिवाज देती है लेकिन बरकत ख़तम हो जाती है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2087) و مسلم (131 / 1606)، (4125)

٢٧٩٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: [ص:٨٥] «ثَلَاثَةٌ لَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ» . قَالَ أَبُو ذَرٍّ: خَابُوا وَخَسِرُوا مَنْ هُمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «الْمُسْبِلُ وَالْمَنَّانُ وَالْمُنَفِّقُ سِلْعَتَهُ بِالْحلف الْكَاذِب» . رَوَاهُ مُسلم

2795. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु नबी से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह रोज़ ए कियामत तीन किस्म के लोगों से ना कलाम फरमाएगा न (नज़रे रहमत से) उन की तरफ देखेगा और ना ही उनका तज़किरा फरमाएगा और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब होगा”, अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, वह तो नाकारा नामुराद हो गए अल्लाह के रसूल! वह कौन लोग है फ़रमाया: “आज़ार लटकाने वाला इहसान जतलाने वाला और झूठी क़सम से अपना सौदा बेचने वाला”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (171 / 106)، (293)

بَاب المساهلة فِي الْمُعَامَلَات • मुआमले करने में नरमी करने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٧٩٦ - (ضَعِيف) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «التَّاجِرُ الصَّدُوقُ الْأَمِينُ معَ النَّبِيِّينَ والصِّدِّيقينَ والشهداءِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالدَّارَقُطْنِيّ.

2796. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सच्चा अमानत दार ताज़ीर अंबिया अस) , सिद्दिकिन और शुहदा के साथ होगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1209 وقال : صحیح) و الدارقطنی (3 / 7) [و الدارمی (2 / 247 ح 2542)] * ابو حمزه میمون ضعیف و فی السند علل أخری و الحدیث من مراسیل الحسن البصری رحمه الله ، و قال الدارمی رحمه الله :'' ابو حمزه ھذا ھو صاحب ابراھیم وھو میمون الاعور''

٢٧٩٧ - (ضَعِيف) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنِ ابْنِ عُمَرَ. وَقَالَ التِّرْمِذِيّ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

2797. इब्ने माजा ने इसे इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है और तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस

ग़रीब है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواہ ابن ماجه (2139) * كُلْثُومُ بن جوشن : ضعيف ، كما قال البوصيرى و غيره

٢٧٩٨ - (صَحِيح) وَعَن قيس بن أبي غَرزَة قَالَ: كُنَّا نُسَمَّى فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم السَّمَاسِرَةَ فَمَرَّ بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَمَّانَا بِاسْمٍ هُوَ أَحْسَنُ مِنْهُ فَقَالَ: «يَا مَعْشَرَ التُّجَّارِ إِنَّ الْبَيْعَ يَحْضُرُهُ اللَّغْوُ وَالْحَلِفُ فَشُوبُوهُ بِالصَّدَقَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

2798. कैस बिन अबी गरज़त रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में हम ताज़िरो को “ब्रोकर” दलाल कहा जाता था रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास से गुज़रे तो आप ﷺ ने हमें एक ऐसा नाम दिया जो के उस से बेहतर था आप ﷺ ने फ़रमाया: “ताज़िरो की जमाअत बेअ करते वक़्त लग्व बाते हो जाती है और किस्मे भी होती है लिहाज़ा तुम उस के साथ सदका को शामिल कर लिया करो”| (सहीह)

صحيح ، رواہ ابوداؤد (3326) و الترمذی (1208 وقال : حسن صحيح) و النسائی (7 / 1415 ح 3892) و ابن ماجه (2145)

٢٧٩٩ - (ضَعِيف) وَعَن عبيد بنِ رفاعةَ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «التُّجَّارُ يُحْشَرُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فُجَّارًا إِلَّا مَنِ اتَّقَى وَبَرَّ وَصَدَقَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْن مَاجَه

2799. उबैद बिन रफाअ अपने वालिद से और वह नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ताज़िरो को फ़ाजिरो के ज़िमरे में जमा किया जाएगा बजुज़ उस के जिस ने तकवा इख़्तियार किया नेकी की और सदका किया” | (सहीह)

صحيح ، رواہ الترمذی (1210) و ابن ماجه (2146) و الدارمی (2 / 163 ح 2541)

٢٨٠٠ - وَرَوَى الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ. عَنِ الْبَرَاءِ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ»» وَهَذَا الْبَابُ خَالٍ مِنَ الْفَصْلِ الثَّالِثِ

2800. इमाम बय्हकी ने बराअ रदियल्लाहु अन्हु से शौबुल ईमान में रिवायत किया है और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

صحيح ، رواہ البيهقى فى شعب الايمان (4848 ، نسخة محققة : 4507 و سنده حسن) و الحديث السابق (2799) شاهد له

وَهَذَا الْبَابُ خَالٍ مِنَ الْفَصْلِ الثَّالِثِ

यह बाब तीसरी फस्ल से खाली है

इख़्तियार का बयान • بَاب الْخِيَار

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٢٨٠١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمُتَبَايِعَانِ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا بِالْخِيَارِ عَلَى صَاحِبِهِ مَا لَمْ يَتَّفَرَقَا إِلَّا بيع الْخِيَار»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: «إِذَا تَبَايَعَ الْمُتَبَايِعَانِ فَكُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا بِالْخِيَارِ مِنْ بَيْعِهِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا أَوْ يَكُونَ بَيْعُهُمَا عَنْ خِيَارٍ فَإِذَا كَانَ بيعُهما عَن خيارٍ فقد وَجَبَ»» وَفِى رِوَايَةٍ لِلتِّرْمِذِيِّ: «الْبَيِّعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا أَوْ يَخْتَارَا» . وَفِي الْمُتَّفَقِ عَلَيْهِ: " أَوْ يَقُولَ أَحَدُهُمَا لِصَاحِبِهِ: اخْتَرْ «بَدَلَ» أَوْ يختارا "

2801. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेअ खियार के अलावा खरीदो फरोख्त करने वाले में से हर एक को जुदा न होने से पहले तक (बैअ को पुख्ता करने या फस्ख करने का) इख़्तियार है”| बुखारी, मुस्लिम, और मुस्लिम की एक रिवायत में है, “ जब दो बेअ करने वाले बेअ करते हैं तो उन्हें एक दूसरे से जुदा होने से पहले तक अपने बेअ के बारे में इख़्तियार होता है, या फिर उनकी बेअ खियार हो, पस जब उनकी बेअ इख़्तियार होगी तो वह वाजिब हो जाएगी”| और तिरमिज़ी की एक रिवायत में है: “खरीदो फरोख्त करने वालो को एक दूसरे से जुदा होने से पहले तक इख़्तियार बाकी रहता है, या फिर उन्होंने बेअ खियार की हो और सहीहैन की रिवायत में है : ’ या इन दोनों में से कोई एक अपने साथी से कहे के तुझे इख़्तियार हासिल है, (يختارا) के बजाए (إختَر) “ इख़्तियार की शर्त कर” का लफ्ज़ है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (2107) و مسلم (4345 / 1531)، (3853 و 3856) و الترمذی (245 [و سندہ صحیح])

٢٨٠٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن حَكِيم بن حزَام قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْبَيِّعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا فَإِنْ صَدَقَا وَبَيَّنَا بُورِكَ لَهُمَا فِي بَيْعِهِمَا وَإِنْ كَتَمَا وَكَذَبَا مُحِقَتْ بَرَكَةُ بَيْعِهِمَا»

2802. हकिम बिन हिज़ाम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “खरीदो फरोख्त करने वालो को जुदा होने तक इख़्तियार बाकी रहता है, अगर उन्होंने सच बोला और (माल के बारे में) वज़ाहत की तो इन दोनों के लिए उनकी बेअ में बरकत डाल दी जाती है और अगर उन्होंने (माल के नुक्स वगैरा को) छुपाया और झूठ बोला तो उनकी बेअ से बरकत ख़तम हो जाती है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (2079) و مسلم (47 / 1532)، (3858)

٢٨٠٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنِّي أُخْدَعُ فِي الْبُيُوعِ فَقَالَ: " إِذَا بَايَعْتَ فَقُلْ: لَا خلابة " فَكَانَ الرجل يَقُوله

2803. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक आदमी ने नबी ﷺ से फ़रमाया बेअ में मेरे साथ धोका हो जाता है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम बेअ करो तो कहा करो धोका फरेब नहीं चलेगा”, वह आदमी यह अल्फाज़ कहा करता था| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاري (2117) و مسلم (48 / 1533)، (3860)

بَاب الْخِيَار • इख़्तियार का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٨٠٤ - (حسن) عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْبَيِّعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا إِلَّا أَنْ يَكُونَ صَفْقَةَ خِيَارٍ وَلَا يَحِلُّ لَهُ أَنْ يُفَارِقَ صَاحِبَهُ خَشْيَةَ أَنْ يَسْتَقِيلَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

2804. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “खरीदो फरोख्त करने वालो को जुदा होने से पहले तक इख़्तियार होता है इल्ला यह कि बेअ इख़्तियार हो और उस के लिए इस अंदेशे के पेशे नज़र अपने साथी से जुदा होना जाईज़ नहीं के वह इस बैअ की वापसी का मुतालबा न करे”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1247 وقال : حسن) و ابوداؤد (3456) و النسائی (7 / 251252 ح 4488)

٢٨٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَتَفَرَّقَنَّ اثْنَانِ إِلَّا عن تراضٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2805. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “दोनों बाहमी रज़ामंदी के बगैर एक दूसरे से जुदा न हो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3458)

इख़्तियार का बयान • بَاب الْخِيَار

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٢٨٠٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم خيَّرَ أعرابيّاً بَعْدَ الْبَيْعِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيب

2806. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने एक आराबी को बेअ के बाद इख़्तियार दीया| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस सहीह ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (1249) [و صححه الحاكم على شرط مسلم (2 / 49) و وافقه الذهبى] * ابو الزبير مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة

सूद का बयान • بَاب الرِّبَا

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٨٠٧ - (صَحِيح) عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: لَعَنَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَكَلَ الرِّبَا وَمُوَكِلَهُ وَكَاتِبَهُ وَشَاهِدَيْهِ وَقَالَ: «هُمْ سَوَاءٌ» . رَوَاهُ مُسلم

2807. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने सूद खाने वाले, खिलाने वाले, लिखने वाले और उसकी गवाही देने वालों पर लानत फरमाई और फ़रमाया: “(गुनाह में) वह सब बराबर है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (106 / 1598)، (4093)

٢٨٠٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الذَّهَبُ بِالذَّهَبِ وَالْفِضَّةُ بِالْفِضَّةِ وَالْبُرُّ بِالْبُرِّ وَالشَّعِيرُ بِالشَّعِيرِ وَالتَّمْرُ بِالتَّمْرِ وَالْملح بالملح مثلا بِمثل سَوَاء بسواءٍ يَدًا بِيَدٍ فَإِذَا اخْتَلَفَتْ هَذِهِ الْأَصْنَافُ فَبِيعُوا كَيْفَ شِئْتُمْ إِذَا كَانَ يَدًا بِيَدٍ» . رَوَاهُ مُسلم

2808. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सोने के बदले सोना, चांदी के बदले चाँदी, गंदुम के बदले गंदुम, जौ के बदले जौ, खजूर के बदले खजूर, और नमक के बदले नमक, एक दूसरे के बराबर हो और नकद बा नकद हो, जब यह किस्म बदल जाए तो फिर अगर वह नकद हो तो जैसे चाहो

बेचो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (81 / 1587)، (4063)

٢٨٠٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الذَّهَبُ بِالذَّهَبِ وَالْفِضَّةُ بِالْفِضَّةِ وَالْبُرُّ بِالْبُرِّ وَالشَّعِيرُ بِالشَّعِيرِ وَالتَّمْرُ بِالتَّمْرِ وَالْمِلْحُ بِالْمِلْحِ مِثْلًا بِمِثْلٍ يَدًا بِيَدٍ فَمَنْ زَادَ أَوِ اسْتَزَادَ فَقَدْ أَرْبَى الْآخِذُ وَالْمُعْطِي فِيهِ سَوَاءٌ» . رَوَاهُ مُسلم

2809. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सोना सोने के बदले, चाँदी चाँदी के बदले, गंदुम गंदुम के बदले, जौ जौ के बदले, खजूर खजूर के बदले और नमक नमक के बदले बराबर बराबर और नकद बा नकद हो, जिस शख़्स ने ज़्यादा दीया या जिस ने ज़्यादा का मुतालबा किया तो उस ने सुदी काम किया, और उस में लेने वाला और देने वाला बराबर है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (82 / 1584)، (4064)

٢٨١٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَبِيعُوا الذَّهَبَ بِالذَّهَبِ إِلَّا مِثْلًا بِمِثْلٍ وَلَا تُشِفُّوا بَعْضَهَا عَلَى بَعْضٍ وَلَا تَبِيعُوا الْوَرِقَ [ص:٨٥ بِالْوَرِقِ إِلَّا مِثْلًا بِمِثْلٍ وَلَا تُشِفُّوا بَعْضَهَا عَلَى بَعْضٍ وَلَا تبِيعُوا مِنْهَا غَائِبا بناجز»»» وَفِي رِوَايَةٍ: «لَا تَبِيعُوا الذَّهَبَ بِالذَّهَبِ وَلَا الْوَرق بالورق إِلَّا وزنا بِوَزْنٍ»

2810. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सोने को सोने के बराबर ही फरोख्त करो, एक दूसरे में कमी बेसी न करो, चाँदी को चाँदी के बराबर ही फरोख्त करो और एक दूसरे में कमी बेसी न करो, और उस में से गैर मौजूद चीज़ को मौजूद चीज़ के बदले फरोख्त न करो”| और एक दूसरी रिवायत में है: “सोने को सोने के बदले और चाँदी को चाँदी के बदले में बाहम बराबर वज़न में फरोख्त करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2177) و مسلم (7577 / 1584)، (4054 و 4055)

٢٨١١ - (صَحِيح) وَعَنْ مَعْمَرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: كُنْتُ أسمع رَسُول صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الطَّعَامُ بِالطَّعَامِ مِثْلاً بمثْلٍ» . رَوَاهُ مُسلم

2811. मअमर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुन रहा था: “अनाज, अनाज (गल्ला गल्ले) के बराबर बराबर हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (93 / 1592)، (4080)

٢٨١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الذَّهَبُ بِالذَّهَبِ رِبًا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ وَالْوَرِقُ بِالْوَرِقِ رِبًا إِلَّا هَاءَ وَهَاءَ وَالْبُرُّ بالبُرِّ إِلَّا هَاء وهاء وَالشعِير بِالشَّعِيرِ رَبًّا هَاءَ وَهَاءَ وَالتَّمْرُ بِالتَّمْرِ رِبًا إِلَّا هَاءَ وهاء»

2812. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सोने की सोने के बदले, चाँदी की चाँदी के बदले, गंदुम की गंदुम के बदले, जौ की जौ के बदले, और खजूर की खजूर के बदले उधार बेअ करना सूद है लेकिन अगर दस्त बदस्त हो तो जाईज़ है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2134) و مسلم (79 / 1586)، (4059)

٢٨١٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ وَأَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم اسْتَعْمَلَ رَجُلًا عَلَى خَيْبَرَ فَجَاءَهُ بِتَمْرٍ جَنِيبٍ فَقَالَ: «أَكُلُّ تَمْرِ خَيْبَرَ هَكَذَا؟» قَالَ: لَا وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا لَنَأْخُذُ الصَّاعَ مِنْ هَذَا بِالصَّاعَيْنِ وَالصَّاعَيْنِ بِالثَّلَاثِ فَقَالَ: «لَا تَفْعَلْ بِعِ الْجَمْعَ بِالدَّرَاهِمِ ثُمَّ ابْتَعْ بِالدَّرَاهِمِ جَنِيبًا» . وَقَالَ: «فِي الْمِيزَانِ مِثْلَ ذَلِكَ»

2813. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने एक आदमी को खैबर पर आमला मुकर्रर किया, तो वह अच्छी किस्म की खजूरे लेकर आप के पास आया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या खैबर की सारी खजूरे इसी तरह की हैं?” उस ने अर्ज़ किया, नहीं, अल्लाह की क़सम! अल्लाह के रसूल! हम दो साअ के बदले यह एक साअ और तीन साअ के बदले दो साअ ले लेते है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ऐसे न किया करो, सारी खजूरे दिरहमो के हिसाब से बेच दिया करो और फिर दिरहमो के बदले उम्दा किस्म की खजूरे खरीद लिया करो”, और फ़रमाया: “वज़न की जाने वाली तमाम चीजों मैं भी यही उसूल है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2201) و مسلم (95 / 1593)، (4082)

٢٨١٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: جَاءَ بِلَالٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِتَمْرٍ بَرْنِيٍّ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مِنْ أَيْنَ هَذَا؟» قَالَ: كَانَ عِنْدَنَا تَمْرٌ رَدِيءٌ [ص:٨٥ فَبِعْتُ مِنْهُ صَاعَيْنِ بِصَاعٍ فَقَالَ: «أَوَّهْ عَيْنُ الرِّبَا عَيْنُ الرِّبَا لَا تَفْعَلْ وَلَكِنْ إِذَا أَرَدْتَ أَنْ تَشْتَرِيَ فَبِعِ التَّمرَ بِبَيْعٍ آخر ثمَّ اشْتَرِ بِهِ»

2814. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, बिलाल रदियल्लाहु अन्हु बरनी (बड़ी उम्दा किस्म की) खजूरे लेकर नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो नबी ﷺ ने उन से पूछा: “ये कहाँ से लाए हो?” उन्होंने अर्ज़ किया, हमारे पास नक्मी खजूरे थी मैंने उन के दो साअ के अवज़ उनका एक साअ लिया है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अफ़सोस! अफ़सोस! यह तो बिलकुल सूद है, बिलकुल सूद है, ऐसे न करो, बल्कि जब तुम खरीदना चाहो तो

उन खजूरो को फरोख्त करो, फिर इस कीमत के अवज़ उन्हें खरीदो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2312) و مسلم (96 / 1594)، (4083)

٢٨١٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: جَاءَ عَبْدٌ فَبَايَعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْهِجْرَةِ وَلَمْ يَشْعُرْ أَنَّهُ عَبْدٌ فَجَاءَ سَيِّدُهُ يُرِيدُهُ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «بِعْنِيهِ» فَاشْتَرَاهُ بِعَبْدَيْنِ أَسْوَدَيْنِ وَلَمْ يُبَايِعْ أَحَدًا بَعْدَهُ حَتَّى يَسْأَلَهُ أَعَبْدٌ هُوَ أَوْ حُرٌّ. رَوَاهُ مُسلم

2815. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक गुलाम आया तो उस ने हिजरत पर नबी ﷺ की बैत की, जबकि आप ﷺ को मालुम न था के वह गुलाम है, इतने में उस का मालिक आया और उस का मुतालबा करने लगा तो नबी ﷺ ने इसे फ़रमाया: “इसे मुझे बेच दो”, आप ﷺ ने दो हब्शी गुलामो के बदले में उसे खरीद लिया उस के बाद आप किसी से बैत नहीं देते थे हत्ता के आप उस से पूछ लेते क्या यह गुलाम है या आज़ाद ?”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (123 / 1602)، (4113)

٢٨١٦ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ الصُّبْرَةِ مِنَ التَّمْرِ لَا يُعْلَمُ مَكِيلَتُهَا بِالْكَيْلِ الْمُسَمَّى مِنَ التَّمْرِ. رَوَاهُ مُسلم

2816. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मालुम शुदा वज़न खजूर के बदले में गैर मालुम वज़न खजूरो के ढेर की बैअ से मना फ़रमाया है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (42 / 1530)، (3851)

٢٨١٧ - (صَحِيح) وَعَنْ فَضَالَةَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ قَالَ: اشْتَرَيْتُ يَوْمَ خَيْبَرَ قِلَادَةً بِاثْنَيْ عَشَرَ دِينَارًا فِيهَا ذَهَبٌ وَخَرَزٌ فَفَصَّلْتُهَا فَوَجَدْتُ فِيهَا أَكْثَرَ مِنَ اثْنَيْ عَشَرَ دِينَارًا فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «لَا تُبَاعُ حَتَّى تُفَصَّلَ» . رَوَاهُ مُسلم

2817. फुज़ालह बिन अबी उबैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने खैबर के दिन बारह दीनार के बदले में एक हार खरीदा जिस में सोना और नग थे, मैंने इस हार को खोल दिया तो मैंने उस में बारह दीनार से ज़्यादा सोना पाया, मैंने नबी ﷺ से उस का तज़किरह किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस को न बेचा जाए हत्ता के उसे खोल कर अलग कर लिया जाए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (90 / 1591)، (4076)

सूद का बयान • بَاب الرِّبَا

दूसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّانِي

٢٨١٨ - (ضَعِيف) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَيَأْتِيَنَّ عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يَبْقَى أَحَدٌ إِلَّا أَكَلَ الرِّبَا فَإِنْ لَمْ يَأْكُلْهُ أَصَابَهُ مِنْ بُخَارِهِ» . وَيُرْوَى مِنْ «غُبَارِهِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

2818. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “लोगो पर ऐसा वक़्त भी आएगा के तमाम लोग सूद खाने वाले होंगे, अगर कोई उसे नहीं थी खाएगा तो उस का असर उस तक पहुँच जाएगा”| और इस तरह भी मरवी है के “ उस का गुबार पहुँच जाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 494 ح 10415) و ابوداؤد (3331) و النسائی (7 / 243 ح 4460) و ابن ماجه (2278) * الحسن البصری مدلس و لم یصرح بالسماع و الجمهور علی انه لم یسمع من ابی هريرة رضی الله عنه

٢٨١٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَبِيعُوا الذَّهَبَ بِالذَّهَبِ وَلَا الْوَرِقَ بِالْوَرِقِ وَلَا الْبُرَّ بِالْبُرِّ وَلَا الشَّعِيرَ بِالشَّعِيرِ وَلَا التَّمْرَ بِالتَّمْرِ وَلَا الْمِلْحَ بِالْمِلْحِ إِلَّا سَوَاءً بِسَوَاءٍ عَيْنًا بِعَيْنٍ يَدًا بِيَدٍ وَلَكِنْ بِيعُوا الذَّهَبَ بِالْوَرِقِ وَالْوَرِقَ بِالذَّهَبِ وَالْبُرَّ بِالشَّعِيرِ وَالشَّعِيرَ بِالْبُرِّ وَالتَّمْرَ بِالْمِلْحِ وَالْمِلْحَ بِالتَّمْرِ يَدًا بِيَدٍ كَيْفَ شِئْتُمْ» . رَوَاهُ الشَّافِعِي

2819. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सोने को सोने के बदले में, चाँदी को चाँदी, गंदुम को गंदुम, जौ को जो, खजूर को खजूर और नमक को नमक के बदले में फरोख्त न करो, हाँ यह कि वह बराबर बराबर, नकद बा नकद और दस्त बदस्त हो, और सोने को चांदी के बदले में, चांदी को सोने के बदले में, गंदुम को जौ के बदले में, जौ को गंदुम के बदले में, खजूर को नमक और नमक को खजूर के बदले में दस्त बदस्त जैसे तुम चाहो बेचो”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الشافعی فی الام (3 / 15) [و مسلم فی صحیحه : 1587]

٢٨٢٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُئِلَ عَنْ شِرَاءِ التَّمْرِ بِالرُّطَبِ فَقَالَ: «أَيَنْقُصُ الرُّطَبُ إِذَا يَبِسَ؟» فَقَالَ: نَعَمْ فَنَهَاهُ عَنْ ذَلِكَ. رَوَاهُ مَالِكٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه

2820. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना आप से ताज़ा खजूरो के बदले में छुवारे खरीदने के बारे में सवाल किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब खजूर खुश्क हो जाती है

तो क्या वह (वज़न में) कम हो जाती है?” तो इस शख़्स ने अर्ज़ की, जी हाँ! आप ﷺ ने इसे उस से मना फ़रमाया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه مالك (2 / 624 ح 1353) و الترمذی (1225 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (3359) و النسائی (7 / 268269 ح 4549) و ابن ماجه (2264)

٢٨٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ مُرْسَلًا: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نهى عَن بَيْعِ اللَّحْمِ بِالْحَيَوَانِ قَالَ سَعِيدٌ: كَانَ مِنْ مَيْسِرِ أَهْلِ الْجَاهِلِيَّةِ. رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ

2821. सईद बिन मुसय्यब से मुरसल रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने हैवान के बदले गोश्त की बैअ से मना फ़रमाया है, सईद रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह जाहिलियत के जूए की एक सूरत थी| (सहीह)

صحیح ، رواه البغوی فی شرح السنة (8 / 76 ح 2073) [و مالک فی الموطا 2 / 655 ح 1396] * السند ضعیف لا رساله و له شواھد عند ابی داود (3356) و الترمذی (1237) و غیرھما

٢٨٢٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ بَيْعِ الْحَيَوَانِ بِالْحَيَوَانِ نَسِيئَةً. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

2822. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने हैवान के बदले हैवान की उधार बैअ से मना फ़रमाया| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (1237 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (3356) و النسائی (7 / 292 ح 4624) و ابن ماجه (2270) و الدارمی (2 / 254 ح 2567)

٢٨٢٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَهُ أَن يُجهِّزَ جَيْشًا فنفدتِ الإبلُ فأمرَهُ أَن يَأْخُذَ عَلَى قَلَائِصِ الصَّدَقَةِ فَكَانَ يَأْخُذُ الْبَعِيرَ بِالْبَعِيرَيْنِ إِلَى إِبِلِ الصَّدَقَةِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

2823. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने उन्हें लश्कर तैयार करने का हुक्म फ़रमाया तो ऊंट कम पड़ गए, फिर आप ने उन्हें हुक्म फ़रमाया के वह सदका की जवान साल ऊंटनियो के वादा पर ऊंट ले लें, चुनांचे वह एक ऊंट दो ऊंटनियो के बदले सदका के ऊंट आने तक के वादा पर ले रहे थे| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواه ابوداؤد (3357) * عمرو بن حریش مجھول الحال و للحدیث شواھد ضعیفة

بَاب الرِّبَا • सूद का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٨٢٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الرِّبَا فِي النَّسِيئَةِ» . وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: «لَا رِبًا فِيمَا كَانَ يدا بيد»

2824. उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “सूद उधार में है”, और एक दूसरी रिवायत में है: “जो नकद बा नकद हो उस में सूद नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (21782179) و مسلم (101103 / 1596)، (4088 و 4090)

٢٨٢٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حَنْظَلَةَ غَسِيلِ الْمَلَائِكَةِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «دِرْهَمُ رِبًا يَأْكُلُهُ الرَّجُلُ وَهُوَ يَعْلَمُ أَشَدُّ مِنْ سِتَّةٍ وَثَلَاثِينَ زَنْيَةً» . رَوَاهُ أَحْمَدُ والدراقطني»» وَرَوَى الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ وَزَادَ: وَقَالَ: «مَنْ نَبَتَ لَحْمُهُ مِنَ السُّحت فَالنَّار أولى بِهِ»

2825. गसील अल मलाइक हंजल रदियल्लाहु अन्हु के बेटे अब्दुल्लाह बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स जानते हुए एक दिरहम सूद खाता है तो यह छत्तीस मर्तबा ज़िना करने से भी ज़्यादा संगीन है”| और इमाम बयहकी ने शौबुल ईमान में इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है और यह इज़ाफा नकल करते हुए फ़रमाया: “जिस शख़्स का गोश्त हराम से तैयार हुआ हो तो आग उसकी ज़्यादा हक़दार है”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ احمد (5 / 225 ح 2230) و الدارقطنی (3 / 16 ح 2819) * سندہ ضعیف ، فی سماع ابن ابی ملیکۃ من عبداللہ بن حنظلۃ لھذا الحدیث نظر و للحدیث علۃ أخری و شواھد ضعیفۃ عند ابن ماجہ (2274) و غیرہ** البیھقی فی شعب الایمان (5518) عن ابن عباس و سندہ ضعیف جدًا ، فیہ محمد بن الفضل بن جابر ثنا یحیی بن اسماعیل بن عباس عن حسین بن قیس الرجی [متروک] عن عکرمۃ عن ابن عباس الخ

٢٨٢٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الرِّبَا سَبْعُونَ جُزْءًا أيسرها أَن الرجل أمه»

2826. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सूद के (गुनाह के) सत्तर हिस्से है, उनमें से कम तर गुनाह यह है कि आदमी अपने माल से निकाह (जिमाअ) करे”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ ابن ماجہ (2274) و البیھقی فی شعب الایمان (5521) * ابو معشر نجیح بن عبد الرحمن السندی ضعیف و للحدیث شواھد ضعیفۃ عند ابن الجارود (647) و الحاکم (2 / 37) و غیرھما

٢٨٢٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنِ الرِّبَا وَإِنْ كَثُرَ فَإِنَّ عاقبتَه تصيرُ إِلى قُلٍّ: رَوَاهُمَا ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ. وَرَوَى أَحْمد الْأَخير

2827. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक सूद ख्वाह कितना भी ज़्यादा हो जाए लेकिन उस का अंजाम फकर ज़िल्लत है”, इन दोनों रिवायत को इब्ने माजा और बयहकी ने शौबुल ईमान में जबकि आखिरी हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابن ماجه (2279) و البيهقى فى شعب الايمان (5511) و احمد (1 / 395 ح 3754 ، 1 / 424 ح 4026) [و صححه الحاكم (2 / 37) و وافقه الذهبى]

٢٨٢٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَتَيْتُ لَيْلَةَ أَسْرِيَ بِي عَلَى قَوْمٍ بُطُونُهُمْ كَالْبُيُوتِ فِيهَا الْحَيَّاتُ تُرَى مِنْ خَارِجِ بُطُونِهِمْ فَقُلْتُ: مَنْ هَؤُلَاءِ يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ: هَؤُلَاءِ أَكَلَةُ الرِّبَا ". رَوَاهُ أَحْمد وَابْن مَاجَه

2828. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेअराज की रात में एक कौम के पास आया जिन के पेट घरो की तरह थे जिन में सांप उन के पेट के बाहर से नज़र रहे थे, मैंने कहा: जिब्राइल! यह कोन लोग है? फ़रमाया: “सूद खोर”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 353 ح 8625) و ابن ماجه (2273) * فيه ابو الصلت : مجهول و على بن زيد بن جدعان : ضعيف

٢٨٢٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم لعن آكِلَ الرِّبَا وَمُوَكِلَهُ وَكَاتِبَهُ وَمَانِعَ الصَّدَقَةِ وَكَانَ ينْهَى عَن النوح. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

2829. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को सुना आप ने सूद खाने वाले, खिलाने वाले, उस के लिखने वाले और ज़कात न देने वाले पर लानत फरमाई, और आप ﷺ नौहा करने से मना किया करते थे| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه النسائى (8 / 147 ح 5106) * الحارث الاعور ضعيف و لبعض الحديث شواهد ضعيفة

٢٨٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ إِنَّ آخِرَ مَا نَزَلَتْ آيَةُ الرِّبَا وَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُبِضَ وَلَمْ يُفَسِّرْهَا لَنَا فَدَعُوا الرِّبَا وَالرِّيبَةَ. رَوَاهُ ابْن مَاجَه والدارمي

2830. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के आखिरी आयत सूद के बारे में नाज़िल हुई और

रसूलुल्लाह ﷺ फौत हो गए लेकिन आप ने उसकी हमें तफसीर नहीं बताई थी, तुम सूद और मिसल सूद तर्क कर दो| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (2276) و الدارمی (1 / 5152 ح 131) * قتادة مدلس و عنعن و للحدیث طریق آخر عند الاسماعیلی کما فی مسند الفاروق لابن کثیر (2 / 571) و سنده ضعیف

٢٨٣١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أَقْرَضَ أَحَدُكُمْ قَرْضًا فَأَهْدَي إِلَيْهِ أَوْ حَمَلَهُ عَلَى الدَّابَّةِ فَلَا يَرْكَبْهُ وَلَا يَقْبَلْهَا إِلَّا أَنْ يَكُونَ جَرَى بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ قَبْلَ ذَلِكَ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

2831. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई किसी को क़र्ज़ दे, फिर वह (मकरूज़) शख़्स उस को कोई तोहफा दे या इसे सवारी पर बिठाए तो वह उस पर सवार हो न इस तोहफे को कबूल करे, अलबत्ता अगर उन के दरमियान यह काम तहाईफ का तबादला वगैरा पहले से ही जारी हो तो जाईज़ है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (2432) و البیهقی فی شعب الایمان (5532) * عتبة : لیس شامیًا و روایة اسماعیل بن عیاش عن غیر الشامیین ضعیفة

٢٨٣٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا أَقْرَضَ الرَّجُلُ الرَّجُلَ فَلَا يَأْخُذْ هَدِيَّةً» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ فِي تَارِيخِهِ هَكَذَا فِي الْمُنْتَقى

2832. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जब आदमी, आदमी को क़र्ज़ दे तो फिर वह हदिया कबूल न करे”, इमाम बुखारी ने इसे तारीख में रिवायत किया, और अल मुन्तकी मैं भी इसी तरह है| (मझे नहीं मिली बुखारी की तारीख,)

لم اجده ، رواه البخاری (فی تاریخه (لم اجده و لعله لا اصل له) و ذکره فی منتقی الاخبار (2970)

٢٨٣٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي بُرْدَةَ بْنِ أَبِي مُوسَى قَالَ: قدمت الْمَدِينَة فَلَقِيت عبد الله بن سلا م فَقَالَ: إِنَّك بِأَرْض فِيهَا الرِّبَا فَاش إِذا كَانَ لَكَ عَلَى رَجُلٍ حَقٌّ فَأَهْدَى إِلَيْكَ حِمْلَ تَبْنٍ أَو حِملَ شعيرِ أَو حَبْلَ قَتٍّ فَلَا تَأْخُذْهُ فَإِنَّهُ رِبًا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

2833. अबू बुरदह बिन अबू मूसा बयान करते हैं, मैं मदीना गया तो मैंने अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु से मुलाकात की तो उन्होंने ने फ़रमाया: तुम ऐसे मुल्क में रहते हो जहाँ सूद आम है, जब तुम्हारा किसी आदमी पर कोई हक़ हो और वह घास का एक गत्ता दे या जौ या जंगली हरे चारे का एक गठ्ता बतौर हदिया भेजे तो उसे न लो क्योंकि वह सूद है| (बुखारी)

رواه البخاری (3814)

ममनू तिजारत का बयान • بَابُ الْمَنْهِيِّ عَنْهَا مِنَ الْبُيُوعِ

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٢٨٣٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْمُزَابَنَةِ: أَنْ يَبِيعَ تمر حَائِطِهِ إِنْ كَانَ نَخْلًا بِتَمْرٍ كَيْلًا وَإِنْ كَانَ كرْماً أَنْ يَبِيعَه زبيبِ كَيْلًا أَوْ كَانَ وَعِنْدَ مُسْلِمٍ وَإِنْ كَانَ زَرْعًا أَنْ يَبِيعَهُ بِكَيْلِ طَعَامٍ نَهَى عَنْ ذلكَ كُله. مُتَّفق عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ لَهُمَا: نَهَى عَنِ الْمُزَابَنَةِ قَالَ: " والمُزابنَة: أَنْ يُبَاعَ مَا فِي رُؤوسِ النَّخلِ بتمْرٍ بكيلٍ مُسمَّىً إِنْ زادَ فعلي وَإِن نقص فعلي)

2834. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने “मुज़ाबन” से मना फ़रमाया है, और वह यह है कि वह अपने बाग़ का फल, अगर खजूर हो तो मालुम शुदा मिकदार खुश्क खजूर के साथ, अगर अंगूर हो तो इसे किशमिश के साथ नाप कर, और मुस्लिम में है अगर खेती हो तो अनाज के साथ नाप कर बेचना, आप ﷺ ने इन सब सूरतो से मना फ़रमाया है| बुखारी, मुस्लिम, और सहीहैन ही की रिवायत में है, आप ﷺ ने मुज़ाबन मना फ़रमाया है, और मुज़ाबन यह है कि खजूरो के दरख्त पर लगे हुए फल को खुश्क खजूरो के साथ मकरुर पैमाने से बेचना, और यूँ कहे के अगर ज़्यादा हो तो मेरा और अगर कम हो तो में दूंगा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2205) و مسلم (75 / 1542)، (3897)

٢٨٣٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْمُخَابَرَةِ وَالْمُحَاقَلَةِ وَالْمُزَابَنَةِ وَالْمُحَاقَلَةُ: أَنْ يَبِيعَ الرَّجُلُ الزَّرْعَ بِمِائَةِ فَرَقٍ حِنطةً والمزابنةُ: أَنْ يبيعَ التمْرَ فِي رؤوسِ النَّخْلِ بِمِائَةِ فَرَقٍ وَالْمُخَابَرَةُ: كِرَاءُ الْأَرْضِ بِالثُّلُثِ والرُّبُعِ. رَوَاهُ مُسلم

2835. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुखाबराह, मुहाकलह और मुज़ाबनह मना फ़रमाया है, मुहाकलह यह है कि आदमी सौ फरक (वज़न का पैमाना) गंदुम के बदले खेती फरोख्त कर दे, मुज़ाबनह यह है कि वह सौ फरक खजूर के बदले में खजूरो को दरख्तों पर फरोख्त कर दे, और मुखाबराह यह है कि ज़मीन को तिहाई या चोथाई हिस्से पर काश्त करने को दिया जाए| (मुस्लिम)

رواه مسلم (8184 / 1536)، (3908 و 3912)

٢٨٣٦ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْمُحَاقَلَةِ وَالْمُزَابَنَةِ وَالْمُخَابَرَةِ [ص:٨٦ وَالْمُعَاوَمَةِ وَعَنِ الثُّنْيَا وَرَخَّصَ فِي الْعَرَايَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2836. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुहाकलह, मुज़ाबनह, मुखाबराह बाग़ को

कई साल पर ठेके पर देने और इस्तिसना से मना किया है, अलबत्ता आप ﷺ ने अंदाज़ा लगाने की इजाज़त फरमाई| (मुस्लिम)

رواه مسلم (85 / 1536)، (3913)

٢٨٣٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَثْمَةَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَن بيعِ التمْر بالتمْرِ إِلَّا أَنَّهُ رَخَّصَ فِي الْعَرِيَّةِ أَنْ تُبَاعَ بِخَرْصِهَا تَمْرًا يَأْكُلُهَا أَهْلُهَا رُطَبًا

2837. सहल बिन अबी हशम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने खुश्क खजूर के बदले ताज़ा खजूर बेचने से मना फ़रमाया, अलबत्ता आप ने अंदाज़ा लगाने की इजाज़त दी, वह यह है कि उस को अंदाज़ा से खुश्क खजूरो के अवज़ बेच दिया जाए ताकि उस के मालिक ताज़ा खजूरे खा सके"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2191) و مسلم (67 / 1540)، (3887)

٢٨٣٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرْخَصَ فِي بَيْعِ الْعَرَايَا بِخَرْصِهَا مِنَ التَّمْرِ فِيمَا دُونَ خَمْسَة أوسق أَو خَمْسَة أوسق شكّ دَاوُد ابْن الْحصين

2838. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने पांच वुस्क या उस से कम खुश्क खजूर के अंदाज़ा से ताज़ा खजूरो को बेचने की इजाज़त फरमाई"| दावुद बिन हुसैन रावी को पांच या पांच से कम में शक हवा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2190) و مسلم (71 / 1541)، (3892)

٢٨٣٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ الثِّمَارِ حَتَّى يَبْدُوَ صَلَاحُهَا نَهَى الْبَائِعَ وَالْمُشْتَرِي. مُتَّفِقٌ عَلَيْهِ»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: نَهَى عَنْ بَيْعِ النَّخْلِ حَتَّى تَزْهُوَ وَعَنِ السنبل حَتَّى يبيض ويأمن العاهة

2839. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है रसूलुल्लाह ﷺ ने फलों की बैअ से मना फ़रमाया हत्ता के उनकी सलाहियत ज़ाहिर हो जाए, और आप ﷺ ने बाइअ और मुश्तरी दोनों को मना फ़रमाया| बुखारी, मुस्लिम, और मुस्लिम की रिवायत में है आप ﷺ ने खजूरो की बैअ से मना फ़रमाया हत्ता के वह सुर्ख हो जाए और आप ﷺ ने संबल (बालियों) की बैअ से मना फ़रमाया हत्ता के वह सफ़ेद हो जाए और आफत से बच जाए"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2194) و مسلم (49 / 1534 ، 50 / 1535)، (3862 و 3863)

٢٨٤٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَن بيع الثِّمَارِ حَتَّى تَزْهَى قِيلَ: وَمَا تَزْهَى؟ قَالَ:»» حَتَّى تخمر " وَقَالَ: «أَرَأَيْتَ إِذَا مَنَعَ اللَّهُ الثَّمَرَةَ بِمَ يَأْخُذ أحدكُم مَال أَخِيه؟»

2840. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फलों की बैअ से मना फ़रमाया हत्ता के “जहव” (पुख्ता) हो जाए”, अर्ज़ किया गया, “ जहव से क्या मुराद है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “हत्ता के वह सुर्ख हो जाए, और फ़रमाया: “मुझे बताओ अगर अल्लाह फल रोक ले तो फिर तुम में से कोई अपने मुसलमान भाई का माल किस चीज़ के अवज़ हासिल करोगा ?” (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2198) و مسلم (15 / 1555)، (3977)

٢٨٤١ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ السِّنِينَ وَأَمَرَ بوضْعِ الجوائحِ. رَوَاهُ مُسلم

2841. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने कई सालों की बैअ से मना फ़रमाया और आफत से होने वाले नुकसान को मन्हा करने का हुक्म फ़रमाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (101 / 1536)، (3930)

٢٨٤٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ بِعْتَ مِنْ أَخِيكَ ثَمَرًا فَأَصَابَتْهُ جَائِحَةٌ فَلَا يَحِلُّ لَكَ أَنْ تَأْخُذَ مِنْهُ شَيْئًا بِمَ تَأْخُذُ مَالَ أَخِيكَ بِغَيْرِ حقٍ؟» . رَوَاهُ مُسلم

2842. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर तुम अपने (किसी मुसलमान) भाई का फल फरोख्त करो और फिर उस पर कोई आफत आजाए तो तुम्हारे लिए उस से कुछ लेना हलाल नहीं, तुम अपने भाई का माल नाहक किसी चीज़ के बदले हासिल करोगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (14 / 1554)، (3975)

٢٨٤٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانُوا يَبْتَاعُونَ الطَّعَامَ فِي أَعلَى السُّوقِ فيبيعُونَه فِي مكانهِ فَنَهَاهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِهِ فِي مَكَانِهِ حَتَّى يَنْقِلُوهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَلم أَجِدهُ فِي الصَّحِيحَيْنِ

2843. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, लोग बाज़ार के ऊपरी हिस्से से अनाज खरीदते और इसे वहीँ फरोख्त कर दिया करते थे, लेकिन रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे इसी जगह पर फरोख्त करने से मना फरमा दीया हत्ता के वह इसे मुन्तकिल करे| अबू दावुद, मैंने इसे सहीहैन में नहीं पाया| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (3494) [و البخاری (2167) و مسلم (1527)، (3843)]

٢٨٤٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ ابْتَاعَ طَعَامًا فَلَا يَبِيعهُ حَتَّى يَسْتَوْفِيه»

2844. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स गल्ला खरीद ले तो वह इसे कब्ज़े में लेने से पहले फरोख्त न करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2126) و مسلم (32 / 1526)، (3840)

٢٨٤٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَفِى رِوَايَةِ ابْنِ عَبَّاسٍ: «حَتَّى يكْتالَه»

2845. और इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत में है: “हत्ता के वह इसे नाप ले”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2135) و مسلم (31 / 1525، (3839) و اللفظ له)

٢٨٤٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: أَمَّا الَّذِي نَهَى عَنْهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَهُوَ الطَّعَامُ أَنْ يُبَاعَ حَتَّى يُقْبَضَ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: وَلَا أَحْسِبُ كُلَّ شَيْءٍ إِلاَّ مثله

2846. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रही वह चीज़ जिस से नबी ﷺ ने मना फ़रमाया है के इसे फरोख्त न किया जाए हत्ता के उस पर कब्ज़े कर लिया जाए तो वह अनाज है, और इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: जबकि मेरा हर चीज़ के बारे में यही ख़याल है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2135) و مسلم 29 / 1525)، (3836)

٢٨٤٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " لَا تَلَقَّوُا الرُّكْبَانَ لِبَيْعٍ وَلَا يَبِعْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَيْعِ بَعْضٍ وَلَا تَنَاجَشُوا وَلَا يَبِعْ حَاضِرٌ لِبَادٍ وَلَا تُصَرُّوا الْإِبِلَ وَالْغَنَمَ فَمِنِ ابْتَاعَهَا بَعْدَ ذَلِكَ فَهُوَ بِخَيْرِ النَّظِرَيْنِ بَعْدَ أَنْ يحلبَها: إِنْ رَضِيَهَا أَمْسَكَهَا وَإِنْ سَخِطَهَا رَدَّهَا وَصَاعًا مِنْ تمر "»» وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: " مَنِ اشْتَرَى شَاةً مُصَرَّاةً فَهُوَ بِالْخِيَارِ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ: فَإِنْ رَدَّهَا رَدَّ مَعهَا صَاعا من طَعَام لَا سمراء "

2847. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेअ के लिए तिजारती काफले को (शहर से बाहर जा कर) न मिलो, कोई किसी की बेअ पर बेअ न करे, बिला इरादा खरीद, महज़ कीमत बढ़ाने के लिए बोली न दो, कोई शहरी, देहाती के लिए कोई माल फरोख्त न करे, ऊंटनी और बकरी का दूध न रोको, अगर कोई ऐसा जानवर खरीद लेता है तो दूध धोने के बाद इसे दोनों इख़्तियार हासिल हैं, अगर वह उस पर राज़ी हो तो इसे रख ले और अगर राज़ी न हो तो इसे वापस कर दे और एक साअ खजूर भी उस के साथ दे”| बुखारी, मुस्लिम, और मुस्लिम की रिवायत में है: “जो शख़्स ऐसी बकरी ख़रीदे जिस का दूध रोका गया हो तो इसे तीन दिन तक इख़्तियार है, अगर वह इसे वापस करे तो उस के साथ एक साअ खाने का भी वापस करे लेकिन

वह गंदुम न हो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2150) و مسلم (11 / 1412)، (3832) [و الرواية الثانية (25 / 1524) و ذکرها البغوی فی مصابيح السنة (2080)]

٢٨٤٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَلَقَّوُا الْجَلَبَ فَمَنْ تَلَقَّاهُ فَاشْتَرَى مِنْهُ فَإِذَا أَتَى سَيِّدُهُ السُّوقَ فَهُوَ بالخَيارِ» . رَوَاهُ مُسلم

2848. अबू हुरैरा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम अनाज लाने वालो को रास्ते में जा कर न मिलो, जो शख़्स इसे मिले और उस से गल्ला खरीद ले, फिर उस का मालिक बाज़ार जाए तो उसे इख़्तियार हासिल है"| (चाहे तो सौदा रहने दे और चाहे तो फस्ख कर दे)| (मुस्लिम)

رواه مسلم (17 / 1519)، (3823)

٢٨٤٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَلَقَّوُا السِّلَعَ حَتَّى يُهْبَطَ بهَا إِلى السُّوق»

2849. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम समाने तिजारत को शहर से बाहर जा कर न मिलो हत्ता के इसे बाज़ार में उतार दिया जाए"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2165) و مسلم 14 / 1517)، (3819)

٢٨٥٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَبِعِ الرَّجُلُ عَلَى بَيْعِ أَخِيهِ وَلَا يَخْطِبْ عَلَى خِطْبَةِ أَخِيهِ إِلَّا أنْ يأذَنَ لَهُ» . رَوَاهُ مُسلم

2850. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "आदमी ना अपने भाई की बेअ पर बेअ करे न अपने भाई के पैगामे निकाह पर पैगामे निकाह भेजे मगर यह कि वह इसे इजाज़त दे दे"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (50 / 1412)، (3455)

٢٨٥١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَسُمِ الرَّجُلُ على سَوْمِ أخيهِ الْمُسلم» . رَوَاهُ مُسلم

2851. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आदमी अपने मुसलमान भाई की बेअ तेअ होने तक भाव न करे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (9 / 1515)، (3813)

٢٨٥٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يبِعْ حَاضِرٌ لِبَادٍ دَعُوا النَّاسَ يَرْزُقُ اللَّهُ بَعْضَهُمْ من بعض» . رَوَاهُ مُسلم

2852. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कोई शहरी, किसी देहाती का माल फरोख्त न करे, लोगों को (अपने हाल पर) छोड़ दो, अल्लाह तआला बाज़ के ज़रिए बाज़ को रीज़्क फराहम करता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (20 / 1522)، (3826)

٢٨٥٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ لِبْسَتَيْنِ وَعَنْ بَيْعَتَيْنِ: نَهَى عَنِ الْمُلَامَسَةِ والمُنابذَةِ فِي البيعِ وَالْمُلَامَسَةُ: لَمْسُ الرَّجُلِ ثَوْبَ الْآخَرِ بِيَدِهِ بِاللَّيْلِ أَو بالنَّهارِ وَلَا يقْلِبُه إِلَّا بِذَلِكَ وَالْمُنَابَذَةُ: أَنْ يَنْبِذَ الرَّجُلُ إِلَى الرَّجُلِ بِثَوْبِهِ وَيَنْبِذَ الْآخَرُ ثَوْبَهُ وَيَكُونُ ذَلِكَ بَيْعَهُمَا عَنْ غَيْرِ نَظَرٍ وَلَا تَرَاضٍ وَاللِّبْسَتَيْنِ: اشْتِمَالُ الصَّمَّاءِ وَالصَّمَّاءُ: أَنْ يَجْعَلَ ثَوْبَهُ عَلَى أَحَدِ عَاتِقَيْهِ فَيَبْدُوَ أَحَدُ شِقَّيْهِ لَيْسَ عَلَيْهِ ثَوْبٌ وَاللِّبْسَةُ الْأُخْرَى: احْتِبَاؤُهُ بِثَوْبِهِ وَهُوَ جَالِسٌ ليسَ على فرجه مِنْهُ شَيْء

2853. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने दो तरह के पहनावों और दो तरह की तिजारत से मना फ़रमाया है, आप ﷺ ने बेअ मलामस और मुनाज़ब से मना फ़रमाया, मलामस यह है कि आदमी दिन या रात के वक़्त किसी दूसरे शख़्स के कपड़े को हाथ से छुता है और इसे उलट पलट कर के नहीं देखता और पस इस तरह बेअ हो जाती है, जबकि मनाबज़ाह यह है कि आदमी अपना कपड़ा दूसरे शख़्स की तरफ और वह अपना कपड़ा इस पहले शख़्स की तरफ फेकता है और बस इसी तरह बिन देखे और बगैर रज़ामंदी के बेअ हो जाती है, और दो पहनावे यह है उनमें से एक “ اشْتِمَالُ الصَّمَّاءِ (इश्तेमाल अल अस्माअ)” है और वह यह है कि वह अपना कपड़ा अपने किसी एक कंधे पर रखे और उस का एक पहलु ज़ाहिर रहे जिस पर कोई कपड़ा न हो, और दूसरा पहनावा यह है कि गोठ मार कर इस तरह बेठना के इस कपड़े का कुछ भी हिस्सा उसकी शर्मगाह पर न हो| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاري (5820) و مسلم (3 / 1512)، (3806)

٢٨٥٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عنْ بيعِ الحصاةِ وعنْ بيعِ الغَرَرِ. رَوَاهُ مُسلم

2854. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने कंकरी फेंक कर बेअ करने और धोके की बेअ करने से मना फ़रमाया| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (4 / 1513)، (3808)

٢٨٥٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَن بَيْعِ حَبَلِ الْحَبَلَةِ وَكَانَ بَيْعًا يَتَبَايَعُهُ أَهْلُ الْجَاهِلِيَّةِ كَانَ الرَّجُلُ يَبْتَاعُ الْجَزُورَ إِلَى أَنْ تُنتَجَ النَّاقَةُ ثمَّ تُنتَجُ الَّتِي فِي بطنِها

2855. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने " حَبَلِ الْحَبَلَةِ (हबल इल हबला)" की बैअ से मना फ़रमाया, और अहल ए जाहिलियत इस तरह की बेअ किया करते थे, और वह इस तरह के आदमी इस इकरार पर ऊंटनी खरीदता के यह ऊंटनी बच्चा जनेगी और फिर जब वह बच्चा, बच्चा जनेगा तब उसकी कीमत अदा करूँगा"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (2143) و مسلم (56 / 1514)، (3809 و 3810)

٢٨٥٦ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ عَسْبِ الْفَحْلِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

2856. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने नरसे जफ्ती कराने पर उजरत लेने से मना फ़रमाया| (बुखारी)

رواہ البخاری (2284)

٢٨٥٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ: قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ ضِرَابِ الْجَمَلِ وَعَنْ بَيْعِ الْمَاءِ وَالْأَرْضِ لِتُحْرَثَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2857. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने ऊंट से ऊंटनी पर जफ्ती कराने पर उजरत लेने और खेती बाड़ी के लिए दी जाने वाली ज़मीन और पानी पर उजरत लेने से मना फ़रमाया| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (35 / 1565)، (4005)

٢٨٥٨ - (صَحِيح) وَعنهُ قَالَ: نهى رَسُول الله عَن بيع فضل المَاء. رَوَاهُ مُسلم

2858. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने ज़ईदाज़ ज़रूरत पानी फरोख्त करने से मना

फ़रमाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (34 / 1565)، (4004)

٢٨٥٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يُبَاع فضل المَاء ليباع بِهِ الْكلأ»

2859. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "ज़ईदाज़ ज़रूरत पानी फरोख्त न किया जाए ताकि उस के ज़रिए घास फरोख्त की जाए"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2353) و مسلم (38 / 1566)، (4008)

٢٨٦٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ عَلَى صُبْرَةِ طَعَامٍ فَأَدْخَلَ يَدَهُ فِيهَا فَنَالَتْ أَصَابِعُهُ بَلَلًا فَقَالَ: «مَا هَذَا يَا صَاحِبَ الطَّعَامِ؟» قَالَ: أَصَابَتْهُ السَّمَاءُ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «أَفَلَا جَعَلْتَهُ فَوْقَ الطَّعَامِ حَتَّى يَرَاهُ النَّاسُ؟ مَنْ غَشَّ فَلَيْسَ مني» . رَوَاهُ مُسلم

2860. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ अनाज के एक ढेर के पास से गुज़रे तो आप ने अपना हाथ उस में दाखिल किया तो आप की उंगलिया नम हो गई तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "अनाज वाले यह क्या है?" उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! उस पर बारिश हो गई थी आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुमने इसे अनाज के ऊपर क्यों न किया ताकि लोग जान लेते (जान लो) जिस शख़्स ने धोका दिया वह मुझ से नहीं"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (164 / 102)، (284)

بَابُ الْمَنْهِيِّ عَنْهَا مِنَ الْبُيُوعِ • ममनू तिजारत का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٨٦١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنِ الثُّنْيَا إِلَّا أَنْ يُعلم. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2861. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने गैर (मुईन अशियाअ में) इस्तसना करने से मना फ़रमायाm अलबत्ता अगर वह (मुस्तसना चीज़) मालुम हो तो जाईज़ है| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (1290 وقال : حسن صحیح غریب)

٢٨٦٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ الْعِنَبِ حَتَّى يَسْوَدَّ وَعَنْ بَيْعِ الْحَبِّ حَتَّى يَشْتَدَّ هَكَذَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ عَنْ أَنَسٍ. وَالزِّيَادَة الَّتِي فِي المصابيح وَهُوَ قولُه: نهى عَن بيْعِ التَمْرِ حَتَّى تزهوَ إِنَّما ثبتَ فِي رِوَايَتِهِمَا: عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: نَهَى عَنْ بَيْعِ النَّخْلِ حَتَّى تَزْهُوَ وَقَالَ التِّرمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث حسن غَرِيب

2862. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अंगूरों की बैअ से मना फ़रमाया हत्ता के वह (पक कर) सियाह हो जाए और दानो (गल्ला अनाज वगैरा) की बैअ से मना फ़रमाया हत्ता के वह (पक कर) सख्त हो जाए”| इमाम तिरमिज़ी और अबू दावुद ने इसे इसी तरह रिवायत किया है इन दोनों के यहाँ (अनस (र)) से मरवी रिवायत में यह अल्फाज़ नहीं है, आप ﷺ ने खजूरो की बैअ से मना फ़रमाया हत्ता के वह सुर्ख हो जाए, अलबत्ता इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी रिवायत में यह अल्फाज़ है आप ﷺ ने खजूरो की बैअ से मना फ़रमाया हत्ता के वह सुर्ख हो जाए, और यह इज़ाफा जो मसाबिह में है वह यह अल्फाज़ है की आप ﷺ ने खजूरो की बैअ से मना फ़रमाया हत्ता के वह सुर्ख हो जाए, अलबत्ता इन दोनों की इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी रिवायत में मज्कुरह अल्फाज़ मौजूद है: “आप ﷺ ने खजूरो की बैअ से मना फ़रमाया हत्ता के वह सुर्ख हो जाए”, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (सहीह)

سنده صحيح ، رواه الترمذى (1228) و ابوداؤد (3371) [و ابن ماجه : 2217] * و ذكره البغوى فى مصابيح السنة (الزيادة الاولى 2 / 330 ح 2095) [و رواه البخارى (2195) و مسلم (15 / 1555)، (3977) الرواية الثانية عن ابن عمر] و رواه البخارى (2247 ، 2248) و مسلم (50 / 1535)

٢٨٦٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم نهى عَن بيع الكالئ بالكالئ. رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيّ

2863. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हा से मरवी है के नबी ﷺ ने क़र्ज़ के साथ क़र्ज़ की बेअ को ममनूअ करार दिया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارقطنى (3 / 7171) [و البيهقى 5 / 290] * فيه موسى بن عقبة (!) وهو خطاو الصواب ابو عبدالعزيز موسى بن عبيدة الربذى (وهو ضعيف)

٢٨٦٤ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعِ الْعُرْبَانِ. رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

2864. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने बयाना लेकर बेअ करने से मना फ़रमाया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه مالك (2 / 609 ح 1331) و ابوداؤد (3502) و ابن ماجه (21922193)

٢٨٦٥ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَن بيْعِ المضطرِّ وعنْ بيْعِ الغَرَرِ وَعَنْ بَيْعِ الثَّمَرَةِ قَبْلَ أَنْ تُدْرِكَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2865. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मजबूरो बे बस शख़्स की बेअ से, धोके की बेअ से और फलों की बेअ से उस से पहले के वह पक जाए मना फ़रमाया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداو7د (3382) * شيخ من بنى تميم : مجهول ، كما قال الخطابى و غيره الحديث ضعفه البغوى

٢٨٦٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ رَجُلًا مِنْ كِلَابٍ سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ عَسْبِ الْفَحْلِ فَنَهَاهُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا نُطْرِقُ الْفَحْلَ فَنُكْرَمُ فَرَخَّصَ لَهُ فِي الْكَرَامَةِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2866. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कलाब कबिले के एक आदमी ने नर से जफ्ती कराने की उजरत के बारे में नबी ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया तो आप ने इसे मना किया, तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम तो जफ्ती कराते है लेकिन (बिन मांगे) हदिया के तौर पर हमें नवाज़ा जाता है, आप ﷺ ने इसे हदियतन रखने की इजाज़त दे दि| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (1274 وقال : حسن غريب)

٢٨٦٧ - (صَحِيح) وَعَنْ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ قَالَ: نَهَانِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ أَبِيعَ مَا ليسَ عندِي. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ فِي رِوَايَةٍ لَهُ وَلِأَبِي دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ: قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ يَأْتِينِي الرَّجُلُ فَيُرِيدُ مِنِّي الْبَيْعَ وَلَيْسَ عِنْدِي فَأَبْتَاعُ لَهُ مِنَ السُّوقِ قَالَ: «لَا تبِعْ مَا ليسَ عندَكَ»

2867. हकिम बिन हिज़ाम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने ऐसी चीज़ बेचने से मुझे मना फ़रमाया जो मेरे पास मौजूद न हो| तिरमिज़ी, तिरमिज़ी की एक दूसरी रिवायत और अबू दावुद और नसई की एक रिवायत में है, वह बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! कोई आदमी मेरे पास आता है और मुझ से कोई चीज़ खरीदना चाहता है, लेकिन वह मेरे पास नहीं होती तो में उसे बाज़ार से खरीद देता हूँ, (तो क्या यह जाईज़ है?) आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो चीज़ तेरे पास न हो इसे न बेच”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (12321233 وقال : حسن) و ابوداؤد (3503) و النسائى (7 / 289 ح 4717) و الرواية الثانية فى مصابيح السنة (2101)

٢٨٦٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعَتَيْنِ فِي بيعةٍ. رَوَاهُ مَالك وَالتِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

2868. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक बेअ में दो बैअ से मना फ़रमाया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه مالك (2 / 663 ح 1404) و الترمذى (1231 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (3461) و النسائى (7 / 296297 ح 4636)

٢٨٦٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ بَيْعَتَيْنِ فِي صَفْقَةٍ وَاحِدَةٍ. رَوَاهُ فِي شرح السّنة

2869. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक ही मर्तबा दो बैअ से मना फ़रमाया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البغوى فى شرح السنة (8 / 144 ح 2112) [و البيهقى 5 / 343] و انظر الحديث الآتى :2870

٢٨٧٠ - (حسن) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَحِلُّ سَلَفٌ وَبَيْعٌ وَلَا شَرْطَانِ فِي بَيْعٍ وَلَا رِبْحُ مَا لَمْ يضمن وَلَا بيع مَا لَيْسَ عِنْدَكَ» . [ص:٨٦ رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا صَحِيح

2870. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ना क़र्ज़ और बेअ (एक साथ) जाईज़ है न एक बेअ में दो शर्ते, और ना ही इस चिज़ का मुनाफा जाईज़ है जिस का ज़ामिन नहीं और इस चीज़ की बेअ भी जाईज़ नहीं जो तेरे पास नहीं”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस सहीह है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (1234) و ابوداؤد (3504) و النسائى (7 / 288 ح 4615)

٢٨٧١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كُنْتُ أَبِيعُ الْإِبِلَ بالنقيع بِالدَّنَانِيرِ فآخذ مَكَانهَا الدارهم وأبيع بِالدَّرَاهِمِ فَآخُذُ مَكَانَهَا الدَّنَانِيرَ فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ: «لَا بَأْسَ أَنْ تَأْخُذَهَا بِسِعْرِ يَوْمِهَا مَا لَمْ تَفْتَرِقَا وَبَيْنَكُمَا شَيْءٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ والدارمي

2871. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैं मक़ाम नकीअ पर ऊटों को दिनारो के बदले बेचा करता था और उनकी जगह दिरहम वुसुल करता था, और कभी दिरहमो में बेचता और उनकी जगह दीनार वुसुल करता था, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने आप से उस का तज़किरह किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम इसी रोज़ की कीमत वुसुल करो, और जब तुम दोनों जुदा हो तो तुम्हारे दरमियान लेन देन बाकी न हो तो उस में कोई हरज नहीं”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (1242) و ابوداؤد (3354) و النسائى (7 / 281282 ح 4586) و الدارمى (2 / 259 ح 2584)

٢٨٧٢ - (حسن) وَعَنِ الْعَدَّاءِ بْنِ خَالِدِ بْنِ هَوْذَةَ أَخْرَجَ كِتَابًا: هَذَا مَا اشْتَرَى الْعَدَّاءُ بْنُ خَالِدِ بْنِ هَوْذَةَ مِنْ مُحَمَّدٍ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اشْترى مِنْهُ عبدا أَو أمة لَا دَاءَ وَلَا غَائِلَةَ وَلَا خِبْثَةَ بَيْعَ الْمُسْلِمِ الْمُسْلِمَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

2872. अद्दाअ बिन खालिद बिन हवज़त रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने एक तहरीर निकाली (जिस की इबारत यूँ थी) यह तहरीर इस चीज़ से मुतल्लिक है जो अद्दाअ बिन खालिद बिन हवज़त ने अल्लाह के रसूल मुहम्मद ﷺ से गुलाम या लौंडी खरीदी, उस में कोई बीमारी है ना इसे कोई बुरी आदत है और कोई अख्लाकी बुराई, और यह मुसलमान की मुसलमान से बेअ है"| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1216)

٢٨٧٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَاعَ حِلْسًا وَقَدَحًا فَقَالَ: «مَنْ يَشْتَرِي هَذَا الحلس والقدح؟» فَقَالَ رجل: آخذهما بِدِرْهَمٍ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ يَزِيدُ عَلَى دِرْهَمٍ؟» فَأَعْطَاهُ رَجُلٌ دِرْهَمَيْنِ فَبَاعَهُمَا مِنْهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

2873. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने एक कम्बल और प्याला बेचने का इरादा किया तो फ़रमाया: "इस कम्बल और प्याले को कौन खरीदता है?" एक आदमी ने अर्ज़ किया, मैं इन दोनों को एक दिरहम में खरीदता हूँ, तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: "एक दिरहम से ज़्यादा कौन देता है?" चुनांचे एक आदमी ने दो दिरहम के अवज़ उन्हें आप ﷺ से खरीद लिया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1218 وقال : حسن) و ابوداؤد (1641) و ابن ماجه (2198)

بَابُ الْمَنْهِيِّ عَنْهَا مِنَ الْبُيُوعِ • ममनू तिजारत का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٨٧٤ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْأَسْقَعِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «من بَاعَ عَيْبا لَمْ يُنَبِّهْ لَمْ يَزَلْ فِي مَقْتِ اللَّهِ أَوْ لَمْ تَزَلِ الْمَلَائِكَةُ تَلْعَنُهُ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه

2874. वासिला बिन अस्कअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जो शख़्स कोई ऐब नुक्स वाली चीज़ बेचता है और उस के मुतल्लिक बताता नहीं तो वह अल्लाह की नाराज़ी में रहता है या फ़रिश्ते उस पर लानत भेजते रहते है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (2247) * بقية مدلس و عنعن و له علة أخرى

मशुरत तिजारत का बयान • بَابُ [في البيع المشروط]

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٢٨٧٥ - (صَحِيحٌ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ ابْتَاعَ نَخْلًا بَعْدَ أَنْ تُؤَبَّرَ فَثَمَرَتُهَا لِلْبَائِعِ إِلَّا أَنْ يَشْتَرِطَ الْمُبْتَاعُ وَمَنِ ابْتَاعَ عَبْدًا وَلَهُ مَالٌ فَمَالُهُ لِلْبَائِعِ إِلَّا أَنْ يَشْتَرِطَ الْمُبْتَاعُ» . رَوَاهُ مُسلم وروى البُخَارِيّ الْمَعْنى الأول وَحده

2875. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स ताबीर (पेवंद) के बाद खजूर का दरख्त ख़रीदा तो अगर खरीदार शर्त काइम न करे तो उस का फल बेचने वाले का है, और जो शख़्स कोई गुलाम बेचे और उस का कुछ माल हो तो वह माल बेचने वाले का है, इल्ला यह कि खरीदार उसकी शर्त काइम कर ले”| मुस्लिम, और इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह ने सिर्फ पहला हिस्सा ही बयान किया है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (80 / 1543)، (3905) و البخاری (2379)

٢٨٧٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ: أَنَّهُ كَانَ يَسِيرُ عَلَى جَمَلٍ لَهُ قد أعيي فَمَرَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِهِ فَضَرَبَهُ فَسَارَ سَيْرًا لَيْسَ يَسِيرُ مِثْلَهُ ثُمَّ قَالَ: «بِعْنِيهِ بِوُقِيَّةٍ» قَالَ: فَبِعْتُهُ فَاسْتَثْنَيْتُ حُمْلَانَهُ إِلَى أَهْلِي فَلَمَّا قَدِمْتُ الْمَدِينَةَ أَتَيْتُهُ بِالْجَمَلِ وَنَقَدَنِي ثَمَنَهُ وَفِي رِوَايَةٍ فَأَعْطَانِي ثَمَنَهُ وَرَدَّهُ عَلَيَّ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ لِلْبُخَارِيِّ أَنَّهُ قَالَ لِبِلَالٍ: «اقْضِهِ وَزِدْهُ» فَأَعْطَاهُ وَزَادَهُ قِيرَاطًا

2876. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह एक ज़ाती ऊंट पर सफ़र कर रहे थे जो के थक चूका था, इसी असना में नबी ﷺ उस के पास से गुज़रे तो आप ने इसे मारा तो वह यूँ चलने लगा के वह पहले कभी ऐसे नहीं चलता था, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे एक उकिय्यह के बदले में मुझे बेच दो”, जाबिर रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, मैंने इसे बेच दिया अलबत्ता मैंने अपने अहल व अयाल तक पहुँचने की मुहलत ले ली, जब में मदीना पहुंचा तो मैं ऊंट लेकर आप की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप ने उसकी कीमत मुझे अदा कर दी, और एक दूसरी रिवायत में है में हाज़िर हुआ तो आप ﷺ ने उसकी कीमत भी अदा कर दी और वह ऊंट भी वापस कर दिया| बुखारी, मुस्लिम, और सहीह बुखारी की दूसरी रिवायत में है आप ﷺ ने बिलाल रदियल्लाहु अन्हु को फ़रमाया: “इसे कीमत अदा कर दो और ज़्यादा भी दो”, उन्होंने मुझे कीमत भी अदा की और एक किरात मज़ीद अता किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2718 ، 2967) و مسلم (109111 / 715)، (4098 و 4101)

٢٨٧٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: جَاءَتْ بَرِيرَةُ فَقَالَتْ: إِنِّي كَاتَبْتُ عَلَى تِسْعِ أَوَاقٍ فِي كُلِّ عَامٍ وُقِيَّةٌ فَأَعِينِينِي فَقَالَتْ عَائِشَةُ: إِنْ أَحَبَّ أَهْلُكِ أَنْ أَعُدَّهَا لَهُمْ عُدَّةً وَاحِدَةً وَأُعْتِقَكِ فَعَلْتُ وَيَكُونُ وَلَاؤُكِ لِي فَذَهَبَتْ إِلَى أَهْلِهَا فَأَبَوْا إِلَّا أَنْ يَكُونَ الْوَلَاءُ لَهُمْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خُذِيهَا وَأَعْتِقِيهَا» ثُمَّ قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي النَّاسِ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: «أَمَّا أبعد [ص:٨٧ فَمَا بَالُ رِجَالٍ يَشْتَرِطُونَ شُرُوطًا لَيْسَتَ فِي كِتَابِ اللَّهِ مَا كَانَ مِنْ شَرْطٍ لَيْسَ فِي كِتَابِ اللَّهِ فَهُوَ بَاطِلٌ وَإِنْ كَانَ مِائَةَ شَرْطٍ فَقَضَاءُ اللَّهِ أَحَقُّ وَشَرْطُ اللَّهِ أَوْثَقُ وَإِنَّمَا الْوَلَاءُ لِمَنْ أَعْتَقَ»

2877. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, बरिरा रदियल्लाहु अन्हुमा आई तो उन्होंने कहा: मैंने नौ अवाक् पर (आज़ादी हासिल करने के लिए) किताबत की है, और हर साल एक अवाक् देना है, लिहाज़ा आप रदियल्लाहु अन्हु मेरी मदद फरमाइए, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: अगर तुम्हारे मालिक पसंद करे तो मैं यह रकम एक ही मर्तबा अदा कर देती हूँ, और तुम्हें आज़ाद करा देती हूँ लेकिन तुम्हार वीला (विरासत) मेरी होगी, वह अपने मालिको के पास गई तो उन्होंने इनकार कर दिया और कहा बोला इन के लिए होगी, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इसे खरीद कर आज़ाद कर दो”, फिर आप लोगों से ख़िताब करने के लिए खड़े हुए, आप ﷺ ने अल्लाह तआला की हम्द व सना बयान की फिर फ़रमाया: “अम्मा बाद! लोगों को किया हुआ की वह ऐसी शर्ते लगाते है जो अल्लाह की किताब में नहीं है, और जो शर्त अल्लाह की किताब में न हो ख्वाह वह सौ शर्ते हो, तो वह बातिल है, अल्लाह की कज़ा ज़्यादा हक़ रखती है, और अल्लाह की शर्त ज़्यादा मोतबर है, विला आज़ाद करने वाले का हक़ है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه رواه البخارى (2168) و مسلم (6 / 1504)، (3777)

٢٨٧٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَن بيع الْوَلَاء وَعَن هِبته

2878. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ वीला को फरोख्त करने और इसे हिब्बा करने से मना फ़रमाया है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2535) ومسلم (16 / 1506)، (3788)

بَابُ [في البيع المشروط] • मशुरत तिजारत का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٨٧٩ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ مَخْلَدِ بْنِ خُفَافٍ قَالَ: ابْتَعْتُ غُلَامًا فَاسْتَغْلَلْتُهُ ثُمَّ ظَهَرْتُ مِنْهُ عَلَى عَيْبٍ فَخَاصَمْتُ فِيهِ إِلَى عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ فَقَضَى لِي بِرَدِّهِ وَقَضَى عَلَيَّ بِرَدِّ غَلَّتِهِ فَأَتَيْتُ عُرْوَةَ فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ: أَرُوحُ إِلَيْهِ الْعَشِيَّةَ فَأُخْبِرُهُ أَنَّ عَائِشَةَ أَخْبَرَتْنِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَضَى فِي مِثْلِ هَذَا: أَنَّ الْخَرَاجَ بِالضَّمَانِ فَرَاحَ إِلَيْهِ عُرْوَةُ فَقَضَى لِي أَنْ آخُذَ

الْخَرَاجَ مِنَ الَّذِي قَضَى بِهِ عَلَيَّ لَهُ. رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ

2879. मखलद बिन खुफ्फाफ बयान करते हैं, मैंने एक गुलाम ख़रीदा तो मैंने उस से आमदनी हासिल की फिर मुझे उस के एक नुक्स का पता चला तो मैं उस का मुकदमा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहिमहुल्लाह के पास ले गया तो उन्होंने इसे वापस करने का फैसला मेरे हक़ में किया और उस से हासिल होने वाली आमदनी वापस लौटाने का फैसला मेरे खिलाफ किया, मैं उरवा रहिमहुल्लाह के पास गया, और उन्हें सारा वाकिया बयान किया तो उन्होंने ने फ़रमाया: में पिछले पहर उन के पास जाऊंगा और उन्हें बताऊंगा के आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने मुझे बताया की रसूलुल्लाह ﷺ ने इस तरह के मुआमले का फैसला किया के खराज, ज़मान के बदले में है, उरवा रहिमहुल्लाह पिछले पहर उन के पास गए (और उन्हें बताया) तो उन्होंने मेरे हक़ में फैसला किया की मैं इस शख़्स से वह खराज की रकम वापस ले लूँ जो उन्होंने मुझ से लेकर इसे दिलवाई थी| (हसन)

حسن ، رواه البغوی فی شرح السنة (8 / 164 بعد ح 2119) [و ابوداؤد (3508) و الترمذی (12851286) و ابن ماجه (2242)]

٢٨٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا اخْتَلَفَ الْبَيِّعَانِ فَالْقَوْلُ قَوْلُ الْبَائِعِ وَالْمُبْتَاعُ بِالْخِيَارِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيِّ قَالَ: «الْبَيِّعَانِ إِذَا اخْتَلَفَا وَالْمَبِيعُ قَائِمٌ بِعَيْنِهِ وَلَيْسَ بَيْنَهُمَا بَيِّنَةٌ فَالْقَوْلُ مَا قَالَ الْبَائِعُ أَو يترادان البيع»

2880. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब खरीदो फरोख्त करने वालो के दरमियान इख्तिलाफ हो जाए तो बेचने वाले की बात मोतबर होगी, जबकि खरीदार को इख़्तियार हासिल होगा| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और दारमी की रिवायत में है, फ़रमाया: “जब खरीदो फरोख्त करने वालो के दरमियान इख्तिलाफ हो जाए जबकि फरोख्त शुदा चीज़ वैसे ही मौजूद हो और इन दोनों के पास कोई सबूत न हो तो बेचने वाले की बात मोतबर हो, या फिर वह बेअ वापस कर देंगे”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1270) و ابن ماجه (2186) و الدارمی (2 / 250 ح 2552)

٢٨٨١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَقَالَ مُسْلِمًا [ص:٨٧ أقاله اللَّهُ عَثْرَتَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ»» وَفِي «شَرْحِ السُّنَّةِ» بِلَفْظِ «الْمَصَابِيحِ» عَن شُرَيْح الشَّامي مُرْسلا

2881. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स किसी मुसलमान की बेअ वापस कर दे तो रोज़ ए कियामत अल्लाह तआला उसकी लग्ज़िश मुआफ़ फरमादेगा”| अबू दावुद, इब्ने माजा जबकि शरह सुन्ना में मसाबिह के अल्फाज़ के साथ शरीह शामी रहिमहुल्लाह से मुरसल रिवायत है| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3460) و ابن ماجه (2199) و البغوی فی شرح السنة (8 / 161 ح 2117) * الاعمش مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة

बَابُ [في البيع المشروط] • मशुरत तिजारत का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٨٨٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم: " اشْترى رَجُلٌ مِمَّنْ كَانَ قَبْلَكُمْ عَقَارًا مِنْ رَجُلٍ فَوَجَدَ الَّذِي اشْتَرَى الْعَقَارَ فِي عَقَارِهِ جَرَّةً فِيهَا ذَهَبٌ فَقَالَ لَهُ الَّذِي اشْتَرَى الْعَقَارَ: خُذْ ذَهَبَكَ عَنِّي إِنَّمَا اشْتَرَيْتُ الْعَقَارَ وَلَمْ أَبْتَعْ مِنْكَ الذَّهَبَ. فَقَالَ بَائِعُ الْأَرْضِ: إِنَّمَا بِعْتُكَ الْأَرْضَ وَمَا فِيهَا فَتَحَاكَمَا إِلَى رَجُلٍ فَقَالَ الَّذِي تَحَاكَمَا إِلَيْهِ: أَلَكُمَا وَلَدٌ؟ فَقَالَ أَحَدُهُمَا: لِي غُلَامٌ وَقَالَ الآخر: لي جَارِيَة. فَقَالَ: أَنْكِحُوا الْغُلَامَ الْجَارِيَةَ وَأَنْفِقُوا عَلَيْهِمَا مِنْهُ وَتَصَدَّقُوا "

2882. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “पहले ज़माने में एक आदमी ने दूसरे आदमी से ज़मीन ख़रीदी तो जिस शख़्स ने ज़मीन खरीदी थी उस ने ज़मीन में एक घड़ा पाया जिस में सोना था, जिस शख़्स ने ज़मीन खरीदी थी उस ने इसे कहा तुम अपना सोना मुझ से ले लो क्योंकि मैंने तो तुम से सिर्फ ज़मीन खरीदी थी, सोना नहीं ख़रीदा था, ज़मीन बेचने वाले ने कहा: मैंने ज़मीन और जो कुछ इस में है सब तुम्हें बेच दिया था, वह दोनों अपना मुकदमा एक आदमी के पास ले गए तो, जिस आदमी के पास वह मुकदमा लेकर गए थे, उस ने कहा क्या तुम्हारी औलाद है? उनमें से एक ने कहा मेरा एक लड़का है और दूसरे ने कहा मेरी एक लड़की है, तो इस आदमी ने कहा लड़के की लड़की से शादी कर दो, और इस (माल) को इन दोनों पर खर्च कर दो और उस में से कुछ सदका कर दो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2472) و مسلم (21 / 1721)، (4497)

بَاب السّلم وَالرَّهْن • सुलमी सोदा और रहन का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٢٨٨٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ وَهُمْ يُسْلِفُونَ فِي الثِّمَارِ السَّنَةَ وَالسَّنَتَيْنِ وَالثَّلَاثِ فَقَالَ: «مَنْ سلف فِي شَيْءٍ فَلْيُسْلِفْ فِي كَيْلٍ مَعْلُومٍ وَوَزْنٍ مَعْلُوم إِلَى أجل مَعْلُوم»

2883. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मदीना तशरीफ़ लाए तो वह लोग फलों के बारे में, साल, दो साल और तीन साल के लिए बेअ सलम किया करते थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स किसी चीज़ में बेअ सलम करे तो वह तै शुदा नाप वज़न और तै शुदा मुद्दत के लिए बेअ सलम (किसी चीज़ की पेशगी रकम दे कर) करे| (मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (2239) و مسلم (127 / 1604)، (4118)

٢٨٨٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتِ: اشْتَرَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَعَامًا من يَهُودِيٍّ إِلَى أَجَلٍ وَرَهَنَهُ دِرْعًا لَهُ مِنْ حَدِيد

2884. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक यहूदी से एक मुद्दत के लिए गल्ला लिया और आप ﷺ ने अपने लोहे की ज़िराह उस के पास गिरवी रखी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2068) و مسلم (126 / 1603)، (4116)

٢٨٨٥ - (صَحِيح) وَعَنْهَا قَالَتْ: تُوُفِّيَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَدِرْعُهُ مَرْهُونَةٌ عِنْدَ يَهُودِيٍّ بِثَلَاثِينَ صَاعا من شعير. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2885. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने वफात पाई तो आप की ज़िराह तीस साअ जौ के अवज़ एक यहूदी के पास गिरवी थी| (बुखारी)

رواه البخاری (2916)

٢٨٨٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الظَّهْرُ يُرْكَبُ بِنَفَقَتِهِ إِذَا كَانَ مَرْهُونًا وَلَبَنُ الدَّرِّ يُشْرَبُ بِنَفَقَتِهِ إِذَا كَانَ مَرْهُونًا وَعَلَى الَّذِي يركب وَيشْرب النَّفَقَة» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

2886. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब सवारी का जानवर गिरवी हो तो बकदर खर्च उस पर सवारी की जा सकती है, और अगर दूध वाला जानवर गिरवी हो तो बकदर खर्च उस का दूध पिया जा सकता है, और जो शख़्स सवारी करता है और दूध पीता है, इसी के ज़िम्मा खर्च है“| (बुखारी)

رواه البخاری (2512)

सुलमी सोदा और रहन का बयान • بَاب السّلم وَالرَّهْن

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٢٨٨٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَغْلَقُ الرَّهْنُ الرَّهْنَ مِنْ صَاحِبِهِ الَّذِي رَهَنَهُ لَهُ غنمه وَعَلِيهِ غرمه» . رَوَاهُ الشَّافِعِي مُرْسلا

2887. सईद बिन मुसय्यब से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “गिरवी मर्हूना चीज़ को उस के मालिक से, जिस ने इसे गिरवी रखा है, नहीं रोक सकता उस का फ़ायदा भी इसी (मालिक) को होगा और उस का नुकसान

भी इसी को होगा”| इमाम शाफ़ई रहिमहुल्लाह ने इसे मुरसल रिवायत किया है इसनाद जईफ| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الشافعى فى الام (3 / 186167) * السند مرسل و انظر الحديث الآتى (2888)

٢٨٨٨ - (لم تتمّ دراسته) وَرُوِيَ مثله أَو مثل مَعْنَاهُ لَا يُخَالف عَنهُ عَن أبي هُرَيْرَة مُتَّصِلا

2888. इस रिवायत की मिस्ल या उस के मानी का मिसल जो उस के मुखालिफ नहीं, हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मुतस्सिल रिवायत भी है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابن ماجه (2441) * الزهرى مدلس و عنعن فالسند غير متصل و انظر الحديث السابق (2887)

٢٨٨٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْمِكْيَالُ مِكْيَالُ أَهْلِ الْمَدِينَةِ وَالْمِيزَانُ مِيزَانُ أَهْلِ مَكَّةَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ

2889. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “नाप अहले मदीना का मोतबर है, जबकि वज़न अहले मक्का का मोतबर है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3340) و النسائى (5 / 54 ح 2521 ، 4598) * سفيان الثورى مدلس و عنعن و تابعه المدلس الوليد بن مسلم و عنعن

٢٨٩٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِأَصْحَابِ الْكَيْلِ وَالْمِيزَانِ: «إِنَّكُمْ قَدْ وُلِّيتُمْ أَمْرَيْنِ هَلَكَتْ فِيهِمَا الْأُمَمُ السَّابِقَة قبلكُمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2890. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने नापतोल वालो को फ़रमाया: “बिलाशुबा दो काम तुम्हारे ज़िम्मा ऐसे लगाए गए है जिन (में कमी बेशी) की वजह से तुम से पहली कौमे हलाकत का शिकार हुई”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الترمذى (1217) * فيه حسين بن قيس الواسطى : متروك

सुलमी सोदा और रहन का बयान • بَاب السّلم وَالرَّهْن

तीसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّالِث

٢٨٩١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَسْلَفَ فِي شَيْءٍ فَلَا يَصْرِفْهُ إِلَى غَيْرِهِ قَبْلَ أَنْ يَقْبِضَهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

2891. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स किसी चीज़ के बारे में बेअ सलम करे तो वह उस पर कब्ज़े करने से पहले इसे किसी और को न दे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3468) و ابن ماجه (2283) * عطية العوفى ضعيف و مدلس

ज़खीरा अन्देज़ी का बयान • بَاب الاحتكار

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٢٨٩٢ - (صَحِيح) عَن معمر قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ احْتَكَرَ فَهُوَ خَاطِئٌ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ «كَانَتْ أَمْوَالُ بَنِي النَّضِيرِ» فِي بَابِ الْفَيْءِ إِنْ شَاءَ الله تَعَالَى

2892. मअमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स ज़खीरा अन्दोज़ी करता है वह गुनाहगार है”, और हम उमर रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस: “बनू नज़ीर के अमवाल” को इंशाअल्लाह तआला बाब अल्फी में ज़िक्र करेंगे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (129 / 1605)، (4122) 0 حديث عمر ياتى (4056)

ज़खीरा अन्देज़ी का बयान — بَاب الاحتكار

दूसरी फस्ल — الْفَصْل الثَّانِي

٢٨٩٣ - (ضَعِيف) عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْجَالِبُ مَرْزُوقٌ والمحتكر مَلْعُون» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه والدارمي

2893. उमर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “(बाज़ार में) गल्ला लाने वालो को रीज़्क दिया जाता है, जबकि ज़खीरा अन्दोज़ मलउन है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (2153) و الدارمی (2 / 249 ح 2548) * علی بن سالم : ضعیف و علی بن زید بن جدعان ضعیف مشھور

٢٨٩٤ - (صَحِيح) وَعَن أنس قَالَ: غَلَا السِّعْرُ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ سَعِّرْ لَنَا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمُسَعِّرُ الْقَابِضُ الْبَاسِطُ الرَّازِقُ وَإِنِّي لَأَرْجُو أَنْ أَلْقَى رَبِّي وَلَيْسَ أحد مِنْكُم يطلبني بمظلة بِدَمٍ وَلَا مَالٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

2894. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ के ज़माने में कीमते चढ़ गई तो सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप हमारे लिए कीमते मुकर्रर फरमादे, तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक अल्लाह ही कीमते मुकर्रर करने वाला है, वही तंगी व कुशादगी का मालिक और रीज़्क देने वाला है, और मैं उम्मीद करता हूँ की मैं इस हाल में अपने रब से मुलाकात करू के तुम में से कोई खून और माल के मुतल्लिक मुझ से मुतालबा न करता हो”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (1314 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (3451) و ابن ماجه (2200) و الدارمی (2 / 249 ح 2548)

ज़खीरा अन्देज़ी का बयान — بَاب الاحتكار

तीसरी फस्ल — الْفَصْل الثَّالِث

٢٨٩٥ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنِ احْتَكَرَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ طَعَامَهُمْ ضَرَبَهُ اللَّهُ بِالْجُذَامِ وَالْإِفْلَاسِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ. وَرَزِينٌ فِي كِتَابِهِ

2895. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स मुसलमानों पर गल्ला रोक दे (ज़खीरा अन्दोज़ी करे) तो अल्लाह उस पर जज़ाम का मर्ज़ और अफ्लास मुसल्लत

कर देता है”| इब्ने माजा बयहकी की शौबुल ईमान और रजिन ने इसे अपने किताब में रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابن ماجه (2155) و البيهقى فى شعب الايمان (11218) و رزين (لم اجده) * و صححه البوصيرى و المنذرى :’’ هذا اسناد جيد متصل و رواته ثقات ‘‘ و حسنه ابن حجر فى الفتح (4 / 348)

٢٨٩٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ احْتَكَرَ طَعَامًا أَرْبَعِينَ يَوْمًا يُرِيدُ بِهِ الْغَلَاءَ فَقَدْ بَرِئَ مِنَ اللَّهِ وَبَرِئَ اللَّهُ مِنْهُ» . رَوَاهُ رَزِينٌ

2896. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स कीमत बढ़ाने के लिए चालीस रोज़ तक ज़खीरा अन्दोज़ी करता है तो वह अल्लाह से ला ताअल्लूक हुआ, और अल्लाह तआला उस से ला ताअल्लूक हुआ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه رزين (لم اجده) [و احمد 2 / 33 بلفظ مختلف نحوا المعنى] * فيه ابو بشر (الاملوكى) صاحب ابى الزاهرية : ضعيف

٢٨٩٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُعَاذٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " بِئْسَ الْعَبْدُ الْمُحْتَكِرُ: إِنْ أَرْخَصَ اللَّهُ الْأَسْعَارَ حَزِنَ وَإِنْ أَغْلَاهَا فَرِحَ ". رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ وَرَزِينٌ فِي كِتَابِهِ

2897. मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “ज़खीरा अन्दोज़ शख़्स बहोत बुरा है, अगर अल्लाह कीमते कम कर देता है तो वह ग़मगीन हो जाता है, और अगर वह उन्हें बढ़ा देता है तो खुश हो जाता है”| बयहकी की शौबुल ईमान, और रजिन ने इसे अपने किताब में बयान किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (11215) و رزين (لم اجده) * السند منقطع و فيه بن بقية عن ابيه عن ثور بن يزيد به و بقية لم يصرح بالسماع

٢٨٩٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنِ احْتَكَرَ طَعَامًا أَرْبَعِينَ يَوْمًا ثُمَّ تَصَدَّقَ بِهِ لَمْ يَكُنْ لَهُ كَفَّارَةً» . رَوَاهُ رزين

2898. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स चालीस रोज़ तक गल्ला ज़खीरा करे और फिर वह इसे सदका भी कर दे तो वह उस का कफ्फारा नहीं हो सकता”| (मझे नहीं मिली रवाह रजिन.)

لم اجده ، رواه رزين (لم اجده) * و للحديث طريق موضوع لا يستشهد به ، فيه محمد بن مروان السدى كذاب ، انما ذكرته لا رد عليه (انظر الضعيفة للشيخ الالبانى رحمه الله : 859)

दिवालिया होना और मुहलत देने का बयान • بَاب الإفلاس والانظار

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٢٨٩٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيُّمَا رَجُلٍ أَفْلَسَ فَأَدْرَكَ رَجُلٌ مَالَهُ بِعَيْنِهِ فَهُوَ أَحَق بِهِ من غَيره»

2899. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स मुफलिस हो जाए और कोई आदमी अपना माल बिलकुल इसी सूरत में पा ले तो यह (माल वाला) शख़्स दुसरो की निस्बत इस माल का ज़्यादा हक़दार है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2402) و مسلم (22 / 1559)، (3987)

٢٩٠٠ - (صَحِيح) وَعَن أبي سعيد قَالَ: أُصِيبَ رَجُلٌ فِي عَهْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي ثِمَارٍ ابْتَاعَهَا فَكَثُرَ دينه فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَصَدَّقُوا عَلَيْهِ» فَتَصَدَّقَ النَّاسُ عَلَيْهِ فَلَمْ يَبْلُغْ ذَلِك وَفَاء دينه فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِغُرَمَائِهِ «خُذُوا مَا وَجَدْتُمْ وَلَيْسَ لَكُمْ إِلَّا ذَلِك» . رَوَاهُ مُسلم

2900. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ के दौर में एक आदमी को फलों की तिजारत में खसारा हुआ तो उस का क़र्ज़ बहोत ज़्यादा हो गया, इस सूरत में रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "उस पर सदका करो", लोगों ने उस पर सदका किया लेकिन वह उस के क़र्ज़ की अदाइगी के बराबर न हुआ, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उस के क़र्ज़ ख्वाहों से फ़रमाया: "जो मिलता है ले लो तुम्हारे लिए पस यही कुछ है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (18 / 1556)، (3981)

٢٩٠١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " كَانَ رجل يدائن النَّاسَ فَكَانَ يَقُولُ لِفَتَاهُ: إِذَا أَتَيْتَ مُعْسِرًا تجَاوز عَنهُ لَعَلَّ الله أَن يَتَجَاوَزُ عَنَّا قَالَ: فَلَقِيَ اللَّهَ فَتَجَاوَزَ عَنْهُ "

2901. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "एक आदमी क़र्ज़ दिया करता था, वह अपने मुलाज़िम से कहा करता था, जब तुम किसी तंगदस्त के पास जाओ तो उस को (क़र्ज़) मुआफ़ कर दिया करो, शायद के अल्लाह हमें मुआफ़ फरमादे, फ़रमाया उस ने अल्लाह से मुलाकात की तो उस ने इसे मुआफ़ फरमा दीया"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2078) و مسلم (31 / 1562)، (3998)

٢٩٠٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ سَرَّهُ أَنْ يُنْجِيَهُ اللَّهُ مِنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلْيُنَفِّسْ عَنْ مُعْسِرٍ أَوْ يَضَعْ عَنْهُ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2902. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स को यह पसंद हो के अल्लाह इसे रोज़ ए कियामत की तकलीफों से निजात दे दे तो वह तंगदस्त को मुहलत दे या इसे (क़र्ज़) मुआफ़ कर दे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (32 / 1563)، (4000)

٢٩٠٣ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ أَنْظَرَ مُعْسِرًا أَوْ وَضَعَ عَنْهُ أَنْجَاهُ اللَّهُ مِنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيَامَة» . رَوَاهُ مُسلم

2903. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स किसी तंगदस्त को मुहलत दे या इसे क़र्ज़ मुआफ़ कर दे तो अल्लाह इसे रोज़ ए कियामत की तकलीफों से निजात दे देगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (32 / 1563)، (4000)

٢٩٠٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي الْيَسَرِ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ أَنْظَرَ مُعْسِرًا أَوْ وَضَعَ عَنْهُ أَظَلَّهُ اللَّهُ فِي ظِلِّهِ» . رَوَاهُ مُسلم

2904. अबू अल यसिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: जो शख़्स किसी तंगदस्त को मुहलत दे या इस के क़र्ज़ मुआफ़ कर दे तो अल्लाह इसे अपने (अर्श के) साया में साया अता फरमाएगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (74 / 3006)، (7512)

٢٩٠٥ - (صَحِيح) وَعَن أبي رَافع قَالَ: اسْتَسْلَفَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَكْرًا فَجَاءَتْهُ إِبِلٌ مِنَ الصَّدَقَةِ قَالَ: أَبُو رَافِعٍ فَأَمَرَنِي أَنْ أَقْضِيَ الرَّجُلَ بَكْرَهُ فَقُلْتُ: لَا أَجِدُ إِلَّا جَمَلًا خِيَارًا رَبَاعِيًا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَعْطِهِ إِيَّاهُ فَإِنَّ خَيْرَ النَّاسِ أَحْسَنُهُمْ قَضَاءً» . رَوَاهُ مُسلم

2905. अबी राफीअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक नौ उमर ऊंट क़र्ज़ लिया, आप ﷺ के पास सदका के ऊंट आए तो अबी राफीअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, आप ने मुझे हुक्म फ़रमाया की मैं इस आदमी को उस के नौ उमर ऊंट का क़र्ज़ उतार दो, मैंने अर्ज़ किया: तमाम ऊंट बेहतरीन किस्म के सात साल

की उमर के है, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इसे यही दे दो क्योंकि बेहतरीन शख़्स वह है जो क़र्ज़ अदा करने में अच्छा हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (118 / 1600)، (4108)

٢٩٠٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَجُلًا تَقَاضَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَغْلَظَ لَهُ فَهَمَّ أَصْحَابُهُ فَقَالَ: «دَعُوهُ فَإِنَّ لِصَاحِبِ الْحَقِّ مَقَالًا وَاشْتَرُوا لَهُ بَعِيرًا فَأَعْطُوهُ إِيَّاهُ» قَالُوا: لَا نَجِدُ إِلَّا أَفْضَلَ مِنْ سِنِّهِ قَالَ: «اشْتَرُوهُ فَأَعْطُوهُ إِيَّاهُ فَإِنَّ خَيْرَكُمْ أحسنكم قَضَاء»

2906. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से क़र्ज़ की वापसी का तकाज़ा किया तो उस ने आप ﷺ पर सख्ती की तो आप के सहाबा ने इसे मारने का इरादा किया, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे छोड़ दो क्योंकि साहबे हक़ (क़र्ज़ ख्वाह) बाते करने का हक़ रखता है, तुम एक ऊंट खरीद कर इसे दे दो”, सहाबा ने अर्ज़ किया, उस से बड़ी उमर का ऊंट मिलता है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे ही खरीद कर इसे दे दो, क्योंकि तुम में से बेहतरीन वह है जो तुम में से क़र्ज़ अदा करने में बेहतर है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2306) و مسلم (120 / 1601)، (4110)

٢٩٠٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَطْلُ الْغَنِيِّ ظُلْمٌ فَإِذَا أُتْبِعَ أحدكُم على مَلِيء فَليتبعْ»

2907. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “माल दार शख़्स का (क़र्ज़ की अदाइगी में) टाल मटोल करना ज़ुल्म है, अगर तुम में से किसी को किसी माल दार शख़्स (यानी ज़ामिन) के पीछे लगा दिया जाए (के उस से क़र्ज़ वुसुल कर लो) तो लग जाना चाहिए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2287) و مسلم (33 / 1564)، (4002)

٢٩٠٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ: أَنَّهُ تَقَاضَى ابْنَ أَبِي حَدْرَدٍ دَيْنًا لَهُ عَلَيْهِ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَسْجِدِ فَارْتَفَعَتْ أَصْوَاتُهُمَا حَتَّى سَمِعَهَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ فِي بَيْتِهِ فَخَرَجَ إِلَيْهِمَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى كَشَفَ سِجْفَ حُجْرَتِهِ وَنَادَى كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ: «يَا كَعْبُ» قَالَ: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَأَشَارَ بِيَدِهِ [ص:٨٧ أَنْ ضَعِ الشَّطْرَ مِنْ دَيْنِكَ قَالَ كَعْبٌ: قَدْ فَعَلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «قُمْ فاقضه»

2908. काब बिन मालिक से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में इब्ने अबी हदरद रदियल्लाहु अन्हु से मस्जिद में अपने क़र्ज़ का मुतालबा किया तो इन दोनों की आवाज़े बुलंद हो गई हत्ता के रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें अपने घर में सुन लिया, रसूलुल्लाह ﷺ इन दोनों की तरफ आए हत्ता के आप ने अपने हुजरे का परदा उठाकर काब बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु को आवाज़ दी, फ़रमाया: “काब! ‘‘ उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल!

हाज़िर हूँ, आप ने अपने हाथ से इरशाद किया के उस का आधा क़र्ज़ मुआफ़ कर दो, काब रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने कर दिया, आप ﷺ ने इब्ने अबी हदरद रदियल्लाहु अन्हु से) फ़रमाया: “खड़ा हो और उस का क़र्ज़ अदा कर”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (457) و مسلم (20 / 1558)، (3984)

٢٩٠٩ - (صَحِيح) وَعَن سَلمَة بن الْأَكْوَع قَالَ: كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ أُتِيَ بِجِنَازَةٍ فَقَالُوا: صَلِّ عَلَيْهَا فَقَالَ: «هَلْ عَلَيْهِ دَيْنٌ؟» قَالُوا: لَا فَصَلَّى عَلَيْهَا ثُمَّ أُتِيَ بِجِنَازَةٍ أُخْرَى فَقَالَ: «هَل عَلَيْهِ دين؟» قَالُوا: نعم فَقَالَ: «فَهَلْ تَرَكَ شَيْئًا؟» قَالُوا: ثَلَاثَةَ دَنَانِيرَ فَصَلَّى عَلَيْهَا ثمَّ أُتِي بالثالثة فَقَالَ: «هَلْ عَلَيْهِ دَيْنٌ؟» قَالُوا: ثَلَاثَةُ دَنَانِيرَ قَالَ: «هَلْ تَرَكَ شَيْئًا؟» قَالُوا: لَا قَالَ: «صلوا على صَاحبكُم» قَالَ أَبُو قَتَادَة: صلى الله عَلَيْهِ وَسلم عَلَيْهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَعَلَيَّ دَيْنُهُ فَصَلَّى عَلَيْهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2909. सलमा बिन अकवा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम नबी ﷺ के पास बैठें हुए थे की एक जनाज़ा लाया गया, सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, उसकी नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ाइये, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या उस पर कोई क़र्ज़ है?” उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, तो आप ने उसकी नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ाई, फिर आप के पास एक और जनाज़ा लाया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या उस पर कोई क़र्ज़ है” अर्ज़ किया गया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या उस ने कोई चीज़ तर्क छोड़ी है?” उन्होंने अर्ज़ किया, तीन दीनार, आप ने उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी फिर तीसरा जनाज़ा लाया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या उस पर कोई क़र्ज़ है?” उन्होंने अर्ज़ किया, तीन दीनार, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या उस ने कोई तर्क छोड़ा है” उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, फ़रमाया: “अपने साथी की नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ो”, अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप उसकी नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ाइये और उस का क़र्ज़ मेरे ज़िम्मा रहा (में अदा करूंगा) तब आप ﷺ ने उसकी नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ाई| (बुखारी)

رواه البخاری (2289)

٢٩١٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَخَذَ أَمْوَالَ النَّاسِ يُرِيدُ أَدَاءَهَا أَدَّى اللَّهُ عَنْهُ وَمَنْ أَخَذَ يُرِيدُ إِتْلَافَهَا أَتْلَفَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

2910. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स बतौर क़र्ज़ लोगों का माल हासिल करता है और वह इसे अदा करना चाहता है तो अल्लाह तआला इसे अदा करने की तौफिक से नवाज़ता है, और जो शख़्स इसे तल्फ़ करने के लिए हासिल करता है तो अल्लाह तआला इसे तल्फ़ फरमादेगा”| (बुखारी)

رواه البخاری (2387)

٢٩١١ - (صَحِيح) وَعَن أبي قَتَادَة قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ إِنْ قُتِلْتُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ صَابِرًا مُحْتَسِبًا مُقبلا غير مُدبر يكفر اللَّهُ عَنِّي خَطَايَايَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نَعَمْ» . فَلَمَّا أَدْبَرَ نَادَاهُ فَقَالَ: «نَعَمْ إِلَّا الدَّيْنَ كَذَلِكَ قَالَ جِبْرِيلُ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2911. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए अगर में साबित कदमी से, सवाब की उम्मीद से अल्लाह की राह में दुश्मन का मुक़ाबला करते हुए शहीद हो जाऊ, तो क्या अल्लाह मेरे गुनाह मुआफ़ फरमादेगा? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: हाँ”, जब वह वापस चला गया तो आप ﷺ ने इसे आवाज़ दी, फ़रमाया: “हां, अलबत्ता क़र्ज़ मुआफ़ नहीं होगा, जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने इसी तरह कहा है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (117 / 1885)، (4880)

٢٩١٢ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يُغْفَرُ لِلشَّهِيدِ كل ذَنْب إِلَّا الدّين» . رَوَاهُ مُسلم

2912. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क़र्ज़ के सिवा शहीद के तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिए जाते हैं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (119 / 1886)، (4883)

٢٩١٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُؤْتَى بِالرَّجُلِ [ص:٨٨ الْمُتَوَفَّى عَلَيْهِ الدَّيْنُ فَيَسْأَلُ: «هَلْ تَرَكَ لِدَيْنِهِ قَضَاءً؟» فَإِنْ حُدِّثَ أَنَّهُ تَرَكَ وَفَاءً صَلَّى وَإِلَّا قَالَ لِلْمُسْلِمِينَ: «صَلُّوا عَلَى صَاحِبِكُمْ» . فَلَمَّا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْفُتُوحَ قَامَ فَقَالَ: «أَنَا أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ فَمَنْ تُوُفِّيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فَتَرَكَ دينا فعلي قَضَاؤُهُ وَمن ترك فَهُوَ لوَرَثَته»

2913. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, किसी मकरूज़ का जनाज़ा, रसूलुल्लाह ﷺ के पास लाया जाता तो आप ﷺ फरमाते: “क्या उस ने अपने क़र्ज़ की अदाइगी के लिए कुछ छोड़ा है?” अगर आप को बताया जाता के उस ने जो कुछ छोड़ा है उस से क़र्ज़ अदा हो जाएगा तो आप नमाज़े जनाज़ा पढ़ाते, वरना (न पढ़ाते) मुसलमानों से कहते: “अपने साथी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ो”, जब अल्लाह तआला ने आप को फुतुहात नसीब फरमाई तो आप ﷺ ने ख़िताब करते हुए फ़रमाया: “मैं मोमिनो का उनकी जानो से भी ज़्यादा हक़दार हूँ, जो मोमिन फौत हो जाए और वह मकरूज़ हो तो उस का क़र्ज़ मेरे ज़िम्मा है, और जो शख़्स माल छोड़ जाए तो वह उस के वुरसा के लिए है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2298) و مسلم (14 / 1619)، (4157)

दिवालिया होना और मुहलत देने का बयान • بَاب الإفلاس والانظار

दूसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّانِي

٢٩١٤ - (ضَعِيف) عَنْ أَبِي خَلْدَةَ الزُّرَقِيِّ قَالَ: جِئْنَا أَبَا هُرَيْرَةَ فِي صَاحِبٍ لَنَا قَدْ أَفْلَسَ فَقَالَ: هَذَا الَّذِي قَضَى فِيهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيُّمَا رَجُلٍ مَاتَ أَوْ أَفْلَسَ فَصَاحِبُ الْمَتَاعِ أَحَقُّ بِمَتَاعِهِ إِذَا وَجَدَهُ بِعَيْنِه» . رَوَاهُ الشَّافِعِي وَابْن مَاجَه

2914. अबू खल्दत ज़ुर्की बयान करते हैं, हम अपने एक साथी जो के मुफलिस हो गया था, के बारे में अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु के पास आए तो उन्होंने ने फ़रमाया: यह इस तरह का मुआमला है जिसके बारे में रसूलुल्लाह ﷺ ने फैसला किया “ जो शख़्स फौत हो जाए या मुफलिस हो जाए तो माल का मालिक इस माल का ज़्यादा हक़दार है जबकि वह इस माल को बिलकुल इसी हालत में पाए”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الشافعی فی الام (3 / 199) و ابن ماجه (2360)

٢٩١٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «نَفْسُ الْمُؤْمِنِ مُعَلَّقَةٌ بِدَيْنِهِ حَتَّى يُقْضَى عَنْهُ» . رَوَاهُ الشَّافِعِيُّ وَأَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

2915. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मोमिन की रूह अपने क़र्ज़ की वजह से मुअल्लक रहती है हत्ता के वह (क़र्ज़) उसकी तरफ से अदा कर दिया जाए”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الشافعی فی الام (1 / 279 ، 3 / 212) و احمد (2 / 440 ح 9677 ، 2 / 476 ح 10159) و الترمذی (10781079) و ابن ماجه (2413) و الدارمی (2 / 262 ح2594)

٢٩١٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَاحِبُ الدَّيْنِ مَأْسُورٌ بِدَيْنِهِ يَشْكُو إِلَى رَبِّهِ الْوَحْدَةَ يَوْمَ الْقِيَامَة» . رَوَاهُ فِي شرح السّنة

2916. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मकरूज़ शख़्स अपने क़र्ज़ की वजह से महबूस है, वह रोज़ ए कियामत अपने रब से तन्हाई की शिकायत करेगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البغوی فی شرح السنة (8 / 203 ح 2148) * مبارک بن فضالة مدلس و عنعن و له شاهد عند ابی داود (3341) و سنده ضعیف

٢٩١٧ - (لم تتمّ دراسته) وَرُوِيَ أَنَّ مُعَاذًا كَانَ يَدَّانُ فَأَتَى غُرَمَاؤُهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبَاعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَالَهُ كُلَّهُ فِي دَيْنِهِ حَتَّى قَامَ مُعَاذٌ بِغَيْرِ شَيْءٍ. مُرْسَلٌ هَذَا لَفْظُ الْمَصَابِيحِ. وَلَمْ أَجِدْهُ فِي الْأُصُول إِلَّا فِي الْمُنْتَقى

2917. मरवी है के मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु क़र्ज़ लिया करते थे, उन के क़र्ज़ ख्वाह नबी ﷺ की खिदमत में आए (और क़र्ज़ का मुतालबा किया) तो नबी ﷺ ने उन के क़र्ज़ की अदाइगी में उनका सारा माल फरोख्त कर दिया हत्ता के मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु के पास कोई चीज़ बाकी न रही| रिवायत मुरसल है, यह अल्फाज़ मसाबिह के हैं, मैंने मुन्तका के सिवा इसे उसूल की किताबो में नहीं पाया| (ज़ईफ़)

ضعيف ، انظر الحديث الآتى ، ذكره فى مصابيح السنة (2 / 345 ح 2145) و منتقى الاخبار (2 / 365 ح 2996)

٢٩١٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: كَانَ مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ شَابًّا سَخِيًّا وَكَانَ لَا يُمْسِكُ شَيْئًا فَلَمْ يَزَلْ يُدَانُ حَتَّى أَغْرَقَ مَالَهُ كُلَّهُ فِي الدَّيْنِ فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَلَّمَهُ لِيُكَلِّمَ غُرَمَاءَهُ فَلَوْ تَرَكُوا لِأَحَدٍ لَتَرَكُوا لِمُعَاذٍ لِأَجْلِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبَاعَ رَسُول الله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم مَالَهُ حَتَّى قَامَ مُعَاذٌ بِغَيْرِ شَيْءٍ. رَوَاهُ سعيد فِي سنَنه مُرْسلا

2918. अब्दुल रहमान बिन काब बिन मालिक बयान करते हैं, मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बड़े साबिर और सखी इंसान थे, वह कोई चीज़ पास नहीं रखते थे और हमेशा मकरूज़ रहते थे हत्ता के उनका सारा माल क़र्ज़ की अदाइगी में जाता रहा, वह नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और आप से अर्ज़ किया के आप उस के क़र्ज़ ख्वाहों से सिफारिश करे, अगर वह (क़र्ज़ ख्वाह) किसी को छोड़ते तो वह रसूलुल्लाह ﷺ की खातिर मुआज़ को छोड़ते, रसूलुल्लाह ﷺ ने उन (क़र्ज़ ख्वाहों) की खातिर मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु का सारा माल बेच दीया, हत्ता के मुआज़ के पास कोई चीज़ न बची| सुनन सईद बिन मनसुर यह रिवायत मुरसल है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، ذكره فى منتقى الاخبار (2996) * السند مرسل و رواه الحاكم (2 / 58 ح 2348 ، 3 / 273 ح 5192) من حديث الزهرى عن عبد الرحمن بن كعب عن ابيه و صححه على شرط الشيخين و وافقه الذهبى ، قلت : فيه الزهرى مدلس و عنعن و الصواب فيه انه مرسل

٢٩١٩ - (صَحِيح) وَعَنِ الشَّرِيدِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيُّ الْوَاجِدِ يُحِلُّ عِرْضَهُ وَعُقُوبَتَهُ» قَالَ ابْنُ الْمُبَارَكِ: يُحِلُّ عِرْضَهُ: يُغَلَّظُ لَهُ. وَعُقُوبَتَهُ: يُحْبَسُ لَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ

2919. शरीद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “(क़र्ज़ की अदाइगी में) टाल मटोल करने वाले माल दार शख़्स की बेईज्ज़ती करना और इसे सज़ा देना जाईज़ है”| इब्ने मुबारक रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: उसकी बेईज्ज़ती करने से यह मुराद है के उस से सख्त कलाम करना जाईज़ है, और उस को सज़ा देने से मुराद है के इसे क़ैद करना जाईज़ है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3628) و النسائى (7 / 316317 ح 46934694)

٢٩٢٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: أَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِجِنَازَةٍ لِيُصَلِّيَ عَلَيْهَا فَقَالَ: «هَلْ عَلَى صَاحِبِكُمْ دَيْنٌ؟» قَالُوا: نَعَمْ قَالَ: «هَلْ تَرَكَ لَهُ مِنْ وَفَاءٍ؟» قَالُوا: لَا قَالَ: «صَلُّوا عَلَى صَاحِبِكُمْ» قَالَ عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ: عَلَيَّ دَيْنُهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَتَقَدَّمَ فَصَلَّى عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ مَعْنَاهُ وَقَالَ: «فَكَّ اللَّهُ رِهَانَكَ مِنَ النَّارِ كَمَا فَكَكْتَ رِهَانَ أَخِيكَ الْمُسْلِمِ لَيْسَ مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يَقْضِي عَنْ أَخِيهِ دَيْنَهُ إِلَّا فَكَّ اللَّهُ رِهَانَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ

2920. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ के पास एक जनाज़ा लाया गया ताकि आप उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़े, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम्हारे साथी पर क़र्ज़ है?” उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने पूछा: “क्या उस ने उसकी अदाइगी के लिए कोई माल छोड़ा है?” उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, फ़रमाया: “तुम अपने साथी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ो”, अली बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! उस का क़र्ज़ मेरे जिम्मे रहा, तो फिर आप आगे बढ़े और उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी| और एक दूसरी रिवायत में इसी का हम मानी मफ्हुम रिवायत किया गया है, और फ़रमाया: “अल्लाह ने तुम्हारी गर्दन को आग से आज़ाद कर दिया जैसे तुमने अपने मुसलमान भाई की गर्दन को आज़ाद करा दीया, जो कोई मुसलमान बंदा अपने भाई की तरफ से उस का क़र्ज़ अदा करता है तो रोज़ ए कियामत अल्लाह उसकी गर्दन को (आग से) आज़ाद फरमाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البغوی فی شرح السنة (8 / 213214 ح 2155) [و الدارقطنی (3 / 78 ح 3063) و البیهقی (6 / 73)] * فیه عبیدالله بن الولید الوصافی (ضعیف) عن عطیة بن سعد العوفی (ضعیف مدلس) عن ابی سعید به و قال البیهقی فی عبید الله :’’ هو ضعیف جدًا‘‘

٢٩٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ [ص:٨٨ مَاتَ وَهُوَ بَرِيءٌ مِنَ الْكِبْرِ وَالْغُلُولِ وَالدَّيْنِ دَخَلَ الْجَنَّةَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه والدارمي

2921. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स इस हाल में फौत हो के वह कबरो खयानत और क़र्ज़ से बरी हो तो वह जन्नत में दाखिल होगा”| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (1572) و ابن ماجه (2412) و الدارمی (2 / 262 ح 2595) * و للحدیث شواهد

٢٩٢٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ أَعْظَمَ الذُّنُوبِ عِنْدَ اللَّهِ أَنْ يَلْقَاهُ بِهَا عَبْدٌ بَعْدَ الْكَبَائِرِ الَّتِي نَهَى اللَّهُ عَنْهَا أَنْ يَمُوتَ رَجُلٌ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ لَا يَدَعُ لَهُ قَضَاءً» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

2922. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “कबिराह गुनाहों के बाद, अल्लाह के यहाँ सबसे बड़ा गुनाह जिस से अल्लाह ने मना फ़रमाया है के यह है कि बंदा मरने के बाद अपने रब से इस हाल में मुलाकात करे के उस के ज़िम्मा क़र्ज़ हो और वह उसकी अदाइगी के लिए कोई चीज़ न छोड़े”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (4 / 392 ح 19724) و ابوداؤد (2342)

٢٩٢٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عَمْرو بن عَوْف الْمُزَنِيِّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الصُّلْحُ جَائِزٌ بَيْنَ الْمُسْلِمِينَ إِلَّا صُلْحًا حَرَّمَ حَلَالًا أَوْ أَحَلَّ حَرَامًا وَالْمُسْلِمُونَ عَلَى شُرُوطِهِمْ إِلَّا شَرْطًا حَرَّمَ حَلَالًا أَوْ أَحَلَّ حَرَامًا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَأَبُو دَاوُدَ وَانْتَهَتْ رِوَايَته عِنْد قَوْله «شروطهم»

2923. अमर बिन ऑफ मुज़नी रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मुसलमानों के दरमियान सुलह जाईज़ है, ऐसी सुलह के सिवा जो किसी हलाल को हराम कर दे या किसी हराम को हलाल कर दे, और इस शर्त के सिवा जो हलाल को हराम कर दे या हराम को हलाल कर दे, मुसलमान अपने शर्तो पर साबित है"| तिरमिज़ी, इब्ने माजा अबू दावुद और उनकी रिवायत ((عَلیٰ شُرُوْطِهِمْ)) तक है| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (1352 وقال : حسن صحیح) و ابن ماجه (2353) [و ابوداؤد (3594) من حدیث ابی ھریرۃ رضی اللہ عنه و سندہ حسن] * سندہ ضعیف جدًا و للحدیث شواھد عند ابی داود و غیرہ وھو بھا صحیح

بَاب الإفلاس والانظار • दिवालिया होना और मुहलत देने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٩٢٤ - (لم تتمّ دراسته) عَن سُوَيْد بن قيس قَالَ: جَلَبْتُ أَنَا وَمَخْرَفَةُ الْعَبْدِيُّ بَزًّا مِنْ هَجَرٍ فَأَتَيْنَا بِهِ مَكَّةَ فَجَاءَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمْشِي فَسَاوَمَنَا بِسَرَاوِيلَ فَبِعْنَاهُ وَثمّ رجل يزن بِالْأَجْرِ فَقَالَ لَهُ رَسُول الله: «زِنْ وَأَرْجِحْ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

2924. सुवैद बिन कैस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं और मखरफ अब्दी तिजारत के लिए हजर से कपड़ा लेकर मक्का आए तो रसूलुल्लाह ﷺ पैदल चलते हुए हमारे पास तशरीफ़ लाए और आप ने एक सलवार के कपड़े की हम से कीमत तेअ की तो हमने आप को फरोख्त कर दिया, वहां एक आदमी था जो उजरत पर वज़न किया करता था, रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: "वज़न कर और झुकता वज़न कर"| (यानी पुरे से कुछ ज़्यादा)| अहमद अबू दावुद, तिरमिज़ी, इब्ने माजा दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

صحیح ، رواہ احمد (4 / 352 ح 19308) و ابوداؤد (3336) و الترمذی (1305) و ابن ماجه (2220) و الدارمی (2 / 240 ح 2588)

٢٩٢٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: كَانَ لِي عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَيْنٌ فَقَضَانِي وَزَادَنِي. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2925. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मेरा नबी ﷺ पर कुछ क़र्ज़ था, आप ﷺ ने वह मुझे अदा किया और मुझे मज़ीद अता किया| (सहीह)

صحیح ، رواہ ابوداؤد (3347) [و البخاری (443 ، 2394) و مسلم (715)]

٢٩٢٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبد الله بن أبي ربيعَة قَالَ: اسْتَقْرَضَ مِنِّي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرْبَعِينَ أَلْفًا فَجَاءَهُ مَالٌ فَدَفَعَهُ إِلَيَّ وَقَالَ: «بَارَكَ اللَّهُ تَعَالَى فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ إِنَّمَا جَزَاءُ السَّلَفِ الْحَمْدُ وَالْأَدَاءُ» . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ

2926. अब्दुल्लाह बिन अबी रबिआ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने मुझ से चालीस हज़ार दिरहम क़र्ज़ लिया, आप ﷺ के पास माल आया तो आप ने वह मुझे वापस कर दिया, और फ़रमाया: “अल्लाह तआला तुम्हारे अहल व माल में बरकत फरमाए, क़र्ज़ की जज़ा ही शुक्रिया अदा करना और क़र्ज़ अदा करना है”| (हसन)

حسن ، رواہ النسائی (7 / 314 ح 46ئ87) و ابن ماجہ (2424)

٢٩٢٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ كَانَ لَهُ عَلَى رَجُلٍ حَقٌّ فَمَنْ أَخَّرَهُ كَانَ لَهُ بِكُلِّ يَوْمٍ صَدَقَةٌ» . رَوَاهُ أَحْمد

2927. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “किसी का किसी शख़्स पर कोई हक़ हो, और वह (हक़ लेने वाला) इसे मुहलत दे तो हर रोज़ के बदले इसे सदका का सवाब मिलेगा| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف جدا ، رواہ احمد (4 / 443 ح 20219) * فیہ الاعمش (ثقۃ مدلس) عن ابی داود (الاعمی : کذاب) عن عمران بہ ، و حدیث بریدۃ :’’ من انظر معسرًا فلہ بکل یوم مثلہ صدقۃ ‘‘ یغنی عنہ ، رواہ احمد (5 / 360 ح 23434) و سندہ صحیح و صححہ الحاکم علی شرط الشیخین (2 / 29) و وافقہ الذھبی

٢٩٢٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سعد بن الأطول قَالَ: مَاتَ أَخِي وَتَرَكَ ثَلَاثَمِائَةِ دِينَارٍ وَتَرَكَ وَلَدًا صِغَارًا فَأَرَدْتُ أَنْ أُنْفِقَ عَلَيْهِمْ فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِن أخلك مَحْبُوسٌ بِدَيْنِهِ فَاقْضِ عَنْهُ» . قَالَ: فَذَهَبْتُ فَقَضَيْتُ عَنهُ وَلم تبْق إِلَّا امْرَأَةٌ تَدَّعِي دِينَارَيْنِ وَلَيْسَتْ لَهَا بَيِّنَةٌ قَالَ: «أَعْطِهَا فَإِنَّهَا صَادِقَة» . رَوَاهُ أَحْمد

2928. सईद बिन अतवल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मेरा भाई फौत हो गया और उस ने तीन सौ दीनार और छोटे छोटे बच्चे छोड़े, मैंने इरादा किया की मैं (ये रकम) इन पर खर्च करू, लेकिन रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “तेरा भाई अपने क़र्ज़ की वजह से महबूस है, (पहले) उसकी तरफ से क़र्ज़ अदा करो”, वह बयान करते हैं, मैं गया और उसकी तरफ से क़र्ज़ अदा किया, फिर मैं वापस आया तो अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने उसकी तरफ से सारा क़र्ज़ अदा कर दिया है, सिर्फ एक औरत बाकी रह गई है जो दो दीनार का मुतालबा करती है,

जबकि उस के पास कोई दलील नहीं ?, आप ﷺ ने फ़रमाया: "इसे दे दो क्योंकि वह सच्ची है"| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (5 / 7 ح 2033620337 ، 4 / 136 ح 17359 و اللفظ له) [و ابن ماجه : 2433] * عبد المك ابو جعفر مجهول الحال و للحديث شاهد صحيح عند احمد (5 / 7) و غيره دون قوله :'' و ترک ثلاثمائة ''۔

٢٩٢٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جَحْشٍ قَالَ: كُنَّا جُلُوسًا بِفِنَاءِ الْمَسْجِدِ حَيْثُ يُوضَعُ الْجَنَائِزِ وَرَسُول الله جَالِسٌ بَيْنَ ظَهْرَيْنَا فَرَفَعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَصَره قبل السَّمَاء فَنظر ثُمَّ طَأْطَأَ بَصَرَهُ وَوَضَعَ يَدَهُ عَلَى جَبْهَتِهِ قَالَ: «سُبْحَانَ الله سُبْحَانَ الله مَا نَزَلَ مِنَ التَّشْدِيدِ؟» قَالَ: فَسَكَتْنَا يَوْمَنَا وَلَيْلَتَنَا فَلَمْ نَرَ إِلَّا خَيْرًا حَتَّى أَصْبَحْنَا قَالَ مُحَمَّدٌ: فَسَأَلْتُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا التَّشْدِيدُ الَّذِي نَزَلَ؟ قَالَ: «فِي الدَّيْنِ وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَوْ أَنَّ رَجُلًا قُتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ عَاشَ ثُمَّ قُتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ عَاشَ ثُمَّ قُتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ عَاشَ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ مَا دَخَلَ الْجَنَّةَ حَتَّى يُقْضَى دَيْنُهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَفِي شَرْحِ السُّنَّةِ نَحْوَهُ

2929. मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन जहश रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम मस्जिद के सहन में बैठें हुए थे जहाँ जनाज़े रखे जाते थे, जबकि रसूलुल्लाह ﷺ हमारे दरमियान बैठें हुए थे, रसूलुल्लाह ﷺ ने आसमान की तरफ नज़र उठाकर देखा फिर नज़र को झुकाया और अपना हाथ अपने पेशानी पर रख कर (ताज्जुब से) फ़रमाया: "(سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह केसी सख्ती नाज़िल हुई", रावी बयान करते हैं, हम दिन भर और पूरी रात ख़ामोश रहे और हमने खैर ही खैर देखी हत्ता के सुबह हो गई, मुहम्मद (रावी) बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया, वह कौन सा अज़ाब है जो नाज़िल हुआ? आप ﷺ ने फ़रमाया: "क़र्ज़ के बारे में, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद (ﷺ) की जान है! अगर कोई आदमी अल्लाह की राह में शहीद कर दिया जाए वह फिर जिंदा हो फिर अल्लाह की राह में शहीद कर दिया जाए फिर जिंदा हो फिर अल्लाह की राह में शहीद कर दिया जाए, फिर जिंदा हो, और उस के नामे क़र्ज़ हो तो वह जन्नत में नहीं जाएगा, हत्ता के उस का क़र्ज़ अदा कर दिया जाए"| अहमद और शरह सुन्ना में उसकी मिस्ल है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (5 / 289290 ح 22860) و البغوى فى شرح السنة (8 / 201 ح 2145) [و النسائى (7 / 314 ، 315 ح 4688]

शिरकत और वकालत का बयान • بَاب الشّركَة وَالْوكَالَة

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٩٣٠ - (صَحِيح) عَن زهرَة بن معبد: أَنَّهُ كَانَ يَخْرُجُ بِهِ جَدُّهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ هِشَامٍ إِلَى السُّوقِ فَيَشْتَرِي الطَّعَامَ فَيَلْقَاهُ ابْنُ عُمَرَ وَابْنُ الزُّبَيْرِ فَيَقُولَانِ لَهُ: أَشْرِكْنَا فَإِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ دَعَا لَكَ بِالْبَرَكَةِ فَيُشْرِكُهُمْ فَرُبَّمَا أَصَابَ الرَّاحِلَةَ كَمَا هِيَ فَيَبْعَثُ بِهَا إِلَى الْمَنْزِلِ وَكَانَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ هِشَامٍ ذَهَبَتْ بِهِ أُمُّهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَسَحَ رَأسه ودعا لَهُ بِالْبركَةِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2930. जुहरा बिन मअबद से रिवायत है के उन के दादा अब्दुल्लाह बिन हिश्शाम रदियल्लाहु अन्हु उन्हें बाज़ार ले जाते और गल्ला खरीदते, फिर इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा और इब्ने जुबैर रदियल्लाहु अन्हु उन्हें मिलते तो वह उन्हें (अब्दुल्लाह बिन हिश्शाम रदियल्लाहु अन्हु से) कहते हमें भी शरीक कर लो, क्योंकि नबी ﷺ ने आप के लिए बरकत की दुआ फरमाई है, वह उन्हें शरीक कर लेते, बसा-अवक़ात उन्हें पुरे ऊंट के सामान का नफा हो जाता तो वह इसे अपने घर की तरफ भेज देते, और अब्दुल्लाह बिन हिश्शाम रदियल्लाहु अन्हु को उनकी वालिदा नबी ﷺ के पास लेकर गई थी तो आप ने उस के सर पर प्यार से हाथ फेरा और उस के लिए बरकत की दुआ की थी| (बुखारी)

رواه البخارى (2501)

٢٩٣١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَتِ الْأَنْصَارُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اقْسِمْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ إِخْوَاننَا النخيل قَالَ: «لَا تكفوننا المؤونة وَنَشْرَكُكُمْ فِي الثَّمَرَةِ» . قَالُوا: سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2931. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अंसार ने नबी ﷺ से अर्ज़ किया, आप हमारे और हमारे (मुहाजिर) भाइयो के दरमियान खजूरो के दरख्त तकसीम फरमादे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं,(इन्होंने मुहाजरिन से कहा) तुम मेहनत करो, हम तुम्हें पैदावार में शरीक कर लेंगे, उन्होंने (मुहाजरिन) ने कहा, हम ने सुन लिया और हमने मान लिया| (बुखारी)

رواه البخارى (2325)

٢٩٣٢ - (صَحِيح) وَعَن عُرْوَة بن أبي الْجَعْد الْبَارِقِي: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْطَاهُ دِينَارًا لِيَشْتَرِيَ بِهِ شَاةً فَاشْتَرَى لَهُ شَاتين فَبَاعَ إِحْدَاهمَا بِدِينَار وَأَتَاهُ بِشَاة ودينار فَدَعَا لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَيْعِهِ بِالْبَرَكَةِ فَكَانَ لَوِ اشْتَرَى تُرَابا لربح فِيهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2932. उरवा बिन अबी जअद अल बारकी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें एक दीनार दीया ताकि वह आप ﷺ के लिए एक बकरी ख़रीदे, उस ने आप ﷺ के लिए दो बकरिया खरीदी, और फिर उनमें से एक बकरी एक दीनार में फरोख्त कर दी, और एक बकरी और एक दीनार आप की खिदमत में पेश कर दिया, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उसकी बेअ में बरकत की दुआ फरमाई, पस अगर वह मिट्टी भी खरीद लेते तो उस में नफा कमाते थे| (बुखारी)

رواه البخاری (3642)

بَاب الشّركَة وَالْوكَالَة • शिरकत और वकालत का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٩٣٣ - (لم تتمّ دراسته) عَن أبي هُرَيْرَة رَفَعَهُ قَالَ: " إِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ يَقُولُ: أَنا ثَالِث الشَّرِيكَيْنِ مَا لم يخن صَاحِبَهُ فَإِذَا خَانَهُ خَرَجْتُ مِنْ بَيْنِهِمَا ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَزَاد رزين: «وَجَاء الشَّيْطَان»

2933. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु मरफुअ रिवायत बयान करते हैं, कि अल्लाह अज्ज़वजल फरमाता है " जब दो शराकत दारो में से कोई एक अपने साथी से खयानत नहीं करता तो मैं उनका तीसरा होता हूँ, जब वह उस से खयानत करता है तो मैं इन दोनों में से निकल जाता हूँ"| अबू दावुद, और रजिन ने यह इज़ाफा नकल किया है: "और शैतान जाता है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3383) و رزین (لم اجده ، و زیادته '' و جاء الشیطان '' : لم اجده)

٢٩٣٤ - (صَحِيح) وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَدِّ الْأَمَانَةَ إِلَى مَنِ ائْتَمَنَكَ وَلَا تَخُنْ مَنْ خَانَكَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ

2934. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जो शख़्स तुम्हारे पास अमानत रखे तो तुम अमानत वापस कर दो, और जो शख़्स तुम से खयानत करे तो तुम उस से खयानत न करो"| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ الترمذی (1264 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (3535) و الدارمی (2 / 264 ح 2600) * شریک القاضی مدلس و عنعن و قیس بن الربیع ضعیف ضعفه الجمهور و للحدیث شواھد ضعیفة

٢٩٣٥ - وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: أَرَدْتُ الْخُرُوجَ إِلَى خَيْبَرَ فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ وَقُلْتُ: إِنِّي أَرَدْتُ الْخُرُوجَ إِلَى خَيْبَرَ فَقَالَ: «إِذَا أَتَيْتَ وَكِيلِي فَخُذْ مِنْهُ خَمْسَةَ عَشَرَ وَسْقًا فَإِنِ ابْتَغَى مِنْكَ آيَةً فَضَعْ يدك على ترقوته» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2935. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने खैबर जाने का इरादा किया तो मैंने नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर होकर सलाम किया और अर्ज़ किया, मैं खैबर जाने का इरादा रखता हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जब तुम मेर वकील के पास जाओ तो उस से पन्द्रह वुसक खजूरे ले लेना, और अगर वह तुझ से कोई निशानिया तलब करे तो अपना हाथ उस के हलक पर रख देना"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3632) * محمد بن اسحاق بن يسار مدلس و لم اجد تصريح سماعه

بَاب الشّركَة وَالْوكَالَة • शिरकत और वकालत का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٩٣٦ - (لم تتمّ دراسته) عَن صُهَيْبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " ثَلَاثٌ فِيهِنَّ الْبَرَكَةُ: [ص:٨٨ الْبَيْعُ إِلَى أَجَلٍ والمقارضة واخلاط الْبُرِّ بِالشَّعِيرِ لِلْبَيْتِ لَا لِلْبَيْعِ ". رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه

2936. सहियब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तीन चीजों में बरकत है, एक मुद्दत तक (उधार) बेअ करना, मुज़ारबत करना और गंदुम में जौ मिलाना घर में इस्तेमाल के लिए तिजारत के लिए नहीं"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه ابن ماجه (2289) * فيه نصر بن القاسم : مجهول و صالح : مجهول الحال و قال العقيلى فى عبد الرحيم :'' مجهول بالنقل ، حديثه غير محفوظ '' فالسند مظلم و قال الذهبى :'' اسناد مظلم و المتن باطل '' و اورده ابن الجوزى فى الموضوعات (2 / 248249)

٢٩٣٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن حَكِيم بن حزَام أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ مَعَهُ بِدِينَارٍ لِيَشْتَرِيَ لَهُ بِهِ أُضْحِيَّةً فَاشْتَرَى كَبْشًا بِدِينَارٍ وَبَاعَهُ بِدِينَارَيْنِ فَرَجَعَ فَاشْتَرَى أُضْحِيَّةً بِدِينَارٍ فَجَاءَ بِهَا وَبِالدِّينَارِ الَّذِي اسْتَفْضَلَ من الْأُخْرَى فَتصدق رَسُول الله صلى بِالدِّينَارِ فَدَعَا لَهُ أَنْ يُبَارَكَ لَهُ فِي تِجَارَته. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2937. हकिम बिन हिज़ाम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे एक दीनार दे कर भेजा ताकि वह उस से आप के लिए कुर्बानी ख़रीदे, उस ने एक दीनार का मेंढा खरीदा और दो दीनार में बेच दिया, वह फिर वापस गया और एक दीनार की कुर्बानी खरीदी, और वह कुर्बानी का जानवर और वह दीनार जो मुनाफा हुआ था लेकर हाज़िर हुआ, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने वह दीनार सदका कर दिया और उस के लिए दुआ फरमाई के उसकी तिजारत में बरकत डाल दी जाए| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1257) [و ابوداؤد :3386] * حبيب بن ابى ثابت مدلس و عنعن وهو '' شيخ من اهل المدينة '' فى رواية ابى داود (3386)

गसब करने और उधार लेने का बयान • بَاب الْغَصْبِ وَالْعَارِيَة

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٢٩٣٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن سعيد بْنِ زَيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَخَذَ شِبْرًا مِنَ الْأَرْضِ ظُلْمًا فَإِنَّهُ يُطَوَّقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ سبع أَرضين»

2938. सईद बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स ज़ुल्म से बालिश्त बराबर ज़मीन हासिल करता है तो रोज़ ए कियामत सात ज़मीनों का तोक उस के गले में डाला जाएगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

رواه البخاری (3198) و مسلم (140 / 1610)، (4135)

٢٩٣٩ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَحْلُبَنَّ أَحَدٌ مَاشِيَةَ امْرِئٍ بِغَيْرِ إِذْنِهِ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يُؤْتى مشْربَته فتكسر خزانته فَيُنْتَقل طَعَامُهُ وَإِنَّمَا يَخْزُنُ لَهُمْ ضُرُوعُ مَوَاشِيهِمْ أَطْعِمَاتِهِمْ» . رَوَاهُ مُسلم

2939. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कोई शख़्स किसी आदमी की इजाज़त के बगैर उस के जानवर का दूध न धोए, क्या तुम में से कोई शख़्स पसंद करता है की उस के कमरे में जा कर गोदाम का ताला तोड़ दिया जाए और उस का अनाज वगैरा निकाल लिया जाए, इसी तरह उन के जानवरों के थन उन के खाने को जमा व महफ़ूज़ रखते है”| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (13 / 1726)، (4511)

٢٩٤٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عِنْدَ بَعْضِ نِسَائِهِ فَأَرْسَلَتْ إِحْدَى أُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِينَ بِصَحْفَةٍ فِيهَا طَعَامٌ فَضَرَبَتِ الَّتِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَيْتِهَا يَدَ الْخَادِمِ فَسَقَطَتِ الصَّحْفَةُ فَانْفَلَقَتْ فَجَمَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِلَقَ الصَّحْفَةِ ثُمَّ جَعَلَ يَجْمَعُ فِيهَا الطَّعَامَ الَّذِي كَانَ فِي الصَّحْفَةِ وَيَقُولُ: «غَارَتْ أُمُّكُمْ» ثُمَّ حَبَسَ الْخَادِمَ حَتَّى أُتِيَ بِصَحْفَةٍ مِنْ عِنْدِ الَّتِي هُوَ فِي بَيْتُهَا فَدَفَعَ الصَّحْفَةَ [ص:٨٨ الصَّحِيحَةَ إِلَى الَّتِي كُسِرَتْ صَحْفَتُهَا وَأَمْسَكَ الْمَكْسُورَةَ فِي بَيْتِ الَّتِي كَسَرَتْ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2940. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ अपने किसी ज़ौजा ए मोहतरमा के पास थे तो आप की किसी ज़ौजा ए मोहतरमा ने पलेट में खाना भेजा तो जिन के घर नबी ﷺ तशरीफ़ फरमा थे उन्होंने खादिम के हाथ पर मारा तो वह पलेट गिर कर तूट गई, नबी ﷺ ने पलेट के टुकड़े इकठ्ठे किए, और बिखरे हुए खाने को उठाया, साथ में कहने लगे: “तुम्हारी माँ ने गैरत खाई”, फिर आप ने खादिम को रोका हत्ता के इसे ज़ौजा ए

मोहतरमा के घर से, जिन के घर आप तशरीफ़ फरमा थे सहीह पलेट दी और वह टूटी हुई पलेट इस ज़ौजा ए मोहतरमा के घर रख दी जिन्होंने तोड़ी थी| (बुखारी)

رواه البخاری (5225)

٢٩٤١ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن يزِيد عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّهُ نهى عَن النهبة والمثلة. رَوَاهُ البُخَارِيّ

2941. अब्दुल्लाह बिन यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने डाका डालने और मुसला करने (मय्यत के आज़ा काटने) से मना फ़रमाया| (बुखारी)

رواه البخاری (2474)

٢٩٤٢ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: انْكَسَفَتِ الشَّمْسُ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ مَاتَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَصَلَّى بِالنَّاسِ سِتَّ رَكَعَاتٍ بِأَرْبَعِ سَجَدَاتٍ فَانْصَرَفَ وَقَدْ آضَتِ الشَّمْسُ وَقَالَ: " مَا مِنْ شَيْءٍ تُوعَدُونَهُ إِلَّا قَدْ رَأَيْتُهُ فِي صَلَاتِي هَذِهِ لَقَدْ جِيءَ بِالنَّارِ وَذَلِكَ حِينَ رَأَيْتُمُونِي تَأَخَّرْتُ مَخَافَةَ أَنْ يُصِيبَنِي مِنْ لَفْحِهَا وَحَتَّى رَأَيْتُ فِيهَا صَاحِبَ الْمِحْجَنِ يَجُرُّ قُصْبَهُ فِي النَّارِ وَكَانَ يسرق الْحَاج بمحجنه فَإِن فطن لَهُ قَالَ: إِنَّمَا تعلق بمحجني وَإِنْ غُفِلَ عَنْهُ ذَهَبَ بِهِ وَحَتَّى رَأَيْتُ فِيهَا صَاحِبَةَ الْهِرَّةِ الَّتِي رَبَطَتْهَا فَلَمْ تُطْعِمْهَا وَلَمْ تَدَعْهَا تَأْكُلُ مِنْ خَشَاشِ الْأَرْضِ حَتَّى مَاتَتْ جُوعًا ثُمَّ جِيءَ بِالْجَنَّةِ وَذَلِكَ حِينَ رَأَيْتُمُونِي تَقَدَّمْتُ حَتَّى قُمْتُ فِي مَقَامِي وَلَقَدْ مَدَدْتُ يَدِي وَأَنَا أُرِيدُ أَنْ أَتَنَاوَلَ مِنْ ثَمَرَتِهَا لِتَنْظُرُوا إِلَيْهِ ثُمَّ بَدَا لِي أَنْ لَا أفعل ". رَوَاهُ مُسلم

2942. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के दौर मैं रसूलुल्लाह ﷺ के बेटे इब्राहीम की वफात के दिन सूरज ग्रहन हुआ तो आप ने छे रुकूओ और चार सजदो से सहाबा को (दो रकअत) नमाज़ पढ़ाई, आप नमाज़ से फारिग़ हुए तो सूरज अपने असल की (चमकदार) हालत पर आ चूका था, और आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस जिस चिज़ का तुम से वादा किया गया मैंने अपनी इस नमाज़ में उसे देख लिया, जहन्नम मेरे सामने लाइ गई और यह इस वक़्त थी जब तुम ने मुझे देखा की मैं, इस अंदेशे के पेशे नज़र के कहे उसकी हरारत मुझे अपने लपेट में ले ले, पीछे हट गया, हत्ता के मैंने खुन्दी वाले शख़्स को आग में अपने अंतड़ियाँ घसीटते हुए देखा, वह अपने खुन्दी से हाजियों की चीज़े चुराया करता था अगर पता चल जाता तो कहता यह चीज़े खुन्दी से लटक गई थी, और अगर पता न चलता तो वह इसे ले जाता, और हत्ता के मैंने उस में बिल्ली वाली खातून भी देखी जिस ने इसे बांध रखा था, वह इसे खुद खिलाती न इसे छोड़ देती के वह ज़मीन के कीड़े मकोड़े खा लेती, हत्ता के वह भूख से मर गई, फिर जन्नत पेश की गई, और यह इस वक़्त था जब तुम ने मुझे आगे बढ़ते हुए देखा हत्ता कि मैं अपने जगह पर खड़ा हो गया और मैंने अपना हाथ बढ़ाया और मैं उस का फल लेना चाहता था के तुम उसे देख लो लेकिन फिर मुझे ज़ाहिर हुआ की में (ऐसे) न करू”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (10 / 904)، (2102)

٢٩٤٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن قَتَادَة قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا يَقُولُ: كَانَ فَزَعٌ بِالْمَدِينَةِ فَاسْتَعَارَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَسًا مِنْ أَبِي طَلْحَةَ يُقَالُ لَهُ: الْمَنْدُوبُ فَرَكِبَ فَلَمَّا رَجَعَ قَالَ: «مَا رَأَيْنَا مِنْ شَيْءٍ وَإِن وَجَدْنَاهُ لبحرا»

2943. क़तादाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अनस रदियल्लाहु अन्हु को बयान करते हुए सुना: मदीना में (दुश्मन की आमद का) शोर सा उठा तो नबी ﷺ ने अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु से मंदुब नामी घोड़ा उधार लिया और उस पर सवार हो गए, जब आप ﷺ वापस तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया: “हमने कोई चीज़ नहीं देखी, अलबत्ता हमने (तेज़ रफ़्तार में) इसे समुन्दर पाया”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2627) و مسلم (49 / 2307)، (6007)

بَاب الْغَصْب وَالْعَارِية • गसब करने और उधार लेने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٩٤٤ - (صَحِيح) عَن سعيد بْنِ زَيْدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: «من أحيى أَرْضًا مَيْتَةً فَهِيَ لَهُ وَلَيْسَ لِعِرْقٍ ظَالِمٍ حق» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

2944. सईद बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स बंजर ज़मीन को आबाद करे तो वह इसी की है जबकि रग ज़ालिम का कोई हक़ नहीं”| (गैर की ज़मीन में काश्तकारि का कोई हक़ नहीं)| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (3 / 356 ح 14900) و الترمذی (1378) و ابوداؤد (3073)

٢٩٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ مَالِكٌ عَنْ عُرْوَةَ مُرْسَلًا. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

2945. इमाम मालिक ने उरवा से मुरसल रिवायत किया है, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه مالک (2 / 743 ح 1495) [و الحدیث السابق (2944) شاھد له]

٢٩٤٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي حرَّة الرقاشِي عَن عَمه قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «أَلا تَظْلِمُوا أَلَا لَا يَحِلُّ مَالُ امْرِئٍ إِلَّا بِطِيبِ نَفْسٍ مِنْهُ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَان وَالدَّارَقُطْنِيّ فِي الْمُجْتَبى

2946. अबू हुर्रतुल र्क्काशी अपने चचा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "सुन लो! ज़ुल्म न करो, किसी मुसलमान का माल उसकी ख़ुशी के बगैर हलाल नहीं"| (हसन)

حسن ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (5492 ، نسخة محققة : 5105 و السنن الكبرى 8 / 182) و الدارقطنى (3 / 26) [و احمد (5 / 7273 ح 20695)] * فيه على بن زيد بن جدعان : ضعيف مشهور و للحديث شواهد عند ابن حبان (1166) و غيره وهو بها حسن

٢٩٤٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عمرَان ابْن حُصَيْنٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: «لَا جَلَبَ وَلَا جَنَبَ وَلَا شِغَارَ فِي الْإِسْلَامِ وَمَنِ انْتَهَبَ نُهْبَةً فَلَيْسَ مِنَّا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

2947. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: "इस्लाम में जलब, जनब और शिगार नहीं और जो शख़्स कोई लूट मार करे तो वह हम में से नहीं"| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (1123 وقال : حسن صحيح)

٢٩٤٨ - وَعَن السَّائِب بن يزِيد عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا [ص:٨٩ يَأْخُذُ أَحَدُكُمْ عَصَا أَخِيهِ لَاعِبًا جَادًّا فَمَنْ أَخَذَ عَصَا أَخِيهِ فَلْيَرُدَّهَا إِلَيْهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَرِوَايَتُهُ إِلَى قَوْله: «جادا»

2948. साइब बिन यज़ीद अपने वालिद से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में से कोई शख़्स अपने भाई की लाठी हंसी मज़ाक के तौर पर इसे गुस्से दिलाने के लिए न ले, जो शख़्स अपने भाई की लाठी ले ले तो वह इसे वापस कर दे"| तिरमिज़ी, अबू दावुद, और अबू दावुद की रिवायत (جَادًّا) तक है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (2160 وقال : حسن غريب) و ابوداؤد (5003)

٢٩٤٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سَمُرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ وَجَدَ عَيْنَ مَالِهِ عِنْدَ رَجُلٍ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ وَيَتَّبِعُ الْبَيِّعُ مَنْ بَاعَهُ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

2949. समुरह रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जो शख़्स अपना माल मसरुक बिलकुल इसी हालत में किसी शख़्स के पास पाए तो वह शख़्स इस (को हासिल करने) का ज़्यादा हक़दार है और खरीदार इस बेचने वाले का पीछा करेगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 13 ح 20410) و ابوداؤد (3531) و النسائى (7 / 314 ح 4685) * قتادة مدلس و عنعن و للحديث طريق آخر ضعيف عند احمد (20408) فيه حجاج بن ارطاة ضعيف مدلس و عنعن و حديث النسائى (7 / 313 ح 4684) يخالفه و سنده صحيح

٢٩٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «عَلَى الْيَدِ مَا أَخَذَتْ حَتَّى تُؤَدِّيَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

2950. समुरह रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "हाथ पर वाजिब है के उस ने जो लिया है के वापस करे"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1266 وقال : حسن صحیح) رواه ابوداؤد (3541) و ابن ماجه (2400) * قتادة مدلس و عنعن

٢٩٥١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن حَرَامِ بْنِ سَعْدِ بْنِ مُحَيِّصَةَ: أَنَّ نَاقَةً لِلْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ دَخَلَتْ حَائِطًا فَأَفْسَدَتْ فَقَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَن أَهْلِ الْحَوَائِطِ حِفْظَهَا بِالنَّهَارِ وَأَنَّ مَا أَفْسَدَتِ الْمَوَاشِي بِاللَّيْلِ ضَامِنٌ عَلَى أَهْلِهَا. رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

2951. हराम बिन साद मुहय्यिस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु की ऊंटनी एक बाग़ में दाखिल हो गए तो उस ने वहां नुकसान किया, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फैसला करते हुए फ़रमाया: "बाग़बानो की ज़िम्मेदारी है के वह दिन के वक़्त उनकी हिफाज़त करे, अलबत्ता जो जानवर रात के वक़्त (नुक्सान) कर दे तो फिर इस नुकसान के ज़िम्मेदार उस के मालिक हैं"| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه مالک (2 / 747748 ح 1505) و ابوداؤد (3570) و ابن ماجه (2332) * الزهری مدلس و عنعن

٢٩٥٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الرجل جَبَّار وَالنَّار جَبَّار» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2952. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: '' (जानवर के) पाँव से होने वाला नुकसान ज़ाए है (इस का कोई मुआवज़ा नहीं)", और फ़रमाया: "आग (किसी ने अपने जगह में आग जलाई और फिर आंधी इस आग को उड़ा कर किसी और जगह ले गई और वहां आग लग गई तो इस) का नुकसान है"| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (4594) و اعل بما لا يقدح

٢٩٥٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن الْحسن عَن سَمُرَة أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا أَتَى أَحَدُكُمْ عَلَى مَاشِيَةٍ فَإِنْ كَانَ فِيهَا صَاحِبُهَا فَلْيَسْتَأْذِنْهُ وَإِنْ لَمْ يَكُنْ فِيهَا فَلْيُصَوِّتْ ثَلَاثًا فَإِنْ أَجَابَهُ أَحَدٌ فَلْيَسْتَأْذِنْهُ وَإِنْ لَمْ يُجِبْهُ أَحَدٌ فَلْيَحْتَلِبْ وَلْيَشْرَبْ وَلَا يَحْمِلْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2953. हसन, समुरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जब तुम में से कोई जानवरों के पास आए और अगर वहां उन के मालिक को पाए तो उस से इजाज़त तलब करे और अगर वह वहां न हो तो तीन

दफा आवाज़ दे अगर कोई शख़्स इसे जवाब दे तो उस से इजाज़त तलब करे और अगर कोई उसे जवाब न दे तो वह खुद दूध दोह कर पि ले लेकिन वह अपने साथ न लाए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2619) [و الترمذی (1296)] * قتادة مدلس و عنعن و اما الحسن البصری فروایته عن سمرة صحیحة لانه کان یروی عن کتاب سمرة و الروایة عن الکتاب صحیحهة ما لم الجرح القادح فیه

٢٩٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ دَخَلَ حَائِطًا فَلْيَأْكُلْ [ص:٨٩ وَلَا يَتَّخِذْ خُبْنَةً» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ هَذَا حَدِيث غَرِيب

2954. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स किसी बाग़ में जाए तो ज़रूरत के तहत वहां से खा ले लेकिन कपड़े में डालकर साथ न लाए”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है | (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (1287) و ابن ماجه (2301) * یحیی بن سلیم الطائفی صدوق ، ضعیف عن عبید الله و صحیح الحدیث عن غیره

٢٩٥٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أُميَّة بن صَفْوَان عَنْ أَبِيهِ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اسْتَعَارَ مِنْهُ أَدْرَاعَهُ يَوْمَ حُنَيْنٍ فَقَالَ: أَغَصْبًا يَا مُحَمَّدَ؟ قَالَ: «بَلْ عَارِيَةً مَضْمُونَةً» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2955. उमय्या बिन सफवान अपने वालिद से रिवायत करते हैं, के नबी ﷺ ने गज़वा ए हुनैन के मौके पर उस से कुछ ज़री उधार लिया तो उस ने कहा मुहम्मद (ﷺ)! गसब के तौर पर लेना चाहते हो? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं? बल्कि काबिल वापसी उधार के तौर पर”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3562) * شریک القاضی عنعن و للحدیث شواهد ضعیفة ، و حدیث الحاکم (2 / 47) یخالفه و سنده حسن

٢٩٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الْعَارِيَةُ مُؤَدَّاةٌ وَالْمِنْحَةُ مَرْدُودَةٌ وَالدَّيْنُ مَقْضِيٌّ وَالزَّعِيمُ غَارِمٌ» . رَوَاهُ النرمذي وَأَبُو دَاوُد

2956. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “आरियत” ली हुई चीज़ वापस की जाए, अता के तौर पर मिली हुई चीज़ (दूध देने वाला जानवर) वापस लौटा दिया जाए, क़र्ज़ अदा किया जाए और ज़ामिन तावुन भरने वाला है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1265) و ابوداؤد (3565)

٢٩٥٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن رَافع بن عَمْرو الْغِفَارِيّ قَالَ: كُنْتُ غُلَامًا أَرْمِي نَخْلَ الْأَنْصَارِ فَأَتِيَ بِيَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ فَقَالَ: «يَا غُلَامُ لِمَ تَرْمِي النَّخْلَ؟» قُلْتُ: آكُلُ قَالَ: «فَلَا تَرْمِ وَكُلْ مِمَّا سَقَطَ فِي أَسْفَلِهَا» ثُمَّ مَسَحَ رَأْسَهُ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ أَشْبِعْ بَطْنَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ فِي «بَابِ اللّقطَة» إن شَاءَ الله تَعَالَى

2957. राफीअ बिन अम्र गफ्फारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं छोटा सा लड़का था और मैं अंसार के खजूरो के दरख्तों पर पत्थर फेंक रहा था, तो मुझे (पकड़ कर) नबी ﷺ के पास लाया गया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “लड़के! तुमने खजूर के दरख्तों पर पत्थर क्यों फेंके ?” मैंने अर्ज़ किया: खजूरे खाने के लिए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “पथ्थर न मारो, जो नीचे गिरी हो उनमें से खाओ”, फिर आप ﷺ ने मेरे सर पर हमदर्दी से हाथ फेरा और दुआ की: “अल्लाह उस के पेट को भर दे”| और अम्र बिन शुऐब की हदीस को हम इंशाअल्लाह “ (بَابِ اللّقطَة) बाबुल कटत” में ज़िक्र करेंगे. (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1288 وقال : حسن صحیح غریب) و ابوداؤد (2622) و ابن ماجه (2299) * فیه ابن ابی الحکم : لم یوثقه غیر الترمذی فهو ’’ مستور ‘‘ کما قال صاحب التقریب0 حدیث عمرو بن شعیب یاتی (3036)

بَاب الْغَصْب وَالْعَارِية • गसब करने और उधार लेने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٩٥٨ - (صَحِيح) عَن سَالم عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَخَذَ مِنَ الْأَرْضِ شَيْئًا بِغَيْرِ حَقِّهِ خُسِفَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَى سبع أَرضين» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2958. सालिम अपने वालिद से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स ठोड़ी सी भी ज़मीन नाहक वुसुल करेगा तो रोज़ ए कियामत इसे सात ज़मीनों तक धंसा दीया जाएगा”| (बुखारी)

رواه البخاری (3196)

٢٩٥٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن يعلى بن مرّة قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ أَخَذَ أَرْضًا بِغَيْرِ حَقِّهَا كُلِّفَ أَنْ يَحْمِلَ تُرَابَهَا الْمَحْشَرَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ

2959. यअली बिन मुर्त्त रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स नाहक कुछ ज़मीन हासिल करता है तो उसे हुक्म दिया जाएगा के वह हशर के मैदान में उसकी मिट्टी उठाए रखे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد 4 / 172 ، 173 ح 17701) [و عبد بن حمید : 406]

٢٩٦٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «أَيُّمَا رَجُلٍ ظَلَمَ شِبْرًا مِنَ الْأَرْضِ كَلَّفَهُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ أَنْ يَحْفِرَهُ حَتَّى يَبْلُغَ آخِرَ سَبْعِ أَرَضِينَ ثُمَّ يُطَوَّقَهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ حَتَّى يُقْضَى بَيْنَ النَّاس» . رَوَاهُ أَحْمد

2960. यअली बिन मुर्रा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस शख़्स ने नाहक बालिश्त बराबर ज़मीन पर कब्ज़े किया तो अल्लाह अज्ज़वजल इसे हुक्म देगा के सातों ज़मीनों तक इसे खोदे, फिर रोज़ ए कियामत तक, हत्ता के लोगों के दरमियान फैसला हो जाने तक, इसे उस का तोक पहना दीया जाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (4 / 173 ح 17714) [و عبد بن حمید (407) و ابن حبان (الموارد : 1167)] * فیه الربیع بن عبدالله : و ثقه ابن حبان (6 / 299) وحده ، انظر تعجیل المنفعة (1 / 125 وقال ابن حبان :'' یشبه ان یکون ھذا ھو ابن خطاف الا حدب '' و ابن خطاف : صدوق و لکن صنیع الحافظ ابن حجر یدل علی ان الربیع بن عبدالله غیر ابن خطاف و الله اعلم و للحدیث شاھد عند الطبرانی فی الکبیر (22 / 271 ح 693) و الصغیر (2 / 103) ولم یذکر '' ان یحقره '' الخ و سنده ضعیف ، فیه اسماعیل بن ابی خالد : مدلس و عنعن

हकके शुफअह का बयान • بَاب الشُّفْعَة

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٩٦١ - (صَحِيح) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَضَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالشُّفْعَةِ فِي كُلِّ مَا لَمْ يُقْسَمْ فَإِذَا وَقَعَتِ الْحُدُودُ وَصُرِفَتِ الطُّرُقُ فَلَا شُفْعَة. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2961. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने गैर मुनकसिम चीज़ के मुतल्लिक शिफ़ाअ का फैसला फ़रमाया, और जब हद बंदी हो जाए और रास्ते मुख्तलिफ हो जाए तो फिर कोई शिफ़ाअ नहीं“| (बुखारी)

رواه البخاری (2213)

٢٩٦٢ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالشُّفْعَةِ فِي كُلِّ شَرِكَةٍ لَمْ تُقْسَمْ رَبْعَةٍ أَوْ حَائِطٍ: «لَا يَحِلُّ لَهُ أَن يَبِيع حَتَّى يُؤذن شَرِيكه فَإِن شَاءَ أَخَذَ وَإِنْ شَاءَ تَرَكَ فَإِذَا بَاعَ وَلَمْ يُؤْذِنْهُ فَهُوَ أَحَقُّ بِهِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2962. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने गैर मुनकसिम हर मुश्तरका चीज़ में शिफ़ाअ का फैसला दिया, वह मकान हो या बाग़: “इस शख़्स के लिए जाईज़ नहीं के वह अपने शराकत दार को इत्तिला किए बगैर इसे फरोख्त कर दे, फिर अगर वह चाहे तो ले ले और अगर चाहे तो छोड़ दे, फिर अगर वह फरोख्त करते वक़्त इसे इत्तिला न करे तो वह (दूसरा शराकतदार) उस का ज़्यादा हक़दार है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (134 / 1608)، (4128)

٢٩٦٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي رَافِعٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْجَارُ أَحَقُّ بِسَقَبِهِ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

2963. अबी राफीअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “पड़ोसी अपने कुर्ब की वजह से (शफ़ा का) ज़्यादा हक़दार है”| (बुखारी)

رواه البخارى (2258)

٢٩٦٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَمْنَعْ جَارٌ جَارَهُ أَنْ يَغْرِزَ خَشَبَةً فِي جِدَاره»

2964. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “पड़ोसी अपने पड़ोसी को अपने दिवार पर शेह्तर रखने से मना न करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخارى (2463) و مسلم (136 / 1609)، (4130)

٢٩٦٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا اخْتَلَفْتُمْ فِي الطَّرِيقِ جُعِلَ عرضه سَبْعَة أَذْرع» . رَوَاهُ مُسلم

2965. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब रास्ते (के अर्ज़) के बारे में तुम्हारा इख्तिलाफ हो जाए तो फिर उस का अर्ज़ सात हाथ रखा जाएगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (143 / 1613)، (4139)

हकके शुफअह का बयान • بَاب الشُّفْعَة

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٢٩٦٦ - (لم تتمّ دراسته) عَن سعيد بن حُرَيْث قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ بَاعَ مِنْكُمْ دَارًا أَوْ عَقَارًا قَمِنٌ أَنْ لَا يُبَارَكُ لَهُ إِلَّا أَنْ يَجْعَلَهُ فِي مِثْلِهِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ والدارمي

2966. सईद बिन हुरैस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “तुम में से

जो शख़्स कोई घर या कोई ज़मीन फरोख्त करे तो मुमकिन है के इस (की बेअ) के लिए बरकत न रखी जाए इल्ला यह कि वह (रकम) को इसी तरह की चीज़ में लगाए”| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (3490) و الدارمی (2 / 273 ح 2628)

٢٩٦٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْجَارُ أَحَقُّ بِشُفْعَتِهِ يُنْتَظَرُ لَهَا وَإِنْ كَانَ غَائِبًا إِذَا كَانَ طَرِيقُهُمَا وَاحِدًا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ. والدارمي

2967. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “पड़ोसी अपने शिफ़ाअ का ज़्यादा हक़दार है, अगर वह कहे गया हुआ है तो उस का इंतज़ार किया जाएगा जबकि इन दोनों का रास्ता एक ही हो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (3 / 303 ح 14303) و الترمذی (1369 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (3518) و ابن ماجه (2494) و الدارمی (2 / 273 ح 2630)

٢٩٦٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الشَّرِيكُ شَفِيعٌ وَالشُّفْعَةُ فِي كل شَيْء» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ قَالَ:

2968. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “शराकत दार शिफ़ाअ कर सकता है और शिफ़ाअ हर चीज़ में हो सकता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1371)

٢٩٦٩ - (لم تتمّ دراسته) وَقَدْ رُوِيَ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُرْسَلًا وَهُوَ أصح

2969. इब्ने अबी मुलयका की सनद से नबी ﷺ से मुरसल मरवी है और वह ज़्यादा सहीह है| (हसन)

حسن ، انظر الحدیث السابق (2968)

٢٩٧٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبد الله بن جحش قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَطَعَ سِدْرَةً صَوَّبَ اللَّهُ رَأْسَهُ فِي النَّارِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَقَالَ: هَذَا الْحَدِيثُ مُخْتَصَرٌ يَعْنِي: مَنْ قَطَعَ سِدْرَةً فِي فَلَاةٍ يَسْتَظِلُّ بِهَا ابْنُ السَّبِيلِ وَالْبَهَائِمُ غَشْمًا وَظُلْمًا بِغَيْرِ حَقٍّ يَكُونُ لَهُ فِيهَا صَوَّبَ الله رَأسه فِي النَّار

2970. अब्दुल्लाह बिन हुबैश रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स बैरी का दरख्त काट डाले तो अल्लाह तआला इसे सर के बल जहन्नम में डालेगा”| अबू दावुद, और फ़रमाया यह हदीस मुख़्तसर है, यानी: “जिस ने नाहक तौर पर किसी जंगल से बैरी का दरख्त काट डाला जिसके नीचे मुसाफ़िर और जानवर साया हासिल करते हो, तो अल्लाह तआला इसे सर के बल जहन्नम में डालेगा”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (5239)

بَاب الشُّفْعَة • हकके शुफअह का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٩٧١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: إِذَا وَقَعَتِ الْحُدُودُ فِي الْأَرْضِ فَلَا شُفْعَةَ فِيهَا. وَلَا شُفْعَةَ فِي بِئْرٍ وَلَا فَحل النّخل. رَوَاهُ مَالك

2971. उस्मान बिन अफ्फान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब ज़मीन की हुदूद मुतय्यीन हो जाए तो फिर उस में शिफ़ाअ नहीं, और इसी तरह कुंवे और पैबंद लगी खजूर में शिफ़ाअ नहीं| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه مالك (2 / 717 ح 1459) * ابوبكر بن محمد بن عمرو بن حزم و لد بعد شهادة سيدنا عثمان رضى الله عنه فالسند منقطع و فى الباب عن عمر رضى الله عنه (انظر السنن الكبرى للبيهقى 6 / 105)

بَاب الْمُسَاقَاة والمزارعة • मसकत और मुज़ारात का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٢٩٧٢ - (صَحِيح) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَفَعَ إِلَى يَهُودِ خَيْبَرَ نَخْلَ خَيْبَرَ وَأَرْضَهَا عَلَى أَنْ يَعْتَمِلُوهَا مِنْ أَمْوَالِهِمْ وَلِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَطْرُ ثَمَرِهَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَفِي رِوَايَةِ الْبُخَارِيِّ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْطَى خَيْبَرَ الْيَهُودَ أَنْ يَعْمَلُوهَا ويزرعوها وَلَهُم شطر مَا يخرج مِنْهَا

2972. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने खैबर के यहूद को खैबर के नखलिस्तान और उसकी ज़मीन इस शर्त पर दी के वह अपने अमवाल से उनमें काम करे, और उसकी पैदावार

का आधा रसूलुल्लाह ﷺ के लिए होगा, और सहीह बुखारी की रिवायत में है की रसूलुल्लाह ﷺ ने खैबर यहूदियों को दीया के वह काम करे और काश्त कारी करे और उसकी पैदावार का आधा उन्हें मिलेगा| (मुस्लिम)

رواه مسلم (5 / 1551)، (3966) و البخارى (2285)

٢٩٧٣ - (صَحِيح) وَعنهُ قَالَ: كُنَّا نخبر وَلَا نَرَى بِذَلِكَ بَأْسًا حَتَّى زَعَمَ رَافِعُ ابْن خَدِيجٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْهَا فَتَرَكْنَاهَا مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ. رَوَاهُ مُسلم

2973. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, हम मुखाबरत किया करते थे और हम उस में कोई हरज महसूस नहीं करते थे, हत्ता के राफीअ बिन ख़दीज रदियल्लाहु अन्हु ने कहा के नबी ﷺ ने इसे मना फ़रमाया है, लिहाज़ा हमने इस वजह से तर्क कर दिया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (106 / 1548)، (3935)

٢٩٧٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ حَنْظَلَةَ بْنِ قَيْسٍ عَنْ رَافِعِ بْنِ خديج قَالَ: أَخْبَرَنِي عَمَّايَ أَنَّهُمْ كَانُوا يُكْرُونَ الْأَرْضَ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَا يَنْبُتُ عَلَى الْأَرْبَعَاءِ أَوْ شَيْءٍ يَسْتَثْنِيهِ صَاحِبُ الْأَرْضِ فَنَهَانَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ذَلِكَ فَقُلْتُ لِرَافِعٍ: فَكَيْفَ هِيَ بِالدَّرَاهِمِ وَالدَّنَانِيرِ؟ فَقَالَ: لَيْسَ بِهَا بَأْسٌ وَكَأَنَّ الَّذِي نُهِيَ عَنْ ذَلِكَ مَا لَوْ نَظَرَ فِيهِ ذَوُو الْفَهْمِ بِالْحَلَالِ وَالْحَرَامِ لَمْ يُجِيزُوهُ لِمَا فِيهِ مِنَ الْمُخَاطَرَةِ

2974. हंजाल बिन कैस, राफीअ बिन ख़दीज रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, मेरे दो चचा नबी ﷺ के दौर में ज़मीन किराये पर दिया करते थे, लेकिन वह बरसाती नाले के आस पास उगने वाली खेती या कोई और चीज़ मुश्तश्ना कर लिया करते थे, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें उस से मना फरमा दिया, मैंने राफीअ रदियल्लाहु अन्हु से कहा: वह दिरहम व दीनार के बदले देने में क्या हुक्म रखती है? उन्होंने कहा: उस में कोई हरज नहीं, और जिस वजह से ऐसा करने से मना किया गया है अगर हलाल व हराम के मुतल्लिक जानने वाला साहबे फहम तो फरासत उस का जाइज़ा ले तो वह भी उस में मौजूद धोके के पेशे नज़र इसे जाईज़ करार न दे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2346) و مسلم (115 / 1547)، (3951)

٢٩٧٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ قَالَ: كُنَّا أَكْثَرَ أَهْلِ الْمَدِينَةِ حَقْلًا وَكَانَ أَحَدُنَا يُكْرِي أَرْضَهُ فَيَقُولُ: هَذِهِ الْقِطْعَةُ لِي وَهَذِهِ لَكَ فَرُبَّمَا أَخْرَجَتْ ذِهِ وَلَمْ تُخْرِجْ ذِهِ فَنَهَاهُمُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

2975. राफीअ बिन ख़दीज रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम अहले मदीना ज़्यादातर काश्तकार थे, हम में से कोई अपने ज़मीन किराये पर देता तो यूँ कहता: यह हिस्सा ज़मीन मेरा है और यह तेरा, बसा-अवक़ात यह

हिस्सा ज़मीन पैदावार देता और यह न देता, लिहाज़ा नबी ﷺ ने उन्हें मना फरमा दिया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (2332) و مسلم (117 / 1547)، (3953)

٢٩٧٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَمْرو قَالَ: قلت لطاووس: لَوْ تُرِكَتِ الْمُخَابَرَةُ فَإِنَّهُمْ يَزْعُمُونَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْهُ قَالَ: أَيْ عَمْرٌو إِنِّي أُعْطِيهِمْ وَأُعِينُهُمْ وَإِنَّ أَعْلَمَهُمْ أَخْبَرَنِي يَعْنِي ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ ينْه عَنهُ وَلَكِن قَالَ: «أَلا يَمْنَحْ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَأْخُذَ عَلَيْهِ خَرْجًا مَعْلُومًا»

2976. अम्र बयान करते हैं, मैंने तावुस से कहा: काश के आप मुखाबरा छोड़ दे, क्योंकि आम गुमान यह है कि नबी ﷺ ने उस से मना फ़रमाया है, उन्होंने ने फ़रमाया: अम्र! में उन्हें ज़मीन देता हूँ और उनकी मदद भी करता हूँ, और बेशक उनमें बड़े आलम यानी इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने मुझे बताया की नबी ﷺ ने उस से मना नहीं फरमाया: लेकिन आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम में से कोई अपने भाई को बतौर इहसान मुफ्त ज़मीन दे दे तो वह उस के लिए मुईन मिकदार में उजरत लेने से बेहतर है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (2230) و مسلم (120121 / 1550)، (3957 و 3958)

٢٩٧٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ كَانَتْ لَهُ أَرْضٌ فَلْيَزْرَعْهَا أَوْ لِيَمْنَحْهَا أَخَاهُ فَإِنْ أَبَى فَلْيُمْسِكْ أرضه»

2977. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स की ज़मीन हो तो वह इसे काश्त करे या बतौर इहसान इसे अपने भाई को दे दे, अगर ऐसा नहीं कर सकता तो वह अपने ज़मीन अपने पास रखे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (2340) و مسلم (96 / 1536)، (3925)

٢٩٧٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ وَرَأَى سِكَّةً وَشَيْئًا مِنْ آلَةِ الْحَرْثِ فَقَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا يَدْخُلُ هَذَا بَيْتَ قوم إِلَّا أدخلهُ الذل» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2978. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने हल या कोई आले ज़राअत देखा तो कहा: मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “किसी कौम के जिस घर में यह चीज़े घुस आती हैं, तो अल्लाह उन्हें ज़िल्लत से दो चार कर देता है‘‘| (बुखारी)

رواہ البخاری (2321)

بَاب الْمُسَاقَاة و المزارعة • मसकत और मुज़ारात का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٩٧٩ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ زَرَعَ فِي أَرْضِ قَوْمٍ بِغَيْرِ إِذْنِهِمْ فَلَيْسَ لَهُ مِنَ الزَّرْعِ شَيْءٌ وَلَهُ نَفَقَتُهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

2979. राफीअ बिन ख़दीज रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जो शख़्स किसी की ज़मीन मैं इन की इजाज़त के बगैर काश्त करे तो खेती की पैदावार से इसे कुछ नहीं मीलेगा, वह सिर्फ खर्चे का हकदार है"| तिरमिज़ी, अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (1366) و ابوداؤد (3403) [و ابن ماجه : 2466] * ابو اسحاق عنعن و عطاء لم یسمع من رافع بن خدیج رضی الله عنه

بَاب الْمُسَاقَاة و المزارعة • मसकत और मुज़ारात का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٢٩٨٠ - (صَحِيح) عَنْ قَيْسِ بْنِ مُسْلِمٍ عَنْ أَبِي جَعْفَرٍ قَالَ: مَا بِالْمَدِينَةِ أَهْلُ بَيْتِ هِجْرَةٍ إِلَّا يَزْرَعُونَ عَلَى الثُّلُثِ وَالرُّبُعِ وَزَارَعَ عَلِيٌّ وَسَعْدُ بْنُ مَالِكٍ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْعُودٍ وَعُمَرُ ابْن عبد الْعَزِيز وَالْقَاسِم وَعُرْوَة وَآل أبي بَكْرٍ وَآلُ عُمَرَ وَآلُ عَلِيٍّ وَابْنُ سِيرِينَ وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْأَسْوَدِ: كُنْتُ أُشَارِكُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ يَزِيدَ فِي الزَّرْعِ وَعَامَلَ عُمَرُ النَّاسَ عَلَى: إِنْ جَاءَ عُمَرُ بِالْبَذْرِ من عِنْده فَلهُ الشّطْر. وَإِن جاؤوا بالبذر فَلهم كَذَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2980. कैस बिन मुस्लिम, अबू जाफर से बयान करते हैं, तमाम मुहाजिर मदीना में तिहाई या चोथाई हिस्से पर ज़राअत करते थे, अली सईद बिन मालिक, अब्दुल्लाह बिन मसूद, उमर बिन अब्दुल अज़ीज़, कासिम, उरवा, आले अबू बकर, आले उमर और आले अली और इब्ने सिरिन ने ज़राअत की और अब्दुल रहमान बिन असवद बयान करते हैं, मैं ज़राअत में अब्दुल रहमान बिन यज़ीद के साथ शराकत किया करता था, और उमर रदियल्लाहु अन्हु ने लोगों से मुआमला किया के अगर उमर बैज मुहय्या करेगा तो आधी पैदावार वह लेगा और अगर वह बैज मुहय्या करेगा तो इन के लिए इतना हिस्सा होगा| (बुखारी)

رواه البخاری (کتاب الحرث و المزارعة باب : 8 قبل ح 2328 تعلیقًا) [و عبد الرزاق فی المصنف (8 / 100 ح 14476) و ابن حجر فی تغلیق التعلیق (3 / 300)]

ज़मीन ठेके पर देने का बयान • بَاب الْإِجَارَة

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٢٩٨١ - (صَحِيح) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُغَفَّلٍ قَالَ: زَعَمَ ثَابِتُ بْنُ الضَّحَّاكِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنِ الْمُزَارَعَةِ وَأَمَرَ بِالْمُؤَاجَرَةِ وَقَالَ: «لَا بَأْسَ بِهَا» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

2981. अब्दुल्लाह बिन मुगफ्फल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, साबित बिन ज़िहाक ने कहा के रसूलुल्लाह ﷺ ने मज़ारित से मना फ़रमाया और मुवाजरत (ठेके) पर काम करने का हुक्म फ़रमाया, और फ़रमाया: “उस में कोई हरज नहीं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (119 / 1549)، (3956)

٢٩٨٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ احْتَجَمَ فَأَعْطَى الْحَجَّامَ أجره واستعط

2982. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने पछने (हिजामा) लगवाए तो पछने (हिजामा) लगाने वाले को उसकी उजरत दी और नाक में दवाई दलवाई| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5691) و مسلم (65 / 1202)، (4041)

٢٩٨٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا بَعَثَ اللَّهُ نَبِيًّا إِلَّا رَعَى الْغَنَمَ» . فَقَالَ أَصْحَابُهُ: وَأَنْتَ؟ فَقَالَ: «نَعَمْ كُنْتُ أَرْعَى عَلَى قَرَارِيطَ لِأَهْلِ مَكَّةَ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2983. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ ने से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह के हर नबी ने बकरिया चराई है”, आप के सहाबा ने अर्ज़ किया, आप ने भी? फ़रमाया: “हाँ! मैं भी चंद किरात पर मक्का वालो की बकरियां चराया करता था”| (बुखारी)

رواه البخاری (2262)

٢٩٨٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: ثَلَاثَةٌ أَنَا خَصْمُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: رَجُلٌ أَعْطَى بِي ثُمَّ غَدَرَ وَرَجُلٌ بَاعَ حُرًّا فَأَكَلَ ثَمَنَهُ وَرَجُلٌ اسْتَأْجَرَ أَجِيرًا فَاسْتَوْفَى مِنْهُ وَلَمْ يُعْطِهِ أَجْرَهُ ". رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2984. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तआला फरमाता है,

तीन किस्म के लोग ऐसे है की रोज़ ए कियामत में खुद उन से झगड़ुगा: एक वह आदमी जो मेरा नाम लेकर अहद करे फिर इसे तोड़ डाले, वह शख़्स जो किसी आज़ाद आदमी को बेच कर उसकी कीमत खा जाए और एक वह आदमी जो किसी मज़दूर को उजरत पर रखा तो उन से पूरा काम ले लेकिन इसे उजरत न दे"| (बुखारी)

رواه البخارى (2227)

٢٩٨٥ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ نَفَرًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرُّوا بِمَاءٍ [ص: ٩٠ فبهم لَدِيغٌ أَوْ سَلِيمٌ فَعَرَضَ لَهُمْ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْمَاءِ فَقَالَ: هَلْ فِيكُمْ مِنْ رَاقٍ؟ إِن فِي المَاء لَدِيغًا أَوْ سَلِيمًا فَانْطَلَقَ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَقَرَأَ بِفَاتِحَة الْكتاب على شَاءَ فبرئ فَجَاءَ بِالشَّاءِ إِلَى أَصْحَابِهِ فَكَرِهُوا ذَلِكَ وَقَالُوا: أَخَذْتَ عَلَى كِتَابِ اللَّهِ أَجْرًا حَتَّى قَدِمُوا الْمَدِينَةَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَخَذَ عَلَى كِتَابِ اللَّهِ أَجْرًا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَحَقَّ مَا أَخَذْتُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا كِتَابُ اللَّهِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَفِي رِوَايَةٍ: «أَصَبْتُمُ اقْسِمُوا وَاضْرِبُوا لِي مَعَكُمْ سَهْمًا»

2985. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ के चंद सहाबा का पानी (के घाट) के पास से गुज़र हुआ तो वहां एक आदमी था जिसे बिच्छु या सांप ने दस लिया था, इस पानी पर आबाद लोगों में से एक आदमी आया तो उस ने कहा: क्या तुम में कोई दम झाड़ करने वाला है? क्योंकि हमारी आबादी में एक आदमी है जिसे बिच्छु या सांप ने दस लिया है, उन (सहाबा किराम) में से एक आदमी गया और कुछ बकरियों के अवज़ उस पर सुरह फातिहा पढ़ी और बकरिया लेकर अपने साथियो के पास आया तो उन्होंने इसे नापसंद किया, और कहा, क्या तुम ने अल्लाह की किताब पर उजरत ले ली हत्ता के वह मदीना पहुँच गए, तो उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! उस ने अल्लाह की किताब पर उजरत ली है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस चीज़ पर तुम उजरत लेने के सबसे ज़्यादा हक़दार हो, वह अल्लाह की किताब है", और एक दूसरी हदीस में है : "तुमने ठीक किया, तकसीम करो और अपने साथ मेरा भी हिस्सा मुकर्रर करो"| (बुखारी)

رواه البخارى (5737)

ज़मीन ठेके पर देने का बयान • بَاب الْإِجَارَة

दूसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّانِي

٢٩٨٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ خَارِجَةَ بْنِ الصَّلْتِ عَنْ عَمِّهِ قَالَ: أَقْبَلْنَا مِنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَيْنَا عَلَى حَيٍّ مِنَ الْعَرَبِ فَقَالُوا: إِنَّا أُنْبِئْنَا أَنَّكُمْ قَدْ جِئْتُمْ مِنْ عِنْدِ هَذَا الرَّجُلِ بِخَيْرٍ فَهَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ دَوَاءٍ أَوْ رُقْيَةٍ؟ فَإِنَّ عِنْدَنَا مَعْتُوهًا فِي الْقُيُود فَقُلْنَا: نعم فجاؤوا بِمَعْتُوهٍ فِي الْقُيُودِ فَقَرَأْتُ عَلَيْهِ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ غُدْوَةً وَعَشِيَّةً أَجْمَعُ بُزَاقِي ثُمَّ أَتْفُلُ قَالَ: فَكَأَنَّمَا أُنْشِطَ مِنْ عِقَالٍ فَأَعْطَوْنِي جُعْلًا فَقُلْتُ: لَا حَتَّى أَسْأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «كُلْ فَلَعَمْرِي لَمَنْ أَكَلَ بِرُقْيَةِ بَاطِلٍ لَقَدْ أَكَلْتَ بِرُقْيَةٍ حَقٍّ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

2986. ख़ारिजा बिन स्वलय्त अपने चचा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा, हम रसूलुल्लाह ﷺ के पास से वापस आ रहे थे, तो हम एक अरब कबिले के पास आए तो उन्होंने कहा: हमें पता चला के तुम इस आदमी से खैर (यानी कुरान) लेकर आ रहे हो, क्या तुम्हारे पास कोई दवाइ या दम है क्यूंकि हमारे पास एक मजनून शख़्स जकड़ा हुआ है, हमने कहा: हाँ, वह इस जकड़े हुए दीवाने को ले आए तो मैंने तीन रोज़ सुबह व शाम सुरह फातिहा का दम किया, मैं अपने थूक (मुहं में) जमा कर लेता फिर इसे (इस मजनून पर) थूक देता, रावी बयान करते हैं, उसकी बीमारी और दीवानगी जाती रही तो उन्होंने मुझे उजरत दी तो मैंने कहा : नहीं (में इसे नहीं लूँगा) हत्ता कि मैं नबी ﷺ से पूछलूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मेरी अम्र की क़सम! खाओ, कुछ ऐसे है जो झूठे दम के ज़रिए खाते है, जबकि तुमने अच्छे दम से खाया"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 210211 ح 2217922180) و ابوداؤد (3420)

٢٩٨٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «أعْطوا الْأَجِيرَ أَجْرَهُ قَبْلَ أَنْ يَجِفَّ عَرَقُهُ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

2987. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मज़दूर को उसकी उजरत, उस का पसीना खुश्क होने से पहले अदा कर दो"| (सहीह)

صحيح ، رواه ابن ماجه (2443)

٢٩٨٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «لِلسَّائِلِ حَقٌّ وَإِنْ جَاءَ عَلَى فَرَسٍ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد وَفِي المصابيح: مُرْسل

2988. हुसैन बिन अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "साइल का हक़ है ख्वाँ वह घोड़े पर आए"| अहमद अबू दावुद, और मसाबिह में मुरसल रिवायत है| (हसन)

حسن ، رواه احمد (1 / 201 ح 1730) و ابوداؤد (1665) [و ابن خزيمه : 2468] * و للحديث شواهد وهو بها حسن ، انظر تلخيص نيل المقصود (ص 334 ح 1665)

ज़मीन ठेके पर देने का बयान • بَاب الْإِجَارَة

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٢٩٨٩ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عُتْبَةَ بْنِ الْمُنْذِرِ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَرَأَ: (طسم)»» حَتَّى بَلَّغَ قِصَّةَ مُوسَى قَالَ: «إِنَّ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلَامُ آجَرَ نَفْسَهُ ثَمَانِ سِنِينَ أَوْ عَشْرًا عَلَى عِفَّةِ فَرْجِهِ وَطَعَامِ بَطْنِهِ» . رَوَاهُ أَحْمد وَابْن مَاجَه

2989. उत्बा बिन मुन्ज़िर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर थे की आप ने “ (طسم) सुरह ता सिन मीम” तिलावत फरमाई हत्ता के आप मूसा अलैहिस्सलाम के किस्सा पर पहुंचे तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने शर्मगाह की हिफाज़त और शक्म सीरी की खातिर अपने आप को आठ या दस साल मज़दूरी पर लगाए रखा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جذا ، رواه احمد (لم اجده) و ابن ماجه (2444) * فیه مسلمة بن علی : متروک و الحدیث ضعفه البوصیری

٢٩٩٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ رَجُلٌ أَهْدَى إِلَيَّ قَوْسًا مِمَّنْ كُنْتُ أُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْقُرْآنَ وَلَيْسَتْ بِمَالٍ فَأَرْمِي عَلَيْهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ قَالَ: «إِنْ كُنْتَ تُحِبُّ أَنْ تُطَوَّقَ طَوْقًا مِنْ نَارٍ فَاقْبَلْهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

2990. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! एक आदमी ने एक कमान मुझे बतौर हदिया दि है और यह इसलिए है के में उसे किताब और कुरान की तालीम दिया करता था, और वह कोई माल नहीं, मैं उस से अल्लाह की राह में तीर अन्दाज़ी करूँगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तू पसंद करता है की तुझे आग का तोक डाल दिया जाए तो फिर इसे कबूल कर ले”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3416) و ابن ماجه (2157)

बंजर ज़मीन आबाद करने और सैराब करने का बयान • بَاب إحْيَاء الْموَات وَالشرب

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٢٩٩١ - (صَحِيح) عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ عَمَرَ أَرْضًا لَيْسَتْ لِأَحَدٍ فَهُوَ أَحَقُّ» . قَالَ عُرْوَةُ: قَضَى بِهِ عُمَرُ فِي خِلَافَتِهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

2991. आइशा रदियल्लाहु अन्हा नबी ﷺ से रिवायत करती हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: "जो शख़्स किसी बंजर (बे आबाद) ज़मीन को जो के किसी की मिलकियत न हो, आबाद करे तो वह (इस का) ज़्यादा हक़दार है"| उरवा बयान करते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अपने खिलाफत में इसी के मुताबिक फैसला किया| (बुखारी)

رواه البخاری (2335)

٢٩٩٢ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ الصَّعْبَ بْنَ جَثَّامَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا حِمَى إِلَّا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

2992. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के सअबी बिन जस्सामा रदियल्लाहु अन्हु ने बयान किया मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "चराहगाह सिर्फ अल्लाह और उस के रसूल के लिए है''| (बुखारी)

رواه البخاری (2370)

٢٩٩٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ عُرْوَةَ قَالَ: خَاصَمَ الزُّبَيْرُ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ فِي شِرَاجٍ مِنَ الْحَرَّةِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اسْقِ يَا زُبَيْرُ ثُمَّ أَرْسِلِ الْمَاءَ إِلَى جَارِكَ» . فَقَالَ الْأَنْصَارِيُّ: أَنْ كَانَ ابْنَ عَمَّتِكَ؟ فَتَلَوَّنَ وَجْهُهُ ثُمَّ قَالَ: «اسْقِ يَا زُبَيْرُ ثُمَّ احْبِسِ الْمَاءَ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَى الْجَدْرِ ثُمَّ أَرْسِلِ الْمَاءَ إِلَى جَارِكَ» فَاسْتَوْعَى [ص:٩٠ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلزُّبَيْرِ حَقَّهُ فِي صَرِيحِ الْحُكْمِ حِينَ أحفظه الْأَنْصَارِيّ وَكَانَ أَشَارَ عَلَيْهِمَا بِأَمْرٍ لَهُمَا فِيهِ سَعَةٌ

2993. उरवा बयान करते हैं, जुबैर का हर्राह के बरसात नाले में एक अंसारी आदमी से झगड़ा हो गया तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जुबैर! पहले तुम सेराब कर लो फिर अपने पड़ोसी के लिए छोड़ दो", अंसारी बोलने लगा क्योंकि वह आप की फूफी का बेटा है! आप ﷺ के चेहरे का रंग तब्दील हो गया, फिर फ़रमाया: "जुबैर! पहले तुम सेराब करो फिर पानी रोक रखो हत्ता के वह मुंडेर तक पहुँच जाए, फिर अपने पड़ोसी की तरफ छोड़ दे", यूँ नबी ﷺ ने वाज़ेह हुक्म में (फिल हकीकत) जुबैर रदियल्लाहु अन्हु को पूरा हक़ दे दिया जबकि अंसारी ने (कौल

फैसल पर मोतराज़ हो कर) आप ﷺ को गुस्सा दिलाया हालाँकि आप ने पहले ऐसा हुक्म दिया था जिस में दोनों के लिए वुसअत थी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (2359) و مسلم (139 / 2357)، (6112)

٢٩٩٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تمنعوا فضل المَاء لتمنعوا بِهِ فضل الْكلأ»

2994. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ज़ईदाज़ ज़रूरत घास रोकने के लिए ज़ईदाज़ ज़रूरत पानी मत रोको”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (2354) و مسلم (37 / 1566)، (4007)

٢٩٩٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " ثَلَاثَةٌ لَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ رَجُلٌ حَلَفَ عَلَى سِلْعَةٍ لَقَدْ أُعْطِيَ بِهَا أَكْثَرَ مِمَّا أُعْطِيَ وَهُوَ كَاذِبٌ وَرَجُلٌ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ كَاذِبَةٍ بَعْدَ الْعَصْرِ لِيَقْتَطِعَ بِهَا مَالَ رَجُلٍ مُسْلِمٍ وَرَجُلٌ مَنَعَ فَضْلَ مَاءٍ فَيَقُولُ اللَّهُ: الْيَوْمَ أَمْنَعُكَ فَضْلِي كَمَا مَنَعْتَ فَضْلَ مَاء لم تعْمل يداك «»» وَذُكِرَ حَدِيثُ جَابِرٍ فِي» بَابِ الْمَنْهِيِّ عَنْهَا من الْبيُوع "

2995. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन शख़्स ऐसे है, जिन से अल्लाह रोज़ ए कियामत ना कलाम करेगा न नज़रे रहमत से उनकी तरफ देखेगा, वह आदमी जिस ने माल पर क़सम उठाई हो के इसे तो उस से, जितनी तुम दे रहे हो, ज़्यादा कीमत मिलती है, हालाँकि वह झूठा है, दूसरा वह शख़्स जो असर के बाद झूठी क़सम उठाए ताकि उस के ज़रिए किसी मुसलमान शख़्स का माल हड़प कर जाए, और तीसरा वह शख़्स जिस ने ज़ईदाज़ ज़रूरत पानी रोक रखा हो, अल्लाह फरमाएगा: आज में तुझे अपने फ़ज़ल से महरूम रखूँगा जैसे के तूने ज़ईदाज़ ज़रूरत पानी रोक लिया था हालाँकि इसे तेरे हाथो ने नहीं बनाया था”| और जाबिर (र) की रिवायत बाब ममनूअ बुयुअ (तिजारत) का बयान में ज़िक्र की जा चुकी है? (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (2369) و مسلم (173 / 108)، (297) 0 حدیث جابر تقدم : 2858

بَاب إِحْيَاء الْموَات وَالشرب • बंजर ज़मीन आबाद करने और सैराब करने का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٢٩٩٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ الْحَسَنِ عَنْ سَمُرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَحَاطَ حَائِطًا عَلَى الْأَرْضِ فَهُوَ لَهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

2996. हसन रहिमहुल्लाह समुरह रदियल्लाहु अन्हु से और वह नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स किसी (बंजर) ज़मीन पर चार दिवारी कर ले तो वह हिस्सा ज़मीन उस का है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3077) * قتادة مدلس و عنعن

٢٩٩٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْطَعَ لِلزُّبَيْرِ نخيلا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2997. अस्मा बिन अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने जुबैर रदियल्लाहु अन्हु को जागीर में कुछ खजूरो के दरख्त अता फरमाए”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3069)

٢٩٩٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْطَعَ لِلزُّبَيْرِ حُضْرَ فَرَسِهِ فَأَجْرَى فَرَسَهُ حَتَّى قَامَ ثُمَّ رَمَى بِسَوْطِهِ فَقَالَ: «أَعْطُوهُ مِنْ حَيْثُ بَلَغَ السَّوْطُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

2998. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने जुबैर रदियल्लाहु अन्हु के लिए उन के घोड़े की दोड़ तक मुसाफ़त का रकबा जागीर में अता किया, उन्होंने अपना घोड़ा दोड़ाया हत्ता के वह खड़ा हो गया, फिर उन्होंने अपना कोड़ा फेका आप ﷺ ने फ़रमाया: “जहाँ तक कोड़ा पहुंचा है वहां तक रकबा इसे अता कर दो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3072) * عبدالله العمرى حسن الحديث عن نافع و ضعيف الحديث عن غيره

٢٩٩٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَائِلٍ عَنْ أَبِيهِ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْطَعَهُ أَرْضًا بِحَضْرَمَوْتَ قَالَ: فَأَرْسَلَ مَعِي مُعَاوِيَةَ قَالَ: «أَعْطِهَا إِيَّاه» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ والدارمي

2999. अल्कमा बिन वाइल अपने वालिद से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ ने हज़्र मव्त (यमन) के इलाके में उन्हें जागीर दी, वह बयान करते हैं, आप ﷺ ने मुआविया रदियल्लाहु अन्हु को मेरे साथ भेजा और फ़रमाया: “वो उन्हें दे आओ”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (1381 وقال : حسن صحيح) و الدارمى (2 / 269 ح 2612)

٣٠٠٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أَبْيَضَ بْنِ حَمَّالٍ الْمَأْرِبِيِّ: أَنَّهُ وَفَدَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَسْتَقْطَعَهُ الْمِلْحَ الَّذِي بِمَأْرِبَ فَأَقْطَعُهُ إِيَّاهُ فَلَمَّا وَلَّى قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّمَا أَقْطَعْتَ لَهُ الْمَاءَ الْعِدَّ قَالَ: فَرَجَّعَهُ مِنْهُ قَالَ: وَسَأَلَهُ مَاذَا يحمى من الْأَرَاك؟ قَالَ: «مَا لَمْ تَنَلْهُ أَخْفَافُ الْإِبِلِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه والدارمي

3000. अबिज़ बिन हम्माल अल मउरबी से रिवायत है के वह रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आए तो आप से मारब की नमक की खान बतौर जागीर तलब की तो आप ने वह इसे अता कर दी, जब वह आदमी वापस मुड़ा तो एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप ने तो उसे दाइमी चीज़ अता फरमा दी, रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने इसे उस से वापस ले लिया, रावी बयान करते हैं, के इस ने रसूलुल्लाह ﷺ से पूछा फलो के दरख्तों की ज़मीन किस कदर दूर जा कर घेर ली जाए फ़रमाया: “जहाँ ऊंट न पहुँच पाए”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (1380 وقال : حسن غريب) و ابن ماجه (2475) و الدارمى (2 / 269 ح 2611)

٣٠٠١ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " الْمُسْلِمُونَ شُرَكَاءُ فِي ثَلَاث: الْمَاءِ وَالْكَلَأِ وَالنَّارِ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه

3001. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुसलमान तीन चीजों: पानी, घास और आग में हिस्सा दार है”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (3477 و سنده صحيح) و ابن ماجه (2472 و سنده ضعيف جدًا)

٣٠٠٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَسْمَرَ بْنِ مُضَرِّسٍ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبَايَعْتُهُ فَقَالَ: «مَنْ سَبَقَ إِلَى مَاءٍ لَمْ يَسْبِقْهُ إِلَيْهِ مُسْلِمٌ فَهُوَ لَهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3002. असमर बिन मुदर्रिस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने आप की बैत की, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स किसी ऐसे पानी (चश्मे) पर, जहाँ कोई मुसलमान न पहुंचा हो, वह पहले पहुँच जाए तो वह पानी इसी का है”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (3071)

٣٠٠٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ طَاوُسٍ مُرْسَلًا: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «من أحيى مَوَاتًا مِنَ الْأَرْضِ فَهُوَ لَهُ وَعَادِيُّ الْأَرْضِ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ هِيَ لَكُمْ [ص:٩٠ مِنِّي» . رَوَاهُ الشَّافِعِي

3003. ताउस से मुरसल रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स बंजर ज़मीन को आबाद कर ले तो वह इसी की है, और क़दीम बंजर ज़मीन अल्लाह और उस के रसूल की है, फिर वह मेरी तरफ से तुम्हारे लिए है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الشافعى فى الام (4 / 45) عن سفيان (بن عيينة) عن طاؤس رحمه الله به* السند مرسل

٣٠٠٤ - (لم تتمّ دراسته) وَرُوِيَ فِي «شَرْحِ السُّنَّةِ» : أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْطَعَ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ الدُّورَ بِالْمَدِينَةِ وَهِيَ بَيْنَ ظَهْرَانَيْ عِمَارَةِ الْأَنْصَارِ مِنَ الْمَنَازِلِ وَالنَّخْلِ فَقَالَ بَنُو عَبْدِ بن زهرَة: نكتب عَنَّا ابْنَ أُمِّ عَبْدٍ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ الله: «فَلِمَ ابْتَعَثَنِي اللَّهُ إِذًا؟ إِنَّ اللَّهَ لَا يُقَدِّسُ أُمَّةً لَا يُؤْخَذُ لِلضَّعِيفِ فِيهِمْ حَقُّهُ»

3004. शरह अल सुनना में मरवी है के नबी ﷺ ने अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु को मदीना में कुछ घर बतौर जागीर अता किए, वह अंसार के घरो और नखलिस्तान के दरमियान थे, बनू अब्द बिन जुहरा ने कहा: इब्ने उम्म अब्द (अब्दुल्लाह बिन मसउद (र)) को हम से दूर कर दे, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “तब अल्लाह ने मुझे मबउस ही क्यों किया है, बेशक अल्लाह इस उम्मत को पाक नहीं करता जिस में उन के जईफ शख़्स को उस का हक़ न दिलाया जाए”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (8 / 271 بعد ح 2189) [و الشافعى فى الام 4 / 45 ، 50 و سنده مرسل اى ضعيف لا رساله] * وله شاهد ضعيف عند الطبرانى فى المعجم الكبير ، فيه عبد الرحمن بن سلام عن سفيان عن يحيى بن جعدة عن هبيرة بن يريم عن ابن مسعود ، و شاهد آخر ضعيف عند الخطيب (4 / 188)

٣٠٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَضَى فِي السَّيْلِ الْمَهْزُورِ أَنْ يُمْسَكَ حَتَّى يَبْلُغَ الْكَعْبَيْنِ ثُمَّ يُرْسَلَ الْأَعْلَى عَلَى الْأَسْفَل. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

3005. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने सिल महज़ुर के बारे में फैसला फ़रमाया के उस को रोका जाए हत्ता के वह (पानी) टखनो तक पहुँच जाए, फिर ऊपरी हिस्से से निचले हिस्से को पानी छोड़ा जाए| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3639) و ابن ماجه (2482)

٣٠٠٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ: أَنَّهُ كَانَتْ لَهُ عضد من نخل فِي حَائِطِ رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ وَمَعَ الرَّجُلِ أَهْلُهُ فَكَانَ سَمُرَةُ يَدْخُلُ عَلَيْهِ فَيَتَأَذَّى بِهِ فَأتى النَّبِي صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فذكرذلك لَهُ فَطَلَبَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم

لیَبِيعهُ فَأبى فطلب أَن يناقله فَأبى قَالَ: «فَهَبْهُ لَهُ وَلَكَ كَذَا» أَمْرًا رَغْبَةً فِيهِ فَأَبَى فَقَالَ: «أَنْتَ مُضَارٌّ» فَقَالَ لِلْأَنْصَارِيِّ: «اذْهَبْ فَاقْطَعْ نَخْلَهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ»» وَذكر حَدِيث جَابر: «من أحيي أَرضًا» فِي «بَاب الْغَصْب» بِرِوَايَةِ سَعِيدِ بْنِ زَيْدٍ. وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ أَبِي صِرْمَةَ: «مَنْ ضَارَّ أَضَرَّ اللَّهُ بِهِ» فِي «بَاب مَا يُنْهِي من التهاجر»

3006. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन के खजूरो के कुछ दरख्त एक अंसारी शख़्स के बाग़ में थे, और उस के बच्चे भी इस शख़्स के साथ (बाग़ में) थे, समुरह रदियल्लाहु अन्हु जब इस शख़्स के पास जाते तो वह उन से तकलीफ महसूस करता, वह नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और आप को सारी बात बताई तो नबी ﷺ ने समुरह रदियल्लाहु अन्हु को अपने पास बुलाया ताकि वह इसे फरोख्त कर दे लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया, आप ने मुतालबा किया के उन दरख्तों के बदले में किसी और जगह ले लो, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया, फ़रमाया: “इसे हिब्बा कर दो”, और आप ﷺ ने तरगीब के अंदाज़ में फ़रमाया के: “तुम्हें (जन्नत में) यह कुछ मिलेगा”, उन्होंने फिर भी इनकार कर दिया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम तकलीफ पहुँचाने वाले हो”, आप ﷺ ने अंसारी शख़्स से फ़रमाया: “जाओ और उस के खजूरो के दरख्त काट दो”, और जाबिर से मरवी हदीस: “जिस ने बंजर ज़मीन को आबाद किया” सईद बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु की रिवायत से “ (بَاب الْغَصْب) बाब अल गसब” में ज़िक्र की गई है और हम अबू सिरमा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस: “जिस ने किसी को तकलीफ पहुँचाई तो अल्लाह इसे तकलीफ पहुंचाएगा”, “ (بَاب مَا يُنْهِي من التهاجر) बाब मा उन्हा अन अल तिहाजिर” में ज़िक्र करेंगे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3636)* قال ابن الترکمانی :’’ ذکر ابن حزم انه منقطع لان محمد بن علی لا سماع له من سمرة ‘‘ (الجوھر النقی 6 / 157) 0 حدیث جابر تقدم (1916) و حدیث سعید بن زید تقدم (2944) و حدیث ابی صرمة یاتی (5042)

بَاب إحْيَاء الْموَات وَالشرب • बंजर ज़मीन आबाद करने और सैराब करने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٠٠٧ - (ضَعِيف) عَن عَائِشَة أَنَّهَا قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا الشَّيْءُ الَّذِي لَا يَحِلُّ مَنْعُهُ؟ قَالَ: «الْمَاءُ وَالْمِلْحُ وَالنَّار» قَالَت: قلت: يَا رَسُول الله هَذَا الْمَاءُ قَدْ عَرَفْنَاهُ فَمَا بَالُ الْمِلْحِ وَالنَّارِ؟ قَالَ: «يَا حميراء أَمن أَعْطَى نَارًا فَكَأَنَّمَا تَصَدَّقَ بِجَمِيعِ مَا أَنْضَجَتْ تِلْكَ النَّارُ وَمَنْ أَعْطَى مِلْحًا فَكَأَنَّمَا تَصَدَّقَ بِجَمِيعِ مَا طَيَّبَتْ تِلْكَ الْمِلْحُ وَمَنْ سَقَى مُسْلِمًا شَرْبَةً مِنْ مَاءٍ حَيْثُ يُوجَدُ الْمَاءُ فَكَأَنَّمَا أَعْتَقَ رَقَبَةً وَمَنْ سَقَى مُسْلِمًا شَرْبَةً مِنْ مَاءٍ حَيْثُ لَا يُوجَدُ الْمَاءُ فَكَأَنَّمَا أَحْيَاهَا» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

3007. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! वह कौन सी चीज़ है जिस का रोकना हलाल नहीं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “पानी, नमक और आग”, वह बयान करती हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! पानी की अहमियत व ज़रूरत का तो हमें पता है, लेकिन नमक और आग की तो वह

सूरत नहीं है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "हुमेरा! जिस शख़्स ने आग दी तो गोया उस ने इस आग से पकने वाली तमाम चीज़े, सदका की, और जिस ने नमक दिया तो गोया इस नमक ने जिन चीजों को लज़ीज़ बनाया वह तमाम चीज़े उस ने सदका की, जिस शख़्स ने पानी के होते हुए किसी मुसलमान को एक घूंट पानी पिलाया तो गोया उस ने एक गुलाम आज़ाद किया, और जिस ने पानी की अदम दस्तियाबी की सूरत में किसी मुसलमान को पानी का घूंट पिला दिया तो गोया उस ने इसे जिंदगी अता कर दी"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (2474) * على بن زيد بن جدعان : ضعيف و زهير بن مرزوق : مجهول ، وعلى بن غراب : مدلس ، و للحديث شاهدان ضعيفان

تोहफा देने का बयान • بَاب العطايا

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٣٠٠٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ عُمَرَ أَصَابَ أَرْضًا بِخَيْبَرَ فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَصَبْتُ أَرْضًا بِخَيْبَرَ لَمْ أُصِبْ مَالًا قَطُّ أَنْفَسَ عِنْدِي مِنْهُ فَمَا تَأْمُرُنِي بِهِ؟ قَالَ: «إِنْ شِئْتَ حَبَسْتَ أَصْلَهَا وَتَصَدَّقْتَ بِهَا» . فَتَصَدَّقَ بِهَا عُمَرُ: إِنَّهُ لَا يُبَاعُ أَصْلُهَا وَلَا يُوهب وَلَا يُورث وَتصدق بهَا فِي الْفُقَرَاءِ وَفِي الْقُرْبَى وَفِي الرِّقَابِ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَالضَّيْفِ لَا جُنَاحَ عَلَى مَنْ وَلِيَهَا أَنْ يَأْكُلَ مِنْهَا بِالْمَعْرُوفِ أَوْ يُطْعِمَ غَيْرَ مُتَمَوِّلٍ قَالَ ابْنُ سِيرِينَ: غير متأثل مَالا

3008. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के खैबर की कुछ ज़मीन उमर रदियल्लाहु अन्हु के हिस्से में आइ तो उन्होंने नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे खैबर की जो ज़मीन मिली है उस से पहले इतना नफ्सी माल मुझे कभी नहीं मिला, आप उस के मुतल्लिक मुझे किया हुक्म फरमाते हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: "अगर तुम चाहो तो उस का असल माल तुम रख लो और उसकी पैदावार सदका कर दो", उमर रदियल्लाहु अन्हु ने इस शर्त पर इसे सदका किया के ना उस के असल को बेचा जाएगा न हिब्बा किया जाएगा और ना ही विरासत में तकसीम होगा और उसकी पैदावार को फुकराअ, रिश्तेदारों, गुलामो को आज़ाद कराने, अल्लाह की राह में मुसाफ़िर पर और मेहमानों पर खर्च किया जाएगा, और उसकी सरपरस्ती व निगरानी करने वाले पर इस बात में कोई गुनाह नहीं के वह उस में से भले तरीके से खाए, ज़खीरा न करते हुए दुसरो (अहले खाना वगैरा) को भी खिलाए", इब्ने सिरिन रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: माल जमा करने वाला न हो| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2737) و مسلم (15 / 1632)، (4224)

٣٠٠٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْعُمْرَى جَائِزَةٌ»

3009. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उमरय (उमर भर का अतिया) जाईज़ है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2626) و مسلم (32 / 1626)، (4202)

٣٠١٠ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الْعُمْرَى مِيرَاثٌ لِأَهْلِهَا» . رَوَاهُ مُسلم

3010. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उमरय, उमरय लेने वाले वारिसो की मीरास है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (31 / 1625)، (4201)

٣٠١١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيُّمَا رَجُلٍ أَعْمِرَ عمرى لَهُ ولعقبه فَإِنَّهَا الَّذِي أعطيها لَا ترجع إِلَى الَّذِي أَعْطَاهَا لِأَنَّهُ أَعْطَى عَطَاءً وَقَعَتْ فِيهِ الْمَوَارِيث»

3011. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स और उसकी औलाद को उमरय दिया गया तो वह इन्ही का है जिन को दिया गया, वह देने वाले को वापस नहीं होगा, क्योंकि उस ने एक ऐसा अतिय्या दिया है जिस में मीरास वाकेअ हो गई है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2625) و مسلم (20 / 1625)، (4188)

٣٠١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: إِنَّمَا الْعُمْرَى الَّتِي أَجَازَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِن يَقُول: هِيَ لعقبك فَأَمَّا إِذَا قَالَ: هِيَ لَكَ مَا عِشْتَ فَإِنَّهَا ترجع إِلَى صَاحبهَا

3012. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उमरय जिसे रसूलुल्लाह ﷺ ने नाफ़िज़ किया है वह यह है कि कोई शख़्स कहे यह (उमरय) तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के लिए है, और अगर वह कहे की जब तक तू जिंदा रहे यह चीज़ तेरी है, तो फिर इस की (वफात के बाद) यह उस के मालिक को वापस मिल जाएगी”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2625) و مسلم (23 / 1625)، (4191)

بَاب العطايا • तोहफा देने का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٠١٣ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا ترقبوا أَو لَا تُعْمِرُوا فَمَنْ أُرْقِبَ شَيْئًا أَوْ أُعْمِرَ فَهِيَ لِوَرَثَته» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3013. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "ना तुम रकबा के तौर पर कोई चीज़ दो न उमरय के तौर पर, जिस शख़्स को रकबा के तौर पर कोई चीज़ दी गई या उमरय के तौर पर तो वह उस के वारिसो की है"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (3556)

٣٠١٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْعُمْرَى جَائِزَةٌ لِأَهْلِهَا وَالرُّقْبَى جَائِزَةٌ لِأَهْلِهَا» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

3014. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "उमरय, जिस शख़्स को उमरय दिया जाए उस के अहले खाना के लिए नाफ़िज़ होगा और रकबा, जिस शख़्स को रकबा दिया जाए वह उस के अहले खाना के लिए नाफ़िज़ होगा"| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (3 / 303 ح 14304) و الترمذى (1351 وقال : حسن) و ابوداؤد (3558)

بَاب العطايا • तोहफा देने का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٠١٥ - (صَحِيح) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَمْسِكُوا أَمْوَالَكُمْ عَلَيْكُمْ لَا تُفْسِدُوهَا فَإِنَّهُ مَنْ أَعْمَرَ عُمْرَى فَهِيَ لِلَّذِي أعمر حَيا وَمَيتًا ولعقبه» . رَوَاهُ مُسلم

3015. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपने अमवाल की हिफाज़त करो और उन्हें ख़राब न करो, क्योंकि जिस शख़्स ने उमरय दिया तो वह इसी शख़्स का है जिस को उमरय दिया गया उसकी जिंदगी मैं भी, उस के मरने के बाद भी और उस के वुरसा का है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (26 / 1625)، (4196)

गुज़िश्ता बाब के बारे में बयान • بَاب

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٣٠١٦ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ عُرِضَ عَلَيْهِ رَيْحَانٌ فَلَا يَرُدُّهُ فَإِنَّهُ خَفِيفُ الْمَحْمَلِ طَيِّبُ الرّيح» . رَوَاهُ مُسلم

3016. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स को खुशबू पेश की जाए तो वह इसे वापस न करे क्योंकि वह हल्का सा इहसान और अच्छी खुशबू है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (20 / 2253)، (5883)

٣٠١٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ لَا يَرُدُّ الطِّيبَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

3017. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूल करीम ﷺ खुशबू (के तोहफे) को वापस नहीं किया करते थे| (बुखारी)

رواه البخارى (5929)

٣٠١٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْعَائِدُ فِي هِبَتِهِ كَالْكَلْبِ يَعُودُ فِي قَيْئِهِ لَيْسَ لَنَا مَثَلُ السوء» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3018. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हिब्बा वापस लेने वाला, कै कर के इसे चाटने वाले कुत्ते की तरह है, हमारे लिए बुरी मिसाल नहीं ?" (बुखारी)

رواه البخارى (2622)

٣٠١٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ أَنَّ أَبَاهُ أَتَى بِهِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنِّي نَحَلْتُ ابْنِي هَذَا غُلَامًا فَقَالَ: «أَكُلَّ وَلَدِكَ نَحَلْتَ مِثْلَهُ؟» قَالَ: لَا قَالَ: «فَأَرْجِعْهُ» . وَفِي رِوَايَةٍ: أَنَّهُ قَالَ: «أَيَسُرُّكَ أَنْ يَكُونُوا إِلَيْكَ فِي الْبِرِّ سَوَاءً؟» قَالَ: بَلَى قَالَ: «فَلَا إِذن» . وَفِي رِوَايَةٍ: أَنَّهُ قَالَ: أَعْطَانِي أَبِي عَطِيَّةً فَقَالَتْ عَمْرَةُ بِنْتُ رَوَاحَةَ: لَا أَرْضَى حَتَّى تشهد رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنِّي أَعْطَيْتُ ابْنِي مِنْ عَمْرَةَ بِنْتِ رَوَاحَةَ عَطِيَّةً [ص:٩١ فَأَمَرَتْنِي أَنْ أُشْهِدَكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «أَعْطَيْتَ سَائِرَ وَلَدِكَ مِثْلَ هَذَا؟» قَالَ: لَا قَالَ: «فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْدِلُوا بَيْنَ أَوْلَادِكُمْ» . قَالَ: فَرَجَعَ فَرَدَّ عَطِيَّتَه. وَفِي رِوَايَةٍ: أَنَّهُ قَالَ: «لَا أشهد على جور»

3019. नौमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के मेरे वालिद मुझे लेकर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो अर्ज़ किया, मैंने अपने बेटे को एक गुलाम हिब्बा किया है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम ने अपने सारी औलाद को (बराबर) इस तरह का हिब्बा किया है?” उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे वापस ले लो”, एक दूसरी रिवायत में है की आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम पसंद करते हो के वह सारे तेरे साथ मसावी हुस्ने सुलूक करे ?” उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “तो फिर तुम ऐसे क्यों नहीं करते ?” एक रिवायत में है उन्होंने कहा: मेरे वालिद ने मुझे एक अतिय्या दिया तो उमरा बिन्ते रवाहा रदियल्लाहु अन्हु (मेरी वालिदा) ने कहा: में राज़ी नहीं हत्ता कि तुम रसूलुल्लाह ﷺ को गवाह बना लो, वह रसूलुल्लाह ﷺ के पास आए तो अर्ज़ किया, मैंने उमरा बिन्ते रवाहा रदियल्लाहु अन्हु से अपने बेटे को एक अतिय्या दिया है और अल्लाह के रसूल! उस ने कहा है की मैं आप को गवाह बनाऊ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम ने अपने बाकी औलाद को भी इसी तरह का अतिय्या दिया है?” उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह से डरो और अपने औलाद के दरमियान इंसाफ करो”, रावी बयान करते हैं, वह वापस आए और अपना अतिय्या वापस ले लिया और एक दूसरी रिवायत में है के आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं ज़ुल्म पर गवाह नहीं बनता”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2586) و مسلم (13 / 1623)، (4181 و 4182)

بَاب • गुज़िश्ता बाब के बारे में बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٠٢٠ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَرْجِعُ أَحَدٌ فِي هِبَتِهِ إِلَّا الْوَالِدُ مِنْ وَلَده» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

3020. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कोई शख़्स हिब्बा कर के वापस नहीं ले सकता, अलबत्ता वालिदेन अपने औलाद को कोई चीज़ हिब्बा कर के वापस ले सकते है”| (सहीह)

صحیح ، رواہ النسائی (6 / 264 ح 3719) و ابن ماجہ (2378)

٣٠٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ وَابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَحِلُّ لِلرَّجُلِ أَنْ يُعْطِيَ عَطِيَّةً ثُمَّ يَرْجِعَ فِيهَا إِلَّا الْوَالِدَ فِيمَا يُعْطِي وَلَدَهُ وَمَثَلُ الَّذِي يُعْطِي الْعَطِيَّةَ ثُمَّ يَرْجِعُ فِيهَا كَمَثَلِ الْكَلْبِ أَكَلَ حَتَّى إِذَا شَبِعَ قَاءَ ثُمَّ عَادَ فِي قَيْئِهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَصَححهُ التِّرْمِذِيّ

3021. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा और इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “किसी आदमी के लिए हलाल नहीं के वह अतिय्या दे कर वापस ले, मगर वालिद जो अपने औलाद को अतिय्या देता है, और इस शख़्स की मिसाल जो अतिय्या दे कर वापस ले कुत्ते की तरह है जो खाता रहता है, हत्ता के शक्म सैर हो जाता है तो कै कर देता है, फिर इसे खाने लगता है”| अबू दावुद, तिरमिज़ी, नसई, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने इसे सहीह करार दिया है| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ ابوداؤد (3539) و الترمذی (2132) و النسائی (6 / 265 ح 3720) و ابن ماجہ (2277)

٣٠٢٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ أَعْرَابِيًّا أَهْدِيَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَكْرَةً فَعَوَّضَهُ مِنْهَا سِتَّ بَكَرَاتٍ فَتَسَخَّطَ فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: «إِنَّ فَلَانًا أَهْدَى إِلَيَّ نَاقَةً فَعَوَّضْتُهُ مِنْهَا سِتَّ بَكَرَاتٍ فَظَلَّ سَاخِطًا لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ لَا أَقْبَلَ هَدِيَّةً إِلَّا مِنْ قُرَشِيٍّ أَوْ أَنْصَارِيٍّ أَوْ ثَقَفِيٍّ أَوْ دوسي» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3022. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आराबी ने एक कम उमर ऊंट रसूलुल्लाह ﷺ को बतौर हदिया पेश किया तो आप ने उस के अवज़ इसे छे कम उमर ऊंटनिया दी, लेकिन वह राज़ी न हुआ, जब नबी ﷺ को उस का पता चला तो आप ﷺ ने अल्लाह की हम्द व सना बयान की, फिर फ़रमाया: “फलां शख़्स ने मुझे एक ऊंट बतौर हदिया पेश किया तो मैंने उस के अवज़ इसे छे ऊंटनिया दी लेकिन वह फिर भी राज़ी नहीं हुआ, अब मैंने अज़्म कर लिया है की मैं सिर्फ किसी कुरैश, अंसारी, सक्फी या दौसी शख़्स का हदिया ही कबूल करूँगा”| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (3945 وقال : حسن صحیح ، و سندہ حسن و للفظ لہ) و ابوداؤد (3537) و النسائی (6 / 280 ح 3790)

٣٠٢٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَعْطِيَ عَطَاءً [ص:٩١ فَوَجَدَ فَلْيُجْزِ بِهِ وَمَنْ

لَمْ يَجِدْ فَلْيُثْنِ فَإِنَّ مَنْ أَثْنَى فَقَدْ شَكَرَ وَمَنْ كَتَمَ فَقَدْ كَفَرَ وَمَنْ تَحَلَّى بِمَا لَمْ يُعْطَ كَانَ كَلَابِسِ ثوبي زور» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

3023. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जिस शख़्स को कोई अतिय्या दिया जाए और वह कशाईश पाए तो उस का बदला दे और जो शख़्स कशाईश न पाए तो वह उसकी तारीफ़ करे, क्योंकि जिस ने तारीफ़ की तो उस ने कर यह अदा किया और जिस ने (इहसान को) छुपाया तो उस ने नाशुक्री की, और जो शख़्स ऐसी चीज़ ज़ाहिर करने की कोशिश करे जो इसे नहीं दी गई तो वह झूठ के दो जोड़ा पहनने वाले की तरह है (दोहरा झूठ बोलने वाले की तरह है)"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2034 بلون آخر و قال : حسن غريب ، و سنده ضعيف) و ابوداؤد (4813 و سنده ضعيف) * فيه شرجيل بن سعد الانصارى ، شيخ عمارة :'' و ثقه ابن حبان و ضعفه جمهور الائمة '' (مجمع الزوائد 4 / 115)

٣٠٢٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ صُنِعَ إِلَيْهِ مَعْرُوفٌ فَقَالَ لِفَاعِلِهِ: جَزَاكَ اللَّهُ خَيْرًا فَقَدْ أَبْلَغَ فِي الثَّنَاءِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3024. उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस के साथ कोई भलाई की गई और उस ने भलाई करने वाले से कहा (جَزَاكَ اللَّهُ خَيْرًا) "अल्लाह तुम्हें बेहतर बदला दे", तो उस ने उसकी बहोत अच्छी तारीफ़ की"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2035) * سليمان التيمى مدلس و عنعن و لبعض الحديث شواهد

٣٠٢٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ لَمْ يَشْكُرِ النَّاسَ لَمْ يَشْكُرِ اللَّهَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ

3025. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस ने लोगों का शुक्रिया अदा न किया उस ने अल्लाह का भी शुक्रिया अदा न किया"| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (3 / 32 ح 11300) و الترمذى (1955 وقال : حسن)

٣٠٢٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: لَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ أَتَاهُ الْمُهَاجِرُونَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا رَأَيْنَا قَوْمًا أَبْذَلَ مِنْ كَثِيرٍ وَلَا أَحْسَنَ مُوَاسَاةً مِنْ قَلِيلٍ مِنْ قَوْمٍ نَزَلْنَا بَيْنَ أَظْهُرِهِمْ: لَقَدْ كَفَوْنَا المؤونة وَأَشْرَكُونَا فِي الْمَهْنَأِ حَتَّى لَقَدْ خِفْنَا أَنْ يَذْهَبُوا بِالْأَجْرِ كُلِّهِ فَقَالَ: «لَا مَا دَعَوْتُمُ اللَّهَ لَهُمْ وَأَثْنَيْتُمْ عَلَيْهِمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَصَحَّحَهُ

3026. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ मदीना तशरीफ़ लाए तो मुहाजिर सहाबा

किराम आप के पास आए और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम जिस कौम के यहाँ कयाम पज़ीर है वह माल ए कसीर होने की सूरत में बहोत ज़्यादा खर्च करने वाले और माल मुख़्तसर होने की सूरत में बेहतरीन गमख्वार होने में अपने मिसाल नहीं रखते, उन्होंने हमें काम करने से रोक रखा है और मनफीअत में बराबर शरीक कर रखा है, हत्ता के हमे, तो अंदेशा है के सारा अज़र वही ले जाएंगे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब तक तुम इन के लिए अल्लाह से दुआए करते रहोगे और उनकी तारीफ़ करते रहोगे तो ऐसे नहीं होगा”| तिरमिज़ी, और उन्होंने इसे सहीह करार दिया है| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (2487)

٣٠٢٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «تَهَادُوا فَإِنَّ الْهَدِيَّةَ [ص:٩١ تُذْهِبُ الضَّغَائِنَ» . رَوَاهُ

3027. आइशा रदियल्लाहु अन्हा नबी ﷺ से रिवायत करती हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बाहम तहाईफ दिया करो, क्योंकि तोहफे अदावत दूर कर देता है”| (मौज़ू)

اسنادہ موضوع ، [رواہ القضاعی فی مسند الشھاب (1 / 383 ح 660) و فیہ ابو یوسف یعقوب بن محمد بن عبدالکوفی الاعشی : کذاب رجل سوء و فی علل أخری]

٣٠٢٨ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «تهادوا فَإِنَّ الْهَدِيَّةَ تُذْهِبُ وَحَرَ الصَّدْرِ وَلَا تَحْقِرَنَّ جَارَةٌ لجارتها وَلَا شقّ فرسن شَاة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3028. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बाहम तहाईफ दिया करो, क्योंकि तोहफ़ा सीने का किना दूर कर देता है, और पड़ोसन अपने पड़ोसन के हदिया को मामूली न समझे ख्वाह बकरी के खुर का एक हिस्सा ही हो”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (2130 وقال : غریب) * فیہ ابو معشر نجیح السندی : ضعیف

٣٠٢٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ثَلَاثٌ لَا تُرَدُّ الْوَسَائِدُ وَالدُّهْنُ وَاللَّبَنُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ قِيلَ: أَرَادَ بالدهن الطّيب

3029. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन चीज़े वापस नहीं की जानी चाहिए, तकिया, तेल और दूध| तिरमिज़ी और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है, कहा गया के तेल से खुशबू मुराद है| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (2790)

٣٠٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدَيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِذا أعْطى أحدكُم الرَّيْحَانَ فَلَا يَرُدُّهُ فَإِنَّهُ خَرَجَ مِنَ الْجَنَّةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ مُرْسلا

3030. अबू उस्मान नह्दी रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से किसी शख़्स को खुशबू पेश की जाए तो वह इसे वापस न करे, क्योंकि वह जन्नत से आई है”| तिरमिज़ी, रिवायत मुरसल है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2791) * السند مرسل و فیه علل أخرى

بَاب • गुज़िश्ता बाब के बारे में बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٠٣١ - (صَحِيح) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَتِ امْرَأَةُ بَشِيرٍ: انْحَلِ ابْنِي غُلَامَكَ وَأَشْهِدْ لِي رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنَّ ابْنَةَ فُلَانٍ سَأَلَتْنِي أَنْ أَنْحَلَ ابْنَهَا غُلَامِي وَقَالَتْ: أَشْهِدْ لِي رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «أَلَهُ إِخْوَةٌ؟» قَالَ: نَعَمْ قَالَ: «أَفَكُلَّهُمْ أَعْطَيْتَهُمْ مِثْلَ مَا أَعْطَيْتَهُ؟» قَالَ: لَا قَالَ: «فَلَيْسَ يَصْلُحُ هَذَا وَإِنِّي لَا أَشْهَدُ إِلَّا على حق» . رَوَاهُ مُسلم

3031. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, बशीर रदियल्लाहु अन्हु की अहलिया ने कहा: मेरे बेटे को अपना गुलाम हिब्बा कर दो और रसूलुल्लाह ﷺ को उस पर गवाह बनाओ, वह रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आए तो अर्ज़ किया, फलां की बेटी (यानी मेरी अहलिया) ने मुझ से मुतालबा किया है की मैं उस के बेटे को अपना गुलाम हिब्बा करू और उस ने यह भी कहा है के इस पर रसूलुल्लाह ﷺ को गवाह बनाऊ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस के और भी भाई हैं ?” उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम ने जो इस लड़के को दिया है के इन सब को भी दिया है” उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये तो मुनासिब नहीं, मैं तो सिर्फ हक़ बात की ही गवाही देता हूँ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (19 / 1624)، (4187)

٣٠٣٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَتِيَ بِبَاكُورَةِ الْفَاكِهَةِ وَضَعَهَا عَلَى عَيْنَيْهِ وَعَلَى شَفَتَيْهِ وَقَالَ: «اللَّهُمَّ كَما أَرَيْتَنَا أَوَّلَهُ فَأَرِنَا آخِرَهُ» ثُمَّ يُعْطِيهَا مَنْ يَكُونُ عِنْدَهُ مِنَ الصِّبْيَانِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي الدَّعْوَات الْكَبِير

3032. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा की जब पहला पहला फल आप की खिदमत में पेश किया जाता तो आप ﷺ इसे अपने आंखो और होठों पर लगाते और दुआ फरमाते: “अल्लाह

जिस तरह तूने हमें उस का आगाज़ दिखाया है किस तरह हमें उस का इख्तिताम भी दिखाना”, फिर आप इसे अपने पास बैठें हुए किसी बच्चे को दे देते| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ البیھقی فی الدعوات الکبیر (2 / 234 ح 463) * فیہ عبد الرحمن بن یحیی بن سعید العذری : متروک فالسند ضعیف جدًا ، و خالفہ عبداللہ بن وھب فرواہ عن یونس بن یزید الایلی عن الزھری مرسلاً وھو الصواب

بَاب اللّقطَة • लुक्ता का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

लुक्ता:- ऐसी चीज़ को कहते है जो ऐसी जगह से मिले जो किसी शख्सी मिलकियत में न हो| मसलन रास्ते में पैसे वगैरा मिल जाए और इन के ज़ाए होने का खतरा हो तो इसे उठा लेना|

٣٠٣٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلَهُ عَنِ اللُّقَطَةِ فَقَالَ: «اعْرِفْ عِفَاصَهَا وَوِكَاءَهَا ثُمَّ عَرِّفْهَا سَنَةً فَإِنْ جَاءَ صَاحِبُهَا وَإِلَّا فَشَأْنُكَ بِهَا» . قَالَ: فَضَالَّةُ الْغَنَمِ؟ قَالَ: «هِيَ لَكَ أَوْ لِأَخِيكَ أَوْ لِلذِّئْبِ» قَالَ: فَضَالَّةُ الْإِبِلِ؟ قَالَ: «مَالك وَلَهَا؟ مَعَهَا سِقَاؤُهَا وَحِذَاؤُهَا تَرِدُ الْمَاءَ وَتَأْكُلُ الشَّجَرَ حَتَّى يَلْقَاهَا رَبُّهَا» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: فَقَالَ: «عَرِّفْهَا سَنَةً ثُمَّ اعْرِفْ وِكَاءَهَا وَعِفَاصَهَا ثُمَّ اسْتَنْفِقَ بِهَا فَإِنْ جَاءَ رَبهَا فأدها إِلَيْهِ»

3033. ज़ैद बिन खालिद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने आप से लुफ्ता के बारे में दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस (मिलने वाली चीज़) की थेली और इसे बांधने वाली रस्सी की पहचान रख, फिर एक साल तक उस का एलान कर, अगर उस का मालिक आजाए तो ठीक वरना तो उसे अपने इस्तेमाल में ले आ”, उस ने गुमशुदा बकरी के बारे में मसअला दरियाफ्त किया तो फ़रमाया: “(इसे पकड़ ले) वह तेरे लिए है या तेरे किसी भाई के लिए या फिर भेड़िये के लिए”, उस ने गुमशुदा ऊंट के बारे में सवाल किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुझे उस से किया सारोकार? (पानी का) मश्किज़ा उस के पास और पाँव उस के मज़बूत है (प्यास लगने पर) घाट पर आएगा और दरख्त के पत्ते खाएगा हत्ता के उस का मालिक उस तक पहुँच जाएगा”| और मुस्लिम की रिवायत में है: “आप ﷺ ने फ़रमाया: “एक साल तक उस का एलान कर फिर इस चीज़ को बांधने वाली रस्सी और उसकी थेली की पहचान रख फिर इसे इस्तेमाल मे मिला अलबत्ता अगर उस का मालिक आजाए तो फिर इसे इतनी कीमत अदा कर”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (2429) و مسلم (142 / 1722)، (4498)

٣٠٣٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ آوَى ضَالَّةً فَهُوَ ضَالٌّ مَا لم يعرفهَا» . رَوَاهُ مُسلم

3034. ज़ैद बिन खालिद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स किसी गुमशुदा चीज़ को पनाह दे और उस का एलान न करे तो वह खुद गुमराह है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (12 / 1725)، (4510)

٣٠٣٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عُثْمَانَ التَّيْمِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَن لقطَة الْحَاج. رَوَاهُ مُسلم

3035. अब्दुल रहमान बिन उस्मान तय्मी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने हाजियों की गिरी पड़ी चीज़ उठाने से मना फ़रमाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (11 / 1724)، (4509)

بَاب اللّقطَة • लुक्ता का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٠٣٦ - (حسن) عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ سُئِلَ عَنِ الثَّمَرِ الْمُعَلَّقِ فَقَالَ: «مَنْ أَصَابَ مِنْهُ مِنْ ذِي حَاجَةٍ غَيْرَ مُتَّخِذٍ خُبْنَةً فَلَا شَيْءَ عَلَيْهِ وَمَنْ خَرَجَ بِشَيْءٍ مِنْهُ فَعَلَيْهِ غَرَامَةُ مِثْلَيْهِ وَالْعُقُوبَةُ وَمَنْ سَرَقَ مِنْهُ شَيْئًا بَعْدَ أَنْ يُؤْوِيَهُ الْجَرِينَ فَبَلَغَ ثَمَنَ الْمِجَنِّ فَعَلَيْهِ الْقَطْعُ» وَذَكَرَ فِي ضَالَّةِ الْإِبِلِ وَالْغنم كَمَا ذكر غَيْرُهُ قَالَ: وَسُئِلَ عَنِ اللُّقَطَةِ فَقَالَ: «مَا كَانَ مِنْهَا فِي الطَّرِيقِ الْمِيتَاءِ وَالْقَرْيَةِ الْجَامِعَةِ فَعَرِّفْهَا سَنَةً فَإِنْ جَاءَ صَاحِبُهَا فَادْفَعْهَا إِلَيْهِ وَإِنْ لَمْ يَأْتِ فَهُوَ لَكَ وَمَا كَانَ فِي الْخَرَابِ الْعَادِيِّ فَفِيهِ وَفِي الرِّكَازِ الْخُمُسُ» . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَرَوَى أَبُو دَاوُدَ عَنْهُ مِنْ قَوْله: وَسُئِلَ عَن اللّقطَة إِلَى آخِره

3036. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, और उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत किया के आप से दरख्त पर लटके हुए फल के मुतल्लिक दरियाफ्त किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "अगर कोई ज़रूरत मंद शख्स, जो के कपड़े में डालकर ले जाने वाला न हो, वहां से खा ले तो उस पर कोई मुआखिज़ा (इलज़ाम लगाना) नहीं, और जो शख़्स वहां से कुछ साथ ले आए तो उस पर दो गुनाह तावुन और सज़ा है, और जो शख़्स जिन्स के ढेर लग जाने के बाद वहां से ढाल की कीमत के बराबर चोरी करे तो उस का हाथ काटा जाएगा", और गुमशुदा ऊंट और गुमशुदा बकरी के बारे में भी दूसरी चीजों की तरफ ही ज़िक्र किया गया है| रावी बयान करते हैं, आप से लुक्ता के बारे में सवाल किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "अगर वह

शरेआम और बड़ी बस्ती से मिले तो फिर तो एक साल तक उस का एलान कर, अगर उस का मालिक, जाए तो वह उस के हवाले कर, और अगर कोई मालिक न आए तो फिर वह तेरी है, और अगर वह किसी बे आबाद क़दीम जगह से मिले तो फिर उस में और मद्फ़ुन खज़ाने में पांचवा हिस्सा है"| नसई, अबू दावुद रहिमहुल्लाह ने भी इन्ही से रिवायत किया है और वह हदीस سُئِلَ عَنِ اللُّقْطَةِ से आख़िर तक मरवी है| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه النسائی (8 / 85 ح 4961) و ابوداؤد (1710)

٣٠٣٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي سعيد الْخُدْرِيّ: أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَجَدَ دِينَارًا فَأَتى بِهِ فَاطِمَة رَضِي الله عَنْهَا فَسَأَلَ عَنْهُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ [ص:٩١ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَذَا رِزْقُ اللَّهِ» فَأَكَلَ مِنْهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأكل عَليّ وَفَاطِمَة رَضِي الله عَنْهُمَا فَلَمَّا كَانَ بَعْدَ ذَلِكَ أَتَتِ امْرَأَةٌ تَنْشُدُ الدِّينَارَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا عَلِيُّ أَدِّ الدِّينَارَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3037. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के अली बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु को एक दीनार मीला वह इसे फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा के पास ले आए और इस बारे में रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "ये तो अल्लाह का रीज़्क है", रसूलुल्लाह ﷺ अली रदियल्लाहु अन्हु और फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा ने उस में से खाया, जब अगला रोज़ हुआ तो एक औरत दीनार का एलान करती हुई आइ तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अली दीनार वापस करो"| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (1714)

٣٠٣٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الْجَارُودِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ضَالَّةُ الْمُسْلِمِ حَرَقُ النَّارِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3038. जारूद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मुसलमान की गुमशुदा चीज़ (अगर वह एलान की बगैर उठा ली जाए तो वो) आग का शअला है"| (सहीह)

صحیح ، رواه الدارمی (2 / 266 ح 2604 ، نسخة محققة : 2643 و سنده حسن لذاته) [و احمد (5 / 80) و النسائی فی الکبری (5792)] * و للحدیث طرق کثیرة

٣٠٣٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عِيَاضِ بْنِ حِمَارٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ وَجَدَ لُقَطَةً فَلْيُشْهِدْ ذَا عَدْلٍ أَوْ ذَوِي عَدْلٍ وَلَا يَكْتُمْ وَلَا يُغَيِّبْ فَإِنْ وَجَدَ صَاحِبَهَا فَلْيَرُدَّهَا عَلَيْهِ وَإِلَّا فَهُوَ مَالُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ

3039. इयाज़ बिन हिमार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स गिरी पड़ी चीज़ पा ले तो वह एक या दो आदिल शख़्स गवाह बना ले, और वह इसे छुपाए न इसे गायब करे, अगर उस का मालिक पा ले तो वह चीज़ इसे वापस करे वरना वह अल्लाह का माल है जिसे चाहता है अता करता है”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (4 / 161162 ح 17620) و ابوداؤد (1709) و الدارمی (لم اجده) [و النسائی فی الکبری (5808) و ابن ماجه (2505)]

٣٠٤٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: رَخَّصَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْعَصَا وَالسَّوْطِ وَالْحَبْلِ وَأَشْبَاهِهِ يَلْتَقِطُهُ الرَّجُلُ يَنْتَفِعُ بِهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد»» وَذكر حَدِيث الْمِقْدَام بن معدي كرب: «أَلا لَا يحل» فِي «بَاب الِاعْتِصَام»

3040. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने लाठी, कोड़े, रस्सी और उस से मिलती जुलती चीजों के बारे में हमें रुखसत इनायत फरमाई के आदमी इस तरह की गिरी पड़ी चीज़ को उठाकर इस्तेमाल कर ले| # और मिक्दाम बिन मअदि करब (र) से मरवी हदीस ((اَلَا لَا يَحِلُّ ..... بَاب الِاعْتِصَام بِالْكتاب وَالسّنة)) (किताब व सुन्नत के साथ तम्सक इख्तियार करना) में ज़िक्र की गई है. (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (1717) * محمد بن شعیب : سمعه من رجل عن المغیرة بن زیاد به (الکامل لابن عدی 6 / 356) و الرجل : مجهول و ابو الزبیر مدلس و عنعن0 حدیث مقدام بن معدی کرب تقدم (163)

मीरास का बयान • كتاب الْفَرَائِض

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٣٠٤١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَنَا أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ فَمَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ وَلَمْ يَتْرُكْ وَفَاءً فَعَلَيَّ قَضَاؤُهُ. وَمَنْ تَرَكَ مَالًا فَلِوَرَثَتِهِ» . وَفِي رِوَايَة: «من ترك دينا أَو ضيَاعًا فَلْيَأْتِنِي فَأَنَا مَوْلَاهُ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «مَنْ تَرَكَ مَالًا فَلِوَرَثَتِهِ وَمَنْ تَرَكَ كَلًّا فَإِلَيْنَا»

3041. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं मोमिनो का उन के नफ्सो से भी ज़्यादा हकदार हूँ, जो शख़्स फौत हो जाए और उस पर क़र्ज़ हो और उस ने क़र्ज़ की अदाइगी के लिए कोई चीज़ भी न छोड़ी हो तो उसकी अदाइगी मेरे जिम्मे है और जिस ने कोई माल छोड़ा हो तो वह उस के वारिसो का है” और एक दूसरी रिवायत में है: “जो शख़्स क़र्ज़ या पस्मंद्गान छोड़ जाए तो वह मेरे पास आए में उनका हामी व मददगार हूँ”, और एक दूसरी रिवायत में है: “जिस ने माल छोड़ा तो उस के वारिसो के लिए है और जो शख़्स बोझ (यानी क़र्ज़ या औलाद) छोड़ जाए तो वह हमारी तरफ आए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6763) و مسلم (17 / 1619)، (4161)

٣٠٤٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلْحِقُوا الْفَرَائِضَ بِأَهْلِهَا فَمَا بَقِيَ فَهُوَ لِأَوْلَى رَجُلٍ ذكر»

3042. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मकरुर हिस्से उन के मुस्तहकिन को दो और जो बाकी बच्चे वह (मय्यत के) करीब तरीन मर्द (रिश्तेदार) का हिस्सा है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6732) و مسلم (2 / 1615)، (4141)

٣٠٤٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَرِثُ الْمُسْلِمُ الْكَافِرَ وَلَا الْكَافِرُ الْمُسْلِمَ»

3043. उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुसलमान काफ़िर का और काफ़िर मुसलमान का वारिस नहीं हो सकता”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6764) و مسلم (1 / 1614)، (4140)

٣٠٤٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَوْلَى الْقَوْمِ مِنْ أَنْفُسِهِمْ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

3044. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “कौम का आज़ाद करदा गुलाम उन्हीं में से होता है”| (बुखारी)

رواه البخاری (6761)

٣٠٤٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ابْنُ أُخْتِ الْقَوْمِ مِنْهُم»»» وَذُكِرَ حَدِيثُ عَائِشَةَ: «إِنَّمَا الْوَلَاءُ» فِي بَابٍ قبل «بَاب السّلم»

3045. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कौम का भांजा उन्हीं में शुमार होता है”| मुत्तफ़िक़ अलैह| आइशा रदियल्लाहु अन्हा से मरवी हदीस ((اِنَّمَا الْوَلَاءُ .....)) बाब अल सलम से पहले बाब में ज़िक्र हो चुकी है और बराअ रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस: “खाला माँ के मक़ाम पर होती है” हम بَابِ بُلُوْغِ الصَّغِيْرِ وَ حَضَانَتِهِ मैं इनशाअल्लाह तआला ज़िक्र करेंगे. (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6762) و مسلم (133 / 1059)، (2439) 0 حدیث عائشة تقدم (2877) و حدیث البراء یاتی (3377)

كتاب الْفَرَائِض • मीरास का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٠٤٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَتَوَارَثُ أَهْلُ مِلَّتَيْنِ شَتَّى» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْن مَاجَه

3046. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दो मुख्तलिफ दीन के हामिल लोग बाहम वारिस नहीं हो सकते”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2911) و ابن ماجه (2731)

٣٠٤٧ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ التِّرْمِذِيّ عَن جَابر

3047. इमाम तिरमिज़ी ने इसे जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (2108 وقال : غریب)

٣٠٤٨ - (ضَعِيف جِدًّا) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْقَاتِلُ لَا يَرِثُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

3048. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कातिल (मकतुल का) वारिस नहीं हो सकता”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2109) و ابن ماجه (2735) [وله شواهد]

٣٠٤٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ بُرَيْدَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَعَلَ لِلْجَدَّةِ السُّدُسَ إِذَا لَمْ تَكُنْ دونهَا أم. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3049. बुरैदा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, के आप ﷺ ने (मय्यत की) माँ न होने की सूरत में दादी नानी के लिए छठा हिस्सा मुकर्रर फ़रमाया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2895)

٣٠٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا اسْتَهَلَّ الصَّبِيُّ صُلِّيَ عَلَيْهِ وَورث» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه والدارمي

3050. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: जब बच्चा पैदाइश के वक़्त आवाज़ निकाले (चीखे और फिर फौत हो जाए) तो उसकी नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ी जाएगी और उसकी विरासत भी तकसीम होगी”| (इसनाद सख्त ज़ईफ)

اسناده ضعیف جذا و الحدیث ضعیف ، رواه ابن ماجه (2750) و الدارمی (2 / 392 ح 3130) * الربیع بن بدر : متروک ، و تابعه سفیان بن سعید الثوری وهو مدلس و عنعن و تابعهما اسماعیل بن مسلم المکی (الترمذی : 1032) وهو ضعیف و ابو الزبیر مدلس و عنعن

٣٠٥١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ كَثِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ [ص:٩١ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَوْلَى الْقَوْمِ مِنْهُمْ وَحَلِيفُ الْقَوْمِ مِنْهُمْ وَابْنُ أُخْتِ الْقَوْمِ مِنْهُمْ» . رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

3051. कसीर बिन अब्दुल्लाह अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कौम का आज़ाद करदा गुलाम उन्हें में से है, कौम का साथी इन्ही में से है और कौम का भांजा इन्ही में से है”| (सहीह)

صحیح ، رواه الدارمی (2 / 243 ح 2531) * سنده ضعیف جدًا و لکن لمتون الھدیث شواھد صحیحة ، مولی القوم منھم (البخاری : 67616762) حلیف القوم منھم (البخاری فی الادب المفرد : 75 و سنده حسن ، و احمد 4 / 340 و صححه الحاکم 2 / 328 و وافقه الذھبی) ابن اخت القوم منھم (البخاری : 3528 و مسلم : 133 / 1059) فالحدیث صحیح عن رسول اللہ صلی اللہ علیه و آله وسلم و اماجد کثیر فلا اعلم الیه سندًا قویًا لان کثیر بن عبداللہ متروک کذاب ، و احیاناً اصح المتن بمتن آخر قوی فافھمه فانه مھم

٣٠٥٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن الْمِقْدَام قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنَا أَوْلَى بِكُلِّ مُؤْمِنٍ مِنْ نَفْسِهِ فَمَنْ تَرَكَ دَيْنًا أَوْ ضَيْعَةً فَإِلَيْنَا وَمَنْ تَرَكَ مَالًا فَلِوَرَثَتِهِ وَأَنَا مَوْلَى مَنْ لَا مَوْلَى لَهُ أَرِثُ مَالَهُ وَأَفُكُّ عَانَهُ وَالْخَالُ وَارِثُ مَنْ لَا وَارِثَ لَهُ يَرِثُ مَالَهُ وَيَفُكُّ عَانَهُ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «وَأَنَا وَارِثُ مَنْ لَا وَارِثَ لَهُ أَعْقِلُ عَنْهُ وَأَرِثُهُ وَالْخَالُ وَارِثُ مَنْ لَا وَارِثَ لَهُ يَعْقِلُ عَنْهُ ويرثه» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3052. मिक्दाम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं हर मोमिन से खुद उस से भी ज़्यादा ताल्लुक रखता हूँ, जो शख़्स क़र्ज़ या पस्मंद्गान छोड़ जाए तो उनका ख़याल रखना हमारी ज़िम्मेदारी है, और जो शख़्स माल छोड़ जाए तो वह उस के वारिसो के लिए है, और जिस का कोई मौला (हिमायती व मददगार) न हो, उस का में मौला हूँ, उस के माल का में वारिस बनूँगा, उस के कैदी को में छुड़ाउंगा, जिस का कोई वारिस न हो उस का वारिस मामू है, वह उस के माल का वारिस होगा और उस के कैदी को छुड़ाएगा”,| और एक रिवायत में है: “जिस का कोई वारिस न हो उस का में वारिस हूँ, उसकी तरफ से दियत भी दूंगा और उस का वारिस भी बनूँगा, और जिस का कोई वारिस न हो उस का मामू वारिस है, वह उसकी तरफ से दियत देगा और उस का वारिस बनेगा”| (हसन)

حسن رواه ابوداؤد (28992900)

٣٠٥٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن وائلة بْنِ الْأَسْقَعِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَحُوزُ الْمَرْأَةُ ثَلَاثَ مَوَارِيثَ عَتِيقَهَا وَلَقِيطَهَا وَوَلَدَهَا الَّذِي لَاعَنَتْ عَنْهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

3053. वासिला बिन अस्कअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “औरत तीन विरासते पा सकती है, अपने आज़ाद किए हुए गुलाम की, अपने पाले हुए बच्चे की और अपने इस बच्चे की जिसके मुतल्लिक उस ने लिआन किया हो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2115 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (2906) و ابن ماجه (2742) * عمر بن زؤبة : ضعفه البخاری و الجمهور و قال ابن عدی :’’ انما انکروا علیه احادیثه عن عبدالواحد النصری ‘‘ و ھذا منھا

٣٠٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَيُّمَا رَجُلٍ عَاهَرَ بِحُرَّةٍ أَوْ أَمَةٍ فَالْوَلَد ولد زنى لَا يَرث وَلَا يُورث» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3054. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जिस शख़्स ने किसी आज़ाद या गुलाम औरत से ज़िना किया, (और बच्चा पैदा हुआ) तो वह बच्चा, वलदे ज़िना है, ना वह (अपने ज़ानि बाप का) वारिस होगा न उस का बाप उस का वारिस होगा”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (2113) * عبدالله بن لھیعة ضعیف مدلس و للحدیث شاھد ضعیف عند ابن حبان فی صحیحه (5964)

٣٠٥٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ مَوْلًى لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَاتَ وَتَرَكَ شَيْئًا وَلَمْ يَدَعْ حَمِيمًا وَلَا وَلَدًا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَعْطُوا مِيرَاثَهُ رَجُلًا مِنْ [ص:٩٢ أَهْلِ قَرْيَتِهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ

3055. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ का आज़ाद करदा गुलाम फौत हो गया, और उस ने कुछ माल छोड़ा, और उस ने ना कोई करीबी रिश्तेदार छोड़ा न औलाद, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस की मीरास उसकी बस्ती के किसी आदमी को दे दो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2902) و الترمذی (2106 وقال : حسن)

٣٠٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ: مَاتَ رَجُلٌ مِنْ خُزَاعَةَ فَأُتِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمِيرَاثِهِ فَقَالَ: «الْتَمِسُوا لَهُ وَارِثًا أَوْ ذَا رَحِمٍ» فَلَمْ يَجِدُوا لَهُ وَارِثًا وَلَا ذَا رَحِمٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَعْطُوا الْكُبْرَ مِنْ خُزَاعَةَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ: قَالَ: «انْظُرُوا أَكْبَرَ رَجُلٍ مِنْ خُزَاعَةَ»

3056. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, खुज़ाअत कबिले का एक आदमी फौत हो गया तो उसकी मीरास नबी ﷺ की खिदमत में पेश की गई, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस का कोई वारिस या कोई रिश्तेदार तलाश करो”, उन्होंने ना उस का कोई वारिस पाया न कोई रिश्तेदार तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “खुज़ाअत कबिले के किसी बुढ़ा शख़्स को दे दो”| अबू दावुद, और अबू दावुद ही की रिवायत में है फ़रमाया: “खुज़ाअत कबिले का कोई बड़ा आदमी देखो”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (2904) [النسائی فی الکبری (6395) و سنده حسن] * شریک القاضی مدلس و عنعن و لکن تابعه عباد بن العوام فی السنن الکبری للنسائی فالحدیث حسن

٣٠٥٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: إِنَّكُمْ تقرؤون هَذِهِ الْآيَةَ: (مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَا أَو دين)»» وَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَضَى بِالدّينِ قبل الْوَصِيَّةِ وَأَنَّ أَعْيَانَ بَنِي الْأُمِّ يَتَوَارَثُونَ دُونَ بَنِي الْعَلَّاتِ الرَّجُلُ يَرِثُ أَخَاهُ لِأَبِيهِ وَأُمِّهِ دُونَ أَخِيهِ لِأَبِيهِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَفِي رِوَايَةِ الدَّارِمِيِّ: قَالَ: «الْإِخْوَةُ مِنَ الْأُمِّ يَتَوَارَثُونَ دُونَ بَنِي الْعَلَّاتِ. . .» إِلَى آخِره

3057. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, तुम यह आयत तिलावत करते हो: “वसीयत पूरी करने के बाद जो तुम वसीयत करते हो या क़र्ज़ की अदाइगी के बाद”, बेशक रसूलुल्लाह ﷺ ने क़र्ज़ को वसीयत से पहले अदा करने का फैसला फ़रमाया, और सगे भाई वारिस होते हैं, सोतेले भाई वारिस नहीं होते, आदमी अपने सगे भाई का वारिस होगा सोतेले भाई का वारिस नहीं होगा”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और दारमी की रिवायत में है फ़रमाया: “सगे भाई (एक ही माँ की औलाद) वारिस होंगे और मुख्तलिफ माओ की औलाद (यानी सोतेले भाई) वारिस नहीं होंगे”| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه الترمذی (2094) و ابن ماجه (2739) و الدارمی (2 / 368 ح 2988) * الحارث الاعور ضعیف و لمفهوم الحدیث شاهد حسن عند ابن ماجه (2433) وهو یغنی عنه

٣٠٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: جَاءَتِ امْرَأَةُ سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ بِابْنَتَيْهَا مِنْ سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَاتَانِ ابْنَتَا سَعْدِ بْنِ الرَّبِيعِ قُتِلَ أَبُوهُمَا مَعَكَ يَوْمَ أُحُدٍ شَهِيدًا وَإِنَّ عَمَّهُمَا أَخَذَ مَالَهُمَا وَلَمْ يَدَعْ لَهُمَا مَالًا وَلَا تُنْكَحَانِ إِلَّا وَلَهُمَا مَالٌ قَالَ: «يَقْضِي اللَّهُ فِي ذَلِكَ» فَنَزَلَتْ آيَةُ الْمِيرَاثِ فَبَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى عَمِّهِمَا فَقَالَ: «أَعْطِ لِابْنَتَيْ سَعْدٍ الثُّلُثَيْنِ وَأَعْطِ أُمَّهُمَا الثُّمُنَ وَمَا بَقِيَ فَهُوَ لَكَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غريبٌ

3058. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सईद बिन रबीअ रदियल्लाहु अन्हु की अहलिया सईद बिन रबीअ से अपने दोनों बेटीयां लेकर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आए तो अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! यह दोनों सईद बिन रबीअ रदियल्लाहु अन्हु की बेटीयां है, उनका वालिद गज़वा ए उहद में आप के साथ शरीक हो कर शहीद हो गया, इन दोनों के चचा ने उनका माल ले लिया है और इन के लिए कोई माल नहीं छोड़ा, अगर माल होगा तो उनकी शादी हो जाएगी, आप ﷺ ने फ़रमाया: "उस के मुतल्लिक अल्लाह फैसला फरमाएगा", पस आयत ए मीरास नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन के चचा को पैग़ाम भेजा के साद रदियल्लाहु अन्हु की दोनों बेटो को दो तिहाई दो और इन दोनों की वालिदा को आठवा हिस्सा दो और जो बाकी बचे वह तुम्हारा है"| अहमद तिरमिज़ी, अबू दावुद, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (3 / 352 ح 14858) و الترمذی (2092) و ابوداؤد (28912892) و ابن ماجه (2720) * عبدالله بن محمد بن عقيل : ضعيف مشهور ، ضعفه الجمهور

٣٠٥٩ - (صَحِيح) وَعَنْ هُزَيْلِ بْنِ شُرَحْبِيلَ قَالَ: سُئِلَ أَبُو مُوسَى عَنِ ابْنَةٍ وَبِنْتِ ابْنٍ وَأُخْتٍ فَقَالَ: للْبِنْت النّصْف وَللْأُخْت النّصْف وائت ابْنَ مَسْعُودٍ فَسَيُتَابِعُنِي فَسُئِلَ ابْنُ مَسْعُودٍ وَأُخْبِرَ بقول أبي مُوسَى فَقَالَ: لقد ضللت إِذن وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ أَقْضِي فِيهَا بِمَا قَضَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لِلْبِنْتِ النِّصْفُ وَلِابْنَةِ الِابْنِ السُّدُسُ تَكْمِلَةَ الثُّلُثَيْنِ وَمَا بَقِيَ فَلِلْأُخْتِ» فَأَتَيْنَا أَبَا مُوسَى فَأَخْبَرْنَاهُ بِقَوْلِ ابْنِ مَسْعُودٍ فَقَالَ: لَا تَسْأَلُونِي مَا دَامَ هَذَا الحبر فِيكُم. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3059. हुजैल बिन शुर्हबिल बयान करते हैं, अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु से बेटी, पोती और बहन के हिस्से के बारे में सवाल किया गया तो उन्होंने ने फ़रमाया: बेटी के लिए आधा, बहन के लिए आधा और तुम इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु के पास जाओ वह भी मेरे मुवाफिक फ़तवा देंगे, अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु से मसअला दरियाफ्त किया गया और उन्हें बताया गया के अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु ने यह फतवा दिया है, तो उन्होंने ने फ़रमाया: तब तो मैं गुमराह हो गया, और मैं हिदायत याफ्ता लोगों में से नहीं हूँ, मैं उस के मुतल्लिक वही फैसला करूँगा जो नबी ﷺ ने किया था, बेटी के लिए आधा, पोती के लिए छठा हिस्सा, इसी तरह दो तिहाई मुकम्मल हुआ और जो बाकी बचे वह बहन के लिए है, हम अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु के पास आए तो उन्हें इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु के फ़तवा के बारे में बताया तो उन्होंने ने फ़रमाया: जब तक यह अल्लामा तुम में मौजूद है मुझ से मसअला न पूछा करो| (बुखारी)

رواه البخاری (6736)

٣٠٦٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِن ابْنِي مَاتَ فَمَا لِي مِنْ مِيرَاثِهِ؟ قَالَ: «لَكَ السُّدُسُ» فَلَمَّا وَلَّى دَعَاهُ قَالَ: «لَكَ سُدُسٌ آخَرُ» فَلَمَّا وَلَّى دَعَاهُ قَالَ: «إِنَّ السُّدُسَ الْآخَرَ طُعْمَةٌ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

3060. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, मेरा पोता फौत हो गया है, उसकी मीरास में मेरा कितना हिस्सा है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारे लिए छठा हिस्सा है”, जब वह वापस मुड़ा तो आप ﷺ ने इसे बुलाया और फ़रमाया: “तुम्हारे लिए एक और छठा हिस्सा है”, जब वह वापस मुड़ा तो आप ﷺ ने इसे बुलाया और फ़रमाया: “दूसरा छठा हिस्सा (ज़्यादा हक़दार न होने की वजह से) तुम्हारे लिए रीज़्क है”| अहमद तिरमिज़ी, अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (4 / 428 ، 429 ح 20088) و الترمذی (2099) و ابوداؤد (2896) * قتادة مدلس و عنعن و فيه علة أخرى وهی عنعة الحسن بصری رحمه الله

٣٠٦١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ قَبِيصَةَ بْنِ ذُؤَيْبٍ قَالَ: جَاءَتِ الْجَدَّةُ إِلَى أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ تَسْأَلُهُ مِيرَاثَهَا فَقَالَ لَهَا: مَا لَكِ فِي كِتَابِ اللَّهِ شَيْءٌ وَمَا لَكِ فِي سُنَّةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْءٌ فَارْجِعِي حَتَّى أَسْأَلَ النَّاسَ فَسَأَلَ فَقَالَ الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ: حَضَرْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْطَاهَا السُّدُسَ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ الله عَنهُ هَل مَعَك غَيره؟ فَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ مِثْلَ مَا قَالَ الْمُغيرَة فأنفذه لَهَا أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ثُمَّ جَاءَتِ الْجدّة الْأُخْرَى إِلَى عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ تَسْأَلُهُ مِيرَاثَهَا فَقَالَ: هُوَ ذَلِك السُّدس فَإِن اجْتمعَا فَهُوَ بَيْنَكُمَا وَأَيَّتُكُمَا خَلَتْ بِهِ فَهُوَ لَهَا. رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ وَابْن مَاجَه

3061. कबिस बिन ज़ुवैब बयान करते हैं, दादी/नानी, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के पास आई और उस ने अपने मीरास के बारे में आप से मसअला दरियाफ्त किया, तो उन्होंने उस से कहा: तुम्हारे लिए अल्लाह की किताब में कोई हिस्सा है न रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत में, आप जाए हत्ता कि मैं लोगों से पूछलूँ, उन्होंने पूछा तो मुगिरह बिन शौबा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर था के आप ने इसे (यानी दादी/नानी को) छठा हिस्सा दिया, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: क्या तुम्हारे साथ कोई और भी है? तो मुहम्मद बिन मुस्लिम, ने भी वैसे ही कहा जैसे मुगिरा ने कहा था, तो अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने इस (दादी/नानी) के मुतल्लिक इसे नाफ़िज़ कर दिया, फिर एक और दादी/नानी उमर रदियल्लाहु अन्हु के पास आई और अपनी मीरास के मुतल्लिक दरियाफ्त किया, तो उन्होंने ने फ़रमाया: वह छठा हिस्सा ही है, अगर तुम दोनों इकट्ठी हो तो वह तुम दोनों के दरमियान तकसीम होगा और तुम दोनों में से जो भी अकेली होगी तो वह हिस्सा इसे मिलेगा”| (सहीह)

صحيح ، رواه مالک (2 / 513 ح 1119) و احمد (4 / 225 ح 18143) و الترمذی (2101 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (2894) و ابن ماجه (2724) [و الدارمی (2 / 359 ح 2949) عن الزهری منقطعًا] * قبيصة صحابی صغير رضی الله عنه و هذا من مراسيل الصحابة و مراسيل الصحابة مقبولة

٣٠٦٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ فِي الْجَدَّةِ مَعَ ابْنِهَا: أَنَّهَا أَوَّلُ جَدَّةٍ أَطْعَمَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُدُسًا مَعَ ابْنِهَا وَابْنُهَا حَيٌّ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَالتِّرْمِذِيُّ ضَعَّفَهُ

3062. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु इस दादी के बारे में जिसे अपने बेटे के साथ हिस्सा मिला, फ़रमाया: वह पहली दादी है उसे रसूलुल्लाह ﷺ ने बेटे की मौजूदगी में छठा हिस्सा अता किया जबकि उस का बेटा जिंदा था| तिरमिज़ी, दारमी इमाम तिरमिज़ी ने इसे जईफ करार दिया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2102) * محمد بن سالم : ضعیف و روی الدارمی (2 / 358 ح 2935) من قول ابن مسعود :'' ان اول جدۃ اطعمت فی الاسلام سھمًا ام اب و ابنھا حی '' و سندہ ضعیف ، محمد بن سرین : لم یدرک ابن مسعود رضی اللہ عنہ و اشعث بن سوار : ضعیف و للاثر شواھد ضعیفۃ عند البیھقی (6 / 226) و غیرہ

٣٠٦٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الضَّحَّاكِ بْنِ سُفْيَانَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَتَبَ إِلَيْهِ: «أَنْ ورث امْرَأَة أَشْيَم الضبابِي مِنْ دِيَةِ زَوْجِهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيح

3063. दहाक बिन सुफियान रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने उन के नाम ख़त लिखा के अश्यम अल दबाब की अहलिया को उस के खाविंद की दियत से मीरास दो”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (2110) و ابوداؤد (2927)

٣٠٦٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ تَمِيمٍ الدَّارِيِّ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا السُّنَّةُ فِي الرَّجُلِ مِنْ أَهْلِ الشِّرْكِ يُسْلِمُ عَلَى يَدَيْ رَجُلٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ؟ فَقَالَ: «هُوَ أَوْلَى النَّاسِ بِمَحْيَاهُ وَمَمَاتِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

3064. तमीम दारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया के अहल शिर्क में से इस आदमी के बारे में, जो किसी मुसलमान शख़्स के हाथो पर इस्लाम कबूल कर ले, शरई हुक्म किया है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो उसकी हयात व ममात के बारे में तमाम लोगों से ज़्यादा हक़दार है”| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (2112) و ابن ماجہ (2752) و الدارمی (2 / 377 ح 3037)

٣٠٦٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ رَجُلًا مَاتَ وَلَمْ يَدَعْ وَارِثًا إِلَّا غُلَامًا كَانَ أَعْتَقَهُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلْ لَهُ أَحَدٌ؟» قَالُوا: لَا إِلَّا غُلَامٌ لَهُ كَانَ أَعْتَقَهُ فَجَعَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِيرَاثَهُ لَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَه

3065. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के एक आदमी फौत हो गया तो उस ने सिर्फ एक गुलाम

छोड़ा जिस को उस ने आज़ाद किया था, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “क्या उस का कोई वारिस है?” सहाबा ने अर्ज़ किया, नहीं, सिर्फ वह एक गुलाम है जिसे उस ने आज़ाद किया था, तो नबी ﷺ ने उसकी मीरास उस को दे दि| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2905) و الترمذی (2106 وقال : حسن) و ابن ماجه (2741) * عوسبحة : حسن الحديث

٣٠٦٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَرِثُ الْوَلَاءَ مَنْ يَرِثُ الْمَالَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ إِسْنَادُهُ لَيْسَ بِالْقَوِيِّ

3066. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो माल का वारिस हो सकता है के विला का वारिस होगा”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया इस हदीस की सनद क़वी नहीं| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (2114) * عبدالله بن لهيعة ضعيف وله شاهد عند احمد (1 / 22 ح 147) و سنده معلل بالانقطاع

كتاب الْفَرَائِض • मीरास का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٠٦٧ - (ضَعِيف) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا كَانَ مِنْ مِيرَاثٍ قُسِّمَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَهُوَ عَلَى قِسْمَةِ الْجَاهِلِيَّةِ وَمَا كَانَ مِنْ مِيرَاثٍ [ص:٩٢ أَدْرَكَهُ الْإِسْلَامُ فَهُوَ عَلَى قِسْمَةِ الْإِسْلَامِ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

3067. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो मीरास दौरे जाहिलियत में तकसीम की गई तो वह जाहिलियत की तकसीम के मुताबिक है, और जो मीरास दौर ए इस्लाम में हुई तो वह इस्लाम की तकसीम के मुताबिक है”| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (2749) * و للحديث شاهد حسن عند ابن ماجه (2485)

٣٠٦٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ حَزْمٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَاهُ كَثِيرًا يَقُولُ: كَانَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يَقُولُ: عَجَبًا لِلْعَمَّةِ تُورَثُ وَلَا تَرِث. رَوَاهُ مَالك

3068. मुहम्मद बिन अबी बक्र बिन हज़्म से रिवायत है के उन्होंने अपने वालिद से कई मर्तबा सुना वह कहा करते थे, उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु फूफी के मुतल्लिक ताज्जुब से कहा करते थे की भतीजा तो उस का वारिस बनता है जबकि वह उसकी वारिस नहीं बनती | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه مالک (2 / 517 ح 1124) * ابوبکر بن ابی حزم عن عمر رضی الله عنه منقطع ، انظر جامع التحصیل للعلائی (ص 288) و الجوھر النقی (6 / 213)

٣٠٦٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: تَعَلَّمُوا الْفَرَائِضَ وَزَادَ ابْنُ مَسْعُودٍ: وَالطَّلَاقَ وَالْحَجَّ قَالَا: فَإِنَّهُ من دينكُمْ. رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

3069. उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: फ़राइज़ (मीरास का इल्म) सीखो और इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने इतना इज़ाफा किया, तलाक और हज (के मुतल्लिक भी सीखो) इन दोनों ने कहा क्योंकि यह तुम्हारे हम दीन उमूर में से हैं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (2 / 341 ح 28532854 ، نسخة محققة : 28922893 ، 2853 عن عمر ، السند منقطع ، فيه مورق العجلی عن عمر و لم يدركه ، 2854 عن عمر ، السند منقطع ، ابراهيم عن عمر و لم يدركه ، و السند الی ابراهيم ضعيف ، الثوری و الاعمش مدلسان و عنها و حديث ابن مسعود : ضعيف : 2859 ، السند منقطع ، قاسم بن الوليد الهمدانی لم يدرک من روی عنه)

بَاب الْوَصَايَا • वसीयत का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٠٧٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا حَقُّ امْرِئٍ مُسْلِمٍ لَهُ شَيْءٌ يُوصَى فِيهِ يَبِيتُ لَيْلَتَيْنِ إِلَّا وَوَصِيَّةٌ مَكْتُوبَةٌ عِنْده»

3070. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो मुसलमान वसीयत करना चाहता है उस के लिए मुनासिब नहीं के वह दो राते भी यूँ गुज़ार दे की वसीयत उस के पास लिखी हुई न हो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2738) و مسلم (1 / 1637)، (4204)

٣٠٧١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: مَرِضْتُ عَامَ الْفَتْحِ مَرَضًا أَشْفَيْتُ عَلَى الْمَوْتِ فَأَتَانِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُنِي فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ: إِنَّ لِي مَالًا كَثِيرًا وَلَيْسَ يَرِثُنِي إِلَّا ابْنَتِي أَفَأُوصِي بِمَالِي

كُلِّهِ؟ قَالَ: «لَا» قُلْتُ: فَثُلُثَيْ مَالِي؟ قَالَ: «لَا» قُلْتُ: فَالشَّطْرِ؟ قَالَ: «لَا» قُلْتُ: فَالثُّلُثِ؟ قَالَ: «الثُّلُثُ وَالثُّلُثُ كَثِيرٌ إِنَّكَ إِنْ تَذَرْ وَرَثَتَكَ أَغْنِيَاءَ خَيْرٌ مِنْ أَنْ تَذَرَهُمْ عَالَةً يَتَكَفَّفُونَ النَّاسَ وَإِنَّكَ لَنْ تُنْفِقَ نَفَقَةً تَبْتَغِي بِهَا وَجْهَ اللَّهِ إِلَّا أُجِرْتَ بِهَا حَتَّى اللُّقْمَةَ تَرْفَعُهَا إِلَى فِي امْرَأَتِكَ»

3071. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, फतह मक्का के साल में शदीद बीमार हो गया हत्ता कि मैं मौत के किनारे पहुँच गया, रसूलुल्लाह ﷺ मेरी इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) के लिए तशरीफ़ लाए तो मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मेरे पास माल बहोत ज़्यादा हैं, और मेरी सिर्फ एक बेटी उसकी वारिस है, क्या मैं अपने सारे माल के मुतल्लिक वसीयत कर दूँ? फ़रमाया: "नहीं", मैंने अर्ज़ किया: अपने माल का दो तिहाई? फ़रमाया: "नहीं", मैंने अर्ज़ किया: आधा? आप ﷺ ने फ़रमाया: "नहीं", मैंने अर्ज़ किया, तिहाई? आप ﷺ ने फ़रमाया: "तिहाई, जबकि तिहाई भी ज़्यादा हैं, अगर तुम अपने वारिसो को माल दार छोड़ो यह उस से बेहतर है के वह तंग दस्त हो, और लोगों के आगे हाथ फैलाते फिरे, और तुम अल्लाह की रज़ा के लिए जो भी खर्च करोगे उस पर तुम्हें अज़र दीया जाएगा, हत्ता के वह लुकमे जो तुम अपने अहलिया के मुंह तक पहुंचाते हो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2742) و مسلم (5 / 1628)، (4209)

बाब الْوَصَايَا • वसीयत का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٠٧٢ - (لم تتمّ دراسته) عَن سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: عَادَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا مَرِيضٌ فَقَالَ: «أَوْصَيْتَ؟» قُلْتُ: نَعَمْ قَالَ: «بِكَمْ؟» قُلْتُ: بِمَالِي كُلِّهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ. قَالَ: «فَمَا تَرَكْتَ لِوَلَدِكَ؟» قُلْتُ: هُمْ أَغْنِيَاءُ بِخَيْرٍ. فَقَالَ: «أوص بالعشر» فَمَا زَالَت أُنَاقِصُهُ حَتَّى قَالَ: «أَوْصِ بِالثُّلُثِ وَالثُّلُثُ كَثِيرٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3072. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं मरीज़ था रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरी इयादत (बीमार के पास जाकर खबर लेना) की, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुमने वसीयत की है?" मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: "कितने माल की ?" मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह की राह में अपने सारे माल की, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुमने अपने औलाद के लिए किया छोड़ा है?" मैंने अर्ज़ किया: वह काफी माल दार है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "दसवे हिस्से की वसीयत कर", मैं इसरार करता रहा, हत्ता के आप ﷺ ने हुक्म दिया: "तिहाई की वसीयत कर, जबकि तिहाई भी ज़्यादा हैं"| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (975 وقال : حسن صحيح)

٣٠٧٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ فِي خُطْبَتِهِ عَامَ حَجَّةِ الْوَدَاعِ: «إِنِ اللَّهَ قَدْ أَعْطَى كُلَّ ذِي حَقٍّ حَقَّهُ فَلَا وَصِيَّةَ لِوَارِثٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَزَادَ التِّرْمِذِيُّ: «الْوَلَدُ لِلْفَرَاشِ وَلِلْعَاهِرِ الْحَجَرُ وَحِسَابُهُمْ عَلَى اللَّهِ»

3073. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को खुत्बा हज्जतुल वदा के मौके पर फरमाते हुए सुना: “अल्लाह ने हर हक़दार को उस का हक़ दे दिया, वारिस के लिए वसीयत करने का कोई हक़ नहीं”| अबू दावुद, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने यह इज़ाफा नकल किया: “बच्चा बीवी के मालिक का है जबकि ज़ानि के लिए पत्थर (यानी रजम) है, और उनका हिसाब अल्लाह के जिम्मे है”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (2870) و ابن ماجه (2713) و الترمذی (2120 وقال : حسن)

٣٠٧٤ - (لم تتمّ دراسته) وَيُرْوَى عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا وَصِيَّةَ لِوَارِثٍ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ الْوَرَثَةُ» مُنْقَطِعٌ هَذَا لَفْظُ الْمَصَابِيحِ. وَفِي رِوَايَةِ الدَّارَقُطْنِيِّ: قَالَ: «لَا تَجُوزُ وَصِيَّةٌ لِوَارِثٍ إِلَّا أَنْ يَشَاء الْوَرَثَة»

3074. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा की सनद से नबी ﷺ से मरवी है आप ﷺ ने फ़रमाया: “वारिस को वसीयत का हक़ नहीं इल्ला यह कि वारिस चाहे”, यह रिवायत मुन्कतेअ है, यह मसाबिह के अल्फाज़हैं, और दार कुतनी की रिवायत में है: “वारिस के लिए वसीयत करना जाईज़ नहीं, मगर यह कि वुरसा चाहे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارقطنی (4 / 98 ح 4109) [و الطبرانی فی مسند الشاميين (3 / 325326 ح 2410) * فيه عطاء الخراسانی صدوق حسن الحديث و ثقه الجمهور و لکنه مدلس و عنعن و باقی السند حسن لذاته فالسند ضعيف من اجل عنعنته و قال الذهبی :’’ جيد الاسناد ‘‘ (ميزان الاعتدال 4 / 481) ‘‘ !!

٣٠٧٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ وَالْمَرْأَةَ بِطَاعَةِ اللَّهِ سِتِّينَ سَنَةً ثُمَّ يَحْضُرُهُمَا الْمَوْتُ فَيُضَارَّانِ فِي الْوَصِيَّةِ فَتَجِبُ [ص:٩٢ لَهُمَا النَّارُ» ثُمَّ قَرَأَ أَبُو هُرَيْرَةَ (مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصَى بِهَا أَوْ دَيْنٍ غير مضار)»» إِلَى قَوْله (وَذَلِكَ الْفَوْز الْعَظِيم)»» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

3075. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक आदमी और औरत साठ साल तक अल्लाह की इताअत में नेक अमल करते रहते है, फिर उन्हें मौत आती है तो वह वसीयत में किसी को नुकसान पहुंचा जाते हैं, तो इन दोनों के लिए जहन्नम की आग वाजिब हो जाती है”, फिर अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु ने यह आयत तिलावत फरमाई: “विरासत की तकसीम वसीयत के निफाज़ और क़र्ज़ की अदाइगी के बाद है और वह वसीयत नुकसान पहुँचाने वाली न हो .... और यह बहोत बड़ी कामयाबी है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 278 ح 7728) و الترمذی (2117 وقال : حسن غريب) و ابوداؤد (2867) و ابن ماجه (2704)

वसीयत का बयान — بَاب الْوَصَايَا

तीसरी फस्ल — الْفَصْل الثَّالِث

٣٠٧٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ مَاتَ عَلَى وَصِيَّةٍ مَاتَ عَلَى سَبِيلٍ وَسُنَّةٍ وَمَاتَ عَلَى تُقًى وَشَهَادَةٍ وَمَاتَ مَغْفُورًا لَهُ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

3076. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स वसीयत पर फौत हुआ तो वह सीधी राह और सुन्नत पर फौत हुआ, वह इताअत गुज़ारी और शहादत पर फौत हुआ, और वह इस हाल में फौत हुआ की उसकी मगफिरत कर दी गई”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه ابن ماجه (2701) * فيه يزيد : مجهول ، و عمر بن صبح : متروک کذابه راهويه ، و اسقطه المدلس محمد بن المصفی من السند و الصواب اثباته بين يزيد و ابی الزبير ، انظر الکامل لابن عدی (5 / 1685)

٣٠٧٧ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ الْعَاصَ بْنَ وَائِلٍ أَوْصَى أَنْ يُعْتَقَ عَنْهُ مِائَةُ رَقَبَةٍ فَأَعْتَقَ ابْنُهُ هِشَامٌ خَمْسِينَ رَقَبَةً فَأَرَادَ ابْنُهُ عَمْرٌو أَنْ يُعْتِقَ عَنهُ الْخمسين الْبَاقِيَة فَقَالَ: حَتَّى أَسْأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَبِي أَوْصَى أَنْ يُعْتَقَ عَنْهُ مِائَةُ رَقَبَةٍ وَإِنَّ هِشَامًا أَعْتَقَ عَنْهُ خَمْسِينَ وَبَقِيَتْ عَلَيْهِ خَمْسُونَ رَقَبَةً أَفَأُعْتِقُ عَنْهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّه لَو كَانَ مُسلما فأعتقتم عَنْهُ أَوْ تَصَدَّقْتُمْ عَنْهُ أَوْ حَجَجْتُمْ عَنْهُ بلغه ذَلِك» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3077. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, के आस बिन वाइल ने वसीयत की के उसकी तरफ से सौ गुलाम आज़ाद किए जाए, उन के बेटे हिश्शाम ने उनकी तरफ से पचास गुलाम आज़ाद किए, और उन के बेटे अम्र रदियल्लाहु अन्हु ने उनकी तरफ से पचास गुलाम आज़ाद करने का इरादा किया तो कहा, हत्ता के मैं रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त कर लू, वह नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरे वालिद ने वसीयत की थी के उनकी तरफ से सौ गुलाम आज़ाद किए जाए, हिश्शाम ने उनकी तरफ से पचास आज़ाद कर दिए है और बाकी पचास रह गए है, क्या मैं उनकी तरफ से आज़ाद कर दूँ? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर वह मुसलमान मरता तो तुम उसकी तरफ से गुलाम आज़ाद करते, या तुम उसकी तरफ से सदका करते या तुम उसकी तरफ से हज करते तो उस का इसे सवाब पहुँचता”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2883)

٣٠٧٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَطَعَ مِيرَاثَ وَارِثِهِ قَطَعَ اللَّهُ مِيرَاثَهُ مِنَ الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

3078. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने अपने वारिस की मीरास काटी तो रोज़ ए कियामत अल्लाह तआला उसकी जन्नत की मीरास काट देगा”| (ज़ईफ़,मौज़ू)

اسناده ضعيف جذا موضوع ، رواه ابن ماجه (2703 بلفظ :’’ من فرمن ميراث وارثه ‘‘ الخ) * قال البوصيرى :’’ هذا اسناد ضعيف لضعف زيد العمى و ابنه عبد الرحيم ‘‘ عبد الرحيم : كذاب فالسند موضوع

٣٠٧٩ - وَرَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ»» عَنْ أَبِي هُرَيْرَة رَضِي الله عَنهُ

3079. इमाम बय्हकी ने इसे शौबुल ईमान में अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु की सनद से रिवायत किया है| (मुझे नहीं मिली)

لم اجده ، رواه البيهقى فى شعب الايمان : لم اجده و لعله يشير الى حديث :’’ من قطع ميراثًا فرضه الله و رسوله قطع الله ميراثًا من الجنة ‘‘ رواه البيهقى فى شعب الايمان (نسخة محققة : 7594) و سنده ضعيف فيه سلم بن سليمان شيخ بالبصرة و لم اجد من وثقه

كتاب النِّكَاح • निकाह का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٠٨٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا مَعْشَرَ الشَّبَابِ مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمُ الْبَاءَةَ فَلْيَتَزَوَّجْ فَإِنَّهُ أَغَضُّ لِلْبَصَرِ وَأَحْصَنُ لِلْفَرْجِ وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَعَلَيْهِ بِالصَّوْمِ فَإِنَّهُ لَهُ وِجَاءٌ»

3080. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नौजवानों की जमात! तुम में से जो शख़्स जिमाअ और निकाह के इखराजात की इस्तिताअत रखता हो तो वह शादी करे, क्योंकि वह निगाहों को निचा रखने और अफत व अस्मत की हिफाज़त के लिए ज़्यादा मुअस्सर है, और जो शख़्स (अकद ए निकाह की) इस्तिताअत न रखे तो वह रोज़ा रखे, क्योंकि यह उसकी शहवत कम करने का बाईस है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (5066) و مسلم (1 / 1400)، (3398)

٣٠٨١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: رَدَّ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى عُثْمَان ابْن مَظْعُونٍ التَّبَتُّلَ وَلَوْ أَذِنَ لَهُ لَاخْتَصَيْنَا

3081. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने उस्मान बिन मज़उन रदियल्लाहु अन्हु की तरक ए निकाह की सोच को रद्द फ़रमाया, और अगर आप उन्हें इजाज़त दे देते तो हम खस्सी हो जाते| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (5073) و مسلم (6 / 1402)، (3404)

٣٠٨٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " تُنْكَحُ الْمَرْأَةُ لِأَرْبَعٍ: لِمَالِهَا وَلِحَسَبِهَا وَلِجَمَالِهَا وَلِدِينِهَا فَاظْفَرْ بِذَاتِ الدّين تربت يداك "

3082. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “औरत से चार चीजों, उस के माल, उस के हसब व नसब, उस के हुस्न व जमाल और उस के दीन की वजह से निकाह किया जाता है, तेरे हाथ खाक आलूद हो तुम दीन-दार के साथ निकाह करके कामयाबी हासिल करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (5090) و مسلم (53 / 1466)، (3635)

٣٠٨٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الدُّنْيَا كُلُّهَا مَتَاعٌ وَخَيْرُ مَتَاعِ الدُّنْيَا الْمَرْأَة الصَّالِحَة» . رَوَاهُ مُسلم

3083. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दुनिया मुकम्मल तौर पर मताअ है, और बेहतरीन मताअ ए दुनिया नेक बीवी है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (64 / 1467)، (3649)

٣٠٨٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَيْرُ نسَاء ركبن الْإِبِل صَالح نسَاء قُرَيْش أَحْنَاهُ عَلَى وَلَدٍ فِي صِغَرِهِ وَأَرْعَاهُ عَلَى زَوْجٍ فِي ذَاتِ يَدِهِ»

3084. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ऊटों पर सवार होने वाली (अरब) औरतो में से, कुरैश की स्वालेह औरतें बेहतर है, वह अपने छोटे बच्चो पर निहायत शकिक और शोहर के माल की इन्तिहाई मुहाफ़िज़ होती है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5082) و مسلم (202 / 2527)، (6460)

٣٠٨٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا تَرَكْتُ بَعْدِي فِتْنَةً أَضَرَّ عَلَى الرِّجَالِ من النِّسَاء»

3085. उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं अपने बाद मर्दों के लिए औरतो से ज़्यादा मुज़िर कोई फितने ख़याल नहीं करता”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5096) و مسلم (97 / 2740)، (6945)

٣٠٨٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِنَّ الدُّنْيَا حُلْوَةٌ خَضِرَةٌ وَإِنَّ اللَّهَ مُسْتَخْلِفُكُمْ فِيهَا فَيَنْظُرُ كَيْفَ تَعْمَلُونَ فَاتَّقُوا الدُّنْيَا وَاتَّقُوا النِّسَاءَ فَإِنَّ أَوَّلَ فِتْنَةِ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَانَتْ فِي النِّسَاء» . رَوَاهُ مُسلم

3086. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दुनिया शिरीन और सरसब्ज़ व शादाब है, बेशक अल्लाह तआला तुम्हें उस में खलीफा बनाने वाला है, वह देखेगा की तुम कैसे अमल करते हो, तुम दुनिया और औरतो के फितने से बचो, क्योंकि बनी इसराइल का पहला फितने औरतो की वजह से रवानुमा हुआ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (99 / 2742)، (6948)

٣٠٨٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الشُّؤْمُ فِي الْمَرْأَةِ وَالدَّارِ وَالْفَرَسِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ: " الشُّؤْمُ فِي ثَلَاثَة: فِي الْمَرْأَة والمسكن وَالدَّابَّة "

3087. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “औरत, घर और घोड़े में नहूसत (यानी बे बरकती) है” बुखारी, मुस्लिम, और एक रिवायत में है: “तीन चीजों में नहूसत है औरत, घर और जानवर”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5093) و مسلم (115 / 2225)، (5804)

٣٠٨٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ: قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي غَزْوَةٍ فَلَمَّا قَفَلْنَا كُنَّا قَرِيبًا مِنَ الْمَدِينَةِ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي حَدِيثُ عَهْدٍ بعرس قَالَ: «تَزَوَّجْتَ؟» قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: «أَبِكْرٌ أَمْ ثَيِّبٌ؟» قُلْتُ: بَلْ ثَيِّبٌ قَالَ: «فَهَلَّا بِكْرًا تلاعبها وتلاعبك» . فَلَمَّا قدمنَا لِنَدْخُلَ فَقَالَ: «أَمْهِلُوا حَتَّى نَدْخُلَ لَيْلًا أَيْ عشَاء لكَي تمتشط الشعثة وتستحد المغيبة»

3088. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम नबी ﷺ के साथ एक गज़वा में शरीक थे, जब हम वापस आए और मदीना के करीब पहुंचे तो मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैंने नई नई शादी की है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने शादी कर ली ?” मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “कुंवारी है या बेवा से ?” मैंने अर्ज़ किया: जी! बेवा से, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने कुंवारी से शादी क्यों न की, तुम उस से खेलते और वह तुम से खेलती”, जब हम (मदीना के) करीब पहुँच गए और उस में दाखिल होने लगे तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “ठहर जाओ हत्ता के हम रात यानी ईशा के वक़्त दाखिल होंगे ताकि मुन्तशर बालो वाली कंघी कर ले और जिस का खाविंद गायब रहा हो वह ज़ेरे नाफ़ बाल साफ़ कर ले”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5247) و مسلم (57 / 1466)، (3640)

निकाह का बयान • كتاب النِّكَاح

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٣٠٨٩ - (حسن) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " ثَلَاثَةٌ حَقٌّ عَلَى اللَّهِ عَوْنُهُمْ: الْمُكَاتَبُ الَّذِي يُرِيدُ الْأَدَاءَ وَالنَّاكِحُ الَّذِي يُرِيدُ الْعَفَافَ وَالْمُجَاهِدُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

3089. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन किस्म के लोगो, मकातब जो के अदाइगी चाहता हो, अफत व पाक दामनी की खातिर निकाह करने वाले और अल्लाह की राह में जिहाद

करने वाले की अल्लाह ज़रूर मदद करता है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (1655 وقال : حسن) و النسائى (6 / 61 ح 3220) و ابن ماجه (2518)

٣٠٩٠ - (حسن) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا خَطَبَ إِلَيْكُمْ مَنْ تَرْضَوْنَ دِينَهُ وَخُلُقَهُ فَزَوِّجُوهُ إِنْ لَا تَفْعَلُوهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ عَرِيضٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

3090. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम्हारे पास किसी ऐसे शख़्स का पैग़ामे निकाह आए जिस का दीन और अख़लाक व आदत तुम्हें पसंद हो तो उसे बच्ची का रिश्ता दे दो, अगर ऐसा न करोगे तो फिर ज़मीन में फितने और बड़ा फसाद होगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1084) * محمد بن عجلان مدلس و عنعن و عبد الحميد بن سليمان ضعيف وله شاهد عند الترمذى (1086) و سنده ضعيف

٣٠٩١ - (صَحِيح) وَعَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَزَوَّجُوا الْوَدُودَ الْوَلُودَ فَإِنِّي مُكَاثِرٌ بِكُمُ الْأُمَمَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3091. मुअकिल बिन यस्सार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “शोहर से ज़्यादा मुहब्बत करने वाली और ज़्यादा बच्चो को जन्म देने वाली औरतो से शादी करो, क्योंकि मैं तुम्हारी कसरत की वजह से दीगर उम्मतो पर फख्र करूँगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2050) و النسائى (6 / 66 ح 3229)

٣٠٩٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَالِمِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ عُوَيْمِ بْنِ سَاعِدَةَ الْأَنْصَارِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عَلَيْكُمْ بِالْأَبْكَارِ فَإِنَّهُنَّ أَعْذَبُ أَفْوَاهًا وَأَنْتَقُ أَرْحَامًا وَأَرْضَى بِالْيَسِيرِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه مُرْسلا

3092. अब्दुल रहमान बिन सालिम बिन उत्बा बिन उवय्म बिन शाइदाह अंसारी अपने वालिद (सालिम) से वह उस के दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम कुंवारी लड़कियों से शादी करो, क्योंकि वह शिरी गुफ्तार, ज़्यादा बच्चो को जनने वाली और बहोत कम चीज़ पर राज़ी हो जाने वाली है”| इब्ने माजा रिवायत मुरसल है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (1861) * الحديث مرسل مع جهالة عبد الرحمن هذا وله شواهد ضعيفة ، انظر التلخيص الحبير (3 / 145 ، ان شئت الوقوف على تلك الشواهد)

كتاب النِّكَاح • निकाह का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٠٩٣ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَمْ تَرَ لِلْمُتَحَابِّينَ مثل النِّكَاح» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

3093. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुमने निकाह (यानी खाविंद व बीवी) की मिस्ल दो बाहम मुहब्बत करने वाले नहीं देखे होंगे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابن ماجه (1847)

٣٠٩٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَرَادَ أَنْ يَلْقَى الله طَاهِرا مطهراً فليتزوج الْحَرَائِر» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

3094. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स पाकिज़ा हालत में अल्लाह से मुलाकात करने का ख्वाहिश मंद हो तो इसे आज़ाद औरतो से शादी करनी चाहिए”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه ابن ماجه (1862) * سلام بن سوار : ضعيف ، و كثير بن سليم : ضعيف جدًا ، وقال ابن حبان :’’ يروى عن انس ماليس منه حديثه و يضع عليه ‘‘ و اورده ابن الجوزى فى الموضوعات (2 / 261) فالسند ضعيف جدًا وله شاهد عند البخارى فى التاريخ الكبير (8 / 404) بدون سند و الله اعلم بحاله

٣٠٩٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ يَقُولُ: «مَا اسْتَفَادَ الْمُؤْمِنُ بَعْدَ تَقْوَى اللَّهِ خَيْرًا لَهُ مِنْ زَوْجَةٍ صَالِحَةٍ إِنْ أَمْرَهَا أَطَاعَتْهُ وَإِنْ نَظَرَ إِلَيْهَا سرته وَإِن أقسم عَلَيْهِ أَبَرَّتْهُ وَإِنْ غَابَ عَنْهَا نَصَحَتْهُ فِي نَفْسِهَا وَمَاله» . روى ابْن مَاجَه الْأَحَادِيث الثَّلَاثَة

3095. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: “मोमिन ने अल्लाह के तकवा के बाद अपने लिए जिस खैर से इस्तेफ़ादा किया, वह स्वालेह बीवी है, अगर इस (मोमिन) ने इसे हुक्म दिया तो इस (बीवी) ने उसकी इताअत की, अगर उस ने उसकी तरफ देखा तो उस ने इसे खुश कर दिया, अगर उस ने इसे क़सम दे दी तो उस ने इसे पूरा किया और अगर वह उस के पास से चला गया तो उस ने अपने जान और उस के माल में उस से खैरख्वाही की”| तीनो अहादीस इब्ने माजा ने रिवायत की है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه ابن ماجه (1857) * على بن يزيد : ضعيف جدًا متروک ، و عثمان بن ابى العاتكة ضعيف

٣٠٩٦ - (حسن) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا تَزَوَّجَ الْعَبْدُ فَقَدِ اسْتَكْمَلَ نِصْفَ الدِّينِ فَلْيَتَّقِ اللَّهَ فِي النِّصْفِ الْبَاقِي»

3096. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब बंदा शादी कर लेता है तो वह आधा दीन मुकम्मल कर लेता है, इसे बाकी आधे में अल्लाह से डरना चाहिए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (5486 ، نسخة محققة : 5100) * فيه خليل بن مرة : ضعيف منكر الحديث ، عن يزيد الرقاشى : ضعيف ، عن انس رضى الله عنه و للحديث شواهد ضعيفة

٣٠٩٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَعْظَمَ النِّكَاحِ بَرَكَةً أَيْسَرُهُ مُؤْنَةً» . رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

3097. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “वो निकाह सबसे ज़्यादा बा बरकत है, जिस में इखराजात कम हो”| इमाम बयहकी रहिमहुल्लाह ने दोनों अहादीस को शौबुल ईमान में रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (6566 ، و السنن الكبرى 7 / 235) [و احمد (6 / 82 ، 145) و صححه الحاكم على شرط مسلم (2 / 178) و وافقه الذهبى ، فيه ابن سخبرة اختلفوا فى تعينه فالسند ضعيف و يغنى عنه حديث احمد (6 / 77) و ابن حبان (الموارد : 1256) و الحاكم (2 / 181) و غيرهم بلفظ :’’ ان من يمن المراة تيسير خطبتها و تيسير صداقها و تيسير رحمها ‘‘ و سنده حسن

بَاب النّظر إِلَى المخطوبة وَبَيَان العورات • जिस को पैगाम ए निकाह दिया जाए इसे देखने और पर्दे की चीजों का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٠٩٨ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنِّي تَزَوَّجْتُ امْرَأَةً مِنَ الْأَنْصَارِ قَالَ: «فَانْظُرْ إِلَيْهَا فَإِنَّ فِي أَعْيُنِ الْأَنْصَارِ شَيْئًا» . رَوَاهُ مُسلِمٌ

3098. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, मैंने अंसार की एक औरत से शादी करने का इरादा किया है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे देख लो, क्योंकि अंसार की आंखो में कुछ (नुक्स) होता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (74 / 1424)، (3485)

٣٠٩٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُبَاشِرُ الْمَرْأَةُ الْمَرْأَةَ فَتَنْعَتُهَا لِزَوْجِهَا كَأَنَّهُ ينظر إِلَيْهَا»

3099. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "औरत, औरत के साथ जिस्म न मिलाए, फिर वह उस के मुतल्लिक अपने खाविंद से बयान करे गोया के वह इसे देख रहा है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (52405241) و مسلم (لم اجده)

٣١٠٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَنْظُرُ الرَّجُلُ إِلَى عَوْرَةِ الرَّجُلِ وَلَا الْمَرْأَةُ إِلَى عَوْرَةِ الْمَرْأَةِ وَلَا يُفْضِي الرَّجُلُ إِلَى الرَّجُلِ فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ وَلَا تُفْضِي الْمَرْأَةُ إِلَى الْمَرْأَةِ فِي ثوب وَاحِد» . رَوَاهُ مُسلم

3100. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "ना आदमी, आदमी की शर्मगाह की तरफ देखे न औरत, औरत की शर्मगाह की तरफ देखे और ना ही मर्द, मर्द के साथ एक कपड़े में लपटे और ना ही औरत, औरत के साथ एक कपड़े में लपटे"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (74 / 238)، (768)

٣١٠١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِلَّا لَا يبتن رَجُلٌ عِنْدَ امْرَأَةٍ ثَيِّبٍ إِلَّا أَنْ يَكُونَ ناكحا أَو ذَا محرم» . رَوَاهُ مُسلم

3101. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "सुन लो! कोई आदमी किसी बेवा औरत के यहाँ रात बसर न करे मगर यह कि वह (इस का) शोहर हो या महरम हो"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (19 / 2171)، (5673)

٣١٠٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِيَّاكُمْ وَالدُّخُولَ عَلَى النِّسَاءِ فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ الْحَمْوَ؟ قَالَ: «الْحَمْوُ الْمَوْتُ»

3102. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "औरतो के पास जाने से बचो", किसी आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! देवर के बारे में बताइए आप ﷺ ने फ़रमाया: "देवर वह तो मौत है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5232) و مسلم (20 / 2172)، (5674)

٣١٠٣ - (صَحِيح) وَعَن جَابِرٍ: أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ اسْتَأْذَنَتْ رَسُولَ اللَّهِ فِي الْحِجَامَةِ فَأَمَرَ أَبَا طَيْبَةَ أَنْ يَحْجُمَهَا قَالَ: حَسِبْتُ أَنَّهُ كَانَ أَخَاهَا مِنَ الرَّضَاعَةِ أَو غُلَامًا لم يَحْتَلِم. رَوَاهُ مُسلم

3103. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा ने पछने (हिजामा) लगवाने के मुतल्लिक रसूलुल्लाह ﷺ से इजाज़त तलब की तो आप ﷺ ने अबू तैबा को हुक्म फ़रमाया के वह उन्हें पछने (हिजामा) लगाए रावी बयान करते हैं, मेरा ख़याल है के वह (अबू तैबा) उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा के रिज़ाई भाई थे या नाबालिग़ लड़के थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (72 / 2206)، (5744)

٣١٠٤ - (صَحِيح) وَعَن جرير بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ نَظَرِ الْفُجَاءَةِ فَأمرنِي أَن أصرف بَصرِي. رَوَاهُ مُسلم

3104. जरीर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अचानक उठ जाने वाली नज़र के मुतल्लिक रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने मुझे हुक्म फ़रमाया की मैं अपने नज़र हटालूँ| (मुस्लिम)

رواه مسلم (45 / 2159)، (5644)

٣١٠٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْمَرْأَةَ تُقْبِلُ فِي صُورَةِ شَيْطَانٍ وَتُدْبِرُ فِي صُورَةِ شَيْطَانٍ إِذَا أَحَدَكُمْ أَعْجَبَتْهُ الْمَرْأَةُ فَوَقَعَتْ فِي قَلْبِهِ فَلْيَعْمِدْ إِلَى امْرَأَتِهِ فَلْيُوَاقِعْهَا فَإِنَّ ذَلِكَ يَرُدُّ مَا فِي نَفسه» . رَوَاهُ مُسلم

3105. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक औरत शैतान की सूरत में सामने आती है और शैतान की सूरत में मरती है, जब कोई औरत तुम में से किसी को भली लगे और वह उस का दिल में घर कर जाए तो वह आदमी अपने बीवी के पास आए और उस से जिमाअ करे, क्योंकि यह चीज़ (जिमाअ) इस (गुनाह के ख़याल) को दूर कर देगी जो उस का दिल में है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (9 / 1403)، (3407)

بَاب النّظر إِلَى المخطوبة وَبيَان العورات • जिस को पैगाम ए निकाह दिया जाए इसे देखने और पर्दे की चीजों का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣١٠٦ - (حسن) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا خَطَبَ أَحَدُكُمُ الْمَرْأَةَ فَإِنِ اسْتَطَاعَ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى مَا يَدْعُوهُ إِلَى نِكَاحِهَا فَلْيَفْعَلْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3106. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई औरत को पैगामे निकाह भेजे तो फिर अगर वह उस से दाइए निकाह (औरत की शक्ल व सूरत वगैरा) को देख सके तो देख ले”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2082)

٣١٠٧ - (صَحِيح) وَعَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ خَطَبْتُ امْرَأَةً فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ [ص:٩٣] صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلْ نَظَرْتَ إِلَيْهَا؟» قُلْتُ: لَا قَالَ: «فَانْظُرْ إِلَيْهَا فَإِنَّهُ أَحْرَى أَنْ يُؤْدَمَ بَيْنَكُمَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

3107. मुगिरा बिन शैबा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने एक औरत को पैगामे निकाह भेजा तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “क्या तुम ने इसे देखा है?” मैंने अर्ज़ किया: नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे देख लो, क्योंकि वह ज़्यादा मुनासिब है के तुम दोनों के दरमियान मुहब्बत डाल दी जाए”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (4 / 246 ح 1833518336) و الترمذی (1087 وقال : حسن) و النسائی (6 / 6970 ح 3237) و ابن ماجه (1865) و الدارمی (2 / 134 ح 2178)

٣١٠٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ امْرَأَةً فَأَعْجَبَتْهُ فَأَتَى سَوْدَةَ وَهِيَ تَصْنَعُ طِيبًا وَعِنْدَهَا نِسَاءٌ فَأَخْلَيْنَهُ فَقَضَى حَاجَتَهُ ثُمَّ قَالَ: «أَيُّمَا رَجُلٍ رَأَى امْرَأَةً تُعْجِبُهُ فَلْيَقُمْ إِلَى أَهْلِهِ فَإِنَّ مَعَهَا مثل الَّذِي مَعهَا» . رَوَاهُ الدَّارمِيّ

3108. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने किसी औरत को देखा तो वह आप को अच्छी लगी, आप सवदा रदियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ लाए, वह इस वक़्त खुशबू तैयार कर रही थी और उन के पास कुछ औरते थी, आप ﷺ ने उन्हें अलैदा किया और अपनी हाजत पूरी की फिर फ़रमाया: “कोई आदमी

किसी औरत को देखे और वह इसे खुश लगे तो वह आदमी अपने अहलिया के पास आए क्योंकि उस के पास भी वही कुछ है जो उस औरत के पास है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (2 / 146 ح 2221 ، نسخة محققة : 2261) * و ابو اسحاق عنعن و عبدالله بن حلام : لا يعرف ، مجهول الحال و ثقه ابن حبان وحده و حديث مسلم (1403) يغنی عنه و فيه ’’ انی زينب ‘‘ بدل ’’ سودة ‘‘ وهو الصحيح

٣١٠٩ - (صَحِيح) وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْمَرْأَةُ عَوْرَةٌ فَإِذَا خَرَجَتِ اسْتَشْرَفَهَا الشَّيْطَانُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3109. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “औरत परदा है, जब वह (बेपर्दा) निकलती है तो शैतान इसे खुबसूरत कर के दिखाता है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (1173 وقال : حسن صحيح غريب) * قتادة مدلس و عنعن

٣١١٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِعَلِيٍّ: «يَا عَلِيُّ لَا تُتْبِعِ النَّظْرَةَ النَّظْرَةَ فَإِنَّ لَكَ الْأُولَى وَلَيْسَتْ لَكَ الْآخِرَةُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ والدارمي

3110. बुरैदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अली रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: “अली! (किसी अजनबी औरत को) लगातार न देख, क्योंकि तुम (गैर इरादी तौर पर) पहली बार देख सकते हो जबकि दूसरी मर्तबा देखने का तुम्हें हक़ हासिल नहीं|” (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، و احمد (5 / 351 ، 353 ح 23379 ، 23362) و الترمذی (2777 وقال : حسن غريب و ابوداؤد (2149) و الدارمی (لم اجده) و روی الدارمی (2 / 298 ح 2712) من حديث علی رضی الله عنه نحوا المعنی ، * شريک القاضی و عنعن و للحديث شاهد عند الحاکم (3 / 123) * شريک القاضی و عنعن و للحديث شاهد الحاکم (3 / 123)

٣١١١ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا زَوَّجَ أَحَدُكُمْ عَبْدَهُ أَمَتَهُ فَلَا يَنْظُرَنَّ إِلَى عَوْرَتِهَا» . وَفِي رِوَايَةٍ: «فَلَا يَنْظُرَنَّ إِلَى مَا دُونُ السُّرَّةِ وَفَوْقَ الرُّكْبَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3111. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम में से कोई अपने गुलाम की शादी, अपनी लौंडी से कर दे तो फिर वह इसे (लोंदी) के परदा की जगह को न देखे”, और एक दूसरी रिवायत में है: “वो ज़ेरे नाफ़ और घुटनों के ऊपर के हिस्से को न देखे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4114)

٣١١٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ جَرْهَدٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَمَا عَلِمْتَ أَنَّ الْفَخِذَ عَوْرَةٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

3112. जरहद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम्हें मालुम नहीं के रान परदा (यानी सतर) है”| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (2795) و ابوداؤد (4014)

٣١١٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَهُ: «يَا عَلِيُّ لَا تُبْرِزْ فَخِذَكَ وَلَا تَنْظُرْ إِلَى فَخِذِ حَيٍّ وَلَا مَيِّتٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

3113. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “अली! ना तुम अपने रान ज़ाहिर करो न किसी जिंदा व मुर्दा की रान को देखो”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف جذا ، رواہ ابوداؤد (3140) و ابن ماجہ (1460) * حبیب بن ابی ثابت مدلس و عنعن و الواسطۃ بینہ و بین شیخہ : عمرو بن خالد الواسطی وھو متروک متھم بالکذب

٣١١٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جَحْشٍ قَالَ: مَرَّ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى مَعْمَرٍ وَفَخذه مَكْشُوفَتَانِ قَالَ: «يَا مَعْمَرُ غَطِّ فَخِذَيْكَ فَإِنَّ الفخذين عَورَة» . رَوَاهُ فِي شرح السّنة

3114. मुहम्मद बिन जहश रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मअमर रदियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रे तो उनकी दोनों राने नंगी थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मअमर! अपनी राने धांपो, क्योंकि राने सतर है”| (हसन)

حسن ، رواہ البغوی فی شرح السنۃ (9 / 21 ح 2251) [و احمد (5 / 290 و سندہ حسن لذاتہ) و الحاکم (4 / 180)] * و للحدیث شواھد کثیرۃ عند الترمذی (2798) و غیرہ وھوبھا حسن

٣١١٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِيَّاكُمْ وَالتَّعَرِّيَ فَإِنَّ مَعَكُمْ مَنْ لَا يُفَارِقُكُمْ إِلَّا عِنْدَ الْغَائِطِ وَحِينَ يُفْضِي الرَّجُلُ إِلَى أَهْلِهِ فَاسْتَحْيُوهُمْ وَأَكْرِمُوهُمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3115. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नंगे होने से बचो, क्योंकि तुम्हारे साथ वह (फ़रिश्ते) है जो तुम्हारे साथ ही रहते है, और वह सिर्फ इस वक़्त जुदा होते हैं जब आदमी बैतूलखला जाता है और जब अपनी अहलिया से हमबिस्तरी करता है, तुम उन से हया करो और उनकी तकरीम करो”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (2800 وقال : غریب) * لیث بن ابی سلیم : ضعیف

٣١١٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ: أَنَّهَا كَانَتْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَيْمُونَةُ إِذْ أقبل ابْن مَكْتُومٍ فَدَخَلَ عَلَيْهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «احْتَجِبَا مِنْهُ» فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَيْسَ هُوَ أَعْمَى لَا يُبْصِرُنَا؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَفَعَمْيَاوَانِ أَنْتُمَا؟ أَلَسْتُمَا تُبْصِرَانِهِ؟» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

3116. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के वह और मैमुना रदियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह ﷺ के पास थी के इतने में इब्ने उम्म मक्तूम रदियल्लाहु अन्हु आए और आप की खिदमत में हाज़िर हुए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम दोनों उस से परदा करो”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या वह नाबीना नहीं? वह हमें देख नहीं सकता, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या तुम दोनों नाबीना हो! तुम उसे नहीं देख रही हो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (6 / 296 ح 27072) و الترمذی (2778 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (4112) * نبهان : و ثقه الذهبی فی الکاشف و الترمذی و ابن حبان و الحاکم بتصحیح حدیثه فحدیثه لا ینزل عن درجة الحسن

٣١١٧ - (حسن) وَعَنْ بَهْزِ بْنِ حَكِيمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «احْفَظْ عَوْرَتَكَ إِلَّا مِنْ زَوْجَتِكَ أَو مَا ملكت يَمِينك» فَقلت: يَا رَسُول الله أَفَرَأَيْت إِن كَانَ الرَّجُلُ خَالِيًا؟ قَالَ: «فَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ يستحيى مِنْهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

3117. बहज़ बिन हकिम अपने वालिद से और वह उस के दादा (मुआविया बिन हय्यु) से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपने अहलिया या अपने लौंडी के अलावा अपने सतर की हिफाज़त कर”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए कि जब आदमी तन्हाई में हो (फिर भी)? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह उस का ज़्यादा हक़दार है के उस से हया की जाए”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2794 وقال : حسن) و ابوداؤد (4017) و ابن ماجه (1920) * و علقه البخاری فی کتاب الغسل باب من اغتسل عریانًا وحده فی خلوة قبل ح 278

٣١١٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَخْلُوَنَّ رَجُلٌ بِامْرَأَةٍ إِلَّا كَانَ ثالثهما الشَّيْطَان» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3118. उमर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब कोई आदमी किसी (अजनबी) औरत के साथ अलायेदगी में होता है तो इन दोनों का तीसरा शैतान होता है”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (1171 ، 2169 وقال : حسن صحیح)

٣١١٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَلِجُوا عَلَى الْمُغَيَّبَاتِ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَجْرِي مِنْ أَحَدِكُمْ مَجْرَى الدَّمِ» قُلْنَا: وَمِنْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «وَمِنِّي وَلَكِنَّ الله أعانني عَلَيْهِ فَأسلم» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3119. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिन (अजनबी) औरतो के खाविंद मौजूद न हो तुम उन के पास न जाओ, क्योंकि शैतान तुम में दोरान खून की तरह गर्दिश करता है”, हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप मैं भी? आप ﷺ ने फ़रमाया: “(हाँ) और मुझ मैं भी लेकिन अल्लाह ने उस के खिलाफ मेरी मदद फरमाई तो वह मुतीअ हो गया में महफ़ूज़ रहता हूँ”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1172 وقال : غریب) [و للحدیث شواهد]

٣١٢٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتَى فَاطِمَةَ بِعَبْدٍ قَدْ وَهَبَهُ لَهَا وَعَلَى فَاطِمَةَ ثَوْبٌ إِذَا قَنَّعَتْ بِهِ رَأْسَهَا لَمْ يَبْلُغْ رِجْلَيْهَا وَإِذَا غَطَّتْ بِهِ رِجْلَيْهَا لَمْ يَبْلُغْ رَأْسَهَا فَلَمَّا رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا تَلْقَى قَالَ: «إِنَّهُ لَيْسَ عَلَيْكِ بَأْسٌ إِنَّمَا هُوَ أَبُوكِ وغلامك» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3120. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ एक गुलाम लेकर फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ लाए जिसे आप ने उन्हें हिब्बा कर दिया था, फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा पर एक कपड़ा था, जब फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा उस से अपना सर ढांपती तो वह आप के पाँव तक न पहुँचता, और जब वह उस से अपने पाँव ढांपती तो वह उन के सर तक न पहुँचता, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने उनकी इस परेशानी और तकलीफ को देखा तो फ़रमाया: “तुम पर कोई हरज नहीं, उनमें से एक तुम्हारे वालिद हैं और दूसरा तुम्हारा गुलाम है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4106)

بَاب النّظر إِلَى المخطوبة وَبَيَان العورات • जिस को पैगाम ए निकाह दिया जाए इसे देखने और पर्दे की चीजों का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣١٢١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ عِنْدَهَا وَفِي الْبَيْتِ مُخَنَّثٌ فَقَالَ: لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أُمَيَّةَ أَخِي أُمِّ سَلَمَةَ: يَا عَبْدَ اللَّهِ إِنْ فَتَحَ اللَّهُ لَكُمْ غَدًا الطَّائِفَ فَإِنِّي أَدُلُّكَ عَلَى ابْنَةِ غَيْلَانَ فَإِنَّهَا تُقْبِلُ بِأَرْبَعٍ وَتُدْبِرُ [ص:٩٣] بِثَمَانٍ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يدخلن هَؤُلَاءِ عَلَيْكُم»

3121. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ उन के पास तशरीफ़ फरमा थे जबकि घर में एक मुखन्नस था, उस ने उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा के भाई अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्य रदियल्लाहु अन्हु से कहा अब्दुल्लाह! अगर अल्लाह ने कल तुम्हें ताईफ में फतह अता की तो में तुम्हें गिलान की एक लड़की बताऊंगा, वह जब सामने आती है तो उस के पेट पर चार बल पड़ते है और जब मुड़ती है तो उस पर आठ बल पड़ते हैं, उस पर

नबी ﷺ ने फ़रमाया: “ये (मुखन्नस) लोग तुम्हारे पास न आया करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4324) و مسلم (2180)، (5690)

٣١٢٢ - (صَحِيح) وَعَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ قَالَ حَمَلْتُ حَجَرًا ثقيلاً فَبينا أَنَا أَمْشِي سَقَطَ عَنِّي ثَوْبِي فَلَمْ أَسْتَطِعْ أَخْذَهُ فَرَآنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لِي: «خُذْ عَلَيْكَ ثَوْبَكَ وَلَا تَمْشُوا عُرَاة» . رَوَاهُ مُسلم

3122. मिस्वर बिन मखरम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने एक भारी पत्थर उठाया हुआ था और इसी हालत में मैं चल रहा था के मेरा कपड़ा गिर गया (जिस से सतर खुल गया), मैं उसे उठा न सका, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे देखा तो फ़रमाया: “अपने ऊपर कपड़ा लो और उरिया हालत में न चलो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (78 / 341)، (773)

٣١٢٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: مَا نَظَرْتُ أَوْ مَا رَأَيْتُ فَرْجَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم قطّ. رَوَاهُ ابْن مَاجَه

3123. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ की शर्मगाह कभी नहीं देखी| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (1922 ، 662) * قال البوصیری :’’ هذا اسناد ضعیف ، مولی عائشة لم یسم ‘‘ و لم اجد من و ثقه

٣١٢٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَنْظُرُ إِلَى مَحَاسِنِ امْرَأَةٍ أَوَّلَ مَرَّةٍ ثُمَّ يَغُضُّ بَصَرَهُ إِلَّا أَحْدَثَ اللَّهُ لَهُ عِبَادَةً يَجِدُ حلاوتها» . رَوَاهُ أَحْمد

3124. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो मुसलमान पहली मर्तबा किसी औरत के हुस्न व जमाल पर नज़र डालता है और फिर वह अपने नज़र झुका लेता है तो अल्लाह इसे एक ऐसी इबादत की तौफिक अता फरमाता है जिस की वह हलावत महसूस करता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جذا ، رواه احمد (5 / 264 ح 22634) * فیه علی بن یزید ضعیف جدًا و عنه عبیدالله بن زحر : ضعیف

٣١٢٥ - (ضَعِيف) وَعَنِ الْحَسَنِ مُرْسَلًا قَالَ: بَلَغَنِي أَنَّ رَسُولَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَعَنَ اللَّهُ النَّاظِرَ وَالْمَنْظُورَ إِلَيْهِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

3125. हसन बसरी रहिमहुल्लाह मुरसल रिवायत करते हैं की मुझे रिवायत पहुंची है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह सतर देखने वाले और सतर दिखाने वाले पर लानत फरमाए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (7788 ، نسخة محققة : 7399 ، و السنن الکبری 7 / 99) * السند مع ضعیفه مرسل ، رواه عبد الرحمن بن سلمان الرعینی المصری (ضعیف) عن عمرو مولی المطلب عن الحسن به

• بَابُ الْوَلِيِّ فِي النِّكَاحِ وَاسْتِئْذَانِ الْمَرْأَةِ
निकाह में वली होने और औरत से इजाज़त तलब करने का बयान

• الْفَصْلُ الأول
पहली फस्ल

٣١٢٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُنْكَحُ الْأَيِّمُ حَتَّى تُسْتَأْمَرَ وَلَا تُنْكَحُ الْبِكْرُ حَتَّى تُسْتَأْذَنَ» . قَالُوا: يَا رَسُول الله وَكَيف إِذْنهَا؟ قَالَ: «أَن تسكت»

3126. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेवा औरत का निकाह न किया जाए जब तक उस से मशावरत न कर ली जाए, और कुंवारी औरत का निकाह न किया जाए जब तक उस से इजाज़त न ली जाए”, सहाबा किराम ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! और उसकी इजाज़त किस तरह है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस का ख़ामोश रहना इजाज़त है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6968) و مسلم 64 / 1419)، (3473)

٣١٢٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْأَيِّمُ أَحَقُّ بِنَفْسِهَا مِنْ وَلِيِّهَا وَالْبِكْرُ تَسْتَأْذِنُ فِي نَفْسِهَا وَإِذْنُهَا صِمَاتُهَا» . وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ: «الثَّيِّبُ أَحَقُّ بِنَفْسِهَا مِنْ وَلِيِّهَا وَالْبِكْرُ تُسْتَأْمَرُ وَإِذْنُهَا سُكُوتُهَا» . وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ: «الثَّيِّبُ أَحَقُّ بِنَفْسِهَا مِنْ وَلِيِّهَا وَالْبِكْرُ يَسْتَأْذِنُهَا أَبُوهَا فِي نَفْسِهَا وَإِذْنُهَا صِمَاتُهَا» . رَوَاهُ مُسلم

3127. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “बेवा अपने ज़ात के बारे में अपने वली से ज़्यादा हक़दार है, जबकि कुंवारी से उसकी ज़ात के बारे में इजाज़त तलब की जाएगी, और उस का ख़ामोश रहना उसकी इजाज़त है” एक रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेवा अपने ज़ात के बारे में अपने वली से ज़्यादा हक़दार है जबकि कुंवारी से इजाज़त तलब की जाएगी और उस का ख़ामोश रहना उसकी इजाज़त है”, एक दूसरी रिवायत में है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेवा अपने ज़ात के बारे में अपने वली से ज़्यादा हक़दार है, जबकि कुंवारी के मुतल्लिक उस का वालिद उस से इजाज़त तलब करेगा और उस का ख़ामोश रहना उसकी इजाज़त है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (66 / 1421)، (3476)

٣١٢٨ - (صَحِيح) وَعَن خنساء بنت خذام: أَنْ أَبَاهَا زَوَّجَهَا وَهِيَ ثَيِّبٌ فَكَرِهَتْ ذَلِكَ فَأَتَتْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَدَّ نِكَاحَهَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ مَاجَه: نِكَاح أَبِيهَا

3128. खंशाअ बिन्ते खज़ाम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह बेवा थी और उन के वालिद ने उनकी शादी

कर दी, खंशाअ ने इसे नापसंद किया तो वह रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आई तो आप ﷺ ने उनका निकाह फस्ख कर दिया| (बुखारी)

رواه البخاری (5138) و ابن ماجه (1873)

٣١٢٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَزَوَّجَهَا وَهِيَ بِنْتُ سَبْعِ سِنِينَ وَزُفَّتْ إِلَيْهِ وَهِيَ بِنْتُ تِسْعِ سِنِينَ وَلُعَبُهَا مَعَهَا وَمَاتَ عَنْهَا وَهِيَ بِنْتُ ثَمَانِي عَشْرَةَ. رَوَاهُ مُسلم

3129. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ ने उन से शादी की तो उनकी उम्र सात बरस थी, आप ﷺ के घर उनकी रुखसती हुई तब उनकी उम्र नौ बरस थी और उन के खिलौने उनके साथ थे, और जब आप ﷺ ने वफात पाई तो उनकी उमर अठारह बरस थी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (71 / 1423)، (3481)

बَابُ الْوَلِيِّ فِي النِّكَاحِ وَاسْتِئْذَانِ الْمَرْأَةِ • निकाह में वली होने और औरत से इजाज़त तलब करने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣١٣٠ - (صَحِيح) عَن أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا نِكَاحَ إِلَّا بِوَلِيٍّ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

3130. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया " वली के बगैर निकाह नहीं"| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (4 / 394 ح 19747) و الترمذی (1101) و ابوداؤد (2085) و ابن ماجه (1881) و الدارمی (1 / 137 ح 21882189)

٣١٣١ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَيُّمَا امْرَأَةٍ نَكَحَتْ بِغَيْرِ إِذْنِ وَلِيِّهَا فَنِكَاحُهَا بَاطِلٌ فَنِكَاحُهَا بَاطِلٌ فَنِكَاحُهَا بَاطِلٌ فَإِنْ دَخَلَ بِهَا فَلَهَا الْمَهْرُ بِمَا اسْتَحَلَّ مِنْ فَرْجِهَا فَإِنِ اشْتَجَرُوا فَالسُّلْطَانُ وَلِيُّ من لَا ولي لَهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

3131. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो औरत अपने वली की इजाज़त

के बगैर अपना निकाह करे तो उस का निकाह बातिल है, उस का निकाह बातिल है, उस का निकाह बातिल है, अगर इस (मर्द) ने उस से जिमाअ किया है तो वह महर की हक़दार है क्यूंकि उस ने उस से मुबाशरत की है, अगर वह (वली) इख्तिलाफ करे तो जिस का वली न हो तो सुलतान (बादशाह) उस का वली ही"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (6 / 66 ح 24876) و الترمذی (1102 وقال : حسن) و ابوداؤد (2083) و ابن ماجه (1879) و الدارمی (1 / 137 ح 2190)

٣١٣٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْبَغَايَا اللَّاتِي يُنْكِحْنَ أَنْفُسَهُنَّ بِغَيْرِ بَيِّنَةٍ» . وَالْأَصَحُّ أَنَّهُ مَوْقُوفٌ عَلَى ابْنِ عَبَّاس. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3132. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "ज़ानिया वह हैं जो गवाह के बगैर अपना निकाह करे"| दुरुस्त बात यह है कि यह इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा का कौल है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، روای الترمذی (1103) * سعيد بن ابی عروبة و قتادة مدلسان و عنعنا

٣١٣٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْيَتِيمَةُ تُسْتَأْمَرُ فِي نَفْسِهَا فَإِنْ صَمَتَتْ فَهُوَ إِذْنُهَا وَإِنْ أَبَتْ فَلَا جَوَازَ عَلَيْهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ

3133. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "यतीम लड़की से उसकी ज़ात के बारे में इजाज़त ली जाएगी, अगर वह ख़ामोश रहे तो फिर यही उसकी इजाज़त है, और अगर वह इनकार कर दे तो फिर उस पर ज़्यादती न की जाए"| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (1109 ، وقال : حسن) و ابوداؤد (2093) و النسائی (6 / 87 ح 3272 و سنده حسن) وله شواهد صحيحة

٣١٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ الدَّارِمِيّ عَن أبي مُوسَى

3134. इमाम दारमी ने इसे अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الدارمی (2 / 138 ح 2191 ، نسخة محققة : 2231) [و احمد 4 / 394 ح 19745 ، 4 / 411 ح 19924 و سنده صحيح) و صححه ابن حبان (الموارد : 1238)]

٣١٣٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَيُّمَا عَبْدٍ تَزَوَّجَ بِغَيْرِ إِذْنِ سَيِّدِهِ فَهُوَ عَاهِرٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ والدرامي

3135. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो गुलाम अपने आका की इजाज़त के बगैर शादी करे तो वह ज़ानि है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، ، رواه الترمذی (1111 ، وقال : حسن) وابوداؤد (2078) و الدارمی (1 / 152 ح 2239) * فیه عبدالله بن محمد بن عقیل : ضعیف ، ضعفه الجمهور

بَابُ الْوَلِيِّ فِي النِّكَاحِ وَاسْتِئْذَانِ الْمَرْأَةِ — निकाह में वली होने और औरत से इजाज़त तलब करने का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث — तीसरी फस्ल

٣١٣٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: إِنَّ جَارِيَةً بِكْرًا أَتَتْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذكرت أَن أَبَاهَا زَوجهَا وَهِي كَارِهًا فَخَيَّرَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

3136. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, कि एक नाबालिग़ लड़की रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई और उस ने अर्ज़ किया के उस के वालिद ने उसकी शादी कर दी है जब के वह इसे नापसंद करती है, नबी ﷺ ने इसे (शादी बरक़रार रखने या फस्ख करने का) इख़्तियार दिया| (हसन)

حسن ، رواه ابوداو7د (2096)

٣١٣٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «لَا تزوج الْمَرْأَة الْمَرْأَةَ وَلَا تُزَوِّجُ الْمَرْأَةُ نَفْسَهَا فَإِنَّ الزَّانِيَةَ هِيَ الَّتِي تُزَوِّجُ نَفْسَهَا» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

3137. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कोई औरत दूसरी औरत का निकाह न कराए और ना कोई औरत खुद अपना निकाह कराए क्योंकि वह ज़ानिया है जो अपना निकाह खुद करती है”| (सहीह)

صحیح ، رواه ابن ماجه (1882)

٣١٣٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ وَابْنِ عَبَّاسٍ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «من وُلِدَ لَهُ وَلَدٌ فَلْيُحْسِنِ اسْمَهُ وَأَدَبَهُ فَإِذَا بَلَغَ فَلْيُزَوِّجْهُ فَإِنْ بَلَغَ وَلَمْ يُزَوِّجْهُ فَأَصَابَ إِثْمًا فَإِنَّمَا إثمه على أَبِيه»

3138. अबू सईद और इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुम बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस के

वहां बच्चा पैदा हो तो इसे चाहिए के वह उस का अच्छा नाम रखे, इसे अदब सिखाए और जब वह बालिग़ हो जाए तो उसकी शादी कर दे, अगर वह बालिग़ हो जाए और वह (वालिद) उसकी शादी न करे और वह किसी गुनाह (जीना वगैरा) का इर्तिकाब कर ले तो उस का गुनाह उस के वालिद पर है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (8666 ، نسخة محققة : 8299) * سعيد بن اياس الجريرى اختلط و لم يعلم سماع شداد بن سعيد منه ، هل قبل اختلاطه ام بعد ؟ و باقى السند صحيح

٣١٣٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ وَأَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " فِي التَّوْرَاةِ مَكْتُوبٌ: مَنْ بَلَغَتِ ابْنَتُهُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ سَنَةً وَلَمْ يُزَوِّجْهَا فَأَصَابَتْ إِثْمًا فَإِثْمُ ذَلِكَ عَلَيْهِ «. رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيُّ فِي» شُعَبِ الْإِيمَانِ "

3139. उमर बिन खत्ताब और अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हुमा रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तौरात में लिखा हुआ है, जिस शख़्स की बेटी बारह बरस की हो जाए और वह उसकी शादी न करे और वह (लड़की) किसी गुनाह का इर्तिकाब कर ले तो उस का गुनाह उस के वालिद पर है"| बयहकी ने यह दोनों रिवायतों शौबुल ईमान में बयान की है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (8669 ، ابوبكر بن ابى مريم [ضعيف] عن [ابى] المجاشع الازدى [!] عن عمر ، و : 8670 عن انس ، فيه احمد بن بشير بن سعد المرثدى محقق يعنى احمق فهو علة الخبير و خبره شاذ مرة)

एलान ए निकाह, खुत्बा, मंगनी और शर्त का बयान • بَابُ إِعْلَانِ النِّكَاحِ وَالْخِطْبَةِ وَالشَّرْطِ

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٣١٤٠ - (صَحِيح) عَنِ الرّبيع بنت معوذ بن عَفْرَاءَ قَالَتْ: جَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَدَخَلَ حِينَ بُنِيَ عَلَيَّ فَجَلَسَ عَلَى فِرَاشِي كمجلسك مني فَجعلت جويرات لَنَا يَضْرِبْنَ بِالدُّفِّ وَيَنْدُبْنَ مَنْ قُتِلَ مِنْ آبَائِي يَوْمَ بَدْرٍ إِذْ قَالَتْ إِحْدَاهُنَّ: وَفِينَا نَبِيٌّ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ فَقَالَ: «دَعِي هَذِهِ وَقُولِي بِالَّذِي كُنْتِ تَقُولِينَ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

3140. रुबय्या बिन्ते मुअव्वीज़ बिन इफराअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, जब मुझे शादी के बाद मेरे खाविंद के घर लाया गया तो नबी ﷺ तशरीफ़ लाए और मेरे बिस्तर पर इस तरह बैठ गए जिस तरह आप (हदीस के रावी खालिद बिन ज़क्वान) मुझ से (दूर) बैठें है, पस अंसार की छोटी छोटी बच्चिया दफ बजा कर मेरे उन आबाअ, जो गज़वा ए उहद में शहीद हो गए थे के मुहसिन बयान करने लगी, के अचानक उनमें से एक ने कह दिया हम में एक नबी है जो मुस्तकबिल के वाकिअत जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "इसे छोड़ो, और जो तुम

पहले कह रही थी वही कहो”| (बुखारी)

رواه البخاری (5147)

٣١٤١ - (صَحِيح) وَعَن عَائِشَة رَضِي الله عَنهُ قَالَتْ: زُفَّتِ امْرَأَةٌ إِلَى رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ فَقَالَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا كَانَ مَعَكُمْ لَهْوٌ؟ فَإِنَّ الْأَنْصَارَ يُعْجِبُهُمُ اللَّهْو» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3141. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, एक औरत की एक अंसारी सहाबी के साथ रुखसती हुई तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम्हारे पास खेल कूद का सामान नहीं था? क्योंकि अंसार को दफ और अशआर कहना अच्छा लगता है‘‘| (बुखारी)

رواه البخاری (5162)

٣١٤٢ - (صَحِيح) وَعَنْهَا قَالَتْ: تَزَوَّجَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي شَوَّالٍ وَبَنَى بِي فِي شَوَّالٍ فَأَيُّ نِسَاءِ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ أَحْظَى عِنْدَهُ مِنِّي؟ . رَوَاهُ مُسلم

3142. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने शव्वाल में मुझ से शादी की और शव्वाल में मुझे अपने घर लाए और रसूलुल्लाह ﷺ की अज़वाज ए मूतहरात में से कौन सी वह बीवी है जिसे आप के यहाँ मुझ से हम मक़ाम हासिल था ? (मुस्लिम)

رواه مسلم (73 / 1423)، (3483)

٣١٤٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَحَقُّ الشُّرُوطِ أَنْ تُوفُوا بِهِ مَا اسْتَحْلَلْتُمْ بِهِ الْفروج»

3143. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिन शरुत के साथ तुमने शर्मगाहो को हलाल बनाया है, वह (शरुत) ज़्यादा हक़ रखती है की उन्हें पूरा किया जाए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5151) و مسلم (63 / 1418)، (3472)

٣١٤٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَخْطُبُ الرَّجُلُ عَلَى خِطْبَةِ أَخِيهِ حَتَّى يَنْكِحَ أَو يتْرك»

3144. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आदमी अपने (मुसलमान) भाई के पैगामे निकाह पर पैगामे निकाह न भेजे हत्ता के वह निकाह कर ले दे या छोड़ दे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5144) و مسلم (52 / 1413)، (3459)

٣١٤٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَسْأَلِ الْمَرْأَةُ طَلَاقَ أُخْتِهَا لِتَسْتَفْرِغَ صَحْفَتَهَا وَلِتَنْكِحَ فَإِنَّ لَهَا مَا قُدِّرَ لَهَا»

3145. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “औरत अपने (मुसलमान) बहन की तलाक का मुतालबा न करे ताकि इसे उस का रीज़्क भी मिल जाए इसे चाहिए के वह इस मर्द से खुद शादी कर ले, हालाँकि जो उस के मुकद्दर में है वह इसे मिल जाएगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6601) و مسلم (52 / 1413)، (3459)

٣١٤٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ الشِّغَارِ وَالشِّغَارُ: أَنْ يُزَوِّجَ الرَّجُلُ ابْنَتَهُ عَلَى أَنْ يُزَوِّجَهُ الْآخَرُ ابْنَتَهُ وَلَيْسَ بَيْنَهُمَا صَدَاقٌ

3146. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने “ निकाह ए शिगार ‘ से मना फ़रमाया है, और शिगार यह है कि आदमी अपने बेटी की शादी इस शर्त पर करे के दूसरा आदमी अपने बेटी की शादी उस से कर दे और इन दोनों के दरमियान महर न हो”| और मुस्लिम की रिवायत में है की आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस्लाम में शिगार (बेटे का निकाह) नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5112) و مسلم (57 / 1415 و و 60 / 1415)، (3465 و 3468) و ذکره البغوی فی مصابیح السنة (2337)

٣١٤٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ مُتْعَةِ النِّسَاءِ يَوْمَ خَيْبَرَ وَعَنْ أكل لُحُوم الْحمر الإنسية

3147. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने गजवा ए खैबर के मौके पर औरतो से मुताअ करने और पालतू गधो का गोश्त खाने से मना फ़रमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4216) و مسلم (29 / 1407)، (3431)

٣١٤٨ - (صَحِيح) وَعَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ قَالَ: رَخَّصَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ أَوْطَاسٍ فِي الْمُتْعَةِ ثَلَاثًا ثُمَّ نَهَى

عَنْهَا. رَوَاهُ مُسلم

3148. सलमा बिन अकवा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने गज़वा ए अवतास के मौके पर तीन रोज़ के लिए मुताअ की इजाज़त दी फिर उस से मना फरमा दिया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (18 / 1405)، (3418)

بَابُ إِعْلَانِ النِّكَاحِ وَالْخِطْبَةِ وَالشَّرْطِ • एलान ए निकाह, खुत्बा, मंगनी और शर्त का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣١٤٩ - (صَحِيح) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: عَلَّمَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ التَّشَهُّدَ فِي الصَّلَاةِ وَالتَّشَهُّدَ فِي الْحَاجَةِ قَالَ: التَّشَهُّدُ فِي الصَّلَاةِ: «التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ» . [ص:٩٤ وَالتَّشَهُّدُ فِي الْحَاجَةِ: «إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ نَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسنَا من يهد اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ» . وَيَقْرَأُ ثَلَاثَ آيَاتٍ (يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسلمُونَ)»» (يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تساءلون وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا)»» (يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيما)»» رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَفِي جَامِعِ التِّرْمِذِيِّ فَسَّرَ الْآيَاتِ الثَّلَاثَ سُفْيَانُ الثَّوْرِيُّ وَزَادَ ابْنُ مَاجَهْ بَعْدَ قَوْلِهِ: «إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ نَحْمَدُهُ» وَبَعْدَ قَوْلِهِ: «من شرور أَنْفُسنَا وَمن سيئات أعمالنَا» وَالدَّارِمِيُّ بَعْدَ قَوْلِهِ «عَظِيمًا» ثُمَّ يَتَكَلَّمُ بِحَاجَتِهِ وَرَوَى فِي شَرْحِ السُّنَّةِ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ فِي خطْبَة الْحَاجة من النِّكَاح وَغَيره

3149. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें नमाज़ में तशह्हुद पढ़ना सिखाई और हाजत (निकाह वगैरा) में तशह्हुद सिखाई रावी बयान करते हैं, नमाज़ में तशह्हुद के अल्फाज़ यह है (التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ) (أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ) “कौली, बदनी और माली इबादते अल्लाह के लिए है, ए नबी! आप पर सलामती, अल्लाह की रहमत और उसकी बरकात हो, हम पर और अल्लाह के नेक बंदो पर सलामती हो, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उस के बंदे और उस के रसूल हैं”, और किसी हाजत व ज़रूरत के वक़्त पढ़ा जाने वाला तशह्हुद यह है (إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ نَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسنَا من يهد اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ (وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُول “बेशक हर किस्म की हम्द अल्लाह के लिए है, हम इसी से मदद चाहते और इसी से मगफिरत तलब करते हैं, हम अपने नफ्स की बुराइओ से अल्लाह की पनाह चाहते है,

जिस को अल्लाह हिदायत अता फरमादे इसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे वह गुमराह कर दे इसे कोई हिदायत देने वाला नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उस के बंदे और उस के रसूल हैं", और आप ﷺ यह तीन आयात तिलावत फरमाते (يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسلمُونَ) "ए ईमान वालो अल्लाह से डर जाओ जिस तरह उस से डरने का हक़ है और तुम इस हाल में मरो की तुम मुसलमान हो", (يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تساءلون وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا) "ए लोगो! अपने रब से डरो जिस ने तुम्हें एक शख़्स हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से पैदा किया और इसी से उस का जोड़ा बनाया फिर इन दोनों से बड़ी तादाद में मर्द और औरते पैदा कर के उन्हें रुए ज़मीन पर फैला दे या और डरो अल्लाह से जिसके ज़रिए तुम अपने जुरुरियात जिंदगी पूरी करते हो और कतअ रहमी से बचो अल्लाह तआला यक़ीनन तुम्हें देख रहा है" (يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيما) "ए ईमान वालो अल्लाह से डरो और दुरुस्त बात करो वह तुम्हारे आमाल दुरुस्त कर देगा और तुम्हारे गुनाह बख्श देगा और जो शख़्स अल्लाह और उस के रसूल (ﷺ की इताअत करे वह बहोत बड़ी कामयाबी हासिल कर लेगा", और जामेअ तिरमिज़ी में है सुफियान सौरी ने तीनो आयात की वज़ाहत की और इब्ने माजा ने ((اِنَّ الْحَمْدَ لِلهِ)) के बाद ((نَحْمَدُهُ)) और ((مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا)) के बाद ((وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا)) का इज़ाफा नकल किया और दारमी ने (عَظِيْمًا) के बाद इज़ाफा नकल किया है की फिर अपने हाजत व ज़रूरत का तज़किरह करे और शरह सुन्ना में इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से मन्कुल है के इस तशह्हुद को निकाह के खुत्बा हाजत या किसी दूसरे खुत्बा में पढ़े| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (1 / 392393 ح 37203721) و الترمذی (1105) و ابوداؤد (2118) و النسائی (6 / 89 ح 3279) و ابن ماجه (1892) و الدارمی (2 / 142 ح 2208) و البغوی فی شرح السنة (9 / 4950 ح 2268) * ابو عبیدة عن ابیه منقطع و ابو اسحاق السبیعی مدلس و عنعن و رواه عن ابی اسحاق عن ابی الاحوص عند احمد مبترًا فسنده معلول

٣١٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُّ خُطْبَةٍ لَيْسَ فِيهَا تَشَهُّدٌ فَهِيَ كَالْيَدِ الْجَذْمَاءِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

3150. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "हर वह खुतबा जिस में तशहूद (हम्द व सना) न हो तो वह कटे हुए हाथ की तरह है | तिरमिज़ी, और उन्होंने फ़रमाया यह हदीस हसन गरीब है| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (1106)

٣١٥١ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُّ أَمْرٍ ذِي بَالٍ لَا يُبْدَأُ فِيهِ [ص:٩٤ بِالْحَمْدِ لِلَّهِ فَهُوَ أَقْطَعُ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

3151. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर अहम काम जिस का आगाज़ अल्लाह की हम्द से न किया जाए वह काम बरकत से खाली है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (1894) [و ابوداؤد (4840)] * الزهری مدلس و عنعن و قرة متكلم فيه و خالفه الثقات الجبال الحفاظ فالقول قولهم

٣١٥٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَعْلِنُوا هَذَا النِّكَاحَ وَاجْعَلُوهُ فِي الْمَسَاجِدِ وَاضْرِبُوا عَلَيْهِ بِالدُّفُوفِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

3152. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “निकाह का एलान करो और इसे मस्जिद में करो, और इस मौके पर दफ बजाओ”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1089) * فيه عيسى بن ميمون : ضعيف و للحديث طريق عند ابن ماجه (1895) فيه متروک

٣١٥٣ - (حسن) وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ حَاطِبٍ الْجُمَحِيِّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " فَصَلَ مَا بَيْنَ الْحَلَالِ وَالْحَرَامِ: الصَّوْتُ وَالدُّفُّ فِي النِّكَاحِ ". رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

3153. मुहम्मद बिन हातिब जमही रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “निकाह के मौके पर (निकाह की) तश्हीर और दफ बजाना (निकाह) हलाल और हराम में फर्क करता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (3 / 418 ح 15530) و الترمذی (1088) و النسائی (6 / 172 ح 33713372) و ابن ماجه (1896)

٣١٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَتْ عِنْدِي جَارِيَةٌ مِنَ الْأَنْصَارِ زَوَّجْتُهَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا عَائِشَةُ أَلَا تُغَنِّينَ؟ فَإِنَّ هَذَا الْحَيَّ مِنَ الْأَنْصَارِ يُحِبُّونَ الْغِنَاءَ» . رَوَاهُ ابْن حبَان فِي صَحِيحه

3154. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मेरे पास अंसार की एक लड़की थी, मैंने उसकी शादी कर दी, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आइशा! तुम अशआर का इंतेज़ाम क्यों नहीं करती, क्योंकि अंसार का यह कबिले अशआर पसंद करता है”| (सहीह,हसन)

حسن ، [رواه ابن حبان (الموارد : 2016 و الاحسان : 5845 فيه اسحاق بن سهل بن ابی حثمه) و للحديث شواهد عند البخاری (5162) و ابن ماجه (1900) و غيرهما]

٣١٥٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابْن عَبَّاس قَالَ: أنكحت عَائِشَة ذَات قَرَابَةٍ لَهَا مِنَ الْأَنْصَارِ فَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ فَقَالَ: «أَهَدَيْتُمُ الْفَتَاةَ؟» قَالُوا: نعم قَالَ: «أرسلتم مَعهَا من تغني؟» قَالَتْ: لَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ الْأَنْصَارَ قَوْمٌ فِيهِمْ غَزَلٌ فَلَوْ بَعَثْتُمْ مَعَهَا مَنْ يَقُولُ:»» أَتَيْنَاكُمْ أَتَيْنَاكُمْ فحيانا وحياكم ". رَوَاهُ ابْن مَاجَه

3155. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने अंसार में से अपने एक अज़िज़ाह की शादी की तो रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए और फ़रमाया: "क्या तुम ने लड़की को भेज दिया ?" उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्या तुम ने अशआर पढ़ने वालो को उस के साथ भेजा है?" आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, नहीं, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अंसार ऐसे लोग है जो गाने का रुजहान रखते है, अगर तुम उस के साथ किसी ऐसे शख़्स को भेजती जो कहता اَتَيْنا كُمْ اَتَيْنَا كُمْ فَحَيَّانَا وَ حَيَّاكُمْ "हम तुम्हारे पास आए हम तुम्हारे पास आए, हमें भी मुबारक हो और तुम्हें भी मुबारक हो"| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابن ماجه (1900) * ابو الزبير عنعن و اصل الحديث عند البخارى فى صحيحه (5162)

٣١٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَمُرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَيُّمَا امْرَأَةٍ زَوَّجَهَا وَلِيَّانِ فَهِيَ لِلْأَوَّلِ مِنْهُمَا وَمَنْ بَاعَ بَيْعًا مِنْ رَجُلَيْنِ فَهُوَ لِلْأَوَّلِ مِنْهُمَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ والدارمي

3156. समुरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस औरत की शादी दो वली कर दे तो वह इन दोनों में से पहले वाले के निकाह में होगी और जो शख़्स दो आदमियों से बेअ करे तो वह उनमें से पहले के लिए है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (1110 وقال : حسن) و ابوداؤد (2088) و النسائى (7 / 314 ح 4686) و الدارمى (2 / 139 ح 2200)

بَابُ إِعْلَانِ النِّكَاحِ وَالْخِطْبَةِ وَالشَّرْطِ • एलान ए निकाह, खुत्बा, मंगनी और शर्त का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣١٥٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: كُنَّا نَغْزُو مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَعَنَا نِسَاءٌ فَقُلْنَا: أَلَا نَخْتَصِي؟ فَنَهَانَا عَنْ ذَلِكَ ثُمَّ رَخَّصَ لَنَا أَنْ نَسْتَمْتِعَ فَكَانَ أَحَدُنَا يَنْكِحُ الْمَرْأَةَ بِالثَّوْبِ إِلَى أَجَلٍ ثُمَّ قَرَأَ عَبْدُ اللَّهِ: (يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ)

3157. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ जिहाद में शरीक होते थे और हमारे साथ औरते नहीं होती थी, हमने अर्ज़ किया: क्या हम खस्सी न हो जाए? आप ﷺ ने हमें उस से मना फ़रमाया, फिर आप ﷺ ने हमें मुताअ करने की रुखसत अता फरमाई, हम में से कोई शख़्स कपड़े के अवज़ एक

मुद्दत तक किसी औरत से निकाह करता, फिर अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु ने यह आयत तिलावत फरमाई: “ए मोमिनो! पाकिज़ा चीजों को, जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की है, हराम करार न दो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4615) و مسلم (11 / 1404)، (3410)

٣١٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: إِنَّمَا كَانَتِ الْمُتْعَةُ فِي أول الْإِسْلَام كَانَ الرجل يقدم الْبَلدة لَيْسَ لَهُ بِهَا مَعْرِفَةٌ فَيَتَزَوَّجُ الْمَرْأَةَ بِقَدْرِ مَا يرى أَنَّهُ يُقِيمُ فَتَحْفَظُ لَهُ مَتَاعَهُ وَتُصْلِحُ لَهُ شَيَّهُ حَتَّى إِذَا نَزَلَتِ الْآيَةُ (إِلَّا عَلَى أَزْوَاجهم أَو مَا ملكت أَيْمَانهم)»» قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَكُلُّ فَرْجٍ سِوَاهُمَا فَهُوَ حرَام. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3158. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मुताअ इस्लाम के इब्तिदाई दौर में था वह इस तरह के आदमी शहर में जाता, उसकी वहां जान पहचान न होती तो वह वहां अपने कयाम के अंदाज़े के मुताबिक औरत से शादी कर लेता तो वह उस के सामान की हिफाज़त करती और उस के लिए खाना तैयार करती हत्ता कि जब यह आयत नाज़िल हुई: “मगर अपने बीवियों पर या अपने लोंदियो पर”, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: “इन दोनों (बीवी और लोंदी) की शर्मगाह के सिवा हर शर्मगाह हराम है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1122) * موسى بن عبيدة : ضعيف

٣١٥٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى قَرَظَةَ بْنِ كَعْبٍ وَأَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ فِي عُرْسٍ وَإِذَا جِوَارٍ يُغَنِّينَ فَقُلْتُ: أَيْ صَاحِبَيْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَهْلَ بَدْرٍ يُفْعَلُ هَذَا عِنْدَكُمْ؟ فَقَالَا: اجْلِسْ إِنْ شِئْتَ فَاسْمَعْ مَعَنَا وَإِنْ شِئْتَ فَاذْهَبْ فَإِنَّهُ قَدْ رَخَّصَ لَنَا فِي اللَّهْوِ عِنْدَ الْعُرْسِ. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

3159. आमिर बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं एक शादी के मौके पर क़र्ज़त बिन काब और अबू मसउद अंसारी रदियल्लाहु अन्हु के पास गया तो देखा के छोटी बच्चिया गा रही थी, मैंने कहा रसूलुल्लाह ﷺ के साथियों और बद्र के गाज़ियो! तुम्हारे पास यह हो रहा है? इन दोनों ने फ़रमाया: अगर तुम चाहो तो हमारे पास बैठ कर सुनो और अगर तुम चाहो तो जाओ, क्योंकि शादी के मौके पर गाने के मुतल्लिक हमें इजाज़त दी गई है| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائى (7 / 135 ح 3385)

بَاب الْمُحرمَات • मुहर्रमात का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣١٦٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يُجْمَعُ بَيْنَ الْمَرْأَة وعمتها وَلَا بَين الْمَرْأَة وخالتها»

3160. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “औरत और उसकी फूफी निज़ औरत और उसकी खाला को निकाह में इकट्ठा न किया जाए”| (यानी फूफी भतीजी, और खाला भांजी, एक वक़्त में एक आदमी की बीवियां नहीं हो सकती) | (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5109) و مسلم (33 / 1408)، (3436)

٣١٦١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَحْرُمُ مِنَ الرَّضَاعَةِ مَا يحرم من الْولادَة» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3161. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दूध पीने से वह रिश्ते हराम हो जाते हैं, जो नसब से हराम होते हैं”| (बुखारी)

رواه البخاری (5239)

٣١٦٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهَا قَالَتْ: جَاءَ عَمِّي مِنَ الرَّضَاعَةِ فَاسْتَأْذَنَ عَلَيَّ فَأَبَيْتُ أَنْ آذَنَ لَهُ حَتَّى أَسْأَلَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ: «أَنَّهُ عَمُّكِ فَأْذَنِي لَهُ» قَالَت: فَقلت: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّمَا أَرْضَعَتْنِي الْمَرْأَةُ وَلَمْ يرضعني الرَّجُلُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّه عمك فليلج عَلَيْك» وَذَلِكَ بَعْدَمَا ضرب علينا الْحجاب

3162. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मेरे रिज़ाई चचा आए, उन्होंने मेरे पास आने की इजाज़त तलब की तो मैंने उन्हें इजाज़त देने से इनकार कर दिया हत्ता के मैं रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त कर लूँ, रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए मैंने आप से दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “बिलाशुबा वह तुम्हारा चचा है लिहाज़ा इसे इजाज़त दे दो”, वह बयान करती हैं, मैंने आप से अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे तो औरत ने दूध पिलाया है, मर्द ने तो मुझे दूध नहीं पिलाया! रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बिलाशुबा वह तुम्हारा चचा है, लिहाज़ा वह

तुम्हारे पास आ सकता है", और यह हम पर परदा के अहकाम नाज़िल होने से बाद का वाकिया है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5239) و مسلم (7 / 1445)، (3575)

٣١٦٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلْ لَكَ فِي بِنْتِ عَمِّكَ حَمْزَةَ؟ فَإِنَّهَا أَجْمَلُ فَتَاةٍ فِي قُرَيْشٍ فَقَالَ لَهُ: «أَمَا عَلِمْتَ أَنَّ حَمْزَةَ أَخِي مَنِ الرَّضَاعَةِ؟ وَأَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ مِنَ الرَّضَاعَةِ مَا حرم من النّسَب؟» . رَوَاهُ مُسلم

3163. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या आप अपने चचा हम्ज़ा रदियल्लाहु अन्हु की बेटी के बारे में रगबत रखते हैं? वह कुरैश की सबसे ज़्यादा हसीन व जमील लड़की है, आप ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: "क्या तुम्हें मालुम नहीं के हम्ज़ा मेरे रिज़ाई भाई है, और अल्लाह ने रिज़ाअत की वजह से वह रिश्ते हराम किए है, जो उस ने नसब की वजह से हराम किए है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (11 / 1446)، (3581)

٣١٦٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَمِّ الْفَضْلِ قَالَتْ: أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تُحَرِّمُ الرضعة أَو الرضعتان»

3164. उम्म फ़ज़ल रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: "एक मर्तबा या दो मर्तबा दूध पीना हुरमत साबित नहीं करता"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (21 / 1451)، (3594)

٣١٦٥ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةِ عَائِشَةَ قَالَ: «لَا تُحَرِّمُ الْمَصَّةُ والمصتان»

3165. और आइशा रदियल्लाहु अन्हा से मरवी हदीस में है: "एक मर्तबा और दो मर्तबा दूध चूसने से हुरमत वाकेअ नहीं होती"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (17 / 1450)، (3590)

٣١٦٦ - (صَحِيح) وَفِي أَخْرَى لِأُمِّ الْفَضْلِ قَالَ: «لَا تُحَرِّمُ الإملاجة والإملاجتان» . هَذِه رِوَايَات لمُسلم

3166. और उम्म फ़ज़्ल रदियल्लाहु अन्हु से मरवी दूसरी हदीस में है: “एक या दो मर्तबा दूध पीने से हुरमत वाकेअ नहीं होती”| तीनो रिवायत सहीह मुस्लिम की हैं| (मुस्लिम)

رواه مسلم (18 / 1451)، (3591)

٣١٦٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ فِيمَا أُنْزِلَ مِنَ الْقُرْآنِ: «عَشْرُ رَضَعَاتٍ مَعْلُومَاتٍ يُحَرِّمْنَ» . ثُمَّ نُسِخْنَ بِخَمْسٍ مَعْلُومَاتٍ فَتُوُفِّيَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهِيَ فِيمَا يُقْرَأُ مِنَ الْقُرْآنِ. رَوَاهُ مُسلم

3167. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कुरान में यह हुक्म नाज़िल हुआ था के दस मर्तबा दूध पीने से हुरमत वाकेअ होती है, फिर वह हुक्म पांच मर्तबा पीने की क़ैद के साथ मंसूख कर दिया गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने जिस वक़्त वफात पाई तो इस वक़्त तक (पांच मर्तबा दूध पीने वाली आयत) कुरान में पढ़ी जाती थी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (24 / 1452)، (3597)

٣١٦٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهَا: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ عَلَيْهَا وَعِنْدَهَا رَجُلٌ فَكَأَنَّهُ كَرِهَ ذَلِكَ فَقَالَت: إِنَّه أخي فَقَالَ: «انظرن من إخوانكن؟ فَإِنَّمَا الرضَاعَة من المجاعة»

3168. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ मेरे पास तशरीफ़ लाए तो मेरे पास एक आदमी था, गोया आप ने इसे नापसंद फ़रमाया, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, यह तो मेरा भाई है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “देखो के तुम्हारे भाई कौन हैं, रिज़ाअत तो सिर्फ वह दूध है जिसे भूख दूर करने के लिए पिया गया हो”, (बच्चे को सुगर सुनी की उमर में भूख लगी हो और वह किसी औरत का दूध पि ले) | (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5102) و مسلم (22 / 1455)، (3606)

٣١٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ: أَنَّهُ تَزَوَّجَ ابْنَةً لِأَبِي إِهَابِ بْنِ عَزِيزٍ فَأَتَتِ امْرَأَةٌ فَقَالَتْ: قَدْ أَرْضَعْتُ عُقْبَةَ وَالَّتِي تَزَوَّجَ بِهَا فَقَالَ لَهَا عُقْبَةُ: مَا أَعْلَمُ أَنَّكِ قَدْ أَرْضَعْتِنِي وَلَا أَخْبَرْتِنِي فَأَرْسَلَ إِلَى آلِ أَبِي إِهَابٍ فَسَأَلَهُمْ فَقَالُوا: مَا عَلِمْنَا أَرْضَعْتَ صَاحِبَتُنَا فَرَكِبَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالْمَدِينَةِ فَسَأَلَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَيْفَ وَقَدْ قِيلَ؟» فَفَارَقَهَا عُقْبَةُ وَنَكَحَتْ زوجا غَيره. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3169. उक्बा बिन हारिस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने अबू इहाब बिन अज़ीज़ की बेटी से शादी कर ली तो एक औरत आई, उस ने कहा मैंने उक्बा और उसकी बीवी को दूध पिलाया है, (यानी यह आपस में रिज़ाई बहन भाई हैं) उक्बा ने इस औरत से कहा: मुझे तो मालुम नहीं के तुमने मुझे दूध पिलाया है और ना ही तुमने मुझे बताया है, उन्होंने अबू इहाब के घरवालो के पास किसी आदमी को भेजा तो उस ने उन से पूछा तो

उन्होंने कहा: हमे, तो मालुम नहीं है इस ने हमारी इस लड़की को दूध पिलाया है, वह मदीना में नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और आप ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “(तुम उस के साथ) किस तरह (ताल्लुक व शब काइम कर सकते हो) हालाँकि यह कह दिया गया (के तुम उस के रिज़ाई भाई हो)”| उक्बा रदियल्लाहु अन्हु ने इसे अलग कर दिया और उस ने उन के अलावा किसी और से निकाह किया| (बुखारी)

رواه البخاری (2640)

٣١٧٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ [ص:٩٤ حُنَيْنٍ بَعَثَ جَيْشًا إِلَى أَوْطَاسٍ فَلَقُوا عَدُوًّا فَقَاتَلُوهُمْ فَظَهَرُوا عَلَيْهِمْ وَأَصَابُوا لَهُمْ سَبَايَا فَكَأَنَّ نَاسًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَحَرَّجُوا مِنْ غِشْيَانِهِنَّ مِنْ أَجْلِ أَزْوَاجِهِنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى فِي ذَلِكَ (وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاء إِلَّا مَا ملكت أَيْمَانكُم)»» أَيْ فَهُنَّ لَهُمْ حَلَالٌ إِذَا انْقَضَتْ عِدَّتُهُنَّ. رَوَاهُ مُسلم

3170. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने हुनैन के दिन अवतास की तरफ एक लश्कर रवाना किया तो उनका दुश्मन से आमना सामना हुआ, उन्होंने इनसे किताल किया और वह इन पर ग़ालिब आ गए और उन्होंने कुछ औरतें गिरफ्तार कर ली, नबी ﷺ के बाज़ सहाबा ने उन लोंदियो से उन के मुशरिक खाविंदो के मौजूद होने की वजह से, जिमाअ करने में हरज महसूस किया तो अल्लाह तआला ने उस के मुतल्लिक यह आयत नाज़िल फरमाई: “और शादी शुदा औरते (तुम पर हराम की गई है) मगर तुम्हारी लोंदिया”, यानी जब उनकी इद्दत्त मुकम्मल हो जाए तो फिर वह तुम्हारे लिए हलाल हैं| (मुस्लिम)

رواه مسلم (33 / 1456)، (3608)

मुहर्रमात का बयान • بَاب الْمُحرمَات

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٣١٧١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى أَنْ تُنْكَحَ الْمَرْأَةُ عَلَى عَمَّتِهَا أَوِ الْعَمَّةُ عَلَى بِنْتِ أَخِيهَا وَالْمَرْأَةُ عَلَى خَالَتِهَا أَوِ الْخَالَةُ عَلَى بِنْتِ أُخْتِهَا لَا تُنْكَحُ الصُّغْرَى عَلَى الْكُبْرَى وَلَا الْكُبْرَى عَلَى الصُّغْرَى. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ والدارمي وَالنَّسَائِيّ وَرِوَايَته إِلَى قَوْله: بنت أُخْتهَا

3171. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने मना फ़रमाया के ऐसी औरत से निकाह किया जाए जिस की फूफी उस के निकाह में पहले से हो या फूफी से उसकी भतीजी के होते हुए निकाह न किया जाए, इसी तरह खाला और भांजी किया या भांजी और खाला को एक साथ एक मर्द के निकाह में जमा न किया

जाए निज़ (रिश्ते में) छोटी (मसलन भतीजी भांजी) का बड़ी पर और और बड़ी का छोटी पर निकाह करने से मना फ़रमाया| तिरमिज़ी, अबू दावुद, दारमी नसई, और उनकी रिवायत (بنت أُخْتِهَا) तक है| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (1126 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (2065) و الدارمی (2 / 136 ح 2184) و النسائی (6 / 98 ح 3298 مختصرًا و عنده :'' بنت اخیها '' / مذکر)

٣١٧٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: مَرَّ بِي خَالِي أَبُو بردة بن دِينَار وَمَعَهُ لِوَاءٌ فَقُلْتُ: أَيْنَ تَذْهَبُ؟ قَالَ: بَعَثَنِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى رَجُلٍ تَزَوَّجَ امْرَأَةَ أَبِيهِ آتِيهِ بِرَأْسِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

3172. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मेरे मामू अबू बुरदः बिन नियार रदियल्लाहु अन्हु झंडा उठाए मेरे पास से गुज़रे तो मैंने कहा: आप कहाँ जा रहे हैं? उन्होंने कहा: मुझे नबी ﷺ ने एक आदमी की तरफ भेजा है, जिस ने अपने बाप की बीवी से शादी की है, ताकि में उस का सर आप की खिदमत में पेश करू| इसे तिरमिज़ी और अबू दावुद ने रिवायत किया है, अबू दावुद, नसई, इब्ने माजा और दारमी की रिवायत में है की आप ﷺ ने मुझे हुक्म फ़रमाया है के में उसे क़त्ल कर दूँ और उस का माल ले लूँ और इस रिवायत में " मेरे मामू" के बजाए " मेरे चचा" का लफ्ज़ है| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (1362 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (4456 و الروایة الثانیة له : 4458) و النسائی (6 / 110 ح 3334) و ابن ماجه (2607) و الدارمی (2 / 153 ح 2245)

٣١٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا [ص:٩٤ يُحَرِّمُ مِنَ الرِّضَاعِ إِلَّا مَا فَتَقَ الْأَمْعَاءَ فِي الثَّدْيِ وَكَانَ قبل الْفِطَام» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3173. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "वो रिज़ाअत बाईस हुरमत है, जो बराएरास्त छातियों से दूध पि कर (भूख मिटा कर) अंतड़ियाँ खोल दे और यह (रिज़ाअत) दूध छुड़ाने से पहले हो"| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (1152 وقال : حسن صحیح)

٣١٧٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ حَجَّاجِ بْنِ حَجَّاجٍ الْأَسْلَمِيِّ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا يُذْهِبُ عَنِّي مَذَمَّةَ الرِّضَاعِ؟ فَقَالَ: " غُرَّةٌ: عَبْدٌ أَوْ أَمَةٌ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ

3174. हज्जाज बिन हज्जाज अल सुम्मी अपने वालिद से रिवायत करते हैं की उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझ से किस तरह हक़ ए रिज़ाअत अदा हो सकता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "रिज़ाई माँ को गुलाम या

लौंडी देने से”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (1153 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (2064) و النسائى (6 / 108 ح 3331) و الدارمى (2 / 157 ح 2259)

٣١٧٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي الطُّفَيْلِ الْغَنَوِيِّ قَالَ: كُنْتُ جَالِسًا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ أَقْبَلَتِ امْرَأَةٌ فَبَسَطَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رِدَاءَهُ حَتَّى قَعَدَتْ عَلَيْهِ فَلَمَّا ذَهَبَتْ قِيلَ هَذِهِ أَرْضَعَتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

3175. अबू तुफैल गन्विय्यी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर था के एक औरत आई, नबी ﷺ ने अपनी चादर बिछाई हत्ता के वह उस पर बैठ गई, जब वह चली गई तो बताया गया के इस खातून ने नबी ﷺ को दूध पिलाया था (आप ﷺ की रिज़ाई वालिदा है)| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5144) * عمارة بن ثوبان : مستور و جعفر بن يحيى مثله

٣١٧٦ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ غيلَان بن سَلمَة الثَّقَفِيَّ أَسْلَمَ وَلَهُ عَشْرُ نِسْوَةٍ فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَأَسْلَمْنَ مَعَهُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَمْسِكْ أَرْبَعًا وَفَارِقْ سَائِرَهُنَّ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

3176. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के गिलान बिन सलमा सक्फी रदियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम कबूल किया और उनकी दौरे जाहिलियत में दस बीवियां थी, वह भी उन के साथ ही मुसलमान हो गई, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “चार रख लो और बाकी फारिग़ कर दो”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (2 / 44 ح 5027) و الترمذى (1128) و ابن ماجه ((1953) * الزهرى مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة

٣١٧٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ نَوْفَلِ بْنِ مُعَاوِيَةَ قَالَ: أَسْلَمْتُ وَتَحْتِي خَمْسُ نِسْوَةٍ فَسَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «فَارِقْ وَاحِدَةً وَأَمْسِكْ أَرْبَعًا» فَعَمَدْتُ إِلَى أَقْدَمِهِنَّ صُحْبَةً عِنْدِي: عَاقِرٍ مُنْذُ سِتِّينَ سنة ففارقتها. رَوَاهُ فِي شرح السّنة

3177. नौफ़ल बिन मुआविया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने इस्लाम कबूल किया तो इस वक़्त मेरी पांच बीवियां थी, मैंने नबी ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “एक को छोड़ दो और चार रख लो”, मैंने उनमें से अपने सबसे पहली बीवी को जो बांझ थी और साठ साल से मेरी रफ़ीक हयात थी खुद से जुदा कर दिया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (9 / 9091 ح 22899) [و الشافعى 2 / 351 : اخبرنا بعض اصحابنا عن ابى الزناد الخ و من طريقه البيهقى (7 / 184) و هذا البعض مجهول]

٣١٧٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الضَّحَّاكِ بْنِ فَيْرُوزٍ الدَّيْلَمِيِّ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي أَسْلَمْتُ وتحتي أختان قَالَ: «اختر أيتها شِئْتَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

3178. दहाक बिन फयरोज़ दय्ल्मी अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैंने इस्लाम कबूल कर लिया है और दो बहने मेरे निकाह में है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इन दोनों में से जिसे चाहो इख़्तियार कर लो (दूसरी छोड़ दो)‘‘| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1130) و ابوداؤد (2243) و ابن ماجه (1951)

٣١٧٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: أَسْلَمَتِ امْرَأَةٌ فَتَزَوَّجَتْ فَجَاءَ زَوْجُهَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي قَدْ أَسْلَمْتُ وَعَلِمَتْ بِإِسْلَامِي فَانْتَزَعَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ زَوْجِهَا الْآخَرِ وَرَدَّهَا إِلَى زَوْجِهَا الْأَوَّلِ وَفِي رِوَايَةٍ: أَنَّهُ قَالَ: إِنَّهَا أَسْلَمَتْ مَعِي فَرَدَّهَا عَلَيْهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3179. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक औरत ने इस्लाम कबूल किया और उस ने शादी कर ली, इतने में उस का (पहला) खाविंद नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! में इस्लाम कबूल कर चूका हूँ और इस (औरत) को मेरे इस्लाम कबूल करने का इल्म है, रसूलुल्लाह ﷺ ने इस (औरत) को उस के दूसरे खाविंद से लेकर उस के पहले खाविंद को वापस कर दिया, और एक रिवायत में है की उस ने अर्ज़ किया, इस (औरत) ने मेरे साथ ही इस्लाम कबूल किया है, आप ﷺ ने इस औरत को उस के हवाले कर दिया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (22382239) * سماک بن حرب : ضعیف الحدیث عن عکرمة ، صحیح الحدیث عن غیره ، اذا حدث قبل الاختلاط کما حققته فی رسالة خاصة و الحمدلله

٣١٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَرُوِيَ فِي «شَرْحِ السُّنَّةِ» : أَنَّ جَمَاعَةً مِنَ النِّسَاءِ رَدَّهُنَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالنِّكَاحِ الأول على أَزْوَاجهنَّ عِنْد اجْتِمَاع الإسلاميين بَعْدَ اخْتِلَافِ الدِّينِ وَالدَّارِ مِنْهُنَّ بِنْتُ الْوَلِيدِ بْنِ مُغِيرَةَ كَانَتْ تَحْتَ صَفْوَانَ بْنِ أُمَيَّةَ فَأَسْلَمَتْ يَوْمَ الْفَتْحِ وَهَرَبَ زَوْجُهَا مِنَ الْإِسْلَامِ فبعث النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَيْهِ ابْنَ عَمِّهِ وَهْبَ بْنَ عُمَيْرٍ بِرِدَاءِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَانًا لِصَفْوَانَ فَلَمَّا قَدِمَ جَعَلَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسْيِيرَ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ حَتَّى أَسْلَمَ فَاسْتَقَرَّتْ عِنْدَهُ وَأَسْلَمَتْ أَمُّ حَكِيمٍ بِنْتُ الْحَارِثِ بْنِ هِشَامٍ امْرَأَةُ عِكْرِمَةَ بْنِ أَبِي جَهْلٍ يَوْمَ الْفَتْحِ بِمَكَّةَ وَهَرَبَ زَوْجُهَا مِنَ الْإِسْلَامِ حَتَّى قَدِمَ الْيَمَنَ فَارْتَحَلَتْ أَمُّ حَكِيمٍ حَتَّى قَدِمَتْ عَلَيْهِ الْيَمَنَ فَدَعَتْهُ إِلَى الْإِسْلَامِ فَأَسْلَمَ فَثَبَتَا عَلَى نِكَاحِهِمَا. رَوَاهُ مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شهَاب مُرْسلا

3180. शरह अल सुनना में मरवी है के नबी ﷺ ने कितने ही औरतो को पहले निकाह एक ही उन के खाविंदो की तरफ लौटा दीया जब उन्होंने इस्लाम कबूल कर लिया अगरचे एक वक़्त तक उनका दीन और रहन सहन एक दूसरे से अलग रहा, उनमें वलीद बिन मुगिरा की बेटी हैं जो के सफवान बिन उमय्य के निकाह में थी, फतह मक्का के रोज़ वह तो मुसलमान हो गई जबकि उनका खाविंद इस्लाम कबूल करने से भाग गया, आप ﷺ ने उस के

चचाज़ाद वहब बिन उमैर को सफ़वान की अमान के लिए अपनी चादर दे कर भेजा, जब वह आया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे चार माह घुमने फीरने की मुहलत अता की हत्ता के उस ने इस्लाम कबूल कर लिया तो वह (वलीद बिन मुगिरा की बेटी) उस के निकाह में रही और (इसी तरह) इकरमा बिन अबी जहल की बीवी उम्म हकिम बिन्ते हारिस बिन हिश्शाम ने फतह मक्का के रोज़ इस्लाम कबूल कर लिया जबकि उस का खाविंद इस्लाम से भाग कर यमन चला गया तो उम्म हकिम ने भी कुच किया हत्ता कि उस के पास यमन पहुँच गई और इसे इस्लाम की दावत पेश की तो उस ने इस्लाम कबूल कर लिया और दोनों का निकाह बरक़रार रहा| इमाम मालिक ने इब्ने शैबा से मुरसल रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، مالک فی الموطا (2 / 543545 ح 1181) و البغوی فی شرح السنة (9 / 96 بعد ح 2290 بدون سند) * سنده ضعيف لان الزهری قال انه بلغه و حديث مسلم (2313) يغنی عنه

بَاب الْمُحرمَات • मुहर्रमात का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣١٨١ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: حُرِّمَ مِنَ النَّسَبِ سَبْعٌ وَمِنَ الصِّهْرِ [ص:٩٥ سَبْعٌ ثُمَّ قَرَأَ: (حُرِّمَتْ عَلَيْكُم أُمَّهَاتكُم)»» الْآيَة. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3181. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, सात रिश्ते नसब की वजह से हराम है और सात निकाह की वजह से फिर उन्होंने यह आयत तिलावत फरमाई: "तुम पर तुम्हारी माएँ हराम कर दी गई है.----"| (बुखारी)

رواه البخاری (5105)

٣١٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَيُّمَا رَجُلٍ نَكَحَ امْرَأَةً فَدَخَلَ بِهَا فَلَا يَحِلُّ لَهُ نِكَاحُ ابْنَتِهَا وَإِنْ لَمْ يَدْخُلْ بِهَا فَلْيَنْكِحِ ابْنَتَهَا وَأَيُّمَا رَجُلٍ نَكَحَ امْرَأَةً فَلَا يَحِلُّ لَهُ أَنْ يَنْكِحَ أُمَّهَا دَخَلَ أَوْ لَمْ يَدْخُلْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ لَا يَصِحُّ مِنْ قِبَلِ إِسْنَادِهِ إِنَّمَا رَوَاهُ ابْنُ لَهِيعَةَ وَالْمُثَنَّى بْنُ الصَّبَّاحِ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ وَهُمَا يُضَعَّفَانِ فِي الْحَدِيثِ

3182. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस आदमी ने किसी औरत से निकाह किया और उस से सोहबत की तो फिर उस के लिए इस औरत की बेटी से निकाह करना हलाल नहीं, और अगर उस ने उस के साथ ताल्लुक ए जन व शव काइम नहीं किया तो फिर वह उसकी बेटी से निकाह कर सकता है, और जिस आदमी ने किसी औरत से निकाह किया तो फिर अब उस के लिए

उसकी माँ से निकाह करना हलाल नहीं ख्वाह उस ने उस से ताल्लुक ए जन व शव काइम किया हो या न किया हो"| इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यह हदीस इसनाद के हवाले से सहीह नहीं, इब्ने लहीअ और मुषनि बिन सबाह ने इसे अम्र बिन शुऐब से रिवायत किया है, और इन दोनों को हदीस में जईफ करार दिया गया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1117) * ابن لهيعة مدلس و عنعن و المثنى بن الصباح : ضعيف

मुबाशिरत का बयान • بَاب الْمُبَاشَرَة

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٣١٨٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: كَانَتِ الْيَهُودُ تَقُولُ: إِذَا أَتَى الرَّجُلُ امْرَأَتَهُ مِنْ دُبُرِهَا فِي قُبُلِهَا كَانَ الْوَلَدُ أَحول فَنزلت: (نساوكم حرث لكم فَأتوا حَرْثَكُمْ أَنَّى شِئْتُم)

3183. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, यहूद कहा करते थे जब आदमी अपने बीवी से उसकी पिछली जानिब से उसकी इन्दाम निहानी में जिमाअ करे तो बच्चा भेंगा पैदा होता है, उस पर यह आयत नाज़िल हुई: "तुम्हारी औरते तुम्हारी खेती है तुम जैसे चाहो अपने खेती को आओ"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری ((4528) و مسلم (117 / 1435)، (3535)

٣١٨٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعنهُ كُنَّا نَعْزِلُ وَالْقُرْآنُ يَنْزِلُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَزَادَ مُسْلِمٌ: فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلم ينهنا

3184. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम अज़िल किया करते थे जबकि कुरान नाज़िल हो रहा था| बुखारी, मुस्लिम, और इमाम मुस्लिम ने मज़ीद यह भी रिवायत किया है के यह बात नबी ﷺ तक पहुंची तो आप ने हमें मना नहीं फरमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

رواه مسلم (138 / 1440)، (3561)

٣١٨٥ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: إِنَّ رَجُلًا أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: " إِن لي جَارِيَةً هِيَ خَادِمَتُنَا وَأَنَا أَطُوفُ عَلَيْهَا وَأَكْرَهُ أَنْ تَحْمِلَ فَقَالَ: «اعْزِلْ عَنْهَا إِنْ شِئْتَ فَإِنَّهُ سَيَأْتِيهَا مَا قُدِّرَ لَهَا» . فَلَبِثَ الرَّجُلُ ثمَّ أَتَاهُ فَقَالَ: إِن الْجَارِيَة قد حبلت فَقَالَ: «قَدْ أَخْبَرْتُكَ أَنَّهُ سَيَأْتِيهَا مَا قُدِّرَ لَهَا» . رَوَاهُ مُسلم

3185. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने अर्ज़ किया, मेरी एक लौंडी है वह हमारी खादिम है और मैं उस से जिमाअ करता हूँ जबकि मैं नापसंद करता हूँ कि वह हामिला हो, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम चाहो तो उस से अज़िल करो, क्योंकि जो उस के मुकद्दर में है वह इसे मिल कर रहेगा”, कुछ मुद्दत गुज़री तो वह आदमी फिर आप की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने अर्ज़ किया, लौंडी तो हामिला हो गई है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने तुम्हें बता दिया था के उस के मुकद्दर में जो कुछ है के इसे मिल कर रहेगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (139 / 1439)، (3556)

٣١٨٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَزْوَةَ بَنِي الْمُصْطَلِقِ فَأَصَبْنَا سَبْيًا مِنْ سَبْيِ الْعَرَبِ فاشتهينا النِّسَاء واشتدت عَلَيْنَا الْعُزْبَةُ وَأَحْبَبْنَا الْعَزْلَ فَأَرَدْنَا أَنْ نَعْزِلَ وَقُلْنَا: نَعْزِلُ وَرَسُولُ اللَّهِ [ص:٩٥ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ أَظْهُرِنَا قَبْلَ أَنْ نَسْأَلَهُ؟ فَسَأَلْنَاهُ عَن ذَلِك فَقَالَ: «مَا عَلَيْكُمْ أَلَّا تَفْعَلُوا مَا مِنْ نَسَمَةٍ كَائِنَةٍ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ إِلَّا وَهِيَ كَائِنَةٌ»

3186. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम गज़वा ए बनी मुस्तलक मैं रसूलुल्लाह ﷺ की साथ में रवाना हुए तो कुछ अरब लोंदिया हमारे हाथ लगी, हमें औरतो की रगबत हुई और औरतो से अलग रहना हमारे लिए दुश्वार हो गया और हमने अज़िल करना पसंद किया, हमने अज़िल करने का इरादा किया और हमने कहा, हम रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किए बगैर अज़िल करते हैं जबकि रसूलुल्लाह ﷺ हम में मौजूद है, हमने उस के मुतल्लिक आप से मसअला दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या हरज है! अगर तुम ऐसे न करो? क्योंकि जिस जान ने कियामत तक आना है उस ने आना ही है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4138) و مسلم (125 / 1438)، (3544)

٣١٨٧ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْعَزْلِ فَقَالَ: «مَا مِنْ كُلِّ الْمَاءِ يَكُونُ الْوَلَدُ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ خَلْقَ شَيْءٍ لَمْ يَمْنَعْهُ شَيْءٌ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

3187. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से अज़िल के मुतल्लिक दरियाफ्त किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “हर पानी (मनी) से बच्चा नहीं होता, और जब अल्लाह किसी चीज़ की तखलीक का इरादा फरमाता है तो फिर कोई चीज़ इसे रोक नहीं सकती”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (133 / 1438)، (3554)

٣١٨٨ - (صَحِيح) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ: أَنَّ رَجُلًا جَاءَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنِّي أعزل عَن امْرَأَتي.

فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «لم تفعل ذَلِك؟» فَقَالَ الرَّجُلُ: أَشْفِقُ عَلَى وَلَدِهَا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ كَانَ ذَلِكَ ضاراً ضرّ فَارس وَالروم» . رَوَاهُ مُسلم

3188. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ, उस ने अर्ज़ किया, मैं अपने बीवी से अज़िल करता हूँ, रसूलुल्लाह ﷺ ने उस से पूछा: “तुम यह क्यों करते हो?” इस आदमी ने अर्ज़ किया, मुझे उस के बच्चे (हमल या शिरख्वार) के मुतल्लिक अंदेशा है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर यह जिमाअ मुज़िर होता तो यह फारसियो और रुमियो के लिए मुज़िर होता”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (143 / 1443)، (3567)

٣١٨٩ - (صَحِيح) وَعَن جذامة بِنْتِ وَهْبٍ قَالَتْ: حَضَرْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أُنَاسٍ وَهُوَ يَقُولُ: «لقد هَمَمْت أَن أَنْهَى عَنِ الْغِيلَةِ فَنَظَرْتُ فِي الرُّومِ وَفَارِسَ فَإِذَا هُمْ يُغِيلُونَ أَوْلَادَهُمْ فَلَا يَضُرُّ أَوْلَادَهُمْ ذَلِكَ شَيْئًا» . ثُمَّ سَأَلُوهُ عَنِ الْعَزْلِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " ذَلِكَ الوأد الْخَفي وَهِي (وَإِذا الموؤودة سُئِلت)»» رَوَاهُ مُسلم

3189. जुज़ामत बिन्ते वहब रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैं कुछ लोगों के साथ रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई इस वक़्त आप ﷺ फरमा रहे थे, “मैंने “ गीयलत” (हालते हमल में दूध पिलाने) ने मना करने का इरादा किया, फिर मैंने रुमियो और फारसियो को देखा के वह अपने औलाद को हालते हमल में दूध पिलाते रहते है, और यह उनकी औलाद को कुछ भी नुकसान नहीं पहुंचाती”, फिर उन्होंने आप से अज़िल के मुतल्लिक दरियाफ्त किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये (अज़िल करना) इंसान को जिंदा दरगोर करना है और यह (अज़िल करना) अल्लाह के इस फरमान: “जब जिंदा दरगोर की गई बच्ची से पूछा जाएगा”, के ज़ुमरे में आता है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (141 / 1442)، (3565)

٣١٩٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:»» إِنَّ أَعْظَمَ الْأَمَانَةِ عِنْدَ اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " وَفِي رِوَايَةٍ: إِنَّ مِنْ أَشَرِّ النَّاسِ عِنْدَ اللَّهِ مَنْزِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ الرَّجُلُ يُفْضِي إِلَى امْرَأَتِهِ وَتُفْضِي إِلَيْهِ ثمَّ ينشر سرها ". رَوَاهُ مُسلم

3190. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत अल्लाह के यहाँ सबसे बड़ी अमानत” और एक दूसरी रिवायत में है: “रोज़ ए कियामत अल्लाह के नज़दीक इस आदमी का मक़ाम सबसे बुरा होगा जो अपने अहलिया के पास जाता है और वह उस के पास जाती है, फिर वह आदमी इस (अहलिया) के राज़ इफ्शा कर देता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (124 / 1437)، (3543)

मुबाशिरत का बयान • بَاب الْمُبَاشَرَة

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٣١٩١ - (حسن) عَن ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: أوحِيَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: (نساوكم حرث لكم فَأتوا حَرْثكُمْ)»» الْآيَةَ: «أَقْبِلْ وَأَدْبِرْ وَاتَّقِ الدُّبُرَ وَالْحَيْضَةَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

3191. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ वही की गई: "तुम्हारी औरते तुम्हारी खेती है, तुम अपने खेती को आओ", "सामने से आओ या पिछली तरफ से आओ लेकिन पीठ में (दुबर) और हालत ए हैज़ में जिमाअ करने से बचो"| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (2980) و ابن ماجہ (1925)

٣١٩٢ - (صَحِيح) وَعَنْ خُزَيْمَةَ بْنِ ثَابِتٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ لَا يستحيي مِنَ الْحَقِّ لَا تَأْتُوا النِّسَاءَ فِي أَدْبَارِهِنَّ» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه. والدارمي

3192. खुजैमा बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "बेशक अल्लाह बयाने हक़ से नहीं शरमाता, तुम औरतो से उनकी पीठ में मुबाशरत न करो"| (सहीह)

صحیح ، رواہ احمد (5 / 213 ح 22194) و الترمذی (1164 ، وقال : حسن) و ابن ماجہ (1924) و الدارمی (2 / 145 ح 2219)

٣١٩٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَلْعُونٌ مَنْ أَتَى امْرَأَتَهُ فِي دُبُرِهَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ

3193. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स अपने अहलिया के पास मकअद में आए वह मलउन है"| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ احمد (2 / 444 ح 9731) و ابوداؤد (2162)

٣١٩٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الَّذِي يَأْتِي امْرَأَتَهُ فِي دُبُرِهَا لَا يَنْظُرُ اللَّهُ إِلَيْهِ» . رَوَاهُ فِي شرح السّنة

3194. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स अपने अहलिया से

उसकी दुबुर से आता है तो अल्लाह उसकी तरफ नज़र (रहमत) नहीं फरमाएगा"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البغوی فی شرح السنة (9 / 107 ح 2297) [و ابن ماجه (1923) و ابن حبان (الموارد : 1302)] وھو حدیث صحیح بالشواھد

٣١٩٥ - (حسن) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَنْظُرُ اللَّهُ إِلَى رَجُلٍ أَتَى رَجُلًا أَوِ امْرَأَةً فِي الدبر» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3195. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह इस शख़्स की तरफ नज़र (रहमत) नहीं फरमाएगा जो किसी मर्द या किसी औरत से लुटाअत करता है"| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1165 وقال : حسن غریب)

٣١٩٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيدَ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ سِرًّا فَإِنَّ الْغَيْلَ يُدْرِكُ الْفَارِسَ فيدعثره عَن فرسه» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3196. अस्मा बिन्ते यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "अपने औलाद को पोशीदा तौर पर क़त्ल न करो क्योंकि " हामिला औरत का दूध अच्छा घोड़ सवार नहीं बनने देता और इसे उस के घोड़े से पछाड़ देता है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3881) [و ابن ماجه (2012) و صححه ابن حبان (الموارد : 1304)] * مھاجر بن ابی مسلم الانصاری مجھول الحال : وثقه ابن حبان وحده

بَاب الْمُبَاشرَة • मुबाशिरत का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣١٩٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَن يعْزل عَن الْحرَّة إِلَّا بِإِذْنِهَا. رَوَاهُ ابْن مَاجَه

3197. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने आज़ाद औरत से उसकी इजाज़त के बगैर अज़िल करने से मना फ़रमाया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (1928) * وقال البوصیری :'' ھذا اسناد ضعیف لضعف ابن لھیعة '' و الزھری مدلس و عنعن : ان صح السند الیه

गुज़िश्ता बाब के बारे में बयान • بَاب

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٣١٩٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَهَا فِي بَرِيرَةَ: «خُذِيهَا فَأَعْتِقِيهَا» . وَكَانَ زَوْجُهَا عَبْدًا فَخَيَّرَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاخْتَارَتْ نَفسهَا وَلَو كَانَ حرا لم يخيرها

3198. उरवा, आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने बरिरा रदियल्लाहु अन्हु के बारे में उन्हें फ़रमाया: “इसे (इस के मालिको से) लेकर आज़ाद कर दो”, और उस का खाविंद गुलाम था लिहाज़ा रसूलुल्लाह ﷺ ने (निकाह बरक़रार रखने या फस्ख करने का) इसे इख़्तियार दिया तो उस ने अपने निकाह को फस्ख कर दिया और अगर वह (बरैरा रदियल्लाहु अन्हु का खाविंद) आज़ाद होता तो आप ﷺ उस को इख़्तियार न देते| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2563) و مسلم (8 / 1504)، (3779)

٣١٩٩ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ زَوْجُ بَرِيرَةَ عبدا أسود يُقَالُ لَهُ مُغِيثٌ كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَيْهِ يَطُوفُ خلفهَا فِي سِكَكَ الْمَدِينَة يبكي وَدُمُوعُهُ تَسِيلُ عَلَى لِحْيَتِهِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلْعَبَّاس: «يَا عَبَّاسُ أَلَا تَعْجَبُ مِنْ حُبِّ مُغِيثٍ بَرِيرَةَ؟ وَمِنْ بُغْضِ بَرِيرَة مغيثاً؟» فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ راجعته» فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ تَأْمُرُنِي؟ قَالَ: «إِنَّمَا أَشْفَعُ» قَالَتْ: لَا حَاجَةَ لِي فِيهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3199. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, बरिरा रदियल्लाहु अन्हु के खाविंद सियाह फाम गुलाम थे उन्हें मुगैस के नाम से याद किया जाता था, अब भी मुझे ऐसा लगता है के में उसे मदीना की गलियों में इस (बरैरा) के पीछे पीछे चक्कर काटता देख रहा हूँ, उस के आंसू उसकी दाढ़ी पर रवाह है, (ये सूरते हाल देख कर) नबी ﷺ ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: “अब्बास! क्या तुम्हें मुगैस की बरिरा से मुहब्बत और बरिरा की मुगैस से नफ़रत से ताज्जुब नहीं हो रहा ?” नबी ﷺ ने (बरैरा से) फ़रमाया: “अगर तुम उस के निकाह में रहने का दोबारा फैसला कर लो ?” उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप मुझे हुक्म फरमा रहे हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: में तो महज़ सिफारिश करता हूँ” उस ने कहा मुझे उस में कोई रगबत नहीं| (बुखारी)

رواه البخارى (5283)

بَاب • गुज़िश्ता बाब के बारे में बयान
الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٢٠٠ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَائِشَةَ: أَنَّهَا أَرَادَتْ أَنْ تَعْتِقَ مَمْلُوكَيْنِ لَهَا زَوْجٌ فَسَأَلَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَأَمَرَهَا أَنْ تَبْدَأَ بِالرَّجُلِ قَبْلَ الْمَرْأَةِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3200. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के उन्होंने अपने दो गुलाम जो के मियां बीवी थे, आज़ाद करने का इरादा किया और उन्होंने नबी ﷺ से दरियाफ्त किया, आप ﷺ ने उन्हें हुक्म फ़रमाया के मर्द को औरत से पहले आज़ाद करो| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2237) و النسائی (6 / 161 ح 3476)

٣٢٠١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهَا: أَنْ بَرِيرَةَ عَتَقَتْ وَهِيَ عِنْدَ مُغِيثٍ فَخَيَّرَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ لَهَا: «إِنْ قَرِبَكِ فَلَا خِيَارَ لَكِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ»» وَهَذَا الْبَابُ خَالٍ عَنِ الْفَصْلِ الثَّالِثِ

3201. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के बरिरा रदियल्लाहु अन्हु आज़ाद की गई तो वह इस वक़्त मुगैस रदियल्लाहु अन्हु के निकाह में थी, रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे इख़्तियार दिया और इसे फ़रमाया: "अगर उस ने तुम से आज़ादी के दोरान जिमाअ कर लिया तो फिर तेरा इख़्तियार ख़तम हो जाएगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2236) * محمد بن اسحاق بن یسار مدلس و عنعن وله متابعة مردودة [و فی سند المتابعة محمد بن ابراهیم الشامی : کذاب] و انظر فتح الباری (9 / 413) لتحقیق المسئلة

بَاب الصَدَاق • महर का बयान
الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٣٢٠٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَاءَتْهُ امْرَأَةٌ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي وَهَبْتُ نَفْسِي لَكَ فَقَامَتْ طَوِيلًا فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ زَوِّجْنِيهَا إِنْ لَمْ تَكُنْ لَكَ فِيهَا حَاجَةٌ فَقَالَ: «هَلْ عِنْدَكَ مِنْ شَيْءٍ تُصْدِقُهَا؟» قَالَ: مَا عِنْدِي إِلَّا إِزَارِي هَذَا. قَالَ: «فَالْتَمِسْ وَلَوْ خَاتَمًا مِنْ حَدِيدٍ» فَالْتَمَسَ فَلَمْ يَجِدْ شَيْئًا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلْ مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ شَيْءٌ» قَالَ: نَعَمْ سُورَةُ كَذَا وَسُورَةُ كَذَا فَقَالَ: «زَوَّجْتُكَهَا بِمَا مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ» . وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ: «انْطَلِقْ فَقَدْ زَوَّجْتُكَهَا فَعَلِّمْهَا مِنَ الْقُرْآنِ»

3202. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक औरत रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई तो उस ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैंने अपने आप को आप ﷺ के लिए हिब्बा किया, वह देर तक खड़ी रही, तो एक आदमी खड़ा हुआ, उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अगर आप उस में रगबत नहीं रखते तो फिर उस से मेरी शादी कर दे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या उसे महर देने के लिए तुम्हारे पास कुछ है?” उस ने अर्ज़ किया, मेरे पास तो सिर्फ मेरी यह चादर ही है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तलाश करो ख्वाह लोहे की एक अंगूठी ही हो”, उस ने तलाश किया लेकिन उस ने कुछ न पाया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या तुम्हें कुरान का कुछ हिस्सा याद है?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! फलां फलां सूरत आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने कुरान के इस हिस्से के ज़रिए जो तुम्हें याद है तुम्हारी उस से शादी कर दी”| एक दूसरी रिवायत में है: “जाओ मैंने तुम्हारी उस से शादी कर दी इसे कुरान (का वह हिस्सा जो तुम्हें याद है) सिखा दो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5135) و مسلم (77 / 1425)، (3487)

٣٢٠٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَلَمَةَ قَالَ: سَأَلْتُ عَائِشَةَ: كَمْ كَانَ صَدَاقُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَت: كَانَ صداقه لأزواجه اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أُوقِيَّةً وَنَشٌّ قَالَتْ: أَتَدْرِي مَا النَّشُّ؟ قُلْتُ: لَا قَالَتْ: نِصْفُ أُوقِيَّةٍ فَتِلْكَ خَمْسُمِائَةِ دِرْهَمٍ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ. وَنَشٌّ بِالرَّفْعِ فِي شَرْحِ السّنة وَفِي جَمِيع الْأُصُول

3203. अबू सलमा बयान करते हैं, मैंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से दरियाफ्त किया नबी ﷺ के हक़ महर की मिकदार कितनी थी, उन्होंने ने फ़रमाया: आप ﷺ की अज़वाज ए मूतहरात के हक़ महर की मिकदार बारह उकिय्यह और एक नश थी, फिर उन्होंने ने फ़रमाया: क्या तुम जानते हो के “ नश” क्या है? मैंने कहा नहीं, उन्होंने ने फ़रमाया: आधा उकिय्यह और यह (बाराह उकिय्यह और नश) पांच सौ दिरहम है| मुस्लिम, और नश शरह सुन्ना और दीगर तमाम मसादर में रफअ के साथ है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (78 / 1426)، (3489) و البغوی فی شرح السنة (9 / 123 ح 2304)

بَاب الصَدَاق • महर का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٢٠٤ - (صَحِيح) عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَلَا لَا تُغَالُوا صَدُقَةَ النِّسَاءِ فَإِنَّهَا لَوْ كَانَتْ مَكْرُمَةً فِي الدُّنْيَا وَتَقْوَى عِنْدَ اللَّهِ لَكَانَ أَوْلَاكُمْ بِهَا نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا عَلِمْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَكَحَ شَيْئًا مِنْ نِسَائِهِ وَلَا أَنْكَحَ شَيْئًا مِنْ بَنَاتِهِ عَلَى أَكْثَرَ مِنَ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أُوقِيَّةً. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

3204. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सुन लो! औरतो का हक़ महर ज़्यादा मुकर्रर न करो, क्योंकि वह दुनिया में काबिल इज्ज़त और अल्लाह के यहाँ बाईसे तकवा होता तो तुम्हारी निस्बत अल्लाह के नबी ﷺ उस के ज़्यादा हक़दार थे, मैं नहीं जानता के रसूलुल्लाह ﷺ ने अज़वाज ए मूतहरात रदियल्लाहु अन्हुम से निकाह किया हो या अपने बेटियों का निकाह किया तो तो आप ﷺ ने बारह उकिय्यह से ज़्यादा हक़ महर मुकर्रर किया हो| (हसन)

حسن ، رواه احمد (1 / 4041 ح 285) و الترمذی (1114 ب وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (2106) و النسائی (6 / 117118 ح 3351) و ابن ماجه (1887) و الدارمی (2 / 141 ح 2206)

٣٢٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَعْطَى فِي صَدَاقِ امْرَأَتِهِ مِلْءَ كَفَّيْهِ سَوِيقًا أَوْ تَمْرًا فَقَدِ اسْتحلَّ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3205. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने अपने अहलिया को दोनों हाथ भर कर सत्तू या खजूर बतौर महर अदा किया तो उस ने (इस औरत को) अपने लिए जाईज़ कर लिया”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2110) * ابن رومان : مستور و ثقه ابن حبان وحده و فیه علة أخرى

٣٢٠٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ: أَنَّ امْرَأَةً مَنْ بَنِي فَزَارَةَ تَزَوَّجَتْ عَلَى نَعْلَيْنِ فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَرَضِيتِ مِنْ نَفْسِكِ وَمَالِكِ بِنَعْلَيْنِ؟» قَالَتْ: نَعَمْ. فَأَجَازَهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3206. आमिर बिन रबिआ रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के बनू फज़ारह कबिले की एक औरत ने जूतो के जोड़े के अवज़ शादी कर ली तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: “क्या तुम खुद को और अपने माल को जूतो के जोड़े के अवज़ देने पर राज़ी हो?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! तो आप ﷺ ने इस (निकाह) को नाफ़िज़ फरमा दिया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1113 وقال : حسن صحیح) * عاصم بن عبید الله : ضعیف

٣٢٠٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلْقَمَةَ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ: أَنَّهُ سُئِلَ عَنْ رَجُلٍ تَزَوَّجَ امْرَأَةً وَلَمْ يَفْرِضْ لَهَا شَيْئًا وَلم يدْخل بهَا حَتَّى مَاتَ فَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ: لَهَا مِثْلُ صَدَاقِ نِسَائِهَا. لَا وَكْسَ وَلَا شَطَطَ وَعَلَيْهَا الْعِدَّةُ وَلَهَا الْمِيرَاثُ فَقَامَ مَعْقِلُ بْنُ سِنَانٍ الْأَشْجَعِيُّ فَقَالَ: قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بِرْوَعَ بِنْتِ وَاشَقٍ امْرَأَةٍ مِنَّا بِمِثْلِ مَا قَضَيْتَ. فَفَرِحَ بِهَا ابْنُ مَسْعُودٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ والدارمي

3207. अल्कमा, इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं की उन से एक आदमी के मुतल्लिक दरियाफ्त किया गया जिस ने किसी औरत से शादी की और उस ने ना उस का हक़ महर मुकर्रर नहीं किया और न उन से जिमाअ किया हत्ता कि वह फौत हो गया, तो इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: इस औरत को उस के खानदान की औरतो की मिस्ल हक़ महर मिलेगा उस में कोई कमी बेसी नहीं होगी, वह इद्दत गुज़ारेगी और मीरास हासिल करेगी, (ये सुन) कर मुअकिल बिन सुनान अश्जईय्य खड़े हुए और कहा: के रसूलुल्लाह ﷺ ने हमारे खानदान की बीरवअ बिन्ते वाशिक नामी एक औरत के मुतल्लिक इसी तरह फैसला फ़रमाया था जैसे आप ने फैसला फ़रमाया, तो उस पर इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु खुश हुए| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (1145 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (21142115) و النسائى (6 / 122 ح 3358) و الدارمى (2 / 155 ح 2252)

بَاب الصَدَاق • महर का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٢٠٨ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ: أَنَّهَا كَانَتْ تَحْتَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جَحْشٍ فَمَاتَ بِأَرْضِ الْحَبَشَةِ فَزَوَّجَهَا النَّجَاشِيُّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَمْهَرَهَا عَنهُ أَرْبَعَة آلَاف. وَفِي رِوَايَة: أَرْبَعَة دِرْهَمٍ وَبَعَثَ بِهَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَعَ شُرَحْبِيل بن حَسَنَة. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3208. उम्मे हबीबा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के वह अब्दुल्लाह बिन जह्श के निकाह में थी, वह सर ज़मीने हबशा में इन्तेकाल कर गए तो नज्जाशी ने उनका नबी ﷺ से निकाह कर दिया और उन्हें अपने तरफ से चार हज़ार और एक रिवायत में है चार हज़ार दिरहम हक़ महर अदा किया और उन्हें शुर्हबिल बिन हसन के साथ रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में भेजा| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (21072108 [2086]) و النسائى (6 / 119 ح 2352) * ابن شهاب الزهرى مدلس و عنعن

٣٢٠٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: تَزَوَّجَ أَبُو طَلْحَةَ أُمَّ سُلَيْمٍ فَكَانَ صَدَاقُ مَا بَيْنَهُمَا الْإِسْلَامَ أَسْلَمَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ قَبْلَ أَبِي طَلْحَةَ فَخَطَبَهَا فَقَالَتْ: إِنِّي قَدْ أَسْلَمْتُ فَإِنْ أَسْلَمْتَ نَكَحْتُكَ فَأَسْلَمَ فَكَانَ صداق مَا بَينهمَا. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

3209. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु ने उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हु से शादी की तो इन दोनों के दरमियान हक़ महर इस्लाम था, उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा ने अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु से पहले इस्लाम कबूल कर लिया तो अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु ने उन्हें पैग़ामे निकाह भेजा जिस पर उन्होंने कहा: मैंने तो इस्लाम कबूल कर लिया है, अगर तुम भी इस्लाम कबूल कर लो तो मैं तुम से निकाह कर

लुंगी, (और में हक़ महर नहीं लुंगी) उन्होंने इस्लाम कबूल कर लिया और यही इन दोनों के दरमियान हक़ महर था| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه النسائی (6 / 114 ح 3343)

بَاب الْوَلِيمَة • वलीमे का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٢١٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَنَسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى عَلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَثَرَ صُفْرَةٍ فَقَالَ: «مَا هَذَا؟» قَالَ: إِنِّي تَزَوَّجْتُ امْرَأَةً عَلَى وَزْنِ نَوَاةٍ مِنْ ذَهَبٍ قَالَ: «بَارَكَ اللَّهُ لَكَ أَوْلِمْ وَلَوْ بِشَاةٍ»

3210. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने अब्दुल रहमान बिन ऑफ रदियल्लाहु अन्हु (के बदन या कपड़े) पर ज़ाफ़रान का निशान देखा तो फ़रमाया: “ये क्या है?” उन्होंने अर्ज़ किया, मैंने पांच दिरहम के अवज़ एक औरत से शादी की है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तुम्हें बरकत अता फरमाए वलीमा करो ख्वाह एक बकरी ही हो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5148) و مسلم (79 / 1427)، (3490)

٣٢١١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: مَا أَوْلَمَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أَحَدٍ مِنْ نِسَائِهِ مَا أولم على زَيْنَب أولم بِشَاة

3211. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने जैनब रदियल्लाहु अन्हा की शादी पर जैसे वलीमा किया वैसा वलीमा अपने किसी ज़ौजा ए मोहतरमा की शादी पर नहीं किया, आप ﷺ ने एक बकरी से वलीमा किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5168) و مسلم (90 / 1428)، (3503)

٣٢١٢ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: أَوْلَمَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ بَنَى بِزَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ فأشبع النَّاس خبْزًا وَلَحْمًا. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3212. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते है, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने जैनब बिन्ते जहश रदियल्लाहु अन्हु से ताल्लुक ए जन व शव काइम किया तो आप ﷺ ने वलीमा किया और लोगों को गोश्त रोटी से शक्म सैर कर दिया| (बुखारी)

رواه البخارى (4794)

٣٢١٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ أَعْتَقَ صَفِيَّةَ وَتَزَوَّجَهَا وَجَعَلَ عِتْقَهَا صَدَاقَهَا وَأَوْلَمَ عَلَيْهَا بحيس. مُتَّفق عَلَيْهِ

3213. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने सफिया रदियल्लाहु अन्हा को आज़ाद किया और उन से शादी की और उनकी आज़ादी को उनका हक़ महर मुकर्रर किया और हईस (खजूर, पनीर और घी से तैयार शुदा हलवा) से उनका वलीमा किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5169) و مسلم (84 / 1365)، (3497)

٣٢١٤ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: أَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ خَيْبَرَ وَالْمَدِينَةِ ثَلَاثَ لَيَالٍ يُبْنَى عَلَيْهِ بِصَفِيَّةَ فَدَعَوْتُ الْمُسْلِمِينَ إِلَى وَلِيمَتِهِ وَمَا كَانَ فِيهَا مِنْ خُبْزٍ وَلَا لَحْمٍ وَمَا كَانَ فِيهَا إِلَّا أَن أمربالأنطاع فَبُسِطَتْ فَأَلْقَى عَلَيْهَا التَّمْرَ وَالْأَقِطَ وَالسَّمْنَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3214. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने खैबर व मदीना के दरमियान तीन राते कयाम फ़रमाया, आप ने सफिया रदियल्लाहु अन्हु के साथ ताल्लुक ए जन व शव काइम किया तो मैंने मुसलमानों को आप के वलीमा की दावत दी, ना उस में रोटी थी न गोश्त, पस आप ﷺ ने चमड़े की एक चटाई मंगाई इसे बिछा दिया गया और इस (दस्तरख्वान) पर खजूर पनीर और घी चुन दिया गया| (बुखारी)

رواه البخارى (4213)

٣٢١٥ - (صَحِيح) وَعَنْ صَفِيَّةَ بِنْتِ شَيْبَةَ قَالَتْ: أَوْلَمَ النَّبِيُّ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم على النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى بَعْضِ نِسَائِهِ بمدين من شعير. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3215. सफिया बिन्ते शैबा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ ने अपने बाज़ बीवियों का फ़क़त दो मुद जौ से वलीमा किया| (बुखारी)

رواه البخارى (5172)

٣٢١٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا دُعِيَ أَحَدُكُمْ إِلَى الْوَلِيمَةِ فَلْيَأْتِهَا» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: فَلْيُجِبْ عُرْسًا كَانَ أَو نَحوه

3216. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से किसी को दावत ए वलीमा दी जाए तो वह इसे कबूल कर ले”| बुखारी, मुस्लिम, और मुस्लिम की एक रिवायत में है: “चाहिए कि वह दावत कबूल करे ख्वाह शादी की दावत हो या कोई दूसरी दावत”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5173) و مسلم (96 / 1429 ، 100 / 1429)، (3509 و 3513)

٣٢١٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ: قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا دُعِيَ أَحَدُكُمْ إِلَى طَعَام فليجب وَإِن شَاءَ طَعِمَ وَإِنْ شَاءَ تَرَكَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

3217. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से किसी को खाने की दावत दि जाए तो वह उस में ज़रूर शिरकत करे, दिल चाहे तो खा ले वरना छोड़ दे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (105 / 1430)، (3518)

٣٢١٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «شَرُّ الطَّعَامِ طَعَامُ الْوَلِيمَةِ يُدْعَى لَهَا الْأَغْنِيَاءُ وَيُتْرَكُ الْفُقَرَاءُ وَمَنْ تَرَكَ الدَّعْوَةَ فَقَدْ عَصَى الله وَرَسُوله»

3218. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सबसे बुरा खाना, वलीमे का वह खाना है जिस में माल दारो को दावत दी जाए और फुकराअ को छोड़ दिया जाए, और जिस ने दावत तर्क की तो उस ने अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी की”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5177) و مسلم (107 / 1432)، (3521)

٣٢١٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ قَالَ: كَانَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ يُكْنَى أَبَا شُعَيْبٍ كَانَ لَهُ غُلَامٌ لَحَّامٌ فَقَالَ: اصْنَعْ لِي طَعَامًا يَكْفِي خَمْسَةً لَعَلِّي أَدْعُو النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَامِسَ خَمْسَةٍ فَصَنَعَ لَهُ طعيما ثُمَّ أتها فَدَعَاهُ فَتَبِعَهُمْ رَجُلٌ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أَبَا شُعَيْبٍ إِنَّ رَجُلًا تَبِعَنَا فَإِنْ شِئْتَ أَذِنْتَ لَهُ وَإِنْ شِئْتَ تركته» . قَالَ: لَا بل أَذِنت لَهُ

3219. अबू मसउद अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अंसार का एक आदमी था जिस की कुनियत अबू शुऐब थी, उस का एक गुलाम कसाब था, उस ने कहा: मेरे लिए खाना तैयार करो जो के पांच लोगों के लिए काफी हो, ताकि में नबी ﷺ को दावत दू के आप उनमें से पांचवे हो, उस ने उस के लिए मुख़्तसर सा खाना तैयार

किया, फिर वह (अबू शुऐब) आप ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और आप को दावत दी, तो एक और (चोथा) आदमी उन के साथ आने लगा तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अबू शुऐब! एक और आदमी हमारे साथ आ रहा है, अगर तुम चाहो तो उसे इजाज़त दे दो और अगर चाहो तो उसे छोड़ दो”, उस ने अर्ज़ किया, कोई नहीं! इसे भी इजाज़त है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5461) و مسلم (138 / 2036)، (5309)

بَاب الْوَلِيمَة • वलीमे का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٢٢٠ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أولم على صَفِيَّة بسويق وتمر. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

3220. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि नबी ﷺ ने सफ़िया रदियल्लाहु अन्हा का सत्तू और खजूर से वलीमा किया| (हसन)

حسن ، رواه احمد (3 / 110 ح 12102) و الترمذی (1095 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (2744) و ابن ماجه (1909)

٣٢٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَفِينَةَ: أَنَّ رَجُلًا ضَافَ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ فَصَنَعَ لَهُ طَعَامًا فَقَالَتْ فَاطِمَةُ: لَوْ دَعَوْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَكَلَ مَعَنَا فَدَعَوْهُ فَجَاءَ فَوَضَعَ يَدَيْهِ عَلَى عِضَادَتَيِ الْبَابِ فَرَأَى الْقِرَامَ قَدْ ضُرِبَ فِي نَاحِيَةِ الْبَيْتِ فَرَجَعَ. قَالَتْ فَاطِمَةُ: فَتَبِعْتُهُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا رَدَّكَ؟ قَالَ: «إِنَّهُ لَيْسَ لِي أَوْ لِنَبِيٍّ أَنْ يَدْخُلَ بَيْتا مزوقا» . رَوَاهُ أَحْمد وَابْن مَاجَه

3221. सफीना (उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा के आज़ाद करदा गुलाम) से रिवायत है के एक आदमी अली बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु के यहाँ महमान ठहरा तो उन्होंने उस के लिए खाना तैयार किया, फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: अगर हम रसूलुल्लाह ﷺ को भी मदउ (बुलाया) कर ले ताकि वह हमारे साथ तनावुल फरमा लें? उन्होंने आप ﷺ को दावत दी तो आप तशरीफ़ लाए और आप ने अपने हाथ दरवाज़े की चोखट पर रखे थे की घर की एक जानिब लगे हुए मन्कश परदे को देखा तो आप वापस तशरीफ़ ले गए, फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैं आप के पीछे गई और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! किस चीज़ ने आप को वापस कर दिया? आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरे या किसी नबी के लिए लायक नहीं के वह किसी सजावट घर में दाखिल हो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 220221 ح 22267 ، 22271) و ابن ماجه (3360)

٣٢٢٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ دُعِيَ فَلَمْ يُجِبْ فَقَدْ عَصَى اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمن دخل على غَيْرِ دَعْوَةٍ دَخَلَ سَارِقًا وَخَرَجَ مُغِيرًا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3222. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स को दावत दि जाए और वह कबूल न करे तो उस ने अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी की और जो शख़्स बिन बुलाए चला आए तो वह चोरी की हैसियत से दाखिल हुआ और डाकू की हैसियत से ख़ारिज हुआ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3741) * درست بن زیاد : ضعیف ، و ابان بن طارق : مجھول وقال ابن عدی ’’ ھذا حدیث منکر ‘‘

٣٢٢٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ رَجُلٍ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا اجْتَمَعَ الدَّاعِيَانِ فَأَجِبْ أَقْرَبَهُمَا بَابًا وَإِنْ سَبَقَ أَحَدُهُمَا فَأَجِبِ الَّذِي سَبَقَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ

3223. रसूलुल्लाह ﷺ के एक सहाबी से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब दावत देने वाले दो लोग इकठ्ठे हो जाए तो फिर उनमें से जो हम्सायगी के लिहाज़ से ज़्यादा करीब हो उसकी दावत कबूल करो और अगर उनमें से कोई एक सबकत ले जाए तो फिर इस सबकत ले जाने वाले की दावत कबूल करो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (5 / 408 ح 23860) و ابوداؤد (3756) * ابو خالد الدالانی مدلس و عنعن و الحدیث ضعفه الحافظ فی التلخیص الحبیر (3 / 196)

٣٢٢٤ - وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «طَعَامُ أَوَّلِ يَوْمٍ حق وَطَعَام يَوْم الثَّانِي سنة وَطَعَام يَوْم الثَّالِثِ سُمْعَةٌ وَمَنْ سَمَّعَ سَمَّعَ اللَّهُ بِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3224. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “पहले रोज़ (वलीमा) का खाना हक़ (वाजिब) है दूसरे रोज़ दावत करना सुन्नत है जबकि तीसरे रोज़ दावत करना शोहरत व रियाकारी है और जो कोई दिखलावा करता है तो अल्लाह (कियामत के दिन) इसे रुसवा कर देगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1097) * عطاء بن السائب اختلط و للحدیث شواھد ضعیفة عند ابی داود 3745) و غیره

٣٢٢٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ طَعَامِ الْمُتَبَارِيَيْنِ أَنْ يُؤْكَلَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَقَالَ مُحْيِي السُّنَّةِ: [ص:٩٦ وَالصَّحِيحُ أَنَّهُ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُرْسَلًا

3225. इकरमा, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ ने बाहम फख्र करने वालो का

खाना खाने से मना फ़रमाया है| अबू दावुद, और मुह्यी अल सुन्नी ने फ़रमाया: सहीह यह है कि इकरमा की नबी ﷺ से यह मुरसल रिवायत है| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (3754) و ذكره محيى السنة فى شرح السنة (9 / 144 بعد ح 2319) [و صححه الحاكم (4 / 128129) و وافقه الذهبى و للحديث شواهد]

بَاب الْوَلِيمَة • वलीमे का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٢٢٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمُتَبَارِيَانِ لَا يُجَابَانِ وَلَا يُؤْكَلُ طَعَامُهُمَا» . قَالَ الْإِمَامُ أَحْمَدُ: يَعْنِي المتعارضين بالضيافة فخراً ورياء

3226. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दो बाहम फख्र करने वालो की दावत कबूल न की जाए और न इन दोनों का खाना खाया जाए”| इमाम अहमद ने फ़रमाया: यानी वह दो आदमी जो फख्र व रिया की खातिर खाने करते हैं| (हसन)

حسن ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (6068 ، نسخة محققة : 5667) فائدة : قوله قال الامام احمد : يعنى الامام احمد بن الحسين البيهقى رحمه الله و القائل : زاهر بن طاهر الشحامى ، الراوى عن البيهقى رحمه الله* الاعمش مدلس و عنعن فالسند ضعيف و الحديث حسن بالشاهد المتقدم (3225)

٣٢٢٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عمرَان ين حُصَيْنٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِجَابَةَ طَعَام الْفَاسِقين

3227. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फासिक लोगों की दावत कुबूल करने से मना फ़रमाया है| (ज़ईफ़)

ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان : 5803 ، نسخة محققة : 5420) * فيه ابو عبد الرحمن السلمى : ضعيف جدًا و محمد بن عبدالله بن (محمد بن همام بن) المطلب الشيبانى مجروح كذاب فالسند موضوع و لكن رواه الطبرانى فى الكبير (18 / 168 ح 376) بسند مظلم عن (ابى) مروان الواسطى (يحيى بن ابى زكريا الغسانى) عن هشام بن حسان به و ابو مروان الغسانى هذا ضعيف كما فى تقريب التهذيب (7550)

٣٢٢٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمْ عَلَى أَخِيهِ الْمُسْلِمِ فَلْيَأْكُلْ مِنْ طَعَامِهِ وَلَا يَسْأَلْ وَيَشْرَبْ مِنْ شَرَابِهِ وَلَا يَسْأَلْ»»» رَوَى الْأَحَادِيثَ الثَّلَاثَةَ الْبَيْهَقِيّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» وَقَالَ: هَذَا إِنْ صَحَّ فَلِأَنَّ الظَّاهِرَ أَنَّ الْمُسْلِمَ لَا يُطْعِمُهُ وَلَا يسْقِيه إِلَّا مَا هُوَ حَلَال عِنْده

3228. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम में से कोई एक अपने मुसलमान भाई के पास जाए तो वह उस के खाने से खाए और सवाल न करे (की यह कहाँ से आया है) और वह उस के मशरुब से पिए और कुछ दरियाफ्त न करे”| इमाम बयहकी ने यह तीनो अहादीस शौबुल ईमान में रिवायत की है, और फ़रमाया अगर यह सहीह है, तो ज़ाहिर है के मुसलमान इसे सिर्फ वही चीज़ खिलाता पिलाता है जो उस के नज़दीक हलाल होती है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (5801 ، نسخة محققة : 5419) [و صححه الحاكم (4 / 126 ح 7160) و وافقه الذهبی !] * فيه مسلم بن خالد : ضعيف و للحديث شاهد عند الحاكم (ح 7161) فيه محمد بن عجلان مدلس و عنعن

بَاب الْقسم • बारी की तकसीम का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٣٢٢٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُبِضَ عَنْ تِسْعِ نِسْوَةٍ وَكَانَ يقسم مِنْهُنَّ لثمان

3229. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने वफात पाई तो इस वक़्त आप की नौ अज़वाज ए मूतहरात थी, और आप ने उनमें से आठ के लिए बारी मुकर्रर की थी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5067) و مسلم (51 / 1465)، (3633)

٣٢٣٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّ سَوْدَةَ لَمَّا كَبِرَتْ قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ قَدْ جَعَلْتُ يَوْمِي مِنْكَ لِعَائِشَةَ فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُقَسِّمُ لِعَائِشَةَ يَوْمَيْنِ يَوْمَهَا وَيَوْم سَوْدَة

3230. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि जब सवदा रदियल्लाहु अन्हा बुढ़ा हो गई तो उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप की तरफ से जो मेरी बारी का दिन था वह मैंने आइशा रदियल्लाहु अन्हा को हिब्बा कर दिया, लिहाज़ा रसूलुल्लाह ﷺ आइशा रदियल्लाहु अन्हा के लिए दो दिन तकसीम फ़रमाया करते थे, एक उनका अपना और दूसरा सवदा रदियल्लाहु अन्हा का दिन था| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5212) و مسلم (47 / 1463)، (3629)

٣٢٣١ - (صَحِيح) وَعَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَسْأَلُ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ: «أَيْنَ أَنَا غَدًا؟» يُرِيدُ يَوْمَ عَائِشَةَ فَأَذِنَ لَهُ أَزْوَاجُهُ يَكُونُ حَيْثُ شَاءَ فَكَانَ فِي بَيْتِ عَائِشَةَ حَتَّى مَاتَ عِنْدَهَا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

3231. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ अपने मर्जे वफ़ात में दरियाफ्त किया करते थे मैं कल कहाँ होऊंगा? में कल कहां होऊंगा? आप (इस सवाल से) आइशा रदियल्लाहु अन्हा की बारी का दिन पूछना चाहते थे, आप ﷺ की अज़वाज ए मूतहरात ने आप को इजाज़त दे दि के आप जहाँ चाहे रहे, आप आइशा रदियल्लाहु अन्हा के घर थे हत्ता के आप ने उन के वहां ही वफात पाई| (बुखारी)

رواه البخارى (5217) و مسلم (840 / 2443)، (6292)

٣٢٣٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَرَادَ سَفَرًا أَقْرَعَ بَيْنَ نِسَائِهِ فأيهن خَرَجَ سَهْمُهَا خَرَجَ بِهَا مَعَهُ

3232. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ सफ़र का इरादा फ़रमाया करते थे तो आप अपने अज़वाज के दरमियान कुरा अन्दाज़ी किया करते थे, जिसके नाम कुरा निकलता तो वह आप के साथ सफ़र पर रवाना होती थी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2688) و مسلم (56 / 2770)، (7020)

٣٢٣٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي قِلَابَةَ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: مِنَ السُّنَّةِ إِذَا تَزَوَّجَ الرَّجُلُ الْبِكْرَ عَلَى الثَّيِّبِ أَقَامَ عِنْدَها سبعا وَقسم إِذا تَزَوَّجَ الثَّيِّبَ أَقَامَ عِنْدَهَا ثَلَاثًا ثُمَّ قَسَمَ. قَالَ أَبُو قلَابَة: وَلَو شِئْت لَقلت: إِن أَنَسًا رَفَعَهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

3233. अबू किलाबा , अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने ने फ़रमाया: “मस्नुन तरीका यह है कि जब आदमी मुतल्का बेवा के होते हुए किसी कुंवारी से शादी करे तो वह इस (कुंवारी) के यहाँ सात राते कयाम करे और फिर बारी तकसीम करे, और जब बेवा मुतल्का से शादी करे तो उस के वहां तीन राते कयाम करे और फिर बारी तकसीम करे, अबू किलाबा ने कहा अगर में चाहूँ तो मैं कह सकता हूँ कि अनस रदियल्लाहु अन्हु ने इसे नबी ﷺ से मरफुअ रिवायत किया है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5214) و مسلم (44 / 1461)، (3626)

٣٢٣٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِين تَزَوَّجَ أَمَّ سَلَمَةَ وَأَصْبَحَتْ عِنْدَهُ قَالَ لَهَا: «لَيْسَ بِكِ عَلَى أَهْلِكِ هَوَانٌ إِنْ شِئْتِ سَبَّعْتُ عِنْدَكِ وَسَبَّعْتُ عِنْدَهُنَّ وَإِنْ شِئْتِ ثَلَّثْتُ عِنْدَكِ وَدُرْتُ» . قَالَتْ: ثَلِّثْ. وَفِي رِوَايَةٍ: إِنَّهُ قَالَ لَهَا: «لِلْبِكْرِ سَبْعٌ وَلِلثَّيِّبِ ثَلَاثٌ» . رَوَاهُ مُسلم

3234. अबू बक्र बिन अब्दुल रहमान से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह ﷺ ने उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से शादी की और वह आप के यहाँ इकामत गज़ी हुई तो आप ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “ऐसी बात नहीं है की तेरी मेरे

यहाँ इज्ज़त नहीं है बल्कि अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे यहाँ सात राते कयाम करता हूँ और फिर मैं उन के यहाँ भी सात राते कयाम करूँगा, और अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे यहाँ तीन राते कयाम करता हूँ और फिर बाकियों के पास जाता हूँ", उन्होंने (उम्मे सलमा (र)) ने अर्ज़ किया, आप तीन राते कयाम करे, और एक दूसरी रिवायत में है की आप ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: "कुंवारी के लिए सात राते है और बेवा मुतल्का के लिए तीन राते हैं"। (मुस्लिम)

رواه مسلم (4142 / 1460)، (3621 و 3622)

بَاب الْقسم • बारी की तकसीम का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٢٣٥ - (جيد) عَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقْسِمُ بَيْنَ نِسَائِهِ فَيَعْدِلُ وَيَقُولُ: «اللَّهُمَّ هَذَا قَسْمِي فِيمَا أَمْلِكُ فَلَا تَلُمْنِي فِيمَا تَمْلِكُ وَلَا أَمْلِكُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

3235. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ अपने अज़्वाज ए मूतहरात के दरमियान बारी तकसीम फ़रमाया करते थे और आप अदल किया करते थे और आप ﷺ फरमाते थे: "ए अल्लाह!मैंने अपनी बिसात के मुताबिक बारी तकसीम कर रखी हैं, आप मुझे इस चीज़ (यानी दिली मुहब्बत) के बारे में मलामत न करना जिस का तुझे इख़्तियार है और मुझे कोई इख़्तियार नहीं"। (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1140) و ابوداؤد (2134) و النسائی (7 / 64 ح 3395) و ابن ماجه (1971) و الدارمی (2 / 144 ح 2213)

٣٢٣٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا كَانَتْ عِنْدَ الرَّجُلِ امْرَأَتَانِ فَلَمْ يَعْدِلْ بَيْنَهُمَا جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَشِقُّهُ سَاقِطٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

3236. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिस आदमी की दो बीवियां हो और वह उन के दरमियान अदल न करे तो वह रोज़ ए कियामत इस हाल में होगा के उस का एक पहलु (आधा धड़) मफ्लुज होगा"। (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1141) و ابوداؤد (2133) و النسائی (7 / 63 ح 3394) و ابن ماجه (1969) و الدارمی (2 / 143 ح 2212) *
قتادۃ مدلس و عنعن و للحدیث شاھد ضعیف عند ابی نعیم فی اخبار اصبھان (2 / 300) فیه محمد بن الحارث الحارثی : ضعیف

बारी की तकसीम का बयान • بَاب الْقسم

तीसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّالِثُ

٣٢٣٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَطَاءٍ قَالَ: حَضَرْنَا مَعَ ابْنِ عَبَّاسٍ جَنَازَةَ مَيْمُونَةَ بِسَرِفَ [ص:٩٦ فَقَالَ: هَذِهِ زَوْجَةُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِذَا رَفَعْتُمْ نَعْشَهَا فَلَا تُزَعْزِعُوهَا وَلَا تُزَلْزِلُوهَا وَارْفُقُوا بِهَا فَإِنَّهُ كَانَ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تِسْعُ نِسْوَةٍ كَانَ يَقْسِمُ مِنْهُنَّ لِثَمَانٍ وَلَا يَقْسِمُ لِوَاحِدَةٍ قَالَ عَطَاءٌ: الَّتِي كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَقْسِمُ لَهَا بَلَغَنَا أَنَّهَا صَفِيَّةُ وَكَانَتْ آخِرهنَّ موتا مَاتَت بِالْمَدِينَةِ»» وَقَالَ رَزِينٌ: قَالَ غَيْرُ عَطَاءٍ: هِيَ سَوْدَةُ وَهُوَ أصح وهبت يَوْمهَا لِعَائِشَةَ حِينَ أَرَادَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَلَاقَهَا فَقَالَتْ لَهُ: أَمْسِكْنِي قَدْ وهبت يومي لعَائِشَة لعَلي أكون من نِسَائِك فِي الْجنَّة

3237. अता रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम मक़ाम ए सरीफ पर इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा के साथ मैमुना रदियल्लाहु अन्हा के जनाज़े में शरीक थे, तो उन्होंने ने फ़रमाया: यह रसूलुल्लाह ﷺ की ज़ौजा ए मोहतरमा है, उन्हें झटके से नहीं उठाना और न चलते वक़्त झटके देना और बल्कि इसे आराम से लेकर चलना, क्योंकि रसूलुल्लाह ﷺ की नौ बीवियां थी, आप उनमें से आठ के लिए बारी मुकर्रर करते थे और एक के लिए बारी मुकर्रर नहीं फरमाते थे, अता बयान करते हैं, हमें यह बात पहुंची है के रसूलुल्लाह ﷺ जिस ज़ौजा ए मोहतरमा के लिए बारी मुकर्रर नहीं फरमाया करते थे वह सफिया रदियल्लाहु अन्हु थी, और उन्होंने उनमें से सबसे आख़िर में मदीना में वफात पाई| # रजिन ने फ़रमाया: अता के अलावा दीगर मुहद्दीसिन ने फ़रमाया: वह (जिन की बारी मुकर्रर नहीं थी) सवदा (रअ) थी और यही बात ज़्यादा सहीह है, क्योंकि जब रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें तलाक देने का इरादा फ़रमाया तो उन्होंने अपने बारी आइशा (रअ) को हिब्बा कर दी थी, और उन्होंने आप ﷺ से अर्ज़ किया,मैंने अपनी बारी आइशा (रअ) को हिब्बा कर दी ताकि में जन्नत में आप की अज़वाज ए मूतहरात में से होऊ| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5067) و مسلم (51 / 1465)، (3633) و رزين (لم اجده) * لقوله سودة : انظر صحيح مسلم (4748 / 1463) و غيره

बीवियों के साथ रहन सहन और हर एक के हुकुक का बयान — بَابُ عِشْرَةِ النِّسَاءِ

पहली फस्ल — الْفَصْلُ الأول

٣٢٣٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اسْتَوْصُوا بِالنِّسَاءِ خَيْرًا فَإِنَّهُنَّ خُلِقْنَ مِنْ ضِلَعٍ وَإِنَّ أَعْوَجَ شَيْءٍ فِي الضِّلَعِ أَعْلَاهُ فَإِنْ ذَهَبْتَ تُقِيمُهُ كَسَرْتَهُ وَإِنْ تَرَكْتَهُ لَمْ يَزَلْ أَعْوَجَ فَاسْتَوْصُوا بِالنِّسَاءِ»

3238. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “औरतो के साथ खैर व भलाई से पेश आओ, क्योंकि वह पसली से पैदा की गई है, और पसली का ऊपर वाला हिस्सा सबसे ज़्यादा टेढ़ा होता है, अगर तुम उसे सीधा करने की कोशिश करोगे तो उसे तोड़ बैठोगे, और अगर इसे छोड़ दोगे तो वह टेढ़ा रहेगा, तुम औरतो के साथ खैर व भलाई का ख़याल रखो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5186) و مسلم (60 / 1468)، (3644)

٣٢٣٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْمَرْأَةَ خُلِقَتْ مِنْ ضِلَعٍ لَنْ تَسْتَقِيمَ لَكَ عَلَى طَرِيقَةٍ فَإِنِ اسْتَمْتَعْتَ بِهَا اسْتَمْتَعْتَ بِهَا وَبِهَا عِوَجٌ وَإِنْ ذَهَبْتَ تقيمها كسرتها وَكسرهَا طَلَاقهَا» . رَوَاهُ مُسلم

3239. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “औरत पसली से पैदा की गई है, वह आप के साथ कभी एक अंदाज़ पर गुज़र बसर नहीं करेगी, अगर तुम उस से फ़ायदा हासिल करना चाहते हो तो तुम उस के टेढ़ेपन के साथ ही उस से फ़ायदा हासिल करो, और अगर तुमने इसे सीधा करने की कोशिश की तो तुम उसे तोड़ दोगे और इसे तोड़ना इसे तलाक देना है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (59 / 1468)، (3643)

٣٢٤٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَفْرَكْ مُؤْمِنٌ مُؤْمِنَةً إِنْ كَرِهَ مِنْهَا خُلُقًا رَضِيَ مِنْهَا آخَرَ» . رَوَاهُ مُسلم

3240. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कोई मोमिन (शोहर) किसी मोमिन (बीवी) से बुग्ज़ न रखे अगर उसकी कोई एक आदत इसे नापसंद है तो कोई दूसरी आदत पसंद भी है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (61 / 1469)، (3645)

٣٢٤١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْلَا بَنُو إِسْرَائِيلَ لَمْ يَخْنَزِ اللَّحْمُ وَلَوْلَا حَوَّاءُ لَمْ تَخُنْ أُنْثَى زَوجهَا الدَّهْر»

3241. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बनू इसराइल न होते तो गोश्त ख़राब न होता और अगर हव्वा न होती, तो कोई औरत कभी अपने शोहर की खयानत न करती”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3399) و مسلم (63 / 1470)، (3648) ،

٣٢٤٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ زَمْعَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَجْلِدْ أَحَدُكُمُ امْرَأَتَهُ جَلْدَ الْعَبْدِ ثُمَّ يُجَامِعُهَا فِي آخِرِ الْيَوْمِ» وَفِي رِوَايَةٍ: «يَعْمِدُ أَحَدُكُمْ فَيَجْلِدُ امْرَأَتَهُ جَلْدَ الْعَبْدِ فَلَعَلَّهُ يُضَاجِعُهَا فِي آخِرِ يَوْمِهِ» . ثُمَّ وَعَظَهُمْ فِي ضَحِكِهِمْ مِنَ الضَّرْطَةِ فَقَالَ: «لِمَ يَضْحَكُ أَحَدُكُمْ مِمَّا يفعل؟»

3242. अब्दुल्लाह बिन जमअत रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से कोई अपने बीवी को गुलाम की तरह न मारे और फिर वह दिन के आख़िर पहर उस से मुजामअत करे”| और दूसरी रिवायत में है: “तुम में से कोई क़सद करता है तो अपने औरत को गुलाम की तरह मारता है, और फिर मुमकिन है के वह इसी रोज़ आखिरी पहर उस से मुजामअत करे, फिर आप ﷺ ने उन्हें गोज़ मारने (रय्ह की आवाज़) पर हंसने के मुतल्लिक नसीहत की तो फ़रमाया: “तुम में से कोई ऐसी चीज़ पर क्यों हँसता है जो वह खुद करता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4942) و مسلم (63 / 1470)

٣٢٤٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كُنْتُ أَلْعَبُ بِالْبَنَاتِ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَ لِي صَوَاحِبُ يَلْعَبْنَ مَعِي فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا دَخَلَ ينقمعن فيسربهن إِلَيّ فيلعبن معي

3243. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैं नबी ﷺ के यहाँ गुड़ियों के साथ खेला करती थी, और मेरी कुछ सहेलिया थी जो मेरे साथ खेलती थी, जब रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाते तो वह आप से छुप जाती, आप ﷺ उन्हें मेरी तरफ भेजते तो फिर वह मेरे साथ खेलती| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6130) و مسلم (81 / 2440)، (6287)

٣٢٤٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهَا قَالَتْ: وَاللَّهِ لَقَدْ رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُومُ عَلَى بَابِ حُجْرَتِي وَالْحَبَشَةُ يَلْعَبُونَ بِالْحِرَابِ فِي الْمَسْجِدَ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتُرُنِي بردائه لِأَنْظُرَ إِلَى لَعِبِهِمْ بَيْنَ أُذُنِهِ وَعَاتِقِهِ ثُمَّ يَقُومُ مِنْ أَجْلِي حَتَّى أَكُونَ أَنَا الَّتِي أَنْصَرِفُ فَاقْدُرُوا قَدْرَ الْجَارِيَةِ الْحَدِيثَةِ السِّنِّ الْحَرِيصَةِ على اللَّهْو

3244. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, अल्लाह की क़सम! मैंने नबी ﷺ को अपने हुजरे के दरवाज़े पर खड़े हुए देखा जबकि हब्शी मस्जिद में छोटे नेज़ो के साथ खेल रहे थे और रसूलुल्लाह ﷺ अपनी चादर से मुझे छिपा रहे थे ताकि में आप के कान और गर्दन के बीच से उन के खेल को देख सकू, फिर आप मेरी खातिर खड़े रहते हत्ता कि मैं ही वहां से हटती थी, तुम कम उमर, खेल से शगफ़ रखने वाली लड़की के खड़े होने का अंदाज़ा कर लो (के वह कितनी देर खड़ी हो सकती है) | (मुत्तफ़क़ अलैह)

رواه البخاری (5236) و مسلم (18 / 892)، (2064)

٣٢٤٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهَا قَالَتْ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنِّي لأعْلم إِذا كنت عني راضية وَإِذا كنت عني غَضْبَى» فَقُلْتُ: مِنْ أَيْنَ تَعْرِفُ ذَلِكَ؟ فَقَالَ: " إِذَا كُنْتِ عَنِّي رَاضِيَةً فَإِنَّكَ تَقُولِينَ: لَا وَرَبِّ مُحَمَّدٍ وَإِذَا كُنْتِ عَلَيَّ غَضْبَى قُلْتِ: لَا وَرَبِّ إِبْرَاهِيمَ ". قَالَتْ: قُلْتُ: أَجَلْ وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا أَهْجُرُ إِلَّا اسْمَكَ

3245. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “जब तुम मुझ से राज़ी होती हो तो मुझे पता चल जाता है और इसी तरह जब तुम मुझ से नाराज़ होती हो तो तब भी मुझे पता चल जाता है”, मैंने अर्ज़ किया: आप यह कैसे पहचानते है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम मुझ से राज़ी होती हो तो तुम कहती हो: मुहम्मद ﷺ के रब की क़सम! और जब तुम मुझ से नाराज़ होती हो तो तुम कहती हो: इब्राहीम अलैहिस्सलाम के रब की क़सम! हज़रत आइशा रदियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं: मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! अल्लाह की क़सम! बिलकुल ठीक है, मैं सिर्फ आप का नाम छोड़ती हूँ| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5228) و مسلم (80 / 2439)، (6285)

٣٢٤٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا دَعَا الرَّجُلُ امْرَأَتَهُ إِلَى فِرَاشِهِ فَأَبَتْ فَبَاتَ غَضْبَانَ لَعَنَتْهَا الْمَلَائِكَةُ حَتَّى تُصْبِحَ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ لَهُمَا قَالَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ مَا مِنْ رَجُلٍ يَدْعُو امْرَأَتَهُ إِلَى [ص:٩٦ فِرَاشِهِ فَتَأْبَى عَلَيْهِ إِلَّا كَانَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ ساخطا عَلَيْهَا حَتَّى يرضى عَنْهَا»

3246. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब आदमी अपने अहलिया को अपने बिस्तर पर बुलाए और वह इनकार कर दे और वह (खाविंद) नाराज़ी में सो जाए तो सुबह होने तक फ़रिश्ते इस (औरत) पर लानत भेजते रहते है”, बुखारी, मुस्लिम, और सहीहैन एक ही रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! जब कोई आदमी अपने अहलिया को अपने बिस्तर पर बुलाए और वह उस पर इनकार कर दे तो आसमान वाली ज़ात (अल्लाह तआला) उस पर नाराज़ हो जाती है हत्ता के वह (खाविंद) उस से राज़ी हो जाए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3237) و مسلم (122 / 1436)، (3541)

٣٢٤٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَسْمَاءَ أَنَّ امْرَأَةً قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ لِي ضَرَّةً فَهَلْ عَلَيَّ جُنَاحٌ إِنْ تَشَبَّعْتُ مِنْ زَوْجِي غَيْرَ الَّذِي يُعْطِينِي؟ فَقَالَ: «الْمُتَشَبِّعُ بِمَا لَمْ يُعْطَ كَلَابِسِ ثَوْبَيْ زُورٍ»

3247. अस्मा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक औरत ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरी एक सोतन है, तो क्या मुझ पर गुनाह होगा की मैं अपने खाविंद की तरफ से किसी ऐसी चिज़ का इज़हार करू जो उस ने मुझे न दि हो? (ताकि मेरी सोतन तंग हो) आप ﷺ ने फ़रमाया: “ऐसी चीज़ ज़ाहिर करने वाला जो इसे न दी गई हो झूठ का जोड़ा ज़ेबतीन (पहना हुआ) करने वाले (यानी धोकेबाज़) की तरह है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5219) و مسلم (127 / 2130)، (5585)

٣٢٤٨ - (صَحِيح) وَعَن أنس قَالَ: آلى رَسُول الله مِنْ نِسَائِهِ شَهْرًا وَكَانَتِ انْفَكَّتْ رِجْلُهُ فَأَقَامَ فِي مَشْرُبَةٍ تِسْعًا وَعِشْرِينَ لَيْلَةً ثُمَّ نَزَلَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ آلَيْتَ شَهْرًا فَقَالَ: «إِنَّ الشَّهْرَ يَكُونُ تِسْعًا وَعِشْرِينَ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

3248. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने अज़वाज ए मूतहरात से एक माह इयला फ़रमाया, आप के पाँव में मोच आ गई थी, आप ﷺ ने उनतीस राते बालाखाना (ऊपर) में कयाम फ़रमाया फिर आप नीचे तशरीफ़ ले आए तो सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप ने एक माह के लिए क़सम उठाई थी? आप ﷺ ने फ़रमाया: “महीने उनतीस का भी होता है‘’| (बुखारी)

رواه البخارى (5201)

٣٢٤٩ - (صَحِيح) وَعَن جَابر قَالَ: دخل أَبُو بكر رَضِي الله عَنهُ يَسْتَأْذِنُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَجَدَ النَّاسَ جُلُوسًا بِبَابِهِ لَمْ يُؤْذَنْ لِأَحَدٍ مِنْهُمْ قَالَ: فَأُذِنَ لِأَبِي بَكْرٍ فَدَخَلَ ثُمَّ أَقْبَلَ عُمَرُ فَاسْتَأْذَنَ فَأُذِنَ لَهُ فَوَجَدَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَالِسًا حَوْلَهُ نِسَائِهِ وَاجِمًا سَاكِتًا قَالَ فَقُلْتُ: لَأَقُولَنَّ شَيْئًا أُضْحِكُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَوْ رَأَيْتَ بِنْتَ خَارِجَةَ سَأَلَتْنِي النَّفَقَةَ فَقُمْتُ إِلَيْهَا فَوَجَأْتُ عُنُقَهَا فَضَحِكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ: «هُنَّ حَوْلِي كَمَا تَرَى يَسْأَلْنَنِي النَّفَقَةَ» . فَقَامَ أَبُو بكر إِلَى عَائِشَةَ يَجَأُ عُنُقَهَا وَقَامَ عُمَرُ إِلَى حَفْصَةَ يَجَأُ عُنُقَهَا كِلَاهُمَا يَقُولُ: [ص:٩٧ تَسْأَلِينَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا لَيْسَ عِنْدَهُ؟ فَقُلْنَ: وَاللَّهِ لَا نَسْأَلُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْئًا أبدا لَيْسَ عِنْدَهُ ثُمَّ اعْتَزَلَهُنَّ شَهْرًا أَوْ تِسْعًا وَعِشْرين ثمَّ نزلت هَذِه الْآيَة: (يَا أَيهَا النَّبِي قل لِأَزْوَاجِك)»» حَتَّى بلغ (للمحسنات مِنْكُن أجرا عَظِيما)»» قَالَ: فَبَدَأَ بعائشة فَقَالَ: «يَا عَائِشَةُ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أَعْرِضَ عَلَيْكِ أَمْرًا أُحِبُّ أَنْ لَا تَعْجَلِي فِيهِ حَتَّى تَسْتَشِيرِي أَبَوَيْكِ» . قَالَتْ: وَمَا هُوَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ فَتَلَا عَلَيْهَا الْآيَةَ قَالَتْ: أَفِيكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَسْتَشِيرُ أَبَوَيَّ؟ بَلْ أَخْتَارُ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالدَّارَ الْآخِرَةَ وَأَسْأَلُكَ أَنْ لَا تُخْبِرَ امْرَأَةً مِنْ نِسَائِكَ بِالَّذِي قُلْتُ: قَالَ: «لَا تَسْأَلُنِي امْرَأَةٌ مِنْهُنَّ إِلَّا أَخْبَرْتُهَا إِنَّ اللَّهَ لَمْ يَبْعَثْنِي مُعَنِّتًا وَلَا مُتَعَنِّتًا وَلَكِنْ بَعَثَنِي معلما ميسرًا» . رَوَاهُ مُسلم

3249. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में

हाज़िर होने के लिए इजाज़त तलब करना चाही तो उन्होंने लोगों को दरवाज़े पर बैठें हुए पाया जिन में से किसी को इजाज़त न मिली थी, रावी बयान करते हैं, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु को इजाज़त मिल गई तो वह अन्दर चले गए, फिर उमर रदियल्लाहु अन्हु आए, उन्होंने इजाज़त तलब की तो उन्हें भी इजाज़त मिल गई, उन्होंने नबी ﷺ को परेशानी के आलम में ख़ामोश बैठा हुआ पाया जबकि आप की अज़वाज ए मूतहरात आप के इर्दगिर्द थी, रावी बयान करते हैं, उन्होंने (यानी उमर (र)) ने कहा: में कोई ऐसी बात कहूँगा जिस से नबी ﷺ को हसाऊंगा उन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल! अगर ख़ारिजह की बेटी मुझ से खर्च मांगती तो मैं उसकी गर्दन मरोड़ देता, रसूलुल्लाह ﷺ मुस्कुरा दिए और फ़रमाया: “उन्होंने मेरे गिर्द घेरा डाल रखा है, जैसे की तुम देख रहे हो, और मुझ से खर्च मांग रही है”, (ये सुन कर) अबू बक्र (र), आइशा रदियल्लाहु अन्हा की तरफ बढ़े और उनकी गर्दन कूटने लगे, और उमर (र), हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा की गर्दन कूटने लगे, और वह दोनों कह रहे थे: तुम रसूलुल्लाह ﷺ से ऐसी चिज़ का मुतालबा करती हो, जो उन के पास नहीं है, उन्होंने कहा: अल्लाह की क़सम! हम रसूलुल्लाह ﷺ से कभी ऐसी चिज़ का मुतालबा नहीं करेगी जो आप के पास न हो, फिर आप एक माह या उनतीस दिन उन से अलग रहे, और फिर यह आयत नाज़िल हुई: “ए नबी! अपने अज़वाज से फरमाइए ...... तुम मुह्सिनात के लिए अजर अज़ीम है”, रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से इब्तिदा फरमाई फ़रमाया: “आइशा में तुम्हारे सामने एक बात पेश करना चाहता होहूँ, और मैं पसंद करता हूँ कि तुझे इस बारे में जल्द बाज़ी नहीं करनी चाहिए जब तक तुम अपने वालिदेन से मशवरा न कर लो”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! वह क्या बात है? आप ने उन्हें वह आयत सुनाई तो उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या मैं आप के बारे में अपने वालिदैन से मशवरा करुँगी! नहीं, बल्कि में अल्लाह, उस के रसूल और दारे आखिरत को इख़्तियार करती हूँ और मैं आप से मुतालबा करती हूँ कि मैंने आप से जो बात की है के आप अपने अज़वाज ए मूतहरात में से किसी एक को मत बताइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझ से तो जो भी पूछोगी में उसे ज़रूर बताऊंगा, क्योंकि अल्लाह ने मुझे (लोगो को) रंज व मशक्कत में मुब्तिला करने के लिए नहीं भेजा बल्कि उस ने मुझे आसानी पैदा करने वाला मुअल्लिम बना कर भेजा है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (٢٩ / ١٤٧٨)3690

٣٢٥٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَائِشَة قَالَت: كنت أغار من اللَّاتِي وَهَبْنَ أَنْفُسَهُنَّ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: أَتَهَبُ الْمَرْأَةُ نَفْسَهَا؟ فَلَمَّا أَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: (تُرْجِي مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤْوِي إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جنَاح عَلَيْك) [ص:٩٧»»] قُلْتُ: مَا أَرَى رَبَّكَ إِلَّا يُسَارِعُ فِي هَوَاكَ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَحَدِيثُ جَابِرٍ: «اتَّقُوا اللَّهَ فِي النِّسَاء» وَذكر فِي «قصَّة حجَّة الْوَدَاع»

3250. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैं इन औरतो की मुजम्मत किया करती थी जिन्होंने अपने आप को रसूलुल्लाह ﷺ के लिए हिब्बा किया था, मैंने कहा: क्या औरत अपने आप को हिब्बा कर सकती है? जब अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फरमाई: “आप उनमें से जिसे चाहे दूर करे और जिसे चाहे अपने तरफ ठिकाना दें और जिन को अलग किया इन में से जिसे चाहे तलब फरमाई तो आप पर कोई गुनाह नहीं”, तो मैंने

आप ﷺ से अर्ज़ किया, मैं आप के रब को देखती हूँ कि वह आप की ख्वाहिश को जल्द पूरा करता है| # और जाबिर (र) से मरवी हदीस " औरतो के मुआमला में अल्लाह से डरो" हज्जतुल वदा के किस्सा में ज़िक्र की गई है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4788) و مسلم (49 / 1464)، (3631) 0 حديث جابر تقدم (2555) فی حديث طويل

बीवियों के साथ रहन सहन और हर एक के हुकुक का बयान • بَابُ عِشْرَةِ النِّسَاءِ

दूसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّانِي

٣٢٥١ - (صَحِيح) عَن عَائِشَة رَضِي الله عَنْهَا أَنَّهَا كَانَتْ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ قَالَتْ: فَسَابَقْتُهُ فَسَبَقْتُهُ عَلَى رِجْلَيَّ فَلَمَّا حَمَلْتُ اللَّحْمَ سَابَقْتُهُ فَسَبَقَنِي قَالَ: «هَذِهِ بِتِلْكَ السَّبْقَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3251. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के वह एक सफ़र मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थी, वह बयान करती हैं, मैंने आप से मुक़ाबला किया तो में दोड़ में आप से आगे बढ़ गई, जब में मोटी हो गई तो मैंने आप ﷺ से मुक़ाबला किया, तब आप मुझसे से आगे निकल गए, आप ﷺ ने फ़रमाया: "ये उस सबकत का बदला हो गया"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2578)

٣٢٥٢ - (صَحِيح) وَعَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِأَهْلِهِ وَأَنَا خَيْرُكُمْ لِأَهْلِي وَإِذَا مَاتَ صَاحِبُكُمْ فَدَعُوهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. والدارمي

3252. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम में से बेहतर वह है जो अपने घरवालो के लिए बेहतर है, और मैं अपने घरवालो के लिए तुम सबसे बेहतर हो, और जब तुम्हारा कोई साथी फौत हो जाए तो उसे छोड़ दो (इस की बुराइया बयान न करो)"| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (3895 وقال : حسن صحيح) و الدارمی (2 / 159 ح 2265)

٣٢٥٣ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ إِلَى قَوْله: «لأهلي»

3253. इब्ने माजा ने इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से (لَاهْلِيْ)) तक रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (1977)

٣٢٥٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمَرْأَةُ إِذَا صَلَّتْ خَمْسَهَا وَصَامَتْ شَهْرَهَا وَأَحْصَنَتْ فَرْجَهَا وَأَطَاعَتْ بَعْلَهَا فَلْتَدْخُلْ مِنْ أَيِّ [ص:٩٧ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ شَاءَتْ» . رَوَاهُ أَبُو نعيم فِي الْحِلْيَة

3254. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब औरत पांचो नमाज़े पढ़े, माहे रमज़ान के रोज़े रखे, अपने शर्मगाह की हिफाज़त करे और अपने खाविंद की इताअत करे तो फिर वह जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाखिल हो जाए”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابو نعيم فی حلية الاولياء (6 / 308) * فيه يزيد الرقاشی : ضعيف و سفيان الثوری مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة عند ابن حبان (الموارد : 1296 ، الاحسان : 4151 / 4163) و احمد (1 / 191 ح 1661) و غيرهما

٣٢٥٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «لَو كُنْتُ آمُرُ أَحَدًا أَنْ يَسْجُدَ لِأَحَدٍ لَأَمَرْتُ الْمَرْأَة أَن تسْجد لزَوجهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3255. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर में किसी को हुक्म देता के वह किसी शख़्स को (बतौर ए ताज़ीम) सजदाह करे तो मैं औरत को हुक्म देता के वह अपने शोहर को सजदाह करे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1159 وقال : حسن غريب)

٣٢٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيُّمَا امْرَأَةٍ مَاتَتْ وَزَوْجُهَا عَنْهَا رَاضٍ دَخَلَتِ الْجَنَّةَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

3256. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो औरत इस हाल में फौत हो के उस का शोहर उस से राज़ी हो तो वह जन्नत में दाखिल होगी”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1161 وقال : حسن غريب)

٣٢٥٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ طَلْقِ بْنِ عَلِيٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا الرَّجُلُ دَعَا زَوْجَتَهُ لِحَاجَتِهِ فَلْتَأْتِهِ وَإِنْ كَانَتْ عَلَى التَّنور» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3257. तलक बिन अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब आदमी अपने अहलिया को अपने हाजत के लिए बुलाए तो उसे उस के पास जाना चाहिए ख्वाह वह तंदूर पर हो”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (1160 وقال : حسن غریب)

٣٢٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " لَا تُؤْذِي امْرَأَةٌ زَوْجَهَا فِي الدُّنْيَا إِلَّا قَالَت زَوجته مِنَ الْحُورِ الْعِينِ: لَا تُؤْذِيهِ قَاتَلَكِ اللَّهُ فَإِنَّمَا هُوَ عِنْدَكِ دَخِيلٌ يُوشِكُ أَنْ يُفَارِقَكِ إِلَيْنَا ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

3258. मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “कोई औरत अपने शोहर को दुनिया में तकलीफ पहुंचाती है तो उसकी बड़ी बड़ी आंखो वाली जन्नती बीवी कहती है: अल्लाह तुझे हलाक करे, इसे तकलीफ न पहुंचा वह तो तेरे पास बस महमान है, वह अनकरीब तुझे छोड़ कर हमारी तरफ चला आएगा”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1174) و ابن ماجه (2014)

٣٢٥٩ - (حسن) وَعَنْ حَكِيمِ بْنِ مُعَاوِيَةَ الْقُشَيْرِيِّ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا حَقُّ زَوْجَةِ أَحَدِنَا عَلَيْهِ؟ قَالَ: «أَنْ تُطْعِمَهَا إِذَا طَعِمْتَ وَتَكْسُوَهَا إِذَا اكْتَسَيْتَ وَلَا تَضْرِبِ الْوَجْهَ وَلَا تُقَبِّحْ وَلَا تَهْجُرْ إِلَّا فِي الْبَيْتِ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

3259. हकिम बिन मुआविया कुशयरी अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! बीवी का खाविंद पर क्या हक़ है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम खाओ तो उसे भी खिलाओ, जब तुम पहनो तो उसे भी पहनाओ, ना उस के चेहरे पर मारो न इसे बुरा भुला कहो और (नाराज़ी पर) सिर्फ घर में उस से अलायेदगी इख़्तियार करो”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (4 / 446447 ح 20257 ، 20262) و ابوداؤد (2142) و ابن ماجه (1850)

٣٢٦٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ لَقِيطِ بْنِ صَبِرَةَ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ لِي امْرَأَةً فِي لِسَانِهَا شَيْءٌ يَعْنِي الْبَذَاءَ قَالَ: «طَلِّقْهَا» . قُلْتُ: إِنَّ لِي مِنْهَا وَلَدًا وَلَهَا صُحْبَةٌ قَالَ: «فَمُرْهَا» يَقُولُ عِظْهَا «فَإِنْ يَكُ فِيهَا خَيْرٌ فَسَتَقْبَلُ وَلَا تَضْرِبَنَّ ظَعِينَتَكَ ضَرْبَكَ أُمَيَّتَكَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3260. लकिट बिन सबुरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मेरी एक बीवी है उसकी ज़ुबान में कुछ (नुक्स) है यानी फहश गो है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे तलाक दे दो”, मैंने अर्ज़ किया: मेरी

उस से औलाद है और उस के साथ एक ताल्लुक है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे वाज़ व नसीहत करो, अगर उस में कोई खैर व भलाई हुई तो वह नसीहत कबूल कर लेगी और अपने अहलिया को लौंडी की तरह न मारो”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (142143)

٣٢٦١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ إِيَاسِ بْنِ عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «لَا تَضْرِبُوا إِمَاءِ اللَّهِ» فَجَاءَ عُمَرُ إِلَى رَسُولِ الله فَقَالَ: ذَئِرْنَ النِّسَاءُ عَلَى أَزْوَاجِهِنَّ فَرَخَّصَ فِي ضَرْبِهِنَّ فَأَطَافَ بَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نِسَاءٌ كَثِيرٌ يَشْكُونَ أَزْوَاجَهُنَّ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَقَدْ طَافَ بِآلِ مُحَمَّدٍ نِسَاءٌ كَثِيرٌ يَشْكُونَ أَزْوَاجَهُنَّ لَيْسَ أُولَئِكَ بِخِيَارِكُمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه والدارمي

3261. इयास बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की लोंदियो (अपनी बीवियों) को न मारो”, उमर रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, औरते अपने खाविंदो पर जिरात (जुर्रत) करने लगी है, तब आप ने उन्हें मारने के मुतल्लिक रुखसत दी बहोत सी औरते मुहम्मद ﷺ की अज़वाज ए मूतहरात के पास अपने खाविंदो की शिकायत लेकर आई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बहोत सी औरते अपने खाविंदो की शिकायत लेकर मुहम्मद ﷺ की अज़वाज के पास आई है ऐसे लोग (जो अपने अज़वाज को मारते है) तुम में से बेहतर नहीं है”| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (2146) و ابن ماجه (1985) و الدارمی (2 / 147 ح 2225)

٣٢٦٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَ مِنَّا مَنْ خَبَّبَ امْرَأَةً عَلَى زَوْجِهَا أَوْ عَبْدًا عَلَى سَيّده» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3262. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स किसी औरत को उस के खाविंद के खिलाफ या गुलाम को उस के आका के खिलाफ भड़काए वह हम में से नहीं”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (5170)

٣٢٦٣ - (ضَعِيف) وَعَن عَائِشَة رَضِي الله عَنهُ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِنَّ مِنْ أَكْمَلِ الْمُؤْمِنِينَ إِيمَانًا أَحْسَنُهُمْ خُلُقًا وألطفهم بأَهْله» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3263. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मोमिनो में से कामिल(सर्वोत्तम) ईमान वाला शख़्स वह है जो उनमें से अच्छे अख़लाक़ वाला और अपने घरवालो के साथ ज़्यादा मेहरबान है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (2612 وقال : حسن) * ابو قلابة لم يسمع من عائشة رضى الله عنها و للحديث شواهد كثيرة دون قوله :’’ و الطفهم ،،،‘‘ و انظر الحديث الآتى : 3264

٣٢٦٤ - وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَكْمَلُ الْمُؤْمِنِينَ إِيمَانًا أَحْسَنُهُمْ خُلُقًا وَخِيَارُكُمْ خِيَارُكُمْ لِنِسَائِهِمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ وَرَوَاهُ أَبُو دَاوُد إِلَى قَوْله «خلقا»

3264. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मोमिनो में से कामिल(सर्वोत्तम) ईमान वाला वह शख़्स है जो इन में से अच्छे अख़लाक़ वाला है, और तुम में से बेहतर वह है जो अपने औरतो के लिए बेहतर है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| और इमाम अबू दावुद ने इसे (خُلُقًا) तक रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (1162) و ابوداؤد (4682)

٣٢٦٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ غَزْوَة تَبُوك أَو حنين وَفِي سَهْوَتِهَا سِتْرٌ فَهَبَّتْ رِيحٌ فَكَشَفَتْ نَاحِيَةَ السِّتْرِ عَنْ بَنَاتٍ لِعَائِشَةَ لُعَبٍ فَقَالَ: «مَا هَذَا يَا عَائِشَةُ؟» قَالَتْ: بَنَاتِي وَرَأَى بَيْنَهُنَّ فَرَسًا لَهُ جَنَاحَانِ مِنْ رِقَاعٍ فَقَالَ: «مَا هَذَا الَّذِي أَرَى وَسْطَهُنَّ؟» قَالَتْ: فَرَسٌ قَالَ: «وَمَا الَّذِي عَلَيْهِ؟» قَالَتْ: جَنَاحَانِ قَالَ: «فَرَسٌ لَهُ جَنَاحَانِ؟» قَالَتْ: أَمَا سَمِعْتَ أَنَّ لِسُلَيْمَانَ خَيْلًا لَهَا أَجْنِحَةٌ؟ قَالَتْ: فَضَحِكَ حَتَّى رَأَيْتُ نَوَاجِذَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3265. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ गज़वा ए तबूक या गज़वा ए हुनैन से वापस तशरीफ़ लाए, और उन (आइशा (र)) की अलमारी पर परदा था, हवा चली तो उस ने आइशा रदियल्लाहु अन्हा की गुड़ियों और खिलोनो से परदा हटा दीया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “आइशा! यह क्या है?” उन्होंने अर्ज़ किया, मेरी गुड़िया है, आप ने उनमें एक घोड़ा देखा जिसके कपड़े से बने हुए दो पर थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं उन के दरमियान में यह क्या देख रहा हूँ ?” उन्होंने अर्ज़ किया, घोड़ा है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “और जो उस के ऊपर है, वह क्या है?” उन्होंने अर्ज़ किया, दो पर है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “घोड़ा और उस के दो पर !‘‘ उन्होंने अर्ज़ किया, क्या आप ने नहीं सुना के सुलेमान अलैहिस्सलाम का एक घोड़ा था जिसके पर थे”, वह बयान करती हैं, यह सुन कर आप मुस्कुरा दिए हत्ता के मैंने आप ﷺ की दाढ़े देखी| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (4932)

بَابُ عِشْرَةِ النِّسَاءِ • बीवियों के साथ रहन सहन और हर एक के हुकुक का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٢٦٦ - (ضَعِيف) عَنْ قَيْسِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: أَتَيْتُ الْحِيرَةَ فَرَأَيْتُهُمْ يَسْجُدُونَ لِمَرْزُبَانٍ لَهُمْ فَقُلْتُ: لَرَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم أَحَق أَن يسْجد لَهُ فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: إِنِّي أَتَيْتُ الْحِيرَةَ فَرَأَيْتُهُمْ يَسْجُدُونَ لِمَرْزُبَانٍ لَهُمْ فَأَنْتَ أَحَقُّ بِأَنْ يُسْجَدَ لَكَ فَقَالَ لِي: «أَرَأَيْتَ لَوْ مَرَرْتَ بِقَبْرِي أَكُنْتَ تَسْجُدُ لَهُ؟» فَقُلْتُ: لَا فَقَالَ: «لَا تَفْعَلُوا لَو كنت آمُر أحد أَنْ يَسْجُدَ لِأَحَدٍ [ص:٩٧ لَأَمَرْتُ النِّسَاءَ أَنْ يَسْجُدْنَ لِأَزْوَاجِهِنَّ لِمَا جَعَلَ اللَّهُ لَهُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ حق» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3266. कैस बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं हीरा पहुंचा तो मैंने वहां के बासिंदों को अपने सिपेसालार को सजदाह करते हुए देखा तो मैंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ का ज़्यादा हक़ है के उन्हें सजदाह किया जाए, मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो अर्ज़ किया, मैं हीरा गया था मैंने वहां के बासिंदों को अपने सिपेसालार को सजदाह करते हुए देखा, आप ज़्यादा हक़दार है की आप को सजदाह किया जाए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे बताओ अगर तुम मेरी कब्र के पास से गुज़रो तो क्या तूम उसे सजदाह करोगे ?” मैंने अर्ज़ किया: नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मत करो, अगर में किसी को हुक्म देता के वह किसी को सजदाह करे तो मैं औरतो को हुक्म देता के वह अपने खाविंदो को सजदाह करे इसलिए के अल्लाह ने उन्हें इन पर हक़ अता किया है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2140) [و صححه الحاكم (2 / 187) و وافقه الذهبى] * شريک القاضى صرح بالسماع عند البيهقى (7 / 291) و للحديث شواهد

٣٢٦٧ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ أَحْمد عَن معَاذ بن جبل

3267. इमाम अहमद ने इसे मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه احمد (5 / 227228 ح 22335) * السند منقطع وله شواهد منها الحديث السابق (3266)

٣٢٦٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يُسْأَلُ الرَّجُلُ فِيمَا ضَرَبَ امْرَأَتَهُ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجه

3268. उमर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “खाविंद से दरियाफ्त न किया जाए के उस ने अपने बीवी को क्यों मारा है”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (2147) و ابن ماجه (1986)

٣٢٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ عِنْده فَقَالَت: زَوْجِي صَفْوَانُ بْنُ الْمُعَطَّلِ يَضْرِبُنِي إِذَا صَلَّيْتُ وَيُفَطِّرُنِي إِذَا صُمْتُ وَلَا يُصَلِّي الْفَجْرَ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ قَالَ: وَصَفْوَانُ عِنْدَهُ قَالَ: فَسَأَلَهُ عَمَّا قَالَت فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَمَّا قَوْلُهَا: يَضْرِبُنِي إِذَا صَلَّيْتُ فَإِنَّهَا تَقْرَأُ بِسُورَتَيْنِ وَقَدْ نَهَيْتُهَا قَالَ: فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ كَانَتْ سُورَةً وَاحِدَةً لَكَفَتِ النَّاسَ» . قَالَ: وَأَمَّا قَوْلُهَا يُفَطِّرُنِي إِذَا صُمْتُ فَإِنَّهَا تَنْطَلِقُ تَصُوم وَأَنا رجل شَاب فَلَا أَصْبِر فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَصُومُ امْرَأَةٌ إِلَّا بِإِذْنِ زَوْجِهَا» وَأَمَّا قَوْلُهَا: إِنِّي لَا أُصَلِّي حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ فَإِنَّا أهل بَيت قد عرف لنا ذَاك لَا نَكَادُ نَسْتَيْقِظُ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ قَالَ: «فَإِذَا اسْتَيْقَظْتَ يَا صَفْوَانُ فَصَلِّ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

3269. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर थे की एक औरत आप के पास आई तो उस ने अर्ज़ किया, मेरा खाविंद सफवान बिन मुअटल, जब में नमाज़ पढ़ती हो तो वह मुझे मारता है, जब में (नफ्ली) रोज़ा रखती हो तो वह मुझे इफ्तार करने का हुक्म देता है, और वह सूरज तुलुअ होने पर नमाज़ ए फजर पढ़ता है, रावी बयान करते हैं, सफवान आप ﷺ के पास ही था, रावी ने कहा: आप ने इस चीज़ के मुतल्लिक जो इस (औरत) ने कहा था सफवान से दरियाफ्त किया, तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! रहा उस का यह कहना की जब में नमाज़ पढ़ती हो तो वह मुझे मारता है, उसकी वजह यह है कि यह दो सूरते पढ़ती है, हालाँकि मैंने इसे मना किया है, रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने सफवान से फ़रमाया: “अगर एक ही सूरत होती वह लोगों के लिए काफी होती, सफवान ने कहा रहा उस का यह कहना की जब में रोज़ा रखती हूँ तो वह मुझे इफ्तार करा देता है, तो उसकी वजह यह है कि यह रोज़े रखती चली जाती है जबकि में नोजवान आदमी हूँ, मैं (जिमाअ से) रुक नहीं सकता, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “औरत अपने खाविंद की इजाज़त के बगैर (नफ्ली) रोज़े न रखे”, और उस का यह कहना की मैं सूरज तुलुअ होने पर नमाज़ पढ़ता हूँ, उसकी वजह यह है कि हमारे घराने के मुतल्लिक मशहूर है के हम सूरज तुलुअ होने पर ही बेदार होते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सफवान जब तुम बेदार हो तब नमाज़ पढ़ लिया करो”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2459) و ابن ماجه (1762) * الاعمش عنعن

٣٢٧٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ فِي نَفَرٍ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ فَجَاءَ بِعِيرٌ فَسَجَدَ لَهُ فَقَالَ أَصْحَابُهُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ تَسْجُدُ لَكَ الْبَهَائِمُ وَالشَّجَرُ فَنَحْنُ أَحَقُّ أَنْ نَسْجُدَ لَكَ. فَقَالَ: [ص:٩٧ «اعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَأَكْرِمُوا أَخَاكُمْ وَلَوْ كُنْتُ آمُرُ أَحَدًا أَنْ يَسْجُدَ لِأَحَدٍ لَأَمَرْتُ الْمَرْأَةَ أَنْ تَسْجُدَ لِزَوْجِهَا وَلَوْ أَمَرَهَا أَنْ تَنْقُلَ مِنْ جَبَلٍ أَصْفَرَ إِلَى جَبَلٍ أَسْوَدَ وَمِنْ جَبَلٍ أَسْوَدَ إِلَى جَبَلٍ أَبْيَضَ كَانَ يَنْبَغِي لَهَا أَن تفْعَلهُ» . رَوَاهُ أَحْمد

3270. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ मुहाजिर व अंसार की जमाअत में थे की इतने में एक ऊंट आया और उस ने आप को सजदाह किया आप के सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! चोपाये और दरख्त आप को सजदाह करते हैं, जबकि हम तो ज़्यादा हक़दार है के हम आप को सजदाह करे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने रब की इबादत करो और अपने भाई की इज्ज़त करो, अगर में किसी को हुक्म करता के वह किसी को सजदाह करे तो मैं औरत को हुक्म देता के वह अपने खाविंद को सजदाह करे, और अगर वह इसे हुक्म दे के वह असफर पहाड़ (ज़र्द पहाड़) से जबले असवद (काले पहाड़) की तरफ और जबले असवद को जबले उबई की तरफ पत्थर मुन्तकिल कर दे तो उसे चाहिए के वह ऐसे ही करे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (6 / 76 ح 24975) [و ابن ماجه (1852) مختصرًا] * فيه على بن زيد بن جدعان : ضعيف

٣٢٧١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ثَلَاثَةٌ لَا تُقْبَلُ لَهُمْ صَلَاةٌ وَلَا تَصْعَدُ لَهُمْ حَسَنَةٌ الْعَبْدُ الْآبِقُ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَى مَوَالِيهِ فَيَضَعَ يَدَهُ فِي أَيْدِيهِمْ وَالْمَرْأَةُ السَّاخِطُ عَلَيْهَا زَوْجُهَا وَالسَّكْرَانُ حَتَّى يصحو» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

3271. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन किस्म के लोग ऐसे है जिन की न नमाज़ कबूल होती है न और कोई नेकी ऊपर चढ़ती है: मफरुर गुलाम हत्ता के वह अपने मालिको के पास वापस आ जाए, और अपना हाथ उन के हाथ में दे दे, वह औरत जिस पर उस का खाविंद नाराज़ हो, और नशे वाला हत्ता के वह होश में जाए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (8727 ، نسخة محققة : 8353 ، و السنن الكبرى 1 / 389) * الوليد بن مسلم مدلس لم يصرح بالسماع المسلسل وهو شامى روى عن زهير بن محمد و رواية الشاميين عن زهير ضعفة

٣٢٧٢ - (حسن) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قِيلَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيْ النِّسَاءِ خَيْرٌ؟ قَالَ: «الَّتِي تَسُرُّهُ إِذَا نَظَرَ وَتُطِيعُهُ إِذَا أَمَرَ وَلَا تُخَالِفُهُ فِي نَفْسِهَا وَلَا مَالِهَا بِمَا يَكْرَهُ» . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَان

3272. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया गया: कौन सी औरत बेहतर है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो जो अपने खाविंद को खुश कर दे जब वह इसे देखे, और जब इसे हुक्म दे तो वह उसकी इताअत करे और अपने माल व जान में खाविंद की मर्ज़ी के खिलाफ ऐसा काम न करे जो इसे नापसंद हो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائى (6 / 68 ح 3233) و البيهقى فى شعب الايمان (8737)

٣٢٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم قَالَ: " أَربع من أعطيهن

فقد أعطي خير الدُّنْيَا وَالْآخِرَة: قَلْبٌ شَاكِرٌ وَلِسَانٌ ذَاكِرٌ وَبَدَنٌ عَلَى الْبَلَاءِ صَابِرٌ وَزَوْجَةٌ لَا تَبْغِيهِ خَوْنًا فِي نَفسهَا وَلَا مَاله ". رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي شعب الْإِيمَان

3273. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “चार चीज़े ऐसी हैं जिसे मिल जाए तो उसे दुनिया व आखिरत की भलाई मिल गई, शुक्र गुज़ार दिल, ज़िक्र करने वाली ज़ुबान, तकलीफों में सब्र करने वाला बदन और ऐसी औरत जो अपने खाविंद से अपने ज़ात के बारे में और उस के माल के बारे में खयानत की तालिब न हो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (4429 ، نسخة محققة : 4115) * حمید الطویل مدلس و عنعن و اما المؤمل بن اسماعیل فهو صحیح الحدیث عن الثوری و حسن الحدیث عن غیره ، علی الراجح و للحدیث شاهد ضعیف فی تاریخ اصبهان (2 / 167) ولون آخر فی الاوسط للطبرانی (7208) و سنده ضعیف من اجل عنعنة حمید الطویل وجاءعنده موسی بن اسماعیل بدل مؤمل بن اسماعیل (!)

بَاب الْخلْع وَالطَّلَاق • खुला और तलाक का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٢٧٤ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ امْرَأَةَ ثَابِتِ بْنِ قِيسٍ أَتَتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ثَابِتُ بْنُ قَيْسٍ مَا أَعْتِبُ عَلَيْهِ فِي خُلُقٍ وَلَا دِينٍ وَلَكِنِّي أَكْرَهُ الْكُفْرَ فِي الْإِسْلَامِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَتَرُدِّينَ عَلَيْهِ حَدِيقَتَهُ؟» قَالَتْ: نَعَمْ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اقْبَلِ الْحَدِيقَةَ وَطَلِّقْهَا تَطْلِيقَةً» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3274. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के साबित बिन कैस रदियल्लाहु अन्हु की बीवी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे साबित बिन कैस की आदत और दीनदारी पर कोई एतराज़ नहीं लेकिन में इस्लाम में (खाविंद की) नाफ़रमानी को नापसंद करती हूँ, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या तुम उस का बाग़ वापस कर दोगी ?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! रसूलुल्लाह ﷺ ने साबित को कहा: “बाग़ कबूल करो और इसे एक तलाक दे दो”| (बुखारी)

رواه البخاری (5273)

٣٢٧٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ: أَنَّهُ طَلَّقَ امْرَأَةً لَهُ وَهِيَ حَائِضٌ فَذَكَرَ عُمَرُ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَغَيَّظَ فِيهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ: «ليراجعها ثمَّ يمْسِكهَا حَتَّى تطهر ثمَّ تحيض فتطهر فَإِن بدا لَهُ أَنْ يُطَلِّقَهَا فَلْيُطَلِّقْهَا طَاهِرًا قَبْلَ أَنْ يَمَسَّهَا فَتِلْكَ الْعِدَّةُ الَّتِي أَمَرَ اللَّهُ أَنْ تُطَلَّقَ لَهَا النِّسَاءُ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «مُرْهُ فَلْيُرَاجِعْهَا ثُمَّ لْيُطَلِّقْهَا طَاهِرًا أَوْ حَامِلًا»

3275. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उन्होंने अपने बीवी को अय्याम हैज़ में तलाक

दी, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने उस के मुतल्लिक रसूलुल्लाह ﷺ से ज़िक्र किया तो रसूलुल्लाह ﷺ उस पर नाराज़ हुए, और फ़रमाया: “इसे चाहिए के वह रुजू करे, फिर इंतज़ार करे हत्ता के वह (अय्याम हैज़ गुज़रने के बाद) पाक हो जाए, फिर हैज़ आए, फिर पाक हो, फिर अगर इसे तलाक देना चाहे तो इसे हालत तोहर में जिमाअ करने से पहले तलाक दे, यही वह इद्दत है जिसके मुताबिक अल्लाह ने औरतो को तलाक देने का हुक्म फ़रमाया है”| एक दूसरी रिवायत में है: “इसे हुक्म दो की वह रुजू करे फिर इसे हालत तुहर या हमल में तलाक दे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4908) و مسلم (1 / 1471)، (3652)

٣٢٧٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: خَيَّرَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاخْتَرْنَا اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَلَمْ يَعُدَّ ذَلِكَ عَلَيْنَا شَيْئًا

3276. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें इख़्तियार दिया तो हमने अल्लाह और उस के रसूल को मुन्तखब किया, आप ने इसे हमारे मुतल्लिक कुछ भी शुमार न किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5262) و مسلم (24 / 1477)، (3684)

٣٢٧٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: فِي الْحَرَامِ يُكَفِّرُ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ الله أُسْوَة حَسَنَة

3277. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने किसी चीज़ को हराम करार देने पर कफ्फारा अदा करने का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया: “तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल! ﷺ (की ज़िन्दगी) में बेहतरीन नमूना है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4911) و مسلم (18 / 1473)، (3676)

٣٢٧٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَمْكُثُ عِنْدَ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ وَشَرِبَ عِنْدَهَا عَسَلًا فَتَوَاصَيْتُ أَنَا وَحَفْصَةُ أَنَّ أَيَّتَنَا دَخَلَ عَلَيْهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلْتَقُلْ: إِنِّي أَجِدُ مِنْكَ رِيحَ مَغَافِيرَ أَكَلْتَ مَغَافِيرَ؟ فَدَخَلَ عَلَى إِحْدَاهُمَا فَقَالَتْ لَهُ ذَلِكَ فَقَالَ: «لَا بَأْسَ شَرِبْتُ عَسَلًا عِنْدَ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ فَلَنْ أَعُودَ لَهُ وَقَدْ حَلَفْتُ لَا تُخْبِرِي بِذَلِكِ أَحَدًا» يَبْتَغِي مرضاة أَزوَاجه فَنَزَلَتْ: (يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ الله لَك تبتغي مرضاة أَزوَاجك)»» الْآيَة

3278. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ जैनब बिन जहश रदियल्लाहु अन्हा के यहाँ ठहरा करते थे और वहां शहद पिया करते थे, पस मैं और हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा ने तेअ किया के नबी ﷺ जिसके पास भी तशरीफ़ लाए तो वह कहे मुझे आप से मगाफिर (खाने का गोंद जो अर्फत पौधे से निकलता है) की बू आ रही है, क्या आप ने मगाफिर खाया है? चुनांचे आप इन दोनों में से किसी एक के यहाँ तशरीफ़ ले गए तो उस ने आप

से यही कहा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ऐसी कोई बात नहीं, मैंने तो जैनब के यहाँ शहद पिया है, मैं दोबारा इसे नहीं पियूँगा और मैंने हलफ उठा लिया, तुम किसी को उस के मुतल्लिक न बताना”, आप अपनी अज़वाज की रज़ामंदी चाहते थे चुनांचे यह आयत नाज़िल हुई: “ए नबी! आप ﷺ ने इस चीज़ को क्यों हराम करार दिया जिसे अल्लाह ने आप के लिए हलाल करार दिया है, आप अपने अज़वाज की रज़ामंदी चाहते हैं?”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4912) و مسلم (20 / 1474)، (3678)

بَاب الْخلْع وَالطَّلَاق • खुला और तलाक का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٢٧٩ - (صَحِيح) عَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيُّمَا امْرَأَةٍ سَأَلَتْ زَوْجَهَا طَلَاقًا فِي غَيْرِ مَا بَأْسٍ فَحَرَامٌ عَلَيْهَا رَائِحَةُ الْجَنَّةِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

3279. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो औरत बिला वजह अपने खाविंद से तलाक का मुतालबा करे तो उस पर जन्नत की खुशबू हराम है”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (5 / 277 ح 22738) و الترمذی (1187 وقال : حسن) و ابوداؤد (2226) و ابن ماجه (2055) و الدارمی (2 / 162 ح 2275)

٣٢٨٠ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَبْغَضُ الْحَلَالِ إِلَى اللَّهِ الطلاقُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3280. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “हलाल चीजों में से अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा नापसंदीदा चीज़ तलाक है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2178)

٣٢٨١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ [ص:٩٧] قَالَ: «لَا طَلَاقَ قَبْلَ نِكَاحٍ وَلَا عَتَاقَ إِلَّا بَعْدَ مِلْكٍ وَلَا وِصَالَ فِي صِيَامٍ وَلَا يُتْمَ بَعْدَ احْتِلَامٍ وَلَا رَضَاعَ بَعْدَ فِطَامٍ وَلَا صَمْتَ يَوْمٍ إِلَى اللَّيْلِ» . رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ

3281. अली रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “निकाह से पहले तलाक देने,

मिलकियत से पहले आज़ाद करने, मुसलसल रोज़े रखने, बालिग़ होने के बाद यतीम, दूध छुड़ाने के बाद रिज़ाअत और सुबह से रात तक ख़ामोशी इख़्तियार करने का कोई जवाज़ नहीं"| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (9 / 198 ح 2350 و سنده ضعيف جدًا) [و ابوداؤد (2873) مختصرًا و سنده ضعيف] * سفيان الثورى مدلس و عنعن ، روى ايوب بن سويد عنه ، وجويبر : متروک و للحديث شواهد ، لا طلاق قبل نكاح و لا عتاق الا بعد ملک (ابن ماجه : 20482047 حسن)ولا وصال فى صيام (احمد 3 / 62 ح 11619 ، صحيح) ولا يتم بعد احتلام (ضعيف) ولا رضاع بعد خطام (الترمذى : 1152 صحيح) ولا صمت يوم الى الليل (ضعيف)

٣٢٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا نَذْرَ لِابْنِ آدَمَ فِيمَا لَا يَمْلِكُ وَلَا عِتْقَ فِيمَا لَا يَمْلِكُ وَلَا طَلَاقَ فِيمَا لَا يَمْلِكُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَزَادَ أَبُو دَاوُدَ: «وَلَا بَيْعَ إِلَّا فِيمَا يملك»

3282. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "इंसान जिस चिज़ का मालिक नहीं, उस में उस का नज़र देना, आज़ाद करना और तलाक देना मोतबर नहीं है"| और अबू दावुद ने यह अल्फाज़ ज़्यादा किए है: "इंसान जिस चिज़ का मालिक है किसी की बेअ कर सकता है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (1181 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (2190)

٣٢٨٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ رُكَانَةَ بْنِ عَبْدِ يَزِيدَ أَنَّهُ طَلَّقَ امْرَأَتَهُ سُهَيْمَةَ الْبَتَّةَ فَأَخْبَرَ بِذَلِكَ النَّبِيَّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم وَقَالَ: وَالله مَا أردتُ إِلَّا وَاحِدَةً فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَاللَّهِ مَا أَرَدْتَ إِلَّا وَاحِدَةً؟» فَقَالَ ركانةُ: واللَّهِ مَا أردتُ إِلَّا وَاحِدَة فَرَدَّهَا إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَطَلَّقَهَا الثَّانِيَةَ فِي زَمَانِ عُمَرَ وَالثَّالِثَةَ فِي زَمَانِ عُثْمَانَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ إِلَّا أَنَّهُمْ لَمْ يَذْكُرُوا الثانيةَ وَالثَّالِثَة

3283. रुकान बिन अब्द यज़ीद से रिवायत है के उन्होंने अपने अहलिया सुहय्मा को तलाक बत्ता दी, उन्होंने उस के मुतल्लिक नबी ﷺ को बताया और कहा अल्लाह की क़सम! मैंने सिर्फ एक ही का इरादा किया था, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुमने सिर्फ एक ही का इरादा किया था ?" रुकान ने अर्ज़ किया, अल्लाह की क़सम! मैंने एक ही का इरादा किया था", रसूलुल्लाह ﷺ ने सुहय्मा को रुकान की तरफ लौटा दीया, फिर उन्होंने दूसरी तलाक उमर रदियल्लाहु अन्हु के दौर ए हुकूमत में और तीसरी तलाक उस्मान रदियल्लाहु अन्हु के दौरे हुकूमत में दि| अबू दावुद, और तिरमिज़ी, इब्ने माजा दारमी मगर उन्होंने दूसरी और तीसरी तलाक का ज़िक्र नहीं किया| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (2206) و الترمذى (1177) و ابن ماجه (2051) و الدارمى (2 / 162 ح 2277)

٣٢٨٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " ثَلَاثٌ جَدُّهُنَّ جَدٌّ وَهَزْلُهُنَّ جَدٌّ: النِّكَاحُ وَالطَّلَاقُ وَالرَّجْعَةُ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيب

3284. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन चीज़े हकीक़त मैं भी हकीक़त है और मज़ाह मैं भी हकीक़त है: निकाह, तलाक और रुजू”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1184) و ابوداؤد (2194)

٣٢٨٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا طَلَاقَ وَلَا عَتَاقَ فِي إِغْلَاقٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه قيل: معنى الإغلاق: الْإِكْرَاه

3285. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जबर की सूरत में न तलाक मोतबर है और न आज़ाद करना”, और “अग्लाक” का मानी “जबर” है| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (2193) و ابن ماجه (2046) [و النسائی (2046)] * محمد بن عبید بن ابی صالح و ثقه ابن حبان و الحاکم و ضعفه ابو حاتم الرازی و ابن حجر و ضعفه راجح و للحدیث شواھد ضعیفة

٣٢٨٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُّ طَلَاقٍ جَائِزٌ إِلَّا طَلَاقَ الْمَعْتُوهِ وَالْمَغْلُوبِ عَلَى عَقْلِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا [ص:٩٨ حَدِيثٌ غَرِيبٌ وَعَطَاءُ بْنُ عجلانَ الرَّاوِي ضعيفٌ ذاهبُ الحَدِيث

3286. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मजनून और मग्लुब अल अक्ल की तलाक के सिवा हर तलाक वाकेअ हो जाती है”| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| और अता बिन अजलान रावी जईफ है, वह हदीस याद रखने वाला नहीं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جدا ، رواہ الترمذی (1191) * عطاء بن عجلان : متروک بل اطلق علیه ابن معین و الفلاس و غیرهما الکذب

٣٢٨٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " رُفِعَ الْقَلَمُ عَنْ ثَلَاثَةٍ: عَنِ النَّائِمِ حَتَّى يَسْتَيْقِظَ وَعَنِ الصَّبِيِّ حَتَّى يَبْلُغَ وَعَنِ الْمَعْتُوهِ حَتَّى يعقل ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

3287. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तीन शख़्स मरफुअ अल कलाम है, सोया हुआ हत्ता के जाग जाए, बच्चा हत्ता के बालिग़ हो जाए और मजनून हत्ता के वह होश मंद हो जाए”| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (1423 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (4403)

٣٢٨٨ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ الدَّارِمِيُّ عَنْ عَائِشَةَ وَابْنُ مَاجَهْ عَنْهُمَا

3288. दारमी ने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से और इब्ने माजा ने अली रदियल्लाहु अन्हु और आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ الدارمی (2 / 171 ح 2301) و ابن ماجہ (2041 سندہ ضعیف ، فیہ حماد بن ابی سلیمان و ابراھیم النخعی مدلسان و عنعنا ، 2042 سندہ ضعیف ، فیہ القاسم بن یزید مجھول و لم یدرک علیًا رضی اللہ عنہ) [و ابوداؤد (4398) و النسائی (3462)]

٣٢٨٩ - وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «طَلَاقُ الْأَمَةِ تَطْلِيقَتَانِ وَعِدَّتُهَا حَيْضَتَانِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

3289. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “लोंदी की तलाक दो तलाके है और उसकी इद्दत दो हैज़ हैं”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (1182 وقال : غریب) و ابوداؤد (2189) و ابن ماجہ (2080) و الدارمی (2 / 170171 ح 2299)

بَاب الْخلْع وَالطَّلَاق • खुला और तलाक का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٢٩٠ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْمُنْتَزِعَاتُ وَالْمُخْتَلِعَاتُ هُنَّ الْمُنَافِقَاتُ» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

3290. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “नाफ़रमानी करने वालियां और खुला तलब करने वालियां मुनाफ़िक़ हैं”| (सहीह)

رواہ النسائی (6 / 168 ح 3491)

٣٢٩١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ نَافِعٍ عَنْ مَوْلَاةٍ لِصَفِيَّةَ بِنْتِ أَبِي عُبَيْدٍ أَنَّهَا اخْتَلَعَتْ مِنْ زَوْجِهَا بِكُلِّ شَيْءٍ لَهَا فَلَمْ يُنْكِرْ ذَلِكَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عمر. رَوَاهُ مَالك

3291. नाफेअ, सफिया बिन्ते अबी उबैद की आज़ाद करदा लौंडी से रिवायत करते हैं की उस ने अपने हर चीज़ के बदले अपने खाविंद (इब्ने उमर (र अ)) से खुला लिया तो अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने उस का इनकार न किया| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه مالک (2 / 565 ح 1229) * مولاۃ صفیة لاتعرف ، و قول نافع : عن ، بمعنی ان فلا رلاقة لهذه المولاۃ بالسند والله اعلم

٣٢٩٢ - (ضَعِيف) حَدِيث رِجَاله ثِقَات وَعَن مَحْمُود بن لبيد قل: أَخْبَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ رَجُلٍ طَلَّقَ امْرَأَتَهُ ثَلَاثَ تَطْلِيقَاتٍ جَمِيعًا فَقَامَ غَضْبَانَ ثُمَّ قَالَ: «أَيُلْعَبُ بِكِتَابِ اللَّهِ [ص:٩٨ عَزَّ وَجَلَّ وَأَنَا بَيْنَ أَظْهُرِكُمْ؟» حَتَّى قَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَا أَقْتُلُهُ؟ . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

3292. महमूद बिन लबीद बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ को एक आदमी के मुतल्लिक बताया गया के उस ने अपनी बीवी को तीन तलाके एक साथ दे दि है, तो आप ﷺ गुस्से की हालत में खड़े हुए फिर फ़रमाया: “क्या अल्लाह अज्ज़वजल की किताब से खेला जा रहा है जबकि में तुम्हारे दरमियान मौजूद हूँ”, उस पर एक आदमी खड़ा हुआ और उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या मैं उसे क़त्ल न कर दूँ| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه النسائی (6 / 142143 ح 3430) و اعل بما لا یقدح

٣٢٩٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مَالك بلغه رَجُلًا قَالَ لِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ: إِنِّي طَلَّقْتُ امْرَأَتِي مِائَةَ تَطْلِيقَةٍ فَمَاذَا تَرَى عَلَيَّ؟ فَقَالَ ابْن عَبَّاس: طلقت مِنْك ثَلَاث وَسَبْعٌ وَتِسْعُونَ اتَّخَذْتَ بِهَا آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا. رَوَاهُ فِي الْمُوَطَّأ

3293. इमाम मालिक से रिवायत है के उन्हें यह बात पहुंची के एक आदमी ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु से कहा मैंने अपनी बीवी को सौ तलाके दी हैं, आप की इस बारे में क्या राय है? इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: “इसे तेरी तरफ से तीन तलाके तो वाकेअ हो गई, जबकि सत्तानवे के ज़रिए तुमने अल्लाह की आयात के साथ मज़ाक किया| (हसन)

حسن ، رواه مالک (2 / 550 ح 1195) * سنده ضعیف وله شواهد عند البیهقی (7 / 337) و ابی داود (2197) و غیرهما

٣٢٩٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا مُعَاذُ مَا خَلَقَ اللَّهُ شَيْئًا عَلَى وَجْهِ الْأَرْضِ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنَ الْعَتَاقِ وَلَا خَلَقَ اللَّهُ شَيْئًا عَلَى وَجْهِ الْأَرْضِ أَبْغَضَ إِلَيْهِ مِنَ الطَّلَاقِ» . رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيّ

3294. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे हुक्म फ़रमाया: “मुआज़!

अल्लाह ने रुए ज़मीन पर जो कुछ पैदा फ़रमाया है उस में किसी (गुलाम) को आज़ाद करना इसे सबसे ज़्यादा महबूब है, और उस ने रुए ज़मीन पर जो कुछ पैदा फ़रमाया है उस में से तलाक इसे इन्तिहाई नापसंद है”। (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الداقطنی (4 / 35 ح 3939) و البیهقی (7 / 361) * السند منقطع و حمید بن مالک : ضعیف ، و حدیث ابی داود (2178 ، تقدم : 3280) یغنی عن بعضه

بَاب الْمُطلقَة ثَلَاثًا • जिस औरत को तीन तलाक दी जाए इस का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٢٩٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: جَاءَتِ امْرَأَةُ رِفَاعَةَ الْقُرَظِيِّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: إِنِّي كُنْتُ عِنْدَ رِفَاعَةَ فَطَلَّقَنِي فَبَتَّ طَلَاقِي فَتَزَوَّجْتُ بَعْدَهُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ الزُّبَيْرِ وَمَا مَعَهُ إِلَّا مِثْلُ هُدْبَةِ الثَّوْبِ فَقَالَ: «أَتُرِيدِينَ أَنْ تَرْجِعِي إِلَى رِفَاعَةَ؟» قَالَتْ: نَعَمْ قَالَ: «لَا حَتَّى تَذُوقِي عُسَيْلَتَهُ وَيَذُوقَ عُسَيْلَتَكِ»

3295. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रफाअ कुरज़िय्यी की बीवी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई तो उस ने अर्ज़ किया: में रफाअ के निकाह में थी तो उस ने मुझे तीन तलाके दे दी, उस के बाद मैंने अब्दुल रहमान बिन जुबैर से शादी कर ली, लेकिन उस के पास तो कपड़े के पल्लू की तरह है (यानी वह जिमाअ के काबिल नहीं) आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम रफाअ की तरफ वापस जाना चाहती हो?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं? हत्ता कि तुम उस से लुत्फ़ अन्दोज़ हो जाओ और वह तुम से लुत्फ़ अन्दोज़ हो जाए”। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2639) و مسلم (111 / 1433)، (3526)

بَاب الْمُطلقَة ثَلَاثًا • जिस औरत को तीन तलाक दी जाए इस का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٢٩٦ - (صَحِيح) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: لَعَنَ رسولُ الله المحلّلَ والمُحلَّلَ لَهُ. رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

3296. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हलाला करने वाले और जिसके लिए हलाला किया या रहा है दोनों पर लानत फ़रमाई| (सहीह)

صحیح ، رواہ الدارمی (2 / 158 ح 2263) و انظر الحدیث الآتی (3297)

٣٢٩٧ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنْ عَلِيٍّ وَابْنِ عَبَّاسٍ وَعقبَة بن عَامر

3297. इब्ने माजा ने इसे अली रदियल्लाहु अन्हु इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा और उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (सहीह)

صحیح ، رواہ ابن ماجہ (1934 ، عن علی ، 1935 عن ابن عباس و سندہ ضعیف ، 1936 عن عقبۃ بن عامر)

٣٢٩٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ قَالَ: أَدْرَكْتُ بِضْعَةَ عَشَرَ مِنْ أَصْحَابِ [ص:٩٨ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كُلُّهُمْ يَقُولُ: يُوقَفُ الْمُؤْلِي. رَوَاهُ فِي شرح السّنة

3298. सुलेमान बिन यस्सार रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के तकरीबन दस सहाबा से मुलाकात की वह सब कहते थे की इयला करने वाले को पाबंद सलासिल किया जाएगा| (सहीह)

سندہ صحیح ، رواہ البغوی فی شرح السنۃ (9 / 237 ح 2363) [و الشافعی فی الام 5 / 265] * و للحدیث شواھد عند الدارقطنی (2 / 61) و غیرہ

٣٢٩٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي سلمة: أَنَّ سَلْمَانَ بْنَ صَخْرٍ وَيُقَالُ لَهُ: سَلَمَةُ بْنُ صَخْرٍ الْبَيَاضِيُّ جَعَلَ امْرَأَتَهُ عَلَيْهِ كَظَهْرِ أُمِّهِ حَتَّى يَمْضِيَ رَمَضَانُ فَلَمَّا مَضَى نِصْفٌ مِنْ رَمَضَانَ وَقَعَ عَلَيْهَا لَيْلًا فَأَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَ لَهُ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَعْتِقْ رَقَبَةً» قَالَ: لَا أَجِدُهَا قَالَ: «فَصُمْ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ» قَالَ: لَا أَسْتَطِيعُ قَالَ: «أَطْعِمْ سِتِّينَ مِسْكِينًا» قَالَ: لَا أَجِدُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِفَرْوَةَ بْنِ عَمْرٍو: «أَعْطِهِ ذَلِكَ الْعَرَقَ» وَهُوَ

مِكْتَلٌ يَأْخُذُ خَمْسَةَ عَشَرَ صَاعًا أَوْ سِتَّةَ عَشَرَ صَاعا «لِيُطعِمَ سِتِّينَ مِسْكينا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3299. अबू सलमा से रिवायत है के सलमान बिन सखर उन्हें सलमा बिन सखर बयाज़ी भी कहा जाता है, ने अपने बीवी को पूरा रमज़ान अपने ऊपर अपने माँ की पुश्त की तरह करार दे लिया, जब आधा रमज़ान गुज़र गया तो एक रात उस ने उस से जिमाअ कर लिया, फिर वह रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस के मुतल्लिक आप से ज़िक्र किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: “एक गुलाम आज़ाद करो”, उस ने अर्ज़ किया, मेरे पास कोई गुलाम नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “दो माह के मुसलसल रोज़े रखो”, उस ने अर्ज़ किया, मैं इस्तिताअत नहीं रखता आप ﷺ ने फ़रमाया: “साठ मिस्कीनो को खाना खिलाओ”, उस ने अर्ज़ किया, मैं ताकत नहीं रखता तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरवत बिन अम्र से फ़रमाया: “इसे पन्द्रह साअ या सोलह (तकरीबन चालीस किलो) वाला खजूरो का टोकरा दे दो ताकि वह साठ मिस्कीनो को खीला दे”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1200 وقال : حسن)

٣٣٠٠ - (لم تتمّ دراسته) وروى أَبُو دَاوُد وابنُ مَاجَه والدارمي عَن سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ صَخْرٍ نحوَه قَالَ: كنتُ امْرأ أُصِيبُ مِنَ النِّسَاءِ مَا لَا يُصِيبُ غَيْرِي وَفِي روايتهما أَعنِي أَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيَّ: «فَأَطْعِمْ وَسْقًا مِنْ تَمْرٍ بَيْنَ سِتِّينَ مِسْكينا»

3300. अबू दावुद इब्ने माजा और दारमी ने सुलेमान बिन यस्सार के तरीक से सलमा बिन सखर से इसी तरह रिवायत किया है, उन्होंने कहा: मुझे जिस क़दर औरतो से लगाव था इतना लगाव मेरे सिवा किसी को न था, और इन दोनों यानी अबू दावुद और दारमी की रिवायत में है: “एक वुसक (साठ साअ) खजूरे साठ मिस्कीनो को खिलाओ”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2213) و ابن ماجه (2062) و الدارمی (2 / 162163 ح 2278) * ابن اسحاق مدلس و عنعن

٣٣٠١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ عَنْ سَلَمَةَ بْنِ صَخْرٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمُظَاهِرِ يُوَاقِعُ قَبْلَ أَنْ يُكَفِّرَ قَالَ: «كَفَّارَة وَاحِدَة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

3301. सुलेमान बिन यस्सार सलमा बिन सखर की सनद से नबी ﷺ से, जिहार करने वाले के मुतल्लिक जो कफ्फारा देने से पहले जिमाअ कर ले, रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: “एक ही कफ्फारा है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (1198 وقال : حسن غریب) و ابن ماجه (2064) * سلیمان بن یسار لم یسمع من سلمة بن صخر رضی الله عنه

बَاب الْمُطلقَة ثَلَاثًا • जिस औरत को तीन तलाक दी जाए इस का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٣٠٢ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ رَجُلًا ظَاهَرَ مِنِ امْرَأَتِهِ فَغَشِيَهَا قَبْلَ أَنْ يَكَفِّرَ فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ: «مَا حَمَلَكَ عَلَى ذَلِكَ؟» قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ رَأَيْتُ بَيَاضَ حِجْلَيْهَا فِي الْقَمَرِ فَلَمْ أَمْلِكْ نَفْسِي أَنْ وَقَعَتُ عَلَيْهَا فَضَحِكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَمَرَهُ أَنْ لَا يَقْرَبَهَا حَتَّى يُكَفِّرَ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ. وَرَوَى التِّرْمِذِيُّ نَحْوَهُ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيبٌ»» وَرَوَى أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ نَحْوَهُ مُسْنَدًا وَمُرْسَلًا وَقَالَ النَّسَائِيُّ: المُرسل أوْلى بالصَّوابِ من المسْندِ

3302. इकरिमा इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं की एक आदमी ने अपने बीवी से जिहार किया तो उस ने कफ्फारा अदा करने से पहले उस से जिमाअ कर लिया, फिर वह नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने उस के मुतल्लिक आप को बताया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हें किस चीज़ ने उस पर अमादा किया ?” उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने चांदनी रात में उसकी पायजेब की सफेदी देखी तो मुझ से रहा न गया और मैं उस से हम बिस्तर हो गया, रसूलुल्लाह ﷺ मुस्कुरा दिए और इसे हुक्म फ़रमाया के वह कफ्फारा अदा करने से पहले उस के करीब न जाए, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने भी इसी तरह रिवायत किया है, और फ़रमाया यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है, और इमाम अबू दावुद और इमाम नसई ने इसी मिसल मुसनद और मुरसल रिवायत किया है, और इमाम नसई ने फ़रमाया: मुरसल दुरुस्त होने में मुसनद से औला है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابن ماجه (2065) و الترمذی (1199) و ابوداؤد (2221) و النسائی (6 / 167 ح 3487 مسندًا و ح 3488 مرسلاً)

بَاب فِي كَون الرَّقَبَة فِي الْكَفَّارَة مُؤمنَة • इस बात का बयान की मोमिन लोंडी को आज़ाद करना कफ्फारा है

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٣٠٣ - (صَحِيح) عَن مُعَاوِيَة بِن الحكمِ قَالَ: أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ جَارِيَةً كَانَتْ لِي تَرْعَى غَنَمًا لِي فَجِئْتُهَا وَقَدْ فَقَدَتْ شَاةً مِنَ الْغَنَمِ فَسَأَلْتُهَا عَنْهَا فَقَالَتْ: أَكَلَهَا الذِّئْبُ فَأَسِفْتُ عَلَيْهَا وَكُنْتُ مَنْ بَنِي آدَمَ فَلَطَمْتُ وَجْهَهَا وَعَلَيَّ رَقَبَةٌ أَفَأُعْتِقُهَا؟ فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيْنَ اللَّهُ؟» فَقَالَتْ: فِي السَّمَاءِ فَقَالَ: «مَنْ أَنَا؟» فَقَالَتْ: أَنْتَ رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَعْتِقْهَا» . رَوَاهُ مَالِكٌ»» وَفِي رِوَايَةِ مُسْلِمٍ قَالَ: كَانَتْ لِي جَارِيَةٌ تَرْعَى غَنَمًا لِي قِبَلَ أُحُدٍ وَالْجَوَّانِيَّةِ فَاطَّلَعْتُ ذَاتَ يَوْمٍ فَإِذَا الذِّئْبُ قَدْ ذَهَبَ بِشَاةٍ مِنْ غَنَمِنَا وَأَنَا رَجُلٌ مِنْ بَنِي آدَمَ آسَفُ كَمَا يَأْسَفُونَ لَكِنْ صَكَكْتُهَا صَكَّةً فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَعَظَّمَ ذَلِكَ عَلَيَّ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أفَلا أُعتِقُها؟ قَالَ: «ائتِنِي بهَا؟» فأتيتُه بِهَا فَقَالَ لَهَا: «أَيْنَ اللَّهُ؟» قَالَتْ: فِي السَّمَاءِ قَالَ: «مَنْ أَنَا؟» قَالَتْ: أَنْتَ رَسُولُ الله قَالَ: «أعتِقْها فإنَّها مؤْمنةٌ»

3303. मुआविया बिन हकम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरी एक लौंडी मेरी बकरिया चराती थी में उस के पास आया तो मैंने एक बकरी न पाई, मैंने उस के मुतल्लिक उस से पूछा तो उस ने कहा: इसे भेड़िये ने खा लिया है, मैं उस से नाराज़ हुआ, चूँकि में औलादे आदम से हूँ, मैंने उस के चेहरे पर थप्पड़ मार दिया, (और किसी वजह से) गुलाम आज़ाद करना मुझ पर वाजिब है, क्या मैं उसे आज़ाद कर दूँ? रसूलुल्लाह ﷺ ने इस लौंडी से पूछा: "अल्लाह कहाँ है?" उस ने कहा आसमान में, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं कौन हूँ ?" उस ने अर्ज़ किया, आप अल्लाह के रसूल हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "इसे आज़ाद कर दो", यह मालिक की रिवायत है, और मुस्लिम की रिवायत में है: उन्होंने (मुआविया बिन हकम (र)) ने कहा मेरी एक लौंडी थी जो उहद और जौवानिया की तरफ मेरी बकरिया चराया करती थी, एक रोज़ मैंने देखा के भेड़िया हमारी बकरियों में से एक बकरी ले गया, चूँकि में आदम की औलाद से हूँ, मैं भी नाराज़ होता हूँ जैसे वह नाराज़ होते हैं, इसलिए मैंने इसे एक थप्पड़ मार दिया फिर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ (और सारा वाकिए सुनाया) आप ने मेरी इस हरकत को बड़ा जुर्म करार दिया, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या मैं उसे आज़ाद न कर दूँ? आप ﷺ ने फ़रमाया: "इसे मेरे पास लाओ", मैं उसे आप के पास ले आया तो आप ﷺ ने उस से पूछा: "अल्लाह कहाँ है?" उस ने अर्ज़ किया, आसमान में, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं कौन हूँ ?" उस ने कहा: आप अल्लाह के रसूल हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "इसे आज़ाद कर दो क्योंकि यह मुसलमान है"| (सहीह,मुस्लिम)

صحيح ، رواه مالک (2 / 776777 ح 1550 ببعض الاختلاف) و مسلم (33 / 537)

بَاب اللّعان • लिआन का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٣٣٠٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنهُ قَالَ: إِن عُوَيْمِر الْعَجْلَانِيِّ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ رَجُلًا وجدَ معَ امرأتِهِ رجُلاً أيقْتُله فيَقْتُلُونه؟ أَمْ كَيفَ أفعل؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «قدْ أُنْزِلُ فِيكَ وَفِي صَاحِبَتِكَ فَاذْهَبْ فَأْتِ بِهَا» قَالَ سَهْلٌ: فَتَلَاعَنَا فِي الْمَسْجِدِ وَأَنَا مَعَ النَّاسِ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا فَرَغَا قَالَ عُوَيْمِرٌ: كَذَبْتُ عَلَيْهَا يَا رسولَ اللَّهِ إِن أَمْسكْتُها فطلقتها ثَلَاثًا ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " انْظُرُوا فَإِنْ جَاءَتْ بِهِ أَسْحَمَ أَدْعَجَ الْعَيْنَيْنِ عَظِيمَ الْأَلْيَتَيْنِ خَدَلَّجَ السَّاقَيْنِ فَلَا أحسب عُوَيْمِر إِلَّا قَدْ صَدَقَ عَلَيْهَا وَإِنْ جَاءَتْ بِهِ أُحَيْمِرَ كَأَنَّهُ وَحَرَةٌ فَلَا أَحْسِبُ عُوَيْمِرًا إِلَّا قَدْ [ص:٩٨ كَذَبَ عَلَيْهَا فَجَاءَتْ بِهِ عَلَى النَّعْتِ الَّذِي نَعْتُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ تَصْدِيقِ عُوَيْمِرٍ فَكَانَ بَعْدُ يُنْسَبُ إِلَى أمه

3304. सहल बिन साद साअदि रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि उवयमिर अज्लानी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! इस शख़्स के बारे में बताइए जो अपने बीवी के साथ किसी मर्द को पाए, क्या यह इसे क़त्ल कर दे, इस सूरत में वह (मकतुल के वुरसा) उस को क़त्ल कर देंगे या इसे क्या करना चाहिए? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तेरे और तेरी बीवी के बारे में हुक्म नाज़िल हो चूका है, तुम उसे लेकर आओ”, सहल बयान करते हैं, इन दोनों ने मस्जिद में लिआन किया, और मैं लोगों के साथ रसूलुल्लाह ﷺ के पास था, जब वह दोनों फारिग़ हुए तो उवयमिर ने कहा: अल्लाह के रसूल! अगर में उसे रख लु तो उस का मतलब होगा मैंने उस पर झूठ बांधा, उस ने इसे तीन तलाके दे दी, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इंतज़ार करो और देखो अगर वह सियाह रंग मोटी मोटी और खूब सियाह आंखो वाले सुरिन बड़े बड़े और मोटी मोटी पिंडलियों वाले, बच्चे को जन्म दे तो फिर मैं समझूंगा के उवयमिर ने उस के मुतल्लिक सच कहा है, और अगर वह सुर्ख रंग का हुआ गोया के वह ज़हरीली छिपकली है तो में समझूंगा के उवयमिर ने इस औरत पर झूठ बांधा है”, इस औरत ने इस तरह के बच्चे को जन्म दीया जिस तरह की सिफात रसूलुल्लाह ﷺ ने उवयमिर की तस्दीक के मुतल्लिक बयान फरमाई थी, उस के बाद इस बच्चे को उसकी माँ की तरफ मंसूब किया जाता था| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4745) و مسلم (1 / 1492)، (3743)

٣٣٠٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَاعن بَين رجل وَامْرَأَته فانتقى مِنْ وَلَدِهَا فَفَرَّقَ بَيْنَهُمَا وَأَلْحَقَ الْوَلَدَ بِالْمَرْأَةِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي حَدِيثِهِ لَهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَظَهُ وَذَكَّرَهُ وَأَخْبَرَهُ أَنَّ عَذَابَ الدُّنْيَا أَهْوَنُ مِنْ عَذَابِ الْآخِرَةِ ثُمَّ دَعَاهَا فَوَعَظَهَا وَذَكَّرَهَا وَأَخْبَرَهَا أَنَّ عَذَاب الدُّنْيَا أَهْون من عَذَاب الْآخِرَة

3305. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने शोहर और उसकी बीवी के दरमियान लिआन कराया, इस (आदमी) ने उस के बच्चे को कबूल करने से इनकार कर दिया तो आप ने इन दोनों के दरमियान

तफरीक करा दी और बच्चे को औरत के हवाले कर दिया| और इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा की सहीहैन की हदीस में है की रसूलुल्लाह ﷺ ने पहले शोहर को वाज़ व नसीहत की और इसे बताया की दुनिया का अज़ाब आखिरत के अज़ाब से बहोत हल्का है, फिर आप ﷺ ने इस औरत को बुलाया और इसे भी वाज़ व नसीहत की और इसे भी बताया की दुनिया का अज़ाब आखिरत के अज़ाब से बहोत हल्का है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5315) و مسلم (8 / 1494 ، 4 / 1493)، (3746 و 3752)

٣٣٠٦ - (صَحِيح) وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِلْمُتَلَاعِنَيْنِ: «حِسَابُكُمَا عَلَى اللَّهِ أَحَدُكُمَا كَاذِبٌ لَا سَبِيلَ لَكَ عَلَيْهَا» قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَالِي قَالَ: «لَا مَالَ لَكَ إِنْ كُنْتَ صَدَقْتَ عَلَيْهَا فَهُوَ بِمَا اسْتَحْلَلْتَ مِنْ فَرْجِهَا وَإِنْ كُنْتَ كَذَبْتَ عَلَيْهَا فَذَاكَ أَبْعَدُ وَأَبْعد لَك مِنْهَا»

3306. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने लिआन करने वालो से फ़रमाया: “तुम्हारा हिसाब अल्लाह के जिम्मे है, तुम दोनों में से एक झूठा है, अब तुम्हारा इस (औरत) पर कोई हक़ नहीं”, इस (आदमी) ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरा माल (जो महर में दिया था)? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हें माल का कोई हक़ नहीं, अगर तुमने उस के मुतल्लिक सच्ची बात कही तो वह (माल) उस का बदल है जो तुमने उस से हम बिस्तरी की है, और अगर तुमने उस के मुतल्लिक झूठी बात कही तो फिर इस (महेर) का लौटना तुम्हारे लिए बईद है और तेरा उस से मुतालबा करना बईद है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5350) و مسلم (5 / 1493)، (3748)

٣٣٠٧ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ هِلَالَ بْنَ أَمَيَّةَ قَذَفَ امْرَأَتَهُ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِشَرِيكِ بْنِ سَحْمَاءَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْبَيِّنَةَ أَوْ حَدًّا فِي ظَهْرِكَ» فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِذَا رَأَى أَحَدُنَا عَلَى امْرَأَتِهِ رَجُلًا يَنْطَلِقُ يَلْتَمِسُ الْبَيِّنَةَ؟ فَجَعَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الْبَيِّنَةَ وَإِلَّا حَدٌّ فِي ظَهْرِكَ» فَقَالَ هِلَالٌ: وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ إِنِّي لَصَادِقٌ فَلَيُنْزِلَنَّ اللَّهُ مَا يُبَرِّئُ ظَهْرِي مِنَ الْحَدِّ فَنَزَلَ جِبْرِيلُ وَأنزل عَلَيْهِ: (وَالَّذين يرْمونَ أَزْوَاجهم)»» فَقَرَأَ حَتَّى بَلَغَ (إِنْ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ)»» فَجَاءَ هِلَالٌ [ص:٩٨ فَشَهِدَ وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ أَنَّ أَحَدَكُمَا كَاذِبٌ فَهَلْ مِنْكُمَا تَائِبٌ؟» ثُمَّ قَامَتْ فَشَهِدَتْ فَلَمَّا كَانَتْ عِنْدَ الْخَامِسَةِ وَقَفُوهَا وَقَالُوا: إِنَّهَا مُوجِبَةٌ فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَتَلَكَّأَتْ وَنَكَصَتْ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهَا تَرْجِعُ ثُمَّ قَالَتْ: لَا أَفْضَحُ قَوْمِي سَائِرَ الْيَوْمِ فَمَضَتْ وَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَبْصِرُوهَا فَإِنْ جَاءَتْ بِهِ أَكْحَلَ الْعَيْنَيْنِ سَابِغَ الْأَلْيَتَيْنِ خَدَلَّجَ السَّاقِينَ فَهُوَ لِشَرِيكِ بْنِ سَحْمَاءَ» فَجَاءَتْ بِهِ كَذَلِكَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْلَا مَا مَضَى مِنْ كِتَابِ اللَّهِ لَكَانَ لِي وَلَهَا شَأْنٌ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3307. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के हिलाल बिन उमय्य ने नबी ﷺ के पास अपने बीवी पर शरीक बिन सहमाअ के साथ ज़िना की तोहमत लगाइ तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “सबूत पेश करो, वरना तेरी पुश्त पर हद काइम होगी”, उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! जब हम में से कोई अपने बीवी को हालत ज़िना में देखे तो क्या यह गवाह तलाश करने चला जाए? नबी ﷺ ने फ़रमाया: “गवाह पेश करो वरना तुम्हारी पुश्त

पर हद काइम की जाएगी", हिलाल रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हक़ के साथ मबउस फ़रमाया है! मैं यक़ीनन सच्चा हूँ, अल्लाह ऐसा हुक्म ज़रूर नाज़िल फरमाएगा जो मुझे हद से बचा लेगा, पस जिब्राइल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और आप ﷺ पर यह आयात नाज़िल फरमाइ: "जो लोग अपने बीवियों पर तोहमत लगाते हैं .... अगर वह सच्चो में से है", हिलाल आए तो उन्होंने गवाही दी (यानी लीआन किया) जबकि नबी ﷺ फरमा रहे थे: "यक़ीनन तुम में से एक झूठा है तो क्या यह तौबा करने के लिए तैयार है?" फिर औरत खड़ी हुई तो उस ने गवाही दी (लीआन किया) जब वह पाँचवीं गवाही पर पहुंचे तो उन्होंने इसे रोका और उन्होंने कहा के यह (पांचवी गवाही) वाजिब करने वाली है? इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: उस ने तवक्क़फ़ किया और ख़ामोशी इख़्तियार की हत्ता के हमने समझा के वह (अपने मुअक्किफ से) रुजू कर लेगी, फिर उस ने कहा: में हमेशा के लिए अपने कौम को रुसवा नहीं करुँगी, चुनांचे उस ने पाँचवीं गवाही भी दे दी तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: "इसे देखो अगर यह सरमिली आंखो वाले, बड़े सुरिन वाले और मोटी पिंडलियों वाले बच्चे को जन्म दे तो फिर वह शरीक बिन सहमाअ का है", उस ने इसी तरह के बच्चे को जन्म दिया तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अगर अल्लाह का हुक्म (के लिआन के बाद हद जारी नहीं की जाएगी) पहले से न आया होता तो मैं उसे ज़रूर सज़ा देता"| (बुखारी)

رواه البخارى (4747)

٣٣٠٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ: لَوْ وَجَدْتُ مَعَ أَهْلِي رَجُلًا لَمْ أَمَسَّهُ حَتَّى آتِيَ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ؟ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نَعَمْ» قَالَ: كَلَّا وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ إِنْ كُنْتُ لَأُعَاجِلُهُ بِالسَّيْفِ قَبْلَ ذَلِكَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اسْمَعُوا إِلَى مَا يَقُولُ سَيِّدُكُمْ إِنَّهُ لَغَيُورٌ وَأَنَا أَغْيَرُ مِنْهُ وَالله أغير مني» . رَوَاهُ مُسلم

3308. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सईद बिन अब्बाद रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अगर में किसी आदमी को अपने बीवी के साथ काबिल ए एतराज़ हालत में पाऊ तो क्या मैं इस (आदमी) को हाथ न लगाऊ हत्ता कि मैं चार गवाह लाऊं? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: हाँ !'' उन्होंने अर्ज़ किया, हरगिज़ नहीं, उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हक़ के साथ मबउस फ़रमाया अगर मेरे साथ ऐसा हुआ तो में इस (गवाही) से पहले ही तलवार के ज़रिए उस का काम तमाम करूँगा | रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अपने सरदार की बात गौर से सुनो क्योंकि वह गैरतमंद शख़्स है और मैं उस से ज़्यादा गैरतमंद हूँ जबकि अल्लाह मुझ से ज़्यादा गैरतमंद है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (16 / 1498)، (3763)

٣٣٠٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْمُغِيرَةِ قَالَ: قَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ: لَوْ رَأَيْتُ رَجُلًا مَعَ امْرَأَتِي لَضَرَبْتُهُ بِالسَّيْفِ غَيْرَ مُصْفِحٍ فَبَلَغَ ذَلِكَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «أَتَعْجَبُونَ مِنْ غَيْرَةِ سَعْدٍ؟ وَاللَّهِ لَأَنَا أَغْيَرُ مِنْهُ وَاللَّهُ أَغْيَرُ مِنِّي وَمِنْ أَجْلِ غَيْرَةِ اللَّهِ حَرَّمَ اللَّهُ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلَا أَحَدَ أَحَبُّ إِلَيْهِ الْعُذْرُ مِنَ اللَّهِ مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ بَعَثَ الْمُنْذِرِينَ وَالْمُبَشِّرِينَ وَلَا أَحَدَ أَحَبُّ إِلَيْهِ الْمِدْحَةُ مِنَ اللَّهِ وَمِنْ أَجْلِ ذَلِكَ وَعَدَ اللَّهُ الْجَنَّةَ»

3309. मुगिरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सईद बिन अब्बाद रदियल्लाहु अन्हु ने कहा अगर में अपने बीवी के साथ किसी आदमी को (हालते ज़िना में) देखलूँ तो मैं तलवार की धार के साथ इसे क़त्ल कर दूँ, यह बात रसूलुल्लाह ﷺ तक पहुंची तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम साद की गैरत से ताज्जुब करते हो? अल्लाह की क़सम! मैं उस से ज़्यादा गैरत मंद हो और अल्लाह मुझ से ज़्यादा गैरत मंद है, और अल्लाह ने अपने गैरत ही के बाईस ज़ाहिरी और बातिनी बेहयाई को हराम करार दिया है, और अल्लाह से ज़्यादा कोई शख़्स उज़्र पसंद नहीं करता इसीलिए तो उस ने आगाह करने वाले और खुशखबरी सुनाने वाले (अंबिया (अस)) मबउस फरमाए और अल्लाह से बढ़कर कोई शख़्स मुदह को पसंद नहीं करता, इसीलिए तो अल्लाह ने जन्नत का वादा किया है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7416) و مسلم (17 / 1499)، (3764)

٣٣١٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «إِن اللَّهَ تَعَالَى يَغَارُ وَإِنَّ الْمُؤْمِنَ يَغَارُ وَغَيْرَةُ اللَّهِ أَنْ لَا يَأْتِيَ الْمُؤْمِنُ مَا حَرَّمَ الله»

3310. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तआला गैरत मंद है और बेशक मोमिन भी गैरत मंद है, और अल्लाह की गैरत यह है कि मोमिन अल्लाह की हराम करदा चिज़ का इर्तिकाब न करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5223) و مسلم (36 / 2761)، (6995)

٣٣١١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ أَنَّ أَعْرَابِيًّا أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنَّ امْرَأَتِي ولدَتْ غُلَامًا أسودَ وَإِنِّي نكرته فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلْ لَكَ مِنْ إِبِلٍ؟» قَالَ: نَعَمْ قَالَ: «فَمَا أَلْوَانُهَا؟» قَالَ: حُمْرٌ قَالَ: «هَلْ فِيهَا مِنْ أَوْرَقَ؟» قَالَ: إِنَّ فِيهَا لَوُرْقًا قَالَ: «فَأَنَّى تُرَى ذَلِكَ جَاءَهَا؟» قَالَ: عِرْقٌ نَزَعَهَا. قَالَ: «فَلَعَلَّ هَذَا عِرْقٌ نَزَعَهُ» وَلَمْ يُرَخِّصْ لَهُ فِي الِانْتِفَاءِ مِنْهُ

3311. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आराबी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, मेरी बीवी ने एक सियाह बच्चे को जन्म दिया है, मैंने इसे कबूल करने से इनकार कर दिया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या तेरे पास कुछ ऊंट हैं?” उस ने अर्ज़ किया, हाँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन के रंग कैसे है?‘‘ उस ने अर्ज़ किया, सुर्ख, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या उनमें कोई खाकी रंग का भी है”, उस ने अर्ज़ किया, उनमें खाकी रंग का भी है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारे ख़याल में यह कहाँ से आ गया ?” उस ने अर्ज़ किया, (पुरानी) रग इसे ले आई होगी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुमकिन है यह भी रग हो जो इसे ले आई हो”, और आप ने इसे इस बच्चे से इनकार की इजाज़त नहीं दी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7314) و مسلم (1500)، (3766)

٣٣١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ عُتْبَةُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ عَهِدَ إِلَى أَخِيهِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ: أَنَّ ابْنَ وَلِيدَةِ زَمْعَةَ مِنِّي فَاقْبِضْهُ إِلَيْكَ فَلَمَّا كَانَ عَامُ الْفَتْحِ أَخَذَهُ سَعْدٌ فَقَالَ: إِنَّهُ ابْنُ أَخِي وَقَالَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ: أَخِي فَتَسَاوَقَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ سَعْدٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَخِي كَانَ عَهِدَ إِلَيَّ فِيهِ وَقَالَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ: أَخِي وَابْن وليدة أبي وُلِدَ على فرَاشه فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هُوَ لَكَ يَا عَبْدُ بْنَ زَمْعَةَ الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ وَلِلْعَاهِرِ الْحَجَرُ» ثُمَّ قَالَ لِسَوْدَةَ بِنْتِ زَمْعَةَ: «احْتَجِبِي مِنْهُ» لِمَا رَأَى مِنْ شَبَهِهِ بِعُتْبَةَ فَمَا رَآهَا حَتَّى لَقِيَ اللَّهَ وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ: «هُوَ أَخُوكَ يَا عَبْدُ بْنَ زَمْعَةَ مِنْ أَجْلِ أَنَّهُ وُلِدَ عَلَى فِرَاشِ أَبِيهِ»

3312. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, उत्बा बिन अबी वकास ने अपने भाई सअद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु को वसीयत की के जमअत की लौंडी का लड़का मेरा है, तुम उसे अपने कब्ज़े में ले लेना, चुनांचे जब फतह मक्का का साल हुआ तो साद रदियल्लाहु अन्हु ने इसे ले लिया और कहा: यह मेरा भतीजा है, और अब्द बिन जमअत ने कहा: यह मेरा भाई है, वह दोनों रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए, सअद रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरे भाई ने इस (बच्चे) के बारे में मुझे वसीयत की थी, और अब्द बिन जमअत ने अर्ज़ किया, यह मेरा भाई हैं और मेरे वालिद की लौंडी का बेटा है, उस के बिस्तर पर पैदा हुआ है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अब्द बिन जमअत बच्चा तुम्हें मिलेगा क्योंकि बच्चा इसी का होता है जिसके बिस्तर पर पैदा हुआ हो, जबकि ज़ानि के लिए पत्थर (यानी रजम) है”, फिर आप ﷺ ने सवदा बिन्ते जमअत रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: “उस से परदा किया करो”, आप ﷺ ने यह तब फ़रमाया जब आप ने इस लड़के की उत्बा से मुशाबिहत देखी, उस के बाद उस ने सवदा रदियल्लाहु अन्हा को ता दम ज़ईष्ट नहीं देखा, और एक रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: “अब्द बिन जमअत वह तुम्हारा भाई है, इसलिए के वह उस के वालिद के बिस्तर पर पैदा हुआ है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (2745 ، 4303) و مسلم (36 / 1457)، (3613)

٣٣١٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهَا قَالَتْ: دَخَلَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ذَاتَ يَوْمٍ وَهُوَ مَسْرُورٌ فَقَالَ: " أَيْ عَائِشَةُ أَلَمْ تَرَيْ أَنَّ مُجَزِّزًا الْمُدْلِجِيَّ دَخَلَ فَلَمَّا رَأَى أُسَامَةَ وَزَيْدًا وَعَلَيْهِمَا قطيفةٌ قد غطيَّا رؤوسَهُما وَبَدَتْ أَقْدَامُهُمَا فَقَالَ: إِنَّ هَذِهِ الْأَقْدَامَ بَعْضُهَا من بعضٍ "

3313. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ बड़े खुश खुश मेरे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया: “आइशा क्या तुझे मालुम नहीं के मुजज्ज़िा मुद्लिजा आया हुआ है जब उस ने उसामा और ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा को इस हाल में देखा की इन दोनों पर एक चादर थी और उन्होंने अपने सरो को उस से ढांप रखा था और उन के पाँव नंगे थे उस ने कहा यह पाँव एक दूसरे से है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (6771) و مسلم (38 / 1459)، (3617)

٣٣١٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ وَأَبِي بَكْرَةَ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ ادَّعَى إِلَى غَيْرِ

أَبِيهِ وَهُوَ يَعْلَمُ أَنَّهُ غَيْرُ أَبِيهِ فَالْجَنَّةُ عَلَيْهِ حرَام»

3314. सअद बिन अबी वक्कास रदियल्लाहु अन्हु और अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस शख़्स ने जानते बुजते अपने आप को अपने बाप के अलावा किसी और की तरफ मंसूब किया तो ऐसे शख़्स पर जन्नत हराम है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6766) و مسلم (115 / 63)، (220)

٣٣١٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَرْغَبُوا عَنْ آبَائِكُمْ فَمَنْ رَغِبَ عَنْ أَبِيهِ فقد كفر»»» وَذُكِرَ حَدِيثُ عَائِشَةَ «مَا مِنْ أَحَدٍ أَغْيَرُ من الله» فِي «بَاب صَلَاة الخسوف»

3315. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अपने आबाअ से बे रगबत व एअराज़ न करो, क्योंकि जिस शख़्स ने अपने बाप से एअराज़ किया (और अपने आप को किसी और की तरफ मंसूब किया) उस ने कुफ्र किया"| # आइशा (रअ) से मरवी हदीस: "अल्लाह से बढ़कर कोई गैरत मंद नहीं" सलात अल खलस के बाब में ज़िक्र की गई है (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6768) و مسلم (113 / 62)، (218) 0 حديث عائشة : ما من احد اغير من الله ، تقدم (1483)

لिआन का बयान • بَاب اللّعان

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٣٣١٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ لَمَّا نَزَلَتْ آيَةُ الْمُلَاعَنَةِ: «أَيُّمَا امْرَأَةٍ أَدْخَلَتْ عَلَى قَوْمٍ مَنْ لَيْسَ مِنْهُمْ فَلَيْسَتْ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ وَلَنْ يُدْخِلَهَا اللَّهُ جَنَّتَهُ وَأَيُّمَا رَجُلٍ جَحَدَ وَلَدَهُ وَهُوَ يَنْظُرُ إِلَيْهِ احْتَجَبَ اللَّهُ مِنْهُ وفضَحَهُ على رؤوسِ الْخَلَائِقِ فِي الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ والدارمي

3316. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब लिआन के मुतल्लिक आयत नाज़िल हुई तो उन्होंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जो औरत बच्चे को ऐसी कौम में दाखिल कर दे जिस से उनका नाता नहीं अल्लाह के नज़दीक इस औरत की कोई इज्ज़त नहीं और वह इसे जन्नत में दाखिल नहीं फरमाएगा, और जो शख़्स अपने बच्चे का इनकार कर दे हालाँकि इसे मालुम है के यह बच्चा इसी का है, अल्लाह उस से हिजाब फरमा लेगा और उस को तमाम अव्वल व आख़िर पूरी मखलूक के सामने रुसवा कर देगा"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2263) و النسائی (6 / 179 ح 3511) و الدارمی (2 / 153 ح 2244)

٣٣١٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِن لِي امْرَأَةً لَا تَرُدُّ يَدَ لَامِسٍ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «طَلِّقْهَا» قَالَ: إِنِّي أُحِبُّها قَالَ: «فأمسِكْهَا إِذا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَقَالَ النَّسَائِيُّ: رَفَعَهُ أَحَدُ الرُّوَاةِ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ وَأَحَدُهُمْ لَمْ يرفعهُ قَالَ: وَهَذَا الحَدِيث لَيْسَ بِثَابِت

3317. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने अर्ज़ किया: मेरी बीवी है जो किसी छुने वाले का हाथ नहीं रोकती, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "इसे तलाक दे दो", उस ने अर्ज़ किया, मैं उस से मुहब्बत करता हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: "फिर इसे अपने निकाह में रख", और इमाम नसई रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: किसी रावी ने इसे इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से मरफ़ुअ नकल किया है और किसी ने मर्फ़ुअन ज़िक्र नहीं किया, चुनांचे इमाम नसई कहते हैं यह हदीस साबित नहीं| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2049) و النسائی (6 / 169170 ح 34943495) * سند المرفوع صحيح و اعل بما لا يقدح

٣٣١٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قضى أَن كل مستحلق استحلق بَعْدَ أَبِيهِ الَّذِي يُدْعَى لَهُ ادَّعَاهُ وَرَثَتُهُ فَقَضَى أَنَّ كُلَّ مَنْ كَانَ مِنْ أَمَةٍ يملكهَا يَوْم أَصَابَهَا فقد لحق بِمن استحلقه وَلَيْسَ لَهُ مِمَّا قُسِمَ قَبْلَهُ مِنَ الْمِيرَاثِ شَيْءٌ وَمَا أَدْرَكَ مِنْ مِيرَاثٍ لَمْ يُقْسَمْ فَلَهُ نَصِيبُهُ وَلَا يَلْحَقُ إِذَا كَانَ أَبُوهُ الَّذِي يُدْعَى لَهُ أَنْكَرَهُ فَإِنْ كَانَ مِنْ أَمَةٍ لم يَمْلِكْها أَو من حُرَّةٍ عَاهَرَ بِهَا فَإِنَّهُ لَا يَلْحَقُ بِهِ وَلَا يَرِثُ وَإِنْ كَانَ الَّذِي يُدْعَى لَهُ هُوَ الَّذِي ادَّعَاهُ فَهُوَ وَلَدُ زِنْيَةٍ مِنْ حُرَّةٍ كَانَ أَوْ أَمَةٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

3318. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से नकल करते हैं की नबी ए करीम ﷺ ने इस बच्चे की बाबत फैसला सादिर फ़रमाया जिसे उस के बाप के मरने के बाद उस के वारिसो में शामिल किया गया हो, अगर वह बच्चा ऐसी लौंडी का है के मरने वाले शख़्स ने इस लौंडी से इस वक़्त हम बिस्तरी की थी जब वह इस लौंडी का मालिक था तो वह बच्चा उस के वुरसा में शामिल है उस के पैदा होने से पहले जो विरासत तकसीम हो चुकी उस से वह महरूम रहेगा अलबत्ता पैदा होने के वक़्त जो तर्के मौजूद था उस में से इसे हिस्सा मिलेगा (जिस बच्चे को शामिल किया जा रहा है) अगर उस के वालिद ने मरने से कबल इसे कबूल करने से इनकार कर दिया था तो फिर इस बच्चे को वुरसा में शामिल नहीं किया जाएगा, अगर वह बच्चा ऐसी लौंडी से है जिस का वह मय्यत मालिक नहीं था या वह ऐसी आज़ाद औरत से जो उस के निकाह में न थी तो इस बच्चे को मय्यत की नसब में शामिल नहीं किया जाएगा लिहाज़ा वह बच्चा मय्यत का वारिस नहीं बनेगा, अगरचे इस बच्चे को खुद मय्यत ने अपना बेटा ही क्यों न करार दिया हो क्योंकि वह ज़िना की पैदावार है ख्वाँ लौंडी से हो या आज़ाद औरत से हो"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2265)

٣٣١٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن جابرِ بن عتيكٍ أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ الْغَيْرَةِ مَا يُحِبُّ اللَّهُ وَمِنْهَا مَا يُبْغِضُ اللَّهُ فَأَمَّا الَّتِي يُحِبُّهَا اللَّهُ فَالْغَيْرَةُ فِي الرِّيبَةِ وَأَمَّا الَّتِي يُبْغِضُهَا اللَّهُ فَالْغَيْرَةُ فِي غَيْرِ رِيبَةٍ وَإِنَّ مِنَ الْخُيَلَاءِ مَا يُبْغِضُ اللَّهُ

وَمِنْهَا مَا يُحِبُّ اللَّهُ فَأَمَّا الْخُيَلَاءُ الَّتِي يُحِبُّ اللَّهُ فَاخْتِيَالُ الرَّجُلِ عِنْدَ الْقِتَالِ وَاخْتِيَالُهُ عِنْدَ الصَّدَقَةِ وَأَمَّا الَّتِي يُبْغِضُ اللَّهُ فَاخْتِيَالُهُ فِي الْفَخْرِ» وَفِي رِوَايَةٍ: «فِي الْبَغْيِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

3319. जाबिर बिन अतीक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "गैरत की एक किस्म ऐसी है जिसे अल्लाह पसंद करता है और एक किस्म ऐसी है जिसे अल्लाह पसंद नहीं फरमाता, रही वह जिसे अल्लाह पसंद फरमाता है, वह है जो मक़ाम शक में हो, और रही वह जिसे अल्लाह नापसंद फरमाता है वह गैरत है जो गैर शक (गुमान) में हो और फख्र की एक ऐसी किस्म है जिसे अल्लाह नापसंद करता है, और एक ऐसी किस्म है जिसे अल्लाह पसंद फरमाता है, रहा वह फख्र जिसे अल्लाह पसंद फरमाता है के आदमी का किताल, जिहाद और सदका के वक़्त फख्र करना है और रहा वह जिसे अल्लाह नापसंद फरमाता है तो वह नसब में फख्र करना है" और दूसरी रिवायत में है: "ज़ुल्म में फख्र करना"| (हसन)

حسن ، رواه احمد (5 / 445 ، 446 ح 24148 ، 24149 ، 24153) و ابوداؤد (2659) و النسائی (5 / 7879 ح 2559)

بَاب اللّعان • लिआन का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٣٢٠ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ فَلَانًا ابْنِي عَاهَرْتُ بِأُمِّهِ فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ [ص:٩٩ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا دِعْوَةَ فِي الْإِسْلَامِ ذَهَبَ أَمْرُ الْجَاهِلِيَّةِ الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ وَلِلْعَاهِرِ الْحَجَرُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3320. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, के एक आदमी खड़ा हुआ और उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! फलां मेरा बेटा है, मैंने दौरे जाहिलियत में उसकी माँ से ज़िना किया था, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "इस्लाम में (बच्चे का) दावा नहीं, जाहिलियत का मुआमला ख़तम हो गया, बच्चा साहबे बिस्तर के लिए है और ज़ानि के लिए पत्थर (रजम या महरूमी) है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2274)

٣٣٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " أَرْبَعٌ مِنَ النِّسَاءِ لَا مُلَاعَنَةَ بَيْنَهُنَّ: النَّصْرَانِيَّةُ تَحْتَ الْمُسْلِمِ وَالْيَهُودِيَّةُ تَحْتَ الْمُسْلِمِ وَالْحُرَّةُ تَحْتَ الْمَمْلُوكِ وَالْمَمْلُوكَةُ تَحْتَ الْحُرِّ ". رَوَاهُ ابْنُ مَاجَه

3321. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ ने फ़रमाया: "चार किस्म की औरतो के दरमियान कोई लिआन नहीं, नसरानी औरत मुसलमान के निकाह में हो, यहूदी औरत

मुसलमान के निकाह में हो, आज़ाद औरत ममलुक के निकाह में हो, और ममलुक औरत आज़ाद के निकाह में हो"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدًا ، رواه ابن ماجه (2071) * فيه عثمان بن عطاء الخراسانى قال فيه الدارقطنى :’’ هو ضعيف الحديث جدًا ‘‘ (3 / 163164)
وله متابعة مردودة

٣٣٢٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَ رَجُلًا حِينَ أَمَرَ الْمُتَلَاعِنَيْنِ أَنْ يَتَلَاعَنَا أَنْ يَضَعَ يَدَهُ عِنْدَ الْخَامِسَةِ عَلَى فِيهِ وَقَالَ: «إِنَّهَا مُوجِبَةٌ» . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ

3322. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने एक आदमी को इस वक़्त हुक्म फ़रमाया, जब आप ने दो लिआन करने वालो को लिआन करने का हुक्म दिया था के वह (आदमी) पाँचवीं शहादत के वक़्त इस (लिआन करने वाले) के मुंह पर हाथ रख दे, और आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्योंकि वह (पांचवी गवाही) वाजिब करने वाली है"| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائی (6 / 175 ح 3502)

٣٣٢٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ مِنْ عِنْدِهَا لَيْلًا قَالَتْ: فَغِرْتُ عَلَيْهِ فَجَاءَ فَرَأَى مَا أَصْنَعُ فَقَالَ: «مَا لَكِ يَا عَائِشَةُ أَغِرْتِ؟» فَقُلْتُ: وَمَا لِي؟ لَا يَغَارُ مِثْلِي عَلَى مِثْلِكَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَقَدْ جَاءَكِ شَيْطَانُكِ» قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَمْعِي شَيْطَانٌ؟ قَالَ: «نَعَمْ» قُلْتُ: وَمَعَكَ يَا رَسُولَ الله؟ قَالَ: «نعم وَلَكِن أعانني علَيهِ حَتَّى أسلَمَ» . رَوَاهُ مُسلم

3323. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ एक रात मेरे पास से तशरीफ़ ले गए आप के तशरीफ़ ले जाने पर में जज़्बाती हुई, चुनांचे आप थोड़ी देर बाद तशरीफ़ लाए और आप ﷺ ने मेरी हालत देखी तो फ़रमाया: "आइशा क्या हुआ, क्या तुम जज़्बाती हो गई हो?" मैंने अर्ज़ किया: मुझे क्या है की मुझ जैसी को आप जैसे की अदम मौजूदगी जज़्बाती न करे? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम्हारे पास तुम्हारा शैतान आया है", उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या मेरे साथ शैतान है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ !‘‘ मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या आप के साथ भी है? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, लेकिन अल्लाह ने उस के खिलाफ मेरी इआनत फरमाई हत्ता कि मैं उस से महफ़ूज़ रहता हो"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (70 / 2815)، (7110)

इद्दत का बयान — بَاب الْعدة

पहली फस्ल — الْفَصْل الأول

٣٣٢٤ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ قَيْسٍ: أَنَّ أَبَا عَمْرِو بْنَ حَفْصٍ طَلَّقَهَا الْبَتَّةَ وَهُوَ غَائِبٌ فَأَرْسَلَ إِلَيْهَا وَكِيلُهُ الشَّعِيرَ فَسَخِطَتْهُ فَقَالَ: وَاللَّهِ مَا لَكِ عَلَيْنَا مِنْ شَيْءٍ فَجَاءَتْ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ: «لَيْسَ لَكِ نَفَقَةٌ» فَأَمَرَهَا أَنْ تَعْتَدَّ فِي بَيْتِ أُمِّ شَرِيكٍ ثُمَّ قَالَ: «تِلْكِ امْرَأَةٌ يَغْشَاهَا أَصْحَابِي اعْتَدِّي عِنْدَ ابْنِ أُمِّ مَكْتُومٍ فَإِنَّهُ رَجُلٌ أَعْمَى تَضَعِينَ ثِيَابَكِ فَإِذَا حَلَلْتِ فَآذِنِينِي» . قَالَتْ: فَلَمَّا حَلَلْتُ ذَكَرْتُ لَهُ أَنَّ مُعَاوِيَةَ بْنَ أَبِي سُفْيَانَ وَأَبَا جَهْمٍ خَطَبَانِي فَقَالَ: «أَمَّا أَبُو الْجَهْمِ فَلَا يَضَعُ عَصَاهُ عَنْ عَاتِقِهِ وَأَمَّا مُعَاوِيَةُ فَصُعْلُوكٌ لَا مَالَ لَهُ انْكِحِي أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ» فَكَرِهْتُهُ ثُمَّ قَالَ: «انْكِحِي أُسَامَةَ» فَنَكَحْتُهُ فَجَعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا وَاغْتَبَطْتُ وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهَا: «فَأَمَّا أَبُو جَهْمٍ [ص:٩٩ فَرَجُلٌ ضَرَّابٌ لِلنِّسَاءِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَفِي رِوَايَةٍ: أَنَّ زَوْجَهَا طَلَّقَهَا ثَلَاثًا فَأَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «لَا نَفَقَةَ لَكِ إِلَّا أَنْ تَكُونِي حَامِلا»

3324. अबू सलमा, फ़ातिमा बिन्ते कैस से रिवायत करते हैं की अबू अम्र बिन हफ्स ने उन्हें आखिरी तलाक इस वक़्त दी जब वह मदीना मुनव्वरा से बाहर थे, चुनांचे अबू अम्र बिन हफ्स के वकील ने वह “जौ‘‘ फ़ातिमा के सुपुर्द कर दिए जो अबू अम्र ने इन के लिए भेजे थे वह उस से नाराज़ हो गई, उस पर (ऊस के वकील) ने कहा अल्लाह की क़सम! तुम्हारा हम पर कोई हक़ नहीं, चुनान्चे वह रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई और आप से उस का तज़किरह किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारे लिए कोई नफ्का नहीं, आप ﷺ ने उन्हें उम्म शरीक के घर इद्दत्त गुज़ार ने का हुक्म फ़रमाया, फिर फ़रमाया: “वो ऐसी खातून है, के मेरे सहाबा उस के पास आते जाते हैं, लिहाज़ा तुम इब्ने उम्म मक्तूम रदियल्लाहु अन्हु के यहाँ इद्दत्त गुज़ार , क्योंकि वह नाबीना शख़्स है, तुम अपने मामूल के कपड़े पहन कर रह सकती हो, जब तुम इद्दत्त गुज़ार लो तो मुझे मुत्तिला करना”, फ़ातिमा बिन्ते कैस रदियल्लाहु अन्हा कहती है जब मैंने इद्दत्त गुज़ार ली तो मैंने आप को बताया की मुआविया बिन अबी सुफियान रदियल्लाहु अन्हुमा और अबू जहम रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे पैग़ामे निकाह भेजा है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अबू जहम वह तो अपने लाठी अपने कंधे से नहीं उतारता (सख्त मिज़ाज है) , और रहा मुआविया वह तो फ़क़ीर आदमी है, उस के पास कोई माल नहीं, तुम उसामा बिन ज़ैद से निकाह कर लो”, मैंने इसे नापसंद किया, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “उसामा से निकाह कर लो”, मैंने उस से निकाह कर लिया अल्लाह ने उस में खैर फरमा दी, और मैं काबिले रश्क बन गई, और इन्ही से एक रिवायत में है: “अबू जहम! वह तो औरतो को बहोत मारने वाला है”| और एक रिवायत में है की उस के खाविंद ने जब इसे तीन तलाके दे दी तो वह नबी ﷺ की खिदमत में आइ तो आप ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “तुम्हारे लिए सिर्फ हामिला होने की सूरत में नफ्का है वैसे कोई नफ्का नहीं‘‘| (मुस्लिम)

رواه مسلم (36 / 1480)، (3697)

٣٣٢٥ - (صَحِيح) وَعَن عائشة قَالَتْ: إِنَّ فَاطِمَةَ كَانَتْ فِي مَكَانٍ وَحِشٍ فَخِيف عَلَى نَاحِيَتِهَا فَلِذَلِكَ رَخَّص لَهَا

النَّبِيُّ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم تَعْنِي النُّقْلَةِ وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَتْ: مَا لِفَاطِمَةَ؟ أَلَا تَتَّقِي اللَّهَ؟ تَعْنِي فِي قَوْلِهَا: لَا سُكْنَى وَلَا نَفَقَة. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3325. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कि फ़ातिमा एक बे आबाद घर में थी, उन के मुतल्लिक अंदेशा महसूस किया गया इसीलिए नबी ﷺ ने उन्हें रुखसत इनायत फरमाई, यानी आइशा रदियल्लाहु अन्हा की मुराद यह है कि इसलिए आप ﷺ ने उन्हें (अपने घर से) मुन्तकिल होने की इजाज़त दी, और एक दूसरी रिवायत में है, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने कहा फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा को क्या हो गया वह अल्लाह से क्यों नहीं डरती जब वह यह कहती है के मुतल्का सलासा के लिए, सुकूनत है और न खर्च| (बुखारी)

رواه البخارى (5325)

٣٣٢٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سعيدِ بنِ المسيِّبِ قَالَ: إِنَّمَا نُقِلَتْ فَاطِمَةُ لِطُولِ لِسَانِهَا عَلَى أحمائِها. رَوَاهُ فِي شرح السّنة

3326. सईद बिन मुसय्यिब बयान करते हैं, फ़ातिमा (बिन्ते कैस (रअ)) को महज़ इसलिए मुन्तकिल किया गया के वह अपने (खाविंद के) अकारिब पर ज़ुबान दराज़ी करती थी| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (9 / 294 بعد ح 2384 بلا سند) [و ابوداؤد (2296 و سنده ضعيف) و الشافعى فى الام (7 / 474)] * سعيد بن المسيب لم يذكر من حدثه بهذا فقوله هاهنا مردود

٣٣٢٧ - (صَحِيح) وَعَن جابرٍ قَالَ: طُلِّقَتْ خَالَتِي ثَلَاثًا فَأَرَادَتْ أَنْ تَجُدَّ نَخْلَهَا فَزَجَرَهَا رَجُلٌ أَنْ تَخْرُجَ فَأَتَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «بَلَى فَجُدِّي نَخْلَكِ فَإِنَّهُ عَسَى أَنْ تَصَّدَّقِي أَوْ تَفْعَلِي مَعْرُوفا» . رَوَاهُ مُسلم

3327. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मेरी खाला को तीन तलाके दी गई, उन्होंने अपने खजूरे तोड़ने का इरादा किया तो एक आदमी ने उन्हें घर से निकलने से मना किया तो वह नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई और वाकिया बयान किया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्यों नहीं तुम अपने खजूरे तोड़ो क्योंकि उम्मीद है के तुम सदका करोगी या कोई भलाई व नेकी का काम करोगी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (55 / 1483)، (3721)

٣٣٢٨ - (صَحِيح) وَعَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ: أَنَّ سُبَيْعَةَ الْأَسْلَمِيَّةَ نُفِسَتْ بَعْدَ وَفَاةِ زَوْجِهَا بِلَيَالٍ فَجَاءَتِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاسْتَأْذَنَتْهُ أَنْ تَنْكِحَ فأذِنَ لَهَا فنكحت. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3328. मिस्वर बिन मखरम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के सुबयअत अल सल्मियत ने अपने खाविंद की

वफात के चंद दिन बाद बच्चे को जन्म दिया, फिर वह नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई ताकि आप से निकाह करने की इजाज़त तलब करे, आप ने उन्हें इजाज़त अता फरमा दि और उन्होंने निकाह कर लिया| (बुखारी)

رواه البخاری (4909)

٣٣٢٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أَمِّ سلمةَ قَالَتْ: جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ ابْنَتِي تُوُفِّيَ عَنْهَا زَوْجُهَا وَقَدِ اشْتَكَتْ عَيْنُهَا أَفَنَكْحُلُهَا؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا» مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا كُلُّ ذَلِكَ يَقُولُ: «لَا» قَالَ: «إِنَّمَا هِيَ أَرْبَعَةُ أَشْهُرٍ وعشرٌ وَقد كَانَت إِحْدَاهُنَّ فِي الجاهليَّةِ تَرْمِي [ص:٩٩ بِالْبَعْرَةِ عَلَى رَأْسِ الْحَوْلِ»

3329. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, एक औरत नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरी बेटी का खाविंद फौत हो गया है, और उसकी आँख में तकलीफ है, क्या मैं उसकी आँख में सुरमा लगा दू? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नहीं ?” दो बार या तीन बार, आप ﷺ हर बार यही फरमाते: “नहीं ?” फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो (इद्दत) चार माह दस दिन है? जबकि दौरे जाहिलियत में तुम में से हर कोई साल के इख्तिताम पर ऊंट की मेंदगी फेंकती थी”(एक साल बाद इद्दत्त ख़तम होती थी) | (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5336) و مسلم (1488)، (3727)

٣٣٣٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَمِّ حَبِيبَةَ وَزَيْنَبَ بِنْتِ جحش عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَحِلُّ لِامْرَأَةٍ تُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ تُحِدَّ عَلَى مَيِّتٍ فَوْقَ ثَلَاثِ لَيَالٍ إِلَّا عَلَى زَوْجٍ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا»

3330. उम्मे हबीबा, और जैनब बिन जहश रदियल्लाहु अन्हुमा रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करती हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखने वाली औरत के लिए हलाल नहीं के वह खाविंद की वफात पर चार माह दस दिन के सोग के अलावा किसी और मय्यत पर तीन दिन से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) सोग करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (53345335) و مسلم (58 / 1486)، (3725)

٣٣٣١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أَمِّ عطيَّةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تُحِدُّ امْرَأَةٌ عَلَى مَيِّتٍ فَوْقَ ثَلَاثٍ إِلَّا عَلَى زَوْجٍ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا وَلَا تَلْبَسُ ثَوْبًا مَصْبُوغًا إِلَّا ثَوْبَ عَصْبٍ وَلَا تكتحِلُ وَلَا تَمَسُّ طِيبًا إِلَّا إِذَا طَهُرَتْ نُبْذَةً مِنْ قُسْطٍ أَوْ أَظْفَارٍ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَزَادَ أَبُو دَاوُدَ: «وَلَا تختضب»

3331. उम्म अतिया रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कोई औरत किसी मय्यत

पर तीन दिन से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) सोग न करे, अलबत्ता खाविंद पर चार माह दस दिन का सोग करे, और वह यमनी लकीर दार चादर के सिवा रंगे हुए कपड़े भी न पहने, न सुरमा डाले और न खुशबू लगाए अलबत्ता जब वह हैज़ से पाक हो जाए तो फिर कुस्त या इज़्फार की मामूली सी खुशबू लगा ले”| बुखारी, मुस्लिम| और अबू दावुद ने यह इज़ाफा नकल किया है: “वो महंदी न लगाए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5342) ومسلم (66 / 938)، (3740) و ابوداؤد (2302)

بَاب الْعدة • इद्दत का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٣٣٢ - (لم تتمّ دراسته) عَن زَيْنَب بنت كَعْب: أَنَّ الْفُرَيْعَةَ بِنْتَ مَالِكِ بْنِ سِنَانٍ وَهِيَ أُخْتُ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَخْبَرَتْهَا أَنَّهَا جَاءَتْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسْأَلُهُ أَنْ تَرْجِعَ إِلَى أَهْلِهَا فِي بَنِي خُدْرَةَ فَإِنَّ زَوْجَهَا خَرَجَ فِي طَلَبِ أَعْبُدٍ لَهُ أَبَقُوا فَقَتَلُوهُ قَالَتْ: فَسَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ أَرْجِعَ إِلَى أَهْلِي فَإِنَّ زَوْجِي لَمْ يَتْرُكْنِي فِي مَنْزِلٍ يَمْلِكُهُ وَلَا نَفَقَةٍ فَقَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نَعَمْ» . فَانْصَرَفْتُ حَتَّى إِذَا كُنْتُ فِي الْحُجْرَةِ أَوْ فِي الْمَسْجِدِ دَعَانِي ﷺ فَقَالَ: «امْكُثِي فِي بَيْتِكِ حَتَّى يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ» . قَالَتْ: فَاعْتَدَدْتُ فِيهِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا. رَوَاهُ مَالِكٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

3332. ज़ैनब बिन्ते काब से रिवायत है के अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु की बहन फुरीअत बिन्ते मालिक बिन सुनान ने उन्हें बताया की वह रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई ताकि वह अपने कबिले बनू खुदरी में अपने घर चली जाए, क्योंकि उस का शोहर अपने मफरुर गुलामो की तलाश में निकला था जिसे उन गुलामो ने क़त्ल कर दिया था, वह बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया की मैं अपने घरवालो के पास चली जाऊ क्योंकि मेरे शोहर ने ने तो अपना ज़ाती घर छोड़ा है और न नफ्का, वह बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: हाँ”, मैं वापस मुड़ी हत्ता कि जब हुजरे में थी या मस्जिद में थी तो आप ﷺ ने मुझे बुलाया और फ़रमाया: “अपने घर में रहो हत्ता के इद्दत पूरी हो जाए”, वह बयान करती हैं, मैंने वहां चार माह दस दिन इद्दत गुज़ारी| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه مالک (2 / 591 ح 1290) و الترمذى (1204 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (2300) و النسائى (6 / 199200 ح 35583560) و ابن ماجه (2031) و الدارمى (2 / 168 ح 2292) [و اخطا من ضعفه]

٣٣٣٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أُمِّ سلمةَ قَالَتْ: دَخَلَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ تُوُفِّيَ أَبُو سَلَمَةَ وَقَدْ جعلتُ عليَّ صَبِراً فَقَالَ: «مَا هَذَا يَا أُمَّ سَلَمَةَ؟» . قُلْتُ: إِنَّمَا هُوَ صَبِرٌ لَيْسَ فِيهِ طِيبٌ فَقَالَ: «إِنَّهُ يَشُبُّ الْوَجْهَ فَلَا تَجْعَلِيهِ إِلَّا بِاللَّيْلِ وَتَنْزِعِيهِ بِالنَّهَارِ وَلَا تَمْتَشِطِي بِالطِّيبِ وَلَا بِالْحِنَّاءِ فَإِنَّهُ خضاب» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3333. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब अबू सलमा रदियल्लाहु अन्हु फौत हुए तो रसूलुल्लाह ﷺ मेरे पास तशरीफ़ लाए तो मैंने एयलिया का अर्क लगाया हुआ था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उम्म सलमा यह क्या है?” मैंने अर्ज़ किया: यह तो एयलिया का अर्क है! उस में कोई खुशबू नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये चेहरे को चमका देता है,इसे रात के वक़्त लगा लिया करो और दिन के वक़्त साफ़ कर दिया करो, खुशबू लगा कर कंघी भी न करो और न महंदी लगा कर कंघी करो, क्योंकि वह रंग है” मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं किसी चीज़ के साथ कंघी करू? आप ﷺ ने फ़रमाया: “बैरी (के पत्तो) के साथ तुम अपने सर पर उनकी लेप कर लिया करो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2305) و النسائی (6 / 204 ح 3567) * ام حکیم : لا یعرف حالھا و المغیرۃ بن الضحاک : مستور

٣٣٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «المُتوَفّى عَنْهَا زوجُها لَا تَلبسُ المُعَصفَرَ مِنَ الثِّيَابِ وَلَا الْمُمَشَّقَةَ وَلَا الْحُلِيَّ وَلَا تَخْتَضِبُ وَلَا تَكْتَحِلُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

3334. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा नबी ﷺ से रिवायत करती हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस औरत का खाविंद फौत हो जाए तो वह न तो ज़र्द रंग के कपड़े पहने और न सुर्ख रंग के और न वह ज़ेवर पहने और ना रंग लगाए और ना ही सुरमा लगाए”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2304) و النسائی (6 / 203 ح 3565)

इद्दत का बयान — بَاب الْعدة

तीसरी फस्ल — الْفَصْل الثَّالِث

٣٣٣٥ - (لم تتمّ دراسته) عَن سُليمانَ بنِ يَسارٍ: أَنَّ الْأَحْوَصَ هَلَكَ بِالشَّامِ حِينَ دَخَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي الدَّمِ مِنَ الْحَيْضَةِ الثَّالِثَةِ وَقَدْ كَانَ طَلَّقَهَا فَكَتَبَ مُعَاوِيَةُ بْنُ أَبِي سُفْيَانَ إِلَى زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ يَسْأَلُهُ عَنْ ذَلِكَ فَكَتَبَ إِلَيْهِ زِيدٌ: إِنَّهَا إِذَا دَخَلَتْ فِي الدَّمِ مِنَ الْحَيْضَةِ الثَّالِثَةِ فَقَدْ بَرِئَتْ مِنْهُ وَبَرِئَ مِنْهَا لَا يرِثُها وَلَا ترِثُه. رَوَاهُ مَالك

3335. सुलेमान बिन यस्सार से रिवायत है के अह्वस ने शाम में इस वक़्त वफात पाई जब उसकी बीवी को (तलाक के बाद) तीसरा हैज़ शुरू हो चूका था, वह इसे तलाक दे चूका था, मुआविया बिन अबी सुफियान ने इस बारे में मसअला दरियाफ्त करने के लिए ज़ैद बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु के नाम ख़त लिखा, तो ज़ैद ने उन्हें

जवाब दीया के वह तीसरे हैज़ में दाखिल हो चुकी है, वह (औरत) उस से बरी उल ज़िम्मा है, और वह उस से बरी उल ज़िम्मा है, वह उस का वारिस नहीं यह उसकी वारिस नहीं| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه مالك (2 / 577 ح 1256)

٣٣٣٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ قَالَ: قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَيُّمَا امْرَأَةٍ طُلِّقَتْ فَحَاضَتْ حَيْضَةً أَوْ حَيْضَتَيْنِ ثُمَّ رُفِعَتْهَا حيضتُها فإنَّها تنتظِرُ تسعةَ أشهرٍ فإنْ بانَ لَهَا حَمْلٌ فَذَلِكَ وَإِلَّا اعْتَدَّتْ بَعْدَ التِّسْعَةِ الْأَشْهَرِ ثلاثةَ أشهرٍ ثمَّ حلَّتْ. رَوَاهُ مَالك

3336. सईद बिन मुसय्यिब बयान करते हैं, उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: जिस औरत को तलाक दी गई और इसे एक या दो हैज़ आ गए और फिर उस का हैज़ मौकूफ हो गया तो वह नौ माह इंतज़ार करेगी, अगर उस का हमल ज़ाहिर हो गया तो फिर यही (वज़ए हमल) है वरना वह नौ माह के बाद तीन माह इद्दत गुज़ारेगी और फिर हलाल हो जाएगी| (और वह दूसरी जगह निकाह कर सकेगी)| (सहीह)

صحيح ، رواه مالك (2 / 582 ح 1270)

बَاب الِاسْتِبْرَاء • इस्तिब्रा का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٣٣٧ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: مَرَّ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بِامْرَأَةٍ مُجِحٍّ فَسَأَلَ عَنْهَا فَقَالُوا: أَمَةٌ لِفُلَانٍ قَالَ: «أَيُلِمُّ بِهَا؟» قَالُوا: نَعَمْ. قَالَ: «لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ أَلْعَنَهُ لَعْنًا يَدْخُلُ مَعَهُ فِي قَبْرِهِ كَيْفَ يَسْتَخْدِمُهُ وَهُوَ لَا يَحِلُّ لَهُ؟ أَمْ كَيْفَ يُوَرِّثُهُ وَهُوَ لَا يحلُّ لَهُ؟» . رَوَاهُ مُسلم

3337. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ एक ऐसी औरत के पास से गुज़रे जो बच्चा जनने के करीब थी तो आप ने उस के मुतल्लिक सवाल किया तो उन्होंने बताया के यह फलां शख़्स की लौंडी है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या वह उस से जिमाअ करता है?” उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने इरादा किया की मैं उस पर ऐसी लानत करू जो कब्र तक उस के साथ जाए, वह उस से कैसे खिदमत का तकाज़ा कर सकता है जबकि वह उस के लिए हलाल नहीं, या वह इसे कैसे वारिस बना सकता है जबकि वह उस के लिए हलाल नहीं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (139 / 1441)، (3562)

بَاب الِاسْتِبْرَاء • इस्तिब्रा का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٣٣٨ - (لم تتمّ دراسته) عَن أبي سعيدٍ الخدريِّ رَفَعَهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فِي سَبَايَا أَوْطَاسٍ: «لَا تُوطَأُ حَامِلٌ حَتَّى تَضَعَ وَلَا غَيْرُ ذَاتِ حَمْلٍ حَتَّى تَحِيضَ حَيْضَةً» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ

3338. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ने गज़वा ए अवतास में हासिल होने वाली लोंदियो के बारे में फ़रमाया: “वज़ा हमल से पहले हामिला (लोंदी) से जिमाअ न किया जाए और जो हामिला नहीं उस से भी जिमाअ न किया जाए हत्ता के इसे एक हैज़ जाए”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ احمد (3 / 62 ح 11618) و ابوداؤد (2157) و الدارمی (2 / 171 ح 2300) * شریک القاضی عنعن و حدیث ابی داود الطیالسی (1687) یغنی عنه

٣٣٣٩ - وَعَنْ رُوَيْفِعِ بْنِ ثَابِتٍ الْأَنْصَارِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وسلم [ص:٩٩ يَوْم حُنَيْنٍ: «لَا يَحِلُّ لِامْرِئٍ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يسْقِي مَاء زَرْعَ غَيْرِهِ» يَعْنِي إِتْيَانَ الْحُبَالَى «وَلَا يَحِلُّ لِامْرِئٍ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يَقَعَ عَلَى امْرَأَةٍ مِنَ السَّبْيِ حَتَّى يَسْتَبْرِئَهَا وَلَا يَحِلُّ لِامْرِئٍ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يَبِيعَ مَغْنَمًا حَتَى يُقَسَّمَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَرَوَاهُ التِّرْمِذِيّ إِلَى قَوْله «زرع غَيره»

3339. रावय्फी बिन साबित अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हुनैन के रोज़ फ़रमाया: “जो शख़्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो, उस के लिए हलाल नहीं के वह अपना पानी किसी और की खेती को दे, यानी हामिला से जिमाअ करे जो शख़्स अल्लाह और रोज़ आखिरत पर ईमान रखता है उस के लिए हलाल नहीं के वह किसी लौंडी से जिमाअ करे हत्ता के उस का रहम खाली हो जाए, और जो शख़्स अल्लाह और रोज़ आखिरत पर ईमान रखता है उस के लिए हलाल नहीं के वह माले गनीमत को उसकी तकसीम से पहले फरोख्त करे”| अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने इसे (زَرْعَ غَيْرِهِ) तक रिवायत किया है| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (2158) و الترمذی (1131 وقال : غریب)

بَاب الِاسْتِبْرَاء • इस्तिब्रा का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٣٤٠ - (لم تتمّ دراسته) عَن مَالِكٍ قَالَ: بَلَغَنِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَأْمُرُ بِاسْتِبْرَاءِ الْإِمَاءِ بِحَيْضَةٍ إِنْ كَانَتْ مِمَّنْ تَحِيضُ وَثَلَاثَةِ أَشْهُرٍ إِنْ كَانَت مِمَّن تحيض وَيَنْهى عَن سقِي مَاء الْغَيْر

3340. इमाम मालिक रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मुझे यह खबर पहुंची के रसूलुल्लाह ﷺ उन लोंदियो को जिन्हें हैज़ आता था एक हैज़ के ज़रिए और जिन्हें हैज़ नहीं आता था तीन माह के ज़रिए इस्तबराए रहम का हुक्म फ़रमाया करते थे और आप ﷺ किसी गैर की खेती को पानी देने से मना फ़रमाया करते थे| (रज़ीन(मझे नहीं मिली).)

لم اجده ، فائدة : كل حديث ، قلت فيه : لم اجده ، فهو ضعيف باطل مردود ، الا ان يثبت بسند آخر او صرحت بخلافه

٣٣٤١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّهُ قَالَ: إِذَا وُهِبَتْ الْوَلِيدَةُ الَّتِي تُوطَأُ أَوْ بِيعَتْ أَوْ أَعْتِقَتْ فَلْتَسْتَبْرِئْ رَحِمَهَا بِحَيْضَةٍ وَلَا تُسْتَبْرَئُ الْعَذْرَاءُ. رَوَاهُمَا رزين

3341. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब ऐसी लौंडी जिस से जिमाअ किया जाता हो हिब्बा की जाए या बेअ की जाए या आज़ाद की जाए तो वह एक हैज़ के ज़रिए अपने रहम के खाली होने का यकीन कर ले और कुंवारी से इस्तबराए रहम का नहीं कहा जाएगा”, दोनों रिवायतों रजिन ने रिवायत की है| (सहीह)

صحيح ، رزين (لم اجده) * و علقه البخارى (قبل ح 2235 ، البيوع باب : 111) و انظر تغليق التعليق (3 / 272273) و تنقيح الرواية (2 / 51)

بَاب النَّفَقَات وَحق الْمَمْلُوك • नान नफ्के और मातेहत लोगों का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٣٤٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: إِنَّ هندا بنت عتبَة قَالَت: يَا رَسُول الله إِن أَبَا سُفْيَان رجل شحيح وَلَيْسَ يعطيني مَا يَكْفِينِي وَوَلَدي إِلَّا مَا أخذت مِنْهُ وَهُوَ يعلم فَقَالَ: «خذي مَا يَكْفِيك وولدك بِالْمَعْرُوفِ»

3342. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, हिन्द बिन उत्बा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अबू सुफियान एक बखील आदमी है, वह मुझे इस क़दर नहीं देता जो मेरे और मेरी औलाद के लिए काफी हो, मगर में उस से इस तरह ले लेती हूँ कि इसे पता नहीं होता, आप ﷺ ने फ़रमाया: "इस क़दर ले लिया करो जो दस्तूर के मुताबिक तेरे और तेरी औलाद के लिए काफी हो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5364) ومسلم (7 / 1714)، (4477)

٣٣٤٣ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِذا أَعْطى الله أحدكُم خيرا فليبدأ بِنَفسِهِ وَأهل بَيته» . رَوَاهُ مُسلم

3343. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब अल्लाह तुम में से किसी को माल अता करे तो उसे चाहिए के वह पहले अपने ज़ात और अपने घरवालो पर खर्च करे"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (10 / 1822)، (4711)

٣٣٤٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «للمملوك طَعَامه وَكسوته وَلَا يُكَلف من الْعَمَل إِلَّا مَا يُطيق» . رَوَاهُ مُسلم

3344. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "ममलुक का खाना और लिबास (दस्तूर के मुताबिक मालिक पर वाजिब) है और उस से काम सिर्फ उसकी ताकत के मुताबिक़ ही लिया जाए"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (41 / 1662)، (4316)

٣٣٤٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِخْوَانُكُمْ جَعَلَهُمُ اللَّهُ تَحْتَ أَيْدِيكُمْ فَمَنْ جَعَلَ اللَّهُ أَخَاهُ تَحْتَ يَدَيْهِ فَلْيُطْعِمْهُ مِمَّا يَأْكُلُ وَلْيُلْبِسْهُ مِمَّا يَلْبَسُ وَلَا يُكَلِّفْهُ مِنَ الْعَمَلِ مَا يَغْلِبُهُ فَإِنْ كَلَّفَهُ مَا يَغْلِبُهُ فَلْيُعِنْهُ عَلَيْهِ»

3345. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "(गुलाम) तुम्हारे भाई है, अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे ज़ेर तसरीफ कर दिया है, अल्लाह जिसके भाई को उस के ज़ेर तसरीफ कर दे तो वह इसे वैसे ही खिलाए जैसे खुद खाए, और वैसे ही पहनाए जैसे खुद पहने और उस से कोई ऐसा काम न ले जो उसकी ताकत से ज़्यादा हो, और अगर वह उस के जिम्मे कोई ऐसा काम लगा दे जो उसकी ताकत से बढ़कर हो तो फिर वह उस में उसकी इआनत करे"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6050) و مسلم (38 / 1661)، (4313)

٣٣٤٦ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن عَمْرو جَاءَهُ قَهْرَمَانٌ لَهُ فَقَالَ لَهُ: أَعْطَيْتَ الرَّقِيقَ قُوتَهُمْ؟ قَالَ: لَا قَالَ: فَانْطَلِقْ فَأَعْطِهِمْ فَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: [ص:١٠٠] «كَفَى بِالرَّجُلِ إِثْمًا أَنْ يَحْبِسَ عَمَّنْ يَمْلِكُ قُوتَهُ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «كَفَى بِالْمَرْءِ إِثْمًا أَنْ يُضَيِّعَ مَنْ يَقُوتُ» . رَوَاهُ مُسلم

3346. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से मन्कुल है के उनका मुंशी उन के पास आया तो उन्होंने इसे फ़रमाया क्या तुम ने गुलामो को उन के खाने का सामान दे दिया है? उस ने कहा नहीं, उन्होंने ने फ़रमाया: जाओ और उन्हें (खाने का सामान) दो, क्योंकि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बन्दे के लिए यही गुनाह काफी है के वह अपने ममलुक के खाने का सामान रोक ले”, और एक रिवायत में है: “आदमी के लिए यही गुनाह काफी है के जिन की खुराक उस के जिम्मे है के उसकी रोज़ी ज़ाए कर दे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (م4 / 996)، (2312)

٣٣٤٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا صَنَعَ لِأَحَدِكُمْ خَادِمُهُ طَعَامَهُ ثُمَّ جَاءَهُ بِهِ وَقَدْ وَلِيَ حره ودخانه فليقعده مَعَه فَلْيَأْكُل وَإِن كَانَ الطَّعَامُ مَشْفُوهًا قَلِيلًا فَلْيَضَعْ فِي يَدِهِ مِنْهُ أَكلَة أَو أكلتين» . رَوَاهُ مُسلم

3347. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम्हारा खादिम तुम्हारे लिए खाना तैयार कर के लाए तो वह (मालिक) इसे अपने साथ बिठाए ताकि वह खाए, क्योंकि उस ने आग की हरारत और धुवा बर्दाश्त किया है, अगर खाना, खाने वालो के हिसाब से कम हो तो वह उस में एक या दो लुक़्मे उस के हाथ पर रख दे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (42 / 1663)، (4317)

٣٣٤٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الْعَبْدَ إِذَا نَصَحَ لِسَيِّدِهِ وَأَحْسَنَ عِبَادَةَ اللَّهِ فَلَهُ أَجْرُهُ مرَّتَيْنِ»

3348. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब गुलाम अपने आका के लिए मुखलिस व खैर ख्वाह हो और वह अल्लाह की इबादत भी अहसन(सबसे अच्छा) अंदाज़ में करता हो तो उस के लिए दो अज़र हैं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2546) و مسلم (43 / 1664)، (4318)

٣٣٤٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نِعِمَّا لِلْمَمْلُوكِ أَنْ يَتَوَفَّاهُ اللَّهُ بِحُسْنِ عِبَادَةِ رَبِّهِ وَطَاعَة سَيّده نعما لَهُ»

3349. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ममलुक के लिए क्या खूब है के अल्लाह इसे इस हाल में फौत करे के वह अपने रब की इबादत भी अच्छे अंदाज़ में करता हो और अपने आका की इताअत भी अच्छे अंदाज़ में करता हो, क्या खूब है उस के लिए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2549) ومسلم (46 / 1667)، (4324)

٣٣٥٠ - (صَحِيح) وَعَنْ جَرِيرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أَبَقَ الْعَبْدُ لَمْ تُقْبَلْ لَهُ صَلَاةٌ» . وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ قَالَ: «أَيّمَا عبد أبق فقد بَرِئت مِنْهُ الذِّمَّةُ» . وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ قَالَ: «أَيُّمَا عَبْدٍ أَبَقَ مِنْ مَوَالِيهِ فَقَدْ كَفَرَ حَتَّى يَرْجِعَ إِلَيْهِم» . رَوَاهُ مُسلم

3350. जरीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब गुलाम फरार हो जाता है तो उसकी नमाज़ कबूल नहीं की जाती”, और इन्ही से एक रिवायत में है की आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो गुलाम फरार हो जाता है तो उस से ज़िम्मा ख़तम हो जाता है”, और इन्ही से एक और रिवायत में है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो गुलाम अपने मालिको से फरार हो जाए तो उस ने कुफ्र किया हत्ता कि वह उन के पासलौट आए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (124 / 70 ، 122 / 69)، (228)

٣٣٥١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا الْقَاسِمِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ قَذَفَ مَمْلُوكَهُ وَهُوَ بَرِيءٌ مِمَّا قَالَ جُلِدَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَّا أَنْ يَكُونَ كَمَا قَالَ»

3351. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अबुल कासिम ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस ने अपने ममलुक पर बोहतान बांधा जबकि वह उस से बरी हो जो उस ने कहे तो रोज़ ए कियामत इसे कोड़े मारी जाएँगे मगर यह कि वह वैसे ही हो जैसे उस ने कहा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6858) و مسلم (37 / 1660)، (4311)

٣٣٥٢ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ ضَرَبَ غُلَامًا لَهُ حَدًّا لَمْ يَأْتِهِ أَوْ لَطَمَهُ فَإِن كَفَّارَته أَن يعتقهُ» . رَوَاهُ مُسلم

3352. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस शख़्स ने अपने गुलाम पर उस के नाकर्दाह जुर्म पर हद काइम की या उस को थप्पड़ रसीद किया तो उस का कफ्फारा यह है कि वह इसे आज़ाद कर दे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (30 / 657)، (4299)

٣٣٥٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ قَالَ: كُنْتُ أَضْرِبُ غُلَامًا لِي فَسَمِعْتُ مِنْ خَلْفِي صَوْتًا: «اعْلَمْ أَبَا مَسْعُودٍ لَلَّهُ أَقْدَرُ عَلَيْكَ مِنْكَ عَلَيْهِ» فَالْتَفَتُّ فَإِذَا هُوَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هُوَ حُرٌّ لِوَجْهِ اللَّهِ فَقَالَ: «أَمَا لَوْ لَمْ تَفْعَلْ لَلَفَحَتْكَ النَّارُ أَوْ لَمَسَّتْكَ النَّارُ» . رَوَاهُ مُسلم

3353. अबू मसउद अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं अपने गुलाम को मार रहा था इसी दौरानमैंने अपनी पीछे से एक आवाज़ सुनी: “अबू मसउद! जान लो अल्लाह तुम पर उस से कही ज़्यादा कुदरत रखता है जितनी तुम उस पर कुदरत रखते हो”, मैंने पीछे मुड़ कर देखा तो वह रसूलुल्लाह ﷺ थे, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! वह अल्लाह की रज़ा की खातिर आज़ाद है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुन लो! अगर तुम ऐसा न करते तो तुम्हें जहन्नम की आग जलाती या फ़रमाया: “तुम्हें आग छुती”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (35 / 1659)، (4308)

बَاب النَّفَقَات وَحق الْمَمْلُوك • नान नफ्के और मातेहत लोगों का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٣٥٤ - (صَحِيح) عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ: أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنَّ لِي مَالًا وَإِنَّ وَالِدِي يَحْتَاجُ إِلَى مَالِي قَالَ: «أَنْتَ وَمَالُكَ لِوَالِدِكَ إِنَّ أَوْلَادَكُمْ مِنْ أَطْيَبِ كَسْبِكُمْ كُلُوا مِنْ كَسْبِ أَوْلَادِكُمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ ماجة

3354. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने अर्ज़ किया, मेरे पास माल है, और मेरे वालिद को मेरे माल की ज़रूरत है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम और तुम्हारा माल तेरे वालिद का है, क्योंकि तुम्हारी औलाद तुम्हारी बेहतरीन कमाई है, तुम अपने औलाद की कमाई खाओ”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3530) و ابن ماجه (2292)

٣٣٥٥ - (لم تتمّ دراسته) وعنهُ وَعَن أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ: أَنَّ رَجُلًا أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنِّي فَقِيرٌ لَيْسَ لِي شَيْءٌ وَلِي يَتِيمٌ فَقَالَ: «كُلْ مِنْ مَالِ يَتِيمِكَ غَيْرَ مُسْرِفٍ وَلَا مُبَادِرٍ وَلَا مُتَأَثِّلٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه

3355. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने अर्ज़ किया, मैं फ़क़ीर आदमी हूँ, मेरे पास कुछ भी नहीं, और मेरी ज़ेर निगरानी एक यतीम है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “यतीम के माल से इस तरह खाओ के उस में फिजूलखर्ची न हो, न जल्द

बाज़ी हो (के यतीम के बड़ा होने से पहले वह माल ख़तम हो जाए) और न उस से जाएदाद बनानी चाहिए"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2872) و النسائی (6 / 256 ح 3698) و ابن ماجه (2718)

٣٣٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ فِي مَرَضِهِ: «الصَّلَاةَ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

3356. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा नबी ﷺ से रिवायत करती हैं की आप ﷺ अपने मर्जुल मौत में फरमा रहे थे: "नमाज़ और अपने गुलामो का ख़याल रखना"| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (8553 ، نسخة محققة : 8193 و فى دلائل النبوة 7 / 205) [و ابن ماجه (1625)] * قتادة عنعن و انظر الحديث الآتى (3357)

٣٣٥٧ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَى أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ عَنْ عَلِيٍّ نَحْوَهُ

3357. इमाम अहमद और अबू दावुद ने अली रदियल्लाहु अन्हु से इसी तरह रिवायत किया है| (हसन)

سنده حسن ، رواه احمد (6 / 290 ح 27016) و ابوداؤد (5156) [و ابن ماجه (2698)]

٣٣٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ [ص:١٠٠] قَالَ: «لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ سَيِّئُ الْمَلَكَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْن مَاجَه

3358. अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "गुलामो के साथ बुरा सुलूक करने वाला जन्नत में दाखिल नहीं होगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1946 وقال : غريب) و ابن ماجه (3691) * فرقد السبخى : ضعيف مشهور

٣٣٥٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ رَافِعِ بْنِ مَكِيثٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «حُسْنُ الْمَلَكَةِ يُمْنٌ وَسُوءُ الْخُلُقِ شُؤْمٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَلَمْ أَرَ فِي غَيْرِ الْمَصَابِيحِ مَا زَادَ عَلَيْهِ فيهِ منْ قولِه: «والصَّدَقةُ تمنَعُ مِيتةَ السُّوءِ والبِرُّ زيادةٌ فِي العُمُرِ»

3359. राफीअ बिन मकिस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "(गुलामो, रिआया से) अच्छा सुलूक करने वाला बाईस ए बरकत है जबकि बुरे अख़लाक़ वाला बाईस नहूसत है"| और मैं (साहब ए मिश्कात)

ने मसाबिह के अलावा किसी और नुस्खे में यह इज़ाफा नहीं देखा जो साहबे मसाबिह ने नकल किया है: “सदका बुरी मौत से बचाता है और नेकी उमर में इज़ाफा का बाईस है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5162) * عثمان بن زفر الدمشقی مجهول لم يوثقه غير ابن حبان

٣٣٦٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا ضَرَبَ أَحَدُكُمْ خَادِمَهُ فَذَكَرَ اللَّهَ فَارْفَعُوا أَيْدِيَكُمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ لَكِنْ عِنْدَهُ «فَلْيُمْسِكْ» بدل «فارفعوا أَيْدِيكُم»

3360. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई अपने खादिम को मारे और वह अल्लाह का वास्ता दे तो तुम अपना हाथ उठा लो (न मारो)”| तिरमिज़ी, बयहकी की शुऐब अल ईमान, लेकिन उस में “ अपना हाथ उठा लो” के बजाए “ रोक लो” के अल्फाज़ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الترمذی (1950) و البيهقی فی شعب الايمان (8584) * ابو هارون العبدی متروک و متهم من کذبه ، شيعی

٣٣٦١ - (حسن) وَعَن أبي أيوبَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ فَرَّقَ بَيْنَ وَالِدَةٍ وَوَلَدِهَا فَرَّقَ اللَّهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ أَحِبَّتِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ والدارمي

3361. अबू अय्यूब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस ने वालिदा और उस के बच्चे के दरमियान जुदाई डाल दी तो रोज़ ए कियामत अल्लाह उस के और उस के चहितो (वालेदीन और औलाद वगैरा) के दरमियान जुदाई डाल देगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1283 وقال : حسن غريب) و الدارمی (2 / 227228 ح 2482)

٣٣٦٢ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: وَهَبَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غلامين أَخَوَيْنِ فَبعث أَحدهمَا فَقَالَ لي رَسُول صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا عَلِيُّ مَا فَعَلَ غُلَامُكَ؟» فَأَخْبَرْتُهُ. فَقَالَ: «رُدَّهُ رُدَّهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

3362. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने दो गुलाम भाई मुझे हिब्बा कीए तो मैंने उनमें से एक बेच दीया ,रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझ से दरियाफ्त फ़रमाया: “तेरा गुलाम कहाँ गया ?” मैंने आप को बताया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे वापस लाओ इसे वापस लाओ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1284 وقال : حسن غريب) و ابن ماجه (2249) * فيه ميمون بن ابی شبيب : لم يدرک عليًا رضی الله عنه

٣٣٦٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ أَنَّهُ فَرَّقَ بَيْنَ جَارِيَةٍ وَوَلَدِهَا فَنَهَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ذَلِكَ فردَّ البَيع. رَوَاهُ أَبُو

دَاوُد مُنْقَطِعًا

3363. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने एक लौंडी और उस के बच्चे के दरमियान जुदाई डाल दी तो नबी ﷺ ने उन्हें उस से मना फ़रमाया और बेअ को फस्ख कर दिया अबू दावुद ने इसे मुन्कतेअ रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2696) * سنده منقطع كما بينه الامام ابوداود رحمه الله و حديث الترمذى (1283 ، 1566) يغنى عنه

٣٣٦٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " ثَلَاثٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ يَسَّرَ اللَّهُ حَتْفَهُ وَأَدْخَلَهُ جَنَّتَهُ: رِفْقٌ بِالضَّعِيفِ وَشَفَقَةٌ عَلَى الْوَالِدَيْنِ [ص:١٠٠ وَإِحْسَانٌ إِلَى الْمَمْلُوكِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

3364. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिस शख़्स में तीन सिफात होगी अल्लाह उसकी मौत आसान फरमादेगा और इसे जन्नत में दाखिल फरमाएगा: कमज़ोर से नरमी करना, वालिदेन पर हमदर्दी करना और ममलुक से इहसान करना"| तिरमिज़ी, और उन्होंने कहा: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه الترمذى (2494) * فيه عبدالله بن ابراهيم الغفارى متروک و نسبه ابن حبان الى الوضع و ابوه : مجهول

٣٣٦٥ - وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم وَهَبَ لِعَلِيٍّ غُلَامًا فَقَالَ: «لَا تَضْرِبْهُ فَإِنِّي نُهِيتُ عَنْ ضَرْبِ أَهْلِ الصَّلَاةِ وَقَدْ رَأَيْتُهُ يُصَلِّي» . هَذَا لفظ المصابيح

3365. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने अली रदियल्लाहु अन्हु को एक गुलाम हिब्बा किया तो फ़रमाया: "इसे मारना नहीं क्योंकि नमाज़ियो को मारने से मना किया गया है और मैंने इसे नमाज़ पढ़ते हुए देखा है"| यह मसाबिह के अल्फाज़ हैं| (हसन)

حسن ، رواه البغوى فى المصابيح (2 / 480 ح 2520) و احمد (5 / 250 ، 258) و الطبرانى (8 / 330 ح 8057)

٣٣٦٦ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي «الْمُجْتَبَى» لِلدَّارَقُطْنِيِّ: أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَانَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ضَرْبِ الْمُصَلِّينَ

3366. और इमाम दार कुतनी की रिवायत अल मुजतबा में है की उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया के रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें नमाज़ियो को मारने से मना फ़रमाया है| (हसन)

حسن ، رواه الدارقطنى (2 / 54 ح 1739 و سنده ضعيف وهو حسن بالشواهد منها الحديث السابق (3365)

٣٣٦٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كم نَعْفُو عَنِ الْخَادِمِ؟ فَسَكَتَ ثُمَّ أَعَادَ عَلَيْهِ الْكَلَامَ فصمتَ فلمَّا كانتِ الثَّالثةُ قَالَ: «اعفُوا عَنْهُ كُلَّ يَوْمٍ سَبْعِينَ مَرَّةً» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3367. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम खादिम को कितनी बार मुआफ़ करे? आप ﷺ ख़ामोश रहे, इस शख़्स ने फिर यही कहा, आप फिर ख़ामोश रहे, जब तीसरी बार दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस से दिन में सत्तर बार दरगुज़र करो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (5164)

٣٣٦٨ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو

3368. इमाम तिरमिज़ी ने इसे अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1949)

٣٣٦٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم: «مَنْ لَاءَمَكُمْ مِنْ مَمْلُوكِيكُمْ فَأَطْعِمُوهُ مِمَّا تَأْكُلُونَ وَاكْسُوهُ مِمَّا تَكْسُونَ وَمَنْ لَا يُلَائِمُكُمْ مِنْهُمْ فَبِيعُوهُ وَلَا تُعَذِّبُوا خَلَقَ اللَّهِ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

3369. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम्हारे गुलामो में से जो गुलाम तुम्हारी मदद करे तो जो तुम खाते हो इसे भी वही खिलाओ और जो तुम पहनते हो इसे भी वही पहनाओ और उनमें से जो तुम्हारी मदद न करे इसे बेच दो और अल्लाह की मखलूक को सज़ा दो”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (5 / 168 ح 21815) و ابوداؤد (5157)

٣٣٧٠ - (صَحِيح) وَعَن سهلِ بنِ الحَنظَلِيَّةِ قَالَ: مَرَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بِبَعِيرٍ قَدْ لَحِقَ ظَهْرُهُ بِبَطْنِهِ فَقَالَ: «اتَّقُوا اللَّهَ فِي هَذِهِ الْبَهَائِمِ الْمُعْجَمَةِ فَارْكَبُوهَا صَالِحَة واترُكوها صَالِحَة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3370. सहल बिन हंजलीय्या रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ एक लागीर ऊंट के पास से गुज़रे तो फ़रमाया: “उन बे ज़ुबान जानवरों के बारे में अल्लाह से डरो, इन पर इस हाल में सवारी करो के वह सवारी के काबिल हो, और उन्हें इस हाल में छोड़ो के वह अच्छे हो (अभी थके न हो)”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (2548)

بَاب النَّفَقَات وَحقّ الْمَمْلُوك • नान नफ्के और मातेहत लोगों का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٣٧١ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: لَمَّا نَزَلَ قَوْلُهُ تَعَالَى (وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أحسن)»» وَقَوْلُهُ تَعَالَى: (إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَى ظُلْمًا)»» الْآيَةَ انْطَلَقَ مَنْ كَانَ عِنْدَهُ يَتِيمٌ فَعَزَلَ طَعَامه من طَعَامَهُ وَشَرَابَهُ مِنْ شَرَابِهِ فَإِذَا فَضَلَ مِنْ طَعَامِ الْيَتِيمِ وَشَرَابِهِ شَيْءٌ حُبِسَ لَهُ حَتَّى يَأْكُلَهُ أَوْ يَفْسُدَ فَاشْتَدَّ ذَلِكَ عَلَيْهِمْ فَذَكَرُوا ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: (وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَى قُلْ: إِصْلَاح لَهُم خير وَإِن تخالطوهم فإخوانكم)»» فَخَلَطُوا طَعَامَهُمْ بِطَعَامِهِمْ وَشَرَابَهُمْ بِشَرَابِهِمْ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3371. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब अल्लाह तआला का फरमान: “तुम यतीम के माल के करीब न जाओ मगर इसी के साथ के वह अहसन(सबसे अच्छा) हो”, उस का फरमान: “बेशक जो लोग यतीमो का माल इज़राहे ज़ुल्म खाते है”, नाज़िल हुआ तो फिर जिस शख़्स के पास यतीम था उस ने उस का खाना अपने खाने से, उस का पीना अपने पीने से अलग कर दिया, और जब यतीम के खाने पीने से कुछ बच जाता तो वह इसी के लिए रख देते हत्ता के वह इसे खा लेता या वह ख़राब हो जाता, यह चीज़ इन पर बहोत दुश्वार गुज़री तो उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से उस का तज़किरह किया उस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फरमाई: “वो आप से यतीमो के बारे में दरियाफ्त करते हैं, फरमा दिया जाए इन के लिए इस्लाह करना बेहतर है, और अगर तुम इनको अपने साथ मिला लो तो वह तुम्हारे भाई है”, उन्होंने उनका खाना अपने खाने के साथ और पीना अपने पीने के साथ मीला लिया| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2871) و النسائی (6 / 256 ح 3699) * عطاء بن السائب اختلط

٣٣٧٢ - (ضَعِيف) وَعَن أبي مُوسَى قَالَ: لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ فَرَّقَ بَيْنَ الْوَالِدِ وَوَلَدِهِ وَبَيْنَ الْأَخِ وَبَيْنَ أَخِيهِ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارَقُطْنِيُّ

3372. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने वालिद और उस के बच्चे के दरमियान, निज़ भाइयो के दरमियान जुदाई डालने वाले पर लानत फरमाई| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (2250) و الدارقطنی (3 / 67) * ابراهیم بن اسماعیل بن مجمع الانصاری : ضعیف

٣٣٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أُتِيَ بِالسَّبْيِ أَعْطَى أَهْلَ الْبَيْتِ جَمِيعًا كَرَاهِيَةَ أَنْ يفرق بَينهم. رَوَاهُ ابْن مَاجَه

3373. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ के पास कैदी लाए जाता तो आप एक घर के तमाम लोग किसी एक को अता फरमा देते क्योंकि आप को उनमें जुदाई डालना नापसंद था| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه ابن ماجه (2248) * فيه جابر الجعفى ضعيف رافضى مدلس اتهمه بعضهم ، و فى السند علة أخرى

٣٣٧٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَلَا أُنَبِّئُكُمْ بِشِرَارِكُمْ؟ الَّذِي يَأْكُلُ وَحْدَهُ وَيَجْلِدُ عَبْدَهُ وَيَمْنَعُ رِفْدَهُ» . رَوَاهُ رزين

3374. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "क्या मैं तुम्हें तुम्हारे बुरे लोगों के मुताल्लिक न बताऊँ! वह शख़्स है जो (बुखल व तकब्बुर की वजह से) अकेला खाता है, अपने गुलाम को मारता है और अपना अतिय्या उस के मुस्तहक को नहीं देता"| (मुझे नहीं मिली)

لم اجده ، رواه رزين (لم اجده) * قوله ’’ و يجلد عبده و يمنع رفده ‘‘ له شاهد عند الطبرانى فى الكبير (10 / 387 ح 10775) فيه ابن ميمون متروک ، انظر مجمع الزوائد (8 / 183) فلا يستشهد به

٣٣٧٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ سَيِّئُ الْمَلَكَةِ» . قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَيْسَ أَخْبَرْتَنَا أَنَّ هَذِهِ الْأُمَّةَ أَكْثَرُ الْأُمَمِ مَمْلُوكِينَ وَيَتَامَى؟ قَالَ: «نَعَمْ فَأَكْرِمُوهُمْ كَكَرَامَةِ أَوْلَادِكُمْ وَأَطْعِمُوهُمْ مِمَّا تَأْكُلُونَ» . قَالُوا: فَمَا تنفعنا الدُّنْيَا؟ قَالَ: «فَرَسٌ تَرْتَبِطُهُ تُقَاتِلُ عَلَيْهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَمْلُوكٌ يَكْفِيكَ فَإِذَا صَلَّى فَهُوَ أَخُوكَ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

3375. अबू बक्र सिद्दीक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "(मम्लुको से) बुरा सुलूक करने वाला जन्नत में नहीं जाएगा", सहाबा किराम ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या आप ने हमें नहीं बताया के इस उम्मत में तमाम उम्मतो से ज़्यादा ममलुक और यतीम होंगे? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, तुम उनकी अपने औलाद की तरह तकरीम करो और जो खुद खाओ वही उन्हें खिलाओ", उन्होंने अर्ज़ किया, हमें दुनिया में कौन सी चीज़ फ़ायदा देगी? आप ﷺ ने फ़रमाया: "घोड़ा जिसे तू तैयार रखे ताकी तू उस पर अल्लाह की राह में जिहाद करे, और ममलुक जो तुझे किफ़ायत करे, जब वह नमाज़ पढ़े तो वह तुम्हारा भाई है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (3691) [و الترمذى :1946] * فيه فرقد ضعيف و تقدم طرفه (3358)

बَابُ بُلُوغِ الصَّغِيرِ وَحَضَانَتِهِ فِي الصِّغَرِ • छोटे लडके की उम्र ए बुलुगियत और कमसिनी मैं इसकी तरबियतका बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٣٣٧٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: عُرِضْتُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ أُحُدٍ وَأَنَا ابْنُ أَرْبَعَ عَشْرَةَ سَنَةً فَرَدَّنِي ثُمَّ عُرِضْتُ عَلَيْهِ عَامَ الْخَنْدَقِ وَأَنَا ابْنُ خَمْسَ عَشْرَةَ سَنَةً فَأَجَازَنِي فَقَالَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ: هَذَا فَرْقُ مَا بَين الْمُقَاتلَة والذرية

3376. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, गज़वा ए उहद के मौके पर चौदाह साल की उमर में मुझे रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में पेश किया गया तो आप ने मुझे वापस कर दिया, फिर गज़वा ए खंदक के मौके पर पन्द्रह साल की उमर में मुझे पेश किया गया तो आप ने मुझे (जिहाद करने की) इजाज़त मरहमत फरमा दी, उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: यही उमर (पन्द्रह साल) लड़ने वाले जवानों और लड़को (नाबालिग़) में फर्क करने वाली है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2664) و مسلم (91 / 1868)، (4837)

٣٣٧٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: صَالَحَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ عَلَى ثَلَاثَةِ أَشْيَاءَ: عَلَى أَنَّ مَنْ أَتَاهُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ رَدَّهُ إِلَيْهِمْ وَمَنْ أَتَاهُمْ مِنَ الْمُسْلِمِينَ لَمْ يَرُدُّوهُ وَعَلَى أَنْ يَدْخُلَهَا مِنْ قَابِلٍ وَيُقِيمَ بِهَا ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ فَلَمَّا دَخَلَهَا وَمَضَى الْأَجَلُ خَرَجَ فَتَبِعَتْهُ ابْنَةُ حَمْزَةَ تُنَادِي: يَا عَمِّ يَا عَمِّ فَتَنَاوَلَهَا عَلِيٌّ فَأَخَذَ بِيَدِهَا فَاخْتَصَمَ فِيهَا عَلِيٌّ وَزَيْدٌ وَجَعْفَرٌ قَالَ عَلِيٌّ: أَنَا أَخَذْتُهَا وَهِيَ بِنْتُ عَمِّي. وَقَالَ جَعْفَرٌ: بِنْتُ عَمِّي وَخَالَتُهَا تَحْتِي وَقَالَ زَيْدٌ: بِنْتُ أَخِي فَقَضَى بِهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِخَالَتِهَا وَقَالَ: «الْخَالَةُ بِمَنْزِلَةِ الْأُمِّ» . وَقَالَ لِعَلِيٍّ: «أَنْتَ مِنِّي وَأَنَا مِنْكَ» وَقَالَ لِجَعْفَرٍ: «أَشْبَهْتَ خَلْقِي وَخُلُقِي» . وَقَالَ لزيد: «أَنْتَ أخونا ومولانا»

3377. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने हुदैबिया के मौके पर तीन अशियाअ पर सुलह फरमाई, के मुशरिकीन में से जो शख़्स उनकी तरफ आएगा इसे उन (मुशरिकिन) की तरफ वापस किया जाएगा, और जो मुसलमानों की तरफ से उन के पास चला जाए तो उसे वापस नहीं किया जाएगा, और आप ﷺ आइन्दा साल मक्का में दाखिल होंगे, और वहां तीन रोज़ कयाम करेंगे, जब आप इस (मक्के) में दाखिल हुए और मुद्दत पूरी हो गई और आप ने वापसी का इरादा फ़रमाया तो हम्ज़ा रदियल्लाहु अन्हु की बेटी आप ﷺ के पीछे चचा जान! चचा जान! कह कर आवाज़े देने लगी तो अली रदियल्लाहु अन्हु ने उस का हाथ पकड़ कर अपने साथ कर लिया उस के साथ ही हज़रत अली (र), हज़रत जाफर (र), और हज़रत ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु के दरमियान हम्ज़ा की बेटी के बारे में तनाज़ा शुरू हो गया: अली रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मैंने इसे पकड़ा है और वह

मेरे चचा की बेटी है, जाफर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: वह मेरे चचा की बेटी है और उसकी खाला मेरी बीवी है, और ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: मेरे भाई की बेटी है, नबी ﷺ ने उस के मुतल्लिक उसकी खाला के हक़ में फैसला किया और फ़रमाया: "खाला माँ की जगह पर है", और अली रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: "तुम मुझ से हो और मैं तुझ से हूँ" जाफर रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: "तुम खल्क व खुल्क (सीरत व सूरत) में मुझ से मुशाबह (अनुरूप) हो", और ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: "तुम हमारे भाई और हमारे चहिते हो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (4251) و مسلم (90 / 1783)، (4629)

بَابُ بُلُوغِ الصَّغِيرِ وَحَضَانَتِهِ فِي الصِّغَرِ • छोटे लडके की उम्र ए बुलुगियत और कमसिनी में इसकी तरबियतका बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٣٧٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو: أَنَّ امْرَأَةً قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ ابْنِي هَذَا كَانَ بَطْنِي لَهُ وِعَاءً وَثَدْيِي لَهُ سِقَاءً وَحِجْرِي لَهُ حِوَاءً وَإِنَّ أَبَاهُ طَلَّقَنِي وَأَرَادَ أَنْ يَنْزِعَهُ مِنِّي فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنْتِ أَحَقُّ بِهِ مَا لم تنكحي» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

3378. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं की एक औरत ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरा यह बेटा (के दौरान हमल) मेरा पेट उस के लिए ज़र्फ़ था, (दोरान रिज़ाअत) मेरी छाती उस के लिए मश्किज़ा (दूध पीने की जगह) थी और मेरी गोद उस के लिए ठिकाना थी, और (अब) उस के वालिद ने मुझे तलाक दे दि है और वह इसे मुझ से छिनना चाहता है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब तक तू (नए खाविंद से) निकाह न करे इस वक़्त तक तुम उसकी ज़्यादा हक़दार हो"| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ احمد (2 / 182 ح 6707) و ابوداؤد (2276)

٣٣٧٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيَّرَ غُلَامًا بَيْنَ أَبِيهِ وَأمه. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3379. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने बालिग़ लड़के को उस के वालिद और उसकी वालिदा के दरमियान इख़्तियार दिया| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (1357 وقال : حسن صحیح)

٣٣٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعنهُ قَالَ: جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: إِنَّ زَوْجِي يُرِيدُ أَنْ يَذْهَبَ بِابْنِي وَقَدْ سَقَانِي وَنَفَعَنِي فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَذَا أَبُوكَ وَهَذِهِ أُمُّكَ فَخُذْ بِيَدِ أَيِّهِمَا شِئْتَ» . فَأَخَذَ بِيَدِ أُمِّهِ فَانْطَلَقَتْ بِهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ

3380. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक औरत रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई तो उस ने अर्ज़ किया, मेरा खाविंद मेरे इस बेटे को ले जाना चाहता है, जबकि वह मेरे लिए पानी लाता है और मुझे फ़ायदा पहुंचाता है, तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “ये तुम्हारा वालिद है और यह तुम्हारी वालिदा है, तुम इन दोनों में से जिस का चाहो हाथ थाम लो”, उस ने अपने वालिदा का हाथ थाम लिया तो वह इसे लेकर चली गई| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (2277) و النسائی (6 / 185 ح 3526) و الدارمی (2 / 170 ح 2298)

بَابُ بُلُوغِ الصَّغِيرِ وَحَضَانَتِهِ فِي الصِّغَرِ • छोटे लडके की उम्र ए बुलुगियत और कमसिनी में इसकी तरबियतका बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٣٨١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ هِلَالِ بْنِ أَسَامَةَ عَنْ أَبِي مَيْمُونَةَ سُلَيْمَانَ مَوْلًى لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ قَالَ: بَيْنَمَا أَنَا جَالِسٌ مَعَ أَبِي هُرَيْرَةَ جَاءَتْهُ امْرَأَةٌ فَارِسِيَّةٌ مَعَهَا ابْنٌ لَهَا وَقَدْ طَلَّقَهَا [ص:١٠٠ زَوْجُهَا فَادَّعَيَاهُ فَرَطَنَتْ لَهُ تَقُولُ: يَا أَبَا هُرَيْرَةَ زَوْجِي يُرِيدُ أَنْ يَذْهَبَ بِابْنِي. فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: اسْتهِمَا رَطَنَ لَهَا بِذَلِكَ. فَجَاءَ زَوْجُهَا وَقَالَ: مَنْ يُحَاقُّنِي فِي ابْنِي؟ فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: اللَّهُمَّ إِنِّي لَا أَقُولُ هَذَا إِلَّا أَنِّي كُنْتُ قَاعِدًا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَتَتْهُ امْرَأَةٌ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ زَوْجِي يُرِيدُ أَنْ يَذْهَبَ بِابْنِي وَقَدْ نَفَعَنِي وَسَقَانِي مِنْ بِئْرِ أَبِي عِنَبَةَ وَعِنْدَ النَّسَائِيِّ: مِنْ عَذْبِ الْمَاءِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اسْتَهِمَا عَلَيْهِ» . فَقَالَ زَوْجُهَا مَنْ يُحَاقُّنِي فِي وَلَدِي؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَذَا أَبُوكَ وَهَذِهِ أُمُّكَ فَخُذْ بِيَدِ أَيِّهِمَا شِئْتَ» فَأَخَذَ بيد أمه. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد. وَالنَّسَائِيّ لكنه ذكر الْمسند. وَرَوَاهُ الدَّارمِيّ عَن هِلَال بن أُسَامَة

3381. हिलाल बिन उसामा अहले मदीना के आज़ाद करदा गुलाम अबू मय्मुना सुलेमान से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: इस दौरान की मैं अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु के पास बैठा हुआ था के एक फारसी (अजमी) औरत जिस को उस के खाविंद ने तलाक दे दि थी, अपने बेटे को लेकर अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु के पास आई और वह दोनों (वालिद और वालिदा) उस का दावा करते थे, इस औरत ने अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से फारसी में बात करते हुए कहा: अबू हुरैरा मेरा खाविंद मेरे इस बेटे को ले जाना चाहता है, अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: तुम दोनों उस के मुतल्लिक कुरा अन्दाज़ी करो, अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु ने भी उस के मुतल्लिक इसे फारसी में बताया, जब उस का खाविंद आया तो उस ने कहा मेरे बेटे के मुतल्लिक कौन मुझ से झगड़ता है? अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: ऐ अल्लाह! मैं यह फैसला इसलिए दे रहा हूँ कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ के

पास बैठा हुआ था के एक औरत आप की खिदमत में हाज़िर हुई तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरा खाविंद मेरे इस बेटे को ले जाना चाहता है, जबकि वह मुझे फ़ायदा पहुंचाता है और अबू इनबा के कुंवो से पानी लाकर मुझे पिलाता है, और नसई की रिवायत में है मीठा पानी, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस के मुतल्लिक कुरा अन्दाज़ी करो”, तो उस के खाविंद ने कहा मेरे बच्चे के बारे में मुझ से कौन झगड़ता है? तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये तेरा वालिद है और यह तेरी वालिदा है, लिहाज़ा तुम उनमें से जिस का चाहो हाथ पकड़ लो, “उस ने अपने वालिदा का हाथ पकड़ लिया| अबू दावुद, नसई, लेकिन उन्होंने इसे मुसनद रिवायत किया है, और दारमी ने इसे हिलाल बिन उसामा से रिवायत किया है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2277) و النسائی (6 / 185 ح 3526 مختصرًا) و الدارمی (2 / 170 ح 2298) و تقدم (3380) و الحديث السابق

गुलाम को आज़ाद करने का बयान • كتاب الْعِتْق

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٣٣٨٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَعْتَقَ رَقَبَةً مُسْلِمَةً أَعْتَقَ اللَّهُ بِكُلِّ عُضْوٍ مِنْهُ عُضْوًا مِنَ النَّارِ حَتَّى فَرْجَهُ بِفَرْجِهِ»

3382. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स किसी मुसलमान को आज़ाद करता है, अल्लाह उस के एक एक आज़ा के बदले में इस (आज़ाद करने वाले) के एक एक आज़ा को जहन्नम की आग से आज़ाद कर देता है, हत्ता के उसकी शर्मगाह को उसकी शर्मगाह के बदले में (आज़ाद कर देता है)”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

رواه البخاری (6715) و مسلم (23 / 1509)، (3797)

٣٣٨٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَيُّ الْعَمَلِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: «إِيمَانٌ بِاللَّهِ وَجِهَادٌ فِي سَبِيلِهِ» قَالَ: قُلْتُ: فَأَيُّ الرِّقَابِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: «أَغْلَاهَا ثَمَنًا وَأَنْفَسُهَا عِنْدَ أَهْلِهَا» . قُلْتُ: فَإِنْ لَمْ أَفْعَلْ؟ قَالَ: «تُعِينُ صَانِعًا أَوْ تَصْنَعُ لِأَخْرَقَ» . قُلْتُ: فَإِنْ لَمْ أَفْعَلْ؟ قَالَ: «تَدَعُ النَّاسَ مِنَ الشَّرِّ فَإِنَّهَا صَدَقَةٌ تَصَدَّقُ بهَا على نَفسك»

3383. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ से दरियाफ्त किया कौन सा अमल अफज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह पर ईमान लाना और उसकी राह में जिहाद करना”, वह (रावी) बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: कौन सा गुलाम आज़ाद करना अफज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस की कीमत ज़्यादा हो और वह अपने अहल के यहाँ बहोत पसंदीदा हो”, मैंने अर्ज़ किया: अगर में ऐसा न कर सकू? आप ﷺ ने फ़रमाया: “किसी भी काम करने वाले की मदद कर, या जो शख़्स कोई चीज़ बनाना नहीं जानता तो उस के लिए वह चीज़ बना दे”, मैंने अर्ज़ किया: अगर में यह भी न कर सकू? आप ﷺ ने फ़रमाया: “लोगो को अपने शर से महफ़ूज़ रख यह ऐसा सदका है जिसके ज़रिए तू अपने जान पर सदका करता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2518) و مسلم (136 / 84)، (250)

गुलाम को आज़ाद करने का बयान • كتاب الْعتْق
दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٣٣٨٤ - (صَحِيح) عَن الْبَراء بن عَازِب قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: عَلِّمْنِي عَمَلًا يُدْخِلُنِي الْجَنَّةَ قَالَ: «لَئِنْ كُنْتَ أَقْصَرْتَ الْخُطْبَةَ لَقَدْ أَعْرَضْتَ [ص:١٠١] الْمَسْأَلَةَ أَعْتِقِ النَّسَمَةَ وَفك الرَّقَبَة» . قَالَ: أَو ليسَا وَاحِدًا؟ قَالَ: " لَا عِتْقُ النَّسَمَةِ: أَنْ تَفَرَّدَ بِعِتْقِهَا وَفَكُّ الرَّقَبَةِ: أَنْ تُعِينَ فِي ثَمَنِهَا وَالْمِنْحَةَ: الْوَكُوف وَالْفَيْءَ عَلَى ذِي الرَّحِمِ الظَّالِمِ فَإِنْ لَمْ تُطِقْ ذَلِكَ فَأَطْعِمِ الْجَائِعَ وَاسْقِ الظَّمْآنَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ فَإِنْ لم تطق فَكُفَّ لِسَانَكَ إِلَّا مِنْ خَيْرٍ ". رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

3384. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आराबी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने अर्ज़ किया, मुझे कोई ऐसा अमल सिखाईए जो मुझे जन्नत में दाखिल कर दे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगरचे तुमने बात मुख़्तसर की है लेकिन बात बहोत अहम दरियाफ्त की है, इत्क (रूह) को आज़ाद कर, और गर्दन (फक्कु रुकबा) को गुलामी से आज़ाद कर”, उस ने अर्ज़ किया, क्या इन दोनों का एक ही मानी नहीं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं, इत्क से मुराद है की तो अकेला इसे आज़ाद करे जबकि “ फक्कु रुकबा” यह है कि तो उसकी कीमत अदा करने में मदद कर, ज़्यादा दूध वाला जानवर बतौर अतिय्या दे और ज़ालिम रिश्तेदार पर मेहरबानी व इहसान कर, अगर तुम उसकी ताकत न रखो तो फिर भूके को खाना खिलाओ, प्यासे को पानी पिलाओ, नेकी का हुक्म करो और बुराई से मना करो, अगर तुम उसकी ताकत न रखो तो फिर खैर व भलाई की बात के अलावा अपने ज़ुबान को रोको”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (4335 ، نسخة محققة : 4026 و الكبرى 10 / 272273) و ابوداؤد الطيالسى (739) و احمد (4 / 299 و سنده صحيح) و صححه ابن حبان (1209) و الحاكم (2 / 217) و وافقه الذهبى[* فيه عيسى بن عبد الرحمن السلمى ثقة ، انظر تهذيب الكمال (14 / 558) و ذكر هذا الحديث

٣٣٨٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عَمْرو بن عبسة أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ بَنَى مَسْجِدًا لِيُذْكَرَ اللَّهُ فِيهِ بُنِيَ لَهُ بَيْتٌ فِي الْجَنَّةِ وَمَنْ أَعْتَقَ نَفْسًا مُسْلِمَةً كَانَتْ فِدْيَتَهُ مِنْ جَهَنَّمَ. وَمَنْ شَابَ شَيْبَةً فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَانَتْ لَهُ نُورًا يَوْمَ الْقِيَامَة» . رَوَاهُ فِي شرح السّنة

3385. अमर बिन अबसत रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स मस्जिद बनाता है ताकि उस में अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उस के लिए जन्नत में घर बना दिया जाता है, जो शख़्स किसी मुसलमान को आज़ाद करता है तो यह उस का जहन्नम से फिदिया बन जाता है, और जो शख़्स अल्लाह की राह

में (तहसील इल्म या जिहाद करते हुए) बुढा हो गया तो रोज़ ए कियामत (जब अंधेरे होंगे) उस के लिए नूर होगा"। (सहीह)

صحیح ، رواه البغوی فی شرح السنة (9 / 355 ح 2420) [و احمد (4 / 113) و ابن حبان (الموارد : 1208) و النسائی (2 / 31 ح 689)] * و للحدیث شواهد عند البخاری و مسلم و الترمذی (1635) و ابی داود (4202) و ابن حبان (1477 ، 1479 الموارد) و غیرهم

كتاب الْعتْق • गुलाम को आज़ाद करने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٣٨٦ - (ضَعِيف) عَن الغريف بن عَيَّاش الديلمي قَالَ: أَتَيْنَا وَاثِلَة بن الْأَسْقَع فَقُلْنَا: حَدِّثْنَا حَدِيثًا لَيْسَ فِيهِ زِيَادَةٌ وَلَا نُقْصَانٌ فَغَضِبَ وَقَالَ: إِنَّ أَحَدَكُمْ لَيَقْرَأُ وَمُصْحَفُهُ مُعَلَّقٌ فِي بَيْتِهِ فَيَزِيدُ وَيَنْقُصُ فَقُلْنَا: إِنَّمَا أَرَدْنَا حَدِيثًا سَمِعْتَهُ مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم فَقَالَ: أَتَيْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي صَاحِبٍ لَنَا أَوْجَبَ يَعْنِي النَّارَ بِالْقَتْلِ فَقَالَ: [ص:١٠١] «أعتقوا عَنهُ بِعِتْق الله بِكُل عُضْو مِنْهُ عُضْو أَمنه من النَّار» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3386. गरिफ बिन अय्याश दयलमी बयान करते हैं, हम वासिला बिन अस्कअ रदियल्लाहु अन्हु के पास आए तो हमने कहा हमें कोई ऐसी हदीस सुनाइए जिस में कोई कमी बेसी न हो, वह (इस बात से) नाराज़ हो गए और कहा तुम कुरान की तिलावत करते हो, जबकि उस का मुसहफ़ उस के घर में मौजूद होता है उस के बावजूद वह कमी बेसी कर लेता है, हमने कहा: हम ने तो सिर्फ ऐसी हदीस का इरादा किया था जो आप ने नबी ﷺ से सुनी हो, उन्होंने कहा, हम अपने एक साथी के बारे में, जिस ने क़त्ल की वजह से जहन्नम को वाजिब कर लिया था, रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "उस की तरफ से गुलाम आज़ाद करो, अल्लाह उस के हर आज़ा के बदले उस के हर आज़ा को जहन्नम की आग से आज़ाद कर देगा"। (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3964) و النسائی (فی الکبری : 4891) [و صححه ابن حبان (1206) و الحاکم علی شرط الشیخین (2 / 212) و وافقه الذهبی] * (عبدالله) الغریف بن الدیلمی : حسن الحدیث ، وثقه الحاکم وغیره

٣٣٨٧ - وَعَن سَمُرَةَ بْنِ جُنْدُبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَفْضَلُ الصَّدَقَةِ الشَّفَاعَةُ بِهَا تُفَكُّ الرَّقَبَة» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان»

3387. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अफज़ल सदका किसी के लिए ऐसी सिफारिश करना है जिस की वजह से किसी की गर्दन आज़ाद कर दी जाए"। (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جدا ، رواه البیهقی فی شعب الایمان (7683 ، نسخة محققة : 7279 نحو المعنی) [و الطبرانی فی الکبیر (7 / 230 ح 6962)] * فیه ابوبکر الهذلی : متروک

بَابُ إِعْتَاقِ الْعَبْدِ الْمُشْتَرَكِ وَشِرَاءِ الْقَرِيبِ وَالْعِتْقِ فِي الْمَرَض
मश्तर की गुलाम को आज़ाद करने ,करीबी शख्स को खरदने और मर्ज़ में आज़ाद करने का बयान

الْفَصْلُ الأول
पहली फस्ल

٣٣٨٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَعْتَقَ شِرْكًا لَهُ فِي عَبْدٍ وَكَانَ لَهُ مَالٌ يَبْلُغُ ثَمَنَ الْعَبْدِ قُوِّمَ الْعَبْدُ قِيمَةَ عَدْلٍ فَأُعْطِيَ شُرَكَاؤُهُ حِصَصَهُمْ وَعَتَقَ عَلَيْهِ الْعَبْدُ وَإِلَّا فَقَدْ عَتَقَ مِنْهُ مَا عَتَقَ»

3388. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस ने गुलाम में अपना हिस्सा आज़ाद कर दिया और उस के पास इतना माल है जो गुलाम की कीमत को पहुँचता है, तो गुलाम की मंसुफात कीमत मुकर्रर की जाएगी और वह उस के शरीको को उन के हिस्सों के मुताबिक दी जाएगी और गुलाम आज़ाद हो जाएगा, वरना जितना आज़ाद हो गया सो हो गया"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2532) و مسلم (1 / 1501)، (3770)

٣٣٨٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَعْتَقَ شِقْصًا فِي عَبْدٍ أَعْتِقَ كُلُّهُ إِنْ كَانَ لَهُ مَالٌ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ مَالٌ اسْتَسْعَى الْبعد غير مشقوق عَلَيْهِ»

3389. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिस ने किसी गुलाम में मौजूद अपना हिस्सा आज़ाद कर दिया और अगर वह शख़्स माल दार है तो गुलाम को मुकम्मल तौर पर आज़ाद कर दिया जाएगा, और अगर इस शख़्स के पास माल नहीं तो गुलाम से माल कमाने के लिए कहा जाएगा लेकिन उस पर मशक़्क़त नहीं डाली जाएगी"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2504) و مسلم (3 / 1503)، (3773)

٣٣٩٠ - (صَحِيح) وَعَن عمرَان بن حُصَيْن: أَنَّ رَجُلًا أَعْتَقَ سِتَّةَ مَمْلُوكِينَ لَهُ عِنْدَ مَوْتِهِ لَمْ يَكُنْ لَهُ مَالٌ غَيْرُهُمْ فَدَعَا بهم رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَزَّأَهُمْ أَثْلَاثًا ثُمَّ أَقْرَعَ بَيْنَهُمْ فَأَعْتَقَ اثْنَيْنِ وَأَرَقَّ أَرْبَعَةً وَقَالَ لَهُ قَوْلًا شَدِيدًا. رَوَاهُ [ص:١٠١ مُسْلِمٌ وَرَوَاهُ النَّسَائِيُّ عَنْهُ وَذَكَرَ: «لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ لَا أُصَلِّيَ عَلَيْهِ» بَدَلَ: وَقَالَ لَهُ قَوْلًا شَدِيدًا وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ: قَالَ: «لَوْ شَهِدْتُهُ قَبْلَ أَنْ يُدْفَنَ لَمْ يُدْفَنْ فِي مَقَابِرِ الْمُسلمين»

3390. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी ने अपने मौत के करीब अपने छे गुलाम आज़ाद कर दिए, और उस के पास उन के अलावा और कोई माल नहीं था, चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ने गुलामो को बुलाया और उन्हें तीन हिस्सों में तकसीम कर दिया, फिर उन के मबिन कुरा अन्दाज़ी की तो दो को आज़ाद कर दिया और चार को गुलाम रखा, और आप ﷺ ने उस के मुतल्लिक सख्त अल्फाज़ फरमाए| इन्ही से मरवी नसई की एक रिवायत में “उस के मुतल्लिक सख्त अल्फाज़ फरमाए” की बजाए यह है कि आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने इरादा कर लिया था के उसकी नमाज़े जनाज़ा न पढू”| और अबू दावुद की रिवायत में है फ़रमाया: “अगर में उसकी तद्फिन से पहले मौजूद होता तो उसे मुसलमानों के कब्रिस्तान में दफन न किया जाता”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (56 / 1668)، (4335) و النسائی (4 / 64 ح 1960) و ابوداؤد (3960)

٣٣٩١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَجْزِي وَلَدٌ وَالِده إِلَّا أَن يجده مَمْلُوكا فيشتر بِهِ فيعتقه» . رَوَاهُ مُسلم

3391. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेटा अपने वालिद के इह्सानात का बदला सिर्फ इस सूरत में अदा कर सकता है के अगर वह बाप को ममलुक पाए तो उसे खरीद कर आज़ाद कर दे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (25 / 1510)، (3799)

٣٣٩٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ: أَنَّ رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ دَبَّرَ مَمْلُوكًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ مَالٌ غَيْرُهُ فَبَلَغَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «مَنْ يَشْتَرِيهِ مني؟» فَاشْتَرَاهُ نعيم بن النَّحَّامِ بِثَمَانِمِائَةِ دِرْهَمٍ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: فَاشْتَرَاهُ نُعَيْمُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ الْعَدَوِيُّ بثمانمائة دِرْهَم فجَاء بِهَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَدَفَعَهَا إِلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: «ابْدَأْ بِنَفْسِكَ فَتَصَدَّقْ عَلَيْهَا فَإِنْ فَضَلَ شَيْءٌ فَلِأَهْلِكَ فَإِنْ فَضَلَ عَنْ أَهْلِكَ شَيْءٌ فَلِذِي قَرَابَتِكَ فَإِنْ فَضَلَ عَنْ ذِي قَرَابَتِكَ شَيْءٌ فَهَكَذَا وَهَكَذَا» يَقُولُ: فَبين يَدَيك وَعَن يَمِينك وَعَن شمالك

3392. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के अंसार में से एक आदमी ने एक गुलाम मुद्ब्बिर किया (यूँ कहा के मेरी मौत के बाद यह गुलाम आज़ाद होगा), और उस के अलावा उस के पास कोई और माल नहीं था, नबी ﷺ को यह खबर पहुंची तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझ से इसे कौन खरीदता है?” तो नुअयम बिन नहाम रदियल्लाहु अन्हु ने आठ सौ दिरहम के बदले में उसे खरीद लिया| और मुस्लिम की रिवायत में है की नुअयम बिन अब्दुल्लाह अदवी ने आठ सौ दिरहम के अवज़ इसे खरीद लिया, और इस आदमी ने यह रकम नबी ﷺ की खिदमत में पेश की तो आप ﷺ ने वह इसे दे दी, फिर फ़रमाया: “पहले अपने जान से शुरू करो और उस पर सदका करो, अगर कुछ बच जाए तो फिर तेरे घरवालो के लिए, अगर तेरे घरवालो से बच जाए तो तेरे रिश्तेदारों के लिए, अगर तेरे रिश्तेदारों से बच जाए तो फिर इस तरह और इस तरह”| रावी बयान करते हैं, अपने सामने और अपने दाएँ

बाएँ तकसीम कर| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (6716) و مسلم (58 / 997 بعد ح 1668 و قبل ح 1669)، (2313) [و الشافعی فی الام (8 / 15)]

بَابُ إِعْتَاقِ الْعَبْدِ الْمُشْتَرَكِ وَشِرَاءِ الْقَرِيبِ وَالْعِتْقِ فِي الْمَرَض

मश्तर की गुलाम को आज़ाद करने ,करीबी शख्स को खरदने और मर्ज़ में आज़ाद करने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي

दूसरी फस्ल

٣٣٩٣ - (لم تتمّ دراسته) عَن الْحسن عَن سَمُرَة عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «من ملك ذَا رحم محرم فَهُوَ حُرٌّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَابْنُ مَاجَه

3393. हसन समुरह की सनद से रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स करावतदार मुहर्र्म का मालिक हो जाए तो वह (गुलाम) आज़ाद है”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (1365) و ابوداؤد (3949) و ابن ماجه (2524)

٣٣٩٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا وَلَدَتْ أَمَةُ الرَّجُلِ مِنْهُ فَهِيَ مُعْتَقَةٌ عَنْ دُبُرٍ مِنْهُ أَوْ بَعْدَهُ» . رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ

3394. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब आदमी की लौंडी उस के बच्चे को जन्म दे तो वह उसकी मौत के बाद आज़ाद हो जाएगी”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الدارمی (2 / 257 ح 2577) [و ابن ماجه (2515)] * فیه حسین بن عبدالله : ضعیف و شریک القاضی مدلس و عنعن

٣٣٩٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: بِعْنَا أُمَّهَاتِ الْأَوْلَادِ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبِي بَكْرٍ فَلَمَّا كَانَ عُمَرُ نَهَانَا عَنْهُ فَانْتَهَيْنَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3395. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ और अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के दौर में अम वलद (वो लौंडी जिसके साथ उसका मालिक हमबिस्तर हुआ और उस से औलाद पैदा हो गई) की बेअ किया करते थे, जब उमर रदियल्लाहु अन्हु का दौर आया तो उन्होंने हमें उस से मना किया तो हम रुक गए| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ ابوداؤد (3954)

٣٣٩٦ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَعْتَقَ عَبْدًا وَلَهُ مَالٌ فَمَالُ الْعَبْدِ لَهُ إِلَّا أَنْ يَشْتَرِطَ السَّيِّدُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

3396. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स गुलाम आज़ाद करे और इस (गुलाम) का माल हो तो गुलाम का माल गुलाम ही का है मगर यह कि आका कोई शर्त तेअ कर ले”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (3962) و ابن ماجه (2529)

٣٣٩٧ - (صَحِيح) وَعَن الْمَلِيحِ عَنْ أَبِيهِ: أَنَّ رَجُلًا أَعْتَقَ شِقْصًا مِنْ غُلَامٍ فَذَكَرَ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «لَيْسَ لِلَّهِ شَرِيكٌ» فَأَجَازَ عتقه. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3397. अबू मुलैह अपने वालिद से रिवायत करते हैं, के किसी आदमी ने गुलाम में मौजूद अपने हिस्से को आज़ाद किया तो नबी ﷺ से इस का ज़िक्र किया गया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह के लिए कोई शरीक नहीं”, आप ﷺ ने इसे मुकम्मल तौर पर आज़ाद करने की तरगीब दिलाई| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (3944)

٣٣٩٨ - (جيد) وَعَن سفينة قَالَ: كُنْتُ مَمْلُوكًا لِأُمِّ سَلَمَةَ فَقَالَتْ: أُعْتِقُكَ وَأَشْتَرِطُ عَلَيْكَ أَنْ تَخْدُمَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا عِشْتَ فَقُلْتُ: إِنْ لَمْ تَشْتَرِطِي عَلَيَّ مَا فَارَقْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا عِشْتُ فَأَعْتَقَتْنِي وَاشْتَرَطَتْ عَلَيَّ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

3398. सफीना बयान करते हैं, मैं उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा का गुलाम था, उन्होंने ने फ़रमाया: में तुम्हें आज़ाद करती हो और तुम पर शर्त लगाती हूँ कि तुम जिंदगी भर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत करोगे, मैंने कहा अगर आप मुझ पर शर्त न भी लगाती तब भी में जिंदगी भर रसूलुल्लाह ﷺ से अलग न होता, उन्होंने मुझे आज़ाद कर दिया और मुझ पर शर्त लगा दी| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3932) و مسلم (2526)

٣٣٩٩ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْمُكَاتَبُ عَبْدٌ مَا بَقِيَ عَلَيْهِ مِنْ مُكَاتبَته دِرْهَم» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3399. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने नबी ﷺ से रिवायत

किया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मकातब पर जब तक मकातबत का एक दिरहम भी बाकी रहता है तो वह गुलाम है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3926)

٣٤٠٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا كَانَ عِنْدَ [ص:١٠١ مكَاتب إحداكن وَفَاء فلنحتجب مِنْهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

3400. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम्हारे किसी मकातब के पास इस क़दर रकम हो के वह अदा कर सके तो वह (मालिक) उस से परदा करे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1261 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (3928) وابن ماجه (2520)

٣٤٠١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " مَنْ كَاتَبَ عَبْدَهُ عَلَى مِائَةِ أُوقِيَّةٍ فَأَدَّاهَا إِلَّا عَشْرَ أَوَاقٍ أَوْ قَالَ: عَشْرَةَ دَنَانِيرَ ثُمَّ عَجَزَ فَهُوَ رَقِيقٌ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

3401. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने अपने गुलाम से सौ उकिय्यह पर मकातबत की, उस के जिम्मे सिर्फ दस उकिय्यह या फ़रमाया दस दीनार बाकी रह गए और वह उन्हें अदा न कर सका तो वह गुलाम है”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1260 وقال : غریب) و ابوداؤد (3927) وابن ماجه (2519)

٣٤٠٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا أَصَابَ الْمُكَاتَبُ حَدًّا أَوْ مِيرَاثًا وَرِثَ بِحِسَابِ مَا عَتَقَ مِنْهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ قَالَ: «يُودَى الْمُكَاتَبُ بِحِصَّةِ مَا أَدَّى دِيَةَ حر وَمَا بَقِي دِيَة عبد» . وَضَعفه»» الفص الثَّالِث

3402. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब मकातब दियत या मीरास का मुस्तहक बनता है तो वह अपने आज़ादी के हिसाब से वारिस बनेगा”, और तिरमिज़ी की रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: “मकातब को इस हिस्से के मुताबिक दियत दी जाएगी जो उस ने दियते हर अदा की है और जो बच जाए वह या अब्द है”| और इमाम तिरमिज़ी ने इसे जईफ करार दिया है| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (4582) و الترمذی (1259 وقال : حسن) [و النسائی (8 / 46 ح 4815 ب] * قوله ’’ وضعفه ‘‘ ای : ضعفه البغوی فی مصابیح السنة (2 / 490 ح 2547) و هذا التضعیف مردود

٣٤٠٣ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي عَمْرَةَ الْأَنْصَارِيِّ: أَنَّ أُمَّهُ أَرَادَتْ أَنْ تَعْتِقَ فَأَخَّرَتْ ذَلِكَ إِلَى أَنْ تُصْبِحَ فَمَاتَتْ قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: فَقُلْتُ لِلْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ: أَيَنْفَعُهَا أَنْ أَعْتِقَ عَنْهَا؟ فَقَالَ الْقَاسِمُ: أَتَى سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ رَسُول الله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فَقَالَ: " إِنَّ أُمِّي هَلَكَتْ فَهَلْ يَنْفَعُهَا أَنْ أَعْتِقَ عَنْهَا؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نعم» . رَوَاهُ مَالك

3403. अब्दुल रहमान बिन अबी उमरा अंसारी से रिवायत है के उनकी वालिदा ने गुलाम आज़ाद करने का इरादा किया तो उन्होंने इसे सुबह तक मोअख़्ख़र कर दिया, सो वह फौत हो गई, अब्दुल रहमान बयान करते हैं, मैंने कासिम बिन मुहम्मद से कहा: अगर मैं इन की तरफ से गुलाम आज़ाद कर दूँ तो किया इन्हें फ़ायदा होगा? कासिम ने कहा सईद बिन अब्बाद (र), रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने अर्ज़ किया, मेरी वालिदा फौत हो गई है, अगर मैं इन की तरफ से गुलाम आज़ाद करूँ तो किया इन्हें फ़ायदा होगा तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: हाँ”| (हसन)

حسن ، رواه مالک (2 / 779 ح 1555) * قاسم بن محمد لم یدرک عبادة و للحدیث شواھد عند البخاری (2761) و مسلم (1638) و النسائی (36893694) و غیرھم بالفاظ أخری غیر ذکر العتیق ، وله شاھد تقدم (3077)

٣٤٠٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ قَالَ: تُوُفِّيَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ فِي نَوْمٍ نَامَهُ فَأَعْتَقَتْ عَنْهُ عَائِشَةُ أُخْتُهُ رِقَابًا كَثِيرَةً. رَوَاهُ مَالك

3404. याह्या बिन सईद बयान करते हैं, अब्दुल रहमान बिन अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हु हालते नींद ही में वफात पा गए तो उनकी बहन आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने उनकी तरफ से बहोत से गुलाम आज़ाद किए| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه مالک (2 / 779 ح 1556) * السند منقطع

٣٤٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ اشْتَرَى عَبْدًا فَلَمْ يَشْتَرِطْ مَاله فَلَا شَيْء لَهُ» . رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

3405. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस ने कोई गुलाम खरीदा इस (गुलाम) के माल की शर्त काइम न की तो इस (खरीदने वाले) के लिए (इस के माल से) कुछ भी नहीं मिलेगा”| (सहीह)

صحیح ، رواه البخاری (2 / 253 ح 2564) * الزھری مدلس و عنعن و للحدیث شواھد عند عبدالله بن احمد (3 / 309) و ابی داود (3962 ، 3947) و البخاری و مسلم و غیرھم ، وبھا صح الحدیث

कसमों और नज़रों का बयान • كتاب الْإِيمَان وَالنُّذُور

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٣٤٠٦ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَكْثَرُ مَا كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يحلف: «لَا ومقلب الْقُلُوب» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

3406. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ ज़्यादातर उन अल्फाज़ के साथ क़सम उठाया करते थे: "दिलों के फेरने वाले की क़सम!"| (बुखारी)

رواه البخاری (7391)

٣٤٠٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ يَنْهَاكُمْ أَنْ تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ مَنْ كَانَ حَالِفًا فَلْيَحْلِفْ بِاللَّهِ أَوْ ليصمت»

3407. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बेशक अल्लाह तुम्हें अपने बाप दादा की कस्मे उठाने से मना फरमाता है, जिस ने क़सम उठानी हो वह अल्लाह की क़सम! उठाए या फिर ख़ामोश रहे"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6646) و مسلم (3 / 1646)، (4257)

٣٤٠٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَحْلِفُوا بِالطَّوَاغِي وَلَا بِآبَائِكُمْ» . رَوَاهُ مُسلم

3408. अब्दुल रहमान बिन समुरह रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बुतों और अपने बाप दादा के नामों की कस्मे मत उठाओ"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (6 / 1648)، (4262)

٣٤٠٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " مَنْ حَلَفَ فَقَالَ فِي حَلِفِهِ: بِاللَّاتِ وَالْعُزَّى فَلْيَقُلْ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ. وَمَنْ قَالَ لِصَاحِبِهِ: تَعَالَ أقامرك فليتصدق "

3409. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिस ने लात व उज़्ज़ा

(बुतों) की क़सम उठाई तो उसे “لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ” पढ़ना चाहिए और जिस ने अपने साथी से कहा आओ में तुम्हारे साथ जुआ खेलूं तो उसे सदका करना चाहिए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6650) و مسلم (5 / 1647)، (4260)

٣٤١٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ ثَابِتِ بْنِ الضَّحَّاكِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ حَلَفَ عَلَى مِلَّةٍ غَيْرِ الْإِسْلَامِ كَاذِبًا فَهُوَ كَمَا قَالَ وَلَيْسَ عَلَى ابْنِ آدَمَ فِيمَا لَا يَمْلِكُ [ص:١٠١ وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِشَيْءٍ فِي الدُّنْيَا عُذِّبَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَنْ لَعَنَ مُؤْمِنًا فَهُوَ كَقَتْلِهِ وَمَنْ قَذَفَ مُؤْمِنًا بِكُفْرٍ فَهُوَ كَقَتْلِهِ وَمَنِ ادَّعَى دَعْوَى كَاذِبَةً لِيَتَكَثَّرَ بِهَا لَمْ يَزِدْهُ اللَّهُ إِلَّا قِلَّةً»

3410. साबित बिन ज़िहाक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस ने इस्लाम के अलावा किसी और मिल्लत पर झूठी क़सम उठाई तो वह वैसा ही है जैसा उस ने कहा, और इब्ने आदम पर ऐसी चीज़ की नज़र पूरी करना वाजिब नहीं जिस का वह मालिक नहीं, जिस ने किसी चीज़ के साथ अपने आप को दुनिया में क़त्ल किया तो रोज़ ए कियामत इसे इसी के साथ अज़ाब दीया जाएगा, किसी मोमिन पर लानत करना इसे क़त्ल करने के बराबर है, जिस ने किसी मोमिन शख़्स पर कुफ्र का बोहतान लगाया तो वह ऐसे है जैसे उस ने इसे क़त्ल कर दिया और जिस ने माल बढ़ाने की खातिर झूठा दावा किया तो अल्लाह उसकी तंग दस्ती में इज़ाफा फरमाता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6047) و مسلم (176 / 110)، (302)

٣٤١١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنِّي وَاللَّهِ إِنْ شَاءَ اللَّهُ لَا أَحْلِفُ عَلَى يَمِينٍ فَأَرَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا إِلَّا كَفَّرْتُ عَنْ يَمِينِي وَأَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ»

3411. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की क़सम! अगर में किसी बात पर क़सम उठालूँ और फिर उस का गैर उस से बेहतर जानू तो इंशाअल्लाह में अपनी कसम का कफ्फारा दूंगा और उस से बेहतर को इख़्तियार कर लूँगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6718) و مسلم (7 / 1649)، (4263)

٣٤١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ سَمُرَةَ لَا تَسْأَلِ الْإِمَارَةَ فَإِنَّكَ إِنْ أُوتِيتَهَا عَنْ مَسْأَلَةٍ وُكِلْتَ إِلَيْهَا وَإِنْ أُوتِيتَهَا عَنْ غَيْرِ مَسْأَلَةٍ أُعِنْتَ عَلَيْهَا وَإِذَا حَلَفْتَ عَلَى يَمِينٍ فَرَأَيْتَ غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا فَكَفِّرْ عَنْ يَمِينِكَ وَأْتِ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «فَأْتِ الَّذِي هُوَ خير وَكفر عَن يَمِينك»

3412. अब्दुल रहमान बिन समुरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अब्दुल

रहमान बिन समुरह! अमारत मत तलब करना, अगर वह तुम्हें तुम्हारी तलब पर दे दी गई तो तुम उस के सुपुर्द कर दिए जाओगे और अगर वह तलब किए बगैर तुम्हें दे दी गई तो उस पर तुम्हारी मदद की जाएगी, और जब तुम किसी चीज़ पर क़सम उठा लो और फिर तुम उस के गैर को बेहतर जानो तो अपनी कसम का कफ्फारा अदा कर दो और जो बेहतर हो इसे इख़्तियार कर लो"| और एक दूसरी रिवायत में है: "जो बेहतर है उसे इख़्तियार कर लो और अपने कसम का कफ्फारा अदा करो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (71467147) و مسلم (19 / 1652)، (4281)

٣٤١٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ فَرَأَى خَيْرًا مِنْهَا فَلْيُكَفِّرْ عَنْ يَمِينِهِ وليفعل» . رَوَاهُ مُسلم

3413. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स किसी चीज़ पर क़सम उठाए और वह उस से बेहतर चीज़ जान ले तो वह अपनी कसम का कफ्फारा अदा करे और जो बेहतर चीज़ है वह करे"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (12 / 1650)، (4272)

٣٤١٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَاللَّهِ لَأَنْ يَلَجَّ أَحَدُكُمْ بِيَمِينِهِ فِي أَهْلِهِ آثَمُ لَهُ عِنْدَ الله نم أَنْ يُعْطِيَ كَفَّارَتَهُ الَّتِي افْتَرَضَ اللَّهُ عَلَيْهِ»

3414. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह की क़सम! तुम्हारा अपने इस क़सम पर इसरार करना जो अपने घरवालो के मुतल्लिक हो, अल्लाह के नज़दीक क़सम तोड़ने से ज़्यादा गुनाह रखता है जिस का कफ्फारा अदा करना अल्लाह ने उस पर फ़र्ज़ किया है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6625) و مسلم (26 / 1655)، (4291)

٣٤١٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَمِينُكَ عَلَى مَا يُصَدِّقُكَ عَلَيْهِ صَاحبك» . رَوَاهُ مُسلم

3415. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम्हारी कसम का वही मफ्हूम मोतबर होगा जिस पर तेरा साथी (कसम तलब करने वाला) तुम्हें सच्चा जाने"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (20 / 1653)، (4283)

٣٤١٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْيَمِينُ عَلَى نِيَّةِ الْمُسْتَحْلِفِ» . رَوَاهُ مُسلم

3416. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "क़सम, क़सम तलब करने वाले की नियत पर मोतबर होगी"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (21 / 1653)، (4284)

٣٤١٧ - (صَحِيح) عَن عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: أُنْزِلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ: (لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ)»» فِي قَوْلِ الرَّجُلِ: لَا وَاللَّهِ وَبَلَى وَاللَّهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَفِي شَرْحِ السُّنَّةِ لَفْظُ الْمَصَابِيحِ وَقَالَ: رَفَعَهُ بَعْضُهُمْ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنهُ

3417. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, यह आयत "अल्लाह तुम से लग्व कसम का मुआखिज़ा (इलज़ाम लगाना) नहीं करेगा इस आदमी के बारे में नाज़िल हुई जो (आदत के तौर पर) कहता है (لا والله)! और (بلىٰ والله)! ("नहीं, नहीं, अल्लाह की क़सम" हाँ हां अल्लाह की क़सम") | और शरह सुन्ना में मसाबिह के यही अल्फाज़ है और इमाम बगवी ने फ़रमाया: बाज़ मुहद्दीसिन ने इसे आइशा (रअ) से मरफुअ बयान किया है| (बुखारी)

رواه البخارى (6663) و البغوى فى شرح السنة (10 / 11 ح 2434)

كتاب الْإِيمَان وَالنُّذُور • कसमों और नज़रों का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٤١٨ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ وَلَا بِأُمَّهَاتِكُمْ وَلَا بِالْأَنْدَادِ وَلَا تَحْلِفُوا بِاللَّهِ إِلَّا وَأَنْتُمْ صَادِقُونَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

3418. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अपने बाप दादा और अपने माओ की कस्मे मत उठाओ और ना ही अपने बुतों की, और अल्लाह की क़सम! भी सिर्फ इस सूरत में उठाओ जब तुम सच्चे हो"| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (3248) و النسائى (7 / 5 ح 3800)

٣٤١٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ حَلَفَ بِغَيْرِ اللَّهِ فَقَدْ أَشْرَكَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3419. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना: “जिस ने अल्लाह के अलावा किसी की क़सम उठाई, उस ने शिर्क किया”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (1535 وقال : حسن)

٣٤٢٠ - (صَحِيح) وَعَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ حَلَفَ بِالْأَمَانَةِ فَلَيْسَ منا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3420. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस ने अमानत की क़सम उठाई तो वह हम में से नहीं”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (3253)

٣٤٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ قَالَ: إِنِّي بَرِيءٌ مِنَ الْإِسْلَامِ فَإِنْ كَانَ كَاذِبًا فَهُوَ كَمَا قَالَ وَإِنْ كَانَ صَادِقًا فَلَنْ يَرْجِعَ إِلَى الْإِسْلَامِ سَالِمًا ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

3421. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स क़सम उठाते वक़्त यह कहता है के मुआमला ऐसा हुआ तो में इस्लाम से बेज़ार व ला ताअल्लूक हूँ अगर वह झूठा है तो वह वैसा ही है जैसा उस ने कहा, और अगर वह सच्चा है तो वह सालिम तौर पर इस्लाम की तरफ नहीं लौटेगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3258) و النسائی (7 / 6 ح 3803) و ابن ماجه (2100)

٣٤٢٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا اجْتَهَدَ فِي الْيَمِينِ قَالَ: «لَا وَالَّذِي نفس أَبُو الْقَاسِم بِيَدِهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3422. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ ताकीद के साथ क़सम उठाते तो यूँ फरमाते: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में अबुल कासिम की जान है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3264) * عكرمة بن عمار عنعن و عاصم بن شميخ حسن الحديث و ثقه الامام المعتدل العجلى و ابن حبان

٣٤٢٣ - (ضَعِيف) وَعَن أبي هُرَيْرَة قَالَ: كَانَتْ يَمِينُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا حَلَفَ: «لَا وَأَسْتَغْفِرُ اللَّهَ» . رَوَاهُ

أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

3423. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ क़सम उठाते तो यूँ फरमाते: “नहीं! और मैं अल्लाह से मगफिरत तलब करता हूँ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3265) و ابن ماجه (2093) * هلال بن ابی هلال المدنی : مستور و ثقه ابن حبان وحده و قال الذهبی :’’ لا يعرف ‘‘

٣٤٢٤ - (صَحِيح) مَرْفُوع وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى الله ليه وَسَلَّمَ قَالَ: " مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ فَقَالَ: إِنْ شَاءَ اللَّهُ فَلَا حِنْثَ عَلَيْهِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَذَكَرَ التِّرْمِذِيُّ جَمَاعَةً وَقَفُوهُ عَلَى ابْنِ عُمَرَ

3424. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स क़सम उठाए और इंशाअल्लाह कहे तो उस पर कोई गुनाह नहीं”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई, इब्ने माजा दारमी| और इमाम तिरमिज़ी ने मुहद्दीसिन की एक जमाअत का ज़िक्र किया जिस ने इसे इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा पर मौक़ूफ करार दिया है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (1531 وقال :: حسن) و ابوداؤد (3261) و النسائی (7 / 25 ح 3859) و ابن ماجه (2105) و الدارمی (2 / 185 ح 23472348)

كتاب الْإِيمَان وَالنُّذُور • कसमों और नज़रों का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٤٢٥ - عَن أَبِي الْأَحْوَصِ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ ابْنَ عَم لي آتيه فَلَا يُعْطِينِي وَلَا يَصِلُنِي ثُمَّ يَحْتَاجُ إِلَيَّ فَيَأْتِينِي فَيَسْأَلُنِي وَقَدْ حَلَفْتُ أَنْ لَا أُعْطِيَهُ وَلَا أَصِلَهُ فَأَمَرَنِي أَنْ آتِيَ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ وَأُكَفِّرَ عَنْ يَمِينِي. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ يَأْتِينِي ابْنُ عَمِّي فَأَحْلِفُ أَنْ لَا أُعْطِيَهُ وَلَا أَصِلَهُ قَالَ: «كَفِّرْ عَنْ يَمِينِكَ»

3425. अबू अल अह्वस ऑफ बिन मालिक अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए के मेरा चचाज़ाद है, मैं उस के पास जाता हूँ और उस से कोई चीज़ मांगता हूँ तो वह मुझे न तो चीज़ देता है और न मुझ से ताल्लुक जोड़ता है, फिर इसे मेरी ज़रूरत पड़ती है तो वह मेरे पास आता है और मुझ से कोई चीज़ मांगता है जबकि में क़सम उठा चूका हूँ कि में उसे कोई चीज़ नहीं दूंगा और न उस से सिलह रहमी करूँगा, आप ﷺ ने मुझे हुक्म फ़रमाया के “मैं इस चीज़ को इख़्तियार करू जो बेहतर है और अपने कसम का कफ्फारा अदा करू”| और एक रिवायत में है रावी बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के

रसूल! मेरा चचाज़ाद मेरे पास आता है, और मैं हलफ उठाता हूँ की मैं उस को कुछ नहीं दूंगा और ना ही उस से सिलह रहमी करूँगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपनी कसम का कफ्फारा अदा करो”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه النسائی (7 / 11 ح 3819) و ابن ماجه (2109)

بَاب فِي النذور • नज़रों का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٤٢٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَنْذُرُوا فَإِنَّ النَّذْرَ لَا يُغْنِي مِنَ الْقَدَرِ شَيْئًا وَإِنَّمَا يُسْتَخْرَجُ بِهِ من الْبَخِيل»

3426. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु और इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नज़र न मानो क्योंकि नज़र तकदीर के मुआमला में कोई फ़ायदा नहीं देती, अलबत्ता उस के ज़रिए बखील से (इस का माल) निकाला जाता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6609) و مسلم (5 / 1640)، (4241)

٣٤٢٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ نَذَرَ أَنْ يُطِيعَ اللَّهَ فَلْيُطِعْهُ وَمَنْ نَذَرَ أَنْ يَعْصِيَهُ فَلَا يَعْصِهِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3427. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अल्लाह की इताअत की नज़र मानता है तो वह इसे पूरा करे और जो शख़्स उसकी नाफ़रमानी की नज़र मानता है तो वह इसे पूरा न करे”| (बुखारी)

رواه البخاری (6696)

٣٤٢٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا وَفَاءَ لِنَذْرٍ فِي مَعْصِيَةٍ وَلَا فِيمَا لَا يَمْلِكُ الْعَبْدُ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَفِي رِوَايَةٍ: «لَا نَذْرَ فِي مَعْصِيَة الله»

3428. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नाफ़रमानी की नज़र पूरी नहीं करनी चाहिए और न इस चीज़ की जो इंसान के बस में नहीं”| और एक रिवायत में है: “अल्लाह की नाफ़रमानी में कोई नज़र नहीं‘‘| (मुस्लिम)

رواه مسلم (8 / 1641)، (4245)

٣٤٢٩ - (صَحِيح) وَعَن عقبَة بن عَامر عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كَفَّارَةُ النَّذْرِ كَفَّارَةُ الْيَمِينِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

3429. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “नज़र का कफ्फारा कसम के कफ्फारे की तरह है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (13 / 1645)، (4253)

٣٤٣٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْطُبُ إِذا هُوَ بِرَجُل قَائِم فَسَأَلَهُ عَنْهُ فَقَالُوا: أَبُو إِسْرَائِيلَ نَذَرَ أَنْ يَقُومَ وَلَا يَقْعُدَ وَلَا يَسْتَظِلَّ وَلَا يَتَكَلَّمَ وَيَصُومَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مُرُوهُ فَلْيَتَكَلَّمْ وَلْيَسْتَظِلَّ وَلْيَقْعُدْ وَلْيُتِمَّ صَوْمَهُ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

3430. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, इस दौरान के रसूलुल्लाह ﷺ खुत्बा इरशाद फरमा रहे थे एक आदमी खड़ा दिखाई दिया, आप ﷺ ने उस के मुतल्लिक दरियाफ्त किया तो सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अबू इसराइल है उस ने नज़र मानी है के वह खड़ा रहेगा, बैठेगा नहीं, वह ना साये में बैठेगा न कलाम करेगा और वह रोज़ा रखेगा, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “इसे हुक्म दो की वह कलाम करे, साये में बैठें और अपना रोज़ा पूरा करे”| (बुखारी)

رواه البخارى (6704)

٣٤٣١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى شَيْخًا يُهَادَى بَيْنَ ابْنَيْهِ فَقَالَ: «مَا بَالُ هَذَا؟» قَالُوا: نَذَرَ أَنْ يَمْشِيَ إِلَى بَيت الله قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى عَنْ تَعْذِيبِ هَذَا نَفسه لَغَنِيٌّ» . وَأمره أَن يركب

3431. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने एक बुढ़ा शख़्स को देखा के इसे अपने दो बेटो के सहारे चलाया जा रहा था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस को क्या हुआ ?” उन्होंने बताया की उस ने पैदल चल कर बैतुल्लाह जाने की नज़र मानी है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला उस से बेनियाज़ है के यह अपने जान को मशक़्क़त में डाले”, और आप ने इसे सवार होने का हुक्म फ़रमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (1865) و مسلم (9 / 1642)، (4247)

٣٤٣٢ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: «ارْكَبْ أَيُّهَا الشَّيْخُ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنْكَ وَعَن نذرك»

3432. और मुस्लिम की रिवायत में है अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बुजुर्गवार सवार हो जाओ क्योंकि अल्लाह तुम से और तुम्हारी नज़र से बेनियाज़ है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (10 / 1643)، (4248)

٣٤٣٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ سَعْدَ بن عبَادَة رَضِي الله عَنْهُم اسْتَفْتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي نَذْرٍ كَانَ عَلَى أُمِّهِ فَتُوُفِّيَتْ قَبْلَ أَنْ تَقْضِيَهُ فَأَفْتَاهُ أَنْ يَقْضِيَهُ عَنْهَا

3433. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के सईद बिन अब्बाद रदियल्लाहु अन्हु ने नबी ﷺ से इस नज़र के मुतल्लिक जो उनकी वालिदा के ज़िम्मा थी लेकिन वह इसे पूरा करने से पहले वफात पा गई, मसअला दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने उन्हें उन (की वालिदा) की तरफ से इसे अदा करने का फतवा दीया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6698) و مسلم (1 / 1638)، (4235)

٣٤٣٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ مِنْ تَوْبَتِي أَنْ أَنْخَلِعَ مِنْ مَالِي صَدَقَةً إِلَى اللَّهِ وَإِلَى رَسُولِهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَمْسِكْ بَعْضَ مَالِكَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ» . قُلْتُ: فَإِنِّي أُمْسِكُ سَهْمِي الَّذِي بِخَيْبَر. وَهَذَا طرف من حَدِيث مطول

3434. काब बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मेरी तौबा का यह तकाज़ा है की मैं अपना सारा माल अल्लाह और उस के रसूल के लिए सदका कर दूँ, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपना कुछ माल रख लो वह तुम्हारे लिए बेहतर है”, मैंने अर्ज़ किया: में अपना खैबर वाला हिस्सा रोक लेता हूँ”| बुखारी, मुस्लिम, और यह एक लम्बी हदीस का कुछ हिस्सा है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6690) و مسلم (53 / 2769)، (7016)

नज़रों का बयान — بَاب فِي النذور

दूसरी फस्ल — الْفَصْل الثَّانِي

٣٤٣٥ - (صَحِيح) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا نَذْرَ فِي مَعْصِيَةٍ وَكَفَّارَتُهُ كَفَّارَةُ الْيَمِينِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيّ

3435. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नाफ़रमानी में कोई नज़र नहीं और उस का कफ्फारा कसम के कफ्फारा की तरह है”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (3292) و الترمذی (1524 وقال : لا يصح) و النسائی (7 / 26 ح 3865) * و للحديث شواهد وھو بها صحيح

٣٤٣٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ نَذَرَ نَذْرًا لم يسمه فَكَفَّارَتُهُ كَفَّارَةُ يَمِينٍ. وَمَنْ نَذَرَ نَذْرًا لَا يُطِيقُهُ فَكَفَّارَتُهُ كَفَّارَةُ يَمِينٍ. وَمَنْ نَذَرَ نَذْرًا أَطَاقَهُ فَلْيَفِ بِهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه وَوَقفه بَعضهم على ابْن عَبَّاس

3436. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस ने किसी चिज़ का नाम लिए बगैर नज़र मानी तो उस का कफ्फारा कसम के कफ्फारे की तरह है, जिस ने नाफ़रमानी की नज़र मानी तो उस का कफ्फारा कसम के कफ्फारे की तरह है, जिस ने किसी ऐसी चीज़ की नज़र मानी जिस की वह ताकत नहीं रखता तो उस का कफ्फारा कसम के कफ्फारे की तरह है, और जिस ने कोई ऐसी नज़र मानी जिस की वह ताकत रखता है तो वह इसे पूरा करे”| अबू दावुद, इब्ने माजा और बाज़ ने इसे इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा पर मौकूफ करार दिया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3322) و ابن ماجه (2128)

٣٤٣٧ - (صَحِيح) وَعَن ثَابت بن الضَّحَّاك قَالَ: نَذَرَ رَجُلٌ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَنْحَرَ إِبِلًا بِبُوَانَةَ فَأَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلْ كَانَ فِيهَا وَثَنٌ مِنْ أَوْثَانِ الْجَاهِلِيَّةِ يُعْبَدُ؟» قَالُوا: لَا قَالَ: «فَهَلْ كَانَ فِيهِ عِيدٌ مِنْ أَعْيَادِهِمْ؟» قَالُوا: لَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أوف بِنَذْرِك فَإِنَّهُ لَا وَفَاءَ لِنَذْرٍ فِي مَعْصِيَةِ اللَّهِ وَلَا فِيمَا لَا يَمْلِكُ ابْنُ آدَمَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3437. साबित बिन ज़िहाक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में बवाना के मक़ाम पर ऊंट जिबह करने की नज़र मानी तो वह रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने आप ﷺ को (इस के मुत्तल्लिक) बताया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या वहां दौरे जाहिलियत का कोई बुत था

जिस की पूजा की जाती हो?” उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या वहां उनकी इदो में से कोई ईद थी ?” उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं ?, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपनी नज़र पूरी करो क्योंकि अल्लाह की नाफ़रमानी में नज़र पूरी करना ज़रूरी नहीं और न उस में जिस का इंसान मालिक नहीं”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (3313)

٣٤٣٨ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جده رَضِي الله عَنهُ أَنَّ امْرَأَةً قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي نَذَرْتُ أَنْ أَضْرِبَ عَلَى رَأْسِكَ بِالدُّفِّ قَالَ: «أَوْفِي بِنَذْرِكِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَزَادَ رَزِينٌ: قَالَتْ: وَنَذَرْتُ أَنْ أَذْبَحَ بِمَكَانِ كَذَا وَكَذَا مَكَانٌ يَذْبَحُ فِيهِ أَهْلُ الْجَاهِلِيَّةِ فَقَالَ: «هَلْ كَانَ بِذَلِكِ الْمَكَانِ وَثَنٌ مِنْ أَوْثَانِ الْجَاهِلِيَّةِ يُعْبَدُ؟» قَالَتْ: لَا قَالَ: «هَلْ كَانَ فِيهِ عِيدٌ مِنْ أَعْيَادِهِمْ؟» قَالَتْ: لَا قَالَ: «أَوْفِي بِنَذْرِك»

3438. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की एक औरत ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने नज़र मानी है की मैं आप की मौजूदगी में दफ बजाऊँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने नज़र पूरी करो”| और रजिन ने यह इज़ाफा नकल किया, इस (औरत) ने अर्ज़ किया, मैंने फलां फलां जगह जहाँ अहल ए जाहिलियत जिबह करते थे, जिबह करने की नज़र मानी है तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या इस जगह जाहिलियत का कोई बुत था जिस की पूजा की जाती थी ?” उस ने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या इस जगह उनकी कोई ईद थी ?” उस ने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने नज़र पूरी करो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3312) و رزين (لم اجده) * و اصله عند ابی داود بالاختصار و رواه ابوداؤد (3313) قريبًا من لفظ المصنف عن ثابت بن الضحاک رضی الله عنه ، انظر الحديث السابق

٣٤٣٩ - (صَحِيح) وَعَن أبي لبَابَة: أَنَّهُ قَالَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ مِنْ تَوْبَتِي أَنْ أَهْجُرَ دَارَ قَوْمِي الَّتِي أَصَبْتُ فِيهَا الذَّنْبَ وَأَنْ أَنْخَلِعَ مِنْ مَالِي كُلِّهِ صَدَقَةً قَالَ: «يُجْزِئُ عَنْكَ الثُّلُثُ» . رَوَاهُ رزين

3439. अबू लुबाब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ से अर्ज़ किया, मेरी तौबा (के इत्माम में) से है की मैं अपनी आबाई जगह से हिजरत कर जाऊ जहाँ मैंने गुनाह किया था और मैं अपना सारा माल सदका कर दूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारी तरफ से एक तिहाई काफी है”| (हसन)

حسن ، رواه رزين (لم اجده) * وله شواهد عند ابی داود (3319) وغيره

٣٤٤٠ - (صَحِيح) وَعَن جَابر بن عبد الله: أَنَّ رَجُلًا قَامَ يَوْمَ الْفَتْحِ فَقَالَ: يَا رَسُول الله لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ إِنْ فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْكَ مَكَّةَ أَنْ أُصَلِّيَ فِي بَيْتِ الْمَقْدِسِ رَكْعَتَيْنِ قَالَ: «صلى الله عَلَيْهِ وَسلم هَهُنَا» ثمَّ عَاد فَقَالَ: «صل هَهُنَا» ثُمَّ أَعَادَ عَلَيْهِ فَقَالَ: «شَأْنَكَ إِذًا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد والدارمي

3440. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के फतह मक्का के रोज़ एक आदमी खड़ा हुआ और उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने अल्लाह अज्ज़वजल के लिए नज़र मानी थी के अगर अल्लाह आप ﷺ को मक्का में फतह अता फरमाए तो मैं बैतूल मकदस में दो रकते पढ़ूँगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: यहीं (बैतुल्लाह में) पढ़ लो", उस ने फिर यही बात दोहराई तो आप ﷺ ने फ़रमाया: यहीं पढ़ लो", उस ने फिर यही बात दोहराई तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "तब तेरी मर्ज़ी है"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (3305) و الدارمی (2 / 184185 ح 2344)

٣٤٤١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ أُخْتَ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ نَذَرَتْ أَنْ تَحُجَّ مَاشِيَةً وَأَنَّهَا لَا تطِيق ذَلِكَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنْ مَشْيِ أُخْتِكَ فَلْتَرْكَبْ وَلْتُهْدِ بَدَنَةً» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ وَفِي رِوَايَةٍ لِأَبِي دَاوُدَ: فَأَمَرَهَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ تَرْكَبَ وَتُهْدِيَ هَدْيًا وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ: فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ لَا يَصْنَعُ بِشَقَاءِ أُخْتِكَ شَيْئًا فَلْتَرْكَبْ ولتحج وتكفر يَمِينهَا»

3441. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु की बहन ने पैदल हज करने की नज़र मानी जबकि वह उसकी ताकत नहीं रखती थी तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह तेरी बहन के पैदल चलने से बेनियाज़ है, वह सवार हो और कुर्बानी करे"| और अबू दावुद की एक रिवायत में है नबी ﷺ ने उस को हुक्म फ़रमाया के वह सवारी करे और कुर्बानी करे| और इन्ही की एक रिवायत में है नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह तेरी बहन को मशक्कत व थकावट में डालकर किया करेगा, वह सवारी करे, हज करे और अपनी कसम का कफ्फारा अदा करे"| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (2297) و الرواية الثانية له : 3292 الرواية الثانية :3295) و الدارمی (2 / 183 ح 2340)

٣٤٤٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ عُقْبَةَ بن عَامر سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ أُخْتٍ لَهُ نَذَرَتْ أَنْ تَحُجَّ حَافِيَةً غَيْرَ مُخْتَمِرَةٍ فَقَالَ: «مُرُوهَا فَلْتَخْتَمِرْ [ص:١٠٢ وَلْتَرْكَبْ وَلْتَصُمْ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

3442. अब्दुल्लाह बिन मालिक से रिवायत है के उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु ने अपनी बहन के मुतल्लिक नबी ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया के उस ने नंगे पाँव नंगे सर हज करने की नज़र मानी है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "इसे हुक्म दो की वह सर पर कपड़ा ले, सवारी करे और तीन रोज़े रखे"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3293) و الترمذی (1544 وقال : حسن) و النسائی (7 / 20 ح 3846) و ابن ماجه (2134) و الدارمی (2 / 183 ح 2339) * عبيد الله بن زحر : ضعفه الجمهور و تابعه بكر بن سوادة عند احمد (4 / 147) و فی السند اليه ابن لهيعة وهو ضعيف لسوء حفظه بعد اختلاطه

٣٤٤٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سعيد بن الْمسيب: أَنَّ أَخَوَيْنِ مِنَ الْأَنْصَارِ كَانَ بَيْنَهُمَا مِيرَاثٌ فَسَأَلَ أَحَدُهُمَا صَاحِبَهُ الْقِسْمَةَ فَقَالَ: إِنْ عُدْتَ تَسْأَلُنِي الْقِسْمَةَ فَكُلُّ مَالِي فِي رِتَاجِ الْكَعْبَةِ فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: إِنَّ الْكَعْبَةَ غَنِيَّةٌ عَنْ مَالِكَ كَفِّرْ عَنْ يَمِينِكَ وَكَلِّمْ أَخَاكَ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا يَمِينَ عَلَيْكَ وَلَا نَذْرَ فِي مَعْصِيَةِ الرَّبِّ وَلَا فِي قَطِيعَةِ الرَّحِمِ وَلَا فِيمَا لَا يملك» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3443. सईद बिन मुसय्यब से रिवायत है के अंसार के दो भाइयो के दरमियान मीरास थी, उनमें से एक ने अपने साथी से तकसीम का मुतालबा किया तो उस ने कहा: अगर तुमने दोबारा मुझ से तकसीम का मुतालबा किया तो मेरा सारा माल काबा के इखराजात के लिए वक्फ़ है, तो उमर रदियल्लाहु अन्हु ने इसे फ़रमाया काबा को तेरे माल की ज़रूरत नहीं, अपनी कसम का कफ्फारा अदा कर और अपने भाई से कलाम कर, क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना है “ रब की नाफ़रमानी, कतअ रहमी और इस चीज़ के बारे में जिसका तू मालिक नहीं तुझ पर न तो कोई नज़र है और न क़सम”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3272) [و صححه الحاكم (4 / 300) و وافقه الذهبى]

بَاب فِي النذور • नज़रों का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٤٤٤ - (لم تتمّ دراسته) عَن عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " النَّذْرُ نَذْرَانِ: فَمَنْ كَانَ نَذَرَ فِي طَاعَةٍ فَذَلِكَ لِلَّهِ فِيهِ الْوَفَاءُ وَمَنْ كَانَ نَذَرَ فِي مَعْصِيَةٍ فَذَلِكَ لِلشَّيْطَانِ وَلَا وَفَاء فِيهِ وَيُكَفِّرُهُ مَا يُكَفِّرُ الْيَمِينَ ". رَوَاهُ النَّسَائِيُّ

3444. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “नज़र की दो किस्मे है, जो शख़्स इताअत में नज़र मानी तो नज़र अल्लाह के लिए है और इसे पूरा करना है, और जिस ने नाफ़रमानी में नज़र मानी तो वह शैतान के लिए है के पूरी नहीं करनी चाहिए, और वह उस का कफ्फारा कसम के कफ्फारा की मिस्ल अदा करे”| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائى (7 / 2829 ح 3876)

٣٤٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْتَشِرِ قَالَ: إِنَّ رَجُلًا نَذَرَ أَنْ يَنْحَرَ نَفْسَهُ إِنْ نَجَّاهُ اللَّهُ مِنْ عَدُوِّهِ فَسَأَلَ ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ لَهُ: سَلْ مَسْرُوقًا فَسَأَلَهُ فَقَالَ لَهُ: لَا تَنْحَرْ نَفْسَكَ فَإِنَّكَ إِنْ كُنْتَ مُؤْمِنًا قَتَلْتَ نَفْسًا مُؤْمِنَةً وَإِنْ كُنْتَ كَافِرًا تَعَجَّلْتَ إِلَى النَّارِ وَاشْتَرِ كَبْشًا فَاذْبَحْهُ لِلْمَسَاكِينِ فَإِنَّ إِسْحَاقَ خَيْرٌ مِنْكَ وَفُدِيَ بِكَبْشٍ فَأَخْبَرَ ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ: هَكَذَا كُنْتُ أَرَدْتُ أَنْ أُفْتِيَكَ. رَوَاهُ رَزِينٌ

3445. मुहम्मद बिन मुन्तशर बयान करते हैं, कि एक आदमी ने नज़र मानी के अगर अल्लाह ने इसे उस के दुश्मन से निजात दी तो वह अपने आप को जिबह् करेगा, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से इस बारे में दरियाफ्त किया गया तो उन्होंने इसे फ़रमाया, मसरुक से पूछो, उस ने उन से पूछा तो उन्होंने ने फ़रमाया: अपने आप को जिबह न करो, क्योंकि अगर तुम मोमिन हो तो तुमने एक मोमिन की जान को क़त्ल किया, और अगर तुम काफ़िर हो तो तुमने आग में जाने की जल्दी की, एक मेंढा खरीदो और इसे मसाकिन के लिए जिबह् करो, क्योंकि इसहाक अलैहिस्सलाम तुम से बेहतर थे और उन के फिदिया में एक मेंढा दिया गया, जब इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा को बताया गया तो उन्होंने ने फ़रमाया: मैं भी तुम्हें इसी तरह का फतवा देने का इरादा रखता था| (मझे नहीं मिली रवाह रजिन.)

لم اجده ، رواه رزين (لم اجده) * ولاصل الحديث شواهد ضعيفة عند الطبرانى فى الكبير (11 / 354 ح 11995) و عبدالرزاق (11 / 186 ح 11443 ، 15905) وغيرهما عن ابن عباس بغير هذا اللفظ مختصرًا

किसास का बयान • كتاب الْقصاص
पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٣٤٤٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَا يَحِلُّ دَمُ امْرِئٍ مُسْلِمٍ يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَّا بِإِحْدَى ثَلَاثٍ: النَّفْسُ بِالنَّفْسِ وَالثَّيِّبُ الزَّانِي وَالْمَارِقُ لدينِهِ التَّارِكُ للجماعةِ "

3446. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो मुसलमान शख़्स यह गवाही देता हो के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूँ तो उस का खून (यानी क़त्ल करना) फ़क़त तीन सूरतो की वजह से हलाल है, जान के बदले जान (कातिल को क़त्ल करना) शादी शुदा ज़ानि और दीन से मुरतद हो कर जमाअत छोड़ने वाला”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6878) و مسلم (25 / 1676)، (4375)

٣٤٤٧ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَنْ يَزَالَ الْمُؤْمِنُ فِي فُسْحَةٍ مِنْ دِينِهِ مَا لَمْ يُصِبْ دَمًا حَرَامًا» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3447. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मोमिन अपने दीन में बढ़ता रहता है जब तक के किसी हराम खून का इर्तिकाब न करे”| (बुखारी)

رواه البخاری (6862)

٣٤٤٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَوَّلُ مَا يُقْضَى بَيْنَ النَّاسِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِي الدِّمَاءِ»

3448. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत लोगों के दरमियान सबसे पहले खुनो (क़त्ल) के बारे में फैसला किया जाएगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6864) و مسلم (28 / 1678)، (4381)

٣٤٤٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْمِقْدَادِ بْنِ الْأَسْوَدِ أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ إِنْ لَقِيتُ رَجُلًا مِنَ الْكُفَّارِ فَاقْتَتَلْنَا فَضَرَبَ إِحْدَى يَدَيَّ بِالسَّيْفِ فقطعهما ثُمَّ لَاذَ مِنِّي بِشَجَرَةٍ فَقَالَ: أَسْلَمْتُ لِلَّهِ وَفِي رِوَايَةٍ: فَلَمَّا أَهْوَيْتُ لِأَقْتُلَهُ قَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

أَأَقْتُلُهُ بَعْدَ أَنْ قَالَهَا؟ قَالَ: «لَا تَقْتُلْهُ» فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهُ قَطَعَ إِحْدَى يَدَيَّ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَقْتُلْهُ فَإِنْ قَتَلْتَهُ فَإِنَّهُ بِمَنْزِلَتِكَ قَبْلَ أَنْ تَقْتُلَهُ وَإِنَّكَ بِمَنْزِلَتِهِ قَبْلَ أَنْ يَقُولَ كَلِمَتَهُ الَّتِي قَالَ»

3449. मिक्दाम बिन असवद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए अगर मेरा किसी काफ़िर शख़्स से मुक़ाबला हो जाए और हम दोनों एक दूसरे पर हमलावर हो जाए और वह तलवार के ज़रिए मुझ पर वार करे और मेरे एक हाथ को काट डाले, फिर वह मुझ से बचने के लिए एक दरख्त के पीछे छुप जाए और कहे में अल्लाह के हुक्म के सामने सरे तस्लीम ख़म करता हूँ, और एक रिवायत में है जब मैंने इसे क़त्ल करने का इरादा किया तो उस ने कहा : ’ لا اله الا الله”, तो किया उस के कलिमा पढ़ने के बाद में उसे क़त्ल कर दूँ? आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे क़त्ल न करो”, उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! उस ने मेरा एक हाथ काट डाला, (इस का क्या बनेगा) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इसे क़त्ल न करो अगर तुमने इसे क़त्ल किया तो वह तेरे मक़ाम व मर्तबा पर आ जाएगा जो के क़त्ल करने से पहले तेरा था और तुम उस के मक़ाम व मर्तबा पर हो जाओगे जो कलिमा पढ़ने से पहले उस का था”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6865) و مسلم (155 / 95)، (274)

٣٤٥٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: بَعَثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أُنَاسٍ مِنْ جُهَيْنَةَ فَأَتَيْتُ عَلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ فَذَهَبْتُ أَطْعَنُهُ فَقَالَ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ فَطَعَنْتُهُ فَقَتَلْتُهُ فَجِئْتُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ: «أَقتلتَه وقدْ شَهِدَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ؟» قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّمَا فَعَلَ ذَلِكَ تَعَوُّذًا قَالَ: «فهلاَّ شققتَ عَن قلبه؟»

3450. उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें जुहय्न कबिले की तरफ रवाना फ़रमाया, मैं उन के एक आदमी के मुकाबिल आया तो मैंने उस पर नेज़े का वार करना चाहा तो उस ने कलिमा पढ़ लिया, लेकिन मैंने उस पर वार कर के इसे क़त्ल कर दिया, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने आप ﷺ को बताया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम ने इसे क़त्ल कर दिया हालाँकि उस ने गवाही दे दि के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! इस ने तो महज़ जान बचाने के लिए कलिमा पढ़ा था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने किया उस का दिल चिर कर देख लिया था ?”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6872) و مسلم (158 / 96)، (277)

٣٤٥١ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةِ جُنْدُبِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ الْبَجَلِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كَيْفَ تَصْنَعُ بِلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ إِذَا جَاءَتْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟» . قَالَهُ مِرَارًا. رَوَاهُ مُسلم

3451. और जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह बजलिय्यी रदियल्लाहु अन्हु से मरवी रिवायत में है की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब वह कियामत के रोज़ ’لا اله الا الله” के साथ आएगा तो तुम उस का सामना किस तरह करोगे?

आप ﷺ ने यह बात कई बार फरमाई| (मुस्लिम)

رواه مسلم (160 / 97)، (279)

٣٤٥٢ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَتَلَ مُعَاهِدًا لَمْ يَرَحْ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ وَإِنَّ رِيحَهَا تُوجَدُ مِنْ مَسِيرَةِ أربعينَ خَرِيفًا» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

3452. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस ने किसी मआहिद (जिम्मी) को क़त्ल किया तो वह जन्नत की खुशबू भी नहीं पाएगा हालाँकि उसकी खुशबू चालीस साल की मुसाफ़त से महसूस की जाएगी”| (बुखारी)

رواه البخاری (3166)

٣٤٥٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَرَدَّى مِنْ جَبَلٍ فَقَتَلَ نَفْسَهُ فَهُوَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ يَتَرَدَّى فِيهَا خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا وَمَنْ تَحَسَّى سُمًّا فَقَتَلَ نَفْسَهُ فَسُمُّهُ فِي يَدِهِ يَتَحَسَّاهُ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِحَدِيدَةٍ فَحَدِيدَتُهُ فِي يَدِهِ يَتَوَجَّأُ بِهَا فِي بَطْنِهِ فِي نَارِ جهنَّمَ خَالِدا مخلَّداً فِيهَا أبدا»

3453. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने अपने आप को पहाड़ से गिरा कर मार लिया तो वह जहन्नम में गिरता रहेगा और उस में हमेशा हम्मेश रहेगा, और जिस ने हर के ज़रिए खुदकुशी की तो उस का ज़हर उस के हाथ में होगा जिसे वह जहन्नम की आग में पीता रहेगा, और उस में हमेशा हम्मेश रहेगा, और जिस ने लोहे (के किसी आले) के ज़रिए खुदकुशी की तो उस का हथियार उस के हाथ में होगा और वह जहन्नम की आग में इसे अपने पेट में खोंपता रहेगा और वह उस में हमेशा हम्मेश रहेगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5778) و مسلم (175 / 109)، (300)

٣٤٥٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الَّذِي يَخْنُقُ نَفْسَهُ يَخْنُقُهَا فِي النَّارِ وَالَّذِي يَطْعَنُهَا يَطْعَنُهَا فِي النَّارِ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

3454. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस ने अपना गला घूंट कर खुदकुशी की तो वह जहन्नम में भी गला घोंटेगा और जो नैज़ा मार कर खुदकुशी करेगा तो वह जहन्नम में भी अपने आप को नैज़ा मारता रहेगा”| (बुखारी)

رواه البخاری (1365)

٣٤٥٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جُنْدُبِ بْنِ عَبْدُ اللَّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " كَانَ فِيمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ رَجُلٌ بِهِ جُرْحٌ فجزِعَ فأخذَ سكيّناً فحزَّ بِهَا يَدَهُ فَمَا رَقَأَ الدَّمُ حَتَّى مَاتَ قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: بَادَرَنِي عَبْدِي بِنَفْسِهِ فَحَرَّمْتُ عَلَيْهِ الْجنَّة "

3455. जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से पहले लोगों में एक आदमी था जो ज़ख़्मी हो गया तो उस ने बे सबरी का मुज़ाहिरा किया, उस ने छुरी पकड़ी और अपना (ज़ख्मी) हाथ काट डाला, उस का खून बहता रहा हत्ता के वह फौत हो गया, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: “मेरे बंदे ने खुद को क़त्ल करने में मुझ से जल्दी की इसलिए मैंने उस पर जन्नत हराम कर दी”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3463) و مسلم (181 / 113)، (308)

٣٤٥٦ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ: أَنَّ الطُّفَيْلَ بْنَ عَمْرٍو الدَّوْسِيَّ لَمَّا هَاجَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الْمَدِينَةِ هَاجَرَ إِلَيْهِ وَهَاجَرَ مَعَهُ رَجُلٌ مِنْ قَوْمِهِ فَمَرِضَ فَجَزِعَ فَأَخَذَ مَشَاقِصَ لَهُ فَقَطَعَ بِهَا بَرَاجِمَهُ فَشَخَبَتْ يَدَاهُ حَتَّى مَاتَ فَرَآهُ الطُّفَيْلُ بْنُ عَمْرٍو فِي مَنَامِهِ وَهَيْئَتُهُ حسنةٌ ورآهُ مغطيّاً يدَيْهِ فَقَالَ لَهُ: مَا صنع بِكُل رَبُّكَ؟ فَقَالَ: غَفَرَ لِي بِهِجْرَتِي إِلَى نَبِيِّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: مَا لِي أَرَاكَ مُغَطِّيًا يَدَيْكَ؟ قَالَ: قِيلَ لِي: لَنْ تصلح مِنْكَ مَا أَفْسَدْتَ فَقَصَّهَا الطُّفَيْلُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اللَّهُمَّ وَلِيَدَيْهِ فَاغْفِر» . رَوَاهُ مُسلم

3456. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब नबी ﷺ ने मदीना की तरफ हिजरत फरमाई तुफैल बिन अम्र दौसी रदियल्लाहु अन्हु ने आप की तरफ हिजरत की और उन के साथ उनकी कौम के एक आदमी ने भी हिजरत की, वह शख़्स बीमार हो गया और उस ने बे सबरी का मुज़ाहिरा किया और उस ने अपनी छुरी ली और उस से अपना हाथ काट डाला जिस से खून बहने लगा हत्ता के वह फौत हो गया, तुफैल बिन अम्र रदियल्लाहु अन्हु ने इसे ख्वाब में देखा के उसकी हय्यत अच्छी है और उस ने अपने हाथ ढांप रखे हैं, उन्होंने उस से पूछा: तेरे रब ने तेरे साथ क्या मुआमला किया? तो उस ने कहा: उस ने अपने नबी ﷺ की तरफ मेरी हिजरत की वजह से मुझे मुआफ़ फरमा दिया, तुफैल बिन अम्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: में आप को हाथ ढांपे हुए क्यों देख रहा हूँ? उस ने कहा: मुझे कहा गया के हम तुम्हारे इस हिस्से को दुरुस्त नहीं करेंगे जिसे तुमने खुद ख़राब किया है, तुफैल रदियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में यह किस्सा अर्ज़ किया, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह और उस के दोनों हाथो को भी मुआफ़ फरमा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (184 / 116)، (311)

٣٤٥٧ - (صَحِيح) وَعَن أبي شُرَيحٍ الكعبيِّ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " ثُمَّ أَنْتُمْ يَا خُزَاعَةُ قَدْ قَتَلْتُمْ هَذَا الْقَتِيلَ مِنْ هُذَيْلٍ وَأَنَا وَاللَّهِ عَاقِلُهُ مَنْ قَتَلَ بَعْدَهُ قَتِيلًا فَأَهْلُهُ بَيْنَ خِيرَتَيْنِ: عَن أَحبُّوا قتلوا وَإِن أَحبُّوا أخذا العقلَ ". رَوَاهُ الترمذيُّ وَالشَّافِعِيّ. وَفِي شرح السنَّة بِإِسنادِه وَصَرَّحَ: بِأَنَّهُ لَيْسَ فِي الصَّحِيحَيْنِ عَنْ أَبِي شُرَيْحٍ وَقَالَ:

3457. अबू शरीह अल काबी रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “खुज़ाअत (क़बीले वालो) तुमने हज़िल के इस मकतुल को क़त्ल किया, और अल्लाह की क़सम! मैं उसकी दियत अदा कर देता हूँ, जिस ने उस के बाद किसी को क़त्ल किया तो उस के वारिसो को दो चीजों के दरमियान इख़्तियार है, अगर वह पसंद करे तो उसे क़त्ल करे और अगर चाहे तो दियत ले लें”| इसे तिरमिज़ी और इमाम शाफ़ई ने रिवायत किया है और इमाम बगवी ने शरह सुन्ना में अपने सनद से रिवायत किया है और उन्होंने सराहत की के अबू शरीह की सनद से यह हदीस सहीहैन में नहीं है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (1406) و الشافعى فى الام (6 / 9) [و ابوداؤد (4504) و اصله متفق عليه ، و البخارى (104) و مسلم (1354) مختصرًا و لم يذكرا هذا اللفظ] * و رواه البغوى فى شرح السنة (7 / 301 ح 2004 وقال : متفق على صحته ، اخرجاه جميعًا ‘‘ الخ

٣٤٥٨ - (صَحِيح) وَأَخْرَجَاهُ مِنْ رِوَايَةِ أَبِي هُرَيْرَةَ يَعْنِي بِمَعْنَاهُ

3458. और उन्होंने (बगवी (रह)) ने फ़रमाया: इन दोनों (इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम) ने अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से इसी मफ्हुम की रिवायत नकल की है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (112) و مسلم (447 / 1355)، (3305)

٣٤٥٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ يَهُودِيًّا رَضَّ رَأْسَ جَارِيَةٍ بَيْنَ حَجَرَيْنِ فَقِيلَ لَهَا: مَنْ فَعَلَ بِكِ هَذَا؟ أَفُلَانٌ؟ حَتَّى سُمِّيَ الْيَهُودِيُّ فَأَوْمَأَتْ بِرَأْسِهَا فَجِيءَ بِالْيَهُودِيِّ فَاعْتَرَفَ فَأَمَرَ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرُضَّ رَأْسُهُ بِالْحِجَارَةِ

3459. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक यहूदी ने एक लौंडी का सर दो हथोड़ो के दरमियान कुचल दीया, उस से पूछा गया तुम्हारे साथ यह सुलूक किस ने किया? क्या फलां ने? क्या फलां ने? हत्ता के इस यहूदी का नाम लिया गया तो उस ने सर के इशारे से कहा: हाँ, इस यहूदी को पेश किया गया तो उस ने एतराफ़ कर लिया, रसूलुल्लाह ﷺ ने उस के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया तो उस के सर को पत्थर के साथ कुचल दिया गया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6884) و مسلم (15 / 1672)، (4361)

٣٤٦٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: كَسَرَتِ الرُّبَيِّعُ وَهِيَ عَمَّةُ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ ثَنِيَّةَ جَارِيَةٍ مِنَ الْأَنْصَارِ فَأَتَوُا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَمَرَ بِالْقِصَاصِ فَقَالَ أَنَسُ بْنُ النَّضْرِ عَمُّ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ لَا وَاللَّهِ لَا تُكْسَرُ ثَنِيَّتُهَا يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أَنَسُ كِتَابُ اللَّهِ الْقِصَاصُ» فَرَضِيَ الْقَوْمُ وَقَبِلُوا الْأَرْشَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ مِنْ عِبَادِ اللَّهِ مَنْ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى الله لَأَبَره»

3460. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उनकी फूफी रुबय्याअ रदियल्लाहु अन्हु ने अंसार की एक लौंडी

के सामने के दांत तोड़ दिए तो वह नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो आप ﷺ ने किसास का हुक्म फ़रमाया तो अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु के फूफा अनस बिन नज़र रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह की क़सम! अल्लाह के रसूल! उस के दांत नहीं तोड़े जाएँगे, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अनस! अल्लाह की किताब में किसास का हुक्म है”, वह लोग दियत लेने पर राज़ी हो गए, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह के कुछ बंदे ऐसे भी है की अगर वह अल्लाह पर क़सम उठा ले तो अल्लाह उन की क़सम को सच्चा कर देता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (4611) و مسلم (24 / 1675)، (4374)

٣٤٦١ - (صَحِيح) وَعَن أبي جُحيفةَ قَالَ: سَأَلْتُ عَلِيًّا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ هَلْ عِنْدَكُمْ شَيْءٌ لَيْسَ فِي الْقُرْآنِ؟ فَقَالَ: وَالَّذِي فَلَقَ الْحَبَّةَ وَبَرَأَ النَّسَمَةَ مَا عِنْدَنَا إِلَّا مَا فِي الْقُرْآنِ إِلَّا فَهْمًا يُعْطَى رَجُلٌ فِي كِتَابِهِ وَمَا فِي الصَّحِيفَةِ قُلْتُ: وَمَا فِي الصَّحِيفَةِ؟ قَالَ: الْعَقْلُ وَفِكَاكُ الْأَسِيرِ وَأَنْ لَا يُقْتَلَ مُسْلِمٌ بِكَافِرٍ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ»» وَذَكَرَ حَدِيثَ ابْنِ مَسْعُودٍ: «لَا تُقْتَلُ نَفْسٌ ظُلْمًا» فِي «كتاب الْعلم»

3461. अबू जुहैफा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अली रदियल्लाहु अन्हु से दरियाफ्त किया, क्या तुम्हारे पास कोई ऐसी चीज़ है जो कुरान में न हो? उन्होंने ने फ़रमाया: उस ज़ात की क़सम! जिस ने दाने को फोड़ा और रूह को पैदा फ़रमाया! हमारे पास सिर्फ वही कुछ है जो कुरान में है, अलबत्ता दीन का वह फहम है जो बंदे को अल्लाह की किताब से अता किया जाता है और जो कुछ सहिफा में लिखा हुआ है (वोह हमारे पास है), मैंने अर्ज़ किया: सहिफा में किया है? उन्होंने ने फ़रमाया: “दियत, कैदी छुड़ाने और यह कि किसी मुसलमान को काफ़िर के बदले में क़त्ल न किया जाए, के मुतल्लिक अहकामात| # और इब्ने मसउद (र) से मरवी हदीस के “ किसी जान को नाहक क़त्ल न किया जाए”, किताब अल इल्म में ज़िक्र की गई है. (बुखारी)

رواه البخارى (6903) 0 حديث ابن مسعود تقدم (211)

किसास का बयान • كتاب الْقصاص

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٣٤٦٢ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَزَوَالُ الدُّنْيَا أَهْوَنُ عَلَى اللَّهِ مِنْ قَتْلِ رَجُلٍ مُسْلِمٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ ووقفه بعضُهم وَهُوَ الْأَصَح

3462. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह तआला के यहाँ पूरी दुनिया का तबाह व बर्बाद हो जाना एक मुसलमान आदमी के क़त्ल के मुकाबले में ज़्यादा आसान है”|

तिरमिज़ी, नसई, और बाज़ ने इसे मौकूफ करार दिया है और हमें ज़्यादा सहीह है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1395) و النسائی (7 / 82 ح 39913994)

٣٤٦٣ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ

3463. इब्ने माजा ने इसे बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ ابن ماجہ (3619) * سفیان الثوری عنعن و الحدیث ضعیف من جمیع طرقہ ولم یصب من صححہ

٣٤٦٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي سعيدٍ وَأبي هريرةَ عَن رسولِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَوْ أَنَّ أَهْلَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ اشْتَرَكُوا فِي دَمِ مُؤْمِنٍ لَأَكَبَّهُمُ اللَّهُ فِي النَّارِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

3464. अबू सईद और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हुमा रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर ज़मीन व आसमान के तमाम बासी एक मोमिन के क़त्ल करने में शरीक पाए जाए तो अल्लाह इन सब को चेहरे के बल जहन्नम में फेंक देगा”| तिरमिज़ी, और उन्होंने कहा: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواہ الترمذی (1398) * یزید الرقاشی ضعیف ولہ شواھد ضعیفۃ عند البیھقی (8 / 22) وغیرہ

٣٤٦٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " يَجِيءُ الْمَقْتُولُ بِالْقَاتِلِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ نَاصِيَتُهُ وَرَأْسُهُ بِيَدِهِ وَأَوْدَاجُهُ تَشْخُبُ دَمًا يَقُولُ: يَا رَبِّ قَتَلَنِي حَتَّى يُدْنِيَهُ مِنَ العرشِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

3465. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “रोज़ ए कियामत मकतुल कातिल को लेकर आएगा इस (कातिल) की पेशानी और उस का सर मकतुल के हाथ में होगा और उसकी रगों से खून बह रहा होगा और वह कहेगा रब जी! उस ने मुझे क्यों क़त्ल किया हत्ता के वह इसे अर्श के करीब ले जाएगा”| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ الترمذی (3029 وقال : حسن) و النسائی (7 / 87 ح 4010) و ابن ماجہ (2621)

٣٤٦٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ بْنِ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ أَنَّ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَشْرَفَ يَوْمَ الدَّارِ فَقَالَ: أَنْشُدُكُمْ بِاللَّهِ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " لَا يَحِلُّ دَمُ امْرِئٍ مُسْلِمٍ إِلَّا بِإِحْدَى ثلاثٍ: زِنًى بَعْدَ إِحْصَانٍ أَوْ كُفْرٌ بَعْدَ إِسْلَامٍ أَوْ قتْلِ نفْسٍ بِغَيْر حق فَقتل بِهِ "؟ فو الله مَا زَنَيْتُ فِي جَاهِلِيَّةٍ وَلَا إِسْلَامٍ وَلَا ارْتَدَدْتُ مُنْذُ بَايَعْتُ رَسُولُ

اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَا قَتَلْتُ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ [ص:١٠٣ فَبِمَ تَقْتُلُونَنِي؟ رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه وللدارمي لفظ الحَدِيث

3466. अबू उमामा बिन सहल बिन हनीफ से रिवायत है के उस्मान बिन अफ्फान रदियल्लाहु अन्हु ने "यौमु दार" (जिन दिनों बागियों ने उस्मान रदियल्लाहु अन्हु को महसूर कर रखा था) लोगों को देख कर फ़रमाया की मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम! दे कर पूछता हूं क्या तुम अल्लाह के रसूल! ﷺ के इस फरमान से आगाह नहीं हो? के "किसी मुसलमान शख़्स का खून तीन में से किसी एक वजह पर दुरुस्त है: शादी शुदा होने के बाद ज़िना करने या इस्लाम के बाद कुफ्र करना या किसी जान को नाहक क़त्ल करना, और वह उस के बाईस क़त्ल किया जाएगा", अल्लाह की क़सम! मैंने ने तो दौरे जाहिलियत में ज़िना किया और न ज़माने इस्लाम में, मैंने जब से रसूलुल्लाह ﷺ की बैत की इस वक़्त से आज तक कभी मुरतद नहीं हुआ, और मैंने किसी ऐसी जान को क़त्ल नहीं किया जिसे अल्लाह ने हराम करार दिया है, तो फिर तुम मुझे क्यों क़त्ल करते हो? तिरमिज़ी, नसई, इब्ने माजा और दारमी में सिर्फ हदीस के अल्फाज़ हैं| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (2158 وقال : حسن) و النسائى (7 / 9192 ح 4024) و ابن ماجه (2533) و الدارمى (2 / 171172 ح 2302 مختصرًا)

٣٤٦٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَزَالُ الْمُؤْمِنُ مُعْنِقًا صَالِحًا مَا لَمْ يُصِبْ دَمًا حَرَامًا فَإِذَا أَصَابَ دَمًا حَرَامًا بَلَّحَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3467. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जब तक मोमिन किसी खूने हराम का इर्तिकाब नहीं करता तो वह इताअत गुज़ार और आमाले स्वालेह की बजा आवरी में मुस्तअद रहता है और जब वह किसी खूने हराम का इर्तिकाब कर लेता है तो वह सुस्ती थकावट का शिकार हो जाता है"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4270)

٣٤٦٨ - وَعَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كُلُّ ذَنْبٍ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَغْفِرَهُ إِلَّا مَنْ مَاتَ مُشْرِكًا أَوْ مَنْ يقتُلُ مُؤمنا مُتَعَمدا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3468. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "उम्मीद है के अल्लाह हर गुनाह मुआफ़ फरमादे सिवाय उस शख़्स के जो हालत ए शिर्क में फौत हो और जिस ने जान बुझकर किसी मोमिन को क़त्ल किया हो"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4270)

٣٤٦٩ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ النَّسَائِيّ عَن مُعَاوِيَة

3469. इमाम नसई ने इसे मुआविया रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائی (7 / 81 ح 3989)

٣٤٧٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُقَامُ الْحُدُودُ فِي الْمَسَاجِدِ وَلَا يُقَادُ بِالْوَلَدِ الْوَالِدُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ والدارمي

3470. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ना मसाजिद में हुदूद काइम की जाए और न औलाद का वालिद से किसास लिया जाए”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (1401) و الدارمی (2 / 190 ح 2362) [و ابن ماجه (2661)] * اسماعیل بن مسلم ضعیف و للحدیث شواھد ضعیفة

٣٤٧١ - (جيد) وَعَن أبي رِمْثَةَ قَالَ: أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَعَ أبي فقال: «مَنْ هَذَا الَّذِي مَعَكَ؟» قَالَ: ابْنِي أَشْهَدُ بِهِ قَالَ: «أَمَا إِنَّهُ لَا يَجْنِي عَلَيْكَ وَلَا تَجْنِي عَلَيْهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَزَادَ فِي «شَرْحِ السُّنَّةِ» فِي أَوَّلِهِ قَالَ: دَخَلْتُ مَعَ أَبِي عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَأَى أَبِي الَّذِي بِظَهْرِ رَسُول الله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فَقَالَ: دَعْنِي أُعَالِجُ الَّذِي بِظَهْرِكِ فَإِنِّي طَبِيبٌ. فَقَالَ: «أَنْتَ رفيقٌ واللَّهُ الطبيبُ»

3471. अबू रिम्स रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं अपने वालिद के साथ रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारे साथ यह कौन है?” उन्होंने अर्ज़ किया, मेरा बेटा है, आप उस के मुतल्लिक गवाह रहे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “आगाह रहो! न तो तेरे गुनाह का उस से मुआखिज़ा (इलज़ाम लगाना) होगा न उस के गुनाह का तुझ से मुआखिज़ा (इलज़ाम लगाना) होगा”| और शरह सुन्ना में इस हदीस के शुरू में मज़ीद अल्फाज़ है: उन्होंने बयान किया में अपने वालिद के साथ रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो मेरे वालिद ने रसूलुल्लाह ﷺ की पुश्त पर जो चीज़ (मुहरे नबूवत) थी वह देख ली तो अर्ज़ किया, मुझे इजाज़त दें में इस चिज़ का इलाज करता हूँ जो आप की पुश्त पर है क्योंकि मैं तबीब हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम रफीक हो और अल्लाह तबीब है”| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (4495) و النسائی (8 / 53 ح 4836) و البغوی فی شرح السنة (10 / 181 ح 2534) [من طریق الشافعی و ھذا فی الام (7 / 95)]

٣٤٧٢ - وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جدِّهِ عَن سُراقةَ بنِ مالكٍ قَالَ: حَضَرْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُقِيدُ الْأَبَ مِنِ ابْنِهِ وَلَا يُقِيدُ الِابْنَ من أَبِيه. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ (لم تتمّ دراسته)»» وَضَعفه

3472. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने सुराका बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत की, उन्होंने कहा: मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर था आप ﷺ ने बाप को उस के बेटे से किसास दिलवाया और बेटे का बाप से किसास नहीं दिलवाया| तिरमिज़ी, और उन्होंने इसे जईफ करार दिया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1399) * مثنی بن الصباح : ضعيف

٣٤٧٣ - (ضَعِيف) وَعَن الْحسن عَن سَمُرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ قَتَلَ عَبْدَهُ قَتَلْنَاهُ وَمَنْ جَدَعَ عَبْدَهُ جَدَعْنَاهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَزَادَ النَّسَائِيُّ فِي رِوَايَةٍ أُخْرَى: «وَمن خصى عَبده خصيناه»

3473. हसन बसरी (रह), समुरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो अपने गुलाम को क़त्ल करेगा, हम इसे क़त्ल करेंगे और जो अपने गुलाम के आज़ाअ (नाक वगैरा) काटेगा हम उस के आज़ाअ काटेंगे”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, इब्ने माजा दारमी, और इमाम नसई ने एक दूसरी रिवायत में इज़ाफा नकल किया है: “जो अपने गुलाम को खस्सी करेगा हम इसे खस्सी करेंगे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1414 وقال : حسن غريب) و ابوداؤد (4515) و ابن ماجه (2664) و الدارمی (2 / 191 ح 2363) و النسائی (8 / 2021 ح 47402742)

٣٤٧٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " مَنْ قَتَلَ مُتَعَمِّدًا دُفِعَ إِلَى أولياءِ المقتولِ فإنْ شاؤوا قَتَلوا وإنْ شَاؤوا أَخَذُوا الدِّيَةَ: وَهِيَ ثَلَاثُونَ حِقَّةً وَثَلَاثُونَ جَذَعَةً وَأَرْبَعُونَ خَلِفَةً وَمَا صَالَحُوا عَلَيْهِ فَهُوَ لَهُمْ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3474. अम्र बिन शुऐब अपने बाप से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने जान बुझकर क़त्ल किया तो उसे मकतुल के वुरसा के हवाले किया जाएगा, अगर वह चाहे तो (इसे) क़त्ल कर दे और अगर वह चाहे तो दियत ले लें, और वह तीस हिक़्क़ा (ऊंटनी का वह बच्चा जो तीन साल मुकम्मल करने के बाद उमर के चोथे साल में दाखिल हो) तीस जज़आ (वो ऊंटनी जो पाँचवीं साल में दाखिल हो) और चालीस हामिला ऊंटनिया है और वह जिस चीज़ पर मुसालिहत कर ले तो वह इन के लिए है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1387 وقال : حسن غريب)

٣٤٧٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْمُسْلِمُونَ تَتَكَافَأُ دِمَاؤُهُمْ وَيَسْعَى بِذِمَّتِهِمْ أَدْنَاهُمْ وَيَرُدُّ عَلَيْهِمْ أَقْصَاهُمْ وَهُمْ يَدٌ عَلَى مَنْ سِوَاهُمْ أَلَا لَا يُقْتَلُ مُسْلِمٌ بِكَافِرٍ وَلَا ذُو عَهْدٍ فِي عَهْدِه» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3475. अली रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मुसलमानों के खून (किसास व दियत में) मसावी है, और उन के आम आदमी की अमान का भी लिहाज़ रखा जाएगा और उन से दूर दराज़ वाला शख़्स माले गनीमत उन के नज़दीक वाले पर लौटाएगा, और वह दुश्मन के मुकाबले में बाहम दस्ते वाहिद की तरह है, सुन लो! किसी मुसलमान को किसी काफ़िर के बदले में क़त्ल नहीं किया जाएगा और न किसी मुआहिद (जिम्मी) को उस के अहद में क़त्ल किया जाएगा"| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (5530) و النسائی (8 / 24 ح 4749)

٣٤٧٦ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ ابْن مَاجَه عَن ابْن عَبَّاس

3476. इब्ने माजा ने इसे इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابن ماجه (2660) * حنش هو ابو علی الحسين بن قيس الرجی متروک و قوله :'' لا يقتل مومن بکافر '' صحيح بالشواهد و قوله :'' ولا ذو عهد فی عهده '' ضعيف وله شواهد ضعيفة عند ابن حبان (الموارد : 1699) و ابی داود (4530) وغيرهما

٣٤٧٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي شُريحٍ الخُزاعيِّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " مَنْ أُصِيبَ بِدَمٍ أَوْ خَبْلٍ وَالْخَبَلُ: الْجُرْحُ فَهُوَ بِالْخِيَارِ بَيْنَ إِحْدَى ثَلَاثٍ: فَإِنْ أَرَادَ الرَّابِعَةَ فَخُذُوا عَلَى يَدَيْهِ: بَيْنَ أَنْ يَقْتَصَّ أَوْ يَعْفُوَ أَوْ يَأْخُذَ الْعَقْلَ [ص:١٠٣] فَإِنْ أَخَذَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا ثُمَّ عَدَا بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ النَّارُ خَالِدًا فِيهَا مُخَلَّدًا أبدا ". رَوَاهُ الدَّارمِيّ

3477. अबू शरीह खुजाई रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जिस शख़्स का कोई अज़ीज़ क़त्ल हो जाए या कोई ज़ख़्मी कर दिया जाए तो उसे तीन में से एक का इख़्तियार है, अगर वह चोथी चिज़ का इरादा कर ले तो उस के हाथ पकड़ लो, वह किसास ले ले, या मुआफ़ कर दे, या दियत ले ले, अगर उस ने उस में से कोई चीज़ ले ली और फिर उस के बाद ज़्यादती की तो उस के लिए जहन्नम की आग है जिस में वह हमेशा हम्मेश रहेगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (2 / 188 ح 2356) [و ابن ماجه (2623) و ابوداؤد (4496)] * سفيان بن ابی العوجاء : ضعيف و لبعض الحديث شاهد حسن عند احمد (4 / 32 ح 16492)

٣٤٧٨ - وَعَن طَاوُوس عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ قُتِلَ فِي عِمِّيَّةٍ فِي رَمْيٍ يَكُونُ بَيْنَهُمْ بِالْحِجَارَةِ أَوْ جَلْدٍ بِالسِّيَاطِ أَوْ ضَرْبٍ بِعَصًا فَهُوَ خَطَأٌ عقله الْخَطَأِ وَمَنْ قَتَلَ عَمْدًا فَهُوَ قَوَدٌ وَمَنْ حَالَ دُونَهُ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ وَغَضَبُهُ لَا يُقْبَلُ مِنْهُ صَرْفٌ وَلَا عَدْلٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3478. ताउस, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से और वह रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जो शख़्स बलवे में मारा जाए, मसलन लड़ने वाले एक दूसरे पर पत्थर फेंक रहे थे या कोड़े मार रहे

थे या लाठियां बरसा रहे थे तो वह क़त्ले खता है और उसकी दियत, दीयते खता की मिस्ल होगी और जिस ने जान बुझकर क़त्ल किया तो वह (कातिल) काबिले किसास है, और जो शख़्स इस (किसास) के दरमियान हाइल हो जाए, उस पर अल्लाह की लानत और उस का गज़ब है, उस से न तो नफ्ल कबूल होगा और न फ़र्ज़"| (सहीह)

صحیح ، رواہ ابوداؤد (4539) و النسائی (8 / 39 ح 47934794)

٣٤٧٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا أَعْفِي مَنْ قَتَلَ بعدَ أَخذ الديةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3479. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मैं दियत लेने के बाद क़त्ल करने वाले को मुआफ़ नहीं करूँगा"| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (4507) * الحسن البصری مدلس و عنعن و فیه علة أخرى

٣٤٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَا مِنْ رَجُلٍ يُصَابُ بِشَيْءٍ فِي جَسَدِهِ فَتَصَدَّقَ بِهِ إِلَّا رَفَعَهُ اللَّهُ بِهِ دَرَجَةً وَحَطَّ عَنْهُ خَطِيئَة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

3480. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जिस शख़्स के जिस्म में कोई जख्म लग जाए और वह मुआफ़ कर दे तो उसकी वजह से अल्लाह उस का एक दर्जा बुलंद कर देता है और उसकी एक खता मुआफ़ फरमा देता है"| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (1393 وقال : غریب) و ابن ماجه (2693) * ابو السفر ثقه لکنه ارسل عن ابی الدرداء رضی اللہ عنه ، کذافی التهذيب وغيره

كتاب الْقصاص • किसास का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٤٨١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ: أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخطاب قَتَلَ نَفَرًا خَمْسَةً أَوْ سَبْعَةً بِرَجُلٍ وَاحِدٍ قَتَلُوهُ قَتْلَ غِيلَةٍ وَقَالَ عُمَرُ: لَوْ تَمَالَأَ عَلَيْهِ أَهْلُ صَنْعَاءَ لَقَتَلْتُهُمْ جَمِيعًا. رَوَاهُ مَالِكٌ

3481. सईद बिन मुसय्यब से रिवायत है के उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने एक आदमी के क़त्ल के बदले में पांच या सात आदमियों को क़त्ल किया, उन्होंने इसे धोके से क़त्ल किया था, और उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अगर उस के क़त्ल पर सीनाअ के तमाम लोग मजतमअ (जटिल) होते तो मैं (इस के बदले में) सब को क़त्ल कर देता”| (सहीह)

صحيح ، رواه مالک (2 / 871 ح 1688) * رجاله ثقات و سعيد بن المسيب سمع من عمر رضى الله عنه

٣٤٨٢ - (صَحِيح) وروى البُخَارِيّ عَن ابْن عمر نَحوه

3482. इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह ने इसी की मिस्ल इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है| (बुखारी)

رواه البخارى (6896)

٣٤٨٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن جُنْدبٍ قَالَ: حَدَّثَنِي فُلَانٌ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " يَجِيءُ الْمَقْتُولُ بِقَاتِلِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيَقُولُ: سَلْ هَذَا فِيمَ قَتَلَنِي؟ فَيَقُولُ: قَتَلْتُهُ عَلَى مُلْكِ فُلَانٍ ". قَالَ جُنْدُبٌ: فاتَّقِها. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

3483. जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, फलां शख़्स ने मुझे हदीस बयान की के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत मकतुल अपने कातिल को लेकर आएगा और वह कहेगा (रब जी!) इस से पूछे के उस ने मुझे क़त्ल क्यों किया? तो वह कहेगा मैंने इसे फलां की सल्तनत फलां की नुसरत पर क़त्ल किया”, जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: ज़ालिम की इआनत से बचो| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائی (7 / 84 ح 4003)

٣٤٨٤ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَعَانَ عَلَى قَتْلِ مُؤْمِنٍ شَطْرَ كَلِمَةٍ لَقِيَ اللَّهَ مَكْتُوبٌ بينَ عينيهِ آيسٌ من رَحْمَة الله» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

3484. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने किसी मोमिन के क़त्ल पर ठोड़ी सी बात के बराबर भी मदद की तो वह अल्लाह से इस हाल में मुलाकात करेगा के उसकी दोनों आंखो के बिच में लिखा होगा: “अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (2620) * يزيد الشامی : منكر الحديث ، و للحديث شواهد ضعيفة عند البيهقی (8 / 22) وغيره

٣٤٨٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا أَمْسَكَ الرَّجُلُ الرَّجُلَ وَقَتَلَهُ الْآخَرُ يُقْتَلُ الَّذِي قتل ويُحبسُ الَّذِي أَمْسَكَ» . رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيّ

3485. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब आदमी किसी आदमी को पकड़ कर रखे और दूसरा आदमी इसे क़त्ल कर दे तो कातिल को क़त्ल किया जाएगा और पकड़ने वाले को क़ैद किया जाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارقطنی (3 / 140 ح 3243) [و البیهقی (8 / 50 وقال : هذا غیر محفوظ) * سفيان الثوری مدلس و عنعن و فی السند علة أخرى

بَاب الدِّيات • दिय्यत का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٤٨٦ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «هَذِهِ وَهَذِهِ سَوَاءٌ» يَعْنِي الخِنصرُ والإِبهامَ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3486. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये और यह यानी छोटी ऊँगली और अंगूठा (दियत) में बराबर है”| (बुखारी)

رواه البخاری (6895)

٣٤٨٧ - (مُتَّفقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي جَنِينِ امْرَأَةٍ مَنْ بَنِي لِحْيَانَ سَقَطَ مَيِّتًا بِغُرَّةٍ: عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ ثُمَّ إِنَّ الْمَرْأَةَ الَّتِي قُضِيَ عَلَيْهَا بِالْغُرَّةِ تُوُفِّيَتْ فَقَضَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَنْ مِيرَاثَهَا لبنيها وَزوجهَا الْعقل على عصبتها

3487. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने बनू लिह्यान उन की एक औरत के हमल के मुर्दा हालत में साकित हो जाने पर एक गुलाम या लौंडी का फैसला किया था फिर वह औरत जिसके मुतल्लिक आप ﷺ ने गुलाम का फैसला किया था वह फौत हो गई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फैसला दीया के उसकी मीरास उस के बेटो और उस के शोहर के लिए है जबकि उसकी दियत उस के असबा पर है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6909) و مسلم (39 / 1681)، (4389)

٣٤٨٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: اقْتَتَلَتِ امْرَأَتَانِ مِنْ هُذَيْلٍ فَرَمَتْ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَى بِحَجَرٍ فَقَتَلَتْهَا وَمَا فِي بَطْنِهَا فَقَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ دِيَةَ جَنِينِهَا غُرَّةٌ: عَبْدٌ أَوْ وَلِيدَةٌ وَقَضَى بِدِيَةِ الْمَرْأَةِ عَلَى عَاقِلَتِهَا وورَّثَهَا ولدَها وَمن مَعَهم

3488. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हज़िल कबिले की दो औरते लड़ पड़ी तो उनमें से एक ने दूसरी पर पत्थर मारा और इसे और उस के जनिन (पेट के बच्चे) को क़त्ल कर दिया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फैसला दिया के उस के जनिन की दियत एक गुलाम या एक लौंडी है और औरत की दियत उस के खानदान (औरत के बाप की तरफ से रिश्तेदार असबा) पर है और आप ﷺ ने उसकी औलाद और जो उन के साथ है इनको उस का वारिस बनाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6910) و مسلم (36 / 1681)، (4391)

٣٤٨٩ - (صَحِيح) وَعَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ: أَنَّ امْرَأَتَيْنِ كَانَتَا ضَرَّتَيْنِ فَرَمَتْ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَى بِحَجَرٍ أَوْ عَمُودِ فُسْطَاطٍ فَأَلْقَتْ جَنِينَهَا فَقَضَى رَسُولُ اللَّهِ [ص:١٠٣] صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الجَنين غُرَّةً: عبداً أَوْ أَمَةٌ وَجَعَلَهُ عَلَى عَصَبَةِ الْمَرْأَةِ هَذِهِ رِوَايَةُ التِّرْمِذِيِّ وَفِي رِوَايَةِ مُسْلِمٍ: قَالَ: ضَرَبَتِ امْرَأَةٌ ضَرَّتَهَا بِعَمُودِ فُسْطَاطٍ وَهِيَ حُبْلَى فَقَتَلَتْهَا قَالَ: وَإِحْدَاهُمَا لِحْيَانِيَّةٌ قَالَ: فَجَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دِيَةَ الْمَقْتُول عَلَى عَصَبَةِ الْقَاتِلَةِ وَغُرَّةً لِمَا فِي بَطْنِهَا

3489. मुगिरा बिन शैबा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के दो औरते सोतन थी, उनमें से एक ने दूसरी को पत्थर या खैमे का बांस मारा तो उस का जनिन (पेट का बच्चा) गिर गया, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने जनिन के बारे में गुलाम या लौंडी का फैसला दिया और इसे इस औरत के असबा पर मुकर्रर फ़रमाया| यह तिरमिज़ी की रिवायत है, और मुस्लिम की रिवायत में है: औरत ने अपनी सोतन को जो के हामिला थी, खैमे का बांस मारा तो उस ने इसे क़त्ल कर दिया, और कहा: उनमें से एक लिहयानिया थी, रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मकतुल की दियत कातिला के असबा (रिश्तेदारों) पर मुकर्रर फरमाई और जो इस (मकतुल) के पेट मैं था उसकी दियत एक गुलाम मुकर्रर की| (सहीह,मुस्लिम)

صحيح ، رواه الترمذى (1411) و مسلم (37 / 1682)، (4393)

بَاب الدِّيات • दिय्यत का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٤٩٠ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " أَلَا إِنَّ دِيَةَ الْخَطَأِ شِبْهِ الْعَمْدِ مَا كَانَ بِالسَّوْطِ وَالْعَصَا مِائَةٌ مِنَ الإبلِ: مِنْهَا أربعونَ فِي بطونِها أولادُها ". رَوَاهُ النسائيُّ وَابْن مَاجَه والدارمي

3490. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सुन लो! खता की दियत, शुबाआमद की दियत के मिसल है, जो कोड़े और लाठी से हो, उसकी (दियत) सौ ऊंट है, जिन में से चालीस हामिला होगी”| (हसन)

حسن ، رواه النسائی (8 / 42 ح 4797) و ابن ماجه (2628 مطولًا و سنده ضعيف) والدارمی (2 / 197 ح 2388) [و ابوداؤد (4547 صحيح ، 4548) و رواه البخاری (6895)]

٣٤٩١ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ أَبُو دَاوُد عَنهُ وَابْن مَاجَه وَعَن ابْن عمر. وَفِي «شَرْحِ السُّنَّةِ» لَفْظُ «الْمَصَابِيحِ» عَنِ ابْنِ عمر

3491. और अबू दावुद ने इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है, और शरह सुन्ना में मसाबिह के अल्फाज़ सिर्फ इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी हैं| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4549) و البغوی فی شرح السنة (10 / 186 ح 2536) * علی بن زيد بن جدعان ضعيف و حديث ابی داود (4547) و البخاری (6895) يغنی عنه

٣٤٩٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَتَبَ إِلَى أَهْلِ الْيَمَنِ وَكَانَ فِي كِتَابِهِ: «أَنَّ مَنِ اعْتَبَطَ مُؤْمِنًا قَتْلًا فَإِنَّهُ قَوَدُ يَدِهِ إِلَّا أَنْ يَرْضَى أَوْلِيَاءُ الْمَقْتُولِ» وَفِيهِ: «أَنَّ الرَّجُلَ يُقْتَلُ بِالْمَرْأَةِ» وَفِيهِ: «فِي النَّفْسِ الدِّيَةُ مِائَةٌ مِنَ الْإِبِلِ وَعَلَى أَهْلِ الذَّهَبِ أَلْفُ دِينَارٍ وَفِي الْأَنْفِ إِذَا أُوعِبَ جَدْعُهُ الدِّيَةُ مِائَةٌ مِنَ الْإِبِلِ وَفِي الْأَسْنَانِ الدِّيَةُ وَفِي الشفتين الدِّيَة وَفِي البيضين الدِّيةُ وَفِي الذَّكرِ الدِّيةُ وَفِي [ص:١٠٣ الصُّلبِ الدِّيَةُ وَفِي الْعَيْنَيْنِ الدِّيَةُ وَفِي الرِّجْلِ الْوَاحِدَةِ نِصْفُ الدِّيَةِ وَفِي الْمَأْمُومَةِ ثُلُثُ الدِّيَةِ وَفِي الجائفَةِ ثلث الدِّيَة وَفِي المنقلة خمس عشر مِنَ الْإِبِلِ وَفِي كُلِّ أُصْبُعٍ مِنْ أَصَابِعِ الْيَدِ وَالرِّجْلِ عَشْرٌ مِنَ الْإِبِلِ وَفِي السِّنِّ خَمْسٌ مِنَ الْإِبِلِ» . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَفِي رِوَايَةِ مَالِكٍ: «وَفِي الْعَيْنِ خَمْسُونَ وَفِي الْيَدِ خَمْسُونَ وَفِي الرِّجْلِ خَمْسُونَ وَفِي الْمُوضِحَةِ خَمْسٌ»

3492. अबू बक्र बिन मुहम्मद बिन अम्र बिन हज़्म अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने अहले यमन के नाम ख़त लिखा और आप ﷺ के ख़त मैं था: “जिस ने किसी मुसलमान को जान बुझकर नाहक क़त्ल किया तो उस का किसास उस के हाथ के अमल की वजह से है, मगर यह के मकतुल के औलिया (वुरसा) राज़ी हो जाए”, और इस (ख़त) में यह भी था: “आदमी को औरत के बदले में क़त्ल किया जाएगा”, और उस में था: “किसी जान की दियत सौ ऊंट है, और सोने वालो पर एक हज़ार दीनार, और नाक की दियत जब इसे मुकम्मल तौर पर काट दिया जाए, सौ ऊंट है, दांतों के बारे में दियत है, होठों के बारे में दियत है, वृषण (दो अंडो) के बारे में दियत है, शर्मगाह के बारे में दियत है, कमर के बारे में दियत है, आंखो के बारे में दियत है, एक पाँव की आधी दियत है, दिमाग की झिल्ली तक पहुँचने वाले जख्म पर एक तिहाई दियत है, पेट के अन्दर पहुँचने वाले जख्म में एक तिहाई दियत है, हड्डी को जगह से हटा देने वाले जख्म में पन्द्रह ऊंट दियत है, हाथ और पाँव की हर ऊँगली में दस ऊंट दियत है, और दांत की दियत पांच ऊंट है”| नसई, दारमी और इमाम

मालिक रहिमहुल्लाह की रिवायत में है: “आँख में पचास, हाथ में पचास, पाँव में पचास और हड्डी ज़ाहिर करने वाले जख्म पर पांच ऊंट दियत है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه النسائى (8 / 5758 ح 4857) و الدارمى (2 / 192193 ح 2370 مختصرًا) و مالک (2 / 849 ح 1647) * سليمان بن داود صوابه سليمان بن ارقم وهو ضعيف

٣٤٩٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَوَاضِحِ خَمْسًا خَمْسًا مِنَ الْإِبِلِ وَفِي الْأَسْنَانِ خَمْسًا خَمْسًا مِنَ الْإِبِلِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَرَوَى التِّرْمِذِيُّ وابنُ مَاجَه الْفَصْل الأول

3493. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने हड्डी ज़ाहिर करने वाले जख्म में और हर दांत में पांच पांच ऊंट दियत मुकर्रर की है”| अबू दावुद, नसई, दारमी जबकि तिरमिज़ी और इब्ने माजा ने पहला जुमला नकल किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4566) و النسائى (8 / 57 ح 4856 مختصرًا) و الدارمى (2 / 195 ح 2375) و الترمذى (1390 وقال : حسن صحيح) و ابن ماجه (2655)

٣٤٩٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: جَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَصَابِعَ الْيَدَيْنِ وَالرِّجْلَيْنِ سَوَاء. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالتِّرْمِذِيّ

3494. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हाथ और पाँव की उंगलियों को बराबर करार दिया है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4561) و الترمذى (1391 وقال : حسن صحيح غريب)

٣٤٩٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «الأصابعُ سواءٌ والأسنانُ سواءٌ الثَّنِيَّةُ وَالضِّرْسُ سَوَاءٌ هَذِهِ وَهَذِهِ سَوَاءٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3495. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “(दियत के बारे में) तमाम उंगलिया बराबर है, तमाम दांत बराबर है, सामने वाले दांत और दाढ़े बराबर है, यह और यह (छोटी ऊँगली और अंगूठा) बराबर है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4559)

٣٤٩٦ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: خَطَبَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ الفتحِ ثمَّ قَالَ: «أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّهُ لَا حِلْفَ فِي الْإِسْلَامِ وَمَا كَانَ مِنْ حِلْفٍ فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَإِنَّ الْإِسْلَامَ لَا يَزِيدُهُ إِلَّا شِدَّةً الْمُؤْمِنُونَ يَدٌ عَلَى مَنْ سِوَاهُمْ [ص:١٠٣] يُجِيرُ عَلَيْهِمْ أَدْنَاهُمْ وَيَرُدُّ عليهِم أقْصاهم يَردُّ سراياهم على قعيدتِهم لَا يُقْتَلُ مُؤْمِنٌ بِكَافِرٍ دِيَةُ الْكَافِرِ نِصْفُ دِيَةِ الْمُسْلِمِ لَا جَلَبَ وَلَا جَنَبَ وَلَا تُؤْخَذُ صَدَقَاتُهُمْ إِلَّا فِي دُورِهِمْ» . وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: «دِيَةُ الْمُعَاهِدِ نِصْفُ دِيَةِ الْحُرِّ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3496. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फतह मक्का के साल खुत्बा इरशाद फ़रमाया तो फ़रमाया: “लोगो! इस्लाम में कोई नया मुआयदा नहीं, और दौरे जाहिलियत में जो मुआयदा था इस्लाम उस में इज़ाफा नहीं करता अलबत्ता इसे मज़बूत करता है, मोमिन दुश्मन के मुकाबले में बाहम दस्ते वाहिद की तरह है एक अदना मुसलमान भी किसी काफ़िर को पनाह दे सकता है और उनमें से जो दूर दराज़ है वह भी उन तक पहुंचाता है, और उन के लश्कर जिहाद में शरीक न होने वालो को भी माले गनीमत में शरीक करते हैं, किसी मोमिन को काफ़िर के बदले में क़त्ल नहीं किया जाएगा, काफ़िर की दियत , मुसलमान की दियत से आधी है, ज़कात वुसुल करने वाला न अपने पास ज़कात मंगवाए और न ज़कात देने वाले अपना माल दूर ले जाए और उन के सदकात उन के घरो ही से वुसुल किए जाए”, और एक रिवायत में है: “ज़िम्मी की दियत, आज़ाद आदमी की दियत से आधी है”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (2 / 180 ح 6692) و ابوداؤد (4531 الرواية الثانية : 4583)

٣٤٩٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ خِشْفِ بْنِ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي دِيَةِ الْخَطَأِ عِشْرِينَ بِنْتَ مَخَاضٍ وَعِشْرِينَ ابْنَ مَخَاضٍ ذُكُورٍ وَعِشْرِينَ بِنْتَ لَبُونٍ وَعِشْرِينَ جَذَعَةً وَعِشْرِينَ حِقَّةً ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالصَّحِيحُ أَنَّهُ مَوْقُوفٌ عَلَى ابْنِ مَسْعُودٍ وَخِشْفٌ مَجْهُولٌ لَا يُعْرَفُ إِلَّا بِهَذَا الْحَدِيثِ وَرُوِيَ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَدَى قَتِيلَ خَيْبَرَ بِمِائَةٍ مِنْ إِبِلِ الصَّدَقَةِ وَلَيْسَ فِي أَسْنَانِ إِبِلِ الصَّدَقَةِ ابْنُ مَخَاضٍ إِنَّمَا فِيهَا ابْنُ لبون

3497. खिश्फ़ बिन मालिक, इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने खता की दियत बीस मादा ऊँट और बीस नर ऊँट जो उनके दूसरे साल में आ चुके हो और बीस मादा ऊँट जो उनके तीसरे साल में आ चुकी हो, बीस मादा ऊँट जो उनके पांचवे साल में आ चुकी हो और बीस मादा ऊँट जो उनके चोथे साल में आ चुकी हो मुकर्रर फरमाई| तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई, इसनाद जईफ, रवाह तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई, और सहीह यह है कि यह इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु पर मौकूफ है, जबकि खिश्फ़ मजहूल है, उस से सिर्फ हमें एक रिवायत मरवी है, और शरह सुन्ना में रिवायत है के नबी ﷺ ने खैबर के एक मकतुल की सदका के ऊटों में से सौ ऊंट दियत अदा की और सदका के ऊटों में दो सलाह ऊँट नहीं था उनमें सिर्फ तीसरे साल में दाखिल ऊँट थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1386) و ابوداؤد (4545) و النسائی (8 / 4344 ح 4806) [و ابن ماجه (2631)] * خشف مجهول كما قال المؤلف وغيره و حجاج بن ارطاة مدلس و عنعن ، 0 حديث ان النبی صلی الله عليه و آله وسلم و دی قتيل خيبر الخ رواه البغوی فی شرح السنة (10 / 188 تحت ح 2536) [و البخاری (7192) و مسلم (6 / 1669)]

٣٤٩٨ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: كَانَتْ قِيمَةُ الدِّيَةِ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَمَانِمِائَةِ دِينَارٍ أَوْ ثَمَانِيَةَ آلَافِ دِرْهَمٍ وَدِيَةُ أَهْلِ الْكِتَابِ يَوْمَئِذٍ النِّصْفُ مِنْ دِيَةِ الْمُسْلِمِينَ قَالَ: فَكَانَ كَذَلِكَ حَتَّى اسْتُخْلِفَ عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنهُ عَلَى أَهْلِ الذَّهَبِ أَلْفَ دِينَارٍ وَعَلَى أَهْلِ الْوَرِقِ اثْنَيْ عَشَرَ أَلْفًا وَعَلَى أَهْلِ الْبَقَرِ مِائَتَيْ بَقَرَةٍ وَعَلَى أَهْلِ الشَّاءِ أَلْفَيْ شَاةٍ وَعَلَى أَهْلِ الْحُلَلِ مِائَتَيْ حُلَّةٍ قَالَ: وَتَرَكَ دِيَةَ [ص:١٠٤] أَهْلِ الذِّمَّةِ لَمْ يَرْفَعْهَا فِيمَا رَفَعَ من الدِّيَة. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3498. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ के अहद में दियत की कीमत आठ सौ दीनार थी या आठ हज़ार दिरहम थी, और उन दिनों अहले किताब की दियत मुसलमानों की दियत से आधी थी, उन्होंने मज़ीद फ़रमाया: दियत का मुआमला इसी तरह था हत्ता के उमर रदियल्लाहु अन्हु खलीफा बने तो उमर रदियल्लाहु अन्हु ने खुत्बा इरशाद फ़रमाया के ऊंट महंगे हो गए है, रावी बयान करते हैं, के उमर रदियल्लाहु अन्हु ने सोने वालो पर हज़ार दीनार, चाँदी वालो पर बारह हज़ार दिरहम, गाय वालो पर दो सौ गाये, बकरियों वालो पर दो हज़ार बकरिया, जोड़े (सोट) वालो पर दो सौ जोड़े मुकर्रर फरमाए, रावी बयान करते हैं, आप रदियल्लाहु अन्हु ने ज़िम्मियो की दियत छोड़ दी, और जब उन्होंने दियत बढ़ाई तो उसे न बढ़ाया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4542)

٣٤٩٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ جَعَلَ الدِّيَةَ اثْنَيْ عَشَرَ أَلْفًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ

3499. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने दियत बारह हज़ार (दिरहम) मुकर्रर फरमाई| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1388 وقال : حسن صحيح غريب) و ابوداؤد (4546) و النسائی (2 / 192 ح 2368) و الدارمی (8 / 44 ح 4808)

٣٥٠٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُقَوِّمُ دِيَةَ الْخَطَأِ عَلَى أَهْلِ الْقُرَى أَرْبَعَمِائَةِ دِينَارٍ أَوْ عِدْلَهَا مِنَ الْوَرِقِ وَيُقَوِّمُهَا عَلَى أَثْمَانِ الْإِبِلِ فَإِذَا غَلَتْ رَفَعَ فِي قيمتها وإِذا هاجَتْ رُخصٌ نَقَصَ مِنْ قِيمَتِهَا وَبَلَغَتْ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا بَيْنَ أَرْبَعِمِائَةِ دِينَارٍ إِلَى ثَمَانِمِائَةِ دِينَارٍ وَعِدْلُهَا مِنَ الْوَرِقِ ثَمَانِيَةُ آلَافِ دِرْهَمٍ قَالَ: وَقَضَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى أَهْلِ الْبَقَرِ مِائَتَيْ بَقَرَةٍ وَعَلَى أَهْلِ الشَّاءِ أَلْفَيْ شَاةٍ وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْعَقْلَ مِيرَاثٌ بَيْنَ وَرَثَةِ الْقَتِيلِ» وَقَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ عَقْلَ الْمَرْأَةِ بَيْنَ عَصَبَتِهَا وَلَا يَرِثُ القاتلُ شَيْئا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3500. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ

देहातियो पर दीयते खता चार सौ दीनार या उस के मसावी चाँदी मुकर्रर फ़रमाया करते थे, और उस में ऊटों की कीमत का लिहाज़ रखते थे, जब (ऊँटो की) कीमत बढ़ जाती तो आप ﷺ इस (दियत) की कीमत बढ़ा देते थे, और जब उनकी कीमत कम हो जाती तो आप इस दियत की कीमत कम कर देते थे और रसूलुल्लाह ﷺ के अहद में दियत की कीमत चार सौ दीनार से आठ सौ दीनार तक पहुँच गई थी, और चाँदी से उस के मसावी आठ हज़ार दिरहम तक पहुँच गई थी, रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने गाय वालो पर दो सौ गाये और बकरियों वालो पर दो हज़ार बकरिया दियत मुकर्रर फरमाई, और रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक दियत मकतुल के वुरसा के दरमियान मीरास है”, और रसूलुल्लाह ﷺ ने फैसला फ़रमाया के औरत की दियत उस के असबा पर है, और कातिल किसी चिज़ का वारिस नहीं बनेगा| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4564) و النسائی (8 / 4243 ح 4805)

٣٥٠١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «عَقْلُ شِبْهِ الْعَمْدِ مُغَلَّظٌ مِثْلُ عَقْلِ الْعَمْدِ وَلَا يُقْتَلُ صاحبُه» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3501. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ ने फ़रमाया: “शुबाआमद की दियत , दियते उम्दा की तरह मग्ल्लज़ है और इस (शुबाआमदा) के मुर्तकिब को क़त्ल नहीं किया जाएगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4565)

٣٥٠٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْعَيْنِ الْقَائِمَةِ السَّادَّةِ لِمَكَانِهَا بِثُلُثِ الدِّيَةِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3502. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने जगह पर साबित रह जाने वाली आँख की एक तिहाई दियत मुकर्रर फरमाई| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4567) و النسائی (8 / 55 ح 4844)

٣٥٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الجَنينِ بغُرَّةٍ: عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ أَوْ فَرَسٍ أَوْ بَغْلٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ [ص:١٠٤] وَقَالَ: رَوَى هَذَا الْحَدِيثَ حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ وَخَالِدٌ الْوَاسِطِيُّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَمْرٍو وَلَمْ يَذْكُرْ: أَوْ فَرَسٍ أَوْ بغل

3503. मुहम्मद बिन अम्र ने अबू सलमा और उन्होंने अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया, उन्होंने कहा:

रसूलुल्लाह ﷺ ने जनिन (पेट के बच्चे) के बारे में गुलाम या लौंडी या घोड़ा या खच्चर बतौर दियत मुकर्रर फ़रमाया| अबू दावुद ने इसे रिवायत किया और फ़रमाया हम्माद बिन सलमा और खालिद वास्ती ने यह हदीस मुहम्मद बिन अम्र से रिवायत की और उन्होंने घोड़ा या खच्चर का ज़िक्र नहीं किया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4579)

٣٥٠٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «من تطبب وَلَمْ يُعْلَمْ مِنْهُ طِبٌّ فَهُوَ ضَامِنٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3504. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और उन्होंने अपने दादा से रिवायत किया के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स इलाज मुआल्ज़ा करे जबकि वह तिब्ब में माहिर न हो तो वह (मरीज़ की मौत वाकेअ होने पर दियत का) ज़ामिन होगा”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4586) و النسائى (8 / 5253 ح 48344835) * ابن جريج مدلس و عنعن و للحديث شاهد ضعيف

٣٥٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عِمْرَان بن حُصَين: أَنَّ غُلَامًا لِأُنَاسٍ فُقَرَاءَ قَطَعَ أُذُنَ غُلَامٍ لِأُنَاسٍ أَغْنِيَاءَ فَأَتَى أَهْلُهُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: إِنَّا أُنَاسٌ فُقَرَاءُ فَلَمْ يَجْعَلْ عَلَيْهِمْ شَيْئًا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

3505. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के ग़रीब लोगों के गुलाम ने अमीर लोगों के गुलाम का कान काट दिया तो इस (कान काटने वाले गुलाम) के घर वाले, नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने अर्ज़ किया, हम फ़क़ीर लोग हैं, तो आप ﷺ ने इन पर (दियत में से) कुछ भी मुकर्रर न फ़रमाया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4590) و النسائى (8 / 2526 ح 4755) * قتادة مدلس و عنعن

दिय्यत का बयान • بَاب الدِّيات

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٣٥٠٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: دِيَةُ شِبْهِ الْعَمْدِ أَثْلَاثًا ثَلَاثٌ وَثَلَاثُونَ حِقَّةً وَثَلَاثٌ وَثَلَاثُونَ جَذَعَةً وَأَرْبَعٌ وَثَلَاثُونَ ثَنِيَّةً إِلَى بَازِلِ عَامِهَا كُلُّهَا خَلِفَاتٌ وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ: فِي الْخَطَأِ أَرْبَاعًا: خَمْسَة وَعِشْرُونَ حِقَّةً وَخَمْسٌ وَعِشْرُونَ جَذَعَةً وَخَمْسٌ وَعِشْرُونَ بَنَاتِ لَبُونٍ وَخَمْسٌ وَعِشْرُونَ بَنَاتِ مَخَاضٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3506. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के “शुबाआमद की दियत तीन किस्म (के ऊँटो) पर मुश्तमिल है:

तेंतीस हिक़्क़ (तीन साल मुकम्मल करने के बाद चोथे साल में दाखिल ऊंट) तेंतीस जज़आ (पांचवी साल में दाखिल) चोंतिस (चोथे साल में दाखिल होने वाली ऊंटनीया) और वह सब हामिला हो", और एक दूसरी रिवायत में है फ़रमाया: "क़त्ल खता की दियत चार किस्म की ऊंटनिया हैं: पच्चीस हिक़्क़, पच्चीस जज़आ (मादा ऊँट जो उनके पांचवे साल में आ चुकी हो), पच्चीस बनात लबुन (मादा ऊँट जो उनके तीसरे साल में आ चुकी हो) और पच्चीस बनात मखाज़ (मादा ऊँट)"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4551 و الرواية الثانية : 4553) * ابو اسحاق و سفيان مدلسان و عنعنا

٣٥٠٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مُجاهدٍ قَالَ: قَضَى عُمَرُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ فِي شِبْهِ الْعَمْدِ ثَلَاثِينَ حِقَّةً وَثَلَاثِينَ جَذَعَةً وَأَرْبَعِينَ خَلِفَةً مَا بَيْنَ ثَنِيَّةٍ إِلَى بَازِلِ عَامِهَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3507. मुजाहिद बयान करते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने शुबाआमद में तीस हक़, तीस जज़आ और चालीस हामिला ऊंटनियो का फैसला किया जो के छे साल से नौ साल की उमर के दरमियान हो और वह तमाम हामिला हो| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4550) * سفيان و ابن ابى نجيح مدلسان و عنعنا و مجاهد لم يسمع من عمر رضى الله عنه فالسند منقطع ان صح الى مجاهد

٣٥٠٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَضَى فِي الْجَنِينِ يُقْتَلُ فِي بَطْنِ أُمِّهِ بِغُرَّةٍ عَبْدٍ أَوْ وَلِيدَةٍ. فَقَالَ الَّذِي قُضِيَ عليهِ: كيفَ أَغْرَمُ مَنْ لَا شَرِبَ وَلَا أَكَلَ وَلَا نَطَقَ وَلَا اسْتَهَلَّ وَمِثْلُ ذَلِكَ يُطَلُّ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا هَذَا مِنْ إِخْوَانِ الْكُهَّانِ» . رَوَاهُ مالكٌ وَالنَّسَائِيّ مُرْسلا

3508. सईद बिन मुसय्यब से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने जनिन के बारे में जिसे उसकी माँ के पेट में क़त्ल किया जाए, एक गुलाम या एक लौंडी की दियत का फैसला किया तो आप ﷺ से जिसके खिलाफ फैसला किया था उस ने कहा: में उसकी दियत कैसे अदा करू जिस ने न पिया, न खाया और उस ने कलाम किया न कोई चीख मारी, और इस तरह वह इस क़त्ल को राइगा करार देता थे तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "ये तो काहिनो का साथी है"| मालिक, नसई ने इसे मुरसल रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه مالک (2 / 855 ح 1659) و النسائى (8 / 49 ح 4824) * السند مرسل وله شواهد منها الحديث الآتى (3509)

٣٥٠٩ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ عَنْهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ مُتَّصِلا

3509. अबू दावुद ने सईद बिन मुसय्यिब अन अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मुत्तसिल रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (4576)

بَاب مَا يضمن من الْجِنَايَات • ऐसे कसूर और खताए जिन पर दिय्यत नहीं हैं

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٥١٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْعَجْمَاءُ جَرْحُهَا جُبَارٌ وَالْمَعْدِنُ جُبَارٌ وَالْبِئْرُ جُبَارٌ»

3510. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर चोपाये किसी को ज़ख़्मी कर दे यह तो उस पर कोई खून बहा नहीं, अगर कोई खान में दबकर मर जाए उस पर कोई खून बहा नहीं और जो शख़्स कुंवे में गिर कर मर जाए तो उस का खून बहा नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6912) و مسلم (45 / 1710)، (4465)

٣٥١١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ يَعْلَى بْنِ أَمَيَّةَ قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَيْشَ الْعُسْرَةِ وَكَانَ لِي أَجِيرٌ فقاتلَ إنساناً فعض أَحدهمَا الْآخَرِ فَانْتَزَعَ الْمَعْضُوضُ يَدَهُ مِنْ فِي الْعَاضِّ فَأَنْدَرَ ثَنِيَّتَهُ فَسَقَطَتْ فَانْطَلَقَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَهْدَرَ ثَنِيَّتَهُ وَقَالَ: «أَيَدَعُ يَدَهُ فِي فِيكَ تَقْضِمُهَا كَالْفَحْلِ»

3511. यअली बिन उमय्य रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने गज़वा ए तबुक मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ शिरकत की मेरा एक नोकर था उस का किसी शख़्स से झगड़ा हो गया तो इन दोनों में से किसी एक ने दूसरे का हाथ (दांतों से) चबा डाला तो जिस का हाथ था उस ने अपने हाथ को उस के मुंह से खिंचा तो उस के सामने के दांत गिरा दिए, वह (शिकायत ले कर) नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप ﷺ ने उस के दांतों को राइगा करार दिया और उस का बदला न दिलाया और आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या यह अपना हाथ तुम्हारे मुंह में रहने देता ताकि तुम ऊंट की तरह इसे चबा डालते”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2265) و مسلم (23 / 1674)، (4372)

٣٥١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ قُتِلَ دُونَ مَالِهِ فَهُوَ شهيدٌ»

3512. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस शख़्स को अपने माल की हिफाज़त करते हुए क़त्ल कर दिया जाए तो वह शहीद है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2480) و مسلم (226 / 140)، (361)

٣٥١٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ إِنْ [ص:١٠٤ جَاءَ رَجُلٌ يُرِيدُ أَخْذَ مَالِي؟ قَالَ: «فَلَا تُعْطِهِ مَالَكَ» قَالَ: أَرَأَيتَ إِنْ قَاتَلَنِي؟ قَالَ: «قَاتِلْهُ» قَالَ: أَرَأَيْتَ إِنْ قَتَلَنِي؟ قَالَ: «فَأَنْتَ شَهِيدٌ» . قَالَ: أَرَأَيْتَ إِنْ قَتَلْتُهُ؟ قَالَ: «هُوَ فِي النَّارِ» . رَوَاهُ مُسلم

3513. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी आया तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए अगर कोई आदमी (नाहक तौर पर) मेरा माल लेने के इरादे से आए (तो में किया करू ?) आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम अपना माल इसे मत लेने दो”, उस ने अर्ज़ किया, मुझे बताइए अगर वह मुझ से झगड़ा करे तो? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम भी उस से झगड़ा करो”, उस ने अर्ज़ किया, मुझे बताइए अगर वह मुझे क़त्ल कर दे? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम शहीद हो”, उस ने अर्ज़ किया, मुझे बताइए अगर में उसे क़त्ल कर दूँ? तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो जहन्नमी है”, तुम पर कोई मुआखिज़ा (इलज़ाम लगाना) नहीं| (मुस्लिम)

رواه مسلم (225 / 124)، (360)

٣٥١٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَوِ اطَّلَعَ فِي بَيْتِكَ أحدٌ ولمْ تَأذن لَهُ فخذفته بحصاة ففتأت عَيْنَهُ مَا كَانَ عَلَيْكَ مِنْ جُنَاحٍ»

3514. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अगर कोई शख़्स बिला इजाज़त तुम्हारे घर में झांके और तुम उसे कंकरी मारो जिस से उसकी आँख फुट जाए तो तुम पर कोई गुनाह नहीं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6888) و مسلم (44 / 2158)، (5643)

٣٥١٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن سهل بنِ سعد: أَنَّ رَجُلًا اطَّلَعَ فِي جُحْرٍ فِي بَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِدْرًى يَحُكُّ بِهِ رَأْسَهُ فَقَالَ: «لَوْ أَعْلَمُ أَنَّكَ تنظُرُني لطَعَنْتُ بهِ فِي عَيْنَيْكَ إِنَّمَا جُعِلَ الِاسْتِئْذَانُ مِنْ أَجْلِ الْبَصَرِ»

3515. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ के दरवाज़े के सुराख़ में से झाँका, रसूलुल्लाह ﷺ के पास लकडी या लोहे की कंघी नुमा कोई चीज़ थी जिस से आप अपना सर खुजालते थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर मुझे पता होता की तुम मुझे देख रहे हो तो में उसे तुम्हारी दोनों आंखो में चुभो देता, देखने ही की वजह से तो इजाज़त लेना मुकर्रर किया गया है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6901) و مسلم (40 / 2156)، (5638)

٣٥١٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُغَفَّلٍ أَنَّهُ رَأَى رَجُلًا يَخْذِفُ فَقَالَ: لَا تَخْذِفْ فَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنِ الْخَذْفِ وَقَالَ: «إِنَّهُ لَا يُصَادُ بِهِ صَيْدٌ وَلَا يُنْكَأُ بِهِ عَدُوٌّ وَلَكِنَّهَا قَدْ تَكْسِرُ السِّنَّ وَتَفْقَأُ الْعَيْنَ»

3516. अब्दुल्लाह बिन मुगफ्फल रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने एक आदमी को कंकरिया फेंकते हुए देखा तो उन्होंने कहा: कंकरिया मत फेंको क्योंकि रसूलुल्लाह ﷺ ने कंकरिया फेंकने से मना फ़रमाया है और आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस से न तो शिकार किया जा सकता है और न दुश्मन को ज़ख़्मी किया जा सकता है लेकिन यह (फेंकना) दांत तोड़ सकता है और आँख फोड़ सकता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5479) و مسلم (54 / 1954)، (5050)

٣٥١٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا مَرَّ أَحَدُكُمْ فِي مَسْجِدِنَا وَفِي سُوقِنَا وَمَعَهُ نَبْلٌ فَلْيُمْسِكْ عَلَى نِصَالِهَا أَنْ يُصِيبَ أَحَدًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ مِنْهَا بِشَيْءٍ»

3517. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई शख़्स हमारी मस्जिद और हमारे बाज़ार में से गुज़रे और उस के पास तीर हो तो वह उस के नोक पर हाथ रखे ताकि उस से कोई मुसलमान ज़ख़्मी न हो जाए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7075) و مسلم (134 / 2615)، (6665)

٣٥١٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يُشِيرُ أَحَدُكُمْ [ص:١٠٤ عَلَى أَخِيهِ بِالسِّلَاحِ فَإِنَّهُ لَا يَدْرِي لَعَلَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ فِي يَدِهِ فَيَقَعُ فِي حُفْرَة من النَّار»

3518. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से कोई अस्लिहा के ज़रिए अपने भाई की तरफ इशारा न करे क्योंकि वह नहीं जानता के हो सकता है शैतान उस के हाथ से चिपट कर (इस के भाई पर वार करे) इसी तरह यह जहन्नम में जा गीरे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7072) و مسلم (136 / 2617)، (6668)

٣٥١٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَشَارَ إِلَى أَخِيهِ بِحَدِيدَةٍ فَإِنَّ الْمَلَائِكَةَ تَلْعَنُهُ حَتَّى يَضَعَهَا وَإِنْ كَانَ أَخَاهُ لأَبِيهِ وَأمه» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

3519. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स नेज़े से अपने भाई की

तरफ इरशाद करे, फ़रिश्ते उस पर लानत भेजते रहते है, हत्ता के वह इसे रख दे, ख्वाह वह उस का हकीकी भाई ही क्यों न हो"| (बुखारी)

رواه البخاری (لم اجده) [و مسلم (125 / 2616)، (6666)]

٣٥٢٠ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ وَأَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ حَمَلَ عَلَيْنَا السِّلَاحَ فَلَيْسَ مِنَّا» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ وزادَ مُسلم: «ومنْ غشَّنا فليسَ منَّا»

3520. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जो शख़्स हमारे खिलाफ अस्लिहा उठाए तो वह हम में से नहीं"| और इमाम मुस्लिम रहिमहुल्लाह ने यह इज़ाफा नकल किया है: "जिस ने हमें धोका दीया वह हम में से नहीं"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (707) و مسلم (164 / 101)، (283)

٣٥٢١ - (صَحِيح) وَعَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ سَلَّ علينا السَّيفَ فليسَ منَّا» . رَوَاهُ مُسلم

3521. सलमा बिन अकवा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस ने हमारे खिलाफ तलवार उठाई वह हम में से नहीं"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (162 / 99)، (281)

٣٥٢٢ - (صَحِيح) وَعَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ هشامَ بنَ حكيمٍ مَرَّ بِالشَّامِ عَلَى أُنَاسٍ مِنَ الْأَنْبَاطِ وَقَدْ أُقِيموا فِي الشَّمسِ وصُبَّ على رُؤوسِهِمُ الزَّيْتُ فَقَالَ: مَا هَذَا؟ قِيلَ: يُعَذَّبُونَ فِي الخَراجِ فَقَالَ هِشَامٌ: أَشْهَدُ لَسَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ اللَّهَ يُعَذِّبُ الَّذِينَ يُعذبونَ النَّاسَ فِي الدُّنْيَا» . رَوَاهُ مُسلم

3522. हिश्शाम बिन उरवा अपने वालिद से रिवायत करते हैं की हिश्शाम बिन हकिम शाम में कौम ए अंबाट के कुछ लोगों के पास से गुज़रे जिन्हें धुप में खड़ा किया गया था और उन के सरो पर जैतून का तेल डाला जा रहा था, उन्होंने पूछा यह क्या मुआमला है? बताया गया के उन्हें (टेक्स) की अदम अदाइगी की वजह से सज़ा दी जा रही है, हिश्शाम ने कहा मैं गवाही देता हूँ की मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "वो बेशक अल्लाह उन लोगों को अज़ाब देगा जो लोगों को दुनिया में (नाहक) अज़ाब व सज़ा देते है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (118 / 2613)، (6658)

٣٥٢٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُوشِكُ إِنْ طَالَتْ بك مُدَّة أَن ترى أَقْوَامًا فِي أَيْدِيهِمْ مِثْلُ أَذْنَابِ الْبَقَرِ يَغْدُونَ فِي غَضَبِ اللَّهِ وَيَرُوحُونَ فِي سَخَطِ اللَّهِ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «وَيَرُوحُونَ فِي لَعْنَةِ اللَّهِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

3523. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर तुम्हारी उमर दराज़ हुई तो करीब है के तुम कुछ ऐसे लोग देखोगे जिन के हाथो में गाय की दूम जैसे (कोड़े) होंगे वह सुबह व शाम (हमेशा) अल्लाह के गज़ब और नाराज़ी में रहेंगे”, और एक रिवायत में है: “वो अल्लाह की लानत में शाम करते हैं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (54 ، 53 / 2857)، (7195 و 7196)

٣٥٢٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " صِنْفَانِ مِنْ [ص:١٠٤ أَهْلِ النَّارِ لَمْ أَرَهُمَا: قَوْمٌ مَعَهُمْ سِيَاطٌ كَأَذْنَابِ الْبَقَرِ يَضْرِبُونَ بِهَا النَّاسَ وَنِسَاءٌ كَاسِيَاتٌ عَارِيَاتٌ مُمِيلَاتٌ مَائِلَاتٌ رؤوسهم كَأَسْنِمَةِ الْبُخْتِ الْمَائِلَةِ لَا يَدْخُلْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يَجِدْنَ رِيحَهَا وَإِنَّ رِيحَهَا لَتُوجَدُ مِنْ مَسِيرَةِ كَذَا وَكَذَا ". رَوَاهُ مُسلم

3524. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जहन्नुमियो के दो गिरोह ऐसे है जिन्हें मैंने नहीं देखा, एक वह लोग जिन के पास गाय की दुमो जैसे कोड़े होंगे जिन के साथ वह लोगों को मारते होंगे, और वह औरते जो लिबास पहन कर भी उरिया होगी, माइल करने वाली, मटक मटक कर चलने वाली होगी, उन के सर बख्ती ऊटों की झुकी हुई कोहानो की तरह उठे हुए होंगे, यह दोनों गिरोह न तो जन्नत में जाएँगे और न उसकी खुशबू पाएंगे, हालाँकि उसकी खुशबू दूर दराज़ तक फैली होगी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (52 / 2128)، (5582)

٣٥٢٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا قَاتَلَ أَحَدُكُمْ فَلْيَجْتَنِبِ الْوَجْهَ فَإِنَّ اللَّهَ خَلَقَ آدَمَ عَلَى صُورَتِهِ»

3525. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई (किसी को) मारे तो वह चेहरे से बचा करे क्योंकि अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम को अपने सूरत पर पैदा फ़रमाया है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2559) و مسلم (115 / 2612)، (6655)

بَاب مَا يضمن من الْجِنَايَات • ऐसे कसूर और खताए जिन पर दिय्यत नहीं हैं

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٥٢٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ كَشَفَ سِتْرًا فَأَدْخَلَ بَصَرَهُ فِي الْبَيْتِ قَبْلَ أَنْ يُؤْذَنَ لَهُ فَرَأَى عَوْرَةَ أَهْلِهِ فَقَدْ أَتَى حَدًّا لَا يَحِلُّ لَهُ أَنْ يَأْتِيَهُ وَلَوْ أَنَّهُ حِينَ أَدْخَلَ بَصَرَهُ فَاسْتَقْبَلَهُ رَجُلٌ فَفَقَأَ عَيْنَهُ مَا عَيَّرْتُ عَلَيْهِ وَإِنْ مَرَّ الرَّجُلُ عَلَى بَابٍ لَا سِتْرَ لَهُ غَيْرِ مُغْلَقٍ فَنَظَرَ فَلَا خَطِيئَةَ عَلَيْهِ إِنَّمَا الْخَطِيئَةُ عَلَى أَهْلِ الْبَيْتِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

3526. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस ने परदा उठाया और बिला इजाज़त घर में नज़र डाली और घरवालो की परदा की चीज़ को देख लिया तो उस ने एक हद का इर्तिकाब किया जिस का इर्तिकाब करना उस के लिए हलाल नहीं था, और अगर इस वक़्त, जब उस ने नज़र डाली, एक आदमी उस के सामने गया और उस ने उसकी आँख फोड़ दी, मैं उसको कोई सज़ा नहीं दूंगा, और अगर आदमी किसी ऐसे दरवाज़े से गुज़रे जिस का कोई परदा न हो और न वह बंद हो और वह देख ले तो उसकी कोई गलती नहीं, गलती तो घरवालो की है”| इस हदीस को तिरमिज़ी ने रिवायत किया है और उन्होंने कहा: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2707) * ابن لهيعة مدلس و عنعن

٣٥٢٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُتَعَاطَى السَّيْفُ مَسْلُولًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

3527. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने बे मियान तलवार किसी को देने से मना फ़रमाया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (2613 وقال : حسن غريب) و ابوداؤد (2588) * ابو الزبير مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة

٣٥٢٨ - وَعَن الحسنِ عَنْ سَمُرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى أَنْ يُقَدَّ السَّيْرُ بَيْنَ أُصبعَين. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3528. हसन, समुरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, के रसूलुल्लाह ﷺ ने दो उंगलियों के दरमियान तस्मिया चीरने से मना फ़रमाया है| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (2589)

٣٥٢٩ - (صَحِيح) وَعَن سعيدِ بنِ زيدٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ قُتِلَ دُونَ دِينِهِ فَهُوَ شَهِيدٌ وَمَنْ قُتِلَ دُونَ دَمِهِ فَهُوَ شَهِيدٌ وَمَنْ قُتِلَ دُونَ مَالِهِ فَهُوَ شَهِيدٌ وَمَنْ قُتِلَ دُونَ أَهْلِهِ فَهُوَ شَهِيدٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

3529. सईद बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अपने दीन की हिफाज़त करते हुए मारा जाए तो वह शहीद है, जो शख़्स अपनी जान की हिफाज़त करते हुए मारा जाए वह भी शहीद है, जो शख़्स अपने माल की हिफाज़त करता मारा जाए वह भी शहीद है, और जो शख़्स अपने अहल व अयाल की हिफाज़त करते मारा जाए वह भी शहीद है”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (1421 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (4772) و النسائی (7 / 115116 ح 40954096)

٣٥٣٠ - وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " لِجَهَنَّمَ سَبْعَةُ أَبْوَابٍ: بَابٌ مِنْهَا لِمَنْ سَلَّ السَّيْفَ عَلَى أُمَّتِي أَوْ قَالَ: عَلَى أُمَّةِ مُحَمَّدٍ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ»» وَحَدِيثُ أَبِي هُرَيْرَةَ: «الرِّجْلُ جُبَارٌ» ذُكِرَ فِي «بَابِ الْغَضَب»»» هَذَا الْبَاب خَال من الْفَصْل الثَّالِث

3530. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जहन्नम के सात दरवाज़े है उनमें से एक दरवाज़ा इस शख़्स के लिए है जिस ने मेरी उम्मत के खिलाफ तलवार उठाई, या फ़रमाया: “(जिस ने) मुहम्मद ﷺ की उम्मत के खिलाफ (तलवार उठाई)”| तिरमिज़ी, और उन्होंने कहा: यह हदीस ग़रीब है| # और अबू हुरैरा (र) से मरवी हदीस: “चोपाये के पाँव से लगने वाला जख्म राइगा है” बाब अल गज़ब में ज़िक्र की गई है. (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (3123) * وقال ابو حاتم الرازی : جنید عن ابن عمر : مرسل0 حدیث ’’ الرجل جبار ‘‘ تقدم (2952)

هذا الباب خال من الفصل الثالث

यह बाब तीसरी फस्ल से खाली है|

बَاب الْقسَامَة • क़सम का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٥٣١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ وَسَهْلِ بْنِ أَبِي حَثْمة أَنَّهُمَا حَدَّثَا أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ سَهْلٍ وَمُحَيِّصَةَ بْنَ مَسْعُودٍ أَتَيَا خَيْبَرَ فَتَفَرَّقَا فِي النَّخْلِ فَقُتِلَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَهْلٍ فَجَاءَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سَهْلٍ وَحُوَيِّصَةُ وَمُحَيِّصَةُ ابْنَا مَسْعُودٍ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَكَلَّمُوا فِي أَمْرِ صَاحِبِهِمْ فَبَدَأَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ وَكَانَ أَصْغَر الْقَوْمِ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " كبر الْكبر قَالَ يحيى بن سعد: يَعْنِي لِيَلِيَ الْكَلَامَ الْأَكْبَرُ فَتَكَلَّمُوا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اسْتَحِقُّوا قَتِيلَكُمْ أَوْ قَالَ صَاحِبَكُمْ بِأَيْمَانِ خَمْسِينَ مِنْكُمْ» . قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَمْرٌ لَمْ نَرَهُ قَالَ: فَتُبَرِّئُكُمْ يَهُودُ فِي أَيْمَانِ خَمْسِينَ مِنْهُمْ؟ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ قَوْمٌ كُفَّارٌ فَفَدَاهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ قِبَلِهِ. وَفِي رِوَايَةٍ: «تَحْلِفُونَ خَمْسِينَ يَمِينًا وَتَسْتَحِقُّونَ قَاتِلَكُمْ أَوْ صَاحِبَكُمْ» فَوَدَاهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ عِنْده بِمِائَة نَاقَة»» وَهَذَا الْبَاب خَال من الْفَصْل الثَّانِي

3531. राफीअ बिन ख़दीज और सहल बिन अबी हशमत से रिवायत है जिन दोनों ने बयान किया के अब्दुल्लाह बिन सहल और मुहय्यिस बिन मसउद खैबर आए और वह दोनों खजूरो के झुण्ड में अलग हो गए, चुनांचे अब्दुल्लाह बिन सहल क़त्ल कर दिए गए, उस के बाद अब्दुल रहमान बिन सहल और मसउद के दोनों बेटे हुवैस और मुहय्यिस नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और वह अपने साथी के मुआमले के मुतल्लिक बात करने लगे तो अब्दुल रहमान ने, जो के लोगों में सबसे छोटे थे, बात करना शुरू की तो नबी ﷺ ने इसे फ़रमाया: “बड़े को उस के बड़े होने का हक़ दो”, याह्या बिन सईद ने फ़रमाया: आप ﷺ की मुराद थी की जो सबसे बड़ा है वह कलाम करे, उन्होंने बात की तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तुम अपने मकतुल साथी की दियत के मुतल्लिक पचास कस्मे उठाकर हक़दार बन सकते हो”, उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! वह ऐसा मुआमला है के हमने इसे देखा नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “यहूद के पचास आदमी क़सम उठाकर तुम से बरी हो जाएँगे”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! जो तो काफ़िर लोग हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी तरफ से उन्हें दियत अदा फरमाई और एक रिवायत में है: “तुम पचास कस्मे उठाओ और अपने कातिल या अपने साथी के मुस्तहक बन जाओ”, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने तरफ से सौ ऊंटनिया बतौर दियत अदा फरमाइ| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (61426142 و الرواية الثانية : 7192) و مسلم (3 / 1669)، (4346)

هذا الباب خال من الفصل الثالث

यह बाब तीसरी फस्ल से खाली है|

بَاب الْقسَامَة • क़सम का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٥٣٢ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ قَالَ: أَصْبَحَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ مَقْتُولًا بِخَيْبَرَ فَانْطَلَقَ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرُوا ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ: «أَلَكُمْ شَاهِدَانِ يَشْهَدَانِ عَلَى قَاتِلِ صَاحِبِكُمْ؟» قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ لَمْ يَكُنْ ثَمَّ أحدٌ من المسلمينَ وإِنما هُوَ يهود وَقد يجترئون عَلَى أَعْظَمَ مِنْ هَذَا قَالَ: «فَاخْتَارُوا مِنْهُمْ خَمْسِينَ فَاسْتَحْلِفُوهُمْ» . فَأَبَوْا فَوَدَاهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ عِنْدِهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3532. राफीअ बिन ख़दीज बयान करते हैं, अंसार का एक आदमी खैबर में क़त्ल हो गया तो उस के वुरसा नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने उस के मुतल्लिक आप से ज़िक्र किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम्हारे पास दो गवाह है जो तुम्हारे साथी के कातिल पर गवाही दें ?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! वहां तो कोई मुसलमान नहीं था और वह तो यहूद है और वह उन से बड़ी चीज़ के इर्तिकाब की जिरात (जुर्रत) कर जाते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन में से पचास आदमी चुन लो और उन से हलफ ले लो”, उन्होंने इनकार किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने तरफ से उस का फिदिया अदा फ़रमाया| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (4524)

بَاب قتل أهل الرِّدَّة والسعاة بِالْفَسَادِ • मुर्तदीन और फसाद फ़ैलाने वालो को क़त्ल करने का

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٥٣٣ - (صَحِيح) عَنْ عِكْرِمَةَ قَالَ: أُتِيَ عَلِيٌّ بِزَنَادِقَةٍ فَأَحْرَقَهُمْ فَبَلَغَ ذَلِكَ ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ: لَوْ كُنْتُ أَنَا لَمْ أُحْرِقْهُمْ لِنَهْيِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُعَذِّبُوا بِعَذَابِ اللَّهِ» وَلَقَتَلْتُهُمْ لِقَوْلِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ بَدَّلَ دِينَهُ فَاقْتُلُوهُ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

3533. इकरिमा बयान करते हैं, अली रदियल्लाहु अन्हु के पास कुछ ज़िन्दिक लाए गए तो उन्होंने उन्हें जिंदा जला दिया, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा को इस बात का पता चला तो उन्होंने ने फ़रमाया: अगर में होता तो मैं उन्हें कभी जिंदा न जलाता क्योंकि रसूलुल्लाह ﷺ से उसकी मुमानियत मौजूद है (के आप ﷺ ने फ़रमाया):

“अल्लाह के अज़ाब के साथ अज़ाब न दो”, की वजह से में उन्हें न जलाता और रसूलुल्लाह ﷺ के फरमान: “जो शख़्स अपना दीन (इस्लाम) बदल ले तो उसे क़त्ल कर दो”, के मुताबिक में उन्हें क़त्ल कर देता| (बुखारी)

رواه البخاری (6922)

٣٥٣٤ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِن النَّارَ لَا يُعَذِّبُ بِهَا إِلَّا اللَّهُ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

3534. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आग का अज़ाब सिर्फ अल्लाह ही देगा”| (बुखारी)

رواه البخاری (6954)

٣٥٣٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «سَيَخْرُجُ قَوْمٌ فِي آخِرِ الزَّمَانِ حُدَّاثُ الْأَسْنَانِ سُفَهَاءُ الْأَحْلَامِ يَقُولُونَ مِنْ خَيْرِ قَوْلِ الْبَرِيَّةِ لَا يُجَاوِزُ إِيمَانُهُمْ حَنَاجِرَهُمْ يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ فَأَيْنَمَا لَقِيتُمُوهُمْ فَاقْتُلُوهُمْ فَإِنَّ فِي قَتْلِهِمْ أَجْرًا لمن قَتلهمْ يَوْم الْقِيَامَة»

3535. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अनकरीब आखिरी ज़माने में एक कौम का जुहूर होगा जो नौ उमर जईफ अल अक्ल होंगे, वह बज़ाहिर निहायत माकूल काम करेंगे, लेकिन उनका ईमान उन के हलक से तजावुज़ नहीं करेगा, वह दीन से इस तरह निकल जाएँगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है, तुम उन्हें जहाँ पाओ वहीँ क़त्ल कर दो क्योंकि उन्हें क़त्ल करने में रोज़ ए कियामत उन के कातिल के लिए अज़र है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (6930) و مسلم (154 / 1066)، (2462)

٣٥٣٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَكُونُ أُمَّتِي فِرْقَتَيْنِ فَيَخْرُجُ مِنْ بَيْنِهِمَا مَارِقَةٌ يَلِي قَتْلَهُمْ أولاهم بِالْحَقِّ» . رَوَاهُ مُسلم

3536. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत दो गिरोहों में मुनकसिम (टुकड़े) हो जाएगी और इन दोनों के बीच से एक खारजी जमाअत रवानुमा होगी, उनका ख़ात्मा वह लोग करेंगे जो हक़ के ज़्यादा करीब होंगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (151 / 1064)، (2459)

٣٥٣٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَرِيرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ: «لَا تَرْجِعُنَّ بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَاب بعض»

3537. जरीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हज्जतुल वदा के मौके पर फ़रमाया: “मेरे बाद एक दूसरे की गरदने काट कर काफ़िर न बन जाना”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7080) و مسلم (118 / 65)، (223)

٣٥٣٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي بَكْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا الْتَقَى الْمُسْلِمَانِ حَمَلَ أَحَدُهُمَا عَلَى أَخِيهِ السِّلَاحَ فَهُمَا فِي جُرُفِ جَهَنَّمَ فَإِذَا قَتَلَ أَحَدُهُمَا صَاحِبَهُ دَخَلَاهَا جَمِيعًا» . وَفِي رِوَايَةٍ عَنْهُ: قَالَ: «إِذَا الْتَقَى الْمُسْلِمَانِ بسيفهما فَالْقَاتِلُ وَالْمَقْتُولُ فِي النَّارِ» قُلْتُ: هَذَا الْقَاتِلُ فَمَا بَالُ الْمَقْتُولِ؟ قَالَ: «إِنَّهُ كَانَ حَرِيصًا عَلَى قَتْلِ صَاحِبِهِ»

3538. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब दो मुसलमान मिले और उनमें से एक अपने भाई पर अस्लिहा तान ले तो वह दोनों जहन्नम के किनारे पर होते हैं, जब उनमें से कोई अपने मुकाबिल को क़त्ल कर देता है तो वह दोनों इकठ्ठे जहन्नम में दाखिल हो जाते हैं”, और उन से एक दूसरी रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब दो मुसलमान अपने तलवारे सोंट कर सामने जाते हैं तो कातिल और मकतुल जहन्नमी है”, मैंने अर्ज़ किया: कातिल तो है लेकिन मकतुल किस वजह से? (के वह मज़लूम होने के बावजूद जहन्नमी है) आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्योंकि वह अपने साथी (मद्दे मुक़ाबिल) को क़त्ल करने पर हरिस था”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6875 الروایة الثانیة) و مسلم (16 / 2888 ، الروایة الاولی ، 14 / 2888، (7252 و 7255) ، الروایة الثانیة)

٣٥٣٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أَنَسٍ قَالَ: قَدِمَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَفَرٌ مِنْ عُكْلٍ فَأَسْلَمُوا فَاجْتَوَوُا الْمَدِينَةَ فَأَمَرَهُمْ أَنْ يَأْتُوا إِبِلَ الصَّدَقَةِ فَيَشْرَبُوا مِنْ أَبْوَالِهَا وَأَلْبَانِهَا فَفَعَلُوا فَصَحُّوا فَارْتَدُّوا وَقَتَلُوا رُعَاتَهَا وَاسْتَاقُوا الْإِبِلَ فَبَعَثَ فِي آثَارِهِمْ فَأُتِيَ بِهِمْ فَقَطَعَ أَيْدِيَهُمْ وَأَرْجُلَهُمْ وَسَمَلَ أَعْيُنَهُمْ ثُمَّ لَمْ يَحْسِمْهُمْ حَتَّى مَاتُوا ". وَفِي رِوَايَةٍ: فَسَمَّرُوا أَعْيُنَهُمْ وَفِي رِوَايَةٍ: أَمَرَ بِمَسَامِيرَ فَأُحْمِيَتْ فَكَحَّلَهُمْ بِهَا وَطَرَحَهُمْ بِالْحَرَّةِ يَسْتَسْقُونَ فَمَا يُسْقَوْنَ حَتَّى مَاتُوا

3539. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उकली के कुछ लोग नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने इस्लाम कबूल कर लिया, मदीना की आबो हवा उन्हें मुवाफिक न आइ तो आप ने उन्हें सदका के ऊटों के पास जाने का हुक्म फ़रमाया ताकि वहां वह उनका दूध और पेशाब पिए, उन्होंने ऐसे किया और वह सेहतियाब हो गए, उस के बाद वह मुरतद हो गए और उन के चरवाहों को क़त्ल कर के ऊंट हांक कर ले गए आप ﷺ ने उन के तआक्कुब में आदमी भेजे तो वह उन्हें पकड़ कर ले आए, आप ने उन के हाथ और पाँव काट दिए और उनकी आंखो में सिलाईयाँ फेर दी गई, फिर उनका खून बहता रहा हत्ता के वह फौत हो गए एक दूसरी रिवायत में है: “उन्होंने उनकी आंखो में सिलाईयाँ फेर दी”, और एक रिवायत में है: “आप ﷺ ने सिलाइयों के मुतल्लिक हुक्म

फ़रमाया तो उन्हें गरम किया गया और उन्हें उनकी आंखो में फेर कर उन्हें धुप में फेंक दिया गया वह पानी तलब करते रहे मगर उन्हें पानी न दिया गया हत्ता के वह फौत हो गए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6803 ، الرواية الاولى ، 1501 ، الثانية ، 3018 ، الثانية) و مسلم (9 / 1671 ، الرواية الاولى ، 10 / 1671، 4353 و 4354) ،الثانية)

بَاب قتل أهل الرِّدَّة والسعاة بِالْفَسَادِ • मुर्तदीन और फसाद फ़ैलाने वालो को क़त्ल करने का

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٥٤٠ - (جيد) عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَحُثُّنَا عَلَى الصَّدَقَةِ وَيَنْهَانَا عَنِ الْمُثْلَةِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

3540. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमें सदका देने पर अमादा किया करते थे और मुसला करने से मना फ़रमाया करते थे| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2667) * قتادة مدلس و عنعن و حديث احمد (5 / 20) يغنى عن هذا الحديث

٣٥٤١ - (جيد) وَرَوَاهُ النَّسَائِيّ عَن أنس

3541. इमाम नसई ने इसे अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائى (7 / 101 ح 4052)

٣٥٤٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ فَانْطَلَقَ لِحَاجَتِهِ فَرَأَيْنَا حُمْرَةً مَعَهَا فَرْخَانِ فَأَخَذْنَا فَرْخَيْهَا فَجَاءَتِ الْحُمْرَةُ فَجَعَلَتْ تَفْرُشُ فَجَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «مَنْ فَجَعَ هَذِهِ بِوَلَدِهَا؟ رُدُّوا وَلَدَهَا إِلَيْهَا» . وَرَأَى قَرْيَةَ نَمْلٍ قَدْ حَرَّقْنَاهَا قَالَ: «مَنْ حَرَّقَ هَذِهِ؟» فَقُلْنَا: نَحْنُ قَالَ: «إِنَّهُ لَا يَنْبَغِي أَنْ يُعَذِّبَ بِالنَّارِ إِلاَّ ربُّ النَّار» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3542. अब्दुल रहमान बिन अब्दुल्लाह अपने बाप से रिवायत करते हैं, हम एक सफ़र मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे, आप कजाए हाजत के लिए तशरीफ़ ले गए तो हमने एक चिड़िया (सुरख रंग की चिड़िया) देखी, उस के साथ उस के दो बच्चे थे, हमने उस के बच्चे पकड़ लिए तो वह फड़फड़ाने लगी, इतने में नबी ﷺ तशरीफ़ लाए और आप

ﷺ ने फ़रमाया: “किसी शख़्स ने इसे, उस के बच्चो की वजह से बे करार कर दिया उस के बच्चे इसे वापस करो”, और आप ने चीटियों का एक ठिकाना देखा जिसे हमने जला दिया था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे किस ने जलाया है?” हमने अर्ज़ किया: हमने, आप ﷺ ने फ़रमाया: “आग का अज़ाब देना सिर्फ आग के रब के लायक है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2675)

٣٥٤٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ وَأَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " سَيَكُونُ فِي أُمَّتِي اخْتِلَافٌ وَفُرْقَةٌ قَوْمٌ يُحسِنونَ القيلَ ويُسيئونَ الفِعلَ يقرؤون الْقُرْآنَ لَا يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ مُروقَ السَّهمِ فِي الرَّمِيَّةِ لَا يَرْجِعُونَ حَتَّى يَرْتَدَّ السَّهْمُ عَلَى فُوقِهِ هُمْ شَرُّ الْخَلْقِ وَالْخَلِيقَةِ طُوبَى لِمَنْ قَتَلَهُمْ وَقَتَلُوهُ يَدْعُونَ إِلَى كِتَابِ اللَّهِ وَلَيْسُوا منَّا فِي شيءٍ مَنْ قاتلَهم كَانَ أَوْلَى بِاللَّهِ [ص:١٠٥ مِنْهُمْ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا سِيمَاهُمْ؟ قَالَ: «التَّحْلِيقُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3543. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु और अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरी उम्मत में अनकरीब इख्तिलाफ व इफ्तिराक होगा, एक गिरोह बाते अच्छी अच्छी लेकिन काम बुरे करेगा, वह कुरान पढेंगे लेकिन वह उन के हलक से नीचे नहीं उतरेगा, वह दीन से इस तरह निकल जाएँगे जिस तरह तीर शिकार से निकल (कर पार हो) जाता है, वह दीन की तरफ नहीं पलटेंगे हत्ता के तीर अपने सुफार (चुटकी जहाँ कमान का तानत तकता है) पर वापस आ जाए, वह तमाम मखलूक से बदतर है, इस शख़्स के लिए खुशखबरी है जो इनको क़त्ल करता है और जिसे वह क़त्ल कर दे, वह (बज़ाहिर) अल्लाह की किताब की तरफ दावत देंगे, लेकिन वह किसी चीज़ मैं भी हम में से नहीं होंगे, जिस ने इनसे किताल किया येवो उन (बाकी उम्मातियों) से अल्लाह के ज़्यादा करीब है”| सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने पूछा अल्लाह के रसूल! उनकी अलामत क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “सर मुंडाना”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4765) * قتادة عنعن

٣٥٤٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَحِلُّ دَمُ امْرِئٍ مُسْلِمٍ يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ إِلَّا بِإِحْدَى ثَلَاثٍ زِنا بعدَ إحْصانٍ فإنَّهُ يُرجَمُ ورجلٌ خرَجَ مُحارِباً للَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّهُ يُقْتَلُ أَوْ يُصْلَبُ أَوْ يُنْفَى مِنَ الْأَرْضِ أَوْ يَقْتُلُ نَفْسًا فَيُقْتَلُ بِهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3544. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो मुसलमान यह गवाही देता हो के अल्लाह के सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, इसे सिर्फ तीन वुजुहात में से किसी एक वजह से क़त्ल करना जाईज़ है: शादी के बाद ज़िना वाले को रजम किया जाएगा, और जो शख़्स अल्लाह और उस के रसूल के खिलाफ जंग करे (यानी डाकू) हो, इसे क़त्ल किया जाएगा या सूली पर चढ़ाया

जाएगा या जिला वतन किया जाएगा, या कोई शख़्स किसी जान को क़त्ल कर दे तो उस के बदले में उसे क़त्ल किया जाएगा"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4353)

٣٥٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ أَبِي لَيْلَى قَالَ: حَدَّثَنَا أَصْحَابُ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُمْ كَانُوا يَسِيرُونَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنَامَ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَانْطَلَقَ بَعْضُهُمْ إِلَى حَبْلٍ مَعَه فَأَخذه فَفَزِعَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَحِلُّ لِمُسْلِمٍ أَنْ يُرَوِّعَ مُسْلِمًا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3545. इब्ने अबी लैला बयान करते हैं, मुहम्मद ﷺ के सहाबा ने हमें हदीस बयान की के वह रात के वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सफ़र कर रहे थे, उनमें से एक आदमी सो गया तो किसी शख़्स ने अपने रस्सी ली और उसकी तरफ गया और इसे रस्सी के साथ बांध दिया तो वह (सोने वाला) शख़्स घबरा गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "किसी मुसलमान के लिए यह लायक नहीं के वह किसी मुसलमान को खौफ ज़दाह करे"| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (5004)

٣٥٤٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَخَذَ أَرْضًا بِجِزْيَتِهَا فَقَدِ اسْتَقَالَ هِجْرَتَهُ وَمَنْ نَزَعَ صَغَارَ كَافِرٍ مِنْ عُنُقِهِ فَجَعَلَهُ فِي عُنُقِهِ فَقَدْ وَلَّى الْإِسلامَ ظهرَه» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3546. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिस शख़्स ने खराज वाली ज़मीन खरीद ली तो उस ने अपने हिजरत (इज्जत) ख़तम कर ली और जिस ने किसी काफ़िर की गर्दन से ज़िल्लत उतार कर अपने गर्दन में दाल ली तो उस ने इस्लाम को पसे पुश्त डाल दीया"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3082) * عمارة : مجهول و سنان : مستور

٣٥٤٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَرِيَّةً إِلَى خَثْعَمَ فَاعْتَصَمَ نَاسٌ مِنْهُمْ بِالسُّجُودِ فَأَسْرَعَ فِيهِمُ الْقَتْلَ فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَمَرَ لَهُمْ بِنِصْفِ الْعَقْلِ وَقَالَ: «أَنَا بَرِيءٌ مِنْ كُلِّ مُسْلِمٍ مُقِيمٍ بَيْنَ أَظْهُرِ الْمُشْرِكِينَ» قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ لِمَ؟ قَالَ: «لَا تَتَرَاءَى نَارَاهُمَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

3547. जरीर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने (यमन के क़बीले) खसअम की तरफ एक लश्कर रवाना किया तो उनमें से कुछ लोग बचने के लिए नमाज़ पढ़ने लगे, लेकिन उन्हें तेज़ी से क़त्ल किया गया, नबी ﷺ को उसकी खबर पहुंची तो आप ﷺ ने इन के लिए आधी दियत का हुक्म फ़रमाया और फ़रमाया: "मैं मुशरिको के दरमियान रहने वाले तमाम मुसलमानों (के खून) से बरी उल ज़िम्मा हूँ", उन्होंने अर्ज़

किया, अल्लाह के रसूल! किस लिए? आप ﷺ ने फ़रमाया: “(वो कुफ्फार इसे इस क़दर दूर रहे के) उनकी आग नज़र न आए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد 2645) * فيه ابو معاوية الضرير : مدلس و عنعن و للحديث طرق ، ضعيفة كلها ولم يصب من صححه

٣٥٤٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْإِيمَانُ قَيَّدَ الْفَتْكَ لَا يفتِكُ مُؤمنٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3548. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ईमान अचानक क़त्ल करने से मना करता है मोमिन अचानक (मुत्तिला किए बगैर) क़त्ल नहीं करता”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (2769) [وله شواهد]

٣٥٤٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَرِيرٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا أَبَقَ الْعَبْدُ إِلَى الشِّرْكِ فقد حلَّ دَمه» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3549. जरीर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब गुलाम मुशरिकीन के इलाके की तरफ फरार हो जाए तो उस का खून हलाल हो जाता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4360) * ابو اسحاق عنعن و حديث مسلم (70) يغنى عنه

٣٥٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ يَهُودِيَّةً كَانَتْ تَشْتِمُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَقَعُ فِيهِ فَخَنَقَهَا رَجُلٌ حَتَّى مَاتَتْ فَأَبْطَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَمَهَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3550. अली रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं की एक यहूदी औरत नबी ﷺ को बुरा भला कहा करती थी और आप की मुजम्मत किया करती थी, एक आदमी ने उसका गला दबा दिया चुनांचे वह मर गई तो नबी ﷺ ने उस का खून राइगा करार दे दिया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4362) * مغيرة بن مقسم مدلس و عنعن ، و اما جرير فهو ابن عبد الحميد الضبى : ثقه امام

٣٥٥١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جُنْدُبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «حَدُّ السَّاحِرِ ضَرْبُهُ بِالسَّيْفِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3551. जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जादूगर की हद (यानी सज़ा) तलवार के साथ क़त्ल करना है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1460) * قال البیھقی (8 / 136) :’’ اسماعیل بن مسلم المکی : ضعیف‘‘

بَاب قتل أهل الرِّدَّة والسعاة بِالْفَسَادِ — मुर्तदीन और फसाद फ़ैलाने वालो को क़त्ल करने का

الْفَصْلُ الثَّانِي — दूसरी फस्ल

٣٥٥٢ - (لم تتمّ دراسته) عَن أُسَامَةَ بْنِ شَرِيكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيُّمَا رَجُلٍ خَرَجَ يُفَرِّقُ بَيْنَ أُمَّتِي فَاضْرِبُوا عُنُقَهُ» . رَوَاهُ النَّسَائِيُّ

3552. उसामा बिन शरीक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स (इमाम के खिलाफ) खुरुज करे और मेरी उम्मत के दरमियान तफरीक डाले तो उसकी गर्दन उड़ा दो”| (सहीह)

صحیح ، رواه النسائی (7 / 93 ح 4028)

٣٥٥٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ شَرِيكِ بْنِ شِهَابٍ قَالَ: كُنْتُ أَتَمَنَّى أَنْ أَلْقَى رَجُلًا مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَسْأَلُهُ عَنِ الْخَوَارِجِ فَلَقِيتُ أَبَا بَرْزَةَ فِي يَوْمِ عِيدٍ فِي نَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِهِ فَقُلْتُ لَهُ: هَلْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَذْكُرُ الْخَوَارِجَ؟ قَالَ: نعمْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأُذُنَيَّ وَرَأَيْتُهُ بِعَيْنَيَّ: أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَالٍ فَقَسَمَهُ فَأَعْطَى مَنْ عَنْ يَمِينِهِ وَمَنْ عَنْ شِمَالِهِ وَلَمْ يُعْطِ مَنْ وَرَاءَهُ شَيْئًا. فَقَامَ رَجُلٌ مِنْ وَرَائِهِ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ مَا عَدَلْتَ فِي الْقِسْمَةِ رَجُلٌ أَسْوَدُ مَطْمُومُ الشَّعْرِ عَلَيْهِ ثَوْبَانِ أَبْيَضَانِ فَغَضِبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غَضَبًا شَدِيدًا وَقَالَ: «وَاللَّهِ لَا تَجِدُونَ بَعْدِي رَجُلًا هُوَ أَعْدَلُ مِنِّي» ثُمَّ قَالَ: «يخرُجُ فِي آخرِ الزَّمانِ قومٌ كأنَّ هَذَا مِنْهُم يقرؤون الْقُرْآنَ لَا يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ يَمْرُقُونَ مِنَ الْإِسْلَامِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ [ص:١٠٥ مِنَ الرَّمِيَّةِ سِيمَاهُمُ التَّحْلِيقُ لَا يَزَالُونَ يَخْرُجُونَ حَتَّى يَخْرُجَ آخِرُهُمْ مَعَ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ فَإِذَا لَقِيتُمُوهُمْ هُمْ شَرُّ الْخَلْقِ والخليقة» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

3553. शरीक बिन शिहाब बयान करते हैं, मेरी तमन्ना थी की मैं नबी ﷺ के किसी सहाबी से मिलु और उन से ख़वारिज के मुतल्लिक दरियाफ्त करू, मैं ईद के रोज़ अबू बुरैज़ा रदियल्लाहु अन्हु से उन के साथियो की मौजूदगी में मिला तो मैंने उन से कहा: क्या आप ने रसूलुल्लाह ﷺ को ख़वारिज का ज़िक्र करते हुए सुना है? उन्होंने अर्ज़ किया, हाँ मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के फर्मुदात को अपने कानों से सुना है और आप को अपने आंखो से देखा के रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में कुछ माल पेश किया गया तो आप ने इसे तकसीम फ़रमाया और अपने दाएँ बाएँ वालो को अता किया, लेकिन आप ने अपनी पिछली जानिब वालो को कुछ न दिया तो आप की पिछली जानिब से एक आदमी खड़ा हुआ और उस ने कहा मुहम्मद! ﷺ आप ने तकसीम में इंसाफ नहीं किया, वह मुंडे हुए बालो

वाला सियाह फाम शख़्स था, उस पर दो सफ़ेद कपड़े थे, (इस पर) रसूलुल्लाह ﷺ सख्त नाराज़ हुए और फ़रमाया: “अल्लाह की क़सम! मेरे बाद तुम कोई ऐसा आदमी नहीं पाओगे जो मुझ से ज़्यादा अदल करने वाला हो”, फिर फ़रमाया: “आखरी ज़माने में एक कौम का जुहूर होगा, गोया यह इन्ही में से है, वह कुरान पढ़ते होंगे मगर वह उन के हलक से नीचे नहीं उतरेगा, वह इस्लाम से इस तरह निकल जाएँगे जिस तरह तीर शिकार से निकल (कर पार हो) जाता है, सर मुंडाना उनकी अलामत होगी, वह मुसलसल ज़ाहिर होते रहेंगे हत्ता के उनका आखिरी फर्द मसीह दज्जाल के साथ ज़ाहिर होगा, जब तुम उन से मिलो तो (जान लो के) वह तमाम मखलूक से बदतरीन है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائی (7 / 119121 ح 4108)

٣٥٥٤ - (حسن) وَعَن أبي غالبٍ رأى أَبُو أُمامةَ رؤوساً مَنْصُوبَةً عَلَى دَرَجِ دِمَشْقَ فَقَالَ أَبُو أُمَامَةَ: «كِلَابُ النَّارِ شَرُّ قَتْلَى تَحْتَ أَدِيمِ السَّمَاءِ خَيْرُ قَتْلَى مَنْ قَتَلُوهُ» ثُمَّ قَرَأَ (يَوْمَ تبيَضُّ وُجوهٌ وتَسوَدُّ وُجوهٌ)»» الْآيَةَ قِيلَ لِأَبِي أُمَامَةَ: أَنْتَ سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: لَوْ لَمْ أَسْمَعْهُ إِلَّا مَرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا حَتَّى عَدَّ سَبْعًا مَا حَدَّثْتُكُمُوهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ

3554. अबू ग़ालिब से रिवायत है, अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु ने राह दमिश्क पर कुछ सर नसब किए हुए देखा तो अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: (ये) जहन्नम के कुत्ते हैं, आसमान तले यह बदतरीन मकतुल है, और उन्होंने जिन्हें क़त्ल किया है वह बेहतरीन मकतुल है, फिर उन्होंने यह आयत तिलावत फरमाई: “इस रोज़ बाज़ चेहरे सफ़ेद होंगे और बाज़ चेहरे सियाह होंगे”, अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु से पूछा गया, आप ने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना है?” उन्होंने ने फ़रमाया: अगर मैंने इसे (बार बार) सात मर्तबा तक न सुना होता तो मैं उसे तुम्हें बयान न करता| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3000) و ابن ماجه (176) * و للحديث شواهد وهوبها صحيح

كتاب الْحُدُود • हुदूद का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٥٥٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَزَيْدِ بْنِ خَالِدٍ: أَنَّ رَجُلَيْنِ اخْتَصَمَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ أَحَدُهُمَا: اقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللَّهِ وَقَالَ الْآخَرُ: أَجَلْ يَا رَسُولَ اللَّهِ فاقْضِ بَيْنَنا بكتابِ الله وائذَنْ لِي أَنْ أَتَكَلَّمَ قَالَ: «تَكَلَّمْ» قَالَ: إِنَّ ابْنِي كَانَ عَسِيفًا عَلَى هَذَا فَزَنَى بِامْرَأَتِهِ فَأَخْبرُونِي أَنَّ على ابْني الرَّجْم فاقتديت مِنْهُ بِمِائَةِ شَاةٍ وَبِجَارِيَةٍ لِي ثُمَّ إِنِّي سَأَلْتُ أَهْلَ الْعِلْمِ فَأَخْبَرُونِي أَنَّ عَلَى ابْنِي جَلْدَ مِائَةٍ وَتَغْرِيبَ عَامٍ وَإِنَّمَا الرَّجْمُ عَلَى امْرَأَتِهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَمَا وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَأَقْضِيَنَّ بَيْنَكُمَا بِكِتَابِ اللَّهِ أَمَّا غَنَمُكَ وَجَارِيَتُكَ فَرَدٌّ عَلَيْكَ وَأَمَّا ابْنُكَ فَعَلَيْهِ جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيبُ عَامٍ وَأَمَّا أَنْتَ يَا أُنَيْسُ فَاغْدُ إِلَى امْرَأَةِ هَذَا فَإِن اعْترفت فارجمها» فَاعْترفت فرجمها

3555. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु और ज़ैद बिन खालिद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के दो आदमी मुकदमा लेकर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो उनमें से एक ने अर्ज़ किया, हमारे दरमियान अल्लाह की किताब के मुताबिक फैसला फरमाइए, और दूसरे ने अर्ज़ किया, जी हाँ! अल्लाह के रसूल! हमारे दरमियान अल्लाह की किताब के मुताबिक फैसला फरमाइए, और मुझे बात करने की इजाज़त फरमाइए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बात करो”, उस ने अर्ज़ किया, मेरा बेटा इस शख़्स के यहाँ मज़दूर था, उस ने उसकी अहलिया के साथ ज़िना कर लिया तो उन्होंने (यानी बाज़ लोगो) ने मुझे बताया की मेरे बेटे पर रजम (की सज़ा लागू होती) है, लेकिन मैंने उस के फिदिया में सौ बकरिया और अपने एक लौंडी दे दी, फिर मैंने अहले इल्म से मसअला दरियाफ्त किया तो उन्होंने मुझे बताया की मेरे बेटे पर सौ कोड़े और साल की ज़िला वतनी (की सज़ा) है, और उसकी अहलिया पर रजम है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! मैं तुम्हारे दरमियान अल्लाह की किताब के मुताबिक फैसला करूँगा, रही तुम्हारी बकरिया और तुम्हारी लौंडी वह तुम्हें वापस मिल जाएगी, रहा तुम्हारा बेटा तो उस पर सौ कोड़े और साल की जिला वतनी है और उनैस तुम इस औरत के पास जाओ अगर वह एतराफे जुर्म कर ले तो इसे रजम कर दो”, उस ने एतराफ़ कर लिया तो उन्होंने इसे रजम कर दिया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6633) و مسلم (25 / 16971698)، (4435)

٣٥٥٦ - (صَحِيح) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْمُرُ فِيمَنْ زَنَى وَلَمْ يُحْصَنْ جَلْدَ مِائَةٍ وَتَغْرِيبَ عَامٍ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3556. ज़ैद बिन खालिद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ कुँवारे ज़ानि के मुतल्लिक सौ कोड़े और साल की ज़िला वतनी का हुक्म फरमाते हुए सुना| (बुखारी)

رواه البخاری (6831)

٣٥٥٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: إن الله بعث مُحَمَّدًا [ص:١٠٥ وَأَنْزَلَ عَلَيْهِ الْكِتَابَ فَكَانَ مِمَّا أَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى آيَةُ الرَّجْمِ رَجَمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَرَجَمْنَا بَعْدَهُ وَالرَّجْمُ فِي كِتَابِ اللَّهِ حَقٌّ عَلَى مَنْ زَنَى إِذَا أُحْصِنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ إِذَا قَامَتِ الْبَيِّنَةُ أَوْ كانَ الحَبَلُ أَو الِاعْتِرَاف

3557. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि अल्लाह ने मुहम्मद ﷺ को हक़ के साथ मबउस फ़रमाया, और आप पर किताब नाज़िल फरमाई, अल्लाह तआला ने जो नाज़िल फ़रमाया, उस में आयत रजम भी थी, रसूलुल्लाह ﷺ ने रजम किया और आप के बाद हमने भी रजम किया, और जब शादी शुदा मर्द और औरत ज़िना करे तो उसे रजम करना अल्लाह की किताब से साबित है, बशर्तेकी गवाही साबित हो जाए या हमल वाज़ेह हो जाए या एतराफ़ जुर्म हो जाए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6829) و مسلم (15 / 1691)، (4418)

٣٥٥٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " خُذُوا عَنِّي خُذُوا عَنِّي قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا: الْبِكْرُ بالبكر جلد مائَة ووتغريب عَام وَالثَّيِّب بِالثَّيِّبِ جلد مائَة وَالرَّجم "

3558. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “(हद्द ए ज़िना के मुत्तल्लिक) मुझ से अहकाम की बाबत मालूमात ले लो, मुझ से अहकाम बाबत मालूमात ले लो, अल्लाह तआला ने इन के लिए (हद्द) मुकर्रर कर दी, कुँवारा, कुंवारी के साथ ज़िना करे तो उसकी हद सौ कोड़े और साल की ज़िला वतनी है, और शादी शुदा, शादी शुदा से ज़िना करे तो उसकी सज़ा सौ कोड़े और रजम है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (12 / 1690)، (4414)

٣٥٥٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ: أَن الْيَهُود جاؤوا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرُوا لَهُ أَنَّ رَجُلًا مِنْهُمْ وَامْرَأَةً زَنَيَا فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا تَجِدُونَ فِي التَّوْرَاةِ فِي شَأْنِ الرَّجْمِ؟» قَالُوا: نَفْضَحُهُمْ وَيُجْلَدُونَ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ: كَذَبْتُمْ إِنَّ فِيهَا الرَّجْمَ فَأْتُوا بِالتَّوْرَاةِ فَنَشَرُوهَا فَوَضَعَ أَحَدُهُمْ يَدَهُ عَلَى آيَةِ الرَّجْمِ فَقَرَأَ مَا قَبْلَهَا وَمَا بَعْدَهَا فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ سَلَامٍ: ارْفَعْ يَدَكَ فَرَفَعَ فإذا فِيهَا آيةُ الرَّجم. فَقَالُوا: صدقَ يَا محمَّدُ فِيهَا آيَة الرَّجْم. فَأمر بهما النَّبِي صلى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرُجِمَا. وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ: ارْفَعْ يَدَكَ فَرَفَعَ فَإِذَا فِيهَا آيَةُ الرَّجْمِ تَلُوحُ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّ فِيهَا آيَةَ الرَّجْمِ وَلكِنَّا نَتَكَاتَمُهُ بَيْنَنَا فَأَمَرَ بِهِمَا فَرُجِمَا

3559. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के यहूद, रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने आप को बताया की उन के एक मर्द और एक औरत ने ज़िना किया है, रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “तुम रजम के मुतल्लिक तौरात में किया पाते हो?” उन्होंने अर्ज़ किया: हम उन्हें ज़लील व रुसवा करते हैं और उन्हें कोड़े मारे जाते हैं, अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: तुमने झूठ कहा है, उसमे तो रजम (का हुक्म) है, वह तौरात लाए और इसे खोली तो उनमें से एक ने आयते रजम पर अपना हाथ

रख दीया और उस से पहले और उस के बाद वाला हिस्सा पढ़ दिया, अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अपना हाथ उठाओ, उस ने (हाथ) उठाया तो उस में आयत रजम थी, उन्होंने कहा: मुहम्मद ﷺ ! इस (अब्दुल्लाह बिन सलाम (र)) ने सच कहा, उस में आयत रजम है, नबी ﷺ ने इन दोनों के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया तो उन्हें रजम कर दिया गया, दूसरी रिवायत में है: उन्होंने कहा: अपना हाथ उठाओ, उस ने उठा लिया तो उस में आयते रजम खूब वाज़ेह नज़र आ रही थी, उस ने कहा मुहम्मद ﷺ उस में आयत रजम है लेकिन हम इसे आपस में छुपाते है, आप ﷺ ने उन के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया तो उन्हें रजम किया गया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6841 و الرواية الثانية : 7543) و مسلم (22 / 1699)، (4437)

٣٥٦٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: أَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ فَنَادَاهُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي زَنَيْتُ فَأَعْرَضَ عَنْهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَنَحَّى لِشِقِّ وَجْهِهِ الَّذِي أَعْرَضَ قِبَلَهُ فَقَالَ: إِنِّي زَنَيْتُ فَأَعْرَضَ عَنْهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا شَهِدَ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ دَعَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «أَبِكَ جُنُونٌ؟» قَالَ: لَا فَقَالَ: «أُحْصِنْتَ؟» قَالَ: نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «اذْهَبُوا بِهِ فَارْجُمُوهُ» قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: فَأَخْبَرَنِي مَنْ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ [ص:١٠٥ عَبْدِ اللَّهِ يَقُولُ: فَرَجَمْنَاهُ بِالْمَدِينَةِ فَلَمَّا أَذْلَقَتْهُ الْحِجَارَةُ هَرَبَ حَتَّى أَدْرَكْنَاهُ بِالْحَرَّةِ فرجمناه حَتَّى مَاتَ»» وَفِي رِوَايَةٍ لِلْبُخَارِيِّ: عَنْ جَابِرٍ بَعْدَ قَوْلِهِ: قَالَ: نَعَمْ فَأَمَرَ بِهِ فَرُجِمَ بِالْمُصَلَّى فَلَمَّا أَذْلَقَتْهُ الْحِجَارَةُ فَرَّ فَأُدْرِكَ فَرُجِمَ حَتَّى مَاتَ. فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خيرا وَصلى عَلَيْهِ

3560. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ मस्जिद में तशरीफ़ फरमा थे की एक आदमी आप ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने आप ﷺ को आवाज़ देते हुए कहा: अल्लाह के रसूल! मैंने ज़िना किया है, नबी ﷺ ने उस से मुंह फेरा लिया, तो उस ने दूसरी तरफ से हो कर फिर अर्ज़ किया, मैंने ज़िना किया है, नबी ﷺ ने फिर उस से मुंह फेर लिया, जब उस ने चार बार गवाही दी तो नबी ﷺ ने इसे बुलाकर फ़रमाया: “क्या तुम दीवाने हो?” उस ने अर्ज़ किया, नहीं! आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम शादी शुदा हो?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! अल्लाह के रसूल! आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे ले जाओ और रजम कर दो”, इब्ने शैबा ने कहा मुझे इस शख़्स ने बताया जिस ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु को बयान करते हुए सुना के हमने इस शख़्स को मदीना में रजम किया, जब इसे पत्थर लगे तो वह भाग उठा हत्ता के हमने मदीना के दो पहाड़ो के दरमियान पथरिले इलाके में उसे पा लिया तो हमने इसे रजम किया हत्ता कि वह फौत हो गया| और जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से मरवी बुखारी की रिवायत में, “उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ”, के बाद है: आप ﷺ ने उस के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया तो उसे जनाज़ा गाह में रजम किया गया, जब इसे पत्थर लगे तो वह भाग उठा, इसे पकड़ लिया गया और इसे रजम किया गया हत्ता के वह फौत हो गया, नबी ﷺ ने उस के मुतल्लिक कलिमाए खैर फ़रमाया और उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6825 و الرواية : 6820) و مسلم (16 / 1692)، (4420)

٣٥٦١ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: لَمَّا أَتَى مَاعِزُ بن مَالك النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَهُ: «لَعَلَّكَ قَبَّلْتَ أَوْ غَمَزْتَ

أَوْ نَظَرْتَ؟» قَالَ: لَا يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ: «أَنِكْتَهَا؟» لَا يُكَنِّي قَالَ: نَعَمْ فَعِنْدَ ذَلِكَ أَمر رجمه. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3561. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब माज़ बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “शायद के तुमने बोसा लिया हो, या हाथ लगाया हो या देखा हो”, उस ने अर्ज़ किया, नहीं, अल्लाह के रसूल! आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने उस से जिमाअ किया ?” आप ने किनाया से बात नहीं की, उस ने अर्ज़ किया: जी हाँ! तब आप ﷺ ने इसे रजम करने का हुक्म फ़रमाया| (बुखारी)

رواه البخاری (6824)

٣٥٦٢ - (صَحِيح) وَعَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ: جَاءَ مَاعِزُ بْنُ مَالِكٍ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ طَهِّرْنِي فَقَالَ: «وَيْحَكَ ارْجِعْ فَاسْتَغْفر الله وَتب إِلَيْهِ» . فَقَالَ: فَرَجَعَ غَيْرَ بَعِيدٍ ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ طَهِّرْنِي. فَقَالَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِثْلَ ذَلِكَ حَتَّى إِذَا كَانَتِ الرَّابِعَة قَالَه لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فِيمَ أُطَهِّرُكَ؟» قَالَ: مِنَ الزِّنَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَبِهِ جُنُونٌ؟» فَأُخْبِرَ أَنَّهُ لَيْسَ بِمَجْنُونٍ فَقَالَ: «أَشَرِبَ خَمْرًا؟» فَقَامَ رَجُلٌ فَاسْتَنْكَهَهُ فَلَمْ يَجِدْ مِنْهُ رِيحَ خَمْرٍ فَقَالَ: «أَزَنَيْتَ؟» قَالَ: نَعَمْ فَأَمَرَ بِهِ فَرُجِمَ فَلَبِثُوا يَوْمَيْنِ أَوْ ثَلَاثَةً ثُمَّ جَاءَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «اسْتَغْفِرُوا لِمَاعِزِ بْنِ مَالِكٍ لَقَدْ تَابَ تَوْبَةً لَوْ قُسِّمَتْ بَيْنَ أُمَّةٍ لَوَسِعَتْهُمْ» ثُمَّ جَاءَتْهُ امْرَأَةٌ مِنْ غَامِدٍ مِنَ الْأَزْدِ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ طَهِّرْنِي فَقَالَ: «وَيَحَكِ ارْجِعِي فَاسْتَغْفِرِي [ص:١٠٥ اللَّهَ وَتُوبِي إِلَيْهِ» فَقَالَتْ: تُرِيدُ أَنْ تَرْدُدَنِي كَمَا رَدَدْتَ مَاعِزَ بْنَ مَالِكٍ: إِنَّهَا حُبْلَى مِنَ الزِّنَا فَقَالَ: «أَنْتِ؟» قَالَتْ: نَعَمْ قَالَ لَهَا: «حَتَّى تَضَعِي مَا فِي بَطْنِكِ» قَالَ: فَكَفَلَهَا رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ حَتَّى وَضَعَتْ فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: قَدْ وَضَعَتِ الغامديَّةُ فَقَالَ: «إِذاً لَا نرجُمها وندعُ وَلَدَهَا صَغِيرًا لَيْسَ لَهُ مَنْ يُرْضِعُهُ» فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ فَقَالَ: إِلَيَّ رَضَاعُهُ يَا نَبِيَّ اللَّهِ قَالَ: فَرَجَمَهَا. وَفِي رِوَايَةٍ: أَنَّهُ قَالَ لَهَا: «اذْهَبِي حَتَّى تَلِدِي» فَلَمَّا وَلَدَتْ قَالَ: «اذْهَبِي فَأَرْضِعِيهِ حَتَّى تَفْطِمِيهِ» فَلَمَّا فَطَمَتْهُ أَتَتْهُ بِالصَّبِيِّ فِي يَدِهِ كِسْرَةُ خُبْزٍ فَقَالَتْ: هَذَا يَا نَبِيَّ اللَّهِ قَدْ فَطَمْتُهُ وَقَدْ أَكَلَ الطَّعَامَ فَدَفَعَ الصَّبِيَّ إِلَى رَجُلٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ثُمَّ أَمَرَ بِهَا فَحُفِرَ لَهَا إِلَى صَدْرِهَا وَأَمَرَ النَّاسَ فَرَجَمُوهَا فَيُقْبِلُ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ بِحَجْرٍ فَرَمَى رَأْسَهَا فَتَنَضَّحَ الدَّمُ عَلَى وَجْهِ خَالِدٍ فَسَبَّهَا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «مهلا يَا خَالِد فو الَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَقَدْ تَابَتْ تَوْبَةً لَوْ تَابَهَا صَاحِبُ مَكْسٍ لَغُفِرَ لَهُ» ثُمَّ أَمَرَ بِهَا فصلى عَلَيْهَا ودفنت. رَوَاهُ مُسلم

3562. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, माज़ बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे पाक कर दे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुझ पर अफ़सोस है, वापस जाओ और अल्लाह से मगफिरत तलब करो और उस के हुज़ूर तौबा करो”, रावी बयान करते हैं, वह थोड़ी देर बाद वापस आया और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे पाक कर दे, नबी ﷺ ने फिर इसी तरह फ़रमाया हत्ता कि जब उस ने चोथी मर्तबा वही जुमला कहा तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: “मैं किसी चीज़ से तुम्हें पाक कर दू ?” उस ने अर्ज़ किया, ज़िना (के गुनाह) से रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या उसे जूनून है?” आप को बताया गया के इसे जूनून नहीं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या उस ने शराब पि है?” एक आदमी खड़ा हुआ और उस ने उस के मुंह से शराब की बू सूंघी तो उस ने उस से शराब की बू न पाई फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम

ने ज़िना किया है?" उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने उस के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया तो उसे रजम किया गया, उस के बाद सहाबा दो या तीन दिन (इस मुआमला में) ख़ामोश रहे फिर रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए और फ़रमाया: "माज़ बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु के बारे में मगफिरत तलब करो उस ने ऐसी तौबा की है के अगर इसे एक जमाअत के दरमियान तकसीम कर दिया जाए तो वह इन के लिए काफी हो जाए", फिर कबिले गामिदी की शाख अज़दी से एक औरत आइ तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे पाक कर दे, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुझ पर अफ़सोस है, चली जाओ, अल्लाह से मगफिरत तलब करो और अल्लाह के हुज़ूर तौबा करो", उस ने अर्ज़ किया: आप मुझे वैसे ही वापस करना चाहते है, जैसे आप ने माज़ बिन मालिक को वापस कर दिया था, मैं तो ज़िना से हामिला हो चुकी हूँ, आप ﷺ ने पूछा के क्या: तू (हामिला) है?" उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने इसे फ़रमाया: "वज़ा हमल तक सब्र कर", रावी बयान करते हैं, अंसार में से एक आदमी ने उसकी किफ़ालत की, हत्ता के उस ने बच्चे को जन्म दिया तो वह (अंसारी) नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने अर्ज़ किया, गामिदी ने बच्चे को जन्म दे दिया है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तब हम इसे रजम नहीं करेंगे, और हम उस के छोटे से बच्चे को छोड़ दे जबकि उसकी रिज़ाअत का इंतेज़ाम करने वाला भी कोई नहीं ?" फिर अंसार में से एक आदमी खड़ा हुआ और उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! उसकी रिज़ाअत मेरे ज़िम्मा है, रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने इसे रजम किया, एक दूसरी रिवायत में है की आप ﷺ ने इसे फ़रमाया: "तुम जाओ हत्ता कि तुम बच्चे को जन्म दो", जब उस ने बच्चे को जन्म दिया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "चली जाओ और इसे दूध छुड़ाने की मुद्दत तक इसे दूध पिलाओ", जब उस ने उस का दूध छुड़ाया तो वह बच्चे को लेकर आप की खिदमत में हाज़िर हुई और बच्चे के हाथ में रोटी का टुकड़ा था, उस ने अर्ज़ किया: अल्लाह के नबी! यह देखे मैंने उस का दूध छुड़ा दिया है और यह खाना खाने लगा है, आप ﷺ ने बच्चा किसी मुसलमान शख़्स के हवाले किया, फिर उस के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया तो उस के सीने के बराबर घड़ा खोदा गया, और आप ने लोगों को हुक्म फ़रमाया तो उन्होंने इसे रजम किया, खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु अन्हु एक पत्थर लेकर आए और उस के सर पर मारा जिस से खून का छितां उन के चेहरे पर पड़ा तो उन्होंने इसे बुरा भुला कहा, जिस पर नबी ﷺ ने फ़रमाया: "खालिद! ठहरो, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! उस ने ऐसी तौबा की है, के अगर महसूल लेने वाला ऐसी तौबा करे तो उसकी भी मगफिरत हो जाए", फिर आप ﷺ ने उस के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया और उसकी नमाज़े जनाज़ा खुद पढ़ाई और इसे दफन कर दिया गया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (22 / 1695 و الرواية الثانية 33 / 1695)، (4432)

٣٥٦٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِذَا زَنَتْ أَمَةُ أَحَدِكُمْ فَتَبَيَّنَ زِنَاهَا فَلْيَجْلِدْهَا الحدَّ وَلَا يُثَرِّبْ عَلَيْهَا ثمَّ إِنْ زنَتْ فلْيجلدْها الحدَّ وَلَا يُثَرِّبْ ثُمَّ إِنْ زَنَتِ الثَّالِثَةَ فَتَبَيَّنَ زِنَاهَا فَلْيَبِعْهَا ولوْ بحبْلٍ منْ شعرٍ»

3563. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जब तुम में से किसी की लौंडी ज़िना करे और उस का ज़िना करना वाज़ेह हो जाए तो वह उस पर हद काइम करे और इसे आर न दिलाए, फिर अगर वह ज़िना करे तो वह उस पर हद काइम करे और इसे आर न दिलाए, फिर अगर वह तीसरी मर्तबा

ज़िना करे तो वह इसे बेच दे ख्वाह बालो की रस्सी के अवज़ बेचना पड़े"। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2234) و مسلم (30 / 1703)، (4445)

٣٥٦٤ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَقِيمُوا عَلَى [ص:١٠٦] أَرِقَّائِكُمُ الْحَدَّ مَنْ أَحْصِنَ مِنْهُمْ وَمَنْ لَمْ يُحْصَنْ فَإِنَّ أَمَةً لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَنَتْ فَأَمَرَنِي أَنْ أَجْلِدَهَا فَإِذَا هِيَ حَدِيثُ عَهْدٍ بِنِفَاسٍ فَخَشِيتُ إِنْ أَنَا جَلَدْتُهَا أَنْ أَقْتُلَهَا فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «أَحْسَنْتَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ. وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ: قَالَ: «دَعْهَا حَتَّى يَنْقَطِعَ دَمُهَا ثُمَّ أَقِمْ عَلَيْهَا الْحَدَّ وَأَقِيمُوا الْحُدُودَ عَلَى مَا مَلَكَتْ أَيْمَانكُم»

3564. अली रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: लोगो! अपने गुलामो पर हद काइम करो, ख्वाह वह शादी शुदा हो या गैर शादी शुदा, क्योंकि रसूलुल्लाह ﷺ की एक लौंडी ने ज़िना किया तो आप ﷺ ने मुझे हुक्म फ़रमाया के में उसे कोड़े मारु, वह जच्चिकी (Maternity) के इब्तिदाई अय्याम में थी मुझे अंदेशा हुआ की अगर मैंने इसे कोड़े मारा तो में उसे क़त्ल करूँगा, मैंने नबी ﷺ से इस का ज़िक्र किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुमने अच्छा किया"। और अबू दावुद की रिवायत में है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "इसे छोड़ दो हत्ता के उस का खून बंद हो जाए, फिर उस पर हद काइम करो और अपने गुलामो पर हुदूद काइम किया करो"। (मुस्लिम)

رواہ مسلم (34 / 1705) و ابوداؤد (4473)، (4450)

كتاب الْحُدُود • हुदूद का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٥٦٥ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: جَاءَ مَاعِزٌ الْأَسْلَمِيُّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: إِنَّه قدْ زنى فأعرضَ عَنهُ ثمَّ جَاءَ مِنْ شِقِّهِ الْآخَرِ فَقَالَ: إِنَّهُ قَدْ زنى فَأَعْرض عَنهُ ثمَّ جَاءَ من شقَّه الْآخَرِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهُ قَدْ زنى فَأَمَرَ بِهِ فِي الرَّابِعَةِ فَأُخْرِجَ إِلَى الْحَرَّةِ فَرُجِم بِالْحِجَارَةِ فَلَمَّا وَجَدَ مَسَّ الْحِجَارَةِ فَرَّ يَشْتَدُّ حَتَّى مَرَّ بِرَجُلٍ مَعَهُ لَحْيُ جَمَلٍ فَضَرَبَهُ بِهِ وَضَرَبَهُ النَّاسُ حَتَّى مَاتَ. فَذَكَرُوا ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنه فرحين وَجَدَ مَسَّ الْحِجَارَةِ وَمَسَّ الْمَوْتِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلَّا تَرَكْتُمُوهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَفِي رِوَايَةٍ: «هَلَّا تَرَكْتُمُوهُ لَعَلَّه أَن يَتُوب الله عَلَيْهِ»

3565. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, माज़ असलमी रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने अर्ज़ किया के उस ने ज़िना किया है, आप ने उस से एअराज़ फ़रमाया, फिर वह दूसरी तरफ से आया और अर्ज़ किया, के उस ने ज़िना किया है, आप ने फिर उस से एअराज़ फ़रमाया तो वह दूसरी जानिब से आ गया और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! उस ने ज़िना किया है, चोथी मर्तबा आप ﷺ ने उस के

मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया: और इसे हर्रह (मदीना के दो पहाड़ो के दरमियान पथरीली जगह) की तरफ ले जाया गया वहां इसे पथ्थरो से रजम कर दिया गया, जब उस ने पत्थर लगने की तकलीफ महसूस की तो वह तेज़ी से भाग खड़ा हुआ हत्ता के वह एक आदमी के पास से गुज़रा जिसके पास ऊंट के जबड़े की हड्डी थे तो उस ने वह इसे दे मारी और लोग भी इसे मारने लगे हत्ता के वह फौत हो गया, उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से उस का तज़किरह किया की जब उस ने पथ्थरो की तकलीफ और मौत महसूस की तो वह भाग उठा, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुमने इसे छोड़ क्यों न दिया ?" और एक रिवायत में है: "तुमने इसे छोड़ क्यों न दिया शायद के वह तौबा कर लेता तो अल्लाह उसकी तौबा कबूल फरमा लेता"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1428) و ابن ماجه (2554) [و ابوداؤد (4419 ، الرواية الثانية)]

٣٥٦٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِمَاعِزِ بْنِ مَالِكٍ: «أَحَقٌّ مَا بَلَغَنِي عَنْكَ؟» قَالَ: وَمَا بَلَغَكَ عَنِّي؟ قَالَ: «بَلَغَنِي أَنَّكَ قَدْ وَقَعْتَ عَلَى جَارِيَةِ آلِ فُلَانٍ» [ص:١٠٦ قَالَ: نَعَمْ فَشَهِدَ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ فَأمر بِهِ فرجم. رَوَاهُ مُسلم

3566. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने माज़ बिन मालिक से फ़रमाया: "तुम्हारे मुतल्लिक जो बात मुझे पहुंची है क्या वह दुरुस्त है?" उस ने अर्ज़ किया, आप को मेरे मुतल्लिक क्या बात पहुंची है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे यह बात पहुंची है के तुमने आले फलां की लौंडी से ज़िना किया है", उस ने चार बार इकरार किया तो आप ﷺ ने उस के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया तो उसे रजम कर दिया गया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (19 / 1693)، (4427)

٣٥٦٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ يَزِيدَ بْنِ نُعَيْمٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ مَاعِزًا أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَقَرَّ عِنْدَهُ أَرْبَعَ مَرَّاتٍ فَأَمَرَ بِرَجْمِهِ وَقَالَ لِهَزَّالٍ: «لَوْ سَتَرْتَهُ بِثَوْبِكَ كَانَ خَيْرًا لَكَ» قَالَ ابْنُ الْمُنْكَدِرِ: إِنَّ هَزَّالًا أَمَرَ مَاعِزًا أَنْ يَأْتِيَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فيخبره. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3567. यज़ीद बिन नुअइम अपने वालिद से रिवायत करते हैं, के माज़ रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने आप ﷺ की मौजूदगी में चार बार इकरार किया तो आप ﷺ ने इसे रजम करने का हुक्म फ़रमाया, और आप ﷺ ने हज़्ज़ाल से फ़रमाया अगर तुम उसकी परदापोशी करते तो तुम्हारे लिए बेहतर होता"| इब्ने मुन्कदिर ने फ़रमाया के हज़्ज़ाल ने माज़ (र) को मशवरा दिया था के वह नबी ﷺ के पास जाए और आप को (ये वाकिया) बताए| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4377) حسن ، رواه ابوداؤد (4377)

٣٥٦٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «تَعَافَوُا الْحُدُودَ فِيمَا بَيْنَكُمْ فَمَا بَلَغَنِي مِنْ حَدٍّ فَقَدْ وَجَبَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3568. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हुदूद को बाहम मुआफ़ कर दिया करो, जब मुआमला मुझ तक पहुँच गया तो फिर हद वाजिब हो गई”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4376) و النسائی (8 / 70 ح 48894890) * ابن جريج مدلس ولم يصرح بالسماع فالسند الى عمرو بن شعيب : غير صحيح ، و لبعض الحديث شواهد معنوية

٣٥٦٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أقيلوا ذَوي الهيآت عثراتهم إِلَّا الْحُدُود» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3569. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अच्छी सिफात से मुतास्सिफ लोगों से हुदूद के अलावा उनकी लग्ज़िशो से दरगुज़र किया करो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4375)

٣٥٧٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «ادرؤا الْحُدُودَ عَنِ الْمُسْلِمِينَ مَا اسْتَطَعْتُمْ فَإِنْ كَانَ لَهُ مَخْرَجٌ فَخَلُّوا سَبِيلَهُ فَإِنَّ الْإِمَامَ أَنْ يُخْطِئَ فِي الْعَفْوِ خَيْرٌ مِنْ أَنْ يُخْطِئَ فِي الْعُقُوبَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: قَدْ رُوِيَ عَنْهَا وَلم يرفع وَهُوَ أصح

3570. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस क़दर हो सके मुसलमान से हुदूद दूर रखो, अगर कोई बचाव की राहे निकलती हो तो उसकी राह छोड़ दो, क्योंकि इमाम का दरगुज़र करने में गलती करना, सज़ा देने में गलती करने से बेहतर है”| इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह कहते हैं यह रिवायत आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत की गई है और उस का मरफ़ुअ न होना ज़्यादा सहीह है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه الترمذی (1424) * يزيد بن زياد الدمشقی متروک وله شواهد كلها ضعيفة

٣٥٧١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ: اسْتُكْرِهَتِ امْرَأَةٌ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَدَرَأَ عَنْهَا الْحَدَّ وَأَقَامَهُ عَلَى الَّذِي أَصَابَهَا وَلَمْ يُذْكَرْ أَنَّهُ جَعَلَ لَهَا مَهْرًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3571. वाइल बिन हुज्र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ के दौर में एक औरत से ज़िना बिल जबर किया गया तो आप ने उस पर हद न काइम की बल्कि उस से ज़्यादती करने वाले पर हद काइम की| रावी ने ज़िक्र नहीं

किया के आप ﷺ ने उस के लिए महर मुकर्रर किया या के नहीं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1453) * السند منقطع و حجاج بن ارطاة ضعيف مدلس

٣٥٧٢ - (صَحِيح) وَعَنْهُ: أَنَّ امْرَأَةً خَرَجَتْ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تُرِيدُ الصَّلَاةَ [ص:١٠٦ فَتَلَقَّاهَا رَجُلٌ فَتَجَلَّلَهَا فَقَضَى حَاجَتَهُ مِنْهَا فَصَاحَتْ وَانْطَلَقَ وَمَرَّتْ عِصَابَةٌ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ فَقَالَتْ: إِنَّ ذَلِكَ الرَّجُلَ فَعَلَ بِي كَذَا وَكَذَا فَأَخَذُوا الرَّجُلَ فَأَتَوْا بِهِ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَهَا: «اذْهَبِي فَقَدْ غَفَرَ اللَّهُ لَكِ» وَقَالَ لِلرَّجُلِ الَّذِي وَقَعَ عَلَيْهَا: «ارْجُمُوهُ» وَقَالَ: «لَقَدْ تَابَ تَوْبَةً لَوْ تَابَهَا أَهْلُ الْمَدِينَةِ لَقُبِلَ مِنْهُمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ

3572. वाइल बिन हुज्र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ के दौर में एक औरत नमाज़ पढ़ने के लिए निकली तो एक आदमी इसे मीला और उस ने इसे ढांप लिया और ज़बरदस्ती उस से ज़िना कर लिया, उस ने शोर मचाया तो वह चला गया, इतने में मुहाजरिन की एक जमाअत गुज़रीतो इस (औरत) ने कहा फलां शख़्स ने इस इस तरह मेरे साथ किया है, उन्होंने इस आदमी को पकड़ा और इसे रसूलुल्लाह ﷺ के पास ले आए तो आप ﷺ ने इस औरत से फ़रमाया: “तुम जाओ अल्लाह ने तुम्हें बख्श दीया”, और उस के साथ ज़िना करने वाले शख़्स के मुतल्लिक फ़रमाया: “इसे रजम कर दो”, और फ़रमाया: “इस शख़्स ने ऐसी तौबा की के अगर ऐसी तौबा अहले मदीना करते तो वह उनकी तरफ से कबूल हो जाती”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1454) و ابوداؤد (4379)

٣٥٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ: أَنَّ رَجُلًا زَنَى بِامْرَأَةٍ فَأَمَرَ بِهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجُلِدَ الْحَدَّ ثُمَّ أُخْبِرَ أَنَّهُ مُحْصَنٌ فَأَمَرَ بِهِ فرجم. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3573. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के किसी आदमी ने किसी औरत के साथ ज़िना किया तो नबी ﷺ ने उस के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया तो उसे कोड़े मारे गए, फिर आप को बताया गया के वह तो शादी शुदा है तो फिर आप ﷺ ने उस के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया तो उसे रजम किया गया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4438) * ابن جريج و ابو الزبير مدلسان و عنعنا

٣٥٧٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَعِيدِ بْنِ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ أَنَّ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ أَتَى النَّبِيَّ [ص:١٠٦ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِرَجُلٍ كَانَ فِي الْحَيِّ مُخْدَجٍ سقيم فَوجدَ على أمة من إمَائِهِمْ بخبث بِهَا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خُذُوا لَهُ عِثْكَالًا فِيهِ مِائَةُ شِمْرَاخٍ فَاضْرِبُوهُ ضَرْبَة» . رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ وَفِي رِوَايَةِ ابْنِ مَاجَه نَحوه

3574. सईद बिन साद बिन उबादा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के साद बिन उबादा रदियल्लाहु अन्हु नबी

ﷺ के पास एक ऐसे शख़्स को लाए जो कबिले में नाकिस अल खलकत और मरीज़ था लेकिन वह उनकी लोंदियो में से किसी लौंडी के साथ ज़िना करता हुआ पाया गया था, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “उस के लिए खजूर की एक टहनी लो जिस में सौ शाखें हो और फिर इसे एक ही मर्तबा मारो”| शरह सुन्ना और इब्ने माजा की रिवायत में इसी तरह है| (सहीह)

صحيح ، رواه البغوی فی شرح السنة (10 / 303 ح 2591) و ابن ماجه (2574)

٣٥٧٥ - (حسن) وَعَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «من وَجَدْتُمُوهُ يَعْمَلُ عَمَلَ قَوْمِ لُوطٍ فَاقْتُلُوا الْفَاعِلَ وَالْمَفْعُول بِهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

3575. इकरिमा इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम जिस शख़्स को कौम ए लूत का सा काम करते हुए देखो तो फ़ाइल और मफउल दोनों को क़त्ल कर दो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1456) و ابن ماجه (2561)

٣٥٧٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَتَى بَهِيمَةً فَاقْتُلُوهُ وَاقْتُلُوهَا مَعَهُ» . قِيلَ لِابْنِ عَبَّاسٍ: مَا شَأْنُ الْبَهِيمَةِ؟ قَالَ: مَا سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي ذَلِكَ شَيْئًا وَلَكِن أره كَرِهَ أَنْ يُؤْكَلَ لَحْمُهَا أَوْ يُنْتَفَعَ بِهَا وَقَدْ فُعِلَ بِهَا ذَلِكَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

3576. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स चोपाये के साथ बुरा फ़ैल करे तो इस शख़्स को क़त्ल कर दो और उस के साथ इस (चोपाए) को भी क़त्ल कर दो”, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से अर्ज़ किया गया, चोपाये को किस लिए? उन्होंने कहा: मैंने इस बारे में रसूलुल्लाह ﷺ से कुछ नहीं सुना लेकिन मेरा ख़याल है के आप ने ऐसे जानवर का गोश्त खाने या उस से फ़ायदा उठाने को नापसंद फ़रमाया जिसके साथ यह फ़ैल किया गया हो| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1455 و سنده حسن و اللفظ له) و ابوداؤد (4464 و سنده حسن) و ابن ماجه (2564 سنده ضعيف و عنده زيادة)

٣٥٧٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَخْوَفَ مَا أَخَافُ عَلَى أُمَّتِي عَمَلُ قَوْمِ لُوطٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْن مَاجَه

3577. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुझे अपनी उम्मत के मुतल्लिक कौम ए लूत के अमल में मुल्वत होने का सबसे ज़्यादा अंदेशा है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (1457 وقال : حسن غريب) و ابن ماجه (2563) * عبدالله بن محمد بن عقيل ضعيف ضعفه الجمهور

٣٥٧٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ رَجُلًا مِنْ بَنِي بَكْرِ بْنِ لَيْثٍ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَقَرَّ أَنَّهُ زَنَى بِامْرَأَةٍ أَرْبَعَ مَرَّاتٍ فَجَلَدَهُ مِائَةً وَكَانَ بِكْرًا ثُمَّ سَأَلَهُ الْبَيِّنَةَ عَلَى الْمَرْأَةِ فَقَالَتْ: كَذَبَ وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَجُلِدَ حَدَّ الْفِرْيَةِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3578. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के बनू बक्र बिन लैस कबिले का एक शख़्स नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने एक औरत के साथ ज़िना करने का चार बार इकरार किया तो आप ने इसे सौ कोड़े मारे, क्योंकि वह कुंवारा था, फिर आप ने इस शख़्स से औरत के खिलाफ गवाह तलब किए (जब वह उस से आजिज़ गया) तो इस औरत ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! अल्लाह की क़सम! उस ने झूठ कहा है, आप ﷺ ने उस पर हद ए कज्फ़ (अस्सी कोड़े सज़ा) काइम की| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4467) * القاسم بن فياض مختلف فيه و ضعفه ابن معين وغيره و الجرح فيه مقدم

٣٥٧٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: لَمَّا نَزَلَ عُذْرِي قَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَذَكَرَ ذَلِكَ فَلَمَّا نَزَلَ مِنَ الْمِنْبَرِ أَمَرَ بِالرَّجُلَيْنِ وَالْمَرْأَةِ فَضُرِبُوا حَدَّهُمْ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

3579. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब मेरी बराअत के बारे में आयात नाज़िल हुई तो नबी ﷺ मिम्बर पर खड़े हुए तो उस को ज़िक्र फ़रमाया, जब आप मिम्बर से उतरा आप ﷺ ने दो मर्दों और एक औरत के बारे में हुक्म फ़रमाया तो इन पर हद काइम की गई| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4474) [و الترمذى (3180 وقال : حسن غريب) و ابن ماجه (2567)] * محمد بن اسحاق صرح بالسماع عند البيهقى (8 / 250)

كتاب الْحُدُود •	हुदूद का बयान
الْفَصْل الثَّالِث •	तीसरी फस्ल

٣٥٨٠ - (صَحِيح) عَنْ نَافِعٍ: أَنَّ صَفِيَّةَ بِنْتَ أَبِي عُبَيْدٍ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ عَبْدًا مِنْ رَقِيقِ الْإِمَارَةِ وَقَعَ على وليدةٍ من الخُمسِ فاستَكرهَها حَتَّى افتضَّها فَجَلَدَهُ عُمَرُ وَلَمْ يَجْلِدْهَا مِنْ أَجْلِ أَنَّهُ استكرهها. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3580. नाफेअ से रिवायत है के (इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा की अहलिया) सफिया बिन्ते अबी उबैद ने इसे बताया की अमारत के गुलामो में से एक गुलाम ने ख़ुम्स की एक लौंडी से ज़िना बिल जबर किया तो उमर

रदियल्लाहु अन्हु ने इस गुलाम को कोड़े मारे और लौंडी को कोड़े न मारे क्योंकि उस ने इसे मजबूर किया था| (बुखारी)

رواه البخارى (6949)

٣٥٨١ - (حسن) وَعَنْ يَزِيدَ بْنِ نُعَيْمِ بْنِ هَزَّالٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: كَانَ مَاعِزُ بْنُ مَالِكٍ يَتِيمًا فِي حِجْرِ أَبِي فَأَصَابَ جَارِيَةً مِنَ الْحَيِّ فَقَالَ لَهُ أَبِي: ائْتِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَهُ بِمَا صَنَعْتَ لَعَلَّهُ يَسْتَغْفِرُ لَكَ وَإِنَّمَا يُرِيدُ بِذَلِكَ رَجَاءَ أَنْ يَكُونَ لَهُ مَخْرَجًا فَأَتَاهُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إني زنيتُ فأقِمْ عليَّ كتابَ اللَّهِ حَتَّى قَالَهَا أَرْبَعَ مَرَّاتٍ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّكَ قَدْ قُلْتَهَا أَرْبَعَ مَرَّاتٍ فَبِمَنْ؟ " قَالَ: بِفُلَانَةَ. قَالَ: «هَلْ ضَاجَعْتَهَا؟» قَالَ: نَعَمْ قَالَ: «هَلْ بَاشَرْتَهَا؟» قَالَ: نَعَمْ قَالَ: «هَلْ جَامَعْتَهَا؟» قَالَ: نَعَمْ قَالَ: فَأَمَرَ بِهِ أَنْ يُرْجَمَ فَأُخْرِجُ بِهِ إِلَى الْحَرَّةِ فَلَمَّا رُجِمَ فَوَجَدَ مَسَّ الْحِجَارَةِ فَجَزِعَ فَخَرَجَ يَشْتَدُّ فَلَقِيَهُ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أُنَيْسٍ وَقَدْ عَجَزَ أَصْحَابُهُ فَنَزَعَ لَهُ بِوَظِيفِ بَعِيرٍ فَرَمَاهُ بِهِ فَقَتَلَهُ ثُمَّ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ: «هَلَّا تَرَكْتُمُوهُ لَعَلَّهُ أَنْ يَتُوبَ. فَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3581. यज़ीद बिन नुअयम बिन हज़्ज़ाल अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: माज़ बिन मालिक यतीम थे और मेरे वालिद की किफ़ालत में थे, उन्होंने कबिले की एक लौंडी से ज़िना किया तो मेरे वालिद ने उन्हें कहा: रसूलुल्लाह ﷺ के पास जाओ और अपने हरकत के मुतल्लिक उन्हें बताओ शायद के वह तुम्हारे लिए मगफिरत तलब करे, उनका मकसद यह था के शायद उस के लिए निजात की कोई सबील निकल आए, वह आप की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने ज़िना का इर्तिकाब किया है आप मुझ पर अल्लाह की किताब (का हुक्म) काइम करे, आप ने उस से एअराज़ फ़रमाया तो वह दोबारा आया और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैंने ज़िना का इर्तिकाब किया है, आप मुझ पर अल्लाह की किताब (का हुक्म) काइम करे, (वो कहता रहा) हत्ता के उस ने चार मर्तबा ऐसे कहा, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुमने चार मर्तबा यह बात की है, बताओ तुमने किसी के साथ (जीना किया है) ?” उस ने अर्ज़ किया, फलां औरत के साथ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तू उस के साथ हम बिस्तर हुआ ?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम ने उस के साथ मिलाप किया ?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम ने उस से जिमाअ किया ?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने उस के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया के इसे रजम किया जाए, इसे हर्राह की तरफ ले जाया गया, जब उस ने पथ्थरो की तकलीफ महसूस की तो वह बर्दाश्त न कर सका तो वह (रजम की जगह से) भाग खड़ा हुआ, लेकिन अब्दुल्लाह बिन उनय्स ने इसे पा लिया जबकि उस के दीगर रफ्काअ पीछे रह गए उन्होंने ऊंट की पिंडली की हड्डी इसे मारी और क़त्ल कर दिया, फिर वह नबी ﷺ के पास आए और आप को उस के मुतल्लिक बताया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने इसे छोड़ क्यों न दिया शायद के वह तौबा कर लेता और अल्लाह उसकी तौबा कबूल फरमा लेता”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4419) و انظر ح 3567

٣٥٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَا مِنْ [ص:١٠٦ قَوْمٍ يَظْهَرُ فِيهِمُ الزِّنَا إِلَّا أُخِذُوا بِالسَّنَةِ وَمَا مِنْ قَوْمٍ يَظْهَرُ فِيهِمُ الرِّشَا إِلَّا أخذُوا بِالرُّعْبِ» . رَوَاهُ أَحْمد

3582. अमर बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस कौम में ज़िना आम हो जाता है वह कहत साली का शिकार हो जाती है, और जिस कौम में रिश्वत आम हो जाए उस पर खौफ मुसल्लत कर दिया जाता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (4 / 205 ح 17976) * فیه ابن لھیعة (ضعیف بعد اختلاطه و مدلس) عن عبدالله بن سلیمان عن محمد بن راشد المرادی (مجھول غیر معروف) عن عمرو بن العاص رضی الله عنه به الخ ، المرادی عن عمرو : منقطع

٣٥٨٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ وَأَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَلْعُونٌ مَنْ عَمِلَ عَمَلَ قَوْمِ لُوطٍ» . رَوَاهُ رَزِينٌ

3583. इब्ने अब्बास और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हुम से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स कौम ए लूत का सा अमल करे वह मलउन है”| (हसन)

حسن ، رواہ رزین (لم اجدہ) و رواہ احمد (1 / 217 ح 1875 ، 1 / 317 ح 2914) [و البخاری فی الادب المفرد (892) و عبد بن حمید (589) و الحاکم (4 / 356)] * محمد اسحاق صرح بالسماع عند احمد (2914) و سندہ حسن و للحدیث شواھد

٣٥٨٤ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ علياً رَضِي الله عَنهُ أحرَقَهما وَأَبا بكرٍ هدم عَلَيْهِمَا حَائِطا

3584. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के अली रदियल्लाहु अन्हु ने इन दोनों (फ़ाइल और मफ़उल) को जला दीया, जबकि अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने इन दोनों पर दिवार गिरा दी| (मुझे नहीं मिली.)

لم اجدہ ، * و فی الباب روایة ، قال ابن حجر :’’ ھو ضعیف جدًا ‘‘ (الدرایة 2 / 103 ح 667) و انظر تنقیح الرواۃ (2 / 92) و روی ابن ابی شیبة (9 / 529 ح 28328) بسند صحیح عن ابن عباس فی حد اللوطی قال :’’ ینظر اعلی بناء فی القریة فیرمی به منکسًا ثم یتبع بالحجارۃ‘‘ یعنی حد اللوطی القتل بالحجارۃ وغیرھا

٣٥٨٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَنْظُرُ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ إِلَى رَجُلٍ أَتَى رَجُلًا أَوِ امْرَأَةً فِي دُبُرِهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

3585. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह अज्ज़वजल इस आदमी की तरफ (नज़रे रहमत से) नहीं देखता जो किसी मर्द के साथ बुरा फ़ैल करे या वह औरत की पीठ (दुबर) में बदफैली करे”| तिरमिज़ी, और उन्होंने कहा: यह हदीस हसन ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (1165)

٣٥٨٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: «مَنْ أَتَى بَهِيمَةً فَلَا حَدَّ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: عَنْ سُفْيَانَ الثَّوْرِيِّ أَنَّهُ قَالَ: وَهَذَا أَصَحُّ مِنَ الْحَدِيثِ الْأَوَّلِ وَهُوَ: «مَنْ أَتَى بَهِيمَةً فَاقْتُلُوهُ» وَالْعَمَلُ عَلَى هَذَا عِنْدَ أَهْلِ الْعلم

3586. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उन्होंने ने फ़रमाया: जो शख़्स किसी चोपाये के साथ बुरा फ़ैल करे तो उस पर कोई हद नहीं”| इमाम तिरमिज़ी ने सुफियान सौरी से रिवायत किया के उन्होंने कहा: यह हदीस हदीसे अव्वल: “जो शख़्स किसी चोपाये के साथ बुरा फ़ैल करे तो उसे क़त्ल कर दो”, से ज़्यादा सहीह है और अहले इल्म के यहाँ इसी पर अमल है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1455) و ابوداؤد (4465)

٣٥٨٧ - (جيد) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَقِيمُوا حُدُودَ اللَّهِ فِي الْقَرِيبِ وَالْبَعِيدِ وَلَا تَأْخُذْكُمْ فِي اللَّهِ لوْمةُ لائمٍ» . رَوَاهُ ابنُ مَاجَه

3587. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर करीब व बईद (नसब के लिहाज़ से या कुव्वत के लिहाज़ से) पर अल्लाह की हुदूद नाफ़िज़ कर दो और अल्लाह के (हुक्म जारी करने) में किसी मलामत गिर की मलामत तुम्हारे आड़े न आए”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابن ماجه (2540) * عبیدة بن الاسود مدلس و عنعن و للحدیث شواھد ضعیفة

٣٥٨٨ - (جيد) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَالَ: «إِقَامَةُ حَدٍّ مِنْ حُدُودِ اللَّهِ خَيْرٌ مِنْ مَطَرِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً فِي بلادِ الله» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

3588. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की हुदूद में से किसी हद का काइम कर देना, अल्लाह के शहरों पर चालीस राते बारिश होने से बेहतर है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جدا ، رواه ابن ماجه (2537) * فیه سعد بن سنان الحنفی الحمصی : متروک ، رماه الدارقطنی وغیره بالوضع و للحدیث شواھد ضعیفة

٣٥٨٩ - (جيد) وَرَوَاهُ النَّسَائِيُّ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

3589. इमाम नसई ने इसे अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه النسائی (8 / 7576 ح 4908) * فیه جریر بن یزید : ضعیف و للحدیث شواھد ضعیفة عند ابن حبان (الموارد : 1507) وغیره

चोरो के हाथ काटने का बयान — بَابُ قَطْعِ السّرِقَة

पहली फस्ल — الْفَصْلُ الأول

٣٥٩٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تُقطعُ يدُ السَّارِقِ إِلاَّ بربُعِ دِينَار فَصَاعِدا»

3590. आइशा (रअ), नबी ﷺ से रिवायत करती हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "चोथाई दीनार या उस से ज़्यादा (मालीयत की चोरी) पर चोर का हाथ काटा जाएगा"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6789) و مسلم (2 / 1684)، (4400)

٣٥٩١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَطَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدَ سَارِقٍ فِي مِجَنٍّ ثَمَنُهُ ثَلَاثَةُ دَرَاهِمَ

3591. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ ने तीन दिरहम मालीयत की ढाल की चोरी पर चोर का हाथ काटा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6798) و مسلم (6 / 1686)، (4406)

٣٥٩٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَعَنَ اللَّهُ السارِقَ يسرقُ البيضةَ فتُقطعُ يَده وَيسْرق الْحَبل فتقطع يَده»

3592. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह चोरी पर लानत करे के वह अंडा चुराता है तो उस का हाथ काट दिया जाता है, और वह रस्सी चराता है तो उस का हाथ काट दिया जाता है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6799) و مسلم (7م / 1687)، (4408)

चोरो के हाथ काटने का बयान • بَابُ قَطْعِ السّرقَة

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٣٥٩٣ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ رَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا قَطْعَ [ص:١٠٦] فِي ثَمَرٍ وَلَا كَثَرٍ» رَوَاهُ مَالِكٌ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

3593. राफीअ बिन ख़दीज रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “दरख्त पर लगे हुए फल और शगुफे में हाथ नहीं काटा जाएगा”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه مالک (2 / 839 ح 1628 مطولًا) و الترمذی (1449) و ابوداؤد (4388) و النسائی (8 / 8688 ح 49634973) و الدارمی (2 / 174 ح 23092314) و ابن ماجه (2593)

٣٥٩٤ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّهُ سُئِلَ عَنِ الثَّمَرِ الْمُعَلَّقِ قَالَ: «مَنْ سَرَقَ مِنْهُ شَيْئًا بَعْدَ أَنْ يُؤْوِيَهُ الْجَرِينَ فَبَلَغَ ثَمَنَ الْمِجَنِّ فَعَلَيْهِ الْقَطْعُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3594. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत किया के आप से दरख्तों पर लगे हुए फल (की चोरी) के बारे में दरियाफ्त किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस ने इसे गोदाम में महफ़ूज़ कर लेने के बाद चोरी किया और वह ढाल की कीमत को पहुँच गया तो फिर उस पर कतअ (हाथ काटना) है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1710) و النسائی (8 / 8485 ح 4960)

٣٥٩٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ الْمَكِّيِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا قَطْعَ فِي ثَمَرٍ معلَّقٍ وَلَا فِي حَرِيسَةِ جَبَلٍ فَإِذَا آوَاهُ الْمُرَاحُ وَالْجَرِينُ فَالْقَطْعُ فيمَا بلغ ثمن الْمِجَن» . رَوَاهُ مَالك

3595. अब्दुल्लाह बिन अब्दुल रहमान बिन अबी हुसैन अल मक्कियी से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ना लटके हुए फलों (की चोरी) में कतअ है न पहाड़ के दामन में चरने वाले जानवर (की चोरी) में जब वह (जानवर) बाड़े में पनाह गज़ी हो और फल गोदाम में महफ़ूज़ हो तो फिर उसकी चोरी पर कतअ है जब वह ढाल की कीमत को पहुँच जाए”| (हसन)

حسن ، رواه مالک (2 / 831 ح 1617) * السند مرسل وله شاهد عند النسائی (8 / 86 ح 4962)

٣٥٩٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَيْسَ عَلَى الْمُنْتَهِبِ قَطْعٌ وَمَنِ انْتَهَبَ نُهْبَةً مَشْهُورَةً فَلَيْسَ مِنَّا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3596. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "डाकू पर कतअ (हाथ काटना) नहीं (इस की सज़ा अलग है), और जो शख़्स बड़े बड़े डाके डाले वह हम में से नहीं"| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (4391)

٣٥٩٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَيْسَ عَلَى خَائِنٍ وَلَا مُنْتَهِبٍ وَلَا مُخْتَلِسٍ قَطْعٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ والدارمي

3597. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "खयानत करने वाले, डाका डालने वाले और चिपट कर माल हासिल करने वाले पर "कतअ" नहीं"| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (1448 وقال : حسن صحيح) و النسائی (8 / 8889 ح 4985) و ابن ماجه (2591) و الدارمی (2 / 175 ح 2315)

٣٥٩٨ - (لم تتمّ دراسته) وَرُوِيَ فِي «شَرْحِ السُّنَّةِ» : أَنَّ صَفْوَانَ بْنَ أُمَيَّةَ قَدِمَ الْمَدِينَةَ فَنَامَ فِي الْمَسْجِدِ وَتَوَسَّدَ رِدَاءَهُ فَجَاءَ سَارِقٌ وَأَخَذَ رِدَاءَهُ فَأَخَذَهُ صَفْوَانُ فَجَاءَ [ص:١٠٦ بِهِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَمَرَ أَنْ تُقْطَعَ يَدُهُ فَقَالَ صَفْوَانُ: إِنِّي لَمْ أُرِدْ هَذَا هُوَ عَلَيْهِ صَدَقَةٌ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فَهَلا قبل أَن تَأْتِينِي بِهِ»

3598. और शरह सुन्ना में मरवी है के सफवान बिन उमय्य रदियल्लाहु अन्हु मदीना आए तो वह अपनी चादर का सिरहाना बना कर मस्जिद में सौ गए, एक चोर आया और उस ने उनकी चादर पकड़ ली तो उन्होंने इसे गिरफ्तार कर लिया, और वह रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में ले आए, आप ने उस का हाथ काटने का हुक्म फ़रमाया तो सफवान रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, मैंने इस (कतअ) का इरादा नहीं किया था, वह (चादर) इस (चोर) पर सदका है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुमने इसे मेरे पास लाने से पहले क्यों न मुआफ़ कर दिया"| (हसन)

حسن ، رواه البغوی فی شرح السنة (10 / 320321 بعد ح 2600 بدون سند) [و مالک (2 / 834835 ح 1624 مرسل) و النسائی (8 / 6970 ح 4887 حسن) و ابن ماجه (2595 حسن) و ابوداؤد (4394 و سنده حسن) وغيرهم ، وهو حسن بالشواهد]

٣٥٩٩ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَى نَحْوَهُ ابْنُ مَاجَهْ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بن صَفْوَان عَن أَبِيه

3599. इमाम इब्ने माजा ने इसी तरह अब्दुल्लाह बिन सफवान अन अबी की सनद से रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (2595)

٣٦٠٠ - (لم تتمّ دراسته) والدارمي عَن ابْن عَبَّاس

3600. और इमाम दारमी ने इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه الدارمی (2 / 172 ح 2304)

٣٦٠١ - (صَحِيح) وَعَنْ بُسْرِ بْنِ أَرْطَاةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا تُقْطَعُ الْأَيْدِي فِي الْغَزْوِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ إِلَّا أَنَّهُمَا قَالَا: «فِي السّفر» بدل «الْغَزْو»

3601. बुसर बिन अर्ताक बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “गज़वा में हाथ न काटे जाए”| अलबत्ता इमाम अबू दावुद और इमाम नसई ने गज़वा के बजाए “सफ़र” का लफ्ज़ इस्तेमाल किया है| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (1450) و الدارمی (2 / 231 ح 2495) و ابوداؤد (4408) و النسائی (8 / 91 ح 4982)

٣٦٠٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وسلم قَالَ فِي السَّارِقِ: «إِنْ سَرَقَ فَاقْطَعُوا يَدَهُ ثُمَّ إِنْ سَرَقَ فَاقْطَعُوا رِجْلَهُ ثُمَّ إِنْ سَرَقَ فَاقْطَعُوا يَدَهُ ثُمَّ إِنْ سَرَقَ فَاقْطَعُوا رِجْلَهُ» . رَوَاهُ فِي شرح السّنة

3602. अबू सलमा, अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने चोरी के बारे में फ़रमाया: “अगर वह चोरी करे तो उस का हाथ काट दो, अगर फिर चोरी करे तो उस का पाँव काट दो, अगर फिर चोरी करे तो उस का (दूसरा) हाथ काट दो और अगर फिर चोरी करे तो उस का (दूसरा) पाँव काट दो”| (ज़ईफ़,मौज़ू)

اسنادہ ضعیف جذا موضوع ، رواہ البغوی فی شرح السنة (10 / 326 بعد ح 2602) [و الدارقطنی (3 / 180 ح 3359)] * فیه الواقدی وھو کذاب متروک و الحدیث الآتی یغنی عنه

٣٦٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: جِيءَ بِسَارِقٍ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اقْطَعُوهُ» فَقُطِعَ ثُمَّ جِيءَ بِهِ الثَّانِيَةَ فَقَالَ: «اقْطَعُوهُ» فَقُطِعَ ثُمَّ جِيءَ بِهِ الثَّالِثَةَ فَقَالَ: «اقْطَعُوهُ» فَقُطِعَ ثُمَّ جِيءَ بِهِ الرَّابِعَةَ فَقَالَ: «اقْطَعُوهُ» فَقُطِعَ فَأُتِيَ بِهِ الْخَامِسَةَ فَقَالَ: «اقْتُلُوهُ» فَانْطَلَقْنَا بِهِ فَقَتَلْنَاهُ ثُمَّ اجْتَرَرْنَاهُ فَأَلْقَيْنَاهُ فِي بِئْرٍ وَرَمَيْنَا عَلَيْهِ الحجارةَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3603. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक चोर नबी ﷺ की खिदमत में पेश किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस का हाथ काट दो”, उस का हाथ काट दिया गया, फिर इसे (दूसरी चोरी में) दूसरी मर्तबा पेश किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस का हाथ काट दो”, उस का हाथ काट दिया गया, फिर इसे तीसरी

मर्तबा पेश किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "उस का पाँव काट दो", उस का पाँव काट दिया गया, फिर चोथी मर्तबा पेश किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "उस का पाँव काट दो", उस का पाँव काट दिया गया, फिर इसे पाँचवीं मर्तबा लाया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "इसे क़त्ल कर दो", हम इसे ले गए और इसे क़त्ल कर दिया, फिर हमने इसे घंसिट कर कुंवो में फेंक दिया और उस पर पत्थर डाल दिए| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4410) و النسائی (8 / 9091 ح 4981 وقال : هذا حديث منكر و مصعب بن ثابت : ليس بالقوى) * مصعب : حسن الحديث ، وثقه الجمهور و للحديث شواهد عند النسائی (4980) وغيره

٣٦٠٤ - (لم تتمّ دراسته) وَرُوِيَ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ فِي قَطْعِ السَّارِقِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اقْطَعُوهُ ثمَّ احسموه»

3604. और उन्होंने शरह सुन्ना में चोर के हाथ काटने के बारे में नबी ﷺ से रिवायत किया आप ﷺ ने फ़रमाया: "इस (के हाथ) को काट दो फिर इसे दाग दो"| (हसन)

حسن ، رواه البغوی فی شرح السنة (10 / 327 بعد ح 2602) [و الحاكم (4 / 381 ح 8150) و صححه و وافقه الذهبی و سنده حسن]

٣٦٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ فَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ قَالَ: أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بسارقٍ فقُطِعَتْ يَدَهُ ثُمَّ أَمَرَ بِهَا فَعُلِّقَتْ فِي عُنُقِهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

3605. फ़ुज़ालह बिन उबैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक चोर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में पेश किया गया तो उस का हाथ काट दिया गया, फिर आप ﷺ ने उस के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया तो उसे उसकी गर्दन में लटका दिया गया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1447 وقال : حسن غريب) و ابوداؤد (4411) و النسائی (8 / 92 ح 4985 ، 4986 وقال : الحجاج بن ارطاة ضعيف لا يحتج به) و ابن ماجه (2587) * حجاج بن ارطاة ضعيف مدلس و عنعن

٣٦٠٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا سَرَقَ الْمَمْلُوكُ فَبِعْهُ وَلَوْ بِنَشٍّ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْن مَاجَه

3606. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब गुलाम चोरी करे तो उसे बेच दो ख्वाह एक "नश" (बीस दिरहम) ही मिले"| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4412) و النسائی (8 / 91 ح 4983) و ابن ماجه (2589)

चोरो के हाथ काटने का बयान • بَابُ قَطْعِ السّرِقَة

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٣٦٠٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِسَارِقٍ فَقَطَعَهُ فَقَالُوا: مَا كُنَّا نَرَاكَ تَبْلُغُ بِهِ هَذَا قَالَ: «لَوْ كانتْ فاطمةُ لقطعتَها» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

3607. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, एक चोर रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में पेश किया गया तो आप ﷺ ने उस का हाथ काट दीया, तो उन्होंने (सहाबा) ने अर्ज़ किया, हमारा आप के मुतल्लिक यह गुमान नहीं था के आप उस के मुतल्लिक यह कुछ करेंगे, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अगर (बा फ़र्ज़े महाल) फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा भी होती तो मैं (बिला तफरीक) उनका हाथ भी काटता"| (सहीह)

صحیح ، رواہ النسائی (8 / 72 ح 4900) [و اصلہ فی صحیح البخاری (3733)]

٣٦٠٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى عُمَرَ بِغُلَامٍ لَهُ فَقَالَ: اقْطَعْ يَدَهُ فَإِنَّهُ سرق مرآةَ لأمرأتي فَقَالَ عمَرُ رَضِي اللَّهُ عَنهُ: لَا قَطْعَ عَلَيْهِ وَهُوَ خَادِمُكُمْ أَخَذَ مَتَاعَكُمْ. رَوَاهُ مَالك

3608. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक आदमी अपना गुलाम लेकर उमर रदियल्लाहु अन्हु के पास आया तो उस ने कहा: उस का हाथ काट डाले क्योंकि उस ने मेरी अहलिया का आइना चुरा लिया है, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: उस पर कतअ नहीं और वह तुम्हारा खादिम है, उस ने तुम्हारा सामान उठा लिया है| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ مالک (2 / 839840 ح 1629) * ابن شھاب الزھری : مدلس و عنعن و مع ذلک صححہ الحافظ ابن کثیر فی مسند الفاروق (2 / 511) ! ولہ لون آخر عند الدارقطنی (3 / 188 ح 3378)

٣٦٠٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا أَبَا ذَرٍّ» قُلْتُ: لَبَّيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ وَسَعْدَيْكَ قَالَ: «كَيْفَ أَنْتَ إِذَا أَصَابَ النَّاسَ مَوْتٌ يَكُونُ [ص:١٠٧ الْبَيْتُ فِيهِ بِالْوَصِيفِ» يَعْنِي الْقَبْرَ قُلْتُ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: «عَلَيْكَ بِالصَّبْرِ» قَالَ حمَّادُ بنُ أبي سُليمانَ: تُقْطَعُ يَدُ النَّبَّاشِ لِأَنَّهُ دَخَلَ عَلَى الْمَيْتِ بيتَه. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

3609. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अबू ज़र!" मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं हाज़िर हूँ, इसी में मेरी सआदत है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम्हारी इस वक़्त क्या हालत होगी जब लोग कसरत से मौत का शिकार होंगे और इस वक़्त कब्र गुलाम के अवज़ मिलेगी ?" मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम सब्र करना", हम्माद बिन अबी सुलेमान ने कहा

कफन चोर का हाथ काटा जाएगा क्योंकि वह मय्यत पर उस के घर में दाखिल हुआ है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه ابوداؤد (4909 ، 1497) * حبيب بن ابى ثابت مدلس و عنعن و للحديث شاهد ضعيف عند احمد (6 / 215)

بَاب الشَّفَاعَة فِي الْحُدُود • हुदूद के बारे में सिफारिश करने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٦١٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن عائشةَ رَضِي الله عَنْهَا أَنَّ قُرَيْشًا أَهَمَّهُمْ شَأْنُ الْمَرْأَةِ الْمَخْزُومِيَّةِ الَّتِي سَرَقَتْ فَقَالُوا: مَنْ يُكَلِّمُ فِيهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ فَقَالُوا: وَمَنْ يَجْتَرِئُ عَلَيْهِ إِلَّا أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ حِبُّ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَلَّمَهُ أُسَامَةُ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَتَشْفَعُ فِي حَدٍّ مِنْ حُدُودِ اللَّهِ؟» ثُمَّ قَامَ فَاخْتَطَبَ ثُمَّ قَالَ: «إِنَّمَا أَهْلَكَ الَّذِينَ قَبْلَكُمْ أَنَّهُمْ كَانُوا إِذَا سَرَقَ فِيهِمُ الشَّرِيفُ تَرَكُوهُ وَإِذَا سَرَقَ فِيهِمُ الضَّعِيفُ أَقَامُوا عَلَيْهِ الْحَدَّ وَايْمُ اللَّهِ لَوْ أَنَّ فَاطِمَةَ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَرَقَتْ لَقَطَعْتُ يَدَهَا» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي روايةٍ لمسلمٍ: قالتْ: كانتِ امرأةٌ مخزوميَّةٌ تَسْتَعِيرُ الْمَتَاعَ وَتَجْحَدُهُ فَأَمَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِقَطْعِ يَدِهَا فَأَتَى أَهْلُهَا أُسَامَةَ فَكَلَّمُوهُ فَكَلَّمَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِقَطْعِ يَدِهَا فَأَتَى أَهْلُهَا أُسَامَةَ فَكَلَّمُوهُ فَكَلَّمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيهَا ثمَّ ذكرَ الحديثَ بنحوِ مَا تقدَّمَ

3610. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के मख्ज़ुमी औरत, जिस ने चोरी की थी, के वाकिए ने कुरैशीयो को ग़मज़दा कर दिया तो उन्होंने कहा: उस के मुतल्लिक रसूलुल्लाह ﷺ से कौन सिफारिश करे? फिर उन्होंने कहा: यह काम रसूलुल्लाह ﷺ के चहिते सिर्फ उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु ही कर सकते हैं, उसामा रदियल्लाहु अन्हु ने आप ﷺ से सिफारिश की तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या तुम अल्लाह की हुदूद में से एक हद के बारे में सिफारिश करते हो?” फिर आप खड़े हुए, खुत्बा इरशाद फ़रमाया, फिर फ़रमाया: “तुम से पहले लोग सिर्फ इसी वजह से हलाक कर दिए गए की जब उनमें से खानदानी शख़्स चोरी करता तो वह इसे छोड़ देते और जब कमज़ोर शख़्स चोरी करता तो वह उस पर हद काइम कर देते, अल्लाह की क़सम! अगर फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद (मुहम्मद ﷺ की बेटी फ़ातिमा (रअ)) भी चोरी करती तो मैं उनका हाथ भी काट देता”, बुखारी, मुस्लिम, और मुस्लिम की रिवायत में है, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने बयान किया एक मख्ज़ुमी औरत (फ़ातिमा बिन्ते असवद) थी जो आरियतन (उधार) चीज़े लिया करती थी और फिर उनकी वापसी का इनकार कर दिया करती थी, नबी ﷺ ने उस का हाथ काटने का हुक्म फ़रमाया तो उस के खानदान वाले उसामा रदियल्लाहु अन्हु के पास आए और उन्होंने उन से बात की और उसामा रदियल्लाहु अन्हु ने उस के मुतल्लिक रसूलुल्लाह ﷺ से सिफारिश की, फिर इमाम मुस्लिम ने हदीसे मज्कुरह के मुताबिक हदीस बयान की| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3475) و مسلم (8 / 1688)، (4410)

बَاب الشَّفَاعَة فِي الْحُدُود • हुदूद के बारे में सिफारिश करने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٦١١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «مَنْ حَالَتْ شَفَاعَتُهُ دُونَ حَدٍّ مِنْ حُدُودِ اللَّهِ فَقَدْ ضَادَّ اللَّهَ وَمَنْ خَاصَمَ فِي بَاطِلٍ وَهُوَ يَعْلَمُهُ لَمْ يَزَلْ فِي سُخْطِ اله تَعَالَى حَتَّى يَنْزِعَ وَمَنْ قَالَ فِي مُؤْمِنٍ مَا لَيْسَ فِيهِ أَسْكَنَهُ اللَّهُ رَدْغَةَ الْخَبَالِ حَتَّى يَخْرُجَ مِمَّا قَالَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد وَفِي روايةٍ للبيهقيِّ فِي شعبِ الْإِيمَان «مَنْ أَعانَ على خُصُومَةً لَا يَدْرِي أَحَقٌّ أَمْ بَاطِلٌ فَهُوَ فِي سَخطِ اللَّهِ حَتَّى ينْزع»

3611. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस शख़्स की सिफारिश अल्लाह की हुदूद में से किसी हद के निफाज़ के आगे हाइल हो गए तो उस ने अल्लाह की मुखालिफत की, जिस ने जानते हुए किसी बातिल (नाहक) के बारे में झगड़ा किया तो वह उस से दस्त कश होने तक अल्लाह तआला की नाराज़ी में रहता है और जिस ने किसी मोमिन पर बोहतान लगाया तो वह कच्चा लोहा के कीचड़ में रहेगा हत्ता के वह उस से निकल आए जो उस ने कहा है”| अहमद अबू दावुद, और बयहकी की शौबुल ईमान में एक रिवायत है“,जिस ने किसी झगड़े पर इआनत की जबकि वह नहीं जानता के वह हक़ है या बातिल तो वह अल्लाह की नाराज़ी में रहता है हत्ता के वह उस से दस्त कश हो जाए”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (2 / 70 ح 5385) و ابوداؤد (3597) و البيهقى فى شعب الايمان (7673)

٣٦١٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي أَمَيَّةَ الْمَخْزُومِيِّ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتَى بِلِصٍّ قَدِ اعْتَرَفَ اعْتِرَافًا وَلَمْ يُوجَدْ مَعَهُ مَتَاعٌ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أَخَالُكَ سَرَقْتَ» . قَالَ: بَلَى فَأَعَادَ عَلَيْهِ مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا كُلَّ ذَلِكَ يَعْتَرِفُ فَأَمَرَ بِهِ فَقُطِعَ وَجِيءَ بِهِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اسْتَغْفِرِ اللَّهَ وَتُبْ إِلَيْهِ» فَقَالَ: أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اللَّهُمَّ تُبْ عليهِ» ثَلَاثًا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ هَكَذَا وجدتُ فِي الْأُصُول الْأَرْبَعَة وجامع الْأُصُول وَشُعَبُ الْإِيمَانِ وَمَعَالِمُ السُّنَنِ عَنْ أَبِي أُمَيَّةَ

3612. अबू उमय्य मख्ज़ुमी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ के पास एक चोर लाया गया, उस ने एतराफ़ जुर्म कर लिया लेकिन उस से माल बरामद न हुआ तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: “मेरा ख़याल है के तुमने चोरी नहीं की”, उस ने अर्ज़ किया, क्यों नहीं, ज़रूर की है, आप ﷺ ने दो या तीन मर्तबा यह बात दोहराई लेकिन वह हर मर्तबा एतराफ़ करता रहा, आप ने उस के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया तो उस का हाथ काट दिया गया, और फिर इसे आप के पास लाया गया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: “अल्लाह से मगफिरत तलब करो और उस के हुज़ूर तौबा करो”, उस ने अर्ज़ किया, मैं अल्लाह से मगफिरत तलब करता हूँ और उस के

हुज़ूर तौबा करता हूँ, रसूलुल्लाह ﷺ ने तीन बार फ़रमाया: “अल्लाह उसकी तौबा कबूल फरमा”, और मैंने उसूल अरबह जामेअ अल उसूल शौबुल ईमान और मआलिम अल सुनन में अबू उमय्य से इसी तरह पाया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4380) و النسائى (8 / 67 ح 4881) و ابن ماجه (2597) و الدارقطنى (2 / 173 ح 2308) * ابو المنذر لا يعرف و فى الباب حديث النسائى (8 / 8990 ح 4980) و سنده صحيح و صححه الحاكم (4 / 380) وهو يغنى عنه

٣٦١٣ - وَفِي نُسَخِ الْمَصَابِيحِ عَنْ أَبِي رِمْثَةَ بِالرَّاءِ والثاء الْمُثَلَّثَة بدل الْهمزَة وَالْيَاء

3613. और मसाबिह के नुस्खों में “अबू उमय्य” की बजाए “अबू रम्स” है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، ذكره فى مصابيح السنة (2 / 553 ح 2721 بدون سند) و انظر الحديث السابق (3612)

هَذَا الْبَاب خَال عَن الْفَصْل الثَّالِث

यह बाब तीसरी फस्ल से खाली है|

• بَاب حد الْخمر — शराब नौशी पर हद कायम करने का बयान

• الْفَصْل الأول — पहली फस्ल

٣٦١٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ضَرَبَ فِي الْخَمْرِ بِالْجَرِيدِ والنِّعالِ وجلَدَ أَبُو بكرٍ رَضِي الله عَنهُ أربعين

3614. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने शराब नौशी पर खजूर की तहनिया और जूते मारे और अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने चालीस कोड़े मारे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6773) و مسلم (36 / 1706)، (4454)

٣٦١٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَفِي رِوَايَة عَنْهُ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَضْرِبُ فِي الْخَمْرِ بِالنِّعَالِ وَالْجَرِيدِ أَرْبَعِينَ

3615. और अनस रदियल्लाहु अन्हु से मरवी एक और हदीस में है की नबी ﷺ शराब नोशी पर चालीस जूते और शाखें मारा करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (37 / 1706)، (4456)

٣٦١٦ - (صَحِيح) وَعَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ: كَانَ يُؤْتَى بِالشَّارِبِ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَإِمْرَةِ أَبِي بَكْرٍ وَصَدْرًا مِنْ خِلَافَةِ عُمَرَ فَنَقُومُ عَلَيْهِ بِأَيْدِينَا وَنِعَالِنَا وَأَرْدِيَتِنَا حَتَّى كَانَ آخِرُ إِمْرَةِ عُمَرَ فَجَلَدَ أَرْبَعِينَ حَتَّى إِذَا عَتَوْا وَفَسَقُوا جَلَدَ ثَمَانِينَ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3616. साइब बिन यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में, अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के दौरे खिलाफत और उमर रदियल्लाहु अन्हु के खिलाफत के शुरू के दौर में शराब नोशी को लाया जाता तो हम अपने हाथो, जूतो और अपने कपड़ो के साथ इसे मारते थे हत्ता के उमर रदियल्लाहु अन्हु की खिलाफत के आखिरी दौर में चालीस कोड़े मारे जाते थे हत्ता के जब वह हद से बढ़ गए और सरकशी पर उतर आए तो उन्होंने अस्सी कोड़े मारे| (बुखारी)

رواه البخارى (6779)

بَاب حد الْخمر • शराब नौशी पर हद कायम करने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٦١٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ جَابِرٌ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ شَرِبَ [ص:١٠٧ الْخَمْرَ فَاجْلِدُوهُ فَإِنْ عَادَ فِي الرَّابِعَةِ فَاقْتُلُوهُ» قَالَ: ثُمَّ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ ذَلِكَ بِرَجُلٍ قَدْ شَرِبَ فِي الرَّابِعَةِ فَضَرَبَهُ وَلَمْ يقْتله. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3617. जाबिर (र), नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स शराब पिए तो उसे कोड़े मारो अगर वह चोथी मर्तबा पिए तो उसे क़त्ल कर दो”, रावी बयान करते हैं, फिर उस के बाद नबी ﷺ की खिदमत में एक आदमी पेश किया गया जिस ने चोथी मर्तबा शराब पि थी आप ﷺ ने इसे क़त्ल नहीं किया| (हसन)

حسن ، رواه الترمذى (1444)

٣٦١٨ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ أَبُو دَاوُد عَن قبيصَة بن دؤيب

3618. इमाम अबू दावुद ने इसे कबिस बिन जूऐब से रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4485) * قبيصة بن ذويب صحابى صغير ، له رؤية و مراسيل الصحابة مقبولة ، رضى الله عنهم

٣٦١٩ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي أُخْرَى لَهُمَا وَلِلنَّسَائِيِّ وَابْنِ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيِّ عَنْ نَفَرٍ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ مِنْهُمُ ابْنُ عُمَرَ وَمُعَاوِيَةُ وَأَبُو هُرَيْرَة والشريد إِلَى قَوْله: «فَاقْتُلُوهُ»

3619. अबू दावुद और तिरमिज़ी की दूसरी रिवायत और नसई, इब्ने माजा और दारमी की रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा की जमाअत जिन में इब्ने उमर, मुआविया, अबू हुरैरा और शरीद रदियल्लाहु अन्हुम हैं से " इसे क़त्ल कर दो", तक मरवी है| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائی (فی الکبری 3 / 255 ح 5296 و الصغری 8 / 314 ح 5665) و ابوداؤد (4484) و ابن ماجه (2572) و احمد (2 / 280) عن ابی ھریرۃ رضی اللہ عنه و سندہ صحیح و رواہ ابن ماجه (2573) و ابوداؤد (4482) و الترمذی (1444) عن معاویة بن ابی سفیان رضی اللہ عنه و رواہ ابوداؤد (4483) و احمد (2 / 136 ح 6197) و النسائی (8 / 313 ح 5664) و الدارمی (2 / 175176 ح 2318) و النسائی فی الکبری (5301) و احمد (4 / 388389) و الحاکم (4 / 372 عن الشرید رضی اللہ عنه و صححه الحاکم علی شرط مسلم و وافقه الذھبی (!)

٣٦٢٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْأَزْهَرِ قَالَ: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ أُتِيَ بِرَجُلٍ قَدْ شَرِبَ الْخَمْرَ فَقَالَ لِلنَّاسِ: «اضْرِبُوهُ» فَمِنْهُمْ مَنْ ضَرَبَهُ بِالنِّعَالِ وَمِنْهُمْ مَنْ ضَرَبَهُ بِالْعَصَا وَمِنْهُمْ مَنْ ضَرَبَهُ بِالْمِيتَخَةِ. قَالَ ابْنُ وَهْبٍ: يَعْنِي الْجَرِيدَةَ الرَّطْبَةَ ثُمَّ أَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تُرَابًا مِنَ الْأَرْضِ فَرَمَى بِهِ فِي وجهِه. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3620. अब्दुल रहमान बिन अज़हर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, गोया के मैं रसूलुल्लाह ﷺ को देख रहा हूँ जब एक शख़्स को, जिस ने शराब पि रखी थी, लाया गया तो आप ने लोगों से फ़रमाया: "इसे मारो", उनमें से किसी ने इसे जूतो के साथ मारा, किसी ने लाठी के साथ मारा और किसी ने इसे खजूर की सब्ज़ शाख के साथ मारा, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने ज़मीन से खाक उठाई और उस के चेहरे पर दे मारी| (हसन)

حسن ، رواہ ابوداؤد (4489)

٣٦٢١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُتِيَ بِرَجُلٍ قَدْ شربَ الخمرَ فَقَالَ: «اضْرِبُوهُ» فَمِنَّا الضَّارِبُ بِيَدِهِ وَالضَّارِبُ بِثَوْبِهِ وَالضَّارِبُ بِنَعْلِهِ ثُمَّ قَالَ: «بَكِّتُوهُ» فَأَقْبَلُوا عَلَيْهِ يَقُولُونَ: مَا اتَّقَيْتَ اللَّهَ مَا خَشِيتَ اللَّهَ وَمَا اسْتَحْيَيْتَ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ بَعْضُ الْقَوْمِ: أَخْزَاكَ اللَّهُ. قَالَ: " لَا تَقُولُوا هَكَذَا لَا تُعِينُوا عَلَيْهِ الشَّيْطَانَ وَلَكِنْ قُولُوا: اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ اللَّهُمَّ ارْحَمْهُ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3621. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक आदमी लाया गया जिस ने शराब पि थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: "इसे मारो", हम में से कोई उसे हाथ मार रहा था, कोई अपने कपड़े से और कोई अपने जूते से मार रहा था फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: "इसे मलामत करो", वह उसकी तरफ मुतवज्जे हो कर कहने लगे: तो अल्लाह से न डरा, तुझे अल्लाह का खौफ न आया और तुझे अल्लाह के रसूल! उसे हया न आई, और किसी ने कह दिया: अल्लाह तुम्हें रुसवा करे, आप ﷺ ने फ़रमाया: "इस तरह न कहो, और उस के खिलाफ शैतान की मदद न करो, बल्कि तुम कहो ऐ अल्लाह! इसे बख्श दे और उस पर रहम फरमा"| (सहीह)

صحيح ، رواہ ابوداؤد (44774478)

٣٦٢٢ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: شَرِبَ رَجُلٌ فَسَكِرَ فَلُقِيَ يَمِيلُ فِي الْفَجِّ فَانْطُلِقَ بِهِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا حَاذَى دَارَ الْعَبَّاسِ انْفَلَتَ فَدَخَلَ عَلَى الْعَبَّاسِ فَالْتَزَمَهُ فَذَكَرَ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فضحكَ وَقَالَ: «أفعَلَها؟» وَلم يأمرْ فيهِ بشيءٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3622. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक आदमी ने शराब पि तो वह मदहोश हो गया, वह रास्ते में झूमता हुआ मिला तो उसे रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ ले जाया जाने लगा, जब वह अब्बास रदियल्लाहु अन्हु के घर के बराबर पहुंचा तो वह भाग कर अब्बास रदियल्लाहु अन्हु के पास पहुँच गया और उन से चिमट गया, नबी ﷺ से इस का ज़िक्र किया गया तो आप ﷺ मुस्कुरा दिए, और फ़रमाया: “क्या उस ने यह किया ?” और आप ने उस के मुतल्लिक कुछ भी न कहा| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (4476) [و النسائی فی الکبری (5290 و ابن جریج صرح بالسماع عندہ) و صححه الحاکم (4 / 373) و وافقه الذھبی]

بَاب حد الْخمر • शराब नौशी पर हद कायम करने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٦٢٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن عُمَيْر بن سعيد النخفي قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ يَقُولُ: مَا كُنْتُ لِأُقِيمَ عَلَى أَحَدٍ حَدًّا فَيَمُوتَ فَأَجِدَ فِي نَفْسِي مِنْهُ شَيْئًا إِلَّا صَاحِبَ الْخَمْرِ فَإِنَّهُ لَوْ مَاتَ وَدَيْتُهُ وَذَلِكَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يسنه

3623. उमैर बिन सईद नखई बयान करते हैं, मैंने अली बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु को फरमाते हुए सुना: अगर में किसी शख़्स पर हद काइम करू और वह फौत हो जाए तो मैं अपने दिल में किसी किस्म का अफ़सोस नहीं करूँगा, लेकिन अगर शराब पर हद काइम करू और वह फौत हो जाए तो मैं उसकी तरफ से दियत दूंगा, यह इसलिए के रसूलुल्लाह ﷺ ने इस बारे में कोई हद मुकर्रर नहीं फरमाई| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (6778) و مسلم (39 / 1707)، (4458)

٣٦٢٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ الدَّيْلِمِيِّ قَالَ: إِنَّ عُمَرَ اسْتَشَارَ فِي حَدِّ الْخَمْرِ فَقَالَ لَهُ عَلِيٌّ: أَرَى أَنْ تَجْلِدَهُ ثَمَانِينَ جَلْدَةً فَإِنَّهُ إِذَا شَرِبَ سَكِرَ وَإِذَا سَكِرَ هَذَى وَإِذَا هذَى افْتَرى فجلدَ عمرُ رَضِي الله عَنهُ فِي حَدِّ الْخَمْرِ ثَمَانِينَ. رَوَاهُ مَالِكٌ

3624. सौरन बिन ज़ैद दयलमी बयान करते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने हद शराब के मुतल्लिक मशवरा तलब

किया तो अली रदियल्लाहु अन्हु ने उन्हें फ़रमाया: मेरा ख़याल है के आप रदियल्लाहु अन्हु से अस्सी कोड़े मारी, क्योंकि जब वह शराब पीता है तो वह मदहोश हो जाता है और जब मदहोश हो जाता है तो वह हिज़्यानी कैफियत में औल फौल बाते करता है, और जब वह औल फौल बाते करता है तो फिर इफतारपर्दाज़ी करता है, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने शराब की हद में अस्सी कोड़े मारे| (सहीह)

صحیح ، رواہ مالک (2 / 842 ح 1633) * ھذا منقطع و اسندہ الطحاوی کما فی الاستذکار (8 / 7) و سندہ حسن ، و للحدیث شواھد

بَاب مَالا يدعى على الْمَحْدُود • जिस शख्स पर हद कायम की जाए इस पर बद्दुआ करने की मुमानत

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٦٢٥ - (صَحِيح) عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أنَّ رجلا اسمُه عبدُ اللَّهِ يُلَقَّبُ حمارا كَانَ يُضْحِكُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ جَلَدَهُ فِي الشَّرَابِ فَأُتِيَ بِهِ يَوْمًا فَأَمَرَ بِهِ فَجُلِدَ فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: اللَّهُمَّ الْعَنْهُ مَا أَكْثَرَ مَا يُؤْتَى بِهِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تلعنوه فو الله مَا عَلِمْتُ أَنَّهُ يُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

3625. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी जिस का नाम अब्दुल्लाह और लक़ब हिमार था, वह नबी ﷺ को हंसाया करता था, जबकि नबी ﷺ ने शराब नौशी के जुर्म में उस पर हद नाफ़िज़ की थी, एक रोज़ इसे पेश किया गया तो आप ﷺ ने इसे कोड़े मारने का हुक्म फ़रमाया तो उसे कोड़े मारे गए, लोगों में से किसी ने कह दिया, ऐ अल्लाह! उस पर लानत फरमा, कितने ही बार इसे (शराब नौशी के जुर्म में) लाया जा चूका है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “उस पर लानत न भेजो, अल्लाह की क़सम! मैं जो जानता हूँ वह यह है कि वह अल्लाह और उस के रसूल ﷺ से मोहब्बत करता है”| (बुखारी)

رواہ البخاری (6780)

٣٦٢٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: أَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِرَجُلٍ قَدْ شَرِبَ الْخَمْرَ فَقَالَ: «اضْرِبُوهُ» فَمِنَّا الضَّارِبُ بِيَدِهِ وَالضَّارِبُ بِنَعْلِهِ وَالضَّارِبُ بِثَوْبِهِ فَلَمَّا انْصَرَفَ [ص:١٠٧ قَالَ بَعْضُ الْقَوْمِ: أَخْزَاكَ اللَّهُ قَالَ: «لَا تَقُولُوا هَكَذَا لَا تُعِينُوا عَلَيْهِ الشَّيْطَانَ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

3626. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ की खिदमत में एक आदमी लाया गया जिस ने पि

रखी थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे मारो”, हम में से कोई अपने हाथ से मारने वाला था, कोई जूतो के साथ और कोई अपने कपड़े के साथ मारने वाला था, जब वह वापस हुआ तो किसी ने कह दिया: अल्लाह तुम्हें रुसवा करे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ऐसे न कहो, उस के खिलाफ शैतान की मदद न करो”। (बुखारी)

رواه البخاری (6777)

بَاب مَالا يدعى على الْمَحْدُود • जिस शख्स पर हद कायम की जाए इस पर बद्दुआ करने की मुमानत

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٦٢٧ - (ضَعِيف) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: جَاءَ الْأَسْلَمِيُّ إِلَى نَبِيِّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَشَهِدَ عَلَى نَفْسِهِ أَنَّهُ أَصَابَ امْرَأَةً حَرَامًا أَرْبَعَ مَرَّاتٍ كُلَّ ذَلِكَ يُعْرِضُ عَنْهُ فَأَقْبَلَ فِي الْخَامِسَةِ فَقَالَ: «أَنِكْتَهَا؟» قَالَ: نَعَمْ قَالَ: «حَتَّى غَابَ ذَلِكَ مِنْكَ فِي ذَلِكَ مِنْهَا» قَالَ: نَعَمْ قَالَ: «كَمَا يَغِيبُ الْمِرْوَدُ فِي الْمُكْحُلَةِ وَالرِّشَاءُ فِي الْبِئْرِ؟» قَالَ: نَعَمْ قَالَ: «هَلْ تَدْرِي مَا الزِّنَا؟» قَالَ: نَعَمْ أَتَيْتُ مِنْهَا حَرَامًا مَا يَأْتِي الرَّجُلُ مِنْ أَهْلِهِ حَلَالًا قَالَ: «فَمَا تُرِيدُ بِهَذَا الْقَوْلِ؟» قَالَ: أُرِيدُ أَنْ تُطَهِّرَنِي فَأَمَرَ بِهِ فَرُجِم فَسَمِعَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلَيْنِ مِنْ أَصْحَابِهِ يَقُولُ أَحَدُهُمَا لِصَاحِبِهِ: انْظُرْ إِلَى هَذَا الَّذِي سَتَرَ اللَّهُ عَلَيْهِ فَلَمْ تَدَعْهُ نَفْسُهُ حَتَّى رُجِمَ رَجْمَ الْكَلْبِ فَسَكَتَ عَنْهُمَا ثُمَّ سَارَ سَاعَةً حَتَّى مَرَّ بِجِيفَةِ حِمَارٍ شَائِلٍ برجلِهِ فَقَالَ: «أينَ فلانٌ وفلانٌ؟» فَقَالَا: نَحْنُ ذَانِ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ: «انْزِلَا فَكُلَا مِنْ جِيفَةِ هَذَا الْحِمَارِ» فَقَالَا: يَا نَبِيَّ اللَّهِ مَنْ يَأْكُلُ مِنْ هَذَا؟ قَالَ: «فَمَا نِلْتُمَا مِنْ عَرْضِ أَخِيكُمَا آنِفًا أَشَدُّ مِنْ أَكْلٍ مِنْهُ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّهُ الْآنَ لَفِي أنهارِ الجنَّةِ ينغمسُ فِيهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3627. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अल सुम्मी (माज़ (र)) नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और अपने ज़ात के खिलाफ चार मर्तबा गवाही दी के उस ने एक औरत के साथ हराम काम (जीना) का इर्तिकाब किया है, आप हर मर्तबा उस से एअराज़ फरमाते रहे, पाँचवीं मर्तबा आप ﷺ ने तवज्जो फरमाई तो पूछा: “क्या तुम ने उस से जिमाअ किया है?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! फ़रमाया: “हत्ता के तुम्हारी यह चीज़ (शर्मगाह) इस औरत की इस चीज़ (शर्मगाह) में गुम हो गई”, उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस तरह सलाइ सुरमेदानी में और रस्सी कुंवो में दाखिल हो (कर गायब हो) जाती है” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम जानते हो ज़िना किया है?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! मैंने उस के साथ हराम तौर पर वह काम किया है जो आदमी हलाल तौर पर अपने अहलिया के साथ करता है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम अपने इस कौल व इकरार से क्या चाहते हो?” उस ने अर्ज़ किया, मैं चाहता हूँ कि आप मुझे पाक फरमादे, आप ने उस के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया तो उसे रजम कर दिया गया, नबी ﷺ ने अपने सहाबा में से दो आदमियों को सुना के उनमें से एक अपने साथी से कह रहा था: इस आदमी को देखो जिस की अल्लाह ने सतरपोशी की थी, उस के नफ्स ने इसे न छोड़ा हत्ता के वह कुत्ते की तरह संगसार कर दिया गया, आप ﷺ ने उन के मुतल्लिक ख़ामोशी इख़्तियार फरमाई, फिर कुछ देर चले हत्ता के आप एक मुरदार गधे के पास से गुज़रे जिस ने अपने टांग उठा रखी थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “फलां फलां शख़्स कहाँ है?” इन दोनों ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम हाज़िर है,

आप ﷺ ने फ़रमाया: “दोनों नीचे उतरो और इस मुरदार गधे का गोश्त खाओ”, उन्होंने अर्ज़ किया: अल्लाह के नबी! इसे कौन खाएगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने अभी जो अपने भाई की इज्ज़त ख़राब की वह इसे खाने से भी ज़्यादा संगीन है, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! वह तो अब जन्नत की नहरों में गोताज़नी कर रहा है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4428)

٣٦٢٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ خُزَيْمَةَ بْنِ ثَابِتٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَصَابَ ذَنْبًا أُقِيمَ عَلَيْهِ حَدُّ ذَلِكَ الذَّنْبِ فَهُوَ كفارتُه» رَوَاهُ فِي شرح السّنة

3628. खुजैमा बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने कोई गुनाह किया और इस गुनाह की हद काइम कर दी गई तो वह (हद्द) उस का कफ्फारा बन जाती है”| (हसन)

حسن ، رواه البغوی فی شرح السنة (10 / 311 ح 2594) [و احمد (5 / 214215)] * وله شاهد فی الصحیح :'' فمن اصاب من ذلک شیئاً فعوقب فی الدنیا فھو کفارة له '' فالحدیث حسن

٣٦٢٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَصَابَ حَدًّا فَعُجِّلَ عُقُوبَتَهُ فِي الدُّنْيَا فَاللَّهُ أَعْدَلُ مِنْ أَنْ يُثَنِّيَ عَلَى عَبْدِهِ الْعُقُوبَةَ فِي الْآخِرَة وَمن أَصَاب حد فستره اللَّهُ عليهِ وَعَفَا عَنْهُ فَاللَّهُ أَكْرَمُ مِنْ أَنْ يَعُودَ فِي شَيْءٍ قَدْ عَفَا عَنْهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ»» هَذَا الْبَاب خَال عَن الْفَصْل الثَّالِث

3629. अली रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस शख़्स ने मौजुब हद किसी गुनाह का इर्तिकाब किया और इसे दुनिया में उसकी सज़ा मिल गई तो अल्लाह उस से ज़्यादा आदिल है के वह अपने बंदे को आखिरत में दोबाराह सज़ा दे, और जो शख़्स किसी मौजुब हद गुनाह का इर्तिकाब करे और अल्लाह उसकी परदापोशी फरमाए और उस से दरगुज़र फरमाए, तो अल्लाह उस से ज़्यादा करीम है के वह किसी चीज़ पर मुआखिज़ा (इलज़ाम लगाना) फरमाए जिस से उस ने दरगुज़र फ़रमाया हो”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2626) و ابن ماجه (2604) * ابو اسحاق السبیعی مدلس و عنعن

هَذَا الْبَاب خَال عَن الْفَصْل الثَّالِث

यह बाब तीसरी फस्ल से खाली है|

ताअ-ज़िर का बयान • بَاب التعزيز
पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٣٦٣٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أبي بردة بن ينار عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يُجْلَدُ فَوْق عَشْرِ جَلَدَاتٍ إِلَّا فِي حد من حُدُود الله»

3630. अबू बुरुदह बिन नियार (र), नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह की हुदूद में से किसी हद के सिवा दस कोड़े से ज़्यादा न मारे जाए"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (6848) و مسلم (40 / 1708)، (4460)

ताअ-ज़िर का बयान • بَاب التعزيز
दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٣٦٣١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا ضَرَبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَتَّقِ الوجهَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3631. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जब तुम में से कोई मारे तो वह चेहरे (पर मारने) से बचा करे"| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (4493)

٣٦٣٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِذَا قَالَ الرَّجُلُ لِلرَّجُلِ: يَا يَهُودِيُّ فَاضْرِبُوهُ عِشْرِينَ وَإِذَا قَالَ: يَا مُخَنَّثُ فَاضْرِبُوهُ عِشْرِينَ وَمَنْ وَقَعَ عَلَى ذَاتِ مَحْرَمٍ فَاقْتُلُوهُ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

3632. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जब आदमी किसी (मुसलमान) आदमी से कहे: ए यहूदी! तो उसे बीस कोड़े मारो, और जब कहे ए हिजड़े! तो उसे बीस कोड़े मारो और जो शख़्स किसी मुहर्रम खातून से जिमाअ करे तो उसे क़त्ल कर दो"| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف جدا ، رواہ الترمذی (1462) * ابراھیم بن اسماعیل بن ابی حبیبة : ضعیف و داود بن حصین عن عکرمة : منکر

٣٦٣٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا وَجَدْتُمُ الرَّجُلَ قَدْ غَلَّ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَاحْرُقُوا مَتَاعَهُ وَاضْرِبُوهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث غَرِيب»» هَذَا الْبَاب خَال من الْفَصْل الثَّالِث

3633. उमर रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं, के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम ऐसा आदमी पाओ जिस ने अल्लाह की राह (माले गनीमत) में खयानत की हो तो उस का सामान जला दो और इसे मारो”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1461) و ابوداؤد (2713) * صالح بن محمد بن زائدة : ضعيف ، و الحديث ضعفه البيهقى (9 / 103) وغيره

هَذَا الْبَاب خَال عَن الْفَصْل الثَّالِث
यह बाब तीसरी फस्ल से खाली है|

بَابُ بَيَانِ الْخَمْرِ وَوَعِيدِ شَارِبِهَا • शराब और शराब नौशी की वईद का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٦٣٤ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " الْخَمْرُ مِنْ هَاتَيْنِ الشَّجرتينِ: النخلةِ والعِنَبَةِ ". رَوَاهُ مُسلم

3634. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “शराब उन दरख्तों खजूर और अंगूर से तैयार होती है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (13 / 1985)، (5142)

٣٦٣٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: خطَبَ عمرُ رَضِي الله عَنهُ عَلَى مِنْبَرَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: " إِنَّهُ قَدْ نَزَلَ تَحْرِيمُ الْخَمْرِ وَهِيَ مِنْ خَمْسَةِ أَشْيَاءَ: الْعِنَبِ وَالتَّمْرِ وَالْحِنْطَةِ والشعيرِ والعسلِ وَالْخمر مَا خامر الْعقل ". رَوَاهُ البُخَارِيّ

3635. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह ﷺ के मिम्बर पर खुत्बा दिया तो फ़रमाया: शराब की हुरमत नाज़िल हो चुकी, और वह पांच अशियाअ: अंगूर, खजूर, गंदुम, जौ

और शहद से तैयार होती है, और शराब वह है जो अक़्ल पर परदा डाल दे| (बुखारी)

رواه البخاری (5588)

٣٦٣٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: لَقَدْ حُرِّمَتِ الْخَمْرُ حِينَ حُرِّمَتْ وَمَا نَجِدُ خَمْرَ الْأَعْنَابِ إِلَّا قَلِيلًا وَعَامة خمرنا الْبُسْر وَالتَّمْر. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3636. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब शराब हराम की गई, हम अंगूरों की शराब कम पाते थे, और हमारी ज़्यादातर शराब खुश्क और ताज़ा खजूर से तैयार होती थी| (बुखारी)

رواه البخاری (5580)

٣٦٣٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْبِتْعِ وَهُوَ نَبِيذُ الْعَسَلِ فَقَالَ: «كُلُّ شَرَابٍ أَسْكَرَ فَهُوَ حَرَامٌ»

3637. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से शहद की नबिज़ के मुतल्लिक दरियाफ्त किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “हर नशावर मशरुब हराम है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5586) و مسلم (67 / 2001)، (5211)

٣٦٣٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ [ص:١٠٨] عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُّ مُسْكِرٍ خَمْرٌ وَكُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ وَمَنْ شَرِبَ الْخَمْرَ فِي الدُّنْيَا فَمَاتَ وَهُوَ يُدْمِنُهَا لَمْ يَتُبْ لَمْ يَشْرَبْهَا فِي الْآخِرَةِ» . رَوَاهُ مُسلم

3638. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर नशावर चीज़ शराब है और हर नशावर चीज़ हराम है, जिस शख़्स ने दुनिया में शराब पि और वह इसी पर काइम करते हुए तौबा किए बगैर फौत हो जाए तो वह इसे आखिरत में नहीं पिएगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (73 / 2003)، (5218)

٣٦٣٩ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَجُلًا قَدِمَ مِنَ الْيَمَنِ فَسَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ شَرَابٍ يَشْرَبُونَهُ بِأَرْضِهِمْ مِنَ الذُّرَةِ يُقَالُ لَهُ الْمِزْرُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَوَ مُسْكِرٌ هُوَ؟» قَالَ: نَعَمْ قَالَ: «كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ إِنَّ عَلَى اللَّهِ عَهْدًا لِمَنْ يَشْرَبُ الْمُسْكِرَ أَنْ يَسْقِيَهُ مِنْ طِينَةِ الْخَبَالِ» . قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا طِينَةُ الْخَبَالِ؟ قَالَ: «عَرَقُ أَهْلِ النَّارِ أَوْ عُصَارَةُ أَهْلِ النَّارِ» . رَوَاهُ مُسلم

3639. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के यमन से एक आदमी आया तो उस ने नबी ﷺ से, अपने मुल्क में जवार से तैयार होने वाली मज़र नामी पि जाने वाली शराब के मुतल्लिक दरियाफ्त किया तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “क्या यह नशावर है?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “हर नशावर चीज़ हराम है, बेशक यह बात अल्लाह के जिम्मे है की जो शख़्स नशावर चीज़ पिएंगा तो अल्लाह इसे (طينة الخبال) पिलाएगा”, सहाबा किराम ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! (طينة الخبال) क्या चीज़े है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जहन्नुमियो का पसीना या जहन्नुमियो के ज़ख्मो से बहने वाला खून और पिप”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (72 / 2002)، (5217)

٣٦٤٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ خَلِيطِ التَّمْرِ وَالْبُسْرِ وَعَنْ خَلِيطِ الزَّبِيبِ وَالتَّمْرِ وَعَنْ خَلِيطِ الزَّهْوِ وَالرُّطَبِ. وَقَالَ: «انْتَبِذُوا كُلَّ وَاحِدٍ عَلَى حِدَةٍ» . رَوَاهُ مُسلم

3640. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने ताज़ा खजूर और खुश्क खजूर को मिलाने, किशमिश और ताज़ा खजूर को मिलाने और कच्ची खजूर और ताज़ा खजूर मिलाने से मना फ़रमाया, और फ़रमाया: “उन में से हर एक की अलग अलग नबिज़ तैयार करो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (26 / 1988)، (5158)

٣٦٤١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُئِلَ عَنِ الْخَمْرِ يُتَّخَذُ خَلًّا؟ فَقَالَ: «لَا» . رَوَاهُ مُسلم

3641. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ से शराब से सिरका बनाने के मुतल्लिक दरियाफ्त किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (11 / 1983)، (5140)

٣٦٤٢ - (صَحِيح) وَعَنْ وَائِلٍ الْحَضْرَمِيِّ أَنَّ طَارِقَ بْنَ سُوَيْدٍ سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ الْخَمْرِ فَنَهَاهُ. فَقَالَ: إِنَّمَا أَصْنَعُهَا لِلدَّوَاءِ فَقَالَ: «إِنَّهُ لَيْسَ بِدَوَاءٍ وَلَكِنَّهُ دَاءٌ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

3642. वाइल हज़रमी से रिवायत है के तारिक बिन सुवैद ने नबी ﷺ से शराब के बारे में दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने उन्हें मना फरमा दिया, उन्होंने अर्ज़ किया: में उसे दवाई के लिए बनाता हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो दवाई नहीं वह तो बीमारी है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (12 / 1984)، (5141)

بَابُ بَيَانِ الْخَمْرِ وَوَعِيدِ شَارِبِهَا • शराब और शराब नौशी की वईद का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٦٤٣ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: [ص:١٠٨] «مَنْ شَرِبَ الْخَمْرَ لَمْ يَقْبَلِ اللَّهُ لَهُ صَلَاةَ أَرْبَعِينَ صَبَاحًا فَإِنْ تَابَ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِ. فَإِن عَادَ لم يقبل الله لَهُ صَلَاة أَرْبَعِينَ صَبَاحًا فَإِنْ تَابَ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِ فَإِن عَادَ لم يقبل الله لَهُ صَلَاة أَرْبَعِينَ صَبَاحًا فَإِنْ تَابَ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِ فَإِنْ عَادَ فِي الرَّابِعَةِ لَمْ يَقْبَلِ اللَّهُ لَهُ صَلَاة أَرْبَعِينَ صباحا فَإِن تَابَ لم يَتُبِ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَقَاهُ مِنْ نَهْرِ الْخَبَالِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3643. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स शराब पीता है तो अल्लाह चालीस रोज़ तक उसकी नमाज़ कबूल नहीं करता, अगर वह तौबा कर ले तो अल्लाह उसकी तौबा कबूल कर लेता है, अगर वह दोबारा पि ले तो अल्लाह चालीस रोज़ तक उसकी नमाज़ कबूल नहीं करता, अगर वह तौबा कर ले तो अल्लाह उसकी तौबा कबूल कर लेता है, अगर वह तीसरी बार पि ले तो अल्लाह उसकी चालीस रोज़ तक नमाज़ कबूल नहीं करता, अगर वह तौबा कर ले तो अल्लाह उसकी तौबा कबूल कर लेता है, अगर वह चोथी मर्तबा पि ले तो अल्लाह उसकी चालीस रोज़ तक नमाज़ कबूल नहीं करता, अगर वह तौबा करे तो अल्लाह उसकी तौबा कबूल नहीं करता, और वह इसे जहन्नुमियो के पिप की नहर से पिलाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1862 وقال : حسن) * عطاء بن السائب : اختلط فالسند ضعيف لاختلاطه ولاصل الحديث شواهد دون قوله :’’ فان تاب لم يتب الله عليه ‘‘ وهو قول منکر ، لم يصح عن رسول الله صلی الله عليه و آله وسلم

٣٦٤٤ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ النَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ عَنْ عَبْدِ الله بن عَمْرو

3644. इमाम नसई, इब्ने माजा और इमाम दारमी ने इसे अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه النسائی (8 / 317 ح 5673) و ابن ماجه (3377) و الدارمی (2 / 111 ح 2096)

٣٦٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا أَسْكَرَ كَثِيرُهُ فَقَلِيلُهُ حَرَامٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

3645. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस चीज़ की कसीर मिकदार

नशावर हो तो उसकी मुख़्तसर मिकदार भी हराम है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1865 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (2681) و ابن ماجه (3393)

٣٦٤٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا أسكرَ مِنْهُ الفرْقُ فَمِلْءُ الْكَفِّ مِنْهُ حَرَامٌ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

3646. आइशा रदियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करती हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: "जब " फर्क" (शुर्टल) नशावर हो तो उस का चुल्लू भर पीना भी हराम है"| (हसन)

حسن ، رواه احمد (6 / 131 ح 25506) و الترمذی (1866 وقال : حسن) و ابوداؤد (3687)

٣٦٤٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ مِنْ الْحِنْطَةِ خَمْرًا وَمِنَ الشَّعِيرِ خَمْرًا وَمِنَ التَّمْرِ خَمْرًا وَمِنَ الزَّبِيبِ خَمْرًا وَمِنَ الْعَسَلِ خَمْرًا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

3647. नौमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "गंदुम से शराब होती है, जौ से शराब होती है, खजूर से शराब होती है, अंगूर से भी और शहद से भी शराब होती है"| तिरमिज़ी, अबू दावुद, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1872) و ابوداؤد (3676) و ابن ماجه (3379)

٣٦٤٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي سعيدٍ الخدريِّ قَالَ: كانَ عندَنا خَمْرٌ لِيَتِيمٍ فَلَمَّا نَزَلَتِ (الْمَائِدَةُ)»» سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْهُ وَقُلْتُ: إِنَّه ليَتيمٍ فَقَالَ: «أهْريقوهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3648. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमारे पास एक यतीम बच्चे की शराब थी, जब सुरह माएदाह नाज़िल हुई तो मैंने उस के मुतल्लिक रसूलुल्लाह ﷺ से दरियाफ्त किया और मैंने अर्ज़ किया: वह यतीम की है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "इसे बहा दो"| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (1263 وقال : حسن) [وله شواهد]

٣٦٤٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ عَنْ أَبِي طَلْحَةَ: أَنَّهُ قَالَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ إِنِّي اشْتَرَيْتُ خَمْرًا لِأَيْتَامٍ فِي حِجْرِي قَالَ: «أَهْرِقِ الْخَمْرَ وَاكْسِرِ الدِّنَانَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ [ص:١٠٨ وَضَعَّفَهُ. وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ: أَنه سَأَلَهُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ أَيْتَامٍ

وَرِثُوا خَمْرًا قَالَ: «أَهْرِقْهَا» . قَالَ: أَفَلَا أَجْعَلُهَا خلاًّ؟ قَالَ: «لَا»

3649. अनस रदियल्लाहु अन्हु अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, के उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! मैंने अपने ज़ेर परवरिश यतीम बच्चो के लिए शराब खरीदी है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “शराब बहा दो और (इस के) बर्तन तोड़ दो”| तिरमिज़ी, और उन्होंने इसे जईफ करार दिया, और अबू दावुद की रिवायत में है की उन्होंने नबी ﷺ से यतीम बच्चो के विरासत में आने वाली शराब के मुतल्लिक दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे बहा दो”, उन्होंने अर्ज़ किया, क्या मैं उसे सिरका न बनालूँ? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (1293) و ابوداؤد (3675) [و اصله عند مسلم (1983) بالاختصار] * لم يصب من ضعفه ، ليث بن ابی سليم : لم ينفرد به ، بل رابعه السدی و للحديث شواهد

بَابُ بَيَانِ الْخَمْرِ وَوَعِيدِ شَارِبِهَا • शराब और शराब नौशी की वईद का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٦٥٠ - (ضَعِيف) عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ كُلِّ مُسْكِرٍ ومفتر. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3650. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हर नशावर और सुस्ती पैदा करने वाली हर चीज़ से मना फ़रमाया है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3686) * حكم بن عتيبة مدلس و عنعن

٣٦٥١ - (صَحِيح) وَعَنْ دَيْلَمٍ الْحِمْيَرِيِّ قَالَ: قُلْتُ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا بِأَرْضٍ بَارِدَةٍ وَنُعَالِجُ فِيهَا عَمَلًا شَدِيدًا وَإِنَّا نَتَّخِذُ شَرَابًا مِنْ هَذَا الْقَمْحِ نَتَقَوَّى بِهِ عَلَى أَعْمَالِنَا وَعَلَى بَرْدِ بِلَادِنَا قَالَ: «هَلْ يُسْكِرُ؟» قُلْتُ: نَعَمْ قَالَ: «فَاجْتَنِبُوهُ» قُلْتُ: إِنَّ النَّاسَ غَيْرُ تَارِكِيهِ قَالَ: «إِنْ لَمْ يَتْرُكُوهُ فقاتلوهم» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3651. दय्लम अल हिमयरीय्यी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम सर्द इलाके में रहते है और वहां मशक्कत वाला काम करते हैं, हम इस गंदुम से शराब तैयार करते हैं जिसके ज़रिए हम अपने काम और अपने इलाके की सर्दी के मुकाबले में कुव्वत हासिल करते हैं ,आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या यह नशावर है?” मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन से बचा करो”, मैंने अर्ज़

किया: लोग ईसे तर्क करने वाले नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर वह इसे न छोड़े तो उन से लड़ाई करो”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (3683)

٣٦٥٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَالْكُوبَةِ وَالْغُبَيْرَاءِ وَقَالَ: «كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3652. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने शराब, जूए, नरदा, छोटे तबले और गबराअ (शराब की किस्म) से मना फ़रमाया, और फ़रमाया: “हर नशावर चीज़ हराम है”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (3685)

٣٦٥٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ عَاقٌّ وَلَا قَمَّارٌ [ص:١٠٨ وَلَا مَنَّانٌ وَلَا مُدْمِنُ خَمْرٍ» . رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ: «وَلَا وَلَدَ زِنْيَةٍ» بَدَلَ «قمار»

3653. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वालिदेन का नाफरमान, कमार, इहसान जतलाने वाला और हमेशा शराब पीने वाला जन्नत में दाखिल नहीं होगा”| दारमी और इन्ही की एक रिवायत में कमार के बजाए वलदे ज़िना है| (हसन)

حسن دون قوله :’’ ولا قمار ‘‘ ، رواه الدارمی (2 / 112 ح 20992100) [و النسائی (8 / 318 ح 5675 وھو حدیث حسن] * قوله :’’ ولا قمار ‘‘ لم اجده و الباقی حسن

٣٦٥٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى بَعَثَنِي رَحْمَة للعالمينَ وهُدىً لِلْعَالِمِينَ وَأَمَرَنِي رَبِّي عَزَّ وَجَلَّ بِمَحْقِ الْمَعَازِفِ وَالْمَزَامِيرِ وَالْأَوْثَانِ وَالصُّلُبِ وَأَمْرِ الْجَاهِلِيَّةِ وَحَلَفَ رَبِّي عزَّ وجلَّ: بعِزَّتِي لَا يشربُ عبدٌ منْ عَبِيدِي جرعة خَمْرٍ إِلَّا سَقَيْتُهُ مِنَ الصَّدِيدِ مِثْلَهَا وَلَا يَتْرُكُهَا مِنْ مَخَافَتِي إِلَّا سَقَيْتُهُ مِنْ حِيَاضِ الْقُدس ". رَوَاهُ أَحْمد

3654. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक अल्लाह तआला ने मुझे जहांन वालो के लिए बाईसे रहमत और बाईसे हिदायत बना कर मबउस फ़रमाया, और मेरे रब ने आलात ए मौसिकी, बुतों, सिलिबो और रसुमाते जाहिलियत ख़तम करने का मुझे हुक्म फ़रमाया और मेरे रब अज्ज़वजल ने मेरी इज्ज़त की क़सम उठाकर फ़रमाया: “मेरे जिस बंदे ने शराब का एक घूंट पिया तो मैं इसी मिसल इसे पिप

पिलाऊंगा और जिस ने मेरे डर की वजह से इसे तर्क कर दिया तो में उसे शराबे तुहूर पिलाऊंगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه احمد (5 / 257 ح 22571) * فرج بن فضالة الحمصى (ضعيف) عن على بن يزيد (ضعيف جدًا) عن القاسم عنه

٣٦٥٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " ثَلَاثَةٌ قَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَنَّةَ: مُدْمِنُ الْخَمْرِ وَالْعَاقُّ وَالدَّيُّوثُ الَّذِي يُقِرُّ فِي أَهْلِهِ الْخَبَثَ ". رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيّ

3655. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह ने तीन किस्म के लोगो: हमेशा शराब पीने वाले, वालिदेन के नाफरमान और दियुस जो अपने अहल व अयाल में ज़िना बरक़रार रखने वाला हो, पर जन्नत को हराम करार दे दिया है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 69 ح 5372) و النسائى (5 / 8081 ح 2563)

٣٦٥٦ - وَعَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " ثَلَاثَةٌ لَا تَدْخُلُ الجنَّةَ: مُدْمنُ الخمرِ وقاطِعُ الرَّحِم ومصدق السحر " رَوَاهُ أَحْمد

3656. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "तीन किस्म के लोग हमेशा शराब पीने वाला, कतअ रहमी करने वाला और जादू का यकीन करने वाला जन्नत में नहीं जाएँगे"| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (4 / 399 ح 9798 مطولاً) * فيه ابو حريز عبدالله بن الحسين ضعفه الجمهور ، و للحديث شواهد ضعيفة و لبعض الحديث شواهد قوية و لكنه ضعيف بهذا السياق

٣٦٥٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مُدْمِنُ الْخَمْرِ إِنْ مَاتَ لقِيَ اللَّهَ كعابِدِ وثن» . رَوَاهُ أَحْمد

3657. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "शराब नौशी पर काइमी इख़्तियार करने वाला अगर (इसी हालत में) फौत हो जाए तो वह अल्लाह तआला से बुत के पुजारी की तरह मुलाकात करेगा"| (हसन)

حسن ، رواه احمد (1 / 272 ح 2453) * و سنده ضعيف لجهالة الراوى و الحديث الآتى شاهد له ، وله شواهد كثيرة

٣٦٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وروى ابْن مَاجَه عَن أبي هُرَيْرَة

3658. इमाम इब्ने माजा ने अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (3375)

٣٦٥٩ - (لم تتمّ دراسته) وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عبيد الله عَن أَبِيه. قَالَ: ذَكَرَ الْبُخَارِيُّ فِي التَّارِيخِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عبد الله عَن أَبِيه

3659. इमाम बय्हकी ने शौबुल ईमान में मुहम्मद बिन उबैदुल्लाह अन अबी की सनद से रिवायत किया है| और इमाम बयहकी ने कहा इमाम बुखारी ने मुहम्मद बिन उबैदुल्लाह अन अबी से तारीख में ज़िक्र किया है| (हसन)

حسن ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (5597 ، نسخة محققة : 5208 و سنده ضعيف) و البخارى فى التاريخ الكبير (1 / 129 ح 386) و انظر الحديث السابق (3658 فانه شاهد له)

٣٦٦٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي مُوسَى أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ: مَا أَبالي شربتُ الخمرَ أَو عبدْتُ هذهِ السَّارِيةَ دونَ اللَّهِ. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

3660. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह कहा करते थे: में इस बात की परवाह नहीं करता की मैं शराब पीऊं या अल्लाह के सिवा इस सुतून की पूजा कर करूं| (सहीह)

اسناده صحيح موقوف ، رواه النسائى (8 / 314 ح 5666)

अमीर चुनने और फैसला करने का बयान • كتاب الْإِمَارَة وَالْقَضَاء

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٣٦٦١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَطَاعَنِي فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ عَصَى اللَّهَ وَمَنْ يُطِعِ الْأَمِيرَ فَقَدْ أَطَاعَنِي وَمَنْ يَعْصِ الْأَمِيرَ فَقَدْ عَصَانِي وَإِنَّمَا الْإِمَامُ جُنَّةٌ يُقَاتَلُ مِنْ وَرَائِهِ وَيُتَّقَى بِهِ فَإِنْ أَمَرَ بِتَقْوَى اللَّهِ وَعَدَلَ فَإِنَّ لَهُ بِذَلِكَ أَجْرًا وَإِنْ قَالَ بِغَيْرِهِ فَإِن عَلَيْهِ مِنْهُ»

3661. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस ने मेरी इताअत की उस ने अल्लाह की इताअत की, जिस ने मेरी नाफ़रमानी की उस ने अल्लाह की नाफ़रमानी की, जिस ने अमीर की इताअत की उस ने मेरी इताअत की, और जिस ने अमीर की नाफ़रमानी की उस ने मेरी नाफ़रमानी की, और इमाम ढाल है उस के ज़ेरे साया किताल किया जाता है, और उस के ज़रिए बचा जाता है, अगर उस ने अल्लाह का तकवा इख़्तियार करने का हुक्म दिया और अदल किया तो इस वजह से उस के लिए अज़्र है, और अगर उस ने उस के अलावा कुछ कहा तो उस का गुनाह उस पर होगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2975) و مسلم (33 / 1835)، (4749)

٣٦٦٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أُمِّ الْحُصَيْنِ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنْ أُمِّرَ عَلَيْكُمْ عَبْدٌ مُجَدَّعٌ يَقُودُكُمْ بِكِتَابِ اللَّهِ فَاسْمَعُوا لَهُ وَأَطِيعُوا» . رَوَاهُ مُسلم

3662. उम्म हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर किसी नाक और कान कटे गुलाम को तुम्हारा अमीर मुकर्रर कर दिया जाए और वह अल्लाह की किताब के मुताबिक तुम्हारी रहनुमाई करे तो फिर उसकी बात सुनो और इताअत करो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (311 / 1298)، (3138)

٣٦٦٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَإِنِ اسْتُعْمِلَ عَلَيْكُمْ عَبْدٌ حَبَشِيٌّ كَأَنَّ رَأْسَهُ زَبِيبَةٌ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3663. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर किसी हब्शी गुलाम को, जिस का सर अंगूर की तरह छोटा सा हो, तुम पर आमला (गवर्नर) मुकर्रर कर दिया जाए तो उसकी बात सुनो और इताअत करो”| (बुखारी)

رواه البخاری (7142)

٣٦٦٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: [ص:١٠٨] «السَّمعُ والطاعةُ على المرءِ المسلمِ فِيمَا أحب وأكره مَا لَمْ يُؤْمَرْ بِمَعْصِيَةٍ فَإِذَا أُمِرَ بِمَعْصِيَةٍ فَلَا سَمْعَ وَلَا طَاعَةَ»

3664. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुसलमान शख़्स पर हर पसंद व नापसंद में सुनना व इताअत लाज़िम है बशर्त है की इसे नाफ़रमानी का हुक्म न दिया जाए, जब इसे नाफ़रमानी का हुक्म दिया जाए तो फिर न सुनना है और न इताअत करना है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7141) و مسلم (38 / 1839)، (4763)

٣٦٦٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا طَاعَةَ فِي مَعْصِيَةٍ إِنَّمَا الطَّاعَةُ فِي الْمَعْرُوف»

3665. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नाफ़रमानी (गूनाह के काम) में कोई इताअत नहीं, इताअत तो सिर्फ अच्छे काम (शरई उमूर) में है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7257) ومسلم (39 / 1840)، (4765)

٣٦٦٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: بَايَعْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ فِي الْعُسْرِ وَالْيُسْرِ وَالْمَنْشَطِ وَالْمَكْرَهِ وَعَلَى أَثَرَةٍ عَلَيْنَا وَعَلَى أَنْ لَا نُنَازِعَ الْأَمْرَ أَهْلَهُ وَعَلَى أَنْ نَقُولَ بِالْحَقِّ أَيْنَمَا كُنَّا لَا نَخَافُ فِي اللَّهِ لَوْمَةَ لَائِمٍ. وَفِي رِوَايَةٍ: وَعَلَى أَنْ لَا نُنَازِعَ الْأَمْرَ أَهْلَهُ إِلَّا أَنْ تَرَوْا كُفْرًا بَوَاحًا عِنْدَكُمْ مِنَ اللَّهِ فِيهِ بُرْهَانٌ

3666. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने तंगी व आसानी, निशात व नागवारी, अपने नज़र अंदाज़ किए जाने और दुसरो को तरजीह दिए जाने पर, अमीर को माज़ूल न करने पर, हर जगह हक़ बात करने पर और अल्लाह (की रज़ामंदी के मुआमले) में मलामत गिर की मलामत से न डरने पर, रसूलुल्लाह ﷺ की सुनना व इताअत इख़्तियार करने पर बैत की, और एक दूसरी रिवायत में है: जब तक हम दलील के मुताबिक अमीर में अल्लाह का वाज़ेह कुफ्र न देखते उस से दस्ते इताअत न खिचे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (70557056) و مسلم (42 / 1709)، (4461)

٣٦٦٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا إِذَا بَايَعْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ يَقُولُ لَنَا: «فِيمَا اسْتَطَعْتُمْ»

3667. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब हम सुनना व इताअत मैं रसूलुल्लाह ﷺ की बैत करते

तो आप ﷺ हमें फरमाते: “इस (मुआमले) में जिस की तुम इस्तिताअत रखो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7202) و مسلم (90 / 1867)، (4836)

٣٦٦٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «من رأى أميره يَكْرَهُهُ فَلْيَصْبِرْ فَإِنَّهُ لَيْسَ أَحَدٌ يُفَارِقُ الْجَمَاعَةَ شبْرًا فَيَمُوت إِلَّا مَاتَ ميتَة جَاهِلِيَّة»

3668. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अपने अमीर में कोई नापसंदीदा चीज़ देखे तो वह सब्र करे, क्योंकि जो शख़्स बालिश्त बराबर जमाअत से अलायेदगी इख़्तियार कर के फौत हो जाए तो वह जाहिलियत कि सी मौत मरता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری(7143) و مسلم (55 / 1849)، (4790)

٣٦٦٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ خَرَجَ مِنَ الطَّاعَةِ وَفَارَقَ الْجَمَاعَةَ فَمَاتَ مَاتَ مِيتَةً جَاهِلِيَّةً وَمَنْ قَاتَلَ تَحْتَ رَايَةٍ عِمِّيَّةٍ يَغْضَبُ لِعَصَبِيَّةٍ أَوْ يَدْعُو لِعَصَبِيَّةٍ [ص:١٠٨ أَوْ يَنْصُرُ عَصَبِيَّةً فَقُتِلَ فَقِتْلَةٌ جَاهِلِيَّةٌ وَمَنْ خَرَجَ عَلَى أُمَّتِي بِسَيْفِهِ يَضْرِبُ بَرَّهَا وَفَاجِرَهَا وَلَا يَتَحَاشَى مِنْ مُؤْمِنِهَا وَلَا يَفِي لِذِي عَهْدٍ عَهْدَهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَلَسْتُ مِنْهُ» . رَوَاهُ مُسلم

3669. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स इताअत छोड़ कर, जमाअत से अलग हो कर, फौत हो जाए तो वह जाहिलियत कि सी मौत मरता है, जो शख़्स अंधे परचम तले किताल करता है, अस्बियत की वजह से नाराज़ होता है या अस्बियत की दावत देता है, या अस्बियत की मदद करता है, और वह इस हालत में क़त्ल कर दिया जाए तो वह जाहिलियत पर क़त्ल होता है, जो शख़्स मेरी उम्मत के खिलाफ तलवार सोंट कर निकल आता है और वह इस (उम्मत) के नेक व फ़ाजिर को मारता है और वह न तो किसी मोमिन की परवाह करता है और न किसी मुआहिद की तो वह मुझ से नहीं और मैं उस से नहीं हूँ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (53 / 1848)، (4786)

٣٦٧٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ الْأَشْجَعِيِّ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «خِيَارُ أئمتكم الَّذين يحبونهم وَيُحِبُّونَكُمْ وَتُصَلُّونَ عَلَيْهِمْ وَيُصَلُّونَ عَلَيْكُمْ وَشِرَارُ أَئِمَّتِكُمُ الَّذِي تبغضونهم ويبغضونكم وتلعنوهم ويلعنوكم» قَالَ: قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَفَلَا نُنَابِذُهُمْ عِنْدَ ذَلِكَ؟ قَالَ: «لَا مَا أَقَامُوا فِيكُمُ الصَّلَاةَ لَا مَا أَقَامُوا فِيكُمُ الصَّلَاةَ أَلَا مَنْ وُلِّيَ عَلَيْهِ وَالٍ فَرَآهُ يَأْتِي شَيْئًا مِنْ مَعْصِيَةِ اللَّهِ فَلْيَكْرَهْ مَا يَأْتِي مِنْ مَعْصِيَةِ اللَّهِ وَلَا يَنْزِعَنَّ يَدًا مِنْ طَاعَةٍ» . رَوَاهُ مُسلم

3670. ऑफ बिन मालिक अशजई रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारे बेहतरीन इमाम वह है जिन्हें तुम पसंद करते हो और वह तुम्हें पसंद करते हैं, तुम उन के हक़ में दुआए करते हो और वह तुम्हारे हक़ में दुआए करते हैं, और तुम्हारे बदतरीन इमाम वह है जिन को तुम नापसंद करते हो और वह तुम्हें नापसंद करते हैं, तुम इन पर लानत भेजते हो और वह तुम पर लानत भेजते है”, रावी बयान करते हैं, हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! क्या इस वक़्त हम उन्हें माज़ुल न कर दे? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं! जब तक वह तुम में नमाज़ काइम करे, नहीं! जब तक वह तुम में नमाज़ का इह्तेमाम कराए, सुन लो! जिस पर कोई हाकिम व सरपरस्त मुकर्रर किया जाए और वह अल्लाह की किसी नाफ़रमानी का इर्तिकाब करे तो उसे चाहिए के वह अल्लाह की नाफ़रमानी को नापसंद करे और वह इताअत से दस्त कश न हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (66 / 1855)، (4805)

٣٦٧١ - (صَحِيح) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَكُونُ عَلَيْكُمْ أُمَرَاءُ تَعْرِفُونَ وَتُنْكِرُونَ فَمَنْ أَنْكَرَ فَقَدْ بَرِئَ وَمَنْ كَرِهَ فَقَدْ سَلِمَ وَلَكِنْ مَنْ رَضِيَ وَتَابَعَ» قَالُوا: أَفَلَا نُقَاتِلُهُمْ؟ قَالَ: «لَا مَا صَلَّوْا لَا مَا صَلَّوْا» أَيْ: مَنْ كَرِهَ بِقَلْبِهِ وَأنكر بِقَلْبِهِ. رَوَاهُ مُسلم

3671. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम पर ऐसे हुक्मरान होंगे की तुम उन के बाज़ अफआल को अच्छा जानोगे और बाज़ को बुरा, जिस ने इनकार किया तो वह मुदाहिनत व निफ़ाक़ से बुरी हो गया और जिस ने नापसंदगी का इज़्हार किया तो वह (वबाल से) बच गया, लेकिन जो राज़ी हो गया और उन के पीछे लगा (तो वह निफ़ाक़ वबाल में शरीक हो गया)”, सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: क्या हम इनसे किताल न करे? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं, जब तक वह नमाज़ पढ़े, नहीं, जब तक वह नमाज़ पढ़े”, यानी जिस ने अपने दिल से नापसंद किया और अपने दिल इनकार किया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (64 ، 63 / 1854)، (4801 و 4802)

٣٦٧٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ بَعْدِي أَثَرَةً وَأُمُورًا تُنْكِرُونَهَا» قَالُوا: فَمَا تَأْمُرُنَا يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «أَدُّوا إِلَيْهِم حَقهم وسلوا الله حقكم»

3672. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें फ़रमाया: “तुम अनकरीब मेरे बाद तरजीह देने को और ऐसे उमूर को देखोगे जिन्हें तुम नापसंद करते होंगे”, सहाबा रदियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप हमें क्या हुक्म फरमाते हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “उनका हक़ उन्हें दो और अपना हक़ अल्लाह से तलब करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7052) و مسلم (45 / 1843)، (4775)

٣٦٧٣ - (صَحِيح) وَعَنْ وَائِلِ بْنِ حُجْرٍ قَالَ: سَأَلَ سَلَمَةُ بْنُ يَزِيدَ الْجُعْفِيُّ رَسُولَ [ص:١٠٨ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ أَرَأَيْتَ إِنْ قَامَتْ عَلَيْنَا أُمَرَاءُ يَسْأَلُونَا حَقَّهُمْ وَيَمْنَعُونَا حَقَّنَا فَمَا تَأْمُرُنَا؟ قَالَ: «اسْمَعُوا وَأَطِيعُوا فَإِنَّمَا عَلَيْهِمْ مَا حُمِّلُوا وَعَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ» . رَوَاهُ مُسلم

3673. वाइल बिन हुज्र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सलमा बिन यज़ीद जअफी रदियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया तो अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! मुझे बताइए अगर हम पर ऐसे हुक्मरान मुकर्रर हो जाए जो अपना हक़ हम से तलब करे जबकि हमारे हक़ से हमें महरूम रखे तब आप ﷺ हमें क्या हुक्म फरमाते हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुनो और इताअत करो, जो उनकी ज़िम्मेदारी है वह उस के मुकल्लिफ है, और जो तुम्हारी ज़िम्मेदारी है तूम उस के ज़िम्मेदार व मुकल्लिफ हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (49 / 1856)، (4782)

٣٦٧٤ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «مَنْ خَلَعَ يَدًا مِنْ طَاعَةٍ لَقِيَ اللَّهَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا حُجَّةَ لَهُ. وَمَنْ مَاتَ وَلَيْسَ فِي عُنُقِهِ بَيْعَةٌ مَاتَ مِيتَةً جَاهِلِيَّةً» . رَوَاهُ مُسلم

3674. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस शख़्स ने (अमिर की) इताअत से हाथ खींच लिया तो वह रोज़ ए कियामत अल्लाह से इस हाल में मुलाकात करेगा के उस के पास कोई हुज्जत व उज़्र नहीं होगा, और जो शख़्स इस हाल में फौत हुआ की उसकी गर्दन में अमीर की बैत नहीं हो वह जाहिलियत कि सी मौत मरा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (58 / 1851)، (4793)

٣٦٧٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كَانَتْ بَنُو إِسْرَائِيلَ تَسُوسُهُمُ الْأَنْبِيَاءُ كُلَّمَا هَلَكَ نَبِيٌّ خَلَفَهُ نبيٌّ وإِنَّه لَا نبيَّ بعدِي وسيكون حلفاء فَيَكْثُرُونَ» قَالُوا: فَمَا تَأْمُرُنَا؟ قَالَ: «فُوا بَيْعَةَ الْأَوَّلِ فَالْأَوَّلِ أَعْطُوهُمْ حَقَّهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ سَائِلُهُمْ عَمَّا استرعاهم»

3675. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बनी इसराइल के उमूर की सरपरस्ती व इस्लाह अंबिया अलैहिस्सलाम किया करते थे, जब कोई नबी फौत हो जाता तो उस के बाद एक और नबी आ जाता जब के मेरे बाद कोई नबी नहीं, और अलबत्ता अनकरीब बहोत से खुलफा होंगे”, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया, आप हमें क्या हुक्म फरमाते हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम (तरतीब वार) पहले और फिर उस के बाद वाले की बैत पूरी करो, तुम उनका हक़ अदा करो, क्योंकि अल्लाह उन से इस चीज़ के बारे में सवाल करने वाला है जो उस ने उन्हें निगेहबानी व हुक्मरानी अता की है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3455) و مسلم (44 / 1842)، (4773)

٣٦٧٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا بُويِعَ لِخَلِيفَتَيْنِ فاقتُلوا الآخِرَ منهُما» . رَوَاهُ مُسلم

3676. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब दो खलीफो के लिए बैत की जाए तो उनमें से दूसरे को क़त्ल कर दो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (61 / 1853)، (4799)

٣٦٧٧ - (صَحِيح) وَعَنْ عَرْفَجَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّهُ سَيَكُونُ هَنَاتٌ وَهَنَاتٌ فَمَنْ أَرَادَ أَنْ يُفَرِّقَ أَمْرَ هَذِهِ الْأُمَّةِ وَهِيَ جَمِيعٌ فَاضْرِبُوهُ بِالسَّيْفِ كَائِنًا مَنْ كَانَ» . رَوَاهُ مُسلم

3677. अरफजत रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अनकरीब मुख्तलिफ किस्म के फसादात होंगे, जो शख़्स उम्मत के इत्तेहाद को पारह पारह करने की कोशिश करे तो उसे तलवार के साथ क़त्ल कर दो ख्वाह वह कोई हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (59 / 1852)، (4796)

٣٦٧٨ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ أَتَاكُمْ وَأَمْرُكُمْ جَمِيعٌ عَلَى رَجُلٍ وَاحِدٍ يُرِيدُ أَنْ يَشُقَّ عَصَاكُمْ أَوْ يُفَرِّقَ جماعتكم فَاقْتُلُوهُ» . رَوَاهُ مُسلم

3678. अरफजत रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: जो शख़्स तुम्हारे पास आए, जबकि तुम्हारा मुआमला शख्से वाहिद पर जमा हो और वह शख़्स तुम्हारी कुव्वत को बिखेरना या तुम्हारी जमीयत को मुन्तशर करना चाहता हो तो इसे क़त्ल कर दो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (4798)

٣٦٧٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وسلم: «من بَايَعَ إِمَامًا فَأَعْطَاهُ صَفْقَةَ يَدِهِ وَثَمَرَةَ قَلْبِهِ فَلْيُطِعْهُ إِنِ اسْتَطَاعَ فَإِنْ جَاءَ آخَرُ يُنَازِعُهُ فاضربوا عنق الآخر» . رَوَاهُ مُسلم

3679. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स किसी इमाम की बैत कर ले, उसकी इताअत इख़्तियार कर ले और वह इखलास के साथ उस के साथ लग जाए तो फिर वह मक्दोर भर उसकी इताअत करे, और फिर अगर कोई और आकर इस (इमाम अव्वल या बैत करने वाले) को हटाने की कोशिश करे तो फिर दूसरे की गर्दन उड़ा दो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (46 / 1844)، (4776)

٣٦٨٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَسْأَلِ الْإِمَارَةَ فَإِنَّكَ إِنْ أُعْطِيتَهَا عَنْ مَسْأَلَةٍ وُكِلْتَ إِلَيْهَا وَإِنْ أُعْطِيتَهَا عنْ غيرِ مَسْأَلَة أعنت عَلَيْهَا»

3680. अब्दुल रहमान बिन समुरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “अमारत तलब न करना, क्योंकि अगर तुम्हारी ख्वाहिश पर वह तुम्हें दे दी गई तो तुम उस के सुपुर्द कर दिए जाओगे, और अगर वह तुम्हारी तलब व ख्वाहिश के बगैर तुम्हें अता की गई तो फिर उस पर तुम्हारी मदद की जाएगी”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7146) و مسلم (13 / 1652)، (4281)

٣٦٨١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّكُمْ سَتَحْرِصُونَ عَلَى الْإِمَارَةِ وَسَتَكُونُ نَدَامَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَنِعْمَ الْمُرْضِعَةُ وَبِئْسَتِ الفاطمةُ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3681. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अनकरीब तुम अमारत मिलने की हरस व कोशिश करोगे, और रोज़ ए कियामत वह (तुम्हारे लिए) बाईस ए नदामत होगी, उस का मिलना अच्छा है और उस का छिन जाना बुरा है”| (बुखारी)

رواه البخارى (7148)

٣٦٨٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَا تَسْتَعْمِلُنِي؟ قَالَ: فَضَرَبَ بِيَدِهِ عَلَى مَنْكِبِي ثُمَّ قَالَ: «يَا أَبَا ذَرٍّ إِنَّكَ ضَعِيفٌ وَإِنَّهَا أَمَانَةٌ وَإِنَّهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ خِزْيٌ وَنَدَامَةٌ إِلَّا مَنْ أَخَذَهَا بِحَقِّهَا وَأَدَّى الَّذِي عَلَيْهِ فِيهَا» . وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ لَهُ: «يَا أَبَا ذَرٍّ إِنِّي أَرَاكَ ضَعِيفًا وَإِنِّي أُحِبُّ لَكَ مَا أُحِبُّ لِنَفْسِي لَا تَأَمَّرَنَّ عَلَى اثْنَيْنِ وَلَا تَوَلَّيَنَّ مَالَ يَتِيمٍ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

3682. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप मुझे आमला (गवर्नर) क्यों नहीं मुकर्रर फरमा देते? वह बयान करते हैं, आप ﷺ ने मेरे कंधे पर हाथ मार कर फ़रमाया: “अबू ज़र तुम कमज़ोर आदमी हो, जबकि वह एक अमानत है, जिस शख़्स ने इसे उस के हक़ के मुताबिक न लिया और न उसकी ज़िम्मेदारियों को निभाया तो वह रोज़ ए कियामत इस शख़्स के लिए बाईस ए रुसवाई व नदामत होगी”| एक दूसरी रिवायत में है, आप ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “अबू ज़र! मैं तुम्हें कमज़ोर समझता हूँ, मैं जो अपने लिए पसंद करता हूँ वही तुम्हारे लिए पसंद करता हूँ, तुम कभी दो आदमियों पर भी अमीर न बनना और न किसी यतीम के माल की सरपरस्ती कबूल करना”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (17 ، 16 / 1825)، (4719 و 4720)

٣٦٨٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَا وَرَجُلَانِ مِنْ بَنِي عَمِّي فَقَالَ أَحَدُهُمَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَمِّرْنَا عَلَى بَعْضِ مَا وَلَّاكَ اللَّهُ وَقَالَ الْآخَرُ مِثْلَ ذَلِكَ فَقَالَ: «إِنَّا وَاللَّهِ لَا نُوَلِّي عَلَى هَذَا الْعَمَلِ أَحَدًا سَأَلَهُ وَلَا أَحَدًا حَرَصَ عَلَيْهِ» . وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: «لَا نَسْتَعْمِلُ عَلَى عَمَلِنَا مَنْ أَرَادَهُ»

3683. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं और मेरे दो चचाज़ाद, नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो उनमें से एक ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अल्लाह ने जिन उमूर पर आप को सरपरस्त बनाया है इन में से बाज़ पर हमें अमीर मुकर्रर फरमादे, और दूसरे शख़्स ने भी इसी तरह कहा, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह की क़सम! बेशक हम इस काम पर किसी ऐसे शख़्स को अमीर नहीं बनाते जो उस का मुतालबा करे और ना ही उसकी हरस रखने वाले शख़्स को हुक्मरान बनाते है"| दूसरी रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: "हम अपने अमल पर किसी ऐसे शख़्स को आमला मुकर्रर नहीं करते जो उसकी ख्वाहिश करता है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7149 ، 2261) و مسلم (14 / 1733 ، 15 / 1733)، (4717 و 4718)

٣٦٨٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: [ص:١٠٩] «تَجِدُونَ مِنْ خَيْرِ النَّاسِ أَشَدَّهُمْ كَرَاهِيَةً لِهَذَا الْأَمْرِ حَتَّى يَقَعَ فِيهِ»

3684. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम लोगों में से इस शख़्स को बेहतरीन पाओगे जो इस अम्र (हुकूमत व अमारत) को इन्तिहाई नापसंद करता है यहाँ तक के वह उस में मुब्तिला न हो जाए"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3588) و مسلم (199 / 2526)، (6454)

٣٦٨٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «أَلا كلُّكُمْ راعٍ وكلُّكُمْ مسؤولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ فَالْإِمَامُ الَّذِي عَلَى النَّاسِ رَاعٍ وَهُوَ مسؤولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ وَالرَّجُلُ رَاعٍ عَلَى أَهْلِ بَيْتِهِ وَهُوَ مسؤولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ عَلَى بَيْتِ زَوْجِهَا وولدِهِ وَهِيَ مسؤولةٌ عَنْهُمْ وَعَبْدُ الرَّجُلِ رَاعٍ عَلَى مَالِ سَيِّدِهِ وَهُوَ مسؤولٌ عَنهُ أَلا فكلُّكُمْ راعٍ وكلكُمْ مسؤولٌ عَن رعيتِه»

3685. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "सुन लो! तुम सब निगेहबान हो और तुम सब अपने रइयत के मुतल्लिक जवाब देह हो, हुक्मरान जो लोगों का निगेहबान है वह अपने रइयत के मुतल्लिक जवाब देह है, आदमी अपने अहले खाना का निगेहबान है और वह अपने रइयत के मुतल्लिक जवाब देह है, औरत अपने खाविंद के घर और उसकी औलाद की ज़िम्मेदार है और वह उन के मुतल्लिक जवाब देह है और आदमी का गुलाम अपने आका के माल का निगेहबान है और वह उस के मुतल्लिक जवाब देह है, सुन लो! तुम सब निगेहबान हो और तुम सब अपनी रइयत के मुतल्लिक जवाब देह हो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7138) و مسلم (20 / 1829)، (4724)

٣٦٨٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يقولُ: «مَا مِنْ والٍ بلي رَعِيَّةً مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَيَمُوتُ وَهُوَ غَاشٌّ لَهُمْ إِلَّا حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ»

3686. मुअकिल बिन यस्सार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो हुक्मरान मुसलमानों के किसी मुआमलात का ज़िम्मेदार बने और वह उन से मुखलिस न हो और इसे इसी हालत में मौत आजाए तो अल्लाह ने उस पर जन्नत को हराम करार दे दिया है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7151) و مسلم (22 / 142)، (363)

٣٦٨٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَا مِنْ عَبْدٍ يَسْتَرْعِيهِ اللَّهُ رَعِيَّةً فَلَمْ يَحُطْهَا بِنَصِيحَةٍ إِلَّا لَمْ يجد رَائِحَة الْجنَّة»

3687. मुअकिल बिन यस्सार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अल्लाह जिस बंदे को किसी रइयत का निगेहबान बनाए और वह उन के साथ खैरख्वाही न करे तो वह जन्नत की खुशबू भी नहीं पाएगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7150) و مسلم (21 / 142)، (363)

٣٦٨٨ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِذِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ شرَّ الرعاءِ الحُطَمَة» . رَوَاهُ مُسلم

3688. आइज़ बिन अम्र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “बदतरीन निगेहबान, ज़ालिम शख़्स है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (23 / 1830)، (4733)

٣٦٨٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اللَّهُمَّ مَنْ وَلِيَ مِنْ أَمْرِ أُمَّتِي شَيْئًا فَشَقَّ عَلَيْهِمْ فَاشْقُقْ عَلَيْهِ وَمَنْ وَلِيَ مِنْ أَمْرِ أُمَّتِي شَيْئًا فَرَفَقَ بهم فارفُقْ بِهِ» . رَوَاهُ مُسلم

3689. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ए अल्लाह! जो शख़्स मेरी उम्मत का हुक्मरान बने और वह इन पर सख्ती करे तो तू भी उस पर सख्ती कर और जिस शख़्स को मेरी उम्मत का हुक्मरान बनाया जाए और वह इन पर नरमी करे तो तू भी उस पर नरमी कर”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (19 / 1828)، (4722)

٣٦٩٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الْمُقْسِطِينَ عِنْدَ اللَّهِ عَلَى مَنَابِرَ مِنْ نُورٍ عَنْ يَمِينِ الرَّحْمَنِ وَكِلْتَا يَدَيْهِ يمينٌ الذينَ يعدِلُونَ فِي حُكمِهم وأهليهم وَمَا ولُوا» . رَوَاهُ مُسلم

3690. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इंसाफ करने वाले अल्लाह के यहाँ रहमान के दाएं तरफ नूर के मिन्बरो पर होंगे और उसके दोनों हाथ दाएँ है, और वह लोग अपने हुक्म में, अपने अहले खाना से और अपने रइयत के मुआमलात में इंसाफ करते हैं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (18 / 1827)، (4721)

٣٦٩١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَا بَعَثَ اللَّهُ مِنْ نَبِيٍّ وَلَا اسْتَخْلَفَ مِنْ خَلِيفَةٍ إِلَّا كَانَتْ لَهُ بِطَانَتَانِ: بِطَانَةٌ تَأْمُرُهُ بِالْمَعْرُوفِ وَتَحُضُّهُ عَلَيْهِ وَبِطَانَةٌ تَأْمُرُهُ بِالشَّرِّ وَتَحُضُّهُ عَلَيْهِ وَالْمَعْصُومُ مَنْ عصمَه اللَّهُ ". رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3691. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने जिस नबी को भी मबउस फ़रमाया और जिस किसी को खलीफा मुकर्रर फ़रमाया तो उस के दो खुसूसी मशियर होते हैं, एक मशियर इसे नेकी का हुक्म देता है उसे उस पर अमादा करता है जबकि एक मशियर इसे बुराई का हुक्म देता है और इसे उस पर अमादा करता है और बचता वही है जिसे अल्लाह बचाए”| (बुखारी)

رواه البخاری (7198)

٣٦٩٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ قَيْسُ بْنُ سَعْدٍ مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَنْزِلَةِ صاحبِ الشُّرَطِ منَ الأميرِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3692. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कैस बिन साद रदियल्लाहु अन्हु का नबी ﷺ के यहाँ वह मक़ाम था जो हुक्मरान के यहाँ कोतवाल का होता है| (बुखारी)

رواه البخاری (7155)

٣٦٩٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: لَمَّا بَلَغَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ أَهْلَ فَارِسَ قَدْ مَلَّكُوا عَلَيْهِمْ بِنْتَ كِسْرَى قَالَ: «لَنْ يُفْلِحَ قَوْمٌ وَلَّوْا أَمْرَهُمُ امْرَأَةً» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3693. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ को यह खबर पहुंची के अहल ए फारस ने कीसरा की बेटी को अपना हुक्मरान बना लिया है तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो कौम कभी फलाह नहीं पाएगी जिस ने अपने उमूर किसी औरत के सुपुर्द कर दिए”| (बुखारी)

رواه البخاری (4425)

كتاب الْإِمَارَة وَالْقَضَاء • अमीर चुनने और फैसला करने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٦٩٤ - (صَحِيح) عَن الحارِثِ الْأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " آمُرُكُمْ بِخَمْسٍ: بِالْجَمَاعَةِ وَالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ وَالْهِجْرَةِ وَالْجِهَادِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَإِنَّهُ مَنْ [ص:١٠٩] خَرَجَ مِنَ الْجَمَاعَةِ قِيدَ شِبْرٍ فَقَدْ خَلَعَ رِبْقَةَ الْإِسْلَامِ مِنْ عُنُقِهِ إِلَّا أَنْ يُرَاجِعَ وَمَنْ دَعَا بِدَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ فَهُوَ مِنْ جُثَى جَهَنَّمَ وَإِنْ صَامَ وَصَلَّى وَزَعَمَ أَنَّهُ مُسْلِمٌ". رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

3694. हारिस अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मैं तुम्हें पांच चीजों: जमाअत से वाबिस्ता रहने, सुनना व इताअत, हिजरत और अल्लाह की राह में जिहाद करने का हुक्म देता हूँ, और जिस शख़्स ने बालिश्त भर जमाअत से अलायेदगी इख़्तियार की तो उस ने इस्लाम की रस्सी अपने गर्दन से उतार दी, मगर यह कि वोलौट आए, और जिस शख़्स ने जाहिलियत का नारा बुलंद किया उस का शुमार जहन्नुमियो में से होगा, अगरचे वह रोज़ा रखे और नमाज़ पढ़े और वह गुमान करे के वह मुसलमान है"| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (4 / 130 ح 17302 مختصرًا) و الترمذی (2863 وقال : حسن صحیح غریب)

٣٦٩٥ - (صَحِيح) وَعَن زِيادِ بنِ كُسَيبٍ العَدَوِيِّ قَالَ: كُنْتُ مَعَ أَبِي بَكْرَةَ تَحْتَ مِنْبَرِ ابْنِ عَامِرٍ وَهُوَ يَخْطُبُ وَعَلَيْهِ ثِيَابٌ رِقَاقٌ فَقَالَ أَبُو بِلَال: انْظُرُوا إِلَى أَمِير نايلبس ثِيَابَ الْفُسَّاقِ. فَقَالَ أَبُو بَكْرَة: اسْكُتْ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُول: «مَنْ أَهَانَ سُلْطَانَ اللَّهِ فِي الْأَرْضِ أَهَانَهُ اللَّهُ» رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

3695. ज़ियाद बिन कुसय्ब अदवी बयान करते हैं, मैं अबू बकरह के साथ इब्ने आमिर के मिम्बर के पास था जबकि इब्ने आमिर खुत्बा दे रहा था और उस ने बारीक़ लिबास पहना हुआ था, (ये देख कर) अबू बिलाल रदियल्लाहु अन्हु ने कहा: हमारे अमीर को देखो उस ने फासिको जैसे लिबास पहन रखा है, अबू बकरह ने कहा ख़ामोश हो जाओ, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जिस शख़्स ने अल्लाह के सुलतान की ज़मीन में अहानत की तो अल्लाह उसकी अहानत करेगा"| तिरमिज़ी, और उन्होंने कहा: यह हदीस हसन ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2224)

٣٦٩٦ - (صَحِيح) وَعَنِ النَّوَّاسِ بْنِ سِمْعَانَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا طَاعَةَ لِمَخْلُوقٍ فِي مَعْصِيَةِ الْخَالِقِ» . رَوَاهُ فِي شَرْحِ السّنة

3696. नव्वास बिन समआन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “खालिक की नाफ़रमानी में मखलूक की कोई इताअत नहीं”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (10 / 44 ح 2455 و سنده ضعيف) * فيه الزبرقان مجهول ، ذكره ابن حبان فى الثقات وقال : لا ادرى من هو ولا ابن من هو ؟ (4 / 265) وروى البخارى (7257) و مسلم (1840) و اللفظ له :’’ لا طاعة فى مصية الله ، انما الطاعة فى المعروف ‘‘ تقدم (3665) وهو يغنى عنه

٣٦٩٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ أَمِيرِ عَشَرَةٍ إِلا يُؤتى بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَغْلُولًا حَتَّى يُفَكَّ عَنْهُ الْعَدْلُ أَو يوبقه الْجور» . رَوَاهُ الدَّارمِيّ

3697. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दस लोगों के अमीर को भी इस हाल में लाया जाएगा के उस का हाथ गर्दन के साथ बंधा होगा हत्ता के (इस का) अदल इसे आज़ाद करा देगा, या (इस का) ज़ुल्म इसे हलाक करा देगा”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الدارمى (2 / 240 ح 2518 ، نسخة محققة : 2557) * و للحديث شواهد كثيرة

٣٦٩٨ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَيْلٌ لِلْأُمَرَاءِ وَيْلٌ لِلْعُرَفَاءِ وَيْلٌ لِلْأُمَنَاءِ لَيَتَمَنَّيَنَّ أَقْوَامٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَنَّ نَوَاصِيَهُمْ مُعَلَّقَةٌ بِالثُّرَيَّا يَتَجَلْجَلُونَ [ص:١٠٩] بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَأَنَّهُمْ لَمْ يَلُوا عَمَلًا» . رَوَاهُ فِي «شَرْحِ السُّنَّةِ» وَرَوَاهُ أَحْمد وَفِي رِوَايَته: «أنَّ ذوائِبَهُم كَانَتْ مُعَلَّقَةً بِالثُّرَيَّا يَتَذَبْذَبُونَ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ولَمْ يَكُونُوا عُمِّلوا على شَيْء»

3698. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हुक्मरान के लिए वइल (हलाकत व तबाही या जहन्नम की एक वादी) है| नाज़मीन (दर्शक) के लिए वइल है और अमानत रखने वालो के लिए हलाकत है, रोज़ ए कियामत लोग आरज़ू करेंगे के उनकी पेशानिया सरिये के साथ मुअल्लक होती वह ज़मीन व आसमान के दरमियान हरकत करते रहते लेकिन वह किसी काम के ज़िम्मेदारी व सरपरस्ती कबूल न करते”| और इमाम अहमद ने भी इसे रिवायत किया है, उनकी रिवायत में है की उन के बाल सरिये के साथ मुअल्लक होते और वह ज़मीन व आसमान के दरमियान हरकत करते रहते लेकिन उन्हें किसी काम की ज़िम्मेदारी न सोंपी जाती”| (हसन)

حسن ، رواه البغوى فى شرح السنة (10 / 5960 ح 2468) و احمد (2 / 352) [و صححه الحاكم (4 / 91 ح 7016) و ابن حبان (الموارد : 1559 و سنده حسن) وله طريق آخر عند الحاكم (4 / 191) و صححه و وافقه الذهبى و سنده حسن]

٣٦٩٩ - (ضَعِيف) وَعَنْ غَالِبٍ الْقَطَّانِ عَنْ رَجُلٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِن العرافة حق ولابد لِلنَّاسِ مِنْ عُرَفَاءَ وَلَكِنَّ الْعُرَفَاءَ فِي النَّارِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3699. गालिबुल कत्तान, एक आदमी से, और वह अपने वालिद से, और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नाज़म (बिचवान) का होना ज़रूरी है क्यूंकि नाज़मो के बगैर गुज़ार मुमकिन नहीं, लेकिन (अक्सर) नाज़म (बिचवान) जहन्नम में होंगे”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2934) * فيه غير واحد من الجمهولين

٣٧٠٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أُعِيذُكَ بِاللَّهِ مِنْ إِمَارَةِ السُّفَهَاءِ» . قَالَ: وَمَا ذَاكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «أُمَرَاءُ سَيَكُونُونَ مِنْ بَعْدِي مَنْ دَخَلَ عَلَيْهِمْ فَصَدَّقَهُمْ بِكَذِبِهِمْ وَأَعَانَهُمْ عَلَى ظُلْمِهِمْ فَلَيْسُوا مِنِّي وَلَسْتُ مِنْهُمْ وَلَنْ يَرِدُوا عليَّ الحوضَ وَمَنْ لَمْ يَدْخُلْ عَلَيْهِمْ وَلَمْ يُصَدِّقْهُمْ بِكَذِبِهِمْ وَلَمْ يُعِنْهُمْ عَلَى ظُلْمِهِمْ فَأُولَئِكَ مِنِّي وَأَنَا مِنْهُمْ وَأُولَئِكَ يَرِدُونَ عَلَيَّ الْحَوْضَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيّ

3700. काब बिन उजरत रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “मैं नादानों की अमारत से तुम्हें अल्लाह की पनाह में देता हूँ”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! वह क्या चीज़े है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “मेरे बाद कुछ हुक्मरान होंगे, जो शख़्स उन के पास जाए उनकी झूठ बयानी पर उनकी तस्दीक करे और उन के ज़ुल्म पर उनकी इआनत करे तो ऐसे लोग मुझ से नहीं है और मैं उन से नहीं हूँ और वह होज़े कौसर पर मेरे पास नहीं आएँगे, और जो शख़्स उन के पास जाए न उनकी झूठ बयानी पर उनकी तस्दीक करे और ना ही उन के ज़ुल्म पर उनकी मदद करे तो ऐसे लोग मुझ से है और मैं उन से हूँ और यही लोग हौज़ पर मेरे पास आएँगे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (614 وقال : حسن غريب) و النسائی (7 / 160 ح 4212)

٣٧٠١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ سَكَنَ الْبَادِيَةَ جَفَا وَمَنِ اتَّبَعَ الصَّيْدَ غَفَلَ وَمَنْ أَتَى السُّلْطَانَ افْتُتِنَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ: «مَنْ لَزِمَ السُّلْطَانَ افْتُتِنَ وَمَا ازْدَادَ عَبْدٌ مِنَ السُّلْطَانِ دُنُوًّا إِلَّا ازْدَادَ من اللَّهِ بُعداً»

3701. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जंगल में रहने वाला सख्त दिल होता है, शिकार का पीछा करने वाला गाफ़िल होता है और बादशाह के पास जाने वाला फितने का शिकार हो जाता है”| और अबू दावुद की रिवायत में है: “जो शख़्स बादशाह के साथ लगा रहता है तो वह फितने का शिकार हो जाता है, जिस क़दर कोई शख़्स बादशाह के करीब होता है के इसी क़दर अल्लाह से दूर हो जाता है”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (1 / 357 ح 3362) و الترمذی (2256 وقال : حسن غريب) و النسائی (7 / 195196 ح 4314) و ابوداؤد (2859) * فيه ابو موسی شيخ يمانی : جهله ابن القطان وغيره و وثقه ابن حبان و الترمذی فهو حسن الحديث وقال : ابن حجر فی التقريب :’’ مجهول من السادسة و وهم من قال انه اسرائيل بن موسی‘‘ 0 حديث : من لزم السلطان افتتن الخ رواه ابوداو7د عن ابی هريرة (2860) و فيه شيخ من الانصار : لم اعرفه (فالسند ضعيف)

٣٧٠٢ - (ضَعِيف) وَعَن المقدامِ بن معْدي كِربَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ضَرَبَ عَلَى مَنْكِبَيْهِ ثُمَّ قَالَ: «أَفْلَحْتَ يَا قُدَيْمُ إِنْ مُتَّ وَلَمْ تَكُنْ أَمِيرًا وَلَا كَاتبا وَلَا عريفا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3702. मिक्दाम बिन मअदिकरीब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने (अज़राहे मुहब्बत) उस के कंधो पर हाथ मारा, फिर फ़रमाया: “कुदय्म! अगर तुम अमिर, मुंशी और नाज़म (बिचवान) बने बगैर फौत हुए तो तुम कामियाब हुए”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2933) * صالح بن يحيى : لين ، و ابوه مستور

٣٧٠٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ صَاحِبُ مَكْسٍ» : يَعْنِي الَّذِي يَعْشُرُ النَّاسَ. رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد والدارمي

3703. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “टैक्स वसूल करने वाला (यानी वह शख़्स जो लोगों से खिलाफ शरह टेक्स वुसुल करता है) जन्नत में दाखिल नहीं होगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (4 / 143 ح 17426) و ابوداؤد (2937) و الدارمی (1 / 393 ح 1673) * محمد بن اسحاق مدلس و عنعن وله شاهد ضعيف عند احمد (4 / 109)

٣٧٠٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَحَبَّ النَّاسِ إِلَى اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَأَقْرَبَهُمْ مِنْهُ مَجْلِسًا إِمَامٌ عَادِلٌ وَإِنَّ أَبْغَضَ النَّاسِ إِلَى اللَّهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَأَشَدَّهُمْ عَذَابًا» وَفِي رِوَايَةٍ: «وَأَبْعَدَهُمْ مِنْهُ مَجْلِسًا إِمَامٌ جَائِرٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

3704. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कियामत के दिन अल्लाह के नज़दीक तमाम लोगों में महबूब तर और बुलंद मर्तबा, आदिल हाकिम होगा और उस से दूर, बदतरीन और मर्तबा में पस्त व ज़लील ज़ालिम हाकिम होगा”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (3 / 55 ح 11545 ، 3 / 22 ح 11192) و الترمذی (1329) * عطية العوفى : ضعيف مدلس

٣٧٠٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَفْضَلُ الْجِهَادِ مَنْ قَالَ كَلِمَةَ حَقٍّ عِنْدَ سُلْطَانٍ جَائِرٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

3705. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सबसे फ़ज़ीलत वाला जिहाद इस शख़्स का है जो ज़ालिम हुक्मरान के सामने कलिमा ए हक़ कहता है”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (2174 وقال : حسن غريب) و ابوداؤد (4344) و ابن ماجه (4011) * سنده ضعيف و للحديث شواهد وهوبها حسن ، و انظر الحديث الآتی (3706)

٣٧٠٦ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ

3706. इमाम अहमद और इमाम नसई ने इसे तारिक बिन शिहाब से रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه احمد (3 / 19 ح 11160 مختصرًا) و النسائی (7 / 161 ح 4214)

٣٧٠٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِالْأَمِيرِ خَيْرًا جَعَلَ لَهُ وَزِيرَ صِدْقٍ إِنْ نَسِيَ ذَكَّرَهُ وَإِنْ ذَكَرَ أَعَانَهُ. وَإِذَا أَرَادَ بِهِ غَيْرَ ذَلِكَ جَعَلَ لَهُ وَزِيرَ سُوءٍ إِنْ نَسِيَ لَمْ يُذَكِّرْهُ وَإِنْ ذَكَرَ لَمْ يُعِنْهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3707. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब अल्लाह किसी हुक्मरान के साथ भलाई का इरादा फरमाता है तो इसे सच्चा वज़ीर इनायत फरमा देता है, अगर वह भूल जाए तो वह (वज़ीर) इसे याद करा देता है और अगर इसे खुद ही याद हो तो वह उसकी मदद करता है, और जब वह उस के साथ उस के बरअक्स इरादा फरमाता है तो उस के लिए बुरा वज़ीर मुकर्रर कर देता है, अगर वह भूल जाए तो वह (वज़ीर) इसे याद नहीं कराता और अगर इसे याद हो तो फिर वह उसकी मदद नहीं करता”| (सहीह)

صحیح ، رواہ ابوداؤد (2932) و النسائی (7 / 159 ح 4209 مختصرًا)

٣٧٠٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الْأَمِيرَ إِذَا ابْتَغَى الرِّيبَةَ فِي النَّاسِ أَفْسَدَهُمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

3708. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो हुक्मरान लोगों के ऐब (कमी) तलाश करता रहता है तो वह उन्हें ख़राब कर देता है”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (4889)

٣٧٠٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُعَاوِيَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّكَ إِذَا اتَّبَعْتَ عَوْرَاتِ النَّاسِ أَفْسَدْتَهُمْ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَان»

3709. मुआविया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जब तुम लोगों के ऐब (कमी) तलाश करोगे तो तुम उन्हें ख़राब कर दोगे”| (सहीह)

صحیح ، رواہ البیھقی فی شعب الایمان (9659) [و ابوداؤد (4888) و سندہ ضعیف ولہ شاھد عند البخاری فی الادب المفرد (248) و سندہ حسن وبہ صح الحدیث]

٣٧١٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَيْفَ أَنْتُمْ وَأَئِمَّةً مِنْ بَعْدِي يَسْتَأْثِرُونَ بِهَذَا الْفَيْءِ؟» . قُلْتُ: أَمَا وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ أَضَعُ سَيْفِي عَلَى عَاتِقِي ثُمَّ أَضْرِبُ بِهِ حَتَّى أَلْقَاكَ قَالَ: «أَوَلَا أَدُلُّكَ عَلَى خَيْرٍ مِنْ ذَلِكَ؟ تَصْبِرُ حَتَّى تَلقانِي» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3710. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम इस वक़्त क्या करोगे जब मेरे बाद हुक्मरान इस माले गनीमत को अपने पास ही रख लेंगे ?” मैंने अर्ज़ किया: उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हक़ के साथ मबउस फ़रमाया! मैं अपने तलवार अपने कंधे पर रखूँगा, फिर किताल करूँगा हत्ता के आप से आ मिलु, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या मैं तुम्हें इस चीज़ से बेहतर चीज़ के मुतल्लिक न बताऊँ? सब्र करना हत्ता कि तुम मुझ से मिलो”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (4759)

كتاب الْإِمَارَة وَالْقَضَاء • अमीर चुनने और फैसला करने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٧١١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَائِشَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَتَدْرُونَ مَنِ السَّابِقُونَ إِلَى ظِلِّ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟» قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ قَالَ: «الَّذِينَ إِذَا أُعْطُوا الْحَقَّ قَبِلُوهُ وَإِذَا سُئِلُوهُ بَذَلُوهُ وَحَكَمُوا لِلنَّاسِ كحكمِهم لأنفُسِهم»

3711. आइशा रदियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करती हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम जानते हो, रोज़ ए कियामत अल्लाह अज्ज़वजल के साए की तरफ सबकत ले जाने वाले कौन होंगे ?” सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो लोग जिन्हें कलमा हक़ (पेश किया) जाता है तो वह इसे कबूल करते हैं, जब उस से हक़ बात कहने का मुतालबा किया जाता है तो इसे बयान करते हैं, और वह लोगों के लिए वही फैसला करते हैं जो वह अपने ज़ात के लिए करते हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (6 / 69 ح 24902) * عبدالله بن لهيعة مدلس و عنعن

٣٧١٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم [ص:١٠٩] يَقُول: " ثلاثةٌ أَخَافُ عَلَى أُمَّتِي: اِلاسْتِسْقَاءُ بِالْأَنْوَاءِ وَحَيْفُ السُّلْطَانِ وَتَكْذيب القدر "

3712. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मुझे अपनी उम्मत के मुतल्लिक तीन चीजों का अंदेशा है, सितारों के ज़रिए बारिश तलब करने, बादशाह का ज़ुल्म

करना और तकदीर को झुठलाना”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 90 ح 21121) * محمد بن قاسم الاسدی ضعیف ضعفه الجمهور و للحديث شواهد ضعيفة

٣٧١٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سِتَّةَ أَيَّامٍ اعْقِلْ يَا أَبَا ذَرٍّ مَا يُقَالُ لَكَ بَعْدُ» فَلَمَّا كَانَ الْيَوْمُ السَّابِعُ قَالَ: «أُوصِيكَ بِتَقْوَى اللَّهِ فِي سِرِّ أَمْرِكَ وَعَلَانِيَتِهِ وَإِذَا أَسَأْتَ فَأَحْسِنْ وَلَا تَسْأَلَنَّ أَحَدًا شَيْئًا وَإِنْ سَقَطَ سَوْطُكَ وَلَا تَقْبِضْ أَمَانَةً وَلَا تَقْضِ بَيْنَ اثْنَيْنِ»

3713. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ छे रोज़ मुझे फरमाते रहे: “अबू ज़र! जो कुछ तुझे बताया जा रहा है उसे याद कर लो”, जब उस के बाद सातवा रोज़ हुआ तो फ़रमाया: “मैं तेरे ज़ाहिरी व बातिनी उमूर में तुझे अल्लाह का तकवा इख़्तियार करने की वसीयत करता हूँ, और जब तू बुराई कर बैठें तो फिर नेकी कर, और किसी से कोई चीज़ न माँगना ख्वाह तुम्हारा कोड़ा गिर पड़े, और अमानत न रख! और दो आदमियों के दरमियान फैसला न करना”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 181 ح 21906) * فيه ابن لهيعة ضعيف لاختلاطه و للحديث سند آخر ضعيف عند احمد و الطحاوی فی شرح مشکل الآثار (1 / 39 ح 46)

٣٧١٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: «مَا مِنْ رَجُلٍ يَلِي أَمْرَ عَشَرَةٍ فَمَا فَوْقَ ذَلِكَ إِلَّا أتاهُ اللَّهُ عزَّ وجلَّ مغلولاً يومَ القيامةِ يَدُهُ إِلَى عُنُقِهِ فَكَّهُ بِرُّهُ أَوْ أَوْبَقَهُ إِثْمُهُ أَوَّلُهَا مَلَامَةٌ وَأَوْسَطُهَا نَدَامَةٌ وَآخِرُهَا خِزْيٌ يومَ القيامةِ»

3714. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस शख़्स ने दस या उस से इज़ाफ़ी (ज़्यादा) लोगों के उमूर की सरपरस्ती कबूल की तो रोज़ ए कियामत वह अल्लाह अज्ज़वजल के हुज़ूर इस हाल में पेश होगा के उस का हाथ उसकी गर्दन के साथ बंधा होगा, उसकी नेकी उसे खोल देगी या उस का गुनाह इसे हलाक कर देगा, अमारत का आगाज़ मलामत, उस का बिच बाईस ए नदामत और उस का आख़िर रोज़ ए कियामत बाईस रुसवाई होगा”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه احمد (5 / 267 ح 22656) [و الطبرانی فی مسند الشاميين (1570)] * يزيد بن ايهم هذا غير يزيد بن ابی مالک ، وهو مجهول الحال ، روی عنه جماعة و ذکره ابن حبان فی الثقات و لحديثه شاهد ضعيف عند الطبرانی فی الکبير (12 / 135 ح 12689) و الاوسط (288)

٣٧١٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُعَاوِيَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا مُعَاوِيَةُ إِنْ وُلِّيتَ أَمْرًا فَاتَّقِ اللَّهَ وَاعْدِلْ» . قَالَ: فَمَا زِلْتُ أَظُنُّ أَنِّي مُبْتَلًى بِعَمَلٍ لِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم حَتَّى ابْتليت

3715. मुआविया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुआविया अगर तुम्हें हुक्मरानी मिल जाए तो अल्लाह से डरना और अदल करना”, मुआविया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं हमेशा इस

यकीन के साथ रहा की मैं नबी ﷺ के फरमान की वजह से किसी अमल के ज़रिए आज़माया जाऊंगा हत्ता कि मैं आज़माइश से दो चार हो गया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (4 / 101 ح 17057) [و البيهقى فى دلائل النبوة (6 / 446)] * فى سماع سعيد بن عمرو بن سعيد بن العاص من معاوية رضى الله عنه نظر ، و انظر سير اعلام النبلاء (3 / 331)

٣٧١٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنْ رَأْسِ السَّبْعِينَ وَإِمَارَةِ الصِّبْيَانِ» . رَوَى الْأَحَادِيثَ السِّتَّةَ أَحْمَدُ وَرَوَى الْبَيْهَقِيُّ حَدِيثَ مُعَاوِيَةَ فِي «دَلَائِلِ النُّبُوَّة»

3716. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सत्तर की दिहाई के आगाज़ से और नौ उम्रो की हुकूमत से अल्लाह की पनाह तलब करो”| यह छे अहादीस इमाम अहमद ने रिवायत की है और इमाम बयहकी ने हदीसे मुआविया “ दलाइलुल नबुवा ” में नकल की है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 326 ح 83198320 و اخطا من ضعفه) * ابو صالح مولى ضباعة و ثقه الترمذى و ابن حبان و الذهبى فهو حسن الحديث

٣٧١٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ يَحْيَى بْنِ هَاشِمٍ عَنْ يُونُسَ بْنِ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَمَا تَكُونُونَ كَذَلِك يُؤمر عَلَيْكُم»

3717. याह्या बिन हाशिम, युनुस बिन अबी इसहाक से और वह अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जैसे तुम होगे वैसे तुम पर हुक्मरान मुकर्रर किए जाएँगे”| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7391 ، نسخة محققة : 7006) * يحيى بن هاشم : كذاب و السند مظلم ، قله شاهد موضوع عند الديلمى فى الفردوس (4918)

٣٧١٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ السُّلْطَانَ ظِلُّ اللَّهِ فِي الْأَرْضِ يَأْوِي إِلَيْهِ كُلُّ مَظْلُومٍ مِنْ عِبَادِهِ فَإِذَا عَدَلَ كَانَ لَهُ الْأَجْرُ وَعَلَى الرَّعِيَّةِ الشُّكْرُ وَإِذَا جَارَ كَانَ عَلَيْهِ الْإِصْرُ وعَلى الرّعية الصَّبْر»

3718. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक बादशाह, ज़मीन पर अल्लाह का साया है?, जहाँ उस का हर मज़लूम बंदा पनाह हासिल करता है, जब वह अदल करता है तो उस के लिए अज़र है, और रइयत के ज़िम्मा शुक्र करना है, और जब वह ज़ुल्म करता है तो उस पर गुनाह होता है और रइयत के ज़िम्मा सब्र करना है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7369 ، نسخة محققة : 6984) * فيه سعيد بن سنان الحمصى : متروك

٣٧١٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَفْضَلَ عِبَادِ اللَّهِ عِنْدَ اللَّهِ مَنْزِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِمَامٌ عَادِلٌ رَفِيقٌ وَإِنَّ شَرَّ النَّاسِ عِنْدَ اللَّهِ مَنْزِلَةً يَوْمِ الْقِيَامَةِ إِمامٌ جَائِر خرق»

3719. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक रोज़ ए कियामत अल्लाह के बंदो में से मक़ाम व मर्तबा के लिहाज़ से सबसे बेहतर शख़्स अदल करने वाला नरम मिज़ाज हुक्मरान होगा, जबकि रोज़ ए कियामत अल्लाह के नज़दीक मक़ाम व मर्तबा के लिहाज़ से बदतरीन शख़्स ज़ालिम और सख्त मिज़ाज बादशाह होगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7371 ، نسخة محققة : 6986) * فيه محمد بن ابى حميد : ضعيف ، و علل أخرى

٣٧٢٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «من نَظَرَ إِلَى أَخِيهِ نَظْرَةً يُخِيفُهُ أَخَافَهُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَى الْأَحَادِيثَ الْأَرْبَعَةَ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» وَقَالَ فِي حَدِيثِ يَحْيَى هَذَا: مُنْقَطع وَرِوَايَته ضَعِيف

3720. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने अपने भाई की तरफ डरावनी नज़र से देखा तो रोज़ ए कियामत अल्लाह इसे डराएगा”, इमाम बयहकी ने चारो अहादीस शौबुल ईमान में रिवायत की है, और याह्या से मरवी हदीस [नं. 3717] के बारे में फ़रमाया यह रिवायत मुन्कतेअ है और उसकी रिवायत जईफ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7468 ، نسخة محققة : 7064) * هذا فيه عبد الرحمن بن زياد بن انعم عن عبد الرحمن بن رافع و هما ضعيفان و رواه ابن انعم الافريقى (ضعيف) عن مسلم بن يسار عن رجل من بنى سليم الخ ، 0 حديث يحيى بن هاشم تقدم (3717)

٣٧٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَقُولُ: أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا مَالِكُ الْمُلُوكِ وَمَلِكُ الْمُلُوكِ قُلُوبُ الْمُلُوكِ فِي يَدِي وَإِنَّ الْعِبَادَ إِذَا أَطَاعُونِي حَوَّلْتُ قُلُوبَ مُلُوكِهِمْ عَلَيْهِمْ بِالرَّحْمَةِ وَالرَّأْفَةِ وَإِنَّ الْعِبَادَ إِذَا عَصَوْنِي حَوَّلْتُ قُلُوبَهُمْ بِالسُّخْطَةِ وَالنِّقْمَةِ فَسَامُوهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ فَلَا تَشْغَلُوا [ص:١٠٩ أَنْفُسَكُمْ بِالدُّعَاءِ عَلَى الْمُلُوكِ وَلَكِنِ اشْغَلُوا أَنْفُسَكُمْ بِالذِّكْرِ وَالتَّضَرُّعِ كَيْ أَكْفِيَكُمْ ملوكَكم «. رَوَاهُ أَبُو نُعَيْمٍ فِي» الْحِلْيَةِ "

3721. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह तआला फरमाता है, मैं अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं, मैं बादशाहो का मालिक और बादशाहो का बादशाह हूँ, बादशाहो का दिल मेरे हाथ में है, और जब बंदे मेरी इताअत करते हैं तो मैं उन के बादशाहो का दिल रहमत हमदर्दी के साथ इन पर फेर देता हूँ, और जब बंदे मेरी नाफ़रमानी करते हैं तो मैं उन का दिल नाराज़ी और सज़ा के साथ फेर देता हूँ फिर वह उन्हें बुरे अज़ाब से दो चार करते हैं, अपने आप को बादशाहो पर बद्दुआ करने में

मशगुल न रखो बल्कि अपने आप को ज़िक्र और तजरीअ में मसरूफ रखो ताकि में तुम्हें तुम्हारे हुक्मरानों से महफ़ूज़ करूँ”| इसे अबू नुअयम ने हिलियत में बयान किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه ابو نعيم فی حلية الاولياء (2 / 388) [و الططبرانی فی الاوسط (8957)] * فيه وهب بن راشد : متروک ، و فيه خلاص بن عمرو عن ابی الدرداء الخ

بَابُ مَا عَلَى الْوُلَاةِ مِنَ التَّيْسِيرِ • इस बात का बयान के हाकिम को रिआया पर आसानी करनी चाहिए

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٣٧٢٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا بَعَثَ أَحَدًا مِنْ أَصْحَابِهِ فِي بَعْضِ أَمْرِهِ قَالَ: «بَشِّرُوا وَلَا تُنَفِّرُوا وَيَسِّرُوا وَلَا تُعَسِّرُوا»

3722. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ अपने किसी सहाबी को किसी काम पर मबउस फरमाते, तो आप ﷺ फरमाते: “(लोगो को अज्र व सवाब की) खुशखबरी सुनाना, नफ़रत न दिलाना और आसानी पैदा करना तंगी पैदा न करना”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6124) و مسلم (6 / 1732)، (4525)

٣٧٢٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم: «يسوا وَلَا تُعَسِّرُوا وَسَكِّنُوا وَلَا تُنَفِّرُوا»

3723. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आसानी पैदा करो, तंगी पैदा न करो, सुकून पहुँचाओ, नफ़रत न दिलाओ”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6125) و مسلم (8 / 1734)، (4528)

٣٧٢٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن ابنِ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جَدَّهُ أَبَا مُوسَى وَمُعَاذًا إِلَى الْيَمَنِ فَقَالَ: «يَسِّرَا وَلَا تُعَسِّرَا وَبَشِّرَا وَلَا تُنَفِّرَا وَتَطَاوَعَا وَلَا تَخْتَلِفَا»

3724. अबू बुरदह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने उन के दादा अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु और मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु को यमन की तरफ भेजते हुए फ़रमाया: “आसानी पैदा करना, तंगी पैदा न करना,

खुशखबरी सुनाना, नफ़रत न दिलाना इत्तेफाक रखना और इख्तिलाफ पैदा न करना"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6124) و مسلم (7 / 1733)، (4526)

٣٧٢٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنَّ الْغَادِرَ يُنْصَبُ لَهُ لِوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُقَالُ: هَذِهِ غَدْرَةُ فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ "

3725. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "दगाबाज़ी करने वाले के लिए रोज़ ए कियामत झंडा नसब किया जाएगा और कहा जाएगा: यह फलां बिन फलां शख़्स की दगाबाज़ी (का नतीजा) है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6178) و مسلم (10 / 1735)، (4531)

٣٧٢٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لِكُلِّ غَادِرٍ لِوَاءٌ يومَ القيامةِ يُعرَفُ بِهِ»

3726. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "रोज़ ए कियामत हर दगाबाज़ी के लिए एक झंडा होगा जिसके ज़रिए वह पहचाना जाएगा"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3186) و مسلم (14 / 1737)، (4536)

٣٧٢٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لِكُلِّ غَادِرٍ لِوَاءٌ عِنْدَ اسْتِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «لِكُلِّ غَادِرٍ لِوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُرْفَعُ لَهُ بِقَدْرِ غَدْرِهِ أَلا وَلَا غادر أعظم مِن أميرِ عامَّةٍ» . رَوَاهُ مُسلم

3727. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "रोज़ ए कियामत हर दगाबाज़ी की पुश्त पर एक झंडा होगा"| एक दूसरी रिवायत में है: "रोज़ ए कियामत हर दगाबाज़ी के लिए एक झंडा होगा जो उसकी दगाबाज़ी के मुताबिक बुलंद किया जाएगा, सुन लो! हाकिम से बढ़कर किसी दगाबाज़ी की दगाबाज़ी नहीं"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (16 ، 15 / 1738)، (4537 و 4538)

بَابُ مَا عَلَى الْوُلَاةِ مِنَ التَّيْسِيرِ • इस बात का बयान के हाकिम को रिआया पर आसानी करनी चाहिए

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٧٢٨ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَمْرِو بْنِ مُرَّةَ أَنَّهُ قَالَ لِمُعَاوِيَةَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: « (مَنْ وَلَّاهُ اللَّهُ شَيْئًا مِنْ أَمْرِ الْمُسْلِمِينَ فَاحْتَجَبَ دُونَ حَاجَتِهِمْ وَخَلَّتِهِمْ وَفَقْرِهِمُ احْتَجَبَ اللَّهُ دُونَ حَاجَتِهِ وَخَلَّتِهِ وَفَقْرِهِ» . فَجَعَلَ مُعَاوِيَةُ رَجُلًا عَلَى حَوَائِجِ النَّاسِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ وَلِأَحْمَدَ: «أَغْلَقَ اللَّهُ لَهُ أَبْوَابَ السَّمَاءِ دُونَ خَلَّتِهِ وَحَاجَّتِهِ وَمَسْكَنَتِهِ»

3728. अमर बिन मुर्रत रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने मुआविया रदियल्लाहु अन्हु से कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अल्लाह जिस शख़्स को मुसलमानों के किसी मुआमले का सरपरस्त बना दे और वह उनकी ज़रूरत, उनकी शिकायत और उनकी हाजतो की पूरा करने में रुकावट बन जाए तो अल्लाह उसकी ज़रूरत व शिकायत और उसकी हाजत पूरी करने में रुकावट बन जाता है”, मुआविया रदियल्लाहु अन्हु ने लोगों की ज़रुरतो का ख़याल रखने के लिए एक आदमी को मुकर्रर किया| तिरमिज़ी और अहमद की एक दूसरी रिवायत में है: “अल्लाह उसकी ज़रूरत, हाजत और मुहताजी के वक़्त आसमान के दरवाज़े बंद कर देता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2948) و الترمذی (13321333 وقال : غریب) و احمد (4 / 231 ح 18196 ، 24300)

بَابُ مَا عَلَى الْوُلَاةِ مِنَ التَّيْسِيرِ • इस बात का बयान के हाकिम को रिआया पर आसानी करनी चाहिए

الْفَصْلُ الثَّالِثُ • तीसरी फस्ल

٣٧٢٩ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي الشَّمَّاخِ الْأَزْدِيِّ عَنِ ابْنِ عَمٍّ لَهُ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ أَتَى مُعَاوِيَةَ فَدَخَلَ عَلَيْهِ فَقَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ وَلِيَ مِنْ أَمْرِ النَّاسِ شَيْئًا ثُمَّ أَغْلَقَ بَابَهُ دُونَ الْمُسْلِمِينَ أَوِ الْمَظْلُومِ أَوْ ذِي [ص:١١٠ الْحَاجَةِ أَغْلَقَ اللَّهُ دُونَهُ أَبْوَابَ رَحْمَتِهِ عِنْدَ حَاجَتِهِ وَفَقْرِهِ أَفْقَرَ مَا يَكُونُ إِلَيهِ»

3729. अबू शम्माख अज़्दी अपने चचाज़ाद से जो के नबी ﷺ के सहाबी है, रिवायत करते हैं के वह मुआविया रदियल्लाहु अन्हु के पास आए और उनकी खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिसे लोगों के किसी मुआमले की ज़िम्मेदारी सोंपी जाए, फिर वह मुसलमानों या मज़लूमों या हाजत

मंदों की ज़रुरतो से दरवाज़े बंद कर ले तो अल्लाह उसकी हाजत और ज़रूरत के वक़्त, जबकि वह इन्तिहाई ज़रूरत मंद हो, अपने रहमत के दरवाज़े बंद कर लेता है”| (हसन)

حسن ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7384 ، نسخة محققة : 6999) [و احمد (3 / 441 ، 480)] * ابو الشماخ : لم اجد من و ثقه و باقى السند حسن و انظر مجمع الزوائد (5 / 23) و حسنه المنذرى فى الترغيب و الترهيب (3 / 178) وله شواهد عند ابى داود (2948) وغيره

٣٧٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ كَانَ إِذَا بَعَثَ عُمَّالَهُ شَرَطَ عَلَيْهِمْ: أَنْ لَا تَرْكَبُوا بِرْذَوْنًا وَلَا تَأْكُلُوا نَقِيًّا وَلَا تَلْبَسُوا رَقِيقًا وَلَا تُغْلِقُوا أَبْوَابَكُمْ دُونَ حَوَائِجِ النَّاسِ فَإِنْ فَعَلْتُمْ شَيْئًا مِنْ ذَلِكَ فَقَدْ حَلَّتْ بِكُمُ الْعُقُوبَةُ ثُمَّ يُشَيِّعُهُمْ. رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

3730. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के जब वह अपने उम्माल (हुक्मरान) भेजते तो इन पर शर्त काइम करते की तुम तुर्की घोड़े पर सवारी न करोगे और न छिना हुआ आता (मैदा) खाओगे, न बारीक़ (उम्दा) लिबास पहनोगे और न लोगों की ज़रुरतो को हल करने की बजाए अपने दरवाज़े बंद करोगे, अगर तुमने उनमें से कोई काम भी किया तो तुम सज़ा के मुस्तहक ठहरोगे, फिर आप उन्हें अल विदा करने के लिए उन के साथ चलते| इमाम बयहकी ने दोनों रिवायतों शौबुल ईमान में रिवायत की हैं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7394 ، نسخة محققة : 7009) * عاصم بن ابى النجود عن عمر : منقطع فيما ارى ، وله شاهد ضعيف عند احمد (5 / 238) من حديث معاذ بن جبل رضى الله عنه ، فيه شريك القاضى مدلس و عنعن و علل أخرى

بَابُ الْعَمَلِ فِي الْقَضَاءِ وَالْخَوْفِ مِنْهُ • फैसला करने और इस से डरने का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٣٧٣١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا يَقْضِيَنَّ حَكَمٌ بَيْنَ اثْنَيْنِ وَهُوَ غَضْبَانُ»

3731. अबू बकरह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “हाकिम गुस्से की हालत में दो आदमियों के दरमियान फैसला न करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7158) و مسلم (16 / 1717)، (4490)

٣٧٣٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو وَأَبِي هُرَيْرَةَ قَالَا: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا حَكَمَ الْحَاكِمُ فَاجْتَهَدَ فَأَصَابَ فَلَهُ أَجْرَانِ وَإِذَا حَكَمَ فَاجْتَهَدَ فَأَخْطَأَ فله أجرٌ واحدٌ»

3732. अब्दुल्लाह बिन उमर और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब हाकिम फैसला करते वक़्त कोशिश करे और दुरुस्त फैसला करे तो उस के लिए दो अज़्र है, और जब फैसला करे और कोशिश के बावजूद गलती हो जाए तो उस के लिए एक अज़्र है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7352) و مسلم (15 / 1716)، (4487)

بَابُ الْعَمَلِ فِي الْقَضَاءِ وَالْخَوْفِ مِنْهُ • फैसला करने और इस से डरने का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٧٣٣ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ جُعِلَ قَاضِيًا بَيْنَ النَّاسِ فَقَدْ ذُبِحَ بِغَيْرِ سِكِّينٍ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

3733. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स को लोगों का क़ाज़ी बना दिया गया गोया वह छुरी के बगैर जिबह कर दिया गया”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (2 / 230 ح 7145) و الترمذی (1325 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (3572) و ابن ماجه (2308)

٣٧٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ ابْتَغَى الْقَضَاءَ وَسَأَلَ وُكِلَ إِلَى نَفْسِهِ وَمَنْ أُكْرِهَ عَلَيْهِ أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيْهِ مَلَكًا يُسَدِّدُهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

3734. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स कज़ा का ख्वाहिशमंद हो और वह मुतालबा करे तो उसे उसकी ज़ात के सुपुर्द कर दिया जाता है, और जिसे उस पर मजबूर कर दिया जाए तो अल्लाह उस पर एक फ़रिश्ता नाज़िल फरमा देता है जो उस को दुरुस्त रखता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1324 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (3578) و ابن ماجه (2309) * عبد الاعلی الثعلبی : ضعیف ، وقال الهیشمی :’’ و الاکثر علی تضعیفه ‘‘ (مجمع الزوائد 1 / 147)

٣٧٣٥ - (صَحِيح) وَعَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " الْقُضَاةُ ثَلَاثَةٌ: وَاحِدٌ فِي الْجَنَّةِ وَاثْنَانِ فِي النَّارِ فَأَمَّا الَّذِي فِي الْجَنَّةِ فَرَجُلٌ عَرَفَ الْحَقَّ فَقَضَى بِهِ وَرَجُلٌ عَرَفَ الْحَقَّ فَجَارَ فِي الْحُكْمِ فَهُوَ فِي النَّارِ وَرَجُلٌ قَضَى لِلنَّاسِ عَلَى جَهْلٍ فَهُوَ فِي النَّارِ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

3735. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क़ाज़ी तीन किस्म के है, उनमें से एक

जन्नती और दो जहन्नमी है, वह क़ाज़ी जन्नती है जिस ने हक़ पहचान कर उस के मुताबिक फैसला किया, और वह क़ाज़ी जिस ने हक़ पहचान कर फैसला में ज़ुल्म किया तो वह जहन्नमी है, और वह आदमी जिस ने जहालत की बिना पर लोगों के दरमियान फैसला किया तो वह भी जहन्नमी है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد 3573) و ابن ماجه (2315) [و الترمذى (1322 من طريق آخر و سنده ضعيف) * خلف بن خليفة صدوق اختلط فى آخره فالسند ضعيف و للحديث شواهد ضعيفة

٣٧٣٦ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ طَلَبَ قَضَاءَ الْمُسْلِمِينَ حَتَّى يَنَالَهُ ثُمَّ غَلَبَ عَدْلُهُ جَوْرَهُ فَلَهُ الْجَنَّةُ وَمَنْ غَلَبَ جَوْرُهُ عَدْلَهُ فَلَهُ النَّارُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3736. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने मुसलमानों की कज़ाअ तलब की और वह इसे मयस्सर आ गई, फिर उस का अदल उस के ज़ुल्म पर ग़ालिब रहा तो उस के लिए जन्नत है, और जिस शख़्स के अदल पर उस का ज़ुल्म ग़ालिब रहा तो उस के लिए जहन्नम है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3575) * فيه موسى بن نجدة : مجهول

٣٧٣٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا بَعَثَهُ إِلَى الْيَمين قَالَ: «كَيْفَ تَقْضِي إِذَا عَرَضَ لَكَ قَضَاءٌ؟» قَالَ: أَقْضِي بِكِتَابِ اللَّهِ قَالَ: «فَإِنْ لَمْ تَجِدْ فِي كِتَابِ اللَّهِ؟» قَالَ: فَبِسُنَّةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «فَإِنْ لَمْ تَجِدْ فِي سُنَّةِ رَسُولِ اللَّهِ؟» قَالَ: أَجْتَهِدُ رَأْيِي وَلَا آلُو قَالَ: فَضَرَبَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى صَدْرِهِ وَقَالَ: «الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَفَّقَ رَسُولَ رَسُولِ اللَّهِ لِمَا يَرْضَى بِهِ رَسُولُ اللَّهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد والدارمي

3737. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने जब उन्हें यमन भेजा तो फ़रमाया: “जब कोई मुकदमा तुम्हारे सामने पेश आएगा तो तुम कैसे फैसला करोगे ?” उन्होंने अर्ज़ किया, मैं अल्लाह की किताब के मुताबिक फैसला करूँगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम अल्लाह की किताब में न पाओ ?” अर्ज़ किया, फिर रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत के मुताबिक, फ़रमाया: “अगर तुम रसूल अल्लाह (ﷺ) की सुन्नत में न पाओ ?” अर्ज़ किया, मैं अपने राय से इज्तीहाद करूँगा, और कोई कसर नहीं उठा रखूँगा, वह बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने (अज़राहे ख़ुशी) मेरे सिने पर हाथ मार कर फ़रमाया: “हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिस ने रसूल अल्लाह (ﷺ) के कासिद को इस चीज़ की तौफिक दी जिसे अल्लाह के रसूल! (ﷺ) पसंद फरमाते हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1337 وقال : وليس اسناده عندى بمتصل) و ابوداؤد (3593) و الدارمى (1 / 60 ح 170) * فيه ناس من اصحاب معاذ : مجاهيل كلهم ولو كان فيهم ثقة لسماه الحارث : المجهول ، وله شاهد موضوع و الحديث ضعفه البخارى ، و الدارقطنى و الترمذى وغيرهم و اخطا من صححه

٣٧٣٨ - (لم تتمّ دراسته) عَن عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الْيَمَنِ قَاضِيًا فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ

اللَّهِ تُرْسِلُنِي وَأَنَا حَدِيثُ السِّنِّ وَلَا عِلْمَ لِي بِالْقَضَاءِ؟ فَقَالَ: «إِنَّ اللَّهَ سَيَهْدِي قَلْبَكَ وَيُثَبِّتُ لِسَانَكَ إِذَا تَقَاضَى إِلَيْكَ رَجُلَانِ فَلَا تَقْضِ لِلْأَوَّلِ حَتَّى تَسْمَعَ كَلَامَ الْآخَرِ فَإِنَّهُ أَحْرَى أَنْ يَتَبَيَّنَ لَكَ الْقَضَاءُ» . قَالَ: فَمَا شَكَكْتُ فِي قَضَاءٍ بَعْدُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ أُمِّ سَلَمَةَ: «إِنَّمَا أَقْضِي بَيْنَكُمْ برأيي» فِي بَابِ «الْأَقْضِيَةِ وَالشَّهَادَاتِ» إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى

3738. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे यमन का क़ाज़ी बना कर भेजा तो मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप मुझे भेज रहे हैं जबकि मैं नौ जवान हूँ और मुझे कज़ा के बारे में इल्म भी नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक अनकरीब अल्लाह तेरे दिल की रहनुमाई करेगा और तेरी ज़ुबान को इस्तिकामत अता फरमाएगा, जब दो आदमी तेरे पास मुकदमा लेकर आए तो दूसरे फरीक की बात सुने बगैर पहले फरीक के हक़ में फैसला न करना क्योंकि यह लायक तर है के तेरे लिए कज़ा वाज़ेह हो जाए”, अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उस के बाद मुझे कज़ा में शक नहीं हुवा| और उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से मरवी हदीस: “मैं तुम्हारे दरमियान अपनी राय से फैसला करूँगा”| को हम “ बाब अल कज़ा व अशहादात” मैं इनशाअल्लाह तआला ज़िक्र करेंगे| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (1331 وقال : حسن) و ابوداؤد (3582) و ابن ماجه (2310) * شريک القاضى مدلس و عنعن و حنش بن المعتمر ضعيف ضعفه الجمهور و للحديث شواهد ضعيفة عند ابن ماجه (2310) وغيره0 حديث ام سلمة ياتى (3770)

بَابُ الْعَمَلِ فِي الْقَضَاءِ وَالْخَوْفِ مِنْهُ • फैसला करने और इस से डरने का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِثُ • तीसरी फस्ल

٣٧٣٩ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَا مِنْ حَاكِمٍ يَحْكُمُ بَيْنَ النَّاسِ إِلَّا جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَلَكٌ آخِذٌ بِقَفَاهُ ثُمَّ يَرْفَعُ رَأْسَهُ إِلَى السَّمَاءِ فَإِنْ قَالَ: أَلْقِهْ أَلْقَاهُ فِي مَهْوَاةٍ أَرْبَعِينَ خَرِيفًا ". رَوَاهُ أَحْمَدُ وَابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَان

3739. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो हाकिम भी लोगों के दरमियान फैसले करता है वह कियामत के दिन इस हाल में आएगा के एक फ़रिश्ता इसे गुद्दी से पकड़े होगा, फिर वह अपना सर आसमान की तरफ उठाएगा अगर अल्लाह तआला ने कहा: इसे फेंक दो वह इसे चालीस साल (की मुसाफ़त की गहराई) के घड़े में फेंक देगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (1 / 430 ح 4097) و ابن ماجه (2311) و البيهقى فى شعب الايمان (7533) * ضعيف ، و السند ضعفه البوصيرى

٣٧٤٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَيَأْتِيَنَّ عَلَى الْقَاضِي الْعَدْلِ يومُ القيامةِ يَتَمَنَّى أَنَّهُ لَمْ يَقْضِ بَيْنَ اثْنَيْنِ فِي تَمْرَة قطّ» . رَوَاهُ أَحْمد

3740. आइशा रदियल्लाहु अन्हा रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करती हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: “रोज़ ए कियामत आदिल क़ाज़ी भी यह आरज़ू करेगा के काश उस ने दो आदमियों के दरमियान कभी एक खजूर का भी फैसला न किया होता”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (6 / 75 ح 24968) [و صححه ابن حبان (1563) و حسنه البيهقى (مجمع الزوائد 4 / 192) واشار المنذرى الى انه حسن (الترغيب و الترهيب 3 / 157)] * فيه صالح بن سرج و ابن العلاء و ثقهما ابن حبان وحده من آئمة الجرح و التعديل فهما مستوران ، انظر بلوغ المرام بتحقيقى (1196)

٣٧٤١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدُ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ [ص:١١٠ مَعَ الْقَاضِي مَا لَمْ يَجُرْ فَإِذَا جَارَ تَخَلَّى عَنْهُ وَلَزِمَهُ الشَّيْطَانُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَفِي رِوَايَةٍ: «فَإِذَا جارَ وَكله إِلَى نَفسه»

3741. अब्दुल्लाह बिन अबी अव्फी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तक क़ाज़ी ज़ुल्म न करे तो अल्लाह उस के साथ होता है, जब वह ज़ुल्म करता है तो वह उस से अलग हो जाता है और शैतान उस के साथ लग जाता है”| और एक रिवायत में है: “जब वह ज़ुल्म करता है तो अल्लाह इसे उस के नफ्स के सुपुर्द कर देता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (1330 وقال : غريب) و ابن ماجه (2312)

٣٧٤٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ: أَنَّ مُسْلِمًا وَيَهُودِيًّا اخْتَصَمَا إِلَى عُمَرَ فَرَأَى الْحَقَّ لِلْيَهُودِيِّ فَقَضَى لَهُ عُمَرُ بِهِ فَقَالَ لَهُ الْيَهُودِيُّ: وَاللَّهِ لَقَدْ قَضَيْتَ بِالْحَقِّ فَضَرَبَهُ عُمَرُ بِالدِّرَّةِ وَقَالَ: وَمَا يُدْرِيكَ؟ فَقَالَ الْيَهُودِيُّ: وَاللَّهِ إِنَّا نَجِدُ فِي التَّوْرَاةِ أَنَّهُ لَيْسَ قَاضٍ يَقْضِي بِالْحَقِّ إِلَّا كَانَ عَنْ يَمِينِهِ مَلَكٌ وَعَنْ شِمَالِهِ مَلَكٌ يُسَدِّدَانِهِ وَيُوَفِّقَانِهِ لِلْحَقِّ مَا دَامَ مَعَ الْحَقِّ فَإِذَا تركَ الحقَّ عرَجا وترَكاهُ. رَوَاهُ مَالك

3742. सईद बिन मुसय्यब से रिवायत है के एक मुसलमान और एक यहूदी उमर रदियल्लाहु अन्हु के पास मुकदमा लेकर आए तो हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु ने महसूस किया के यहूदी हक़ पर है इसलिए उन्होंने यहूदी के हक़ में फैसला कर दिया तो यहूदी ने उन्हें कहा: अल्लाह की क़सम! आप ने हक़ के मुताबिक फैसला किया, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने इसे दुर्रह मारा और फ़रमाया: तुझे कैसे पता चला? यहूदी ने कहा: अल्लाह की क़सम! हम तौरात में (लिखा हुवा) पाते है की जो क़ाज़ी हक़ के मुताबिक फैसला करता है तो उस के दाएँ बाएँ एक एक फ़रिश्ता होता है, वह दोनों इसे हक़ के लिए दुरुस्त रखते है, और इसे हक़ देने की कोशिश करते हैं, जब वह हक़ छोड़ देता है तो वह दोनों (आसमान की तरफ) ऊपर चढ़ जाते हैं, और इसे छोड़ देते है”| (सहीह)

صحيح ، رواه مالک (الموطا 2 / 719 ح 1461 و سنده صحيح)

٣٧٤٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ مَوْهَبٍ: أَنَّ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ لِابْنِ عُمَرَ: اقْضِ بَين النَّاس قَالَ: أَو تعاقبني يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ؟ قَالَ: وَمَا تَكْرَهُ مِنْ ذَلِك وَقد كَانَ أَبوك قَاضِيا؟ قَالَ: لِأَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ كَانَ قَاضِيًا فَقَضَى بِالْعَدْلِ فَبِالْحَرِيِّ أَنْ يَنْقَلِبَ مِنْهُ كَفَافًا» . فَمَا راجعَه بعدَ ذَلِك. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3743. इब्ने मवहब से रिवायत है के उस्मान बिन अफ्फान रदियल्लाहु अन्हु ने इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से फ़रमाया: “लोगो के दरमियान क़ाज़ी बनना कबूल करो, उन्होंने कहा: अमीर अल मोमिनीन! आप मुझे मुआफ़ नहीं फरमा देते? उन्होंने ने फ़रमाया: आप इसे नापसंद क्यों करते हैं, जबकि आप के वालिद फैसले किया करते थे, उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स क़ाज़ी हो और वह इंसाफ से फैसले करे तो यह ज़्यादा लायक है के वह (काज़ी) से बराबर बराबर रह जाए”, उस्मान रदियल्लाहु अन्हु ने उस के बाद उन्हें नहीं कहा| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1322 وقال : غريب ، ليس اسناده عنده بمتصل) * فيه عبدالملک بن ابی جميلة : مجهول و السند منقطع

٣٧٤٤ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي رِوَايَةِ رَزِينٍ عَنْ نَافِعٍ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ قَالَ لِعُثْمَانَ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ لَا أَقْضِي بَيْنَ رَجُلَيْنِ: قَالَ: فَإِنَّ أَبَاكَ كَانَ يَقْضِي فَقَالَ: إِنَّ أَبِي لَوْ أُشْكِلَ عَلَيْهِ شَيْءٌ سَأَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَوْ أُشْكِلَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْءٌ سَأَلَ جِبْرِيلَ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَإِنِّي لَا أَجِدُ مَنْ أَسْأَلُهُ وَسَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ عَاذَ بِاللَّهِ فَقَدْ عَاذَ بِعَظِيمٍ» . وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: «مَنْ عَاذَ بِاللَّهِ فَأَعِيذُوهُ» . وَإِنِّي أَعُوذُ باللَّهِ أَنْ تجعلَني قاضِياً فأعْفاهُ وَقَالَ: لَا تُخبرْ أحدا

3744. रजीन की नाफेअ की सनद से मरवी रिवायत में है की इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने उस्मान रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: अमीर अल मोमिनीन! मैं दो आदमियों के दरमियान भी फैसला नहीं करूँगा, उन्होंने ने फ़रमाया: आप के वालिद तो फैसला किया करते थे, उन्होंने कहा: मेरे वालिद को किसी मसअले में अश्काल होता तो वह रसूलुल्लाह ﷺ से पूछ लिया करते थे, अगर रसूलुल्लाह ﷺ को किसी मसअले में उलझन होती तो वह जिब्राइल से पूछ लेते थे, जबकि मैं ऐसा कोई शख़्स नहीं पाता जिस से में पूछलूँ और मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस ने अल्लाह की पनाह हासिल की तो उस ने एक अज़ीम ज़ात की पनाह हासिल की”, और मैंने आप ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स अल्लाह के वास्ते से पनाह तलब कर ले तो इसे पनाह दे दो”, और मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ कि तुम मुझे क़ाज़ी बनाओ, उन्होंने उस से दरगुज़र किया और फ़रमाया किसी को न बताना| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه رزين (لم اجده) * وله شاهد عند احمد (1 / 66 ح 475) و سنده ضعيف ، فيه ابوسنان عيسى بن سنان القسملی ضعيف و شاهد آخر عند الترمذی (1322 ، انظر الحديث السابق) و سنده ضعيف

हुक्मरानों के वाज़ाईफ़ और इन की तहाईफ का बयान • بَاب رزق الْوُلَاة وهداياهم

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٣٧٤٥ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أُعْطِيكُمْ وَلَا أَمْنَعُكُمْ أَنَا قَاسِمٌ أَضَعُ حَيْثُ أُمِرْتُ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

3745. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "ना मैं तुम्हें देता हूँ और न तुम से रोकता हूँ, मैं तो तकसीम करने वाला हूँ में तो इसी जगह पर खर्च करता हूँ जहाँ के मुताल्लिक मुझे हुक्म दिया जाता है"| (बुखारी)

رواه البخارى (3117)

٣٧٤٦ - (صَحِيح) وَعَن خَوْلَةَ الْأَنْصَارِيَّةِ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ رِجَالًا يَتَخَوَّضُونَ فِي مَالِ اللَّهِ بِغَيْرِ حَقٍّ فَلَهُمُ النَّارُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

3746. खवलत अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "कुछ लोग अल्लाह के माल (बय्तुल माल) में नाहक तसरीफ करते हैं, रोज़ ए कियामत इन के लिए (जहन्नम की) आग है"| (बुखारी)

رواه البخارى (3118)

٣٧٤٧ - (صَحِيح) وَعَن عائشةَ قَالَتْ: لِمَّا اسْتُخْلِفَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: لَقَدْ عَلِمَ قَوْمِي أَنَّ حِرْفَتِي لم تكنْ تعجِزُ عَن مَؤونةِ أَهْلِي وَشُغِلْتُ بِأَمْرِ الْمُسْلِمِينَ فَسَيَأْكُلُ آلُ أَبِي بَكْرٍ مِنْ هَذَا الْمَالِ وَيَحْتَرِفُ لِلْمُسْلِمِينَ فِيهِ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3747. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु खलीफा बने तो उन्होंने ने फ़रमाया: "मेरी कौम जानती है के मेरा कारोबार मेरे अहले खाना के इखराजात के लिए काफी था, मुझे मुसलमानों के मुआमलात के हवाले से मशगुल कर दिया गया है लिहाज़ा आले अबू बक्र इस माल से खाएंगे और अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु मुसलमानों के लिए काम करेंगे| (बुखारी)

رواه البخارى (2070)

بَاب رزق الْوُلَاة وهداياهم • हुक्मरानों के वाज़ाईफ़ और इन की तहाईफ का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٧٤٨ - (صَحِيح) عَن بُرَيْدَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنِ اسْتَعْمَلْنَاهُ عَلَى عَمَلٍ فَرَزَقْنَاهُ رِزْقًا فَمَا أَخَذَ بَعْدَ ذَلِكَ فَهُوَ غُلُولٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3748. बुरैदा (र), नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “हम जिस शख़्स को किसी काम पर मुकर्रर करे और इसे तनख्वाह भी दें, और फिर उस के अलावा जो माल वह हासिल करेगा वह खयानत है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2943) [و صححه ابن خزيمة (2369) و الحاكم على شرط الشيخين (1 / 406) و وافقه الذهبى]

٣٧٤٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: عَمِلْتُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فعملني. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3749. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में (अमारत का) काम किया तो आप ने मुझे उजरत अता फरमाई| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (2944) [و مسلم (1045)]

٣٧٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مُعَاذٍ قَالَ: بَعَثَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الْيَمَنِ فَلَمَّا سِرْتُ أَرْسَلَ فِي أَثَرِي فَرُدِدْتُ فَقَالَ: «أَتَدْرِي لِمَ بَعَثْتُ إِلَيْكَ؟ لَا تُصِيبَنَّ شَيْئًا بِغَيْرِ إِذْنِي فَإِنَّهُ غُلُولٌ وَمَنْ يَغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لِهَذَا دعوتك فَامْضِ لعملك» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3750. मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे यमन की तरफ भेजा जब में चला तो आप ने मेरे पीछे कासिद भेज कर मुझे वापस बुला लिया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तू जानता है के मैंने तुम्हारी तरफ (कासिद) क्यों भेजा? (इसलिए के तुम्हें कोई वसीयत करूँ) तुम मेरी इजाज़त के बगैर कोई चीज़ न लेना, क्योंकि (अगर तुम लोगे तो) वह खयानत होगी, और जो शख़्स खयानत करेगा वह इस खयानत को रोज़ ए कियामत लेकर हाज़िर होगा, मैंने इसीलिए तुम्हें वापस बुलाया था, अब तुम अपने काम के लिए जाओ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1335 وقال : حسن غريب) * داود الاودى : ضعيف

٣٧٥١ - (صَحِيح) وَعَنِ المستَوْرِدِ بنِ شدَّادٍ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ كَانَ لَنَا عَامِلًا فَلْيَكْتَسِبْ زَوْجَةً

فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ خَادِمٌ فَلْيَكْتَسِبْ خَادِمًا فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ مَسْكَنٌ فَلْيَكْتَسِبْ مَسْكَنًا» . وَفِي رِوَايَةٍ: «مَنِ اتَّخَذَ غَيْرَ ذَلِكَ فَهُوَ غالٌّ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3751. मुसतवरिद बिन सद्दाद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स हमारा आमला (हुक्मरान/ गवर्नर) हो (और अगर उसकी बीवी न हो तो वह बैतूल माल में से हक़ महर अदा कर के) शादी कर ले, अगर उस का खादिम न हो तो वह खादिम खरीद ले और अगर उसकी रिहाइश न हो तो वह रिहाइश खरीद ले”| एक दूसरी रिवायत में है: “जिस ने उस के अलावा कुछ हासिल किया तो वह खयानत करने वाला है”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (2945)

٣٧٥٢ - (صَحِيح) وَعَن عَدِيِّ بنِ عَمِيرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ مَنْ عُمِّلَ مِنْكُمْ لَنَا عَلَى عَمَلٍ فَكَتَمَنَا مِنْهُ مِخْيَطًا فَمَا فَوْقَهُ فَهُوَ غَالٌّ يَأْتِي بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ اقْبَلْ عَنِّي عَمَلَكَ. قَالَ: «وَمَا ذَاكَ؟» قَالَ: سَمِعْتُكَ تَقُولُ: كَذَا وَكَذَا قَالَ: «وَأَنَا أَقُولُ ذَلِكَ مَنِ اسْتَعْمَلْنَاهُ عَلَى عَمَلٍ فَلْيَأْتِ بِقَلِيلِهِ وَكَثِيرِهِ فَمَا أُوتِيَ مِنْهُ أَخَذَهُ وَمَا نُهِيَ عَنْهُ انْتَهَى» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَبُو دَاوُد وَاللَّفْظ لَهُ

3752. अदि बिन उमैर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “लोगो! तुम में से जिस शख़्स को हमारे किसी काम पर आमला मुकर्रर किया जाए और वह उस में से सुई या उस से कोई छोटी बड़ी चीज़ हम से छिपा ले तो वह खयानत करने वाला है, वह रोज़ ए कियामत इसे लेकर आएगा”, (ये बात सुन कर) अंसार में से एक आदमी खड़ा हुआ और उस ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप अपने तक्विज़ करदा ज़िम्मेदारी मुझ से वापस ले लें, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो किस लिए ?” उस ने अर्ज़ किया, मैंने आप को ऐसे ऐसे फरमाते हुए सुना है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं यह कहता हूँ, हम जिस शख़्स को आमला मुकर्रर करे तो उसे चाहिए के वह हासिल होने वाली हर मुख़्तसर व कसीर चीज़ पेश करे, और फिर उस में से जो इसे दिया जाए वह इसे ले ले और जिस चीज़ से इसे रोक दिया जाए तो वह उस से रुक जाए”| मुस्लिम, अबू दावुद, और अल्फाज़ हदीस अबू दावुद के हैं | (मुस्लिम)

رواه مسلم (30 / 1833) و ابوداؤد (3581)، (4743)

٣٧٥٣ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن عَمْرو قَالَ: لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم الرَّاشِيَ وَالْمُرْتَشِيَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

3753. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने रिश्वत देने वाले और रिश्वत लेने वाले पर लानत फ़रमाई है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3580) و ابن ماجه (2313)

٣٧٥٤ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ التِّرْمِذِيّ عَنهُ وَعَن أبي هُرَيْرَة

3754. इमाम तिरमिज़ी ने अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1337 وقال : حسن صحیح)

٣٧٥٥ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» عَنِ ثَوْبَانَ وَزَادَ: «وَالرَّائِشَ» يَعْنِي الَّذِي يَمْشِي بَيْنَهُمَا

3755. इमाम अहमद ने इसे रिवायत किया है और इमाम बयहकी ने शौबुल ईमान में उसे सौबान रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| और उस में यह इज़ाफा नकल किया है (وَالرَّائِشَ) यानी जो दोनों (रिश्वत देने वाले और रिश्वत लेने वाले) के दरमियान मुआमला तेअ कराता है (इस पर भी लानत फरमाई)| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه احمد (5 / 279) و البیھقی فی شعب الایمان (5503 ، نسخة محققة : 5115) * فیه لیث بن ابی سلیم ضعیف و شیخه ابو الخطاب مجھول

٣٧٥٦ - (صَحِيح) وَعَن عَمْرِو بن العاصِ قَالَ: أَرْسَلَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنِ اجْمَعْ عَلَيْكَ سِلَاحَكَ وَثِيَابَكَ ثُمَّ ائْتِنِي» قَالَ: فَأَتَيْتُهُ وَهُوَ يَتَوَضَّأُ فَقَالَ: «يَا عَمْرُو إِنِّي أَرْسَلْتُ إِلَيْكَ لِأَبْعَثَكَ فِي وُجْهٍ يُسَلِّمُكَ اللَّهُ وَيُغَنِّمُكَ وَأَزْعَبَ لَكَ زَعْبَةً مِنَ الْمَالِ» . فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا كَانَتْ هِجْرَتِي لِلْمَالِ وَمَا كَانَتْ إِلَّا لِلَّهِ ولرسولِه قَالَ: «نِعِمَّا بِالْمَالِ الصَّالِحِ لِلرَّجُلِ الصَّالِحِ» . رَوَاهُ فِي «شَرْحِ [ص:١١٠ السُّنَّةِ» وَرَوَى أَحْمَدُ نَحْوَهُ وَفِي روايتِه: قَالَ: «نِعْمَ المالُ الصَّالحُ للرَّجُلِ الصالحِ»

3756. अमर बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे पैग़ाम भेजा की मैं अपना अस्लिहा और कपड़े जमा कर के आप ﷺ की खिदमत में पेश कर दू, वह बयान करते हैं, मैं हाज़िर ए खिदमत हुआ तो आप वुज़ू फरमा रहे थे, आप ने फ़रमाया: “अमर! मैंने तुम्हारी तरफ पैग़ाम भेजा था की मैं तुम्हें किसी मुहीम पर रवाना करू, अल्लाह तुम्हें सलामत रखे, तुम्हें माले गनीमत अता फरमाए और मैं तुम्हें कुछ माल अता करूँगा”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मेरी हिजरत माल की खातिर नहीं थी, वह तो महज़ अल्लाह और उस के रसूल की खातिर थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “हलाल माल, स्वालेह मर्द के लिए अच्छा है”| शरह सुन्ना और इमाम अहमद ने भी इसी तरह रिवायत किया है उस के अल्फाज़ यह है: “स्वालेह इंसान के लिए हलाल माल बेहतर है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البغوی فی شرح السنة (10 / 91 ح 2495) و احمد (4 / 197 ، 202 ح 17915 ، 17975)

بَاب رزق الْوُلَاة وهداياهم • हुक्मरानों के वाज़ाईफ़ और इन की तहाईफ का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٧٥٧ - (حسن) عَنْ أَبِي أُمَامَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ شَفَعَ لِأَحَدٍ شَفَاعَةً فَأَهْدَى لَهُ هَدِيَّةً عَلَيْهَا فَقَبِلَهَا فَقَدْ أَتَى بَابًا عَظِيمًا مِنْ أَبْوَابِ الرِّبَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3757. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस ने किसी की सिफारिश की, और वह इसे (सिफारिश करने) की वजह से कोई तोहफा पेश करे और सिफारिश करने वाला इस तोहफे को कबूल करे तो वह सूद के दरवाज़ो में से एक बड़े दरवाज़े में दाखिल हो गया"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3541) * عبدالله بن وهب مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة

بَاب الْأَقْضِيَة و الشهادات • फैसलों और गवाहों का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٧٥٨ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَوْ يُعْطَى النَّاسُ بِدَعْوَاهُمْ لَادَّعَى نَاسٌ دِمَاءَ رِجَالٍ وَأَمْوَالَهُمْ وَلَكِنَّ الْيَمِينَ عَلَى الْمُدَّعَى عَلَيْهِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَفِي «شَرْحِهِ لِلنَّوَوِيِّ» أَنَّهُ قَالَ: وَجَاءَ فِي رِوَايَةِ «الْبَيْهَقِيِّ» بِإِسْنَادٍ حَسَنٍ أَوْ صَحِيحٍ زِيَادَةٌ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ مَرْفُوعًا: «لَكِنَّ الْبَيِّنَةَ على المدَّعي واليمين على مَنْ أنكر»

3758. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अगर लोगों को महज़ उन के दावे की बुनियाद पर दे दिया जाए तो लोग आदमियों के खून और अमवाल का दावे करने लगेंगे, लेकिन क़सम मुदई अलई के जिम्मे है"| इमाम नववी रहिमहुल्लाह ने सहीह मुस्लिम की शरह में फ़रमाया बयहकी की रिवायत में हसन या सहीह सनद के साथ इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी मरफ़ुअ रिवायत में यह अल्फाज़ ज़्यादा हैं: "लेकिन मुदई के जिम्मे दलील व गवाही पेश करना है और जो शख़्स इनकार करे उस के जिम्मे क़सम है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (1 / 1711)، (4470) و شرح النووى (12 / 3) و السنن الكبرى للبيهقى (10 / 252)

٣٧٥٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينِ صَبْرٍ وَهُوَ فِيهَا فَاجِرٌ يَقْتَطِعُ بِهَا مَالَ امْرِئٍ مُسْلِمٍ لَقِيَ اللَّهَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ» فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَصْدِيقَ ذَلِكَ: (إِنَّ الَّذِينَ يشترونَ بعهدِ اللَّهِ وأيمانِهِمْ ثمنا قَلِيلا)»» إِلَى آخر الْآيَة

3759. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स किसी मुसलमान का माल हासिल करने के लिए जान बुझकर झूठी क़सम उठाए तो वह रोज़ ए कियामत जब अल्लाह से मुलाकात करेगा तो वह इस शख़्स पर नाराज़ होगा”| अल्लाह तआला ने उसकी तस्दीक में यह आयत नाज़िल फरमाई: “बेशक जो लोग अल्लाह के अहद और अपने कसमो के बदले में ठोड़ी सी कीमत वुसुल करते हैं ....”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4549) و مسلم (220 / 138)، (355)

٣٧٦٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ اقْتَطَعَ حَقَّ امْرِئٍ مُسْلِمٍ بِيَمِينِهِ فَقَدْ أَوْجَبَ اللَّهُ لَهُ النَّارَ وَحَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ» فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ: وَإِنْ كَانَ شَيْئًا يسير يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «وَإِنْ كَانَ قَضِيبًا من أَرَاك» . رَوَاهُ مُسلم

3760. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने अपनी कसम के ज़रिए किसी मुसलमान शख़्स का हक़ हासिल किया तो अल्लाह ने उस के लिए जहन्नम को वाजिब कर दिया और उस पर जन्नत को हराम करार दे दिया”, (ये बात सुन कर) किसी आदमी ने आप ﷺ से अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! ख्वाह वह मामूली सी चीज़ हो? आप ﷺ ने फ़रमाया: “ख्वाह वह पिलु (मिस्वाक) की शाख हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (218 / 137)، (353)

٣٧٦١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ وَإِنَّكُمْ تَخْتَصِمُونَ إِلَيَّ وَلَعَلَّ بَعْضَكُمْ أَنْ يَكُونَ أَلْحَنَ بِحُجَّتِهِ مِنْ بَعْضٍ فَأَقْضِي لَهُ عَلَى نَحْوِ مَا أَسْمَعُ مِنْهُ فَمَنْ قَضَيْتُ لَهُ بِشَيْءٍ مِنْ حَقِّ أَخِيهِ فَلَا يَأْخُذَنَّهُ فَإِنَّمَا أَقْطَعُ لَهُ قِطْعَةً مِنَ النَّار»

3761. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं भी एक इंसान हूँ, तुम अपने मुकदमात मेरे पास लाते हो, और मुमकिन है के तुम में से कोई अपने दलील दूसरे की निस्बत ज़्यादा फ़साहत के साथ पेश कर ले और मैं जो उस से सुनु उस के हक़ में फैसला कर दूँ, जिस शख़्स को उस के मुसलमान भाई के हक़ में से कोई चीज़ दे दि जाए तो वह इसे हासिल न करे, (गोया इस तरह) में उसे (जहन्नम की) आग का एक टुकड़ा दे रहा हूँ”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6967) و مسلم (4 / 1713)، (4473)

٣٧٦٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَبْغَضَ الرِّجَالِ إِلَى اللَّهِ الْأَلَدُّ الخَصِمُ»

3762. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सख्त झगड़ालू शख़्स अल्लाह के नज़दीक इन्तिहाई नापसंदीदा शख़्स है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2457) و مسلم (5 / 2668)، (6780)

٣٧٦٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم قضى بِيَمِين وَشَاهد. رَوَاهُ مُسلم

3763. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने क़सम और एक गवाह के साथ फैसला किया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (3 / 1712)، (4472)

٣٧٦٤ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَائِلٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ مِنْ حَضْرَمَوْتَ وَرَجُلٌ مِنْ كِنْدَةَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ الْحَضْرَمِيُّ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ هَذَا غَلَبَنِي عَلَى أَرْضٍ لِي فَقَالَ الْكِنْدِيُّ: هِيَ أَرْضِي وَفِي يَدِي لَيْسَ لَهُ فِيهَا حَقٌّ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلْحَضْرَمِيِّ: «أَلَكَ بَيِّنَةٌ؟» قَالَ: لَا قَالَ: «فَلَكَ يَمِينُهُ» قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ الرَّجُلَ فَاجِرٌ لَا يُبَالِي عَلَى مَا حَلَفَ عَلَيْهِ وَلَيْسَ يَتَوَرَّعُ منْ شيءٍ قَالَ: «ليسَ لكَ مِنْهُ إِلَّا ذَلِكَ» . فَانْطَلَقَ لِيَحْلِفَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا [ص:١١١ أَدْبَرَ: «لَئِنْ حَلَفَ عَلَى مَالِهِ لِيَأْكُلَهُ ظُلْمًا لَيَلْقَيَنَّ اللَّهَ وَهُوَ عَنهُ معرض» . رَوَاهُ مُسلم

3764. अल्कमा बिन वाइल अपने वालिद से रिवायत करते हैं, एक आदमी हज़्र मव्त से और एक आदमी किन्द्त से नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो हज़्रमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! इस शख़्स ने मेरी ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया है, किंडिय ने अर्ज़ किया, यह ज़मीन मेरी है और मेरे कब्ज़े में है, इस का उस पर कोई हक़ नहीं, नबी ﷺ ने हज़्रमी से फ़रमाया: “क्या तुम्हारे पास कोई दलील है?” उस ने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम उस से क़सम ले लो”, उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! वह तो एक फ़ाजिर शख़्स है, वह क़सम की कोई परवाह नहीं करता है और न किसी चीज़ से परहेज़ करता है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हें उस से यही कुछ मिल सकता है” जब वह (किंडिय) क़सम खाने चला तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर उस ने उस का नाहक माल खाने के लिए क़सम उठाई तो यह अल्लाह से इस हाल में मुलाकात करेगा के वह उस से एअराज़ फरमाएगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (223 / 139)، (358)

٣٧٦٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنِ ادَّعَى مَا لَيْسَ لَهُ فَلَيْسَ مِنَّا وَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

3765. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस ने किसी ऐसी

चिज़ का दावा किया जो के उसकी नहीं तो वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (112 / 61)، (217)

٣٧٦٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِخَيْرِ الشُّهَدَاءِ؟ الَّذِي يَأْتِي بشهادتِه قبلَ أنْ يسْأَلهَا» . رَوَاهُ مُسلم

3766. ज़ैद बिन खालिद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क्या मैं तुम्हें बेहतरीन गवाह के मुतल्लिक न बताऊँ? यह वह है जो इस (गवाही) के तलब किए जाने से पहले अपने गवाही पेश कर दे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (19 / 1719)، (4494)

٣٧٦٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَيْرُ النَّاسِ قَرْنِي ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ ثُمَّ يَجِيءُ قَوْمٌ تَسبِقُ شَهَادَة أحدِهِمْ يَمِينه وَيَمِينه شَهَادَته»

3767. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरे दौर के लोग (सहाबा किराम) सबसे बेहतर है, फिर वह लोग जो उन के साथ है (ताबियिन) और फिर वह जो उन के साथ है, फिर कुछ ऐसे लोग आएँगे के उनमें से किसी की गवाही उसकी क़सम पर और उसकी क़सम उसकी गवाही पर सबकत ले जाएगी”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3651) و مسلم (212 / 2533)، (6472)

٣٧٦٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَرَضَ عَلَى قَوْمٍ الْيَمِينَ فَأَسْرَعُوا فَأَمَرَ أَنْ يُسْهَمَ بَيْنَهُمْ فِي اليَمينِ أَيُّهُمْ يحْلِفُ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3768. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने एक कौम पर क़सम पेश की तो उन्होंने (कसम उठाने में) जल्दी की तो आप ﷺ ने हुक्म फ़रमाया के क़सम के बारे में उन के दरमियान कुरा अन्दाज़ी की जाए के उनमें से कौन हलफ उठाएगा| (बुखारी)

رواه البخارى (2674)

फैसलों और गवाहों का बयान • بَاب الْأَقْضِيَة والشهادات

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٣٧٦٩ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْبَيِّنَةُ عَلَى الْمُدَّعِي وَالْيَمِينُ عَلَى الْمُدَّعَى عَلَيْهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3769. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ ने फ़रमाया: "गवाह पेश करना मुदई के जिम्मे है और क़सम मुदई अलई के जिम्मे है"| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (1341) [وله شواهد]

٣٧٧٠ - (حَسَنٌ) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فِي رَجُلَيْنِ اخْتَصَمَا إِلَيْهِ فِي مَوَارِيثَ لَمْ تَكُنْ لَهُمَا بَيِّنَةٌ إِلَّا دَعْوَاهُمَا فَقَالَ: «مَنْ قَضَيْتُ لَهُ [ص:١١١ بِشَيْءٍ مِنْ حَقِّ أَخِيهِ فَإِنَّمَا أَقْطَعُ لَهُ قِطْعَةً مِنَ النَّارِ» . فَقَالَ الرَّجُلَانِ: كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ حَقِّي هَذَا لِصَاحِبِي فَقَالَ: «لَا وَلَكِنِ اذْهَبَا فَاقْتَسِمَا وَتَوَخَّيَا الْحَقَّ ثُمَّ اسْتَهِمَا ثُمَّ لْيُحَلِّلْ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْكُمَا صَاحِبَهُ» . وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: «إِنَّمَا أَقْضِي بَيْنَكُمَا برأيي فِيمَا لم يُنزلْ عليَّ فِيهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3770. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा दो आदमियों के बारे में नबी ﷺ से रिवायत करती हैं, जिन्होंने मीरास के मुतल्लिक आप की खिदमत में मुकदमा पेश किया, इन दोनों के पास कोई दलील व गवाही नहीं थी, इन दोनों का महज़ दावा ही था, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं जिस शख़्स को उस के (मुसलमान) भाई के हक़ में से कुछ दे दू तो (हक़ीकत में) मैं उसे (जहन्नम की) आग का एक टुकड़ा काट कर दे रहा हूँ", (ये सुन कर) दोनों में हर एक अर्ज़ करने लगा अल्लाह के रसूल! मेरा यह हक़ मेरे साथी का है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "(ऐसे) नहीं? तुम दोनों जाओ और इंसाफ के तकाज़े पुरे करते हुए तकसीम कर लो, फिर दोनों कुरा अन्दाज़ी करो फिर तुम दोनों में से हर एक अपना हिस्सा अपने साथी के लिए हलाल करार दे"| दूसरी रिवायत में है फ़रमाया: "इस चीज़ के बारे में मुझ पर कोई चीज़ नाज़िल नहीं हुई इसलिए में तुम्हारे दरमियान अपने राय से फैसला करता हूँ"| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (3584 ، 3585)

٣٧٧١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن جابرِ بن عبدِ الله: أَنَّ رَجُلَيْنِ تَدَاعَيَا دَابَّةً فَأَقَامَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا الْبَيِّنَةَ أَنَّهَا دَابَّتُهُ نَتَجَهَا فَقَضَى بِهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلَّذِي فِي يدِهِ. رَوَاهُ فِي «شرح السّنة»

3771. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के दो आदमियों ने एक चोपाये पर दावा किया, और उनमें से हर एक ने गवाह पेश किया के उस ने अपने चोपाये को जफ्ती कराया है, रसूलुल्लाह ﷺ ने उस के मुतल्लिक

इस शख़्स के हक़ में फैसला फ़रमाया जिसके वह (कब्जे) में था| (मौज़ू)

اسناده موضوع ، رواه البغوی فی شرح السنة (10 / 106 ح 2504) [و الشافعی فی الام (2 / 238)] * فیه ابراهیم بن ابی یحیی (متروک) عن اسحاق بن ابی فروة (کذاب) عن عمر بن الحکم عن جابر به الخ

٣٧٧٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي مُوسَى الأشعريِّ: أَنَّ رَجُلَيْنِ ادَّعَيَا بَعِيرًا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبَعَثَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا شَاهِدَيْنَ فَقَسَّمَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَهُمَا نِصْفَيْنِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ وَلِلنَّسَائِيِّ وَابْنِ مَاجَهْ: أَنَّ رَجُلَيْنِ ادَّعَيَا بَعِيرًا لَيْسَتْ لِوَاحِدٍ مِنْهُمَا بَيِّنَةٌ فَجَعَلَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَهُمَا

3772. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के दो आदमियों ने रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में एक ऊंट के मुतल्लिक दावा किया तो उनमें से हर एक ने दो गवाह पेश किए, नबी ﷺ ने इसे इन दोनों के दरमियान आधा आधा तकसीम फरमा दिया| नसई और इब्ने माजा में उन्हे इसे मरवी हदीस में है की दो आदमियों ने एक ऊंट के मुतल्लिक दावा किया और उनमें से किसी के पास भी गवाह नहीं थे, लिहाज़ा नबी ﷺ ने इसे इन दोनों के दरमियान तकसीम फरमा दिया| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (3615 ، 3615 الرواية الثانية) و النسائی (8 / 248 ح 5426) و ابن ماجه (2330)

٣٧٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي هريرةَ أنَّ رجُلينِ اختَصما فِي دَابَّة وَلَيْسَ لَهما بَيِّنَةٌ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «استهِما على اليَمينِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وابنُ مَاجَه

3773. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के दो आदमियों ने किसी जानवर के बारे में झगड़ा किया और इन दोनों के पास कोई गवाही नहीं थी, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "क़सम पर कुरा अन्दाज़ी करो" (जिस का कुरा निकल आए वह क़सम दे) | (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (3618) و ابن ماجه (2346)

٣٧٧٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِرَجُلٍ حَلَّفَهُ: «احْلِفْ بِاللَّهِ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ مَاله عِنْدَكَ شَيْءٌ» يُعْنَى لِلْمُدَّعِي. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

3774. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने एक आदमी से क़सम लेने का इरादा किया तो फ़रमाया: "अल्लाह की क़सम! उठाओ जिसके सिवा कोई माबूद ए बरहक़ नहीं के तुम्हारे पास इस शख़्स (यानी मुदई) की कोई चीज़ नहीं"| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (3620)

٣٧٧٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن الأشعثِ بنِ قيسٍ قَالَ: كَانَ بَيْنِي وَبَيْنَ رَجُلٍ مِنَ الْيَهُودِ أرضٌ فحَجَدني فَقَدَّمْتُهُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «أَلَكَ بَيِّنَةٌ؟» قُلْتُ: لَا قَالَ [ص:١١١ لِلْيَهُودِيِّ: «احْلِفْ» قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِذَنْ يَحْلِفَ وَيَذْهَبَ بِمَالِي فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: (إِنَّ الَّذِينَ يشترونَ بعهدِ اللَّهِ وأَيمانِهِم ثمنا قَلِيلا)»» الْآيَة. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

3775. अशअस बिन कैस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मेरी और एक यहूदी की कुछ मुश्तरका ज़मीन थी, उस ने मेरे हिस्से का इनकार कर दिया, मैं अपना मुकदमा लेकर इसे नबी ﷺ के पास ले आया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम्हारे पास कोई गवाही है?” मैंने अर्ज़ किया: नहीं, आप ﷺ ने यहूदी से फ़रमाया: “क़सम उठाओ”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! वह तो क़सम उठा लेगा और मेरी ज़मीन गसब लेगा, तब अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फरमाई: “बेशक जो लोग अल्लाह के अहद और अपने कसमो के बदले में ठोड़ी सी कीमत हासिल करते हैं”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (3621) و ابن ماجه (2322) [و البخارى (2357) ومسلم (138)]

٣٧٧٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ أَنْ رَجُلًا مَنْ كِنْدَةَ وَرَجُلًا مِنْ حَضْرَمَوْتَ اخْتَصَمَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أَرْضٍ مِنَ الْيَمَنِ فَقَالَ الْحَضْرَمِيُّ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ أَرْضِي اغْتَصَبَنِيهَا أَبُو هَذَا وَهَى فِي يَدِهِ قَالَ: «هَلْ لَكَ بَيِّنَةٌ؟» قَالَ: لَا وَلَكِنْ أُحَلِّفُهُ وَاللَّهِ مَا يَعْلَمُ أَنَّهَا أَرْضِي اغْتَصَبَنِيهَا أَبُوهُ؟ فَتَهَيَّأَ الْكِنْدِيُّ لِلْيَمِينِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَقْطَعُ أَحَدٌ مَالًا بِيَمِينٍ إِلَّا لَقِيَ اللَّهَ وَهُوَ أَجْذَمُ» فَقَالَ الْكِنْدِيُّ: هِيَ أرضُهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3776. अशअस बिन कैस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के किंडिय और हज़्रमी शख़्स ने यमन की ज़मीन के बारे में रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में मुकदमा पेश किया तो हज़्रमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! इस शख़्स के वालिद ने मेरी ज़मीन गसब ली थी और वह अब उस के कब्ज़े में है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम्हारे पास गवाह है?” उस ने अर्ज़ किया, नहीं, लेकिन में उस से क़सम लूँगा (इस तरह के) अल्लाह की क़सम! वह नहीं जानता के बेशक मेरी ज़मीन को उस के वालिद ने गसब किया है, किंडिय क़सम के लिए तैयार हुआ तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स कसम के ज़रिए माल हासिल करता है तो वह अल्लाह से इस हाल में मुलाकात करेगा के वह शख़्स “ अजज़म” होगा”| (यानी उस का हाथ कटा हुआ होगा या उस के पास कोई दलील नहीं होगी) चुनांचे इस किंडिय ने अर्ज़ किया, वह ज़मीन उस एक ही की है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3622 ، 3244) [و صححه ابن حبان (1190) و ابن الجارود (1005) و الحاكم (4 / 295) و وافقه الذهبى]

٣٧٧٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبدِ اللَّهِ بنِ أُنَيْسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ مِنْ أَكْبَرِ الْكَبَائِرِ الشِّرْكَ بِاللَّهِ وَعُقُوقَ الْوَالِدَيْنِ وَالْيَمِينَ الْغَمُوسَ وَمَا حَلَفَ حَالِفٌ بِاللَّهِ يَمِينَ صَبْرٍ فَأَدْخَلَ فِيهَا مِثْلَ جَنَاحِ بَعُوضَةٍ إِلَّا جُعِلَتْ نُكْتَةً فِي قَلْبِهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

3777. अब्दुल्लाह बिन उनैस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह के साथ शिर्क करना, वालिदेन की नाफ़रमानी करना और झूठी क़सम खाना कबिराह गुनाहों में से है, और जिस शख़्स ने अल्लाह

की पुख्ता क़सम उठाई और उस में मच्छर के पर के बराबर (झूठ) दाखिल कर दिया तो रोज़ ए कियामत तक उस का दिल में एक नुक्ता लगा दिया जाता है"| तिरमिज़ी, और उन्होंने कहा: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (3020)

٣٧٧٨ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَحْلِفُ أَحَدٌ عِنْدَ مِنْبَرِي هَذَا عَلَى يَمِينٍ آثِمَةٍ وَلَوْ عَلَى سِوَاكٍ أَخْضَرَ إِلَّا تَبَوَّأَ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ أَوْ وَجَبَتْ لَهُ النَّارُ» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

3778. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स मेरे इस मिम्बर के पास झूठी क़सम उठाता है ख्वाँ वह सब्ज़ मिस्वाक के मुतल्लिक हो तो उस का ठिकाना जहन्नम में बना दिया जाता है या उस के लिए जहन्नम वाजिब हो जाती है"| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه مالک (2 / 727 ح 1472) و ابوداؤد (3246) و ابن ماجه (2325)

٣٧٧٩ - وَعَن خُرَيم بن فاتكٍ قَالَ: صَلَّى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةَ الصُّبْحِ فَلَمَّا انْصَرَفَ قَامَ قَائِمًا فَقَالَ: «عُدِلَتْ شَهَادَةُ الزُّورِ بِالْإِشْرَاكِ بِاللَّهِ» ثَلَاثَ مَرَّاتٍ. ثُمَّ قَرَأَ: (فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ حُنَفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ)»» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

3779. खरिम बिन फातिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने नमाज़ ए फजर अदा की जब आप फारिग़ हुए तो खड़े हो कर तीन मर्तबा फ़रमाया: "झूठी गवाही को अल्लाह के साथ शिर्क करने के बराबर करार दिया गया है"| फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: "पलीदी यानी बुतों की पूजा से बचो और झूठी बात (झूठी गवाही) से बचो, अल्लाह के साथ शिर्क न करते हुए उसकी तरफ यकसा हो जाओ"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3599) و ابن ماجه (2372) [و الترمذی (2299)] * حبیب بن النعمان : مستور ، و ثقه ابن حبان وحده ، و زیاد العصفری ابوسفیان : مجهول الحال

٣٧٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ عَنْ أَيْمَنَ بْنِ خُرَيْمٍ إِلَّا أَنَّ ابْنَ مَاجَهْ لَمْ يَذْكُرِ الْقِرَاءَةَ

3780. इमाम अहमद और इमाम तिरमिज़ी ने यमन बिन खरिम से रिवायत किया है अलबत्ता इब्ने माजा ने किराअत का ज़िक्र नहीं किया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (4 / 321 ح 19105 عن خریم بن فاتک ، 4 / 321 ح 10109 عن ایمن بن خریم) و الترمذی (2300) * انظر الحدیث السابق (3779) لعلته

٣٧٨١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَجُوزُ شَهَادَةُ خَائِنٍ وَلَا خَائِنَةٍ وَلَا مَجْلُودٍ حَدًّا وَلَا ذِي غِمْرٍ عَلَى أَخِيهِ وَلَا ظَنِينٍ فِي وَلَاءٍ وَلَا قَرَابَةٍ وَلَا الْقَانِعِ مَعَ أَهْلِ الْبَيْتِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حديثٌ غريبٌ ويزيدُ بن زيادٍ الدِّمَشْقِي الرَّاوِي مُنكر الحَدِيث

3781. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “खयानत करने वाले मर्द और औरत की गवाही जाईज़ नहीं, जिस शख़्स पर हद काइम की गई हो उसकी गवाही भी मंज़ूर नहीं और न दुश्मनी रखने वाले शख़्स की अपने भाई के खिलाफ, और विला (आज़ादी) के बारे में मूतहम (जिस पर तोहमत लगी हो) शख़्स की गवाही जाईज़ नहीं और न क़राबत के बारे में मूतहम शख़्स की और ना ही अहले बैत (यानी खानदान) के बारे में ऐसे शख़्स की गवाही जाईज़ है जिस का खर्च उस के खानदान के ज़िम्मा हो”| तिरमिज़ी, और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने कहा यह हदीस ग़रीब है और यज़ीद बिन ज़ियाद दम्श्की रावी मुनकर उल हदीस है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه الترمذی (2298) * وقال : الدارقطنی (4 / 244) :'' یزید ھذا ضعیف ، لا یحتج بہ '' وھو متروک و لبعض الحدیث شواھد

٣٧٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَجُوزُ شَهَادَةُ خَائِنٍ وَلَا خَائِنَةٍ وَلَا زَانٍ وَلَا زَانِيَةٍ وَلَا ذِي غِمْرٍ عَلَى أَخِيهِ» . وَرَدَّ شَهَادَةَ الْقَانِعِ لِأَهْلِ الْبَيْتْ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3782. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, और वह नबी ﷺ से, आप ﷺ ने फ़रमाया: “खयानत करने वाले मर्द की शहादत (गवाही) जाईज़ नहीं और न खयानत करने वाली औरत की, न ज़ानि मर्द की गवाही जाईज़ है और न ज़ानिया औरत की और दुश्मनी रखने वाले शख़्स की अपने भाई के मुतल्लिक गवाही जाईज़ नहीं, और खानदान के ज़ेरे किफ़ालत शख़्स की इस खानदान के मुतल्लिक गवाही कबूल नहीं की जाएगी”| (हसन)

حسن ، رواہ ابوداؤد (36003501)

٣٧٨٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَجُوزُ شَهَادَةُ بَدَوِيٍّ عَلَى صَاحِبِ قَرْيَةٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه

3783. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “गंवार की बस्ती में रिहाइश पज़ीर शख़्स के खिलाफ गवाही जाईज़ नहीं”| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ ابوداؤد (3602) و ابن ماجہ (2366)

٣٧٨٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَضَى بَيْنَ رَجُلَيْنِ فَقَالَ الْمَقْضِيُّ عَلَيْهِ لَمَّا أَدْبَرَ:

حَسْبِيَ اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يَلُومُ عَلَى الْعَجْزِ وَلَكِنْ عَلَيْكَ بِالْكَيْسِ فَإِذَا غَلَبَكَ أَمْرٌ فَقُلْ: حَسْبِيَ اللَّهُ وِنعْمَ الوكيلُ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3784. ऑफ बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने दो आदमियों के दरमियान फैसला फ़रमाया तो आप ने जिस शख़्स के खिलाफ फैसला फ़रमाया जब वह वापस जाने लगा तो उस ने कहा: “मेरे लिए अल्लाह काफी है और वह अच्छा कारसाज़ है”| नबी ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक अल्लाह तआला अजज़ व नादानी पर मलामत फरमाता है, बल्कि तुम्हें एहतियात करनी चाहिए, जब कोशिश के बावजूद कोई खिलाफ तोकीअ वाकिए ग़ालिब आजाए तो तुम कहो: (حَسْبِيَ اللَّهُ وِنعْمَ الوكيلُ) “मेरे लिए अल्लाह काफी है और वह अच्छा कारसाज़ है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3627) * رواية بقية عن بحير محمولة على السماع

٣٧٨٥ - (حسن) وَعَنْ بَهْزِ بْنِ حَكِيمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَبَسَ رَجُلًا فِي تُهْمَةٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وزاد التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ: ثمَّ خَلَّى عَنهُ

3785. बहज़ बिन हकिम अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ ने एक आदमी को तोहमत पर क़ैद में रखा| इमाम तिरमिज़ी और इमाम नसई ने यह इज़ाफा नकल किया, फिर आप ﷺ ने इसे छोड़ दिया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3630) و الترمذی (1417 وقال : حسن) و النسائی (8 / 67 ح 48794880)

بَاب الْأَقْضِيَة و الشهادات • फैसलों और गवाहों का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٧٨٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ الْخَصْمَيْنِ يَقْعُدَانِ بَيْنَ يَدَيِ الْحَاكِمِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ

3786. अब्दुल्लाह बिन जुबैर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फैसला फ़रमाया के दोनों फरीक हाकिम के सामने बिठाए जाएँगे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (4 / 4 ح 16203) و ابوداؤد (3588) * مصعب بن ثابت الزبیری : ضعیف من جهة سوء حفظه و قال الهیشمی فی مجمع الزوائد :’’ و الاکثر علی تضعیفه ‘‘ (1 / 25)

जिहाद का बयान • كتاب الْجِهَاد

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٣٧٨٧ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَصَامَ رَمَضَانَ كَانَ حَقًّا عَلَى اللَّهِ أَنْ يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ جَاهَدَ فِي سهل اللَّهِ أَوْ جَلَسَ فِي أَرْضِهِ الَّتِي وُلِدَ فِيهَا» . قَالُوا: أَفَلَا نُبَشِّرُ النَّاسَ؟ قَالَ: «إِنَّ فِي الْجَنَّةِ مِائَةَ دَرَجَةٍ أَعَدَّهَا اللَّهُ لِلْمُجَاهِدِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ مَا بَيْنَ الدَّرَجَتَيْنِ كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ فَإِذَا سَأَلْتُمُ اللَّهَ فَاسْأَلُوهُ الْفِرْدَوْسَ فَإِنَّهُ أَوْسَطُ الْجَنَّةِ وَأَعْلَى الْجَنَّةِ وَفَوْقَهُ عَرْشُ الرَّحْمَنِ وَمِنْهُ تُفَجَّرُ أنهارُ الجنَّةِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3787. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अल्लाह पर और उस के रसूल (ﷺ) पर ईमान लाए, नमाज़ काइम करे और रमज़ान के रोज़े रखे तो अल्लाह पर हक़ है के वह इसे जन्नत में दाखिल फरमाए (ख्वाह) उस ने अल्लाह की राह में जिहाद किया या अपने पैदाइश की सर ज़मीन में बैठा रहा”| सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, क्या हम उस के मुतल्लिक लोगों को खुशखबरी न दे दे? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जन्नत में सौ दरजे है, जिन्हें अल्लाह ने अल्लाह की राह में जिहाद करने वालो के लिए तैयार कर रखा है, दो दरजो के दरमियान इतना फासला है जितना ज़मीन व आसमान के दरमियान फासला है, जब तुम अल्लाह से (जन्नत का) सवाल करे तो उस से जन्नत अल फिरदौस का सवाल करो, क्योंकि वह अफज़ल व आला जन्नत है, उस के ऊपर रहमान का अर्श है और जन्नत की नहरे वहीँ से जारी होती है”| (बुखारी)

رواه البخارى (2790)

٣٧٨٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَثَلُ الْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ الصَّائِمِ الْقَائِمِ الْقَانِتِ بِآيَاتِ اللَّهِ لَا يَفْتُرُ مِنْ صِيَامٍ وَلَا صَلَاةٍ حَتَّى يَرْجِعَ الْمُجَاهِدُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ»

3788. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले की मिसाल इस शख़्स कि सी है जो रोज़दार है, कयाम करता है, कुराने हकिम की तिलावत करता है, रोज़े और नमाज़ो में कोताही नहीं करता हत्ता के अल्लाह की राह में जिहाद करने वाला वापस आ जाए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2787) و مسلم (110 / 1878)، (4869)

٣٧٨٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «انْتَدَبَ اللَّهُ لِمَنْ خَرَجَ فِي سَبِيلِهِ لَا يُخْرِجُهُ إِلَّا إِيمَانٌ بِي وَتَصْدِيقٌ بِرُسُلِي أَنْ أَرْجِعَهُ بِمَا نَالَ مِنْ أَجْرٍ وَغَنِيمَةٍ أَوْ أُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ»

3789. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने अपने राह में (जिहाद के लिए) निकलने वाले शख़्स को, जो महज़ मुझ पर ईमान लाने और मेरे रसूलो की तस्दीक करने की बिना पर निकलता है, इस बात की ज़मानत दि है के वह इसे अज्र व गनीमत के साथ वापस लौटाएगा या इसे जन्नत में दाखिल फरमाएगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (36) و مسلم (103 / 1876)، (4859)

٣٧٩٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْلَا أَنَّ [ص:١١١ رِجَالًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ لَا تَطِيبُ أَنْفُسُهُمْ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنِّي وَلَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُهُمْ عَلَيْهِ مَا تَخَلَّفْتُ عَنْ سَرِيَّةٍ تَغْزُو فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوَدِدْتُ أَنْ أُقْتَلَ فِي سَبِيل الله ثمَّ أُحْيى ثمَّ أُقتَلُ ثمَّ أُحْيى ثمَّ أُقتَلُ ثمَّ أُحْيى ثمَّ أقتل»

3790. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! अगर मुझे उस का ख़याल न होता के बहोत से ऐसे मोमिन है जिन्हें मुझ से पीछे रह जाना पसंद नहीं और मेरे पास इन के लिए सवारियों का इंतेज़ाम भी नहीं तो में अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले किसी लश्कर से पीछे न रहता, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! मैं पसंद करता हूँ की मैं अल्लाह की राह में शहीद कर दिया जाऊ, फिर जिंदा कर दिया जाऊँ, फिर शहीद कर दिया जाऊ, फिर जिंदा कर दिया जाऊ, फिर शहीद कर दिया जाऊ”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2797) و مسلم (106 / 1886)، (4863)

٣٧٩١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رِبَاطُ يَوْمٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا عَلَيْهَا»

3791. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की राह में एक दिन मोर्चा बंद होना दुनिया और उस में जो कुछ है इस (के मिल जाने या इसे खर्च कर देने) से बेहतर है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1892) و مسلم (113 / 1881)، (4874)

٣٧٩٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَغَدْوَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ رَوْحَةٌ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا»

3792. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की राह में एक सुबह या

एक शाम गुज़ारना, दुनिया और जो कुछ इस में है उस से बेहतर है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6415) و مسلم (113 / 1881)، (4876)

٣٧٩٣ - (صَحِيح) وَعَن سلمانَ الفارسيِّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «رِبَاطُ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ خَيْرٌ مِنْ صِيَامِ شَهْرٍ وَقِيَامِهِ وَإِنْ مَاتَ جَرَى عَلَيْهِ عَمَلُهُ الَّذِي كَانَ يَعْمَلُهُ وَأُجْرِيَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ وَأَمِنَ الْفَتَّانَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

3793. सलमान फारसी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अल्लाह की राह में एक दिन और एक रात मोरचा बंद होना एक माह के रोज़ो और उस के कयाम से बेहतर है, और अगर वह (इसी जगह) फौत हो जाए तो उस का वह अमल जो वह किया करता था, जारी रहता है, उस का (जन्नत से) रीज़्क जारी कर दिया जाता है, और वह कब्र में फ़ितनो से महफूज़ रहता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (163 / 1913)، (4938)

٣٧٩٤ - (صَحِيح) وَعَن أبي عَبْسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا اغْبَرَّتْ قَدَمَا عَبْدٍ فِي سَبِيلِ الله فَتَمَسهُ النَّار» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

3794. अबू अब्सी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की राह में गर्द आलूद होने वाले पाँव को जहन्नम की आग नहीं छुएगी”| (बुखारी)

رواه البخاری (2811)

٣٧٩٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَجْتَمِعُ كَافِرٌ وَقَاتِلُهُ فِي النَّارِ أبدا» . رَوَاهُ مُسلم

3795. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “काफ़िर और उस का कातिल (मुजाहिद) जहन्नम की आग में कभी इकठ्ठे नहीं होंगे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (130 / 1891)، (4895)

٣٧٩٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مِنْ خَيْرِ مَعَاشِ النَّاسِ لَهُمْ رَجُلٌ مُمْسِكٌ عِنَانَ فَرَسِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَطِيرُ عَلَى مَتْنِهِ كُلَّمَا سَمِعَ هَيْعَةً [ص:١١١ أَوْ فَزْعَةً طَارَ عَلَيْهِ يَبْتَغِي الْقَتْلَ وَالْمَوْتَ مَظَانَّهُ أَوْ رَجُلٌ فِي غُنَيْمَةٍ فِي رَأْسِ شَعَفَةٍ مِنْ هَذِهِ الشَّعَفِ أَوْ بَطْنِ وَادٍ مِنْ هَذِهِ الْأَوْدِيَةِ يُقِيمُ الصَّلَاةَ وَيُؤْتِي الزَّكَاةَ وَيَعْبُدُ الله حَتَّى يَأْتِيَهُ الْيَقِينُ لَيْسَ

مِنَ النَّاسِ إِلَّا فِي خير» . رَوَاهُ مُسلم

3796. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "लोगो में से इस शख़्स की जिंदगी बेहतरीन है जो अपने घोड़े की लगाम थामे अल्लाह की राह में निकलता है, वह जब कभी खौफ या फरियादी की आवाज़ सुनता है तो वह इस (घोड़े) की पुश्त पर (तेज़ रफ़्तार की वजह से) उड़ता हुआ जाता है के क़त्ल और मौत को उसकी मुमकिन जगह से तलाश करता है, या फिर इस आदमी की जिंदगी बेहतरीन है जो अपनी बकरिया लेकर किसी पहाड़ की चोटी पर या किसी वादी में फिरता है, वह नमाज़ पढ़ता है, ज़कात अदा करता है और मौत आने तक अपने रब की इबादत करता रहता है? यह दीगर लोगों से खैर व भलाई पर है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (125 / 1889)، (4889)

٣٧٩٧ - (صَحِيح) وَعَن زيد بن خالدٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ جَهَّزَ غَازِيًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَقَدْ غَزَا وَمَنْ خَلَفَ غَازِيًا فِي أَهْلِهِ فقد غزا»

3797. ज़ैद बिन खालिद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस शख़्स ने अल्लाह की राह में किसी मुजाहिद को तैयार किया तो उस ने भी जिहाद किया, जिस शख़्स ने किसी मुजाहिद के अहले खाना में जानशीन का हक़ अदा किया तो उस ने भी जिहाद किया"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2843) و مسلم (136 ، 135 / 1895)، (4902 و 4903)

٣٧٩٨ - (صَحِيح) وَعَنْ بُرَيْدَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «حُرْمَةُ نِسَاءِ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ كَحُرْمَةِ أُمَّهَاتِهِمْ وَمَا مِنْ رَجُلٍ مِنَ الْقَاعِدِينَ يَخْلُفُ رَجُلًا مِنَ الْمُجَاهِدِينَ فِي أَهْلِهِ فَيَخُونُهُ فِيهِمْ إِلَّا وُقِفَ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فيأخذُ مِنْ عَمَلِهِ مَا شَاءَ فَمَا ظَنُّكُمْ؟» . رَوَاهُ مُسلم

3798. बुरैदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मुजाहिदीन की औरतों की हुरमत, जिहाद में शरीक न होने वालो पर, उनकी माओ की हुरमत जैसी है, जिहाद में शरीक न होने वालो में से कोई शख़्स किसी मुजाहिद के अहले खाना की जानशीन करता है और वह इन के बारे में खयानत करता है तो रोज़ ए कियामत इसे खड़ा किया जाएगा और वह (मुजाहिद) उस के आमाल में से जो चाहेगा ले लेगा तुम्हारा क्या ख़याल है (वोह उसकी कोई नेकी छोड़ेगा) ?"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (139 / 1897)، (4908)

٣٧٩٩ - (صَحِيح) وَعَن أبي مَسْعُود الْأَنْصَارِيّ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ بِنَاقَةٍ مَخْطُومَةٍ فَقَالَ: هَذِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ

صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَكَ بِهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ سَبْعمِائَة نَاقَة كلهَا مخطومة» . رَوَاهُ مُسلم

3799. अबू मसउद अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी महार वाली ऊंटनी लेकर आया तो उस ने अर्ज़ किया, यह अल्लाह की राह में (वक्फ़) है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम्हारे लिए रोज़ ए कियामत सातसो ऊंटनिया है वह सब महार वाली होगी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (132 / 1892)، (4897)

٣٨٠٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ بَعْثًا إِلَى بَنِي لِحْيَانَ مِنْ هُذَيْلٍ فَقَالَ: «لينبعثْ مِنْ كلِّ رجلينِ أحدُهما والأجرُ بَينهمَا» . رَوَاهُ مُسلم

3800. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने हज़िल कबिले के बनू लिह्यान उन की तरफ एक लश्कर भेजने का इरादा किया तो फ़रमाया: “हर दो आदमियों में से एक (दुश्मन की तरफ) उठ खड़ा हो और अजरान दोनों को मिलेगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (137 / 1896)، (4904)

٣٨٠١ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَنْ يَبْرَحَ هَذَا الدِّينُ قَائِمًا يُقَاتِلُ عَلَيْهِ عِصَابَةٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ حَتَّى تقوم السَّاعَة» . رَوَاهُ مُسلم

3801. जाबिर बिन समुराह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये दीन हमेशा काइम रहेगा मुसलमानों की एक जमाअत इस की खातिर कियामत तक लड़ती रहेगी”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (172 / 1922)، (4953)

٣٨٠٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يُكَلَّمُ أَحَدٌ [ص:١١٢] فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَنْ يُكَلَّمُ فِي سَبِيلِهِ إِلَّا جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَجُرْحُهُ يَثْعَبُ دَمًا اللَّوْنُ لَوْنُ الدَّمِ والريحُ ريحُ المسكِ»

3802. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अल्लाह की राह में ज़ख़्मी होता है और अल्लाह जानता है कौन उसकी राह में ज़ख़्मी होता है, तो वह रोज़ ए कियामत इस हाल में आएगा के उस के जख्म से खून बहता होगा, उस का रंग तो खून जैसे होगा लेकिन उसकी खुशबू कस्तूरी जैसी होगी”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2803) و مسلم (105 / 1876)، (4862)

٣٨٠٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ أَحَدٍ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ يُحِبُّ أَنْ يُرْجَعَ إِلَى الدُّنْيَا وَلَهُ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا الشَّهِيدُ يَتَمَنَّى أَنْ يُرْجَعَ إِلَى الدُّنْيَا فَيُقْتَلَ عَشْرَ مَرَّاتٍ لِمَا يَرَى مِنَ الْكَرَامَةِ»

3803. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "कोई जन्नती दुनिया की तरफलौट कर आना पसंद नहीं करेगा अगरचे ज़मीन की हर चीज़ इसे मयस्सर आ जाए, माँ सिवाए शहीद के वह आरज़ू करेगा के वह दुनिया की तरफलौट जाए, क्योंकि उस ने मर्तबा ए शहादत में जो इज्ज़त देखी है, इस वजह से वह दस मर्तबा शहीद कर दिया जाना (पसंद करेगा) "| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2817) و مسلم (109 / 1877)، (4868)

٣٨٠٤ - (صَحِيح) وَعَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ: سَأَلْنَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ مسعودٍ عَنْ هَذِهِ الْآيَةِ: (وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ ربِّهم يُرزقون)»» الْآيَةَ قَالَ: إِنَّا قَدْ سَأَلْنَا عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ: " أَرْوَاحُهُمْ فِي أَجْوَافِ طَيْرٍ خُضْرٍ لَهَا قَنَادِيلُ مُعَلَّقَةٌ بِالْعَرْشِ تَسْرَحُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ شَاءَتْ ثُمَّ تَأْوِي إِلَى تِلْكَ الْقَنَادِيلِ فَاطَّلَعَ إِلَيْهِمْ رَبُّهُمُ اطِّلَاعَةً فَقَالَ: هَلْ تَشْتَهُونَ شَيْئًا؟ قَالُوا: أَيَّ شَيْءٍ نَشْتَهِي وَنَحْنُ نَسْرَحُ مِنَ الْجنَّة حيثُ شِئْنَا ففعلَ ذلكَ بهِمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ فَلَمَّا رَأَوْا أَنَّهُمْ لَنْ يُتْرَكُوا مِنْ أَنْ يَسْأَلُوا قَالُوا: يَا رَبُّ نُرِيدُ أَنْ تُرَدَّ أَرْوَاحُنَا فِي أَجْسَادِنَا حَتَّى نُقْتَلَ فِي سبيلِكَ مرَّةً أُخرى فَلَمَّا رَأَى أَنْ لَيْسَ لَهُمْ حَاجَةٌ تُرِكُوا ". رَوَاهُ مُسلم

3804. मसरुक बयान करते हैं, हमने अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु से इस आयत: "अल्लाह की राह में मारे जाने वालो को मुर्दा तसव्वुर न करो बल्कि वह तो जिंदा है उन के रब के यहाँ उन्हें रीज़्क दिया जाता है", के बारे में दरियाफ्त किया तो उन्होंने ने फ़रमाया: हमने उस के मुतल्लिक (रसूलुल्लाह ﷺ) से दरियाफ्त किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "उनकी रूहें सब्ज़ रंग के परिंदों के पेट में है, उनकी किन्दिलो (lamps) अर्श के साथ मुअल्लक है, वह जन्नत (के मेवों) से जहाँ से चाहते है खाते है, फिर उन्हीं किन्दिलो (lamps) में वापस आ जाते हैं, फिर उनका रब उनकी तरफ देख कर फरमाता है: क्या तुम किसी चीज़ की ख्वाहिश रखते हो? वह अर्ज़ करते हैं: हम किस चीज़ की ख्वाहिश रखे, हम जन्नत में जहाँ चाहे जाते और वहां से मन पसंद चीज़े खाते है, रब तआला उन से तीन मर्तबा यही सवाल फरमाएगा, जब वह देंखेंगे के उन से पूछे बगैर उन्हें नहीं छोड़ा जाएगा तो वह अर्ज़ करेंगे: रब जी! हम चाहते है की हमारी रूहें हमारे जिस्मों में लौटाई जाए हत्ता के हम तेरी राह में फिर शहीद कर दिए जाए, जब उस ने देखा के उन्हें कोई हाजत नहीं है तो फिर उन्हें छोड़ दिया जाता है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (121 / 1887)، (4885)

٣٨٠٥ - (صَحِيح) عَن أَبِي قَتَادَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَامَ فِيهِمْ فَذَكَرَ لَهُمْ أَنَّ الْجِهَادَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْإِيمَانَ بِاللَّهِ أَفْضَلُ الْأَعْمَالِ فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ إِنْ قُتِلْتُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُكَفِّرُ عَنى خَطَايَايَ؟ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نِعْمَ إِنْ قُتِلْتَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَنْتَ صَابِرٌ مُحْتَسِبٌ مُقْبِلٌ غَيْرُ مُدْبِرٍ» . ثُمَّ قَالَ رَسُولُ [ص:١١٢ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَيْفَ قُلْتَ؟» فَقَالَ: أَرَأَيْتَ إِنْ قُتِلْتُ فِي

سَبِيلِ اللَّهِ أَيُكَفَّرُ عَنِّي خَطَايَايَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نَعَمْ وَأَنْتَ صَابِرٌ مُحْتَسِبٌ مُقْبِلٌ غَيْرُ مُدْبِرٍ إِلَّا الدَّيْنَ فَإِنَّ جِبْرِيلَ قَالَ لِي ذَلِكَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

3805. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें वाज़ करते हुए फ़रमाया के अल्लाह की राह में जिहाद करना और अल्लाह पर ईमान लाना, बेहतरीन आमाल में से हैं, इतने में एक आदमी खड़ा हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए के अगर में अल्लाह की राह में शहीद कर दिया जाऊं तो क्या मेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए जाएँगे? रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: “हाँ, अगर तू इस हाल में शहीद कर दिया जाए के तू सब्र करने वाला, सवाब की उम्मीद रखने वाला, आगे बढ़ने वाला हो और पीछे हटने वाला न हो”, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुमने क्या कहा था ?” उस ने अर्ज़ किया, आप मुझे बताइए अगर में अल्लाह की राह में शहीद कर दिया जाऊं तो क्या मेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए जाएँगे? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: हाँ, तू सब्र करने वाला, सवाब की उम्मीद रखने वाला, पेश कदमी करने वाला हो और पीछे हटने वाला न हो, अलबत्ता क़र्ज़ मुआफ़ नहीं होगा, क्योंकि जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने इस बारे में मुझे यही कहा है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (117 / 1885)، (4880)

٣٨٠٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْقَتْلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُكَفِّرُ كُلَّ شَيْءٍ إِلَّا الدّين» . رَوَاهُ مُسلم

3806. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह की राह में शहीद हो जाना क़र्ज़ के सिवा हर चिज़ का कफ्फारा है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (120 / 1886)، (4884)

٣٨٠٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " يَضْحَكُ اللَّهُ تَعَالَى إِلَى رَجُلَيْنِ يَقْتُلُ أَحَدُهُمَا الْآخَرَ يَدْخُلَانِ الْجَنَّةَ: يُقَاتِلُ هَذَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقْتَلُ ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ على الْقَاتِل فيستشهد "

3807. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह तआला दो आदमियों की तरफ (देख कर) मुस्कुराता है, उनमें से एक दूसरे को क़त्ल कर देता है और वह दोनों जन्नत में दाखिल हो जाते हैं, यह इस तरह है के एक शख़्स अल्लाह की राह में जिहाद करता है और वह शहीद कर दिया जाता है, फिर अल्लाह इस कातिल पर (अपनी रहमत से) रुजू फरमाता है, (वो मुसलमान हो जाता है) वह भी शहीद कर दिया जाता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2826) و مسلم (128 / 1890)، (4892)

٣٨٠٨ - (صَحِيح) وَعَن سهل بن حنيف قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ سَأَلَ اللَّهَ الشَّهَادَةَ بِصِدْقٍ بَلَّغَهُ اللَّهُ مَنَازِلَ الشُّهَدَاءِ وَإِنْ مَاتَ عَلَى فِرَاشِهِ. رَوَاهُ مُسلم

3808. सहल बिन हुनैफ़ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स सच्चे दिल से अल्लाह से शहादत तलब करता है तो वह इसे शुहदा के मक़ाम पर पहुंचा देता है, ख्वाह इसे अपने बिस्तर पर मौत आए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (157 / 1909)، (4930)

٣٨٠٩ - (صَحِيح) وَعَن أنسٍ أَنَّ الرُّبَيِّعَ بِنْتَ الْبَرَاءِ وَهِيَ أُمُّ حَارِثَةَ بْنِ سُرَاقَةَ أَتَتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَا تُحَدِّثُنِي عنْ حَارِثَةَ وَكَانَ قُتِلَ يَوْمَ بَدْرٍ أَصَابَهُ سَهْمٌ غَرْبٌ فَإِنْ كَانَ فِي الْجَنَّةِ صَبَرْتُ وَإِنْ كَانَ غَيْرُ ذَلِكَ اجْتَهَدْتُ عَلَيْهِ فِي الْبُكَاءِ فَقَالَ: «يَا أُمَّ حَارِثَةَ إِنَّهَا جِنَانٌ فِي الْجَنَّةِ وَإِنَّ ابْنَكِ أَصَابَ الْفِرْدَوْسَ الْأَعْلَى» . رَوَاهُ البخاريُّ

3809. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के हारिस बिन सुराका रदियल्लाहु अन्हु की वालिदा रबीअ बिन्ते बराअ नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई और उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या आप मुझे हारिस रदियल्लाहु अन्हु के मुतल्लिक नहीं बताएंगे, वह गज़वा ए बद्र में शहीद कर दिए गए थे, उन्हें ना मालूम तीर लगा था, अगर तो वह जन्नत में है, तो मैं सब्र करुँगी और अगर उस के अलावा किसी और जगह पर है तो फिर मैं इन पर खूब रोउंगी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उम्म हारिस जन्नत में कई दरजात हैं और तेरा बेटा तो फिरदौस ए आला में है”| (बुखारी)

رواه البخارى (2809)

٣٨١٠ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: انْطَلَقَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابُهُ حَتَّى سَبَقُوا الْمُشْرِكِينَ إِلَى بَدْرٍ وَجَاءَ الْمُشْرِكُونَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «قُومُوا إِلَى جَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ» . قَالَ عُمَيْرُ بْنُ الْحُمَامِ: بَخٍ بَخٍ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَا يَحْمِلُكَ عَلَى قَوْلِكَ: بَخٍ بَخٍ؟ " قَالَ: لَا وَاللَّهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِلَّا رَجَاءَ أَنْ [ص:١١٢ أَكُونَ مِنْ أَهْلِهَا قَالَ: «فَإِنَّكَ مِنْ أَهْلِهَا» قَالَ: فَأَخْرَجَ تَمَرَاتٍ مِنْ قَرْنِهِ فَجَعَلَ يَأْكُلُ مِنْهُنَّ ثُمَّ قَالَ: لَئِنْ أَنَا حَيِيتُ حَتَّى آكل تمراتي إِنَّهَا الْحَيَاة طَوِيلَةٌ قَالَ: فَرَمَى بِمَا كَانَ مَعَهُ مِنَ التَّمْرِ ثُمَّ قَاتَلَهُمْ حَتَّى قُتِلَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

3810. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ और आप ﷺ के सहाबा रदियल्लाहु अन्हु रवाना हुए हत्ता के वह मुशरिकीन से पहले बद्र पहुँच गए, और मुशरिकीन भी पहुँच गए, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इस जन्नत की तरफ पेश कदमी करो जिस का अर्ज़ ज़मीन व आसमान की तरह है”, उमैर बिन हुमाम रदियल्लाहु

अन्हु ने कहा: बहोत खूब, बहोत खूब! रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम्हें यह बात: बहोत खूब, बहोत खूब, कहने पर किस चीज़ ने अमादा किया ?" उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अल्लाह की क़सम! सिर्फ इस उम्मीद ने की मैं भी जन्नतियो में से हो जाऊं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम जन्नतियो में से हो", उन्होंने तरकशी से खजूरे निकाले और खाने लगे, फिर कहा: अगर में अपने खजूरे खाने तक जिंदा रहा तो फिर यह एक तवील जिंदगी है, रावी बयान करते हैं, उन के पास जो खजूरे थी, वह उन्होंने फेंक दी, फिर मुशरिकीन के साथ किताल किया हत्ता कि वह शहीद कर दिए गए। (मुस्लिम)

رواه مسلم (145 / 1901)، (4915)

٣٨١١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا تَعُدُّونَ الشَّهِيدَ فِيكُمْ؟» قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَنْ قُتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَهُوَ شَهِيدٌ قَالَ: " إِنَّ شُهَدَاءَ أُمَّتِي إِذًا لَقَلِيلٌ: مَنْ قُتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَهُوَ شَهِيدٌ وَمَنْ مَاتَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَهُوَ شَهِيدٌ وَمَنْ مَاتَ فِي الطَّاعُونِ فَهُوَ شَهِيدٌ وَمَنْ مَاتَ فِي الْبَطْنِ فهوَ شهيدٌ ". رَوَاهُ مُسلم

3811. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम अपने में किसे शहीद शुमार करते हो?" उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! जो शख़्स अल्लाह की राह में क़त्ल कर दिया जाए वह शहीद है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तब तो मेरी उम्मत के शहीद मुख़्तसर हुए, जो शख़्स अल्लाह की राह में क़त्ल कर दिया जाए तो वह शहीद है, जो शख़्स अल्लाह की राह में फौत हो जाए तो वह शहीद है, जो शख़्स ताऊन के मर्ज़ में फौत हो जाए तो वह शहीद है और जो शख़्स पेट के मर्ज़ में फौत हो जाए तो वह शहीद है"। (मुस्लिम)

رواه مسلم (165 / 1915)، (4941)

٣٨١٢ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا مِنْ غَازِيَةٍ أَو سَرِيَّة تغزو فتغتنم وَتَسْلَمُ إِلَّا كَانُوا قَدْ تَعَجَّلُوا ثُلُثَيْ أُجُورِهِمْ وَمَا مِنْ غَازِيَةٍ أَوْ سَرِيَّةٍ تَخْفُقُ وَتُصَابُ إِلَّا تمّ أُجُورهم» . رَوَاهُ مُسلم

3812. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो जमाअत या लश्कर जिहाद करता है वह माले गनीमत और सलामती के साथ वापस आता है तो उस ने अपने अज़र में से दो तिहाई हिस्से जल्द दुनिया में हासिल कर लिए और जो जमाअत या लश्कर (जिहाद में) ज़ख़्मी होता है और शहीद होता है तो वह मुकम्मल अज़र पाता है"। (मुस्लिम)

رواه مسلم (154 / 1906)، (4926)

٣٨١٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ مَاتَ وَلَمْ يَغْزُو وَلَمْ يُحَدِّثْ بِهِ نَفْسَهُ مَاتَ عَلَى شُعْبَةٍ نفاق» . رَوَاهُ مُسلم

3813. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स इस हाल में फौत हो के उस ने न जिहाद किया और न उस का दिल में उस का ख़याल आया तो वह निफ़ाक़ की मौत मरा"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (158 / 1910)، (4931)

٣٨١٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي مُوسَى قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: الرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِلْمَغْنَمِ وَالرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِلذِّكْرِ وَالرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِيُرَى مَكَانُهُ فَمَنْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ؟ قَالَ: «مَنْ قَاتَلَ لِتَكُونَ كَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا فَهُوَ فِي سَبِيلِ الله»

3814. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने अर्ज़ किया: एक आदमी माल ए गनीमत की खातिर किताल करता है, दूसरा आदमी शोहरत की खातिर लड़ता है, कोई आदमी अपना मक़ाम व मर्तबा दीखाने की खातिर लड़ता है तो उनमें से अल्लाह की राह में कौन (मकबूल) है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "जो शख़्स अल्लाह के कलमे की सर बुलंदी के लिए लड़ता है वही अल्लाह की राह में है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2810) و مسلم (149 / 1904)، (4919)

٣٨١٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجَعَ مِنْ غَزْوَةِ تَبُوكَ فَدَنَا مِنَ الْمَدِينَةِ فَقَالَ: «إِنَّ بِالْمَدِينَةِ أَقْوَامًا مَا سِرْتُمْ مَسِيرًا وَلَا قَطَعْتُمْ وَادِيًا إِلَّا كَانُوا مَعَكُمْ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «إِلَّا شَرِكُوكُمْ فِي الْأَجْرِ» . قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَهُمْ بِالْمَدِينَةِ؟ قَالَ: «وهُم بالمدينةِ حَبسهم الْعذر» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

3815. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ गज़वा ए तबुक से वापस तशरीफ़ लाए, जब मदीना के करीब पहुंचे तो फ़रमाया: "मदीना में से कुछ ऐसे लोग भी है, की तुम जहाँ भी गए और जिस वादी से गुज़रे तो वह तुम्हारे साथ ही थे"| एक दूसरी रिवायत में है: "वो अज़र में तुम्हारे साथ शरीक हैं", सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! वह तो मदीना ही में थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: "(हाँ) वह मदीना ही में थे क्योंकि उज़्र ने उन्हें रोक रखा था"| (बुखारी)

رواه البخاری (4423)

٣٨١٦ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ مُسلم عَن جَابر

3816. इमाम मुस्लिम ने इसे जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (159 / 1911)، (4932)

٣٨١٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاسْتَأْذَنَهُ فِي الْجِهَادِ فَقَالَ: «أَحَي والدك؟» قَالَ: نَعَمْ قَالَ: «فَفِيهِمَا فَجَاهِدْ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ: «فَارْجِعْ إِلَى وَالِدَيْكَ فَأَحْسِنْ صُحْبَتَهُمَا»

3817. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक आदमी रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ने आप से जिहाद में शरीक होने की इजाज़त तलब की तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तेरे वालिदेन जिंदा है?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “इन दोनों (की खिदमत) में मुजाहिदा (इन्तेहाई कोशिश) कर”| एक दूसरी रिवायत में है आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने वालिदेन के पास चला जा और उन से अच्छी तरह सुलूक कर”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3004) و مسلم (5 / 2549)، (6504)

٣٨١٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يَوْمَ الْفَتْحِ: («اهجرة بَعْدَ الْفَتْحِ وَلَكِنْ جِهَادٌ وَنِيَّةٌ وَإِذَا اسْتُنْفِرْتُمْ فانفروا»

3818. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फतह मक्का के रोज़ फ़रमाया: “फतह (मक्के) के बाद कोई हिजरत नहीं लेकिन जिहाद और नियत (बाकी) है और जब तुम से (जिहाद में) निकलने के लिए कहा जाए तो निकलो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2873) و مسلم (445 / 1353)، (3302)

كتاب الْجِهَاد • जिहाद का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٨١٩ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي يُقَاتِلُونَ عَلَى الْحَقِّ ظَاهِرِينَ عَلَى مَنْ نَاوَأَهُمْ حَتَّى يُقَاتِلَ آخِرُهُمُ الْمَسِيحَ الدَّجَّالَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3819. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मेरी उम्मत का एक गिरोह हमेशा हक़ पर लड़ता रहेगा, जो इन से दुश्मनी करेगा यह उस पर ग़ालिब रहेंगे, हत्ता के इन का आखिरी शख़्स मसीह दज्जाल से किताल करेगा”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (2484)

٣٨٢٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَالَ: «مَنْ لَمْ يَغْزُ وَلَمْ يُجَهِّزْ غَازِيًا أَوْ يَخْلُفْ غَازِيًا فِي أَهْلِهِ بِخَيْرٍ أَصَابَهُ اللَّهُ بِقَارِعَةٍ قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3820. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिस शख़्स ने न जिहाद किया और न किसी मुजाहिद को तैयार किया न किसी मुजाहिद के घर में अच्छा जानशीन बना तो अल्लाह रोज़ ए कियामत से पहले इसे किसी सख्त मुसीबत से दो चार करेगा"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2503)

٣٨٢١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «جَاهِدُوا الْمُشْرِكِينَ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ وَأَلْسِنَتِكُمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ والدارمي

3821. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अपने अमवाल, अपनी जानो और अपनी ज़ुबानो के साथ मुशरिकीन से जिहाद करो"| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (2504) و النسائی (6 / 7 ح 3098) و الدارمی (2 / 213 ح 2436) * وله شاھد فی المختارة للضیاء المقدسی (5 / 36 ح 1642)

٣٨٢٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَفْشُوا السَّلَامَ وَأَطْعِمُوا الطَّعَامَ وَاضْرِبُوا الْهَامَ تُوَرَّثُوا الْجِنَانَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حديثٌ غَرِيب

3822. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "सलाम आम करो, खाना खिलाओ और काफिरों के सरदारों की गरदने उड़ाओ, तुम बहिश्तो के वारिस बना दिए जाओगे"| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1854) * فیه عثمان الحمصی : لیس بالقوی و لقوله :'' افشو السلام و اطعموا الطعام '' شواھد صحیحة فالحدیث صحیح دون قوله '' و اضربوا الھام ''

٣٨٢٣ - (صَحِيح) وَعَن فَضالَةَ بنِ عُبيدٍ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كُلُّ مَيِّتٍ يُخْتَمُ عَلَى عَمَلِهِ إِلَّا الَّذِي مَاتَ مُرَابِطًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَإِنَّهُ يُنَمَّى لَهُ عَمَلُهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَيَأْمَنُ فتْنَة الْقَبْر» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

3823. फ़ुज़ालह बिन उबैद रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह की राह में मोरचा बंद होने की हालत में वफात पाने वाले के सिवा हर मय्यत का अमल ख़तम कर दिया जाता

है, मगर उस के अमल में कियामत तक इज़ाफा होता रहता है और वह फितने कब्र से महफ़ूज़ रहता है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (1621 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (2500)

٣٨٢٤ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ الدَّارِمِيّ عَن عقبَة بن عَامر

3824. और दारमी ने उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه الدارمى (2 / 211 ح 2430) [واحمد (4 / 150 ، 157) و الحاكم (2 / 144) و سنده حسن]

٣٨٢٥ - (صَحِيح) وَعَن معاذِ بن جبلٍ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ قَاتَلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَوَاقَ نَاقَةٍ فَقَدْ وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ وَمَنْ جُرِحَ جُرْحًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ نُكِبَ نَكْبَةً فَإِنَّهَا تَجِيءُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كَأَغْزَرِ مَا كَانَتْ لَوْنُهَا الزَّعْفَرَانُ وَرِيحُهَا الْمِسْكُ وَمَنْ خَرَجَ بِهِ خُرَاجٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَإِنَّ عَلَيْهِ طَابَعُ الشُّهَدَاءِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

3825. मुआज़ बिन जबल रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस शख़्स ने “वाक़ नाका” (ऊंटनी का दूध धोते वक़्त जब एक बार थन दबा कर छोड़ दिया जाता है और फिर दोबारा इसे दबाया जाता है तो इस दोबारा दबाने के दरमियानी वक्फे) के बराबर अल्लाह की राह में जिहाद किया तो उस के लिए जन्नत वाजिब हो गई, और जिस शख़्स को अल्लाह की राह में जख्म लगा, या वह किसी हादसे का शिकार हुआ तो वह (ज़ख्म) जिस क़दर (दुनिया में) था उस से कहीं ज़्यादा हो कर रोज़ ए कियामत आएगा, उस का रंग ज़ाफ़रान का सा होगा और उसकी खुशबू कस्तूरी की होगी, और जिस शख़्स को अल्लाह की राह में कोई फोड़ा निकला तो उस पर शुहदा की मुहर व अलामत होगी”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (1657 وقال : صحيح) و ابوداؤد (2541) و النسائى (6 / 25 ح 3135)

٣٨٢٦ - (صَحِيح) وَعَن خُرَيمِ بن فاتِكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَنْفَقَ نَفَقَةً فِي سَبِيلِ اللَّهِ كُتِبَ لَهُ بسبعمائةِ ضعف» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

3826. खुरैम बिन फातिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने अल्लाह की राह में कुछ खर्च किया तो उस के लिए सातसो गुना तक लिख दिया जाता है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (1625 وقال : حسن) و النسائى (6 / 49 ح 3188)

٣٨٢٧ - (حسن) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَفْضَلُ الصَّدَقَاتِ ظِلُّ فُسْطَاطٍ فِي سَبِيلِ

اللَّهِ وَمِنْحَةُ خَادِمٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ طَرُوقَةُ فَحْلٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

3827. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह की राह में खैमा देना अल्लाह की राह में खादिम इनायत करना और अल्लाह की राह में अच्छी सवारी पेश करना सबसे अफ़ज़ल सदका है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1627 وقال : حسن غریب صحیح)

٣٨٢٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَلِجُ النَّارَ مَنْ بَكَى مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ حَتَّى يَعُودَ اللَّبَنُ فِي الضَّرْعِ وَلَا يَجْتَمِعَ عَلَى عَبْدٍ غُبَارٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَدُخَانُ جَهَنَّمَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَزَادَ النَّسَائِيُّ فِي أُخْرَى: «فِي مَنْخِرَيْ مُسْلِمٍ أَبَدًا» وَفِي أُخْرَى: «فِي جَوْفِ عَبْدٍ أَبَدًا وَلَا يَجْتَمِعُ الشُّحُّ وَالْإِيمَانُ فِي قَلْبِ عَبْدٍ أَبَدًا»

3828. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अल्लाह के डर से रोए वह जहन्नम में नहीं जाएगा हत्ता के दूध थन में वापस चला जाए, किसी बंदे पर अल्लाह की राह में पड़ने वाला गुबार और जहन्नम का धुवा इकठ्ठे नहीं होंगे”| इमाम नसई ने दूसरी रिवायत में यह इज़ाफा नकल किया है: “मुसलमान के नथुने में कभी भी जमा नहीं हो सकते”| और इन्ही की दूसरी रिवायत में है: “बन्दे के पेट में कभी भी जमा नहीं हो सकते और बंदे का दिल में बुखल और ईमान कभी इकठ्ठे नहीं हो सकते”| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (1633 وقال : حسن صحیح) و النسائی (6 / 14 ح 3115 و الروایۃ الثانیۃ 6 / 13 ح 3113)

٣٨٢٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " عَيْنَانِ لَا تَمَسُّهُمَا النَّارُ: عَيْنٌ بَكَتْ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَعَيْنٌ بَاتَتْ تَحْرُسُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

3829. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दो आँखे है जिन्हें जहन्नम की आग नहीं छुएगी, एक वह आँख जो अल्लाह के डर से रोई और दूसरी वह आँख जो रात के वक़्त अल्लाह की राह में पहरा देती है”| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (1639 وقال : حسن غریب)

٣٨٣٠ - (حسن) وَعَن أبي هريرةَ قَالَ: مَرَّ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بِشِعْبٍ فِيهِ عُيَيْنَةٌ مِنْ مَاءٍ عَذْبَةٌ فَأَعْجَبَتْهُ فَقَالَ: لَوِ اعْتَزَلْتُ النَّاسَ فَأَقَمْتُ فِي هَذَا [ص:١١٢ الشِّعْبِ فَذَكَرَ ذَلِكَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «لَا تَفْعَلْ فَإِنَّ مَقَامَ أَحَدِكُمْ فِي سَبِيلِ الله أفضل من صلَاته سَبْعِينَ عَامًا أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ وَيُدْخِلَكُمُ الْجَنَّةَ؟ اغْزُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ قَاتَلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَوَاقَ نَاقَةٍ وَجَبت لَهُ الْجنَّة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3830. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा में से एक आदमी एक घाटी के पास से गुज़रा जिस में मीठे पानी का एक छोटा सा चश्मा (झरना) था, इसे यह भला महसूस हुआ तो उन्होंने कहा: अगर में लोगों से अलग थलक हो जाऊं तो मैं इस घाटी में रिहाइश इख़्तियार कर लू, रसूलुल्लाह ﷺ से इस का ज़िक्र किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “ऐसी ख्वाहिश मत करो, क्योंकि तुम में से किसी का अल्लाह की राह में ठहरना उस का अपने घर में सत्तर साल नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, क्या तुम पसंद नहीं करते के अल्लाह तुम्हें मुआफ़ फरमादे और तुम्हें जन्नत में दाखिल फरमादे, अल्लाह की राह में जिहाद करो, जिस शख़्स ने “फवाक़ नाका” (थन से दो दफा दूध निकालने के दरमियानी वक्फे) जितना अल्लाह की राह में किताल किया तो उस पर जन्नत वाजिब हो गई”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1650 وقال : حسن)

٣٨٣١ - (ضَعِيف) وَعَنْ عُثْمَانَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «رِبَاطُ يَوْمٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ يَوْمٍ فِيمَا سِوَاهُ مِنَ الْمَنَازِلِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيّ

3831. उस्मान रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह की राह में एक दिन निगेहबानी करना हज़ार दीन की इबादत से बेहतर है”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (1667 وقال : حسن غریب) و النسائی (6 / 39 40 ح 3171)

٣٨٣٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " عَرَضَ عَلَيَّ أَوَّلُ ثَلَاثَةٍ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ: شَهِيدٌ وَعَفِيفٌ مُتَعَفِّفٌ وَعَبْدٌ أَحْسَنَ عبادةَ اللَّهِ ونصح لمواليه ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3832. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सबसे पहले जन्नत में दाखिल होने वाले तीन शख़्स मुझ पर पेश किए गए: शहीद, अफत व अस्मत वाला जो सवाल करने से बचता है और वह गुलाम जिस ने अल्लाह की इबादत अच्छे अंदाज़ में की और अपने मालिको से भी खैरख्वाही की”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1642 وقال : حسن)

٣٨٣٣ - (صَحِيح) وَعَن عبدِ الله بنِ حُبَشيٍّ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُئِلَ أَيُّ الْأَعْمَالِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: «طُولُ الْقِيَامِ» قِيلَ: فَأَيُّ الصَّدَقَةِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: «جُهْدُ الْمُقِلِّ» قِيلَ: فَأَيُّ الْهِجْرَةِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: «مَنْ هَجَرَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ» قِيلَ: فَأَيُّ الْجِهَادِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: «مَنْ جَاهَدَ الْمُشْرِكِينَ بِمَالِهِ وَنَفْسِهِ» . قِيلَ: فَأَيُّ الْقَتْلِ أَشْرَفُ؟ قَالَ: «مَنْ أُهْرِيقَ دَمُهُ وَعُقِرَ جَوَادُهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ»» وَفِي رِوَايَةٍ للنسائي: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُئِلَ: أيُّ الأعمالِ أفضلُ؟ قَالَ: «إِيمانٌ لَا شكَّ فِيهِ وَجِهَادٌ لَا غُلُولَ فِيهِ وَحَجَّةٌ مَبْرُورَةٌ» . قِيلَ: فَأَيُّ الصَّلَاةِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: «طُولُ الْقُنُوتِ» . ثمَّ اتفقَا فِي الْبَاقِي

3833. अब्दुल्लाह बिन हुब्शीय्यी रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं की नबी ﷺ से दरियाफ्त किया गया कौन सा अमल अफ़ज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तवील कयाम”, फिर पूछा: गया कौन सा सदका अफ़ज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो जो कम माल वाला बकदर गुंजाईश अपने ताकत के मुवाफिक सदका करे”, अर्ज़ किया गया, कौन सी हिजरत अफ़ज़ल है? फ़रमाया: “जिस ने अल्लाह की हराम करदा चीज़ को छोड़ दिया”, पूछा गया कौन सा जिहाद अफ़ज़ल है? फ़रमाया: “जिस ने अपने माल और अपने जान से मुशरिकीन के साथ जिहाद किया”, अर्ज़ किया गया, कौन सा क़त्ल ज़्यादा बाईसे खुश किस्मती है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस का खून बहा दिया जाए और उस के घोड़े की कोंची काट दिया जाए”| और नसई की रिवायत में है की नबी ﷺ से दरियाफ्त किया गया के कौन से आमाल सबसे अफ़ज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो ईमान जिस में कोई शक न हो, वह जिहाद जिस में कोई खयानत न हो और हज ए मकबूल”, फिर अर्ज़ किया गया, कौन सी नमाज़ अफ़ज़ल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस में लम्बा कयाम हो”| फिर उस के बाद वाली रिवायत पर दोनों (इमाम अबू दावुद और इमाम नसई) का इत्तेफाक है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (1449) و النسائی (5 / 58 ح 2527 و سنده حسن)

٣٨٣٤ - (صَحِيح) وَعَنِ الْمِقْدَامِ بْنِ مَعْدِي كَرِبَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لِلشَّهِيدِ عِنْدَ اللَّهِ سِتُّ خِصَالٍ: يُغْفَرُ لَهُ فِي أَوَّلِ دفعةٍ وَيَرَى مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ وَيُجَارُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَيَأْمَنُ مِنَ الْفَزَعِ الْأَكْبَرِ وَيُوضَعُ عَلَى رَأْسِهِ تَاجُ الْوَقَارِ الْيَاقُوتَةُ مِنْهَا خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا ويزوَّجُ ثنتينِ وَسَبْعِينَ زَوْجَةً مِنَ الْحُورِ الْعِينِ وَيُشَفَّعُ فِي سَبْعِينَ مِنْ أَقْرِبَائِهِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

3834. मिक्दाम बिन मअदीकरीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “शहीद के लिए अल्लाह के यहाँ छे इनामात है: इसे पहले कतरे खून गिरने पर बख्श दिया जाता है, उस का जन्नत में ठिकाना इसे दिखा दिया जाता है, इसे अज़ाब ए कब्र से बचा लिया जाता है, वह (कियामत की) बड़ी घबराहट से महफ़ूज़ रहेगा, उस के सर पर वक़ार (गरिमा) का ताज रख दीया जाएगा, उस का एक याकुत दुनिया और उस में जो कुछ है उस से बेहतर है, बेहतर (72) हूरो से उसकी शादी कराइ जाएगी और उस के सत्तर रिश्तेदारों के बारे में उसकी सिफारिश कबूल की जाएगी”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1663 وقال : صحیح غریب) و ابن ماجه (2799)

٣٨٣٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ لَقِيَ اللَّهَ بِغَيْرِ أَثَرٍ مِنْ جِهَادٍ لَقِيَ اللَّهَ وَفِيهِ ثُلْمَةٌ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

3835. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स जिहाद के असरात के बगैर अल्लाह से मुलाकात करेगा तो वह अल्लाह से इस हाल में मुलाकात करेगा के (इस शख़्स के दीन) में नुक्स

व खलल होगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1666 وقال : غريب) و ابن ماجه (2763) * فيه اسماعيل بن رافع : ضعيف الحفظ

٣٨٣٦ - (حسن) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الشَّهِيدُ لَا يَجِدُ أَلَمَ الْقَتْلِ إِلَّا كَمَا يَجِدُ أَحَدُكُمْ أَلَمَ الْقَرْصَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

3836. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “शहीद क़त्ल होने की इतनी भी तकलीफ महसूस नहीं करता जितनी तुम में से कोई चींटी के काटने की तकलीफ महसूस करता है”| तिरमिज़ी, नसई, दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (1668) و النسائى (6 / 36 ح 3163) و الدارمى (2 / 205 ح 2413) * محمد بن عجلان مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة

٣٨٣٧ - (حسن) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " لَيْسَ شَيْءٌ أَحَبَّ إِلَى اللَّهِ مِنْ قَطْرَتَيْنِ وَأَثَرَيْنِ: قَطْرَةِ دُمُوعٍ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَقَطْرَةِ دَمٍ يُهْرَاقُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَمَّا الْأَثَرَانِ: فَأَثَرٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَثَرٌ فِي فَرِيضَةٍ مِنْ فَرَائِضِ اللَّهِ تَعَالَى ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

3837. अबू उमामा (र), नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह को दो कतरों और दो निशानों से ज़्यादा कोई चीज़ पसंद नहीं, अल्लाह के डर से गिरने वाला आंसू और अल्लाह की राह में बहाया जाने वाला खून का कतरा, और दो निशानों से मकसूद एक निशान वह है जो अल्लाह की राह में ज़ख्म या चोट वगैरा से आए और दूसरा निशान अल्लाह के किसी फ़रीज़े की अदाइगी की सूरत में रवानुमा होने वाला है (मसलन सजदाह वगैरा के निशान)”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (1669)

٣٨٣٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَرْكَبِ الْبَحْرَ إِلَّا حَاجًّا أَوْ مُعْتَمِرًا أَوْ غَازِيًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَإِنَّ تَحْتَ الْبَحْرِ نَارًا وَتَحْتَ النَّارِ بَحْرًا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

3838. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हज करने या उमरा करने या अल्लाह की राह में जिहाद करने के अलावा समुन्दर का सफ़र न करो, क्योंकि समुन्दर के नीचे आग है और आग के नीचे समुन्दर है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2489) * فيه بشير بن مسلم : مجهول و الحديث ضعفه البخارى وغيره

٣٨٣٩ - (حسن) وَعَن أم حرَام عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْمَائِدُ فِي الْبَحْرِ الَّذِي يُصِيبُهُ الْقَيْءُ لَهُ أَجْرُ شَهِيدٍ وَالْغَرِيقُ لَهُ أَجْرُ شَهِيدَيْنِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3839. उम्म हराम रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करती हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: "समुन्दर (के सफ़र) में चकराने वाले शख़्स को कै आजाए तो उस के लिए एक शहीद का अज़र है, और जो शख़्स डूब जाए तो उस के लिए दो शहीद का अज़र है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2493)

٣٨٤٠ - (ضَعِيف) وَعَن أبي مالكٍ الأشعريِّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ فَصَلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَمَاتَ أَوْ قُتِلَ أَوْ وَقَصَهُ فَرَسُهُ أَوْ بَعِيرُهُ أَوْ لَدَغَتْهُ هَامَّةٌ أَو مَاتَ فِي فِرَاشِهِ بِأَيِّ حَتْفٍ شَاءَ اللَّهُ فَإِنَّهُ شَهِيدٌ وَإِن لَهُ الْجنَّة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3840. अबू मालिक अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जो शख़्स अल्लाह की राह में निकले और वह फौत हो जाए या इसे क़त्ल कर दिया जाए या उस का घोड़ा या उस का ऊंट इसे गिरा दे या कोई ज़हरीली चीज़ इसे दस ले या वह अपने बिस्तर पर किसी किस्म की मौत से अल्लाह की मशियत से फौत हो जाए तो वह शहीद है और उस के लिए जन्नत है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2499) [و صححه الحاکم علی شرط مسلم (2 / 7879) فرده الذھبی] * بقیة صرح بالسماع و قال الذھبی : و عبد الرحمن بن غنم لم یدرکه مکحول فیما اظن ، (تلخیص المستدرک 2 / 7879)

٣٨٤١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «قَفْلَةٌ كغزوة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3841. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "(जिहाद से) वापस आना जिहाद की तरह है"| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (2487)

٣٨٤٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لِلْغَازِي أَجْرُهُ وَلِلْجَاعِلِ أَجْرُهُ وَأَجْرُ الْغَازِي» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3842. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिहाद करने वाले के लिए उस का अज़र है और जिहाद पर तैयार करने वाले के लिए तय्यारी का अज़र भी है और जिहाद करने का अज़र भी है"| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (2526)

٣٨٤٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي أَيُّوب سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يَقُولُ: «سَتُفْتَحُ عَلَيْكُمُ الْأَمْصَارُ وَسَتَكُونُ جُنُودٌ مُجَنَّدَةٌ يُقْطَعُ عَلَيْكُمْ فِيهَا بُعُوثٌ فَيَكْرَهُ الرَّجُلُ الْبَعْثَ فَيَتَخَلَّصُ مَنْ قَوْمِهِ ثُمَّ يَتَصَفَّحُ الْقَبَائِلَ يَعْرِضُ نَفْسَهُ عَلَيْهِمْ مَنْ أَكْفِيهِ بَعْثَ كَذَا أَلَا وَذَلِكَ الْأَجِيرُ إِلَى آخِرِ قَطْرَةٍ مِنْ دَمِهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3843. अबू अय्यूब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “तुम पर इलाके फतह किए जाएँगे और फ़ौजी मजतमअ (जटिल) होगी उस में से चंद दस्ते तश्कील दिए जाएँगे, एक शख़्स (बिला उजरत) जाना पसंद नहीं करेगा और वह अपनी कौम से अलग हो जाएगा, फिर वह ऐसे क़बीलो को तलाश करेगा जिन के सामने वह अपनी खिदमात पेश करेगा और कहेगा के कौन है के शख़्स जिस की जगह में लश्कर में शिरकत करू, सुन लो! ऐसा शख़्स अपने खून के आखिरी कतरे तक अजिर है (वोह सवाब से महरूम रहेगा)”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2525) * فيه ابو سورة ابن اخى ابى ايوب : ضعيف

٣٨٤٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن يَعْلى بن أُميَّةَ قَالَ: أَذِنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بالغزو وَأَن شَيْخٌ كَبِيرٌ لَيْسَ لِي خَادِمٌ فَالْتَمَسْتُ أَجِيرًا يَكْفِينِي فَوَجَدْتُ رَجُلًا سَمَّيْتُ لَهُ ثَلَاثَةَ دَنَانِيرَ فَلَمَّا حَضَرَتْ غَنِيمَةٌ أَرَدْتُ أَنْ أُجْرِيَ لَهُ سَهْمَهُ فَجِئْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَذَكَرَتْ لَهُ فَقَالَ: «مَا أَجِدُ لَهُ فِي غَزْوَتِهِ هَذِهِ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ إِلَّا دَنَانِيرَهُ الَّتِي تسمى» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3844. यअली बिन उमय्य बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने गज़वा का एलान फ़रमाया तो मैं इस वक़्त बुढ़ा शख़्स था, मेरे पास कोई खादिम भी नहीं था,मैंने अपनी तरफ से किफ़ायत करने के लिए एक अजिर तलाश किया चुनांचे मुझे एक आदमी मिल गया, मैंने उस के लिए तीन दीनार तेअ किए, जब माले गनीमत आया तो मैंने इसे उस का हिस्सा देने का इरादा किया, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और आप से यह बयान किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं इस गज़वा में उस के लिए उन तीन मकरुर दीनार के अलावा दुनिया व आखिरत में कुछ और नहीं पाता”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2527)

٣٨٤٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَجُلًا قَالَ: يَا رسولَ الله رجلٌ يُرِيدُ الْجِهَادَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَهُوَ يَبْتَغِي عَرَضاً من عرَضِ الدُّنْيَا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا أجر لَهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3845. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के किसी आदमी ने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! एक आदमी अल्लाह की राह में जिहाद करना चाहता है जबकि वह दुनिया का माल व मताअ चाहता है, नबी ﷺ ने फ़रमाया:

“उस के लिए कोई अज्र नहीं”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2516)

٣٨٤٦ - (حسن) وَعَنْ مُعَاذٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْغَزْوُ غَزْوَانِ فَأَمَّا مَنِ ابْتَغَى وَجْهَ اللَّهِ وَأَطَاعَ الْإِمَامَ وَأَنْفَقَ الْكَرِيمَةَ وَيَاسَرَ الشَّرِيكَ واجتنبَ الْفساد فَإِن نَومه ونهبه أَجْرٌ كُلُّهُ. وَأَمَّا مَنْ غَزَا فَخْرًا وَرِيَاءً وَسُمْعَةً وَعَصَى الْإِمَامَ وَأَفْسَدَ فِي الْأَرْضِ فَإِنَّهُ لَمْ يَرْجِعْ بِالْكَفَافِ» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ

3846. मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिहाद दो किस्म का है, रहा वह शख़्स जिस ने अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए जिहाद किया, इमाम व अमीर की इताअत की, इन्तिहाई कीमती माल खर्च किया, अपने साथी को आसानी व सहूलत फराहम की और फसाद से बचा तो ऐसे शख़्स का सोना और जागना सब बाईस ए अज़र है, दूसरा वह शख़्स जिस ने फख्र व रिया निज़ शोहरत की खातिर जिहाद किया, इमाम व अमीर की नाफ़रमानी की और ज़मीन में फसाद पैदा किया तो वह सवाब के साथ वापस नहीं आता”| (सहीह)

صحيح ، رواه مالک (2 / 466 ح 1030 وهو موقوف / حسن) و ابوداؤد (2515 و سنده صحيح) و النسائی (6 / 4950 ح 31904200)

٣٨٤٧ - (ضَعِيف) وَعَن عبد الله بن عَمْرو أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَخْبِرْنِي عَنِ الْجِهَادِ فَقَالَ: «يَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو إِنْ قَاتَلْتَ صَابِرًا مُحْتَسِبًا بَعَثَكَ اللَّهُ صَابِرًا مُحْتَسِبًا وَإِنْ قَاتَلْتَ مُرَائِيًا مُكَاثِرًا بَعَثَكَ اللَّهُ مُرَائِيًا مُكَاثِرًا يَا عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو عَلَى أَيِّ حَالٍ قَاتَلْتَ أَوْ قُتِلْتَ بَعَثَكَ اللَّهُ عَلَى تِلْكَ الْحَالِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

3847. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुझे जिहाद के बारे में बताइए? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अब्दुल्लाह बिन अमर! अगर तुमने साबित कदमी और सवाब की उम्मीद रखने वाले की नियत से जिहाद किया तो अल्लाह तुम्हें इसी नियत के मुताबिक साबिर व मुहतसिब के तौर पर उठाएगा, और अगर तुमने दिखलाने के लिए और तकासर व तफाखर के तौर पर जिहाद किया तो अल्लाह तुम्हें रियाकार और फख्र करने वाला बना कर उठाएगा, अब्दुल्लाह बिन अमर! तुमने जिस भी हालत पर किताल किया या तो क़त्ल कर दिया गया तो अल्लाह तुम्हें इसी हालत पर उठाएगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2519) [و صححه الحاكم (2 / 8586) و وافقه الذهبى]

٣٨٤٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عقبَة بن مَالك عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أعجزتم إِذا بعثت رجلا فَم يَمْضِ لِأَمْرِي أَنْ تَجْعَلُوا مَكَانَهُ مَنْ يَمْضِي لِأَمْرِي؟» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ»» وَذَكَرَ حَدِيثَ فَضَالَةَ: «وَالْمُجَاهِدُ مَنْ جَاهَدَ نَفْسَهُ» . فِي «كِتَابِ الْإِيمَانِ»

3848. उक्बा बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम उसकी कुदरत नहीं रखते की जब में किसी आदमी को (अमिर बना कर) भेजू और वह मेरे हुक्म की मुखालिफत करे तो तुम उसकी जगह किसी ऐसे आदमी को (अमिर) बना लो जो मेरे हुक्म की तामिल करे”| # और फज़ालह से मरवी हदीस: मुजाहिद वह है जिस ने अपनी नफ्स से जिहाद किया | किताबुल ईमान में ज़िक्र की गई है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2537) * حديث فضالة : و المجاهد من جاهد بنفسه (تقدم : 34)

كتاب الْجِهَاد • जिहाद का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٨٤٩ - (لم تتمّ دراسته) عَن أبي أُمامةَ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَرِيَّةٍ فَمَرَّ رَجُلٌ بِغَارٍ فِيهِ شَيْءٌ مِنْ مَاءٍ وَبَقْلٍ فَحَدَّثَ نَفْسَهُ بِأَنْ يُقِيمَ فِيهِ وَيَتَخَلَّى مِنَ الدُّنْيَا فَاسْتَأْذَنَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي ذَلِكَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنِّي لَمْ أُبْعَثْ بِالْيَهُودِيَّةِ وَلَا بِالنَّصْرَانِيَّةِ وَلَكِنِّي بُعِثْتُ بِالْحَنِيفِيَّةِ السَّمْحَةِ وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَغَدْوَةٌ أَوْ رَوْحَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا وَلَمَقَامُ أَحَدِكُمْ فِي الصَّفِّ خَيْرٌ مِنْ صَلَاتِهِ سِتِّينَ سَنَةً» رَوَاهُ أَحْمد .

3849. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम एक लश्कर मैं रसूलुल्लाह ﷺ की साथ में रवाना हुए तो एक आदमी एक ग़ार के पास से गुज़रा जिस में थोड़ा पानी और सब्ज़ी थी, उस ने अपने दिल में सोचा के वह दुनिया से अलग थलग हो कर इसी जगह कयाम पज़ीर हो जाए, उस ने इस बारे में रसूलुल्लाह ﷺ से इजाज़त तलब की तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुझे यहूदियत के लिए मबउस नहीं किया गया है और न नासरानियत के लिए भेजा गया है बल्कि मुझे तो दिने तोहिद जो के आसान दीन है दे कर भेजा गया है, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मुहम्मद ﷺ की जान है, अल्लाह की राह में सुबह या शाम लगाना दुनिया और जो कुछ इस में है उस से बेहतर है और तुम में से किसी का (जिहाद की) सफ में कयाम उसकी साठ साल की नमाज़ से बेहतर है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه احمد (5 / 366 ح 22647) * فيه معان بن رفاعة (ضعيف) عن على بن يزيد (ضعيف جدًا) عن القاسم عن ابى امامة به الخ

٣٨٥٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ غَزَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَمْ يَنْوِ إِلَّا عِقَالًا فَلَهُ مَا نَوَى» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

3850. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने (ऊंट

का घुटना बांधने वाली) रस्सी हासिल करने की नियत से अल्लाह की राह में जिहाद किया तो उसे अपने नियत के मुताबिक अज्र मिलेगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائی (6 / 24 ح 3140) [و صححه ابن حبان (1605) و الحاکم (2 / 109) و وافقه الذهبی]

٣٨٥١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم قَالَ: «من رَضِي بِاللَّه رَبًّا وَالْإِسْلَام دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولًا وَجَبَتْ لَهُ الْجَنَّةُ» . فَعَجِبَ لَهَا أَبُو سَعِيدٍ فَقَالَ: أَعِدْهَا عَلَيَّ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَأَعَادَهَا عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: «وَأُخْرَى يَرْفَعُ اللَّهُ بِهَا [ص:١١٣ الْعَبْدَ مِائَةَ دَرَجَةٍ فِي الْجَنَّةِ مَا بَيْنَ كُلِّ دَرَجَتَيْنِ كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ» . قَالَ: وَمَا هِيَ يَا رَسُولَ الله؟ قَالَ: «الْجِهَاد فِي سَبِيل الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ الله» . رَوَاهُ مُسلم

3851. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अल्लाह के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद ﷺ के रसूल होने पर राज़ी हो गया तो उस के लिए जन्नत वाजिब हो गई”| अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु ने उन कलिमात पर ताज्जुब करते हुए अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! यह कलिमात मुझे दोबारा सुनाइए, आप ﷺ ने यह कलिमात उन्हें दोबारा सुनाए, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “एक और चीज़ है जिस की वजह से अल्लाह बंदे को जन्नत में सौ दरजे बुलंद फरमा देता है, हर दो दरजो के दरमियान इस क़दर फासला है जैसे ज़मीन व आसमान के दरमियान फासला है”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! वह क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह की राह में जिहाद करना, अल्लाह की राह में जिहाद करना, अल्लाह की राह में जिहाद करना”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (116 / 1884)، (4879)

٣٨٥٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَبْوَابَ الْجَنَّةِ تَحْتَ ظِلَالِ السُّيُوفِ» فَقَامَ رَجُلٌ رَثُّ الْهَيْئَةِ فَقَالَ: يَا أَبَا مُوسَى أَنْتَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ هَذَا؟ قَالَ: نَعَمْ فَرَجَعَ إِلَى أَصْحَابِهِ فَقَالَ: أَقْرَأُ عَلَيْكُمُ السَّلَامَ ثُمَّ كَسَرَ جَفْنَ سَيْفِهِ فَأَلْقَاهُ ثُمَّ مَشَى بِسَيْفِهِ إِلَى الْعَدُوِّ فَضَرَبَ بِهِ حَتَّى قُتِلَ. رَوَاهُ مُسلم

3852. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जन्नत के दरवाज़े तलवारों के साए तले है”, (ये सुन कर) एक फ़क़ीरुलहाल शख़्स खड़ा हुआ और उस ने अर्ज़ किया, अबू मूसा! क्या तुम ने रसूलुल्लाह ﷺ को यह फरमाते हुए सुना है? उन्होंने कहा: हाँ, वह शख़्स अपने साथियो की तरफ पलटा और कहा: मेरा तुम्हें सलाम पहुंचे, फिर उस ने अपने तलवार की मियान तोड़ कर फेंक दिया और अपने तलवार लेकर दुश्मन की तरफ बढ़ा और वह उस के साथ किताल करते करते शहीद हो गया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (146 / 1902)، (4916)

٣٨٥٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم قَالَ لِأَصْحَابِهِ: " إِنَّهُ لَمَّا أُصِيبَ إِخْوَانُكُمْ يَوْمَ أُحُدٍ جَعَلَ اللَّهُ أَرْوَاحَهُمْ فِي جَوْفِ طَيْرٍ خُضْرٍ تَرِدُ أَنْهَارَ الْجَنَّةِ تَأْكُلُ مِنْ ثِمَارِهَا وَتَأْوِي إِلَى قَنَادِيلَ مِنْ ذَهَبٍ مُعَلَّقَةٍ فِي ظلِّ العرْشِ فلمَّا وجَدوا طِيبَ مأكَلِهِم ومشرَبِهِمْ ومَقِيلِهِم قَالُوا: مَنْ يُبَلِّغُ إِخْوانَنا عنَا أَنَّنا أَحْيَاءٌ فِي الْجَنَّةِ لِئَلَّا يَزْهَدُوا فِي الْجَنَّةِ وَلَا يَنكُلوا عندَ الحربِ فَقَالَ اللَّهُ تَعَالَى: أَنا أبلغكم عَنْكُمْ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: (وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءٌ)»» إِلَى أخر الْآيَات)»» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3853. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने सहाबा रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: “जब गज़वा ए उहद में तुम्हारे भाई शहीद कर दिए गए तो अल्लाह तआला ने उनकी रूहें सब्ज़ परिंदों के पेट में दाखिल कर दी, वह जन्नत की नहरों पर आते है, जन्नत के मेवे खाते है और अर्श के साए में मुअल्लक सोने की किन्दिलो (lamps) में बसेरा करते हैं, चुनांचे जब वह बेहतरीन खाना पीना और आराम गाह पाते है तो वह कहते हैं, हमारे मुतल्लिक हमारे भाइयो को कौन बताए के हम जन्नत में जिंदा है ताकि वह भी जन्नत की रगबत रखे और लड़ाई (जिहाद) के वक़्त सुस्ती न करे, अल्लाह तआला ने कहा में तुम्हारी बात उन तक पहुंचाउंगा चुनांचे अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फरमाई: “अल्लाह की राह में क़त्ल हो जाने वालो को मुर्दा मत गुमान करो बल्कि वह जिंदा है”, आख़िर आयत तक| (सहीह,हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (2520) [و صححه الحاكم على شرط مسلم (2 / 588 ، 297) و وافقه الذهبى] * ابن اسحاق صرح بالسماع و للحديث شواهد

٣٨٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " الْمُؤْمِنُونَ فِي الدُّنْيَا عَلَى ثَلَاثَةِ أَجْزَاءٍ: الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ [ص:١١٣ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِي يأمنه النَّاس على النَّاسُ عَلَى أَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ثُمَّ الَّذِي إِذَا أَشْرَفَ عَلَى طَمَعٍ تَرَكَهُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ ". رَوَاهُ أَحْمد

3854. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दुनिया में मोमिनो की तीन किस्म हैं: वह लोग जो अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाए, फिर उन्होंने शक न किया और उन्होंने अपने जानो और अपने मालो के साथ अल्लाह की राह में जिहाद किया, (दूसरा) वह शख़्स जिस से लोगों का जान व माल महफ़ूज़ हो, तीसरा वह शख़्स जब इसे ताअम का ख़याल आता है तो वह इसे अल्लाह अज्ज़वजल की खातिर तर्क कर देता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (3 / 8 ح 11065) * فيه اشدين بن سعد المصرى ضعيف

٣٨٥٥ - (حسن) وَعَن عبدِ الرَّحمنِ بن أبي عَميرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا مِنْ نَفْسٍ مُسْلِمَةٍ يَقْبِضُهَا رَبُّهَا تُحِبُّ أَنْ تَرْجِعَ إِلَيْكُمْ وَأَنَّ لَهَا الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا غير الشَّهِيد» قَالَ ابْن عَميرَة: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَأَنْ أُقْتَلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ يَكُونَ لِي أَهْلُ الْوَبَرِ وَالْمَدَرِ» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

3855. अब्दुल रहमान बिन अबी उमैर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “शहीद

के सिवा कोई ऐसा मुसलमान नहीं जिस रूह उस का रब कब्ज़ कर ले और वह तुम्हारी तरफ लौटने को पसंद करे और चाहे के दुनिया और जो कुछ इस में है वह उस के लिए हो”| इब्ने अबी उमैर रदियल्लाहु अन्हु ने बयान किया रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुझे अल्लाह की राह में शहीद हो जाना दुनिया और जो कुछ इस में है इस के मिल जाने से ज़्यादा महबूब है”| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائی (6 / 33 ح 3155)

٣٨٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ حَسْنَاءَ بِنْتِ مُعَاوِيَةَ قَالَتْ: حَدَّثَنَا عَمِّي قَالَ: قُلْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ فِي الْجَنَّةِ؟ قَالَ: «النَّبِيُّ فِي الْجَنَّةِ وَالشَّهِيدُ فِي الْجَنَّةِ وَالْمَوْلُودُ فِي الْجَنَّةِ وَالْوَئِيدُ فِي الْجَنَّة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3856. हसनाअ बिन्ते मुआविया रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मेरे चचा ने हमें हदीस बयान की वह कहते हैं की मैंने नबी ﷺ से अर्ज़ किया, जन्नती कौन है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नबी जन्नती है, शहीद जन्नती है, छोटे बच्चे जन्नती है और जिंदा दरगोर किए गए जन्नती है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2521) * حسناء مجهولة الحال و للحديث شواهد ضعيفة و فی الباب حديث يخالفه (انظر سنن ابی داود : 4717) كان بعض المؤدات فی الجنة و بعض فی النار ، والله اعلم

٣٨٥٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَلِيٍّ وَأَبِي الدَّرْدَاءِ وَأَبِي هُرَيْرَةَ وَأَبِي أَمَامَةَ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ عُمَرَ وَعَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو وَجَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ وَعِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ كُلُّهُمْ يُحَدِّثُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: «مَنْ أَرْسَلَ نَفَقَةً فِي سبيلِ الله وأقامَ فِي بيتِه فلَه بكلِّ دِرْهَمٍ سَبْعُمِائَةِ دِرْهَمٍ وَمَنْ غَزَا بِنَفْسِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَنْفَقَ فِي وَجْهِهِ ذَلِكَ فَلَهُ بِكُلِّ دِرْهَمٍ سَبْعُمِائَةِ أَلْفِ دِرْهَمٍ» . ثُمَّ تَلَا هذهِ الآيةَ: (واللَّهُ يُضاعفُ لمنْ يشاءُ)»» رَوَاهُ ابنُ مَاجَه

3857. अली, अबू दरदा, अबू हुरैरा, अबू उमामा, अब्दुल्लाह बिन उमर, अब्दुल्लाह बिन अमर, जाबिर बिन अब्दुल्लाह और इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हुम सब रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस शख़्स ने अल्लाह की राह में खर्चा भेजा और वह खुद अपने घर में रहा तो उस के लिए हर दिरहम के बदले में सातसो दिरहम का अज़्र है| और जिस ने बज़ाते खुद जिहाद में शिरकत की और अल्लाह तआला की रज़ा के लिए खर्च किया तो उस के लिए हर दिरहम के बदले में सात लाख दिरहम का अज़्र है”, फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फरमाई: “अल्लाह जिसके लिए चाहता है बढ़ा देता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (2761) * قال البوصيری :’’ هذا اسناده ضعيف ، الخليل بن عبدالله : لا يعرف ‘‘ و فيه علة أخرى

٣٨٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن فَضالةَ بنِ عُبيد قَالَ: سمِعْتُ عمَرَ بن الْخطاب يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " الشُّهَدَاءُ أَرْبَعَةٌ: رَجُلٌ مُؤْمِنٌ جَيِّدُ الْإِيمَانِ لَقِيَ الْعَدُوَّ فَصَدَقَ اللَّهَ حَتَّى قُتِلَ فَذَلِكَ الَّذِي يَرْفَعُ النَّاسُ إِلَيْهِ

أَعْيُنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ [ص:١١٣ هَكَذَا " وَرَفَعَ رَأْسَهُ حَتَّى سَقَطَتْ قَلَنْسُوَتُهُ فَمَا أَدْرِي أَقَلَنْسُوَةَ عُمَرَ أَرَادَ أَمْ قَلَنْسُوَةَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: «وَرَجُلٌ مُؤْمِنٌ جَيِّدُ الْإِيمَانِ لَقِيَ الْعَدُوَّ كَأَنَّمَا ضَرَبَ جِلْدَهُ بِشَوْكِ طَلْحٍ مِنَ الْجُبْنِ أَتَاهُ سَهْمٌ غَرْبٌ فَقَتَلَهُ فَهُوَ فِي الدَّرَجَةِ الثَّانِيَةِ وَرَجُلٌ مُؤْمِنٌ خَلَطَ عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا لَقِيَ الْعَدُوَّ فَصَدَقَ اللَّهَ حَتَّى قُتِلَ فَذَلِكَ فِي الدَّرَجَةِ الثَّالِثَةِ وَرَجُلٌ مُؤْمِنٌ أَسْرَفَ عَلَى نَفْسِهِ لَقِيَ الْعَدُوَّ فَصَدَقَ اللَّهَ حَتَّى قُتِلَ فَذَاكَ فِي الدَّرَجَةِ الرَّابِعَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

3858. फ़ुज़ालह बिन उबैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु को बयान करते हुए सुना वह कहते हैं की मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “शुहदा की चार किस्मे है एक वह मोमिन जो कामिल(सर्वोत्तम) ईमान वाला जिस ने दुश्मन से मुलाकात की तो उस ने अल्लाह को (अपना अमल) सच कर दिखाया हत्ता के वह शहीद कर दिया, गया चुनांचे यही वह शख़्स है जिस की तरफ लोग रोज़ ए कियामत इस तरह अपने आँखे उठा कर देखेंगे”, और उन्होंने अपना सर उठाया हत्ता के उनकी टोपी गिर पड़ी, रावी बयान करते हैं, मुझे मालुम नहीं के उन्होंने उमर रदियल्लाहु अन्हु की टोपी मुराद ली या नबी ﷺ की टोपी फ़रमाया: “(दूसरा) मोमिन आदमी कामिल(सर्वोत्तम) ईमान वाला वह है, जो दुश्मन से मुलाकात करता है लेकिन बुज़दिली की वजह से उसकी जल्द में तल्ह (कांटे दार बड़ा दरख्त जिसके फुल खुशबू दार होते हैं) के कांटे चुभोए रहे हैं, फिर एक ना मालूम तीर आता है तो वह इसे क़त्ल कर देता है, यह शख़्स दूसरे दरजे का है, (तीसरा) वह मोमिन आदमी जिस की नेकियाँ भी है और बुराइया भी, वह जब दुश्मन से मुलाकात करता है तो अल्लाह को (अपना अमल) सच कर दीखाता है, हत्ता के वह शहीद हो जाता है, यह तीसरे दरजे में है और (चोथा) वह मोमिन आदमी जिस ने (गुनाह कर के) अपने नफ्स पर ज़्यादती की, वह दुश्मन से मिलता है तो अल्लाह को (अपना अमल) सच कर दिखाता है हत्ता के वह क़त्ल कर दिया जाता है, यह शख़्स चोथे दरजे में है”| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1644) * ابو یزید الخولانی مجھول الحال : لم یوثقه غیر الترمذی فیما اعلم وقال فی التقریب :’’ مجھول ‘‘

٣٨٥٩ - (صَحِيح) وَعَن عُتبةَ بن عبدٍ السَّلَمِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: " الْقَتْلَى ثَلَاثَةٌ: مُؤمن جَاهد نَفسه وَمَالِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَإِذَا لَقِيَ الْعَدُوَّ قَاتَلَ حَتَّى يُقْتَلَ " قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيهِ: «فَذَلِكَ الشَّهِيدُ الْمُمْتَحَنُ فِي خَيْمَةِ اللَّهِ تَحْتَ عَرْشِهِ لَا يَفْضُلُهُ النَّبِيُّونَ إِلَّا بِدَرَجَةِ النُّبُوَّةِ وَمُؤْمِنٌ خَلَطَ عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا جَاهَدَ بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ إِذَا لَقِيَ الْعَدُوَّ قَاتَلَ حَتَّى يُقْتَلَ» قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيهِ: «مُمَصْمِصَةٌ مَحَتْ ذُنُوبَهُ وَخَطَايَاهُ إِنَّ السَّيْفَ مَحَّاءٌ لِلْخَطَايَا وَأُدْخِلَ مِنْ أَيِّ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ شَاءَ وَمُنَافِقٌ جَاهَدَ بِنَفْسِهِ وَمَالِهِ فَإِذَا لَقِيَ الْعَدُوَّ قَاتَلَ حَتَّى يُقْتَلَ فَذَاكَ فِي النَّارِ إِنَّ السيفَ لَا يمحُو النِّفاقَ» . رَوَاهُ الدارميُّ

3859. उत्बा बिन अब्द स्सुलुमी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “शुहदा तीन किस्म के है: वह मोमिन जिस ने अपने जान और अपने माल के साथ अल्लाह की राह में जिहाद किया, जब वह दुश्मन से मुलाकात करता है तो किताल करता है हत्ता के वह शहीद कर दिया जाता है”, नबी ﷺ ने उस के बारे में फ़रमाया: “ये वह शहीद है जिसे आज़माया गया है, यह अल्लाह के अर्श (के साए तले) अल्लाह के खैमे में होगा

और अंबिया अलैहिस्सलाम को उस पर फ़क़त नबूवत के दरजे की वजह से फ़ज़ीलत हासिल होगी, (दूसरा) वह मोमिन जिसके नेक आमाल होंगे और बुराइया भी होगी, उस ने अपने माल व जान के साथ अल्लाह की राह में जिहाद किया, जब वह दुश्मन से मुलाकात करता है तो किताल करता है हत्ता के वह शहीद कर दिया जाता है", नबी ﷺ ने उस के बारे में फ़रमाया: "मंसबे शहादत ने इसे गुनाहों से पाक कर दिया, उस के गुनाहों और उसकी खताओं को ख़तम कर दिया, क्योंकि तलवार खताओं को नाबूद करने वाली है, और इसे उसकी पसंद के बाब जन्नत से दाखिल कर दिया गया, और (तीसरा) मुनाफ़िक़ जिस ने अपने माल व जान से जिहाद किया, यह शख़्स आग में है, क्योंकि तलवार निफ़ाक़ नहीं मिटाती"| (हसन)

حسن ، رواه الدارمی (2 / 206207 ح 2416 ، نسخة محققة : 2455) * معاوية بن يحيى الصدفى ضعيف و لكن رواه ابن حبان (الاحسان : 4644) و احمد 4 / 185186) وغيرهما بسند حسن نحوه فالحديث حسن

٣٨٦٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابْن عائذٍ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي جِنَازَةِ رَجُلٍ [ص:١١٣ فَلَمَّا وُضِعَ قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: لَا تُصَلِّ عَلَيْهِ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَإِنَّهُ رَجُلٌ فَاجِرٌ فَالْتَفَتَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى النَّاسِ فَقَالَ: «هَلْ رَآهُ أَحَدٌ مِنْكُمْ عَلَى عَمَلِ الْإِسْلَامِ؟» فَقَالَ رَجُلٌ: نَعَمْ يَا رَسُولَ اللَّهِ حَرَسَ لَيْلَةً فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَصَلَّى عَلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَحَثَا عَلَيْهِ التُّرَابَ وَقَالَ: «أَصْحَابُكَ يَظُنُّونَ أَنَّكَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ وَأَنَا أَشْهَدُ أَنَّكَ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ» وَقَالَ: «يَا عُمَرُ إِنَّكَ لَا تُسْأَلُ عَنْ أَعْمَالِ النَّاسِ وَلَكِنْ تُسْأَلُ عَنِ الْفِطْرَةِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ»

3860. इब्ने आइज़ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ किसी आदमी के जनाज़े के साथ तशरीफ़ लाए, जब इसे रखा गया तो उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! उसकी नमाज़े जनाज़ा मत पढ़ाईए क्योंकि यह फ़ाजिर शख़्स है, रसूलुल्लाह ﷺ ने लोगों की तरफ तवज्जो फरमा कर पूछा: "क्या तुम में से किसी ने इसे इस्लाम का कोई अमल करते हुए देखा है?" एक आदमी ने अर्ज़ किया, जी हाँ! अल्लाह के रसूल! उस ने एक रात अल्लाह की राह में पहरा दिया था, रसूलुल्लाह ﷺ ने उसकी नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ाई और इस (की कब्र) पर मिट्टी डाली, और फ़रमाया: "तेरे साथियो का गुमान है की तू जहन्नमी है जबकि मैं गवाही देता हूँ कि तू जन्नती है", और फ़रमाया: उमर! तुझ से लोगों के आमाल के बारे में नहीं पूछा जाएगा, लेकिन तुझ से अकिदेह के बारे में पूछा जाएगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (4297 ، نسخة محققة : 3988) و احمد بن منيع (كما فى المطالب العالية 3 / 54 ح 911) * فيه شعوذ بن عبد الرحمن : و ثقه ابن حبان وحده فيما اعلم و ابن عائذ عن عمر : مرسل ، و للحديث شاهد ضعيف عند الطبرانى ، انظر مجمع الزوائد (5 / 288)

जिहाद का सामान तैयार करने का बयान • بَاب إعداد آلَة الْجِهَاد •

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول •

٣٨٦١ - (صَحِيح) عَن عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ عَلَى الْمِنْبَرِ يَقُول: " (وَأَعِدُّوا لَهُ مَا استطَعْتُمْ منْ قُوَّةٍ)»» أَلَا إِنَّ الْقُوَّةَ الرَّمْيُ أَلَا إِنَّ الْقُوَّةَ الرَّمْيُ أَلا إِنَّ الْقُوَّةَ الرَّمْيُ)»» رَوَاهُ مُسْلِمٌ

3861. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को मिम्बर पर फरमाते हुए सुना: "और जहाँ तक मुमकिन हो (इन के मुकाबले के लिए) कुव्वत तैयार रखो", सुन लो! बेशक कुव्वत से मकसूद तीर अन्दाज़ी है, ख़बरदार कुव्वत से मकसूद तीर अन्दाज़ी है, सुन लो! कुव्वत से मुराद तीर अन्दाज़ी है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (167 / 1917)، (4946)

٣٨٦٢ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «سَتُفْتَحُ عَلَيْكُمُ الرُّومُ وَيَكْفِيكُمُ اللَّهُ فَلَا يَعْجِزْ أَحَدُكُمْ أَنْ يَلْهُوَ بِأَسْهُمِهِ» . رَوَاهُ مُسلم

3862. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "तुम अनकरीब रोम फतह कर लोगे, और अल्लाह तुम्हारे लिए (इन के शर के मुकाबले में) काफी होगा, तुम में से कोई अपने तीर के साथ मशगूल रहने में सुस्ती न करे"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (168 / 1918)، (4947)

٣٨٦٣ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يقولُ: «مَنْ علِمَ الرَّميَ ثمَّ تَرَكَهُ فَلَيْسَ مِنَّا أَوْ قَدْ عَصَى» . رَوَاهُ مُسلم

3863. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जिस ने तीर अन्दाज़ी सीखी और फिर इसे तर्क कर दिया तो वह हम में से नहीं (फ़रमाया) उस ने नाफ़रमानी की"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (169 / 1919)، (4949)

٣٨٦٤ - (صَحِيح) وَعَن سلَمةَ بنِ الأكوَعِ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى قَوْمٍ مِنْ أَسْلَمَ يَتَنَاضَلُونَ بِالسُّوقِ فَقَالَ: «ارْمُوا بَنِي إِسْمَاعِيلَ فَإِنَّ أَبَاكُمْ كَانَ رَامِيًا وَأَنَا مَعَ بَنِي فُلَانٍ» لِأَحَدِ الْفَرِيقَيْنِ فَأَمْسَكُوا بِأَيْدِيهِمْ فَقَالَ: «مَا لَكُمْ؟» قَالُوا: وَكَيْفَ نَرْمِي وَأَنْتَ مَعَ بَنِي فُلَانٍ؟ قَالَ: «ارْمُوا وَأَنَا مَعَكُمْ كلكُمْ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

3864. सलमा बिन अकवा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ असलम कबिले के लोगों के पास तशरीफ़ लाए, वह बाज़ार में तीर अन्दाज़ी कर रहे थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बनू इस्माइल! तीर अन्दाज़ी करो, क्योंकि तुम्हारे बाप तीर अंदाज़ थे, और मैं फलां कबिले के साथ हूँ”, उन्होंने अपने हाथ रोक लिए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हें क्या हुआ ?” उन्होंने अर्ज़ किया, हम कैसे तीर अन्दाज़ी करे जबकि आप फलां कबिले के साथ है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तीर अन्दाज़ी करो और मैं आप सब के साथ हूँ‘‘| (बुखारी)

رواه البخارى (3507)

٣٨٦٥ - (صَحِيح) وَعَن أنسٍ قَالَ: كَانَ أَبُو طَلْحَةَ يَتَتَرَّسُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِتُرْسٍ وَاحِدٍ وَكَانَ أَبُو طَلْحَةَ حَسَنَ الرَّمْيِ فَكَانَ إِذَا رَمَى تَشَرَّفَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيَنْظُرُ إِلَى مَوضِعِ نبله. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3865. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ के साथ एक ही ढाल से बचाव कर रहे थे, और अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु बेहतरीन तीर अंदाज़ थे, जब वह तीर फेंकते थे तो नबी ﷺ (अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु के तीर पर) नज़र रखते और आप ﷺ उन के तीर गिरने की जगह देखते थे| (बुखारी)

رواه البخارى (2902)

٣٨٦٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: (الْبَرَكَةُ فِي نَوَاصِي الْخَيل)

3866. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “घोड़ो की पेशानियों में बरकत है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (2851) و مسلم (100 / 1874)، (4854)

٣٨٦٧ - (صَحِيح) وَعَن جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَلْوِي نَاصِيَةَ فرسٍ بأصبعِه ويقولُ: " الْخَيْلُ مَعْقُودٌ بِنَوَاصِيهَا الْخَيْرُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ: الأَجْرُ والغَنيمةُ ". رَوَاهُ مُسلم

3867. जरीर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को अपने ऊँगली से घोड़े की पेशानी के बालो को बल देते देखा और आप ﷺ इस वक़्त फरमा रहे थे: “घोड़ो की पेशानी के साथ रोज़ ए

कियामत तक खैर व बरकत बांध दी गई है और (इस खैर से मुराद) सवाब और माले गनीमत है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (97 / 1872)، (4847)

٣٨٦٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ احْتَبَسَ فَرَسًا فِي سَبِيل الله إِيمَانًا وتصْديقاً بوَعْدِه فإِنَّ شِبَعَه ورِيَّه ورَوْثَه وبَوْلَه فِي مِيزَانه يَوْم الْقِيَامَة» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

3868. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने अल्लाह पर ईमान लाते हुए और उस के वादे को सच्चा जानते हुए अल्लाह की राह में घोड़ा बांधे तो उसकी शक्म सीरी व सेराबी, उसकी लेंडी और उस का पेशाब रोज़ ए कियामत उसकी मीज़ान (नेकियो के पलड़े) में होंगे”| (बुखारी)

رواه البخارى (2853)

٣٨٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يكرَهُ الشَّكالَ فِي الْخَيْلِ وَالشِّكَالُ: أَنْ يَكُونَ الْفَرَسُ فِي رِجْلِهِ الْيُمْنَى بَيَاضٌ وَفِي يَدِهِ الْيُسْرَى أَوْ فِي يدِه اليُمنى ورجلِه اليُسرى. رَوَاهُ مُسلم

3869. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ घोड़े में “अश्काल” नापसंद किया करते थे, “अश्काल” यह है कि घोड़े के दाएँ पाँव और बाएँ हाथ में सफेदी हो, या उस के दाएँ हाथ और उस के बाएँ पाँव में सफेदी हो| (मुस्लिम)

رواه مسلم (102 ، 101 / 1875)، (4856 و 4857)

٣٨٧٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سابَقَ بينَ الخيلِ الَّتِي أَضمِرَتْ منَ الحَفْياءِ وَأَمَدُهَا ثَنِيَّةُ الْوَدَاعِ وَبَيْنَهُمَا سِتَّةُ أَمْيَالٍ وَسَابَقَ بَيْنَ الْخَيْلِ الَّتِي لَمْ تَضْمُرُ مِنَ الثَّنْيَةِ إِلَى مَسْجِد بني زُرَيْق وَبَينهمَا ميل

3870. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने तरबियते याफ्ता घोड़ो के दरमियान हफिया से सनतुल वदाअ के बिच में घोड़ा दोड़ कराइ और इन दोनों के दरमियान छे मील है और गैर तरबियते याफ्ता घोड़ो के दरमियान सबिया से बनू ज़रिक की मस्जिद तक घोड़ा दोड़ कराइ और इन दोनों के दरमियान एक मील की मुसाफ़त है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (420) و مسلم (95 / 1870)، (4843)

٣٨٧١ - (صَحِيح) وَعَن أنسٍ قَالَ: كَانَتْ نَاقَةٌ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تُسَمَّى الْعَضْبَاءَ وَكَانَتْ لَا تُسْبَقُ فَجَاءَ أَعْرَابِيٌّ عَلَى قَعُودٍ لَهُ فَسَبَقَهَا فَاشْتَدَّ ذَلِكَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ حَقًّا عَلَى اللَّهِ أَنْ لَا يَرْتَفِعَ شَيْءٌ مِنَ الدُّنْيَا إِلَّا وضَعه» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

3871. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ की अज़्बाअ नामी ऊंटनी थी और वह सबसे आगे रहती थी, एक आराबी अपने ऊंट पर आया तो वह उस से आगे निकल गया जो मुसलमानों पर नागवार गुज़रा तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक यह अल्लाह का दस्तूर है के जो चीज़ दुनिया में उरूज पर पहुँच जाती है तो वह इसे पस्ती की तरफ धकेल देता है”| (बुखारी)

رواه البخارى (2872)

بَاب إعداد آلَة الْجِهَاد • जिहाद का सामान तैयार करने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٨٧٢ - (لم تتمّ دراسته) عَن عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى يُدْخِلُ بِالسَّهْمِ الْوَاحِدِ ثَلَاثَةَ نَفَرٍ الْجَنَّةَ: صَانِعَهُ يَحْتَسِبُ فِي صَنْعَتِهِ الْخَيْرَ وَالرَّامِيَ بِهِ وَمُنَبِّلَهُ فَارْمُوا وَارْكَبُوا وَأَنْ تَرْمُوا أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ تَرْكَبُوا كُلُّ شَيْءٍ يَلْهُو بِهِ الرَّجُلُ بَاطِلٌ إِلَّا رَمْيَهُ بِقَوْسِهِ وَتَأْدِيبَهُ فَرَسَهُ وَمُلَاعَبَتَهُ امْرَأَتَهُ فَإِنَّهُنَّ مِنَ الْحَقِّ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَزَادَ أَبُو دَاوُد والدارمي: «ومَنْ تركَ الرَّميَ بعدَ مَا عَلِمَهُ رَغْبَةً عَنْهُ فَإِنَّهُ نِعْمَةٌ تَرَكَهَا» . أَوْ قَالَ: «كفرها»

3872. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अल्लाह तआला एक तीर की वजह से तीन आदमियों को जन्नत अता फरमाएगा: तीर बनाने वाला जो अपने बनाने में सवाब की उम्मीद रखता हो, इसे फ़ेकने वाला और इसे (तीर अंदाज़ को) पकड़ाने वाला, तीर अन्दाज़ी करो और घोड़ा सवारी करो, और तुम्हारा तीर अन्दाज़ी करना, तुम्हारी घोड़ा सवारी से मुझे ज़्यादा महबूब है, हर वह चीज़ जिस से इंसान खेलता है और उस के साथ मशगुल होता है के बातिल है, अलबत्ता उस का कमान के साथ तीर अन्दाज़ी करना, अपने घोड़े की तरबियत करना और उस का अपने अहलिया के साथ मशगुल होना हक़ है”| इमाम अबू दावुद और इमाम दारमी ने यह इज़ाफा नकल किया है: “जिस शख़्स ने तीर अन्दाज़ी सिखने के बाद उस से अदम रगबत की बिना पर इसे तर्क कर दिया तो वह एक नेअमत थी जिसे उस ने तर्क कर दिया, या फ़रमाया: “उस की नाशुक्री की”| (हसन)

حسن ، الرواية الاولى : رواها الترمذى (1637 وقال : حسن) و ابن ماجه (2811) و الثانية : رواها ابوداؤد (2513) و الدارمى (2 / 204205 ح 2410)

٣٨٧٣ - (صَحِيح) وَعَن أبي نَجِيحٍ السُّلَمِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ بَلَغَ بِسَهْمٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَهُوَ لَهُ دَرَجَةٌ فِي الْجَنَّةِ وَمَنْ رَمَى بِسَهْمٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَهُوَ لَهُ عِدْلُ مُحَرَّرٍ وَمَنْ شَابَ شَيْبَةً فِي الْإِسْلَامِ كَانَتْ لَهُ نُورًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ. وَرَوَى أَبُو دَاوُدَ الْفَصْلَ الْأَوَّلَ وَالنَّسَائِيُّ الْأَوَّلَ وَالثَّانِيَ وَالتِّرْمِذِيُّ الثَّانِيَ وَالثَّالِثَ وَفِي رِوَايَتِهِمَا: «مَنْ شَابَ شَيْبَةً فِي سَبِيلِ الله» بدَلَ «فِي الْإِسْلَام»

3873. अबू नजीह स्सुलुमी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस शख़्स ने अल्लाह की राह में (किसी काफ़िर को निशाने पर) तीर लगाया तो उसे जन्नत में एक दर्जा हासिल हो गया, जिस ने अल्लाह की राह में तीर अन्दाज़ी की तो वह उस के लिए गुलाम आज़ाद करने के बराबर है, और जो शख़्स इस्लाम में बुढा हुआ तो रोज़ ए कियामत उस के लिए नूर होगा”| इमाम अबू दावुद ने पहला फक्रह, इमाम नसई ने पहला और दूसरा जबकि इमाम तिरमिज़ी ने दूसरा और तीसरा फक्रह रिवायत किया है और इन दोनों (बयहकी और तिरमिज़ी) की रिवायत में है: “जो शख़्स अल्लाह की राह में बुढा हवा”, यानी “इस्लाम” के बजाए “अल्लाह की राह“ के अल्फाज़ नकल किए है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (4341) و ابوداؤد (3965) و النسائى (6 / 2627 ح 3145) و الترمذى (1638 وقال : حسن صحيح)

٣٨٧٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا سَبَقَ إِلَّا فِي نَصْلٍ أَوْ خُفٍّ أَوْ حَافِرٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3874. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इनाम सिर्फ तीर अन्दाज़ी, ऊंट और घोड़े में है”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (1700) و ابوداؤد (2564) و النسائى (6 / 226 ح 3615 ، 3617)

٣٨٧٥ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَدْخَلَ فَرَسًا بَيْنَ فَرَسَيْنِ فَإِنْ كَانَ يُؤْمَنُ أَنْ يَسْبِقَ فَلَا خَيْرَ فِيهِ وَإِنْ كَانَ لَا يُؤْمَنُ أَنْ يَسْبِقَ فَلَا بَأْسَ بِهِ» . رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ: قَالَ: «مَنْ أَدْخَلَ فَرَسًا بَيْنَ فَرَسَيْنِ يَعْنِي وَهُوَ لَا يَأْمَنُ أَنْ يَسْبِقَ فَلَيْسَ بِقِمَارٍ وَمَنْ أَدْخَلَ فَرَسًا بَيْنَ فَرَسَيْنِ وَقَدْ أَمِنَ أَنْ يَسْبِقَ فَهُوَ قمار»

3875. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने (घोड़ो की दौड़ के मुकाबले के) दो घोड़ो के बिच में एक घोड़ा दाखिल कर दिया, अगर इसे उस के सबकत ले जाने का इल्म हो तो फिर उस में कोई खैर नहीं, और अगर उस के सबकत ले जाने का इल्म न हो तो फिर उस में कोई हरज नहीं”|अबू दावुद की रिवायत में है फ़रमाया: “जिस शख़्स ने दो घोड़ो के दरमियान एक घोड़ा दाखिल कर दिया यानी इसे यकीन नहीं के वह आगे निकल जाएगा तो फिर यह जुवा नहीं, और जिस शख़्स ने दो घोड़ो के बिच में

घोड़ा दाखिल कर दिया और इसे यकीन है के वह सबकत ले जाएगा तो यह जुवा है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (10 / 395396 ح 2654) و ابوداؤد (2579) [و ابن ماجه (2876)] * فيه سفيان بن حسين : ثقة ، لكنه ضعيف عن الزهرى ، وھذا من روايته عن الزهرى

٣٨٧٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا جَلَبَ وَلَا جَنَبَ» . زَادَ يَحْيَى فِي حَدِيثِهِ: «فِي الرِّهَانِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَرَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ مَعَ زِيَادَة فِي بَاب «الْغَضَب»

3876. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “न जल्ब” है और "न जनब" रावी याह्या ने अपने रिवायत में “घोड़ो की दौड़‘‘ का इज़ाफा किया है| जलब (मुकाबले में शरीक शख़्स अपने किसी साथी को कहे के रास्ता में मेरे घोड़े को आवाज़ लगा देना जिस से यह और तेज़ दोड़ेगा) जनब (पहलु में दोड़ने वाला वह घोड़ा जिस पर दोड़ने वाला अपने घोड़े के थकने की सूरत में मुन्तकिल हो जाए)| अबू दावुद, नसई, और इमाम तिरमिज़ी ने इसे कुछ इज़ाफ़ी (ज़्यादा) अल्फाज़ के साथ (بَاب الْغَضْب) बाब अल गसब में रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (2581) و النسائى (6 / 228 ح 3621) و الترمذى (1123 وقال : حسن صحيح)

٣٨٧٧ - (صَحِيح) وَعَن أبي قَتَادَة عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «خَيْرُ الْخَيْلِ الْأَدْهَمُ الْأَقْرَحُ الْأَرْثَمُ ثُمَّ الْأَقْرَحُ الْمُحَجَّلُ طُلُقُ الْيَمِينِ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ [ص:١١٣ أَدْهَمَ فَكُمَيْتٌ عَلَى هَذِهِ الشِّيَةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالدَّارِمِيُّ

3877. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेहतर घोड़ा वह है जो इन्तिहाई सियाह हो और उसकी पेशानी पर ठोड़ी सी सफेदी हो, उस का ऊपर वाला होंठ या नाक सफ़ेद हो, फिर वह जिस की तीन टांगे सफ़ेद हो और आगे वाली दाएँ टांग घोड़े की रंग की हो, अगर सियाह रंग का न हो तो फिर वह जिस में कदरे सरखी और कदरे सियाह हो और उस के कान सियाह हो वह भी उसकी मिस्ल है”| (हसन)

رواه الترمذى (1696) و الدارمى (2 / 212 ح 2433)

٣٨٧٨ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي وَهْبٍ الْجُشَمِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عَلَيْكُمْ بِكُلِّ كُمَيْتٍ أَغَرَّ مُحَجَّلٍ أَوْ أَشْقَرَ أَغَرَّ مُحَجَّلٍ أَوْ أَدْهَمَ أَغَرَّ مُحَجَّلٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ

3878. अबू वहब जुशमी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम हर ऐसे घोड़े को

लाज़िम पकड़ो जो सुर्ख़ सियाह माइल और सियाह कानों वाला हो उसकी पेशानी और पाँव सफ़ेद हो, या वह घोड़ा जो सुर्ख़ हो, उसकी पेशानी और पाँव सफ़ेद हो या सियाह रंग का घोड़ा जिस की पेशानी और पाँव सफ़ेद हो”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (2543) و النسائی (6 / 218219 ح 3595) * عقیل بن شبیب : مجھول و لبعض الحدیث شواھد عند ابن حبان (الموارد : 1633) و الترمذی (16961697) وغیرھما

٣٨٧٩ - (حسن) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يُمْنُ الْخَيْلِ فِي الشُّقْرِ» . رَوَاهُ الترمذيُّ وَأَبُو دَاوُد

3879. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सुर्ख़ रंग के घोड़े में बरकत है”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (1695 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (2545)

٣٨٨٠ - (ضَعِيف) وَعَن عُتبةَ بن عبدٍ السُّلميِّ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا تَقُصُّوا نَوَاصِيَ الْخَيْلِ وَلَا مَعَارِفَهَا وَلَا أَذْنَابَهَا فَإِنَّ أَذْنَابَهَا مَذَابُّهَا وَمَعَارِفَهَا دِفاءُها وَنَوَاصِيهَا مَعْقُودٌ فِيهَا الْخَيْرُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

3880. उत्बा बिन अब्द स्सुलुमी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “घोड़े की पेशानी, गर्दन और दुम के बाल मत काटो, क्योंकि उसकी दूम उस के लिए बाईस पंखा है (जिस से वह अपने ऊपर बैठनेवाली चीज़ को उड़ाती है) उसकी गर्दन के बाल इसे गरम रखते हैं, जबकि उसकी पेशानियों के साथ खैर व भलाई बंधी हुई है”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (2542) * رجل او رجال من بنی سلیم : لم اعرفھم ، و نصر : مستور ، و لبعض الحدیث شواھد صحیحۃ

٣٨٨١ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي وَهَبٍ الْجُشَمِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " ارْتَبِطُوا الْخَيْلَ وامسحُوا بنواصيها وأعجازِها أَو قَالَ: كفالِها وَقَلِّدُوهَا وَلَا تُقَلِّدُوهَا الْأَوْتَارَ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ

3881. अबू वहब जश्मी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “घोड़े बांधो (इन्हें रखो और पालो) और उनकी पेशानियों और पुश्तो पर हाथ फेरो और उनकी गर्दनो में पट्टे डालो लेकिन तानत न डालो”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (2553) و النسائی (6 / 218219 ح 3595) * عقیل مجھول کما تقدم (3878) و للحدیث شواھد ضعیفۃ

٣٨٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَبْدًا مَأْمُورًا مَا اخْتَصَّنَا دُونَ النَّاسِ بِشَيْءٍ إِلَّا بِثَلَاثٍ: أَمَرَنَا أَنْ نُسْبِغَ الْوُضُوءَ وَأَنْ لَا نَأْكُلَ [ص:١١٤ الصَّدَقَةَ وَأَنْ لَا نَنْزِيَ حمارا على فرس. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

3882. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अल्लाह के बंदे थे आप को अहकामात नाफ़िज़ करने पर मामूर किया गया था, आप ने तीन चीजों के अलावा दीगर लोगों से अलग कोई खुसूसियत हमें इनायत नहीं फरमाई, आप ﷺ ने हमें हुक्म फ़रमाया के हम अच्छी तरह मुकम्मल वुज़ू करे, हम सदका न खाए और हम गधो को घोड़ो पर जफ्ती के लिए न चढ़ाए| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1701 وقال : حسن صحیح) و النسائی (6 / 224 ، 225 ح 3611)

٣٨٨٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أُهْدِيَتْ رَسُول الله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم بغلةٌ فركِبَهَا فَقَالَ عَلِيٌّ: لَوْ حَمَلْنَا الْحَمِيرَ عَلَى الْخَيْلِ فَكَانَتْ لَنَا مِثْلُ هَذِهِ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا يَفْعَلُ ذَلِكَ الَّذِينَ لَا يعلمُونَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3883. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ को एक खच्चर बतौर हदिया पेश किया गया तो आप ﷺ ने उस पर सवारी फरमाई, अली रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अगर हम गधो को घोड़ो पर चढ़ाए तो हमारे वहां भी इसी के मिसल (खच्चर) होंगे, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये तो सिर्फ वही लोग करते हैं जो जानते नहीं”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (2565) و النسائی (6 / 224 ح 3610)

٣٨٨٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أنسٍ قَالَ: كَانَتْ قَبِيعَةُ سَيْفِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ فِضَّةٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ والدارمي

3884. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ की तलवार की दस्ती चाँदी की थी| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (1691 وقال : حسن غریب) ابوداؤد (2583) و النسائی (8 / 219 ح 5376) و الدارمی (2 / 221 ح 2461)

٣٨٨٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ هُودِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَعْدٍ عَن جدِّهِ مِزيدةَ قَالَ: دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الْفَتْحِ وَعَلَى سَيْفِهِ ذَهَبٌ وَفِضَّةٌ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

3885. हूद बिन अब्दुल्लाह बिन साद अपने दादा मज़ीद से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ फतह मक्का के रोज़

(मक्के में) दाखिल हुए तो आप ﷺ की तलवार पर सोना और चाँदी थी| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1690)

٣٨٨٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن السَّائِب بْنِ يَزِيدَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ عَلَيْهِ يَوْمَ أُحُدٍ دِرْعَانِ قَدْ ظَاهَرَ بَيْنَهُمَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

3886. साइब बिन यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के गज़वा ए उहद के रोज़ नबी ﷺ पर ऊपर तले दो ज़री थी| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (1590) و ابن ماجه (2806)

٣٨٨٧ - وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَتْ رَايَةُ نَبِيِّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَوْدَاءَ وَلِوَاؤُهُ أبيضَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

3887. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ का बड़ा झंडा सियाह रंग का था और छोटा झंडा सफ़ेद रंग का था”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1681 وقال : غریب) و ابن ماجه (2818)

٣٨٨٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُوسَى بْنِ عُبَيْدَةَ مَوْلَى مُحَمَّدِ بْنِ الْقَاسِمِ قَالَ: بَعَثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْقَاسِمِ إِلَى الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ يَسْأَلُهُ عَنْ رَايَةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: كَانَتْ سَوْدَاءَ مُرَبَّعَةً مِنْ نَمِرَةٍ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

3888. मुसा बिन उबैदाह, मुहम्मद बिन कासिम के आज़ाद करदा गुलाम से रिवायत है, उन्होंने कहा: मुहम्मद बिन कासिम ने मुझे रसूलुल्लाह ﷺ के झंडे के मुतल्लिक पूछने के लिए बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु के पास भेजा तो उन्होंने ने फ़रमाया: “वो सियाह धारी दार था”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (4 / 297 ح 18830) و الترمذی (1680 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (2591)

٣٨٨٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٌ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ مَكَّةَ وَلِوَاؤُهُ أَبْيَضُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

3889. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ मक्का में दाखिल हुए तो आप ﷺ का झंडा सफ़ेद रंग

का था| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1679 وقال : غريب) و ابوداؤد (2592) و ابن ماجه (2817)

بَاب إعداد آلَة الْجِهَاد • जिहाद का सामान तैयार करने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٨٩٠ - (لم تتمّ دراسته) عَن أنسٍ قَالَ: لَمْ يَكُنْ شَيْءٌ أَحَبَّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ النِّسَاءِ من الْخَيل. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

3890. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ को बीवियों के बाद घोड़ो से बढ़कर कोई चीज़ महबूब नहीं थी| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه النسائی (6 / 217218 ح 3594) * فيه سعيد بن ابی عروبة و قتادة مدلسان و عنعنا

٣٨٩١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عَليّ قَالَ: كَانَتْ بِيَدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَوْسٌ عَرَبِيَّةٌ فَرَأَى رَجُلًا بِيَدِهِ قَوْسٌ فَارِسِيَّةٌ قَالَ: «مَا هَذِهِ؟ أَلْقِهَا وَعَلَيْكُمْ بِهَذِهِ وَأَشْبَاهِهَا وَرِمَاحِ الْقَنَا فَإِنَّهَا يُؤَيِّدُ اللَّهُ لَكُمْ بِهَا فِي الدِّينِ وَيُمَكِّنُ لَكُمْ فِي البلادِ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

3891. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के हाथ में अरबी कमान थी, आप ﷺ ने एक आदमी देखा उस के हाथ में फारसी कमान थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: "ये क्या है? इसे फेंक दो और तुम पर यह और उसकी मिस्ल लाज़िम है, और कामिल(सर्वोत्तम) नेज़े तुम पर लाज़िम है, क्योंकि अल्लाह उन के ज़रिए तुम्हें दीन में मदद अता फरमाएगा और तुम्हें शहरो में इक्दार अता करेगा"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه ابن ماجه (2810) * فيه اشعث بن سعيد السمان : متروک و عبدالله بن بسر الحبرانی : ضعيف

आदाब ए सफ़र का बयान • بَاب آدَاب السّفر

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٣٨٩٢ - (صَحِيح) عَن كَعْب بْنِ مَالِكٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ يَوْمَ الْخَمِيسِ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ وَكَانَ يُحِبُّ أَنْ يَخْرُجَ يَوْمَ الْخَمِيسِ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3892. काब बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ गज़वा ए तबुक के लिए जुमेरात के रोज़ रवाना हुए, और आप ﷺ जुमेरात के रोज़ रवाना होना पसंद फरमाते थे| (बुखारी)

رواه البخاری (2950)

٣٨٩٣ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَا فِي الْوَحْدَةِ مَا أَعْلَمُ مَا سَارَ رَاكِبٌ بِلَيْلٍ وَحْدَهُ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

3893. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर लोगों को तन्हा सफ़र करने की उन खराबियों का इल्म हो जाए जो मुझे मालुम है, तो कोई सवार तन्हा एक रात का भी सफ़र न करे”| (बुखारी)

رواه البخاری (2998)

٣٨٩٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَصْحَبُ الْمَلَائِكَةُ رُفْقَةً فِيهَا كَلْبٌ وَلَا جَرَسٌ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

3894. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस काफले के साथ कुत्ता और घंटी हो तो (रहमत के) फ़रिश्ते उस के साथ नहीं चलते”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (103 / 2113)، (5546)

٣٨٩٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْجَرَسُ مَزَامِيرُ الشَّيْطَانِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

3895. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “घंटी शैतान के साज़ हैं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (104 / 2114)، (5548)

٣٨٩٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي بشيرٍ الأنصاريِّ: أَنَّهُ كَانَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَعْضِ أَسْفَارِهِ فَأَرْسَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَسُولًا: «لَا تبقين فِي رَقَبَة بِعَيْر قِلَادَةٌ مِنْ وَتَرٍ أَوْ قِلَادَةٌ إِلَّا قُطِعَتْ»

3896. अबू बशीर अंसारी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह किसी सफ़र मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे रसूलुल्लाह ﷺ ने एक कासिद भेजा के “किसी ऊंट की गर्दन में तानत का पट्टा या कोई पट्टा न रहने दिया जाए, वह सब काट दिए जाए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3005) و مسلم (105 / 2115)، (5549)

٣٨٩٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا سَافَرْتُمْ فِي الْخِصْبِ فَأَعْطُوا الْإِبِلَ حَقَّهَا مِنَ الْأَرْضِ وَإِذَا سَافَرْتُمْ فِي السَّنَةِ فَأَسْرِعُوا عَلَيْهَا [ص:١١٤ السَّيْرَ وَإِذَا عَرَّسْتُمْ بِاللَّيْلِ فَاجْتَنِبُوا الطَّرِيقَ فَإِنَّهَا طُرُقُ الدَّوَابِّ وَمَأْوَى الْهَوَامِّ بِاللَّيْلِ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «إِذَا سَافَرْتُمْ فِي السَّنَةِ فَبَادِرُوا بِهَا نِقْيَهَا» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

3897. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम सरसब्ज़ व शादाब इलाके में चलो तो ऊंट को ज़मीन से उस का हक़ दो, (इन्हें चरने दो) और जब तुम कहत साली में चलो तो फिर तेज़ी से चलो, जब तुम रात के वक़्त पड़ाव डालो तो रास्ते से बचा करो क्योंकि रात के वक़्त वह चोपायो की राहें और ज़हरीली चीजों का ठिकाना है”, और एक दूसरी रिवायत में है: “जब तुम कहत साली में सफ़र करो तो फिर जब तक उन (ऊँटो) का गुदा बाकी है जल्दी से सफ़र करो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (178 / 1926)، (4959)

٣٨٩٨ - (صَحِيح) وَعَن أبي سعيد الْخُدْرِيِّ قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ فِي سَفَرٍ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذ جَاءَهُ رَجُلٌ عَلَى رَاحِلَةٍ فَجَعَلَ يَضْرِبُ يَمِينًا وَشِمَالًا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ كَانَ مَعَهُ فَضْلُ ظَهْرٍ فَلْيَعُدْ بِهِ عَلَى مَنْ لَا ظَهْرَ لَهُ وَمَنْ كَانَ لَهُ فَضْلُ زَادٍ فَلْيَعُدْ بِهِ عَلَى مَنْ لَا زَادَ لَهُ» قَالَ: فَذَكَرَ مِنْ أَصْنَافِ الْمَالِ حَتَّى رَأَيْنَا أَنَّهُ لَا حَقَّ لأحدٍ منا فِي فضل. رَوَاهُ مُسلم

3898. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सफ़र में थे इस दौरान अचानक एक आदमी सवारी पर आप की खिदमत में हाज़िर हुआ और वह दाएँ बाएँ देखने लगा, तो रसूलुल्लाह

ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स के पास इज़ाफ़ी (ज़्यादा) सवारी हो वह इस शख़्स को इनायत कर दे जिसके पास कोई सवारी नहीं, जिस शख़्स के पास रसद (माल समान) ज़्यादा हो तो वह इस शख़्स को इनायत कर दे जिसके पास रसद नहीं” रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने माल की बहोत किस्म का ज़िक्र फ़रमाया, हत्ता के हमने समझा हम में से किसी शख़्स को इज़ाफ़ी (ज़्यादा) चीज़ पर कोई हक़ नहीं| (मुस्लिम)

رواه مسلم (18 / 1728)، (4517)

٣٨٩٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «السَّفَرُ قِطْعَةٌ مِنَ الْعَذَابِ يَمْنَعُ أَحَدَكُمْ نَوْمَهُ وَطَعَامَهُ وَشَرَابه فَإِذا قضى نهمه من وَجهه فليعجل إِلَى أَهله»

3899. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सफ़र अज़ाब की किस्म है, वह आप में से हर एक को उसकी नींद और उस के खाने पीने से बाज़ रखता है, लिहाज़ा जब वह सफ़र का मकसद हासिल कर ले तो इसे अपने अहले खाना के पास जल्द आ जाना चाहिए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5429) و مسلم (179 / 1927)، (4961)

٣٩٠٠ - (صَحِيح) وَعَن عبدِ اللَّهِ بنِ جعفرٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا قَدِمَ مَنْ سَفَرٍ تُلُقِّيَ بِصِبْيَانِ أَهْلِ بَيْتِهِ وَإِنَّهُ قَدِمَ مَنْ سَفَرٍ فَسُبِقَ بِي إِلَيْهِ فَحَمَلَنِي بَيْنَ يَدَيْهِ ثُمَّ جِيءَ بِأَحَدِ ابْنَيْ فَاطِمَةَ فَأَرْدَفَهُ خَلْفَهُ قَالَ: فَأُدْخِلْنَا المدينةَ ثلاثةً على دَابَّة. رَوَاهُ مُسلم

3900. अब्दुल्लाह बिन जाफर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ सफ़र से तशरीफ़ लाते तो आप ﷺ के अहले खाना के बच्चो के साथ आप ﷺ का इस्तेकबाल किया जाता, इसी तरह आप एक सफ़र से वापस तशरीफ़ लाए तो मुझे आप की खिदमत में पेश किया गया, आप ने मुझे अपने आगे सवार कर लिया, फिर फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा के किसी लख्ते जिगर (हसन या हुसैन (र अ)) को लाया गया तो आप ने इसे अपने पीछे सवार कर लिया, रावी बयान करते हैं, हम मदीना में एक सवारी पर तीन सवार हो कर दाखिल किए गए| (मुस्लिम)

رواه مسلم (66 / 2428)، (6268)

٣٩٠١ - (صَحِيح) وَعَن أنسٍ: أَنَّهُ أَقْبَلَ هُوَ وَأَبُو طَلْحَةَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَفِيَّةُ مُرْدِفَهَا عَلَى رَاحِلَته. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3901. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह और अबू तल्हा रसूलुल्लाह ﷺ की साथ में वापस आ रहे थे

जबकि सफ़िया रदियल्लाहु अन्हा नबी ﷺ के पीछे सवार थी| (बुखारी)

رواه البخارى (6185)

٣٩٠٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَطْرُقُ أَهْلَهُ لَيْلًا وَكَانَ لَا يَدْخُلُ إِلَّا غُدْوَةً أَوْ عَشِيَّةً

3902. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ (जब सफ़र से वापस आते तो) वह रात के वक़्त अपने अहले खाना के यहाँ तशरीफ़ नहीं ले जाते थे बल्कि आप ﷺ दिन के पहले पहर या पिछले पहर तशरीफ़ लाया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1800) و مسلم (180 / 1928)، (4962)

٣٩٠٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «إِذا طَال أَحَدُكُمُ الْغَيْبَةَ فَلَا يَطْرُقْ أَهْلَهُ لَيْلًا»

3903. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई तवील मुद्दत तक (घर से) गायब रहे तो वह रात के वक़्त अपने अहले खाना के पास न आए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5244) و مسلم (183 / 1928)، (4967)

٣٩٠٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا دَخَلْتَ لَيْلًا فَلَا تَدْخُلْ عَلَى أهلك حَتَّى تستحد المغيبة وتمتشط الشعثة»

3904. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम रात के वक़्त (शहर में) दाखिल हो तो अपने अहलिया के पास न जाओ हत्ता के जिस का खाविंद गायब रहा है वह गैर ज़रूरी बालो की सफाई कर ले और परान्दा बालो वाली कंघी कर ले”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5246) و مسلم (182 / 1928)، (4965)

٣٩٠٥ - (صَحِيح) وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا قَدِمَ الْمَدِينَةَ نَحَرَ جَزُورًا أَوْ بَقَرَةً. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3905. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ मदीना तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ ने ऊंट या गाय जिबह की| (बुखारी)

رواه البخاری (3089)

٣٩٠٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَقْدَمُ مِنْ سَفَرٍ إِلَّا نَهَارًا فِي الضُّحَى فَإِذَا قَدِمَ بَدَأَ بِالْمَسْجِدِ فَصَلَّى فِيهِ رَكْعَتَيْنِ ثمَّ جلس فِيهِ للنَّاس

3906. काब बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ जब सफ़र से वापस आते तो दिन को चाश्त के वक़्त मदीना मुनव्वरा में दाखिल होते थे, जब आप दाखिल होते तो पहले मस्जिद में तशरीफ़ लाते और वहां दो रकते पढ़ते फिर लोगों की खातिर वहां तशरीफ़ रखते| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3088) مسلم (74 / 716)، (1659)

٣٩٠٧ - (صَحِيح) وَعَن جَابر قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ فَلَمَّا قَدِمْنَا الْمَدِينَةَ قَالَ لِي: «ادْخُلِ الْمَسْجِدَ فَصَلِّ فِيهِ رَكْعَتَيْنِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3907. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं एक सफ़र में नबी ﷺ के साथ था, जब हम मदीना पहुंचे तो आप ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “मस्जिद में जा कर दो रकते पढ़ो”| (बुखारी)

رواه البخاری (3088)

بَاب آدَاب السّفر • आदाब ए सफ़र का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٩٠٨ - (جيد) عَن صخْرِ بن وَداعةَ الغامِديِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اللَّهُمَّ بَارِكْ لِأُمَّتِي فِي بُكُورِهَا» وَكَانَ إِذا بعث سريَّةً أَوْ جَيْشًا بَعَثَهُمْ مِنْ أَوَّلِ النَّهَارِ وَكَانَ صَخْرٌ تَاجِرًا فَكَانَ يَبْعَثُ تِجَارَتَهُ أَوَّلَ النَّهَارِ فَأَثْرَى وَكَثُرَ مالُه. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد والدارمي

3908. सखर बिन वदाअ गामिदी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ए अल्लाह! मेरी उम्मत के लिए उस के दिन के पहले हिस्से में बरकत फरमा”, और जब आप ﷺ कोई मुजाहिदीन का दस्ता या लश्कर रवाना फरमाते, तो आप उन्हें दिन के आगाज़ में रवाना फरमाते थे, सखर एक ताज़ीर थे, वह अपना माले तिजारत दिन के शुरू में भेजा करते थे, वह साहबे सुरुस बन गए और उनका माल बहोत ज़्यादा हो गया| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1212 وقال : حسن) و ابوداؤد (2606) و الدارمی (2 / 214 ح 2440)

٣٩٠٩ - (جيد) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عَلَيْكُمْ بِالدُّلْجَةِ فَإِنَّ الْأَرْضَ تُطوَى بالليلِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3909. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सरशाम सफ़र किया करो क्योंकि रात के वक़्त ज़मीन लपेट दी जाती है”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (2571)

٣٩١٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ [ص:١١٤] صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الرَّاكِبُ شَيْطَانٌ وَالرَّاكِبَانِ شَيْطَانَانِ وَالثَّلَاثَةُ رَكبٌ» . رَوَاهُ مالكٌ وَالتِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

3910. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तन्हा सफ़र करने वाला एक शैतान है, दो मुसाफ़िर दो शैतान है और तीन सफ़र करने वाले एक काफला है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه مالک (2 / 978 ح 1897) و الترمذی (1674 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (2607) و النسائی [فی الکبری (8849)]

٣٩١١ - (حسن) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا كَانَ ثَلَاثَةٌ فِي سَفَرٍ فَلْيُؤَمِّرُوا أحدهم» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3911. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तीन लोग सफ़र कर रहे हो तो वह अपने में से एक को अमीर बना लें”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2608) * فیه محمد بن عجلان مدلس و عنعن وله شواھد کلھا ضعیفة ولم یصب من حسنه

٣٩١٢ - (مُرْسل) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «خَيْرُ الصَّحَابَةِ أَرْبَعَةٌ وَخَيْرُ السَّرَايَا أَرْبَعُمِائَةٍ وَخَيْرُ الْجُيُوشِ أَرْبَعَةُ آلَافٍ وَلَنْ يُغْلَبَ اثْنَا عَشَرَ أَلْفًا مِنْ قِلَّةٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

3912. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेहतरीन साथी चार है, बेहतरीन दस्ता चार सौ का है, बेहतरीन लश्कर चार हज़ार का है और बारह हज़ार का लश्कर किल्लत की वजह से मग्लुब नहीं होगा”| और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1555) و ابوداؤد (2611) و الدارمی (2 / 215 ح 2443) * فیه جریر بن حازم و الزھری مدلسان و عنعنا

٣٩١٣ - (جيد) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَخَلَّفُ فِي الْمَسِيرِ فَيُزْجِي الضَّعِيفَ وَيُرْدِفُ ويدْعو لَهُم. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3913. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ लश्कर के पीछे चला करते थे आप कमज़ोर को साथ लेते, इन्हें अपने पीछे बेठा लेते और इन के लिए दुआ फरमाते| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (2639)

٣٩١٤ - (جيد) وَعَن أبي ثعلبَةَ الخُشَنيِّ قَالَ: كَانَ النَّاسُ إِذَا نَزَلُوا مَنْزِلًا تَفَرَّقُوا فِي الشِّعَابِ وَالْأَوْدِيَةِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ تَفَرُّقَكُمْ فِي هَذِهِ الشِّعَابِ وَالْأَوْدِيَةِ إِنَّمَا ذَلِكُمْ مِنَ الشَّيْطَانِ» . فَلَمْ يَنْزِلُوا بَعْدَ ذَلِكَ مَنْزِلًا إِلَّا انْضَمَّ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ حَتَّى يُقَالَ: لَوْ بُسِطَ عَلَيْهِمْ ثوبٌ لعمَّهم. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3914. अबू सअलबा खुशनी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब सहाबा किराम किसी जगह पड़ाव डालते तो वह घाटियों और वादियों में मुन्तशर हो जाते थे, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम्हारा इन घाटियों और वादियों में मुन्तशर होना यह शैतान की तरफ से है”| उस के बाद उन्होंने जहाँ भी पड़ाव डाला तो वह बाहम इस तरह मिल जाते के अगर इन पर एक कपड़ा डाल दिया जाए तो वह इन सब पर आ जाए| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2628)

٣٩١٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا يَوْمَ بَدْرٍ كُلُّ ثَلَاثَةٍ عَلَى بَعِيرٍ فَكَانَ أَبُو لُبَابَةَ وَعَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ زَمِيلَيْ رَسُولِ اللَّهِ [ص:١١٤] صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فَكَانَتْ إِذَا جَاءَتْ عُقْبَةُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَا: نَحْنُ نَمْشِي عَنْكَ قَالَ: «مَا أَنْتُمَا بِأَقْوَى مِنِّي وَمَا أَنَا بِأَغْنَى عَنِ الْأَجْرِ مِنْكُمَا» . رَوَاهُ فِي شرح السّنة

3915. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, गज़वा ए बद्र के दिन हम तीन तीन आदमी एक ऊंट पर सवार थे, अबू लुबाब और अली बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हुमा रसूलुल्लाह ﷺ के साथी थे, रावी बयान करते हैं, जब (पैदल चलने की) रसूलुल्लाह ﷺ की बारी आती तो वह अर्ज़ करते, आप की तरफ से हम पैदल चलते है, आप ﷺ फरमाते: “तुम दोनों मुझ से ज़्यादा क़वी हो न में अज़र हासिल करने में तुम दोनों से ज़्यादा बेनियाज़ हूँ”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البغوی فی شرح السنة (11 / 3536 ح 2686) [و احمد (1 / 411) و ابن حبان (الموارد : 1688) و صححه الحاكم على شرط مسلم (3 / 20) و وافقه الذهبی]

٣٩١٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَتَّخِذُوا ظُهُورَ دَوَابِّكُمْ مَنَابِرَ فَإِنَّ اللَّهَ تَعَالَى إِنَّمَا سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُبَلِّغَكُمْ إِلَى بَلَدٍ لَمْ تَكُونُوا بَالِغِيهِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنْفُسِ وَجَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فَعَلَيْهَا فَاقْضُوا حَاجَاتِكُمْ»

. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

3916. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अपने जानवरों की पुश्तो को मिम्बर न बनाओ (के इन पर सवार हो कर और उन्हें रोक कर बाते करते रहो) क्योंकि अल्लाह तआला ने तो उन्हें तुम्हारे लिए इसलिए ताबे किया है के वह तुम्हें ऐसी जगह पहुंचा दें जहाँ तुम मशक्कत उठाए बगैर नहीं पहुँच सकते थे, और तुम्हारे लिए ज़मीन बनाई तुम उस पर अपनी ज़रूरते पूरी करो"| (हसन)

حسن ، رواہ ابوداؤد (2567)

٣٩١٧ - (صَحِيح) وَعَن أنسٍ قَالَ: كُنَّا إِذَا نَزَلْنَا مَنْزِلًا لَا نُسَبِّحُ حَتَّى نحُلَّ الرِّحالَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3917. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम जब किसी जगह पड़ाव डालते तो हम पहले जानवरों (यानी सवारियों) से बोझ उतारते और फिर नफ्ल नमाज़ पढ़ते थे| (सहीह)

اسنادہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (2551)

٣٩١٨ - (صَحِيح) وَعَن بُرَيْدَة قَالَ: بَيْنَمَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمْشِي إِذا جَاءَهُ رَجُلٌ مَعَهُ حِمَارٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ارْكَبْ وَتَأَخَّرَ الرَّجُلُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا أَنْتَ أَحَقُّ بِصَدْرِ دَابَّتِكَ إِلَّا أَنْ تَجْعَلَهُ لِي» . قَالَ: جَعَلْتُهُ لَكَ فَرَكِبَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ

3918. बुरैदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ चल रहे थे की इसी दौरान एक आदमी आप की खिदमत में हाज़िर हुआ, उस के पास एक गधा था, उस ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप उस पर सवार हो जाए, और वह खुद पीछे हो गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "नहीं (पीछे न हटो), तुम अपनी सवारी की अगली जानिब बैठनेके ज़्यादा हक़दार हो, मगर यह कि तुम इस (अगली जानिब) को मेरे लिए ठहरा दो", उस ने अर्ज़ किया, मैंने आप को इजाज़त दी, फिर आप सवार हुए| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (2773 وقال : غریب) و ابوداؤد (2572)

٣٩١٩ - (حسن) وَعَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِنْدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تَكُونُ إِبِلٌ لِلشَّيَاطِينِ وَبُيُوتٌ لِلشَّيَاطِينِ» . فَأَمَّا إِبِلُ الشَّيَاطِينِ فَقَدْ رَأَيْتُهَا: يَخْرُجُ أَحَدُكُمْ بِنَجِيبَاتٍ مَعَهُ قَدْ أَسْمَنَهَا فَلَا يَعْلُو بَعِيرًا مِنْهَا وَيَمُرُّ بِأَخِيهِ قَدِ [ص:١١٤] انْقَطَعَ بِهِ فَلَا يَحْمِلُهُ وَأَمَّا بُيُوتُ الشَّيَاطِينِ فَلَمْ أَرَهَا كَانَ سَعِيدٌ يَقُولُ: لَا أُرَاهَا إِلَّا هَذِهِ الْأَقْفَاصَ الَّتِي يَسْتُرُ النَّاسُ بِالدِّيبَاجِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

3919. सईद बिन अबी हिन्द, अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "कुछ

ऊंट और कुछ घर शैतानो के लिए होते हैं, शैतानो के ऊंट तो मैंने देख लिए है तुम में से कोई एक अपने बेहतरीन ऊटों के साथ निकलता है जिन्हें उस ने खूब मोटा किया होता है, लेकिन वह उनमें से किसी ऊंट पर नहीं बेठता, और वह अपने किसी मुसलमान भाई के पास से गुज़रता है जो के थक चूका होता है लेकिन यह इसे सवार नहीं करता, लेकिन शैतानो के घर मैंने नहीं देखे", सईद कहा करते थे, मैं समझता हूँ कि उन से यह होद्ज मुराद है जिन्हें लोग देबाज रेशम से ढांपते है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2568) * رجاله ثقات ولکن سعید بن ابی ھند ’’ لم یلق ابا ھریرۃ ‘‘ قاله ابو حاتم الرازی (انظر المراسیل ص 75) فالسند منقطع

٣٩٢٠ - (صَحِيح) وَعَن سهلِ بن مُعاذٍ عَن أبيهِ قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَضَيَّقَ النَّاسُ الْمُنَازِلَ وَقَطَعُوا الطَّرِيقَ فَبَعَثَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُنَادِيًا يُنادي فِي النَّاسِ: «أَنَّ مَنْ ضَيَّقَ مَنْزِلًا أَوْ قَطَعَ طَرِيقًا فَلَا جِهَادَ لَهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3920. सहल बिन मुआज़ अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा, हम ने नबी ﷺ के साथ जिहाद किया तो लोगों ने (जाईदा ।ज़रूरत जगह घेर कर) मंजिलो को तंग कर दिया, और रास्ते बंद कर दिए, नबी ﷺ ने मुनादी (एलान) करने वाले को भेजा के वह लोगों में एलान कर दे के जिस ने मंजिल तंग कि या रास्ता बंद किया तो उस का कोई जिहाद नहीं|" (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2629)

٣٩٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ أَحْسَنَ مَا دَخَلَ الرَّجُلُ أَهْلَهُ إِذَا قَدِمَ مِنْ سفرٍ أَوَّلُ الليلِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3921. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "जब आदमी सफ़र से वापस आए तो उस का अपने अहले खाना के पास आने का बेहतरीन वक़्त रात का इब्तिदाई हिस्सा है"| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (2777)

آداب السّفر • باب آدَاب السّفر • आदाब ए सफ़र का बयान
الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٩٢٢ - (صَحِيح) عَن أبي قتادة قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذا كَانَ فِي سَفَرٍ فَعَرَّسَ بِلَيْلٍ اضْطَجَعَ عَلَى يَمِينِهِ وَإِذَا عَرَّسَ قُبَيْلَ الصُّبْحِ نَصَبَ ذِرَاعَهُ وَوَضَعَ رَأْسَهُ عَلَى كَفِّهِ. رَوَاهُ مُسلم

3922. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ रात के वक़्त पड़ाव डालते तो आप अपने दाएँ पहलु पर लेट जाते और जब सुबह से थोड़ा पहले पड़ाव डालते तो आप अपने कोहनी खड़ी करते और अपना सर अपने हथेली पर रखते| (मुस्लिम)

رواه مسلم (313 / 683)، (1565)

٣٩٢٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابْن عَبَّاس قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ رَوَاحَةَ فِي سَرِيَّةٍ فَوَافَقَ ذَلِكَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ فَغَدَا أَصْحَابُهُ وَقَالَ: أَتَخَلَّفُ وأُصلّي مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ أَلْحَقُهُمْ فَلَمَّا صَلَّى مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَآهُ فَقَالَ: «مَا مَنَعَكَ أَنْ تَغْدُوَ مَعَ أَصْحَابِكَ؟» فَقَالَ: أَرَدْتُ أَنْ أُصَلِّيَ مَعَكَ ثُمَّ أَلْحَقُهُمْ فَقَالَ: «لَوْ أَنْفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَا أدركْتَ فضلَ غدْوَتهمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3923. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ ने अब्दुल्लाह बिन रवाहा रदियल्लाहु अन्हु को एक लश्कर के साथ भेजा, इत्तेफाक से वह जुमा का दिन था, उन के साथ सुबह ही रवाना हो गए और उन्होंने (दिल में) कहा में कुछ ताखीर कर लेता हूँ, रसूलुल्लाह ﷺ के साथ जुमा पढ़ता हूँ और फिर उन से जा मिलूँगा, जब उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ नमाज़े जुमा पढ़ी और आप ने उन्हें देखा तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हें अपने साथियो के साथ सुबह जाने से किस ने रोक रखा ?” उन्होंने अर्ज़ किया, मैंने इरादा किया के आप के साथ नमाज़ ए जुमा पढूँगा और फिर उन के साथ जा मिलूँगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम ज़मीन भर की चीज़े खर्च कर दो तो तुम उन के जल्दी जाने की फ़ज़ीलत हासिल नहीं कर सकते”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (527) * حجاج بن ارطاة : ضعيف مدلس و عنعن ، وتفرد به کما قال البیهقی (3 / 187)

٣٩٢٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَصْحَبُ الْمَلَائِكَةُ رُفْقَةً فِيهَا جِلْدُ نَمِرٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

3924. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “फ़रिश्ते इस जमाअत के साथ

नहीं होते जिस में चीते की खाल हो| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (كتاب اللباس باب فى جلود النمورح 4130) * فيه قتادة مدلس و عنعن و حديث ابى داود (2555) لا يستشهد له ، هو غير هذا المتن

٣٩٢٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سَيِّدُ الْقَوْمِ فِي السَّفَرِ خَادِمُهُمْ فَمَنْ سَبَقَهُمْ بِخِدْمَةٍ لَمْ يَسْبِقُوهُ بِعَمَلٍ إِلَّا الشَّهَادَةَ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان»

3925. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कौम का सरदार सफ़र में उनका खादिम होता है, जिस ने किसी खिदमत के ज़रिए इन पर सबकत हासिल कर ली तो वह लोग मा सिवाए शहादत के किसी और अमल के ज़रिए इस शख़्स से आगे नहीं बढ़ सकते”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (8407 ، نسخة محققة : 8050) * فيه ابو طاهر احمد بن الحسين : نا على بن عبد الرحيم الصفار ولم اعرفهما و الباقى : سنده حسن

بَابُ الْكِتَابِ إِلَى الْكُفَّارِ وَدُعَائِهِمْ إِلَى الْإِسْلَامِ • कुफ्फार के नाम ख़त लिखने और इन्हें इस्लाम की तरफ दअवत देने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٩٢٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَتَبَ إِلَى قَيْصَرَ يَدْعُوهُ إِلَى الْإِسْلَامِ وَبَعَثَ بِكِتَابِهِ إِلَيْهِ دِحْيَةَ الْكَلْبِيَّ وَأَمَرَهُ أَنْ يَدْفَعَهُ إِلَى عَظِيمِ بُصْرَى لِيَدْفَعَهُ إِلَى قَيْصَرَ فَإِذَا فِيهِ: " بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ مِنْ مُحَمَّدٍ عَبْدِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى هِرَقْلَ عَظِيمِ الرُّومِ سَلَامٌ عَلَى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَى أَمَّا بَعْدُ فَإِنِّي أَدْعوكَ بداعيَةِ الْإِسْلَامِ أَسْلِمْ تَسْلَمْ وَأَسْلِمْ يُؤْتِكَ اللَّهُ أَجْرَكَ مَرَّتَيْنِ وَإِنْ تَوَلَّيْتَ فَعَلَيْكَ إِثْمُ الْأَرِيسِيِّينَ وَ (يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَن لَا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا: اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ)»» مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ قَالَ:»» مِنْ محمَّدٍ رسولِ اللَّهِ " وَقَالَ: «إِثمُ اليريسيِّينَ» وَقَالَ: «بِدِعَايَةِ الْإِسْلَام»

3926. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने कैसर के नाम ख़त लिखा ताकि आप इसे इस्लाम की तरफ दावत दें, आप ﷺ ने दिह्यत कल्ब रदियल्लाहु अन्हु को ख़त दे कर उसकी तरफ भेजा और इसे हुक्म फ़रमाया के वह इसे अज़ीम बसरी के हवाले करे ताकि वह इसे कैसर तक पहुंचाए, उस में लिखा हुआ था (بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ) “शुरू अल्लाह के नाम से जो बहोत मेहरबान निहायत रहम करने वाला है”, अल्लाह के बंदे और उस के रसूल मुहम्मद ﷺ की तरफ से हिरेकल अज़ीम रोम की तरफ इस शख़्स पर सलाम जो हिदायत की इत्तेबा करे, अम्मा बाद! मैं तुम्हें इस्लाम की दावत पेश करता हूँ, इस्लाम लाओ सालिम रहोगे, इस्लाम लाओ! अल्लाह तुम्हें तुम्हारा अज़्र दो बार देगा, और अगर तुमने रुगर्दानी की तो तुम पर रिआया का भी गुनाह होगा,

ए अहले किताब! एक ऐसी बात की तरफ आओ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान मुश्तरका है के हम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत न करे, और हम उस के साथ किसी को शरीक न करे, और हम अल्लाह के सिवा एक दूसरे को रब न बनाएं, पस अगर वह रुख फेरे तो कह दो की तुम लोग गवाह रहो हम मुसलमान है”| बुखारी, मुस्लिम, और सहीह मुस्लिम की रिवायत में है रावी बयान करते हैं, “ मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल! की तरफ से ‘‘ फिर (اريسيّين) के बजाए (اليريسيّين) और (بداعية الاسلام) के बजाए (بدعاية الاسلام) के अल्फाज़ है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (7) و مسلم (74 / 1772)، (4607)

٣٩٢٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ بِكِتَابِهِ إِلَى كِسْرَى مَعَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ حُذَافَةَ السَّهْمِيِّ فَأَمَرَهُ أَنْ يَدْفَعَهُ إِلَى عَظِيمِ الْبَحْرَيْنِ فَدَفَعَهُ عَظِيمُ الْبَحْرَيْنِ إِلَى كِسْرَى [ص:١١٥ فَلَمَّا قَرَأَ مَزَّقَهُ قَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ: فَدَعَا عَلَيْهِمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُمَزَّقُوا كُلَّ مُمَزَّقٍ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

3927. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा सहमी रदियल्लाहु अन्हु के ज़रिए कीसरा के नाम ख़त भेजा और उन्हें हुक्म फ़रमाया के वह इसे सरबराह बहरीन के हवाले करे, चुनांचे सरबराह बहरीन ने यह ख़त कीसरा के हवाले किया, जब उस ने पढ़ा तो उस ने इसे चाक कर दिया, इब्ने मुसय्यिब बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने इन के लिए बद्दुआ की के वह पारह पारह कर दिए जाए| (बुखारी)

رواه البخاری (4424)

٣٩٢٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَتَبَ إِلَى كِسْرَى وَإِلَى قَيْصَرَ وَإِلَى النَّجَاشِيِّ وَإِلَى كُلِّ جَبَّارٍ يَدْعُوهُمْ إِلَى اللَّهِ وَلَيْسَ بِالنَّجَاشِيِّ الَّذِي صَلَّى عَلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

3928. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने कीसरा, कैसर, नज्जाशी और हर सरकश के नाम ख़त लिखा और उन्हें अल्लाह की तरफ दावत दी और यह वह नज्जाशी नहीं जिस की नबी ﷺ ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी थी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (75 / 1774)، (4609)

٣٩٢٩ - (صَحِيح) وَعَن سليمانَ بنِ بُريدةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَمَّرَ أَمِيرًا عَلَى جَيْشٍ أَوْ سَرِيَّةٍ أَوْصَاهُ فِي خَاصَّتِهِ بِتَقْوَى اللَّهِ وَمَنْ مَعَهُ مِنَ الْمُسْلِمِينَ خَيْرًا ثُمَّ قَالَ: " اغْزُوَا بسمِ اللَّهِ قَاتَلُوا مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ اغْزُوَا فَلَا تَغُلُّوا وَلَا تَغْدِرُوا وَلَا تَمْثُلُوا وَلَا تَقْتُلُوا وَلِيدًا وَإِذَا لَقِيتَ عَدُوَّكَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ فَادْعُهُمْ إِلَى ثَلَاثِ

خِصَالٍ أَوْ خِلَالٍ فَأَيَّتُهُنَّ مَا أَجَابُوكَ فَاقْبَلْ مِنْهُمْ وَكُفَّ عَنْهُمْ ثُمَّ ادْعُهُمْ إِلَى الْإِسْلَامِ فَإِنْ أَجَابُوكَ فَاقْبَلْ مِنْهُمْ وَكُفَّ عَنْهُمْ ثُمَّ ادْعُهُمْ إِلَى التَّحَوُّلِ مِنْ دَارِهِمْ إِلَى دَارِ الْمُهَاجِرِينَ وَأَخْبِرْهُمْ أَنَّهُمْ إِنْ فَعَلُوا ذَلِكَ فَلَهُمْ مَا لِلْمُهَاجِرِينَ وَعَلَيْهِمْ مَا عَلَى الْمُهَاجِرِينَ فَإِنْ أَبَوْا أَنْ يَتَحَوَّلُوا مِنْهَا فَأَخْبِرْهُمْ أَنَّهُمْ يَكُونُونَ كَأَعْرَابِ الْمُسْلِمِينَ يُجْرَى عَلَيْهِمْ حُكْمُ الله الَّذِي يُجْرَى عَلَيْهِمْ حُكْمُ اللَّهِ الَّذِي يُجْرَى عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَكُونُ لَهُمْ فِي الْغَنِيمَةِ وَالْفَيْءِ شَيْءٌ إِلَّا أَنْ يُجَاهِدُوا مَعَ الْمُسْلِمِينَ فَإِنْ هم أَبَوا فعلهم الْجِزْيَةَ فَإِنْ هُمْ أَجَابُوكَ فَاقْبَلْ مِنْهُمْ وَكُفَّ عَنْهُمْ فَإِنْ هُمْ أَبَوْا فَاسْتَعِنْ بِاللَّهِ وَقَاتِلْهُمْ وَإِذَا حَاصَرْتَ أَهْلَ حِصْنٍ فَأَرَادُوكَ أَنْ تَجْعَلَ لَهُمْ ذِمَّةَ اللَّهِ وَذِمَّةَ نَبِيِّهِ فَلَا تَجْعَلْ لَهُمْ ذِمَّةَ اللَّهِ وَلَا ذِمَّةَ نَبِيِّهِ وَلَكِنِ اجْعَلْ لَهُمْ ذِمَّتَكَ وَذِمَّةَ أَصْحَابِكَ فَإِنَّكُمْ أَنْ تُخْفِرُوا ذِمَمَكُمْ وَذِمَمَ أَصْحَابِكُمْ أَهْوَنُ مِنْ أَنْ تُخْفِرُوا ذِمَّةَ اللَّهِ وَذِمَّةَ رَسُولِهِ وَإِنْ حَاصَرْتَ أَهْلَ حِصْنٍ فَأَرَادُوكَ أَنْ تُنْزِلَهُمْ عَلَى حُكْمِ [ص:١١٥ اللَّهِ فَلَا تُنْزِلْهُمْ عَلَى حُكْمِ اللَّهِ وَلَكِنْ أَنْزِلْهُمْ عَلَى حُكْمِكَ فَإِنَّكَ لَا تَدْرِي: أَتُصِيبُ حُكْمَ اللَّهِ فِيهِمْ أَمْ لَا؟ ". رَوَاهُ مُسْلِمٌ

3929. सुलेमान बिन बुरैदा अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: जब रसूलुल्लाह ﷺ किसी लश्कर या किसी दस्ते पर कोई अमीर मुकर्रर फरमाते तो आप खास तौर पर इसे अल्लाह का खौफ इख़्तियार करने और अपने साथी मुसलमानों के साथ खैर व भलाई करने का हुक्म फरमाते, फिर फरमाते: “अल्लाह की राह में अल्लाह के नाम से जिहाद करो, अल्लाह के साथ कुफ्र करने वाले से किताल करो जिहाद करो, खयानत, दगाबाज़ी और मुसला मत करो, बच्चो को क़त्ल न करो, और जब तुम अपने मुशरिक दुश्मनों से मुलाकात करे तो उन्हें तीन चीजों की तरफ दावत दो, और वह उनमें से जो कबूल कर ले, तो इन से कबूल कर लो और इन से (लड़ाई करने से) हाथ रोक लो, फिर उन्हें इस्लाम की तरफ दावत दो, अगर तुम्हारी बात मान लें तो इन से कबूल कर लो और इन से (लड़ाई करने से) हाथ रोक लो, फिर उन्हें उन के घर से दारुल मुहाजरिन की तरफ मुन्तकिल होने की दावत पेश करो और उन्हें बताओ के अगर उन्होंने ऐसा कर लिया तो फिर उन के वही हुकुक होंगे जो मुहाजरिन के होंगे और उनकी वही ज़िम्मेदारिया होगी जो मुहाजरिन की होगी, अगर वह वहां से मुन्तकिल होने से इनकार करे तो उन्हें बताओ के उनका मुआमला देहातो में रिहाइश पज़ीर मुसलमानों जैसे होगा, अल्लाह के अहकाम इन पर वैसे ही जारी किए जाएँगे जैसे दीगर मोमिनो पर जारी होंगे, अगर वह मुसलमानों के साथ मिल कर जिहाद करेंगे तो तब इन के लिए माले गनीमत और माल ए फै में से हिस्सा होगा वरना नहीं, अगर वह इनकार करे तो उन से जिज़िया तलब करो, अगर वह आप की बात मान लिया तो उनकी तरफ से कबूल करो और उन से लड़ाई मत करो, अगर वह इनकार करे तो अल्लाह से मदद तलब करो और इनसे किताल करो, जब तुम किले वालो का मुहासरा करो और अगर वह तुम से यह चाहे के तुम उन्हें अल्लाह और उस के नबी की अमान दो तो उन्हें अल्लाह और उस के नबी की अमान मत देना, बल्कि उन्हें अपने और अपने साथियो की अमान देना, क्योंकि अगर तुमने अपने और अपने साथियो की अमान को तोड़ा तो यह उन से सहल तर है के तुम अल्लाह और उस के रसूल की अमान को तोड़ो, और अगर तुम किले वालो का मुहासरा करो और वह तुम से मुतालबा करे की तुम उन्हें अल्लाह के हुक्म पर निकालो तो तुम उन्हें अल्लाह के हुक्म पर न निकालो बल्कि तुम उन्हें अपने हुक्म पर निकालो, क्योंकि तुम नहीं जानते की तुम इन के बारे में अल्लाह के हुक्म के मुताबिक फैसला कर सकोगे या नहीं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (3 / 1731)، (4522)

٣٩٣٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أوفى: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي بَعْضِ أَيَّامِهِ الَّتِي لَقِيَ فِيهَا الْعَدُوَّ انْتَظَرَ حَتَّى مَالَتِ الشَّمْسُ ثُمَّ قَامَ فِي النَّاسِ فَقَالَ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ لَا تَتَمَنَّوْا لِقَاءَ الْعَدُوِّ وَاسْأَلُوا اللَّهَ الْعَافِيَةَ فَإِذَا لَقِيتُمْ فَاصْبِرُوا وَاعْلَمُوا أَنَّ الْجَنَّةَ تَحْتَ ظِلَالِ السُّيُوفِ» ثُمَّ قَالَ: «اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ وَمُجْرِيَ السَّحَابِ وهازم الْأَحْزَاب واهزمهم وَانْصُرْنَا عَلَيْهِم»

3930. अब्दुल्लाह बिन अबी अव्फी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने उन अय्याम में से किसी रोज़ जिस में आप दुश्मन से मिले ज़वाल ए आफ़ताब का इंतज़ार फ़रमाया, फिर खड़े हो कर लोगों से ख़िताब फ़रमाया: “लोगो! दुश्मन से मुलाकात की तमन्ना मत करो बल्कि अल्लाह से आफियत तलब करो, लेकिन जब तुम आमने सामने हो जाओ तो फिर सब्र करो और जान लो के जन्नत तलवारों के साए तले है”, फिर आप ﷺ ने यूँ दुआ फरमाई: “ए अल्लाह! किताब के नाज़िल फरमाने वाले, बादलो को चलाने वाले और लश्करो को शिकस्त देने वाले! उन्हें शिकस्त दे और उन के खिलाफ हमारी मदद फरमा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (29652966) و مسلم (20 / 1742)، (4542)

٣٩٣١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا غَزَا بِنَا قَوْمًا لَمْ يَكُنْ يَغْزُو بِنَا حَتَّى يُصْبِحَ وَيَنْظُرَ إِلَيْهِمْ فَإِنْ سَمِعَ أَذَانًا كَفَّ عَنْهُمْ وَإِنْ لَمْ يَسْمَعْ أَذَانًا أَغَارَ عَلَيْهِمْ قَالَ: فَخَرَجْنَا إِلَى خَيْبَرَ فَانْتَهَيْنَا إِلَيْهِمْ لَيْلًا فَلَمَّا أَصْبَحَ وَلَمْ يسمَعْ أذاناً رِكِبَ ورَكِبْتُ خلفَ أبي طلحةَ وَإِنَّ قَدَمِي لَتَمَسُّ قَدَمَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فَخَرَجُوا إِلَيْنَا بَمَكَاتِلِهِمْ ومساحيهم فَلَمَّا رأى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا: مُحَمَّدٌ واللَّهِ محمّدٌ والخميسُ فلَجؤوا إِلَى الْحِصْنِ فَلَمَّا رَآهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ خَرِبَتْ خَيْبَرُ إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قومٍ فساءَ صباحُ المُنْذَرِينَ»

3931. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ जब हमें लेकर किसी कौम से जिहाद करते तो आप इस वक़्त तक जिहाद का आगाज़ न फरमाते जब तक सुबह न हो जाती फिर आप उनका जाइज़ा लेते, अगर आप ﷺ आज़ान सुनते तो उन से लड़ाई न करते और अगर आज़ान न सुनते तो फिर इन पर हमला कर देते| रावी बयान करते हैं, हम खैबर की तरफ रवाना हुए तो हम रात के वक़्त वहां पहुँच गए, पस जब सुबह हुई तो आप ने आज़ान न सुनी, आप सवार हुए और मैं अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु के पीछे सवार हुआ, और मेरे कदम नबी ﷺ के कदम के साथ लग रहे थे, रावी बयान करते हैं, वह (काम की गर्ज़ से) अपने टोकरियों और फावड़ो के साथ हमारी तरफ आए, जब उन्होंने नबी ﷺ को देखा तो उन्होंने कहा: मुहम्मद, अल्लाह की क़सम! मुहम्मद लश्कर समेत (आ गए है), वह किला बंद हो गए, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें देखा तो फ़रमाया: “(اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर, (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर, खैबर तबाह हुआ जब हम किसी कौम के मैदान में उतर पड़ते है, तो उन के डराए हुए लोगों की सुबह बुरी हो जाती है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (610) و مسلم (120 / 1365)، (4665)

٣٩٣٢ - (صَحِيح) وَعَن النُّعْمَانِ بْنِ مُقَرِّنٍ قَالَ: شَهِدْتُ الْقِتَالَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَانَ إِذَا لَمْ يُقَاتِلْ أَوَّلَ

النَّهَارِ انْتَظَرَ حَتَّى تهب الْأَرْوَاح وتحضر الصَّلَاة. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3932. नौमान बिन मुकर्रिन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ जिहाद में शरीक था अगर आप दिन के आगाज़ में लड़ाई का आगाज़ न फरमाते, तो आप इंतज़ार फरमाते हत्ता के हवाए चलने लगती और नमाज़ (ज़ुहूर) का वक़्त हो जाता| (बुखारी)

رواه البخارى (3160)

بَابُ الْكِتَابِ إِلَى الْكُفَّارِ وَدُعَائِهِمْ إِلَى الْإِسْلَامِ • कुफ्फार के नाम ख़त लिखने और इन्हें इस्लाम की तरफ दअवत देने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٩٣٣ - (لم تتمّ دراسته) عَن النُّعْمَان بن مقرن قَالَ: شَهِدْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَانَ إِذَا لَمْ يُقَاتِلْ أَوَّلَ النَّهَارِ انْتَظَرَ حَتَّى تَزُولَ الشَّمْسُ وَتَهُبَّ الرِّيَاحُ وينزِلَ النَّصرُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3933. नौमान बिन मुकर्रिन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ था, जब आप दिन के पहले पहर किताल न करते तो आप ﷺ इंतज़ार फरमाते हत्ता के सूरज ढल जाता, हवाए चलने लगती और नुसरत नाज़िल होती| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2655)

٣٩٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن قتادةَ عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ مُقَرِّنٍ قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَانَ إِذَا طَلَعَ الْفَجْرُ أَمْسَكَ حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ فَإِذَا طَلَعَتْ قَاتَلَ فَإِذَا انْتَصَفَ النَّهَارُ أَمْسَكَ حَتَّى تَزُولَ الشَّمْسُ فَإِذَا زَالَتِ الشَّمْسُ قَاتَلَ حَتَّى الْعَصْرِ ثُمَّ أَمْسَكَ حَتَّى يُصَلَّى الْعَصْرُ ثُمَّ يُقَاتِلُ قَالَ قَتَادَةُ: كَانَ يُقَالُ: عِنْدَ ذَلِكَ تُهِيجُ رِيَاحُ النَّصْرِ وَيَدْعُو الْمُؤْمِنُونَ لِجُيُوشِهِمْ فِي صلَاتهم. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3934. क़तादाह, नुअमान बिन मुकर्रिन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ की साथ में जिहाद किया, जब फज्र नमूदार हो जाती तो आप (किताल से) रुक जाते हत्ता के सूरज तुलुअ हो जाता जब वह तुलुअ हो जाता तो आप किताल करते, जब दोपहर हो जाता तो आप रुक जाते हत्ता के सूरज ढल जाता, जब सूरज ढल जाता तो आप असर तक किताल करते फिर आप रुक जाते थे हत्ता के नमाज़े असर पढ़ते, फिर आप किताल करते| क़तादाह बयान करते हैं, इस वक़्त कहा जाता था नुसरत की हवाए चलती है और

मोमिन अपने नमाज़ो में अपने लश्करो के लिए दुआए करते हैं| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (1612) * قتادة مدلس و عنعن و حديث الترمذی (1613) يغنی عنه

٣٩٣٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عصامٍ المزنيِّ قَالَ بَعَثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَرِيَّةٍ فَقَالَ: «إِذَا رَأَيْتُمْ مَسْجِدًا أَوْ سَمِعْتُمْ مُؤَذِّنًا فَلَا تَقْتُلُوا أَحَدًا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

3935. ईसाम अल मुज़नी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें एक लश्कर में भेजा तो फ़रमाया: “जब तुम कोई मस्जिद देखो या किसी मुअज़्ज़िन को सुनो तो फिर तुम किसी को क़त्ल न करो”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (1549 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (2635) * ابن عصام لا يعرف حاله

بَابُ الْكِتَابِ إِلَى الْكُفَّارِ وَدُعَائِهِمْ إِلَى الْإِسْلَامِ • कुफ्फार के नाम ख़त लिखने और इन्हें इस्लाम की तरफ दअवत देने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٩٣٦ - (لم تتمّ دراسته) عَن أبي وائلٍ قَالَ: كَتَبَ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ إِلَى أَهْلِ فَارِسَ: بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ مِنْ خَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ إِلَى رُسْتَمَ وَمِهْرَانَ فِي مَلَأٍ فَارِسَ. سَلَامٌ عَلَى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَى. أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّا نَدْعُوكُمْ إِلَى الْإِسْلَامِ فَإِنْ أَبَيْتُمْ فَأَعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَأَنْتُمْ صَاغِرُونَ فَإِنْ أَبَيْتُمْ فَإِنَّ مَعِي قَوْمًا يُحِبُّونَ الْقَتْلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَا يُحِبُّ فَارِسُ الْخَمْرَ وَالسَّلَامُ عَلَى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَى. رَوَاهُ فِي شَرْحِ السّنة .

3936. अबू वाइल बयान करते हैं, खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु अन्हु ने अहल ए फारस के नाम ख़त लिखा (بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ) “शुरू अल्लाह के नाम से जो बहोत मेहरबान निहायत रहम करने वाला है” खालिद बिन वलीद की तरफ से रुस्तम व मेहरान और फारस के सरदारों के नाम, इस शख़्स पर सलाम जो हिदायत की इत्तेबा करे, अम्मा बाद! हम तुम्हें इस्लाम की तरफ दावत देते है, अगर तुम इनकार करो तो तुम अपने हाथो जिज़िया अदा करो इस हाल में की तुम ज़लील हो, क्योंकि मेरे साथ ऐसे लोग है जो अल्लाह की राह में किताल को ऐसे पसंद करते हैं जैसे फारसी शराब पसंद करते हैं, और इस शख़्स पर सलाम जो हिदायत की इत्तेबा करे| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه البغوی فی شرح السنة (لم اجده) [و روی الهاكم (3 / 299) و الطبرانی فی الكبير (4 / 105 ح 3806) و علی بن الجعد فی مسنده (2304 / 2394)] * فيه شريک القاضی مدلس و عنعن وله شواهد باطلة فی البداية و النهاية (6 / 348) وغيرهما و الحديث حسنه الهيثمی فی مجمع الزوائد (5 / 310) !

जिहाद में किताल का बयान — بَاب الْقِتَال فِي الْجِهَاد •

पहली फस्ल — الْفَصْلُ الأول •

٣٩٣٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن جَابر قَالَ: قَالَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ أُحُدٍ: أَرَأَيْتَ إِنْ قُتِلْتُ فَأَيْنَ أَنَا؟ قَالَ: «فِي الْجنَّة» فَألْقى ثَمَرَات فِي يَده ثمَّ قَاتل حَتَّى قتل

3937. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी ने नबी ﷺ से गज़वा ए उहद के रोज़ अर्ज़ किया, मुझे बताइए के अगर में क़त्ल कर दिया जाऊँ तो कहाँ होऊंगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जन्नत में”, उस ने वह खजूरे, जो के उस के हाथ में थी, फेंक दी, फिर किताल किया हत्ता कि शहीद कर दिया गया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4046) و مسلم (143 / 1899)، (4913)

٣٩٣٨ - (صَحِيح) وَعَن كَعْب بن مالكٍ قَالَ: لَمْ يَكُنْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُرِيدُ غَزْوَةً إِلَّا وَرَّى بِغَيْرِهَا حَتَّى كَانَتْ تِلْكَ الْغَزْوَةُ يَعْنِي غَزْوَةَ تَبُوكَ غَزَاهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَرٍّ شَدِيدٍ وَاسْتَقْبَلَ سَفَرًا بَعِيدًا وَمَفَازًا وَعَدُوًّا كَثِيرًا فَجَلَّى لِلْمُسْلِمِينَ أَمْرَهُمْ لِيَتَأَهَّبُوا أُهْبَةَ غَزْوِهِمْ فَأَخْبَرَهُمْ بِوَجْهِهِ الَّذِي يُرِيدُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

3938. काब बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ किसी गज़वा का इरादा फरमाते तो आप उस के अलावा किसी और का तोरिया फ़रमाया करते थे लेकिन जब यह गज़वा यानी गज़वा ए तबुक हुआ जिसे रसूलुल्लाह ﷺ ने सख्त गर्मी में लड़ा, उस में आप को दूर दराज़ का सफ़र बियाबान रास्ते और बहोत ज़्यादा दुश्मनों का सामना था, लिहाज़ा आप ﷺ ने मुसलमानों के लिए उन के मुआमले को वाज़ेह कर दिया ताकि वह अपने गज़वा के लिए खूब तय्यारी कर ले, आप ﷺ ने जिस सिम्त जाना था वह उन्हें बता दिया| (बुखारी)

رواه البخاری (4418)

٣٩٣٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «الْحَرْب خدعة»

3939. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “लड़ाई एक धोका है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3030) و مسلم (17 / 1739)، (4539)

٣٩٤٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَغْزُو بِأُمِّ سُلَيْمٍ وَنِسْوَةٍ مِنَ الْأَنْصَارِ مَعَهُ إِذَا غَزَا يَسْقِينَ الْمَاءَ وَيُدَاوِينَ الْجَرْحَى. رَوَاهُ مُسلم

3940. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ जिहाद के लिए जाता तो उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा और अंसार की कुछ औरते आप ﷺ के साथ जिहाद के लिए जाती, वह पानी पिलाती और ज़ख्मियों का इलाज करती थी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (130 / 1810)، (4682)

٣٩٤١ - (صَحِيح) وَعَن أُمِّ عطيَّةَ قَالَتْ: غَزَوْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَبْعَ غَزَوَاتٍ أَخْلُفُهُمْ فِي رِحَالِهِمْ فَأَصْنَعُ لَهُمُ الطَّعَامَ وَأُدَاوِي الْجَرْحَى وَأَقُومُ عَلَى المرضى. رَوَاهُ مُسلم

3941. उम्म अतिया रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सात गज़वात में शिरकत की, मैं इन के सामान के पास रहा करती थी, इन के लिए खाना तैयार करती, ज़ख्मियों का इलाज करती और मरीज़ों की देख भाल किया करती थी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (142 / 1812)، (4690)

٣٩٤٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ قَتْلِ النِّسَاءِ وَالصِّبْيَانِ

3942. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने औरतो और बच्चो को क़त्ल करने से मना फ़रमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3015) و مسلم (25 / 1744)، (4548)

٣٩٤٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن الصَّعبِ بنِ جثَّامةَ قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عنْ أهلِ الدَّارِ يَبِيتُونَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ فَيُصَابُ مِنْ نِسَائِهِمْ وَذَرَارِيِّهِمْ قَالَ: «هُمْ مِنْهُمْ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «هُمْ مِنْ آبائِهم»

3943. सअबी बिन जस्सामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से मुहल्लों में रहने वाले मुशरिकीन के बारे में दरियाफ्त किया गया जिन पर रात में हमला (छापा) जिस मैं इन की औरते और उन के बच्चे हलाक हो जाए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो भी उन्हें के हुक्म में है”, एक दूसरी रिवायत में है: “वो अपने आबाअ के ताबेअ है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3012) و مسلم (26 / 1745)، (4549)

٣٩٤٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَطَعَ نَخْلَ بني النَّضيرِ وحرَّقَ وَلها يقولُ حسَّانُ:»» وَهَانَ عَلَى سَرَاةِ بَنِي لُؤَيٍّ حَرِيقٌ بِالْبُوَيْرَةِ مُستَطيرُ»» وَفِي ذَلِكَ نَزَلَتْ (مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَى أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ)

3944. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने बनू नज़ीर के खजूरो के दरख्त काटे और जलाए, हस्सान रदियल्लाहु अन्हु ने उस के मुतल्लिक शेर कहा: “बनू लुइ के सरदारों के लिए बवेरा (पर खजूरो के दरख्तों को) जलाना आसान हुआ जो के फैला हुआ था”, और उस के मुतल्लिक यह आयत नाज़िल हुई: “तुमने खजूर के जो दरख्त काट डाल या उन्हें उन के तनो पर काइम रहने दिया वह (सब) अल्लाह के हुक्म से था”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (40314032) و مسلم (30 / 1746)، (4553)

٣٩٤٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَوْنٍ: أَنَّ نَافِعًا كَتَبَ إِلَيْهِ يُخْبِرُهُ أَنَّ ابْنَ عمر أخبرهُ أَن ابْن عمر أَخْبَرَهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَغَارَ عَلَى بَنِي الْمُصْطَلِقِ غَارِّينِ فِي نَعَمِهِمْ بِالْمُرَيْسِيعِ فَقتل الْمُقَاتلَة وسبى الذُّرِّيَّة

3945. अब्दुल्लाह बिन औन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के (इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा के आज़ाद करदा गुलाम) नाफेअ रहिमहुल्लाह ने उन्हें ख़त लिखा जिस में इन्होंने उन्हें (यानी मुझे) यह बताया की इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने उन्हें (यानी नाफेअ को) खबर दी के नबी ﷺ ने बनू मुस्तलक पर इस वक़्त हमला किया जब वह मुरसीअ के मक़ाम पर अपने मवेशियों में गाफ़िल थे, आप ﷺ ने जंगजूओ को क़त्ल किया और बच्चो को कैदी बनाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2541) و مسلم (1 / 1730)، (4519)

٣٩٤٦ - (صَحِيح) وَعَن أبي أَسِيدٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَنَا يَوْمَ بَدْرٍ حِينَ صَفَفْنَا لِقُرَيْشٍ وَصَفُّوا لَنَا: «إِذَا أَكْثَبُوكُمْ فَعَلَيْكُمْ بِالنَّبْلِ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «إِذَا أَكْثَبُوكُمْ فَارْمُوهُمْ وَاسْتَبْقُوا نَبْلَكُمْ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ»» وَحَدِيث سعد: «هُوَ تُنْصَرُونَ» سَنَذْكُرُهُ فِي بَابِ «فَضْلِ الْفُقَرَاءِ» . وَحَدِيثُ الْبَرَاءِ: بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَهْطًا فِي بَابِ «الْمُعْجِزَاتِ» إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى

3946. अबू उसैद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब गज़वा ए बद्र के मौके पर हम और कुरैश एक दूसरे के सामने सफ आराअ हुए तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जब वह तुम्हारे करीब आजाए तो तुम इन पर तीर बरसाओ| और एक दूसरी रिवायत में है की जब वह तुम्हारे करीब आ जाए तो तुम इन पर तीर बरसाओ और कुछ तीर अपने पास महफ़ूज़ रखो”| # और साद (र) से मरवी हदीस: “तुम्हारी मदद नहीं की जाती ......” हम अनकरीब بَابِ فَضْلِ الْفُقَرَاءِ (फकीरों की फ़ज़ीलत और नबी ﷺ की गुजरान का बयान में ज़िक्र करेंगे और बराअ (र) से मरवी हदीस “ रसूलुल्लाह ﷺ ने एक लश्कर भेजा ....”, بَاب فِي المعجزات (मोजिजो का बयान) मैं इनशाअल्लाह

तआला ज़िक्र करेंगे| (बुखारी)

رواه البخاری (2900) 0 حدیث سعد یاتی (5232) و حدیث البراء یاتی (5876)

بَاب الْقِتَال فِي الْجِهَاد • जिहाद में किताल का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٣٩٤٧ - (لم تتمّ دراسته) عَن عبدِ الرَّحمنِ بن عَوفٍ قَالَ: عَبَّأَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ببدر لَيْلًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3947. अब्दुल रहमान बिन ऑफ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने बद्र के मक़ाम पर हमें रात के वक्त ही तैयार कर दिया था| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1677 وقال : ضعیف) * محمد بن اسحاق بن یسار مدلس و عنعن ، محمد بن حمید : ضعیف

٣٩٤٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن الْمُهلب أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنْ بَيَّتَكُمُ الْعَدُوُّ فَلْيَكُنْ شِعَارُكُمْ: حم لَا يُنْصرُونَ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

3948. मुहल्लब से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर दुश्मन तुम पर छापा (रात में हमला) मारे तुम्हारा शिआर (नारा) यह होना चाहिए حٰمٓ لَا يُنْصَرُوْنَ”| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (1682 وقال : حسن صحیح غریب) ابوداؤد (2597)

٣٩٤٩ - (ضَعِيف) وَعَن سَمُرَةَ بن جُندبٍ قَالَ: كَانَ شِعَارُ الْمُهَاجِرِينَ: عَبْدَ اللَّهِ وَشِعَارُ الْأَنْصَار: عبدُ الرَّحمنِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3949. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मुहाजरीन का शिआर (नारा) “ अब्दुल्लाह” और अंसार का शिआर “अब्दुल रहमान” था| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2595) * حجاج بن ارطاة ضعیف مدلس و قتادة مدلس و عنعن

٣٩٥٠ - (حسن) وَعَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ أَبِي بكر زمن النَّبِي صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فبيَّتْناهُم نَقْتُلُهُمْ وَكَانَ شِعَارُنَا تِلْكَ اللَّيْلَةَ: أَمِتْ أَمِتْ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3950. सलमा बिन अकवा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने नबी ﷺ के दौर में अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु की साथ में जिहाद किया, हमने इन पर छापा (रात में हमला) मारा, हम उन्हें क़त्ल करते, और इस रात हमारा शिआर (नारा) था: अमित, अमित, यानी मारो, मारो| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (2638)

٣٩٥١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن قيسِ بنِ عُبادٍ قَالَ: كَانَ أَصْحَابُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَكْرَهُونَ الصَّوْتَ عِنْدَ الْقِتَالِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3951. कैस बिन अब्बाद रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा किताल के वक़्त (अल्लाह के ज़िक्र के अलावा) शोरो शगब को नापसंद करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2656) * قتادة و الحسن مدلسان و عنعنا

٣٩٥٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سَمُرَة بن جُنْدُبٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اقْتُلُوا شُيُوخَ الْمُشْرِكِينَ وَاسْتَحْيُوا شَرْخَهُمْ» أَيْ صِبْيَانَهُمْ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

3952. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुशरिकीन के बूढ़ो को क़त्ल करो और उन के बच्चो को जिंदा रखो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1583 وقال : حسن صحيح غريب) و ابوداؤد (2670) * قتادة مدلس و عنعن

٣٩٥٣ - (ضَعِيف) وَعَن عُروَةَ قَالَ: حدَّثني أسامةُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ عَهِدَ إِلَيْهِ قَالَ: «أَغِرْ عَلَى أُبْنَى صباحا وَحرق» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3953. उरवा रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, उसामा रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे हदीस बयान की के रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे वसीयत करते हुए फ़रमाया: “उबना पर सुबह के वक़्त हमला कर और उन की खेतियों और दरख्त जला दे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2616) [و ابن ماجه (2843)] * صالح بن ابی الاخضر : ضعيف يعتبر به و فيه علة أخرى

٣٩٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي أَسَيْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ بَدْرٍ: «إِذَا [ص:١١٥ أَكْثَبُوكُمْ فَارْمُوهُمْ وَلَا تَسُلُّوا السُّيُوفَ حَتَّى يَغْشَوْكُمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

3954. अबू उसैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने गज़वा ए बद्र के मौके पर फ़रमाया: “जब वह तुम्हारे करीब आजाए तो फिर इन पर तीर चलाओ और जब तक वह तुम्हारे बहोत करीब न आजाए तलवारे न सोतो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2664) * فيه اسحاق بن نجيح غير الملطى : مجهول ، و مالک بن حمزة : مستور

٣٩٥٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن رَبَاح بن الرَّبِيعِ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي غزوةٍ فَرَأى الناسَ مجتمعينَ عَلَى شَيْءٍ فَبَعَثَ رَجُلًا فَقَالَ: «انْظُرُوا عَلَى من اجْتمع هَؤُلَاءِ؟» فَقَالَ: عَلَى امْرَأَةٍ قَتِيلٍ فَقَالَ: «مَا كَانَتْ هَذِهِ لِتُقَاتِلَ» وَعَلَى الْمُقَدِّمَةِ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ فَبَعَثَ رَجُلًا فَقَالَ: " قُلْ لِخَالِدٍ: لَا تَقْتُلِ امْرَأَة وَلَا عسيفا ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3955. रिबाह बिन रबीअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम एक गज़वा मैं रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे, आप ने लोगों को किसी चीज़ के गिर्द जमा देखा तो आप ﷺ ने एक आदमी भेजा और फ़रमाया देख वह लोग किस लिए जमा है?” वह आया तो उस ने अर्ज़ किया, एक मकतुल औरत के गिर्द जमा है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये तो जंगजू न थी”, हर अव्वल दस्ते पर खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु अन्हु थे, आप ﷺ ने एक आदमी भेजा और इसे फ़रमाया: “खालिद से कहो: ना किसी औरत को क़त्ल करो न किसी अजिर (मज़दूर) को”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2669)

٣٩٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «انْطَلِقُوا بِاسْمِ اللَّهِ وَبِاللَّهِ وَعَلى مِلّة رسولِ الله لَا تقْتُلوا شَيْخًا فَانِيًا وَلَا طِفْلًا صَغِيرًا وَلَا امْرَأَةً وَلَا تَغُلُّوا وَضُمُّوا غَنَائِمَكُمْ وَأَصْلِحُوا وَأَحْسِنُوا فَإِنَّ اللَّهَ يحبُّ المحسنينَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3956. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह के नाम के साथ, अल्लाह की तौफिक से और रसूलुल्लाह ﷺ की मिल्लत पर चलो, ना किसी बहोत बूढ़े शख़्स को क़त्ल करो न किसी छोटे बच्चे को और ना ही किसी औरत को, और न खयानत करो, अपना माले गनीमत इकट्ठा करो, (अपने उमूर की) इस्लाह करो और इहसान करो क्योंकि अल्लाह इहसान करने वालो को पसंद फरमाता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2614) * خالد بن الفرز : ضعيف ، ضعفه ابن معين وغيره ولم يوثقه غير ابن حبان

٣٩٥٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمُ بَدْرٍ تَقَدَّمَ عُتْبَةُ بْنُ رَبِيعَةَ وَتَبِعَهُ ابْنُهُ وَأَخُوهُ فَنَادَى: مَنْ يُبَارِزُ؟ فَانْتُدِبَ لَهُ شبابٌ مِنَ الْأَنْصَارِ فَقَالَ: مَنْ أَنْتُمْ؟ فَأَخْبَرُوهُ فَقَالَ: لَا حَاجَةَ لَنَا فِيكُمْ إِنَّمَا أَرَدْنَا بَنِي عَمِّنَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «قُمْ يَا حَمْزَةُ قُمْ يَا عَلِيُّ قُمْ يَا عُبَيْدَةُ بْنَ الْحَارِثِ» . فَأَقْبَلَ حَمْزَةُ إِلى عتبةَ وَأَقْبَلْتُ إِلَى شَيْبَةَ وَاخْتَلَفَ بَيْنَ عُبَيْدَةَ وَالْوَلِيدِ ضَرْبَتَانِ فَأَثْخَنَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا صَاحِبَهُ ثُمَّ مِلْنَا عَلَى الْوَلِيدِ فَقَتَلْنَاهُ وَاحْتَمَلْنَا عُبَيْدَةَ. رَوَاهُ أَحْمد

وَأَبُو دَاوُد

3957. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब बद्र का दिन थे तो उत्बा बिन रबिआ आगे बढ़ा, उस के पीछे उस का बेटा (वलीद बिन उत्बा) और उस का भाई (शैबा बिन रबीआ) भी आ गया, तो उत्बा ने कहा मुकाबले पर कौन आता है? उसकी इस ललकार का अंसार के नौजवानों ने जवाब दिया तो उसने पूछा, तुम कौन हो? उन्होंने इसे बताया तो उस ने कहा हमारा तुम से कोई सरुकार नहीं, हम तो तो अपने चाचाजादों से लड़ना चाहते है, तब रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हम्ज़ा! उठो, अली! उठो, उबैदाह बिन हारिस! उठो”, हम्ज़ा रदियल्लाहु अन्हु उत्बा की तरफ मुतवज्जे हुए और मैं शैबा की तरफ जबकि उबैदाह रदियल्लाहु अन्हु और वलीद के दरमियान दो दो वार हुए और इन दोनों में से हर एक ने अपने मुकाबिल को ज़ख़्मी किया, फिर हम वलीद माइल हुए और इसे क़त्ल कर दिया और हमने उबैदाह रदियल्लाहु अन्हु को उठा लिया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (1 / 117 ح 948) و ابوداؤد (2665) * ابو اسحاق مدلس و عنعن وله شواهد مرسلة

٣٩٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابنِ عُمر قَالَ: بَعَثَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فِي سَرِيَّةٍ فَحَاصَ النَّاسُ حَيْصَةً فَأَتَيْنَا الْمَدِينَةَ فَاخْتَفَيْنَا بِهَا وَقُلْنَا: هَلَكْنَا ثُمَّ أَتَيْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْنَا: يَا رَسُول الله نَحن الفارون. قَالَ: «بَلْ أَنْتُمُ الْعَكَّارُونَ وَأَنَا فِئَتُكُمْ» . [ص:١١٥ رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ. وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ نَحْوَهُ وَقَالَ: «لَا بَلْ أَنْتُمُ الْعَكَّارُونَ» قَالَ: فَدَنَوْنَا فَقَبَّلْنَا يَده فَقَالَ: «أَنا فِئَة من الْمُسْلِمِينَ»»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ أُمَيَّةَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ: كَانَ يَسْتَفْتِحُ وَحَدِيثُ أَبِي الدَّرْدَاءِ «ابْغُونِي فِي ضُعَفَائِكُمْ» فِي بَابِ «فَضْلِ الْفُقَرَاءِ» إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى

3958. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें एक लश्कर में रवाना किया लोग मैदाने जंग से भाग गए और हमने मदीना मुनव्वरा पहुँच कर पनाह ली, और हमने कहा, हम मारे गए, फिर हमने रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम तो फरार होने वाले हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं, बल्कि तुम दोबारा हमला करने वाले हो, और मैं तुम्हारी जमाअत हूँ (के फरार के ज़िमरे में नहीं, बल्कि तुम जमाअत के पास आए हो)”| तिरमिज़ी, और अबू दावुद की रिवायत में इसी तरह है, और फ़रमाया: “बल्के जाने वाले हो”, रावी बयान करते हैं, हम करीब हुए और हमने आप ﷺ के दस्ते मुबारक को बोसा दिया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं मुसलमानों की जमाअत हूँ”| # और हम उमय्य बिन अब्दुल्ला इसे मरवी हदीस ((كان يستفتح)) और अबू दरदा (र) से मरवी हदीस: “मुझे अपने जअफाअ में तलाश करो بَابِ فَضْلِ الْفُقَرَاءِ (फकीरों की फ़ज़ीलत और नबी ﷺ की गुजरान का बयान) मैं इंशाअल्लाह तआला ज़िक्र करेंगे. (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1716 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (2647) * فیه یزید بن ابی زیاد : ضعیف مدلس مختلط0 حدیث امیة بن عبدالله یاتی (5247) و حدیث ابی الدرداء یاتی (5246)

जिहाद में किताल का बयान
بَاب الْقِتَال فِي الْجِهَاد •

तीसरी फस्ल
الْفَصْل الثَّالِث •

٣٩٥٩ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ ثَوْبَانَ بْنِ يَزِيدَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَصَبَ الْمَنْجَنِيقَ عَلَى أَهْلِ الطائفِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ مُرْسلا

3959. सौबान बिन यज़ीद से रिवायत है के नबी ﷺ ने अहल ताईफ पर मंजनिक लगाई| इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह ने इसे मुरसल रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جذا ، رواه الترمذی (2762) * فیه عمر بن ھارون : متروک و للحدیث شواھد ضعیفة ، انظر بلوغ المرام بتحقیقی (1306)

कैदियों के हुक्म का बयान
بَاب حكم الاسراء •

पहली फस्ल
الْفَصْل الأول •

٣٩٦٠ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «عَجِبَ اللَّهُ مِنْ قَوْمٍ يُدْخَلُونَ الْجَنَّةَ فِي السَّلَاسِلِ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «يُقَادُونَ إِلى الجنَّةِ بالسلاسل» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3960. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह उन लोगों पर ताज्जुब करेगा, जो बेड़िया पहने हुए जन्नत में दाखिल किए जाएँगे", एक दूसरी रिवायत में है: "जिन्हें बेड़िया पहना कर जन्नत की तरफ चलाया जाएगा"| (बुखारी)

رواه البخاری (3010)

٣٩٦١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ قَالَ أَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَيْنٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَهُوَ فِي سَفَرٍ فَجَلَسَ عِنْدَ أَصْحَابِهِ يَتَحَدَّثُ ثُمَّ انْفَتَلَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اطْلُبُوهُ وَاقْتُلُوهُ» . فَقَتَلْتُهُ فنفَّلَني سلبه

3961. सलमा बिन अकवा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, दौरान ए सफ़र मुशरिकीन में से एक जासूस आप ﷺ के पास आया और वह आप के साथियो के पास बैठ कर बाते करता रहा, फिर गायब हो गया, तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: "इसे तलाश करो और इसे क़त्ल कर दो", चुनांचे मैंने इसे क़त्ल कर दिया तो आप ﷺ ने उस का सामान

मुझे अता फरमा दिया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (3051) و مسلم (45 / 1754)، (4572)

٣٩٦٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَوَازِنَ فَبَيْنَا نَحْنُ نَتَضَحَّى مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذْ جَاءَ رَجُلٌ عَلَى جَمَلٍ أَحْمَرَ فَأَنَاخَهُ وَجَعَلَ يَنْظُرُ وَفِينَا ضَعْفَةٌ وَرِقَّةٌ مِنَ الظَّهْرِ وَبَعْضُنَا مُشَاةٌ إِذْ خَرَجَ يَشْتَدُّ فَأَتَى جَمَلَهُ فَأَثَارَهُ فَاشْتَدَّ بِهِ الْجَمَلُ فَخَرَجْتُ أَشْتَدُّ حَتَّى أَخَذْتُ بِخِطَامِ الْجَمَلِ فَأَنَخْتُهُ ثُمَّ اخْتَرَطْتُ سَيْفِي فَضَرَبْتُ رَأْسَ الرَّجُلِ ثُمَّ جِئْتُ بِالْجَمَلِ أَقُودُهُ وَعَلَيْهِ رَحْلُهُ وَسِلَاحُهُ فَاسْتَقْبَلَنِي رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالنَّاسُ فَقَالَ: «مَنْ قَتَلَ الرَّجُلَ؟» قَالُوا: ابْنُ الْأَكْوَعِ فَقَالَ: «لَهُ سَلَبُهُ أَجْمَعُ»

3962. सलमा बिन अकवा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ हवाज़ीन कबिले से जिहाद किया, इस असना में के हम चाश्त के वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ के साथ खाना खा रहे थे एक आदमी सुर्ख ऊंट पर आया तो उस ने इसे बिठा दीया और वह जाइज़ा लेने लगा, इस वक़्त हम में ज़ईफ़ी व सुस्ती थी, सवारी कम थी जबकि हम में से बाज़ प्यादेह थे, वह आदमी अचानक हमारे बीच में से निकला तेज़ी से अपने ऊंट के पास आया इसे खड़ा किया और ऊंट इसे तेज़ी के साथ ले गया, मैं भी तेज़ी से रवाना हुआ हत्ता के मैंने ऊंट की लगाम पकड़ ली इसे बिठाया फिरमैंने अपनी तलवार सोंट ली, मैंने इस आदमी का सर कलम कर दिया और ऊंट ले आया उस का साज़ो सामान और उस का अस्लिहा भी उस पर ले आया, रसूलुल्लाह ﷺ और सहाबा ने मेरा इस्तेकबाल किया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इस आदमी को किस ने क़त्ल किया? सहाबा ने बताया इब्ने अक्वाअ ने, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस का सारा साज़ो सामान उस के लिए है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیہ ، رواہ البخاری (3051) و مسلم (45 / 1754)، (4572)

٣٩٦٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ بَنُو قُرَيْظَةَ عَلَى حُكْمِ [ص:١١٥ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِليه فَجَاءَ عَلَى حِمَارٍ فَلَمَّا دَنَا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «قُومُوا إِلَى سَيِّدِكُمْ» فَجَاءَ فَجَلَسَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ هَؤُلَاءِ نَزَلُوا عَلَى حُكْمِكَ» . قَالَ: فَإِنِّي أَحْكُمُ أَنْ تَقْتُلَ الْمُقَاتِلَةُ وَأَنْ تُسْبَى الذُّرِّيَّةُ. قَالَ: «لَقَدْ حَكَمْتَ فِيهِمْ بحُكْمِ المَلِكِ» . وَفِي رِوَايَة: «بِحكم الله»

3963. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब बनू कुरैज़ा, सईद बिन मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु के फैसले पर रज़ा मंद हो गए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु को पैग़ाम भेजा तो वह गधे पर सवार हो कर आए, जब वह करीब आए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अपने सरदार का इस्तेकबाल करो”, चुनांचे वह आए और बैठ गए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये लोग तुम्हारे फैसले पर रज़ा मंद हुए है”, उन्होंने अर्ज़ किया: में फैसला करता हूँ कि उन के जंगजू क़त्ल कर दिए जाए और बच्चे कैदी बना लिए जाए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने उन के दरमियान अल्लाह बादशाह का फैसला किया है”, एक दूसरी रिवायत में है: “अल्लाह

के हुक्म के मुताबिक (फैसला किया है) “| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3043 و الرواية الثانية : 3804) و مسلم (64 / 1769)، (4596)

٣٩٦٤ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْلًا قِبَلَ نَجْدٍ فَجَاءَتْ بِرَجُلٍ مِنْ بَنِي حَنِيفَةَ يُقَالُ لَهُ: ثُمَامَةُ بْنُ أُثَالٍ سَيِّدُ أَهْلِ الْيَمَامَةِ فَرَبَطُوهُ بِسَارِيَةٍ مِنْ سَوَارِي الْمَسْجِدِ فَخَرَجَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «مَاذَا عِنْدَكَ يَا ثُمَامَةُ؟» فَقَالَ: عنْدي يَا مُحَمَّد خير إِن نقْتل تَقْتُلْ ذَا دَمٍ وَإِنْ تُنْعِمْ تُنْعِمْ عَلَى شَاكِرٍ وَإِنْ كُنْتُ تُرِيدُ الْمَالَ فَسَلْ تُعْطَ مِنْهُ مَا شِئْتَ فَتَرَكَهُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى كَانَ الْغَدُ فَقَالَ لَهُ: «مَا عِنْدَكَ يَا ثُمَامَةُ؟» فَقَالَ: عِنْدِي مَا قُلْتُ لَكَ: إِنْ تُنْعِمْ تُنْعِمْ عَلَى شَاكِرٍ وَإِنْ تَقْتُلْ تَقْتُلْ ذَا دَمٍ وَإِنْ كنتَ تريدُ المالَ فسَلْ تعط مِنْهُ مَا شِئْتَ. فَتَرَكَهُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى كَانَ بَعْدَ الْغَدِ فَقَالَ لَهُ: «مَا عِنْدَكَ يَا ثُمَامَةُ؟» فَقَالَ: عِنْدِي مَا قُلْتُ لَكَ: إِنْ تُنْعِمْ تُنْعِمْ عَلَى شَاكِرٍ وَإِنْ تَقْتُلْ تَقْتُلْ ذَا دَمٍ وَإِنْ كُنْتَ تُرِيدُ الْمَالَ فَسَلْ تُعْطَ مِنْهُ مَا شِئْتَ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَطْلِقُوا ثُمَامَةَ» فَانْطَلَقَ إِلَى نَخْلٍ قَرِيبٍ مِنَ الْمَسْجِدِ فَاغْتَسَلَ ثُمَّ دَخَلَ الْمَسْجِدَ فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَن مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ يَا مُحَمَّدُ وَاللَّهِ مَا كَانَ عَلَى وَجْهِ الْأَرْضِ وَجْهٌ أَبْغَضُ إِلَيَّ مِنْ وَجْهِكَ فَقَدْ أَصْبَحَ وَجْهُكَ أَحَبَّ الْوُجُوهِ كُلِّهَا إِلَيَّ وَاللَّهِ مَا كَانَ مِنْ دِينٍ أَبْغَضَ إِلَيَّ مِنْ دِينِكَ فَأَصْبَحَ دِينُكَ أَحَبَّ الدِّينِ كُلِّهِ إِلَيَّ وَوَاللَّهِ مَا كَانَ مِنْ [ص:١١٦ بَلَدٌ أَبْغَضَ إِلَيَّ مِنْ بَلَدِكَ فَأَصْبَحَ بَلَدُكَ أَحَبَّ الْبِلَادِ كُلِّهَا إِلَيَّ. وَإِنَّ خَيْلَكَ أَخَذَتْنِي وَأَنَا أُرِيدَ الْعُمْرَةَ فَمَاذَا تَرَى؟ فَبَشَّرَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَمَرَهُ أَنْ يَعْتَمِرَ فَلَمَّا قَدِمَ مَكَّةَ قَالَ لَهُ قَائِلٌ: أَصَبَوْتَ؟ فَقَالَ: لَا وَلَكِنِّي أَسْلَمْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاللَّهِ لَا يَأْتِيكُمْ مِنَ الْيَمَامَةِ حَبَّةُ حِنْطَةٍ حَتَّى يَأْذَنَ فِيهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ مُسلم وَاخْتَصَرَهُ الْبُخَارِيّ

3964. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने नज्द की तरफ एक लश्कर रवाना किया वह बनू हनीफा के समामा बिन असाल नामी शख़्स को पकड़ लाए जो के अहल यमाम का सरदार था, उन्होंने इसे मस्जिद के एक सुतून के साथ बांध दिया, रसूलुल्लाह ﷺ उस के पास तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया: “समामा तुम्हारा क्या ख़याल है?” उस ने कहा मुहम्मद ﷺ! खैर है, अगर तुमने क़त्ल किया तो साहबे खून को क़त्ल करोगे, अगर इहसान करोगे तो कदरदान पर इहसान करोगे और अगर आप माल चाहते है तो जितना चाहे मुतालबा करे आप को दीया जाएगा, रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे (इस के हाल पर) छोड़ दिया, हत्ता के अगला रोज़ हुआ तो आप ﷺ ने इसे फ़रमाया: “समामा! तेरा क्या ख़याल है?” उस ने कहा मेरा वही ख़याल है जो मैंने तुम्हें कहा था, अगर इहसान करोगे तो एक कदरदान पर इहसान करोगे, अगर क़त्ल करोगे तो एक ऐसे शख़्स को क़त्ल करोगे जिस का खून राइगा नहीं जाएगा और अगर आप माल चाहते है, तो जितना चाहो मुतालबा करो आप को दीया जाएगा, रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे (इस के हाल पर) छोड़ दिया, हत्ता के अगला रोज़ हुआ तो आप ﷺ ने इसे फ़रमाया: “समामा तुम्हारा क्या ख़याल है?” उस ने कहा मेरा वही मोक़्किफ है जो मैंने आप को बताया था के अगर तुम इहसान करोगे तो एक कदरदान शख़्स पर इहसान करोगे अगर क़त्ल करोगे तो एक ऐसे शख़्स को क़त्ल करोगे जिसके खून का बदला लिया जाएगा और अगर तुम्हें माल चाहिए तो फिर जितना चाहो मुतालबा करो तुम्हें दीया जाएगा, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “समामा को खोल दो‘‘ वह मस्जिद के करीब खजूरो के

दरख्तों की तरफ गया, ग़ुस्ल किया, फिर मस्जिद में आया और कहा: मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उस के बंदे और उस के रसूल हैं", मुहम्मद ﷺ! रुए ज़मीन पर आप का चेहरा मुझे सबसे ज़्यादा नापसंदीदा था जबकि अब आप का चेहरा मुझे तमाम चेहरो से ज़्यादा पसंदीदा और महबूब है, अल्लाह की क़सम! आप के दीन से बढ़कर कोई दीन मुझे ज़्यादा नापसंदीदा नहीं था, अब आप का दीन मेरे नज़दीक तमाम अदियान से ज़्यादा पसंदीदा है, अल्लाह की क़सम! आप का शहर मुझे तमाम शहरो से ज़्यादा नापसंदीदा था, अब आप का शहर मेरे नज़दीक तमाम शहरो से ज़्यादा पसंदीदा है, आप के लश्कर ने मुझे गिरफ्तार कर लिया जबकि मैं उमरा करने का इरादा रखता था, आप मेरे बारे किया फरमाते हैं? रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे बशारत सुनाई और इसे उमरा करने का हुक्म फ़रमाया, जब वह मक्का पहुंचे तो किसी ने उन्हें कहा क्या तुम बे दीन हो गए हो? उन्होंने कहा: नहीं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ इस्लाम कबूल कर लिया है, अल्लाह की क़सम! जब तक रसूलुल्लाह ﷺ इजाज़त न फरमादे यमाम से तुम्हारे पास गंदुम का एक दाना भी नहीं आएगा| मुस्लिम, इमाम बुखारी ने इसे मुख़्तसर बयान किया है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (4372) و مسلم (59 / 1764)، (4589)

٣٩٦٥ - (صَحِيح) وَعَن جُبَير بن مطعم أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فِي أَسَارَى بَدْرٍ: «لَوْ كَانَ الْمُطْعِمُ بْنُ عَدِيٍّ حَيًّا ثُمَّ كَلَّمَنِي فِي هَؤُلَاءِ النَّتْنَى لتركتهم لَهُ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3965. जुबेर बिन मुतअम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने बद्र के कैदियों के बारे में फ़रमाया: "अगर मूतइम बिन अदि जिंदा होता फिर वह उन नापाको के मुतल्लिक सिफारिश करता तो मैं इस की खातिर उन्हें छोड़ देता"| (बुखारी)

رواه البخاری (3139)

٣٩٦٦ - (صَحِيح) وَعَن أنسٍ: أَنَّ ثَمَانِينَ رَجُلًا مِنْ أَهْلِ مَكَّةَ هَبَطُوا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ جَبَلِ التَّنْعِيمِ مُتَسَلِّحِينَ يُرِيدُونَ غِرَّةَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابِهِ فَأَخَذَهُمْ سِلْمًا فَاسْتَحْيَاهُمْ. وَفِي رِوَايَةٍ: فَأَعْتَقَهُمْ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى (وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ ببطنِ مكةَ)»» رَوَاهُ مُسلم

3966. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के अहले मक्का के अस्सी आदमी हथियार बंद नबी ﷺ और आप के सहाबा पर अचानक हमला करने की गर्ज़ से जबले तनइम से रसूलुल्लाह ﷺ पर उतर आए, आप ने उन्हें मग्लुब कर के गिरफ्तार कर लिया, लेकिन आप ने उन्हें जिंदा छोड़ दिया, एक दूसरी रिवायत में है आप ﷺ ने उन्हें आज़ाद कर दिया तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फरमाई: "वही ज़ात है जिस ने वादी ए मक्का में उन के हाथ तुम से रोके रखे और तुम्हारे हाथ उन से रोके रखे"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (132 / 1808)، (4679)

٣٩٦٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ قَتَادَةَ قَالَ: ذَكَرَ لَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ عَنْ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَ يَوْمَ بَدْرٍ بِأَرْبَعَةٍ وَعِشْرِينَ رَجُلًا مِنْ صَنَادِيدِ قُرَيْشٍ فَقَذَفُوا فِي طَوِيٍّ مِنْ أَطْوَاءِ بَدْرٍ خَبِيثٍ مُخْبِثٍ وَكَانَ ذَا ظهرَ عَلَى قَوْمٍ أَقَامَ بِالْعَرْصَةِ ثَلَاثَ لَيَالٍ فَلَمَّا كَانَ بِبَدْرٍ الْيَوْمَ الثَّالِثَ أَمَرَ بِرَاحِلَتِهِ فَشَدَّ عَلَيْهَا رَحْلَهَا ثُمَّ مَشَى وَاتَّبَعَهُ أَصْحَابُهُ حَتَّى قَامَ عَلَى شَفَةِ الرَّكِيِّ فَجَعَلَ يُنَادِيهِمْ بِأَسْمَائِهِمْ وأسماءِ آبائِهم: «يَا فُلَانَ بْنَ فُلَانٍ وَيَا فُلَانُ بْنَ فُلَانٍ أَيَسُرُّكُمْ أَنَّكُمْ أَطَعْتُمُ اللَّهَ وَرَسُولَهُ؟ فَإِنَّا قَدْ [ص:١١٦ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجدتمْ مَا وعدَكم رَبُّكُمْ حَقًّا؟» فَقَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا تُكَلِّمَ مِنْ أَجْسَادٍ لَا أَرْوَاحَ لَهَا؟ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ مَا أَنْتُمْ بِأَسْمَعَ لِمَا أَقُولُ مِنْهُمْ» . وَفِي رِوَايَةٍ: «مَا أَنْتُمْ بِأَسْمَعَ مِنْهُمْ وَلَكِنْ لَا يُجِيبُونَ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَزَادَ الْبُخَارِيُّ: قَالَ قَتَادَةُ: أَحْيَاهُمُ اللَّهُ حَتَّى أَسْمَعَهُمْ قولَه توْبيخاً وتصغيرا ونقمة وحسرة وندما

3967. क़तादाह रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु ने अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु की सनद से हमें बताया की नबी ﷺ ने गज़वा ए बद्र के रोज़ कुरैश के चोबीस सरदारों के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया तो उन्हें बद्र के एक बंद कुंवो में डाल दिया गया जो के खबीस और खबीस बना देने वाला था, और आप का मामूल था की जब आप किसी कौम पर ग़ालिब आते तो आप मैदाने किताल में तीन राते कयाम फरमाते, चुनांचे जब बद्र में तीसरा रोज़ हुआ तो आप ने रखते सफ़र बांधने का हुक्म फ़रमाया, सवारी तैयार कर दे गई, फिर आप चले और आप के सहाबा भी आप के पीछे चलने लगे, हत्ता के आप इस कुंवो के किनारे, जिस में सरदाराने कुरैश की लाशें फेंकी गई थी, खड़े हो गए और आप उन्हें उन के और उन के आबाअ के नाम लेकर पुकारने लगे: “फलां बिन फलां! फलां बिन फलां! और तुम्हें यह बात अच्छी लगती है के तुम अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करते, चुनांचे हमारे रब ने जिस चिज़ का हम से वादा किया था हमने तो उसे सच पा लिया, तुम्हारे रब ने जिस चिज़ का तुम से वादा किया था क्या तुम ने इसे सच्चा पाया ?” उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या आप मुर्दा जिस्मों से कलाम फरमा रहे हैं? नबी ﷺ ने फ़रमाया: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है! मैं जो कह रहा हूँ तुम उसे उन से ज़्यादा नहीं सुन रहे”| और एक दूसरी रिवायत में है: “तुम उन से ज़्यादा नहीं सुन रहे लेकिन वह जवाब नहीं देते”| बुखारी, मुस्लिम, और इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह ने यह इज़ाफा नकल किया है की क़तादाह रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: अल्लाह ने उन्हें जिंदा कर दिया हत्ता के बाईस तोबिख व तहकिर, इन्तेकाम व हसरत और नदामत उन्हें आप ﷺ की बात सुना दी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3976 و الرواية الثانية : 1270) و مسلم (78 / 2875)، (7224)

٣٩٦٨ - (صَحِيح) وَعَنْ مَرْوَانَ وَالْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَامَ حِينَ جَاءَهُ وَفد من هَوَازِنَ مُسْلِمِينَ فَسَأَلُوهُ أَنْ يَرُدَّ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَسَبْيَهُمْ فَقَالَ: " فَاخْتَارُوا إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ: إِمَّا السَّبْيَ وَإِمَّا الْمَالَ ". قَالُوا: فَإِنَّا نَخْتَارُ سَبْيَنَا. فَقَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَثْنَى عَلَى اللَّهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ: «أَمَّا بعدُ فإنَّ إِخْوانَكم قدْ جاؤوا تَائِبِينَ وَإِنِّي قَدْ رَأَيْتُ أَنْ أَرُدَّ إِلَيْهِمْ سَبْيَهُمْ فَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يُطَيِّبَ ذَلِكَ فَلْيَفْعَلْ وَمَنْ أَحَبَّ مِنْكُمْ أَنْ يَكُونَ عَلَى حظِّه حَتَّى نُعطيَه إِيَّاهُ منْ أَوَّلِ مَا يَفِيءُ اللَّهُ عَلَيْنَا فَلْيَفْعَلْ» فَقَالَ النَّاسُ: قَدْ طَيَّبْنَا ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّا لَا نَدْرِي مَنْ أَذِنَ مِنْكُمْ مِمَّنْ لَمْ يَأْذَنْ فَارْجِعُوا حَتَّى يَرْفَعَ إِلَيْنَا عُرَفَاؤُكُمْ أَمْرَكُمْ» . فَرَجَعَ النَّاسُ فَكَلَّمَهُمْ عُرَفَاؤُهُمْ ثُمَّ رَجَعُوا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرُوهُ أَنَّهُمْ قد طيَّبوا وأذنوا. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

3968. मरवान और मिस्वर बिन मखरम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब कबिले हवाज़ीन के लोग मुसलमान हो कर आप ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो आप वाज़ करने के लिए खड़े हुए, उन्होंने आप से मुतालबा किया के उन के अमवाल और उन के कैदी लौटा दिए जाए, आप ﷺ ने फ़रमाया: “दोनों में से एक चीज़ इख़्तियार कर लो ख्वाह कैदी, ख्वाह माल”, उन्होंने अर्ज़ किया, हम अपने कैदी लेना चाहते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ खड़े हुए फिर अल्लाह की शियाए शान उसकी सना बयान की फिर फ़रमाया: “अम्मा बाद तुम्हारे भाई मुसलमान हो कर आए हैं, मेरी राय तो यही है के उन के कैदी उन्हें लौटा दिए जाए, तुम में से जो कोई शख़्स ब ख़ुशी बे लोस ऐसे करना चाहता है तो वह करे और अगर तुम में से कोई अपना हिस्सा लेना पसंद करता है तो वह इंतज़ार करे हत्ता के अल्लाह हमें जो सबसे पहले माल ए फै अता फरमाए तो हम इसे वही चीज़ अता कर देंगे, लिहाज़ा अब वह ऐसा कर ले (के कैदी वापस कर दे)”, लोगों ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हमने यह काम ख़ुशी से कर दिया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हम नहीं जानते के तुम में से किस ने इजाज़त दी और किस ने इजाज़त नहीं दी, तुमलौट जाओ हत्ता के तुम्हारे वकील तुम्हारा मुआमला हमारे सामने पेश करे”, लोगलौट गए उन के वकील ने उन से बात चित की, फिर वह रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में दोबारा आए और उन्होंने आप को बताया के वह राज़ी हैं और उन्होंने इजाज़त दि है| (बुखारी)

رواه البخارى (2307)

٣٩٦٩ - (صَحِيح) وَعَن عمرَان بن حُصَيْن قَالَ: كَانَت ثَقِيفٌ حَلِيفًا لِبَنِي عُقَيْلٍ فَأَسَرَتْ ثَقِيفٌ رَجُلَيْنِ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَسَرَ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلًا مِنْ بَنِي عُقَيْلٍ فَأَوْثَقُوهُ فَطَرَحُوهُ فِي الْحَرَّةِ فَمَرَّ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَنَادَاهُ: يَا مُحَمَّدُ يَا مُحَمَّدُ فِيمَ أُخِذْتُ؟ قَالَ: «بِجَرِيرَةِ حُلَفَائِكُمْ ثَقِيفٍ» فَتَرَكَهُ وَمَضَى فَنَادَاهُ: يَا مُحَمَّدُ يَا مُحَمَّدُ فَرَحِمَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم فرجعَ فَقَالَ: «مَا شَأْنُكَ؟» قَالَ: إِنِّي مُسْلِمٌ. [ص:١١٦ فَقَالَ: «لَوْ قُلْتَهَا وَأَنْتَ تَمْلِكُ أَمْرَكَ أَفْلَحْتَ كُلَّ الْفَلَاحِ» . قَالَ: فَفَدَاهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بالرجلينِ اللَّذينِ أسرَتْهُما ثقيفٌ. رَوَاهُ مُسلم

3969. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सकिफ बनू उकैल के साथी थे, सकिफ (क़बीले) ने रसूलुल्लाह ﷺ के दो सहाबी क़ैद कर लिए, और रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा ने बनू उकैल का एक आदमी क़ैद कर लिया और इसे बांध कर पथरीली ज़मीन पर फेंक दिया, रसूलुल्लाह ﷺ उस के पास से गुज़रे तो उस ने आप को आवाज़ दी: मुहम्मद! मुहम्मद! मुझे किस लिए पकड़ा गया है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारे साथी सकिफ के जुर्म के बदला में”, आप ने इसे उस के हाल पर छोड़ा और आगे चल दिए, उस ने फिर आवाज़ दी, मुहम्मद! मुहम्मद! रसूलुल्लाह ﷺ को उस पर तरस आ गया और वापस तशरीफ़ ला कर फ़रमाया: “तुम्हारा क्या हाल है?” उस ने कहा में मुसलमान हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम इस वक़्त कहते जब की तुम अपने मुआमले के खुद मुख़्तार थे तो तुम मुकम्मल फलाह पा जाते”, रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे इन दो आदमियों, जिन्हें सकिफ ने क़ैद कर रखा था, के बदले में छोड़ दिया (यानी तबादला कर लिया) | (मुस्लिम)

رواه مسلم (8 / 1641)، (4245)

कैदियों के हुक्म का बयान • بَاب حكم الاسراء
दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٣٩٧٠ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمَّا بَعَثَ أَهْلُ مَكَّةَ فِي فِدَاءِ أَسَرَائِهِمْ بَعَثَتْ زَيْنَبُ فِي فِدَاءِ أَبِي الْعَاصِ بِمَالٍ وَبَعَثَتْ فِيهِ بِقِلَادَةٍ لَهَا كَانَتْ عِنْدَ خَدِيجَةَ أَدْخَلَتْهَا بِهَا عَلَى أَبِي الْعَاصِ فَلَمَّا رَآهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَقَّ لَهَا رِقَّةً شَدِيدَةً وَقَالَ: «إِنْ رَأَيْتُمْ أَنْ تُطْلِقُوا لَهَا أَسِيرَهَا وَتَرُدُّوا عَلَيْهَا الَّذِي لَهَا» فَقَالُوا: نَعَمْ وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخَذَ عَلَيْهِ أَنْ يُخَلِّيَ سَبِيلَ زَيْنَبَ إِلَيْهِ وَبَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَيْدَ بْنَ حَارِثَةَ وَرَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ فَقَالَ: «كونا ببطنِ يأحج حَتَّى تَمُرَّ بِكُمَا زَيْنَبُ فَتَصْحَبَاهَا حَتَّى تَأْتِيَا بها» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

3970. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब मक्का वालो ने अपने कैदियों की रिहाई के लिए फिदिया भेजा तो जैनब रदियल्लाहु अन्हु ने अबू अल आस (अपने खाविंद) के फिदिया में माल भेजा और उस में अपना हार भी भेजा जो ख़दीजा रदियल्लाहु अन्हु का था जो उन्होंने उन्हें अबू अल आस के साथ शादी के मौके पर अता किया था, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने इस (हार) को देखा तो उन (ज़ैनब (र)) की खातिर आप पर शदीद रिक्क़त तारी हो गई और आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम मुनासिब समझो तो इस की खातिर कैदी को रिहा करो और उस का हार भी वापस कर दो”, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया, (अल्लाह के रसूल!) ठीक है और नबी ﷺ ने अबू अल आस से यह अहद लिया के वह जैनब को मेरे पास (मदीना) आने की इजाज़त दे दे, और रसूलुल्लाह ﷺ ने ज़ैद बिन हारिस रदियल्लाहु अन्हु और अंसार के एक आदमी को (मक्के) भेजा तो फ़रमाया: “तुम दोनो याजिज के मक़ाम पर होना हत्ता के जैनब तुम्हारे पास से गुज़रे तो तुम उस के साथ हो लेना हत्ता कि तुम उन्हें यहाँ मदीना ले आना”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (6 / 276 ح 26894) و ابوداؤد (2692)

٣٩٧١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهَا: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا أَسَرَ أَهْلَ بَدْرٍ قَتَلَ عُقْبَةَ بْنَ أَبِي مُعَيْطٍ وَالنَّضْرَ بْنَ الْحَارِثِ وَمَنَّ عَلَى أَبِي عَزَّةَ الْجُمَحِيِّ. رَوَاهُ فِي شَرْحِ السّنة وَالشَّافِعِيّ وَابْن إِسْحَاق فِي «السِّيرَة»

3971. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह ﷺ ने अहले बद्र को क़ैद किया तो आप ने उक्बा बिन अबी मुअयत और नज़र बिन हारिस को क़त्ल किया और अबू अज़्ह जमही पर (बिला मुआवज़ा आज़ाद करने का) इहसान किया| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البغوی فی شرح السنة (11 / 78 بعد ح 2711) بدون السند عن الشافعی و للحديث شواهد ضعيفة فی السير و التاريخ

٣٩٧٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا أَرَادَ قَتْلَ عُقْبَةَ بْنَ أَبِي مُعَيْطٍ قَالَ: مَنْ

لِلصِّبْيَةِ؟ قَالَ: «النَّار» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3972. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह ﷺ ने उक्बा बिन अबी मुअयत को क़त्ल करने का इरादा किया तो उस ने कहा बच्चो के लिए कौन (कफील) है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "(तुम अपने जान की फकर करो तुम्हारे लिए) आग है"| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2686) * ابراهيم النخعى مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة

٣٩٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَنَّ جِبْرِيلَ هَبَطَ عَلَيْهِ فَقَالَ لَهُ: خَيِّرْهُمْ يَعْنِي أَصْحَابَكَ فِي أُسارى بدر: القتلَ والفداءَ عَلَى أَنْ يُقْتَلَ مِنْهُمْ قَابِلًا مِثْلُهُمْ " قَالُوا الْفِدَاءَ وَيُقْتَلَ مِنَّا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

3973. अली रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं की " जिब्राइल अलैहिस्सलाम का नुज़ूल हुआ तो उन्होंने आप ﷺ से अर्ज़ किया, अपने सहाबा को बद्र के कैदियों के बारे में इख़्तियार दें के वह उन्हें क़त्ल कर दे या फिदिया ले लें के आइन्दा साल इतने ही (सत्तर) उनमें से क़त्ल कर दिए जाएँगे", उन्होंने अर्ज़ किया, फिदिया कबूल करते हैं और हमें मंज़ूर है के हम में से क़त्ल किए जाए| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1567) * هشام بن حسان مدلس و عنعن

٣٩٧٤ - (لم تتمّ دراسته) عَن عَطِيَّة القَرظِي قَالَ: كنتُ فِي سَبيِ قُرَيْظَةَ عُرِضْنَا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَانُوا يَنْظُرُونَ فَمَنْ أَنْبَتَ الشَّعَرَ قُتِلَ وَمَنْ لَمْ يُنْبِتْ لَمْ يُقْتَلْ فَكَشَفُوا عَانَتِي فَوَجَدُوهَا لَمْ تُنْبِتْ فَجَعَلُونِي فِي السَّبْيِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه. والدارمي

3974. अतिया कुरज़िय्यी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं कुरैज़ा के कैदियों मैं था, हमें नबी ﷺ के रूबरू पेश किया गया, वह देखते के जिसके ज़ेरे नाफ़ बाल उगे होते इसे क़त्ल कर दिया जाता और जिसके बाल न होते इसे क़त्ल न किया जाता, उन्होंने मेरी शर्मगाह से परदा उठाया और देखा के वहां बाल नहीं उगे तो उन्होंने मुझे कैदियों में शामिल कर दिया| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (4404) و ابن ماجه (2541) و الدارمى (2 / 223 ح 2467)

٣٩٧٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ عِبْدَانٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعْنِي الْحُدَيْبِيَةَ قَبْلَ الصُّلْحِ فَكَتَبَ إِلَيْهِ مَوَالِيهِمْ قَالُوا: يَا مُحَمَّدُ وَاللَّهِ مَا خَرَجُوا إِلَيْكَ رَغْبَةً فِي دِينِكَ وَإِنَّمَا خَرَجُوا هَرَبًا مِنَ الرِّقِّ. فَقَالَ نَاسٌ: صَدَقُوا يَا رَسُولَ اللَّهِ رُدَّهُمْ إِلَيْهِمْ فَغَضِبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ: «مَا أَرَاكُم تنتهونَ يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ حَتَّى

يَبْعَثَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ مَنْ يَضْرِبُ رِقَابَكُمْ عَلَى هَذَا» . وَأَبَى أَنْ يَرُدَّهُمْ وَقَالَ: «هُمْ عُتَقَاءَ اللَّهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3975. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सुलह हुदैबिया के रोज़ सुलह से पहले कुछ गुलाम रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आए तो उन के मालिको ने आप ﷺ के नाम ख़त लिखा: मुहम्मद ﷺ ! अल्लाह की क़सम! यह लोग आप के दिन में रगबत रखने के पेशे नज़र आप के पास नहीं आए, बल्कि यह तो गुलामी से भाग कर आए है, लोगों ने कहा अल्लाह के रसूल! उन्होंने सच कहा है, आप उन्हें लौटा दीजिए, रसूलुल्लाह ﷺ नाराज़ हो गए और फ़रमाया: "जमाअते कुरैश में समझता हूँ कि तुम बाज़ नहीं आओगे हत्ता के अल्लाह तुम पर ऐसे शख़्स को भेजे जो इस (तास्सुब) पर तुम्हारी गरदने उड़ा दे", और आप ﷺ ने इनको लौटाने से इनकार कर दिया और फ़रमाया: "वो अल्लाह के लिए आज़ाद करदा है"| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2700) * محمد بن اسحاق عنعن و رواه الترمذی (3715) من حدیث شریک القاضی به وھو مدلس و عنعن

بَاب حكم الاسراء • कैदियों के हुक्म का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٩٧٦ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ إِلَى بَنِي جَذِيمَةَ فَدَعَاهُمْ إِلَى الْإِسْلَامِ فَلَمْ يُحْسِنُوا أَنْ يَقُولُوا: أَسْلَمْنَا فَجَعَلُوا يَقُولُونَ: صَبَأْنَا صَبَأْنَا فجعلَ خالدٌ يقتلُ ويأسِرُ وَدَفَعَ إِلَى كُلِّ رَجُلٍ مِنَّا أَسِيرَهُ حَتَّى إِذَا كَانَ يَوْمٌ أَمَرَ خَالِدٌ أَنْ يَقْتُلَ كُلُّ رَجُلٍ مِنَّا أَسِيرَهُ فَقُلْتُ: وَاللَّهِ لَا أَقْتُلُ أَسِيرِي وَلَا يَقْتُلُ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِي أسيره حَتَّى قدمنَا إِلَى النَّبِي صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فذكرناهُ فَرَفَعَ يَدَيْهِ فَقَالَ: «اللَّهُمَّ أَنِّي أَبْرَأُ إِلَيْكَ مِمَّا صنعَ خالدٌ» مرَّتينِ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3976. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ ने खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु अन्हु को बनू जज़िम की तरफ भेजा उन्होंने उन्हें इस्लाम कबूल करने की दावत दी, उन्होंने वाज़ेह तौर पर (लफ्ज़ اَسْلَمْن) "हमने इस्लाम कबूल कर लिया" न कहा बल्कि उन्होंने (लफ्ज़ صَبأْنا) "हम बे दीन हुए" कहा, उस पर खालिद रदियल्लाहु अन्हु उन्हें क़त्ल करने लगे और कैदी बनाने लगे और उन्होंने हम में से हर शख़्स को उस का कैदी दिया हत्ता के एक रोज़ ऐसे हुआ की उन्होंने हुक्म दिया के हम में से हर शख़्स अपने कैदी को क़त्ल करे, मैंने कहा: अल्लाह की क़सम! मैं अपना कैदी क़त्ल करूँगा न मेरा कोई साथी अपने कैदी को क़त्ल करेगा, हत्ता के हम नबी ﷺ की खिदमत में पहुंचे तो आप से इस का ज़िक्र किया, आप ﷺ ने अपने हाथ उठाए और दो मर्तबा फ़रमाया: "ए अल्लाह! खालिद ने जो क्या मैं उस से तेरे हुज़ूर बराअत का एलान करता हूँ"| (बुखारी)

رواہ البخاری (7189)

अमान देने का बयान • بَاب الْأمان

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٣٩٧٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أم هَانِئ بنت أبي طالبٍ قالتْ: ذهبتُ إِلى رسولِ الله عَامَ الْفَتْحِ فَوَجَدْتُهُ يَغْتَسِلُ وَفَاطِمَةُ ابْنَتُهُ تَسْتُرُهُ بِثَوْبٍ فَسَلَّمْتُ فَقَالَ: «مَنْ هَذِهِ؟» فَقُلْتُ: أَنَا أُمُّ هَانِئٍ بِنْتُ أَبِي طَالِبٍ فَقَالَ: «مَرْحَبًا بِأُمِّ هَانِئٍ» فَلَمَّا فَرَغَ مِنْ غُسْلِهِ قَامَ فَصَلَّى ثَمَانِيَ رَكَعَاتٍ مُلْتَحِفًا فِي ثَوْبٍ ثُمَّ انْصَرَفَ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ زَعَمَ ابْنُ أُمِّي عَلِيٌّ أَنَّهُ قَاتِلٌ رَجُلًا أَجَرْتُهُ فُلَانَ بْنَ هُبَيْرَةَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «قَدْ أَجَرْنَا مَنْ أَجَرْتِ يَا أم هَانِئ» قَالَت أُمَّ هَانِئٍ وَذَلِكَ ضُحًى. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ.
وَفِي رِوَايَةٍ لِلتِّرْمِذِيِّ: قَالَتْ: أَجَرْتُ رَجُلَيْنِ مِنْ أَحْمَائِي فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «قد أمنا من أمنت»

3977. उम्म हानी बिन्ते अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैं फतह मक्का के साल रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुई तो मैंने आप को ग़ुस्ल करते हुए पाया जबकि आप की बेटी फ़ातिमा एक कपड़े से आप को परदा किए हुए थी, मैंने सलाम अर्ज़ किया, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये कौन है?” मैंने (खुद) अर्ज़ किया, मैं उम्म हानी बिन्ते अबी तालिब हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उम्म हानी के लिए खुशामदीद”, जब आप ﷺ ग़ुस्ल से फारिग़ हुए तो खड़े हुए, और एक कपड़े में लपट कर आठ रकते पढ़ी, फिर आप फारिग़ हुए तो मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मेरी माँ के बेटे अली इरादा रखते है, के वह एक शख़्स फलां बिन हुबैरा को क़त्ल कर दे जबकि मैंने उस को पनाह दी है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उम्म हानी! तुमने जिसे पनाह दी, हमने भी इसे पनाह दी”, उम्म हानी बयान करती हैं, यह चाश्त का वक़्त था| बुखारी, मुस्लिम, और तिरमिज़ी की रिवायत में है वह बयान करती हैं, मैंने खाविंद के रिश्तेदारों में से दो आदमियों को अमान दि तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुमने जिसे अमान दी हमने भी इसे अमान दी”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3171) و مسلم (82 / 336)، (764) و الترمذى (1579)

अमान देने का बयान • بَاب الْأمان

दूसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّانِي

٣٩٧٨ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الْمَرْأَةَ لَتَأْخُذُ لِلْقَوْمِ» يَعْنِي تُجِيرُ على الْمُسلمين. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

3978. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक औरत, कौम ए कुफ्फार को मुसलमानों की तरफ से पनाह दे सकती है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1579 وقال : حسن غریب)

٣٩٧٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ الْحَمِقِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «من أَمَّنَ رَجُلًا عَلَى نَفْسِهِ فَقَتَلَهُ أُعْطِيَ لِوَاءَ الْغَدْرِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ

3979. अमर बिन हमिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस शख़्स ने किसी शख़्स को जान की अमान दी और फिर इसे क़त्ल कर दिया तो रोज़ ए कियामत इसे दगाबाज़ी का झंडा दीया जाएगा”| (सहीह)

صحیح ، رواہ البغوی فی شرح السنة (11 / 91 ح 2717) [و ابن ماجه (2688) و احمد (5 / 223224)]

٣٩٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سُلَيْمِ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: كَانَ بَيْنَ مُعَاوِيَةَ وَبَيْنَ الرُّومِ عَهْدٌ وَكَانَ يَسِيرُ نَحْوَ بِلَادِهِمْ حَتَّى إِذَا انْقَضَى الْعَهْدُ أَغَارَ عَلَيْهِمْ فَجَاءَ رَجُلٌ عَلَى فَرَسٍ أَوْ بِرْذَوْنٍ وَهُوَ يَقُولُ: اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ وَفَاءٌ لَا غدر فَنظر فَإِذا هُوَ عَمْرو ابْن عَبَسَةَ فَسَأَلَهُ مُعَاوِيَةُ عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُول: «مَنْ كَانَ بَيْنَهُ وَبَيْنَ قَوْمٍ عَهْدٌ فَلَا يَحُلَّنَّ عَهْدًا وَلَا يَشُدَّنَّهُ حَتَّى يُمْضِيَ أَمَدَهُ أَوْ يَنْبِذَ إِلَيْهِمْ عَلَى سَوَاءٍ» . قَالَ: فَرَجَعَ مُعَاوِيَة بِالنَّاسِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

3980. सुलैम बिन आमिर रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मुआविया रदियल्लाहु अन्हु और रुमियो के दरमियान अहद था, मुआविया रदियल्लाहु अन्हु उन के शहरो की तरफ सफ़र जारी रखते हत्ता कि जब मुद्दत ए मुआयदा पूरी हो जाती तो आप इन पर हमला कर देते, एक आदमी घोड़ या तुर्की घोड़े पर यह कहता हुआ आया: (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर (اللَّهُ أَكْبَرُ) अल्लाहु अकबर, वफ़ा करो दगाबाज़ी न करो, लश्कर ए मुआविया रदियल्लाहु अन्हु ने देखा तो वह अम्र बिन अबसत रदियल्लाहु अन्हु थे मुआविया रदियल्लाहु अन्हु ने इस बारे में उन से सवाल किया तो उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जिस शख़्स का किसी कौम से कोई अहद हो तो वह अहद को तोड़े न इसे मूनअक्क़द करे (कोई तबदीली या तजदीद न करे) हत्ता के उसकी मुद्दत गुज़र जाए या वह बराबर की सतह पर उनकी तरफ मुआयदा तोड़ने का पैग़ाम भेज दे”, चुनांचे मुआविया रदियल्लाहु अन्हु लोगों को लेकर वापस आ गए| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (1580 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (2759)

٣٩٨١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي رافعٍ قَالَ: بعثَني قُرَيْشٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُلْقِيَ فِي قَلْبِيَ الْإِسْلَامُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي وَاللَّهِ لَا أَرْجِعُ إِلَيْهِمْ أَبَدًا قَالَ: «إِنِّي لَا أَخِيسُ بِالْعَهْدِ وَلَا

أَحْبِسُ الْبُرُدَ وَلَكِنِ ارْجِعْ فَإِنْ كَانَ فِي نَفْسِكَ الَّذِي فِي نَفْسِكَ الْآنَ فَارْجِعْ» . قَالَ: فَذَهَبْتُ ثُمَّ أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم فَأَسْلمت. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

3981. अबी राफीअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कुरैश ने मुझे रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ भेजा, जब मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा तो मेरा दिल में इस्लाम की मुहब्बत व सदाकत डाल दी गई, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! अल्लाह की क़सम! मैं कभी भी उनकी तरफलौट कर नहीं जाऊँगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं दगाबाज़ी नहीं करूँगा, न कासिद को रोकूंगा, तुम वापस चले जाओ अगर तुम्हार दिल में वह चीज़ हुई जो अब तुम्हारे दिल में है तो फिरलौट आना”, रावी बयान करते हैं, मैं गया और फिर नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और इस्लाम कबूल कर लिया| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (2758)

٣٩٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ نُعَيْمِ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِرَجُلَيْنِ جَاءَا مِنْ عِنْدِ مُسَيْلِمَةَ: «أَمَّا وَاللَّهِ لَوْلَا أَنَّ الرُّسُلَ لَا تُقْتَلُ لَضَرَبْتُ أَعْنَاقَكُمَا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد

3982. नुऐम बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने मुसेलिमा (कज्ज़ाब) की तरफ से आए हुए दो आदमियों से फ़रमाया: “अल्लाह की क़सम! अगर कासीदो को क़त्ल करना रवा होता तो मैं तुम्हारी गरदने उड़ा देता”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (3 / 487488 ح 16085) و ابوداؤد (2761)

٣٩٨٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فِي خطْبَة: «أَوْفوا بِحلف الْجَاهِلِيَّة فَإِنَّهُ لَا يزِيد يَعْنِي الْإِسْلَامَ إِلَّا شِدَّةً وَلَا تُحْدِثُوا حَلِفًا فِي الإِسلامِ» . رَوَاهُ الترمذيُّ من طريقِ ابنِ ذَكْوَانَ عَنْ عَمْرٍو وَقَالَ: حَسَنٌ»» [ص:١١٦ وَذَكَرَ حَدِيثَ عليٍّ: «المسلمونَ تَتَكَافَأ» فِي «كتاب الْقصاص»

3983. अम्र बिन शुऐब ने अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने ख़ुत्बे में फ़रमाया: “जाहिलियत के अहद पुरे, करो क्योंकि इस्लाम इसे मज़बूत करता है लेकिन इस्लाम में कोई और नया अहद न करो”| (इसे इमाम तिरमिज़ी ने हुसैन बिन ज़क्वान अन अम्र के तरीक से रिवायत किया है और कहा यह हदीस हसन है) और अली रदियल्लाहु अन्हु से मरवी हदीस: “मुसलमान बराबर है ....”, किताबुल किसास में ज़िक्र की गई है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1585) 0 حدیث علی تقدم (3475)

بَاب الْأمان • अमान देने का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٣٩٨٤ - (لم تتمّ دراسته) عَن ابْن مَسْعُودٍ قَالَ: جَاءَ ابْنُ النَّوَّاحَةِ وَابْنُ أَثَالٍ رَسُولَا مُسَيْلِمَةَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ لَهُمَا: «أَتَشْهَدَانِ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ؟» فَقَالَا: نَشْهَدُ أَنَّ مُسَيْلِمَةَ رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «آمَنْتُ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَلَوْ كُنْتُ قَاتِلًا رَسُولًا لَقَتَلْتُكُمَا» . قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فَمَضَتِ السُّنَّةُ أَنَّ الرَّسول لَا يُقتَلُ. رَوَاهُ أَحْمد

3984. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, इब्ने नवाहत और इब्ने असाल मुसेलिमा के कासिद बनकर नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो आप ﷺ ने उन से फ़रमाया: “क्या तुम गवाही देते हो की मैं अल्लाह का रसूल हूँ ?” उन्होंने कहा, हम गवाही देते हैं की मुसेलिमा अल्लाह का रसूल है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मैं अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान रखता हूँ अगर में किसी कासिद को क़त्ल करने वाला होता तो मैं तुम्हें क़त्ल कर देता”| अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: यह सुन्नत बन गई के कासिद को क़त्ल नहीं किया जाए| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه احمد (1 / 390391 ح 3708) * المسعودى اختلط : روى عنه يزيد بن هارون و ابو النضر هاشم بن القاسم و عبد الرحمن بن مهدى و تابعه سفيان الثورى و سنده ضعيف و لحديثه شواهد ضعيفة عند ابى داود (2762) وغيره

بَابُ قِسْمَةِ الْغَنَائِمِ وَالْغُلُولِ فِيهَا • माल ए गनीमत की तकसीम और इस में खयानत करने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٣٩٨٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «فَلَمْ تَحِلَّ الْغَنَائِمُ لِأَحَدٍ مِنْ قَبْلِنَا ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ رَأَى ضعفنا وعجزنا فطيبها لنا»

3985. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: “हम में से पहले किसी के लिए भी माल ए गनीमत हलाल नहीं था, यह इसलिए (हलाल किया गया) के अल्लाह ने हमारी कमज़ोरी और आजिज़ी देखी तो उसे हमारे लिए हलाल फरमा दिया”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3124) و مسلم (32 / 1747)، (4555)

٣٩٨٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي قتادة قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ حُنَيْنٍ فَلَمَّا الْتَقَيْنَا كَانَتْ لِلْمُسْلِمِينَ

جَوْلَةٌ فَرَأَيْتُ رَجُلًا مِنَ الْمُشْرِكِينَ قَدْ عَلَا رَجُلًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَضَرَبْتُهُ مِنْ وَرَائِهِ عَلَى حَبْلِ عَاتِقِهِ بِالسَّيْفِ فَقَطَعْتُ الدِّرْعَ وَأَقْبَلَ عَلَيَّ فَضَمَّنِي ضَمَّةً وَجَدْتُ مِنْهَا رِيحَ الْمَوْتِ ثُمَّ أَدْرَكَهُ الْمَوْتُ فَأَرْسَلَنِي فَلَحِقْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ فَقُلْتُ: مَا بَالُ النَّاسِ؟ قَالَ: أَمْرُ اللَّهِ ثُمَّ رَجَعُوا وَجَلَسَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «مَنْ قَتَلَ قَتِيلًا لَهُ عَلَيْهِ بَيِّنَةٌ فَلَهُ سَلَبُهُ» فَقُلْتُ: مَنْ يَشْهَدُ لِي؟ ثُمَّ جَلَسْتُ ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِثْلَهُ فَقُمْتُ فَقَالَ: «مَا لَكَ يَا أَبَا قَتَادَةَ؟» فَأَخْبَرْتُهُ فَقَالَ رَجُلٌ: صَدَقَ وَسَلَبُهُ عِنْدِي فَأَرْضِهِ مِنِّي فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: لَا هَا اللَّهِ إِذاً لَا يعمدُ أَسَدٍ مِنْ أُسْدِ اللَّهِ يُقَاتِلُ عَنِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ فَيُعْطِيكَ سَلَبَهُ. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «صَدَقَ فأعطه» فأعطانيه فاتبعت بِهِ مَخْرَفًا فِي بَنِي سَلِمَةَ فَإِنَّهُ لَأَوَّلُ مالٍ تأَثَّلْته فِي الْإِسلامِ

3986. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, गज़वा ए हुनैन के साल हम नबी ﷺ के साथ निकले, जब हम (मुशरिकिन से) मिले तो मुसलमानों को हज़ीमत का सामन हुआ, मैंने एक मुशरिक शख़्स को देखा जो एक मुसलमान शख़्स पर ग़ालिब आ चूका था, मैंने उस के पीछे से उसकी रग गर्दन पर तलवार मारी और उसकी ज़िराह काट दी, वह मेरी तरफ मुतवज्जे हुआ तो उस ने मुझे इस क़दर दबाया के मुझे उस के (दबाने) से अपनी मौत नज़र आने लगी, लेकिन मौत उस पर गई और उस ने मुझे छोड़ दीया, मैं उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु से मिला तो मैंने कहा: लोगों का क्या हाल है? उन्होंने कहा: अल्लाह का हुक्म (ही ऐसे था), फिर वह (मुसलमान) लौटे और नबी ﷺ बैठ गए तो फ़रमाया: “जिस ने किसी मकतुल को क़त्ल किया और उस पर उस के पास दलील हो तो इस (मकतुल) का साज़ो सामान इस (कातिल) के लिए है”, मैंने कहा मेरे हक़ में कौन गवाही देगा? फिर मैं बैठ गया, नबी ﷺ ने फिर वही बात फरमाई मैंने कहा मेरे हक़ में कौन गवाही देगा? फिर मैं बैठ गया. फिर नबी ﷺ ने वही बात फरमाई तो मैं खड़ा हुआ. आप ﷺ ने फ़रमाया: “अबू क़तादा तुम्हारा क्या मसला है?” मैंने आप को बताया तो एक शख़्स ने कहा: “उस ने सच कहा, और उस का साज़ो सामान मेरे पास है उसे मेरी तरफ से राज़ी कर दे, (और माल मेरे पास ही रहने दें) अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता के अल्लाह का शेर जो अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से किताल करता है, और आप ﷺ उस का साज़ो सामान तुझे देंगे, तब नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने सच कहा है पस इसे दो”, चुनांचे उस ने इसे मुझे दे दिया मैंने उस से बनू सलमा में एक बाग़ खरीदा, और यह पहला माल था जो मैंने हालत इस्लाम में जमा किया था| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (4321) و مسلم (41 / 1751)، (4566)

٣٩٨٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَسْهَمَ لِلرَّجُلِ وَلِفَرَسِهِ ثَلَاثَةَ أَسْهُمٍ: سَهْمًا لَهُ وَسَهْمَيْنِ لِفَرَسِهِ

3987. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने मुजाहिद आदमी और उस के घोड़े के लिए तीन हिस्से मुकर्रर फरमाए, एक हिस्सा इस शख़्स के लिए और दो हिस्से उस के घोड़े के लिए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2863) و مسلم (57 / 1762)، (4586)

٣٩٨٨ - (صَحِيح) وَعَنْ يَزِيدَ بْنِ هُرْمُزَ قَالَ: كَتَبَ نَجْدَةُ الْحَرُورِيُّ إِلَى ابْنِ عَبَّاسٍ يَسْأَلُهُ عَنِ الْعَبْدِ وَالْمَرْأَة يحْضرَانِ لمغنم هلْ يُقسَمُ لَهما؟ فَقَالَ ليزيدَ: اكْتُبْ إِلَيْهِ أَنَّهُ لَيْسَ لَهُمَا سَهْمٌ إِلَّا أَنْ يُحْذَيَا. وَفِي رِوَايَةٍ: كَتَبَ إِلَيْهِ ابْنُ عَبَّاسٍ: إِنَّكَ كَتَبْتَ إِلَيَّ تَسْأَلُنِي: هَلْ كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَغْزُو بِالنِّسَاءِ؟ وَهَلْ كَانَ يَضْرِبُ لَهُنَّ بِسَهْمٍ؟ فَقَدْ كَانَ يَغْزُو بِهِنَّ يُدَاوِينَ الْمَرْضَى وَيُحْذَيْنَ مِنَ الْغَنِيمَةِ وَأَمَّا السَّهْمُ فَلَمْ يَضْرِبْ لَهُنَّ بِسَهْمٍ. رَوَاهُ مُسلم

3988. यज़ीद बिन हुर्मज़ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नज्दः हरूरी ने इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा की तरफ ख़त लिखा जिस में उस ने मसअला दरियाफ्त किया के अगर माले गनीमत की तकसीम के वक़्त गुलाम और औरत मौजूद हो तो किया उनका हिस्सा निकाला जाएगा? उन्होंने यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: इसे जवाब लिखो इन दोनों के लिए कोई हिस्सा मुकर्रर नहीं अलबत्ता थोड़ा दे दिया जाए| और एक दूसरी रिवायत में है: इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने इसे जवाब लिखा तुमने अपने ख़त में लिखा है के क्या रसूलुल्लाह ﷺ के साथ औरते जिहाद किया करती थी? और किया उनका हिस्सा मुकर्रर किया जाता था? हाँ आप ﷺ के साथ औरते जिहाद में शरीक होती थी, वह मरीज़ों का इलाज मुआल्ज़ा करती थी, उन्हें माले गनीमत में से दिया जाता था, रहा हिस्सा, तो आप ﷺ ने इन के लिए कोई हिस्सा मुकर्रर नहीं फरमाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (1390 / 1812 و الرواية الزانية 137 / 1812)، (4684 و 4686)

٣٩٨٩ - (صَحِيح) وَعَنْ سَلَمَةَ بْنِ الْأَكْوَعِ قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بِظَهْرِهِ مَعَ رَبَاحٍ غُلَامِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا مَعَهُ فَلَمَّا أَصْبَحْنَا إِذَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ الْفَزَارِيُّ قَدْ أَغَارَ عَلَى ظَهْرِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُمْتُ عَلَى أَكَمَةٍ فَاسْتَقْبَلْتُ الْمَدِينَةَ فَنَادَيْتُ ثَلَاثًا يَا صَبَاحَاهْ ثُمَّ خَرَجْتُ فِي آثَارِ الْقَوْمِ أَرْمِيهِمْ بِالنَّبْلِ وَأَرْتَجِزُ وَأَقُولُ:»» أَنَا ابْنُ الْأَكْوَعْ وَالْيَوْمُ يَوْمُ الرُّضَّعْ»» فَمَا زِلْتُ أَرْمِيهِمْ وَأَعْقِرُ بِهِمْ حَتَّى مَا خلقَ اللَّهُ مِنْ بَعِيرٍ مِنْ ظَهْرِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَّا خَلَّفْتُهُ وَرَاءَ ظَهْرِي ثُمَّ اتَّبَعْتُهُمْ أَرْمِيهِمْ حَتَّى أَلْقَوْا أَكْثَرَ مِنْ ثَلَاثِينَ بُرْدَةً وَثَلَاثِينَ رُمْحًا يَسْتَخِفُّونَ وَلَا يَطْرَحُونَ شَيْئًا إِلَّا جَعَلْتُ عَلَيْهِ آرَامًا مِنَ الْحِجَارَةِ يَعْرِفُهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابُهُ حَتَّى رَأَيْتُ فَوَارِسَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَحِقَ [ص:١١٦ أَبُو قَتَادَةَ فَارِسُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِعَبْدِ الرَّحْمَنِ فَقَتَلَهُ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خَيْرُ فُرْسَانِنَا الْيَوْمَ أَبُو قَتَادَةَ وَخَيْرُ رَجَّالَتِنَا سَلَمَةُ» . قَالَ: ثُمَّ أَعْطَانِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَهْمَيْنِ: سَهْمَ الْفَارِسِ وَسَهْمَ الرَّاجِلِ فَجَمَعَهُمَا إِلَيَّ جَمِيعًا ثُمَّ أَرْدَفَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَرَاءَهُ عَلَى الْعَضْبَاءِ رَاجِعَيْنِ إِلَى الْمَدِينَةِ. رَوَاهُ مُسلم

3989. सलमा बिन अकवा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने रबाह, जो के रसूलुल्लाह ﷺ के गुलाम थे, के साथ अपने ऊंट भेजे, और मैं भी उस के साथ था, जब हमने सुबह की तो अब्दुल रहमान फराज़ी ने अचानक रसूलुल्लाह ﷺ के ऊटों पर धावा बोल दीया, मैं एक ऊँची जगह पर खड़ा हुआ और मदीना की तरफ रुख कर के तीन बार आवाज़ दी, लड़ाई का वक़्त आ गया, फिर मैंने उन लोगों का पीछा किया, मैं इन पर तीर बरसा रहा था और राजिज़ शेर पढ़ रहा था में इब्ने अक्वाअ हो और आज रज़िल लोगों की हलाकत का दिन है, चुनांचे में इन पर तीर बरसाता रहा और उनकी सवारियों को ज़ख्मी करता रहा, हत्ता के रसूलुल्लाह ﷺ के तमाम ऊंट मैंने उन के कब्ज़े से आज़ाद करवा लिए, और मैं फिर भी उनका पीछा कर के इन पर तीर अन्दाज़ी करता रहा हत्ता के उन्होंने वज़न हल्का करने के लिए तीस चादरे और तीस नेज़े फेंक दिए, वह जो भी चीज़ फेंकते

में उस पर पत्थर की निशानिया लगाता जाता ताकि रसूलुल्लाह ﷺ और आप के सहाबा इसे पहचान सके, हत्ता कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के शै सवारों को देखा और रसूलुल्लाह ﷺ के शै सवार अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु ने अब्दुल रहमान फज़ारी को जा लिया और इसे क़त्ल कर दिया, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आज हमारा बेहतरीन शै सवार अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु है और हमारा बेहतरीन प्यादेह सलमा है”| रावी बयान करते हैं, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे दो हिस्से दिए एक हिस्सा घुड़सवार का और एक हिस्सा प्यादेह का आप ने वह दोनों मेरे लिए जमा फरमा दिए फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने मदीना वापस आते हुए मुझे अपनी ऊंटनी अज़्बाअ पर अपने पीछे सवार कर लिया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (132 / 1807)، (4678)

٣٩٩٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُنَفِّلُ بَعْضَ مَنْ يَبْعَثُ مِنَ السَّرَايَا لِأَنْفُسِهِمْ خَاصَّةً سِوَى قِسْمَةِ عَامَّةِ الْجَيْشِ

3990. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ जिन दस्तूर को रवाना फरमाते, तो उनमें से बाज़ मुजाहिदीन को उन के हिस्सा के अलावा खुसूसी हिस्सा इनायत फ़रमाया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3135) و مسلم (40 / 1750)، (4565)

٣٩٩١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: نَفَّلَنَا رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم نَفَلًا سِوَى نَصِيبِنَا مِنَ الْخُمُسِ فَأَصَابَنِي شَارِفٌ والشارف: المسن الْكَبِير

3991. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें हमारे हिस्से के अलावा खुमुस में से भी कुछ अता फ़रमाया सो मुझे खुमुस से एक “शारीफ” मिली शारीफ बूढ़ी ऊंटनी को कहते हैं| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (لم اجده بهذا اللفظ و عنده لون آخر : 3135 ، انظر الحديث السابق) و مسلم (38 / 1750)، (4563)

٣٩٩٢ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: ذَهَبَتْ فَرَسٌ لَهُ فَأَخَذَهَا الْعَدُوُّ فَظَهَرَ عَلَيْهِمُ الْمُسْلِمُونَ فَرُدَّ عَلَيْهِ فِي زَمَنِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. وَفِي رِوَايَةٍ: أَبَقَ عَبْدٌ لَهُ فَلَحِقَ بِالرُّومِ فَظَهَرَ عَلَيْهِمُ الْمُسْلِمُونَ فَرَدَّ عَلَيْهِ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ بَعْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

3992. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, उनका घोड़ा भाग गया तो दुश्मन ने इसे पकड़ लिया, मुसलमान इन पर ग़ालिब आ गए तो वही घोड़ा रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में मुझे लौटा दिया गया| और एक रिवायत में है उनका एक गुलाम फरार हो कर रुमियो से जा मिला, जब मुसलमान इन पर ग़ालिब आ गए तो

नबी ﷺ के बाद खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु अन्हु ने वह मुझे लौटा दीया| (बुखारी)

رواه البخارى (3067)

٣٩٩٣ - (صَحِيح) وَعَن جُبيرِ بن مُطعمٍ قَالَ: مَشَيْتُ أَنَا وَعُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْنَا: أَعْطَيْتَ بَنِي الْمُطَّلِبِ مِنْ خُمُسِ خَيْبَرَ وَتَرَكْتَنَا وَنَحْنُ بِمَنْزِلَةٍ وَاحِدَةٍ مِنْكَ؟ فَقَالَ: «إِنَّمَا بَنُو هَاشِمٍ وَبَنُو المطلبِ وَاحِدٌ» . قَالَ جُبَيْرٌ: وَلَمْ يَقْسِمِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِبَنِي عَبْدِ شَمْسٍ وَبَنِي نوفلٍ شَيْئا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3993. जुबेर बिन मुतअम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं और उस्मान बिन अफ्फान रदियल्लाहु अन्हु ने नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, आप ने खैबर के खुमुस में से बनू मुत्तलिब को अता किया है और हमें छोड़ दिया है, जबकि हमारा और उनका आप से एक रिश्ता है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब एक ही चीज़ है”, ज़ुबैर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने बनू अब्द शम्स और बनू नौफल के दरमियान कुछ भी तकसीम न फ़रमाया| (बुखारी)

رواه البخارى (4229)

٣٩٩٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيُّمَا قَرْيَةٍ أَتَيْتُمُوهَا وأقمتمْ فِيهَا فَسَهْمُكُمْ فِيهَا وَأَيُّمَا قَرْيَةٍ عَصَتِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ خُمُسَهَا لِلَّهِ وَلِرَسُولِهِ ثُمَّ هِيَ لَكُمْ» . رَوَاهُ مُسلم

3994. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम जिस बस्ती में (बिला किताल) दाखिल हो जाओ और वहां इकामत इख़्तियार करे तो उस में तुम्हारा हिस्सा है, और जिस बस्ती वालो ने अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी की तो इस (से हासिल होने वाले माल) का खुमुस अल्लाह और उस के रसूल के लिए है, फिर वह (बाकी) तुम्हारे लिए है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (47 / 1756)، (4574)

٣٩٩٥ - (صَحِيح) وَعَن خوْلَةَ الْأَنْصَارِيَّةِ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ رِجَالًا يَتَخَوَّضُونَ فِي مَالِ اللَّهِ بِغَيْرِ حَقٍّ فَلَهُمُ النَّارُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

3995. खवलत अंसारी रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “कुछ लोग अल्लाह के माल में नाहक तसरीफ करते हैं , रोज़ ए कियामत इन के लिए (जहन्नम की) आग है”| (बुखारी)

رواه البخارى (3118)

٣٩٩٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي هُرَيْرَة قَالَ: قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ يَوْمٍ فَذَكَرَ الْغُلُولَ فَعَظَّمَهُ وَعَظَّمَ أَمْرَهُ ثُمَّ قَالَ: " لَا أُلْفِيَنَّ أَحَدَكُمْ يَجِيءُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى رَقَبَتِهِ بَعِيرٌ لَهُ رُغَاءٌ يَقُولُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَغِثْنِي فَأَقُولُ: لَا أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا قَدْ أَبْلَغْتُكَ. لَا أُلْفِيَنَّ أَحَدَكُمْ يَجِيءُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى رَقَبَتِهِ فُرْسٌ لَهُ حَمْحَمَةٌ فَيَقُولُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَغِثْنِي فَأَقُولُ: لَا أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا قَدْ أَبْلَغْتُكَ لَا أُلْفِيَنَّ أَحَدَكُمْ يَجِيءُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى رَقَبَتِهِ شَاةٌ لَهَا ثُغَاءٌ يَقُولُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَغِثْنِي فَأَقُولُ: لَا أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا قَدْ أَبْلَغْتُكَ لَا أُلْفِيَنَّ أَحَدَكُمْ يَجِيءُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى رَقَبَتِهِ نَفْسٌ لَهَا صِيَاحٌ فَيَقُولُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَغِثْنِي فَأَقُولُ: لَا أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا قَدْ أَبْلَغْتُكَ لَا أُلْفِيَنَّ أَحَدَكُمْ يَجِيءُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى رَقَبَتِهِ رِقَاعٌ تَخْفُقُ فَيَقُولُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَغِثْنِي فَأَقُولُ: لَا أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا قَدْ أَبْلَغْتُكَ لَا أُلْفِيَنَّ أَحَدَكُمْ يَجِيءُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى رَقَبَتِهِ صَامِتٌ فَيَقُولُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَغِثْنِي فَأَقُولُ: لَا أَمْلِكُ لَكَ شَيْئًا قد أبلغتك ". وَهَذَا لفظ مُسلم وَهُوَ أتم

3996. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ ने हम में खड़े हो कर ख़िताब फ़रमाया उस में आप ने खयानत का ज़िक्र किया और आप ने इस मुआमले को संगीन करार दिया, फिर फ़रमाया: “मैं तुम से किसी को न पाऊ के वह रोज़ ए कियामत आए और उसकी गर्दन पर ऊंट बिल बिला रहा हो, और वह शख़्स मुझे कहे अल्लाह के रसूल! मेरी मदद फरमाइए, और मैं उस से कहूँ के में तुम्हारे लिए किसी चिज़ का इख़्तियार नहीं रखता मैंने तुम्हें मसअला बता दिया था, मैं तुम में से किसी को न पाऊ के वह रोज़ ए कियामत आए और उसकी गर्दन पर घोड़ा हिनहिना रहा हो और वह आदमी कहे: अल्लाह के रसूल! मेरी मदद फरमाइए, तो मैं कहूँ में तुम्हारे लिए किसी चिज़ का इख़्तियार नहीं रखता, मैंने तुम्हें मसअला बता दिया था, मैं तुम में से किसी को न पाऊ के वह कियामत के दिन आए और उसकी गर्दन पर बकरी मिमिया रही हो, वह शख़्स कहे अल्लाह के रसूल! मेरी मदद फरमाइए, तो मैं कहूँ में तुम्हारे लिए किसी चिज़ का इख़्तियार नहीं रखता, मैंने तुम्हें मसअला बता दिया था, मैं तुम में से किसी को न पाऊ के वह कियामत के रोज़ आए और उसकी गर्दन पर कोई नफ्स (यानी मम्लुक) हो, और वह चला आ रहा हो, और वह शख़्स कहे: अल्लाह के रसूल! मेरी मदद फरमाइए, और मैं कहूँ में तुम्हारे लिए किसी चिज़ का इख़्तियार नहीं रखता, मैंने तुम्हें मसअला बता दिया था, मैं तुम में से किसी को न पाऊ के वह रोज़ ए कियामत आए और उसकी गर्दन पर चादर हरकत कर रही हो, तो वह शख़्स कहे: अल्लाह के रसूल! मेरी मदद फरमाइए, तो मैं कहूँगा: में तुम्हारे लिए किसी चिज़ का इख़्तियार नहीं रखता, मैंने तुम्हें मसअला बता दिया था, मैं तुम में से किसी को न न पाऊ के वह रोज़ ए कियामत आए और उसकी गर्दन पर कोई गैर नातुक चीज़ सोना चाँदी वगैरा हो, तो वह शख़्स कहे अल्लाह के रसूल! मेरी मदद फरमाइए तो मैं कहूँगा में तुम्हारे लिए किसी चिज़ का इख़्तियार नहीं रखता, मैंने तुम्हें मसअला बता दिया था”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3073) و مسلم (24 / 1831)، (4734)

٣٩٩٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: أَهْدَى رَجُلٌ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ غُلَامًا يُقَالُ لَهُ: مِدْعَمٌ فَبَيْنَمَا مِدْعَمٌ يَحُطُّ رَحْلًا لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم إِذْ أَصَابَهُ سهم عاثر فَقَتَلَهُ فَقَالَ النَّاسُ: هَنِيئًا لَهُ الْجَنَّةُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَلَّا وَالَّذِي نَفسِي بِيَدِهِ إِن الشملة الَّتِي أَخَذَهَا يَوْمَ خَيْبَرَ مِنَ الْمَغَانِمِ لَمْ تُصِبْهَا الْمَقَاسِمُ لَتَشْتَعِلُ عَلَيْهِ نَارًا» . فَلَمَّا سَمِعَ ذَلِك النَّاس جَاءَ رجل بشرك أَوْ شِرَاكَيْنِ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «شِرَاكٌ مِنْ نَارٍ أَوْ شِرَاكَانِ من نارٍ»

3997. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ को मुदअम नामी एक गुलाम बतौर हदिया पेश किया, मुदअम रसूलुल्लाह ﷺ की सवारी का कजावा उतार रहा था के इसे एक ना मालूम जानिब से एक तीर आ लगा जिस से वह क़त्ल हो गया, लोगों ने कहा: इसे जन्नत मुबारक हो, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "हरगिज़ नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है! उस ने गजवा ए खैबर के माल ए गनीमत में से, उसकी तकसीम से पहले, जो चादर चोरी की थी वह उस पर आग भड़का रही है", जब लोगों ने यह बात सुनी तो एक आदमी एक तस्मे या दो तस्मे नबी ﷺ की खिदमत में ले आया, उस पर आप ﷺ ने फ़रमाया: "एक तस्मे या दो तस्मे आग (में जाने के सबब) से है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6707) و مسلم (183 / 115)، (310)

٣٩٩٨ - (صَحِيح) وَعَن عبدِ الله بنِ عَمْرٍو قَالَ: كَانَ عَلَى ثَقَلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ كَرْكَرَةُ فَمَاتَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هُوَ فِي النَّارِ» فَذَهَبُوا يَنْظُرُونَ فَوَجَدُوا عَبَاءَةً قد غلها. رَوَاهُ البُخَارِيّ

3998. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, कि करकरह नामी शख़्स नबी ﷺ के सामान पर मामूर था, वह फौत हो गया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "वो जहन्नमी है", सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन उस का सामान देखने लगी तो उन्होंने एक चादर पाई जो उस ने चोरी की थी| (बुखारी)

رواه البخاری (3074)

٣٩٩٩ - (صَحِيح) وَعَن ابْن عمر قَالَ: كُنَّا نُصِيبُ فِي مَغَازِينَا الْعَسَلَ وَالْعِنَبَ فنأكله وَلَا نرفعُه رَوَاهُ البُخَارِيّ

3999. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, गज़वात में हमें शहद और अंगूर मिलते तो हम उन्हें खा लेते थे और उन्हें ऊपर आप ﷺ तक नहीं पहुंचाते थे| (बुखारी)

رواه البخاری (3154)

٤٠٠٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مُغَفَّلٍ قَالَ: أَصَبْتُ جِرَابًا مِنْ شَحْمٍ يَوْمَ خَيْبَرَ فَالْتَزَمْتُهُ فَقُلْتُ: لَا أُعْطِي الْيَوْمَ أَحَدًا مِنْ هَذَا شَيْئًا فَالْتَفَتُّ فَإِذَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يبتسم إِلَيّ. مُتَّفق عَلَيْهِ. وَذكر الحَدِيث أَبِي هُرَيْرَةَ «مَا أُعْطِيكُمْ» فِي بَابِ «رِزْقِ الْوُلَاة»

4000. अब्दुल्लाह बिन मुगफ्फल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, गज़वा ए खैबर में मुझे चरबी की एक थेली मिली तो मैंने इसे उठा लिया, और कहा: में आज उस में से किसी को कुछ नहीं दूँगा, मैंने देखा तो रसूलुल्लाह ﷺ मेरी तरफ (देख कर) मुस्कुरा रहे थे| # अबू हुरैरा (र) से मरवी हदीस: "में जो तुम्हें अता करू", बाब रिज़्क़

अवला में ज़िक्र की गई है. (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (3135) و مسلم (72 / 1772)، (4605) 0 حدیث ابی ھریرۃ تقدم (3745)

बَابُ قِسْمَةِ الْغَنَائِمِ وَالْغُلُولِ فِيهَا • माल ए गनीमत की तकसीम और इस में खयानत करने का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٠٠١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي أَمَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنَّ اللَّهَ فَضَّلَنِي عَلَى الْأَنْبِيَاءِ أَوْ قَالَ: فَضَّلَ أُمَّتِي عَلَى الْأُمَمِ وأحلَّ لنا الْغَنَائِم ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4001. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक अल्लाह ने मुझे तमाम अंबिया अलैहिस्सलाम पर फ़ज़ीलत अता की है, या फ़रमाया: “मेरी उम्मत को तमाम उम्मतो पर फ़ज़ीलत अता की गई है और हमारे लिए माल ए गनीमत हलाल किया गया है”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (1553 وقال : حسن صحیح)

٤٠٠٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم: يَوْمئِذٍ يَوْمَ حُنَيْنٍ: «مَنْ قَتَلَ كَافِرًا فَلَهُ سَلَبُهُ» فَقَتَلَ أَبُو طَلْحَةَ يَوْمَئِذٍ عِشْرِينَ رَجُلًا وَأَخَذَ أسلابهم. رَوَاهُ الدَّارمِيّ

4002. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने गज़वा ए हुनैन के मौके पर फ़रमाया: “जिस ने किसी काफ़िर को क़त्ल किया तो उस का साज़ो सामान इसी का है, अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु ने इस रोज़ बीस आदमी क़त्ल किए और उन्होंने उनका साज़ो सामान ले लिया| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ الدارمی (2 / 229 ح 2487) [و ابوداؤد (2718) و مسلم (1809 مطولاً]

٤٠٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَوْفِ بْنِ مَالِكٍ الْأَشْجَعِيِّ وَخَالِدِ بْنِ الْوَلِيدِ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَضَى فِي السَّلَبِ لِلْقَاتِلِ. وَلَمْ يُخَمِّسِ السَلَب. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4003. ऑफ बिन मालिक अश्जईय्य और खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने जंग में क़त्ल हो जाने वाले शख़्स के साज़ो सामान के बारे में फैसला फ़रमाया के वह उस के कातिल का है, और

आप ने मकतुल के साज़ो सामान से खुमुस नहीं निकाला| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (2721)

٤٠٠٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: نَفَّلَنِي رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ بَدْرٍ سَيْفَ أَبِي جَهْلٍ وَكَانَ قَتَلَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4004. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने गज़वा ए बद्र के मौके पर अबू जहल की तलवार मुझे इज़ाफ़ी तौर पर दी और उन्होंने (इब्ने मसउद (र)) ने इसे क़त्ल किया था| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2722) * فيه ابو عبيدة : لم يسمع من ابيه ، فالسند منقطع

٤٠٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَيْرٍ مَوْلَى آبِي اللَّحْمِ قَالَ: شَهِدْتُ خَيْبَرَ مَعَ ساداتي فَكَلَّمُوا فِي رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَلَّمُوهُ أَنِّي مَمْلُوكٌ فَأَمَرَنِي فَقُلِّدْتُ سَيْفًا فَإِذَا أَنَا أَجُرُّهُ فَأَمَرَ لِي بِشَيْءٍ مِنْ خُرْثِيِّ الْمَتَاعِ وَعَرَضْتُ عَلَيْهِ رُقْيَةً كُنْتُ أَرْقِي بِهَا الْمَجَانِينَ فَأَمَرَنِي بِطَرْحِ بَعْضِهَا وَحَبْسِ بَعْضِهَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ إِلَّا أَنَّ رِوَايَتَهُ انتهتْ عِنْد قَوْله: الْمَتَاع

4005. अबू लह्म के आज़ाद करदा गुलाम उमैर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं अपने मालिको के साथ गज़वा ए खैबर में शरीक था, उन्होंने मेरे बारे में रसूलुल्लाह ﷺ से बात की और उन्होंने आप को बताया की मैं एक गुलाम हूँ, आप ने मेरे मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया तो मुझे तलवार उठाए की गई, और मैं उसे घंसिट रहा था, आप ﷺ ने घरेलु सामान में से मुझे कुछ देने का हुक्म फ़रमाया, मैंने आप को एक दम सुनाया जो की मैं दीवानों पर क्या करता था, आप ने उस में से कुछ अल्फाज़ तर्क कर देने और कुछ रख लेने का हुक्म दिया| तिरमिज़ी, अबू दावुद, अलबत्ता अबू दावुद की रिवायत लफ्ज़ मताअ पर ख़तम हो जाती है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (1557 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (2730)

٤٠٠٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن محمع بن جارية قَالَ: قُسِمَتْ خَيْبَرُ عَلَى أَهْلِ الْحُدَيْبِيَةِ فَقَسَمَهَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَمَانِيَةَ عَشَرَ سَهْمًا وَكَانَ الْجَيْشُ أَلْفًا وَخَمْسَمِائَةٍ فِيهِمْ ثَلَاثُمِائَةِ فَارِسٍ فَأُعْطِيَ الْفَارِسُ سَهْمَيْنِ وَالرَّاجِلُ سَهْمًا رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَقَالَ: حَدِيثُ ابْنِ عُمَرَ أصح فَالْعَمَل عَلَيْهِ وَأَتَى الْوَهْمُ فِي حَدِيثِ مُجَمِّعٍ أَنَّهُ قَالَ: ثَلَاثُمِائَةِ فَارِسٍ وَإِنَّمَا كَانُوا مِائَتَيْ فَارس

4006. मुजम्मिअ बिन जारिया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, खैबर का माल ए गनीमत अहल हुदैबिया पर तकसीम किया गया, रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे अठारह हिस्सों में तकसीम फ़रमाया: लश्कर की तादाद पन्द्रह सौ थी, उस में से तीन सौ घुड़सवार थे, आप ने घुड़सवार को दो हिस्से और प्यादेह को एक हिस्सा अता फ़रमाया|

और इमाम अबू दावुद ने फ़रमाया के इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी हदीस ज़्यादा सहीह है और अमल इसी पर है, मुजम्मिअ से मरवी हदीस में वहम है के उन्होंने कहा: तीन सौ घुड़सवार थे जबकि वह सिर्फ दो सौ थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2736)

٤٠٠٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن حبيب بن مسلَمةَ الفِهْرِيِّ قَالَ شَهِدْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نفل الرّبع فِي البدأة وَالثلث فِي الرجمة. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4007. हबीबी बिन मुस्लिम, फहरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ के पास हाज़िर था के आप ने शुरू शुरू में लड़ने वालो को माल ए गनीमत में से चोथाई हिस्सा इज़ाफ़ी (ज़्यादा) अता फ़रमाया, और वापसी पर लड़ाई करने वालो को तिहाई हिस्सा इज़ाफ़ी (ज़्यादा) अता फ़रमाया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2750)

٤٠٠٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُنَفِّلُ الرُّبُعَ بَعْدَ الْخُمُسِ وَالثُّلُثَ بَعْدَ الْخُمُسِ إِذَا قَفَلَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4008. हबीबी बिन मुस्लिम, फहरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ जब जिहाद से वापस तशरीफ़ लाने से पहले माल ए गनीमत खुमुस निकालने के बाद चोथाई और वापस लौटते हुए खुमुस निकालने के बाद तिहाई हिस्सा इज़ाफ़ी तौर पर अता फ़रमाया करते थे| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (2749)

٤٠٠٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي الْجُوَيْرِيَّةِ الْجَرْمِيِّ قَالَ: أَصَبْتُ بِأَرْضِ الرُّومِ جَرَّةً حَمْرَاءَ فِيهَا دَنَانِيرُ فِي إِمْرَةِ مُعَاوِيَةَ وَعَلَيْنَا رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ يُقَالُ لَهُ: مَعْنُ بْنُ يَزِيدَ فَأَتَيْتُهُ بِهَا فَقَسَمَهَا بَيْنَ الْمُسْلِمِينَ وَأَعْطَانِي مِنْهَا [ص:١١٧ مِثْلَ مَا أَعْطَى رَجُلًا مِنْهُمْ ثُمَّ قَالَ: لَوْلَا أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا نَفَلَ إِلَّا بَعْدَ الْخُمُسِ» لَأَعْطَيْتُكَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4009. अबू जुरियह जरमी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मुआविया के दौरे अमारत में रोम की सर ज़मीन पर मुझे एक सुर्ख घड़ा मिला जिस में दीनार थे, रसूलुल्लाह ﷺ के मअन बिन यज़ीद नामी सहाबी हमारे अमीर थे, जो के बनू सलीम कबिले से थे, मैंने वह घड़ा उनकी खिदमत में पेश कर दिया, उन्होंने इसे मुसलमानों के बिच में तकसीम कर दिया और मुझे भी सब के बराबर ही हिस्सा दिया, फिर फ़रमाया अगर मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से

यह न सुना होता के खुमुस निकालने के बाद इज़ाफ़ी हिस्सा दीया जाएगा तो मैं तुम्हें ज़रूर देता”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (7253)

٤٠١٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي مُوسَى الأشعريِّ قَالَ: قَدِمْنَا فَوَافَقْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ افْتَتَحَ خَيْبَرَ فَأَسْهَمَ لَنَا أَوْ قَالَ: فَأَعْطَانَا مِنْهَا وَمَا قَسَمَ لِأَحَدٍ غَابَ عَنْ فَتْحِ خَيْبَرَ مِنْهَا شَيْئًا إِلَّا لمَنْ شهِدَ معَه إِلَّا أَصْحَابَ سَفِينَتِنَا جَعْفَرًا وَأَصْحَابَهُ أَسْهَمَ لَهُمْ مَعَهم. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4010. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम (हबशा से) वापस आए तो हमारी रसूलुल्लाह ﷺ से इस वक़्त मुलाकात हुई जब खैबर फतह हो चूका था, आप ने हमारा हिस्सा भी मुकर्रर फ़रमाया: या यूँ कहा आप ने हमें अता फ़रमाया, आप ﷺ ने खैबर में हासिल होने वाले माले गनीमत में से या तो उन लोगों को हिस्सा दिया जो इस गज़वा में शरीक थे या फिर हमारे कश्ती के साथियो यानी जाफर और उन के रफ्का को दीया| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (2725)

٤٠١١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ يَزِيدَ بْنِ خَالِدٍ: أَنَّ رَجُلًا مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تُوُفِّيَ يَوْمَ خَيْبَرَ فَذَكَرُوا لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «صَلُّوا عَلَى صَاحِبِكُمْ» فَتَغَيَّرَتْ وُجُوهُ النَّاسِ لِذَلِكَ فَقَالَ: «إِنَّ صَاحِبَكُمْ غَلَّ فِي سَبِيلِ اللَّهِ» فَفَتَّشْنَا مَتَاعَهُ فَوَجَدْنَا خَرَزًا مِنْ خَرَزِ يَهُودَ لَا يُسَاوِي دِرْهَمَيْنِ. رَوَاهُ مَالك وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4011. यज़ीद बिन खालिद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के गजवा ए खैबर के मौके पर रसूलुल्लाह ﷺ का एक साथी फौत हो गया, सहाबा ने उस का तज़किरह रसूलुल्लाह ﷺ से किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने साथी की नमाज़ ए जनाज़ा पढ़ो”, यह सुन कर सहाबा के चेहरो का रंग मत्गिर हो गया, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम्हारे साथी ने माले गनीमत में खयानत की है”, हमने उस के सामान की तलाशी ली तो हमने उस में यहूद का एक नगीना पाया जिस की कीमत दो दिरहम के बराबर भी नहीं थी| (हसन)

اسناده حسن ، رواه مالک (2 / 458 ح 1010) و ابوداؤد (2710) و النسائی (4 / 64 ح 1961)

٤٠١٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبدِ الله بنِ عَمْرٍو قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَصَابَ غَنِيمَةً أَمَرَ بِلَالًا فَنَادَى فِي النَّاسِ فَيَجِيئُونَ بِغَنَائِمِهِمْ فَيُخَمِّسُهُ وَيُقَسِّمُهُ فَجَاءَ رَجُلٌ يَوْمًا بَعْدَ ذَلِكَ بِزِمَامٍ مِنْ شَعَرٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَذَا فِيمَا كُنَّا أَصَبْنَاهُ مِنَ الْغَنِيمَةِ قَالَ: «أَسْمَعْتَ بِلَالًا نَادَى ثَلَاثًا؟» قَالَ: نَعَمْ قَالَ: «فَمَا مَنَعَكَ أَنْ تَجِيءَ بِهِ؟» فَاعْتَذَرَ قَالَ: «كُنْ أَنْتَ تَجِيءُ بِهِ يومَ القيامةِ فلنْ أقبلَه عَنْكَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4012. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ को माल ए गनीमत मिलता

तो आप बिलाल रदियल्लाहु अन्हु को हुक्म फरमाते तो वह आम एलान करते जिस पर सहाबा किराम वह माले गनीमत लेकर हाज़िर होते जो उन के पास होता, आप उस में से खुमुस निकालते और इसे तकसीम करते, चुनांचे एक आदमी उस से एक रोज़ बाद बालो से बनी हुई एक लगाम लेकर आया और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! माल ए गनीमत में मिलने वाले माल में यह भी थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम ने बिलाल रदियल्लाहु अन्हु को तीन मर्तबा एलान करते हुए सुना था ?” उस ने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “तो फिर किस चीज़ ने तुझे इसे लाने से मना किया ?” उस ने माज़रत पेश की, लेकिन आप ﷺ ने फ़रमाया: “अब तुम उसे कियामत के रोज़ लाओगे में उसे तुम से हरगिज़ कबूल नहीं करूँगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2712)

٤٠١٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبَا بَكْرٍ وَعُمَرَ حَرَّقُوا مَتَاعَ الْغَالِّ وضربوه. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4013. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ अबू बक्र और उमर रदियल्लाहु अन्हु ने खयानत करने वाले के माल व मताअ को जला दिया और उसकी पिटाई की| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2715) * الوليد : شامی وقال البخاری (فی زهير بن محمد :'' ماروی عنه اهل الشام فانه مناكير ''

٤٠١٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ [ص:١١٧ يَقُولُ: «مَنْ يَكْتُمُ غَالًّا فَإِنَّهُ مِثْلُهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4014. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया करते थे: “जो शख़्स खयानत करने वाले की परदापोशी करता है तो वह भी इसी की तरह है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2716) * خبيب : مجهول ، و جعفر بن سعد : ضعفه الجمهور

٤٠١٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَن شري الْمغنم حَتَّى تقسم. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4015. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने माल ए गनीमत को उसकी तकसीम से पहले फरोख्त करने से मना फ़रमाया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (1563 وقال : غريب) * محمد بن ابراهيم الباهلی مجهول و فی شيخه نظر و لبعض الحديث شواهد

٤٠١٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: نَهْيٌ أَنْ تُبَاعَ السِّهَامُ حَتَّى تُقْسَمَ. رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

4016. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने हिस्सों की तकसीम से पहले उन्हें बेचने से मना फ़रमाया | (हसन)

سنده حسن ، رواه الدارمی (2 / 226 ح 2479 ، نسخة محققة : 2519) [و الطبرانی فی الکبیر 8 / 220 ح 7774 و قبله : 7594]

٤٠١٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن خولةَ بنتِ قيسٍ: قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِنَّ هَذِهِ الْمَالَ خَضِرَةٌ حُلْوَةٌ فَمَنْ أَصَابَهُ بِحَقِّهِ بُورِكَ لَهُ فِيهِ وَرُبَّ متخوض فَمَا شَاءَتْ بِهِ نَفْسُهُ مِنْ مَالِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ لَيْسَ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَّا النَّارُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4017. खवलत बिन्ते कैस रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “ये माल (गनीमत) खुश मंजर और खुश ज़ाइका है, चुनांचे जिस ने इसे बकदर इस्तेह्काक हासिल किया तो वह उस के लिए बाईस ए बरकत बना दीया जाएगा, और बहोत से लोग जो अल्लाह और उस के रसूल के माल में मन पसंद तसरीफ करते हैं इन के लिए रोज़ ए कियामत आग ही है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2374 وقال : حسن صحیح)

٤٠١٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَنَفَّلَ سيفَه ذَا الفَقارِ يومَ بدْرٍ رَوَاهُ أَحْمد وَابْن مَاجَهْ وَزَادَ التِّرْمِذِيُّ وَهُوَ الَّذِي رَأَى فِيهِ الرُّؤْيَا يَوْم أحد

4018. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने गज़वा ए बद्र के रोज़ अपनी तलवार ज़ुल्फ़िकार हिस्सा से ज़्यादा ली, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने यह अल्फाज़ इज़ाफ़ी (ज़्यादा) नकल किए हैं, और यह वही है जो आप ﷺ ने गज़वा ए उहद के रोज़ ख्वाब में देखी थी| (हसन)

اسناده حسن ، رواه [احمد 1 / 271 ح 2445] و ابن ماجه (2808) و الترمذی (1561 وقال : حسن)

٤٠١٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن رويفع بْنِ ثَابِتٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلَا يَرْكَبْ دَابَّةً مِنْ فَيْءِ الْمُسْلِمِينَ حَتَّى إِذَا أَعْجَفَهَا رَدَّهَا فِيهِ وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلَا يَلْبَسْ ثَوْبًا مِنْ فَيْءِ الْمُسلمين حَتَّى إِذا أخلقه ردهَا فِيهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4019. रावय्फी बिन साबित रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है के मुसलमानों के माल ए गनीमत के किसी जानवर पर सवारी न करे हत्ता कि जब इसे लागीर कर दे तो उसे उस में वापस लौटा दे, और जो शख़्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान

रखता है के मुसलमानों के माल ए गनीमत में से कोई कपड़ा न पहने हत्ता कि जब इसे पोशीदा कर दे तो उसे उस में वापस कर दे”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (2159)

٤٠٢٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي الْمُجَالِدِ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى قَالَ: قُلْتُ: هَلْ كُنْتُمْ تُخَمِّسُونَ الطَّعَامَ فِي عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ؟ قَالَ: أَصَبْنَا طَعَامًا يَوْمَ خَيْبَرَ فَكَانَ الرَّجُلُ يَجِيءُ فَيَأْخُذُ مِنْهُ مقدارَ مَا يكفيهِ ثمَّ ينْصَرف. وَرَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4020. मुहम्मद बिन अबू मुजाहिद अब्दुल्लाह बिन अबी अव्फी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने अर्ज़ किया: क्या तुम रसूलुल्लाह ﷺ के दौर में तआम (खाना) में से भी पांचवा हिस्सा निकालते थे? उन्होंने कहा: गजवा ए खैबर में हमें खाना मिला, हर आदमी आता और वह अपने ज़रूरत के मुताबिक उस से लेता और फिर वापस चला जाता| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2704)

٤٠٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابنِ عُمَرَ: أَنَّ جَيْشًا غَنِمُوا فِي زَمَنِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَعَامًا وَعَسَلًا فَلَمْ يُؤخذْ منهمُ الْخمس. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4021. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माने में एक लश्कर को खाना और शहद मिला तो उनमें से खुमुस न लिया गया| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2701)

٤٠٢٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الْقَاسِمِ مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ بَعْضِ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: كنَّا نأكلُ الجَزورَ فِي الغزْوِ وَلَا نُقَسِّمُهُ حَتَّى إِذَا كُنَّا لَنَرْجِعُ إِلَى رِحَالِنَا وأَخْرِجَتُنا مِنْهُ مَمْلُوءَة. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4022. अब्दुल रहमान के आज़ाद करदा गुलाम कासिम, नबी ﷺ के किसी सहाबी से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: हम जिहाद में ऊंट का गोश्त खाया करते थे और हम इसे तकसीम नहीं किया करते थे, हत्ता कि जब हम अपने मंजिलो को लौटते तो हमारी खुर्जिया उस से भरी होती थी| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2706) * ابن حرشف : مجهول

٤٠٢٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَقُولُ: «أَدُّوا الْخِيَاطَ وَالْمِخْيَطَ وَإِيَّاكُمْ وَالْغُلُولَ فَإِنَّهُ عَارٌ عَلَى أَهْلِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ الدَّارِمِيُّ

4023. उबादा बिन सामित रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ फ़रमाया करते थे: “धागा और सुई भी (माल ए गनीमत) में जमा करा दो और खयानत से बचो, क्योंकि रोज़ ए कियामत वह खयानत करने वाले के लिए बाईसे आर होगी”| (हसन)

سنده حسن ، رواه الدارمی (2 / 230 ح 2490 ، نسخة محققة : 2530)

٤٠٢٤ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ النَّسَائِيُّ عَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ

4024. इमाम नसई ने इसे “ अम्र बिन शुऐब अन अबी अन जद्दह” की सनद से रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائی (6 / 262264 ح 2718)

٤٠٢٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: دَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ بَعِيرٍ فَأَخَذَ وَبَرَةً مِنْ سَنَامِهِ ثُمَّ قَالَ: «يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّهُ لَيْسَ لِي مِنْ هَذَا الْفَيْءِ شَيْءٌ وَلَا هَذَا وَرَفَعَ إِصْبَعَهُ إِلَّا الْخُمُسَ وَالْخُمُسُ مَرْدُودٌ عَلَيْكُمْ فَأَدُّوا الْخِيَاطَ وَالْمِخْيَطَ» فَقَامَ رَجُلٌ فِي يَدِهِ كُبَّةٌ شَعَرٍ فَقَالَ: أَخَذْتُ هَذِهِ لِأُصْلِحَ بِهَا بَرْدَعَةً فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَمَّا مَا كَانَ لي ولبني عبدِ المطلبِ فهوَ لكَ» . فَقَالَ: أمّا إِذا بَلَغَتْ مَا أَرَى فَلَا أَرَبَ لِي فِيهَا ونبَذَها. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4025. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: नबी ﷺ ऊंट के करीब हुए तो आप ने उसकी कोहान से एक बाल पकड़ा फिर फ़रमाया: “लोगो! इस माल ए गनीमत से मेरे लिए कोई चीज़ नहीं और यह (बाल तक) भी नहीं, आप ﷺ ने अपने ऊँगली उठाई अलबत्ता खुमुस, और खुमुस भी तुम्हे ही लौटा दीया जाएगा, तुम धागा और सुई तक जमा करा दो”, चुनांचे एक आदमी खड़ा हुआ तो उस के हाथ में बालो का एक टुकड़ा सा था, उस ने अर्ज़ किया: मैंने इसे झील को सहीह करने के लिए लिया था, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “वो चीज़ जो मेरी और बनू अब्दुल मुत्तलिब की है वह तेरे लिए है”, इस आदमी ने कहा: अगर मुआमला इस क़दर संगीन है तो मुझे उसकी कोई ज़रूरत नहीं, और उस ने इसे फेंक दिया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2694)

٤٠٢٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عمْرو بن عَبَسةَ قَالَ: صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى بَعِيرٍ مِنَ الْمَغْنَمِ فَلَمَّا سَلَّمَ أَخَذَ وَبَرَةً مِنْ جَنْبِ الْبَعِيرِ ثُمَّ قَالَ: «وَلَا يَحِلُّ لِي مِنْ غَنَائِمِكُمْ مِثْلُ هَذَا إِلَّا الْخُمُسُ وَالْخُمُسُ مَرْدُودٌ فِيكُمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4026. अमर बिन अबसत रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने माल ए गनीमत के ऊंट की तरफ रुख कर के हमें नमाज़ पढ़ाई, और जब आप ने सलाम फेरा तो आप ﷺ ने ऊंट के पहलु से चंद बाल पकड़े फिर फ़रमाया: “तुम्हारे अमवाल ए गनीमत में से खुमुस के अलावा मेरे लिए इतनी चीज़ भी हलाल नहीं, जबकि खुमुस भी तुम्हारे स्वालेह पर खर्च किया जाता है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2755)

٤٠٢٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن جُبير بنُ مُطعِمٍ قَالَ: لَمَّا قَسَمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَهْمَ [ص:١١٧ ذَوِي الْقُرْبَى بَيْنَ بَنِي هَاشِمٍ وَبَنِي الْمُطَّلِبِ أَتَيْتُهُ أَنَا وَعُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَؤُلَاءِ إِخْوَانُنَا مِنْ بَنِي هَاشِمٍ لَا نُنْكِرُ فَضْلَهُمْ لِمَكَانِكَ الَّذِي وضعكَ اللَّهُ مِنْهُمْ أَرَأَيْتَ إِخْوَانَنَا مِنْ بَنِي الْمُطَّلِبِ أَعْطَيْتَهُمْ وَتَرَكْتَنَا وَإِنَّمَا قَرَابَتُنَا وقَرَابَتُهُمْ وَاحِدَةً فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا بَنُو هَاشِمٍ وَبَنُو الْمُطَّلِبِ شَيْءٌ وَاحِدٌ هَكَذَا» . وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ. رَوَاهُ الشَّافِعِيُّ وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ وَالنَّسَائِيِّ نَحْوُهُ وَفِيهِ: «إِنَّا وَبَنُو الْمُطَّلِبِ لَا نَفْتَرِقُ فِي جَاهِلِيَّةٍ وَلَا إِسْلَامٍ وَإِنَّمَا نَحْنُ وَهُمْ شَيْءٌ وَاحِدٌ» وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعه

4027. जुबेर बिन मुतअम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने रिश्तेदारों का हिस्सा बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब के दरमियान तकसीम कर दिया तो मैं और उस्मान बिन अफ्फान रदियल्लाहु अन्हु आप की खिदमत में हाज़िर हुए और हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! बनू हाशिम कबिले के हमारे यह भाई, आप के मक़ाम व मर्तबा की वजह से उनकी फ़ज़ीलत का हमें इनकार नहीं क्यूंकि अल्लाह ने आप को उनमें पैदा फ़रमाया, बनू मुत्तलिब के हमारे भाइयो के बारे में बताइए के आप ने उन्हें अता फरमा दिया जबकि हमें छोड़ दिया हालाँकि हमारी और उनकी क़राबत एक ही है, रसूलुल्लाह ﷺ ने यह सुन कर अपनी उंगलियों को एक दूसरी में दाखिल कर के फ़रमाया: “बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब इस तरह एक चीज़ है”| शाफ़ई अबू दावुद और नसई की रिवायत इसी तरह है, और इस में है: हम और बनू मुत्तलिब ने तो दौरे जाहिलियत में अलग थे और न इस्लाम में अलग है, और हम और वह एक चीज़ है, आप ﷺ ने अपने एक हाथ की उंगलिया दूसरे हाथ की उंगलियों मैं डाली| (हसन)

حسن ، رواه الشافعی فی الام (4 / 146 و سنده ضعیف)و ابوداؤد (2980 وھو حدیث صحیح) و النسائی (7 / 130 ح 4142 وھو حدیث حسن) [و اصله عند البخاری (4229)]

بَابُ قِسْمَةِ الْغَنَائِمِ وَالْغُلُولِ فِيهَا • माल ए गनीमत की तकसीम और इस में खयानत करने का बयान

الْفَصْلُ الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٠٢٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ قَالَ: إِنِّي وَاقِفٌ فِي الصَّفِّ يَوْمَ بَدْرٍ فَنَظَرْتُ عَنْ يَمِينِي وَعَنْ شِمَالِي فَإِذَا بِغُلَامَيْنِ مِنَ الْأَنْصَارِ حَدِيثَة أسنانها فتمنيت أَنْ أَكُونَ بَيْنَ أَضْلَعَ مِنْهُمَا فَغَمَزَنِي أَحَدُهُمَا فَقَالَ: يَا عَمِّ هَلْ تَعْرِفُ أَبَا جَهْلٍ؟ قُلْتُ: نَعَمْ فَمَا حَاجَتُكَ إِلَيْهِ يَا ابْنَ أَخِي؟ قَالَ: أُخْبِرْتُ أَنَّهُ يَسُبُّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَئِنْ رَأَيْتُهُ لَا يُفَارِقُ سَوَادِي سَوَادَهُ حَتَّى يَمُوتَ الْأَعْجَلُ مِنَّا فَتَعَجَّبْتُ لِذَلِكَ قَالَ: وَغَمَزَنِي الْآخَرُ فَقَالَ لِي مِثْلَهَا فَلَمْ أَنْشَبْ أَنْ نَظَرْتُ إِلَى أَبِي جَهْلٍ يَجُولُ فِي النَّاسِ فَقُلْتُ: أَلَا تَرَيَانِ؟ هَذَا صَاحِبُكُمَا الَّذِي تَسْأَلَانِي عَنْهُ قَالَ: فابتدراه بسيفهما فَضَرَبَاهُ حَتَّى قَتَلَاهُ ثُمَّ انْصَرَفَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فأخبراهُ فَقَالَ: «أَيُّكُمَا قَتَلَهُ؟» فَقَالَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا: أَنَا قتلته فَقَالَ: «هلْ مسحتُما سيفَيكما؟» فَقَالَا: لَا فَنَظَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى السَّيْفَيْنِ فَقَالَ: «كِلَاكُمَا قَتَلَهُ» . [ص:١١٧ وَقَضَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِسَلَبِهِ لِمُعَاذِ بن عَمْرِو بن الْجَمُوحِ وَالرَّجُلَانِ: مُعَاذُ بْنُ عَمْرِو بْنِ الْجَمُوحِ ومعاذ بن عفراء

4028. अब्दुल रहमान बिन ऑफ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं गज़वा ए बद्र के रोज़ सफ में खड़ा था,मैंने अपनी दाएँ बाएँ देखा तो मैं अंसार के दो नौ उमर लड़को के दरमियान था, मैंने तमन्ना की मैं इन दोनों से ज़्यादा क़वी आदमियों के दरमियान होता, इतने में इन में से एक ने मुझे इरशाद करते हुए पूछा: चचा जान! आप अबू जहल को जानते हैं? मैंने कहा: हाँ लेकिन भतीजे तुम्हें उस से क्या काम? उस ने कहा: मुझे पता चला है के वह रसूलुल्लाह ﷺ को गालिया देता है, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! अगर मैंने इसे देख लिया तो मैं अलग नहीं होऊंगा हत्ता के हम से जल्द अजल (मौत) को पहुँचने वाला फौत हो जाए, उसकी इस बात से मुझे बहोत ताज्जुब हुआ, बयान करते हैं, फिर दूसरे ने मुझे इरशाद किया और उस ने भी मुझ से वही बात की, इतने में मैंने अबू जहल को लोगों में चक्कर लगाते हुए देखा तो मैंने कहा: क्या तुम देख नहीं रहे यह वही शख़्स है जिसके बारे में तुम मुझ से पूछ रहे थे, वह बयान करते हैं, वह दोनों अपने तलवारों के साथ उसकी तरफ लपके और उस पर वार किया हत्ता कि उन्होंने इसे क़त्ल कर दिया, फिर वह रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आए और आप को बताया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में से किस ने इसे क़त्ल किया है?" इन दोनों में से हर एक ने कहा: मैंने इसे क़त्ल किया है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "क्या तुम ने अपने तलवारे साफ़ कर ली है?" उन्होंने अर्ज़ किया: नहीं, चुनान्चे आप ﷺ ने दोनों की तलवारे देख कर फ़रमाया: "तुम दोनों ने इसे क़त्ल किया है", और रसूलुल्लाह ﷺ ने अबू जहल के साज़ो सामान के मुतल्लिक मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह के हक़ में फैसला फ़रमाया, जबकि वह दोनों आदमी (लड़के) मुआज़ बिन अम्र बिन जमूह और मुआज़ बिन इफराअ थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3141) و مسلم (42 / 1752)، (4569)

٤٠٢٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ بَدْرٍ: «مَنْ يَنْظُرُ لَنَا مَا صَنَعَ أَبُو جَهْلٍ؟» فَانْطَلَقَ ابْنُ مَسْعُودٍ فَوَجَدَهُ قَدْ ضَرَبَهُ ابْنَا عَفْرَاءَ حَتَّى بَرَدَ قَالَ: فَأَخَذَ بِلِحْيَتِهِ فَقَالَ: أَنْتَ أَبُو جَهْلٍ فَقَالَ: وَهَلْ فَوْقَ رَجُلٍ قَتَلْتُمُوهُ. وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ: فَلَوْ غَيْرُ أَكَّارٍ قتلني

4029. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, बद्र के दिन रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कौन देख कर हमें यह बताएगा के अबू जहल किस हालत में है?” इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु गई तो उन्होंने देखा के इफराअ के दोनों बेटो ने उस पर हमला किया है जिस की वजह से वह ठंडा (करिबुल मर्ज़) हो गया है, रावी बयान करते हैं, उन्होंने इसे दाढ़ी से पकड़ कर कहा: तो अबू जहल है? उस ने कहा तुमने एक आदमी ही तो क़त्ल किया है? एक दूसरी रिवायत में है: उस ने कहा काश कोई गैर काश्तकार मुझे क़त्ल करता| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (4020) و مسلم (118 / 1800)، (4662)

٤٠٣٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ قَالَ: أَعْطَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَهْطًا وَأَنَا جَالِسٌ فَتَرَكَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم مِنْهُم رَجُلًا وَهُوَ أَعْجَبُهُمْ إِلَيَّ فَقُمْتُ فَقُلْتُ: مَا لَكَ عَنْ فُلَانٍ؟ وَاللَّهِ إِنِّي لَأُرَاهُ مُؤْمِنًا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَوْ مُسلما» ذكرَ سَعْدٌ ثَلَاثًا وَأَجَابَهُ بِمِثْلِ ذَلِكَ ثُمَّ قَالَ: «إِنِّي لَأُعْطِي الرَّجُلَ وَغَيْرُهُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْهُ خَشْيَةَ أَنْ يُكَبَّ فِي النَّارِ عَلَى وَجْهِهِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ لَهُمَا: قَالَ الزُّهْرِيُّ: فترى: أَنَّ الْإِسْلَام الْكَلِمَة وَالْإِيمَان الْعَمَل الصَّالح

4030. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक जमाअत को कुछ दीया और मैं बैठा हुआ था, रसूलुल्लाह ﷺ ने उनमें से एक आदमी को छोड़ दीया वह मुझे उनमें से ज़्यादा पसंदीदा था, चुनांचे में खड़ा हुआ और अर्ज़ किया: फलां शख़्स के बारे में आप का क्या ख़याल है? अल्लाह की क़सम! मैं उसे मोमिन समझता हूँ, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बल्के (में इसे) मुसलमान (समझता हु)”, साद रदियल्लाहु अन्हु ने तीन बार ऐसे ही अर्ज़ किया, और आप ने उन्हें ऐसे ही जवाब इरशाद फ़रमाया, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक में आदमी को देता हूँ, जबकि दूसरा शख़्स (जिसे में नहीं देता) उसकी निस्बत मुझे ज़्यादा प्यारा होता है, इस अंदेशे के पेशे नज़र देता हूँ कि वह अपने चेहरे के बल जहन्नम में न डाला जाए”| और सहीहैन की रिवायत में है इमाम ज़ुहरी (रह) ने फ़रमाया: हम समझते है की इस्लाम कलिमा है जबकि ईमान अमल ए स्वालेह है| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخاری (27) و مسلم (237 / 150)، (379)

٤٠٣١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَامَ يَعْنِي يَوْمَ بَدْرٍ فَقَالَ: «إِنَّ عُثْمَانَ انْطَلَقَ فِي حَاجَةِ اللَّهِ وَحَاجَةِ رَسُولِهِ وَإِنِّي أُبَايِعُ لَهُ» فَضَرَبَ لَهُ رسولُ الله بِسَهْمٍ وَلَمْ يَضْرِبْ بِشَيْءٍ لِأَحَدٍ غَابَ غَيْرَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4031. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के गज़वा ए बद्र के रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ खड़े हुए और फ़रमाया: “बेशक उस्मान, अल्लाह और उस के रसूल के काम से गए हुए हैं, और मैं इन की बैत करता हूँ, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने इन के लिए हिस्सा मुकर्रर फ़रमाया, जबकि आप ने उन के अलावा किसी और गैर हाज़िर शख़्स के लिए हिस्सा मुकर्रर नहीं फरमाया| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (2726)

٤٠٣٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن رافعِ بن خديجٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَجْعَلُ فِي قَسْمِ الْمَغَانِمِ عَشْرًا مِنَ الشَّاءِ بِبَعِير. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

4032. राफीअ बिन ख़दीज रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ माले गनीमत की तकसीम में एक ऊंट के बदले में दस बकरिया मुकर्रर फ़रमाया करते थे| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائی (7 / 221 ح 4396) [و اصله متفق علیه (البخاری : 2488 و مسلم : 1968)، (5093)]

٤٠٣٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " غَزَا نَبِيٌّ مِنَ الْأَنْبِيَاءِ فَقَالَ لِقَوْمِهِ: لَا يَتْبَعْنِي رَجُلٌ مَلَكَ بُضْعَ امْرَأَةٍ وَهُوَ يُرِيدُ أَنْ يَبْنِيَ بِهَا وَلَمَّا يَبْنِ بِهَا وَلَا أَحَدٌ بَنَى بُيُوتًا وَلَمْ يَرْفَعْ سُقُوفَهَا وَلَا رَجُلٌ اشْتَرَى غَنَمًا أَوْ خَلِفَاتٍ [ص:١١٧ وَهُوَ يَنْتَظِرُ وِلَادَهَا فَغَزَا فَدَنَا مِنَ الْقَرْيَةِ صَلَاةَ الْعَصْرِ أَوْ قَرِيبًا مِنْ ذَلِكَ فَقَالَ لِلشَّمْسِ: إِنَّكِ مَأْمُورَةٌ وَأَنَا مَأْمُورٌ اللَّهُمَّ احْبِسْهَا عَلَيْنَا فَحُبِسَتْ حَتَّى فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْهِ فَجَمَعَ الْغَنَائِمَ فَجَاءَتْ يَعْنِي النَّارَ لِتَأْكُلَهَا فَلَمْ تَطْعَمْهَا فَقَالَ: إِنَّ فِيكُمْ غُلُولًا فَلْيُبَايِعْنِي مِنْ كُلِّ قَبِيلَةٍ رَجُلٌ فَلَزِقَتْ يدُ رجلٍ بيدِه فَقَالَ: فيكُم الغُلولُ فجاؤوا بِرَأْسٍ مِثْلِ رَأْسِ بَقَرَةٍ مِنَ الذَّهَبِ فَوَضَعَهَا فَجَاءَتِ النَّارُ فَأَكَلَتْهَا ". زَادَ فِي رِوَايَةٍ: «فَلَمْ تَحِلَّ الْغَنَائِمُ لِأَحَدٍ قَبْلَنَا ثُمَّ أَحَلَّ اللَّهُ لَنَا الْغَنَائِمَ رَأَى ضَعْفَنَا وَعَجْزَنَا فَأَحَلَّهَا لَنَا»

4033. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अंबिया अलैहिस्सलाम में से किसी एक नबी ने जिहाद किया तो उन्होंने अपने कौम से फ़रमाया: वह शख़्स मेरे साथ न जाए जिस ने शादी की और वह इसे अपने घर लाना चाहता है मगर वह इसे ताहाल अपने घर नहीं ला सका और वह शख़्स भी मेरे साथ न जाए जिस ने घर बनाया और उस ने उसकी छते बुलंद नहीं की, और न वह शख़्स मेरे साथ जाए जिस ने बकरी या हामिला ऊंटनी खरीदी है और वह उस के बच्चे का मुन्तज़र है, उन्होंने जिहाद का इरादा किया, और वह नमाज़ ए असर या उस के करीब इस बस्ती के करीब पहुंचे (जिस के साथ जिहाद करना था) और उन्होंने सूरज से फ़रमाया: तू भी मामूर है और मैं भी मामूर हूँ, ऐ अल्लाह! इसे ठहरा दे, लिहाज़ा इसे ठहरा दिया गया हत्ता के अल्लाह ने उन्हें फतह अता फरमाई, उन्होंने माले गनीमत जमा किया, आग इसे जलाने के लिए आई मगर उस ने इसे न जलाया, उन्होंने ने फ़रमाया: तुम में से कोई खाईन है, हर कबिले से एक आदमी मेरी बैत करे, एक आदमी का हाथ उन के हाथ के साथ चिमट गया, नबी ने फ़रमाया: तुम में खाईन है, वह गाय के सर के बराबर सोने का एक सर लाए और इसे माल ए गनीमत में रखा गया, फिर आग आई और इसे खा गई| और एक

रिवायत में यह ज़्यादा नकल किया है: “हम से पहले माल ए गनीमत किसी के लिए हलाल नहीं था, फिर अल्लाह ने हमारे लिए माल ए गनीमत हलाल फरमा दिया, उस ने हमारी कमज़ोरी और आजिज़ी देखी तो उसे हमारे लिए हलाल करार दे दिया”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3124) و مسلم (32 / 1747)، (4555)

٤٠٣٤ - (صَحِيح) وَعَن ابْن عَبَّاس قَالَ: حَدثنِي عمر قَالَ: لَمَّا كَانَ يَوْمَ خَيْبَرَ أَقْبَلَ نَفَرٌ مِنْ صَحَابَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: فُلَانٌ شَهِيدٌ وَفُلَانٌ شَهِيدٌ حَتَّى مَرُّوا عَلَى رَجُلٍ فَقَالُوا: فُلَانٌ شَهِيدٌ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَلَّا إِنِّي رَأَيْتُهُ فِي النَّارِ فِي بُرْدَةٍ غَلَّهَا أَوْ عَبَاءَةٍ» ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَا ابْنَ الْخَطَّابِ اذْهَبْ فَنَادِ فِي النَّاسِ: أَنَّهُ لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ إِلَّا الْمُؤْمِنُونَ ثَلَاثًا " قَالَ: فَخَرَجْتُ فَنَادَيْتُ: أَلَا إِنَّهُ لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ إِلَّا الْمُؤْمِنُونَ ثَلَاثًا. رَوَاهُ مُسلم

4034. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे हदीस बयान की, उन्होंने ने फ़रमाया: जब गजवा ए खैबर का दिन थे तो नबी ﷺ के सहाबा की एक जमाअत आई और उन्होंने कहा: फलां शहीद है, फलां शहीद है, हत्ता के वह एक शख़्स के पास से गुज़रे तो उन्होंने कहा: फलां शहीद है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हरगिज़ नहीं, मैंने इसे एक चादर की वजह से, जो उस ने खयानत की थी, जहन्नम में देखा है” फिर फ़रमाया: “इब्ने खत्ताब! जाओ और तीन बार एलान आम कर दो की जन्नत में (कामिल(सर्वोत्तम)) मोमिन दाखिल होंगे”, वह बयान करते हैं, मैं निकला और तीन बार ऐलान किया: सुन लो! जन्नत में सिर्फ मोमिन ही जाएँगे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (182 / 114)، (309)

بَاب الْجِزْيَة • जिज़िया का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٠٣٥ - (صَحِيح) عَن بَجالَةَ قَالَ: كُنْتُ كَاتِبًا لِجَزْءِ بْنِ مُعَاوِيَةَ عَمِّ الْأَحْنَفِ فَأَتَانَا كِتَابُ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَبْلَ مَوْتِهِ بِسَنَةٍ: فَرِّقُوا بَيْنَ كُلِّ ذِي مَحْرَمٍ مِنَ الْمَجُوسِ وَلَمْ يَكُنْ عُمَرُ أَخَذَ الْجِزْيَةَ مِنَ الْمَجُوسِ حَتَّى شَهِدَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخَذَهَا مِنْ مَجُوسِ هجَرَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ»» وذُكرَ حديثُ بُريدة: إِذَا أَمَّرَ أَمِيرًا عَلَى جَيْشٍ فِي «بَابِ الْكتاب إِلَى الْكُفَّار»

4035. बजालह रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैं अहनफ़ के चचा जज़्अ बिन मुआविया का कातिब (मुंशी) था, उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु की वफात से एक साल पहले इन की तरफ से हमारे पास एक ख़त आया की मजुसियो के हर इस जोड़े के दरमियान अलायेदगी करो जो आपस में एक दूसरे के महरम हो, और उमर

रदियल्लाहु अन्हु मजुसियो से जिज़िया नहीं लेते थे हत्ता के अब्दुल रहमान बिन ऑफ रदियल्लाहु अन्हु ने गवाही दी के रसूलुल्लाह ﷺ ने हजर के मजुसियो से जिज़िया लिया था| # और बुरैदाह (र) से मरवी हदीस " जब किसी अमीर को किसी लश्कर पर मुकर्रर फरमाते ....", (بَابِ الْكتاب إِلى الْكفَّار) कुफ्फ़ार के नाम ख़त लिखने और इन्हें इस्लाम की तरफ दावत देने का बयान में ज़िक्र की गई है (बुखारी)

رواه البخارى (3156) 0 حديث بريدة ، تقدم (3929)

بَاب الْجِزْيَة • जिज़िया का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٠٣٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ مُعَاذٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا وَجَّهَهُ إِلَى الْيَمَنِ أَمْرَهُ أَنْ يَأْخُذَ مِنْ كُلِّ حَالِمٍ يَعْنِي مُحْتَلِمٍ دِينَارًا أَوْ عَدْلَهُ مِنَ الْمَعَافِرِيِّ: ثِيَابٌ تَكُونُ بِالْيمن. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4036. मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें यमन की तरफ भेजा तो उन्हें हर बालिग़ शख़्स से एक दीनार या उस के मसावी मआफरी कपड़ा जो के यमन में होता है, लेने का हुक्म फ़रमाया| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3038) [و الترمذى (623) و النسائى (2455) و ابن ماجه (1803)] * الاعمش مدلس و عنعن

٤٠٣٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَصْلُحُ قِبْلَتَانِ فِي أَرْضٍ وَاحِدَةٍ وَلَيْسَ عَلَى الْمُسْلِمِ جِزْيَةٌ» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4037. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "एक मुल्क में दो कबिले (यानी दीन) दुरुस्त नहीं और न किसी मुसलमान पर जिज़िया है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (1 / 223 ح 1949) و الترمذى (633) و ابوداؤد (3053) * فيه يزيد بن ابى زياد : ضعيف و للحديث شواهد ضعيفة ، منها طريق احمد (1 / 253 ، 313)

٤٠٣٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أنس قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ إِلَى أُكَيْدِرِ دُومَةَ فَأَخَذُوهُ فَأَتَوْا بِهِ فَحَقَنَ لَهُ دَمَهُ وَصَالَحَهُ على الْجِزْيَة. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4038. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु अन्हु को दव्म

के बादशाह उकैदिर की तरफ भेजा, वह इसे गिरफ्तार कर के आप की खिदमत में ले आए, आप ﷺ ने उसकी जान बख्शी फरमा दिया और फरीकैन के बिच में जिज़िया पर सुलह हो गई| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3037) * محمد بن اسحاق عنعن

٤٠٣٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ حَرْبِ بْنِ عُبَيْدِ اللَّهِ عَنْ جَدِّهِ أبي أمّه عَنْ أَبِيهِ أَنَّ [ص:١١٨ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّمَا الْعُشُورُ عَلَى الْيَهُودِ وَالنَّصَارَى وَلَيْسَ عَلَى الْمُسْلِمِينَ عُشُورٌ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ

4039. हरबी बिन उबैदुल्लाह अपने नाना से और वह अपने बाप से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “महसूल तो यहूद व नसारा पर है, मुसलमानों पर गुशुर नहीं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه احمد (3 / 474 ح 15992) و ابوداؤد (3048) * سفیان الثوری مدلس و عنعن و رجل من بکر بن وائل ، لعله حرب و الا فمجهول

٤٠٤٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا نَمُرُّ بِقَوْمٍ فَلَا هُمْ يُضَيِّفُونَا وَلَا هُمْ يُؤَدُّونَ مَا لنا عَلَيْهِم منَ الحقِّ وَلَا نَحْنُ نَأْخُذُ مِنْهُمْ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنْ أَبَوْا إِلَّا أنْ تأخُذوا كُرهاً فَخُذُوا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4040. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हम किसी कौम के पास से गुज़रते है तो वह न तो हमारी मेहमान नवाज़ी करते हैं और न वह हमारा वह हक़ देते हैं जो इन पर लगाया होता है और हम भी उन से अपना हक़ (ज़बरदस्ती) हासिल नहीं करते, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर वह इनकार करे और तुम्हें ज़बरदस्ती लेना पड़े तो लो”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (1589)

जिज़िया का बयान • بَاب الْجِزْيَة

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٤٠٤١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَسْلَمَ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ضَرَبَ الْجِزْيَةَ عَلَى أَهْلِ الذَّهَبِ أربعةَ دنانيرَ وَعَلى أهلِ الوَرِقِ أَرْبَعِينَ دِرْهَمًا مَعَ ذَلِكَ أَرْزَاقُ الْمُسْلِمِينَ وَضِيَافَةُ ثلاثةِ أيامٍ. رَوَاهُ مَالك

4041. असलम से रिवायत है के उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने सोने वालो पर चार दीनार और चाँदी

वालो पर चालीस दिरहम जिज़िया मुकर्रर फ़रमाया, उस के साथ साथ मुसलमानों की ज़ुरुरियात जिंदगी और तीन दीन की खाना| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه مالك (1 / 279 ح 623)

بَاب الصُّلْح • सुलह का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٠٤٢ - (صَحِيح) عَنِ الْمِسْوَرِ بْنِ مَخْرَمَةَ وَمَرْوَانَ بْنِ الْحَكَمِ قَالَا: خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامَ الْحُدَيْبِيَةِ فِي بِضْعَ عَشْرَةَ مِائَةً مِنْ أَصْحَابِهِ فَلَمَّا أَتَى ذَا الْحُلَيْفَةِ قَلَّدَ الْهَدْيَ وَأَشْعَرَ وَأَحْرَمَ مِنْهَا بِعُمْرَةٍ وَسَارَ حَتَّى إِذَا كَانَ بِالثَّنِيَّةِ الَّتِي يُهْبَطُ عَلَيْهِمْ مِنْهَا بَرَكَتْ بِهِ رَاحِلَتُهُ فَقَالَ النَّاسُ: حَلْ حَلْ خَلَأَتِ الْقَصْوَاءُ خلأت الْقَصْوَاء فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا خَلَأَتِ الْقَصْوَاءُ وَمَا ذَاكَ لَهَا بِخُلُقٍ وَلَكِنْ حَبَسَهَا حَابِسُ الْفِيلِ» ثُمَّ قَالَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا يَسْأَلُونِي خُطَّةً يُعَظِّمُونَ فِيهَا حُرُمَاتِ اللَّهِ إِلَّا أَعْطَيْتُهُمْ إِيَّاهَا» ثُمَّ زَجَرَهَا فَوَثَبَتْ فَعَدَلَ عَنْهُمْ حَتَّى نَزَلَ بِأَقْصَى الْحُدَيْبِيَةِ عَلَى ثَمَدٍ قَلِيلِ الْمَاءِ يَتَبَرَّضُهُ النَّاسُ تَبَرُّضًا فَلَمْ يَلْبَثْهُ النَّاسُ حَتَّى نَزَحُوهُ وَشُكِيَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْعَطَشَ فَانْتَزَعَ سَهْمًا مِنْ كِنَانَتِهِ ثُمَّ أَمَرَهُمْ أَنْ يَجْعَلُوهُ فِيهِ فو الله مَا زَالَ يَجِيشُ لَهُمْ بِالرِّيِّ حَتَّى صَدَرُوا عَنْهُ فَبَيْنَا هُمْ كَذَلِكَ إِذْ جَاءَ بُدَيْلُ بْنُ وَرْقَاءَ الخزاعيُّ فِي نفَرٍ منْ خُزَاعَةَ ثُمَّ أَتَاهُ عُرْوَةُ بْنُ [ص:١١٨ مَسْعُودٍ وَسَاقَ الْحَدِيثَ إِلَى أَنْ قَالَ: إِذْ جَاءَ سُهَيْلُ بْنُ عَمْرٍو فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " اكْتُبْ: هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ ". فَقَالَ سُهَيْلٌ: وَاللَّهِ لَوْ كُنَّا نَعْلَمُ أَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ مَا صَدَدْنَاكَ عَنِ الْبَيْتِ وَلَا قَاتَلْنَاكَ وَلَكِنِ اكْتُبْ: مُحَمَّدَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " وَاللَّهِ إِنِّي لَرَسُولُ اللَّهِ وَإِنْ كَذَّبْتُمُونِي اكْتُبْ: مُحَمَّدَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ " فَقَالَ سُهَيْلٌ: وَعَلَى أَنْ لَا يَأْتِيَكَ مِنَّا رَجُلٌ وَإِنْ كانَ على دينِكَ إلاَّ ردَدْتَه علينا فَلَمَّا فَرَغَ مِنْ قَضِيَّةِ الْكِتَابِ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِأَصْحَابِهِ: «قُومُوا فَانْحَرُوا ثُمَّ احْلِقُوا» ثُمَّ جَاءَ نِسْوَةٌ مُؤْمِنَاتٌ فَأَنْزَلَ اللَّهُ تَعَالَى: (يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذا جاءَكُم المؤمناتُ مهاجِرات)»» الْآيَةَ. فَنَهَاهُمُ اللَّهُ تَعَالَى أَنْ يَرُدُّوهُنَّ وَأَمَرَهُمْ أَنْ يَرُدُّوا الصَّدَاقَ ثُمَّ رَجَعَ إِلَى الْمَدِينَةِ فَجَاءَهُ أَبُو بَصِيرٍ رَجُلٌ مِنْ قُرَيْشٍ وَهُوَ مُسْلِمٌ فَأَرْسَلُوا فِي طَلَبِهِ رَجُلَيْنِ فَدَفَعَهُ إِلَى الرَّجُلَيْنِ فَخَرَجَا بِهِ حَتَّى إِذَا بَلَغَا ذَا الْحُلَيْفَةِ نَزَلُوا يَأْكُلُونَ مِنْ تَمْرٍ لَهُمْ فَقَالَ أَبُو بَصِيرٍ لِأَحَدِ الرَّجُلَيْنِ: وَاللَّهِ إِنِّي لَأَرَى سَيْفَكَ هَذَا يَا فُلَانُ جَيِّدًا أَرِنِي أَنْظُرْ إِلَيْهِ فَأَمْكَنَهُ مِنْهُ فَضَرَبَهُ حَتَّى بَرَدَ وَفَرَّ الْآخَرُ حَتَّى أَتَى الْمَدِينَةَ فَدَخَلَ الْمَسْجِدَ يَعْدُو فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَقَدْ رأى هَذَا ذُعراً» فَقَالَ: قُتِلَ واللَّهِ صَحَابِيّ وَإِنِّي لَمَقْتُولٌ فَجَاءَ أَبُو بَصِيرٍ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَيْلَ أُمِّهِ مِسْعَرَ حَرْبٍ لَوْ كَانَ لَهُ أَحَدٌ» فَلَمَّا سَمِعَ ذَلِكَ عَرَفَ أَنَّهُ سَيَرُدُّهُ إِلَيْهِمْ فَخَرَجَ حَتَّى أَتَى سِيفَ الْبَحْرِ قَالَ: وَانْفَلَتَ أَبُو جَنْدَلِ بْنُ سُهَيْلٍ فَلَحِقَ بِأَبِي بَصِيرٍ فَجَعَلَ لَا يَخْرُجُ مِنْ قُرَيْشٍ رَجُلٌ قَدْ أَسْلَمَ إِلَّا لَحِقَ بِأَبِي بَصِيرٍ حَتَّى اجْتَمَعَتْ مِنْهُمْ عِصَابَةٌ فو الله مَا يَسْمَعُونَ بِعِيرٍ [ص:١١٨ خَرَجَتْ لِقُرَيْشٍ إِلَى الشَّامِ إِلَّا اعْتَرَضُوا لَهَا فَقَتَلُوهُمْ وَأَخَذُوا أَمْوَالَهُمْ فَأَرْسَلَتْ قُرَيْشٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تُنَاشِدُهُ اللَّهَ وَالرَّحِمَ لَمَّا أَرْسَلَ إِلَيْهِم فَمَنْ أَتَاهُ فَهُوَ آمِنٌ فَأَرْسَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وسلم إِلَيْهِم. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4042. मिस्वर बिन मखरम और मरवान बिन हकम रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ सुलह हुदैबिया के साल अपने हज़ार से चंद संकिरे ज़्यादा सहाबा के साथ रवाना हुए, जब आप ﷺ ज़ुल हलिफा पहुंचे तो आप ﷺ ने कुर्बानी के जानवरों के गले में कलादह डाला, कुर्बानी का निशान लगाया और इसी जगह से उमरा का इहराम बांधा, और चल पड़े हत्ता कि जब आप सबिया पर पहुंचे जहाँ से उतर कर अहले मक्का तक पहुंचा जाता था, वहां आप की सवारी आप को लेकर बैठ गई, लोगों ने हल हल कह कर उठाने की कोशिश की और कहा के कसवाअ किसी उज़्र के बगैर उड़ी कर गई, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “कसवाअ ने उड़ी नहीं की और उस का यह मिज़ाज भी नहीं, लेकिन हाथियों को रोकने वाले ने इसे रोक लिया है”, फिर f: “उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! वह अल्लाह की हुरुमात की ताज़ीम करने के मुतल्लिक मुझ से जो मुतालबा करेंगे में वही तस्लीम कर लूँगा”, फिर आप ने ऊंटनी को डांटा और वह तेज़ी के साथ उठ खड़ी हुई, आप अहले मक्का की गुज़र गाह छोड़ कर हुदैबिया के आखिरी किनारे पर उतरे जहाँ बराए नाम पानी था, लोग वहां से ठहरा ठहरा पानी हासिल करने लगे और थोड़ी देर में उन्होंने सारा पानी इस कुंवो से खींच लिया और रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में प्यास की शिकायत की तो आप ने अपनी तरकशी से तीर निकाला, फिर उन्हें हुक्म फ़रमाया के वह इसे इस (पानी) में रख दें, अल्लाह की क़सम! इन के लिए पानी खूब उबलता रहा हत्ता के वह इस जगह से अस्वदा हो कर वापस हुए, वह इसी असना में थे की हदिल बिन वरका अल ख़ज़ाई खुज़ाअत के कुछ लोगों के साथ आया, फिर उरवा बिन मसउद आप ﷺ के पास आया, और हदीस को आगे बयान किया, के सुहैल बिन अम्र आया तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “लिखो यह वह मुआयदा है जिस पर मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ ने सुलह की”, (इस पर) सुहैल ने कहा: अगर हमें यकीन होता के आप अल्लाह के रसूल हैं, तो हम आप को बैतुल्लाह से क्यों रोकते और आप से किताल क्यों करते? बल्कि आप मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिखे, रावी बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह की क़सम! मैं अल्लाह का रसूल हूँ अगरचे तुमने मेरी तकज़ीब की है, (अच्छा) लिखो मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह, फिर सुहैल ने कहा: और इस शर्त पर मुआयदा है के अगर हमारी तरफ से कोई आदमी, ख्वाह वह आप के दीन पर हो, आप के पास आएगा, आप इसे हमें लौटाएंगे, जब तहरीर से फारिग़ हुए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने सहाबा से फ़रमाया: “खड़े हो जाओ कुर्बानी करो, फिर सर मुंडाओ”, फिर मोमिन औरते आई तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फरमाई: “इसे अहले ईमान जब मोमिन औरते हिजरत कर के आप के पास आए ....”, अल्लाह तआला ने उन्हें मना फ़रमाया के वह उन (मोमिन औरतो) को (कुफ्फार की तरफ) वापस न करे और उन्हें हुक्म फ़रमाया के वह हक़ महर वापस कर दे, फिर आप मदीना तशरीफ़ ले आए तो कुरैश के अबू बसीर, जो के मुसलमान थे, आप ﷺ की खिदमत में पहुँच गए, कुरैश ने उनकी तलाश में दो आदमी भेजे तो आप ﷺ ने उन्हें उन के हवाले कर दिया, वह उन्हें लेकर वहां से रवाना हुए हत्ता के जब वह ज़ुल हलिफा के मक़ाम पर पहुंचे तो उन्होंने वहां पड़ाव डाला और खजूरे खाने लगे, अबू बसीर रदियल्लाहु अन्हु ने इन दोनों में से एक से कहा: ए फलां! अल्लाह की क़सम! तुम्हारी यह तलवार बहोत उम्दा है, मुझे दिखाओ मैं भी देखूं, इस शख़्स ने इनको (तलवार) दे दी तो उन्होंने इसे एक ऐसी ज़र्ब लगाई के उस का काम तमाम कर दिया जबकि दूसरा फरार हो कर मदीना पहुँच गया और दोड़ता हुआ मस्जिद ए नबवी में दाखिल हो गया, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “इस शख़्स ने कोई खौफ ज़दाह मंजर देखा है”, और उस ने कहा: अल्लाह की क़सम! मेरा साथी क़त्ल कर दिया गया है और मैं क़त्ल किया की जाने वाला हूँ, इतने में अबू बसीर भी आ गए तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “उस की माँ बर्बाद हो, अगर साथी मिल जाए तो यह लड़ाई की आग भड़का देगा”, जब उन्होंने सुना तो वह समझ गए के आप मुझे उन

के हवाले कर देंगे, वह वहां से निकल कर साहिल समुन्दर पर गए, रावी बयान करते हैं, अबू जिंदल बिन सहल रदियल्लाहु अन्हु भी (मक्के से) भागे और अबू बसीर से आ मिले, अब कुरैश का जो भी आदमी इस्लाम ला कर भागता तो वह अबू बसीर से आ मिलता हत्ता के उनकी एक जमाअत बन गई, अल्लाह की क़सम! इनको मुल्क ए शाम के लिए रवाना होने वाले किसी भी कुरैश काफले का पता चलता तो वह उस से छेड़ छाड़ करते, उन्हें क़त्ल करते और उनका माल छीन लेते, कुरैश ने नबी ﷺ को अल्लाह और रिश्तेदारी का वास्ते देते हुए यह पैग़ाम भेजा के आप उन्हें अपने पास बुला लें, अब जो शख़्स आप के पास जाए तो वह मामून रहेगा (इस पर) नबी ﷺ ने उन्हें अपने पास बुला भेजा| (बुखारी)

رواه البخاری (1694)

٤٠٤٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: صَالَحَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمُشْرِكِينَ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ عَلَى ثَلَاثَةِ أَشْيَاءَ: عَلَى أَنَّ مَنْ أَتَاهُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ رَدَّهُ إِلَيْهِمْ وَمَنْ أَتَاهُمْ مِنَ الْمُسْلِمِينَ لَمْ يَرُدُّوهُ وَعَلَى أَنْ يَدْخُلَهَا مِنْ قَابِلٍ وَيُقِيمَ بِهَا ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ وَلَا يَدْخُلَهَا إِلَّا بِجُلُبَّانِ السِّلَاحِ وَالسَّيْفِ وَالْقَوْسِ وَنَحْوِهِ فَجَاءَ أَبُو جَنْدَلٍ يَحْجِلُ فِي قُيُودِهِ فرده إِلَيْهِم

4043. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने हुदैबिया के रोज़ मुशरिकीन से तीन शराइत पर सुलह की, मुशरिकीन में से जो शख़्स आप के पास आएगा इसे वापस किया जाएगा, और मुसलमानों की तरफ से जो उन के पास आएगा तो उसे वापस नहीं किया जाएगा और वह अगले साल मक्का आएँगे और तीन दिन कयाम करेंगे और वह अपना अस्लिहा तलवार कमान वगैरा छिपा कर (नियाम में बंद कर के) लाएँगे, इतने में अबू जिंदल रदियल्लाहु अन्हु अपने बेड़ियों में जकड़े हुए आए तो आप ﷺ ने उन्हें वापस कर दिया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2698) و مسلم (92 / 1783)، (4631)

٤٠٤٤ - (صَحِيح) وَعَن أنس: أَنَّ قُرَيْشًا صَالَحُوا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاشْتَرَطُوا عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّ مَنْ جَاءَنَا مِنْكُمْ لَمْ نَرُدَّهُ عَلَيْكُمْ وَمَنْ جَاءَكُمْ مِنَّا رَدَدْتُمُوهُ عَلَيْنَا فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَنَكْتُبُ هَذَا؟ قَالَ: «نَعَمْ إِنه من ذهبَ منَّا إِليهم فَأَبْعَدَهُ اللَّهُ وَمَنْ جَاءَنَا مِنْهُمْ سَيَجْعَلُ اللَّهُ لَهُ فرجا ومخرجاً» . رَوَاهُ مُسلم

4044. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के कुरैश ने नबी ﷺ से सुलह की तो उन्होंने नबी ﷺ से यह शर्त लगाया की के तुम्हारी तरफ से जो शख़्स हमारे पास आएगा तो हम इसे तुम्हें वापस नहीं करेंगे, और जो शख़्स हमारी तरफ से तुम्हारे पास आएगा तो तुम उसे हमें वापस करोगे, सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या हम (ये शर्त) लिख दें? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, जो शख़्स हमारी तरफ से उनकी तरफ जाएगा तो अल्लाह ने इसे दूर कर दिया और जो शख़्स उनकी तरफ से हमारे पास आएगा तो अल्लाह उस के लिए अनकरीब कोई खलासी की राहे पैदा फरमादेगा”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (93 / 1784)، (4632)

٤٠٤٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَائِشَة قَالَتْ فِي بَيْعَةِ النِّسَاءِ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَمْتَحِنُهُنَّ بِهَذِهِ الْآيَة: (يَا أَيُّها النبيُّ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم إِذا جاءكَ المؤمناتُ يبايعنكَ)»» فَمَنْ أَقَرَّتْ بِهَذَا الشَّرْطِ مِنْهُنَّ قَالَ لَهَا: «قَدْ بَايَعْتُكِ» كَلَامًا يُكَلِّمُهَا بِهِ وَاللَّهِ مَا مَسَّتْ يَدُهُ يَدَ امْرَأَةٍ قَطُّ فِي الْمُبَايَعَةِ

4045. आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने औरतों की बैत के बारे में फ़रमाया के नबी ﷺ इस आयत के मुताबिक उन का इम्तिहान लिया करते थे: “ए नबी जब मोमिन औरते आप के पास आए और इस बात पर आप से बैत करे ….”, तो उनमें से जो इन शराइत की पाबन्दी का इकरार कर लेती तो आप ﷺ इसे फरमाते: “मैंने तुम से बैत ले ली”, आप उन से बैत फ़क़त ज़बानी तौर पर लेते, अल्लाह की क़सम! बैत करते वक़्त आप का हाथ कभी किसी औरत के हाथ से नहीं लगा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2713) و مسلم (88 / 1866)، (4834)

بَاب الصُّلْح • सुलह का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٠٤٦ - (لم تتمّ دراسته) عَن المِسْوَرِ وَمَرْوَانَ: أَنَّهُمُ اصْطَلَحُوا عَلَى وَضْعِ الْحَرْبِ عَشْرَ سِنِينَ يَأْمَنُ فِيهَا النَّاسُ وَعَلَى أَنَّ بَيْنَنَا عَيْبَةً مَكْفُوفَةً وَأَنَّهُ لَا إِسْلَالَ وَلَا إِغْلَالَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4046. मिस्वर और मरवान से रिवायत है के उन्होंने दस साल लड़ाई बंद रखने का मुआयदा किया, इस अरसा में लोग अमन से रहेंगे ना किसी गलत फहमी का शिकार होंगे और न एक दूसरे पर हाथ उठाएंगे (जान व माल का ताहफ्फुज़ होगा) | (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (2766)

٤٠٤٧ - (جيد) وَعَنْ صَفْوَانَ بْنِ سُلَيْمٍ عَنْ عِدَّةٍ مِنْ أَبْنَاءِ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ آبَائِهِمْ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَلَا مَنْ ظَلَمَ مُعَاهِدًا أَوِ انْتَقَصَهُ أَوْ كَلَّفَهُ فَوْقَ طَاقَتِهِ أَوْ أَخَذَ مِنْهُ شَيْئًا بِغَيْرِ طِيبِ نَفْسٍ فَأَنَا حَجِيجُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4047. सफवान बिन सलीम रहिमहुल्लाह रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा के बेटो की एक जमाअत से और वह अपने आबाअ से रिवायत करते हैं, और वह रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने फ़रमाया: “सुन लो! जिस ने किसी जिम्मी शख़्स पर ज़ुल्म किया या उसकी हक़ तलफी कि या उसकी ताकत से ज़्यादा उस पर जिज़िया

लगाया या उसकी रज़ामंदी के बगैर उस से कोई चीज़ ली तो रोज़ ए कियामत में उसकी तरफ से झगड़ा करूँगा”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3052) * عدة ابناء اصحاب رسول الله صلى الله عليه و آله وسلم مجهولون كلهم

٤٠٤٨ - (صَحِيح) وَعَن أميمةَ بنت رقيقَة قَالَتْ: بَايَعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي نِسْوَةٍ فَقَالَ لَنَا: «فِيمَا اسْتَطَعْتُنَّ وَأَطَقْتُنَّ» قُلْتُ: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَرْحَمُ بِنَا مِنَّا بِأَنْفُسِنَا قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ بَايِعْنَا تَعْنِي صَافِحْنَا قَالَ: «إِنَّمَا قَوْلِي لِمِائَةِ امْرَأَةٍ كَقَوْلِي لِامْرَأَةٍ وَاحِدَةٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَمَالِكٌ فِي الْمُوَطَّأ

4048. उमय्मा बिन्ते रुकैका रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने औरतों की जमाअत के साथ नबी ﷺ की बैत की तो आप ﷺ ने हमें फ़रमाया: “(मैंने उन उमूर में तुम्हारी बैत ली) जिन की तुम इस्तिताअत और ताकत रखती हो”, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह और उस के रसूल हम पर हमारी जानो से भी ज़्यादा मेहरबान है, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हम से बैत लें यानी हम से मुसाफा करे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सो औरतो के लिए मेरी बात वही है जो एक औरत के लिए है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه [الترمذى (1597 وقال : حسن صحيح) و النسائى (7 / 149 ح 4186) و ابن ماجه (2874) و مالک (2 / 982 ح 1908)]

بَاب الصُّلْح • सुलह का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٠٤٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: اعْتَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي ذِي الْقَعْدَةِ فَأَبَى أَهْلُ مَكَّةَ أَنْ يَدَعُوهُ يَدْخُلُ مَكَّةَ حَتَّى قَاضَاهُمْ عَلَى أَنْ يَدْخُلَ يَعْنِي مِنَ الْعَامِ الْمُقْبِلِ [ص:١١٨ يُقِيمُ بِهَا ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ فَلَمَّا كَتَبُوا الْكِتَابَ كَتَبُوا: هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ. قَالُوا: لَا نُقِرُّ بِهَا فَلَوْ نَعْلَمُ أَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا منعناك وَلَكِنْ أَنْتَ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ فَقَالَ: «أَنَا رَسُولُ اللَّهِ وَأَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ» . ثُمَّ قَالَ لِعَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ: " امْحُ: رَسُولَ اللَّهِ " قَالَ: لَا وَاللَّهِ لَا أَمْحُوكَ أَبَدًا فَأَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَلَيْسَ يُحْسِنُ يَكْتُبُ فَكَتَبَ: " هَذَا مَا قَاضَى عَلَيْهِ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ: لَا يُدْخِلُ مَكَّةَ بِالسِّلَاحِ إِلَّا السَّيْفَ فِي الْقِرَابِ وَأَنْ لَا يَخْرُجَ مِنْ أَهْلِهَا بِأَحَدٍ إِنْ أَرَادَ أَنْ يَتْبَعَهُ وَأَنْ لَا يَمْنَعَ مِنْ أَصْحَابِهِ أَحَدًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُقِيمَ بِهَا " فَلَمَّا دَخَلَهَا وَمَضَى الْأَجَلُ أَتَوْا عَلِيًّا فَقَالُوا: قُلْ لِصَاحِبِكَ: اخْرُجْ عَنَّا فَقَدْ مَضَى الْأَجَلُ فَخَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

4049. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने जुल कअदा में उमरा करने का इरादा फ़रमाया तो अहले मक्का ने इनकार कर दिया के वह आप को मक्का में दाखिल होने की इजाज़त दें हत्ता के आप ने उन से इस बात पर सुलह की के आप आइन्दा साल आएँगे, और वहां तीन रोज़ कयाम करेंगे, जब उन्होंने

तहरीर में आप ﷺ से यह लिखवाना चाहा के यह वह बात है जिस पर मुहम्मद रसूल अल्लाह (ﷺ) ने सुलह की, उन्होंने कहा, हम उस का इकरार नहीं करते, अगर हम जानते के आप अल्लाह के रसूल! है, तो हम आप को न रोकते, लेकिन आप मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं रसूल अल्लाह हूँ और मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हूँ", फिर आप ने अली रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: "लफ्ज़ रसूल अल्लाह मिटा दें", उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह की क़सम! मैं आप (के नाम) को नहीं मिटाऊंगा, चुनांचे रसूलुल्लाह ﷺ ने कलम हाथ में लिया जबकि आप बेहतर तौर पर नहीं लिख सकते थे, आप ने लिखा के यह सुलह नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की तरफ से है जब आप मक्का में दाखिल होंगे तो तलवार मियान में रखेंगे, और मक्का वालो में से अगर कोई आदमी आप के साथ जाना चाहे तो आप इसे अपने साथ नहीं लेकर जाएँगे और अगर आप के सहाबा में से कोई कयाम करना चाहेगा आप इसे मना नहीं करेंगे, चुनांचे जब (अगले साल) वह मक्के में आए और मुद्दत कयाम पूरी हो गई तो वह लोग अली रदियल्लाहु अन्हु के पास आए और कहा: अपने साथी से कहो के मुद्दते कयाम पूरी हो चुकी है लिहाज़ा यहाँ से चले जाए, नबी ﷺ तशरीफ़ ले आए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2699) و مسلم (90 / 1783)، (4629)

بَابُ إِخْرَاجِ الْيَهُودِ مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ • यहूदियों को जज़ीरा अरब से निकालने का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٤٠٥٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أبي هُرَيْرَة قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ فِي الْمَسْجِدِ خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «انْطَلِقُوا إِلَى يهود» فخرجنا مَعَه حَتَّى جِئْنَا بَيت الْمِدَارِس فَقَامَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «يَا مَعْشَرَ يَهُودَ أَسْلِمُوا تَسْلَمُوا اعْلَمُوا أَنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ وَلِرَسُولِهِ وَأَنِّي أُرِيدُ أَنْ أُجْلِيَكُمْ مِنْ هَذِهِ الْأَرْضِ. فَمَنْ وَجَدَ مِنْكُمْ بِمَالِهِ شَيْئا فليبعه»

4050. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम मस्जिद में थे इसी दौरान नबी ﷺ तशरीफ़ लाए और आप ﷺ ने फ़रमाया: "(मेरे साथ) यहूद की तरफ चलो", हम आप के साथ चले हत्ता के हम मदरसे में पहुंचे तो नबी ﷺ ने खड़े हो कर फ़रमाया: "जमाअत ए यहूद! इस्लाम कबूल कर लो, बच जाओगे, जान लो! ज़मीन, अल्लाह और उस के रसूल की है, मैं चाहता हूँ की मैं तुम्हें इस सर ज़मीन से निकाल दू, तुम में से जो शख़्स अपने माल में से कोई चीज़ पाए तो वह इसे बेच डाले"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3167) و مسلم (61 / 1765)، (4591)

٤٠٥١ - (صَحِيح) وَعَن ابْن عمر قَالَ: قَامَ عُمَرُ خَطِيبًا فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ عَامَلَ يَهُودَ خَيْبَرَ عَلَى أَمْوَالِهِمْ وَقَالَ: «نُقِرُّكُمْ مَا أَقَرَّكُمُ اللَّهُ» . وَقَدْ رَأَيْتُ إِجْلَاءَهُمْ فَلَمَّا أَجْمَعَ عُمَرُ عَلَى ذَلِكَ أَتَاهُ أَحَدُ بَنِي أَبِي الحُقَيق فَقَالَ:

يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ أَتُخْرِجُنَا وَقَدْ أَقَرَّنَا مُحَمَّدٌ وَعَامَلَنَا عَلَى الْأَمْوَالِ؟ فَقَالَ عُمَرُ: أَظَنَنْتَ أَنِّي نَسِيتُ قَوْلُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَيْفَ بِكَ إِذَا أُخْرِجْتَ مِنْ خَيْبَرَ تَعْدُو بِكَ قَلُوصُكَ لَيْلَةً بَعْدَ لَيْلَةٍ؟» فَقَالَ: هَذِهِ كَانَتْ هُزَيْلَةً مِنْ أَبِي الْقَاسِمِ فَقَالَ كَذَبْتَ يَا عَدُوَّ اللَّهِ فَأَجْلَاهُمْ عُمَرُ وَأَعْطَاهُمْ قِيمَةَ مَا كَانَ لَهُمْ مِنَ الثَّمَرِ مَالًا وَإِبِلًا وَعُرُوضًا مِنْ أَقْتَابٍ وَحِبَالٍ وَغَيْرِ ذَلِكَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

4051. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने खड़े हो कर खुत्बा दिया तो फ़रमाया रसूलुल्लाह ﷺ ने यहुदे खैबर को उन के अमवाल पर बरक़रार रखा और आप ﷺ ने फ़रमाया: “हम तुम्हें बरक़रार रखेंगे जब तक अल्लाह तुम्हें बरक़रार रखेगा”, और मैं उन्हें निकालने का इरादा रखता हूँ, जब उमर रदियल्लाहु अन्हु ने उन्हें निकालने का पुख्ता इरादा कर लिया तो बनी अबू अल हकिक से एक आदमी उन के पास आया और उस ने कहा: अमीरुल मोमिनीन क्या आप हमें निकालते है जबकि मुहम्मद ﷺ ने हमें (अपने घरो में बरक़रार) रखा और हमें अमवाल पर भी काम करने दीया, (इस पर) उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: तुम्हारा क्या ख़याल है के मैं रसूलुल्लाह ﷺ के इस फरमान को भूल गया हूँ, तेरी क्या हालत होगी जब तुझे खैबर से निकाल दीया जाएगा और तेरी जवान ऊंटनी तेरे साथ दोड़ेगी, उस ने कहा के अबुल कासिम (ﷺ) की तरफ से मज़ाक था, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अल्लाह के दुश्मन तुम झूठ कह रहे हो, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने उन्हें जिला वतन कर दिया और उन्हें उन के फलों के बदले, माल, ऊंट, पालान और रस्सिया वगैरा दी| (बुखारी)

رواه البخارى (2730)

٤٠٥٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم أَوْصَى بِثَلَاثَةٍ: قَالَ: «أَخْرِجُوا الْمُشْرِكِينَ مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ وَأَجِيزُوا الْوَفْدَ بِنَحْوِ مَا كُنْتُ أُجِيزُهُمْ» . قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: وَسَكَتَ عَنِ الثَّالِثَةِ أَو قَالَ: فأنسيتها

4052. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने तीन चीजों की वसीयत फरमाई, फ़रमाया: “मुशरिकीन को जज़ीरा अरब से निकाल देना, वफद आए तो उन्हें उनकी ज़रूरत की चीज़े फराहम करना जैसे में उन्हें फराहम करता था”, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: आप ﷺ ने तीसरी चीज़ के मुतल्लिक ख़ामोशी इख़्तियार फरमाई, या इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने कहा तीसरी बात मुझे याद नहीं रही| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3053) و مسلم (20 / 1637)، (4232)

٤٠٥٣ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لأخرِجنَّ اليهودَ والنصارى من جزيرةِ الْعَرَب حَتَّى لَا أَدَعَ فِيهَا إِلَّا مُسْلِمًا» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَفِي رِوَايَةٍ: «لَئِنْ عِشْتُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ لَأُخْرِجَنَّ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ»

4053. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे बताया की उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मैं यहूद व नसारा को जज़ीरा अरब से निकाल दूंगा हत्ता कि मैं उस में सिर्फ मुसलमानों ही को रहने दूंगा”, मुस्लिम, और एक रिवायत में है: “अगर मैं इनशाअल्लाह जिंदा रहा तो मैं यहूद व नसारा को जज़ीरा अरब से निकाल दूंगा”| # उसमें इब्ने अब्बास (र अ) से मरवी एक ही हदीस है “ एक रिवायत में दो कबिले यानी दो दीन नहीं हो सकते”, जो के (بَاب الْجِزْيَة) जिज़िया का बयान में गुज़र चुकी है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (63 / 1767)، (4594)

بَابُ إِخْرَاجِ الْيَهُودِ مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ	यहूदियों को जज़ीरा अरब से निकालने का बयान
الْفَصْلُ الثَّانِي	दूसरी फस्ल

ليس فيه إلا حديث ابن عباس «لا تكون قبلتان» وقد مر في باب الجزية

इस में इब्ने अब्बास रदी अल्लाहु अन्हु से मरवी एक हदीस है: “एक रियासत में दो किबले (यानी दो दीन) नहीं हो सकते| जो के बाब अल जिज़िया में गुज़र चुकी है|

بَابُ إِخْرَاجِ الْيَهُودِ مِنْ جَزِيرَةِ الْعَرَبِ	यहूदियों को जज़ीरा अरब से निकालने का बयान
الْفَصْلُ الثَّالِث	तीसरी फस्ल

٤٠٥٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَجْلَى الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى مِنْ أَرْضِ الْحِجَازِ وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمَّا ظَهَرَ عَلَى أَهْلِ خَيْبَرَ أَرَادَ أَنْ يُخْرِجَ الْيَهُودَ مِنْهَا وَكَانَتِ الْأَرْضُ لَمَّا ظُهِرَ عَلَيْهَا لِلَّهِ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُسْلِمِينَ فَسَأَلَ الْيَهُودُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَتْرُكَهُمْ عَلَى أَنْ يَكْفُوا الْعَمَلَ وَلَهُمْ نِصْفُ الثَّمَرِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نُقِرُّكُمْ على ذَلِك مَا شِئْنَا» فَأُقِرُّوا حَتَّى أَجْلَاهُمْ عُمَرُ فِي إِمارته إِلى تَيماءَ وأريحاء

4054. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने यहूद व नसारा को सर ज़मीन हज्जाज़ से जिला वतन कर दिया, और जब रसूलुल्लाह ﷺ अहल खैबर पर ग़ालिब आए तो आप ने यहूद व नसारा को वहां से निकालने का इरादा फ़रमाया था, और जब आप इस सर ज़मीन पर ग़ालिब आए थे तो वह ज़मीन अल्लाह, उस के रसूल और मुसलमानों के लिए थी, यहूद ने रसूलुल्लाह ﷺ से दरख्वास्त की के वह उनकी ज़मीनों को छोड़ दे, ताकि वह (यहूद) खेती बाड़ी करे और पैदावार का आधा इन के लिए हो, तब रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जितना अरसा हम चाहेंगे तुम को रखेंगे”, उन्हें रखा गया हत्ता के उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अपने अमारत में उन्हें तय्मा और अर्याह की तरफ जिला वतन कर दिया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3152) و مسلم (6 / 1551)، (3967)

बَاب الْفَيْء • माल ए फै का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٠٥٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن مالكِ بن أوْسِ بنِ الحَدَثانِ قالَ: قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: إِنَّ اللَّهَ قَدْ خَصَّ رَسُولَهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي هَذَا الْفَيْءِ بِشَيْءٍ لَمْ عطه أحدا غيرَه ثُمَّ قَرَأَ (مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُم)»» إِلَى قولِه (قديرٌ)»» فكانتْ هَذِه خَالِصَة لرَسُول اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُنْفِقُ عَلَى أَهْلِهِ نَفَقَةَ سَنَتِهِمْ مِنْ هَذَا الْمَالِ. ثُمَّ يَأْخُذُ مَا بَقِيَ فَيَجْعَلُهُ مَجْعَلَ مَالِ اللَّهِ

4055. मालिक बिन औस बिन हद्सान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अल्लाह ने माल ए फै में जिस चीज़ के साथ अपने रसूल ﷺ को खास किया था, वह चीज़ आप के सिवा किसी और को नहीं की गई, फिर उन्होंने यह आयत तिलावत फरमाई: “अल्लाह ने उनमें से अपने रसूल को जो अता फ़रमाया .... कदीर तक”, यह रसूलुल्लाह ﷺ के लिए खास थी, आप इस माल से अपने अहल पर साल भर खर्च करते थे, और जो बाकी बच जाता वह आप ﷺ इस मुद में खर्च करते जहाँ अल्लाह का माल खर्च होना चाहिए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3094) و مسلم (49 / 1757)، (4576)

٤٠٥٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عمر قَالَ: كَانَتْ أَمْوَالُ بَنِي النَّضِيرِ مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِمَّا لَمْ يُوجِفِ الْمُسْلِمُونَ عَلَيْهِ بِخَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ فَكَانَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَالِصَة يُنْفِقُ عَلَى أَهْلِهِ نَفَقَةَ سَنَتِهِمْ ثُمَّ يَجْعَلُ مَا بَقِيَ فِي السِّلَاحِ وَالْكُرَاعِ عُدَّةً فِي سَبِيلِ الله

4056. उमर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, बनू नज़ीर का माल इस मुद में था जो अल्लाह ने अपने रसूल ﷺ को ख़ास तौर पर अता फ़रमाया क्योंकि इस के हुसूल के लिए मुसलमानों ने कोई लश्कर कशी नहीं की, चुनांचे यह रसूलुल्लाह ﷺ के लिए ख़ास था, आप इसे अपने अहल पर साल भर खर्च करते रहे और जो बच जाता इसे आप ﷺ अल्लाह की राह में जिहाद की तैयारीके लिए असला और घोड़ो पर खर्च कर दिया करते थे| (मुस्लिम)

متفق علیه ، رواه البخاری (2904) و مسلم (48 / 1757)، (4575)

माल ए फै का बयान — بَاب الْفَيْءِ

दूसरी फस्ल — الْفَصْلُ الأول

٤٠٥٧ - (لم تتمّ دراسته) عَن عوفِ بْنِ مَالِكٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا أَتَاهُ الْفَيْءُ قَسَمَهُ فِي يَوْمِهِ فَأَعْطَى الْآهِلَ حَظَّيْنِ وَأَعْطَى الْأَعْزَبَ حَظًّا [ص:١١٨ فَدُعِيتُ فَأَعْطَانِي حَظَّيْنِ وَكَانَ لِي أَهْلٌ ثُمَّ دُعِيَ بَعْدِي عَمَّارُ بْنُ يَاسِرٍ فَأُعْطِيَ حَظًّا وَاحِدًا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4057. ऑफ बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह ﷺ के पास माल ए फै आते तो आप इसे इसी रोज़ तकसीम फरमा देते, आप शादी शुदा को दो हिस्से देते और कुंवारे को एक हिस्सा देते, मुझे बुलाया गया और आप ने मुझे दो हिस्से दिए क्योंकि मैं शादी शुदा था, फिर मेरे बाद अम्मार बिन यासिर रदियल्लाहु अन्हुमा को बुलाया गया तो उन्हें एक हिस्सा दिया गया| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ ابوداؤد (2953)

٤٠٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَوَّلُ مَا جَاءَهُ شيءٌ بدَأَ بالمحرَّرينَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4058. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा की जब आप के पास माल ए फै में से कोई चीज़ आती तो आप सबसे पहले उन्हें अता फरमाते जो (गुलामी से) आज़ाद किए गए होते थे| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (2951)

٤٠٥٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتَى بطبية فِيهَا خَرَزٌ فَقَسَمَهَا لِلْحُرَّةِ وَالْأَمَةِ قَالَتْ عَائِشَةُ: كَانَ أَبِي يَقْسِمُ لِلْحُرِّ وَالْعَبْدِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4059. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ की खिदमत में नगीने की एक थेली पेश की गई तो आप ने इसे आज़ाद औरतो और लोंदियो के बिच में तकसीम फरमा दिया, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: मेरे वालिद (अबू बक्र (र)) आज़ाद और गुलाम हर दो में तकसीम फ़रमाया करते थे| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2952)

٤٠٦٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مالكِ بن أوسِ بن الحدَثانِ قَالَ: ذكر عمر بن الْخطاب يَوْمًا الْفَيْءَ فَقَالَ: مَا أَنَا أَحَقُّ بِهَذَا الْفَيْءِ مِنْكُمْ وَمَا أَحَدٌ مِنَّا بِأَحَقَّ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا أَنَّا عَلَى مَنَازِلِنَا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ وَقَسْمِ رَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَالرَّجُلُ وَقِدَمُهُ وَالرَّجُلُ وَبَلَاؤُهُ وَالرَّجُلُ وَعِيَالُهُ وَالرَّجُلُ وَحَاجَتُهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4060. मालिक बिन औस बिन हद्सान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने एक रोज़ माल ए फै का ज़िक्र किया तो फ़रमाया: न में इस माल ए फै का तुम से ज़्यादा हक़दार हो और न हम में से कोई और उस का ज़्यादा हक़दार है, हम अल्लाह अज्ज़वजल की किताब और उस के रसूल ﷺ की तकसीम के मुताबिक अपने दरजे पर है, कोई आदमी अपने कबूले इस्लाम में सबकत रखने वाला है, कोई अपने सजाअत वाला है, कोई आदमी अयाल दार है और कोई आदमी ज़रूरत मंद है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2950) * فيه محمد بن اسحاق مدلس و عنعن

٤٠٦١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: قَرَأَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنهُ: (إِنَّما الصَّدَقاتُ للفقراءِ والمساكينِ)»» حَتَّى بَلَغَ (عَلِيمٌ حَكِيمٌ)»» فَقَالَ: هَذِهِ لِهَؤُلَاءِ. ثُمَّ قَرَأَ (وَاعْلَمُوا أَنَّ مَا غَنِمْتُمْ مِنْ شيءٍ فإِنَّ للَّهِ خُمُسَه وللرَّسولِ)»» حَتَّى بلغَ (وابنِ السَّبِيلِ)»» ثُمَّ قَالَ: هَذِهِ لِهَؤُلَاءِ. ثُمَّ قَرَأَ (مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقرى)»» حَتَّى بلغَ (للفقراءِ)»» ثمَّ قرأَ (والذينَ جاؤوا منْ بعدِهِم)»» ثُمَّ قَالَ: هَذِهِ اسْتَوْعَبَتِ الْمُسْلِمِينَ عَامَّةً فَلَئِنْ عِشْتُ فَلَيَأْتِيَنَّ الرَّاعِيَ وَهُوَ بِسَرْوِ حِمْيَرَ نَصِيبُهُ مِنْهَا لَمْ يَعْرَقْ فِيهَا جَبِينُهُ. رَوَاهُ فِي شرح السّنة

4061. मालिक बिन औस बिन हद्सान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने यह आयत “ सदकात (ज़कात) तो फुकराअ और मसाकिन के लिए है ..... अलीम हकिम”, तक तिलावत फरमाई, फ़रमाया: यह (आयत) इन के लिए है, फिर यह आयत तिलावत फरमाई: “जान लो जो तुमने माल ए गनीमत हासिल किया उस में से खुमुस अल्लाह और उस के रसूल के लिए है, ... मुसाफ़िर” तक तिलावत फरमाई, फिर फ़रमाया: यह इन के लिए है, फिर यह आयत तिलावत फरमाई: “अल्लाह ने बस्ती वालो से अपने रसूल को जो दे ..... हत्ता के वह फुकराअ के लिए” तक पहुंचे, फिर यह आयत तिलावत फरमाई: “वो लोग जो उन के बाद आए”, फिर फ़रमाया: यह तमाम मुसलमानों के लिए है, अगर में जिंदा रहा तो सर्विहिम्यर (यमन के शहर) के

चरवाहे को मशक्कत उठाए बगैर उस से उस का हिस्सा पहुँच जाएगा| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه البغوى فى شرح السنة (11 / 138 ح 2740) [و عبد الرزاق فى المصنف (20040)]

٤٠٦٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعنهُ قَالَ: كانَ فِيمَا احتجَّ فيهِ عُمَرُ أَنْ قَالَ: كَانَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثُ صَفَايَا بَنُو النَّضِيرِ وخيبرُ وفَدَكُ فَأَمَّا بَنُو النَّضِيرِ فَكَانَتْ حَبْسًا لِنَوَائِبِهِ وَأَمَّا فَدَكُ فَكَانَتْ حَبْسًا لِأَبْنَاءِ السَّبِيلِ وَأَمَّا خَيْبَرُ فَجَزَّأَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَلَاثَةَ أَجزَاء: جزأين بينَ المسلمينَ وجزءً نَفَقَةً لِأَهْلِهِ فَمَا فَضُلَ عَنْ نَفَقَةِ أَهْلِهِ جَعَلَهُ بَيْنَ فُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4062. मालिक बिन औस बिन हद्सान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि उमर रदियल्लाहु अन्हु का इस्तदलाल (जिस बात से दलील कायम की) यह था रसूलुल्लाह ﷺ के लिए तीन मकामात का माल मखसूस था, बनू नज़ीर, खैबर और फदक का, बनू नज़ीर की ज़मीन वह आप ﷺ की ज़ुरुरियात के लिए महफ़ूज़ थी फदक मुसाफिरों के लिए महफ़ूज़ और खैबर की ज़मीन को रसूलुल्लाह ﷺ ने तीन हिस्सों में तकसीम कर दिया था, दो हिस्से मुसलमानों के लिए और एक हिस्सा अपने अहले खाना के नफ्का के लिए मुकर्रर फ़रमाया, आप के अहले खाना के नफ्का से जो बच जाता वह आप फुकराअ, मुहाजरिन के दरमियान तकसीम फरमा देते| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2967) * الزهرى صرح بالسماع فى اصل الحديث و لكنه عنعن فى هذا اللفظ وهو مدلس مشهور

बَاب الْفَيْء • माल ए फै का बयान

الْفَصْل الأول • तीसरी फस्ल

٤٠٦٣ - (لم تتمّ دراسته) عَن المغيرةِ قَالَ: إِنَّ عمَرَ بنَ عبد العزيزِ جَمَعَ بَنِي مَرْوَانَ حِينَ اسْتُخْلِفَ فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَتْ لَهُ فَدَكُ فَكَانَ يُنْفِقُ مِنْهَا وَيَعُودُ مِنْهَا عَلَى صَغِيرِ بَنِي هَاشِمٍ وَيُزَوِّجُ مِنْهَا أَيِّمَهُمْ وَإِنَّ فَاطِمَةَ سَأَلَتْهُ أَنْ يَجْعَلَهَا لَهَا فَأَبَى فَكَانَتْ كَذَلِكَ فِي حَيَاةَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَيَاتِهِ حَتَّى مَضَى لسبيله فَلَمَّا وُلِّيَ أَبُو بكرٍ علم فِيهَا بِمَا عَمِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي حَيَاتِهِ حَتَّى مَضَى لِسَبِيلِهِ فَلَمَّا أَنْ وُلِّيَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ عَمِلَ فِيهَا بِمِثْلِ مَا عَمِلَا حَتَّى مَضَى لِسَبِيلِهِ ثُمَّ اقْتَطَعَهَا مَرْوَانُ ثُمَّ صَارَتْ لِعُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ فَرَأَيْتُ أَمْرًا مَنَعَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاطِمَةَ لَيْسَ لِي بِحَقٍّ وَإِنِّي أُشْهِدُكُمْ أَنِّي رَدَدْتُهَا عَلَى مَا كَانَتْ. يَعْنِي عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَبِي بَكْرٍ وعمَرَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4063. मुगिरा रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, कि उमर बिन अब्द अज़ीज़ रहिमहुल्लाह जब खलीफा बनाए गए

तो उन्होंने बनू मरवान को जमा किया और फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ के लिए फदक मखसूस था, आप उस में से (अपने अहले खाना पर) खर्च करते, बनू हाशिम के छोटो पर खर्च करते और इसी में से उन के गैर शादी शुदा लोगों की शादी किया करते थे, फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा ने आप ﷺ से दरख्वास्त की के फदक आप उन्हें अता फरमादे, आप ने इनकार फ़रमाया, रसूलुल्लाह ﷺ की जिंदगी में मुआमला इसी तरह रहा, आप के बाद जब अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु खलीफा बनाए गए तो उन्होंने भी वैसे ही किया जैसे रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने हयाते मुबारक में किया था, हत्ता के वह भी अल्लाह को प्यारे हो गए, जब उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु खलीफा बनाए गए तो उन्होंने भी वैसे ही किया जैसे इन दोनों हज़रात ने किया था, हत्ता के वह भी अल्लाह को प्यारे हो गए फिर मरवान ने इसे जागीर बना लिया, फिर वह उमर बिन अब्द अज़ीज़ के लिए हो गई, मैंने देखा के यह वह माल है जो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा को नहीं दिया, लिहाज़ा इसे लेने का मुझे भी कोई हक़ नहीं, मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने इसे इसी जगह लौटा दिया है जहाँ पर रसूलुल्लाह ﷺ और अबू बक्र व उमर रदियल्लाहु अन्हु के दौर मैं था| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2972) * فيه مغيرة بن مقسم مدلس و عنعن و السند منقطع

शिकार और हलाल जानवरों का बयान • كتاب الصَّيْد والذبائح

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٤٠٦٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن عديِّ بنِ حاتِمٍ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أَرْسَلْتَ كَلْبَكَ فَاذْكُرِ اسْمَ اللَّهِ فَإِنْ أَمْسَكَ عَلَيْكَ فَأَدْرَكْتَهُ حَيًّا فَاذْبَحْهُ وَإِنْ أَدْرَكْتَهُ قَدْ قَتَلَ وَلَمْ يَأْكُلْ مِنْهُ فَكُلْهُ وَإِنْ أَكَلَ فَلَا تَأْكُلْ فَإِنَّمَا أَمْسَكَ عَلَى نَفْسِهِ فَإِنْ وَجَدْتَ مَعَ كَلْبِكَ كَلْبًا غَيْرَهُ وَقَدْ قَتَلَ فَلَا تَأْكُلْ فَإِنَّكَ لَا تَدْرِي أَيُّهُمَا قَتَلَ. وَإِذَا رَمَيْتَ بِسَهْمِكَ فَاذْكُرِ اسْمَ اللَّهِ فَإِنْ غَابَ عَنْكَ يَوْمًا فَلَمْ تَجِدْ فِيهِ إِلَّا أَثَرَ سَهْمِكَ فَكُلْ إِنْ شِئْتَ وَإِنْ وَجَدْتَهُ غَرِيقًا فِي الْمَاءِ فَلَا تَأْكُلْ»

4064. अदि बिन हातिम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “जब तुम अपने कुत्ता छोड़ो तो अल्लाह का नाम लेकर छोड़ो, अगर वह तुम्हारे लिए पकड़ ले और तुम उसे जिंदा पा लो तो उसे जिबह करो, अगर तुम उसे इस हाल में पाओ के उस ने (शिकार को) क़त्ल कर दिया और उस से खाया नहीं तो फिर इसे खालो, और अगर उस ने खा लिया है तो फिर न खाओ क्योंकि उस ने अपने लिए पकड़ा है, अगर तुम अपने कुत्ते के साथ दूसर कुत्ता देखो और शिकार को मुर्दा पाओ तो उसे मत खाओ क्योंकि तुम नहीं जानते की इन दोनों में से किस ने क़त्ल किया, और जब तुम तीर चलाओ तो अल्लाह का नाम लेकर चलाओ, फिर अगर वह शिकार तुम्हें एक रोज़ बाद मिले और तुम उस में सिर्फ अपने तीर ही का निशान देखो तो फिर अगर चाहो तो खालो, और अगर तुम उसे पानी में डूबा हुआ पाओ तो उसे मत खाओ”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (175) و مسلم (6 / 1929)، (4981)

٤٠٦٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا نُرْسِلُ الْكِلَابَ الْمُعَلَّمَةَ قَالَ: «كُلْ مَا أَمْسَكْنَ عَلَيْكَ» قُلْتُ: وَإِنْ قَتَلْنَ؟ قَالَ: «وَإِنْ قَتَلْنَ» قُلْتُ: إِنَّا نَرْمِي بِالْمِعْرَاضِ. قَالَ: «كُلُّ مَا خزق وَمَا أَصَاب بعرضه فَقتله فَإِنَّهُ وقيذ فَلَا تَأْكُل»

4065. अदि बिन हातिम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हम (शिकार के लिए) सधाए हुए कुत्ते छोड़ते है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस ने जो तुम्हारे लिए पकड़ा है खा लें”, मैंने अर्ज़ किया: अगर वह मार डाले? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगरचे वह मार डाले”, मैंने अर्ज़ किया: हम मेअराज़ (परो के बगैर तीर) फेंकते है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर वह नोक की तरफ से शिकार में घुस जाए तो खा लें और अगर इसे चोड़ाई वाले हिस्से की तरफ से लगे और वह क़त्ल हो जाए तो उसे मत खाए, क्योंकि वह चोट लगने से मरा है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5477) و مسلم (1 / 1929)، (4972)

٤٠٦٦ - (مُتَّفق علهي) وَعَن أبي ثَعْلَبَة الْخُشَنِي قَالَ: قُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ إِنَّا بِأَرْضِ قوم أهل كتاب أَفَنَأْكُلُ فِي آنِيَتِهِمْ وَبِأَرْضِ

صَيْدٍ أَصِيدُ بِقَوْسِي وَبِكَلْبِي الَّذِي لَيْسَ بِمُعَلَّمٍ وَبِكَلْبِي الْمُعَلَّمِ فَمَا يصلح؟ قَالَ: «أما ذَكَرْتَ مِنْ آنِيَةِ أَهْلِ الْكِتَابِ فَإِنْ وَجَدْتُمْ [ص:١١٩ غَيْرَهَا فَلَا تَأْكُلُوا فِيهَا وَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فاغسلوها وَكُلُوا فِيهَا وَمَا صِدْتَ بِقَوْسِكَ فَذَكَرْتَ اسْمَ اللَّهِ فَكُلْ وَمَا صِدْتَ بِكَلْبِكَ الْمُعَلَّمِ فَذَكَرْتَ اسْمَ اللَّهِ فَكُلْ وَمَا صِدْتَ بِكَلْبِكَ غَيْرِ معلم فأدركت ذَكَاته فَكل»

4066. अबू सअलबा खुशनी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के नबी! हम अहले किताब की सर ज़मीन पर रिहाइश पज़ीर है, क्या हम उन के बर्तनों में खा लिया करे? और इसी सर ज़मीन पर में अपने कमान और अपने गैर साधाए हुए और साधाए हुए कुत्ते के ज़रिए शिकार करता हूँ, तो मेरे लिए क्या दुरुस्त है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने जो अहले किताब के बर्तनों का ज़िक्र किया है, तो अगर तुम्हें उन के अलावा बर्तन मयस्सर आजाए तो फिर उनमें मत खाओ, और अगर मयस्सर न आए तो फिर उन्हें धो कर उनमें खालो, और तुमने अपने कमान से जो शिकार किया है अगर तुमने उस पर अल्लाह का नाम ज़िक्र किया है, तो खालो और तुमने जो अपने साधाए हुए कुत्ते के साथ शिकार किया है और अल्लाह का नाम ज़िक्र किया है, तो खालो, और तुमने अपने गैर साधाए हुए कुत्ते से जो शिकार किया है अगर इसे जिबह कर लो तो खालो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5478) و مسلم (8 / 1930)، (4983)

٤٠٦٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا رَمَيْتَ بِسَهْمِكَ فَغَابَ عَنْكَ فَأَدْرَكْتَهُ فَكُلْ مَا لَمْ يُنْتِنْ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4067. अबू सअलबा खुशनी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम ने अपना तीर (शिकार पर) फेका और वह (शिकार) तेरी नज़रों से ओझल हो गया, फिर तुमने इसे पा लिया तो अगर वह बदबूदार नहीं हुआ तो इसे खा सकते हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (9 / 1931)، (4985)

٤٠٦٨ - (صَحِيح) وَعَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ فِي الَّذِي يُدْرِكُ صَيْدَهُ بَعْدَ ثَلَاثٍ: «فكله مَا لم ينتن» . رَوَاهُ مُسلم

4068. अबू सअलबा खुशनी रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने इस शख़्स के बारे में जो तीन रोज़ बाद अपना शिकार पाता है, फ़रमाया: “अगर वह बदबूदार नहीं हुआ तो इसे खा ले”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (10 / 1931)، (4986)

٤٠٦٩ - (صَحِيح) وَعَن عَائِشَة قَالَت: قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ هُنَا أَقْوَامًا حَدِيثٌ عَهْدُهُمْ بِشِرْكٍ يَأْتُونَنَا بِلُحْمَانٍ لَا نَدْرِي

أَيَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا أَمْ لَا؟ قَالَ: «اذْكُرُوا أَنْتُم اسمَ اللَّهِ وكلوا» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

4069. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! यहाँ कुछ ऐसे लोग है जो नए नए मुसलमान हुए है, वह हमारे पास गोश्त लाते है, हम नहीं जानते के आया वह उस पर अल्लाह का नाम लेते है या नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम अल्लाह का नाम लो और खाओ”| (बुखारी)

رواه البخاری (2057)

٤٠٧٠ - (صَحِيح) وَعَن أبي الطُّفَيْل قَالَ: سُئِلَ عَلِيّ: هَلْ خَصَّكُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِشَيْءٍ؟ فَقَالَ: مَا خَصَّنَا بِشَيْءٍ لَمْ يَعُمَّ بِهِ النَّاسَ إِلَّا مَا فِي قِرَابِ سَيْفِي هَذَا فَأَخْرَجَ صَحِيفَةً فِيهَا: «لَعَنَ اللَّهُ مَنْ ذَبَحَ لِغَيْرِ اللَّهِ وَلَعَنَ اللَّهُ مَنْ سَرَقَ مَنَارَ الْأَرْضِ وَفِي رِوَايَةٍ مَنْ غَيَّرَ مَنَارَ الْأَرْضِ وَلَعَنَ اللَّهُ مَنْ لَعَنَ وَالِدَهُ وَلَعَنَ اللَّهُ مَنْ آوَى مُحْدِثًا» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4070. अबू तुफैल (आमिर बिन वासिला) बयान करते हैं, अली रदियल्लाहु अन्हु से दरियाफ्त किया गया, क्या रसूलुल्लाह ﷺ ने तुम्हें कोई खास चीज़ दी? उन्होंने ने फ़रमाया: आप ﷺ ने हमें कोई खास ऐसी चीज़ नहीं दी जो आप ने दीगर लोगों को न बताई हो, अलबत्ता यह चीज़ है जो के मेरी तलवार के मियान में है उन्होंने एक सहिफा निकाला उस में दर्ज था: “गैरुल्लाह के लिए जिबह करने वाले पर अल्लाह लानत करे, ज़मीन के निशान (हुदूद) चोरी करने वाले पर अल्लाह लानत करे”, और एक रिवायत में है: “जिस ने ज़मीन के निशानात (मिल्कती हुदूद) बदल डाले (अल्लाह उस पर लानत फरमाए) “ अपने वालिद पर लानत करने वाले पर अल्लाह लानत करे और बिदअती शख़्स को पनाह देने वाले शख़्स पर अल्लाह लानत करे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (47 / 1978)، (5126)

٤٠٧١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن رَافع بن خديج قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا لَاقُوا الْعَدُوَّ غَدًا وَلَيْسَتْ مَعَنَا مُدًى أَفَنَذْبَحُ بِالْقَصَبِ؟ قَالَ: " مَا أَنْهَرَ الدَّمَ وَذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ فَكُلْ لَيْسَ السِّنَّ وَالظُّفُرَ وَسَأُحَدِّثُكَ عَنْهُ: أَمَّا السِّنُّ فَعَظْمٌ وَأَمَّا الظُّفُرُ فَمُدَى الْحَبَشِ " وَأَصَبْنَا نَهْبَ إِبِلٍ وَغَنَمٍ فَنَدَّ مِنْهَا بِعِيرٌ فَرَمَاهُ رَجُلٌ بِسَهْمٍ فَحَبَسَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ [ص:١١٩ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ لِهَذِهِ الْإِبِلِ أَوَابِدَ كَأَوَابِدِ الْوَحْشِ فَإِذَا غَلَبَكُمْ مِنْهَا شَيْءٌ فَافْعَلُوا بِهِ هَكَذَا»

4071. राफीअ बिन ख़दीज रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हम कल दुश्मन से मुलाकात करने वाले हैं, जबकि हमारे पास छुरिया नहीं, क्या हम बांस की लकड़ी के साथ जिबह कर ले? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो खून बहा दे और जिस पर अल्लाह का नाम लिया जाए इसे खाओ, (जबके) दांत और नाख़ून के साथ जिबह करना दुरुस्त नहीं और मैं तुम्हें उस के मुतल्लिक तफ्सीला बताता हूँ दांत हड्डी है, और रहा नाख़ून तो वह हब्शियों की छुरिया है”, (कुफ्फार पर हमला करने के बाद) हम को ऊंट और बकरिया मिली, उनमें से एक ऊंट भाग खड़ा हुआ तो एक आदमी ने उस पर एक तीर चलाया और इसे रोक लिया, इस पर रसूलुल्लाह ﷺ

ने फरमाया: “उन जानवरों मैं भी वहशी जानवरों की तरह भागने वाले होते हैं, उनमें से जो बे काबू हो जाए तो तुम उस के साथ इसी तरह किया करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2488) و مسلم (20 / 1968)، (5092)

٤٠٧٢ - (صَحِيح) وَعَن كعبِ بنِ مَالك أنه كانَ لَهُ غَنَمٌ تُرْعَى بِسَلْعٍ فَأَبْصَرَتْ جَارِيَةٌ لَنَا بِشَاةٍ مِنْ غَنَمِنَا مَوْتًا فَكَسَرَتْ حَجَرًا فَذَبَحَتْهَا بِهِ فَسَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأمره بأكلها. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4072. काब बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उनकी बकरिया थी जो सलअ पहाड़ पर चढ़ रही थी, हमारी एक लौंडी ने बकरियों में से एक बकरी को मरने के करीब देखा तो उस ने एक पत्थर तोड़ा और उस के साथ इसे जिबह कर दिया, उन्होंने नबी ﷺ से मसअला दरियाफ्त किया तो आप ने उन्हें उस के खाने का हुक्म फ़रमाया| (बुखारी)

رواه البخاری (3304)

٤٠٧٣ - (صَحِيح) وَعَنْ شَدَّادِ بْنِ أَوْسٍ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى كَتَبَ الْإِحْسَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ فَإِذَا قَتَلْتُمْ فَأَحْسِنُوا الْقِتْلَةَ وَإِذَا ذَبَحْتُمْ فَأَحْسِنُوا الذَّبْحَ وَلْيُحِدَّ أَحَدُكُمْ شَفْرَتَهُ وَلْيُرِحْ ذَبِيحَتَهُ» . رَوَاهُ مُسلم

4073. शद्दाद बिन अवसी रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक अल्लाह ने हर चीज़ पर इहसान करना फ़र्ज़ कर दिया है, जब तुम क़त्ल करो तो अच्छे तरीके से क़त्ल करो, जब तुम जिबह करे तो अच्छे तरीके से जिबह करो, तुम में से हर एक अपने छुरी तेज़ कर ले और अपने ज़बिहा को आराम पहुंचाए"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (57 / 1955)، (5055)

٤٠٧٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْهَى أَنْ تُصْبَرَ بهيمةٌ أَو غيرُها للْقَتْل

4074. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना आप ﷺ ने किसी चोपाये या किसी और चीज़ को बांध कर क़त्ल करने से मना फ़रमाया”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5514) ، و مسلم (58 / 1956)، (5057)

٤٠٧٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَعَنَ مَنِ اتَّخَذَ شَيْئًا فِيهِ الرُّوحُ غَرَضًا

4075. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने इस शख़्स पर लानत फरमाई जो किस जानदार चीज़ को बांध कर निशाने बाज़ी करे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5515) و مسلم (59 / 1958)، (5061)

٤٠٧٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَتَّخِذُوا شَيْئًا فِيهِ الرُّوحُ غَرَضًا» . رَوَاهُ مُسلم

4076. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “किस जानदार चीज़ को (निशाने बाज़ी के लिए) निशाना न बनाओ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (58 م / 1957)، (5059)

٤٠٧٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الضَّرْبِ فِي الْوَجْهِ وَعَنِ الْوَسْمِ فِي الْوَجْه. رَوَاهُ مُسلم

4077. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने चेहरे पर मारने और चेहरे को दागने से मना फ़रमाया है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (106 / 2116)، (5550)

٤٠٧٨ - (صَحِيح) وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ عَلَيْهِ حِمَارٌ وَقَدْ وُسِمَ فِي وَجْهِهِ قَالَ: «لَعَنَ اللَّهُ الَّذِي وَسَمَهُ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4078. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ एक गधे के पास से गुज़रे जिसके चेहरे को दागा गया था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह इस शख़्स पर लानत फरमाए जिस ने इसे दाग दीया”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (107 / 2116)، (5552)

٤٠٧٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أنس قَالَ: غَدَوْتُ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ لِيُحَنِّكَهُ فَوَافَيْتُهُ فِي يَدِهِ الْمِيسَمُ يَسِمُ إِبِلَ الصَّدَقَة

4079. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं अब्दुल्लाह बिन अबी तल्हा को रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में लेकर गया ताकि आप ﷺ इसे घुट्टी दें (खजूर चबा कर उस के तालू में लगा दे) मैंने आप को देखा के आप के हाथ में दाग लगाने वाला आला था, आप ﷺ उस के साथ सदका के ऊटों को निशान लगा रहे थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (1502) و مسلم (109 / 2119)، (5554)

٤٠٨٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ فِي مِرْبَدٍ فَرَأَيْتُهُ يَسِمُ شَاءَ حسبته قَالَ: فِي آذانها

4080. हिश्शाम बिन ज़ैद रहिमहुल्लाह अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने ने फ़रमाया: में नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप बाड़े में थे, मैंने आप को देखा के आप बकरियों को निशान लगा रहे थे, रावी बयान करते हैं, मेरा ख़याल है के उन्होंने कहा: आप उन (बकरियों) के कानों पर निशान लगा रहे थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5542) و مسلم (115 / 2119)، (5555)

كتاب الصَّيْد والذبائح • शिकार और हलाल जानवरों का बयान

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٠٨١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرَأَيْتَ أَحَدُنَا أَصَابَ صَيْدًا وَلَيْسَ مَعَهُ سِكِّينٌ أَيَذْبَحُ بِالْمَرْوَةِ وَشِقَّةِ الْعَصَا؟ فَقَالَ: «أَمْرِرِ الدَّمَ بِمَ شِئْتَ وَاذْكُرِ اسْمَ اللَّهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4081. अदि बिन हातिम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! बताइए के हम में से किसी को शिकार मिल जाए और उस के पास छुरी न हो तो क्या यह इसे पत्थर और लाठी के किनारे से जिबह कर सकता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “खून बहाओ जिसके साथ चाहो और अल्लाह का नाम लो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2824) و النسائی (7 / 194 ح 4309)

٤٠٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي العُشَراءِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَمَا تَكُونُ الذَّكَاةُ إِلَّا فِي الْحَلْقِ وَاللَّبَّةِ؟ فَقَالَ: «لَوْ طَعَنْتَ فِي فَخِذِهَا لَأَجْزَأَ عَنْكَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ أَبُو دَاوُدَ: وَهَذِهِ ذَكَاةُ الْمُتَرَدِّي وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا فِي الضَّرُورَة

4082. अबू अल अशराअ अपने वालिद से रिवायत करते हैं की उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या ज़बह सिर्फ हलक और सीने के ऊपरी हिस्से (लब) पर छुरी चलाने से ही होता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुमने उसकी रान पर जख्म लगाया तो भी तेरे लिए काफी है”| तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई, इब्ने माजा दारमी और इमाम अबू दावुद ने फ़रमाया: यह किसी गिरे पड़े जानवर के जिबह करने का तरीका है, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह ज़रूरत के तहत है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1481 وقال : غریب) و ابوداؤد (2825) و النسائی (7 / 228 ح 4413) و ابن ماجه (3184) و الدارمی (2 / 82 ح 1978)* قال البخاری فی ابی العشراء :’’ فی حدیثه و اسمه و سماعة من ابیه نظر ‘‘

٤٠٨٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عدي بن حَاتِم أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَا عَلَّمْتَ مِنْ كَلْبٍ أَوْ بَازٍ ثُمَّ أَرْسَلْتَهُ وَذَكَرْتَ اسْمَ اللَّهِ فَكُلْ مِمَّا أَمْسَكَ عَلَيْكَ» . قُلْتُ: وَإِنْ قَتَلَ؟ قَالَ: «إِذَا قَتَلَهُ وَلَمْ يَأْكُلْ مِنْهُ شَيْئًا فَإِنَّمَا أَمْسَكَهُ عَلَيْكَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4083. अदि बिन हातिम रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने किसी कुत्ते या बाज़ को सधाया, फिर तुमने इसे अल्लाह का नाम लेकर छोड़ा तो उस ने जो तुम्हारे लिए महफ़ूज़ रखा इसे खा”, मैंने अर्ज़ किया: अगर वह मार दे? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब उस ने इसे मार दिया और उस में से कुछ न खाया तो वह उस ने तुम्हारे लिए ही महफ़ूज़ रखा है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2851) * مجالد ضعیف

٤٠٨٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَرْمِي الصَّيْدَ فَأَجِدُ فِيهِ مِنَ الْغَدِ سَهْمِي قَالَ: «إِذَا عَلِمْتَ أَنَّ سَهْمَكَ قَتَلَهُ وَلَمْ تَرَ فِيهِ أَثَرَ سَبُعٍ فَكُلْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4084. अदि बिन हातिम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं शिकार पर तीर फेकता हो और अगले रोज़ में उस में अपना तीर देखता हूँ? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम्हें यकीन हो गया के तुम्हारे ही तीर ने इसे मारा है और तुमने उस में किसी दरिन्दे का निशान न देखो तो फिर खाओ”| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (لم اجده بهذا اللفظ و رواه بلفظ آخر : 2849) [و الترمذی (1468)]

٤٠٨٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن جابرٍ قَالَ: نُهِينَا عَنْ صَيْدِ كَلْبِ الْمَجُوسِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4085. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमें मजुसियो के कुत्ते के शिकार से रोक दिया गया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1466) [و ابن ماجه (3209)] * حجاج بن ارطاة : ضعیف مدلس و فیه علة أخری و الحدیث ضعفه البوصیری

٤٠٨٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي ثَعْلَبَة الْخُشَنِي قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا أَهْلُ [ص:١١٩ سفر تمر الْيَهُود وَالنَّصَارَى وَالْمَجُوسِ فَلَا نَجِدُ غَيْرَ آنِيَتِهِمْ قَالَ: «فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا غَيْرَهَا فَاغْسِلُوهَا بِالْمَاءِ ثُمَّ كلوا فِيهَا وَاشْرَبُوا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4086. अबू सअलबा खुशनी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हम मुसाफ़िर लोग है, हम यहूद व नसारा और मजुसियो के पास से गुज़रते है, हमें उन के बर्तन ही दस्तियार होते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम उन के अलावा न पाओ तो उन्हें पानी के साथ धो लो फिर उनमें खाओ पियो”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (1464 وقال : حسن صحيح)

٤٠٨٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ قَبِيصَةَ بْنِ هُلْبٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ طَعَامِ النَّصَارَى وَفِي رِوَايَةٍ: سَأَلَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: إِنَّ مِنَ الطَّعَامِ طَعَامًا أَتَحَرَّجُ مِنْهُ فَقَالَ: «لَا يَتَخَلَّجَنَّ فِي صَدْرِكَ شَيْءٌ ضَارَعْتَ فِيهِ النَّصْرَانِيَّة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4087. कबिस बिन हलब अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने नबी ﷺ से इसाइयों के खाने के मुतल्लिक दरियाफ्त किया, और एक रिवायत में है: एक आदमी ने आप ﷺ से दरियाफ्त किया के बाज़ खानो से में बचा करता हूँ, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम अपने दिल में कोई खल्जान महसूस न करो की उस में तुमने इसाइयों की मुशाबिहत इख़्तियार की है”, (क्यूंकि वह भी अपने अलावा किसी का खाना नहीं खाते)| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1565 وقال : حسن) و ابوداؤد (3784)

٤٠٨٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ أَكْلِ الْمُجَثَّمَةِ وهيَ الَّتِي تُصْبَرُ بالنَّبلِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4088. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुजस्सिमा के खाने से मना फ़रमाया है, और यह वह है जिसे बांध कर तीर मारे जाए| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1473 وقال : غريب)

٤٠٨٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الْعِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى يَوْمَ خَيْبَرَ عَنْ كُلِّ ذِي نَابٍ مِنَ السِّبَاعِ وَعَنْ كُلِّ ذِي مِخْلَبٍ مِنَ الطَّيْرِ وَعَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ الْأَهْلِيَّةِ وَعَنِ الْمُجَثَّمَةِ وَعَنِ الْخَلِيسَةِ وَأَنْ تُوطَأَ الْحَبَالَى حَتَّى يَضَعْنَ مَا فِي بُطُونِهِنَّ قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى: سُئِلَ أَبُو عَاصِمٍ عَنِ الْمُجَثَّمَةِ فَقَالَ: أَنْ يُنْصَبَ الطَّيْرُ أَوِ الشَّيْءُ فَيُرْمَى وَسُئِلَ عَنِ الْخَلِيسَةِ فَقَالَ: الذِّئْبُ أَوِ السَّبُعُ يُدْرِكُهُ الرَّجُلُ فَيَأْخُذُ مِنْهُ فَيَمُوتُ فِي يَدِهِ قَبْلَ أَنْ يذكيها. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4089. इरबाज़ बिन सारीया रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने खैबर के रोज़ दरिंदो में से हर

नुकीले दांत (से शिकार करने वाले) और परिंदों में से हर पंजे (से शिकार करने) वाले, पालतू गधे के गोश्त से, बांध कर तीर अन्दाज़ी किए जाने वाले और "खलीसा" के खाने से और जंग में गीरफ़्तार होने वाली हामिला औरत से वज़ा हमल से पहले जिमाअ करने से मना फ़रमाया, मुहम्मद बिन याह्या बयान करते हैं, अबू आसिम से "मुजष्षमा" के बारे में दरियाफ्त किया गया तो उन्होंने ने फ़रमाया: किसी परिंदे या किसी चीज़ को बांध के उस पर तीर अन्दाज़ी की जाए और उन से "खालिसा" के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया कोई शख़्स भेड़िये या दरिन्दे से उस का शिकार चुराए और वह उस के जिबह करने से कबल उस के हाथ में मर जाए| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1474) * ام حبيبة : لم اجد من و ثقها و للحديث شواهد كثيرة دون :'' الخليسة ''

٤٠٩٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ وَأَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ شَرِيطَةِ الشَّيْطَانِ. زَادَ ابْنُ عِيسَى: هِيَ الذَّبِيحَةُ يُقْطَعُ مِنْهَا الْجِلْدُ وَلَا تُفْرَى الْأَوْدَاجُ ثُمَّ تُتْرَكُ حَتَّى تَمُوتَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4090. इब्ने अब्बास और अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने शैतान के शरित से मना फ़रमाया है, इब्ने इसा ने इज़ाफा नकल किया है, यह (शरित) वह ज़बिहा है के उसकी जल्द काट दि जाए और उसकी रगे न काटी जाए, फिर इसे छोड़ दिया जाए हत्ता के वह मर जाए| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2826) * عمرو بن عبدالله بن الاسوار اليمانى : ضعفه الجمهور و الجرح مقدم

٤٠٩١ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٌ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «ذَكَاةُ الْجَنِينِ ذَكَاةُ أَمِّهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد والدارمي

4091. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जनिन (पेट के बच्चे) की माँ का जिबह करना उस का जिबह करना है"| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (2828) و الدارمى (2 / 84 ح 1985)

٤٠٩٢ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ التِّرْمِذِيّ عَن أبي سعيد

4092. और इमाम तिरमिज़ी ने इसे अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (1476)

٤٠٩٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي سعيدٍ الخدريِّ قَالَ: قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ نَنْحَرُ النَّاقَةَ ونذبح الْبَقَرَة وَالشَّاة فنجد فِي بَطنهَا جَنِينا أَنُلْقِيهِ أَمْ نَأْكُلُهُ؟ قَالَ: «كُلُوهُ إِنْ شِئْتُمْ فَإِنَّ ذَكَاتَهُ ذَكَاةُ أُمِّهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْن مَاجَه

4093. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हम ऊंटनी, गाय और बकरी जिबह करते हैं और हम उन के पेट में बच्चा पाते है, तो क्या हम इसे फेंक दे या इसे खा लें? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर चाहो तो खालो, क्योंकि उसकी माँ को जिबह करना उस का जिबह करना है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (2827) و ابن ماجه (3199) * مجالد ضعيف ضعفه الجمهور و حديث ابن حبان (الموارد : 1077 ، سنده حسن) يغنى عنه

٤٠٩٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ قَتَلَ عُصْفُورًا فَمَا فَوْقَهَا بِغَيْرِ حَقِّهَا سَأَلَهُ اللَّهُ عَنْ قَتْلِهِ» قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا حَقُّهَا؟ قَالَ: «أَنْ يَذْبَحَهَا فَيَأْكُلَهَا وَلَا يَقْطَعَ رَأْسَهَا فَيَرْمِيَ بِهَا» . رَوَاهُ أَحْمد وَالنَّسَائِيّ والدرامي

4094. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने किसी चिड़िया या उस से ऊपर (छोटी या बड़े परिंदे) को नाहक क़त्ल किया तो अल्लाह उस के क़त्ल के मुतल्लिक उस से पूछेगा, अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! उस का हक़ किया है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे जिबह करे और फिर इसे खा ले, और वह उस का सर काट कर इसे मत फेंके”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (2 / 166 ح 6551) و النسائى (7 / 239 ح 4450) و الدارمى (2 / 84 ح 1984)

٤٠٩٥ - (لم تتمّ دراسته) عَن أبي وَاقد اللَّيْثِيّ قَالَ: قَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَدِينَةَ وَهُمْ يَجُبُّونَ أَسْنِمَةَ الْإِبِلِ وَيَقْطَعُونَ أَلْيَاتِ الْغَنَمِ فَقَالَ: «مَا يُقْطَعُ مِنَ الْبَهِيمَةِ وَهِيَ حَيَّةٌ فَهِيَ مَيْتَةٌ لَا تُؤْكَلُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

4095. अबू वाकिद लय्शी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ मदीना तशरीफ़ लाए तो अहले मदीना ऊटों के कोहान काट लिया करते थे, दुम्बो की कुल्हे काट लिया करते थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो हिस्सा जिंदा जानवर से काट लिया जाए तो वह (कटा हआ हिस्सा) मुरदार है, इसे न खाया जाए”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (1480 وقال : حسن غريب) و ابوداؤد (2858)

शिकार और हलाल जानवरों का बयान • كتاب الصَّيْد والذبائح
तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٤٠٩٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ رَجُلٍ مِنْ بَنِي حَارِثَةَ أَنَّهُ كَانَ يَرْعَى لِقْحَةً بِشِعْبٍ مِنْ شِعَابِ أُحُدٍ فَرَأَى بِهَا الْمَوْتَ فَلَمْ يَجِدْ مَا يَنْحَرُهَا بِهِ فَأَخَذَ وَتِدًا فَوَجَأَ بِهِ فِي لَبَّتِهَا حَتَّى أَهْرَاقَ دَمَهَا ثُمَّ أَخْبَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَمَرَهُ بِأَكْلِهَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَمَالِكٌ وَفِي رِوَايَته: قَالَ: فذكاها بشظاظ

4096. अता बिन यस्सार बनू हारिस के आदमी से रिवायत करते हैं, के वह उहद की एक घाटी में ऊंटनी चराया करता था, उस ने ऊंटनी में मौत के आसार देखे तो उस ने इसे जिबह करने के लिए कुछ न पाया, चुनांचे उस ने एक खुटी ली और उस के सीने के ऊपर के हिस्से में मार दिया हत्ता के उस का खून बहा दिया, फिर रसूलुल्लाह ﷺ को बताया तो आप ने इसे खाने का हुक्म फ़रमाया| और मालिक की रिवायत में है की उस ने तेज़ लकड़ी के साथ इसे जिबह किया| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2823) و مالک (2 / 489 ح 1076)

٤٠٩٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «مَا من دَابَّة إِلَّا وَقَدْ ذَكَّاهَا اللَّهُ لِبَنِي آدَمَ» . رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيّ

4097. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने तमाम समुंदरी जानवर बनी आदम के लिए हलाल किए है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه الدارقطنى (4 / 267 ح 4666) * فيه حمزة بن عمرو النصيبى : ضعيف جدًا متهم

कुत्ते का बयान • بَاب ذكر الْكَلْب
पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٤٠٩٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «مَنِ اقْتَنَى كَلْبًا إِلَّا كَلْبَ مَاشِيَةٍ أَوْ ضَارٍ نَقَصَ مِنْ عَمَلِهِ كُلَّ يَوْمٍ قِيرَاطَانِ»

4098. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने रेवड़ की

हिफाज़त वाले कुत्ते और शिकारी कुत्ते के अलावा कोई कुत्ता रखा तो उस के अमल से रोज़ाना दो किरात कमी की जाती है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5480) و مسلم (50 / 1574)، (4023)

٤٠٩٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «من اتَّخَذَ كَلْبًا إِلَّا كَلْبَ مَاشِيَةٍ أَوْ صَيْدٍ أَو زرعٍ انتقصَ منْ أجرِه كلَّ يومٍ قِيرَاط»

4099. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने रेवड़ की हिफाज़त वाले कुत्ते या शिकारी या खेती की हिफाज़त वाले कुत्ते के सिवा कोई कुत्ता रखा तो उस के अज़र से रोज़ाना एक किरात कम किया जाता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2322) و مسلم (58 / 1575)، (4031)

٤١٠٠ - (صَحِيح) وَعَن جَابر قَالَ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِقَتْلِ الْكِلَابِ حَتَّى إِنَّ الْمَرْأَةَ تَقْدَمُ منَ البادِيةِ بكلبِها فتقتلَه ثُمَّ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ قَتْلِهَا وَقَالَ: «عَلَيْكُمْ بِالْأَسْوَدِ الْبَهِيمِ ذِي النقطتين فَإِنَّهُ شَيْطَان» رَوَاهُ مُسلم .

4100. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने कुत्ते मारने का हमें हुक्म फ़रमाया हत्ता के औरत जंगल से अपने कुत्ते के साथ आती तो हम इस (कुत्ते) को भी क़त्ल कर देते, फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने उस के मारने से मना फ़रमाया और फ़रमाया: “तुम दो नुक्तो वाले सियाह कुत्ते को क़त्ल करो, क्योंकि वह शैतान है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (47 / 1572)، (4020)

٤١٠١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَ بِقَتْلِ الْكِلَابِ إِلَّا كَلْبَ صيدٍ أَو كلب غنم أَو مَاشِيَة

4101. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने शिकारी कुत्ते या बकरियो या रेवड़ की हिफाज़त वाले कुत्ते के सिवा दीगर कुत्तो को मारने का हुक्म फ़रमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3323) و مسلم (46 / 1571)، (4019)

بَاب ذكر الْكَلْب • कुत्ते का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤١٠٢ - (لم تتمّ دراسته) عَن عبد الله بنِ مُغفَّلٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَوْلَا أَنَّ الْكِلَابَ [ص:١١٩] أُمَّةٌ مِنَ الْأُمَمِ لَأَمَرْتُ بِقَتْلِهَا كُلِّهَا فَاقْتُلُوا مِنْهَا كُلَّ أَسْوَدَ بَهِيمٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ وَزَادَ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ: «وَمَا مِنْ أَهْلِ بَيْتٍ يَرْتَبِطُونَ كَلْبًا إِلَّا نَقَصَ مِنْ عَمَلِهِمْ كُلَّ يَوْمٍ قِيرَاطٌ إِلَّا كَلْبَ صَيْدٍ أَوْ كَلْبَ حَرْثٍ أَوْ كَلْبَ غنم»

4102. अब्दुल्लाह बिन मुगफ्फल रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर कुत्ते अल्लाह तआला की मखलूक न होती तो मैं इन सब को क़त्ल करने का हुक्म फरमाता, तुम उनमें से इन्तिहाई सियाह को क़त्ल करो”| अबू दावुद, दारमी और इमाम तिरमिज़ी और इमाम नसई ने यह इज़ाफा नकल किया है: “जो घर वाले शिकारी कुत्ते, खेती बाड़ी कि या बकरियों की हिफाज़त वाले कुत्ते के सिवा को कुत्ता पालता है, उन के अमल में से रोज़ाना एक किरात कम कर दिया जाता है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (2845) و الدارمی (2 / 90 ح 2013) و الترمذی (1489 وقال : حسن) و النسائی (7 / 185 ح 4285)] * [و ابن ماجه (3205)] * الحسن البصری عنعن و للحدیث شواھد ضعیفة عند الطبرانی (الکبیر 11 / 349) و ابی یعلی (2442) و ابن حبان (الموارد : 1083 ، الاحسان : 5629) وغیرھم و حدیث ابی داود (2846) یغنی عنه

٤١٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ التَّحْرِيشِ بَيْنَ الْبَهَائِمِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

4103. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने चोपायो के दरमियान लड़ाई कराने से मना फ़रमाया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1708) [و ابوداؤد (2562)] * الاعمش مدلس و عنعن و فیه علل أخری وله شاھد ضعیف

उन चीजों का बयान जिन का खाना हलाल और जिन का खाना हराम है

بَابُ مَا يَحِلُّ أَكْلُهُ وَمَا يَحْرُمُ

पहली फस्ल

الْفَصْلُ الأول

٤١٠٤ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُّ ذِي نَابٍ منَ السِّباعِ فأكلُه حرامٌ» . رَوَاهُ مُسلم

4104. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "दरिंदो में से नुकीले दांत वाले जानवर खाना हराम है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (15 / 1933)، (4992)

٤١٠٥ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ كُلِّ ذِي نَابٍ مِنَ السِّبَاعِ وَكُلِّ ذِي مِخْلَبٍ مِنَ الطَّيْرِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4105. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने दरिंदो में से नुकीले दांत वाले हर जानवर और परिंदों में से पंजे (से शिकार करने) वाले हर परिंदे (के खाने से मना फ़रमाया है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (16 / 1934)، (4994)

٤١٠٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي ثَعلبةَ قَالَ: حَرَّمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لُحومَ الْحُمُرِ الْأَهْلِيَّةِ

4106. अबू सअलबा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने पालतू गधो का गोश्त हराम करार दिया है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5527) و مسلم (23 / 1936)، (5007)

٤١٠٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى يَوْمَ خَيْبَرَ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ الْأَهْلِيَّةِ وَأَذِنَ فِي لُحُومِ الْخَيْلِ

4107. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने खैबर के रोज़ पालतू गधो के गोश्त से मना

फ़रमाया और घोड़ो के गोश्त की इजाज़त फरमाई| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5524) و مسلم (36 / 1941)، (5022)

٤١٠٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي قتادة أَنَّهُ رَأَى حِمَارًا وَحْشِيًّا فَعَقَرَهُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلْ مَعَكُمْ مِنْ لَحْمِهِ شَيْءٌ؟» قَالَ: مَعَنَا رِجْلُهُ فَأَخَذَهَا فَأَكَلَهَا

4108. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने एक जंगली गधा देखा और इसे शिकार कर लिया, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "क्या तुम्हारे पास उस के गोश्त में से कुछ बाकी है?" उन्होंने अर्ज़ किया, हमारे पास उसकी टांग है, आप ﷺ ने उस से वह टांग लेकर इसे तनावुल फ़रमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1821) و مسلم (63 / 1196)، (2858)

٤١٠٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أنس قَالَ: أَنْفَجْنَا أَرْنَبًا بِمَرِّ الظَّهْرَانِ فَأَخَذْتُهَا فَأَتَيْتُ بهَا أَبَا طلحةَ فذبحها وَبَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بوَرِكِها وفخذْيها فقبِله

4109. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने मर्रिलज़हरान के पास एक खरगोश को दोड़ाया, मैं उसे पकड़ कर अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु के पास ले आया, उन्होंने इसे जिबह किया और उस का कुल्हे और उसकी दोनों राने रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में भेजी तो आप ने उन्हें कबूल फ़रमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2572) و مسلم (53 / 1953)، (5048)

٤١١٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الضَّبُّ لَسْتُ آكُلُهُ وَلَا أُحَرِّمُهُ»

4110. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "न में गोह खाता हो और न इसे हराम करार देता हूँ"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5536) و مسلم (40 / 1943)، (5028)

٤١١١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن ابنِ عبَّاسٍ: أَنَّ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ دَخَلَ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى مَيْمُونَةَ وَهِيَ خَالَتُهُ وَخَالَةُ ابْنِ عَبَّاسٍ فَوَجَدَ عِنْدَهَا ضَبًّا مَحْنُوذًا فَقَدَّمَتِ الضَّبَّ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَفَعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدَهُ عَنِ الضَّبِّ فَقَالَ خَالِدٌ: أَحَرَامٌ الضَّبُّ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «لَا وَلَكِنْ لَمْ يَكُنْ بِأَرْضِ قَوْمِي فَأَجِدُنِي أَعَافُهُ» قَالَ خَالِدٌ: فَاجْتَرَرْتُهُ فَأَكَلْتُهُ وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْظُرُ إِلَيّ

4111. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु अन्हु ने उन्हें बताया की वह रसूलुल्लाह ﷺ की साथ में मैमुना रदियल्लाहु अन्हा के पास गए और वह खालिद बिन वलीद की और इब्ने अब्बास की खाला है, उन्होंने उन के वहां भुना हुआ सांडा पाया मैमुना रदियल्लाहु अन्हा ने रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में वह पेश किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने सांडे से अपना हाथ पीछे हटा लिया तो खालिद रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या सांडा हराम है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं, लेकिन यह मेरी कौम के इलाके में पाया नहीं जाता इसलिए में तबई तौर पर इसे नापसंद करता हूँ”, खालिद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने इसे अपने करीब कर लिया और खा लिया जबकि रसूलुल्लाह ﷺ मेरी तरफ देख रहे थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5537) و مسلم (44 / 1946)، (5035)

٤١١٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي مُوسَى قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْكُلُ لَحْمَ الدَّجَاجِ

4112. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को मुर्गे का गोश्त खाते हुए देखा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5517) و مسلم (9 / 1649)، (4265)

٤١١٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن ابنِ أبي أوْفى قَالَ: غَزَوْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَبْعَ غَزَوَاتٍ كُنَّا نَأْكُلُ مَعَهُ الجرادَ

4113. इब्ने अबी अव्फी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सात गज़वात में शिरकत की, हम आप के साथ तिड्डिया खाया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5495) و مسلم (52 / 1952)، (5045)

٤١١٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن جابرٍ قَالَ: غَزَوْتُ جَيْشَ الْخَبْطِ وَأُمِّرَ عَلَيْنَا أَبُو عُبَيْدَةَ فَجُعْنَا جُوعًا شَدِيدًا فَأَلْقَى الْبَحْرُ حُوتًا مَيِّتًا لَمْ نَرَ مِثْلَهُ يُقَالُ لَهُ: الْعَنْبَرُ فَأَكَلْنَا مِنْهُ نِصْفَ شَهْرٍ فَأَخَذَ أَبُو عُبَيْدَةَ عَظْمًا مِنْ عِظَامِهِ فَمَرَّ الرَّاكِبُ تَحْتَهُ فَلَمَّا قَدِمْنَا ذَكَرْنَا ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «كُلُوا رِزْقًا أَخْرَجَهُ اللَّهُ إِلَيْكُمْ وَأَطْعِمُونَا إِنْ كَانَ مَعَكُمْ» قَالَ: فَأَرْسَلْنَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْهُ فَأَكله

4114. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने गज़वा ए जैशुल खब्त में शिरकत की, अबू उबैदाह रदियल्लाहु अन्हु हमारे अमीर मुकर्रर किए गए, हम शदीद भूख का शिकार हो गए तो समुन्दर ने एक बहोत बड़ी मुर्दा मछली बाहर फेंकी, हमने इस जैसी मछली कभी नहीं देखी थी और इसे अंबर के नाम से याद किया

जाता है, हमने इसे आधे माह तक खाया, अबू उबैदाह रदियल्लाहु अन्हु ने उसकी हड्डियों में से एक हड्डी पकड़ी और ऊंट सवार उस के नीचे से गुज़र गया, जब हम वापस गए तो हमने नबी ﷺ से ज़िक्र किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह ने तुम्हारी तरफ जो रीज़्क निकाला है उसे खाओ और अगर तुम्हारे पास उस में से कुछ है तो हमें भी खिलाओ”, रावी बयान करते हैं, हमने उस में से कुछ रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में भेजा तो आप ने इसे तनावुल फ़रमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (4362) و مسلم (18 / 1935)، (4998)

٤١١٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا وَقَعَ الذُّبَابُ فِي إِنَاءِ أحدِكم فَلْيَغْمِسْهُ كُلَّهُ ثُمَّ لِيَطْرَحْهُ فَإِنَّ فِي أَحَدِ جَنَاحَيْهِ شِفَاءً وَفِي الْآخَرِ دَاءً» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

4115. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से किसी के बर्तन में मक्खी गिर जाए तो वह उस को अच्छी तरह पानी में गोटा दे कर बाहर फेंके क्योंकि उसके दो में से एक पर में सिफा जबकि दूसरे में बीमारी है”| (बुखारी)

رواه البخاری (5782)

٤١١٦ - (صَحِيح) وَعَن ميمونةَ أَنَّ فَأْرَةً وَقَعَتْ فِي سَمْنٍ فَمَاتَتْ فَسُئِلَ رَسُول الله صلى الله عَلَيْهِ وَسلم فَقَالَ: «ألقوها وَمَا حولهَا وكلوه» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

4116. मय्मुना रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के चुहिया घी में गिर कर मर गई, रसूलुल्लाह ﷺ से उस के मुतल्लिक मसअला दरियाफ्त किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस को और उस के आस पास के घी को फेंक दो और बकिया (घी) खालो”| (बुखारी)

رواه البخاری (5538)

٤١١٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن ابْن عمر أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " اقْتُلُوا الْحَيَّاتِ وَاقْتُلُوا ذَا الطُّفْيَتَيْنِ وَالْأَبْتَرَ فَإِنَّهُمَا يَطْمِسَانِ الْبَصَرَ وَيَسْتَسْقِطَانِ الْحَبَلَ قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فَبَيْنَا أَنَا أُطَارِدُ حَيَّةً أَقْتُلَهَا نَادَانِي أَبُو لُبَابَةَ: لَا تَقْتُلْهَا فَقُلْتُ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَ بِقَتْلِ الْحَيَّاتِ. فَقَالَ: إِنَّهُ نَهَى بَعْدَ ذَلِكَ عَنْ ذَوَات الْبيُوت وَهن العوامر

4117. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “सांपो को क़त्ल करो और खास कर दो लकिरो वाले और दुम कटे सांप को क़त्ल करो, क्योंकि वह दोनों बिनाई ख़तम कर देते है, और हमल गिरा देते है”, अब्दुल्लाह रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: इस असना में की मैं एक सांप को मारने के

लिए उस के पीछे दोड़ा तो अबू लुबाबह रदियल्लाहु अन्हु ने मुझे आवाज़ दी: इसे मत मारो मैंने कहा रसूलुल्लाह ﷺ ने सांपो को मारने का हुक्म फ़रमाया है, उन्होंने कहा: आप ﷺ ने उस के बाद घरो में रहने वालो को मारने से मना फरमा दिया था, क्योंकि वह उन (घरो) को आबाद रखने वाले हैं। (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3297) و مسلم (128 / 2233)، (5825)

٤١١٨ - (صَحِيح) وَعَن أبي السَّائِب قَالَ: دَخَلْنَا عَلَى أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ فَبَيْنَمَا نحنُ جلوسٌ إِذ سمعنَا تَحت سَرِيره فَنَظَرْنَا فَإِذَا فِيهِ حَيَّةٌ فَوَثَبْتُ لِأَقْتُلَهَا وَأَبُو سَعِيدٍ يُصَلِّي فَأَشَارَ إِلَيَّ أَنِ اجْلِسْ فَجَلَسْتُ فَلَمَّا انْصَرَفَ أَشَارَ إِلَى بَيْتٍ فِي الدَّارِ فَقَالَ: أَتَرَى هَذَا البيتَ؟ فَقلت: نعم فَقَالَ: كَانَ فِيهِ فَتًى مِنَّا حَدِيثُ عَهْدٍ بِعُرْسٍ قَالَ: فَخَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الْخَنْدَقِ فَكَانَ ذَلِكَ الْفَتَى يَسْتَأْذِنُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَنْصَافِ النَّهَارِ فَيَرْجِعُ إِلَى أَهْلِهِ فَاسْتَأْذَنَهُ يَوْمًا فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «خُذْ عَلَيْكَ سِلَاحَكَ فَإِنِّي أَخْشَى عَلَيْكَ قُرَيْظَةَ» . فَأَخَذَ الرَّجُلُ سِلَاحَهُ ثُمَّ رَجَعَ فَإِذَا امْرَأَتُهُ بَيْنَ الْبَابَيْنِ قَائِمَةٌ فَأَهْوَى إِلَيْهَا بِالرُّمْحِ لِيَطْعَنَهَا بِهِ وَأَصَابَتْهُ غَيْرَةٌ فَقَالَتْ لَهُ: اكْفُفْ عَلَيْكَ رُمْحَكَ وَادْخُلِ الْبَيْتَ حَتَّى تَنْظُرَ مَا الَّذِي أَخْرَجَنِي فَدَخَلَ فَإِذَا بِحَيَّةٍ عَظِيمَةٍ مُنْطَوِيَةٍ عَلَى الْفِرَاشِ فَأَهْوَى إِلَيْهَا بِالرُّمْحِ فَانْتَظَمَهَا بِهِ ثُمَّ خَرَجَ فَرَكَزَهُ فِي الدَّارِ فَاضْطَرَبَتْ عَلَيْهِ فَمَا يُدْرَى أَيُّهُمَا كَانَ أَسْرَعَ مَوْتًا: الْحَيَّةُ أَمِ الْفَتَى؟ قَالَ: فَجِئْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَذَكَرْنَا ذَلِكَ لَهُ وَقُلْنَا: ادْعُ اللَّهَ يُحْيِيهِ لَنَا فَقَالَ: «اسْتَغْفِرُوا لِصَاحِبِكُمْ» ثُمَّ قَالَ: «إِنَّ لِهَذِهِ الْبُيُوتِ عَوَامِرَ فَإِذَا رأيتُم مِنْهَا شَيْئا فحرِّجوا عَلَيْهَا [ص: ١٢٠ ثَلَاثًا فَإِنْ ذَهَبَ وَإِلَّا فَاقْتُلُوهُ فَإِنَّهُ كَافِرٌ» . وَقَالَ لَهُمْ: «اذْهَبُوا فَادْفِنُوا صَاحِبَكُمْ» وَفِي رِوَايَةٍ قَالَ: «إِنَّ بالمدينةِ جِنًّا قد أَسْلمُوا فَإِذا رأيتُم مِنْهُم شَيْئًا فَآذِنُوهُ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ فَإِنْ بَدَا لَكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ فَاقْتُلُوهُ فَإِنَّمَا هُوَ شَيْطَانٌ» . رَوَاهُ مُسلم

4118. अबू साइब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु के पास गए हम उन के पास बैठें हुए थे की इस असना में हमने उनकी चारपाई के नीचे कोई आहट सुनी, हमने देखा के वह सांप था, मैं उसे क़त्ल करने के लिए जल्दी से उठा जबकि अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु नमाज़ पढ़ रहे थे, उन्होंने मुझे इरशाद किया की मैं बैठ जाओ, मैं बैठ गया, जब वह फारिग़ हुए तो उन्होंने घर में एक कमरे की तरफ इरशाद किया और फ़रमाया: यह कमरे देख रहे हो? मैंने कहा: जी हाँ, उन्होंने ने फ़रमाया: इस कमरे में हमारा एक नौबिह्यात नोजवान था, उन्होंने फ़रमाया हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ खंदक की तरफ निकले, वह नोजवान दोपहर के वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ से इजाज़त हासिल कर के अपने अहलिया के पास आ जाया करता था, चुनांचे एक रोज़ उस ने आप ﷺ से इजाज़त तलब की तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: “अपना अस्लिहा साथ ले जाओ, क्योंकि मुझे तुम्हारे मुतल्लिक बनू कुरैज़ा का खतरा है”, उस ने अपना अस्लिहा लिया और अपने घर की तरफ चल दिया (जब वह घर के करीब पहुंचा तो) उस ने देखा के उसकी अहलिया दरवाज़े पर है, उस ने गैरत में आकर उसकी तरफ नैज़ा बढ़ाया ताकि वह इसे मारे, उस ने इसे कहा अपना नैज़ा रोके और कमरे में जा कर देखें के वह कौन सी चीज़ है जिस ने मुझे बाहर निकलने पर मजबूर किया है, वह दाखिल हुआ तो उस ने एक बहोत बड़े अजगर को कुंडली मारे ज़मीन पर देखा तो उस ने नैज़ा उस में घोंप दिया, फिर वह बाहर आ गया और इसे घर में गाड़ दिया सांप इस (नेज़े) पर तड़पने लगा, मालुम नहीं हो सका की इन दोनों में से पहले कौन मरा, सांप या वह नोजवान? रावी बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और आप से उस का तज़किरह

किया और हमने अर्ज़ किया: अल्लाह से दुआ फरमाइए के वह इसे हमारे लिए जिंदा फरमादे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने साथी के लिए मगफिरत तलब करो”, फिर फ़रमाया: “उन घरो के कुछ मकीन है, जब तुम इस तरह की कोई चीज़ देखो तो उसे तीन बार घर से निकलने पर मजबूर करो अगर वह चला जाए (तो ठीक) वरना इसे मार दो, क्योंकि वह काफ़िर है”, और आप ﷺ ने फ़रमाया: “मदीना में जिन्न है, जो इस्लाम कबूल कर चुके हैं, जब तुम उनमें से कोई चीज़ देखो तो उसे तीन रोज़ ख़बरदार करो, फिर अगर उस के बाद भी ज़ाहिर हो तो इसे क़त्ल कर दो, क्योंकि वह तो शैतान है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (140 / 2236)، (5840)

٤١١٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أم شريك: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَ بِقَتْلِ الْوَزَغِ وَقَالَ: «كَانَ يَنْفُخُ عَلَى إِبْرَاهِيم»

4119. उम्म शरीक रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने गिरगिट मारने का हुक्म फ़रमाया, और फ़रमाया: “वो इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए जलाई गई आग भड़काने के लिए फूंके मारता था”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3359) و مسلم (142 / 2237)، (5842)

٤١٢٠ - (صَحِيح) وَعَنْ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَ بِقَتْلِ الْوَزَغِ وَسَمَّاهُ فُوَيْسِقًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4120. साद बिन अबी वकास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने गिरगिट को मारने का हुक्म फ़रमाया और उस का नाम फविस्क रखा| (मुस्लिम)

رواه مسلم (144 / 2238)، (5844)

٤١٢١ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ قَتَلَ وَزَغًا فِي أولَّ ضَرْبَة كتبت لَهُ مِائَةُ حَسَنَةٍ وَفِي الثَّانِيَةِ دُونَ ذَلِكَ وَفِي الثَّالِثَة دون ذَلِك» . رَوَاهُ مُسلم

4121. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने पहली ज़र्ब में गिरगिट मार दीया तो उस के लिए सौ नेकी लिख दी जाती है, और दूसरी चोट में मारने वाले के लिए उस से कम और तीसरी में उस से कम (नेकी लिखी जाती है)”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (147 / 2240)، (5847)

٤١٢٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " قَرَصَتْ نَمْلَةٌ نَبِيًّا من الأنبياءِ فأمرَ بقريةِ النَّمْلِ فَأُحْرِقَتْ فَأَوْحَى اللَّهُ تَعَالَى إِلَيْهِ: أَنْ قَرَصَتْكَ نَمْلَةٌ أَحْرَقْتَ أُمَّةً مِنَ الْأُمَمِ تُسَبِّحُ؟ "

4122. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “चींटी ने किसी नबी ﷺ को काट लिया तो उन्होंने चीटियों के ठिकाना को जला देने का हुक्म फ़रमाया तो उसे जला दिया गया, अल्लाह तआला ने उसकी तरफ वही फरमाई के आप को एक चींटी ने काटा था और आप ने एक ऐसी जमाअत को जला दिया जो तस्बीह करती थी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3019) و مسلم (148 / 2241)، (5849)

بَابُ مَا يَحِلُّ أَكْلُهُ وَمَا يَحْرُمُ • उन चीजों का बयान जिन का खाना हलाल और जिन का खाना हराम है

الْفَصْلُ الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤١٢٣ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا وَقَعَتِ الْفَأْرَةُ فِي السَّمْنِ فَإِنْ كَانَ جَامِدًا فَأَلْقُوهَا وَمَا حَوْلَهَا وَإِنْ كَانَ مَائِعًا فَلَا تَقْرَبُوهُ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

4123. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब चुहिया घी में गिर जाए, अगर वह जामद हो तो इस (चुहिया) को और उस के आस पास वाले घी को निकाल कर फेंक दो और अगर वह घी माई (तरल) हालत में हो तो फिर उस के करीब न जाओ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (2 / 232233 ح 7177) * الزهرى مدلس و عنعن ، و معمر : خالفه الثقات فيه و الحديث ضعفه البخارى و الترمذى وغيرهما

٤١٢٤ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ الدَّارِمِيّ عَن ابْن عَبَّاس

4124. और इमाम दारमी ने इसे इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح رواه الدارمى (2 / 109 ح 20892092 ح 21282131) و للحديث طرق عند البخارى (235236) وغيره* لفظ الدارمى :’’ خذوها (القوها) وما حولها فاطر حوه ، [وكلوا] ‘‘ يغنى كلوا السمن الباقى

٤١٢٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَفِينَةَ قَالَ: أَكَلْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَحْمَ حُبَارَى. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4125. सफीना रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सरख्वाब (चकवा) का गोश्त खाया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3797) [و الترمذی (128 وقال : غریب)] * بریه : ابراهیم بن عمر ضعفه الجمهور

٤١٢٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ أَكْلِ الْجَلَّالَةِ وَأَلْبَانِهَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَفِي رِوَايَةِ أَبِي دَاوُدَ: قَالَ: نُهِيَ عَنْ رُكُوبِ الْجَلالَةِ

4126. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने गंदगी खाने वाले जानवर के खाने और उस के दूध (पिने) से मना फ़रमाया है| तिरमिज़ी, और अबू दावुद की रिवायत में है आप ﷺ ने गलाज़त खाने वाले जानवर की सवारी से मना फ़रमाया है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1824 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (3785 و سنده ضعیف ، 3787 ، 3719 ، الروایة الثانیة)

٤١٢٧ - (حسن) وَعَن عبدِ الرَّحمنِ بنِ شِبْلٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ أَكْلِ لَحْمِ الضَّبِّ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4127. अब्दुल रहमान बिन शिबली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने सांडे के गोश्त को खाने से मना फ़रमाया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3796)

٤١٢٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ أَكْلِ الْهِرَّةِ وَأَكْلِ ثَمَنِهَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ

4128. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने बिल्ली के गोश्त और उसकी कीमत खाने से मना फ़रमाया है| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (3480) و الترمذی (1280 وقال : غریب)

٤١٢٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعنهُ حَرَّمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعْنِي يَوْمَ خَيْبَرَ الْحُمُرَ الْإِنْسِيَّةَ وَلُحُومَ الْبِغَالِ وَكُلَّ ذِي نَابٍ مِنَ السِّبَاعِ وَكُلَّ ذِي مِخْلَبٍ مِنَ الطَّيْرِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

4129. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने खैबर के रोज़ पालतू गधो और खच्चरों के गोश्त

से, नुकीले दांत वाले दरिंदो और पंजे से शिकार करने वाले परिंदों के गोश्त से मना फ़रमाया है| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (1478)

٤١٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن خالدِ بْنِ الْوَلِيدِ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ أَكْلِ لُحُومِ الْخَيْلِ والبِغَالِ والحميرِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4130. खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने घोड़ो, खच्चरों और गधो के गोश्त खाने से मना फ़रमाया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3790) و النسائى (7 / 202 ح 43364337) [و ابن ماجه (3198)] * فيه صالح بن يحيى بن المقدام : لين الحديث و ابوه مستور و الحديث ضعفه موسى بن هارون الحافظ وغيره

٤١٣١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: غَزَوْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ خَيْبَرَ فَأَتَتِ الْيَهُودُ فَشَكَوْا أَنَّ النَّاسَ قَدْ أَسْرَعُوا إِلَى خَضَائِرِهِمْ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلَا لَا يَحِلُّ أَمْوَالُ المعاهِدينَ إلاَّ بحقِّها» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4131. खालिद बिन वलीद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने गजवा ए खैबर में नबी ﷺ के साथ शिरकत की, यहूद (आप ﷺ की खिदमत में आए) और उन्होंने शिकायत की के लोगों ने उन के फलदार दरख्तों से फल उतारने में बहोत जल्दी की है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सुन लो! ज़िम्मियो से नाहक माल लेना हलाल नहीं|” (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3806) و انظر الحديث السابق (4130) لعلته

٤١٣٢ - (جيد) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أُحِلَّتْ لَنَا مَيْتَتَانِ وَدَمَانِ: الْمَيْتَتَانِ: الْحُوتُ وَالْجَرَادُ وَالدَّمَانِ: الْكَبِدُ وَالطِّحَالُ ". رَوَاهُ أحمدُ وابنُ مَاجَه وَالدَّارَقُطْنِيّ

4132. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हमारे लिए दो मुर्दा चीज़े और दो खून हलाल किए गए है, दो मुरदार मछली और टिड्डी है, जबकि दो खून जिगर और तिल्ली है”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه احمد (2 / 97 ح 5723 موقوف) و ابن ماجه (3218 ، 3314 و سنده ضعيف) و الدارمى (4 / 271272) * عبد الرحمن بن زيد بن اسلم ضعيف و تابعه اخواه وهما ضعيفان** سنده ضعيف جدًا وله شاهد موقوف صحيح عند البيهقى (1 / 254) وله حكم المرفوع وهو يغنى عنه

٤١٣٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي الزُّبيرِ عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «مَا ألقاهُ البحرُ وجزر عَنْهُ الْمَاءُ فكُلُوهُ وَمَا مَاتَ فِيهِ وَطَفَا فَلَا تَأْكُلُوهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ»» وَقَالَ مُحْيِي السُّنَّةِ: الْأَكْثَرُونَ عَلَى أَنَّهُ مَوْقُوفٌ على جَابر

4133. अबू जुबैर रहिमहुल्लाह जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस चीज़ को समुन्दर बाहर (साहिल की तरफ) फेंक दे और उस से पानी उतर जाए तो उसे खाओ और जो उस में मर जाए और सतह समुन्दर पर तेर ने लगे तो उसे मत खाओ”| अबू दावुद, इब्ने माजा| इमाम मुह्यी अल सुन्नी (रह) ने फ़रमाया: अक्सर का यह मुअक्किफ है के यह रिवायत जाबिर (र) पर मौकूफ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3815) و ابن ماجه (3247) و ذكره البغوى فى مصابيح السنة (3 / 40 ح 3167) * ابو الزبير مدلس و عنعن

٤١٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سلمَان قَالَ: سُئِلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ الْجَرَادِ فَقَالَ: «أَكْثَرُ جُنُودِ اللَّهِ لَا آكُلُهُ وَلَا أُحَرِّمُهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدُ وَقَالَ محيي السّنة: ضَعِيف

4134. सलमान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ से टिड्डियों के बारे में दरियाफ्त किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो अल्लाह का कसीर लश्कर है, मैं उसे न खाता हो न हराम करार देता हूँ”| अबू दावुद, मुह्यी अल सुन्नी ने फ़रमाया: यह रिवायत जईफ है| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3813) * سليمان التيمى مدلس و عنعن و تابعه ابو العوام ولم يوثقه غير ابن حبان

٤١٣٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن زيدِ بن خالدٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ سَبِّ الدِّيكِ وَقَالَ: «إِنَّهُ يُؤَذِّنُ للصَّلاةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4135. ज़ैद बिन खालिद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुर्गे को बुरा भुला कहने से मना फ़रमाया है और आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो नमाज़ (के वक़्त) की इत्तिला देता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البغوى فى شرح السنة (12 / 199 ح 3270) [و ابوداؤد ، انظر الحديث الآتى]

٤١٣٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَسُبُّوا الدِّيكَ فَإِنَّهُ يُوقِظُ للصلاةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4136. ज़ैद बिन खालिद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुर्गे को बुरा भुला न कहो, क्योंकि वह नमाज़ के लिए बेदार करता है”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (5101)

٤١٣٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى قَالَ: قَالَ أَبُو لَيْلَى: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا ظَهَرَتِ الْحَيَّةُ فِي الْمَسْكَنِ فَقُولُوا لَهَا: إِنَّا نَسْأَلُكِ بِعَهْدِ نُوحٍ وَبِعَهْدِ سُلَيْمَانَ بْنِ دَاوُدَ أَنْ لَا تُؤْذِينَا فَإِنْ عَادَتْ فَاقْتُلُوهَا ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ

4137. अब्दुल रहमान बिन अबी लैला बयान करते हैं, अबू लैला रदियल्लाहु अन्हु ने कहा रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब घर में सांप निकल आए तो उसे कहो: हम तुझे नुह और सुलेमान बिन दाउद (अ) के अहद का हवाला देते हैं की, तो हमें तकलीफ न पहुंचा, अगर वह दोबारा निकले तो उसे क़त्ल कर दो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1485 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (5260) * فیه محمد بن ابی لیلی : ضعیف ضعفه الجمهور

٤١٣٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عكرمةَ عَن ابنِ عبَّاسٍ قَالَ: لَا أَعْلَمُهُ إِلَّا رَفَعَ الْحَدِيثَ: أَنَّهُ كَانَ يَأْمُرُ بِقَتْلِ الْحَيَّاتِ وَقَالَ: «مَنْ تَرَكَهُنَّ خَشْيَةَ ثَائِرٍ فَلَيْسَ مِنَّا» . رَوَاهُ فِي شَرْحِ السّنة

4138. इकरीमा, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं, इकरीमा ने कहा: में जानता हूँ कि उन्होंने इसे मरफुअ बयान किया है की आप ﷺ सांपो को मारने का हुक्म फ़रमाया करते थे, और आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिस ने सांप के इन्तेकाम के खौफ से उन्हें छोड़ दिया तो वह हम में से नहीं”| (ज़ईफ़)

رواه البغوی فی شرح السنة (12 / 195 ح 3265) [و عبد الرزاق (19617) و ابوداؤد (5250)] * موسی بن مسلم الطحان شک فی وصل الحدیث فالحدیث معلول

٤١٣٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا سَالَمْنَاهُمْ مُنْذُ حَارَبْنَاهُمْ وَمَنْ تَرَكَ شَيْئًا مِنْهُمْ خِيفَةً فَلَيْسَ منَّا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4139. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब से हमारी उन (सांपो) से लड़ाई शुरू हुई है, हम ने उन से सुलह नहीं की, और जिस ने डर के पेशे नज़र उनमें से किसी (सांप) को (मारे बगैर) छोड़ दिया तो वह हम में से नहीं”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (5248)

٤١٤٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اقْتُلُوا الْحَيَّاتِ كُلَّهُنَّ فَمَنْ خَافَ ثَأْرَهُنَّ فَلَيْسَ مِنِّي» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

4140. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर किस्म के सांप को क़त्ल करो, और जो शख़्स उन के इन्तेकाम से डर गया वह मुझ से नहीं”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (5249) و النسائی (6 / 51 ح 3195) * شریک مدلس و عنعن و احادیث ابی داود (52485252) وغیره تغنی عنه

٤١٤١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن العبَّاسِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا نُرِيدُ أَنْ نَكْنُسَ زَمْزَمَ وَإِنَّ فِيهَا مِنْ هَذِهِ الْجِنَّانِ يَعْنِي الْحَيَّاتِ الصِّغَارِ فَأَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِقَتْلِهِنَّ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4141. अब्बास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम चाहो ज़म ज़म की सफाई करना चाहते है और उस में छोटे छोटे सांप हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें मार डालने का हुक्म फ़रमाया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5251) * مروان بن معاوية مدلس و عنعن و فى سماع عبد الرحمن بن سابط من العباس رضى الله عنه نظر

٤١٤٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم قَالَ: «اقْتُلُوا الْحَيَّاتِ كُلَّهَا إِلَّا الْجَانَّ الْأَبْيَضَ الَّذِي كَأَنَّهُ قضيب فضَّة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4142. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “चाँदी की सलाख की मिस्ल सफ़ेद सांपो के अलावा तमाम सांपो को मार डालो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5261) * ابراهيم النخعى لم يسمع من ابن مسعود رضى الله عنه فالسند منقطع ولا ينفع ابراهيم ان يروى عن جماعة من اصحابه التابعين او اتباع التابعين : الذين لا نعرفهم باسمائهم كلهم عن ابن مسعود رضى الله عنه ، و المغيرة بن مقسم مدلس و عنعن

٤١٤٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا وَقَعَ الذُّبَابُ فِي إِنَاءِ أَحَدِكُمْ فَامْقُلُوهُ فَإِنَّ فِي أَحَدِ جَنَاحَيْهِ دَاءً وَفِي الْآخَرِ شِفَاءً فَإِنَّهُ يَتَّقِي بِجَنَاحِهِ الَّذِي فِيهِ الدَّاءُ فَلْيَغْمِسْهُ كُلَّهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4143. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से किसी के बर्तन में मख्खी गिर जाए तो उसे डुबो दे, क्योंकि उस के एक पर में बीमारी है, जबकि दूसरे में शिफा है, वह अपने उस पर के ज़रिए (गिरने से) बचता है जिस में बीमारी है, इसलिए इसे मुकम्मल तौर पर डुबो दो”| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (3844)

٤١٤٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا وَقَعَ الذُّبَابُ فِي الطَّعَامِ فَامْقُلُوهُ فَإِنَّ فِي أَحَدِ جَنَاحَيْهِ سُمًّا وَفِي الْآخَرِ شِفَاءً وَإِنَّهُ يُقَدِّمُ السَّمَّ وَيُؤَخِّرُ الشِّفَاءَ» . رَوَاهُ فِي شرح السّنة

4144. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब मख्खी खाने में गिर जाए तो उसे डुबो दें, क्योंकि उस के एक पर में ज़हर है जबकि दूसरे में शिफा है, और वह ज़हर वाले पर को मुकद्दम रखती है और शिफा वाले पर को मुअख्खर”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه البغوى فى شرح السنة (11 / 261 ح 2815) [و ابن ماجه (3504) و النسائى (7 / 178179 ح 4267)]

٤١٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ قَتْلِ أَرْبَعٍ مِنَ الدَّوَابِّ: النَّمْلَةِ وَالنَّحْلَةِ وَالْهُدْهُدُ وَالصُّرَدُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالدَّارِمِيُّ

4145. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने चार जानवरों: चींटी, शहद की मख्खी, हूद हूद और लतुरे को मारने से मना फ़रमाया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5267) و الدارمی (2 / 8889 ح 2550) [و ابن ماجه (3224)] * الزهری عنعن و للحديث شواهد ضعيفة

بَابُ مَا يَحِلُّ أَكْلُهُ وَمَا يَحْرُمُ • उन चीजों का बयान जिन का खाना हलाल और जिन का खाना हराम है

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤١٤٦ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ أَهْلُ الْجَاهِلِيَّةِ يَأْكُلُونَ أَشْيَاءَ وَيَتْرُكُونَ أَشْيَاءَ تَقَذُّرًا فَبَعَثَ اللَّهُ نَبِيَّهُ وَأَنْزَلَ كِتَابَهُ وَأَحَلَّ حَلَالَهُ وَحَرَّمَ حَرَامَهُ فَمَا أَحَلَّ فَهُوَ حَلَالٌ وَمَا حَرَّمَ فَهُوَ حَرَامٌ وَمَا سَكَتَ عَنْهُ فهو عفْوٌ وتَلا (قُلْ لَا أَجِدُ فِيمَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَى طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَو دَمًا)»» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4146. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, अहल ए जाहिलियत कुछ चीज़े खाया करते थे और कुछ चीज़े बतौर कराहत छोड़ दिया करते थे, अल्लाह ने अपने नबी ﷺ को मबउस फ़रमाया, अपनी किताब नाज़िल फरमाई, उस ने हलाल करदा चीजों को हलाल और अपने हराम करदा चीजों को हराम करार दिया, उस ने जिन चीजों को हलाल किया यह हलाल है और जिन को हराम किया यह हराम है, और जिस से ख़ामोशी इख़्तियार की तो वह काबिल मुआखिज़ा (इलज़ाम लगाना) नहीं, फिर इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने यह आयत तिलावत फरमाई: “फरमा दीजिए! मेरी तरफ जो वही की गई है, मैं उस में खाने वाले के लिए जो वह खाता है, मुरदार, बहता हुआ खून, खिंजिर के गोश्त के सिवा कोई और चीज़ हराम नहीं पाता”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (3800)

٤١٤٧ - (صَحِيح) وَعَن زاهرٍ الأسلميِّ قَالَ: إِنِّي لَأُوقِدُ تَحْتَ الْقُدُورِ بِلُحُومِ الْحُمُرِ إِذْ نَادَى مُنَادِي رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْهَاكُمْ عَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

4147. ज़ाहिर असलमी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ के मुनादी (एलान) करने वाले ने यह एलान किया के रसूलुल्लाह ﷺ तुम्हें गधो के गोश्त से मना फरमाते हैं, मैं इस वक़्त हांडियो के नीचे आग

जला रहा था, जिन में गधो का गोश्त था| (बुखारी)

رواه البخارى (4173)

٤١٤٨ - (صَحِيح) وَعَن أبي ثعلبةَ الخُشَنيَّ يَرْفَعُهُ: «الْجِنُّ ثَلَاثَةُ أَصْنَافٍ صِنْفٌ لَهُمْ أَجْنِحَةٌ يَطِيرُونَ فِي الْهَوَاءِ وَصِنْفٌ حَيَّاتٌ وَكِلَابٌ وَصِنْفٌ يُحلُّونَ ويظعنونَ» . رَوَاهُ فِي شرح السنَّة

4148. अबू सअलबा खुशनी रदियल्लाहु अन्हु मरफ़ुअ रिवायत बयान करते हैं,: "जीनो की तीन किस्मे है: एक किस्म यह है कि उस के पर है और वह हवा में उड़ते है, एक किस्म सांपो और कुत्तो की है और एक किस्म यह है कि वह पड़ाव डालते है और कुच करते हैं"| (हसन)

حسن ، رواه البغوى فى شرح السنة (12 / 195 بعد ح 3264 بدون السند) [و الطحاوى فى مشكل الآثار (4 / 95 ، نسخة جديدة 7 / 381 ح 2941 و سنده حسن) و ابن حبان (الاحسان : 6123 ، 6156) و الحاكم (2 / 456)]

अकिके का बयान • بَاب الْعَقِيقَة

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٤١٤٩ - (صَحِيح) عَن سلمانَ بن عامرٍ الضَّبي قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَعَ الْغُلَامِ عَقِيقَةٌ فَأَهْرِيقُوا عَنْهُ دَمًا وأَمِيطوا عَنهُ الْأَذَى» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4149. सलमान बिन आमिर ज़ब्यी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "लड़के के पैदा होने पर अकिका है, उसकी तरफ से खून बहाव (जानवर जिबह करो) और उस से तकलीफ दूर करो (इस का सर मुंडाओ और इसे निहलाओ)"| (बुखारी)

رواه البخارى (54715472)

٤١٥٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُؤْتَى بِالصِّبْيَانِ فَيُبَرِّكُ عَلَيْهِمْ وَيُحَنِّكُهُمْ. رَوَاهُ مُسلم

4150. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ के पास बच्चे लाए जाते तो आप इन के लिए बरकत की दुआ फरमाते, और उन्हें घुट्टी देते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (101 / 286)، (662)

٤١٥١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ أَنَّهَا حَمَلَتْ بِعَبْدِ اللَّهِ بْنِ الزُّبَيْرِ بِمَكَّةَ قَالَتْ: فَوَلَدْتُ بِقُبَاءَ ثُمَّ أَتَيْتُ بِهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَضَعْتُهُ فِي حِجْرِهِ ثُمَّ دَعَا بِتَمْرَةٍ فَمَضَغَهَا ثُمَّ تَفَلَ فِي فِيهِ ثُمَّ حَنَّكَهُ ثُمَّ دَعَا لَهُ وبرك عَلَيْهِ فَكَانَ أَوَّلَ مَوْلُودٍ وُلِدَ فِي الْإِسْلَامِ

4151. अस्मा बिन्ते अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर मक्का में मेरे पेट में थे, उन्होंने कहा: मैंने इसे कुबा में जन्म दिया, फिर मैं इसे रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में लाइ तो मैंने इसे आप की गोद में रख दिया, फिर आप ने खजूर मंगाई इसे चबाया और अपना लुआबे दहन लगा कर इसे उसके मुंह में डाला और घुट्टी दी, फिर उस के लिए बरकत की दुआ फरमाई, और यह (अब्दुल्लाह बिन जुबैर (र)) इस्लाम (हिजरत के बाद मदीना) में पैदा होने वाले पहले बच्चे हैं"| (मुत्तफ़क़ अलेह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (3909) و مسلم (26 / 2146)، (5617)

بَاب الْعَقِيقَة • अकिके का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤١٥٢ - (صَحِيح) عَن أُمِّ كُرْزٍ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «أَقِرُّوا الطَّيْرَ عَلَى مَكِنَاتِهَا» . قَالَتْ: وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: «عَنِ الْغُلَامِ شَاتَانِ وَعَنِ الْجَارِيَةِ [ص:١٢٠ شَاةٌ وَلَا يَضُرُّكُمْ ذُكْرَانًا كُنَّ أَوْ إِنَاثًا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وللترمذي وَالنَّسَائِيّ من قَوْله: يَقُول: «عَن الْغُلَام» إِلَّا آخِره وَقَالَ التِّرْمِذِيّ: هَذَا صَحِيح

4152. उम्म कर रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "परिंदों को उनकी जगहों पर रहने दो", (फाल लेने के लिए उन्हें न उड़ाओ) उन्होंने बयान किया, और मैंने आप ﷺ को फरमाते हुए सुना: "लड़के की तरफ से दो बकरिया और लड़की की तरफ से एक बकरी है, और उनके नर या मादा होना तुम्हारे लिए मुज़िर नहीं"| अबू दावुद, तिरमिज़ी, और नसई की रिवायत: "लड़के की तरफ से ...", आख़िर तक है, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस सहीह है| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ ابوداؤد (2835) و الترمذی (1516) و النسائی (7 / 165 ح 4223)

٤١٥٣ - (صَحِيح) وَعَن الحسنِ عَن سَمُرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْغُلَامُ مُرْتَهَنٌ بِعَقِيقَتِهِ تُذْبَحُ عَنْهُ يَوْمَ السَّابِعِ وَيُسَمَّى وَيُحْلَقُ رَأْسُهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ لَكِنْ فِي رِوَايَتِهِمَا «رَهِينَةٌ» بدل «مرتهنٌ» وَفِي رِوَايَة لِأَحْمَد وَأبي دَاوُد: «وَيُدْمَى» مَكَانَ: «وَيُسَمَّى» وَقَالَ أَبُو دَاوُدَ: «وَيُسَمَّى» أصحُّ

4153. हसन रहिमहुल्लाह समुरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "लड़का अपने अकिके के बदले में गिरवी है, सातवीं रोज़ उसकी तरफ से जिबह किया जाए उस का नाम रखा जाए, और

उस का सर मुंडाया जाए”| अहमद तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई| लेकिन इन दोनों (अबू दावुद और नसई) की रिवायत में (مرتهن) की जगह (رهينة) के अल्फाज़ है, और मुसनद अहमद और अबू दावुद की रिवायत में (ويسمّى) की बजाए (ويدمّى) के अल्फाज़ है, और इमाम अबू दावुद ने फ़रमाया: लफ्ज़ (ويسمّى) ज़्यादा सहीह है| (हसन)

حسن ، رواه احمد (5 / 12 ح 20395) و الترمذی (1522 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (2837 و سنده ضعيف3838 وھو حسن) و النسائی (7 / 166 ح 4225)

٤١٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ عَنْ عَلِيّ بن أبي طَالب قَالَ: عَقَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْحَسَنِ بِشَاةٍ وَقَالَ: «يَا فَاطِمَةُ احْلِقِي رَأْسَهُ وَتَصَدَّقِي بِزِنَةِ شَعْرِهِ فِضَّةً» فَوَزَنَّاهُ فَكَانَ وَزْنُهُ دِرْهَمًا أَوْ بَعْضَ دِرْهَمٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ وَإِسْنَادُهُ لَيْسَ بِمُتَّصِلٍ لِأَنَّ مُحَمَّدَ بْنَ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ لَمْ يُدْرِكْ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ

4154. मुहम्मद बिन अली बिन हुसैन रहिमहुल्लाह अली बिन अबी तालिब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने हसन रदियल्लाहु अन्हु की तरफ से एक बकरी जिबह की और फ़रमाया: “फ़ातिमा! उस का सर मुंडा और उस के बालो के बराबर चाँदी सदका कर”, चुनांचे हमने उन बालो का वज़न लिया तो उनका वज़न एक दिरहम या दिरहम से कम था| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है, उसकी सनद मुतस्सिल नहीं, क्योंकि मुहम्मद बिन अली बिन हुसैन की अली बिन अबी तालिब से मुलाकात साबित नहीं| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (519) * محمد بن اسحاق بن يسار عنعن و السند منقطع ، محمد بن على بن الحسين لم يدرک عليًا رضی الله الله عنه و للحديث شاهد ضعيف عند البيهقی (9 / 304)

٤١٥٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَقَّ عَنِ الْحَسَنِ وَالْحُسَيْنِ كَبْشًا كَبْشًا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَعِنْدَ النَّسَائِيِّ: كبشين كبشين

4155. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने हसन और हुसैन रदियल्लाहु अन्हुमा की तरफ से एक एक मेंढे से अकिका किया| अबू दावुद, और नसई की रिवायत में दो दो मेंधो का ज़िक्र है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (2841) و النسائی (7 / 165166 ح 4224)

٤١٥٦ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْعَقِيقَةِ فَقَالَ: «لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْعُقُوقَ» كَأَنَّهُ كَرِهَ الِاسْمَ وَقَالَ: «مَنْ وُلِدَ لَهُ وَلَدٌ فَأَحَبَّ أَنْ يَنْسِكَ عَنْهُ فَلْيَنْسِكْ عَنِ الْغُلَامِ شَاتَيْنِ وَعَنِ الْجَارِيَةِ [ص:١٢٠ شَاةً» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4156. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ से अकिका के बारे में मसअला दरियाफ्त किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह "उकुक" को पसंद नहीं करता”, गोया आप ने यह नाम नापसंद फ़रमाया और फ़रमाया: “जिस के वहां बच्चा पैदा हो और वह उसकी तरफ से जिबह करना पसंद करे तो वह लड़के की तरफ से दो बकरिया और लड़की की तरफ से एक बकरी जिबह करे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2842) و النسائی (7 / 161164 ح 4217)

٤١٥٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي رافِعٍ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَذَّنَ فِي أُذُنِ الحسنِ ابنِ عليٍّ حِينَ وَلَدَتْهُ فَاطِمَةُ بِالصَّلَاةِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ. وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَيْثُ حسن صَحِيح

4157. अबी राफीअ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा की जब फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा ने हसन बिन अली रदियल्लाहु अन्हुमा को जन्म दिया तो आप ﷺ ने उन के कान में नमाज़ वाली आज़ान दी| तिरमिज़ी, अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1514) و ابوداؤد (5105) * فیه عاصم بن عبدالله ضعیف ضعفه الجمهور وله شاهدان موضوعان عند البیهقی فی شعب الایمان (8619 فیه یحیی بن العلاء : کذاب و 8620 فیه محمد بن یونس الکدیمی : کذاب) ذکر تهماللرد علیهما ولا یستشهد بهما ، فائدة : الاذان فی اذن المولود صحیح ، و علیه کان العمل (بلا انکار) یعنی اجعمت الامة علی مشروعیة العمل به فی عهد الترمذی وغیره و الاجماع حجة شرعیة

بَاب الْعَقِيقَة • अकिके का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤١٥٨ - (صَحِيح) عَن بُرِيدةَ قَالَ: كُنَّا فِي الْجَاهِلِيَّةِ إِذَا وُلِدَ لِأَحَدِنَا غلامٌ ذَبَحَ شاةٌ ولطَّخَ رأسَه بدمه فَلَمَّا جَاءَ الْإِسْلَامُ كُنَّا نَذْبَحُ الشَّاةَ يَوْمَ السَّابِعِ وَنَحْلِقُ رَأْسَهُ وَنُلَطِّخُهُ بِزَعْفَرَانٍ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَزَاد رزين: ونُسمِّيه

4158. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, दौरे जाहिलियत में जब हम में से किसी के यहाँ लड़का पैदा होता तो वह बकरी जिबह करता और उस के सर पर उस का खून लगाता, और जब इस्लाम का जुहूर हुआ तो हम सातवीं रोज़ बकरी जिबह करते और उस का सर मुंडते और ज़ाफ़रान लगाते थे| अबू दावुद, और रजिन ने यह इज़ाफा नकल किया है: और हम उस का नाम रखते थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (2843) و رزین (لم اجده) [و صححه الحاکم علی شرط الشیخین (4 / 238) و وافقه الذهبی وله شاهد تقدم (4152)]

खानों का बयान • كتاب الأَطْعِمَة

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٤١٥٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن عمر بن أبي سَلمَة قَالَ: كُنْتُ غُلَامًا فِي حِجْرِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَتْ يَدِي تَطِيشُ فِي الصفحة. فَقَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ «سم الله وكل بِيَمِينك وكل مِمَّا يليك»

4159. उमर बिन अबी सलमा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ के ज़ेर परवरिश लड़का था और (खाने के दोरान) मेरा हाथ पलेट में हर तरफ घूमता था, (ये हरकत देख कर) रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: "अल्लाह का नाम लेकर अपने दाएँ हाथ के साथ अपने सामने से खाओ"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5376) و مسلم (108 / 2022)، (5269)

٤١٦٠ - (صَحِيح) وَعَن حُذَيْفَة قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ الشَّيْطَانَ يَسْتَحِلُّ الطَّعَامَ أَنْ لَا يُذْكَرَ اسْم الله عَلَيْهِ» . رَوَاهُ مُسلم

4160. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "बेशक शैतान इस खाने को, जिस पर अल्लाह का नाम न लिया जाए, खाना हलाल समझता है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (102 / 2017)، (5259)

٤١٦١ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا دَخَلَ الرَّجُلُ بَيْتَهُ فَذَكَرَ اللَّهَ عِنْدَ دُخُولِهِ وَعِنْدَ طَعَامِهِ قَالَ الشَّيْطَانُ: لَا مَبِيتَ لَكُمْ وَلَا عَشَاءَ وَإِذَا دَخَلَ فَلَمْ يَذْكُرِ اللَّهَ عِنْدَ دُخُولِهِ قَالَ الشَّيْطَانُ: أَدْرَكْتُمُ الْمَبِيتَ وَإِذَا لَمْ يَذْكُرِ اللَّهَ عِنْدَ طَعَامِهِ قَالَ: أَدْرَكْتُمُ الْمَبِيتَ وَالْعَشَاءَ ". رَوَاهُ مُسلم

4161. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जब आदमी अपने घर में दाखिल होता है और वह अपने दाखिले के वक़्त और खाना खाने के वक़्त अल्लाह का ज़िक्र करता है तो शैतान कहता है, तुम्हारे लिए न तो रात गुज़ार ने के लिए कोई जगह है और न शाम का खाना और जब आदमी दाखिल होता है और वह अपने दाखिले के वक़्त अल्लाह का ज़िक्र नहीं करता तो शैतान (अपने साथियो से) कहता है, तुमने रात गुज़ार ने की जगह पा ली, और जब वह खाना खाते वक़्त अल्लाह का नाम नहीं लेता तो वह कहता है, तुमने रात गुज़ार ने की जगह पा ली और शाम का खाना भी पा लिया"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (103 / 2018)، (5262)

٤١٦٢ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا أَكَلَ أَحَدُكُمْ فَلْيَأْكُلْ بِيَمِينِهِ وَإِذَا شَرِبَ فَلْيَشْرَبْ بِيَمِينِهِ» . رَوَاهُ مُسلم

4162. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई खाए तो वह अपने दाएं हाथ के साथ खाए और जब पिए तो दाएं हाथ से पिए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (105 / 2020)، (5265)

٤١٦٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَأْكُلَنَّ أَحَدُكُمْ بِشِمَالِهِ وَلَا يَشْرَبَنَّ بِهَا فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَأْكُلُ بِشِمَالِهِ وَيَشْرَبُ بهَا» . رَوَاهُ مُسلم

4163. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से कोई शख़्स भी अपने बाएं हाथ से न खाए और न उस के साथ पिएं, क्योंकि शैतान अपने बाएं हाथ के साथ खाता पीता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (106 / 2020)، (5267)

٤١٦٤ - (صَحِيح) وَعَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْكُلُ بِثَلَاثَةِ أَصَابِعَ وَيَلْعَقُ يَدَهُ قَبْلَ أَن يمسحها. رَوَاهُ مُسلم

4164. काब बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ तीन उंगलियों के साथ खाया करते थे, और आप हाथ साफ़ करने से पहले उन्हें चाट लिया करते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (131 / 2032)، (5296)

٤١٦٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٌ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَ بِلَعْقِ الْأَصَابِعِ وَالصَّفْحَةِ وَقَالَ: " إِنَّكُمْ لَا تَدْرُونَ: فِي أَيِّهِ الْبَرَكَةُ؟ ". رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4165. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने उंगलिया और पलेट चाटने का हुक्म दिया और फ़रमाया: “तुम नहीं जानते के (खाने के) किसी हिस्से में बरकत है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (133 / 2033)، (5300)

٤١٦٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِذَا أَكَلَ أَحَدُكُمْ فَلَا يمسحْ يدَه حَتَّى يلعقها أَو

يلعقها»

4166. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम में से कोई खाना खाए तो वह चाटने या चटाने से पहले अपना हाथ साफ़ न करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5456) و مسلم (130 ، 129 / 2031)، (5294 و 5295)

٤١٦٧ - (صَحِيح) وَعَن جَابر قَالَ: النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " إِنَّ الشَّيْطَانَ يَحْضُرُ أَحَدَكُمْ عِنْدَ كُلِّ شَيْءٍ مِنْ شَأْنِهِ حَتَّى يَحْضُرَهُ عِنْدَ طَعَامِهِ فَإِذَا سَقَطَتْ من أحدكُم لقْمَة فَلْيُمِطْ مَا كَانَ بِهَا مِنْ أَذًى ثُمَّ ليأكلها وَلَا يَدعهَا للشَّيْطَان فَإِذا فرغ فليلعق أَصَابَ فَإِنَّهُ لَا يَدْرِي: فِي أَيِّ طَعَامِهِ يَكُونُ الْبركَة؟ ". رَوَاهُ مُسلم

4167. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “शैतान तुम्हारे हर मुआमले में हत्ता के खाने के वक़्त भी हाज़िर होता है, जब तुम में से किसी से लुकमा गिर जाए तो वह इसे साफ़ कर के खा ले और इसे शैतान के लिए न छोड़े, और जब फारिग़ हो जाए तो अपने उंगलिया चाट ले क्योंकि वह नहीं जानता के उस के खाने के किसी हिस्से में बरकत हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (135 / 2033)، (5303)

٤١٦٨ - (صَحِيح) وَعَن أبي جُحَيْفَة قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «لَا آكل مُتكئا» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4168. अबू जुहैफा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “मैं टेक लगा कर नहीं खाता”| (बुखारी)

رواه البخارى (53985399)

٤١٦٩ - (صَحِيح) وَعَن قَتَادَة عَنْ أَنَسٍ قَالَ: مَا أَكَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى خِوَانٍ وَلَا فِي سُكُرَّجَةٍ وَلَا خُبِزَ لَهُ مُرَقَّقٌ قِيلَ لِقَتَادَةَ: على مَ يَأْكُلُون؟ قَالَ: على السّفر. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4169. क़तादाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के अनस रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: नबी ﷺ ने न मेज़ पर रख कर खाया और न तशरी में खाना खाया और ना ही चपाती खाई, क़तादाह से पूछा गया वह किसी चीज़ पर खाना खाया करते थे उन्होंने ने फ़रमाया: दस्तरख्वान पर| (बुखारी)

رواه البخارى (5386)

٤١٧٠ - (صَحِيح) وَعَن أنس قَالَ: مَا أَعْلَمُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى رَغِيفًا مُرَقَّقًا حَتَّى لَحِقَ بِاللَّهِ وَلَا رَأَى شَاةً سَمِيطًا بِعَيْنِهِ قَطُّ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4170. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नहीं जानता के नबी ﷺ ने पूरी जिंदगी मैदे की रोटी और सालिम भुनी हुई बकरी देखी (यानी खाई) हो| (बुखारी)

رواه البخاری (5385)

٤١٧١ - (صَحِيح) وَعَن سهل بن سعد قَالَ: مَا رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّقِيَّ مِنْ حِينِ ابْتَعَثَهُ اللَّهُ حَتَّى قَبَضَهُ اللَّهُ وَقَالَ: مَا رَأَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُنْخُلًا مِنْ حِين [ص:١٢١ ابتعثهُ الله حَتَّى قبضَهُ قِيلَ: كَيْفَ كُنْتُمْ تَأْكُلُونَ الشَّعِيرَ غَيْرَ مَنْخُولٍ؟ قَالَ: كُنَّا نَطْحَنُهُ وَنَنْفُخُهُ فَيَطِيرُ مَا طَارَ وَمَا بَقِي ثريناه فأكلناه. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4171. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने, जब से अल्लाह ने उन्हें मबउस फ़रमाया जिंदगी भर न मेदे की रोटी देखी और न चलनिया उन से दरियाफ्त किया गया तुम फिर बिन छने जौ कैसे खाते थे उन्होंने कहा, हम उस का आटा बनाते और फूंक मारते जो चीज़ उड़नि होती वह उड़ जाती और जो बाकी रह जाता हम इसे गुंध कर रोटी बनाते और इसे खा लेते थे| (बुखारी)

رواه البخاری (5413)

٤١٧٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أبي هُرَيْرَة قَالَ: مَا عَابَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَعَامًا قَطُّ إِنِ اشْتَهَاهُ أَكَلَهُ وَإِنْ كرهه تَركه

4172. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने कभी किसी खाने में ऐब नहीं निकाला, अगर आप ने इसे पसंद किया तो खा लिया और अगर नापसंद किया तो उसे छोड़ दिया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5409) و مسلم (187 / 2064)، (5380)

٤١٧٣ - (صَحِيح) وَعَنْهُ أَنَّ رَجُلًا كَانَ يَأْكُلُ أَكْلًا كَثِيرًا فَأَسْلَمَ فَكَانَ يَأْكُلُ قَلِيلًا فَذَكَرَ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «إِنَّ الْمُؤْمِنَ يَأْكُلُ فِي مِعًى وَاحِدٍ وَالْكَافِرُ يَأْكُلُ فِي سبعةِ أمعاء» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4173. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक आदमी बहोत ज़्यादा खाया करता था जब वह मुसलमान हो गया तो कम खाने लगा, नबी ﷺ से इस का ज़िक्र किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “मोमिन एक आंत में खाता है जबकि काफ़िर सात आंतो तो में खाता है”| (बुखारी)

رواه البخاری (5393)

٤١٧٤ - وَرَوَى مُسْلِمٌ عَنْ أَبِي مُوسَى وَابْنِ عُمَرَ الْمسند مِنْهُ فَقَط

4174. इमाम मुस्लिम ने अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है और इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से सिर्फ मुसनद रिवायत है| | (मुस्लिम)

رواه مسلم (184 / 2061)، (5375)

٤١٧٥ - (صَحِيح) وَرَوَى مُسْلِمٌ عَنْ أَبِي مُوسَى وَابْنِ عُمَرَ الْمسند مِنْهُ فَقَط

4175. इमाम मुस्लिम ने अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है और इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से सिर्फ मुसनद रिवायत है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (182 / 2060)، (5372)

٤١٧٦ - وَفِي أُخْرَى لَهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ضَافَهُ ضَيْفٌ وَهُوَ كَافِرٌ فَأَمَرَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِشَاةٍ فَحُلِبَتْ فَشَرِبَ حِلَابَهَا ثُمَّ أُخْرَى فَشَرِبَهُ ثُمَّ أُخْرَى فَشَرِبَهُ حَتَّى شَرِبَ حِلَابَ سَبْعِ شِيَاهٍ ثُمَّ إِنَّهُ أَصْبَحَ فَأَسْلَمَ فَأَمَرَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِشَاةٍ فَحُلِبَتْ فَشَرِبَ حِلَابَهَا ثُمَّ أَمَرَ بِأُخْرَى فَلَمْ يَسْتَتِمَّهَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمُؤْمِنُ يَشْرَبُ فِي مِعًى وَاحِدٍ وَالْكَافِرُ يشربُ فِي سَبْعَة أمعاء»

4176. और सहीह मुस्लिम की दूसरी रिवायत जो के अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से मरवी है, इस में है की रसूलुल्लाह ﷺ के यहाँ एक काफ़िर शख़्स महमान ठहरा, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक बकरी के मुतल्लिक फ़रमाया तो उस का दूध धोया गया, उस ने उस का सारा दूध पि लिया, फिर दूसरी का दूध धोया गया, तो उस ने वह भी पि लिया, फिर एक और का दूध धोया गया, उस ने इसे भी पि लिया हत्ता के उस ने सात बकरियों का दूध पि लिया, फिर अगले रोज़ उस ने इस्लाम कबूल कर लिया रसूलुल्लाह ﷺ ने उस के लिए एक बकरी के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया, उस का दूध धोया गया उस ने उस का दूध पि लिया, फिर दूसरी के मुतल्लिक हुक्म दिया गया तो वह दूसरी का सारा दूध न पि सका तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मोमिन एक आंत में पीता है, जबकि काफ़िर सात आंतो तो में पीता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (186 / 2063)، (5379)

٤١٧٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «طَعَامُ الِاثْنَيْنِ كَافِي الثلاثةِ وطعامِ الثلاثةِ كَافِي الْأَرْبَعَة»

4177. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दो (आदमियों) का खाना तीन

के लिए काफी होता है जबकि तीन का खाना चार के लिए काफी होता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5392) و مسلم (178 / 2058)، (5367)

٤١٧٨ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «طَعَامُ الْوَاحِدِ يَكْفِي الِاثْنَيْنِ وَطَعَامُ الِاثْنَيْنِ يَكْفِي الْأَرْبَعَةَ وَطَعَامُ الْأَرْبَعَةِ يَكْفِي الثمانيَة» . رَوَاهُ مُسلم

4178. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “एक आदमी का खाना दो के लिए दो का खाना चार के लिए और चार का खाना आठ के लिए काफी होता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (179 / 2059)، (5368)

٤١٧٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: [ص:١٢١ «التَّلْبِينَةُ مُجِمَّةٌ لِفُؤَادِ الْمَرِيضِ تَذْهَبُ بِبَعْض الْحزن»

4179. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “तल्बिना (जौ का दलिया) यह दिल के मरीज़ के लिए राहत बख्श और गम को हल्का करने वाला है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5417) و مسلم (90 / 2216)، (5769)

٤١٨٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ خَيَّاطًا دَعَا النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِطَعَامٍ صَنَعَهُ فَذَهَبْتُ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَرَّبَ خُبْزَ شَعِيرٍ وَمَرَقًا فِيهِ دُبَّاءُ وَقَدِيدٌ فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَتَبَّعُ الدُّبَّاءَ مِنْ حَوَالَيِ الْقَصْعَةِ فَلَمْ أَزَلْ أُحِبُّ الدباءَ بعد يومِئذٍ

4180. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक दर्जी ने नबी ﷺ को खाने पर दावत दी तो के उस ने (खुसूसी तौर) पर तैयार किया था, मैं भी नबी ﷺ के साथ गया, उस ने जो की रोटी और शोरबा पेशे खिदमत किया जिस में कद्दू और खुश्क किए हुए गोश्त के टुकड़े थे, मैंने नबी ﷺ को पलेट के किनारों में कद्दू तलाश करते हुए देखा चुनांचे में इस रोज़ से कद्दू पसंद करता हूँ| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2092) و مسلم (144 / 2041)، (5325)

٤١٨١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَمْرو بنِ أُميَّةَ أَنَّهُ رَأَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يحتزمن كتف الشَّاة فِي يَدِهِ فَدُعِيَ إِلَى الصَّلَاةِ فَأَلْقَاهَا وَالسِّكِّينَ الَّتِي يَحْتَزُّ بِهَا ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى وَلَمْ يتَوَضَّأ

4181. अमर बिन उमय्य रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ को देखा के बकरी की दस्ती आप के हाथ में है और आप उस से काट कर तनावुल फरमा रहे हैं, इतने में आप को नमाज़ के लिए आवाज़ दी गई तो आप ने इस (दस्ती) को और इस छुरी को जिसके साथ आप काट रहे थे रख दिया, फिर खड़े हुए और नमाज़ पढ़ी और आप ﷺ ने नया वुज़ू नहीं फरमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (208) و مسلم (93 / 355)، (793)

٤١٨٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحِبُّ الْحَلْوَاء وَالْعَسَل. رَوَاهُ البُخَارِيّ

4182. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मीठी चीज़े और शहद पसंद फ़रमाया करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

رواه البخاری (5431)

٤١٨٣ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٌ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَأَلَ أَهْلَهُ الْأُدْمَ. فَقَالُوا: مَا عِنْدَنَا إِلَّا خَلٌّ فَدَعَا بِهِ فَجَعَلَ يَأْكُلُ بِهِ وَيَقُولُ: «نِعْمَ الْإِدَامُ الْخَلُّ نِعْمَ الْإِدَامُ الْخَلُّ» . رَوَاهُ مُسلم

4183. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने अपने अहले खाना से सालन तलब फ़रमाया तो उन्होंने अर्ज़ किया, हमारे पास तो सिर्फ सिरका है, आप ने इसे मंगवाया और उस के साथ खाना खाने लगे और आप ﷺ फरमा रहे थे: “सिरका बेहतरीन सालन है, सिरका बेहतरीन सालन है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (166 / 2052)، (5352)

٤١٨٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن سعيد بن زيدٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْكَمْأَةُ مِنَ الْمَنِّ وَمَاؤُهَا شِفَاءٌ لِلْعَيْنِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: «مِنَ الْمَنِّ الَّذِي أنزلَ اللَّهُ تَعَالَى على مُوسَى عَلَيْهِ السَّلَام»

4184. सईद बिन ज़ैद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “खंबी (मशरूम जैसी), मन (बनी इसराइल के मन व सलवा) की नौअ में से है और उस का पानी आँख के लिए बाईसे शिफा है”| बुखारी, मुस्लिम, और सहीह मुस्लिम की रिवायत में है: “वो (खंबी) इस मन में से है जो अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल फ़रमाया था”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5708) و مسلم (157 / 2049 ، 160 / 2049)، (5342 و 5346)

٤١٨٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جَعْفَرٍ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْكُلُ الرُّطَبَ بِالْقِثَّاءِ

4185. अब्दुल्लाह बिन जाफर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को ककड़ी के साथ खजूर तनावुल फरमाते हुए देखा| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5440) و مسلم (147 / 2043)، (5330)

٤١٨٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِمَرِّ الظَّهْرَانِ نَجْنِي [ص:١٢١ الْكَبَاثَ فَقَالَ: «عَلَيْكُم بالأَسْوَدِ مِنْهُ فإِنَّه أَطْيَبُ» فَقِيلَ: أَكُنْتَ تَرْعَى الْغَنَمَ؟ قَالَ: «نَعَمْ وهلْ منْ نبيٍّ إِلاَّ رعاها؟»

4186. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम (मक्के के क़रीब) मर्रिलज़हरान के मक़ाम पर रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे, हम पिलु चुन रहे थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन में से सियाह रंग की चुनो क्योंकि वह ज़्यादा अच्छी है”, आप ﷺ से अर्ज़ किया गया, क्या आप बकरिया चराया करते थे? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ और हर नबी ने बकरिया चराई है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5443) و مسلم (163 / 2050)، (5349)

٤١٨٧ - (صَحِيح) وَعَن أنس قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُقْعِيًا يَأْكُلُ تَمْرًا وَفِي رِوَايَةٍ: يَأْكُلُ مِنْهُ أكلا ذريعا. رَوَاهُ مُسلم

4187. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को उकड़ु बैठें खजूरे खाते हुए देखा| एक दूसरी रिवायत में है आप ﷺ उनमें से जल्दी जल्दी खा रहे थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (149 ، 148 / 2044)، (5331 و 5332)

٤١٨٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَقْرِنَ الرَّجُلُ بَيْنَ التَّمْرَتَيْنِ حَتَّى يستأذِنَ أَصْحَابه

4188. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कोई आदमी अपने साथी की इजाज़त के बगैर दो दो खजूरे एक साथ न उठाए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2489) و مسلم (151 / 2045)، (5335)

٤١٨٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَجُوعُ أَهْلُ بَيْتٍ عِنْدَهُمُ التَّمْرُ» .

وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ: «يَا عَائِشَةُ بَيْتٌ لَا تَمْرَ فِيهِ جِيَاعٌ أَهْلُهُ» قَالَهَا مَرَّتَيْنِ أَوْ ثَلَاثًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4189. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जिस के घर में खजूरे हो वह लोग भूके नहीं रहते”| एक दूसरी रिवायत में है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “आइशा! वह घर जिस में खजूरे न हो तो उस के रहने वाले भूके हैं”| आप ﷺ ने दो या तीन मर्तबा फ़रमाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (153 ، 152 / 2046)، (5336 و 5337)

٤١٩٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن سعدٍ قَالَ: سمعتُ رسولَ الله يَقُولُ: «مَنْ تَصَبَّحَ بِسَبْعِ تَمَرَاتٍ عَجْوَةٍ لَمْ يضرَّه ذَلِك الْيَوْم سم وَلَا سحر»

4190. साअद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स सुबह के वक़्त सात अज्वा खजूरे खा ले तो इस रोज़ ना उस के लिए ज़हर बाईसे नुकसान है न जादू”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5445) و مسلم (155 / 2047)، (5339)

٤١٩١ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَال: «إِنَّ فِي عَجْوَةِ الْعَالِيَةِ شِفَاءً وَإِنَّهَا تِرْيَاقٌ أَوَّلَ البكرة» . رَوَاهُ مُسلم

4191. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आलिया की अज्वा (खजूर) में शिफा है और वह हर का तरियाक है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (156 / 2048)، (5341)

٤١٩٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهَا قَالَتْ: كَانَ يَأْتِي عَلَيْنَا الشَّهْرُ مَا نُوقِدُ فِيهِ نَارًا إِنَّمَا هُوَ التَّمْرُ وَالْمَاءُ إِلَّا أَنْ يُؤْتَى بِاللُّحَيْمِ

4192. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, हम पर ऐसा महीने भी आता है के हम उस में (चूल्हे में) आग नहीं जलाते थे, हमारा खाना सिर्फ खजूर और पानी होता था, अलबत्ता कहीं से थोड़ा गोश्त आ जाता था| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6458) و مسلم (26 / 2972)، (7449)

٤١٩٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهَا قَالَتْ: مَا شَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ يَوْمَيْنِ مِنْ خُبْزِ بُرٍّ إِلَّا وَأَحَدُهُمَا تمر

4193. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मुहम्मद ﷺ की आल ने दो दिन (मुसलसल) गंदुम की रोटी सैर हो कर नहीं खाई, इन दो (दोनों) में से एक दिन खजूर होती थी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6455) و مسلم (25 / 2971)، (7448)

٤١٩٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهَا قَالَتْ: تُوُفِّيَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَا شَبِعْنَا مِنَ الأسودين

4194. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ की हयाते मुबारक में हमने दो सियाह चीज़े (खजूर और पानी) शक्म सैर हो कर नहीं खाई| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5383) و مسلم (31 / 2975)، (7455)

٤١٩٥ - (صَحِيح) وَعَن النّعمانِ بن بشيرٍ قَالَ: أَلَسْتُمْ فِي طَعَامٍ وَشَرَابٍ مَا شِئْتُمْ؟ لَقَدْ رَأَيْتُ نَبِيَّكُمْ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَا يَجِدُ مِنَ الدَّقَلِ مَا يَمْلَأُ بَطْنَهُ. رَوَاهُ مُسلم

4195. नौमान बिन बशीर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, क्या तुम्हारे पास तुम्हारी चाहत के मुताबिक खाने पीने की वाफिर चीज़े नहीं है? जबकि मैंने तुम्हारे नबी ﷺ को देखा के आप के पास पेट भरने के लिए रद्दी किस्म की खजूरे भी नहीं थी, | (मुस्लिम)

رواه مسلم (34 / 2977)، (7459)

٤١٩٦ - (صَحِيح) وَعَن أَيُّوب قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أُتِيَ بِطَعَامٍ أَكَلَ مِنْهُ وَبَعَثَ بِفَضْلِهِ إِلَيَّ وَإِنَّهُ بَعَثَ إِلَيَّ يَوْمًا بِقَصْعَةٍ لمْ يأْكُلْ مِنْهَا لأنَّ فِيهَا ثُومًا فَسَأَلْتُهُ: أَحَرَامٌ هُوَ؟ قَالَ: «لَا وَلَكِنْ أَكْرَهُهُ مِنْ أَجْلِ رِيحِهِ» . قَالَ: فَإِنِّي أَكْرَهُ مَا كرهْت. رَوَاهُ مُسلم

4196. अबू अय्यूब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब नबी ﷺ की खिदमत में खाना पेश किया जाता तो आप उस से तनावुल फरमाते और उस से जो बच जाता वह मेरे लिए भेज देते, एक रोज़ आप ने एक प्याला मेरी तरफ भेजा जिस में से आप ने कुछ नहीं खाया था, क्योंकि उस में लहसुन था, मैंने आप से दरियाफ्त किया, क्या यह हराम है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं, लेकिन उसकी बू की वजह से में उसे नापसंद करता हूँ”, उन्होंने अर्ज़ किया, जिस चीज़ को आप नापसंद करते हैं मैं भी नापसंद करता हूँ| (मुस्लिम)

رواه مسلم (170 / 2053)، (5356)

٤١٩٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ جَابِرٌ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَكَلَ ثُومًا أَوْ بَصَلًا فَلْيَعْتَزِلْنَا» أَوْ قَالَ: «فَلْيَعْتَزِلْ

مَسْجِدَنَا أَوْ لِيَقْعُدْ فِي بَيْتِهِ» . وَإِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَتِيَ بِقِدْرٍ فِيهِ خَضِرَاتٌ مِنْ بُقُولٍ فَوَجَدَ لَهَا رِيحًا فَقَالَ: «قَرِّبُوهَا» إِلَى بَعْضِ أَصْحَابِهِ وَقَالَ: «كُلْ فَإِنِّي أُنَاجِي مَنْ لَا تُنَاجِي»

4197. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जिस शख़्स ने (कच्चा) लहसुन या प्याज़ खाया हो वह हमसे दूर रहे, "या फ़रमाया: "वो हमारी मस्जिद से दूर रहे या वह अपने घर में बैठा रहे", और नबी ﷺ के पास एक हंडिया लाइ गई जिस में मुख्तलिफ किस्म की सब्जियाँ थी, आप ﷺ ने उस में से बू महसूस की और फ़रमाया: "इसे अपने किसी साथी के पास ले जाओ", और फ़रमाया: "खाओ क्योंकि मैं उस से हम कलाम होता हो जिस से तुम हम कलाम नहीं होते"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (855) و مسلم (73 / 564)، (1253)

٤١٩٨ - (صَحِيح) وَعَن المِقدامِ بن معدي كرب عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «كيلوا طَعَامك يُبَارك لكم فِيهِ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

4198. मिक्दाम बिन मअदीकरीब रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अपना अनाज माप लिया करो, तुम्हें उस में बरकत अता की जाएगी"| (बुखारी)

رواه البخارى (2128)

٤١٩٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي أُمَامَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ إِذَا رَفَعَ مَائِدَتَهُ قَالَ: «الْحَمْدُ لِلَّهِ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَلَا مُوَدَّعٍ وَلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبُّنَا» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

4199. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब दस्तरखान उठा लिया जाता तो नबी ﷺ यह दुआ फ़रमाया करते थे: (الْحَمْدُ لِلَّهِ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَلَا مُوَدَّعٍ وَلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبُّنَا) "हर किस्म की बहोत ज़्यादा पाकीज़ा व बा बरकत हम्द अल्लाह के लिए है, ना किफ़ायत की गई न छोड़ी गई, और न उस से बेनियाज़ी दिखाई जाए, ए हमारे रब| (बुखारी)

رواه البخارى (5458)

٤٢٠٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى لَيَرْضَى عنِ العبدِ أنْ يأكلَ الأكلَةَ فيحمدُه عَلَيْهِ أَوْ يَشْرَبَ الشَّرْبَةَ فَيَحْمَدَهُ عَلَيْهَا» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ [ص:١٢١»»] وسنذكرُ حَدِيثي عائشةَ وَأبي هريرةَ: مَا شَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ وَخَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الدُّنْيَا فِي «بَابِ فَضْلِ الْفُقَرَاءِ» إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى

4200. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह तआला बंदे के इस तर्ज़े

अमल से खुश होता है के वह एक लुकमे खाए तो उस पर उसकी हम्द बयान करे या वह कोई चीज़ पिए तो उस पर उसकी हम्द बयान करे”| # हम आइशा (रअ) और अबू हुरैरा (र) से मरवी अहादीस : ’ما شبع ال محمد” और من الدنيا ﷺ خرج النبی” इंशाअल्लाह तआला “ بَابِ فَضْلِ الْفُقَرَاءِ (फकीरों की फ़ज़ीलत और नबी ﷺ की गुजरान का बयान ” में ज़िक्र करेंगे. (मुस्लिम)

رواہ مسلم (89 / 2734)، (6932) 0 حدیث عائشۃ یاتی (5237) و حدیث ابی ھریرۃ یاتی ایضًا (5238)

كتاب الأَطْعِمَة • खानों का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٢٠١ - (لم تتمّ دراسته) عَن أبي أَيُّوب قَالَ: كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُرِّبَ طَعَامٌ فَلَمْ أَرَ طَعَامًا كَانَ أَعْظَمَ بَرَكَةً مِنْهُ أَوَّلَ مَا أَكَلْنَا وَلَا أَقَلَّ بَرَكَةً فِي آخِرِهِ قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ هَذَا؟ قَالَ: «إِنَّا ذَكَرْنَا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ حِينَ أَكَلْنَا ثُمَّ قَعَدَ مَنْ أَكَلَ وَلَمْ يُسَمِّ اللَّهَ فَأَكَلَ مَعَهُ الشَّيْطَانُ» . رَوَاهُ فِي شرح السّنة

4201. अबू अय्यूब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम नबी ﷺ के पास थे की खाना पेश किया गया, मैंने कोई खाना नहीं ऐसा देखा के हमने खाया हो और उस के शुरू में बहोत ज़्यादा बरकत हो और उस के आख़िर में बहोत कम बरकत हो, हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! यह कैसे हुआ? आप ﷺ ने फ़रमाया: जब हमने खाना खाया तो हमने उस पर अल्लाह का नाम लिया, फिर कोई ऐसा शख़्स बैठा जिस ने अल्लाह का नाम नहीं लिया इस वजह से शैतान ने उस के साथ खाया (इसलिए बरकत उठ गई)”| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ البغوی فی شرح السنۃ (11 / 275 ح 2824) [و الترمذی فی الشمائل (187)] * حبیب بن اوس و ثقہ ابن حبان وحدہ و ابن لھیعۃ مدلس و عنعن

٤٢٠٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا أَكَلَ أَحَدُكُمْ فَنَسِيَ أَنْ يَذْكُرَ اللَّهَ عَلَى طَعَامِهِ فَلْيَقُلْ: بِسْمِ اللَّهِ أَوَّلَه وآخرَه ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4202. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई खाए और अपने खाने पर अल्लाह का नाम लेना भूल जाए तो वह कहे: (بِسْمِ اللَّهِ أَوَّلَه وآخرَه) “उस का आगाज़ व इख्तिताम अल्लाह के नाम से”| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ الترمذی (1858 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (3767)

٤٢٠٣ - (ضَعِيف) وَعَن أميَّةَ بن مَخْشِيٍّ قَالَ: كَانَ رَجُلٌ يَأْكُلُ فَلَمْ يُسَمِّ حَتَّى لَمْ يَبْقَ مِنْ طَعَامِهِ إِلَّا لُقْمَةٌ فَلَمَّا رَفَعَهَا إِلَى فِيهِ قَالَ: بِسْمِ اللَّهِ أَوَّلَهُ وَآخِرَهُ فَضَحِكَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ: «مَا زَالَ الشَّيْطَانُ يَأْكُلُ مَعَهُ فَلَمَّا ذَكَرَ اسْمَ اللَّهِ اسْتَقَاءَ مَا فِي بَطْنه» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4203. उमय्या बिन मखशी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी खाना खा रहा था, उस ने बिस्मिल्लाह (بِسْمِ اللَّهِ) नहीं पढ़ी थी हत्ता के एक लुकमे बाकी रह गया और वह लुकमे जब उस ने इसे मुंह की तरफ उठाया तो उस ने कहा: “بسم الله اوله و آخره”, तो (ये सुन कर) नबी ﷺ मुस्कुरा दिए, फिर फ़रमाया: “शैतान उस के साथ खाता रहा हत्ता कि जब उस ने अल्लाह का नाम लिया तो उस ने अपने पेट का सब कुछ कै कर दिया”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3768)

٤٢٠٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا فَرَغَ مِنْ طَعَامِهِ قَالَ: «الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسْلِمِينَ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْن مَاجَه

4204. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ अपने खाने से फारिग़ होती तो यह दुआ पढ़ा करते थे : (الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسْلِمِينَ) हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिस ने हमें खिलाया पिलाया और हमें मुसलमान बनाया”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (فی الشمائل : 190) و ابوداؤد (3850) [و ابن ماجه (3283 بسند آخر فيه ‘‘ مولی لابی سعيد ’’ مجهول و علة أخری) و الترمذی (3457 و سندهما ضعيف)] * و اسماعيل بن رياح و ابوه مجهولان و للحديث طرق كلها ضعيفة

٤٢٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الطَّاعِمُ الشَّاكِرُ كَالصَّائِمِ الصابر» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4205. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “खाना खा कर शुक्र करने वाला, सब्र करने वाले रोज़दार की तरह है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2486 وقال : حسن غريب)

٤٢٠٦ - (لم تتمّ دراسته) وَابْن مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ عَنْ سِنَانِ بْنِ سَنَّةَ عَنْ أَبِيه

4206. इमाम इब्ने माजा और इमाम दारमी ने सुनान बिन सन्ना अन अबी की सनद से रिवायत किया है| (हसन)

حسن ، رواه ابن ماجه (1764) و الدارمی (2 / 95 ح 2030)

٤٢٠٧ - (صَحِيح) وَعَن أبي أيوبٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَكَلَ أَوْ شَرِبَ قَالَ: «الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَ وَسَقَى وَسَوَّغَهُ وَجَعَلَ لَهُ مخرجا» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4207. अबू अय्यूब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ खाना खाते या कोई चीज़ नोश फरमाते, तो यह दुआ पढ़ते: (الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَ وَسَقَى وَسَوَّغَهُ وَجَعَلَ لَهُ مخرجا) "हर किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिस ने खाना खिलाया, पिलाया और इसे हलक से उतरने वाला बनाया और फिर उस के निकलने की राहे बनाई"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (3851)

٤٢٠٨ - (ضَعِيف) وَعَن سلمانَ قَالَ: قَرَأْتُ فِي التَّوْرَاةِ أَنَّ بَرَكَةَ الطَّعَامِ الْوُضُوءُ بَعْدَهُ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَرَكَةُ الطَّعَامِ الْوُضُوءُ قَبْلَهُ وَالْوُضُوءُ بعدَه» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4208. सलमान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने तौरात में पढ़ा के खाने की बरकत उस के बाद हाथ मुंह धोने में है, मैंने नबी ﷺ से इस का ज़िक्र किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "खाने की बरकत उस से पहले और उस के बाद हाथ मुंह धोने में है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1846) و ابوداؤد (3761) * فيه قيس بن الربيع ضعفة الجمهور من جهة حفظه وقال احمد :'' هو منكر ، ما حدث به الاقيس بن الربيع ''

٤٢٠٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ مِنَ الْخَلَاءِ فَقُدِّمَ إِلَيْهِ طَعَامٌ فَقَالُوا: أَلَا نَأْتِيكَ بِوَضُوءٍ؟ قَالَ: «إِنَّمَا أُمِرْتُ بِالْوُضُوءِ إِذَا قُمْتُ إِلَى الصَّلَاةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4209. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ बैतूलखला से बाहर तशरीफ़ लाए तो आप की खिदमत में खाना पेश किया गया, सहाबा ने अर्ज़ किया, क्या हम आप की खिदमत में वुज़ू का पानी पेश न करे? आप ﷺ ने फ़रमाया: "मुझे वुज़ू का हुक्म सिर्फ इस वक़्त दिया गया है जब में नमाज़ पढ़ने का इरादा करू"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (1847 وقال : حسن) و ابوداؤد (3760) و النسائی (1 / 85 ح 132) [و مسلم (118 / 374)، (827) و ذکره البغوی فی مصابيح السنة (314)]

٤٢١٠ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ ابْن مَاجَه عَن أبي هُرَيْرَة

4210. इमाम इब्ने माजा ने अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه ابن ماجه (3261)

٤٢١١ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: أَنَّهُ أُتِيَ بِقَصْعَةٍ مِنْ ثَرِيدٍ فَقَالَ: «كُلُوا مِنْ جَوَانِبِهَا وَلَا تَأْكُلُوا مِنْ وَسَطِهَا فَإِنَّ الْبَرَكَةَ تَنْزِلُ فِي وَسَطِهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حسن صَحِيح

4211. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की सरिद का प्याला आप की खिदमत में पेश किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस के किनारों से खाओ और उस के बिच से न खाओ क्योंकि बरकत बिच में नाज़िल होती है”| तिरमिज़ी, इब्ने माजा दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: “ये हदीस हसन सहीह है| और अबू दावुद की रिवायत में है फ़रमाया: “जब तुम में से कोई खाना खाए तो वह प्याले (प्लेट) के ऊपरी हिस्से से न खाए बल्कि वह उस के निचले हिस्से (यानी अपने आगे और क़रीब) से खाए, क्योंकि बरकत उस के ऊपरी हिस्से में नाज़िल होती है”| (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (1805) و ابن ماجہ (3277) و الدارمی (2 / 100 ح 2052) و ابوداؤد (3772)

٤٢١٢ - (صَحِيح) وَعَن عبد الله بن عَمْرو قَالَ: مَا رُئِيَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْكُلُ [ص:١٢١ مُتَّكِئًا قَطُّ وَلَا يَطَأُ عقبه رجلَانِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4212. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ को कभी तकिया लगा कर खाना खाते हुए नहीं देखा गया और ना ही आप के पीछे दो आदमी चलते हुए देखे गए| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ ابوداؤد (3770)

٤٢١٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ جَزْءٍ قَالَ: أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِخُبْزٍ وَلَحْمٍ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ فَأَكَلَ وَأَكَلْنَا مَعَهُ ثُمَّ قَامَ فَصَلَّى وَصَلَّيْنَا مَعَهُ وَلَمْ نَزِدْ عَلَى أَنْ مَسَحْنَا أَيْدِيَنَا بِالْحَصْبَاءِ. رَوَاهُ ابْن مَاجَه

4213. अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन जज़अ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मस्जिद में तशरीफ़ फरमा थे की आप की खिदमत में रोटी और गोश्त पेश किया गया तो आप ने तनावुल फ़रमाया और हमने भी आप के साथ खाया, फिर आप खड़े हुए और नमाज़ पढ़ी, हमने भी आप के साथ नमाज़ पढ़ी, और हमने उस से ज़्यादा कुछ नहीं किया के हमने कंकरियो के साथ अपने हाथ साफ़ कर लिए| (सहीह)

صحیح ، رواہ ابن ماجہ (3300)

٤٢١٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِلَحْمٍ فَرُفِعَ إِلَيْهِ الذِّرَاعُ وَكَانَتْ تُعْجِبُهُ فَنَهَسَ مِنْهَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْن مَاجَه

4214. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में गोश्त की दस्ती पेश की गई और आप दस्ती का गोश्त पसंद फ़रमाया करते थे, आप ने दांतों के साथ उस से नोच लिया| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (1837 وقال : حسن صحیح) و ابن ماجه (3307)

٤٢١٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَقْطَعُوا اللَّحْمَ بِالسِّكِّينِ فَإِنَّهُ مِنْ صُنْعِ الْأَعَاجِمِ وَانْهَسُوهُ فَإِنَّهُ أَهْنَأُ وَأَمْرَأُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ وَقَالا: ليسَ هُوَ بِالْقَوِيّ

4215. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “छुरी के साथ (पके हुए) गोश्त को मत काटो क्योंकि यह अज़मीओ का तरीका है, बल्कि इसे दांतों के साथ खाओ, क्योंकि ऐसा करना ज़्यादा लज़ीज़ और खाने में ज़्यादा सहल है”| अबू दावुद, बयहकी की शौबुल ईमान और दोनों ने फ़रमाया: यह रिवायत क़वी नहीं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3778) و البیهقی فی شعب الایمان (5898) * فیه ابو معشر نجیح : ضعیف

٤٢١٦ - (حسن) وَعَن أمِّ المنذِر قَالَتْ: دَخَلَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَعَهُ عَلِيٌّ وَلَنَا دَوَالٍ مُعَلَّقَةٌ فَجَعَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْكُلُ وَعَلِيٌّ مَعَهُ يَأْكُلُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَعَلِيٍّ: «مَهْ يَا عَلِيُّ فَإِنَّكَ نَاقِهٌ» قَالَتْ: فَجَعَلْتُ لَهُمْ سِلْقًا وَشَعِيرًا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا عَلِيُّ مِنْ هَذَا فَأَصِبْ فَإِنَّهُ أَوْفَقُ لَكَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

4216. उम्म मुन्ज़िर रदियल्लाहु अन्हा बयान करत की है रसूलुल्लाह ﷺ मेरे घर तशरीफ़ लाए और अली रदियल्लाहु अन्हु भी आप के हमराह थे, हमारे घर में खजूर के खोशे लटक रहे थे, रसूलुल्लाह ﷺ उन्हें तनावुल फरमाने लगे और अली रदियल्लाहु अन्हु भी आप के साथ खाने लगे, रसूलुल्लाह ﷺ ने अली रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: “अली! बाज़ रहो, क्योंकि तुम अभी अभी सेहतियाब हुए हो”, वह बयान करती हैं, मैंने इन के लिए चुकंदर और जौ पकाया तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अली! यह खाओ क्योंकि यह तुम्हारे लिए ज़्यादा मोज़ो है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (6 / 364 ح 27593) و الترمذی (2037 وقال : حسن غریب) و ابن ماجه (3442)

٤٢١٧ - وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعْجِبُهُ الثُّفْلُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

4217. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ को बर्तन (हंडी या देगची) के पेंदे के साथ लगा हुआ खाना पसंद था| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (فى الشمائل : 183) و البيهقى فى شعب الايمان (5924) [و الحاكم (4 / 115116) و صححه الذهبى]

٤٢١٨ - وَعَن نُبَيْشَة عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَكَلَ فِي قَصْعَةٍ فَلَحَسَهَا اسْتَغْفَرَتْ لَهُ الْقَصْعَةُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيب

4218. नुबैशा रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स किसी बर्तन में खा कर इसे अच्छी तरह साफ़ करता है तो वह बर्तन उस के लिए मगफिरत की दुआ करता है”| अहमद तिरमिज़ी, इब्ने माजा दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 76 ح 21001) و الترمذى (1804) و ابن ماجه (3271) و الدارمى (2 / 96 ح 2033) * ام عاصم : لم اجد لها توثيقًا

٤٢١٩ - (جيد) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ بَاتَ وَفِي يَدِهِ غَمَرٌ لَمْ يَغْسِلْهُ فَأَصَابَهُ شَيْءٌ فَلَا يَلُومَنَّ إِلَّا نَفْسَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْن مَاجَه

4219. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स के हाथ पर चिकनाई लगी हो और वह इसे धोए बगैर सो जाए फिर कोई चीज़ इसे काट ले तो वह शख़्स अपने आप को ही मलामत करे”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (1860 وقال : حسن غريب) و ابوداؤد (3852) و ابن ماجه (3297)

٤٢٢٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابنِ عبَّاسٍ قَالَ: كَانَ أَحَبَّ الطَّعَامَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الثَّرِيدُ مِنَ الْخُبْزِ والثريدُ منَ الحَيسِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4220. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ को रोटी और हईस (खजूर पनीर और घी) से तैयार शुदा सरिद बहोत मरगूब (पसंद) था| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3783) * فيه رجل من اهل البصرة مجهول و سقط ذكره فى المستدرك (4 / 116) فصحح0 (!)

٤٢٢١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي أَسَيدٍ الْأَنْصَارِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُوا الزَّيْتَ وَادَّهِنُوا بِهِ

فَإِنَّهُ مِنْ شَجَرَةٍ مُبَارَكَةٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ

4221. अबू उसैद अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जैतून का तेल खाओ और बदन पर लगाओ क्योंकि वह मुबारक दरख्त से है"| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (1851) و ابن ماجه (3319) و الدارمی (2 / 102 ح 2058) [و صححه الحاکم علی شرط الشیخین (4 / 122) و وافقه الذهبی]

٤٢٢٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أم هَانِئ قَالَتْ: دَخَلَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «أَعِنْدَكِ شَيْءٌ» قُلْتُ: لَا إِلَّا خُبْزٌ يَابِسٌ وَخَلٌّ فَقَالَ: «هَاتِي مَا أَقْفَرَ بَيْتٌ مِنْ أَدَمٍ فِيهِ خَلٌّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

4222. उम्म हानी रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, नबी ﷺ हमारे घर तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया: "क्या तुम्हारे पास कोई चीज़ है?" मैंने अर्ज़ किया: मेरे पास सिर्फ खुश्क रोटी और सिरका है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "ले आओ जिस घर में सिरका हो वह सालन से खाली नहीं होता"| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (1841) * ابو حمزة الشمالی ثابت بن ابی صفیة ضعیف رافضی و للحدیث شاھد ضعیف عند الحاکم (4 / 54 ح 6875) فیه سعدان بن الولید مجھول الحال : لم اجد من وثقه و روی احمد (3 / 353 ح 14807) عن جابر قال قال رسول الله صلی الله علیه و آله وسلم ((نعم الادام الخل ، ما اقفر بیت فی خل)) و سنده حسن و انظر صحیح مسلم (2052)

٤٢٢٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ يُوسُفَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ سَلَامٍ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخَذَ كِسْرَةً مِنْ خُبْزِ الشَّعِيرِ فَوَضَعَ عَلَيْهَا تَمْرَةً فَقَالَ: «هَذِهِ إِدَامُ هَذِهِ» وَأَكَلَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4223. युसुफ़ बिन अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को देखा के आप ने जौ की रोटी का टुकड़ा लिया, उस पर खजूर रखी और फ़रमाया: "ये उस का सालन है" फिर आप ﷺ ने इसे तनावुल फ़रमाया| (ज़ईफ़)

ضعیف ، رواه ابوداؤد (3259 ، 3260 ، 3830) [و الترمذی فی الشمائل (182)] * یحیی بن العلاء : متروک متھم بالکذاب و فی الطریق الثانی یزید بن ابی امیة الاعور : مجھول و حفص بن غیاث مدلس و عنعن

٤٢٢٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سعدٍ قَالَ: مَرِضْتُ مَرَضًا أَتَانِي النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُنِي فَوَضَعَ يَدَهُ بَيْنَ ثَدْيِيَّ حَتَّى وَجَدْتُ بَرْدَهَا عَلَى فُؤَادِي وَقَالَ: «إِنَّكَ رجلٌ مفْؤودٌ ائْتِ الْحَارِثَ بْنَ كَلَدَةَ أَخَا ثَقِيفٍ فَإِنَّهُ رجل يتطبب فليأخذ سبع تمرات منم عَجْوَةِ الْمَدِينَةِ فَلْيَجَأْهُنَّ بِنَوَاهُنَّ ثُمَّ لِيَلُدَّكَ بِهِنَّ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4224. साअद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं शदीद बीमार हो गया तो नबी ﷺ मेरी इयादत (बीमार के

पास जाकर खबर लेना) के लिए तशरीफ़ लाए, आप ﷺ ने अपना दस्ते मुबारक मेरे सिने पर रखा जिस से मैंने अपने दिल पर उसकी ठंडक महसूस की, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तो दिल के मरीज़ हो, तुम हारिस बिन कलदत सक्फी के पास जाओ क्योंकि वह तबीब आदमी है, वह मदीना की सात अज्वा खजूरे लेकर उन्हें गुट्लिया समेत कोट डाले, फिर वह तुझे खीला दे"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3875) * فيه عبدالله بن ابى نجيح مدلس و عنعن و فى سماع مجاهد من سعد بن ابى وقاص نظر و فيه علة أخرى

٤٢٢٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَأْكُلُ الْبِطِّيخَ بِالرُّطَبِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَزَادَ أَبُو دَاوُدَ: وَيَقُولُ: «يَكْسِرُ حَرَّ هَذَا بِبَرْدِ هَذَا وَبَرْدَ هَذَا بِحَرِّ هَذَا» . وَقَالَ التِّرْمِذِيّ: هَذَا حَدِيث حسن غَرِيب

4225. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ खजूरो के साथ तरबूज खाया करते थे| तिरमिज़ी, इमाम अबू दावुद ने यह इज़ाफा नकल किया है: आप ﷺ फ़रमाया करते थे: "उस की हरारत उसकी ठंडक से कम हो जाती और उसकी ठंडक उसकी हरारत से कम हो जाती है"| और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (1843) و ابوداؤد (3836)

٤٢٢٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أَنَسٍ قَالَ: أَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِتَمْرٍ عَتِيقٍ فَجَعَلَ يُفَتِّشُهُ وَيُخْرِجُ السُّوسَ مِنْهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4226. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ की खिदमत में पुरानी खजूरे पेश की गई तो आप उन्हें चिर कर उनमें से कीड़े निकालने लगे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3832)

٤٢٢٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: أَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِجُبُنَّةٍ فِي تَبُوكَ فَدَعَا بالسكين فسمَّى وقطَعَ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4227. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, गज़वा ए तबुक के मौके पर नबी ﷺ की खिदमत में पनीर का टुकड़ा पेश किया गया आप ने छुरी मंगाई, अल्लाह का नाम लिया और इसे काटा| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3819)

٤٢٢٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سَلْمَانَ قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ السَّمْنِ وَالْجُبْنِ وَالْفِرَاءِ فَقَالَ:

«الْحَلَالُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ فِي كِتَابِهِ وَالْحَرَامُ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فِي كِتَابِهِ وَمَا سَكَتَ عَنْهُ فَهُوَ مِمَّا عَفَا عَنْهُ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ وموقوفٌ على الأصحِّ

4228. सलमान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से घी, पनीर और रंगे हुए चमड़े के मुतल्लिक दरियाफ्त किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह ने जिस चीज़ को अपने किताब में हलाल करार दिया है के हलाल है और जिसे अपनी किताब में हराम करार दिया है वह हराम है, और उस ने जिस चीज़ के मुतल्लिक सुकूत इख़्तियार किया तो वह ऐसी चीज़ के ज़िमरे में है जिस से दरगुज़र फ़रमाया”| इब्ने माजा तिरमिज़ी, और इमाम तिरमिज़ी रहिमहुल्लाह कहते हैं, यह हदीस ग़रीब है और ज़्यादा सहीह यह है कि यह रिवायत मौक़ूफ है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابن ماجه (3367) و الترمذى (1726) * سيف بن هارون البرجمى ضعيف و فيه علة أخرى و للحديث شاهد ضعيف عند الحاكم (2 / 375 ح 3419)

٤٢٢٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَدِدْتُ أَنَّ عِنْدِي خُبزةً بيضاءَ منْ بُرَّةٍ سَمْرَاءَ مُلَبَّقَةً بِسَمْنٍ وَلَبَنٍ» فَقَامَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ فَاتَّخَذَهُ فَجَاءَ بِهِ فَقَالَ: «فِي أَيِّ شَيْءٍ كَانَ هَذَا؟» قَالَ فِي عُكَّةِ ضَبٍّ قَالَ: «ارْفَعْهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ أَبُو دَاوُد: هَذَا حَدِيث مُنْكر

4229. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैं चाहता हूँ कि मेरे पास गंदुम के सफ़ेद आटे की रोटी हो जो घी और दूध से गुंध कर तैयार की गई हो”, सहाबा में से एक आदमी उठा और वह इसे बना कर आप की खिदमत में ले आया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये (घी) किसी चीज़ मैं था ?” उस ने अर्ज़ किया, सांधे की जील्द से बने हुए बर्तन मैं था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे ले जाओ”| अबू दावुद, इब्ने माजा और अबू दावुद ने फ़रमाया: यह हदीस मुनकर है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3818) و ابن ماجه (3341) * فيه ايوب : ينظر فيه و لعله ابن خوط كما فى النكت الظراف (9 / 75) وهو متروک

٤٢٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَن أَكْلِ الثُّومِ إِلَّا مَطْبُوخًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

4230. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने कच्चा लहसुन खाने से मना फ़रमाया है मगर पका (हुआ खाने में कुछ हरज नहीं)| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1808 و ضعفه) و ابوداؤد (3828) * فيه ابو اسحاق مدلس و مختلط و عنعن ولم يعلم تحديثه به قبل اختلاطه

٤٢٣١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي زيادٍ قَالَ: سُئلتْ عائشةُ عَنِ الْبَصَلِ فَقَالَتْ: إِنَّ آخِرَ طَعَامٍ أَكَلَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ طَعَامُ فِيهِ بصل. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4231. अबू ज़ियाद बयान करते हैं, आइशा रदियल्लाहु अन्हा से प्याज़ के मुतल्लिक दरियाफ्त किया गया तो उन्होंने ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ ने जो आखिरी खाना तनावुल फ़रमाया उस में प्याज़ था| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3829) * خيار بن سلمة : لم يوثقه غير ابن حبان

٤٢٣٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابْنيْ بُسرٍ السُّلَمِيَّين قَالَا: دَخَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَقَدَّمْنَا زُبْدًا وَتَمْرًا وَكَانَ يُحِبُّ الزبدَ والتمرِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4232. बुसर के दोनों बेटो से रिवायत है उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाए तो हमने आप के सामने मख्खन और खजूर पेश किया, आप ﷺ मख्खन और खजूर पसंद फ़रमाया करते थे| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (3837)

٤٢٣٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عِكْرَاشِ بْنِ ذُؤَيْبٍ قَالَ: أَتِينَا بِجَفْنَةٍ كَثِيرَة من الثَّرِيدِ وَالْوَذْرِ فَخَبَطْتُ بِيَدِي فِي نَوَاحِيهَا وَأَكَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ بَيْنِ يَدَيْهِ فَقَبَضَ بِيَدِهِ الْيُسْرَى عَلَى يَدِيَ الْيُمْنَى ثُمَّ قَالَ: «يَا عِكْرَاشُ كُلْ مِنْ مَوْضِعٍ وَاحِدٍ فَإِنَّهُ طَعَامٌ وَاحِدٌ» . ثُمَّ أَتَيْنَا بِطَبَقٍ فِيهِ أَلْوَانُ التَّمْرِ فَجَعَلْتُ آكُلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ وَجَالَتْ يَدُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الطبقِ فَقَالَ: «يَا عِكْرَاشُ كُلْ مِنْ حَيْثُ شِئْتَ فَإِنَّهُ غَيْرُ لَوْنٍ وَاحِدٍ» ثُمَّ أَتَيْنَا بِمَاءٍ فَغَسَلَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدَيْهِ وَمسح بَلل كَفَّيْهِ وَجْهَهُ وَذِرَاعَيْهِ وَرَأْسَهُ وَقَالَ: «يَا عِكْرَاشُ هَذَا الْوُضُوءُ مِمَّا غَيَّرَتِ النَّارُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

4233. इकराश बिन जूऐब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हमारे पास एक प्याला लाया गया जिस में बहोत सा सरिद और बूटिया थी, मैं उस के अतराफ़ में हाथ मार रहा था जबकि रसूलुल्लाह ﷺ अपने सामने से तनावुल फरमा रहे थे, आप ﷺ ने अपने बाएँ हाथ से मेरा दायाँ हाथ पकड़ा, फिर फ़रमाया: “इकराश एक जगह से खाओ क्योंकि खाना एक ही तरह का है”, फिर हमारे पास एक तबाक लाया गया जिस में मुख्तलिफ किस्म की खजूरे थी, मैं अपने सामने से खाने लगा जबकि रसूलुल्लाह ﷺ का दस्ते मुबारक पुरे तबाक में घूम रहा था, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इकराश जहाँ से चाहो खाओ क्योंकि वह एक किस्म की नहीं है”, फिर हमारे पास पानी लाया गया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने हाथ धोए और अपने हाथो की नमी अपने चेहरे, बाज़ुओ और सर पर मल ली, और फ़रमाया: “इकराश यह आग से पकी हुई चिज़ का वुज़ू है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1848) * فيه العلاء بن الفضل : ضعيف ، و ابن عكراش ، قال البخاری :’’ لا يثبت حديثه ‘‘

٤٢٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَخَذَ أَهْلَهُ الْوَعْكُ أَمَرَ بِالْحَسَاءِ فصُنعَ ثمَّ أَمر فَحَسَوْا مِنْهُ وَكَانَ يَقُولُ: «إِنَّهُ لَيَرْتُو فُؤَادُ الحزين ويسرو عَن فؤاد السقيم كَمَا تسروا إِحْدَاكُنَّ الْوَسَخَ بِالْمَاءِ عَنْ

وَجْهِهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ

4234. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ के अहले खाना में से किसी को बुखार हो जाता तो आप जौ का हरिरा बनाने का हुक्म फरमाते, जब वह बनाया जाता तो आप उन्हें हुक्म फरमाते इसे घूंट घूंट पि लो, निज़ आप ﷺ फ़रमाया करते थे: "ये ग़मज़दा शख़्स को कुव्वत बख्सता है और मरीज़ का दिल को फरहत बख्सता है जिस तरह तुम में से कोई खातून पानी के ज़रिए अपने चेहरे से मेल दूर करती है"| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस हसन सहीह है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2039)

٤٢٣٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْعَجْوَةُ مِنَ الْجَنَّةِ وَفِيهَا شِفَاءٌ مِنَ السُّمِّ وَالْكَمْأَةُ مِنَ الْمَنِّ وماؤُها شفاءٌ للعينِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4235. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अज्वा जन्नत से है और उस में ज़हर से शिफा है, और खंबी मन (मन व सलवा) से है और उस का पानी आँख के लिए बाईसे शिफा है"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (2066 وقال : حسن غريب)

كتاب الْأَطْعِمَة • खानों का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٢٣٦ - (لم تتمّ دراسته) عَن المغيرةِ بن شعبةَ قَالَ: ضِفْتُ مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ لَيْلَةٍ فَأَمَرَ بِجَنْبٍ فَشُوِيَ ثُمَّ أَخَذَ الشَّفْرَةَ فَجَعَلَ يَحُزُّ لِي بِهَا مِنْهُ فَجَاءَ بِلَالٌ يُؤْذِنُهُ بِالصَّلَاةِ فَأَلْقَى الشَّفْرَةَ فَقَالَ: «مَا لَهُ تَرِبَتْ يَدَاهُ؟» قَالَ: وَكَانَ شارِبُه وَفاء فَقَالَ لِي: «أُقُصُّه عَلَى سِوَاكٍ؟ أَوْ قُصَّهُ عَلَى سِوَاكٍ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4236. मुगिरा बिन शैबा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं एक रात रसूलुल्लाह ﷺ के यहाँ महमान था आप ने एक पहलु (रान) के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया तो उसे भुना गया, फिर आप ने छुरी ली और उस के साथ उस से मेरे लिए काटने लगे, इतने में बिलाल रदियल्लाहु अन्हु आप को नमाज़ के लिए इत्तिला देने आए तो आप ﷺ ने छुरी फेंक दि और फ़रमाया: "इसे क्या हुआ? उस के हाथ खाक आलूद हो", मुगिरह रदियल्लाहु अन्हु ने कहा मेरी मूंछे लम्बी थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैं मिस्वाक पर रख कर उन्हें काट दू, या फ़रमाया: "तुम खुद मिस्वाक पर रख कर उन्हें काट लो"| (सहीह)

سنده صحيح ، رواه الترمذی (فی الشمائل : 165) [و ابوداؤد (188) و احمد (252 ، 255)]

٤٢٣٧ - (صَحِيح) وَعَن حُذيفةَ قَالَ: كُنَّا إِذَا حَضَرْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم لَمْ نَضَعْ أَيْدِيَنَا حَتَّى يَبْدَأَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيَضَعُ يَدَهُ وَإِنَّا حَضَرْنَا مَعَهُ مَرَّةً طَعَامًا فَجَاءَتْ جَارِيَةٌ كَأَنَّهَا تُدْفَعُ فَذَهَبَتْ لِتَضَعَ يَدَهَا فِي الطَّعَامِ فَأَخَذَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهَا ثُمَّ جَاءَ أَعْرَابِيٌّ كَأَنَّمَا يُدْفَعُ فَأَخَذَهُ بِيَدِهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ [ص:١٢٢ الشَّيْطَانَ يَسْتَحِلُّ الطَّعَامَ أَنْ لَا يُذْكَرَ اسمُ اللَّهِ عليهِ وإِنَّه جَاءَ بِهَذِهِ الْجَارِيَةِ لِيَسْتَحِلَّ بِهَا فَأَخَذْتُ بِيَدِهَا فَجَاءَ بِهَذَا الْأَعْرَابِيِّ لِيَسْتَحِلَّ بِهِ فَأَخَذْتُ بِيَدِهِ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّ يَدَهُ فِي يَدِي مَعَ يَدِهَا» . زَادَ فِي رِوَايَةٍ: ثُمَّ ذَكَرَ اسمَ اللَّهِ وأكَلَ. رَوَاهُ مُسلم

4237. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब हम नबी ﷺ के साथ किसी खाने में शरीक होते तो हम खाने के लिए हाथ नहीं बढ़ाते थे जब तक रसूलुल्लाह ﷺ शुरू नहीं फरमाते थे और आप अपना हाथ बढ़ाते थे, एक मर्तबा हम आप ﷺ के साथ खाने में शरीक हुए तो एक बच्ची आई गोया इसे धकेला जा रहा है, उस ने खाने में अपना हाथ रखना चाहा तो रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे हाथ से पकड़ लिया, फिर एक देहाती आया वह भी इसी तरह था जैसे इसे धकेला जा रहा हो, आप ने इसे भी हाथ से पकड़ लिया फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “शैतान इस खाने पर, जिस पर अल्लाह का नाम न लिया जाए, दस्तरस (हलाल कर सके) हासिल कर लेता है, वह इस बच्ची को लेकर आया ताकि वह उस के ज़रिए दस्तरस (हलाल कर सके) हासिल कर सके, लेकिन मैंने इसे हाथ से पकड़ लिया, फिर वह इस देहाती को लाया ताकि उस के ज़रिए दस्तरस (हलाल कर सके) हासिल कर सके, लेकिन मैंने इसे भी हाथ से पकड़ लिया, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! बेशक इस (शैतान) का हाथ इस (बच्ची) के हाथ के साथ मेरे हाथ में है”| और एक रिवायत में यह अल्फाज़ इज़ाफ़ी (ज़्यादा) है फिर आप ﷺ ने अल्लाह का नाम लिया और खाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (102 / 3017)، (5259)

٤٢٣٨ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرَادَ أَنْ يَشْتَرِيَ غُلَامًا فَأَلْقَى بَيْنَ يَدَيْهِ تَمْرًا فَأَكَلَ الْغُلَامُ فَأَكْثَرَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ كَثْرَةَ الْأَكْلِ شُؤْمٌ» . وَأَمَرَ بِرَدِّهِ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

4238. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने एक गुलाम खरीदना चाहो तो आप ने उस के सामने खजूरे रखी,इस गुलाम ने बहोत ज़्यादा खजूरे खा लि तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक ज़्यादा खाना बे बरकत है”, और आप ﷺ ने इसे वापस करने का हुक्म फ़रमाया| (ज़ईफ़,मौज़ू)

اسناده ضعيف جذا موضوع ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (5661 ، نسخة محققة : 5273) [و ابن عدى فى الكامل (1 / 244)] * فيه ابو اسحاق الشيبانى ابراهيم بن هراسة : كذاب متهم

٤٢٣٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «سَيِّدُ إِدَامِكُمُ الْمِلْحُ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

4239. अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम्हारे सालन का सरदार नमक है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه ابن ماجه (3315) * فيه عيسى الحناط : متروک و السند ضعفه البوصيرى

٤٢٤٠ - وَعَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا وُضِعَ الطَّعَامُ فَاخْلَعُوا نِعَالَكُمْ فإِنَّه أرْوَحُ لأقدامكم»

4240. अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब खाना लगा दिया जाए तो अपने जूते उतार दिया करो, क्योंकि यह तुम्हारे पाँव के लिए ज़्यादा आराम देह है”| (ज़ईफ़,मौज़ू)

اسناده ضعيف جذا موضوع ، رواه الدارمی (2 / 108 ح 2086 ، نسخة محققة : 2125) * فيه موسی بن محمد بن ابراهيم : متروک ، و السند منقطع وقال الذهبی فی تلخيص المستدرک (4 / 119(:’’ احسبه موضوعًا و اسناده مظلم ‘‘

٤٢٤١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أسماءَ بنتِ أبي بكرٍ: أَنَّهَا كَانَتْ إِذَا أَتَيْتُ بِثَرِيدٍ أَمَرَتْ بِهِ فَغُطِّيَ حَتَّى تَذْهَبَ فَوْرَةُ دُخَانِهِ وَتَقُولُ: أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُول: «هُوَ أعظم للبركة» . رَوَاهُمَا الدَّارِمِيّ

4241. अस्मा बिन्ते अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि जब उन के पास सरिद लाया जाता तो आप के कहने पर इसे ढांक दिया जाता हत्ता के उस का जोश हरारत ख़तम हो जाता, और वह फरमाती थी मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “ऐसा करना ज़्यादा बाईस ए बरकत है”| दोनों रिवायतों इमाम दारमी ने नकल की| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (2 / 100 ح 2053 ، نسخة محققة : 2091) [و ابو نعيم فی حلية الاولياء (8 / 177) و ابن حبان (الاحسان : 5184 / 5207)] * فيه الزهری : مدلس و عنعن

٤٢٤٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن نُبَيْشَة قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ أَكَلَ فِي قَصْعَةٍ ثُمَّ لَحِسَهَا تَقُولُ لَهُ الْقَصْعَةُ: أَعْتَقَكَ اللَّهُ مِنَ النَّارِ كَمَا أعتقتَني منَ الشيطانِ ". رَوَاهُ رزين

4242. नुबैशा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स किसी बर्तन में खा कर इसे अच्छी तरह साफ़ करता है तो वह बर्तन उस के मुतल्लिक कहता है, अल्लाह तुम्हें जहन्नम से आज़ादी अता फरमाए जिस तरह तुमने मुझे शैतान से आज़ादी दी”| (मुझे नहीं मिली रवाह रजिन.)

لم اجده ، رواه رزين (لم اجده) و انظر ح 4218

मेहमान नवाज़ी का बयान • بَاب الضِّيَافَة

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٤٢٤٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلَا يُؤْذِ جَارَهُ وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا أَوْ لِيَصْمُتْ» . وَفِي رِوَايَةٍ: بَدَلَ «الْجَارِ» وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيَصِلْ رحمَه "

4243. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है के अपने मेहमान की इज्ज़त करे, जो शख़्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है के अपने पड़ोसी को तकलीफ न पहुंचाए और जो शख़्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है के खैर व भलाई की बात करे वरना ख़ामोश रहे एक दूसरी रिवायत में पड़ोसी के बजाए यह अल्फाज़ है: “जो शख़्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है वह सिलह रहमी करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6018) ، و الرواية الثانية : (6138) و مسلم (75 / 47)، (174)

٤٢٤٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي شُرَيْحٍ الْكَعْبِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلْيُكْرِمْ ضَيْفَهُ جَائِزَتُهُ يَوْمٌ وَلَيْلَةٌ وَالضِّيَافَةُ ثَلَاثَةُ أَيَّامٍ فَمَا بَعْدَ ذَلِكَ فَهُوَ صَدَقَةٌ وَلَا يَحِلُّ لَهُ أَنْ يَثْوِيَ عِنْدَهُ حَتَّى يُحَرِّجَهُ»

4244. अबू शरीह अल काबी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है वह अपने मेहमान की इज्ज़त करे और वह एक दिन एक रात है, और खाने तीन दिन के लिए है, उस के बाद सदका है और महमान के लिए हलाल नहीं के वह मेज़बान के यहाँ इस क़दर कयाम करे के वह इसे तंगी में मुब्तिला कर दे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6019) و مسلم (14 / 48)، (176)

٤٢٤٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قُلْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّك تبعثنا فتنزل بِقَوْمٍ لَا يَقْرُونَنَا فَمَا تَرَى؟ فَقَالَ لَنَا: «إِنْ نَزَلْتُمْ بِقَوْمٍ فَأَمَرُوا لَكُمْ بِمَا يَنْبَغِي لِلضَّيْفِ فَاقْبَلُوا فَانْ لَمْ يَفْعَلُوا فَخُذُوا مِنْهُمْ حق الضَّيْف الَّذِي يَنْبَغِي لَهُم»

4245. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ से अर्ज़ किया, आप हमें भेजते है, और हम किसी कौम के यहाँ पड़ाव डालते है तो वह हमारी मेहमान नवाज़ी नहीं करते इस बारे में जनाब का किया हुक्म है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तुम किसी कौम के यहाँ पड़ाव डालो और वह मेहमान नवाज़ी के मुताबिक

तुम्हारी मेहमान नवाज़ी करे तो उसे कबूल करो और अगर वह मेहमान नवाज़ी न करे तो फिर मेहमान नवाज़ी का जो हक़ है के उन से वुसुल कर सकते हो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (2461) و مسلم (17 / 1727)، (4516)

٤٢٤٦ - (صَحِيح) وَعَن أبي هريرةَ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ يَوْم وَلَيْلَة [ص:١٢٢ فَإِذَا هُوَ بِأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ فَقَالَ: «مَا أَخْرَجَكُمَا مِنْ بُيُوتِكُمَا هَذِهِ السَّاعَةَ؟» قَالَا: الْجُوعُ قَالَ: «وَأَنَا وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَأَخْرَجَنِي الَّذِي أَخْرَجَكُمَا قُومُوا» فَقَامُوا مَعَهُ فَأَتَى رَجُلًا مِنَ الْأَنْصَارِ فَإِذَا هُوَ لَيْسَ فِي بَيْتِهِ فَلَمَّا رَأَتْهُ المرأةُ قَالَت: مرْحَبًا وَأهلا فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَيْنَ فُلَانٌ؟» قَالَتْ: ذَهَبَ يَسْتَعْذِبُ لَنَا مِنَ الْمَاءِ إِذْ جَاءَ الْأَنْصَارِيُّ فَنَظَرَ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَصَاحِبَيْهِ ثُمَّ قَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ مَا أَحَدٌ الْيَوْمَ أكرمَ أضيافاً مني قَالَ: فانطَلَق فَجَاءَهُمْ بِعِذْقٍ فِيهِ بُسْرٌ وَتَمْرٌ وَرُطَبٌ فَقَالَ: كُلُوا مِنْ هَذِهِ وَأَخَذَ الْمُدْيَةَ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِيَّاكَ وَالْحَلُوبَ» فَذَبَحَ لَهُمْ فَأَكَلُوا مِنَ الشَّاةِ وَمِنْ ذَلِكَ الْعِذْقِ وَشَرِبُوا فَلَمَّا أَنْ شَبِعُوا وَرَوُوا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِأَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ: «وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَتُسْأَلُنَّ عَنْ هَذَا النَّعِيمِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُيُوتِكُمُ الْجُوعُ ثُمَّ لَمْ تَرْجِعُوا حَتَّى أَصَابَكُمْ هَذَا النعيمُ» . رَوَاهُ مُسلم. وَذَكَرَ حَدِيثَ أَبِي مَسْعُودٍ: كَانَ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَار فِي «بَاب الْوَلِيمَة»

4246. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, किसी रोज़ या किसी रात रसूलुल्लाह ﷺ घर से बाहर तशरीफ़ लाए तो आप की अबू बक्र और उमर रदियल्लाहु अन्हु से मुलाकात हो गई, आप ﷺ ने फ़रमाया: "इस वक़्त तुम्हें किसी चीज़ ने तुम्हारे घरो से निकाला ?" उन्होंने अर्ज़ किया, भूख ने, आप ﷺ ने फ़रमाया: "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! मुझे भी इसी चीज़ ने निकाला जिस ने तुम्हें निकाला है, चलो!'' वह आप ﷺ के साथ चल दिए आप एक अंसारी सहाबी के पास तशरीफ़ लाए लेकिन वह घर पर नहीं थे, जब उसकी अहलिया ने आप को देखा तो कहा: खुशामदीद, रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: "फलां कहाँ है?" उस ने अर्ज़ किया, वह हमारे लिए मीठा पानी लेने गए है, इतने में वह अंसारी भी तशरीफ़ ले आए, उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ और आप के दोनों साथियो को देखा तो पुकार उठे: الْحَمد لله (तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिए है), मेहमानी के लिहाज़ से आज का दिन मेरे लिए बहोत ही बाईस इज्ज़त है, रावी बयान करते हैं, वह शख़्स गया और खजूरो का खोशा लाया जिस में कच्ची, पकी और उम्दा हर किस्म की खजूरे थी, उस ने अर्ज़ किया, आप उन्हें तनावुल फरमाइए और खुद उस ने छुरी पकड़ ली, रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फ़रमाया: "दूध देने वाली बकरी से एहतियात करना", उस ने उन की खातिर बकरी जिबह की, उन्होंने इस बकरी का गोश्त खाया और खजूरे खाई और पानी पिया, जब वह सैर व सेराब हो गए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने अबू बक्र व उमर रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! रोज़ ए कियामत तुम से उन नेअमतो के बारे में सवाल किया जाएगा, भूख ने तुम्हें तुम्हारे घरो से निकाला, फिर तुम उन नेअमतो से मुस्तफिद हो कर वापस जाओगे"| # इब्ने मसउद (र) से मरवी हदीस: "अंसार में से एक आदमी था ....." بَاب الْوَلِيمَة (वलीमे का बयान)" में ज़िक्र की गई है. (मुस्लिम)

رواه مسلم (14 / 2038)، (5313) 0 حديث ابی مسعود تقدم (3219)

بَاب الضِّيَافَة • मेहमान नवाज़ी का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٢٤٧ - (لم تتمّ دراسته) عَن المقدامِ بن معدي كرب سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «أَيُّمَا مُسْلِمٍ ضَافَ قَوْمًا فَأَصْبَحَ الضَّيْفُ مَحْرُومًا كَانَ حَقًّا عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ نَصْرُهُ حَتَّى يَأْخُذَ لَهُ بِقِرَاهُ مِنْ مَالِهِ وَزَرْعِهِ» . رَوَاهُ الدَّارمِيّ وَأَبُو دَاوُد»» وَفِي رِوَايَة: «وَأَيُّمَا رَجُلٍ ضَافَ قَوْمًا فَلَمْ يُقْرُوهُ كَانَ لَهُ أَن يعقبهم بِمثل قراه»

4247. मिक्दाम बिन मअदीकरीब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: "कोई मुसलमान किसी कौम के यहाँ महमान ठहरे लेकिन वह हक़ ए दावत से महरूम रहे तो उसकी नुसरत करना हर मुसलमान पर हक़ है हत्ता के वह उस के माल और उसकी ज़राअत से उस का हक़ ए दावत ले ले", दारमी अबू दावुद, और अबू दावुद की रिवायत में है: "जो किसी कौम के यहाँ महमान ठहरा लेकिन उन्होंने उसकी दावत की तो वह अपने हक़ ए दावत के बराबर उन के माल से ले सकता है"| (हसन)

حسن ، رواه الدارمی (2 / 98 ح 2043) و ابوداؤد (3751 و الرواية الثانية : 3804) و سندهما صحيح]

٤٢٤٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي الْأَحْوَصِ الْجُشَمِيِّ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ [ص:١٢٢ أَرَأَيْتَ إِنْ مَرَرْتُ بِرَجُلٍ فَلَمْ يَقْرِنِي وَلَمْ يُضِفْنِي ثُمَّ مَرَّ بِي بَعْدَ ذَلِكَ أَأَقْرِيهِ أَمْ أَجْزِيهِ؟ قَالَ: «بل اقره» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4248. अबू अह्वस जश्मी अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मुझे बताइए के अगर में किसी शख़्स के पास से गुज़रो तो वह मेरी दावत न करे लेकिन उस के बाद वह मेरे पास से गुज़रे तो क्या मैं उसकी दावत करू या उस को बदला दू (के खाने न करूँ)? आप ﷺ ने फ़रमाया: "बल्के खाने करो"| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (2006 وقال : حسن صحيح)

٤٢٤٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ أَوْ غَيْرِهِ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اسْتَأْذَنَ عَلَى سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ فَقَالَ: «السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ» فَقَالَ سَعْدٌ: وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَلَمْ يُسْمِعِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى سَلَّمَ ثَلَاثًا وَرَدَّ عَلَيْهِ سَعْدٌ ثَلَاثًا وَلَمْ يُسْمِعْهُ فَرَجَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاتَّبَعَهُ سَعْدٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي مَا سَلَّمْتَ تَسْلِيمَةً إِلَّا هِيَ بِأُذُنِي: وَلَقَدْ رَدَدْتُ عَلَيْكَ وَلَمْ أُسْمِعْكَ أَحْبَبْتُ أَنْ أَسْتَكْثِرَ مِنْ سَلَامِكَ وَمِنَ الْبَرَكَةِ ثُمَّ دَخَلُوا الْبَيْتَ فَقَرَّبَ لَهُ زَبِيبًا فَأَكَلَ نَبِيُّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمَّا فَرَغَ قَالَ: «أَكَلَ طَعَامَكُمُ الْأَبْرَارُ وَصَلَّتْ عَلَيْكُمُ الْمَلَائِكَةُ وَأَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّائِمُونَ» . رَوَاهُ فِي «شَرْحِ السُّنَّةِ»

4249. अनस रदियल्लाहु अन्हु या उन के अलावा किसी सहाबी से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने साद बिन अब्बाद रदियल्लाहु अन्हु से इजाज़त तलब की और फ़रमाया: " السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ (सलामती हो तुम पर और अल्लाह की रहमत हो)" साद रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللَّهِ (और तुम पर सलामती हो और अल्लाह की रहमत हो)लेकिन उन्होंने नबी ﷺ को आवाज़ न सुनाई हत्ता के आप ने तीन मर्तबा सलाम किया और साद रदियल्लाहु अन्हु ने भी तीन मर्तबा सलाम का जवाब दिया लेकिन आप को न सुनाया, जब नबी ﷺ वापस तशरीफ़ ले गए तो साद (र), आप के पीछे गए और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरे वालिदेन आप पर कुरबान हो, आप ने जितनी बार भी सलाम किया मैंने इसे सुना और आप को जवाब अर्ज़ किया, लेकिन मैंने आप को (इसलिए) नहीं सुनाया की मैं पसंद करता था के आप से ज़्यादा से ज़्यादा सलामती और बरकत हासिल कर सकू, फिर वह घर तशरीफ़ लाए तो उन्होंने आप की खिदमत में किशमिश पेश किया तो नबी ﷺ ने इसे खाया, जब आप ﷺ फारिग़ हुए तो फ़रमाया: "नेकोकार तुम्हारा खाना खाते रहे, फ़रिश्ते तुम पर रहमते भेजे और रोज़दार तुम्हारे वहां इफ्तार करते रहे"| (सहीह)

صحيح ، رواه البغوى فى شرح السنة (12 / 282283 ح 3320) [و احمد (3 / 138) و البيهقى (7 / 287) و الطحاوى فى مشكل الآثار (1 / 498 ، 499) و صححه العراقى و ابن الملقن وغيرهما] * وله شاهد حسن لذاته عند الطحاوى فى مشكل الآثار (4 / 242 ح 1577) و به صح الحديث

٤٢٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَثَلُ الْمُؤْمِنِ وَمَثَلُ الْإِيمَانِ كَمَثَلِ الْفَرَسِ فِي آخِيَّتِهِ يَجُولُ ثُمَّ يَرْجِعُ إِلَى آخِيَّتِهِ وَإِنَّ الْمُؤْمِنَ يَسْهُو ثُمَّ يَرْجِعُ إِلَى الْإِيمَانِ فَأَطْعِمُوا طَعَامَكُمُ الْأَتْقِيَاءَ وَأَوْلُوا مَعْرُوفَكُمُ الْمُؤْمِنِينَ» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» وَأَبُو نُعَيْمٍ فِي «الْحِلْيَة»

4250. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मोमिन और ईमान की मिसाल इस घोड़े के मिसल है तो अपने खूंटे के साथ बंधा हुआ है दोड़ता फिरता है लेकिन अपने खूंटे की तरफ हीलौट आता है, और मोमिन भूल जाता है (गलती कर बेठता है) और फिर ईमान की तरफ पलट आता है, तुम अपना खाना मुत्तकी लोगों को खिलाओ और मोमिनो के साथ भलाई करो"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (10964 ، نسخة محققة : 1046010461) و ابو نعيم فى حلية الاولياء (8 / 179) [و احمد (3 / 38 ، 55)] * فيه ابو سليمان الليثى : لم اجد من وثقه غير ابن حبان من المتقدمين و انظر مجمع الزوائد (10 / 201) و صحيح ابن حبان (الاحسان : 615)

٤٢٥١ - (لم تتمّ دراسته) عَن عبد الله بنِ بُسر قَالَ: كَانَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَصْعَةٌ يَحْمِلُهَا أَرْبَعَةُ رِجَالٍ يُقَالُ لَهَا: الْغَرَّاءُ فَلَمَّا أَضْحَوْا وَسَجَدُوا الضُّحَى أُتِيَ بِتِلْكَ الْقَصْعَةِ وَقَدْ ثُرِدَ فِيهَا فَالْتَفُّوا عَلَيْهَا فَلَمَّا كَثُرُوا جَثَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ أَعْرَابِيٌّ: مَا هَذِهِ الْجِلْسَةُ؟ [ص:١٢٢ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ جَعَلَنِي عَبْدًا كَرِيمًا وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا عَنِيدًا» ثُمَّ قَالَ: «كُلُوا مِنْ جَوَانِبِهَا وَدَعُوا ذِرْوَتَهَا يُبَارَكْ فِيهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4251. अब्दुल्लाह बिन बुसरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ का एक बर्तन था जिसे चार आदमी

उठाते थे, इसे गिराअ कहा जाता था, जब वह चाश्त का वक़्त होने पर नमाज़ चाश्त पढ़ लेते तो वह बर्तन लाया जाता और उस में सरिद तैयार किया जाता, फिर सहाबा किराम उस के गिर्द जमा हो जाते, जब वह ज़्यादा हो जाता तो रसूलुल्लाह ﷺ दो ज़ानो हो कर बैठ जाते, किसी आराबी ने कहा: यह किस तरह बेठना है? नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अल्लाह ने मुझे मुतवाज़ी सखी बनाया है और मुझे मुतकब्बर सरकश नहीं बनाया”, फिर फ़रमाया: “इस (बरतन) के अतराफ़ से खाओ और उस के बिच को छोड़ दो उस में बरकत अता की जाएगी”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3773)

٤٢٥٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ وَحْشِيِّ بْنِ حَرْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ: إِنَّ أَصْحَابَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا نَأْكُلُ وَلَا نَشْبَعُ قَالَ: «فَلَعَلَّكُمْ تَفْتَرِقُونَ؟» قَالُوا: نَعَمْ قَالَ: «فَاجْتَمِعُوا عَلَى طَعَامِكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ يُبارِكْ لكم فِيهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4252. वहशी बिन हरबी अपने बाप से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम खाना खाते है लेकिन सैर नहीं होते, आप ﷺ ने फ़रमाया: “शायद के तुम अलग अलग खाते हो?” उन्होंने अर्ज़ किया, जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम अपना खाना इज्तिमाई शकल में खाया करो अल्लाह का नाम लिया करो (इस तरह) उस में तुम्हारे लिए बरकत डाल दी जाएगी”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3764) [و ابن ماجه (3286) و احمد (3 / 501)]

بَاب الضِّيَافَة • मेहमान नवाज़ी का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٢٥٣ - عَنْ أَبِي عَسِيبٍ قَالَ: خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْلًا فَمَرَّ بِي فَدَعَانِي فَخَرَجْتُ إِلَيْهِ ثُمَّ مَرَّ بِأَبِي بَكْرٍ فَدَعَاهُ فَخَرَجَ إِلَيْهِ ثُمَّ مَرَّ بِعُمَرَ فَدَعَاهُ فَخَرَجَ إِلَيْهِ فَانْطَلَقَ حَتَّى دَخَلَ حَائِطًا لِبَعْضِ الْأَنْصَارِ فَقَالَ لِصَاحِبِ الْحَائِطِ: «أَطْعِمْنَا بُسْرًا» فَجَاءَ بِعِذْقٍ فَوَضَعَهُ فَأَكَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَصْحَابُهُ ثُمَّ دَعَا بِمَاءٍ بَارِدٍ فَشَرِبَ فَقَالَ: «لَتُسْأَلُنَّ عَنْ هَذَا النَّعِيمِ يَوْمَ القيامةِ» قَالَ: فَأخذ عمر العذق فضرب فِيهِ الْأَرْضَ حَتَّى تَنَاثَرَ الْبُسْرُ قِبَلَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ: يَا رَسُول الله إِنَّا لمسؤولون عَنْ هَذَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ قَالَ: «نَعَمْ إِلَّا مِنْ ثَلَاثٍ خِرْقَةٍ لَفَّ بِهَا الرَّجُلُ عَوْرَتَهُ أَوْ كِسْرَةٍ سَدَّ بِهَا جَوْعَتَهُ أَوْ حُجْرٍ يتدخَّلُ فِيهِ مَنِ الْحَرِّ وَالْقُرِّ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي «شعب الْإِيمَان» . مُرْسلا

4253. अबू असिब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक रात रसूलुल्लाह ﷺ बाहर तशरीफ़ लाए मेरे पास से गुज़रे तो मुझे आवाज़ दी, मैं आप की खिदमत में हाज़िर हुआ, फिर आप अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रे तो उन्हें भी आवाज़ दी, वह भी आप की खिदमत में हाज़िर हुए फिर आप उमर रदियल्लाहु अन्हु के पास

से गुज़रे तो उन्हें भी आवाज़ दी या वह भी आप की खिदमत में हाज़िर हुए, आप चलते गए हत्ता के किसी अंसारी सहाबी के बाग़ में तशरीफ़ ले गए, आप ﷺ ने बाग़ के मालिक से फ़रमाया: “ह में पकी हुई खजूरे खिलाओ”, वह एक खोशा लाए जिसे रसूलुल्लाह ﷺ और आप के साथियो ने खाया, फिर आप ﷺ ने ठंडा पानी मंगवाया और इसे नोश फ़रमाया, फिर फ़रमाया: “रोज़ ए कियामत तुम से उन नेअमतो के बारे में पूछा जाएगा”, रावी बयान करते हैं, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने वह खोशा पकड़ कर ज़मीन पर मारा हत्ता के वह खजूरे रसूलुल्लाह ﷺ के सामने बिखर गई, फिर अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या रोज़े कियामत हम से उन के मुतल्लिक पूछा जाएगा? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, मगर तीन चीजों के मुतल्लिक सवाल नहीं होगा, वह कपड़ा जिस से आदमी अपना सतर ढांपता है, या रोटी का टुकड़ा जिस से वह अपने भूख मिटाता है, या वह कमरे जिस में वह गर्मी शर्दी में रिहाइश रखता है”| अहमद बयहकी ने शौबुल ईमान में उसे मुरसल रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (5 / 81 ح 21049 ، نسخة محققة : 20768) و البيهقى فى شعب الايمان (4601)

٤٢٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا وُضِعَتِ الْمَائِدَةُ فَلَا يَقُومُ رَجُلٌ حَتَّى تُرْفَعَ الْمَائِدَةُ وَلَا يَرْفَعْ يَدَهُ وَإِنْ شَبِعَ حَتَّى يَفْرُغَ الْقَوْمُ [ص:١٢٢ وَلْيُعْذِرْ فَإِنَّ ذَلِكَ يُخْجِلُ جَلِيسَهُ فَيَقْبِضُ يَدَهُ وَعَسَى أَنْ يَكُونَ لَهُ فِي الطَّعَامِ حَاجَةٌ» رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

4254. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब दस्तरखान लगा दिया जाए तो दस्तरखान उठाए जाने तक कोई शख़्स न उठे, और जब तक खाने में शरीक तमाम लोग फारिग़ न हो जाए तब तक कोई शख़्स खाने से अपना हाथ न रोके ख्वाह वह सैर हो जाए और अगर इसे कोई मसअले दरपेश हो तो उज्र पेश कर देना चाहिए, वरना इस तरह उस के साथ वाले को शर्मिन्दगी होगी और वह खाने की ज़रूरत के बावजूद अपना हाथ रोक लेगा”| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه ابن ماجه (3273 ، 3295) و البيهقى فى شعب الايمان (5864) * فيه عبدالاعلى بن اعين : ضعيف

٤٢٥٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا أَكَلَ مَعَ قَوْمٍ كَانَ آخِرَهُمْ أَكْلًا. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ فِي «شعب الْإِيمَان» مُرْسلا

4255. जाफर बिन मुहम्मद अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: जब रसूलुल्लाह ﷺ लोगों के साथ खाना खाते तो आप ﷺ सबसे आख़िर पर खाने से फारिग़ होते थे| बयहकी ने शौबुल ईमान में मुरसल रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (6037 ، نسخة محققة : 5636 ، 9187) * فيه عبد الرحمن بياع الهروى البغدادى روى عنه ابن معين ولم اجد من وثقه و الخبر مرسل

٤٢٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أَسمَاء بنتِ يزِيد قَالَتْ: أَتِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِطَعَامٍ فَعَرَضَ عَلَيْنَا فَقُلْنَا: لَا نَشْتَهِيهِ. قَالَ: «لَا تَجْتَمِعْنَ جُوعًا وَكَذِبًا» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

4256. अस्मा बिन्ते यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, नबी ﷺ की खिदमत में खाना पेश किया गया तो आप ने वह हमें इनायत फरमा दिया, हमने अर्ज़ किया: हमें खाने की चाहत नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “भूख और झूठ जमा न करो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابن ماجه (3298)

٤٢٥٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُوا جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا فَإِنَّ الْبَرَكَةَ معَ الجماعةِ» . رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ

4257. उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इकट्ठे खाया करो, अलग अलग मत खाओ क्योंकि बरकत जमात के साथ है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابن ماجه (3287) * عمرو بن دينار قهرمان آل الزبير ضعيف و حديث ابن ماجه (3255) يغنى عنه

٤٢٥٨ - وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مِنَ السَّنَةِ أَنْ يَخْرُجَ الرَّجُلُ مَعَ ضَيْفِهِ إِلَى بَابِ الدَّارِ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

4258. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “आदमी का अपने महमान के साथ घर के दरवाज़े तक जाना मस्नून है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه ابن ماجه (3358) * فيه على بن عروة : متروک وله شاهد موضوع عند ابن عدى فى الکامل (3 / 1173) فلا يستشهد به

٤٢٥٩ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي «شُعَبِ الْإِيمَانِ» عَنْهُ وَعَنِ ابْن عَبَّاس وَقَالَ: فِي إِسْنَاده ضَعِيف

4259. इमाम बय्हकी ने इसे अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु और इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है और उन्होंने कहा: उसकी सनद में जईफ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (9649 ، نسخة محققة : 9202) * فيه سلم بن سالم (البلخى) ضعيف و عطاء الخراسانى

عنعن

٤٢٦٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْخَيْرُ أَسْرَعُ إِلَى الْبَيْتِ الَّذِي يُؤْكَلُ فِيهِ مِنَ الشَّفْرَةِ إِلَى سنامِ الْبَعِير» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

4260. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस घर में खाना खिलाया जाए उस में खैर व बरकत इस तेज़ी से दाखिल होती है, जिस तेज़ी के साथ छुरी ऊंट की कोहान को काटती है"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه ابن ماجه (3357) * فيه جبارة بن مغلس : متهم بالكذب ، و الصواب فى السند '' المحاربى عبد الرحمن عن نهشل وهو ابن سعيد '' و نهشل : متروک کذبه ابن راهويه

بَاب أكل الْمُضْطَر • मज़बूरी की हालात मैं खाने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

وهذا الباب خال من الفصل الأول والفصل الثالث

यह बाब पहली और तीसरी फस्ल से खाली है

٤٢٦١ - (لم تتمّ دراسته) عَن الفجيع العامري أَنَّهُ أَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: مَا يَحِلُّ لَنَا مِنَ الْمِيتَةِ؟ قَالَ: «مَا طعامُكم؟» قُلنا: نَغْتَبِقُ وَنَصْطَبِحُ قَالَ أَبُو نُعَيْمٍ: فَسَّرَهُ لِي عُقْبَةُ: قَدَحٌ غُدْوَةً وَقَدَحٌ عَشِيَّةً قَالَ: «ذَاكَ وَأَبِي الْجُوعُ» فَأَحَلَّ لَهُمُ الْمَيْتَةَ عَلَى هَذِهِ الحالِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4261. फुजई आमिरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, हमारे लिए मुर्दा जानवर की कौन सी चीज़ हलाल है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम्हारा खाना क्या है?" हमने अर्ज़ किया: हम शाम और सुबह के वक़्त दूध का एक प्याला पीते हैं, अबू नुअयम का बयान है के उक्बा ने मुझे वज़ाहत से बतलाया के एक प्याला सुबह, एक प्याला शाम, को आप ﷺ ने फ़रमाया: "मेरे बाप की क़सम! यह तो फिर भूख है" आप ने इस हाल में इन के लिए मुरदार को हलाल करार दिया| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه ابوداؤد (3817) * فيه وهب بن عقبة : وثقه ابن حبان وقال الحافظ فى التقريب :'' مستور '' و الحديث ضعفه البيهقى

٤٢٦٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي وَاقِدٍ اللَّيْثِيِّ أَنْ رَجُلًا قَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا نَكُونُ بِأَرْضٍ فَتُصِيبُنَا بهَا المخمصة فَمَتَى يحلُّ لنا الميتةُ؟ قَالَ: «مَا لم تصطبحوا وتغتبقوا أَوْ تَحْتَفِئُوا بِهَا بَقْلًا فَشَأْنَكُمْ بِهَا» . مَعْنَاهُ: إِذَا لَمْ تَجِدُوا صَبُوحًا أَوْ غَبُوقًا وَلَمْ تَجِدُوا بَقْلَةً تَأْكُلُونَهَا حَلَّتْ لَكُمُ الْمَيْتَةُ. رَوَاهُ الدَّارِمِيّ

4262. अबू वाकिद लैसी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के किसी आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम ऐसी सर ज़मीन पर होते हैं जहाँ हम भूख का शिकार हो जाते हैं तो हमारे लिए मुरदार खाना कब हलाल होता है? आप ﷺ ने फ़रमाया: "जब तुम सुबह या शाम खाने के लिए कोई तरकारी न पाओ, तब इस हालत में तुम मुरदार खा सकते हो"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارمی (2 / 88 ح 2002 ، نسخة محققة : 2039) * حسان بن عطية : لم يسمع من ابی واقد الليثی رضی الله عنه فالسند منقطع

پینے بَاب الْأَشْرِبَة • पीने की चीजों का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٤٢٦٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَنَفَّسُ فِي الشَّرَابِ ثَلَاثًا. مُتَّفق عَلَيْهِ. وزاد مسلمُ فِي روايةٍ ويقولُ: «إِنَّه أرْوَى وأبرأُ وأمرأ»

4263. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ पीने के दौरान तीन सांस लिया करते थे| बुखारी, मुस्लिम, और इमाम मुस्लिम रहिमहुल्लाह ने एक रिवायत में यह इज़ाफा नकल किया है आप ﷺ फरमाते थे: "ये (तीन सांस लेना) ज़्यादा प्यास बुझाता है, सेहते आफ्ज़ा है और ज़्यादा बाईस हज़म है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5631) و مسلم (123 / 2028)، (5287)

٤٢٦٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَن الشّرْب من قي السقاء

4264. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मश्किज़े के मुंह से पीने से मना फ़रमाया है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5629) و مسلم (لم اجده)

٤٢٦٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ اخْتِنَاثِ الْأَسْقِيَةِ. زَادَ فِي رِوَايَةٍ: وَاخْتِنَاثُهَا: أَنْ يُقْلَبَ رَأْسُهَا ثُمَّ يُشْرَبَ مِنْهُ

4265. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मश्किजो के मुंह मोड़ कर उन से

पानी पीने से मना फ़रमाया है, और एक रिवायत में इज़ाफा नकल किया है: मश्किजो का मुंह मोड़ना यह है कि उस का देहाना उलटा कर फिर उन से पिया जाए| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5625) و مسلم (111 / 2023)، (5272)

٤٢٦٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ نَهَى أَنْ يَشْرَبَ الرَّجُلُ قَائِمًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4266. अनस रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं की आप ﷺ ने मना फ़रमाया के आदमी खड़ा हो कर पिए| (मुस्लिम)

رواه مسلم (113 / 2024)، (5275)

٤٢٦٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَشْرَبَنَّ أَحَدٌ مِنْكُمْ قَائِمًا فَمَنْ نَسِيَ مِنْكُمْ فَلْيَسْتَقِئْ» . رَوَاهُ مُسلم

4267. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से कोई शख़्स खड़ा हो कर न पिए, तुम में से जो शख़्स भूल जाए तो वह कै कर दे”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (116 / 2026)، (5279)

٤٢٦٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن ابْن عَبَّاس قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِدَلْوٍ مِنْ مَاءِ زَمْزَمَ فَشَرِبَ وَهُوَ قَائِمٌ

4268. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने डोल में आबे ज़म ज़म नबी ﷺ की खिदमत में पेश किया तो आप ﷺ ने खड़े हो कर नोश फ़रमाया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (1637) و مسلم (120 / 2023)، (5283)

٤٢٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ: أَنَّهُ صَلَّى الظُّهْرَ ثُمَّ قَعَدَ فِي حَوَائِجِ النَّاسِ فِي رَحَبَةِ الْكُوفَةِ حَتَّى حَضَرَتْ صَلَاةُ الْعَصْرِ ثُمَّ أُتِيَ بِمَاءٍ فَشَرِبَ وَغَسَلَ [ص:١٢٣ وَجْهَهُ وَيَدَيْهِ وَذَكَرَ رَأسه ورجلَيْهِ ثمَّ قَامَ فشرب فضله وَهُوَ قَائِمٌ ثُمَّ قَالَ: إِنَّ أُنَاسًا يَكْرَهُونَ الشُّرْبَ قَائِمًا وَإِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَنَعَ مِثْلَ مَا صَنَعْتُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

4269. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने नमाज़े ज़ुहर अदा की फिर लोगों के मसाइल हल करने के लिए वह कुफा के चबूतरे पर बैठ गए हत्ता के नमाज़ ए असर का वक़्त हो गया, फिर पानी लाया गया तो

उन्होंने पानी पिया, अपना चेहरा और हाथ धोए, और रावी ने ज़िक्र किया आप ने अपना सर और दोनों पाँव धोए, फिर खड़े हुए और बचा हुआ पानी खड़े हो कर पिया, फिर फ़रमाया लोग खड़े हो कर पीना नापसंद करते हैं, जबकि नबी ﷺ ने इसी तरह किया जैसे मैंने किया| (बुखारी)

رواه البخارى (5616)

٤٢٧٠ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٌ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم دَخَلَ عَلَى رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ وَمَعَهُ صَاحِبٌ لَهُ فَسَلَّم فَرَدَّ الرَّجُلُ وَهُوَ يُحَوِّلُ الْمَاءَ فِي حَائِطٍ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ كَانَ عِنْدَكَ مَاءٌ بَاتَ فِي شَنَّةٍ وَإِلَّا كَرَعْنَا؟» فَقَالَ: عِنْدِي مَاءٌ بَاتَ فِي شَنٍّ فَانْطَلَقَ إِلَى الْعَرِيشِ فَسَكَبَ فِي قَدَحٍ مَاءً ثُمَّ حَلَبَ عَلَيْهِ مِنْ دَاجِنٍ فَشَرِبَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ أَعَادَ فَشَرِبَ الرَّجُلُ الَّذِي جَاءَ مَعَهُ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

4270. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ एक अंसारी सहाबी के पास तशरीफ़ ले गए और आप के साथ आप के एक साथी भी थे, आप ने सलाम किया तो इस आदमी ने सलाम का जवाब दिया जबकि आदमी बाग़ को पानी लगा रहा था, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अगर तेरे पास रात का बासी पानी मश्किज़े में है तो ठीक वरना हम तालाब से मुंह लगा कर पि लेते हैं”, इस आदमी ने अर्ज़ किया, मेरे पास रात का बासी पानी है, वह साइब उन की तरफ गया प्याले में पानी डाला फिर उस पर घर में पली हुई बकरी का दूध धोया (और इसे आप ﷺ की खिदमत में पेश किया) तो नबी ﷺ ने नोश फ़रमाया, वह आदमी दोबारा लाया तो इस आदमी ने पिया, जो के आप के साथ था| (बुखारी)

رواه البخارى (5613)

٤٢٧١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَمِّ سَلَمَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الَّذِي يَشْرَبُ فِي آنِيَةِ الْفِضَّةِ إِنَّمَا يُجَرْجِرُ فِي بَطْنِهِ نَارَ جَهَنَّمَ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: «إِنَّ الَّذِي يَأْكُلُ وَيَشْرَبُ فِي آنِية الْفضة وَالذَّهَب»

4271. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स चाँदी के बर्तन में पीता है तो वह अपने पेट में जहन्नम की आग उंडेलता है”| और मुस्लिम की रिवायत में है: “बेशक जो शख़्स चाँदी और सोने के बर्तन में खाता और पीता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह,मुस्लिम)

متفق عليه ، رواه البخارى (5624) و مسلم (1 / 2065)، (5385)

٤٢٧٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا تَلْبَسُوا الْحَرِيرَ وَلَا الدِّيبَاجَ وَلَا تَشْرَبُوا فِي آنِيَةِ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَلَا تَأْكُلُوا فِي صِحَافِهَا فَإِنَّهَا لَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَهِيَ لَكُمْ فِي الْآخِرَةِ»

4272. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “बारीक़ और मोटा रेशमी कपड़ा मत ज़ेबतीन (पहना हुआ) करो और ना सोने चाँदी के बर्तन में पियो और न उनकी प्लेटो में खाओ, क्योंकि वह उन (काफिरों) के लिए दुनिया में है और तुम्हारे लिए आखिरत में है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6526) و مسلم (4 / 2067)، (5394)

٤٢٧٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أنسٍ قَالَ: حُلِبَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَاةٌ دَاجِنٌ وَشِيبَ لَبَنُهَا بِمَاءٍ مِنَ الْبِئْرِ الَّتِي فِي دَارِ أَنَسٍ فَأُعْطِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْقَدَحَ فَشَرِبَ وَعَلَى يَسَارِهِ أَبُو بَكْرٍ وَعَنْ يَمِينِهِ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ عُمَرُ: أَعْطِ أَبَا بَكْرٍ يَا رَسُولَ اللَّهِ فَأَعْطَى الْأَعْرَابِيَّ الَّذِي عَنْ يَمِينِهِ ثُمَّ قَالَ: " الْأَيْمَنُ فَالْأَيْمَنُ وَفِي رِوَايَةٍ: «الْأَيْمَنُونَ الْأَيْمَنُونَ أَلَا فيَمِّنوا»

4273. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के लिए घर में पली हुई बकरी का दूध धोया गया और फिर उस के साथ अनस रदियल्लाहु अन्हु के घर के कुंवो का पानी मिलाया गया, रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में वह प्याला पेश किया गया तो आप ने इसे नोश फ़रमाया, आप के बाएँ तरफ अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु थे और आप के दाएँ तरफ एक आराबी था, उमर रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! अबू बक्र को दें ,लेकिन आप ने इस आराबी को अता फ़रमाया जो के आप ﷺ के दाएँ तरफ था, फिर फ़रमाया: “दाया, तो दायाँ ही है”, एक रिवायत में है: “दाए तरफ वालो को, दाएँ तरफ वालो को, सुनो दाएँ तरफ वालो को मुकद्दम रखो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2352 و الرواية الثانية : 2571) و مسلم (125 / 2029 و الرواية الثانية : 126 / 2029)، (5290 و 5291)

٤٢٧٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: أَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِقَدَحٍ فَشَرِبَ مِنْهُ وَعَنْ يَمِينِهِ غُلَامٌ أَصْغَرُ الْقَوْمِ وَالْأَشْيَاخُ عَنْ يَسَارِهِ فَقَالَ: «يَا غُلَامُ أَتَأْذَنُ أَنْ أُعْطِيَهُ الْأَشْيَاخَ؟» فَقَالَ: مَا كُنْتُ لِأُوثِرَ بِفَضْلٍ مِنْكَ أَحَدًا يَا رَسُولَ اللَّهِ فَأَعْطَاهُ إِيَّاه»» وَحَدِيث أبي قتادةَ سنذكر فِي «بَابِ الْمُعْجِزَاتِ» إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى

4274. सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ की खिदमत में एक प्याला पेश किया गया तो आप ने उस से नोश फ़रमाया, आप के दाएँ तरफ एक छोटा सा लड़का था जबकि उमर रसीद लोग आप के बाएँ तरफ थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “लड़के! क्या तुम इजाज़त देते हो की मैं यह प्याला उमर रसीद शख़्स को दे दू ?” उस ने कहा: अल्लाह के रसूल! मैं आप की बच्ची हुई चीज़ अपने अलावा किसी को देना पसंद नहीं करता, आप ﷺ ने वह इसे ही अता फ़रमाया| # हम अबू क़तादा (र) से मरवी हदीस इंशाअल्लाह तआला بَاب فِي المعجزات (मोजिजो का बयान) में ज़िक्र करेंगे. (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2351) و مسلم (127 / 2030)، (5292) 0 حديث ابی قتادة سیاتی (5911)

بَاب الْأَشْرِبَة • पीने की चीजों का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٢٧٥ - (صَحِيح) عَن ابنِ عمَرَ قَالَ: كُنَّا نَأْكُلُ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَنَحْنُ نَمْشِي وَنَشْرَبُ وَنَحْنُ قِيَامٌ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَالدَّارِمِيُّ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ غَرِيبٌ

4275. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के अहद में चलते फिरते और खड़े हो कर भी खा पि लिया करते थे| तिरमिज़ी, इब्ने माजा दारमी और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है| (सहीह)

صحیح ، رواہ الترمذی (1880) و ابن ماجہ (3301) و الدارمی (2 / 120 ح 2131)

٤٢٧٦ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جده قَالَ: رَأَيْت رَسُول لله صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَشْرَبُ قَائِمًا وَقَاعِدًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4276. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने देखा रसूलुल्लाह ﷺ खड़े हो कर भी और बैठ कर भी पि लिया करते थे| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (1883 وقال : حسن صحیح)

٤٢٧٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُتَنَفَّسَ فِي الْإِنَاءِ أَوْ يُنْفَخَ فِيهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

4277. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने बर्तन में सांस लेने या उस में फूंक मारने से मना फ़रमाया है| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ ابوداؤد (3728 و ابن ماجہ (34283429)

٤٢٧٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَشْرَبُوا وَاحِدًا كَشُرْبِ [ص:١٢٣] الْبَعِيرِ وَلَكِنِ اشْرَبُوا مَثْنى وثُلَاث وَسَمُّوا إِذَا أَنْتُمْ شَرِبْتُمْ وَاحْمَدُوا إِذَا أَنْتُمْ رفعتُم» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4278. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ऊंट की तरह एक ही घूंट

में न पियो बल्कि दो और तीन घूंटो में पियो और जब तुम पियो तो अल्लाह का नाम लो और जब तुम बर्तन मुंह से हटाओ तो الْحَمد لله (तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिए है) कहो"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1885 وقال : غریب) * یزید بن سنان الجزری : ضعیف و شیخه کانه یعقوب (ضعیف) والا فمجهول

٤٢٧٩ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ النَّفْخِ فِي الشَّرَابِ فَقَالَ رَجُلٌ: الْقَذَاةَ أَرَاهَا فِي الْإِنَاءِ قَالَ: «أَهْرِقْهَا» قَالَ: فَإِنِّي لَا أُرْوَى مِنْ نَفَسٍ وَاحِدٍ قَالَ: «فَأَبِنِ الْقَدَحَ عَنْ فِيكَ ثُمَّ تَنَفَّسْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ والدارمي

4279. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने मशरुब में फूंक मारने से मना फ़रमाया तो एक आदमी ने अर्ज़ किया, बर्तन में गिरा हुआ तिनका देखूं तो फिर (क्या करू)? आप ﷺ ने फ़रमाया: "इसे फेंक दो", उस ने अर्ज़ किया, मैं एक सांस से सेराब नहीं होता, आप ﷺ ने फ़रमाया: "अपने मुंह से प्याला हटा फिर सांस ले"| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (1887 وقال : حسن صحیح) و الدارمی (2 / 119 ح 2172)

٤٢٨٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الشُّرْبِ مِنْ ثُلْمَةِ الْقَدَحِ وَأَنْ يُنْفَخَ فِي الشَّرَابِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4280. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने प्याले के टूटे हुए हिस्से से पीने से और मशरुब में फूंक मारने से मना फ़रमाया है| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (3722)

٤٢٨١ - (صَحِيح) وَعَن كبْشَةَ قَالَتْ: دَخَلَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَشَرِبَ مِنْ فِي قِرْبَةٍ مُعَلَّقَةٍ قَائِمًا فَقُمْتُ إِلَى فِيهَا فَقَطَعْتُهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غريبٌ صَحِيح

4281. कब्शत रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मेरे पास तशरीफ़ लाए तो आप ने लटके हुए मश्किज़े से खड़े हो कर पानी पिया, मैंने इस (मश्किज़े) के मुंह की तरफ तवज्जो रखी और मैंने इस (मश्किज़े के मुंह) को काट लिया| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब सहीह है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1892) و ابن ماجه (3423)

٤٢٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ أَحَبُّ الشَّرَابِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْحُلْوَ الْبَارِدَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: وَالصَّحِيحُ مَا رُوِيَ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُرْسَلًا

4282. इमाम ज़ुहरी ने उरवा की सनद से आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया है उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ को ठंडा शिरी मशरुब ज़्यादा पसंद था| तिरमिज़ी और उन्होंने कहा: सहीह वह है जो ज़ुहरी की सनद से नबी ﷺ से मुरसल रिवायत किया गया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (1895) * الزهری مدلس و عنعن وله شاهد ضعيف عند احمد (1 / 338)

٤٢٨٣ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِذَا أَكَلَ أَحَدُكُمْ طَعَامًا فَلْيَقُلِ: اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَأَطْعِمْنَا خَيْرًا مِنْهُ. وَإِذَا سُقِيَ لَبَنًا فَلْيَقُلِ: اللَّهُمَّ [ص:١٢٣ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَزِدْنَا مِنْهُ فَإِنَّهُ لَيْسَ شَيْءٌ يجزى مِنَ الطَّعَامِ وَالشَّرَابِ إِلَّا اللَّبَنُ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

4283. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई खाना खाए तो वह यूँ दुआ करे: “अल्लाह उस में बरकत अता फरमा और हमें उस से बेहतर खिला”, और जब दूध पिए तो यूँ दुआ करे: “अल्लाह उस में बरकत अता फरमा और हमें उस से ज़्यादा अता फरमा”, क्योंकि दूध के सिवा कोई ऐसी चीज़ नहीं हो खाने से किफ़ायत करे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3455) و ابوداؤد (3730) * فيه على بن زيد بن جدعان : ضعيف و عمر بن حرملة مجهول وله شاهد ضعيف فی الصحيحة للشيخ محمد ناصر الدين الالبانی رحمه الله (2320) و اخطا من صححه

٤٢٨٤ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُسْتَعْذَبُ لَهُ الْمَاءُ مِنَ السُّقْيَا. قِيلَ: هِيَ عَيْنٌ بَيْنَهَا وَبَيْنَ الْمَدِينَةِ يَوْمَانِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4284. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ के लिए सुक्या से आबे शिरीन लाया जाता था, मशहूर है के वह मदीना से दो रोज़ की मुसाफ़त पर एक चश्मा है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (3735)

बَاب الْأَشْرِبَة • पीने की चीजों का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٢٨٥ - (ضَعِيف) عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ شَرِبَ فِي إِنَاءِ ذَهَبٍ أَوْ فِضَّةٍ أَوْ إِنَاءٍ فِيهِ شَيْءٌ مِنْ ذَلِكَ فَإِنَّمَا يُجَرْجِرُ فِي بَطْنِهِ نَارَ جهنمَ» . رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيّ

4285. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स सोने या चाँदी के बर्तन में, या किसी ऐसे बर्तन में जिस में इस (सोने या चांदी) में से कुछ हो तो वह शख़्स अपने पेट में जहन्नम की एक ही उंडेलता है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الدارقطنى (1 / 40 ح 93 وقال : اسناده حسن) * ابراهيم بن عبدالله بن مطيع و ابوه لم يوثقهما غير الدارقطنى بتحسين حديثهما والله اعلم بهما

بَاب النقيع والأنبذة • नकीअ और नबिज़ का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٢٨٦ - (صَحِيح) عَن أنسٍ قَالَ: لَقَدْ سَقَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِقَدَحِي هَذَا الشَّرَابَ كُلَّهُ: الْعَسَلَ والنَّبيذَ والماءَ وَاللَّبن. رَوَاهُ مُسلم

4286. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने अपने इस प्याले मैं रसूलुल्लाह ﷺ को हर किस्म का मशरुब पिलाया, शहद, नबिज़, पानी और दूध| (मुस्लिम)

رواه مسلم (89 / 2008)، (5237)

٤٢٨٧ - (صَحِيح) وَعَن عائشةَ قَالَتْ: كُنَّا نَنْبِذُ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سِقَاءٍ يُوكَأُ أَعْلَاهُ وَلَهُ عَزْلَاءُ نَنْبِذُهُ غُدْوَةً فَيَشْرَبُهُ عِشَاءً وَنَنْبِذُهُ عِشَاءً فيشربُه غُدوةً. رَوَاهُ مُسلم

4287. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, हम रसूलुल्लाह ﷺ के लिए एक मश्किज़े में नबिज़ तैयार

किया करती थी, जिसे ऊपर से बांध दिया जाता था, और उस के नीचे भी मुंह था, हम सुबह नबिज़ तैयार करती तो आप इसे शाम को नोश फरमा लेते और हम शाम को तैयार करती तो आप इसे सुबह को नोश फरमा लेते थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (85 / 2005)، (5232)

٤٢٨٨ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُنْبَذُ لَهُ أَوَّلَ اللَّيْلِ فَيَشْرَبُهُ إِذَا أَصْبَحَ يَوْمَهُ ذَلِكَ وَاللَّيْلَةَ الَّتِي تَجِيءُ وَالْغَدَ وَاللَّيْلَةَ الْأُخْرَى وَالْغَدَ إِلَى الْعَصْرِ فَإِنْ بَقِيَ شَيْءٌ سَقَاهُ الْخَادِمَ أَوْ أَمَرَ بِهِ فصُبَّ. رَوَاهُ مُسلم

4288. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के लिए रात के पहले हिस्से में नबिज़ तैयार की जाती, जब इस दिन सुबह होती तो आप इसे नोश फरमाते और रात को भी पीते, अगले दिन और अगली रात भी नोश फरमाते और अगले रोज़ असर तक नोश फरमा लेते, अगर कुछ बच जाती आप इसे खादिम को पिला देते या फिर आप के हुक्म पर इसे उन्देल दिया जाता| (मुस्लिम)

رواه مسلم (79 / 2004)، (5226)

٤٢٨٩ - (صَحِيح) وَعَن جابرٍ قَالَ: كَانَ يُنْبَذُ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سِقَائِهِ فَإِذَا لَمْ يَجِدُوا سِقَاءً يُنْبَذُ لَهُ فِي تَوْرٍ مِنْ حِجَارَةٍ. رَوَاهُ مُسلم

4289. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के लिए मश्किज़े में नबिज़ तैयार की जाती थी, अगर वह मश्किज़ा न पाते तो फिर आप के लिए पत्थर के बर्तन में नबिज़ तैयार की जाती थी| (मुस्लिम)

رواه مسلم (62 / 1999)، (5206)

٤٢٩٠ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نهى عَن الدُّبَّاء والحنتم والمرفت وَالنَّقِيرِ وَأَمَرَ أَنْ يُنْبَذَ فِي أَسْقِيَةِ الْأَدَمِ. رَوَاهُ مُسلم

4290. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने कद्दू के बनाए हुए बर्तन, सब्ज़ घड़े, रोगन किए हुए बर्तन और लकड़ी से कुरेदे हुए बर्तन में नबिज़ तैयार करने से मना फ़रमाया, और आप ﷺ ने चमड़े के मश्किजो में नबिज़ तैयार करने का हुक्म फ़रमाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (57 / 1997 ، 46 / 1997)، (5186 و 5187)

٤٢٩١ - (صَحِيح) وَعَن بُرَيْدَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «نَهَيْتُكُمْ عَنِ الظُّرُوفِ فَإِنَّ ظَرْفًا لَا يُحِلُّ شَيْئًا وَلَا يُحَرِّمُهُ وَكُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ» . وَفِي رِوَايَةٍ: قَالَ: «نَهَيْتُكُمْ عَنِ الْأَشْرِبَةِ إِلَّا فِي ظُرُوفِ الْأَدَمِ فَاشْرَبُوا فِي كُلِّ وِعَاءٍ غَيْرَ أَنْ لَا تَشْرَبُوا مُسْكِرًا» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4291. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैंने तुम्हें (ज़िक्र की गई) ज़ुरुफ़ (में नबिज़ तैयार करने) से मना किया था, कोई ज़ुरुफ़ (बरतन न तो) किसी चीज़ को हलाल करता है और न इसे हराम करता है, हर नशावर चीज़ हराम है”| एक दूसरी रिवायत में है फ़रमाया: “मैंने चमड़े के बर्तनों के अलावा दीगर बर्तनों में मशरुबात (रखने, पिने) से तुम्हें मना किया था, तुम तमाम बर्तनों में पियो, मगर नशावर चीज़े मत पियो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (65 / 977)، (5209)

नकीअ और नबिज़ का बयान — بَاب النقيع والأنبذة
दूसरी फस्ल — الْفَصْل الثَّانِي

٤٢٩٢ - (صَحِيح) عَن أبي مَالك الْأَشْعَرِيّ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَيَشْرَبَنَّ نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي الْخَمْرَ يُسَمُّونَهَا بِغَيْرِ اسْمِهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ

4292. अबू मालिक अशअरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मेरी उम्मत के कुछ लोग शराब का कोई और नाम रख कर शराब नौशी करेंगे”| (हसन)

حسن ، رواه ابوداؤد (3688) و ابن ماجه (4020)

नकीअ और नबिज़ का बयान — بَاب النقيع والأنبذة
तीसरी फस्ल — الْفَصْل الثَّالِث

٤٢٩٣ - (صَحِيح) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ نَبِيذِ الْجَرِّ الْأَخْضَرِ قُلْتُ: أَنَشْرَبُ فِي الأبيضِ؟ قَالَ: «لَا» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4293. अब्दुल्लाह बिन अबी अव्फी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने सब्ज़ घड़े की नबि इसे

मना फ़रमाया तो मैंने अर्ज़ किया: क्या हम सफ़ेद में पि लिया करे आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं ?”| (बुखारी)

رواه البخارى (5596)

بَاب تَغْطِيَة الْأَوَانِي وَغَيرهَا • बर्तनों और दीगर चीजों को ढकने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٢٩٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذا كَانَ جِنْحُ اللَّيْلِ أَوْ أَمْسَيْتُمْ فَكُفُّوا صِبْيَانَكُمْ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْتَشِرُ حِينَئِذٍ فَإِذَا ذَهَبَ سَاعَةً مِنَ اللَّيْلِ فَخَلُّوهُمْ وَأَغْلِقُوا الْأَبْوَابَ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لَا يَفْتَحُ بَابًا مُغْلَقًا وَأَوْكُوا قِرَبَكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ وَخَمِّرُوا آنِيَتَكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ وَلَوْ أَنْ تعرِضوا عَلَيْهِ شَيْئا وأطفئوا مصابيحكم»

4294. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब सूरज गुरूब हो जाए या जब तुम शाम करे तो अपने बच्चो को रोक लिया करो क्योंकि इस वक़्त शैतान फ़ैल जाते हैं लेकिन जब रात की एक घड़ी गुज़र जाए तो उन बच्चो को छोड़ दो और दरवाज़े बंद कर लो और अल्लाह का नाम लो क्योंकि शैतान बंद दरवाज़ा नहीं खोलता अपने मश्किज़े बंद रखो इन पर अल्लाह का नाम लो अपने बर्तन ढांप कर रखो इन पर अल्लाह का नाम लो ख्वाह कोई मामूली चीज़ ही इन पर रखो और अपने चिराग बुझा दिया करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3280) و مسلم (97 / 2012)، (5250)

٤٢٩٥ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةٍ لِلْبُخَارِيِّ: قَالَ: «خَمِّرُوا الْآنِيَةَ وَأَوْكُوا الْأَسْقِيَةَ وَأَجِيفُوا الْأَبْوَابَ وَاكْفِتُوا صِبْيَانَكُمْ عِنْدَ الْمَسَاءِ فَإِن للجن انتشارا أَو خطْفَة وَأَطْفِئُوا الْمَصَابِيحَ عِنْدَ الرُّقَادِ فَإِنَّ الْفُوَيْسِقَةَ رُبَّمَا اجْتَرَّتْ الفتيلة فأحرقت أهل الْبَيْت»

4295. और बुखारी की रिवायत में है फ़रमाया: “बर्तन धांपो मश्किजो को बांधो दरवाज़े बंद रखो और शाम के वक़्त अपने बच्चो को इकट्ठा कर लो क्योंकि इस वक़्त जिन्न फ़ैल जाते हैं और उचक लेते है और सोते वक़्त चिराग गुल कर दिया करो क्योंकि बसा-अवक़ा चुहिया चिराग की बत्ती खींच कर ले जाती है और घरवालो को जला डालती है”| (बुखारी)

رواه البخارى (3316)

٤٢٩٦ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ قَالَ: «غَطُّوا الْإِنَاءَ وَأَوْكُوا السِّقَاءَ وَأَغْلِقُوا الْأَبْوَابَ وَأَطْفِئُوا السِّرَاجَ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لَا

يَحُلُّ سِقَاءً وَلَا يَفْتَحُ بَابًا وَلَا [ص:١٢٣ يَكْشِفُ إِنَاءً فَإِنْ لَمْ يَجِدْ أَحَدُكُمْ إِلَّا أنْ يعرضَ على إنائِه عوداً ويذكرَ اسمَ اللَّهَ فَلْيَفْعَلْ فَإِنَّ الْفُوَيْسِقَةَ تُضْرِمُ عَلَى أَهْلِ الْبَيْت بَيتهمْ»

4296. और मुस्लिम की रिवायत में है फ़रमाया: “बर्तन धांपो मश्किजो के मुंह बांधो दरवाज़े बंद रखो चिराग गुल कर दो क्योंकि शैतान मश्किज़े का मुंह नहीं खोलता और न बंद दरवाज़ खोलता है और ना ही किसी बर्तन ढकना से उठाता है और अगर तुम में से कोई लकड़ी के सिवा कोई चीज़ न पाए तो वह इसे ही अर्ज़ के बल उस पर रख दे और अल्लाह का नाम ले वह ऐसे ज़रूर करे क्योंक चुहिया घर को अहले खाना समेत जला देती है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (96 / 2012)، (5246)

٤٢٩٧ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ: قَالَ: «لَا تُرْسِلُوا فَوَاشِيكُمْ وَصِبْيَانَكُمْ إِذَا غَابَتِ الشَّمْسُ حَتَّى تَذْهَبَ فَحْمَةُ الْعِشَاءِ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَبْعَثُ إِذَا غَابَتِ الشَّمْسُ حَتَّى تذْهب فَحْمَة الْعشَاء»

4297. और मुस्लिम ही की रिवायत में है फ़रमाया: “जब सूरज गुरूब हो जाए तो रात की इब्तिदाई तारीकी गायब हो जाने तक अपने मवेशी और अपने बच्चे न छोड़ो क्योंकि इस वक़्त शैतान छोड़े जाते हैं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (98 / 2013)، (5253)

٤٢٩٨ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةٍ لَهُ: قَالَ: «غَطُّوا الْإِنَاءَ وَأَوْكُوا السِّقَاءَ فَإِنَّ فِي السَّنَةِ لَيْلَةً يَنْزِلُ فِيهَا وَبَاءٌ لَا يَمُرُّ بِإِنَاءٍ لَيْسَ عَلَيْهِ غِطَاءٌ أَوْ سِقَاءٌ لَيْسَ عَلَيْهِ وِكَاءٌ إِلَّا نَزَلَ فِيهِ من ذَلِك الوباء»

4298. और मुस्लिम ही की रिवायत में है फ़रमाया: “बर्तन धांपो मश्किजो के मुंह बांधो क्योंकि साल में एक ऐसी रात है जिस में वबा फेलती है और वह वबा जब ऐसे बर्तन से गुज़रती है जिस पर ढकना न हो या किसी ऐसे मश्किज़े से गुज़रती है जिस का मुंह बंद न हो तो वह उस में दाखिल हो जाती है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (99 / 2014)، (5255)

٤٢٩٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: جَاءَ أَبُو حُمَيْدٍ رَجُلٌ مِنَ الْأَنْصَارِ مِنَ النَّقِيعِ بِإِنَاءٍ مِنْ لَبَنٍ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلَّا خَمَّرْتَهُ وَلَوْ أنْ تعرِضَ عليهِ عوداً»

4299. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अबू हुमैद अंसारी रदियल्लाहु अन्हु नकीअ से दूध का बर्तन लेकर नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने इसे धांपा क्यों नहीं ख्वाह तुम अर्ज़ के बल

उस पर एक लकड़ी रख लेते"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5605 ، 6506) و مسلم (95 / 2011)، (5245)

٤٣٠٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا تَتْرُكُوا النَّارَ فِي بُيُوتِكُمْ حِينَ تنامون»

4300. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम सोते वक़्त अपने घरो में आग (को जलते हुए) मत छोड़ो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6293) و مسلم (100 / 2015)، (5257)

٤٣٠١ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: احْتَرَقَ بَيْتٌ بِالْمَدِينَةِ عَلَى أَهْلِهِ مِنَ اللَّيْلِ فَحُدِّثَ بِشَأْنِهِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ هَذِهِ النَّارُ إِنَّمَا هِيَ عَدُوٌّ لَكُمْ فَإِذَا نِمْتُمْ فأطفئوها عَنْكُم»

4301. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मदीना में रात के वक़्त एक घर अहले खाना समेत जल गया उस के मुतल्लिक नबी ﷺ को बताया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "ये आग तुम्हारी दुश्मन है, जब सोने लगो तो उसे बुझा दिया करो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6294) و مسلم (101 / 2016)، (5258)

بَاب تَغْطِيَة الْأَوَانِي وَغَيرهَا • बर्तनों और दीगर चीजों को ढकने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٣٠٢ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ جَابِرٍ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِذَا سَمِعْتُمْ نُبَاحَ الْكِلَابِ وَنَهِيقَ الْحَمِيرِ مِنَ اللَّيْلِ فَتَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ فَإِنَّهُنَّ يَرَيْنَ مَا لَا تَرَوْنَ. وَأَقِلُّوا الْخُرُوجَ إِذَا هَدَأَتِ الْأَرْجُلُ فَإِنَّ اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ يَبُثُّ مِنْ خَلْقِهِ فِي لَيْلَتِهِ مَا يَشَاءُ وَأَجِيفُوا الْأَبْوَابَ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لَا يَفْتَحُ بَابًا إِذَا أُجِيفَ وَذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَغَطُّوا الْجِرَارَ وَأَكْفِئُوا الْآنِيَةَ وأوكوا الْقرب» . رَوَاهُ فِي شرح السّنة

4302. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जब तुम रात के वक़्त कुत्तो के भोंकने और गधो के हिंगने की आवाज़ सुने तो ((اَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ)) पढ़ो क्योंकि वह ऐसी चीज़े देखते है जो तुम नहीं देखते जब रात के वक़्त लोगों की आमद व रफत ख़तम हो जाए तो तुम घरो से) निकलना

कम करो क्योंकि अल्लाह अज्ज़वजल रात के वक़्त अपने मखलूक में से जो चाहता फैला देता है और दरवाज़े बंद रखो और इन पर अल्लाह का नाम लो क्योंकि जब दरवाज़ा बंद कर दिया जाए और उस पर अल्लाह का नाम लिया जाए तो शैतान इसे नहीं खोलता बर्तन धांपो और खाली बर्तन उल्टा कर के रखो और मश्किजो के मुंह बंद रखो”| (हसन)

حسن ، رواه البغوى فى شرح السنة (11 / 392 ح 3060) [و ابوداؤد (5103 مختصرًا و سنده حسن ، 5104 و سنده ضعيف) و البخارى (فى الادب المفرد (12331235) و احمد (3 / 306 ، 355) و ابو يعلى (4 / 211 ح 2327) و ابن اسحاق صرح بالسماع عنده و سنده حسن]

٤٣٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابنِ عبَّاسٍ قَالَ: جَاءَتْ فَأْرَةٌ تَجُرُّ الْفَتِيلَةَ فَأَلْقَتْهَا بَيْنَ يَدَيْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى الْخَمْرَةِ الَّتِي كَانَ قَاعِدًا عَلَيْهَا فَأَحْرَقَتْ مِنْهَا مِثْلَ مَوْضِعِ الدِّرْهَمِ فَقَالَ: «إِذَا نِمْتُمْ فَأَطْفِئُوا سُرُجَكُمْ فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَدُلُّ مِثْلَ هَذِهِ عَلَى هَذَا فَيَحْرِقُكُمْ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ»»   وَهَذَا الْبَاب خَال من الْفَصْل الثَّالِث

4303. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, चुहिया बत्ती खींचते हुए आई और इसे रसूलुल्लाह ﷺ के सामने इस चटाई पर रख दिया जिस पर आप तशरीफ़ फरमा थे और उस ने दिरहम बराबर चटाई जला दिया आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब तुम सोने लगी तो अपने चिराग गुल कर दिया करो क्योंकि शैतान इस तरह की किसी चीज़ की इस तरह के फ़ैल पर रहनुमाई करता है तो वह तुम्हें जला देता है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5247) * سلسلة سماک عن عكرمة ضعيفة و حديث البخارى (62946296) و مسلم (2016) يغنى عنه

وهذا الباب خال من الفصل الثالث

यह बाब तीसरी फस्ल से खाली है|

كتاب اللبَاس • लिबास का बयान

الْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٤٣٠٤ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أنسٍ قَالَ: كَانَ أَحَبُّ الثِّيَابِ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَلْبَسَهَا الْحِبَرَةُ

4304. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ धारी दार कपड़ा ज़ेबतीन (पहना हुआ) करना ज़्यादा पसंद करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5813) و مسلم (32 / 2079)، (5440)

٤٣٠٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَبِسَ جُبَّةً رُومِيَّةً ضَيِّقَةَ الْكُمَّيْنِ

4305. मुगिरा बिन शैबा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने तंग आस्तीनों वाला रूमी जुब्बा ज़ेबतीन (पहना हुआ) किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (363) و مسلم (77 / 274)، (629)

٤٣٠٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ: أَخْرَجَتْ إِلَيْنَا عَائِشَةُ كِسَاءً مُلَبَّدًا وَإِزَارًا غَلِيظًا فَقَالَتْ: قُبِضَ رُوحُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي هذَيْن

4306. अबू बुरुद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने पेवंद लगी हुई एक चादर और एक मोटी तहबंद हमें दिखाई और फ़रमाया रसूलुल्लाह ﷺ की इन दो कपड़ो में रूह कब्ज़ की गई| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5818) و مسلم (35 ، 34 / 2080)، (5442 و 5443)

٤٣٠٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَائِشَة قَالَتْ: كَانَ فِرَاشُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الَّذِي يَنَامُ عَلَيْهِ أَدَمًا حَشْوُهُ لِيف

4307. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ जिस बिस्तर पर आराम फ़रमाया करते थे वह चमड़े का था जिस में खजूर के पत्ते भरे हुए थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (6456) و مسلم (38 / 2082)، (5447)

٤٣٠٨ - (صَحِيح) وَعَنْهَا قَالَتْ: كَانَ وِسَادُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الَّذِي يَتَّكِئُ عَلَيْهِ مَنْ أَدَمٍ حشْوُهُ ليفٌ. رَوَاهُ مُسلم

4308. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ का तकिया जिस पर आप टेक लगाया करते थे वह चमड़े का था जिस में खजूर के पत्ते भरे हुए थे| (मुस्लिम)

رواه مسلم (37 / 2082)، (5446)

٤٣٠٩ - (صَحِيح) وعنها قَالَت: بَينا نَحْنُ جُلُوسٌ فِي بَيْتِنَا فِي حَرِّ الظَّهِيرَةِ قَالَ قَائِلٌ لِأَبِي بَكْرٍ: هَذَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُقْبِلًا مُتَقَنِّعًا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

4309. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, हम दोपहर की गर्मी में अपने घर में बैठें हुए थे की किसी ने अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया यह चादर के किनारे से सर ढांप कर तशरीफ़ लाने वाले रसूलुल्लाह ﷺ है| (बुखारी)

رواه البخاری (5807)

٤٣١٠ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لَهُ: «فِرَاشٌ لِلرَّجُلِ وَفِرَاشٌ لِامْرَأَتِهِ وَالثَّالِثُ للضيف وَالرَّابِعِ للشَّيْطَان» . رَوَاهُ مُسلم

4310. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “एक बिस्तर आदमी के लिए एक उसकी अहलिया के लिए तीसरा महमान के लिए और चोथा अगर हो तो वह शैतान के लिए है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (41 / 2084)، (5452)

٤٣١١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا يَنْظُرُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَى مَنْ جَرَّ إِزَاره بطرا»

4311. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह रोज़ ए कियामत इस शख़्स की तरफ (नज़रे रहमत से) नहीं देखेगा जो तकब्बुर के तौर पर अपना आज़ार घसीटता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5788) و مسلم (48 / 2087)، (5463)

٤٣١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ جَرَّ ثَوْبَهُ خُيَلَاءَ لَمْ يَنْظُرِ اللَّهُ إِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ»

4312. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह रोज़ ए कियामत इस शख़्स की तरफ रहमत की नज़र से) नहीं देखेगा जो तकब्बुर के तौर पर अपना कपड़ा घसीटता है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5784) و مسلم (44 / 2085)، (5457)

٤٣١٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَيْنَمَا رَجُلٌ يَجُرُّ إِزَارَهُ مِنَ الْخُيَلَاءِ خُسِفَ بِهِ فَهُوَ يَتَجَلْجَلُ فِي الْأَرْضِ إِلى يومِ الْقِيَامَة» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

4313. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "इस असना में के एक आदमी तकब्बुर के तौर पर अपना तहबंद घसीटता था इस वजह से इसे ज़मीन में धंसा दिया गया और वह रोज़ ए कियामत तक ज़मीन में धंसता चला जाएगा"| (बुखारी)

رواه البخاری (2484)

٤٣١٤ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أَسْفَلَ مِنَ الْكَعْبَيْنِ مِنَ الْإِزَارِ فِي النَّارِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

4314. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तह्बंद जो टखनों से नीचे हो जाए जहन्नम में (ले जाता) है"| (बुखारी)

رواه البخاری (5887)

٤٣١٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَأْكُلَ الرَّجُلُ بِشِمَالِهِ أَو يمشي فِي نعل وَاحِد وَأَن يشْتَمل الصماء أَو يجتني فِي ثَوْبٍ وَاحِدٍ كَاشِفًا عَنْ فَرْجِهِ. رَوَاهُ مُسلم

4315. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मना फ़रमाया के आदमी अपने बाएँ हाथ से खाए या एक जूता पहन कर चले और यह कि वह अपने पुरे जिस्म पर इस तरह चादर लपेट ले के हाथ भी न निकल सके और यह कि वह एक कपड़ा इस तरह लपेट ले के शर्मगाह नंगी हो"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (70 / 2099)، (5499)

٤٣١٦ - ، ٤٣١٧ ، ٤٣١٨ ، ٤٣١٩ (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُمَرَ وَأَنَسٍ وَابْنِ الزُّبَيْرِ وَأَبِي أَمَامَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ لَبِسَ الْحَرِيرَ فِي الدُّنْيَا لَمْ يَلْبَسْهُ فِي الْآخِرَة»

4316. उमर अनस इब्ने जुबैर और अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स दुनिया में रेशम पहना है के इसे आखिरत में नहीं पहनेगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5828) و مسلم (10 / 2069)، (5409)

٤٣١٦ - ، ٤٣١٧ ، ٤٣١٨ ، ٤٣١٩ (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُمَرَ وَأَنَسٍ وَابْنِ الزُّبَيْرِ وَأَبِي أَمَامَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ لَبِسَ الْحَرِيرَ فِي الدُّنْيَا لَمْ يَلْبَسْهُ فِي الْآخِرَة»

4317. उमर अनस इब्ने जुबैर और अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स दुनिया में रेशम पहना है के इसे आखिरत में नहीं पहनेगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5832) و مسلم (2073)، (5425)

٤٣١٦ - ، ٤٣١٧ ، ٤٣١٨ ، ٤٣١٩ (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُمَرَ وَأَنَسٍ وَابْنِ الزُّبَيْرِ وَأَبِي أَمَامَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ لَبِسَ الْحَرِيرَ فِي الدُّنْيَا لَمْ يَلْبَسْهُ فِي الْآخِرَة»

4318. उमर अनस इब्ने जुबैर और अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स दुनिया में रेशम पहना है के इसे आखिरत में नहीं पहनेगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5833) و مسلم (11 / 2069)، (5410)

٤٣١٦ - ، ٤٣١٧ ، ٤٣١٨ ، ٤٣١٩ (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُمَرَ وَأَنَسٍ وَابْنِ الزُّبَيْرِ وَأَبِي أَمَامَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ لَبِسَ الْحَرِيرَ فِي الدُّنْيَا لَمْ يَلْبَسْهُ فِي الْآخِرَة»

4319. उमर अनस इब्ने जुबैर और अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स दुनिया में रेशम पहना है के इसे आखिरत में नहीं पहनेगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (لم اجده) و مسلم (2074)، (5426)

٤٣٢٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّمَا يَلْبَسُ الْحَرِيرَ فِي الدُّنْيَا مَنْ لَا خَلَاقَ

لَهُ فِي الْآخِرَة»

4320. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “दुनिया में सिर्फ वही शख़्स रेशम पहना है जिस का आखिरत में कोई हिस्सा नहीं ?”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5835) و مسلم (7 / 2068)، (5403)

٤٣٢١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: نَهَانَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نَشْرَبَ فِي آنِيَةِ الْفِضَّةِ وَالذَّهَبِ وَأَنْ نَأْكُلَ فِيهَا وَعَنْ لُبْسِ الْحَرِيرِ وَالدِّيبَاجِ وَأَنْ نَجْلِسَ عَلَيْهِ

4321. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने सोने चाँदी के बर्तन में खाने पीने रेशम और दिबाज (रेशम की एक किस्म पहनने और उस पर बैठनेसे हमें मना फ़रमाया है?| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5837) و مسلم (4 / 2067)، (5394)

٤٣٢٢ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: أَهْدِيَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم حُلّة [ص:١٢٤ سِيَرَاءَ فَبَعَثَ بِهَا إِلَيَّ فَلَبِسْتُهَا فَعَرَفْتُ الْغَضَبَ فِي وَجْهِهِ فَقَالَ: «إِنِّي لَمْ أَبْعَثْ بِهَا إِلَيْكَ لِتَلْبَسَهَا إِنَّمَا بَعَثْتُ بِهَا إِلَيْكَ لِتُشَقِّقَهَا خُمُراً بَين النساءِ»

4322. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ को रेशमी जोड़े का तोहफे पेश किया गया तो आप ने इसे मेरी तरफ भेज दिया मैंने वह पहन लिया लेकिन बाद में मैंने आप के चेहरे पर नाराज़ी देखी आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने इसे तुम्हारी तरफ इसलिए नहीं भेजा था के तुम उसे पहन लो मैंने तो उसे तुम्हारी तरफ इसलिए भेजा था के तुम उसे फाड़ कर औरतों की ओढनिया बना लो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2614) و مسلم (17 / 2071)، (5420)

٤٣٢٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ لُبْسِ الْحَرِيرِ إِلَّا هَكَذَا وَرَفَعَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إصبعيه: الْوُسْطَى والسبابة وضمهما

4323. उमर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने रेशम पहन ने से मना फ़रमाया मगर दो उंगलियों की मिकदार के बराबर इजाज़त फरमाई रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने दरमियानी और अन्गुंश्ते शहादत को मिला कर उन्हें बुलंद कर के इस मिकदार की वज़ाहत फरमाई| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5829) و مسلم (12 / 2069)، (5411)

٤٣٢٤ - (صَحِيح) وَفِي رِوَايَةٍ لِمُسْلِمٍ: أَنَّهُ خَطَبَ بِالْجَابِيَةِ فَقَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ لُبْسِ الْحَرِيرِ إِلَّا مَوْضِعَ إِصْبَعَيْنِ أَوْ ثَلَاث أَو أَربع

4324. और मुस्लिम में है की हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु ने (शाम के शहर) अब यह के मक़ाम पर ख़िताब करते हुए फ़रमाया के रसूलुल्लाह ﷺ ने दस या तिन या या चार उंगलियों के बकदर रेशम पहनने की इजाज़त दिया है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (15 / 2069)، (5417)

٤٣٢٥ - (صَحِيح) وَعَن أسماءَ بنت أبي بكر: أَنَّهَا أَخْرَجَتْ جُبَّةَ طَيَالِسَةٍ كِسْرَوَانِيَّةٍ لَهَا لِبْنَةُ ديباجٍ وفُرجَيْها مكفوفَين بالديباجِ وَقَالَت: هَذِه جبَّةُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَتْ عِنْدَ عَائِشَةَ فَلَمَّا قُبِضَتْ قَبَضْتُهَا وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَلْبَسُهَا فَنَحْنُ نَغْسِلُهَا للمَرضى نستشفي بهَا. رَوَاهُ مُسلم

4325. अस्मा बिन्ते अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने तियालिसीकिसरवानी जुब्बा निकाला जिसके गिरेबान और दोनों चाको पर देयबान (रेशम) का टुकड़ा लगा हुआ था उन्होंने ने फ़रमाया: यह रसूलुल्लाह ﷺ का जुब्बा था जो के आइशा रदियल्लाहु अन्हा के पास था नबी ﷺ से ज़ेबतीन (पहना हुआ) फ़रमाया करते थे हम मरीज़ों के लिए इसे धोते है और उस के पानी के) साथ शिफा हासिल करते हैं| (मुस्लिम)

رواه مسلم (10 / 2069)، (5409)

٤٣٢٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أنسٍ قَالَ: رَخَّصَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلزُّبَيْرِ وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ فِي لبس الْحَرِير لحكة بهما»» وَفِي رِوَايَة لمُسلم قَالَ: إِنَّهُمَا شكوا من الْقمل فَرخص لَهما فِي قمص الْحَرِير

4326. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने जुबैर और अब्दुल रहमान बिन ऑफ रदियल्लाहु अन्हु को खारिश की वजह से रेशम पहनने की रुखसत इनायत फरमाई थी और मुस्लिम की रिवायत में है अनस रदियल्लाहु अन्हु ने कहा उन्होंने जुओं की शिकायत की तो आप ﷺ ने उन्हें रेशमी कमीज़ पहनने की इजाज़त इनायत फरमाई| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5839) و مسلم (25 / 2076 ، 26 / 2076)، (5431 و 5433)

٤٣٢٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: رَأَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى ثَوْبَيْنِ مُعَصْفَرَيْنِ فَقَالَ: «إِنَّ هَذِهِ من ثِيَاب الْكفَّار فَلَا تلبسها»»» وَفِي رِوَايَة: قلت: أغسلهما؟ قَالَ: «بل احرقها» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ عَائِشَةَ: خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ غَدَاةٍ فِي «بَابِ مَنَاقِبِ أَهْلِ بَيْتِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم»

4327. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे ज़र्द रंग के दो कपड़े पहने हुए देखा तो फ़रमाया: “ये कुफ्फार के कपड़ो में से है तुम उन्हें मत पहना करो”, एक दूसरी रिवायत में है मैंने अर्ज़ किया: में उन्हें धो डालू आप ﷺ ने फ़रमाया: “नहीं? बल्कि उन्हें जला डालो”| # और हम आइशा (रअ) से मरवी हदीस: “एक रोज़ नबी ﷺ बाहर तशरीफ़ लाए ....”, बाब मनाकिब अहले बैत अल नबी ﷺ में ज़िक्र करेंगे. (मुस्लिम)

رواہ مسلم (27 / 2077 ، 28 / 2077)، (5434 و 5436) 0 حدیث عائشة یاتی (6127)

लिबास का बयान • كتاب اللبَاس

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٤٣٢٨ - (لم تتمّ دراسته) عَن أم سَلمَة قَالَتْ: كَانَ أَحَبُّ الثِّيَابِ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْقَمِيصَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

4328. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ को लिबास में कमीज़ सबसे ज़्यादा पसंद थी | (हसन)

حسن ، رواہ الترمذی (1762 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (4025)

٤٣٢٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أسماءَ بنت يزِيد قَالَتْ: كَانَ كُمُّ قَمِيصِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى الرُّصْغِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

4329. अस्मा बिन्ते यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ की कमीज़ के आस्तीन कलाई और हाथ के दरमियाने जोड़ तक थे| तिरमिज़ी, अबू दावुद, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ الترمذی (1765)

٤٣٣٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا لَبِسَ قَمِيصًا بَدَأَ بميامنه. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4330. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ कमीज़ ज़ेबतीन (पहना हुआ) फरमाते, तो आप ﷺ आगाज़ दाएँ तरफ से फरमाते थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1766)

٤٣٣١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «إِزْرَةُ الْمُؤْمِنِ إِلَى أَنْصَافِ سَاقَيْهِ لَا جُنَاحَ عَلَيْهِ فِيمَا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْكَعْبَيْنِ مَا أَسْفَلَ مِنْ ذَلِكَ فَفِي النَّارِ» قَالَ ذَلِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ «وَلَا يَنْظُرُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَى مَنْ جَرَّ إِزَارَهُ بَطَرًا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

4331. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना: “मोमिन का आज़ार उसकी आधी पिंडली तक होना चाहिए और अगर वह आधी पिंडली और टखनो के दरमियान हो तो भी उस पर कोई गुनाह नहीं? और जो उस से नीचे हो तो वह आग में (ले जाता) है” आप ﷺ ने यह तीन बार फ़रमाया.” अल्लाह रोज़ ए कियामत इस शख़्स की तरफ नज़रे रहमत से) नहीं देखेगा जो तकब्बुर के तौर पर अपना आज़ार घसीटता है”| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (4093) و ابن ماجه (3573)

٤٣٣٢ - (صَحِيح) وَعَن سَالم عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْإِسْبَالُ فِي الْإِزَارِ وَالْقَمِيصِ وَالْعِمَامَةِ مَنْ جَرَّ مِنْهَا شَيْئًا خُيَلَاءَ لَمْ يَنْظُرِ اللَّهُ إِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

4332. सालिम अपने वालिद से वह नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “कपड़े का लटकाना तहबंद कमीज़ और इमामे में है जो शख़्स उनमें से कुछ भी अज़राहे तकब्बुर लटकाता है तो अल्लाह रोज़ ए कियामत उसकी तरफ नज़रे रहमत से) नहीं देखेगा”| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (4085) و النسائی (8 / 208 ح 5336) و ابن ماجه (3576)

٤٣٣٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي كبشةَ قَالَ: كَانَ كِمَامُ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بُطْحًا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حديثٌ مُنكر

4333. अबू कब्शा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा की टोपिया सरो के साथ लगी हुई थी यानी ऊपर उठी हुई नहीं थी) तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस मुनकर है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1782) * ابو سعید عبدالله بن بسر : ضعیف

٤٣٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أم سَلمَة قَالَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِينَ ذَكَرَ الْإِزَارَ: فَالْمَرْأَةُ يَا رَسُولَ اللَّهِ؟ قَالَ: «تُرْخِي شِبْرًا» فَقَالَتْ: إِذًا تَنْكَشِفُ عَنْهَا قَالَ: «فَذِرَاعًا لَا تَزِيدُ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ مَالِكٌ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ وَابْن مَاجَه

4334. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि जब आप ﷺ ने आज़ार का तज़किरह फ़रमाया तो उन्होंने इस वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! औरत के लिए तहबंद में क्या हुक्म है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो एक बालिश्त नीचे लटकाए”, उन्होंने अर्ज़ किया, तो तो उस के पाँव नंगे होने का इमकान है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “एक हाथ और उस से ज़्यादा नहीं ?”| (सहीह)

صحیح ، رواہ مالک (2 / 915 ح 1765) و ابوداؤد (4117) و النسائی (8 / 209 ح 53395341) و ابن ماجہ (3580)

٤٣٣٥ - (لم تتمّ دراسته) وَفِي رِوَايَةِ التِّرْمِذِيِّ وَالنَّسَائِيِّ عَنِ ابْنِ عُمَرَ فَقَالَتْ: إِذًا تَنْكَشِفُ أَقْدَامُهُنَّ قَالَ: «فَيُرْخِينَ ذِرَاعًا لَا يزدن عَلَيْهِ»

4335. तिरमिज़ी और नसई की इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी रिवायत में है उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया, तो तो उन के पाँव नज़र आएँगे आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो एक हाथ (आज़ार) लटका लें और उस से ज़्यादा नहीं| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ الترمذی (1731 وقال : حسن صحیح) و النسائی (8 / 209 ح 5338)

٤٣٣٦ - (صَحِيح) وَعَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ قُرَّةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي رَهْطٍ مِنْ مُزَيْنَةَ فَبَايَعُوهُ وَإِنَّهُ لَمُطْلَقُ الْأَزْرَارِ فَأَدْخَلْتُ يَدِي فِي جَيْبِ قَمِيصِهِ فَمَسِسْتُ الْخَاتم. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4336. मुआविया बिन कुर्रत अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: में मज़िना कबिले के एक काफले के साथ नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ उन्होंने आप की बैत की इस दौरान आप ﷺ के बटन खुले हुए थे मैंने आप की कमीज़ के गिरेबान में अपना हाथ दाखिल किया तो मैंने महोरे नबूवत को छुआ| (सहीह)

اسنادہ صحیح ، رواہ ابوداؤد (4082)

٤٣٣٧ - (صَحِيح) وَعَن سَمُرَة أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْبَسُوا الثِّيَابَ الْبِيضَ فَإِنَّهَا أَطْهَرُ وَأَطْيَبُ وَكَفِّنُوا فِيهَا مَوْتَاكُمْ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه

4337. समुरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “सफ़ेद लिबास पहना करो क्योंकि वह

ज़्यादा पाकिज़ा और ज़्यादा तय्यब है और अपने मुर्दों को इसी में कफनाओ"| (हसन)

حسن ، رواه احمد (5 / 13 ح 20416) و الترمذی (2810 وقال : حسن صحیح) و النسائی (4 / 34 ح 1897) و ابن ماجه (3567)

٤٣٣٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا اعْتَمَّ سَدَلَ عِمَامَتَهُ بَيْنَ كَتِفَيْهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

4338. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ इमामे बांधते तो अपने इमामे का शिमला अपने कंधो के दरमियान लटका लेते तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (1736)

٤٣٣٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ قَالَ: عَمَّمَنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم فَسَدَلَهَا بَيْنَ يَدَيَّ وَمِنْ خَلْفِي. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4339. अब्दुल रहमान बिन ऑफ रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरे सिर पर दस्तार बाँधी आप ﷺ ने उस के एक किनारे को आगे की तरफ और दूसरे किनारे को पीछे की तरफ लटका दिया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (4079) * شیخ من اهل المدینة : مجهول ، کما قال المنذری وغیره

٤٣٤٠ - (ضَعِيف) وَعَن رُكَانَة عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «فَرْقُ مَا بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْمُشْرِكِينَ الْعَمَائِمُ عَلَى الْقَلَانِسِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ وَإِسْنَاده لَيْسَ بالقائم

4340. रुकान रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "हमारे और मुशरिकीन के दरमियान जो फर्क है के टोपियो पर इमामे बांधना है" तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है और उसकी इसनाद दुरुस्त नहीं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (1784) [و ابوداؤد (4078)] * فیه ابو الحسن و ابو جعفر : مجهولان

٤٣٤١ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أُحِلَّ الذَّهَبُ [ص:١٢٤ وَالْحَرِيرُ لِلْإِنَاثِ مِنْ أُمَّتِي وَحُرِّمَ عَلَى ذُكُورِهَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ وَقَالَ التِّرْمِذِيّ: هَذَا صَحِيح

4341. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “सोना और रेशम मेरी उम्मत की औरतों के लिए हलाल किया गया है और उस के मर्दों पर हराम किया गया है” तिरमिज़ी, नसई, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन सहीह है| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (1720) و النسائی (8 / 161 ح 5151)

٤٣٤٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا اسْتَجَدَّ ثَوْبًا سَمَّاهُ بِاسْمِهِ عِمَامَةً أَوْ قَمِيصًا أَوْ رِدَاءً ثُمَّ يَقُولُ «اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا كسوتَنيه أَسأَلك خَيره وخيرَ مَا صُنِعَ لَهُ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهِ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ

4342. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ नया कपड़ा ज़ेबतीन (पहना हुआ) फरमाते, तो उस का नाम लेते मसलन इमामा या कमीज़ या चादर फिर फरमाते: “अल्लाह तेरे लिए हम्द है जैसा की तूने मुझे यह पहनाया में तुझ से उसकी अच्छाई का और जिस खैर व बरकत के लिए इसे बनाया गया है? उस का सवाल करता हूँ और मैं उस के शर से और जिसके लिए यह बनाया गया है? उस से तेरी पनाह चाहता हूँ”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1767 وقال : حسن غريب) و ابوداؤد (4020)

٤٣٤٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن معاذِ بن أَنَسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " مَنْ أَكَلَ طَعَامًا ثُمَّ قَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَطْعَمَنِي هَذَا الطَّعَامَ وَرَزَقَنِيهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّي وَلَا قُوَّةٍ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَزَادَ أَبُو دَاوُدَ: " وَمَنْ لَبِسَ ثَوْبًا فَقَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي كَسَانِي هَذَا وَرَزَقَنِيهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّي وَلَا قُوَّةٍ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَأَخَّرَ "

4343. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ नया कपड़ा ज़ेबतीन (पहना हुआ) फरमाते, तो उस का नाम लेते मसलन इमामा या कमीज़ या चादर फिर फरमाते: “अल्लाह तेरे लिए हम्द है जैसा की तूने मुझे यह पहनाया में तुझ से उसकी अच्छाई का और जिस खैर व बरकत के लिए इसे बनाया गया है? उस का सवाल करता हूँ और मैं उस के शर से और जिसके लिए यह बनाया गया है? उस से तेरी पनाह चाहता हूँ”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذی (3458 وقال : حسن غريب) و ابوداؤد (4023)

٤٣٤٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «يَا عَائِشَةُ إِذَا أَرَدْتِ اللُّحُوقَ بِي فَلْيَكْفِكِ مِنَ الدُّنْيَا كَزَادِ الرَّاكِبِ وَإِيَّاكِ وَمُجَالَسَةَ الْأَغْنِيَاءِ وَلَا تَسْتَخْلِقِي ثَوْبًا حَتَّى تُرَقِّعِيهِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ لَا نَعْرِفُهُ إِلَّا مِنْ حَدِيثِ صَالِحِ بْنِ حَسَّانَ قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ: صَالِحُ بْنُ حَسَّانَ مُنكر الحَدِيث

4344. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “आइशा अगर तुम मेरा साथ चाहती हो तो फिर तुम्हें सवार के जादे राह (रसद) जितनी दुनिया काफी होनी चाहिए तुम माल दारो की हम नशीन से बचो और किसी कपड़े को पर उन हो पोशीदा मत ख़याल करो हत्ता के तुम उसे पेवंद न लगा लो”, इसे इमाम तिरमिज़ी ने रिवायत किया है और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है, हम इसे स्वालेह बिन हसान की हदीस के हवाले से जानते हैं और मुहम्मद बिन इस्माइल इमाम बुखारी (रह)) ने फ़रमाया: स्वालेह बिन हस्सान मुनकर उल हदीस है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه الترمذی (1780) * صالح بن حسان : متروک

٤٣٤٥ - عَن أبي أَمَامَة إِيَاس بن ثعلبةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلَا تَسْمَعُونَ؟ أَلَا تَسْمَعُونَ أَنَّ الْبَذَاذَةَ مِنَ الْإِيمَانِ أَنَّ الْبَذَاذَةَ مِنَ الْإِيمَانِ؟» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4345. अबू उमामा इयास बिन सअलबा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सुनो सुनो सादा लिबास ईमान का हिस्सा है? सादा लिबास ईमान का हिस्सा है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4161) * ابن اسحاق عنعن و حديث الطحاوی (مشكل الآثار 4 / 151) و الطبرانی (الكبير 1 / 272 ح 790 و سنده حسن) يغنی عنه و لفظ الطبرانی :’’ ان البذاذة من الايمان ، ان البذاذة من الايمان ‘‘

٤٣٤٦ - (حسن) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ لَبِسَ ثَوْبَ شهرةٍ منَ الدُّنْيَا أَلْبَسَهُ اللَّهُ ثَوْبَ مَذَلَّةٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

4346. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स दुनिया में लुआब इस शोहरत पहना है तो अल्लाह तआला इसे रोज़ ए कियामत लुआब इस मजलत पहनाएगा”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (2 / 139 ح 6245) و ابوداؤد (4029) و ابن ماجه (3606)

٤٣٤٧ - (حسن) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

4347. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स किसी कौम से मुशाबिहत इख़्तियार करता है वह इन्ही में से है”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (2 / 50 ح 5114) و ابوداؤد (4031)

٤٣٤٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ سُوَيْدِ بْنِ وَهْبٍ عَنْ رَجُلٍ مِنْ أَبْنَاءِ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " مَنْ تَرَكَ لُبْسَ ثوبِ جمالٍ وَهُوَ يقدرُ عَلَيْهِ وَفِي رَاوِيه: تَوَاضُعًا كَسَاهُ اللَّهُ حُلَّةَ الْكَرَامَةِ وَمَنْ تَزَوَّجَ لِلَّهِ تَوَجَّهُ اللَّهُ تَاجَ الْمُلْكِ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4348. सुवैद बिन वहब नबी ﷺ के असहाब की औलाद में से किसी आदमी से रिवायत करते हैं, वह आदमी अपने वालिद से उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने ताकत के बावजूद और एक रिवायत के मुताबिक अनुशासन के तौर पर खुबसूरत लिबास पहनना तर्क कर दिया अल्लाह इसे इज्ज़त किराम का जोड़ा पहनाएगा और जिस शख़्स ने अल्लाह की रज़ा की खातिर अपने मर्तबा व मईयार से कम मर्तबा औरत से) शादी की तो अल्लाह इसे बादशाहत का ताज पहनाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4778) * محمد بن عجلان مدلس و عنعن و شيخه مجهول و فيه علة أخرى و لبعضه شاهد حسن عند الترمذى انظر الحديث الآتى

٤٣٤٩ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَى التِّرْمِذِيُّ مِنْهُ عَنْ مُعَاذِ بْنِ أَنَسٍ حَدِيث اللبَاس

4349. इमाम तिरमिज़ी ने उन से मुआज़ बिन अनस रदियल्लाहु अन्हु की सनद से हदीस लिबास रिवायत की है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (2481 وقال : غريب) * لفظ الحديث :’’ من ترک اللباس تواضعًا لله وهو يقدر عليه دعاه الله يوم القيامة على رؤوس الخلائق حتى يخيره من اى حلل الايمان شاء يلبسها ‘‘ وقوله حلل الايمان : يعنى ما يعطى اهل الايمان من حلل الجنة

٤٣٥٠ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ أَنْ يُرَى أَثَرَ نِعْمَتِهِ على عَبده» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4350. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: बेशक अल्लाह पसंद फरमाता है के इस बंदे पर उसकी नेअमत का असर दिखाई दे”| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذى (2819 وقال : حسن)

٤٣٥١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: أَتَانَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَائِرًا فَرَأَى رَجُلًا شَعِثًا قد تفرق شعرُه فَقَالَ: «مَا كَانَ يَجِدُ هَذَا مَا يُسَكِّنُ بِهِ رَأْسَهُ؟» وَرَأى رجلا عَلَيْهِ ثيابٌ وسِخةٌ فَقَالَ: «مَا كَانَ يَجِدُ هَذَا مَا يَغْسِلُ بِهِ ثَوْبَهُ؟» . رَوَاهُ أَحْمد وَالنَّسَائِيّ

4351. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ हमारे वहां मुलाकात के लिए तशरीफ़ लाए तो

आप ने एक परान्दा बालो वाला शख़्स देखा और फ़रमाया: “क्या यह शख़्स ऐसी कोई चीज़ नहीं पाता जिसके साथ वह अपने सर के बाल दुरुस्त कर लेता ?” और आप ने एक शख़्स को मेले कपड़े पहने हुए देखा तो फ़रमाया: “क्या यह शख़्स ऐसी कोई चीज़ नहीं पाता जिसके ज़रिए वह अपना लिबास धो लेता ? (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه احمد (3 / 357 ح 14911) و النسائی (8 / 183184 ح 5238) [و ابوداؤد (4062)]

٤٣٥٢ - (صَحِيح) وَعَن أبي الأحوصِ عَن أبيهِ قَالَ: أَتَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَى ثَوْبٌ دُونٌ فَقَالَ لِي: «أَلَكَ مَالٌ؟» قُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: «مِنْ أَيِّ الْمَالِ؟» قُلْتُ: مِنْ كُلِّ الْمَالِ قَدْ أَعْطَانِي اللَّهُ منَ الإبلِ وَالْبَقر وَالْخَيْلِ وَالرَّقِيقِ. قَالَ: «فَإِذَا آتَاكَ اللَّهُ [ص:١٢٤ مَالًا فَلْيُرَ أَثَرُ نِعْمَةِ اللَّهِ عَلَيْكَ وَكَرَامَتِهِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ وَفِي شَرْحِ السُّنَّةِ بِلَفْظِ الْمَصَابِيحِ

4352. अबू अल अह्वस अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैं रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ मैंने गैर मईयारी कपड़े पहने हुए थे आप ﷺ ने मुझ से पूछा: “क्या तुम्हारे पास माल है” मैंने अर्ज़ किया: जी हाँ! आप ﷺ ने फ़रमाया: “माल की कौन सी नौ तुम्हारे पास है” मैंने अर्ज़ किया: ऊंट गाय बकरी घोड़े और गुलाम हर किस्म का माल अल्लाह तआला ने मुझे अता कर रखा है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “जब अल्लाह ने तुम्हें माल दे रखा है तो फिर अल्लाह की नेअमत और उसकी इज्ज़त किराम का असर तुम पर ज़ाहिर होना चाहिए”, इसे अहमद और नसई ने रिवायत किया है और शरह सुन्ना में मसाबिह के अल्फाज़ है| (सहीह)

صحیح ، رواه احمد (3 / 473 ح 1598215984) و النسائی (8 / 180181 ح 5225) و البغوی فی شرح السنة (12 / 4748 ح 3118)

٤٣٥٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: مَرَّ رَجُلٌ وَعَلَيْهِ ثَوْبَانِ أَحْمَرَانِ فَسَلَّمَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيْهِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4353. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक आदमी गुज़रा उस ने सुर्ख जोड़ा पहना हुआ था उस ने नबी ﷺ को सलाम किया तो आप ने उस के सलाम का जवाब दिया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2807 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (4069) * هذا رواه اسرائیل عن ابی یحیی القتات وقال احمد :’’ روی عنه اسرائیل احادیث کثیرة مناکیر جدًا(الجرح و تعدیل 3 / 433 و سنده صحیح) و القتات ضعفه الجمهور

٤٣٥٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا أَرْكَبُ الْأُرْجُوَانَ وَلَا أَلْبَسُ الْمُعَصْفَرَ وَلَا أَلْبَسُ الْقَمِيصَ الْمُكَفَّفَ بِالْحَرِيرِ» وَقَالَ: «أَلَا وَطِيبُ الرِّجَالِ رِيحٌ لَا لَوْنَ لَهُ وَطِيبُ النِّسَاءِ لَوْنٌ لَا رِيح لَهُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4354. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “ना मैं सुर्ख जैन पोश पर सवार होता हूँ न कुस्म में रंगा हुआ कपड़ा पहना हो और ना ही में ऐसी कमीज़ पहना हो जिस पर रेशम लगा

हुआ हो”, और फ़रमाया: “सुन लो! मर्दों की खुशबू वह है जिसमें महक हो मगर रंग नुमाया न हो जबकि खातून की खुशबू वह है जिस में महक न हो और रंग हो”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4048) [و الترمذى (2788)] * سعيد بن ابى عروبة و قتادة و الحسن مدلسون و عنعوا

٤٣٥٥ - (ضَعِيف) وَعَن أبي ريحانةَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ عَشْرٍ: عَنِ الْوَشْرِ وَالْوَشْمِ وَالنَّتْفِ وَعَنْ مُكَامَعَةِ الرَّجُلِ الرَّجُلَ بِغَيْرِ شِعَارٍ وَمُكَامَعَةِ الْمَرْأَةِ الْمَرْأَةَ بِغَيْرِ شِعَارٍ وَأَنْ يَجْعَلَ الرَّجُلُ فِي أَسْفَلِ ثِيَابِهِ حَرِيرًا مِثْلَ الْأَعَاجِمِ أَوْ يجعلَ على مَنْكِبَيْه حَرِير مِثْلَ الْأَعَاجِمِ وَعَنِ النُّهْبَى وَعَنْ رُكُوبِ النُّمُورِ وَلُبُوسِ الْخَاتَمِ إِلَّا لِذِي سُلْطَانٍ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4355. अबू रयहान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने दस खस्लतो से मना फ़रमाया आप ﷺ ने दांत बारीक़ करने सुई के साथ जिस्म गुदने (चहरे या पलकों वगैरा से) बाल बदलती मर्द का मर्द के साथ और औरत का औरत के साथ एक ही चादर (ओढ़ने) में हम ख्वाब होने से यह कि आदमी अजमीओ की तरह अपने कपड़ो के नीचे रेशम लगाए गया वह अपने कंधो पर अजमीओ की तरह रेशम लगाएलौट मार करने से चीते की खाल (की ज़िन) पर सवारी करने से और साहबे इक्दार शख़्स के सिवा अंगूठी पहन ने से मना फ़रमाया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4049) و النسائى (8 / 143144 ح 5094) [و ابن ماجه (3655)] * فيه ابو عامر المعافرى : لم اجد من وثقه

٤٣٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عَليّ قَالَ: نَهَانِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ خَاتَمِ الذَّهَبِ وَعَنْ [ص:١٢٤] لُبْسِ الْقَسِّيِّ وَالْمَيَاثِرِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَفِي رِوَايَة لأبي دَاوُد قَالَ: نهى عَن مياثر الأرجوان

4356. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे सोने की अंगूठी पहनने और कश का रेशम पहनने औरलाल काठी से मना फ़रमाया तिरमिज़ी, अबू दावुद, नसई, इब्ने माजा और अबू दावुद की रिवायत में है अली रदियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं की आप ﷺ ने सुर्खलाल काठी से मना फ़रमाया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (1737 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (4051 و الرواية الثانية : 4050) و النسائى (8 / 165166 ح 51685171 و بعدها) و ابن ماجه (3654) [و انظر صحيح مسلم (2078)]

٤٣٥٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مُعَاوِيَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَرْكَبُوا الْخَزَّ وَلَا النِّمَارَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4357. मुआविया रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ना तुम रेशमी जैन पोश पर

सवार हो न चीते की खाल पर”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4129) و النسائی (لم اجده)

٤٣٥٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ الْمِيثَرَةِ الْحَمْرَاءِ. رَوَاهُ فِي شرح السّنة

4358. बराअ बिन आजीब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने सुर्खलाल काठी से मना फ़रमाया है| (सहीह)

صحیح ، رواه البغوی فی شرح السنة (12 / 58 بعد ح 3130 بلا سند) و البخاری (58495863)

٤٣٥٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي رِمْثَةَ التيميِّ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَيْهِ ثَوْبَانِ أَخْضَرَانِ وَلَهُ شَعَرٌ قَدْ عَلَاهُ الشَّيْبُ وَشَيْبُهُ أَحْمَرُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَفِي رِوَايَةٍ لِأَبِي دَاوُدَ: وَهُوَ ذُو وَفْرَةٍ وَبِهَا رَدْعٌ من حناء

4359. अबू रम्स तय्मी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ आप ने सब्ज़ जोड़ा ज़ेबतीन (पहना हुआ) क्या हुआ था और आप के चंद बालो पर बुढ़ापा नुमाया था और आप के सफ़ेद बाल महंदी लगाने की वजह से सुर्ख थे| तिरमिज़ी, और अबू दावुद की रिवायत में है आप ﷺ की ज़ुल्फे कानों की लो तक थी और इन पर महंदी का असर था| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه الترمذی (2813 وقال : حسن غریب) و ابوداؤد (4065)

٤٣٦٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ شَاكِيًا فَخَرَجَ يَتَوَكَّأُ عَلَى أُسَامَةَ وَعَلَيْهِ ثَوْبُ قِطْرٍ قَدْ تَوَشَّحَ بِهِ فَصَلَّى بهم. رَوَاهُ فِي شرح السّنة

4360. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ मरीज़ थे आप उसामा रदियल्लाहु अन्हु का सहारा लिए बाहर तशरीफ़ लाए आप पर कटर की (यमनी) चादर थी जिस को आप ने जिस्म पर लपेटा हुआ था फिर आप ने उन्हें नमाज़ पढ़ाई| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه البغوی فی شرح السنة (12 / 22 ح 3092) [و الترمذی فی الشمائل (134) بتحقیقی]

٤٣٦١ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَوْبَانِ قِطْرِيَّانِ غَلِيظَانِ وَكَانَ إِذا قعد فرق ثَقُلَا عَلَيْهِ فَقَدِمَ بَزٌّ مِنَ الشَّامِ لِفُلَانٍ الْيَهُودِيِّ. فَقُلْتُ: لَوْ بَعَثْتَ إِلَيْهِ فَاشْتَرَيْتَ مِنْهُ ثَوْبَيْنِ إِلَى الْمَيْسَرَةِ فَأَرْسَلَ

إِلَيْهِ فَقَالَ: قَدْ عَلِمْتُ مَا تُرِيدُ إِنَّمَا تُرِيدُ أَنْ تَذْهَبَ بِمَالِي فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كَذَبَ قَدْ عَلِمَ أَنِّي مِنْ أَتْقَاهُمْ وآداهُم للأمانة» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

4361. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ पर दो मनी मोटे कपड़े थे जब आप (देर तक बैठते तो आप को पसीना जाता और वह कपड़े आप पर सकिल हो जाते फलां यहूदी का मुल्क शाम से कपड़ा आया तो मैंने अर्ज़ किया: अगर आप उस के पास किसी आदमी को भेज कर खुशहाली के वादे तक उस से दो कपड़े खरीद लें तो बेहतर है , आप ﷺ ने उसकी तरफ आदमी भेजा तो उस ने कहा मुझे पता है के तुम क्या चाहते हो तो तू मेरा माल हथियाना चाहते हो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “वो झूठा है? हालाँकि इसे पता है की मैं उन सबसे ज़्यादा मुत्तकी और उन सबसे ज़्यादा बर वक़्त अदाइगी करने वाला हो”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (1213 وقال : حسن صحيح غريب) و النسائی (7 / 294 ح 4632)

٤٣٦٢ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ قَالَ: رَآنِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ [ص:١٢٤ وَعَلَى ثَوْبٌ مَصْبُوغٌ بِعُصْفُرٍ مُوَرَّدًا فَقَالَ: «مَا هَذَا؟» فَعَرَفْتُ مَا كَرِهَ فَانْطَلَقْتُ فَأَحْرَقْتُهُ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا صَنَعْتَ بِثَوْبِكَ؟» قُلْتُ: أَحْرَقْتُهُ قَالَ: «أَفَلَا كَسَوْتَهُ بَعْضَ أَهْلِكَ؟ فَإِنَّهُ لَا بَأْسَ بِهِ لِلنِّسَاءِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4362. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे देखा मुझ पर गुलाबी कुस्म का रंगा हुआ कपड़ा था आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये क्या है?” मैंने आप की नागवारी को जान लिया और मैंने जा कर इस कपड़े को जला दिया बाद में नबी ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने अपने कपड़े का किया गया ?” मैंने अर्ज़ किया: मैंने इसे जला दिया आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने इसे अपने अहले खाना में से किसी को क्यों न पहना दिया क्योंकि इसे औरतो के पहनने में कोई बुराई नहीं ?”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4068) * شفعة : مستور ، وثقه ابن حبان و جهله ابن القطان

٤٣٦٣ - (صَحِيح) وَعَن هلالِ بن عَامر عَن أَبِيه قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بِمِنًى يَخْطُبُ عَلَى بَغْلَةٍ وَعَلَيْهِ بُرْدٌ أَحْمَرُ وَعَلِيٌّ أَمَامَهُ يُعَبِّرُ عَنْهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4363. हिलाल बिन आमिर अपने वालिद से रिवायत करते हैं, मैंने नबी ﷺ को खच्चर पर सवार हो कर मीना में ख़िताब करते हुए देखा इस वक़्त आप पर सुर्ख चादर थी जबकि अली रदियल्लाहु अन्हु आप के आगे थे और वह आप की बात आगे लोगों तक पहुंचा रहे थे| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (4073)

٤٣٦٤ - (صَحِيح) وَعَن عَائِشَة قَالَتْ: صُنِعَتْ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بُرْدَةٌ سَوْدَاءُ فَلَبِسَهَا فَلَمَّا عَرِقَ فِيهَا وَجَدَ ريح الصُّوف فقذفها. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4364. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ के लिए काली चादर तैयार की गई तो आप ने इसे पहन लिया जब आप को उस में पसीना आया और आप ने उन की बू महसूस की तो आप ने इसे उतार दिया | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4074) * قتادة مدلس و عنعن

٤٣٦٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ مُحْتَبٍ بِشَمْلَةٍ قَدْ وَقَعَ هُدْبها على قَدَمَيْهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4365. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो आप एक चादर में गोठ मार कर बैठें हुए थे और उस के फंदने आप ﷺ के कदमो पर थे | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4075) * عبيدة ابو خداش : مجهول

٤٣٦٦ - (ضَعِيف) وَعَن دِحية بن خليفة قَالَ: أَتَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بِقَبَاطِيَّ فَأَعْطَانِي مِنْهَا قُبْطِيَّةً فَقَالَ: «اصْدَعْهَا صَدْعَيْنِ فَاقْطَعْ أَحَدَهُمَا قَمِيصًا وَأَعْطِ الْآخَرَ امْرَأَتَكَ تَخْتَمِرُ بِهِ» . فَلَمَّا أَدْبَرَ قَالَ: «وَأْمُرِ امْرَأَتَكَ أَنْ تَجْعَلَ تَحْتَهُ ثَوْبًا لَا يَصِفُهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4366. दिह्यत बिन खलीफा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ की खिदमत में कुबत (मिसिर) के बने हुए सफ़ेद बारीक़ कपड़े पेश किए गई तो आप ने उनमें से एक कपड़ा मुझे इनायत किया और फ़रमाया: “उस के दो टुकड़े कर लेना उनमें से एक से कमीज़ बना लेना और दूसरा अपने अहलिया को दे देना जिस की वह ओढ़ने बना ले”, जब वह वापस मुड़ा तो फ़रमाया: “अपने अहलिया को कहना के उस के नीचे एक और कपड़ा लगा ले ताकि उस के जिस्म का पता न चले”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4116)

٤٣٦٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ إِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم دَخَلَ عَلَيْهَا وَهِيَ تَخْتَمِرُ فَقَالَ: «لَيَّةً لَا لَيَّتينِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4367. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ उन के पास तशरीफ़ लाए तो वह ओढ़ने ओढ़

रही थी आप ﷺ ने फ़रमाया: “एक फेरा दो दो की ज़रूरत नहीं ?” (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (4115) * حبیب بن ابی ثابت مدلس و عنعن و وھب مولی ابی احمد : مجھول

लिबास का बयान • كتاب اللبَاس

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٤٣٦٨ - (صَحِيح) عَن ابنِ عمَرٍ قَالَ: مَرَرْتُ بِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَفِي إِزَارِي اسْتِرْخَاءٌ فَقَالَ: «يَا عَبْدَ اللَّهِ ارْفَعْ إِزَارَكَ» فَرَفَعْتُهُ ثُمَّ قَالَ: «زِدْ» فَزِدْتُ فَمَا زِلْتُ أَتَحَرَّاهَا بَعْدُ فَقَالَ: بَعْضُ الْقَوْمِ: إِلَى أَيْنَ؟ قَالَ: «إِلَى أَنْصَافِ السَّاقَيْنِ» . رَوَاهُ مُسلم

4368. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैं रसूलुल्लाह ﷺ के पास से गुज़रा इस हाल में के मेरा तहबंद लटक रहा था आप ﷺ ने (देख कर फ़रमाया: “अब्दुल्लाह अपना तहबंद ऊँचा करो”, मैंने ऊँचा कर लिया फिर फ़रमाया: “मज़ीद ऊँचा करो”, मैंने मज़ीद ऊँचा कर लिया में उस के बाद उस का बहोत ख़याल रखता रहा लोगों में से किसी ने पूछा (तहबंद कहाँ तक उन्होंने ने फ़रमाया: आधी पिंडलियों तक| (मुस्लिम)

رواه مسلم (47 / 2086)، (5462)

٤٣٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ جَرَّ ثَوْبَهُ خُيَلَاءَ لَمْ يَنْظُرِ اللَّهُ إِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِزَارِي يَسْتَرْخِي إِلَّا أَنْ أَتَعَاهَدَهُ. فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّكَ لَسْتَ مِمَّنْ يَفْعَلُهُ خُيَلَاءَ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4369. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स तकब्बुर के तौर पर अपना कपड़ा घसीटता है तो रोज़ ए कियामत अल्लाह उसकी तरफ (नज़रे रहमत से) नहीं देखेगा”, (ये सुन कर) अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मेरे ख़याल रखने के बावजूद मेरा तहबंद लटक जाता है, रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “आप उनमें से नहीं हो तकब्बुर के तौर पर ऐसा करते हैं”| (बुखारी)

رواه البخاری (3665)

٤٣٧٠ - (صَحِيح) وَعَن عِكْرِمَة قَالَ: رأيتُ ابنَ عَبَّاس يَأْتَزِرُ فَيَضَعُ حَاشِيَةَ إِزَارِهِ مِنْ مُقَدَّمِهِ عَلَى ظَهْرِ قَدَمِهِ وَيَرْفَعُ مِنْ مُؤَخَّرِهِ قُلْتُ لِمَ تَأْتَزِرُ هَذِهِ الْإِزْرَةَ؟ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يأتزرها. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4370. इकरिमा बयान करते हैं, मैंने इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा को देखा के वह तहबंद बांधते तो अगली जानिब से तहबंद का किनारा अपने पाँव की पुश्त पर रखते और पिछली जानिब से इसे उठाकर रखते थे मैंने कहा आप इस तरह क्यों तहबंद बांधते है उन्होंने ने फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इसी तरह तहबंद बांधते हुए देखा है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4096)

٤٣٧١ - (ضَعِيف) وَعَنْ عُبَادَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «عَلَيْكُمْ بالعمائم فَإِنَّهَا سيماء الْمَلَائِكَة وأرخوها خلف ظهوركم» . رَوَاهُ الْبَيْهَقِيّ

4371. उबादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बकरिया बांधा करो क्योंकि वह फरिश्तो की अलामत है और उनका शिमला अपने पुश्त के पीछे छोड़ा करो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (6262 ، نسخة محققة : 5851) * خالد بن معدان عن عبادة رضى الله عنه : منقطع و فيه علل أخرى منها الاحوص بن حكيم ضعيف ضعفه الجمهور

٤٣٧٢ - (حسن) وَعَنْ عَائِشَةَ أَنَّ أَسْمَاءَ بِنْتَ أَبِي بَكْرٍ دَخَلَتْ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَيْهَا ثِيَاب رقاق فَأَعْرض عَنهُ وَقَالَ: «يَا أَسْمَاءُ إِنَّ الْمَرْأَةَ إِذَا بَلَغَتِ الْمَحِيضَ لَنْ يَصْلُحَ أَنْ يُرَى مِنْهَا إِلَّا هَذَا وَهَذَا» . وَأَشَارَ إِلَى وَجْهِهِ وَكَفَّيْهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4372. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के अस्मा बिन्ते अबी बक्र रदियल्लाहु अन्हु बारीक़ कपड़े पहने हुए रसूलुल्लाह ﷺ के पास आई तो आप ﷺ ने उन से रुख मोड़ लिया और फ़रमाया: “अस्मा जब औरत बालिग़ हो जाए तो उस के जिस्म का कोई हिस्सा सिवाय इस उस के देखना दुरुस्त नहीं ?” आप ﷺ ने अपने चेहरे और हाथो की तरफ इरशाद किया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4104) * الوليد بن مسلم مدلس و عنعن و سعيد بن بشير : ضعيف حدث عن قتادة بمناكير ، وقتادة مدلس و عنعن و ابن دريک عن عائشة : منقطع ، فالسند ظلمات ، بعضها فوق بعض و اخطا من حسنه

٤٣٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي مَطَرٍ قَالَ: إِنْ عَلِيًّا اشْتَرَى ثَوْبًا بِثَلَاثَةِ دَرَاهِمَ فَلَمَّا لَبِسَهُ قَالَ: «الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي رَزَقَنِي مِنَ الرِّيَاشِ مَا أَتَجَمَّلُ بِهِ فِي النَّاسِ وأُواري بِهِ عورتي» ثُمَّ قَالَ: هَكَذَا سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُول. رَوَاهُ أَحْمد

4373. अबू मतर रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, कि अली रदियल्लाहु अन्हु ने तीन दिरहम में एक कपड़ा खरीदार जब उन्होंने इसे पहना तो यूँ कहा किस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे लिबास अता किया जिसके

ज़रिए में लोगों में खूबसूरती हासिल करता हूँ और उस के ज़रिए अपना सतर ढांपता हो फिर उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को इसी तरह फरमाते हुए सुना है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه [عبدالله بن] احمد (1 / 157 ح 1353 ، هذا من زوائد عبدالله بن احمد على السند) * فيه مختار بن نافع : ضعيف و مروان الفزارى مدلس و عنعن و ابو مطر البصرى : مجهول ، تركه حفص بن غياث ، انظر تعجيل المنفعة (ص 520)

٤٣٧٤ - (ضَعِيف) وَعَن أبي أُمامةَ قَالَ: لَبِسَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ثَوْبًا جَدِيدًا فَقَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي كَسَانِي مَا أُوَارِي بِهِ عَوْرَتِي وَأَتَجَمَّلُ بِهِ فِي حَيَاتِي ثُمَّ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " مَنْ لَبِسَ ثَوْبًا جَدِيدًا فَقَالَ: الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي كَسَانِي مَا أُوَارِي بِهِ عَوْرَتِي وَأَتَجَمَّلُ بِهِ فِي حَيَاتِي ثُمَّ عَمَدَ إِلَى الثَّوْبِ الَّذِي أَخْلَقَ فَتَصَدَّقَ بِهِ كَانَ فِي كَنَفِ اللَّهِ وَفِي حِفْظِ اللَّهِ وَفِي سِتْرِ اللَّهِ حَيًّا وَمَيِّتًا ". رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

4374. अबू उमामा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु ने नया कपड़ा पहना तो यह दुआ की किस्म की हम्द अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे लिबास पहनाया जिसके ज़रिए में अपना सतर ढांपता हो और उस के ज़रिए में अपने जिंदगी में खूबसूरती हासिल करता हूँ फिर उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स नया कपड़ा पहन कर यह दुआ पढ़ता है “ किस्म की हम्द अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे लिबास पहनाया जिसके ज़रिए में अपना सतर ढांपता हो और उस के ज़रिए में अपने जिंदगी में खूबसूरती हासिल करता हूँ” फिर वह शख़्स इस कपड़े का क़सद करे जो उस ने पुराना कर दिया और वह इसे सदका कर दे तो वह शख़्स दुनिया और आखिरत में अल्लाह की हिफ्ज़ हो अमान और उसकी पनाह में होता है” अहमद तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (1 / 44 ح 305) و الترمذى (3560) و ابن ماجه (3557) * ابو العلاء : مجهول

٤٣٧٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ أَبِي عَلْقَمَةَ عَنْ أُمِّهِ قَالَتْ: دَخَلَتْ حَفْصَةُ بِنْتُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَلَى عَائِشَةَ وَعَلَيْهَا خِمَارٌ رَقِيقٌ فَشَقَّتْهُ عَائِشَةُ وَكَسَتْهَا خمارا كثيفا. رَوَاهُ مَالك

4375. अल्कमा बिन अबी अल्कमह अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: हफ्स बिन्ते अब्दुल रहमान आइशा के पास आई तो इन पर बारीक़ चादर थी आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने इसे फाड़ दिया और उन्हें मोटी चादर पहना दी| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه مالک (2 / 913 ح 1758) * مرجانة ام علقمة و ثقها ابن حبان و الترمذى (876) و الحاكم و الذهبى و حديثها لا ينزل عن درجة الصحة

٤٣٧٦ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ الْوَاحِدِ بْنِ أَيْمَنَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: دَخَلَتْ عَلَى عَائِشَةَ وَعَلَيْهَا دِرْعٌ قِطْرِيٌّ ثَمَنُ خَمْسَةِ دَرَاهِمَ فَقَالَتْ: ارْفَعْ بَصَرَكَ إِلَى جَارِيَتِي انْظُرْ إِلَيْهَا فَإِنَّهَا تُزْهَى أَنْ تَلْبَسَهُ فِي البيتِ وَقد كَانَ لِي مِنْهَا دِرْعٌ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى

اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَمَا كَانَتِ امْرَأَةٌ تُقَيَّنُ بِالْمَدِينَةِ إِلَّا أَرْسَلَتْ إِلَيَّ تَسْتَعِيرُهُ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

4376. अब्दुल वाहिद बिन अयमन अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: में आइशा रदियल्लाहु अन्हा के पास गया तो उन्होंने पांच दिरहम की कतरी कमीज़ ज़ेबतीन (पहना हुआ) कर रखी थी उन्होंने ने फ़रमाया: मेरी लौंडी की तरफ नज़र उठाओ और इसे देखो क्योंकि वह घर मैं भी ऐसा कपड़ा पहनना पसंद नहीं करती? जबकि रसूलुल्लाह ﷺ के अहद मैं भी मेरे पास इसी तरह की एक कमीज़ थी मदीना में जिस भी औरत का (शादी के मौके पर बनाओ सिंगार किया जाता तो वह इसे उधार लेने के लिए मेरी तरफ पैग़ाम भेजती थी| (बुखारी)

رواه البخاری (2628)

٤٣٧٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: لَبِسَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا قَبَاءَ دِيبَاجٍ أَهْدِيَ لَهُ ثُمَّ أَوْشَكَ أَنْ نَزَعَهُ فَأَرْسَلَ بِهِ إِلَى عُمَرَ فَقِيلَ: قَدْ أَوْشَكَ مَا انْتَزَعْتَهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «نهاني عَنهُ جبرِيلُ» فَجَاءَ عُمَرُ يَبْكِي فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ كرهتَ أَمْرًا وَأَعْطَيْتَنِيهِ فَمَا لِي؟ فَقَالَ: «إِنِّي لَمْ أُعْطِكَهُ تَلْبَسُهُ إِنَّمَا أَعْطَيْتُكَهُ تَبِيعُهُ» . فَبَاعَهُ بِأَلْفَيْ دِرْهَم. رَوَاهُ مُسلم

4377. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने एक रोज़ रेशमी कुबा पहना जो के आप को हदिया की गई थी फिर आप ने जल्दी से उतारा और इसे उमर रदियल्लाहु अन्हु के पास भेज दिया अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! आप ने इसे उतारने में बहोत जल्दी की आप ﷺ ने फ़रमाया: “जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने मुझे उस से रोक दिया”, उमर रदियल्लाहु अन्हु रोते हुए आए और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! एक चीज़ को आप ने नापसंद फ़रमाया और वह चीज़ मुझे दे दिया आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैंने तुम्हें इसलिए नहीं की के तुम उसे पहन लो बल्कि मैंने तो वह तुम्हें इसलिए दीया के तुम उसे बेच दो”, उन्होंने वह दो हज़ार दिरहम में बेच दीया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (16 / 2070)، (5419)

٤٣٧٨ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: إِنَّمَا نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ثَوْبِ الْمُصْمَتِ مِنَ الْحَرِيرِ فَأَمَّا الْعَلَمُ وَسَدَى الثَّوْبِ فَلَا بَأْسَ بِهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4378. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने सिर्फ इस कपड़ इसे मना फ़रमाया है जो खालिस रेशमी हो रहा रेशमी किनारा या वह कपड़ा जिस का ताना रेशमी हो तो उस के पहनने में कोई बुराई नहीं| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4055) * خصيف ضعيف ضعفه الجمهور و روى احمد (1 / 313 ، اطراف المسند 3 / 95) باسناد صحيح عن ابن عباس قال :’’ انما نهى رسول الله صلى الله عليه و آله وسلم عن (الثوب) المصمت حريرًا ‘‘

٤٣٧٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي رَجَاءٍ قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا عِمْرَانُ بْنُ حُصَيْنٍ وَعَلَيْهِ مِطْرَفٌ مِنْ خَزٍّ وَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ نِعْمَةً فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ أَنْ يَرَى أَثَرَ نِعْمَتِهِ عَلَى عَبده» . رَوَاهُ أَحْمد

4379. अबू रिजाअ बयान करते हैं, इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु हमारे पास तशरीफ़ लाए इन पर चादर थी जिस का किनारा खज़ (रेशम और उन से बना हुआ था और उन्होंने कहा के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह जिस शख़्स को कोई नेअमत से नवाज़े तो अल्लाह पसंद करता है की उसकी नेअमत उस के बंदे पर ज़ाहिर हो”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (4 / 38 ح 20176 و سنده صحيح) و انظر بلوغ المرام بتحقيقى (551)

٤٣٨٠ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُلْ مَا شِئْتَ وَالْبَسْ مَا شِئْتَ مَا أَخْطَأَتْكَ اثْنَتَانِ: سَرَفٌ وَمَخِيلَةٌ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ فِي تَرْجَمَة بَاب

4380. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: फिजूलखर्ची और बड़ाई से बचा करते हुए जो चाहो सो खाओ और जो चाहो सो पहनो इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह ने इसे تَرْجَمَة بَاب (तरजुमतुल बाब) में रिवायत किया है| (बुखारी)

رواه البخارى (كتاب اللباس باب 1 قبل ح 5783)

٤٣٨١ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «كُلُوا وَاشْرَبُوا وَتَصَدَّقُوا وَالْبَسُوا مَا لم يُخالطْ إِسْرَافٌ وَلَا مَخِيلَةٌ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالنَّسَائِيُّ وَابْنُ مَاجَه

4381. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से बयान करते हैं, उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “खाओ पियो सदका करो और पहनो लेकिन फिजूलखर्ची और बड़ाई से बचा करो”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه احمد (2 / 181 ح 6695) و النسائى (5 / 79 ح 2560) و ابن ماجه (3605) * قتادة عنعن و علقه البخارى فى اول كتاب اللباس (قبل ح 5783)

٤٣٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَحْسَنَ مَا زُرْتُمُ اللَّهَ فِي قُبُورِكُمْ وَمَسَاجِدِكُمُ الْبَيَاضُ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

4382. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेहतरीन लिबास जिस में तुम्हें

अपने क़बरो और अपने मसाजिद में अल्लाह से मुलाकात करनी चाहिए वह सफ़ेद लिबास है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جدا ، رواه ابن ماجه (3568) * مروان بن سالم : متروک ، و شريح بن عبيد : لم يسمع من ابی الدرداء رضی الله عنه کما قال المزی وغيره

بَاب الْخَاتم • अंगूठी का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٣٨٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: اتَّخَذَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَاتَمًا مِنْ ذَهَبٍ وَفِي رِوَايَةٍ: وَجَعَلَهُ فِي يَدِهِ الْيُمْنَى ثُمَّ أَلْقَاهُ ثُمَّ اتَّخَذَ خَاتَمًا مِنْ الْوَرق نُقِشَ فِيهِ: مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَقَالَ: «لَا يَنْقُشَنَّ أَحَدٌ عَلَى نَقْشِ خَاتَمِي هَذَا» . وَكَانَ إِذَا لَبِسَهُ جَعَلَ فَصَّهُ مِمَّا يَلِي بَطْنَ كَفه

4383. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ ने सोने की अंगूठी हासिल की एक दूसरी रिवायत में है आप ﷺ ने इसे दाएँ हाथ में पहना फिर इसे फेंक दिया फिर आप ने चाँदी की अंगूठी हासिल की जिस पर मुहम्मद रसूल अल्लाह नक्श किया गया था और आप ﷺ ने फ़रमाया: “कोई शख़्स मेरी इस अंगूठी के नक्श की तरह किन्दत न करे”, और जब आप इसे पहनते तो उस के नगीने को हथेली की अंदरूनी तरफ कर लेते| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5866) و مسلم (55 / 2092)، (5477)

٤٣٨٤ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلِيٍّ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ لُبْسِ الْقَسِّيِّ وَالْمُعَصْفَرِ وَعَنْ تَخْتُّمِ الذَّهَبِ وَعَنْ قِرَاءَةِ الْقُرْآنِ فِي الرُّكُوعِ. رَوَاهُ مُسلم

4384. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने कश के और ज़र्द रंग के कपड़े पहनने सोने की अंगूठी पहनने और रुकू में कुरान पढ़ने से मना फ़रमाया है?| (मुस्लिम)

رواه مسلم (29 / 2078)، (5437)

٤٣٨٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى خَاتَمًا مِنْ ذَهَبٍ فِي يَدِ رَجُلٍ فَنَزَعَهُ فَطَرَحَهُ فَقَالَ: «يَعْمِدُ أَحَدُكُمْ إِلَى جَمْرَةٍ مِنْ نَارٍ فَيَجْعَلُهَا فِي يَدِهِ؟» فَقِيلَ لِلرَّجُلِ بَعْدَمَا ذَهَبَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: خُذْ خَاتَمَكَ انْتَفِعْ بِهِ. قَالَ: لَا وَاللَّهِ لَا آخُذُهُ أَبَدًا وَقَدْ طَرَحَهُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ مُسلم

4385. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने किसी आदमी के हाथ में सोने की अंगूठी देखी तो उसे उतार कर फेंक दिया और फ़रमाया: “तुम में से कोई शख़्स आग के अंगारे का क़सद करता है तो उसे अपने हाथ पर रख लेता है” रसूलुल्लाह ﷺ के तशरीफ़ ले जाने के बाद इस आदमी से कहा गया अपने अंगूठी पकड़ लो और उस से फ़ायदा उठाओ उस ने कहा अल्लाह की क़सम! जब रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे फेंक दिया है तो में उसे कभी भी नहीं उठाऊंगा| (मुस्लिम)

رواه مسلم (52 / 2090)، (5472)

٤٣٨٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرَادَ أَنْ يَكْتُبَ إِلَى كِسْرَى وَقَيْصَرَ وَالنَّجَاشِيِّ فَقِيلَ: إِنَّهُمْ لَا يَقْبَلُونَ كِتَابًا إِلَّا بِخَاتَمٍ فَصَاغَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَاتَمًا حَلْقَةَ فِضَّةٍ نُقِشَ فِيهِ: مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ. وَفِي رِوَايَةٍ لِلْبُخَارِيِّ: كَانَ نَقْشُ الْخَاتَمِ ثَلَاثَةَ أَسْطُرٍ: مُحَمَّدٌ سَطْرٌ ورسولُ الله سطر وَالله سطر

4386. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने कीसरा कैसर और नज्जाशी के नाम ख़त लिखने का इरादा फ़रमाया तो आप से अर्ज़ किया गया, के वह सिर्फ सरबह्म ख़त ही वुसुल करते हैं तब रसूलुल्लाह ﷺ ने चाँदी के हलके की अंगूठी बनाई उस में “ मुहम्मद रसूल अल्लाह” नक्श किया गया मुस्लिम और बुखारी की रिवायत में है अंगूठी का नक्श तीन सटरो मैं था: “मुहम्मद” एक सटर में ’ रसूल” एक सटर में और “ अल्लाह” एक सटर मैं था| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5875 ، 5878) و مسلم (58 / 2092)، (5482)

٤٣٨٧ - (صَحِيح) وَعَنْهُ أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ خَاتَمُهُ مِنْ فِضَّةٍ وَكَانَ فَصُّهُ مِنْهُ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

4387. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ की अंगूठी चाँदी की थी और उस का नगीना भी इसी का था| (बुखारी)

رواه البخاری (5870)

٤٣٨٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَبِسَ خَاتَمَ فِضَّةٍ فِي يَمِينِهِ فِيهِ فَصٌّ حَبَشِيٌّ كَانَ يَجْعَلُ فَصَّهُ مِمَّا يَلِي كَفه

4388. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने चाँदी की अंगूठी अपने दाएं हाथ में पहना उस में हब्शी नगीना था आप उस का नगीना अपनी हथेली की तरफ रखते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5865) و مسلم (62 / 2094)، (5487)

٤٣٨٩ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: كَانَ خَاتَمُ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي هَذِهِ وَأَشَارَ إِلَى الْخِنْصِرِ منْ يَده الْيُسْرَى. رَوَاهُ مُسلم

4389. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ की अंगूठी इस ऊँगली में थी और उन्होंने बाएं हाथ की छोटी उंगली की तरफ इरशाद किया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (63 / 2095)، (5489)

٤٣٩٠ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَانِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم إِن أَتَخَتَّم فِي إِصْبَعِي هَذِهِ أَوْ هَذِهِ قَالَ: فَأَوْمَأَ إِلَى الْوُسْطَى وَالَّتِي تَلِيهَا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4390. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे मना फ़रमाया की मैं अपने इस या इस ऊँगली में अंगूठी पहनूं, आप ﷺ ने दरमियानी और उस के साथ वाली अंगुश्ते शहादत की तरफ इरशाद किया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (65 / 2078)، (5493)

بَاب الْخَاتم • अंगूठी का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٣٩١ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ جَعْفَرٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَخَتَّمُ فِي يَمِينه. رَوَاهُ ابْن مَاجَه

4391. अब्दुल्लाह बिन जाफर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ अपने दाएं हाथ में अंगूठी पहना करते थे| (सहीह)

صحيح ، رواه ابن ماجه (3647)

٤٣٩٢ - (لم تتمّ دراسته) وَرَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ عَن عَليّ

4392. इमाम अबू दावुद और इमाम नसई ने इसे अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4226) و النسائی (8 / 174175 ح 5206)

٤٣٩٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يتختم فِي يسَاره. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4393. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ अपने बाएं हाथ में अंगूठी पहना करते थे| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (4227) و حدیثه بطوله شاذ و لهذا المتن شاهد فی صحیح مسلم (2095) و به صح هذا المتن فقط دون المتن الطويل

٤٣٩٤ - (صَحِيح) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخَذَ حَرِيرًا فَجَعَلَهُ فِي يَمِينِهِ وَأَخَذَ ذَهَبًا فَجَعَلَهُ فِي شِمَالِهِ ثُمَّ قَالَ: «إِنَّ هَذَيْنِ حَرَامٌ عَلَى ذُكُورِ أُمتي» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4394. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने रेशम पकड़ा और इसे अपने दाएँ हाथ पर रख लिया फिर आप ﷺ ने सोना पकड़ा और इसे अपने बाएँ हाथ पर रख लिया फिर फ़रमाया: “बेशक यह दोनों चीज़े मेरी उम्मत के मर्दों पर हराम हैं”| (सहीह)

صحیح ، رواه احمد (1 / 96 ح 751) و ابوداؤد (4057) و النسائی (8 / 160 ح 51475150)

٤٣٩٥ - (صَحِيح) وَعَن مُعَاوِيَةُ إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنْ رُكُوبِ النُّمُورِ وَعَنْ لُبْسِ الذَّهَبِ إِلَّا مُقَطَّعًا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

4395. मुआविया रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने चीतों की खाल पर सवारी करने और सोना पहन ने से मना फ़रमाया वहां अलबत्ता टुकड़ो की शकल में पहनने की रुखसत फरमाई| (सहीह)

صحیح ، رواه ابوداؤد (4239) و النسائی (8 / 161 ح 51525154)

٤٣٩٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ بُرَيْدَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ لِرَجُلٍ عَلَيْهِ خَاتَمٌ مِنْ شَبَهٍ: «مَا لِي أَجِدُ مِنْكَ رِيحَ الْأَصْنَامِ؟» فَطَرَحَهُ ثُمَّ جَاءَ وَعَلَيْهِ خَاتَمٌ مِنْ حَدِيدٍ فَقَالَ: «مَا لِي أَرَى عَلَيْكَ حِلْيَةَ أَهْلِ النَّارِ؟» فَطَرَحَهُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مِنْ أَيِّ شَيْءٍ أَتَّخِذُهُ؟ قَالَ: «مِنْ وَرِقٍ وَلَا تُتِمَّهُ مِثْقَالا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4396. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने एक आदमी को पीतल की अंगूठी पहने हुए देखा तो उसे फ़रमाया: “मुझे क्या है की मैं तुझ से बुतों की बू महसूस कर रहा हूँ ?” इस शख़्स ने इसे फेंक दिया फिर वह आया तो उस ने लोहे की अंगूठी पहन रखी थी आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे क्या है की मैं तुझ पर जहन्नुमियो का ज़ेवर देख रहा हूँ ?” उस ने इसे फेंक दिया और अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मैं किसी धातु से अंगूठी बनाऊं आप ﷺ ने फ़रमाया: “चाँदी से और वह भी मिस्काल से कम हो”, और मुह्यी अल सुन्नी

रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: हक़ महर के बारे में सहल बिन साद रदियल्लाहु अन्हु से सहीह सनद के साथ साबित है के नबी ﷺ ने एक आदमी से फ़रमाया: “तलाश करो ख्वाह लोहे की एक अंगूठी हो”| (हसन)

حسن ، رواه الترمذى (1785 وقال : غريب) و ابوداؤد (4223) و النسائى (8 / 172 ح 5198) و البغوى فى شرح السنة (12 / 59 بعد ح 3130) و الحديث المذكور تقدم (3202)

٤٣٩٧ - (ضَعِيف) وَعَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَكْرَهُ عَشْرَ خِلَالٍ: الصُّفْرَةَ يَعْنِي الخلوق وتغييرَ الشيب وجر الأزرار وَالتَّخَتُّمَ بِالذَّهَبِ وَالتَّبَرُّجَ بِالزِّينَةِ لِغَيْرِ مَحِلِّهَا وَالضَّرْبَ بِالْكِعَابِ وَالرُّقَى إِلَّا بِالْمُعَوِّذَاتِ وَعَقْدَ التَّمَائِمِ وَعَزْلَ الْمَاءِ لِغَيْرِ مَحِلِّهِ وَفَسَادَ الصَّبِيِّ غَيْرَ مُحَرِّمِهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4397. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ दस बाते नापसंद फरमाते थे ज़ाफ़रान लगाना बुढ़ापे को (काला रंग लगा कर तबदीली करना तहबंद घसीटना सोने की अंगूठी पहनना मौके महल के बगैर बनाओ सिंगार ज़ाहिर करना शतरंज खोलना मुअव्वीज़ात के अलावा किसी और विर्द से दम करना मन के बांधना पानी यानी मनी) का उसकी असल जगह शर्मगाह के बगैर ख़ारिज करना और बच्चे के दूध को ख़राब करना यानी मुद्दत रिज़ाअत में औरत से जिमाअ करना लेकिन इसे हराम करार नहीं दिया गया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4222) و النسائى (8 / 141 ح 5091) * عبد الرحمن بن حرملة صدوق و ثقه الجمهور و لكن فى سماعه من عبدالله بن مسعود رضى الله عنه نظر فالخبر معلول

٤٣٩٨ - (ضَعِيف) وَعَن ابنِ الزبيرِ: أَنَّ مَوْلَاةً لَهُمْ ذَهَبَتْ بِابْنَةِ الزُّبَيْرِ إِلَى عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ وَفِي رِجْلِهَا أَجْرَاسٌ فَقَطَعَهَا عمر وَقَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَعَ كُلِّ جَرَسٍ شَيْطَانٌ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4398. इब्ने जुबैर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उनकी एक आज़ाद करदा लौंडी थी वह जुबैर रदियल्लाहु अन्हु की बेटी को जिसके पाँव में घुंघरू थे उमर बिन खत्ताब रदियल्लाहु अन्हु के पास ले गई उमर रदियल्लाहु अन्हु ने उन्हें काट डाला और फ़रमाया मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “हर घंटी (घुंघरू) के साथ शैतान है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4230) * قال المنذرى :’’ و مولاة لهم مجهولة و عامر (ابن عبدالله بن الزبير) لم يدرک عمر بن الخطاب ‘‘

٤٣٩٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ بُنَانَةَ مَوْلَاةِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ حَيَّانَ الْأَنْصَارِيِّ كانتْ عندَ عائشةَ إِذْ دُخِلَتْ عَلَيْهَا بِجَارِيَةٍ وَعَلَيْهَا جَلَاجِلُ يُصَوِّتْنَ فَقَالَتْ: لَا تُدْخِلْنَّهَا عَلَيَّ إِلَّا أَنْ تُقَطِّعُنَّ جَلَاجِلَهَا سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا تَدْخُلُ الْمَلَائِكَةُ بَيْتًا فِيهِ أَجْرَاس» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4399. अब्दुल रहमान बिन हय्याँन अंसारी रदियल्लाहु अन्हु की आज़ाद करदा लौंडी बुनाना आइशा रदियल्लाहु

अन्हा के पास मौजूद थी अचानक कोई बच्ची उन के पास लाइ गई उस ने घुंघरू पहन रखे थे जिन से आवाज़ एक ही थी हज़रत आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: इसे मेरे पास इस वक़्त तक मत आने देना जब तक तुम उस के घुंघरू नहीं उतार देते क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जिस घर में घंटी हो उस में रहमत के) फ़रिश्ते दाखिल नहीं होते"| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4231) * فی السند بنانة لا تعرف و ابن جريج مدلس و عنعن

٤٤٠٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ طَرَفَةَ أَنَّ جَدَّهُ عَرفجة بن أسعد قُطِعَ أَنْفُهُ يَوْمَ الْكُلَابِ فَاتَّخَذَ أَنْفًا مِنْ وَرِقٍ فَأَنْتَنَ عَلَيْهِ فَأَمَرَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَتَّخِذَ أَنْفًا مِنْ ذَهَبٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4400. अब्दुल रहमान बिन तरफ से रिवायत है के कलाब की लड़ाई के दिन उन के दादा अरफजत बिन असद रदियल्लाहु अन्हु की नाक काट दी गई तो उन्होंने चाँदी की नाक लगा ली वह बदबूदार हो गए तो नबी ﷺ ने इसे सोने की नाक लगाने का हुक्म दिया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1770 وقال : حسن) و ابوداؤد (4232) و النسائی (8 / 163164 ح 51645165)

٤٤٠١ - (جيد) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ أَحَبَّ أَنْ يُحَلِّقَ حَبِيبَهُ حَلَقَةً مِنْ نَارٍ فَلْيُحَلِّقْهُ حَلَقَةً مِنْ ذَهَبٍ وَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يُطَوِّقَ حَبِيبَهُ طَوْقًا مِنْ نَارٍ فَلْيُطَوِّقْهُ طَوْقًا مِنْ ذَهَبٍ وَمَنْ أَحَبَّ أَنْ يُسَوِّرَ حَبِيبَهُ [ص:١٢٥ سِوَارًا مِنْ نَار فليسوره مِنْ ذَهَبٍ وَلَكِنْ عَلَيْكُمْ بِالْفِضَّةِ فَالْعَبُوا بِهَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4401. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स अपने दोस्त को आग का छल्ला पहनाना पसंद करता है तो वह इसे सोने का छल्ला पहना दे जो शख़्स अपने दोस्त को आग का तोक पहनाना पसंद करता है तो वह इसे सोने का तोक पहना दे जो शख़्स अपने दोस्त को आग के कंगन पहनाना पसंद करता है तो वह इसे सोने के कंगन पहना दे लेकिन तुम चाँदी को लाज़िम पकड़ो और उस के ज़ेवर बनाओ"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4236) * المراد بالحبيب : الرجل من الاولاد و الاخوة و غيرهم و اما النساء فالذهب لهن حلال ، وجاء فی مسند احمد (4 / 414) :'' و حبيبة '' و سنده ضعيف معلول ، الراوی : لم يحفظ السند و خبره شاذ

٤٤٠٢ - (ضَعِيف) وَعَن أَسْمَاءَ بِنْتِ يَزِيدَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَيُّمَا امْرَأَةٍ تَقَلَّدَتْ قِلَادَةً مِنْ ذَهَبٍ قُلِّدَتْ فِي عُنُقِهَا مِثْلُهَا مِنَ النَّارِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَأَيُّمَا امْرَأَةٍ جَعَلَتْ فِي أُذُنِهَا خُرْصًا مِنْ ذَهَبٍ جَعَلَ اللَّهُ فِي أُذُنِهَا مِثْلَهُ مِنَ النَّارِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ

4402. अस्मा बिन्ते यज़ीद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस औरत ने सोने

का हार पहना तो रोज़ ए कियामत उसकी गर्दन में आग का हार डाला जाएगा और जिस औरत ने अपने कान में सोने की बाली पहना तो अल्लाह रोज़ ए कियामत उस के कान में इसी की मिस्ल आग डाल देगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4228) و النسائى (8 / 157 ح 5142) * محمود بن عمرو : وثقه ابن حبان وحده و جهله الذهبى وغيره و ضعفه ابن حزم

٤٤٠٣ - (ضَعِيف) وَعَن أُخْت لِحُذَيْفَة أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَا مَعْشَرَ النِّسَاءِ أَمَا لَكُنَّ فِي الْفِضَّةِ مَا تُحَلَّيْنَ بِهِ؟ أَمَا إِنَّهُ لَيْسَ مِنْكُنَّ امْرَأَةٌ تُحَلَّى ذَهَبًا تُظْهِرُهُ إِلَّا عُذِّبَتْ بِهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4403. हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु अन्हु की बहन से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “औरतों की जमाअत तुम्हें क्या है की तुम चाँदी का ज़ेवर नहीं बनाती हो तुम में से जो औरत सोने का ज़ेवर बनाती हो और इसे ज़ाहिर करती है तो इसे उसकी वजह से अज़ाब दीया जाएगा”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4237) و النسائى (8 / 157 ح 5141) * امراه ربعى : مجهولة ، واسم اخت حذيفة بن اليمان : فاطمة رضى الله عنهما

बَاب الْخَاتم • अंगूठी का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٤٠٤ - (لم تتمّ دراسته) عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كانَ يمنعُ أهلَ الْحِلْيَةَ وَالْحَرِيرَ وَيَقُولُ: «إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ حِلْيَةَ الْجَنَّةِ وَحَرِيرَهَا فَلَا تَلْبَسُوهَا فِي الدُّنْيَا» . رَوَاهُ النَّسَائِيّ

4404. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ज़ेवरात और रेशम ज़ेबतीन (पहना हुआ) करने वालो को मना किया करते थे और फ़रमाया करते थे: “अगर तुम जन्नत का ज़ेवर और उस का रेशम पसंद करते हो तो तुम उसे दुनिया में मत पहनो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه النسائى (8 / 156 ح 5139)

٤٤٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اتَّخَذَ خَاتَمًا فَلَبِسَهُ قَالَ: «شَغَلَنِي هَذَا عَنْكُمْ مُنْذُ الْيَوْمَ إِلَيْهِ نَظْرَةٌ وإِليكم نظرة» ثمَّ أَلْقَاهُ. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

4405. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने अंगूठी बनाई और इसे पहन लिया

(फिर फ़रमाया: “उस ने आज मुझे तुम से मशगुल कर दिया में एक नज़र उसकी तरफ और एक नज़र तुम्हारी तरफ डालता रहा”, फिर आप ने इसे फेंक दिया| (सहीह)

صحيح ، رواه النسائى (8 / 194195 ح 5291)

٤٤٠٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن مَالك قَالَ: أَنا أكره ن يُلْبَسَ الْغِلْمَانُ شَيْئًا مِنَ الذَّهَبِ لِأَنَّهُ بَلَغَنِي أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نهى عَن التختمِ بالذهبِ فَأَنا أكره لِلرِّجَالِ الْكَبِيرِ مِنْهُمْ وَالصَّغِيرِ. رَوَاهُ فِي الْمُوَطَّأِ

4406. इमाम मालिक बयान करते हैं, मैं नापसंद करता हूँ की बच्चो को सोने की कोई चीज़ पहनाई जाए क्योंकि मुझे यह बात पहुंची है के रसूलुल्लाह ﷺ ने सोने की अंगूठी पहन ने से मना फ़रमाया है? सो में उसे मर्दों के लिए पहनना नापसंद करता हूँ ख्वाह वह बड़े हो या छोटे| (सहीह)

صحيح ، رواه مالک فی الموطا (2 / 912 بعد ح 1756) 0 و حديث ان رسول الله صلى الله عليه و آله وسلم نهى عن التختم بالذهب ، متفق عليه ، رواه البخارى (5854) و مسلم (2089)

بَاب النِّعَال • जूतों का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٤٠٧ - (صَحِيح) عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَلْبَسُ النِّعَالَ الَّتِي ليسَ فِيهَا شعرٌ. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4407. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा आप ऐसे जूते पहनते थे जिन पर बाल नहीं होते थे| (बुखारी)

رواه البخارى (5851)

٤٤٠٨ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: إِنَّ نَعْلَ النَّبِيِّ صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسلم كَانَ لَهَا قبالان

4408. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ के जूतों के दो तस्मे थे| (बुखारी)

رواه البخارى (5857)

٤٤٠٩ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي غَزْوَةٍ غَزَاهَا يَقُولُ: «اسْتَكْثِرُوا مِنَ النِّعَالِ فَإِنَّ الرَّجُلَ لَا يَزَالُ رَاكِبًا مَا انتعَلَ» . رَوَاهُ مُسلم

4409. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने एक गज़वा में नबी ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जूते का इस्तेमाल ज़्यादातर करो क्योंकि आदमी जब जूते पहने हुए होता है तो वह इस वक़्त सवार होता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (66 / 2096)، (5494)

٤٤١٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا انْتَعَلَ أَحَدُكُمْ فَلْيَبْدَأْ بِالْيُمْنَى وَإِذَا نَزَعَ فَلْيَبْدَأْ بِالشِّمَالِ لِتَكُنِ الْيُمْنَى أَوَّلَهُمَا تُنْعَلُ وَآخِرَهُمَا تُنْزَعُ»

4410. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई जूते पहने तो वह दाएँ से शुरू करे और जब उतारा तो पहले बायाँ उतारे ताकि दायाँ पाँव पहनने में पहले हो और उतारने में आख़िर पर हो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5856) و مسلم (67 / 2097)، (5495)

٤٤١١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَمْشِي أَحَدُكُمْ فِي نعلٍ واحدةٍ لِيُحفيهُما جَمِيعًا أَو لينعلهما جَمِيعًا»

4411. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम में से कोई शख़्स एक जूता पहन कर न चले फिरे वह दोनों जूते उतार कर चल दिया फिर दोनों पहन कर चले”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5855) و مسلم (68 / 1097)، (5496)

٤٤١٢ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا انْقَطَعَ شِسْعُ نَعْلِهِ فَلَا يَمْشِ فِي نَعْلٍ وَاحِدَةٍ حَتَّى يُصْلِحَ شِسْعَهُ وَلَا يَمْشِ فِي خُفٍّ وَاحِدٍ وَلَا يأكلْ بِشمَالِهِ وَلَا يجتبي بِالثَّوْبِ الْوَاحِدِ وَلَا يَلْتَحِفِ الصَّمَّاءَ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4412. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से किसी के जूते का तस्मिया टूट जाए तो वह एक जूते में न चले हत्ता के वह अपना तस्मिया मरम्मत कर ले, एक मोज़े में न चले और न बाएँ हाथ से खाए और न एक कपड़े में गोठ मार कर बैठें और न इस तरह कपड़ा लपेटे के उस के हाथ वगैरा भी बाहर न निकल सके”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (71 / 2099)، (5500)

بَاب النِّعَال • जूतों का बयान
الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٤١٣ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ لِنَعْلِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قِبَالَانِ مُثَنًّى شراكهما. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4413. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के जूतों के दो तस्मे थे और देहरे थे| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (1772 وقال : حسن صحیح)

٤٤١٤ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَنْتَعِلَ الرَّجُلُ قَائِمًا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4414. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मना फ़रमाया के कोई शख़्स जूता खड़े हो कर पहने| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ ابوداؤد (4135) * ابو الزبیر مدلس و عنعن و للحدیث شواھد ضعیفۃ

٤٤١٥ - (صَحِيح) وَرَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

4415. इमाम तिरमिज़ी और इमाम इब्ने माजा ने इसे अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (1775 وقال :'' غریب '' قلت : فیہ الحارث بن نبھان : متروک) و ابن ماجہ (3618 فیہ ابو معاویۃ و الاعمش مدلسان و عنعنا) و انظر الحدیث السابق

٤٤١٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ القاسمِ بن محمَّدٍ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: رُبَّمَا مَشَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي نَعْلٍ وَاحِدَةٍ وَفِي رِوَايَةٍ: أَنَّهَا مَشَتْ بِنَعْلٍ وَاحِدَةٍ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا أصحُّ

4416. कासिम बिन मुहम्मद आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत करते हैं, उन्होंने ने फ़रमाया: बसा-अवक़ात नबी ﷺ एक जूते में चलते थे और एक दूसरी रिवायत में है की आइशा रदियल्लाहु अन्हा एक जूते में चली थी तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ज़्यादा सहीह है| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (1777 ، و الروایۃ الثانیۃ : 1778) * فیہ لیث بن ابی سلیم : ضعیف مدلس

٤٤١٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابنِ عبَّاسٍ قَالَ: مِنَ السُّنَّةِ إِذَا جَلَسَ الرَّجُلُ أَنْ يَخْلَعَ نَعْلَيْهِ فَيَضَعَهُمَا بِجَنْبِهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4417. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, यह मस्नुन है की जब आदमी बैठें तो वह जूते उतार कर अपने एक जानिब रख ले| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (4138) * عبدالله بن هارون حجازی : مجهول

٤٤١٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّجَاشِيَّ أَهْدَى إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خُفَّيْنِ أَسْوَدَيْنِ سَاذَجَيْنِ فَلَبِسَهُمَا. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَهْ. وَزَادَ التِّرْمِذِيُّ عَنِ ابْنِ بُرَيْدَةَ عَنْ أَبِيهِ: ثمَّ تَوَضَّأَ وَمسح عَلَيْهِمَا»» هَذَا الْبَاب خَال من الْفَصْل الثَّالِث

4418. इब्ने बुरैदा अपने वालिद से रिवायत करते हैं की नज्जाशी ने नबी ﷺ की खिदमत में दो सियाह सादा मोज़े भेजे तो आप ने उन्हें पहना इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने इब्ने बुरैदा अन अबी की सनद से यह इज़ाफा नकल किया है फिर आप ﷺ ने वुज़ू किया और इन दोनों पर मसाह किया| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابن ماجه (549) و الترمذی (2820 وقال : حسن) [و ابوداؤد (155)] * دلهم ضعیف ولاصل الحدیث شواهد

باب التَّرَجُّل • कंघी करने का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٤١٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ: كُنْتُ أَرَجِّلُ رَأْسَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا حَائِض

4419. आइशा बयान करती हैं, मैं हालत ए हैज़ मैं भी रसूलुल्लाह ﷺ के सर में कंघी किया करती थी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5925) و مسلم (9 / 297)، (687)

٤٤٢٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " الْفِطْرَةُ خَمْسٌ: الْخِتَانُ وَالِاسْتِحْدَادُ وَقَصُّ الشَّارِبِ وَتَقْلِيمُ الْأَظْفَارِ ونتفُ الإبطِ "

4420. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “पांच चीज़े फितरत से है खतना

करना ज़ेरे नाफ़ बाल साफ़ करना मूंछे कतरना नाख़ून तराशना और बगलों के बाल उखाड़ना"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5891) و مسلم (50 / 257)، (598)

٤٤٢١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " خَالِفُوا الْمُشْرِكِينَ: أَوْفِرُوا اللِّحَى وَأَحْفُوا الشَّوَارِبَ ". وَفِي رِوَايَةٍ: «أنهكوا الشَّوَارِب وأعفوا اللحى»

4421. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मुशरिको की मुखालिफत करो दाढ़िया बढ़ाओ और मूंछे कतराओ", एक दूसरी रिवायत में है: "मुछे खूब कतराओ और दाढ़िया बढ़ाओ"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5893) و مسلم (52 / 258)، (600)

٤٤٢٢ - (صَحِيح) وَعَن أنس قَالَ: وُقِّتَ لَنَا فِي قَصِّ الشَّارِبِ وَتَقْلِيمِ الْأَظْفَارِ وَنَتْفِ الْإِبِطِ وَحَلْقِ الْعَانَةِ أَنْ لَا تُتْرَكَ أَكثر من أَرْبَعِينَ لَيْلَة. رَوَاهُ مُسلم

4422. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मूंछे कतराने नाख़ून तराशने बगलों के बाल बदलती और ज़ेरे नाफ़ बाल मुंडने के मुतल्लिक हमारे लिए वक़्त मुकर्रर किया गया के हम (इन्हें) चालीस रोज़ से ज़्यादा न छोड़े| (मुस्लिम)

رواه مسلم (51 / 258)، (599)

٤٤٢٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «إِنَّ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى لَا يَصبِغُون فخالفوهم»

4423. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: "यहूद नसारा रंग नहीं लगाते तुम उनकी मुखालिफ करो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5899) و مسلم (80 / 2103)، (5510)

٤٤٢٤ - (صَحِيح) وَعَن جَابر قَالَ: أُتِيَ بِأَبِي قُحَافَةَ يَوْمَ فَتْحِ مَكَّةَ وَرَأْسُهُ وَلِحْيَتُهُ كَالثُّغَامَةِ بَيَاضًا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «غَيِّرُوا هَذَا بِشَيْءٍ وَاجْتَنِبُوا السَّواد» . رَوَاهُ مُسلم

4424. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, फतह मक्का के रोज़ अबू कुहाफ़ा अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के वालिद उस्मान बिन आमिर) को बुलाया गया तो उनका सर और उनकी दाढ़ी षीगामा (सफ़ेद घास) की तरह सफ़ेद थी नबी ﷺ ने फ़रमाया: "उस की सफेदी को किसी दूसरे रंग में तब्दील करो और सियाह रंग से बचा करो"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (79 / 2102)، (5509)

٤٤٢٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحِبُّ مُوَافَقَةَ أَهْلِ الْكِتَابِ فِيمَا لَمْ يُؤْمَرْ فِيهِ وَكَانَ أَهْلُ الْكِتَابِ يَسْدُلُونَ أَشْعَارَهُمْ وَكَانَ الْمُشْرِكُونَ يَفْرِقُونَ رؤوسهم فَسَدَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَاصِيَتَهُ ثمَّ فرق بعدُ

4425. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, जिस मुआमले में नबी ﷺ के हुक्म न मिलते तो आप उस में अहले किताब से मुवाफिकत करना पसंद फरमाते थे अहले किताब अपने बाल सीधे छोड़ते थे जबकि मुशरिकीन अपने बालो की मांग निकाला करते थे नबी ﷺ ने अपने पेशानी के बाल सीधे छोड़े फिर बाद में मांग निकाली| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5917) و مسلم (90 / 2336)، (6062)

٤٤٢٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْهَى عَنِ الْقَزَعِ. قِيلَ لِنَافِعٍ: مَا الْقَزَعُ؟ قَالَ: يُحْلَقُ بعضُ رَأس الصبيِّ وَيتْرك البعضُ»» وَألْحق بَعضهم التَّفْسِير بِالْحَدِيثِ

4426. नाफेअ इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: मैंने नबी ﷺ को " कजई से मना फरमाते हुए सुना नाफेअ से पूछा गया: "कजइ" क्या है उन्होंने ने फ़रमाया: बच्चे के सर के कुछ हिस्से को मुंडा दिया जाए और कुछ को छोड़ दिया जाए बुखारी, मुस्लिम, और बाज़ मुहद्दीसिन ने इस तफसीर को हदीस के साथ मला दिया है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5920) و مسلم (113 / 2120)، (5559)

٤٤٢٧ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى صَبِيًّا قَدْ حُلِقَ بَعْضُ رَأْسِهِ وَتُرِكَ بَعْضُهُ فَنَهَاهُمْ عَنْ ذَلِكَ وَقَالَ: «احْلِقُوا كُلَّهُ أَوِ اتْرُكُوا كُلَّهُ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4427. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने एक बच्चा देखा जिसके सर का कुछ हिस्सा मुंडा दिया गया था और कुछ छोड़ दिया गया था आप ﷺ ने उन्हें उस से मना कर दिया और फ़रमाया: "सारा (सर)

मुंड दे सारा छोड़ दो"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (112 / 2120)، (5559)

٤٤٢٨ - (صَحِيح) وَعَن ابْن عَبَّاس قَالَ: لعن الله الْمُخَنَّثِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالْمُتَرَجِّلَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَقَالَ: «أخرجوهم من بُيُوتكُمْ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

4428. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ ने औरतो के साथ मुशाबिहत करने वाले मर्दों और मर्दों के साथ मुशाबिहत करने वाली औरतो पर लानत फरमाई और फ़रमाया: "उन्हें अपने घरो से निकाल दो"| (बुखारी)

رواه البخارى (5886)

٤٤٢٩ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَعَنَ اللَّهُ الْمُتَشَبِّهِينَ مِنَ الرِّجَالِ بِالنِّسَاءِ والمتشبِّهات من النِّسَاء بِالرِّجَالِ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

4429. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह ने औरतो से मुशाबिहत करने वाले मर्दों और मर्दों से मुशाबिहत करने वाली औरतो पर लानत फरमाई है"| (बुखारी)

رواه البخارى (5885)

٤٤٣٠ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَعَنَ اللَّهُ الْوَاصِلَةَ وَالْمُسْتَوْصِلَةَ والواشمة والمستوشمة»

4430. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने बालो में बाल जोड़ने वाली और बालजुड़ाने वाली पर और बदन गुदने वाली और गुन्द्वाने वाली पर लानत फरमाई| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5937) و مسلم (119 / 2124)، (5571)

٤٤٣١ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: لَعَنَ اللَّهُ الْوَاشِمَاتِ وَالْمُسْتَوْشِمَاتِ وَالْمُتَنَمِّصَاتِ وَالْمُتَفَلِّجَاتِ لِلْحُسْنِ الْمُغَيِّرَاتِ خَلْقَ اللَّهِ فَجَاءَتْهُ امْرَأَةٌ فَقَالَتْ: إِنَّهُ بَلَغَنِي أَنَّكَ لَعَنْتَ كَيْتَ وَكَيْتَ فَقَالَ: مَا لِي لَا أَلْعَنُ مَنْ لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمَنْ هُوَ فِي كِتَابِ اللَّهِ فَقَالَتْ: لَقَدْ قَرَأْتُ مَا بَيْنَ اللَّوْحَيْنِ فَمَا وجدت فِيهِ مَا نقُول قَالَ: لَئِنْ كُنْتِ قَرَأْتِيهِ لَقَدْ وَجَدْتِيهِ أَمَا قَرَأت: (مَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا)»» ؟ قَالَت: بلَى قَالَ: فإِنه قد نهى عَنهُ

4431. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, अल्लाह तआला ने बदन गुदने वालो और बदन गुन्द्वाने वालो पर (चहरे और पलकों वगैरा के) बाल नोचने वालो और हसन की खातिर दांतों को बारी हो तेज़ करने वालो पर अल्लाह की तखलीक को बदलने वालो पर लानत फरमाई इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु के पास एक औरत आए तो उस ने कहा मुझे पता चला है के आप ने ऐसी ऐसी औरतो पर लानत की है? उन्होंने ने फ़रमाया: मुझे क्या है की जिस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने लानत की हो और मैं उस पर लानत न करू जबकि वह अल्लाह की किताब में है इस औरत ने कहा मैंने पूरा कुरान पढ़ा है लेकिन जो आप कहते हैं मैंने वह बात उस में नहीं पाई उन्होंने ने फ़रमाया: अगर तुमने इसे पढ़ा होता तो तुम यह बात उस में पा लेती क्या तुम ने यह नहीं पढ़ा: “अल्लाह के रसूल! जो तुम्हें दें इसे ले लो और जिस से तुम्हें मना करे उस से रुक जाओ”, उस ने कहा, क्यों नहीं! मैंने इसे पढ़ा है? उन्होंने ने फ़रमाया: , तो आप ﷺ ने उस से मना फ़रमाया है?| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4886) و مسلم (125 / 2125)، (5573)

٤٤٣٢ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْعَيْنُ حَقٌّ» وَنَهَى عَن الوشم. رَوَاهُ البُخَارِيّ

4432. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नज़र का लग जाना साबित है और आप ने बदन गोदने से मना फ़रमाया है?| (बुखारी)

رواه البخاری (5740)

٤٤٣٣ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: لَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُلَبِّدًا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

4433. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा कि आप ने सर के बालों को चिपकाया हुआ था| (बुखारी)

رواه البخاری (5914)

٤٤٣٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَتَزَعْفَرَ الرَّجُلُ

4434. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने आदमी के लिए ज़ाफ़रान का इस्तेमाल ममनूअ करार दिया है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5846) و مسلم (77 / 2101)، (5506)

٤٤٣٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كُنْتُ أَطَيِّبُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِأَطْيَبِ مَا نَجِدُ حَتَّى أَجِدَ وَبِيصَ الطِّيبِ فِي رَأْسِهِ ولحيته

4435. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, हमें जो बेहतरीन खुशबू मयस्सर होती वह में नबी ﷺ को लगाया करती थी हत्ता कि मैं खुशबू की चमक आप के सर और आप की दाढ़ी में पाती थी| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواہ البخاری (5923) و مسلم (38 / 1189)، (2831)

٤٤٣٦ - (صَحِيح) وَعَنْ نَافِعٍ قَالَ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ إِذَا اسْتَجْمَرَ اسْتَجْمَرَ بِأَلُوَّةٍ غَيْرِ مُطَرَّاةٍ وَبِكَافُورٍ يَطْرَحُهُ مَعَ الْأَلُوَّةِ ثُمَّ قَالَ: هَكَذَا كَانَ يَسْتَجْمِرُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ مُسلم

4436. नाफेअ बयान करते हैं, जब इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बखुर (की धुनी) लेते तो आप कभी काफूर मिलाए बगैर बखुर वाली लकड़ी की धुनी लेते थे और कभी वह धुनी वाली लकड़ी पर काफूर भी डाल लिया करते थे फिर फ़रमाया रसूलुल्लाह ﷺ इसी तरह धुनी लिया करते थे| (मुस्लिम)

رواہ مسلم (21 / 2254)، (5884)

بَاب التَّرَجُّل • कंघी करने का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٤٣٧ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُصُّ أَوْ يَأْخُذُ مِنْ شَارِبِهِ وَكَانَ إِبْرَاهِيمُ خَلِيلُ الرَّحْمَنِ صَلَوَاتُ الرَّحْمَنِ عَلَيْهِ يَفْعَله. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4437. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ अपनी मूंछे कतराते थे और इब्राहीम खलील रहमान सलवातु अल रहमान अलैहि भी मूंछे कतराते थे| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواہ الترمذی (2760 وقال : غریب) * سلسلة سماک عن عکرمة : ضعیفة ، اعنی : سماک ضعیف عن عکرمة و صحیح الحدیث عن غیرہ

٤٤٣٨ - (جيد) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ أَرْقَمَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ لَمْ يَأْخُذ شَارِبِهِ فَلَيْسَ مِنَّا» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ

4438. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स अपने मूंछे नहीं कतराता वह हम में से नहीं ?”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (4 / 366 ح 19477) و الترمذی (2761 وقال : حسن صحيح) و النسائی (1 / 15 ح 13)

٤٤٣٩ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ [ص:١٢٦ يَأْخُذُ مِنْ لِحْيَتِهِ مِنْ عَرْضِهَا وَطُولِهَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ غَرِيبٌ

4439. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ अपने दाढ़ी को टूल व अर्ज़ से तराशते थे| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه الترمذی (2762) * فيه عمر بن هارون : متروک وکان حافظًا و هذا الحديث لا اصل له

٤٤٤٠ - وَعَن يعلى بن مرّة أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى عَلَيْهِ خَلُوقًا فَقَالَ: «أَلَكَ امْرَأَةٌ؟» قَالَ: لَا قَالَ: «فَاغْسِلْهُ ثُمَّ اغْسِلْهُ ثُمَّ اغْسِلْهُ ثُمَّ لَا تعد» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

4440. यअली बिन मरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने उस पर खुशबू का असर देखा तो फ़रमाया: “क्या तुम्हारी बीवी है” उस ने अर्ज़ किया, नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे धो डाल फिर इसे धो डाल फिर इसे धो डाल फिर दोबारा न करना”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2816 وقال : حسن) و النسائی (8 / 152 ح 51245125) * فيه ابو حفص : مجهول

٤٤٤١ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا يَقْبَلُ اللَّهُ صَلَاةَ رَجُلٍ فِي جَسَدِهِ شَيْءٌ مِنْ خَلُوقٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4441. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह इस शख़्स की जिसके जिस्म पर खुलुक (खुश्बू की एक किस्म) का असर हो नमाज़ कबूल नहीं करता”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4178) * فيه زيد و زياد جدا الربيع : مجهولان

٤٤٤٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ قَالَ: قَدِمْتُ عَلَى أَهْلِي مِنْ سَفَرٍ وَقَدْ تَشَقَّقَتْ يَدَايَ فَخَلَّقُونِي بِزَعْفَرَانٍ فَغَدَوْتُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَلَّمْتُ عَلَيْهِ فَلَمْ يَرُدَّ عَلَيَّ وَقَالَ: «اذْهَبْ فَاغْسِلْ هَذَا عَنْكَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4442. अम्मार बिन यासिर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैं सफ़र से अपने अहले खाना के पास वापस आया तो मेरे हाथ फट गए थे उन्होंने (अहले खाना) ने मेरे ज़ाफ़रान की खुशबू लगा दिया में सुबह के वक़्त नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ और आप को सलाम किया आप ﷺ ने मुझे सलाम का जवाब दिया और फ़रमाया: “जाओ और इसे अपने (बदन) से धो डालो”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواه ابوداؤد (4176) [225 ، 4601] * یحیی بن یعمر رواه عن رجل عن عمار بن یاسر رضی الله عنه و الرجل مجھول و حدیث ابی داود (224) یغنی عنه

٤٤٤٣ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «طِيبُ الرِّجَالِ مَا ظَهَرَ رِيحُهُ وَخَفِيَ لَوْنُهُ وَطِيبُ النِّسَاءِ مَا ظَهَرَ لَوْنُهُ وَخَفِيَ رِيحُهُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَالنَّسَائِيُّ

4443. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मर्दों की खुशबू वह है जिस की खुशबू हो मगर रंग न हो जबकि औरतों की खुशबू वह है जिसका रंग हो मगर उसकी महक न हो”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواه الترمذی (2787 وقال : حسن) و النسائی (8 / 151 ح 51205121) * فیه رجل مجھول و للحدیث شواھد ضعیفة

٤٤٤٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أنس قَالَ: كَانَتْ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سُكَّةٌ يَتَطَيَّبُ مِنْهَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4444. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक मरकब किस्म की खुशबू थी जिस से आप खुशबू लगाया करते थे| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواه ابوداؤد (4162)

٤٤٤٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يُكثر دهن رَأسه وتسريحَ لحيته وَيُكْثِرُ الْقِنَاعَ كَأَنَّ ثَوْبَهُ ثَوْبُ زَيَّاتٍ. رَوَاهُ فِي شرح السّنة

4445. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अपने सर पर बहोत ज़्यादा तेल लगाया करते थे अपने दाढ़ी में खूब कंघी किया करते थे और सर को अच्छी तरह ढांप कर रखा करते थे गोया आप का कपड़ा ऐसे था जैसे टैली का कपड़ा हो| (ज़ईफ़)

اسنادہ ضعیف ، رواه البغوی فی شرح السنة (12 / 82 ح 3164) [و الترمذی فی الشمائل (125 ، 33)] * فیه یزید بن ابان الرقاشی : ضعیف مشھور

٤٤٤٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أم هَانِئ قَالَتْ: قَدِمَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم عَلَيْنَا بِمَكَّة قَدْمَةً وَلَهُ أَرْبَعُ غَدَائِرَ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

4446. उम्म हानी रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, एक दफा रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास मक्का में तशरीफ़ लाए तो आप के चार गीसो थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (6 / 341 ح 27428 مختصرًا) و ابوداؤد (4191) و الترمذی (1781 وقال : غریب) و ابن ماجه (3631) * فيه عبدالله بن ابی نجیح و سفیان مدلسان و عنعنا وقال البخاری :'' ولا اعرف لمجاهد سماعًا من ام هانی ''

٤٤٤٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عَائِشَة قَالَتْ: إِذَا فَرَقْتُ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأْسَهُ صَدَّعْتُ فَرْقَهُ عَنْ يَافُوخِهِ وَأَرْسَلْتُ نَاصِيَتَهُ بَيْنَ عَيْنَيْهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4447. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब मैं रसूलुल्लाह ﷺ के सर के बालो की मांग निकालती तो मैं आप के तालू से बालो को अलग करती और आप की पेशानी के बालो को आप की आंखों के दरमियान लटका देती| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4189)

٤٤٤٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عبد الله بن مغفَّل قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ التَّرَجُّلِ إِلَّا غِبًّا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4448. अब्दुल्लाह बिन मुगफ्फल रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने रोज़ाना बिला नागा कंघी करने से मना फ़रमाया है| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذی (1756 وقال : حسن صحیح) و ابوداؤد (4159) و النسائی (8 / 132 ح 5058) * هشام بن حسان مدلس و عنعن و حدیث النسائی (8 / 132 ح 5061 سنده صحیح) یغنی عنه

٤٤٤٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بُرَيْدَةَ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ لِفَضَالَةَ بْنِ عُبَيْدٍ: مَا لِي أَرَاكَ شَعِثًا؟ قَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَنْهَانَا عَنْ كَثِيرٍ مِنَ الإرفاه قَالَ: مَالِي لَا أَرَى عَلَيْكَ حِذَاءً؟ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْمُرُنَا أَنْ نحتفي أَحْيَانًا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4449. अब्दुल्लाह बिन बुरैदा रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, एक आदमी ने फ़ुज़ालह बिन उबै इसे कहा क्या वजह है की मैं आप के बाल बिखरे हुए देखता हूँ उन्होंने कहा: क्योंकि रसूलुल्लाह ﷺ ज़्यादा नाज़ व नेअमत से हमें मना किया करते थे इस शख़्स ने कहा क्या वजह है की मैं आप को नंगे पाँव देखता हूँ उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह

ﷺ हमें हुक्म फ़रमाया करते थे की हम कभी कभार नंगे पाँव चला करे| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4160) * سعيد بن اياس الجريرى اختلط ولم يثبت تحديثه به قبل اختلاطه و حديث النسائى (8 / 185 ح 5241) يغنى عنه

٤٤٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ كَانَ لَهُ شعرٌ فليُكرمه» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4450. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स के बाल हो वह उन्हें संवार कर रखे”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4163)

٤٤٥١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَحْسَنَ مَا غُيِّرَ بِهِ الشَّيْبُ الْحِنَّاءُ وَالْكَتَمُ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4451. अबू ज़र रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सफ़ेद बालो बुढ़ापे को बदलने वाली सबसे बेहतरीन चीज़ महंदी और वसमा है”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (1753 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (4205) و النسائى (8 / 139 ح 50805083)

٤٤٥٢ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «يَكُونُ قَوْمٌ فِي آخِرِ الزَّمَانِ يَخْضِبُونَ بِهَذَا السَّوَادِ كَحَوَاصِلِ الْحَمَامِ لَا يَجِدُونَ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيُّ

4452. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “आखरी ज़माने में कुछ ऐसे लोग होंगे जो इस सियाह से कबूतरों के सीनों की तरह खिज़ाब करेंगे वह जन्नत की खुशबू भी नहीं पाएँगे”| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4212) و النسائى (8 / 138 ح 5078)

٤٤٥٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَلْبَسُ النِّعَالَ السِّبْتِيَّةَ وَيَصْفِرُ لِحْيَتَهُ بِالْوَرْسِ وَالزَّعْفَرَانِ وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَفْعَلُ ذَلِك. رَوَاهُ النَّسَائِيّ

4453. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ सब्ती जूते जिन पर बाल नहीं होते थे पहना करते थे और वरस (यमन के इलाके की एक बूटी) और ज़ाफ़रान से अपने दाढ़ी को ज़र्द किया करते थे और इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा भी ऐसे ही किया करते थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائی (8 / 186 ح 5246)

٤٤٥٤ - (جيد) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: مَرَّ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ قَدْ خَضَبَ [ص:١٢٦ بِالْحِنَّاءِ فَقَالَ: «مَا أَحْسَنَ هَذَا» . قَالَ: فَمَرَّ آخَرُ قَدْ خَضَبَ بِالْحِنَّاءِ وَالْكَتَمِ فَقَالَ: «هَذَا أَحْسَنُ مِنْ هَذَا» ثُمَّ مَرَّ آخَرُ قَدْ خَضَبَ بِالصُّفْرَةِ فَقَالَ: «هَذَا أَحْسَنُ مِنْ هَذَا كُله» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4454. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ के पास से गुज़रा जिस ने महंदी लगाई हुई थी आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तव है के !“ रावी बयान करते हैं, फिर दूसरा आदमी गुज़रा जिस ने महंदी और वसमा लगाया हुआ था आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये उस से भी बेहतर है” फिर एक और शख़्स गुज़रा जिस ने ज़र्द रंग क्या हुआ था आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये उन सबसे बेहतर है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (4211) [و ابن ماجه (3627)] * فیه حمید بن وهب ضعفه البخاری وغیره وقال صاحب التقریب :’’ لین الحدیث ‘‘

٤٤٥٥ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «غَيِّرُوا الشَّيْبَ وَلَا تشبَّهوا باليهودِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4455. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बुढ़ापे (सफ़ेद बालों) को बदल डालो और यहूद से मुशाबिहत न करो”| (सहीह)

صحیح ، رواه الترمذی (1752 وقال : حسن صحیح)

٤٤٥٦ - ، ٤٤٥٧ (صَحِيح) »» وَرَوَاهُ النَّسَائِيّ عَن ابْن عمر وَالزُّبَيْر

4456. और इमाम नसई ने इसे इब्ने उमर और इब्ने ज़ुबैर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है सहीह रवाह नसई| (हसन)

صحیح ، رواه النسائی (8 / 137 ح 5076)

٤٤٥٦ - ، ٤٤٥٧ (صَحِيح) »» وَرَوَاهُ النَّسَائِيّ عَن ابْن عمر وَالزُّبَيْر

4457. और इमाम नसई ने इसे इब्ने उमर और इब्ने ज़ुबैर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है सहीह रवाह नसई| (हसन)

اسناده حسن ، رواه النسائی (8 / 137138 ح 5077)

٤٤٥٨ - (حسن) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ شُعَيْبٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَنْتِفُوا الشَّيْبَ فَإِنَّهُ نُورُ الْمُسْلِمِ مَنْ شَابَ شَيْبَةً فِي الْإِسْلَامِ كَتَبَ اللَّهُ لَهُ بِهَا حَسَنَةً وَكَفَّرَ عَنْهُ بِهَا خَطِيئَةً وَرَفَعَهُ بِهَا دَرَجَةً» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4458. अम्र बिन शुऐब अपने वालिद से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सफ़ेद बाल ख़तम न करो क्योंकि वह मुसलमान का नूर है, जिस का हालत इस्लाम में बाल सफ़ेद होता है तो उस के बदले में अल्लाह उस के लिए एक नेकी लिख देता है? उस के बदले में उसकी एक गलती ख़तम कर देता है और उस के बदले में उस का एक दर्जा बुलंद कर देता है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4202)

٤٤٥٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ كَعْبِ بْنِ مُرَّةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ شَابَ شَيْبَةً فِي الْإِسْلَامِ كَانَتْ لَهُ نُورًا يَوْمَ القيامةِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

4459. काब बिन मरह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स के हालत इस्लाम में बाल सफ़ेद हो तो रोज़ ए कियामत उस के लिए नूर होगा”| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (1636 وقال : حسن) و النسائی (6 / 27 ح 3146) * السند منقطع ، سالم بن ابی الجعد لم یسمع من شرجیل بن المسط (سنن ابی داود : 3967) و لبعض شواھد و حدیث مسلم (1509) یغنی عنه

٤٤٦٠ - (حسن) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كُنْتُ أَغْتَسِلُ أَنَا وَرَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ إِنَاءٍ وَاحِدٍ وَكَانَ لَهُ شَعْرٌ فَوْقَ الْجُمَّةِ وَدُونَ الوفرة. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

4460. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैं और रसूलुल्लाह ﷺ एक बर्तन में ग़ुस्ल किया करते थे आप के बाल कंधो और कानों की लो के दरमियान थे| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (1755 وقال : حسن غریب صحیح) و النسائی (1 / 128129 ح 234)

٤٤٦١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابنِ الحنظليَّةِ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نِعْمَ الرَّجُلُ خُرَيْمٌ الْأَسْدِيُّ لَوْلَا طُولُ جُمَّتِه وإسبال إزراه» فَبَلَغَ ذَلِكَ خُرَيْمًا فَأَخَذَ شَفْرَةً فَقَطَعَ بِهَا جمته إِلَى أُذُنَيْهِ وَرفع إزراه إِلَى أَنْصَاف سَاقيه. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4461. नबी ﷺ के सहाबी इब्ने हंजलीय्या रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “खरिम अच्छा आदमी है अगर उस के बाल लम्बे न होते और न वह अपना तहबंद लटकाता”, खरिम को यह बात पहुंचे तो उस ने उस्तरा लिया और उस से लम्बे बालो को अपने कानों तक काट लिया और अपना तहबंद अपने आधी पिंडलियों तक उठा लिया| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (4089)

٤٤٦٢ - (ضَعِيف) وَعَن أنسٍ قَالَ: كَانَتْ لِي ذُؤَابَةٌ فَقَالَتْ لِي أُمِّي: لَا أَجُزُّهَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمُدُّهَا وَيَأْخُذُهَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4462. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मेरी पेशानी के बाल लम्बे थे मेरी वालिद ने मुझे कहा में उन्हें नह काटूँगी रसूलुल्लाह ﷺ उन्हें खींचते और पकड़ा करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4196) * فيه ميمون بن عبدالله : عن ثابت (وهو) مجهول و لعله ميمون بن ابان : مستور اى مجهول الحال

٤٤٦٣ - (صَحِيح) وَعَن عبدِ الله بن جَعْفَرٍ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمْهَلَ آلَ جَعْفَرٍ ثَلَاثًا ثُمَّ أَتَاهُمْ فَقَالَ: «لَا تَبْكُوا عَلَى أَخِي بَعْدِ الْيَوْمِ» . ثُمَّ قَالَ: «ادْعُوا لي بَنِي أَخِي» . فَجِيءَ بِنَا كَأَنَّا أَفْرُخٌ فَقَالَ: «ادْعُوا لِي الْحَلَّاقَ» فَأَمَرَهُ فَحَلَقَ رؤوسنا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4463. अब्दुल्लाह बिन जाफर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने आले जाफर को तीन रोज़ तक हालत गम में रहने दिया फिर आप ﷺ उन के पास तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया: “आज के बाद मेरे भाई पर मत रोना”, फिर फ़रमाया: “मेर भतीजो को बुलाओ”, हमें लाया गया गोया हम चूज़े थे आप ﷺ ने फ़रमाया: “हजाम को मेरे पास लाओ”, आप ने इसे हुक्म फ़रमाया तो उस ने हमारे सर मुंडा दिए| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4192) و النسائى (8 / 182 ح 5229)

٤٤٦٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أَمِّ عطيَّةَ الأنصاريَّةِ: أَنَّ امْرَأَة كَانَت تختن بِالْمَدِينَةِ. فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُنْهِكِي فَإِنَّ ذَلِكَ أَحْظَى لِلْمَرْأَةِ وَأَحَبُّ إِلَى الْبَعْلِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَقَالَ: هَذَا الْحَدِيثُ ضَعِيفٌ وَرَاوِيه مَجْهُول

4464. उम्म अतिय्या अंसारी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के मदीना में एक औरत खतने किया करती थी

नबी ﷺ ने इसे फ़रमाया: “खतने की जगह ज़्यादा न काटो क्योंकि वह औरत के लिए ज़्यादा लज्ज़त वाला और खाविंद के लिए ज़्यादा पर लुत्फ़ है” अबू दावुद, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस जईफ है और उस के रावी मजहूल है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه ابوداؤد (5271) * محمد بن حسان : شيخ لمروان بن معاوية : مجهول و قيل هو ابن سعيد المصلوب : كذاب و للحديث شاهدان ضعيفان عند البيهقى (8 / 324)

٤٤٦٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ كَرِيمَةَ بِنْتِ هَمَّامٍ: أَنَّ امْرَأَةً سَأَلَتْ عائشةَ عَنْ خِضَابِ الْحِنَّاءِ فَقَالَتْ: لَا بَأْسَ وَلَكِنِّي أَكْرَهُهُ كَانَ حَبِيبِي يَكْرَهُ رِيحَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4465. करीम बिन्ते हम्माम से रिवायत है के एक औरत ने आइशा रदियल्लाहु अन्हा से महंदी के रंग से मुतल्लिक दरियाफ्त किया तो उन्होंने ने फ़रमाया: कोई बुराई नहीं? लेकिन में उसे नापसंद करती हो मेरे हबीबी नबी ﷺ उसकी महक को नापसंद किया करते थे | (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4164) و النسائى (8 / 142 ح 5093) * كريمة : لم اجد من وثقها

٤٤٦٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عائشةَ أَنَّ هِنْدًا بِنْتَ عُتْبَةَ قَالَتْ: يَا نَبِيَّ اللَّهِ بَايِعْنِي فَقَالَ: «لَا أُبَايِعُكِ حَتَّى تُغَيِّرِي كَفَّيْكِ فَكَأَنَّهُمَا كَفَّا سَبُعٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4466. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के हिन्द बिन उत्बा ने अर्ज़ किया, अल्लाह के नबी! मुझ से बैत लें आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं तुम से बैत नहीं होऊंगा हत्ता कि तुम अपने हथेलियों का रंग बदलो गोया तेरी हथेलियों किसी दरिन्दे की हथेलियाँ हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4165) * وقال ابن حجر فى غبطة و ام الحسن و جدتها :’’ وفى اسناده مجهولات ثلاث ‘‘

٤٤٦٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهَا قَالَتْ: أَوَمَتِ امْرَأَةٌ مِنْ وَرَاءِ سِتْرٍ بِيَدِهَا كِتَابٌ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَبَضَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدَهُ فَقَالَ: «مَا أَدْرِي أَيَدُ رَجُلٍ أَمْ يَدُ امْرَأَةٍ؟» قَالَتْ: بَلْ يَدُ امْرَأَةٍ قَالَ: «لَوْ كُنْتِ امْرَأَةً لَغَيَّرْتِ أَظْفَارَكِ» يَعْنِي الْحِنَّاء. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَالنَّسَائِيّ

4467. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, एक औरत ने परदे के पीछे से इरशाद किया उस के हाथ मैं रसूलुल्लाह ﷺ के नाम एक ख़त था नबी ﷺ ने अपना हाथ खींच लिया और फ़रमाया: “मैं नहीं जानता के यह आदमी का हाथ है या औरत का हाथ है” इस औरत ने कहा बल्कि औरत का हाथ है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अगर

तुम औरत होती, तो तुम महंदी के साथ अपने नाख़ून का रंग बदलती"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4166) و النسائی (8 / 142 ح 5092) * صفیة لا تعرف و مطیع : لین الحدیث وقال احمد :'' ھذا حدیث منکر ''

٤٤٦٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن ابنِ عبَّاسٍ قَالَ: لُعِنَتِ الْوَاصِلَةُ وَالْمُسْتَوْصِلَةُ وَالنَّامِصَةُ وَالْمُتَنَمِّصَةُ وَالْوَاشِمَةُ والمشتوشمة من غير دَاء. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4468. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, बीमारी के बगैर बालो में बाल जोड़ने वाली औरजुड़ाने वाली बाल नोचने वाली और उखाड़ने वाली बदन गुदने वाली और गुन्द्वाने वाली पर लानत की गई है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4170) * عبدالله بن وھب مدلس و عنعن و لبعض الحدیث شواھد ضعیفة

٤٤٦٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الرَّجُلَ يَلْبَسُ لِبْسَةَ الْمَرْأَةِ وَالْمَرْأَةَ تَلْبَسُ لِبْسَةَ الرَّجُلِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4469. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने औरत का सा लिबास पहनने वाले मर्द और मर्द का सा लिबास पहनने वाली औरत पर लानत फ़रमाई है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4098)

٤٤٧٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: قِيلَ لِعَائِشَةَ: إِنَّ امْرَأَةً تَلْبَسُ النَّعْلَ قَالَتْ: لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الرَّجُلَةَ مِنَ النِّسَاء. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4470. इब्ने अबी मुलयका रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, आइशा रदियल्लाहु अन्हा से अर्ज़ किया गया, एक औरत (मर्दों जैसे) जूते पहनती है (इस का किया हुक्म है) उन्होंने ने फ़रमाया: रसूलुल्लाह ﷺ ने मर्दों से मुशाबिहत करने वाली औरतो पर लानत फरमाई है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4099)

٤٤٧١ - (ضَعِيف) وَعَنْ ثَوْبَانَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا سَافَرَ كَانَ آخِرُ عَهْدِهِ بِإِنْسَانٍ مِنْ أَهْلِهِ فَاطِمَةَ وَأَوَّلُ مَنْ يَدْخُلُ عَلَيْهَا فَاطِمَةَ فَقَدِمَ مِنْ غَزَاةٍ وَقَدْ عَلَّقَتْ مَسْحًا أَوْ سِتْرًا عَلَى بَابِهَا وَحَلَّتِ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ قُلْبَيْنِ مِنْ فِضَّةٍ فَقَدِمَ فَلَمْ يَدْخُلْ فَظَنَّتْ أَنَّ مَا مَنَعَهُ أَنْ يَدْخُلَ مَا رَأَى فَهَتَكَتِ السِّتْرَ وَفَكَّتِ الْقُلْبَيْنِ عَنِ الصَّبِيَّيْنِ وَقَطَعَتْهُ مِنْهُمَا فَانْطَلَقَا

إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَبْكِيَانِ فَأَخَذَهُ مِنْهُمَا فَقَالَ: «يَا ثَوْبَانُ اذْهَبْ بِهَذَا إِلَى فُلَانٍ إِنَّ هَؤُلَاءِ أَهْلِي أَكْرَهُ أَنْ يَأْكُلُوا طَيِّبَاتِهِمْ فِي حَيَاتِهِمُ الدُّنْيَا. يَا ثَوْبَانُ اشْتَرِ لِفَاطِمَةَ قِلَادَةً مِنْ عَصْبٍ وَسُوَارَيْنِ مِنْ عَاجٍ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد

4471. सौबान रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ सफ़र पर जाते तो आप अपने अहले खाना में से फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा से सबसे आख़िर पर मिलते और जब आप सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो आप सबसे पहले फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा से मिलते, आप एक गज़वा से वापस तशरीफ़ लाए तो उन्होंने अपने दरवाज़े पर परदा लटका रखा था और हसन व हुसैन रदियल्लाहु अन्हुमा को चाँदी के कंगन पहना रखे थे, आप जब तशरीफ़ लाए तो फ़ातिमा रदियल्लाहु अन्हा के घर में दाखिल न हुए, जिस से उन्होंने समझ लिया के आप के तशरीफ़ न लाने का सबब परदा और कंगन है, उन्होंने परदा फाड़ डाला और बच्चो के हाथो से कंगन उतार दिए और उन के टुकड़े कर दिए, वह दोनों रोते हुए रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ चल दिए, आप ﷺ ने इन दोनों से वह कंगन ले लिए और फ़रमाया: “सौबान इसे आले फलां के पास ले जाओ, क्योंकि यह मेरे अहल से है, मैं नापसंद करता हूँ कि वह अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में नफ्सी चीज़े इस्तेमाल करे, सौबान! फ़ातिमा के लिए असबी (दरियाई जानवर के दांत) का हार और हाथी के दांत के दो कंगन खरीद लाओ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه احمد (5 / 275 ح 22721) و ابوداؤد (4213) * سليمان المنبهى و حميد الشامى : مجهولان

٤٤٧٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «اكْتَحِلُوا بِالْإِثْمِدِ فَإِنَّهُ يَجْلُو الْبَصَرَ وَيُنْبِتُ الشَّعْرَ» . وَزَعَمَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَتْ لَهُ مُكْحُلَةٌ يَكْتَحِلُ بِهَا كُلَّ لَيْلَةٍ ثَلَاثَةً فِي هَذِهِ وَثَلَاثَةً فِي هَذِه. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4472. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अस्मद का सुरमा लगाया करो क्योंकि वह नज़र को तेज़ करता है और बाल उगाता है”, और उनका गुमान है के नबी ﷺ के पास सुरमा दानी थी जिस से आप हर रात तीन मर्तबा इस (आँख) में और तीन मर्तबा इस (आँख) में सुरमा लगाते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (1757 وقال : حسن) [و ابن ماجه (3499)] * عباد بن منصور ضعيف مدلس ، ضعفه الجمهور و عنعن

٤٤٧٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَكْتَحِلُ قَبْلَ أَنْ يَنَامَ بِالْإِثْمِدِ ثَلَاثًا فِي كُلِّ عَيْنٍ قَالَ: وَقَالَ: «إِنَّ خَيْرَ مَا تَدَاوَيْتُمْ بِهِ اللَّدُودُ وَالسَّعُوطُ وَالْحِجَامَةُ وَالْمَشِيُّ وَخَيْرَ مَا اكْتَحَلْتُمْ بِهِ الْإِثْمِدُ فَإِنَّهُ يَجْلُو الْبَصَرَ وَيُنْبِتُ الشَّعْرَ وَإِنَّ خَيْرَ مَا تَحْتَجِمُونَ فِيهِ يَوْمُ سَبْعَ عَشْرَةَ وَيَوْمُ تِسْعَ عَشْرَةَ وَيَوْمُ إِحْدَى وَعِشْرِينَ» وَإِنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَيْثُ عُرِجَ بِهِ مَا مَرَّ عَلَى مَلَأٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِلَّا قَالُوا: عَلَيْكَ بِالْحِجَامَةِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حَسَنٌ غَرِيبٌ

4473. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ हर रात सोने से पहले हर आँख में तीन मर्तबा इस्फ़हानी सुरमा लगाया करते थे, रावी बयान करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेहतरीन दवाई जिसके ज़रिए तुम इलाज करते हो वह दवाई है, जो मुंह के अन्दर एक जानिब में डाली जाए, और वह दवाई जो नाक के ज़रिए

टपकाई जाए और पछने (हिजामा) लगाना और जुलाब लेना है और बेहतरीन सुरमा इस्फ़हानी है क्यूंकि वह नज़र को तेज़ करता है और (पलकों के) बाल उगाता है, और सतरह, उन्नीस और इक्कीस तारीख को पछने (हिजामा) लगाना सबसे बेहतर है” और रसूलुल्लाह ﷺ मेअराज के सफ़र में जिस भी जमाअत मलाएका के पास से गुज़रते तो उन्होंने हमें कहा आप पछने (हिजामा) लगाने का इल्तेज़ाम करे| तिरमिज़ी, और उन्होंने कहा: यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذى (2048) * فيه عباد بن منصور : ضعيف ، ضعفه الجمهور من جهة حفظه و لبعض حديثه شواهد عند البخارى (5712) وغيره

٤٤٧٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَائِشَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى الرِّجَالَ وَالنِّسَاءَ عَنْ دُخُولِ الْحَمَّامَاتِ ثُمَّ رَخَّصَ لِلرِّجَالِ أَنْ يَدْخُلُوا بِالْمَيَازِرِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4474. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ ने मर्दों और औरतो को हमामों में दाखिल होने से मना फ़रमाया, फिर आप ﷺ ने मर्दों को तहबंद पहन कर जाने की इजाज़त फरमाई| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (2802 وقال : اسناده ليس بذاک القائم‘‘) و ابوداؤد (4009) * و ابو عذرة : حسن الحديث ، و السند قائم و الحمدلله

٤٤٧٥ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي الْمَلِيحِ قَالَ: قَدِمَ عَلَى عَائِشَةَ نِسْوَةٌ مِنْ أَهْلِ حِمْصٍ فَقَالَتْ: مَنْ أَيْنَ أنتنَّ؟ قلنَ: من الشَّامِ فَلَعَلَّكُنَّ مِنَ الْكُورَةِ الَّتِي تَدْخُلُ نِسَاؤُهَا الْحَمَّامَاتِ؟ قُلْنَ: بَلَى قَالَتْ: فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا تَخْلَعُ امْرَأَةٌ ثِيَابَهَا فِي غَيْرِ بَيْتِ زَوْجِهَا إِلَّا هَتَكَتِ السِّتْرَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ رَبِّهَا» . وَفِي رِوَايَةٍ: «فِي غيرِ بيتِها إِلا هتكت سترهَا بَيْنَهَا وَبَيْنَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

4475. अबू मुलैह बयान करते हैं, अहले हीम्स से कुछ औरतें आइशा रदियल्लाहु अन्हा के पास आई, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने पूछा तुम कहाँ से हो? उन्होंने बताया मुल्क ए शाम से, आइशा रदियल्लाहु अन्हा ने पूछा शायद की तुम कुरह से हो जहाँ की औरतें हमामों में जाती है? उन्होंने कहा: जी हाँ! उन्होंने ने फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “औरत अपने खाविंद के घर के अलावा किसी जगह अपने कपड़े उतारती है तो उस ने अपने और रब के दरमियान हाइल हिजाब चाक कर दिया”| एक दूसरी रिवायत में है: “अपने घर के अलावा तो उस के और अल्लाह अज्ज़वजल के बिच में जो हिजाब था वह उस ने चाक कर दिया”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذى (2803 وقال : حسن) و ابوداؤد (4010) [و ابن ماجه (3750)]

٤٤٧٦ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " سَتُفْتَحُ لَكُمْ أَرْضُ الْعَجَمِ وَسَتَجِدُونَ فِيهَا بُيُوتًا يُقَالُ لَهَا: الْحَمَّامَاتُ فَلَا يَدْخُلَنَّهَا الرِّجَالُ إِلَّا بِالْأُزُرِ وَامْنَعُوهَا النِّسَاءَ إِلَّا مَرِيضَةً أَوْ نُفَسَاءَ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4476. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तुम्हारे लिए सर ज़मीन अजम फतह हो जाएगी और तुम वहां कुछ घर पाओगे जिन्हें हमाम कहा जाएगा, उस में सिर्फ मर्द तहबंद बांध कर दाखिल हो और औरतों को उनमें जाने से मना करो मगर जो मरिज़ा हो या हालत निफ़ास में हो (इसे इजाज़त है)”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4011) [و ابن ماجه (3748)] * فيه عبد الرحمن بن زياد بن انعم الافريقى وهو ضعيف مشهور

٤٤٧٧ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٌ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلَا يَدخلِ الحمّامَ بِغَيْر إِزارٍ وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلَا يدْخل حَلِيلَتَهُ الْحَمَّامَ وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلَا يَجْلِسُ عَلَى مَائِدَةٍ تُدَارُ عَلَيْهَا الْخمر» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَالنَّسَائِيّ

4477. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है वह तहबंद के बगैर हमाम में न जाए और जो शख़्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है के अपनी अहलिया को हमाम में जाने की इजाज़त न दे और जो शख़्स अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है वह ऐसे दस्तरखान पर न बैठें जहाँ शराब का दौर चलता हो”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (2810 وقال : حسن غريب) و النسائى (1 / 198 ح 401 مختصرًا جدًا و حديثه حسن بالشاهد الحسن الذى رواه الترمذى فى سننه : 2802) * ليث بن ابى سليم ضعيف و حديث النسائى حسن

कंघी करने का बयान — بَاب التَّرَجُّل •

तीसरी फस्ल — الْفَصْل الثَّالِث •

٤٤٧٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن ثابتٍ قَالَ: سُئِلَ أَنَسٌ عَنْ خِضَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: لَوْ شِئْتَ أَنْ أَعُدَّ شَمَطَاتٍ كُنَّ فِي رَأْسِهِ فَعَلْتُ قَالَ: وَلَمْ يَخْتَضِبْ زَادَ فِي رِوَايَةٍ: وَقَدِ اخْتَضَبَ أَبُو بَكْرٍ بِالْحِنَّاءِ وَالْكَتَمِ وَاخْتَضَبَ عُمَرُ بِالْحِنَّاءِ بحتا

4478. साबित रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अनस रदियल्लाहु अन्हु से नबी ﷺ के रंग के मुतल्लिक दरियाफ्त किया गया तो उन्होंने ने फ़रमाया: अगर में चाहता के आप के सर के सफ़ेद बाल शुमार करू तो मैं कर सकता था, और उन्होंने बयान किया, आप ﷺ ने रंग नहीं लगाया| एक दूसरी रिवायत में इज़ाफा नकल किया: अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु ने महंदी और वसमा के साथ रंग किया जबकि उमर रदियल्लाहु अन्हु ने सिर्फ महंदी से रंग किया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5895) و مسلم (103 / 2341)، (6076)

٤٤٧٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ كَانَ يَصْفِّرُ لِحْيَتَهُ بِالصُّفْرَةِ حَتَّى تَمْتَلِئَ ثِيَابُهُ مِنَ الصُّفْرَةِ فَقِيلَ لَهُ: لِمَ تُصْبِغُ بِالصُّفْرَةِ؟ قَالَ: أَنِّي رَأَيْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يَصْبُغُ بِهَا وَلَمْ يَكُنْ شَيْءٌ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْهَا وَقد كَانَ يصْبغ ثِيَابَهُ كُلَّهَا حَتَّى عِمَامَتَهُ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالنَّسَائِيّ

4479. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के वह अपने दाढ़ी को ज़र्द रंग किया करते थे हत्ता के ज़र्द रंग से उन के कपड़े भर जाते थे, उन से पूछा गया, आप ज़र्द रंग क्यों लगाते हैं? उन्होंने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को उस के साथ रंगते हुए देखा है और आप को यह रंग सबसे ज़्यादा पसंद था, आप ﷺ अपने तमाम कपड़े हत्ता के अपना इमामे भी इसी के साथ रंगा करते थे| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (4064) و النسائی (8 / 140 ح 5088)

٤٤٨٠ - (صَحِيح) وَعَن عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَوْهَبٍ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى أُمِّ سَلَمَةَ فَأَخْرَجَتْ إِلَيْنَا شَعْرًا مِنْ شَعْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مخضوبا. رَوَاهُ البُخَارِيّ

4480. उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन वहब बयान करते हैं, मैं उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा के पास गया तो उन्होंने हमें रसूलुल्लाह ﷺ के रंगीन बाल दिखाए| (बुखारी)

رواه البخاری (5897)

٤٤٨١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: أَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بِمُخَنَّثٍ قَدْ خَضَبَ يَدَيْهِ وَرِجْلَيْهِ بِالْحِنَّاءِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا بَالُ هَذَا؟» قَالُوا: يَتَشَبَّهُ بِالنِّسَاءِ فَأَمَرَ بِهِ فَنُفِيَ إِلَى النَّقِيعِ. فَقيل: يَا رَسُولَ اللَّهِ أَلَا تَقْتُلُهُ؟ فَقَالَ: «إِنِّي نُهِيتُ عَنْ قَتْلِ الْمُصَلِّينَ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4481. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के पास एक मुखन्नस (हिजड़ा) लाया गया जिस ने अपने हाथो और पाँव पर महंदी लगा रखी थी, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उस का क्या मुआमला है?” उन्होंने अर्ज़ किया, वह औरतो से मुशाबिहत करता है, आप ने उस के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया तो उसे नकीअ की तरफ जिला वतन कर दिया गया, आप से अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! क्या हम इसे क़त्ल न कर दे? आप ﷺ ने फ़रमाया: “मुझे नमाज़ियो को क़त्ल करने से मना किया गया है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4928) * قال الدارقطنی :’’ ابو هاشم و ابو یسار : مجھولان ولا یثبت الحدیث ‘‘ وقال الذھبی :’’ اسناد مظلم لمتن منکر‘‘

٤٤٨٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن الوليدِ بن عقبةَ قَالَ: لَمَّا فَتَحَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم مَكَّةَ جَعَلَ أَهْلُ مَكَّةَ يَأْتُونَهُ بصبيانهم فيدعو لَهُم بِالْبركَةِ وَيمْسَح رؤوسهم فَجِيءَ بِي إِلَيْهِ وَأَنَا مُخَلَّقٌ فَلَمْ يَمَسَّنِي من أجل الخَلوق. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4482. वलीद बिन उक्बा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने मक्का फतह कर लिया तो अहले मक्का अपने बच्चे आप के पास लाने लगे, आप इन के लिए बरकत की दुआ फरमाते और उन के सरो पर हाथ फिराते, मुझे भी आप की खिदमत में पेश किया गया जबकि मैंने खल्लक (जाफरान के साथ मख्लुत खुशबु) लगाईं हुई थी, लिहाज़ा आप ﷺ ने खल्लक की वजह से मुझे हाथ न लगाया| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4181) * عبدالله الهمدانی : مجهول ، و خبره منكر ، قاله ابن عبدالبر

٤٤٨٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ أَنَّهُ قَالَ لِرَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ لِي جُمَّةً أَفَأُرَجِّلُهَا؟ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نَعَمْ وَأَكْرِمْهَا» قَالَ: فَكَانَ أَبُو قَتَادَةَ رُبَّمَا دَهَنَهَا فِي الْيَوْمِ مَرَّتَيْنِ مِنْ أَجْلِ قَوْلِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «نِعْمَ وَأَكْرِمهَا» . رَوَاهُ مَالك

4483. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया, मेरे बाल लम्बे (कंधो तक) हैं, क्या मैं उनमें कंघी कर लिया करू? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: हाँ, और उन्हें संवार कर रख”, रावी ने कहा और अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ के इस कौल की वजह से के “बालो को संवार कर रखो”, दिन में दो मर्तबा बालो को तेल लगाया करते थे| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه مالك (2 / 949 ح 1833) * يحيى بن سعيد الانصارى لم يدرک ابا قتادة رضى الله عنه ، فالسند منقطع و للحديث شواهد ضعيفة عند النسائى (8 / 184 ح 5239) وغيره وفى الباب حديث صحيح : يخالفه ، عند النسائى (5061)

٤٤٨٤ - (ضَعِيف) وَعَن الحجاح بْنِ حَسَّانَ قَالَ دَخَلْنَا عَلَى أَنَسِ بْنِ مَالك فَحَدَّثَتْنِي أُخْتِي الْمُغِيرَةُ قَالَتْ: وَأَنْتَ يَوْمَئِذٍ غُلَامٌ وَلَكَ قَرْنَانِ أَوْ قُصَّتَانِ فَمَسَحَ رَأْسَكَ وَبَرَّكَ عَلَيْكَ وَقَالَ: «احْلِقُوا هَذَيْنِ أَوْ قُصُّوهُمَا فَإِنَّ هَذَا زِيُّ الْيَهُود» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4484. हज्जाज बिन हस्सान रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, हम अनस बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु के पास गए, मेरी बहन मुगिरा ने मुझे बताया की तुम उन दिनों छोटे बच्चे थे और तुम्हारी दो चोटी थी, उन्होंने तुम्हारे सर पर हाथ फेरा, बरकत की दुआ की और फ़रमाया: इन दोनों को मुंड दो या उन्हें क़तर दो क्योंकि यह यहूद की ज़ीनत व आदत है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (4197) * مغيرة بنت حسان : لم اجد من وثقها

٤٤٨٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ تَحْلِقَ الْمَرْأَةُ رَأْسَهَا. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ

4485. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने औरतों को अपने सर के बाल मुंदने से मना फ़रमाया| (हसन)

حسن ، رواه النسائی (8 / 130 ح 5052) [و الترمذی (914915)]

٤٤٨٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن عطاءِ بن يسارٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَسْجِدِ فَدَخَلَ رَجُلٌ ثَائِرُ الرَّأْسِ وَاللِّحْيَةِ فَأَشَارَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهِ كَأَنَّهُ يَأْمُرُهُ بِإِصْلَاحِ شَعْرِهِ وَلِحْيَتِهِ فَفَعَلَ ثُمَّ رَجَعَ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَلَيْسَ هَذَا خَيْرًا مِنْ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدُكُمْ وَهُوَ ثَائِرُ الرَّأْسِ كَأَنَّهُ شَيْطَان» . رَوَاهُ مَالك

4486. अता इब्ने यस्सार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ मस्जिद में तशरीफ़ फरमा थे की एक आदमी आया जिसके सर और दाढ़ी के बाल परान्दा थे, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने दस्ते मुबारक से उसकी तरफ इरशाद फ़रमाया, गोया आप इसे अपने बाल और दाढ़ी सँवारने का हुक्म फरमा रहे हैं, उस ने वैसे ही कर लिया और फिर वह आप की खिदमत में हाज़िर हुआ तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये उस से बेहतर है के तुम में से कोई इस हाल में आए के उस के सर के बाल परान्दा हो गोया वह शैतान है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه مالک (2 / 949 ح 1834) * السند مرسل

٤٤٨٧ - (حسن) وَعَن ابنِ الْمسيب سُمِعَ يَقُولُ: " إِنَّ اللَّهَ طَيِّبٌ يُحِبُّ الطِّيبَ نَظِيفٌ يُحِبُّ النَّظَافَةَ كَرِيمٌ يُحِبُّ الْكَرَمَ جَوَادٌ يُحِبُّ الْجُودَ فَنَظِّفُوا أُرَاهُ قَالَ: أَفْنِيَتَكُمْ وَلَا تشبَّهوا باليهود " [ص:١٢٧»» قَالَ: فذكرتُ ذَلِك لمهاجرين مِسْمَارٍ فَقَالَ: حَدَّثَنِيهِ عَامِرُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِثْلَهُ إِلَّا أَنَّهُ قَالَ: «نَظِّفُوا أَفْنِيتَكُمْ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4487. इब्ने मुसय्यिब से रिवायत है उन्हें कहते हुए सुना गया के, “अल्लाह पाक है के (अपने बंदो से) सफाई व खुशबू पसंद करता है, वह नज़िफ है नज़ाफ़त को पसंद करता है, वह करीम है करम को पसंद करता है, वह सखिदाता है सख़ावत करने को पसंद करता है, मेरा ख़याल है आप ने फ़रमाया: तुम अपने सख्वो को साफ़ सुथरा रखो, और यहूद की नकल मत उतारो”, रावी बयान करते हैं, मैंने मुहाजरिन मस्मार से उस का तज़किरह किया तो उन्होंने कहा: आमिर बिन साद ने इसे अपने वालिद के वास्ते से नबी ﷺ से इसी तरह बयान किया अगर उन्होंने कहा: “अपने सहन साफ़ रखो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف جدا ، رواه الترمذی (2799 وقال : غریب) * فیه خالد بن الیاس : متروک الحدیث

٤٤٨٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ أَنَّهُ سَمِعَ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ يَقُولُ: كَانَ إِبْرَاهِيمُ خَلِيلُ الرَّحْمَنِ أَوَّلَ النَّاس ضيَّف الضَّيْف وَأَوَّلَ النَّاسِ اخْتَتَنَ وَأَوَّلَ النَّاسِ قَصَّ شَارِبَهُ وَأَوَّلَ النَّاسِ رَأَى الشَّيْبَ فَقَالَ: يَا رَبِّ: مَا هَذَا؟ قَالَ الرَّبُّ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: وَقَارٌ يَا إِبْرَاهِيمُ قَالَ: رَبِّ زِدْنِي وَقَارًا. رَوَاهُ مَالك

4488. याह्या बिन सईद से रिवायत है के उन्होंने सईद बिन मुसय्यिब को बयान करते हुए सुना, इब्राहीम खलील अल रहमान सबसे पहले शख़्स हैं जिन्होंने मेहमान नवाज़ी की, उन्होंने सबसे पहले खतना किया, सबसे पहले अपने मूंछे कतरी, सबसे पहले बुढ़ापा देखा तो अर्ज़ किया, ए मेरे रब! यह क्या है? रब तबारक व तआला ने फ़रमाया: इब्राहीम वक़ार (गरिमा) है? अर्ज़ किया, ए मेरे रब! मेरे वक़ार (गरिमा) में इज़ाफा फरमा| (सहीह)

صحيح ، رواه مالك (2 / 922 ح 1775) * السند صحيح الى سعيد بن المسيب رحمه الله و هذا من قوله ولم يخبر من حدثه و لعله من الاسرائيليات : احاديث بنى اسرائيل ، والله اعلم

बَاب التصاوير • तस्वीर का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٤٨٩ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَن أبي طَلْحَة قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تَدْخُلُ الْمَلَائِكَةُ بَيْتًا فِيهِ كَلْبٌ وَلَا تصاوير»

4489. अबू तल्हा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जिस घर में कुत्ते और तसाविर हो उस में (रहमत के) फ़रिश्ते दाखिल नहीं होते”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5949) و مسلم (83 / 2106)، (5514)

٤٤٩٠ - (صَحِيح) وَعَن ابنِ عبَّاسٍ عَنْ مَيْمُونَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أصبحَ يَوْمًا واجماً وَقَالَ: «إِنَّ جِبْرِيلَ كَانَ وَعَدَنِي أَنْ يَلْقَانِيَ اللَّيْلَةَ فَلَمْ يَلْقَنِي أَمَ وَاللَّهِ مَا أَخْلَفَنِي» . ثُمَّ وَقَعَ فِي نَفْسِهِ جِرْوُ كَلْبٍ تَحْتَ فُسْطَاطٍ لَهُ فَأَمَرَ بِهِ فَأُخْرِجَ ثُمَّ أَخَذَ بيدِه مَاء فنضحَ مَكَانَهُ فَلَمَّا أَمْسَى لقِيه جِبْرِيلَ فَقَالَ: «لَقَدْ كُنْتَ وَعَدْتَنِي أَنْ تَلْقَانِي الْبَارِحَةَ» . قَالَ: أَجَلْ وَلَكِنَّا لَا نَدْخُلُ بَيْتًا فِيهِ كَلْبٌ وَلَا صُورَةٌ فَأَصْبَحَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم يَوْمَئِذٍ فَأَمَرَ بِقَتْلِ الْكلاب حَتَّى إِنه يَأْمر بقتل الْكَلْب الْحَائِطِ الصَّغِيرِ وَيَتْرُكُ كَلْبَ الْحَائِطِ الْكَبِيرِ. رَوَاهُ مُسلم

4490. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा मैमुना रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत करते हैं की एक रोज़ रसूलुल्लाह ﷺ ग़मगीन हो गए और फ़रमाया: “जिब्राइल अलैहिस्सलाम ने रात के वक़्त मुझ से मुलाकात करने का वादा किया था लेकिन वह नहीं आए, आगाह रहो के अल्लाह की क़सम! उस ने मुझ से कभी वादा खिलाफी नहीं की”, फिर आप का दिल में ख़याल आया की आप की चारपाई के नीचे कुत्ते का छोटा सा बच्चा है, आप ने उस के मुतल्लिक हुक्म फ़रमाया: इसे निकाल दिया जाए, चुनांचे इसे निकाल दिया गया, फिर आप ने हाथ में पानी लेकर इस जगह छिड़क दिया, फिर जब शाम हुई तो जिब्राइल अलैहिस्सलाम आप से मिले तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुमने कल मुझ से मुलाकात करने का वादा किया था ?” उन्होंने अर्ज़ किया, ठीक है, लेकिन हम इस घर में दाखिल नहीं होते जिस मे कुत्ता और तस्वीर हो, अगले रोज़ सुबह हुई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने कुत्ते मारने का

हुक्म फरमा दिया हत्ता के छोटे बाग़ो के कुत्ते भी मार दिया जाए अलबत्ता बड़े बाग़ो के कुत्ते छोड़ देने (यानी न मारने) का हुक्म फ़रमाया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (82 / 2105)، (5513)

٤٤٩١ - (صَحِيح) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَكُنْ يَتْرُكُ فِي بَيْتِهِ شَيْئًا فِيهِ تَصَالِيبُ إِلَّا نَقَضَهُ. رَوَاهُ البُخَارِيّ

4491. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ अपने घर में ऐसी कोई चीज़ नहीं छोड़ते थे जिस पर तस्वीर होती थी| (बुखारी)

رواه البخارى (5952)

٤٤٩٢ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهَا أَنَّهَا اشْتَرَتْ نُمْرُقَةً فِيهَا تَصَاوِيرُ فَلَمَّا رَآهَا رَسُولُ اللَّهِ [ص:١٢٧ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم قَامَ عَلَى الْبَابِ فَلَمْ يَدْخُلْ فَعَرَفْتُ فِي وَجْهِهِ الْكَرَاهِيَةَ قَالَتْ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أتوبُ إِلى الله وإِلى رَسُوله مَا أذنبتُ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا بَالُ هَذِهِ النُّمْرُقَةِ؟» قُلْتُ: اشْتَرَيْتُهَا لَكَ لِتَقْعُدَ عَلَيْهَا وَتَوَسَّدَهَا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " إِنَّ أَصْحَابَ هَذِهِ الصُّوَرِ يُعَذَّبُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيُقَالُ لَهُمْ: أَحْيُوا مَا خَلَقْتُمْ ". وَقَالَ: «إِنَّ الْبَيْتَ الَّذِي فِيهِ الصُّورَةُ لَا تدخله الْمَلَائِكَة»

4492. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के उन्होंने एक छोटा सा तकिया खरीदा जिस पर तस्वीरे थी, जब रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे देखा तो आप दरवाज़े पर खड़े हो गए और अन्दर तशरीफ़ न लाए, मैंने आप के चेहरे पर नापसंदगी के आसार देखे, वह बयान करती हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! मैं (अपनी गलती से) अल्लाह और उस के रसूल की तरफ रुजू करती हो, मैंने गलती क्या की है? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “ये तकिया कैसा है?” मैंने अर्ज़ किया: मैंने इसे आप के लिए खरीदा है ताकि आप उस पर तशरीफ़ फरमा हो और उस पर टेक लगाए, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “उन तस्वीरों वालो को रोज़ ए कियामत अज़ाब दीया जाएगा, उन्हें कहा जाएगा, तुमने जो तखलीक किया उसे जिंदा करो”, और फ़रमाया: “बेशक वह घर जिस में तस्वीर हो वहां फ़रिश्ते दाखिल नहीं होते”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5961) و مسلم (96 / 2107)، (5533)

٤٤٩٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وعنها أَنَّهَا كَانَت عَلَى سَهْوَةٍ لَهَا سِتْرًا فِيهِ تَمَاثِيلُ فَهَتَكَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاتَّخَذَتْ مِنْهُ نُمرُقتين فكانتا فِي الْبَيْت يجلسُ عَلَيْهِم

4493. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के उन्होंने घर के दरीचे पर परदा लटका रखा था जिस पर तस्वीरे थी, नबी ﷺ ने इसे फाड़ डाला, और मैंने उस से दो तकिए बना लिए जो के घर में थे, आप ﷺ इन पर बैठा करते थे| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2479) و مسلم (94 / 2107)، (5531)

٤٤٩٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَرَجَ فِي غَزَاةٍ فَأَخَذْتُ نَمَطًا فَسَتَرْتُهُ عَلَى الْبَابِ فَلَمَّا قَدِمَ فَرَأَى النَّمَطَ فَجَذَبَهُ حَتَّى هَتَكَهُ ثُمَّ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ لَمْ يَأْمُرْنَا أَنْ نَكْسُوَ الْحِجَارَةَ وَالطِّينَ»

4494. आइशा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ किसी गज़वा पर तशरीफ़ ले गए तो मैंने एक कपड़ा लिया और इसे दरवाज़े पर लटका दीया, जब आप वापस तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ ने वह कपड़ा देखा तो उसे खींच कर फाड़ दिया, फिर फ़रमाया: “अल्लाह तआला ने हमें यह हुक्म नहीं दिया के हम पत्थर और मिट्टी को कपड़ा पहनाए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5954) و مسلم (87 / 2107)، (5520)

٤٤٩٥ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَشَدُّ النَّاسِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ الَّذِينَ يُضَاهُونَ بِخلق الله»

4495. आइशा रदियल्लाहु अन्हा नबी ﷺ से रिवायत करती है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “रोज़ ए कियामत उन लोगों को सबसे ज़्यादा सख्त अज़ाब दीया जाएगा जो अल्लाह की तखलीक में अल्लाह से मुशाबिहत करते हैं”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4954) و مسلم (92 / 2107)، (5528)

٤٤٩٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " قَالَ اللَّهُ تَعَالَى: وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذَهَبَ بِخلق كخلقي فلْيخلقوا ذَرَّةً أَوْ لِيَخْلُقُوا حَبَّةً أَوْ شَعِيرَةً "

4496. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अल्लाह तआला फरमाता है, उस से बढ़कर कौन ज़ालिम हो सकता है जो मेरी तरह की तखलीक करने लगता है, उन्हें चाहिए के वह एक जिरह या या एक दाना या एक जौ तू पैदा करे”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5953) و مسلم (101 / 2111)، (5543)

٤٤٩٧ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «أَشَدُّ النَّاسِ عَذَابًا عِنْدَ اللَّهِ المصوِّرون»

4497. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “अल्लाह के यहाँ मुसव्विरो को सबसे ज़्यादा सख्त अज़ाब दीया जाएगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (5950) و مسلم (98 / 2109)، (5537)

٤٤٩٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم يَقُول: «كُلُّ مُصَوِّرٍ [ص:١٢٧ فِي النَّارِ يُجْعَلُ لَهُ بِكُلِّ صُورَةٍ صَوَّرَهَا نَفْسًا فَيُعَذِّبُهُ فِي جَهَنَّمَ» . قَالَ ابْن عَبَّاس: فَإِن كنت لابد فَاعِلًا فَاصْنَعِ الشَّجَرَ وَمَا لَا رُوحَ فِيهِ

4498. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “हर मुस्वर आग में (जाने वाला) है, उस ने जो भी तस्वीर बनाई होगी इसे सूरत अता की जाएगी और वह इस (मुस्वर) को जहन्नम में अज़ाब देगी”, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: अगर तुमने ज़रूर ही तस्वीर बनानी है तो फिर दरख्त और ऐसी चीज़ की बना जिस में रूह न हो| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (2225) و مسلم (99 / 2110)، (5540)

٤٤٩٩ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «مَنْ تَحَلَّمَ بِحُلْمٍ لَمْ يَرَهُ كُلِّفَ أَنْ يَعْقِدَ بَيْنَ شَعِيرَتَيْنِ وَلَنْ يَفْعَلَ وَمَنِ اسْتَمَعَ إِلَى حَدِيثِ قَوْمٍ وَهُمْ لَهُ كَارِهُونَ أَوْ يَفِرُّونَ مِنْهُ صُبَّ فِي أُذُنَيْهِ الْآنُكُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَمَنْ صَوَّرَ صُورَةً عُذِّبَ وَكُلِّفَ أَنْ يَنْفُخَ فِيهَا وَلَيْسَ بِنَافِخٍ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4499. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “जो शख़्स किसी ऐसे ख्वाब देखने का दावे करे जो उस ने देखा नहीं तो इसे मुकल्लिफ बनाया जाएगा के वह दो जौ के दरमियान गिरह लगाए और वह हरगिज़ ऐसा नहीं कर सकेगा, जो शख़्स कान लगा कर लोगों की बाते सुनता है जबकि वह इसे नापसंद करते हो या वह उस से दूर भागते हो तो रोज़ ए कियामत उस के कानों में सीसा डाला जाएगा और जिस ने कोई तस्वीर बनाई इसे अज़ाब दीया जाएगा और इसे मुकल्लिफ बनाया जाएगा के वह उस में रूह फूंके और वह ऐसा नहीं कर सकेगा”| (बुखारी)

رواه البخاری (742)

٤٥٠٠ - (صَحِيح) وَعَنْ بُرَيْدَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ لَعِبَ بِالنَّرْدَشِيرِ فَكَأَنَّمَا صَبَغَ يَدَهُ فِي لَحْمِ خِنْزِيرٍ وَدَمِهِ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4500. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स नर्दशिरी (चोसर के जैसा खेल) खेलता है तो वह ऐसे है जैसे उस ने खिंजिर के गोश्त और उस के खून से अपना हाथ रंगीन किया हो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (10 / 2260)، (5896)

بَاب التصاوير • तस्वीर का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٥٠١ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " أَتَانِي جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلَامُ قَالَ: أَتَيْتُكَ الْبَارِحَةَ فَلَمْ يَمْنَعْنِي أَنْ أَكُونَ دَخَلْتُ إِلَّا أَنَّهُ كَانَ عَلَى الْبَابِ تَمَاثِيلُ وَكَانَ فِي الْبَيْتِ قِرَامُ سِتْرٍ فِيهِ تَمَاثِيلُ وَكَانَ فِي الْبَيْتِ كَلْبٌ فَمُرْ بِرَأْسِ التِّمْثَالِ الَّذِي عَلَى بَابِ الْبَيْتِ فَيُقْطَعْ فَيَصِيرُ كَهَيْئَةِ الشَّجَرَةِ وَمُرْ بِالسِّتْرِ فَلْيُقْطَعْ فَلْيُجْعَلْ وِسَادَتَيْنِ مَنْبُوذَتَيْنِ تُوطَآنِ وَمُرْ بِالْكَلْبِ فَلْيُخْرَجْ ". فَفَعَلَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَأَبُو دَاوُد

4501. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिब्राइल अलैहिस्सलाम मेरे पास आए तो उन्होंने कहा: में गुज़िश्ता रात आप के पास आया था लेकिन आप के दरवाज़े पर तस्वीर थी जिन की वजह से में अन्दर नहीं आया, और घर में एक परदा था जिस पर तस्वीर थी और घर में एक कुत्ता भी था, घर के दरवाज़े पर जो मूर्तियाँ है उन के सर कतअ करने का हुक्म फरमाइए तो वह दरख्त की तरह हो जाएगी, और परदे के मुतल्लिक हुक्म फरमाइए के इसे काट कर दो तकिए बना लें जो फेंके और रोंदे जाए जबकि कुत्ते के मुतल्लिक हुक्म फरमाइए के इसे बाहर निकाल दिया जाए”, पस रसूलुल्लाह ﷺ ने ऐसा ही किया| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذى (2806 وقال : حسن صحيح) و ابوداؤد (4158) [و صححه ابن حبان (1487)]

٤٥٠٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " يَخْرُجُ عُنُقٌ مِنَ النَّارِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَهَا عَيْنَانِ تُبْصِرَانِ وَأُذُنَانِ تَسْمَعَانِ وَلِسَانٌ يَنْطِقُ يَقُولُ: إِنِّي وُكِّلْتُ بِثَلَاثَةٍ: بِكُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ وَكُلِّ مَنْ دَعَا مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخر وبالمصوِّرين ". رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4502. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “रोज़ ए कियामत जहन्नम की आग से एक गर्दन निकलेगी जिस की दो आँखे देखने वाली होगी, दो कान सुनने वाले होंगे और एक ज़ुबान बोलती होगी, वह कहेगी मुझे तीन किस्म के लोगो, हर ज़ालिम व मुतकब्बर शख़्स अल्लाह के साथ, किसी और को माबूद बनाने वाले और तस्वीर बनाने वालो पर मामूर किया गया है (के में उन्हें आग में दाखिल करू)”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه الترمذى (2574 وقال : حسن صحيح غريب) * سليمان الاعمش عنعن و للحديث شواهد ضعيفة عند احمد (3 / 40) وغيره

٤٥٠٣ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى حَرَّمَ الْخَمْرَ وَالْمَيْسِرَ وَالْكُوبَةَ وَقَالَ: كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ ". قِيلَ: الْكُوبَةُ الطَّبْلُ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ فِي شعب الْإِيمَان

4503. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बेशक अल्लाह तआला ने शराब, जूए और तबले को हराम करार दिया है”, और फ़रमाया: “हर नशावर चीज़ हराम है”| (सहीह)

صحیح ، رواہ البیھقی فی شعب الایمان (5116) [و ابوداؤد (3696) و احمد (1 / 274 ، 289 ، 350)]

٤٥٠٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَالْكُوبَةِ والغبيراء. الغبيراء: شَرَابٌ يَعْمَلُهُ الْحَبَشَةُ مِنَ الذُّرَةِ يُقَالُ لَهُ: السكركة. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4504. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ ने शराब, जूए, तबला और “गबिरा” से मना फ़रमाया है और “गबिरा” शराब है जिसे हब्शी मक्के से बनाया करते थे, और इसे स्सुकुकत क भी कहा जाता है| (हसन)

حسن ، رواہ ابوداؤد (3685)

٤٥٠٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنْ لَعِبَ بِالنَّرْدِ فَقَدْ عَصَى اللَّهَ وَرَسُولَهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُد

4505. अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने शख़्स नर्दशिरी (चोसर के जैसा खेल) खेली उस ने अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी की”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ احمد (4 / 394) و ابوداؤد (4938) * سعید بن ابی ھند ثقه ارسل عن ابی موسی رضی اللہ عنہ ، و حدیث مسلم (2260) یغنی عنہ

٤٥٠٦ - (حسن) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى رَجُلًا يَتْبَعُ حَمَامَةً فَقَالَ: «شَيْطَانٌ يَتْبَعُ شَيْطَانَةً» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَهْ وَالْبِيهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

4506. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने एक आदमी को एक कबूतर का पीछा करते हुए देखा तो फ़रमाया: “शैतान, शैतान का पीछा कर रहा है”| (हसन)

اسنادہ حسن ، رواہ احمد (2 / 345) و ابوداؤد (4940) و ابن ماجه (3765) و البیھقی فی شعب الایمان (6524) [و اصححه ابن حبان (2006)]

بَاب التصاوير • तस्वीर का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٥٠٧ - (صَحِيح) عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي الْحَسَنِ قَالَ: كُنْتُ عِنْدَ ابْنِ عَبَّاسٍ إِذْ جَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا ابْنَ عَبَّاسٍ إِنِّي رَجُلٌ إِنَّمَا مَعِيشَتِي مِنْ صَنْعَةِ يَدِي وَإِنِّي أَصْنَعُ هَذِهِ التَّصَاوِيرَ فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَا أُحَدِّثُكَ إِلَّا مَا سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَمِعْتُهُ يَقُولُ: «مَنْ صَوَّرَ صُورَةً فَإِنَّ اللَّهَ مُعَذِّبُهُ حَتَّى يَنْفُخَ فِيهِ الرُّوحَ وَلَيْسَ بِنَافِخٍ فِيهَا أَبَدًا» . فَرَبَا الرَّجُلُ رَبْوَةً شَدِيدَةً وَاصْفَرَّ وَجْهُهُ فَقَالَ: وَيْحَكَ إِنْ أَبَيْتَ إِلَّا أَنْ تَصْنَعَ فَعَلَيْكَ بِهَذَا الشَّجَرِ وَكُلِّ شَيْءٍ لَيْسَ فِيهِ روح. رَوَاهُ البُخَارِيّ

4507. सईद बिन अबुल हसन बयान करते हैं, मैं इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा के पास था जब एक आदमी उन के पास आया, उस ने कहा: इब्ने अब्बास! मैं एक ऐसा आदमी हूँ कि मेरी मैशत का सहारा दस्तकारी पर है, और मैं यह तसाविर बनाता हूँ, इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: में तुम्हे रसूलुल्लाह ﷺ से सुनी हुई हदीस ही सुना देता हूँ, मैंने आप ﷺ को फरमाते हुए सुना: "जिस शख़्स ने कोई तस्वीर बनाई तो अल्लाह इसे अज़ाब देता रहेगा हत्ता के वह उस में रूह फूंके जबकि वह कभी भी उस में रूह नहीं फूंक सकेगा", इस आदमी ने बड़ा सांस लिया और उस का चेहरा ज़र्द पड़ गया उस पर अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अफ़सोस तुझ पर, अगर तुमने ज़रूर यही काम करना है तो फिर दरख्त और ऐसी चीजों की तसाविर बना लिया कर जिस में रूह न हो"| (बुखारी)

رواه البخاری (2225)

٤٥٠٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: لَمَّا اشْتَكَى النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَكَرَ بَعْضُ نِسَائِهِ كَنِيسَةً يُقَالُ لَهَا: مَارِيَّةُ وَكَانَتْ أُمُّ سَلمَة وَأم حَبِيبَة أتتا أرضَ الْحَبَشَة فَذَكرنَا مِنْ حُسْنِهَا وَتَصَاوِيرَ فِيهَا فَرَفَعَ رَأْسَهُ فَقَالَ: «أُولَئِكَ إِذَا مَاتَ فِيهِمُ الرَّجُلُ الصَّالِحُ بَنَوْا عَلَى قَبْرِهِ مَسْجِدًا ثُمَّ صَوَّرُوا فِيهِ تِلْكَ الصُّور أُولَئِكَ شرار خلق الله»

4508. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, जब नबी ﷺ बीमार हुए तो आप की एक बीवी ने कानिस का ज़िक्र किया उसे मारिया कहा जाता है, उम्म सलमा और उम्मे हबीबा रदियल्लाहु अन्हुमा सर ज़मीन हबशा गई थी उन्होंने उस के हसन और उस में रखी हुई तसाविर का ज़िक्र किया, आप ﷺ ने अपना सर उठाया और फ़रमाया: "ये वह लोग रहेगी जब उनमें स्वालेह आदमी फौत हो जाता तो वह उसकी कब्र पर मस्जिद बना लेते, फिर इस (मस्जिद) में यह तस्वीरे बना देते, यह अल्लाह की बदतरीन मखलूक है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (3873) و مسلم (16 / 528)، (1181)

٤٥٠٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ

مَنْ قَتَلَ نَبِيًّا أَوْ قَتَلَهُ نَبِيٌّ أَوْ قَتَلَ أَحَدَ وَالِدَيْهِ وَالْمُصَوِّرُونَ وعالم لم ينْتَفع بِعِلْمِهِ»

4509. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "रोज़ ए कियामत ऐसे शख़्स को सबसे सख्त अज़ाब होगा जिस ने किसी नबी को क़त्ल किया या किसी नबी ने इसे क़त्ल किया, या किसी ने अपने वालिदेन में से किसी एक को क़त्ल किया, निज़ मुस्वर और ऐसा आलिम जिस ने अपने इल्म से (अमल के ज़रिए) फ़ायदा हासिल न किया"| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف جذا ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (7888 ، نسخة محققة : 7504) * فيه محمد بن حميد (ضعيف جدًا) : نا ابو زهير عن الاعمش (مدلس) عن الشعبى عن ابن عباس به و روى احمد (1 / 407 ح 3868) بسند حسن عن عبدالله (بن مسعود رضى الله عنه) ان رسول الله صلى عليه و آله وسلم قال :'' اشد الناس عذابًا يوم القيامة رجل قتله نبى او قتل نبيًا و امام ضلالة و ممثل من الممثلين '' الخ

٤٥١٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ كَانَ يَقُول: الشطرنج هُوَ ميسر الْأَعَاجِم

4510. अली रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के वह कहा करते थे: शतरंज अज़मीओ का जुवा है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (6518 ، نسخة محققة : 6097 و السنن الكبرى 10 / 212) * محمد بن على الباقر رحمه الله لم يدرک جده على بن ابى طالب رضى الله عنه فالسند منقطع

٤٥١١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ أَبَا مُوسَى الْأَشْعَرِيَّ قَالَ: لَا يلْعَب بالشطرنج إِلَّا خاطئ

4511. इब्ने शिहाब से रिवायत है के अबू मूसा अशअरी रदियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: खताकार शख़्स ही शतरंज खेलता है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (6518 ، نسخة محققة : و السنن الكبرى 10 / 212) * ابن شهاب لم يدرک ابا موسى رضى الله عنه فالسند منقطع

٤٥١٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعنهُ أَن سُئِلَ عَنْ لَعِبِ الشَّطْرَنْجِ فَقَالَ: هِيَ مِنَ الْبَاطِلِ وَلَا يُحِبُّ اللَّهُ الْبَاطِلَ. رَوَى الْبَيْهَقِيُّ الْأَحَادِيثَ الْأَرْبَعَةَ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

4512. इब्ने शिहाब से रिवायत है के उन से शतरंज खेलने के मुताल्लिक दरियाफ्त किया गया तो उन्होंने कहा: वह बातिल खेल में से है जबकि अल्लाह तआला बातिल को पसंद नहीं करता, यह चारो अहादीस इमाम बयहकी ने शौबुल ईमान में रिवायत की है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (6518 ، نسخة محققة : 6097 و السنن الكبرى 10 / 212) * فيه ابراهيم بن اسحاق لم اعرفه فالسند ضعيف وروى البيهقى (10 / 212) بسند حسن عن الزهرى قال فى الشطرنج :'' هى من الباطل و لا احبها ''

٤٥١٣ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْتِي دَارَ قَوْمٍ مِنَ الْأَنْصَارِ وَدُونَهُمْ دَارٌ فَشَقَّ ذَلِكَ عَلَيْهِمْ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ تَأْتِي دَارَ فُلَانٍ وَلَا تَأْتِي دَارَنَا. فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لِأَنَّ فِي دَارِكُمْ كَلْبًا» . قَالُوا: إِنَّ فِي دَارِهِمْ سِنَّوْرًا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «السِّنَّوْرُ سَبْعٌ» . رَوَاهُ الدَّارَقُطْنِيُّ

4513. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अंसार के एक घर में तशरीफ़ लाया करते थे, जबकि उन के करीब एक घर था (आप उन के वहां नहीं जाया करते थे) इन पर यह शाक गुज़रा तो उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! आप फलां के घर तशरीफ़ लाते है और हमारे घर तशरीफ़ नहीं लाते, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “क्योंकि तुम्हारे घर मे कुत्ता है”, उन्होंने अर्ज़ किया: और उन के घर में बिल्ला है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “बिल्ला दरिन्दाह है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الدارقطنى (1 / 63 ح 176) [و صححه الحاكم (1 / 183) فتعقبه الذهبى] * فيه عيسى بن المسيب ، قال الدارقطنى :'' هو صالح الحديث '' قلت : بل هو ضعيف ضعفه الجمهور ، انظر ميزان الاعتدال وغيره

दवा और झाड़-फुक का बयान • كتاب الطِّبّ والرقى

पहली फस्ल • الْفَصْل الأول

٤٥١٤ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا أَنْزَلَ اللَّهُ دَاء إِلا أنزل لَهُ دَوَاء» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

4514. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अल्लाह ने जो बीमारी उतारी है तो उसकी शिफा भी उतारी है”| (बुखारी)

رواه البخارى (5678)

٤٥١٥ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لِكُلِّ دَاءٍ دَوَاءٌ فَإِذَا أُصِيبَ دَوَاءٌ الدَّاءَ بَرَأَ بِإِذْنِ اللَّهِ» . رَوَاهُ مُسلم

4515. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “हर बीमारी के लिए दवाई है, जब दवाई बीमारी के मुवाफिक हो जाती है तो मरीज़ अल्लाह के हुक्म से सेहतियाब हो जाता है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (69 / 2204)، (5741)

٤٥١٦ - (صَحِيحٌ) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " الشِّفَاءُ فِي ثَلَاثٍ: فِي شَرْطَةِ مِحْجَمٍ أَوْ شَرْبَةِ عَسَلٍ أَوْ كَيَّةٍ بِنَارٍ وَأَنَا أَنْهَى أُمَّتِي عَنِ الْكَيِّ ". رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4516. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “शिफा तीन चीजों में है: पछने (हिजामा) लगाने में, या शहद पीने में या आग से दागने से और मैं अपनी उम्मत को दागने से मना करता हूँ”| (बुखारी)

رواه البخارى (5680)

٤٥١٧ - (صَحِيح) وَعَن جابرٍ قَالَ: رُمِيَ أَبِي يَوْمَ الْأَحْزَابِ عَلَى أَكْحَلِهِ فَكَوَاهُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ مُسلم

4517. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, गज़वा ए अहज़ाब (खंदक) के मौके पर उबई बिन काब

रदियल्लाहु अन्हु को रग हफ्तंदाम में तीर लगा तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें दाग दिया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (74 / 2207)، (5747)

٤٥١٨ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: رُمِيَ سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ فِي أكحله فحمسه النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهِ بِمِشْقَصٍ ثمَّ ورمت فحمسه الثَّانِيَة. رَوَاهُ مُسلم

4518. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सईद बिन मुआज़ रदियल्लाहु अन्हु को रग हफ्तंदाम में तीर लगा तो नबी ﷺ ने अपने दस्ते मुबारक से तीर के नोक के साथ इसे दाग दिया, फिर उस पर वरम आ गया, तो आप ﷺ ने दूसरी मर्तबा इसे दाग दिया| (मुस्लिम)

رواه مسلم (75 / 2208)، (5748)

٤٥١٩ - (صَحِيح) وَعَنْهُ قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى أَبِيِّ بن كَعْب طَبِيبا فَقَطَعَ مِنْهُ عِرْقًا ثُمَّ كَوَاهُ عَلَيْهِ. رَوَاهُ مُسلم

4519. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने उबई बिन काब रदियल्लाहु अन्हु के पास एक तबीब भेजा तो उस ने उनकी एक रग काट दी फिर उस को दाग दिया | (मुस्लिम)

رواه مسلم (73 / 2207)، (5745)

٤٥٢٠ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «فِي الْحَبَّةِ [ص:١٢٧ السَّوْدَاءِ شِفَاءٌ مِنْ كُلِّ دَاءٍ إِلَّا السَّامَ» . قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: السَّامُ: الْمَوْتُ وَالْحَبَّةُ السَّوْدَاءُ: الشُّونِيزُ

4520. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के उन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “कलोंजी में मौत के सिवा हर बीमारी से शिफा है”| इब्ने शैबा ने फ़रमाया: (السام) से मुराद मौत और (الحبة السوداء) से कलोंजी मुराद है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5688) و مسلم (98 / 2215)، (5766)

٤٥٢١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: أَخِي اسْتَطْلَقَ بَطْنُهُ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «اسقيه عسلاً» فَسَقَاهُ ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: سَقَيْتُهُ فَلَمْ يَزِدْهُ إِلَّا اسْتِطْلَاقًا فَقَالَ لَهُ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ. ثُمَّ جَاءَ الرَّابِعَةَ فَقَالَ: «اسْقِهِ عَسَلًا» . فَقَالَ: لَقَدْ سَقَيْتُهُ فَلَمْ يَزِدْهُ إِلَّا اسْتِطْلَاقًا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ: «صَدَقَ اللَّهُ وَكَذَبَ بَطْنُ أَخِيكَ» . فَسَقَاهُ فَبَرَأَ

4521. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में आया और उस ने अर्ज़ किया, मेरे भाई पेट की तकलीफ मैं मुब्तिला है रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "इसे शहद पिलाओ", उस ने इसे शहद पिलाया, वह फिर आया और अर्ज़ किया: मैंने इसे शहद पिलाया मगर उस से पेट की तकलीफ और भी ज़्यादा हो गई है, आप ने तीन मर्तबा इसे ऐसे ही फ़रमाया, फिर वह चोथी मर्तबा आया तो आप ﷺ ने (यूँही) फ़रमाया: "इसे शहद पिलाओ", उस ने अर्ज़ किया, मैं उसे पिला चूका हूँ लेकिन उस के मर्ज़ इस हाल में इज़ाफा ही हुआ है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह का फरमान सच्चा है जबकि तेरे भाई के पेट की गलती है", उस ने फिर पिलाया तो वह सेहतियाब हो गया| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5684) و مسلم (91 / 2217)، (5770)

٤٥٢٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ أَمْثَلَ مَا تَدَاوَيْتُمْ بِهِ الْحجامَة والقُسْط البحري»

4522. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: " पछने (हिजामा) लगाना और कुस्त बहरी (sea incense) का इस्तेमाल बेहतरीन तरीका इलाज है"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5696) و مسلم (63 / 1577)، (4039)

٤٥٢٣ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُعَذِّبُوا صِبْيَانَكُمْ بِالْغَمْزِ مِنَ الْعُذْرَةِ عَلَيْكُمْ بِالْقُسْطِ»

4523. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अज्रह (एक वरम है जो बच्चों के हलक में कसरत ए खून की वजह से हो जाता है) की वजह से अपने बच्चो के गले दबा कर उन्हें तकलीफ न पहुँचाओ बल्कि तुम कुस्त इस्तेमाल करो"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5696) و مسلم (63 / 1577)، (4039)

٤٥٢٤ - (مُتَّفَق عَلَيْهِ) وَعَن أَمِّ قَيْسٍ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم: «على مَ تَدْغَرْنَ أَوْلَادَكُنَّ بِهَذَا الْعِلَاقِ؟ عَلَيْكُنَّ بِهَذَا الْعُودِ الْهِنْدِيِّ فَإِنَّ فِيهِ سَبْعَةَ أَشْفِيَةٍ مِنْهَا ذَاتُ الْجَنْبِ يُسْعَطُ مِنَ الْعُذْرَةِ وَيُلَدُّ مِنْ ذَاتِ الْجنب»

4524. उम्म कैस रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "तुम इस इलाक (हलक के वरम) की वजह से अपनी औलाद का हलक क्यों दबाती हो? पस तुम यह औद हिंदी इस्तेमाल करो क्योंकि उस में सात

बीमारियों से शिफा है, उनमें से एक निमोनिया है, हलक के वरम की वजह से इसे नाक से डाला जाए और निमोनिया की सूरत में मुंह के एक तरफ से डाली जाए”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5713) و مسلم (76 / 2214)، (5764)

٤٥٢٥ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ عَائِشَةَ وَرَافِعِ بْنِ خَدِيجٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْحمى من فيح جَهَنَّم فَأَبْرِدُوهَا بِالْمَاءِ»

4525. आइशा और राफीअ बिन ख़दीज रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बुखार जहन्नम की भांप से है, तुम उसे पानी के साथ ठंडा करो”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (3263) و مسلم (81 / 2210)، (5755)

٤٥٢٦ - (صَحِيح) وَعَن أنسٍ قَالَ: رَخَّصَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الرُّقْيَةِ مِنَ الْعَيْنِ وَالْحُمَّةِ وَالنَّمْلَةِ. رَوَاهُ مُسلم

4526. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने नज़र लग जाने डंक में और नमली बीमारी (पसली में दाने निकल आते है और जख्म पड़ जाते हैं) की सूरत में दम करने की रुखसत इनायत फरमाई है| (मुस्लिम)

رواه مسلم (58 / 2196)، (5724)

٤٥٢٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَائِشَة قَالَتْ: أَمَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نَسْتَرْقِيَ مِنَ الْعَيْنِ

4527. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, नबी ﷺ ने नज़र लग जाने की सूरत में दम कराने का हुक्म फ़रमाया है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5738) و مسلم (56 / 2195)، (5722)

٤٥٢٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أُمِّ سَلَمَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى فِي بَيْتِهَا جَارِيَةً فِي وجهِها سفعة يَعْنِي صُفْرَةً فَقَالَ: «اسْتَرْقُوا لَهَا فَإِنَّ بِهَا النَّظْرَةَ»

4528. उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ ने उस के घर में एक लड़की देखी जिसके चेहरे

पर ज़र्दी थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे दम कराओ क्योंकि इसे नज़र लगी है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاری (5738) و مسلم (59 / 2197)، (5725)

٤٥٢٩ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الرُّقَى فَجَاءَ آلُ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّهُ كَانَتْ عِنْدَنَا رُقْيَةٌ نَرْقِي بِهَا مِنَ الْعَقْرَبِ وَأَنْتَ نَهَيْتَ عَنِ الرُّقَى فَعَرَضُوهَا عَلَيْهِ فَقَالَ: «مَا أَرَى بِهَا بَأْسًا مَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ أَنْ يَنْفَعَ أَخَاهُ فَلْيَنْفَعْهُ» . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

4529. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने इसे मना फरमा दिया तो, आले अम्र बिन हज़म आए और उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हमारे पास दम था जो हम बिच्छू के दस लेने पर क्या करते थे, और आप ने उस से मना फरमा दिया है, उन्होंने वह दम आप को सुनाया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “मैं उस में कोई हरज समझता, तुम में से जो शख़्स अपने भाई को फ़ायदा पहुंचा सकता है तो वह इसे फ़ायदा पहुंचाए”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (63 / 2199)، (5731)

٤٥٣٠ - (صَحِيح) وَعَن عوفِ بن مَالك الْأَشْجَعِيّ قَالَ: كُنَّا نَرْقِي فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ كَيْفَ تَرَى فِي ذَلِكَ؟ فَقَالَ: «اعْرِضُوا عَلَيَّ رُقَاكُمْ لَا بَأْسَ بِالرُّقَى مَا لم يكن فِيهِ شرك» . رَوَاهُ مُسلم

4530. ऑफ बिन मालिक अशजई रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, हम दौरे जाहिलियत में दम किया करते थे, हमने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! आप इस बारे में क्या फरमाते हैं? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अपने दम मुझे सुनाओ, ऐसा दम जिस में शिर्क न हो उस में कोई हरज नहीं”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (64 / 2200)، (5732)

٤٥٣١ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْعَيْنُ حَقٌّ فَلَوْ كَانَ شَيْءٌ سَابَقَ الْقَدَرِ سَبَقَتْهُ الْعَيْنُ وَإِذَا اسْتُغْسِلْتُمْ فاغسِلوا» . رَوَاهُ مُسلم

4531. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “नज़र (की तासीर) साबित है, अगर कोई चीज़ तकदीर पर सबकत ले जाने वाली होती तो नज़र उस पर सबकत ले जाती और जब तुम से ग़ुस्ल का मुतालबा किया जाए तो ग़ुस्ल करो”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (42 / 2188)، (5702)

دوا और झाड़-फुक का बयान • كتاب الطِّبّ والرقى

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٤٥٣٢ - (صَحِيح) عَنْ أَسَامَةَ بْنِ شَرِيكٍ قَالَ: قَالُوا: يَا رَسُول الله أفنتداوى؟ قَالَ: «نعم يَا عبد اللَّهِ تَدَاوَوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَمْ يَضَعْ دَاءً إِلَّا وَضَعَ لَهُ شِفَاءً غَيْرَ دَاءٍ وَاحِدٍ الْهَرم» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4532. उसामा बिन शरीक रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! क्या हम इलाज मुआल्ज़ा करे? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, अल्लाह के बन्दों इलाज मुआल्ज़ा करो क्योंकि अल्लाह ने बुढ़ापे के सिवा ऐसी कोई बीमारी पैदा नहीं की जिसके लिए शिफा पैदा न की हो"| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (4 / 278) و الترمذی (2038 وقال : حسن صحيح) [و ابن ماجه (3436) [و ابوداؤد (3855) [و صححه الحاكم (4 / 399) و وافقه الذهبى]

٤٥٣٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا تُكْرِهُوا مَرْضَاكُمْ عَلَى الطَّعَامِ فَإِنَّ اللَّهَ يُطْعِمُهُمْ وَيَسْقِيهِمْ» . رَوَاهُ التِّرمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

4533. उक्बा बिन आमिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अपने बिमारो को खाने पर मजबूर न किया करो, क्योंकि अल्लाह तआला उन्हें खिलाता पिलाता है"| तिरमिज़ी, इब्ने माजा और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2040) و ابن ماجه (3444) * بكر بن يونس بن بكير ضعيف ضعفه الجمهور و للحديث شواهد ضعيفة عند الحاكم (4 / 410) وغيره

٤٥٣٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَوَى أَسْعَدَ بْنَ زُرَارَةَ مِنَ الشَّوْكَةِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيث غَرِيب

4534. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने सईद बिन ज़ुरारा रदियल्लाहु अन्हु को शौकह (ये सुर्ख पैदा है जो गलबा खून से पैदा होता है) की बीमारी में दाग दिया| तिरमिज़ी, और फ़रमाया यह हदीस ग़रीब है| (सहीह)

صحيح ، رواه الترمذی (2050)

٤٥٣٥ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن زيد بن أَرقم قَالَ: أَمَرَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نَتَدَاوَى مِنْ ذَاتِ الْجَنْبِ بِالْقُسْطِ البحريِّ وَالزَّيْت. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4535. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें हुक्म फ़रमाया के हम कुस्त बहरी (sea incense) और जैतून से निमोनिया का इलाज करे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2079 وقال : حسن صحیح) * فیه میمون ابو عبدالله : ضعیف

٤٥٣٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَنْعَتُ الزَّيْتَ وَالْوَرْسَ مِنْ ذَاتِ الْجَنْبِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4536. ज़ैद बिन अरक़म रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ निमोनिया के इलाज के लिए जैतून और वरस (एक बूटी) की तारीफ़ किया करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2078 وقال : حسن صحیح) * میمون : ضعیف ، انظر الحدیث السابق (4535)

٤٥٣٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أَسْمَاءَ بِنْتِ عُمَيْسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ سَأَلَهَا: «بِمَ تستَمشِينَ؟» قَالَت: بالشُّبْرِمِ قَالَ: «حارٌّ حارٌّ» . قَالَتْ: ثُمَّ اسْتَمْشَيْتُ بِالسَّنَا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَوْ أَنَّ شَيْئًا كَانَ فِيهِ الشِّفَاءُ مِنَ الْمَوْتِ لَكَانَ فِي السَّنَا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث حسن غَرِيب

4537. अस्मा बिन्ते उमैश रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है के नबी ﷺ ने मुझ से दरियाफ्त किया तुम जुलाब के लिए कोनसी दवा इस्तेमाल करती हो? मैंने अर्ज़ किया: शुबरुम (चने की तरह एक दाना है जो के बहोत गरम है, उस का पानी दवा के तौर पर पीते हैं) आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो तो इन्तिहाई गरम है”, वह बयान करती हैं, फिर मैं सना के साथ जुलाब लेती, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “अगर किसी चीज़ में मौत की शिफा होती तो वह सना में होती”, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2081) و ابن ماجه (3461) * فی سماع عتبة من اسماء نظر و للحدیث طریق آخر عند ابن ماجه (3461) و سنده ضعیف

٤٥٣٨ - (ضَعِيف) وشطره الأول (صَحِيحٌ)»» وَعَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ الدَّاءَ وَالدَّوَاءَ وَجَعَلَ لِكُلِّ دَاءٍ دَوَاءً فَتَدَاوُوا وَلَا تداوَوْا بحرامٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4538. अबू दरदा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “बेशक अल्लाह ने बीमारी उतारी है तो उस ने दवाई भी उतारी है और उस ने हर बीमारी के लिए दवाई बनाई है, तुम इलाज करो और

हराम चीज़ के साथ इलाज मत करो”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3874) * ثعلبة بن مسلم : مستور و معنى الحديث صحيح

٤٥٣٩ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الدَّوَاءِ الْخَبِيثِ. رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ

4539. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हराम चीज़ को बतौर दवा इस्तेमाल करने से भी मना फ़रमाया है| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه احمد (2 / 305) و ابوداؤد (3870) و الترمذی (2045) و ابن ماجه (3459)

٤٥٤٠ - (صَحِيح) وَعَنْ سَلْمَى خَادِمَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَتْ: مَا كَانَ أَحَدٌ يَشْتَكِي إِلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَجَعًا فِي رَأْسِهِ إِلَّا قَالَ: «احْتَجِمْ» وَلَا وَجَعًا فِي رِجْلَيْهِ إِلَّا قَالَ: «اخْتَضِبْهُمَا» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4540. नबी ﷺ की खादिमा सलमा रदियल्लाहु अन्हा से रिवायत है उन्होंने कहा: जिस शख़्स ने भी रसूलुल्लाह ﷺ से दर्दे सर की शिकायत की तो आप ﷺ ने हमें फ़रमाया के “ पछने (हिजामा) लगाओ”, और जिस ने अपने पाँव में तकलीफ का ज़िक्र किया तो आप ﷺ ने इसे फ़रमाया: “महंदी लगाओ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3858) * عبيدالله بن على : لين الحديث و للحديث شواهد ضعيفة عند احمد (6 / 462 ح 2816928170) وغيره

٤٥٤١ - (لم تتمّ دراسته) وعنها قَالَت: مَا كَانَ يَكُونَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُرْحَةٌ وَلَا نَكْبَةٌ إِلَّا أَمَرَنِي أَنْ أَضَعَ عَلَيْهَا الْحِنَّاء. رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ

4541. नबी ﷺ की खादिमा सलमा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ को तलवार वगैरा या किसी और तरह कोई भी जख्म आ जाता तो आप ﷺ मुझे उस पर महंदी लगाने का हुक्म फरमाते| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (2054 وقال : غريب) * عبيد الله بن على لين الحديث ، انظر الحديث السابق (4540)

٤٥٤٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي كَبْشَة الْأَنْمَارِيِّ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يحتجم على هامته وَبَين كفيه وَهُوَ يَقُولُ: «مَنْ أَهْرَاقَ مِنْ هَذِهِ الدِّمَاءِ فَلَا يَضُرُّهُ أَنْ لَا يَتَدَاوَى بِشَيْءٍ لِشَيْءٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد وَابْن مَاجَه

4542. अबू कब्शा अन्मारी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ अपने सर और अपने कंधो के दरमियान पछने (हिजामा) लगाया करते थे और आप ﷺ फरमाते थे: “जो शख़्स इस खून में से कुछ खून निकलवाता है तो अगर वह किसी मर्ज़ का किसी दवाई के ज़रिए इलाज न भी करे तो उस के लिए कुछ मुज़िर नहीं|” (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3859) وابن ماجه (3484) * الولید بن مسلم کان یدلس تدلیس التسویة ولم یصرح بالسماع المسلسل و اخطا من براه من التدليس

٤٥٤٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ جَابِرٌ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ احْتَجَمَ عَلَى وَرِكِهِ مِنْ وَثْءٍ كَانَ بِهِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4543. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने मोच के दर्द की वजह से अपने रान के ऊपर पछने (हिजामा) लगवाए| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه ابوداؤد (3863) [و النسائی (2851) و ابن ماجه (3082)] * ابو الزبیر مدلس و عنعن و حدیث ابی داود (1836) یغنی عنه

٤٥٤٤ - (صَحِيح) وَعَن ابنِ مَسْعُود قَالَ: حَدَّثَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ علن لَيْلَةَ أَسَرِيَ بِهِ: أَنَّهُ لَمْ يَمُرَّ عَلَى مَلَأٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِلَّا أَمَرُوهُ: «مُرْ أُمَّتَكَ بِالْحِجَامَةِ» . رَوَاهُ [ص:١٢٨ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث حسن غَرِيب

4544. इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने शब ए मेअराज के मुतल्लिक हदीस बयान फरमाई के वह फरिश्तो की जिस भी जमाअत के पास से गुज़रे तो वह हमें कहते के “ अपनी उम्मत को पछने (हिजामा) लगाने का हुक्म फरमाइए”, और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

سنده ضعیف ، رواه الترمذی (2052) و ابن ماجه (3479 بسند آخر عن انس رضی الله عنه ، فیه جبارة و کثیر بن سلیم مجروحان) * عبد الرحمن بن اسحاق الکوفی الواسطی ضعیف و للحدیث شواهد ضعیفة

٤٥٤٥ - (صَحِيح) وَعَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عُثْمَانَ: إِنَّ طَبِيبًا سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ضِفْدَعٍ يَجْعَلُهَا فِي دَوَاءٍ فَنَهَاهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ قَتْلِهَا. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4545. अब्दुल रहमान बिन उस्मान रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के एक तबीब ने नबी ﷺ से मेंडक को दवाई में डालने के मुतल्लिक दरियाफ्त किया तो नबी ﷺ ने इसे उस के क़त्ल करने से मना फरमा दिया| (सहीह)

اسناده صحیح ، رواه ابوداؤد (3871)

٤٥٤٦ - (صَحِيح) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَحْتَجِمُ فِي الْأَخْدَعَيْنِ وَالْكَاهِلِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَزَادَ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ: وَكَانَ يحتجمُ سبعَ عشرَة وتسع عشرَة وَإِحْدَى وَعشْرين

4546. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ गर्दन की दोनों रगों और कंधो के दरमियान पछने (हिजामा) लगाया करते थे| अबू दावुद, इमाम तिरमिज़ी और इमाम इब्ने माजा ने यह इज़ाफा नकल किया है आप ﷺ (चाँद की) सतरह, उन्नीस और इक्कीस तारीख को पछने (हिजामा) लगाया करते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3860) و الترمذی (2051 وقال : حسن غريب) و ابن ماجه (3483) * قتادة عنعن

٤٥٤٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يَسْتَحِبُّ الْحِجَامَةَ لِسَبْعَ عَشْرَةَ وَتِسْعَ عَشْرَةَ وَإِحْدَى وَعِشْرِينَ. رَوَاهُ فِي شرح السّنة

4547. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के नबी ﷺ (चाँद की) सत्रह, उन्नीस और इक्कीस तारीख को पछने (हिजामा) लगाना पसंद फरमाते थे| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوی فی شرح السنة (12 / 150 ح 3235) [و الترمذی (2052 بلفظ آخر) و الحاکم (4 / 409)] * فيه عباد بن منصور ضعيف

٤٥٤٨ - (حسن) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مَنِ احْتَجَمَ لِسَبْعَ عَشْرَةَ وَتِسْعَ عَشْرَةَ وَإِحْدَى وَعِشْرِينَ كَانَ شِفَاءً لَهُ مِنْ كُلِّ دَاء» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4548. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “जो शख़्स (चाँद की) सतरह, उन्नीस और इक्कीस तारीख को पछने (हिजामा) लगवाए वह हर बीमारी से महफ़ूज़ रहेगा”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3861)

٤٥٤٩ - (ضَعِيف) وَعَن كبشةَ بنت أبي بكرةَ: أَنَّ أَبَاهَا كَانَ يُنْهِي أَهْلَهُ عَنِ الْحِجَامَةِ يَوْمَ الثُّلَاثَاءِ وَيَزْعُمُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أَنَّ يَوْمَ الثُّلَاثَاءِ يَوْمُ الدَّمِ وَفِيهِ سَاعَةٌ لَا يَرْقَأُ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4549. कब्शत बिन्ते अबी बकरह से रिवायत है के उस के वालिद मंगल के रोज़ पछने (हिजामा) लगाने से अपने अहले खाना को मना किया करते थे, और वह रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं की “ मंगल का दिन (गलबा) खून का दिन है और उस में एक घड़ी है के उस में खून थमता नहीं|” (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3862) * عمة بكار : لايعرف حالها و الحديث ضعفه البيهقی

٤٥٥٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ الزُّهْرِيِّ مُرْسَلًا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مِنْ احْتَجَمَ يَوْمَ [ص:١٢٨ الْأَرْبِعَاءِ أَوْ يَوْمَ السَّبْتِ فَأَصَابَهُ وَضَحٌ فَلَا يَلُومَنَّ إِلَّا نَفْسَهُ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَقَالَ: وَقَدْ أسْند وَلَا يَصح

4550. ज़ुहरी रहिमहुल्लाह रसूलुल्लाह ﷺ से मुरसल रिवायत करते हैं, ‚” जो शख़्स बुध या हफ्ते के रोज़ पछने (हिजामा) लगवाए और वह बरस का शिकार हो जाए तो वह इस सूरत में खुद को ही मलामत करे”| अहमद अबू दावुद, और अबू दावुद रहिमहुल्लाह ने कहा यह मशहूर है के यह रिवायत मुसनद है, लेकिन यह सहीह नहीं| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد فى المراسيل (451 ، نسخة أخرى : 445) * السند ضعيف لا رساله و الرواية المسندة عند الحاكم (4 / 409410) و البيهقى (9 / 340) من طريق سليمان بن ارقم (ضعيف جدًا) عن الزهرى عن سعيد بن المسيب عن ابى هريرة الخ به

٤٥٥١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ مُرْسَلًا قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ احْتَجَمَ أَوِ اطَّلَى يَوْمَ السَّبْتِ أَوِ الْأَرْبِعَاءِ فَلَا يَلُومَنَّ إِلَّا نَفْسَهُ فِي الوَضَحِ» . رَوَاهُ فِي شرح السّنة

4551. इमाम ज़ुहरी उसे मुरसल रिवायत है उन्होंने कहा: रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स हफ्त या बुध के रोज़ पछने (हिजामा) लगवाए या कोई दवाई लेप करे तो वह बरस का शिकार होने की सूरत में सिर्फ अपने नफ्स को ही मलामत करे”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه البغوى فى شرح السنة (12 / 151152 بعد ح 3235 بدون سند) * السند مرسل ، ان صح الى الزهرى رحمه الله

٤٥٥٢ - (حسن) وَعَنْ زَيْنَبَ امْرَأَةِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ رَأَى فِي عُنُقِي خَيْطًا فَقَالَ: مَا هَذَا؟ فَقُلْتُ: خَيْطٌ رُقِيَ لِي فِيهِ قَالَتْ: فَأَخَذَهُ فَقَطَعَهُ ثُمَّ قَالَ: أَنْتُمْ آلَ عَبْدَ اللَّهِ لَأَغْنِيَاءُ عَنِ الشِّرْكِ سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُول: «إِنَّ الرُّقَى وَالتَّمَائِمَ وَالتِّوَلَةَ شِرْكٌ» فَقُلْتُ: لِمَ تَقُولُ هَكَذَا؟ لَقَدْ كَانَتْ عَيْنِي تُقْذَفُ وَكُنْتُ أَخْتَلِفُ إِلَى فُلَانٍ الْيَهُودِيِّ فَإِذَا رَقَاهَا سَكَنَتْ فَقَالَ عَبْدُ اللَّهِ: إِنَّمَا ذَلِكِ عَمَلُ الشَّيْطَانِ كَانَ يَنْخَسُهَا بِيَدِهِ فَإِذَا رُقِيَ كُفَّ عَنْهَا إِنَّمَا كَانَ يَكْفِيكِ أَنْ تَقُولِي كَمَا كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «أَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ أَنْتَ الشَّافِي لَا شِفَاءَ إِلَّا شِفَاؤُكَ شِفَاءٌ لَا يُغَادِرُ سقما» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4552. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु की अहलिया जैनब रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के अब्दुल्लाह ने मेरी गर्दन में एक धागा देखा तो पूछा यह क्या है? मैंने कहा मेरे लिए दम क्या हुआ धागा है, उन्होंने इसे पकड़ कर काट दिया, फिर फ़रमाया तुम आले अब्दुल्लाह शिर्क से बेनियाज़ हो, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “बेशक दम, तावीज़ और जादू शिर्क है”, मैंने कहा आप इस तरह क्यों कहते हैं? मेरी आँख में शदीद दर्द था में फलां यहूदी के पास जाती थी, जब वह दम करते तो दर्द रुक जाता था, (ये सुन कर) अब्दुल्लाह ने फ़रमाया: यह महज शैतान का अमल है, वह अपना हाथ आँख पर मारता है, जब दम किया जाता है तो वह हाथ मारना छोड़ देता है, तुम्हारे लिए इतना कहना ही काफी था जैसे रसूलुल्लाह ﷺ फ़रमाया करते थे: “लोगो

के रब! बीमारी ले जा, और शिफा अता फरमा, तू ही शिफा अता करने वाला है, शिफा सिर्फ तेरी ही है, ऐसी शिफा अता कर के वह कोई बीमारी न छोड़े”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3883) [و ابن ماجه (3530)] * سليمان الاعمش مدلس و عنعن و للحديث شواهد ضعيفة و اخرج الحاكم (4 / 217 ح 7505 ، اتحاف المهرة 10 / 453 ح 13163) عن قيس بن السكن الاسدى قال :'' دخل عبدالله بن مسعود رضى الله عنه على امراة فرأى عليها حرزا من الحمرة فقطعه قطعًا عنيفًا ثم قال : ان آل عبدالله عن الشرك اغنياء و قال : كان مما حفظنا عن النبى صلى الله عليه و آله وسلم ان الرقى و التمائم و التولة من الشرك '' و صححه و وافقه الذهبى ، ابن موسى هو عبيدالله و السند صحيح

٤٥٥٣ - (صَحِيح) وَعَن جَابر قَالَ: سُئِلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ النُّشْرَةِ فَقَالَ: «هُوَ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4553. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ से जादू, मंतर (सिफलि अमल को सिफलि इल्म से दूर करने) के मुतल्लिक पूछा गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो शैतानी अमल है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3868)

٤٥٥٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: [ص:١٢٨] «مَا أُبَالِي مَا أَتَيْتُ إِنْ أَنَا شَرِبْتُ تِرْيَاقًا أَوْ تَعَلَّقْتُ تَمِيمَةً أَوْ قُلْتُ الشِّعْرَ مِنْ قِبَلِ نَفْسِي» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4554. अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “मैं कुछ फर्क नहीं समझता की मैं तरियाक पियूं या तावीज़ लटकाऊं या अपनी तरफ से शेर कहूँ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3869) * عبد الرحمن بن رافع التنوخى : ضعيف

٤٥٥٥ - (صَحِيح) وَعَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ اكْتَوَى أَوِ اسْتَرْقَى فَقَدْ بَرِئَ مِنَ التَّوَكُّلِ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

4555. मुगिरा बिन शैबा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जिस शख़्स ने दाग लगवाया या दम कराया तो वह तवक्कुल से ला ताअल्लूक हो गया”| (हसन)

حسن ، رواه احمد (4 / 349) و الترمذى (2055) و ابن ماجه (3489)

٤٥٥٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عِيسَى بْنِ حَمْزَةَ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى عبدِ الله بن عُكيم وَبِهِ حُمْرَةٌ فَقُلْتُ: أَلَا تُعَلِّقُ تَمِيمَةً؟

فَقَالَ: نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ ذَلِكَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ تَعَلَّقَ شَيْئًا وُكِلَ إِليهِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4556. इसा बिन हम्ज़ा रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, मैं अब्दुल्लाह बिन उकैम रदियल्लाहु अन्हु के पास गया तो उन्हें सुर्ख बादा का मर्ज़ था, मैंने कहा आप तावीज़ क्यों नहीं लेते? उन्होंने कहा, हम उस से अल्लाह की पनाह चाहते है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स कोई चीज़ लटकाता है तो इसे इसी के सुपुर्द कर दिया जाता है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (لم اجده) [و الترمذی (2079) و احمد (4 / 310311)] * محمد بن عبد الرحمن بن ابی لیلی ضعیف و للحدیث شاهد ضعیف عند النسائی (7 / 112 ح 4084)

٤٥٥٧ - (صَحِيح) وَعَن عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا رُقْيَةَ إِلَّا مِنْ عَيْنٍ أَوْ حُمَةٍ» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَأَبُو دَاوُد

4557. इमरान बिन हुसैन रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नज़र लग जाने या किसी के डसने से दम करना जाईज़ है”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (4 / 436) و الترمذی (2057) و ابوداؤد (3884)

٤٥٥٨ - (ضَعِيف) وَرَوَاهُ ابْن مَاجَه عَن بُرَيْدَة

4558. इमाम इब्ने माजा ने इसे बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (सहीह)

صحيح ، رواه ابن ماجه (3513)

٤٥٥٩ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا رُقْيَةَ إِلَّا مِنْ عَيْنٍ أَوْ حُمَةٍ أَوْ دَمٍ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4559. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नज़र लग जाने या किसी चीज़ के दस लेने या नकसीर जारी होने पर दम करना दुरुस्त है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3889) * شریک القاضی مدلس و عنعن و للحدیث شاهد ضعیف عند ابن ابی شیبة (7 / 393)

٤٥٦٠ - (صَحِيح) وَعَن أَسمَاء بنت عُميس قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ وَلَدَ جَعْفَرٍ تُسْرِعُ إِلَيْهِمُ الْعَيْنُ أَفَأَسْتَرْقِي لَهُمْ؟ قَالَ:

«نَعَمْ فَإِنَّهُ لَوْ كَانَ شَيْءٌ سَابِقُ الْقَدَرِ لَسَبَقَتْهُ العينُ» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ وَابْن مَاجَه

4560. अस्मा बिन उमैश रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! जाफर रदियल्लाहु अन्हु की औलाद को बहोत जल्द नज़र लग जाती है, क्या मैं उन्हें दम कराऊँ? आप ﷺ ने फ़रमाया: हाँ, क्योंकि अगर तकदीर पर कोई चीज़ ग़ालिब होती तो उस पर नज़र ग़ालिब आती”| (सहीह)

صحيح ، رواه احمد (6 / 438) و الترمذی (2059 وقال : حسن صحیح) و ابن ماجه (3510)

٤٥٦١ - (صَحِيح) وَعَن الشَّفاءِ بنت عبد الله قَالَتْ: دَخَلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنَا عِنْدَ حَفْصَةَ فَقَالَ: «أَلَا تُعَلِّمِينَ هَذِهِ رُقْيَةَ النَّمْلَةِ كَمَا عَلَّمْتِيهَا الْكِتَابَةَ؟» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4561. शिफाअ बिन्ते अब्दुल्लाह बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ तशरीफ़ लाए तो मैं हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा के पास थी, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम इस (हफ्सा (रअ)) को नमली (फुंसियाँ जो पसली पर निकलती है) का दम नहीं सीखा देती जिस तरह तुमने इसे लिखना सिखाया है”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3887)

٤٥٦٢ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي أَمَامَةَ بْنِ سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ قَالَ: رَأَى عَامِرُ بْنُ رَبِيعَةَ سَهْلَ بْنَ حُنَيْفٍ يَغْتَسِلُ فَقَالَ: وَاللَّهِ مَا رَأَيْتُ كَالْيَوْمِ وَلَا جِلْدَ مُخَبَّأَةٍ قَالَ: فَلُبِطَ سَهْلٌ فَأَتَى رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقِيلَ لَهُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلْ لَكَ فِي سَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ؟ وَاللَّهِ مَا يَرْفَعُ رَأْسَهُ فَقَالَ: «هَلْ تَتَّهِمُونَ لَهُ أَحَدًا؟» فَقَالُوا: نَتَّهِمُ عَامِرَ بْنَ رَبِيعَةَ قَالَ: فَدَعَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَامِرًا فَتَغَلَّظَ عَلَيْهِ وَقَالَ: «عَلَامَ يَقْتُلُ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ؟ أَلَا بَرَّكْتَ؟ اغْتَسِلْ لَهُ» . فَغَسَلَ لَهُ عَامِرٌ وَجْهَهُ وَيَدَيْهِ وَمِرْفَقَيْهِ وَرُكْبَتَيْهِ وَأَطْرَافَ رِجْلَيْهِ وَدَاخِلَةَ إِزَارِهِ فِي قَدَحٍ ثُمَّ صُبَّ عَلَيْهِ فَرَاحَ مَعَ النَّاسِ لَيْسَ لَهُ بَأْس. رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ وَرَوَاهُ مَالِكٌ وَفِي رِوَايَتِهِ: قَالَ: «إِن الْعين حق تَوَضَّأ لَهُ»

4562. अबू उमामा बिन सहल बिन हनीफ बयान करते हैं, आमिर बिन रबिआ ने सहल बिन हनीफ को ग़ुस्ल करते हुए देखा तो उन्होंने कहा: अल्लाह की क़सम! मैंने जिस क़दर सफ़ेद व मुलायम जिल्द आज देखी है ऐसी कभी नहीं देखी रावी बयान करते हैं, इस बात पर सहल बेहोश हो कर गिर गए, उन्हें रसूलुल्लाह ﷺ के पास लाया गया और आप ﷺ से अर्ज़ किया गया, अल्लाह के रसूल! क्या आप को सहल बिन हनीफ के बारे में कुछ खबर है? अल्लाह की क़सम! वह तो अपना सर भी नहीं उठाते, आप ﷺ ने फ़रमाया: “क्या तुम उस के मुतल्लिक किसी के बारे में गुमान करते हो?” उन्होंने अर्ज़ किया, हम आमिर बिन रबिआ के बारे में गुमान करते हैं रावी बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने आमिर को बुलाया और उस से सख्त लहजे में बात की और फ़रमाया: “तुम अपने भाई को क़त्ल करते हो, तुमने उस के लिए बरकत की दुआ क्यों की उस के लिए ग़ुस्ल करो”, आमिर ने उस के लिए एक बर्तन में अपना चेहरा, अपने हाथ, अपने कोहनिया, अपने घुटने, पाँव के अतराफ़ और आज़ार के साथ के आज़ाअ धोए, फिर वह पानी उस पर डाला गया तो वह (उठ कर) लोगों के साथ चल पड़ा और इसे कोई

तकलीफ नहीं थी| और इमाम मालिक ने इसे रिवायत किया है और उनकी रिवायत में है फ़रमाया: “बेशक नज़र (की तासीर) साबित है, उस के लिए वुज़ू कर”, उस ने उस के लिए वुज़ू किया| (सहीह)

صحيح ، رواه البغوی فی شرح السنة (12 / 164 ح 3245) و مالک (2 / 939 ح 1811) [و ابن ماجه (3509) و صححه ابن حبان (الموارد : 1424)]

٤٥٦٣ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَعَوَّذُ مِنَ الْجَانِّ وَعَيْنِ الْإِنْسَانِ حَتَّى نَزَلَتِ الْمُعَوِّذَتَانِ فَلَمَّا نزلت أَخذ بهما وَترك سِوَاهُمَا. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَابْنُ مَاجَهْ وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ: هَذَا حَدِيث حسن غَرِيب

4563. अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ (अज़कार के ज़रिए) जिन्नो और इंसान की नज़र से पनाह तलब किया करते थे हत्ता के सूरत अल फलक और सूरत अल नास नाज़िल हुई, जब वह नाज़िल हुई तो आप ने उन्हें ले लिया और जो इन दोनों के अलावा था इसे तर्क कर दिया| और इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: यह हदीस हसन ग़रीब है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه الترمذی (3058) و ابن ماجه (3511) [و النسائی (5496)] * سعيد الجريری اختلط ولم اجد راويا عنه فی هذا الحديث قبل اختلاطه

٤٥٦٤ - (ضَعِيف) وَعَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «هَلْ رُئِيَ فِيكُمُ الْمُغَرِّبُونَ؟» قُلْتُ: وَمَا الْمُغَرِّبُونَ؟ قَالَ: «الَّذِينَ يَشْتَرِكُ فِيهِمُ الْجِنُّ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4564. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझे फ़रमाया: “क्या तुम में “ मुगर्रिबुन” देखे गए ?” मैंने अर्ज़ किया: “ मुगर्रिबुन” क्या है आप ﷺ ने फ़रमाया: “वो लोग (जो अल्लाह का ज़िक्र नहीं करते) उनमें जिन्न (शैतान) शरीक हो जाता है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (5107) * ابن جريج مدلس : عنعن و ابوه لين و ام حميد : لايعرف حالها

٤٥٦٥ - (لم تتمّ دراسته) وذُكر حديثُ ابْن عباسٍ: «خيرَ مَا تداويتم» فِي «بَاب التَّرَجُّل»

4565. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से मरवी हदीस: “बेहतरीन इलाज जिस के(...”, بَابُ التَّرَجُّلِ) (कंघी का बयान) में ज़िक्र की गई है| (ज़ईफ़)

ضعيف ، تقدم (4473)

दवा और झाड़-फुक का बयान • كتاب الطِّبّ والرقى

तीसरी फस्ल • الْفَصْلُ الثَّالِثُ

٤٥٦٦ - (ضَعِيف) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْمَعِدَةُ حَوْضُ الْبَدَنِ وَالْعُرُوقُ إِلَيْهَا وَارِدَةٌ فَإِذَا صَحَّتِ الْمَعِدَةُ صَدَرَتِ الْعُرُوقُ بِالصِّحَّةِ وَإِذَا فَسَدَتِ الْمَعِدَةُ صَدَرَتِ الْعُرُوقُ بِالسقمِ»

4566. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मैदा बदन का हौज़ है, जबकि रगे (हर तरफ से) उसकी तरफ आती है, जब मैदा दुरुस्त होगा तो रगे तंदुरस्ती लेकर वापस आती है, और जब मैदा बीमार होता है, तो रगे बीमारी लेकर वापस आती है। (मौज़ू)

موضوع ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (5796 ، نسخة محققة : 5414) [و ابن الجوزى فى الموضوعات (2 / 284)] * فيه ابراهيم بن جريج الرهاوى متهم و يحيى بن عبدالله البابلتى : ضعيف

٤٥٦٧ - (صَحِيح) وَعَن عَليّ قَالَ: بَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ لَيْلَةٍ يُصَلِّي فَوَضَعَ يَدَهُ عَلَى الْأَرْضِ فَلَدَغَتْهُ عَقْرَبٌ فَنَاوَلَهَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِنَعْلِهِ فَقَتَلَهَا فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ: «لَعَنَ اللَّهُ الْعَقْرَبَ مَا تَدَعُ مُصَلِّيًا وَلَا غَيْرَهُ أَوْ نَبِيًّا وَغَيْرَهُ» ثُمَّ دَعَا بملحٍ وماءٍ فجعله فِي إِنَاءٍ ثمَّ جَعَلَ يَصُبُّهُ عَلَى أُصْبُعِهِ حَيْثُ لَدَغَتْهُ وَيَمْسَحُهَا وَيُعَوِّذُهَا بِالْمُعَوِّذَتَيْنِ. رَوَاهُمَا الْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ

4567. अली रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक रात रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ पढ़ रहे थे आप ने अपना हाथ ज़मीन पर रखा तो बिच्छु ने आप को दस लिया, रसूलुल्लाह ﷺ ने अपना जूता मार कर इसे मार दिया, जब आप ﷺ फारिग़ हुए तो फ़रमाया: “अल्लाह बिच्छु पर लानत फरमाए वह ना किसी नमाज़ी को छोड़ता है न किसी और को, या फ़रमाया: “किसी नबी को छोड़ता है के किसी और को”, फिर आप ने नमक और पानी मंगवाया और उन्हें एक बर्तन में जमा कर दिया, फिर आप इस ऊँगली पर जहाँ उस ने दसा था डालने लगे, इसे मलने लगे और मुअव्वीज़तेन के ज़रिए उस से पनाह तलब करने लगे। इमाम बयहकी ने दोनों रिवायतों शौबुल ईमान में ज़िक्र की है। (हसन)

حسن ، رواه البيهقى فى شعب الايمان (2575 ، نسخه محققة : 2340 و سنده حسن) [و ابن ابى شيبة فى المصنف (7 / 398 ، 10 / 418419)] و حسنه الهيشمى وغيره

٤٥٦٨ - (صَحِيح) وَعَن عُثْمَانَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَوْهَبٍ قَالَ: أَرْسَلَنِي أَهْلِي إِلَى أُمِّ سَلَمَةَ بِقَدَحٍ مِنْ مَاءٍ وَكَانَ إِذَا أَصَابَ الْإِنْسَانَ عَيْنٌ أَوْ شَيْءٌ بَعَثَ إِلَيْهَا مِخْضَبَهُ فَأَخْرَجَتْ مِنْ شَعْرُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَكَانَتْ تُمْسِكُهُ فِي جُلْجُلٍ مِنْ فِضَّةٍ فَخَضْخَضَتْهُ لَهُ فَشَرِبَ مِنْهُ قَالَ: فَاطَّلَعْتُ فِي الْجُلْجُلِ فَرَأَيْتُ شَعرَات حَمْرَاء. رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4568. उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन मवहब बयान करते हैं, मेरे अहले खाना ने पानी का प्याला दे कर मुझे उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा के पास भेजा, और यह दस्तूर था की जब किसी को नज़र लग जाती या कोई और मसअले दरपेश होता तो वह पानी का बर्तन उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा की तरफ भेज दिया करते, वह रसूलुल्लाह ﷺ के बाल, जो के उन्होंने चाँदी की घंटी में रखे हुए थे, निकालती और उन्हें इस शख़्स के लिए (पानी में) हिलाती और बीमार आदमी वह पानी पि लेता, रावी बयान करते हैं, मैंने इस डिबिया में झांक कर देखा तो मैंने सुर्ख बाल देखे| (बुखारी)

رواه البخاری (5896)

٤٥٦٩ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي هريرةَ إِنَّ نَاسًا مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالُوا لرسولِ الله: الْكَمْأَةُ جُدَرِيُّ الْأَرْضِ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْكَمْأَةُ مِنَ الْمَنِّ وَمَاؤُهَا شِفَاءٌ لِلْعَيْنِ وَالْعَجْوَةُ مِنَ الْجَنَّةِ وَهِيَ شِفَاءٌ مِنَ السُّمِّ» . قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: فَأَخَذْتُ ثَلَاثَةَ أَكْمُؤٍ أَوْ خَمْسًا أَوْ سَبْعًا فَعَصَرْتُهُنَّ وَجَعَلْتُ مَاءَهُنَّ فِي قَارُورَةٍ [ص:١٢٨ وَكَحَّلْتُ بِهِ جَارِيَةً لِي عَمْشَاءَ فَبَرَأَتْ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ حسن

4569. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा में से कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह ﷺ से अर्ज़ किया, खंबी ज़मीन की चेचक है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “खंबी मन (मन व सलवा) की एक किस्म है और उस का पानी आँख के लिए बाईस शिफा है, और अज्वा (खजूर) जन्नत से है और वह हर का तरियाक है”, अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने तिन या या पांच या सात खंबिया ली, उन्हें निचोड़ कर उन के पानी को एक शीशी में रख लिया, औरमैंने अपनी इस लौंडी की आंखो में वह पानी डाला जिस की आंखो से पानी बहता रहता था, तो वह उस से सेहतियाब हो गई| तिरमिज़ी, और उन्होंने ने फ़रमाया: यह हदीस हसन है| (ज़ईफ़)

حسن ، رواه الترمذی (2068) ضعیف ، رواه الترمذی (2069) * السند منقطع

٤٥٧٠ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ لَعِقَ الْعَسَلَ ثَلَاثَ غَدَوَاتٍ فِي كلِّ شهر لم يصبهُ عَظِيم الْبلَاء»

4570. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स हर माह तीन रोज़ शहद चाटता है तो इसे कोई बड़ी बीमारी लाहक नहीं होती”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه ابن ماجه (3450) و البیهقی فی شعب الایمان (5938) * الزبیر بن سعید : لین الحدیث و عبد الحمید : مجهول

٤٥٧١ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " عَلَيْكُمْ بِالشِّفَاءَيْنِ: الْعَسَلِ

وَالْقُرْآنِ ". رَوَاهُمَا ابْنُ مَاجَهْ وَالْبَيْهَقِيُّ فِي شُعَبِ الْإِيمَانِ وَقَالَ: وَالصَّحِيحُ أَنَّ الْأَخِيرَ مَوْقُوفٌ عَلَى ابْنِ مَسْعُودٍ

4571. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “शिफा देने वाली दो चीजों को लाज़िम पकड़ो (यानी) शहद और कुरान”| इमाम इब्ने माजा ने दोनों रिवायते नकल की है और इमाम बयहकी ने उन्हें शौबुल ईमान में नकल किया, और फ़रमाया सहीह बात यह है कि आखिरी (दूसरी) हदीस इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु पर मौकूफ है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (3452) و البيهقى فى شعب الايمان (3581) * ابو اسحاق مدلس و عنعن و اخرج الخطيب باسناد ضعيف منكر عن زيد بن حباب عن شعبة عن ابى اسحاق به

٤٥٧٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن أبي كَبْشَة الْأَنْمَارِيِّ: أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ احْتَجَمَ عَلَى هَامَتِهِ مِنَ الشَّاةِ الْمَسْمُومَةِ قَالَ مَعْمَرٌ: فَاحْتَجَمْتُ أَنَا مِنْ غَيْرِ سُمٍّ كَذَلِكَ فِي يَافُوخِي فَذَهَبَ حُسْنُ الْحِفْظِ عَنِّي حَتَّى كُنْتُ أُلَقَّنُ فَاتِحَةَ الْكِتَابِ فِي الصَّلَاةِ. رَوَاهُ رزين

4572. अबू कब्शा अन्मारी रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने ज़हर वाली बकरी (खाने) की वजह से अपने सर के बिच में पछने (हिजामा) लगवाए| मअमर बयान करते हैं, मैंने भी ज़हर के असर के बगैर ही अपने सर के बिच में पछने (हिजामा) लगवाए तो मेरा हफिज़ा जाता रहा हत्ता के दोरान नमाज़ मुझे सुरह फातिहा का लुकमे दिया जाता था| (मझे नहीं मिली रवाह रजिन.)

لم اجده ، رواه رزين (لم اجده) [ولم اجده فى مصنف عبد الرزاق]

٤٥٧٣ - (ضَعِيف) وَعَن نافعٍ قَالَ: قَالَ ابنُ عمر: يَا نَافِع يَنْبغ بِي الدَّمُ فَأْتِنِي بِحَجَّامٍ وَاجْعَلْهُ شَابًّا وَلَا تَجْعَلهُ شَيخا وَلَا صَبيا. وَقَالَ ابْنِ عُمَرَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «الْحِجَامَةُ عَلَى الرِّيقِ أَمْثَلُ وَهِيَ تُزِيدُ فِي الْعَقْلِ وَتُزِيدُ فِي الْحِفْظِ وَتُزِيدُ الْحَافِظَ حِفْظًا فَمَنْ كَانَ مُحْتَجِمًا فَيَوْمَ الْخَمِيسِ عَلَى اسْمِ اللَّهِ تَعَالَى وَاجْتَنِبُوا الْحِجَامَةَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَيَوْمَ السَّبْتِ وَيَوْمَ الْأَحَدِ فَاحْتَجِمُوا يَوْمَ الِاثْنَيْنِ وَيَوْمَ الثُّلَاثَاءِ وَاجْتَنِبُوا الْحِجَامَةَ يَوْمَ الْأَرْبِعَاءِ فَإِنَّهُ الْيَوْمُ الَّذِي أُصِيبَ بِهِ أَيُّوبُ فِي الْبَلَاءِ. وَمَا يَبْدُو جُذَامٌ وَلَا بَرَصٌ إِلَّا فِي يَوْمِ الْأَرْبِعَاءِ أَوْ لَيْلَةِ الأربعاءِ» . رَوَاهُ ابنُ مَاجَه

4573. नाफेअ बयान करते हैं, इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: नाफेअ! मेरा अफशार खून बढ़ रहा है किसी पछने (हिजामा) लगाने वाले नोजवान को मेरे पास लाओ, देखना वह बुढ़ा या बच्चा न हो, रावी बयान करते हैं, इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “खाली पेट पछने (हिजामा) लगाना ज़्यादा बेहतर है, वह अक्ल व फहम और हफिज़ा में इज़ाफा करता है, जिस शख़्स ने पछने (हिजामा) लगाने हो तो वह जुमेरात के रोज़ अल्लाह तआला का नाम लेकर पछने (हिजामा) लगवाए जुमा, हफ्ते और इतवार को पछने (हिजामा) लगाने से बचा करो, पीर और मंगल को पछने (हिजामा) लगवाए और बुध के रोज़ पछने (हिजामा) लगाने से बचा करो, क्योंकि यह वह दिन है जिस रोज़ अय्यूब अलैहिस्सलाम

आज़माइश का शिकार हुए, जज़ाम और बरस बुध के रोज़ या बुध की रात ही ज़ाहिर होते हैं”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (3487) * فيه الحسن بن ابى جعفر و عثمان بن مطر : ضعيفان و للحديث شواهد ضعيفة

٤٥٧٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الْحِجَامَةُ يَوْمُ الثُّلَاثَاءِ لِسَبْعَ عَشْرَةَ مِنَ الشَّهْرِ دَوَاءٌ لِدَاءِ السَّنَةِ» . رَوَاهُ حَرْبُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ الْكِرْمَانِيُّ صَاحِبُ أَحْمَدَ وَلَيْسَ إِسْنَادُهُ بِذَاكَ هَكَذَا فِي الْمُنْتَقى

4574. मुअकिल बिन यस्सार रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “क़मरी महीने की सतरह तारीख को मंगल के दिन पछने (हिजामा) लगाना साल भर की बीमारियों के लिए दवाई है”| इमाम अहमद के शागिर्द हरब बिन इस्माइल अल किरमानी ने इसे रिवायत किया है, और उसकी सनद क़वी नहीं और मुन्तका में इसी तरह है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، هو مذكور فى منتقى الاخبار (4817) [و نيل الاوطار (8 / 208)] * فيه زيد بن ابى الحوارى وهو ضعيف ، واخرجه ابن سعد و ابن عدى و البيهقى و الطبرانى فى الصغير ، انظر تنقيح الرواة (2 / 266)

٤٥٧٥ - (لم تتمّ دراسته) وروى رزين نَحوه عَن أبي هُرَيْرَة

4575. रजीन ने उसकी मिस्ल अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है| (मुझे नहीं मिली रवाह रजिन.)

لم اجده ، رواه رزين (لم اجده)

بَاب الفأل والطيرة • बद्शुगनी का बयान

الْفَصْل الأول • पहली फस्ल

٤٥٧٦ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا طِيَرَةَ وَخَيْرُهَا الْفَأْلُ» قَالُوا: وَمَا الْفَأْلُ؟ قَالَ: «الْكَلِمَةُ الصَّالِحَة يسْمعهَا أحدكُم»

4576. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “बद्शुगनी कुछ भी नहीं, और उसकी बेहतर सूरत फाल है”, सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, फाल क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अच्छी बात जो तुम में से कोई एक सुनता है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (5754) و مسلم (110 / 2223)، (5798)

٤٥٧٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا عَدْوَى وَلَا طِيَرَةَ وَلَا هَامة وَلَا صقر وفر الْمَجْذُومِ كَمَا تَفِرُّ مِنَ الْأَسَدِ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

4577. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “न कोई बीमारी मूतआदि है और कोई बद्शुगनी है, और न अल्लव मनहूस है और न माहे सफ़र और मजज़ूम (कोढ़ के शख्स) से ऐसे भागो जैसी तो शेर से भागता है”| (बुखारी)

رواه البخارى (5707)

٤٥٧٨ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا عَدْوَى وَلَا هَامَةَ وَلَا صفر» . فَقَالَ أَعْرَابِي: يَا رَسُول فَمَا بَالُ الْإِبِلِ تَكُونُ فِي الرَّمْلِ لَكَأَنَّهَا الظباء فيخالها الْبَعِير الأجرب فيجر بِهَا؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «فَمن أعدى الأول» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

4578. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कोई बीमारी मूतआदि है और न अल्लव मनहूस है और ना ही माहे सफ़र”, (ये सुन कर) एक देहाती ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! उन ऊटों के बारे में आप का क्या ख़याल है जो रेगिस्तान में रहते है और वह हिरन मालुम होते हैं, उस में एक खारिश ज़दाह ऊंट शामिल हो जाता है तो वह उन्हें भी खारिश लगा देता है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “तो फिर पहले (ऊंट) को किस ने खारिश ज़दाह किया”| (बुखारी)

رواه البخارى (5770)

٤٥٧٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَا عَدْوَى وَلَا هَامَةَ وَلَا نَوْءَ وَلَا صفر» . رَوَاهُ مُسلم

4579. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “कोई बीमारी मूतआदि है और न अल्लव मनहूस है और कोई सितारा मनहूस है और न सफ़र मनहूस है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (106 / 2220)، (5794)

٤٥٨٠ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: «لَا عَدْوَى وَلَا صَفَرَ وَلَا غُولَ» . رَوَاهُ مُسلم

4580. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “कोई बीमारी मूतआदि है ना माहे सफ़र मनहूस है न कोई भुत है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (107 / 2222)، (5795)

٤٥٨١ - (صَحِيح) وَعَنْ عَمْرِو بْنِ الشَّرِيدِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: كَانَ فِي وَفْدِ ثَقِيفٍ رَجُلٌ مَجْذُومٌ فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّا قد بايعناك فَارْجِع» . رَوَاهُ مُسلم

4581. अमर बिन शरीद अपने वालिद से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा: जो वफद ए सकिफ में एक मजज़ूम शख़्स था, नबी ﷺ ने उसकी तरफ पैग़ाम भेजा के “तेरी बैत हो गई है लिहाज़ा तुम वापस चले जाओ”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (126 / 2231)، (5822)

بَاب الفأل و الطيرة • बद्शुगनी का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٥٨٢ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَفَاءَلُ وَلَا يَتَطَيَّرُ وَكَانَ يُحِبُّ الِاسْمَ الْحَسَنَ. رَوَاهُ فِي شَرْحِ السّنة

4582. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ फाल लेते थे और आप बद्शुगनी नहीं लेते थे और आप अच्छे नाम पसंद करते थे| (हसन)

حسن ، رواه البغوی فی شرح السنة (12 / 175 ح 3254) [و احمد (1 / 257 ، 304 ، 319)] * فیه لیث بن ابی سلیم : ضعیف و فی متابعة جریر بن عبد الحمید له نظر بل تشبت هذا المتابعة و للحدیث شواهد عند ابن ماجه (3536 و سنده حسن) و الترمذی (2839) و ابی الشیخ الاصبهانی (اخلاق النبی صلی الله علیه و آله وسلم ص 252 و سنده حسن) وغیرهم وبها صار الحدیث حسنًا ، والحمدلله

٤٥٨٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن قَطن بن قبيصَة عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الْعِيَافَةُ وَالطَّرْقُ وَالطِّيَرَةُ مِنَ الْجِبْتِ» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4583. क़तनी बिन कबिस रदियल्लाहु अन्हु अपने वालिद से रिवायत करते हैं की नबी ﷺ ने फ़रमाया: “परिंदों के ज़रिए फाल लेना, लकीरें खींच कर फाल लेना और बद्शुगनी लेना जादू की इक्साम है”| (ज़ईफ़)

سنده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3907) * حبان بن العلاء مجهول و ثقه ابن حبان وحده

٤٥٨٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «الطِّيَرَةُ شِرْكٌ» قَالَهُ ثَلَاثًا وَمَا مِنَّا إِلَّا وَلَكِنَّ اللَّهَ يُذْهِبُهُ بِالتَّوَكُّلِ. رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ وَقَالَ: [ص:١٢٩ سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ إِسْمَاعِيلَ يَقُولُ: كَانَ سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ يَقُولُ فِي هَذَا الْحَدِيثِ: «وَمَا مِنَّا إِلَّا وَلَكِنَّ اللَّهَ يُذْهِبُهُ بِالتَّوَكُّلِ» . هَذَا عِنْدِي قَوْلُ ابْنِ مَسْعُودٍ

4584. अब्दुल्लाह बिन मसउद रदियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “बद्शुगनी लेना शिर्क है, आप ने यह जुमला तीन मर्तबा फ़रमाया: “और हम में से अगर किसी का दिल में यह ख़याल आता है तो अल्लाह तवक्कुल के ज़रिए इसे ख़तम कर देता है”| अबू दावुद, तिरमिज़ी, इमाम तिरमिज़ी ने फ़रमाया: मैंने मुहम्मद बिन इस्माइल (इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह) को बयान करते हुए सुना सुलेमान बिन हरबी इस हदीस के मुतल्लिक कहा करते थे: “और हम में से किसी का दिल में उस के मुतल्लिक ख़याल आता है तो अल्लाह तवक्कुल के बाईस इसे ख़तम कर देता है”| और मेरा ख़याल है के यह जुमला इब्ने मसउद रदियल्लाहु अन्हु का कौल है| (सहीह)

صحيح ، رواه ابوداؤد (3910) و الترمذى (1614)

٤٥٨٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخَذَ بِيَدِ مَجْذُومٍ فَوَضَعَهَا مَعَهُ فِي الْقَصْعَةِ وَقَالَ: «كُلْ ثِقَةً بِاللَّهِ وَتَوَكُّلًا عَلَيْهِ» . رَوَاهُ ابْن مَاجَه

4585. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने मजज़ूम शख़्स का हाथ पकड़ा और इसे अपने साथ ही खाने के बर्तन में रखा और फ़रमाया: “अल्लाह पर एतमाद व भरोसा और तवक्कुल करते हुए खाओ”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابن ماجه (3542) [و ابوداؤد (3925) و الترمذى (1817)] * فيه مفصل بن فضالة : ضعيف

٤٥٨٦ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن سعدِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «لَا هَامَةَ وَلَا عَدْوَى وَلَا طِيَرَةَ وَإِنْ تَكُنِ الطِّيَرَةُ فِي شَيْءٍ فَفِي الدَّارِ وَالْفرس وَالْمَرْأَة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4586. सईद बिन मालिक रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “न अल्लव मनहूस है और कोई बीमारी मूतआदि है और ना ही कोई बद्शुगनी है और अगर बद्शुगनी (यानी नहूसत) किसी चीज़ में

होती तो घर घोड़े और औरत में होती"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه ابوداؤد (3921)

٤٥٨٧ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ يُعْجِبُهُ إِذَا خَرَجَ لِحَاجَةٍ أَنْ يَسْمَعَ: يَا رَاشِدُ يَا نَجِيحُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ

4587. अनस रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ जब किसी काम के लिए निकलते तो आप या राशिद (रहनुमाई पाने वाले) या नजीह (कामियाबी पाने वाले) के अल्फाज़ सुनना पसंद फ़रमाया करते थे| (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه الترمذی (1616 وقال : حسن صحيح غريب)

٤٥٨٨ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنْ بُرَيْدَةَ: أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ لَا يَتَطَيَّرُ مِنْ شَيْءٍ فَإِذَا بَعَثَ عَامِلًا سَأَلَ عَنِ اسْمِهِ فَإِذَا أَعْجَبَهُ اسْمه فَرِح بِهِ ورئي بشر ذَلِك على وَجْهِهِ وَإِنْ كَرِهَ اسْمَهُ رُئِيَ كَرَاهِيَةُ ذَلِكَ على وَجْهِهِ وَإِذَا دَخَلَ قَرْيَةً سَأَلَ عَنِ اسْمِهَا فَإِنْ أَعْجَبَهُ اسْمُهَا فَرِحَ بِهِ وَرُئِيَ بِشْرُ ذَلِكَ فِي وَجْهِهِ وَإِنْ كَرِهَ اسْمَهَا رُئِيَ كَرَاهِيَة ذَلِك فِي وَجهه. رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4588. बुरैदाह रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ किसी चीज़ से बद्शुगनी नहीं लिया करते थे, जब आप किसी आमला (गवरनर व हुक्मरान) को भेजते तो उस का नाम दरियाफ्त फरमाते, अगर आप को उस का नाम पसंद आते तो आप उस से खुश होते और इस ख़ुशी के आसार आप के चेहरे पर नज़र आते, और अगर आप उस का नाम नापसंद करते तो उसकी नापसंदगी आप के चेहरे पर नज़र आती, और जब आप किसी बस्ती में दाखिल होते तो उस का नाम दरियाफ्त फरमाते, अगर आप को उस का नाम अच्छा लगता तो आप खुश होते और ख़ुशी के आसार आप के चेहरे पर दिखाई देते, और अगर उस के नाम को नापसंद फरमाते, तो नागवारी के असरात आप के चेहरे पर नुमाया होते| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3920) * قتادة مدلس وعنعن

٤٥٨٩ - (حسن) وَعَن أنس قَالَ: قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّا كُنَّا فِي دَارٍ كَثُرَ فِيهَا عَدَدُنَا وَأَمْوَالُنَا فَتَحَوَّلْنَا إِلَى دَارٍ قَلَّ فِيهَا عَدَدُنَا وَأَمْوَالُنَا. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «ذروها ذميمة» . رَوَاهُ أَبُو دَاوُد

4589. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! हम एक घर में थे जिस से हमारे लोग और अमवाल में इज़ाफा हुआ, फिर हमने वह घर बदल लिया तो हमारे लोग व अमवाल में कमी आ गई है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "इस घर को छोड़ दो क्योंकि यह घर अच्छा नहीं|" (सहीह)

اسناده صحيح ، رواه ابوداؤد (3924) * عكرمة بن عمار صرح بالسماع عند البزار (البحر الزخار 13 / 79 ح 6427)

٤٥٩٠ - (ضَعِيف) وَعَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بَحِيرٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مَنْ سَمِعَ فَرْوَةَ بْنَ مُسَيْكٍ يَقُولُ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ عِنْدَنَا أَرْضٌ يُقَالُ لَهَا أَبْيَنُ وَهِيَ أَرْضُ رِيفِنَا [ص:١٢٩ وَمِيرَتِنَا وَإِنَّ وَبَاءَهَا شَدِيدٌ. فَقَالَ: «دَعْهَا عَنْكَ فَإِنَّ من القَرَف التّلف» رَوَاهُ أَبُو دَاوُد .

4590. याह्या बिन अब्दुल्लाह बिन बहिर बयान करते हैं, मुझे इस शख़्स ने बताया जिस ने फरवत बिन मसिक को बयान करते हुए सुना, वह कहते हैं मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! हमारे पास उबई नामी ज़मीन है, हमारी ज़राए व मैशत इसी ज़मीन से वाबिस्ता है, लेकिन वहां की वबा शदीद है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे छोड़ दो, क्योंकि बीमारी के करीब रहना हलाकत को दावत देना है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3923) * فيه يحيى بن عبدالله بن بحير : مستور و شيخه مجهول لم يسم

بَاب الفأل والطيرة • बद्शुगनी का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٥٩١ - (لم تتمّ دراسته) عَن عُرْوَة بن عَامر قَالَ: ذُكِرَتِ الطِّيَرَةُ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: " أَحْسَنُهَا الْفَأْلُ وَلَا تَرُدُّ مُسْلِمًا فَإِذَا رَأَى أَحَدُكُمْ مَا يَكْرَهُ فَلْيَقُلْ: اللَّهُمَّ لَا يَأْتِي بِالْحَسَنَاتِ إِلَّا أَنْتَ وَلَا يَدْفَعُ السَّيِّئَاتِ إِلَّا أَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ ". رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ

4591. उरवा बिन आमिर बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ के पास बद्शुगनी का ज़िक्र किया गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “उन में से बेहतर चीज़ नेक फाल लेना है, और वह (बद्शुगनी) किसी मुसलमान को काम से मत मना करे, जब तुम में से कोई शख़्स नापसंदीदा चीज़ देखे तो कहे: ऐ अल्लाह! तमाम भलाईया तू ही लाता है और तमाम बुराइयां तू ही दूर करता है, हर किस्म के गुनाह से बचना और नेकी करना महज़ तेरी तौफिक से मुमकिन है”| अबू दावुद ने इसे मुरसल रिवायत किया है| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه ابوداؤد (3919) * سفيان الثورى و حبيب بن ابى ثابت مدلسان و عنعنا

بَاب الكهانة • कहानत का बयान

اَلْفَصْلُ الأول • पहली फस्ल

٤٥٩٢ - (صَحِيح) عَن مُعَاوِيَة بن الحكم قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ أُمُورًا كُنَّا نَصْنَعُهَا فِي الْجَاهِلِيَّةِ كُنَّا نَأْتِي الْكُهَّانَ قَالَ: «فَلَا تَأْتُوا الْكُهَّانَ» قَالَ: قُلْتُ: كُنَّا نَتَطَيَّرُ قَالَ: «ذَلِكَ شَيْءٌ يَجِدُهُ أَحَدُكُمْ فِي نَفْسِهِ فَلَا يصدَّنَّكم» . قَالَ: قُلْتُ: وَمِنَّا رِجَالٌ يَخُطُّونَ قَالَ: «كَانَ نَبِيٌّ مِنَ الْأَنْبِيَاءِ يَخُطُّ فَمَنْ وَافَقَ خَطَّهُ فَذَاك» . رَوَاهُ مُسلم

4592. मुआविया बिन हकम बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: अल्लाह के रसूल! कुछ ऐसे उमूर व मुआमलात है जो हम दौरे जाहिलियत में किया करते थे, हम काहिनो के पास जाया करते थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “तुम काहिनो के पास न जाया करो”, वह बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: हम परिंदों के ज़रिए फाल लिया करते थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये ऐसी चीज़ है जिसे तुम में से कोई अपने दिल में पाता है के (फाल लेना) तुम्हें (काम करने से) न रोके”, वह बयान करते हैं, मैंने अर्ज़ किया: हम में से कुछ ऐसे है जो लकीरें खिचां करते थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: “एक नबी भी लकीरें खिचां करते थे जिस का ख़त उन के ख़त के मुवाफिक हो गया तो वह ठीक है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (121 / 537)، (1199)

٤٥٩٣ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَن عَائِشَة قَالَتْ: سَأَلَ أُنَاسٌ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْكُهَّانِ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِنَّهُمْ لَيْسُوا بِشَيْءٍ» قَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ فَإِنَّهُمْ يُحَدِّثُونَ أَحْيَانًا بِالشَّيْءِ يَكُونُ حَقًّا فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «تِلْكَ الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ يَخْطَفُهَا الْجِنِّيُّ فَيَقُرُّهَا فِي أُذُنِ وَلِيِّهِ قَرَّ الدَّجَاجَةِ فَيَخْلِطُونَ فِيهَا أَكْثَرَ مِنْ مِائَةِ كذبة»

4593. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, लोगों ने रसूलुल्लाह ﷺ से काहिनो के बारे में दरियाफ्त किया तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें फ़रमाया: “उनकी कोई हैसियत नहीं”, उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! बाज़ अवकात वह जो कहते हैं वैसे ही हो जाता है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब किसी सच्ची बात को जिन्न (ऊपर से) उचक लेता है तो फिर वह मुर्गी की आवाज़ की तरह इसे अपने साथी के कान तक पहुंचा देता है, काहिन लोग उस में सौ से ज़्यादा झूठ मिला देते है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (6213) و مسلم (123 / 2228)، (5817)

٤٥٩٤ - (صَحِيح) وَعَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " إِنَّ الْمَلَائِكَةَ تَنْزِلُ فِي الْعَنَانِ وَهُوَ السَّحَابُ فَتَذْكُرُ الْأَمْرَ قُضِيَ فِي السَّماءِ فتسترق الشياطينُ السمعَ فَتُوحِيهِ إِلَى الْكُهَّانِ فَيَكْذِبُونَ مَعَهَا مِائَةَ كَذْبَةٍ من عِنْد

أنفسهم. رَوَاهُ البُخَارِيّ

4594. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फरमाते हुए सुना: “बेशक फ़रिश्ते अनान यानी बादलो में उतरते है और वह आसमान में होने वाले फैसला शुदा उमूर का तज़किरह करते हैं, तो शैतान चोरी से इसे सुन लेते है फिर वह इसे काहिनो तक पहुंचा देते हैं और काहिन उस के साथ अपनी तरफ से सौ झूठ बोलते है”| (बुखारी)

رواه البخارى (2210)

٤٥٩٥ - وَعَنْ حَفْصَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَتَى عَرَّافًا فَسَأَلَهُ عَنْ شَيْءٍ لم تقبل صَلَاة أَرْبَعِينَ لَيْلَة» . رَوَاهُ مُسلم

4595. हफ्सा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जो शख़्स किसी काहिन के पास जा कर उस से किसी गुमशुदा चीज़ के बारे में दरियाफ्त करे तो इस शख़्स की चालीस रोज़ तक नमाज़ कबूल नहीं होती”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (125 / 2230)، (5821)

٤٥٩٦ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ قَالَ: صَلَّى لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةَ الصُّبْحِ بِالْحُدَيْبِيَةِ عَلَى أَثَرِ سَمَاءٍ كَانَتْ مِنَ اللَّيْلِ فَلَمَّا انْصَرَفَ أَقْبَلَ عَلَى النَّاسِ فَقَالَ: «هَلْ تَدْرُونَ مَاذَا قَالَ رَبُّكم؟» قَالُوا: الله وَرَسُوله أعلم قَالَ: أَصْبَحَ مِنْ عِبَادِي مُؤْمِنٌ بِي وَكَافِرٌ فَأَمَّا مَنْ قَالَ: مُطِرْنَا بِفَضْلِ اللَّهِ وَرَحْمَتِهِ فَذَلِكَ مُؤْمِنٌ بِي كَافِرٌ بِالْكَوْكَبِ وَأَمَّا مَنْ قَالَ: مُطِرْنَا بِنَوْءِ كَذَا وَكَذَا فَذَلِكَ كَافِرٌ بِي وَمُؤمن بالكوكب "

4596. ज़ैद बिन खालिद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें हुदैबिया के मक़ाम पर रात बारिश हो जाने के बाद नमाज़े फज्र पढ़ाई, जब आप ﷺ फारिग़ हुए तो लोगों की तरफ मुतवज्जे हो कर फ़रमाया: “क्या तुम जानते हो के तुम्हारे रब ने क्या फरमाया है?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उस के रसूल बेहतर जानते हैं आप ﷺ ने फ़रमाया: “उस ने फ़रमाया है: मेरे बंदो में से बाज़ ने इस हाल में सुबह की के वह मुझ पर ईमान लाए और कुछ ने मेरे साथ कुफ्र किया, जिस शख़्स ने कहा अल्लाह के फ़ज़ल और उसकी रहमत से हम पर बारिश हुई है तो वह मुझ पर ईमान लाने वाला है और सितारों का मुनकर है और रहा वह शख़्स जिस ने कहा: फलां फलां (सितारे के सफ़ूत) की वजह से हम पर बारिश हुई है तो वह मेरे साथ कुफ्र करने वाला है और सितारों पर ईमान रखने वाला है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (846) و مسلم (125 / 71)، (231)

٤٥٩٧ - (صَحِيح) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ بَرَكَةٍ إِلَّا أَصْبَحَ فَرِيقٌ مِنَ النَّاسِ بِهَا كَافِرِينَ يُنْزِلُ اللَّهُ الْغَيْثَ فَيَقُولُونَ: بِكَوْكَبِ كَذَا وَكَذَا ". رَوَاهُ مُسلم

4597. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह आसमान से कोई बरकत नाज़िल करता है तो लोगों का एक गिरोह उस का इनकार कर देता है, अल्लाह बारिश नाज़िल करता है लेकिन वह कहते हैं की फलां फलां सितारे की वजह से बारिश हुई है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (126 / 72)، (232)

باب الكهانة • कहानत का बयान

الْفَصْل الثَّانِي • दूसरी फस्ल

٤٥٩٨ - (لم تتمّ دراسته) عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ اقْتَبَسَ عِلْمًا مِنَ النُّجُومِ اقْتَبَسَ شُعْبَةً مِنَ السِّحْرِ زَادَ مَا زَادَ» . رَوَاهُ أَحْمَدُ وَأَبُو دَاوُدَ وَابْنُ مَاجَه

4598. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जिस शख़्स ने इल्म ए नजूम हासिल किया तो उस ने जादू का एक हिस्सा हासिल किया, वह (हुसुले सहर में) जिस क़दर बढ़ता गया इसी क़दर वह (हुसुले इल्मे नजूम में) बढ़ता गया"| (हसन)

اسناده حسن ، رواه احمد (1 / 311) و ابوداؤد (3905) و ابن ماجه (3726)

٤٥٩٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ أَتَى كَاهِنًا فَصَدَّقَهُ بِمَا يَقُولُ أَوْ أَتَى امْرَأَتَهُ حَائِضًا أَوْ أَتَى امْرَأَته من دُبُرِهَا فَقَدْ بَرِئَ مِمَّا أُنْزِلَ عَلَى مُحَمَّدٍ» . رَوَاهُ أَحْمد وَأَبُو دَاوُد

4599. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "जो शख़्स किसी काहिन के पास गया और उसकी बातो की तस्दीक किया या उस ने अपने अहलिया से जबकि वह हालत ए हैज़ में हो, जिमाअ किया, या उस ने अपने अहलिया की पुश्त में जिमाअ किया तो वह उस से बेज़ार है जो मुहम्मद ﷺ पर उतारी गई है"| (हसन)

حسن ، رواه احمد (2 / 408) و ابوداؤد (3904)

بَاب الكهانة • कहानत का बयान

الْفَصْل الثَّالِث • तीसरी फस्ल

٤٦٠٠ - (صَحِيح) عَن أبي هُرَيْرَة أَنَّ نَبِيَّ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِذَا قَضَى اللَّهُ الْأَمْرَ فِي السَّمَاءِ ضَرَبَتِ الْمَلَائِكَةُ بِأَجْنِحَتِهَا خُضْعَانًا لِقَوْلِهِ كَأَنَّهُ سِلْسِلَةٌ عَلَى صَفْوَانٍ فَإِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا: مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ؟ قَالُوا: لِلَّذِي قَالَ الْحَقَّ وهوَ العليُّ الكبيرُ فَسَمِعَهَا مُسترِقوا السَّمعِ ومُسترقوا السَّمْعِ هَكَذَا بَعْضُهُ فَوْقَ بَعْضٍ «وَوَصَفَ سُفْيَانُ بِكَفِّهِ فَحَرَّفَهَا وَبَدَّدَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ» فَيَسْمَعُ الْكَلِمَةَ فَيُلْقِيهَا إِلَى مَنْ تَحْتَهُ ثُمَّ يُلْقِيهَا الْآخَرُ إِلَى مَنْ تَحْتَهُ حَتَّى يُلْقِيَهَا عَلَى لِسَانِ السَّاحِرِ أَوِ الْكَاهِنِ. فَرُبَّمَا أَدْرَكَ الشِّهَابُ قَبْلَ أَنْ يُلْقِيَهَا وَرُبَّمَا أَلْقَاهَا قَبْلَ أَنْ يُدْرِكَهُ فكذب مَعَهَا مِائَةَ كَذْبَةٍ فَيُقَالُ: أَلَيْسَ قَدْ قَالَ لَنَا يَوْمَ كَذَا وَكَذَا: كَذَا وَكَذَا؟ فَيَصْدُقُ بِتِلْكَ الْكَلِمَةِ الَّتِي سُمِعَتْ مِنَ السَّمَاءِ ". رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4600. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के नबी ﷺ ने फ़रमाया: “जब अल्लाह आसमान पर किसी अम्र का फैसला करता है तो फ़रिश्ते उस के फरमान से डरते हुए अपने पर हिलाते है, जैसे के चट्टान पर ज़ंजीर मारने की आवाज़ आती है, जब उन के दिलों से खौफ जाता रहता है तो वह कहते हैं, तुम्हारे रब ने क्या फ़रमाया है, वह (मुकर्रब फ़रिश्ते) कहते हैं, उस ज़ात ने जो फ़रमाया, वह हक़ है, वह बुलंद और बड़ा है, चुनांचे चोरी से सुनने वाले इस फैसले को सुन लेते है, और चोरी सुनने वाले इस तरह एक दूसरे के ऊपर होते हैं”, और सुफियान रावी ने अपने हथेली के ज़रिए उसकी कैफियत बयान की उन्होंने इस (हथेली) को खोला और उंगलियों के दरमियान फासला किया, “चुनांचे ऊपर वाला बात सुनता है और वह इस बात को अपने नीचे वाले को पहुंचा देता है, फिर वह अपने से नीचे वाले तक पहुंचा देता है हत्ता कि (इस तरह होते हुए) आखिरी साहिर या काहिन की ज़ुबान तक पहुंचा देता है, और बसा-अवक़ात शैतान के पहुँचाने से पहले पहले शिहाब साकिब (मितियोर) इसे लग जाता है और कभी शिहाब साकिब के उस तक पहुँचने से कबल वह सूना देता है और वह उस के साथ सौ झूठ मिला कर बताता है चुनांचे कहा जाता, क्या उस ने फलां वक़्त इस तरह इस तरह नहीं कहा था, इस कलिमा की वजह से जो आसमान से सुना गया था तस्दीक हो जाती है”| (बुखारी)

رواه البخاری (4800)

٤٦٠١ - (صَحِيح) وَعَن ابنِ عبَّاسٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْأَنْصَارِ: أَنَّهُمْ بَيْنَا جُلُوسٌ لَيْلَةً مَعَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رُمِيَ بِنَجْمٍ وَاسْتَنَارَ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَا كُنْتُمْ تَقُولُونَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ إِذَا رُمِيَ بِمِثْلِ هَذَا؟» قَالُوا: اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ كُنَّا نَقُولُ: وُلِدَ اللَّيْلَةَ رَجُلٌ عَظِيمٌ وَمَاتَ رَجُلٌ عَظِيمٌ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " فَإِنَّهَا لَا يُرْمَى بِهَا لِمَوْتِ أَحَدٍ وَلَا لِحَيَاتِهِ وَلَكِنَّ رَبَّنَا تَبَارَكَ اسْمُهُ إِذَا قَضَى أَمر سَبَّحَ حَمَلَةُ الْعَرْشِ ثُمَّ سَبَّحَ أَهْلُ السَّمَاءِ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ حَتَّى يَبْلُغَ التَّسْبِيحُ أَهْلَ هَذِهِ السَّمَاء الدُّنْيَا ثمَّ قَالَ الَّذِي يَلُونَ حَمَلَةَ الْعَرْشِ لِحَمَلَةِ الْعَرْشِ: مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ؟ [ص:١٢٩] فَيُخْبِرُونَهُمْ مَا قَالَ: فَيَسْتَخْبِرُ بَعْضُ أَهْلِ السَّمَاوَاتِ بَعْضًا حَتَّى يَبْلُغَ هَذِهِ السَّمَاءَ الدُّنْيَا فَيَخْطَفُ الْجِنُّ السَّمْعَ فَيَقْذِفُونَ إِلَى أَوْلِيَائِهِمْ

وَيُرْمَوْنَ فَمَا جاؤوا بِهِ عَلَى وَجْهِهِ فَهُوَ حَقٌّ وَلَكِنَّهُمْ يَقْرِفُونَ فِيهِ وَيزِيدُونَ ". رَوَاهُ مُسلم

4601. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, नबी ﷺ के अंसार सहाबा में से एक सहाबी ने मुझे बयान किया के इस असना में के एक रात हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ बैठें हुए थे की एक सितारा टुटा और रोशन हुआ, रसूलुल्लाह ﷺ ने उन से पूछा: “जब दौरे जाहिलियत में इस तरह सितारा टूटता थे तो तुम क्या कहा करते थे ?” उन्होंने अर्ज़ किया, अल्लाह और उस के रसूल ही बेहतर जानते हैं, ताहम यह कहा करते थे इस रात कोई अज़ीम आदमी पैदा हुआ है या कोई अज़ीम आदमी फौत हुआ है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सितारा न किसी की मौत पर टूटता है और न किसी की हयात पर, लेकिन जब हमारा रब, बा बरकत है नाम उस का, कोई फैसला फरमाता है तो हामिलिन ए अर्श तस्बीह बयान करते हैं, बाद में उन से करीब आसमान वाले फ़रिश्ते (سُبْحَانَ اللهِ) सुबहानल्लाह कहते हैं यहाँ तक के तस्बीह की यह आवाज़ आसमानी दुनिया के फरिश्तो तक पहुँच जाती है, फिर वह फ़रिश्ते जो अर्श को उठाने वाले फरिश्तो के करीब होते हैं वह हामिलिन ए अर्श से कहते हैं, तुम्हारे रब ने क्या कहा है? तो वह उन्हें बताते है, जो अल्लाह तआला ने कहा होता है, आसमान वाले एक दूसरे से पूछते है हत्ता के खबर आसमानी दुनिया तक पहुँच जाती है चुनांचे शैतान इस बात को उचक लेते है, और वह अपने साथियो को सूना देते हैं और इसी दौरान उन्हें अंगारे मारे जाते हैं, जो खबर वह असल शकल में सूना देते हैं वह तो हक़ और दुरुस्त होती है, लेकिन वह उस में और मिला लेते है और इज़ाफा कर लेते है”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (124 / 2229)، (5819)

٤٦٠٢ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن قتادةَ قَالَ: خلقَ اللَّهُ تَعَالَى هَذِه النجومَ لثلاثٍ جَعَلَهَا زِينَةً لِلسَّمَاءِ وَرُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ وَعَلَامَاتٍ يُهْتَدَى بهَا فَمن تأوَّلَ فِيهَا بِغَيْرِ ذَلِكَ أَخْطَأَ وَأَضَاعَ نَصِيبَهُ وَتَكَلَّفَ مَالا يَعْلَمُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ تَعْلِيقًا وَفِي رِوَايَةِ رَزِينٍ: «تكلّف مَالا يعنيه ومالا عِلْمَ لَهُ بِهِ وَمَا عَجَزَ عَنْ عِلْمِهِ الْأَنْبِيَاء وَالْمَلَائِكَة»

4602. क़तादाह रहिमहुल्लाह बयान करते हैं, अल्लाह तआला ने यह सितारे तीन मकासिद के लिए पैदा फरमाए है, उन्हें आसमान के लिए बाईस ए ज़ीनत बनाया, शैतान के लिए मार और अलामत व निशानात जिन के ज़रिए रहनुमाई हासिल की जाती है, जिस ने उन के अलावा कुछ और बयान किया उस ने गलती की, अपना हिस्सा (उमूर) ज़ाए किया और ऐसी चिज़ का तकल्लुफ किया तो वह नहीं जानता, इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह ने इसे मुअल्लक रिवायत किया है और रजिन की रिवायत में है और उस ने ऐसी चिज़ का तकल्लुफ किया जो न तो उस के मुतल्लिक है और न इसे इस का इल्म है और जिसके इल्म से अंबिया अलैहिस्सलाम और फ़रिश्ते भी आजिज़ है| (सहीह)

رواه البخاری (کتاب بدء الخلق باب 3 ، بعد ح 3198) و رزین (لم اجده) [و رواه ابن حجر فی یغلیق التعلیق (3 / 489) و سنده صحیح] * وقوله ’’ مالا علم له به ‘‘ صحیح

٤٦٠٣ - (لم تتمّ دراسته) وَعَن الربيعِ مِثْلُهُ وَزَادَ: وَاللَّهِ مَا جَعَلَ اللَّهُ فِي نَجْمٍ حَيَاةَ أَحَدٍ وَلَا رِزْقَهُ وَلَا مَوْتَهُ وَإِنَّمَا يَفْتَرُونَ عَلَى

اللَّهِ الْكَذِبَ وَيَتَعَلَّلُونَ بِالنُّجُومِ

4603. रबीआ से भी इसी तरह मरवी है, निज़ उन्होंने यह इज़ाफा नकल किया है: अल्लाह की क़सम! अल्लाह ने किसी सितारे में न तो किसी की जिंदगी रखी है और न उस का रीज़्क रखा है और न उसकी मौत रखी है, वह तो अल्लाह पर झूठ बांधते है और सितारों का फ़क़त बहाना बनाते हैं| (मझे नहीं मिली रवाह रजिन.)

لم اجده ، رواه رزين (لم اجده)

٤٦٠٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنِ اقْتَبَسَ بَابًا مِنْ عِلْمِ النُّجُومِ لِغَيْرِ مَا ذَكَرَ اللَّهُ فَقَدِ اقْتَبَسَ شُعْبَةً مِنَ السِّحْرِ الْمُنَجِّمُ كَاهِنٌ والكاهنُ ساحرٌ والساحرُ كافرٌ» . رَوَاهُ رزين

4604. इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने अल्लाह के बयान करदा फवाईद के अलावा इल्मे नजूम में से कोई हिस्सा सीखे तो उस ने जादू का एक हिस्सा हासिल किया, नजूमी काहिन है, और काहिन जादूगर है, और जादूगर काफ़िर है”| (मझे नहीं मिली रवाह रजिन.)

لم اجده ، رواه رزين (لم اجده)

٤٦٠٥ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " لَوْ أَمْسَكَ اللَّهُ الْقَطْرَ عَنْ عِبَادِهِ خَمْسَ سِنِينَ ثُمَّ أَرْسَلَهُ لَأَصْبَحَتْ طَائِفَةٌ مِنَ النَّاسِ كَافِرِينَ يَقُولُونَ: سُقِينَا بِنَوْءِ الْمِجْدَحِ ". رَوَاهُ النَّسَائِيّ

4605. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अगर अल्लाह पांच साल तक बारिश रोक ले, फिर इसे बरसा दे तो लोगों में एक जमाअत काफ़िर हो जाएगी, वह कहेंगे, हम पर मुज्दः सितारे की वजह से बारिश हुई है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعيف ، رواه النسائی (3 / 165 ح 1527) * عتاب لم یوثقه غیر ابن حبان و قال سفیان بن عیینةاحد رواته :’’ لا ادری من عتاب ؟‘‘

ख्वाब का बयान • كتاب الرُّؤْيَا

पहली फस्ल • الْفَصْلُ الأول

٤٦٠٦ - (صَحِيح) عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «لَمْ يَبْقَ مِنَ النُّبُوَّةِ إِلَّا الْمُبَشِّرَاتُ» قَالُوا: وَمَا الْمُبَشِّرَاتُ؟ قَالَ: «الرُّؤْيَا الصالحةُ» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

4606. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “नबूवत में सिर्फ “मुबश्शिरात” बाकी रह गई है”, सहाबा रदियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, मुबश्शिरात से क्या मुराद है? आप ﷺ ने फ़रमाया: “अच्छे ख्वाब”| (बुखारी)

رواه البخارى (6990)

٤٦٠٧ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَزَادَ مَالِكٌ بِرِوَايَةِ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ: «يَرَاهَا الرجل الْمُسلم أَو ترى لَهُ»

4607. इमाम मालिक रहिमहुल्लाह ने अता बिन यस्सार की रिवायत के हवाले से यह इज़ाफा किया है: “वो ख्वाब जिसे मुसलमान शख़्स देखता है, या इस की खातिर (किसी दूसरे शख़्स को) दिखाया जाता है”| (सहीह)

صحيح ، رواه مالک فی الموطا (2 / 957 ح 1848) * السند مرسل وله شواهد ، انظر الحديث السابق (4606) و طرقه

٤٦٠٨ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ»

4608. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अच्छे ख्वाब नबूवत का छियालीसवाँ हिस्सा है”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخارى (6986) و مسلم (7 / 2264 ب)، (5909)

٤٦٠٩ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسلم قَالَ: «من رَآنِي فِي الْمَنَامِ فَقَدْ رَآنِي فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لَا يَتَمَثَّلُ فِي صُورَتِي»

4609. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस शख़्स ने मुझे ख्वाब में

देखा तो उस ने मुझे ही देखा क्योंकि शैतान मेरा रूप नहीं ढाल सकता”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (110) و مسلم (10 / 2266)، (5919)

٤٦١٠ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «مَنْ رَآنِي فَقَدْ رَأَى الْحَقَّ»

4610. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस ने मुझे देखा तो उस ने हक़ (हक़ीकत में मुझे) देखा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6996) و مسلم (11 / 2267)، (5921)

٤٦١١ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عَلَيْهِ وَسلم: «من رَآنِي فِي الْمَنَام فيسراني فِي الْيَقَظَةِ وَلَا يَتَمَثَّلُ الشَّيْطَانُ بِي»

4611. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जिस ने मुझे ख्वाब में देखा तो वह मुझे अनकरीब हालत बेदारी मैं भी देखेगा और शैतान मेरी सूरत इख़्तियार नहीं कर सकता”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (6993) و مسلم (11 / 2266)، (5920)

٤٦١٢ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ مِنَ اللَّهِ وَالْحُلْمُ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِذَا رَأَى أَحَدُكُمْ مَا يُحِبُّ فَلَا يُحَدِّثُ بِهِ إِلَّا مَنْ يُحِبُّ وَإِذَا رَأَى مَا يَكْرَهُ فَلْيَتَعَوَّذْ بِاللَّهِ مِنْ شَرِّهَا وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَلْيَتْفُلْ ثَلَاثًا وَلَا يُحَدِّثْ بِهَا أحدا فَإِنَّهَا لن تضره»

4612. अबू क़तादा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “अच्छे ख्वाब अल्लाह की तरफ से है और बुरे ख्वाब शैतान की तरफ से है, जब तुम में से कोई पसंदीदा चीज़ देखे तो वह उस का इज़हार इसी से करे जिसे वह पसंद करता है, और अगर कोई नापसंदीदा ख्वाब देखे तो वह उस के शर से और शैतान के शर से अल्लाह की पनाह तलब करे और तीन बार (अपनी बाएँ जानिब) ठुत्कारे और उस के मुतल्लिक किसी से बात न करे इस तरह वह उस के लिए मुज़िर नहीं होगा”| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (3292) و مسلم (4 / 2266)، (5903)

٤٦١٣ - (صَحِيح) وَعَنْ جَابِرٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا رَأَى أَحَدُكُمُ الرُّؤْيَا يَكْرَهُهَا فَلْيَبْصُقْ عَنْ يَسَارِهِ

ثَلَاثًا وَلْيَسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ ثَلَاثًا وَلْيَتَحَوَّلْ عَنْ جَنْبِهِ الَّذِي كانَ عَلَيْهِ» . رَوَاهُ مُسلم

4613. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब तुम में से कोई एक नापसंदीदा ख्वाब देखे तो वह अपने बाएं तरफ तीन बार थूके और तीन बार शैतान से अल्लाह की पनाह तलब करे और वह जिस पहलू पर था इसे बदल ले”| (मुस्लिम)

رواه مسلم (5 / 2262)، (5904)

٤٦١٤ - (مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «إِذَا اقْتَرَبَ الزَّمَانُ لَمْ يَكَدْ يَكْذِبُ رُؤْيَا الْمُؤْمِنِ وَرُؤْيَا الْمُؤْمِنِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ وَمَا كَانَ مِنَ النُّبُوَّةِ فَإِنَّهُ لَا يَكْذِبُ» . قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ سِيرِينَ: وَأَنَا أَقُولُ: الرُّؤْيَا ثَلَاثٌ: حَدِيثُ النَّفْسِ وَتَخْوِيفُ الشَّيْطَانِ وَبُشْرَى مِنَ اللَّهِ فَمَنْ رَأَى شَيْئًا يَكْرَهُهُ فَلَا يَقُصَّهُ عَلَى أَحَدٍ وَلْيَقُمْ فَلْيُصَلِّ قَالَ: وَكَانَ يُكْرَهُ الْغُلُّ فِي النَّوْمِ وَيُعْجِبُهُمُ الْقَيْدُ وَيُقَال: الْقَيْد ثبات فِي الدّين

4614. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “जब (कियामत का) ज़माने करीब जाएगा तो करीब नहीं के मोमिन का ख्वाब झूठा होगा, मोमिन का ख्वाब नबूवत का छियालीसवाँ हिस्सा है, और जो चीज़ नबूवत से हो वह झूठी नहीं होती”| # मुहम्मद बिन सिरिन बयान करते हैं, में कहता हूँ ख्वाब तीन किस्म के है, नफ्शियाती ख़याल, शैतान का डराना और अल्लाह की तरफ से बशारत, लिहाज़ा जो शख़्स कोई नापसंदीदा चीज़ देखे तो वह इसे किसी से बयान न करे और खड़ा हो कर नमाज़ पढ़े, उन्होंने ने फ़रमाया: वह ख्वाब में तोक देखने को नापसंद करते थे और पाँव में बेड़िया उन्हें पसंद थी और कहा जाता है के बेड़ियों से मुराद दिन पर साबित कदमी है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخارى (7017) و مسلم (6 / 2263)، (5905)

٤٦١٥ - (صَحِيح) قَالَ البُخَارِيّ: رَوَاهُ قَتَادَة وَيُونُس وَهِشَام وَأَبُو هِلَالٍ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَقَالَ يُونُسُ: لَا أَحْسَبُهُ إِلَّا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْقَيْدِ»» وَقَالَ مُسْلِمٌ: لَا أَدْرِي هُوَ فِي الْحَدِيثِ أَمْ قَالَهُ ابْنُ سِيرِينَ؟ وَفِي رِوَايَةٍ نَحْوُهُ وَأَدْرَجَ فِي الْحَدِيثِ قَوْلَهُ: «وَأَكْرَهُ الْغُلَّ. . .» إِلَى تَمام الْكَلَام

4615. इमाम बुखारी रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: इसे क़तादाह, युनुस, हशिम और अबू हिलाल ने इब्ने सिरिन की सनद से अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है, और युनुस ने कहा में फिल कैद के अल्फाज़ को नबी ﷺ की हदीस से शुमार करता हूँ, और इमाम मुस्लिम रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: मुझे मालुम नहीं के वह अल्फाज़ आप ﷺ के हैं या इब्ने सिरिन के हैं और इसी मिसल एक रिवायत में है और उस ने “आप नापसंद करते तोक ....”, से आख़िर हदीस तक के अल्फाज़ हदीस में दाखिल किए हैं| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، انظر الحديث السابق (4614) و مسلم (5905)

٤٦١٦ - (صَحِيح) وَعَن جَابر قَالَ: جَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ كَأَنَّ رَأْسِي قُطِعَ قَالَ: فَضَحِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ: «إِذَا لَعِبَ الشَّيْطَانُ بِأَحَدِكُمْ فِي مَنَامِهِ فَلَا يُحَدِّثْ بِهِ النَّاس» . رَوَاهُ مُسلم

4616. जाबिर रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुआ तो उस ने अर्ज़ किया, मैंने ख्वाब में देखा है के मेरा सर काट दिया गया है, रावी बयान करते हैं, नबी ﷺ मुस्कुरा दिए और फ़रमाया: "जब शैतान किसी से उसकी नींद में खेले तो वह लोगों को न बताए"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (16 / 2268)، (5927)

٤٦١٧ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رَأَيْتُ ذَاتَ لَيْلَةٍ فِيمَا [ص:١٢٩ يَرَى النَّائِمُ كَأَنَّا فِي دَارِ عُقْبَةَ بْنِ رَافِعٍ فَأُوتِينَا بِرُطَبٍ مِنْ رُطَبِ ابْنِ طَابٍ فَأَوَّلْتُ أَنَّ الرِّفْعَةَ لَنَا فِي الدُّنْيَا وَالْعَاقِبَةَ فِي الْآخِرَةِ وَأَنَّ دِينَنَا قَدْ طَابَ» . رَوَاهُ مُسلم

4617. अनस रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मैंने एक रात ख्वाब में देखा के हम उक्बा बिन राफीअ के घर में है और हमारे पास इब्ने टाब की खजूरे लाइ गई, मैंने यह तावील की के दुनिया में हमारे लिए बड़ा दर्जा है और आखिरत में नेक अंजाम हमारे लिए है, और हमारा दीन यक़ीनन कामिल(सर्वोत्तम) व अहसन(सबसे अच्छा) है"| (मुस्लिम)

رواه مسلم (18 / 2270)، (5932)

٤٦١٨ - (مُتَّفق عَلَيْهِ) وَعَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: " رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أُهَاجِرُ مِنْ مَكَّةَ إِلَى أَرْضٍ بِهَا نَخْلٌ فَذَهَبَ وَهْلِي إِلَى أَنَّهَا الْيَمَامَةُ أَوْ هَجَرُ فَإِذَا هِيَ الْمَدِينَةُ يَثْرِبُ وَرَأَيْتُ فِي رُؤْيَايَ هَذِهِ: أَنِّي هَزَزْتُ سَيْفًا فَانْقَطَعَ صَدْرُهُ فَإِذَا هُوَ مَا أُصِيبَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ أُحُدٍ ثُمَّ هَزَزْتُهُ أُخْرَى فعادَ أحسنَ مَا كانَ فإِذا هوَ جَاءَ اللَّهُ بِهِ مِنَ الْفَتْحِ وَاجْتِمَاعِ الْمُؤْمِنِينَ "

4618. अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: "मैंने ख्वाब में देखा की मैं मक्का से खजूरो की सर ज़मीन की तरफ हिजरत कर रहा हूँ, मेरा ख़याल था के वह यमाम है या हजर है, लेकिन वह सर ज़मीने मदीना है जिस का नाम यसरिब था, और मैंने अपने इसी ख्वाब में देखा केमैंने अपनी तलवार हिलाई तो वह बिच में से टूट गई, उस से मुराद वह है जो मोमिनो को गज़वा ए उहद में तकलीफ उठाना पड़ी, फिर मैंने दोबारा इसे हिलाया तो वह अपने पहली हालत से भी बेहतर हो गई, उस से मुराद वह है जो अल्लाह तआला ने (मक्के की) फतह दी और मोमिनो को इकट्ठा कर दिया"| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق عليه ، رواه البخاري (3622) و مسلم (20 / 2272)، (5934)

٤٦١٩ - (صَحِيحٌ) وَعَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ بِخَزَائِنِ الْأَرْضِ فَوُضِعَ فِي كَفَّيَّ سِوَارَانِ مِنْ ذَهَبٍ فَكَبُرَا عَلَيَّ فَأُوحِيَ إِلَيَّ أَنِ انْفُخْهُمَا فَنَفَخْتُهُمَا فَذَهَبَا فَأَوَّلْتُهُمَا الْكَذَّابَيْنِ اللَّذَيْنِ أَنَا بَيْنَهُمَا صَاحِبَ صَنْعَاءَ وَصَاحِبَ الْيَمَامَةِ» . مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ. وَفِي رِوَايَةٍ: «يُقَالُ لِأَحَدِهِمَا مُسَيْلِمَةُ صَاحِبُ الْيَمَامَةِ وَالْعَنْسِيُّ صَاحِبُ صَنْعَاءَ» لَمْ أَجِدْ هَذِهِ الرِّوَايَةَ فِي (الصَّحِيحَيْنِ)»» وَذكرهَا صَاحب الْجَامِع عَن التِّرْمِذِيّ

4619. अबू हुरैरा रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इसी असना में की मैं सो रहा था के मुझ पर ज़मीन के खज़ाने पेश किए गए, मेरे हाथ में सोने के दो कंगन रख दिए गए तो वह मुझ पर गिराह गुज़रे, फिर मेरी तरफ वही की गई की मैं उन्हें फूंक मारू, मैंने फूंक मारी तो वह दोनों जाते रहे, मैंने उनकी यह ताबीर की के उस से मुराद वह दो झूठे शख़्स है, मैं उन के दरमियान हूँ एक (असवद अंसी) सीनाअ से और एक (मुसेलिमा कज़्ज़ाब) यमाम से”, और एक रिवायत में है: “इन दोनों में से एक मुसेलिमा यमाम का रहने वाला और अंसी सीनाअ का रहने वाला”, लेकिन मैंने यह रिवायत सहीहैन में नहीं पाई और साहबे जामेअ ने इसे तिरमिज़ी से रिवायत किया है| (मुत्तफ़क़ अलैह)

متفق علیه ، رواه البخاری (4375) و مسلم (22 / 2274)، (5936) و الترمذی (2292)

٤٦٢٠ - (صَحِيح) وَعَنْ أُمِّ الْعَلَاءِ الْأَنْصَارِيَّةِ قَالَتْ: رَأَيْتُ لِعُثْمَانَ بْنِ مَظْعُونٍ فِي النَّوْمِ عَيْنًا تَجْرِي فَقَصَصْتُهَا عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «ذَلِكِ عَمَلُهُ يُجْرَى لَهُ» . رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

4620. उम्म अलाअ अंसारी रदियल्लाहु अन्हु बयान करती हैं, मैंने ख्वाब में उस्मान बिन मज़उन रदियल्लाहु अन्हु के लिए एक बहता चश्मे देखा, मैंने उस का तज़किरह रसूलुल्लाह ﷺ से किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “ये उस का अमल है जो उस के लिए जारी किया गया है”| (बुखारी)

رواه البخاری (7018)

٤٦٢١ - (صَحِيح) وَعَن سُمرةَ بنِ جُندب قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا صَلَّى أَقْبَلَ [ص: ١٣٠] عَلَيْنَا بِوَجْهِهِ فَقَالَ: «مَنْ رَأَى مِنْكُمُ اللَّيْلَةَ رُؤْيَا؟» قَالَ: فَإِنْ رَأَى أَحَدٌ قَصَّهَا فَيَقُولُ: مَا شَاءَ اللَّهُ فَسَأَلَنَا يَوْمًا فَقَالَ: «هَلْ رَأَى مِنْكُمْ أَحَدٌ رُؤْيَا؟» قُلْنَا: لَا قَالَ: " لَكِنِّي رَأَيْتُ اللَّيْلَةَ رَجُلَيْنِ أَتَيَانِي فَأَخَذَا بِيَدَيَّ فَأَخْرَجَانِي إِلَى أَرْضٍ مُقَدَّسَةٍ فَإِذَا رَجُلٌ جَالِسٌ وَرَجُلٌ قَائِمٌ بِيَدِهِ كَلُّوبٌ مِنْ حَدِيدٍ يُدْخِلُهُ فِي شِدْقِهِ فَيَشُقُّهُ حَتَّى يَبْلُغَ قَفَاهُ ثُمَّ يَفْعَلُ بِشِدْقِهِ الْآخَرِ مِثْلَ ذَلِكَ وَيَلْتَئِمُ شِدْقُهُ هَذَا فَيَعُودُ فَيَصْنَعُ مِثْلَهُ. قُلْتُ: مَا هَذَا؟ قَالَا: انْطَلِقْ فَانْطَلَقْنَا حَتَّى أَتَيْنَا عَلَى رَجُلٍ مُضْطَجِعٍ عَلَى قَفَاهُ وَرَجُلٌ قَائِمٌ عَلَى رَأْسِهِ بِفِهْرٍ أَوْ صَخْرَةٍ يَشْدَخُ بِهَا رَأْسَهُ فَإِذَا ضَرَبَهُ تَدَهْدَهَ الْحَجَرُ فَانْطَلَقَ إِلَيْهِ لِيَأْخُذَهُ فَلَا يَرْجِعُ إِلَى هَذَا حَتَّى يَلْتَئِمَ رَأْسُهُ وَعَادَ رَأْسُهُ كَمَا كَانَ فَعَادَ إِلَيْهِ فَضَرَبَهُ فَقُلْتُ: مَا هَذَا؟ قَالَا: انْطَلِقْ فَانْطَلَقْنَا حَتَّى أَتَيْنَا إِلَى ثَقْبٍ مِثْلِ التَّنُّورِ أَعْلَاهُ ضَيِّقٌ وَأَسْفَلَهُ وَاسِعٌ تَتَوَقَّدُ تَحْتَهُ نَارٌ فَإِذَا ارْتَفَعَتِ ارْتَفَعُوا حَتَّى كَادَ أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا وَإِذَا خَمَدَتْ رَجَعُوا فِيهَا وَفِيهَا رِجَالٌ وَنِسَاءٌ عُرَاةٌ فَقُلْتُ: مَا هَذَا؟ قَالَا: انْطَلِقْ فَانْطَلَقْنَا حَتَّى أَتَيْنَا عَلَى نَهَرٍ مِنْ دَمٍ فِيهِ رَجُلٌ قَائِمٌ عَلَى وَسْطِ النَّهَرِ وَعَلَى شَطِّ النَّهَرِ رَجُلٌ بَيْنَ يَدَيْهِ حِجَارَةٌ فَأَقْبَلَ الرَّجُلُ الَّذِي فِي النَّهَرِ فَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَخْرُجَ رَمَى الرَّجُلُ بِحَجَرٍ فِي فِيهِ فَرَدَّهُ حَيْثُ كَانَ فَجَعَلَ كُلَّمَا جَاءَ لِيَخْرُجَ رَمَى فِي فِيهِ بِحَجَرٍ

فَيَرْجِعُ كَمَا كَانَ فَقُلْتُ مَا هَذَا؟ قَالَا: انْطَلِقْ فَانْطَلَقْنَا حَتَّى انْتَهَيْنَا إِلَى رَوْضَةٍ خَضْرَاءَ فِيهَا شَجَرَةٌ عَظِيمَةٌ وَفِي أَصْلِهَا شَيْخٌ وَصِبْيَانٌ وَإِذَا رَجُلٌ قَرِيبٌ مِنَ الشجرةِ بَيْنَ يَدَيْهِ نَارٌ يُوقِدُهَا فَصَعِدَا بِيَ الشَّجَرَةَ فأدخلاني دَار أوسطَ الشَّجَرَةِ لَمْ أَرَ قَطُّ أَحْسَنَ مِنْهَا فِيهَا رِجَالٌ شُيُوخٌ وَشَبَابٌ وَنِسَاءٌ وَصِبْيَانٌ ثُمَّ أَخْرَجَانِي مِنْهَا فصعدا بِي الشَّجَرَة فأدخلاني دَار هِيَ [ص:١٣٠ أَحْسَنُ وَأَفْضَلُ مِنْهَا فِيهَا شُيُوخٌ وَشَبَابٌ فَقُلْتُ لَهُمَا: إِنَّكُمَا قَدْ طَوَّفْتُمَانِي اللَّيْلَةَ فَأَخْبِرَانِي عَمَّا رَأَيْتُ قَالَا: نَعَمْ أَمَّا الرَّجُلُ الَّذِي رَأَيْتَهُ يُشَقُّ شِدْقُهُ فَكَذَّابٌ يُحَدِّثُ بِالْكَذْبَةِ فَتُحْمَلُ عَنْهُ حَتَّى تَبْلُغَ الْآفَاقَ فَيُصْنَعُ بِهِ مَا تَرَى إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَالَّذِي رَأَيْتَهُ يُشْدَخُ رَأْسُهُ فَرَجُلٌ عَلَّمَهُ اللَّهُ الْقُرْآنَ فَنَامَ عَنْهُ بِاللَّيْلِ وَلَمْ يَعْمَلْ بِمَا فِيهِ بِالنَّهَارِ يُفْعَلُ بِهِ مَا رَأَيْتَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَالَّذِي رَأَيْتَهُ فِي الثَّقْبِ فَهُمُ الزُّنَاةُ وَالَّذِي رَأَيْتَهُ فِي النَّهَرِ آكِلُ الرِّبَا وَالشَّيْخُ الَّذِي رَأَيْتَهُ فِي أَصْلِ الشَّجَرَةِ إِبْرَاهِيمُ وَالصِّبْيَانُ حَوْلَهُ فَأَوْلَادُ النَّاسِ وَالَّذِي يُوقِدُ النَّارَ مَالِكٌ خَازِنُ النَّارِ وَالدَّارُ الْأُولَى الَّتِي دَخَلْتَ دَارُ عَامَّةِ الْمُؤْمِنِينَ وَأَمَّا هَذِهِ الدَّارُ فَدَارُ الشُّهَدَاءِ وَأَنَا جِبْرِيلُ وَهَذَا مِيكَائِيلُ فَارْفَعْ رَأْسَكَ فَرَفَعْتُ رَأْسِي فَإِذَا فَوْقِي مِثْلُ السَّحَابِ وَفِي رِوَايَةٍ مِثْلُ الرَّبَابَةِ الْبَيْضَاءِ قَالَا: ذَلِكَ مَنْزِلُكَ قُلْتُ: دَعَانِي أَدْخُلْ مَنْزِلِي قَالَا: إِنَّهُ بَقِيَ لَكَ عُمُرٌ لَمْ تَسْتَكْمِلْهُ فَلَوِ اسْتَكْمَلْتَهُ أَتَيْتَ مَنْزِلَكَ «. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ. وَذَكَرَ حَدِيثَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ فِي رُؤْيَا النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْمَدِينَةِ فِي» بَاب حرم الْمَدِينَة "

4621. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, जब रसूलुल्लाह ﷺ नमाज़ पढ़ लेते तो आप अपना रूखे अनवार (चेहरा) हमारी तरफ कर लेते और फरमाते: “आज रात तुम में से किसी ने ख्वाब देखा है?” रावी बयान करते हैं, अगर किसी ने देखा होता तो वह इसे बयान कर देता, और आप जो अल्लाह चाहता, उसकी ताबीर बयान फरमा देते, आप ﷺ ने एक रोज़ हम से पूछा: “क्या तुम में से किसी ने ख्वाब देखा है?” हमने अर्ज़ किया: नहीं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “लेकिन मैंने आज रात दो आदमी देखे, वह मेरे पास आए तो उन्होंने मुझे हाथो से पकड़ा और मुझे अर्ज़ ए मुक़द्दस की तरफ ले गए, वहां एक आदमी बैठा हुआ था और एक घड़ा था, उस के हाथ में लोहे का एक टुकड़ा था, वह उस को उस के जबड़े में दाखिल करता था, और उस को उसकी गुद्दी तक चिर देता था, फिर वह इसी तरह दूसरे जबड़े के साथ करता था, और इतने में यह (पहला) जबड़ा ठीक हो जाता था, और वह इस अमल को दोहराता था, मैंने पूछा यह क्या है? इन दोनों ने कहा (आगे) चले, हम चले हत्ता के हम एक आदमी के पास आए जो चित्ता लेटा हुआ था और एक आदमी छोटा या बड़ा पत्थर लिए उस के सिरहाने खड़ा था और वह उस के साथ उस के सर को कुचल रहा था, जब वह इसे मारता था, तो पत्थर लुड़क जाता था, वह इसे लेने जाता लेकिन उस के वापस आने से पहले उस का सर फिर ठीक हो जाता था, और वह आदमी उस के साथ फिर वैसे ही करता था और यह अमल जारी रहता है, मैंने कहा यह क्या है? इन दोनों ने कहा (आगे) चलिए, हम चले हत्ता के तंदूर जैसे सुराख़ के पास आए जिस का ऊपर का हिस्सा तंग है जबकि उस का निचला हिस्सा खुला है, उस के नीचे आग जल रही थी, जब वह ऊपर उठते तो उस में मौजूद लोग भी ऊपर बुलंद होते हत्ता के ऐसे लगता के वह उस से निकल जाएँगे, और जब वह बुझ जाती तो वह उस में वापस आ जाते और उस में मर्द और औरते बरहना (नंगे) थे, मैंने कहा यह क्या है? इन दोनों ने कहा (आगे) चले, हम चले हत्ता के हम खून की नहर पर पहुंचे, वहां नहर के सामने पत्थर है, वह शख़्स जो नहर में है जब वह बाहर निकलने का इरादा करता थे तो बाहर किनारे पर खड़ा आदमी उस के मुंह पर पत्थर फेकता और इसे अपने पहली जगह पर पहुंचा देता है, वह जब भी निकलने के लिए आता था फिर वह उस के मुंह पर पत्थर मारता है तो वह वापस वहीँ चला जाता था, मैंने कहा यह क्या है? उन्होंने कहा: (आगे) चले, हम चले हत्ता के हम सरसब्ज़ व शादाब बाग़ में पहुँच गए, उस में एक बड़ा दरख्त था और उस के तने के पास एक बुढ़ा शख़्स और कुछ बच्चे थे, और दरख्त के करीब एक आदमी था उस के आगे आग थी जिसे वह जला रहा था, वह मुझे दरख्त पर ले गए, उन्होंने मुझे दरख्त के बिच

में एक घर में दाखिल कर दिया, मैंने उस से खुबसूरत घर कभी नहीं देखा, उस में बूढ़े मर्द, नोजवान, औरतें और बच्चे थे, फिर वह मुझे वहां से बाहर ले आए, और दरख्त पर ले चढ़े, और मुझे उस से भी अहसन (अच्छे) व अफ़ज़ल (बेहतरीन) घर में ले गए, उस में बूढ़े और जवान थे मैंने उन दोनो इसे कहा तुम रातभर मुझे लिए फेरते रहे हो, लिहाज़ा मैंने जो कुछ देखा उस के मुतल्लिक मुझे बताओ? उन्होंने कहा: जी हाँ, रहा वह शख़्स जिस को आप ने देखा के उस के जबड़े को चीरा जा रहा था तो वह झूठा शख़्स था, वह झूठ बयान करता था, फिर उस से नकल किया जाता था हत्ता के वह आफ़ाक (आसमान) तक पहुँच जाता, आप ने जो देखा वह रोज़ ए कियामत तक उस के साथ किया जाएगा, वह आदमी जो आप ने देखा के उस का सर कुचला जा रहा था, यह वह शख़्स था जिस ने कुरान का इल्म सिखा लेकिन उस ने रात का कयाम न किया और न दिन के वक़्त उस के मुताबिक अमल किया, आप ने जो देखा उस के साथ यह सुलूक कियामत तक जारी रहेगा, आप ने जिन्हें सुराख़ में देखा वह ज़िना कार थे, आप ने जिसे नहर में देखा था वह सूद खोर था, आप ने दरख्त के तने के साथ जिस बुज़ुर्ग शख़्स को देखा वह इब्राहीम अलैहिस्सलाम थे और उन के इर्दगिर्द जो बच्चे थे वह लोगों की औलाद थी, जो शख़्स आग जला रहा था वह जहन्नम का दरोगा मालिक था, आप जिस पहले घर में दाखिल हुए थे वह आम मोमिनो का घर था, रहा यह घर तो यह शुहदा का घर है, मैं जिब्राइल हूँ और यह मिकाइल है, आप ﷺ अपना सर उठाए, जब मैंने सर उठाया तो मेरे ऊपर बादलो की तरह था, इन दोनों ने कहा यह आप की मंजिल है, मैंने कहा मुझे छोड़ दो में अपने मंजिल में दाखिल हो जाऊं उन्होंने कहा: अभी आप की उमर बाकी है जो आप ने मुकम्मल नहीं की, जब आप इसे मुकम्मल कर लेंगे तो आप अपने मंजिल में दाखिल हो जाएँगे"| # और अब्दुल्लाह बिन उमर (र अ) से मरवी हदीस " नबी ﷺ को ख्वाब में मदीना दिखाई देना" بَابُ حَرَمِ الْمَدِينَةِ حَرَسَهَا اللَّهُ تَعَالَى (हुरमते मदीना का बयान अल्लाह इस की हिफाज़त फरमाए) में ज़िक्र की गई है| (बुखारी)

رواه البخاری (7048) 0 حدیث عبدالله بن عمر ، تقدم (2735)

ख्वाब का बयान • كتاب الرُّؤْيَا

दूसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّانِي

٤٦٢٢ - (لم تتمّ دراسته) عَن أبي رزين العقيليِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «رُؤْيَا الْمُؤْمِنِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ وَهِيَ عَلَى رِجْلِ طَائِرٍ مَا لَمْ يُحَدِّثْ بِهَا فَإِذَا حَدَّثَ بِهَا وَقَعَتْ» . وَأَحْسِبُهُ قَالَ: «لَا تُحَدِّثْ إِلَّا حَبِيبًا أَوْ لَبِيبًا» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَفِي رِوَايَةِ أَبِي [ص:١٣٠ دَاوُدَ قَالَ: «الرُّؤْيَا عَلَى رِجْلِ طَائِرٍ مَا لَمْ تُعْبَرْ فَإِذَا عُبِرَتْ وَقَعَتْ» . وَأَحْسِبُهُ قَالَ: «وَلَا تَقُصَّهَا إِلَّا عَلَى وَادٍّ أَوْ ذِي رَأْيٍ»

4622. अबू रजिन उकय्ली बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: "मोमिन का ख्वाब नबूवत का छियालीसवाँ हिस्सा है, जब तक वह उस को बयान नहीं करता तो वह परिंदे के पाँव पर है, लेकिन जब वह इसे

बयान कर देता है तो वह वाकेअ हो जाता है”, और मेरा ख़याल है के आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे किसी अज़ीज़ दोस्त या अकलमंद शख़्स के सिवा किसी और से बयान न करो”| तिरमिज़ी, और अबू दावुद की रिवायत में है, फ़रमाया: “जब तक ख्वाब की ताबीर न की जाए तो वह परिंदे के पाँव पर होता है, लेकिन जब उसकी ताबीर बयान की जाती है तो वह वाकेअ हो जाता है”, और मेरा ख़याल है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “इसे किसी अज़ीज़ दोस्त या अकलमंद शख़्स के सिवा किसी और से बयान न करो”| (हसन)

اسناده حسن ، رواه الترمذی (22782279) و ابوداؤد (5020)

٤٦٢٣ - (ضَعِيفٌ) وَعَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا قَالَتْ سُئِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم عَن وَرَقَةَ. فَقَالَتْ لَهُ خَدِيجَةُ: إِنَّهُ كَانَ قَدْ صَدَّقَكَ وَلَكِنْ مَاتَ قَبْلَ أَنْ تَظْهَرَ. فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «أُرِيتُهُ فِي الْمَنَامِ وَعَلَيْهِ ثِيَابٌ بِيضٌ وَلَوْ كَانَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ لَكَانَ عَلَيْهِ لِبَاسٌ غَيْرُ ذَلِك» . رَوَاهُ أَحْمد وَالتِّرْمِذِيّ

4623. आइशा रदियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं, रसूलुल्लाह ﷺ से वर्का बिन नौफल के बारे में दरियाफ्त किया गया तो ख़दीजा रदियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: उस ने आप ﷺ की तस्दीक कर दी थी लेकिन वह आप के एलाने नबूवत से पहले फौत हो गए, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “इसे मुझे ख्वाब में दिखाया गया उस पर सफ़ेद कपड़े थे, और अगर वह जहन्नमी होता तो उस पर कोई और लिबास होता”| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ احمد (6 / 65) و الترمذی (2288) وقال :’’ غریب ‘‘ قلت : سندہ ضعیف جدًا ، قال الذھبی : عثمان ھو الوقاصی متروک کما فی تلخیص المستدرک 4 / 393) و للحدیث شواھد ضعیفۃ عند احمد (6 / 65) و الحاکم (2 / 609) وغیرھما

٤٦٢٤ - (لم تتمّ دراسته) وَعَنِ ابْنِ خُزَيْمَةَ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ عَمِّهِ أَبِي خُزَيْمَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَنَّهُ رَأَى فِيمَا يَرَى النَّائِمُ أَنَّهُ سَجَدَ عَلَى جَبْهَةِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَخْبَرَهُ فَاضْطَجَعَ لَهُ وَقَالَ: «صَدِّقْ رُؤْيَاكَ» فَسَجَدَ عَلَى جَبْهَتِهِ. رَوَاهُ فِي شَرْحِ السُّنَّةِ»» وَسَنَذْكُرُ حَدِيثَ أَبِي بَكْرَةَ: كَأَنَّ مِيزَانًا نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ فِي بَابِ «مَنَاقِبِ أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا»

4624. इब्ने खुज़ैमा बिन साबित अपने चचा अबू खुज़ैमा से बयान करते हैं, उन्होंने ख्वाब देखा के उस ने नबी ﷺ की पेशानी पर सजदाह किया है, उस ने आप को बताया तो आप ﷺ इस की खातिर लेट गए और फ़रमाया: “अपना ख्वाब सच्चा कर दिखाओ”, उस ने आप ﷺ की पेशानी पर सजदाह किया| (ज़ईफ़)

سندہ ضعیف ، رواہ البغوی فی شرح السنۃ (12 / 225 ح 3285) [و احمد (5 / 215 ، 214)] * الزھری عنعن و للحدیث طرق ضعیفۃ0 حدیث ابی بکرۃ یاتی (6057)

ख्वाब का बयान • كتاب الرُّؤْيَا

तीसरी फस्ल • الْفَصْل الثَّالِث

٤٦٢٥ - (صَحِيح) عَن سَمُرَةَ بْنِ جُنْدَبٍ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم مِمَّا يَكْثُرُ أَنْ يَقُولَ لِأَصْحَابِهِ: «هَلْ رَأَى أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنْ رُؤْيَا؟» فَيَقُصُّ عَلَيْهِ مَنْ شَاءَ اللَّهُ أَنْ يَقُصَّ وَإِنَّهُ قَالَ لَنَا ذَاتَ غَدَاةٍ: " إِنَّهُ أَتَانِي اللَّيْلَةَ آتِيَانِ وَإِنَّهُمَا ابْتَعَثَانِي وَإِنَّهُمَا قَالَا لِي: انْطَلِقْ وَإِنِّي انْطَلَقْتُ مَعَهُمَا ". وَذَكَرَ مِثْلَ الْحَدِيثِ الْمَذْكُورِ فِي الْفَصْلِ الْأَوَّلِ بِطُولِهِ وَفِيهِ زِيَادَةٌ لَيْسَتْ فِي الْحَدِيثِ الْمَذْكُورِ وَهِيَ قَوْلُهُ: " فَأَتَيْنَا عَلَى رَوْضَةٍ مُعْتِمَةٍ فِيهَا مِنْ كُلِّ نَوْرِ الرَّبِيعِ وَإِذَا بَيْنَ ظَهْرَيِ الرَّوْضَةِ رَجُلٌ طَوِيلٌ لَا أَكَادُ أَرَى رَأْسَهُ طُولًا فِي السَّمَاءِ وَإِذَا حَوْلَ الرَّجُلِ مِنْ أَكْثَرِ وِلْدَانٍ رَأَيْتُهُمْ قَطُّ قُلْتُ لَهُمَا: مَا هَذَا مَا هَؤُلَاءِ؟ " قَالَ: " قَالَا لِيَ: انْطَلِقْ فَانْطَلَقْنَا فَانْتَهَيْنَا إِلَى رَوْضَةٍ عَظِيمَةٍ لَمْ أَرَ رَوْضَةً قَطُّ أَعْظَمَ مِنْهَا وَلَا أَحْسَنَ ". قَالَ: " قَالَا لِيَ: ارْقَ فِيهَا ". قَالَ: «فَارْتَقَيْنَا فِيهَا فَانْتَهَيْنَا إِلَى مَدِينَةٍ مَبْنِيَّةٍ بِلَبِنِ ذَهَبٍ وَلَبِنِ فِضَّةٍ فَأَتَيْنَا بَابَ الْمَدِينَةِ فَاسْتَفْتَحْنَا فَفُتِحَ لَنَا فَدَخَلْنَاهَا فَتَلَقَّانَا فِيهَا رِجَالٌ شَطْرٌ مِنْ خَلْقِهِمْ كَأَحْسَنِ مَا أَنْتَ رَاءٍ وَشَطْرٌ مِنْهُمْ كَأَقْبَحِ مَا أَنْتَ رَاءٍ» . قَالَ: " قَالَا لَهُمُ: اذْهَبُوا فَقَعُوا فِي ذَلِكَ النَّهَرِ " قَالَ: «وَإِذَا نَهَرٌ مُعْتَرِضٌ يَجْرِي كَأَنَّ مَاءَهُ الْمَحْضُ فِي الْبَيَاضِ فَذَهَبُوا فَوَقَعُوا فِيهِ ثُمَّ رَجَعُوا إِلَيْنَا قَدْ ذَهَبَ ذَلِكَ السُّوءُ عَنْهُمْ فَصَارُوا فِي أَحْسَنِ صُورَةٍ» وَذَكَرَ فِي تَفْسِيرِ هَذِهِ الزِّيَادَةِ: «وَأما الرجلُ الطويلُ الَّذِي فِي الرَّوْضَةِ فَإِنَّهُ إِبْرَاهِيمُ وَأَمَّا الْوِلْدَانُ الَّذِينَ حَوْلَهُ فَكُلُّ مَوْلُودٍ مَاتَ عَلَى الْفِطْرَةِ» قَالَ: فَقَالَ بَعْضُ الْمُسْلِمِينَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَأَوْلَادُ الْمُشْرِكِينَ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: «وَأَوْلَادُ الْمُشْرِكِينَ وَأَمَّا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَانُوا [ص:١٣٠ شطرٌ مِنْهُم حسن وَشطر مِنْهُمْ حَسَنٌ وَشَطْرٌ مِنْهُمْ قَبِيحٌ فَإِنَّهُمْ قَوْمٌ قَدْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا تَجَاوَزَ الله عَنْهُم» . رَوَاهُ الْبُخَارِيّ

4625. समुरह बिन जुन्दुब रदियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं, रसूलुल्लाह ﷺ अपने सहाबा से अक्सर यूँ फ़रमाया करते थे: “क्या तुम में से किसी ने ख्वाब देखा है?” वह आप से, जो अल्लाह चाहता बयान करता, इसी तरह आप ﷺ ने एक रोज़ हमें फ़रमाया: “दो आने वाले मेरे पास आए उन्होंने मुझे उठाया और उन्होंने मुझे कहा: चलो, और मैं उन के साथ चला”, और फिर फसल ए अव्वल में मजकूर हदीस मुकम्मल तौर पर बयान की, और इस में इज़ाफा है जो के हदीस मजकूर में नहीं, और वह यह है, आप ﷺ ने फ़रमाया: “हम एक इन्तिहाई सर सब्ज़ बाग़ में आए, उस में मौसम बहार के तमाम फुल, और बाग़ के बिच में एक तवील आदमी था और उस के दर्ज़ाई कद की वजह से में उस का सर नहीं देख सकता था, जबकि इस आदमी के इर्दगिर्द बहोत से बच्चे है, जिन्हें मैंने (इतनी कसरत में पहले) हरगिज़ नहीं देखा, मैंने इन दोनों आदमियो से कहा: यह कौन है? आप फरमाते हैं, उन्होंने मुझे कहा (आगे) चले! हम चले और एक बड़े बाग़ के पास पहुंचे, मैंने इसे बड़ा और उन से ज़्यादा बेहतर बाग़ कभी नहीं देखा”, आप ﷺ फरमाते हैं: “उन्होंने मुझे कहा उस में ऊपर चढ़ो”, आप ﷺ ने फ़रमाया: “हम उस में चढ़े और एक शहर में पहुंचे जिस की तामीर इस तरह हुई थी के उसकी एक ईंट सोने की और एक ईंट चाँदी की थी, हम शहर के दरवाज़े पर पहुंचे और दरवाज़ा खोलने के लिए कहा, और वह हमारे लिए खोल दिया गया तो हम उस में दाखिल हो गए, हम उस में कुछ आदमियों से मिले उनका आधा धड़ इतना खुबसूरत था के तुमने कभी नहीं देखा होगा और उनका आधा धड़ इस क़दर कबिह था के तुमने कभी नहीं देखा होगा, इन दोनों ने उन्हें कहा: जाओ और इस नहर में गिर जाओ”, आप ﷺ ने फ़रमाया: वहाँ एक चोड़ी नहर जारी थी गोया उस का पानी खालिस सफ़ेद है, वह गए और उस में गिर गए, फिर हमारी तरफ वापस आए तो उनकी वह खराबी ख़तम हो

चुकी थी और वह खुबसूरत बन गए थे”, और हदीस के उन इज़ाफ़ी (ज़्यादा) अल्फाज़ में फ़रमाया: “वहां वह तवील आदमी जो बाग़ मैं था वह इब्राहीम अलैहिस्सलाम थे, और वह बच्चे जो उन के इर्दगिर्द थे, यह वह बच्चे थे जो दीन ए फितरत पर फौत हुए थे”, रावी बयान करते हैं, बाज़ मुसलमानों ने अर्ज़ किया, अल्लाह के रसूल! मुशरिकों के बच्चे? रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “मुशरिको के बच्चे भी और लोग जिन का आधा धड़ अच्छा और आधा धड़ कबिह थे तो यह लोग वह थे जिन्होंने अच्छे अमल भी किए थे और बुरे अमल भी अल्लाह ने उन से दरगुज़र फ़रमाया”| # और हम अबू बकरह (र) से मरवी हदीस: “गोया वह मीज़ान है जो आसमान से नाज़िल हुई”,(بَابِ مَنَاقِبِ أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا) (अबू बक्र व उमर के मनाकिब (र)) में ज़िक्र करेंगे. (बुखारी)

رواه البخاری (7047)

٤٦٢٦ - (صَحِيح) وَعَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «مِنْ أَفْرَى الْفِرَى أَنْ يُرِيَ الرَّجُلُ عَيْنَيْهِ مَا لم تريا» . رَوَاهُ البُخَارِيّ

4626. इब्ने उमर रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: “सबसे बड़ा झूठ यह है कि आदमी अपने आंखो को वह चीज़ दिखाए (यानी झूठा ख्वाब बयान करे) जो उन्होंने नहीं देखि”| (बुखारी)

رواه البخاری (7043)

٤٦٢٧ - (ضَعِيف) وَعَنْ أَبِي سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: «أَصْدَقُ الرُّؤْيَا بِالْأَسْحَارِ» . رَوَاهُ التِّرْمِذِيّ والدارمي»» نِهَايَة الْجُزْء الثَّانِي

4627. अबू सईद रदियल्लाहु अन्हु नबी ﷺ से रिवायत करते हैं, आप ﷺ ने फ़रमाया: “सहरी (यानी पिछली रात के) वक़्त का ख्वाब सच होने में करीब तर है”| (ज़ईफ़)

اسناده ضعیف ، رواه الترمذی (2274) و الدارمی (2 / 125 ح 2159)

